

टलीफोन नं० ३०५७ [आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधिसभा पंजाब जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd. No. P.

एक प्रति का मूल्य १३ नये पैसे वार्षिक मूल्य ६ रुपये

वर्ष २५ अंक १) २० पौष २०२१ रविवार—दयानन्दाब्द १४०— ३ जनवरी १९६५ (तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

धर्मका पथ मत भूलो

आर्य जगत् के परम तपस्वी पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज ने सभा के इस पत्र के जन्म दिन पर अपना शुभ सन्देश देते हुए कहा है—याद रखो! हम यहां परदेसी हैं। इस लोक के वासी नहीं। हमारा असली देश तो ब्रह्मलोक है। यहां तो व्यापार करने और यात्रा करने आये हैं। माया बुरी नहीं पर इस में फंस जाना बुरा है। जीवन की यात्रा के लिए जितनी आवश्यकता है, इस से लाभ उठाओ। किन्तु इस में लिप्त न होओ। इस में फंस जाने वाली बात बुरी है। केवल शरीर का ही ध्यान न रखो वरन् अन्दर के स्वामी की भी देखसम्भाल करनी है। आज के भोगवादी युग में धर्म का पथ भूलता जा रहा है। तभी दुःख है। आर्य जगत् धर्म के युग को लाने में जुट जाएं।

वे दा मृ त

ओ३म् तत्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशंस मा न आयुः प्रमोषीः स्वाहा॥ इदं वरुणाय इदन्न मम॥

ऋक् मंडल १ सूक्त २५ मं० १९

अर्थ—हे वरणीय देव! मैं (तत्) जीवन में काम आने वाले पदार्थों की (त्वा) तुझ से (यामि) प्रार्थना याचना करता हूं। और (ब्रह्मणा) ब्रह्म वेद के पवित्र मन्त्रों से आपका (वन्दमानः) वन्दन करता हूं। (तत्) वह सब (आशास्ते) चाहता है। (यजमानः) यज्ञ के शुभ कर्म को करने वाला यजमान(हविर्भिः)हवियों से सुन्दर स्तवन स्तुतियों से(अहेडमानः)उपेक्षा व अपमान करते हुए हे वरुण(इह)यहां पर(बोधि) हमारी अभिलाषा को जानें। (उरुशंस) हे प्रभो! आप बड़ी प्रशंसा के योग्य हैं। (मा) मत (नः) हमारी (आयुः) आयु जीवन (प्रमोषीः) समाप्त करें।

भावः—हे वरुण देव! मैं आप से ही याचना करने वाला आपका उपासक हूं। ज्ञान के भण्डार वेद के द्वारा यह यज्ञ करता हूं। यह करने वाला याजक यजमान अपनी स्तुति के वचनों से आपका ही अर्चन पूजन करता है। जीवन के आवश्यक पदार्थों की कामना करता है। उसकी कामनाएं पूर्ण कर दो नाथ! हम आपके ही हैं। अच्छे हैं या बुरे तेरे हैं। हमें अपने से दूर मत करो हमें भक्ति का दान दें तथा शुभ कर्म करते रहें। हमारी आयु जीवन कष्टमय न होकर सुखी हो—सं

आगे बढ़ते जाएं

आर्य प्रादेशिक प्रति- निधि सभा पंजाब जालन्धर के माननीय सरलता, विद्व- की सजीव मूर्ति प्रिंसिप- रलाराम जी एम. ए. एल. ए. ने 'आर्य जगत्' के पच्चीसवें वर्ष के प्रारम्भ होने पर आर्य भाईयों बहि- के नाम यह शुभ सन्दे- दिया है-'आर्य जगत्' स- का अपना पत्र है। सभा के द्वारा वैदिक धर्म प्रचार का शुभ कार्य कर- है। यह भी एक प्रकार यज्ञ ही है। इस को प्रकार का सहयोग देने व- सारे बहिन भाईयों को ध- और धन्यवाद है। आइए हम अपने धर्म प्रचार संकल्प को पूरा करने लिए आगे ही आगे ब- जाएं। आज का विश्व आ- समाज से बहुत कुछ आश- रखता है। प्रभु हमारा स- यक बने,

अधिष्ठाता—श्री संतोषराज जी

सम्पादक—त्रिलोक चन्द

गत दिनों, आर्यजगत् के प्रसिद्ध तपानिधि पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज ने जालन्धर में श्री. ला. इन्द्रसेन जी पूर्व कार्य कर्ता प्रधान सभा के परिवार में उन के पूज्य पिता स्वर्गवासी मास्टर नन्दलाल जी के जन्म दिन की स्मृति में यज्ञ में जो अपने प्रवचनों का मीठा प्रासाद जनता को दिया था। इस अंक में जगत् के प्रेमी पाठकों के आस्वादन के लिए दूसरा प्रवचन दिया जा रहा है।—सं.

अमृतरस का पान

हम ब्रह्मलोक के वासी

(पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी जी का मधुर प्रासाद)

अमृत मृत्यु से गिरा

प्रभु के गुण गान करने से मानव जीवन में अमरता की पदवी को प्राप्त कर लेता है। प्रत्येक नर नारी मौत से बचना चाहता है। ऐसी बात नहीं कि मनुष्य को मौत कभी आये ही नहीं। जो शरीर बना है, उसने कभी न कभी बिगड़ना है। जिस का जन्म है उस की मृत्यु निश्चित है। इस भगवान् के नियम विधान से न कोई बच सका है और न कोई बच सकता है। काल सब संसार के पदार्थों को अपने विकराल गाल में डाले जाता है। कोई तो कल चले गये, कोई आज जा रहा है और किसी ने कल को चले जाना है। ऐसी नियति व संसार की गति बनी हुई है। ऐसी अवस्था में लोग चाहते हैं कि हम मर कर भी न मरें। उसके लिए सबसे सुन्दर उपाय यह है कि भगवान के बन जाओ। प्रकृति के पदार्थों या शरीर की पूजा करने से तो अमरता कभी नहीं मिल सकती। मौत का भय दूर नहीं होगा। जब मनुष्य परमेश्वर का अटल विश्वासी बन जाता है। उसी का हो जाता है। उसी के गुण का गायक बन जाता है तब उसे मौत का भय नहीं रहता। संसार में मौत के बाद भी अमर बन जाता है!

जो प्रभु के गीत गाता है। उसकी वाणी में असर हो जाता है। जीवन में एक विशेष प्रकार का रस और मस्ती आ जाती है। जो अपने जीवन में उस जगतपति का गवैया बन जाता है, उसका क्या कहना? हम संसार या संसारियों के गीत क्या या क्यों गावें। क्या मिलेगा इन से। यदि कुछ मिल भी जायेगा तो इन वस्तुओंसे मन की शान्ति तो कभी होने की नहीं। प्रकृति के पदार्थों में सच्ची शान्ति है भी नहीं। वास्तविक रस और आनन्द तो प्रभु प्यारे के गुण गाने में मिलता है। जिसे प्रभु के प्रति प्यार होता है उसे उसकी हर वस्तु प्यारी लगती है। आपत्ति में भी प्रभु का भक्त सदा मुस्कराता रहता है। उसे कष्ट का अनुभव ही नहीं होता। भगवान के प्यार में दुःख नहीं रहता प्रभु भक्त अपने भगवान की दात समझ कर उसे हंसते-हंसते सहन कर लेता है। रोना चिल्लाना तो परमेश्वर के प्यारे को आता नहीं प्रभु का उपासक समझता है कि भगवान जो कुछ भी करता है, उस के भले के लिए ही करता है। इस में भी जीवन का कल्याण ही छिपा हुआ है। जिस के दिल में प्रभु का विश्वास बढ़ जाता है उस में सहनशीलता आ जाती है। विपत्ति में घबराने का ऐसा उपासक नाम भी नहीं लेता। प्रभु के प्रेमी की पहिचान दुःख के समय में होती है। चिन्ताएं उसके पास नहीं आतीं, जो कि परमात्मा का बन जाता है।

चिन्ता ज्वरो मनुष्याणाम्

चिन्ता मनुष्य के लिए बड़ा रोग है। यह ऐसी भयंकर बीमारी है जो शरीर के अन्दर पैदा होती, बढ़ती और अन्त में मौत के मुख में डाल कर समाप्त कर देती है। प्रभु के भक्त को चिन्ताएं नहीं सता सकतीं मानव! तू चिन्ता न कर वरन चिन्तन किया कर इस का हल सोच कि यह आती कहां से है। जहां पर जगह खाली हो, स्थान मिल जाये, वहीं पर अपना डेरा बना लेती है। जिस के दिल में प्रभु विश्वास कूट २ भरा हुआ हो वहां चिन्ता आकर वापस लौट जाती है। वहां तो टिकने की तनिक भी जगह नहीं है। फिर आकर करे तो क्या करे। इसलिए मेरे भाई! यदि चाहते हो कि चिन्ता हमारे पास न आए। यदि भूलकर कभी आ भी जाए तो वापस चली जाये। तो अपने अन्दर प्रभु का विश्वास कूट २ कर भर लो। तनिक भी चिन्ता के लिए स्थान खाली न रखो। यह काम प्रभु-विश्वास के बिना तीन काल में भी नहीं हो सकता।

याद रखो कि हम यहां परदेसी हैं। इस लोक के वासी नहीं हैं। हमारा असली देश तो ब्रह्मलोक है। यहां पर तो व्यापार करने या यात्रा करने के लिए आए हैं। ओम का झण्डा लगा कर अपना काम करने आए हैं। हमारी राष्ट्रियता ब्रह्मलोक है। स्मरण रखो कि यहां आकर भूल कर भी इस प्रकृति माया या इसके चमकीले पदार्थों का दास नहीं बनना। माया बुरी नहीं है पर इस में फंस जाना बुरा है। इस से काम लो। इसे अपनी बनाओ। जीवन यात्रा के लिए जितनी आवश्यकता है लाभ उठाओ। किन्तु, ध्यान रहे कि इस में लिप्त न हो जाओ। यह फंस जाने वाली बात बुरी है। यह शरीर भी बुरा नहीं है। पांच तत्वों से बना है इसके बिना काम कैसे चलेगा। पर केवल शरीर का ही ध्यान न करो। अन्दर इसके स्वामी की देख सम्भाल भी करनी है। आज तो शरीर की ही सम्भाल हो रही है पर अन्दर के सवार की देखभाल नहीं होती। केवल प्रकृति पूजा में ही आज का मानव लगा हुआ है। यदि यह उस आत्मा को जान जाए तो फिर चिन्ता किस बात की है। आज तो आकाश पाताल को बांधने का विज्ञान प्रयत्न करने में लगा है किन्तु आत्मा की ओर ध्यान नहीं। आत्मा को जानो तभी सुख है।

आर्ष पाठविधि का निःशुल्क शिक्षा केन्द्र

आर्ष कन्या गुरुकुल, नरेला (दिल्ली) का ६वां वार्षिकोत्सव

२३-२४ जनवरी शनिवार रविवार को समारोह से होगा। इस अवसर पर आर्य जगत के उच्चकोटि के संन्यासी, महात्मा, विद्वान उपदेशक, देवियों और गण्यमान्य नेता पधार रहे हैं। इनके जीवन-पथ-दर्शक प्रवचनों के अतिरिक्त ब्रह्मचारिणियों के हिन्दी तथा संस्कृत भाषा में विविध विषयों पर भाषण, वाद विवाद कविताएं तथा भजन प्रस्तुत किए जाएंगे। कन्याओं का दीक्षांत समारोह तथा नवीन कन्याओं का प्रवेश भी होगा। भोजन तथा निवास का प्रबन्ध गुरुकुल की ओर से है। पधारने वालों को शीत ऋतु का बिस्तर साथ लाना होगा।

सात्विक वातावरण में शिक्षाप्रद कार्यक्रम से लाभान्वित होने के लिए अवश्य पधारिये।

आचार्या
चन्द्रकला आर्या स्नातिका

आर्य जगत्

वर्ष २५] रविवार २०२१, ३ जनवरी १९६५ [अंक १

पच्चीसवां शुभ वर्ष

मनुष्य व संस्था के जन्म दिवस के समान आर्य प्रादेशिक सभा पंजाब जालन्धर के साप्ताहिक मुखपत्र का भी प्रतिवर्ष अपना शुभ जन्म दिन आता है। उस दिन यह अपने जीवन में एक वर्ष और बिता कर नये जन्म वर्ष में पग रखता है। इसी सम्बन्ध में आज 'आय जगत्' अपने जीवन के चौबीस वर्ष समाप्त कर पच्चीसवें वर्ष में प्रवेश करते हुए इस वार्षिक जन्म दिन पर बड़ी प्रसन्नता प्रकट करता है। इस अवसर पर सब से पूर्व हम भगवान् का धन्यवाद करने के बाद सभा के सारे मान्य सज्जनों, आर्य समाजों, विशाल संस्थाओं, विद्वान लेखक भाई बहिनों, समाज के पूज्य नेताओं तथा हर प्रकार का तन, मन, धन से इसे सहयोग देने वाले सहयोगियों की कृपा उदारता के लिए बड़ा आभार प्रदर्शन करते हैं। उनकी उदारता व सहयोग से ही तो आर्य जगत् सारे आर्य जगत् में सजीव बन कर आर्य समाज की आवाज सारे वर्ष पहुँचा सका है। हम तो केवल साधारण से सिपाही हैं जो केवल कतव्य निभाने में लगे हैं। इस शुभ पच्चीसवें जन्म दिन पर आर्य जगत् के समस्त मान्य सहयोगियों का धन्यवाद करते हुए उन की इसी प्रकार की उदारता के लिए सदा के लिए प्रार्थना करते हैं। इस वर्ष इस में जो त्रुटियां या भूलें रहीं, वे तो हमारी हैं और जो कुछ अच्छी बातें थीं वे आपकी कृपा से हैं। सभा भी आप की है, सभा का मुखपत्र आर्य जगत् भी आप का ही है। हम भी आप के सेवक हैं।

आर्यजगत् को गत वर्ष १९६४ में आर्यमाज के पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी जी सरीखे संन्यासियों, श्री डा. दीवानचन्द जी एम० ए० सरीखे नेताओं तथा उच्चकोटि के मान्य लेखक भाई बहिनों की ओर से भी पूर्ण कृपा पूर्ण सहयोग मिलता रहा। अपनी डी० ए. वी. संस्थाओं के प्रिंसीपल एवं मुख्याध्यापक महोदयों, समाजों व परिवारों की कृपा भी मिलती रही। सभा के अधिकारी महानुभावों मान्य प्रिंसिपल रलाराम जी एम०ए० तथा सारे सज्जनों का ही सहयोग मिला। डी.ए.वी. फार्मेसी जालन्धर, टोहाना के सभा प्रेमी श्री बृजलालजी गुप्ता, वैद्य रामसिंह जी जमनानगर आदि द्वारा मिले विज्ञापनों के लिए भी आभारी हैं। सभा के मान्य उपदेशक भजनीक मान्य भाईयों ने भी कोई कमी सहयोग में नहीं रखी। सबके अत्यन्त आभारी हैं। सभा के वेदप्रचार अधिष्ठाता पं० खुशीराम जी का परिश्रम भी साथ देता रहा। आज के युग में पत्र विशेषकर धार्मिक पत्र चलाना कितना कठिन है। यह वही जानते हैं जिनका इस क्षेत्र से सम्बन्ध है। घाटा डालकर भी सभा अपने कर्तव्य को प्रचार भाव से निभाए जा रही है सभा के साप्ताहिकों में कितना-कितना घाटा रहता है। यह तो सभाएं जानती हैं। गत वर्ष बीता, नया वर्ष आरम्भ हो गया। सहयोग के लिए धन्यवाद तथा नए वर्ष में उसी प्रकार से सहयोग के लिए नम्रता भरी प्रार्थना है। आर्यजगत् का सारा परिवार अपना आशीर्वाद व सहयोग देता रहे—

—त्रिलोक चन्द्र

आर्यसमाज के महापुरुष

आर्यसमाज एक विशाल आंदोलन है। दिव्य देवता दयानन्द द्वारा दीप्त किया गया ज्योतिः स्तम्भ है। वेदप्रचार का महान् केन्द्र है। इसके विशाल परिवार में बड़े २ धर्म स्तम्भ संन्यासी महात्मा, नेता, विद्वान् एवं अनथक कार्यकर्ता हुए। प्रत्येक मैदान में इसके महापुरुषों का जीवन कार्य चमक रहा है। खेद यह है कि समाज के आरम्भ से लेकर आज तक उन दिव्य जीवन की विभूतियों का संक्षिप्त परिचय कराने के लिए तथा जनता में विशेष कर अपने परिवारों के ही नवयुवक पुत्र-पुत्रियों को अपने अतीत वर्तमान में इन महापुरुषों का परिचय देने के लिए आज तक किसी ने विशेष प्रयत्न नहीं किया। कुछ एक महापुरुषों के सिवाय आज हमारे परिवारों में भी समाज के अन्य महापुरुषों का नाम भी नहीं पता. इधर किसी का ध्यान नहीं गया। यदि गया भी तो थोड़े से दिव्य जीवनों की चर्चा कर दी गई और बस। आज के समय में इनकी ओर ध्यान भी कौन दे? अपनी २ नौका खेने मे सब लगे हुए हैं।

आय समाज के पुराने वृद्ध महारथी श्री ला० जगत् राम जी १०० दयानन्द नगर लारेंस रोड अमृतसर को बहुत २ बधाई है कि उनका ध्यान इस ओर गया। इस दिव्य मूर्ति ने अपने जीवन में आर्य समाज का बड़ा भारी काम किया है। वर्षों पर्यन्त आर्यसमाज रंगून ब्रह्मा के प्रधान व मन्त्री रहे। वहां पर समाज का भारी काम किया। खूब कमाया व दिल खोलकर समाज के कामों में लगाया। भारत में आने पर पता नहीं कितनी संस्थाओं को दिया। बुढ़ापे की अवस्था में भी आर्यसमाज के विचार के सिवाय और कोई बात ही नहीं करते। भारी लग्न व तड़प है। ७५-८० वर्ष की आयु में भी अब ऋषि जन्मभूमि टकारा की यात्रा को चले हैं। समाज के दिव्य रत्न हैं। गत दिनों अपने व्यय पर आर्य प्रादेशिक सभा को ईसाईयों के बारे में आर्यसमाज के महान तपस्वी त्यागी श्री पं० देवप्रकाश जी पूर्व आचार्य अर्बी संस्कृत विद्यालय की लिखी पुस्तक भी छपवा कर दी है।

इस विशेष बात की ओर उनका ध्यान गया है उन्होंने श्री पं० देवप्रकाश जो आर्यसमाज उज्जैन से बार २ पत्रों में मौखिक रूप से आग्रह किया, ऐसी पुस्तक लिखने की प्रेरणा की है। उनकी पवित्र मनोभावना पूर्ण होने लगी है। इस प्रकार की आर्यसमाज के 'महापुरुष तथा उनका संक्षिप्त कार्य' नाम की पुस्तक श्री पं० देवप्रकाश जी ने लिख कर अमृतसर इन के पास भेज दी है। अब प्रेस में दी जा चुकी है। पुस्तक का सारा व्यय श्री ला० जगतराम जी ही करेंगे। अपने ढंग की यह अनूठी पुस्तक होगी। आर्यसमाज के सारे महापुरुषों के जीवन व कार्य की इस में झांकी होगी. जनता तथा हमारी वर्तमान सन्तान आर्यसमाज की दिव्य विभूतियों से परिचय प्राप्त हो सकेगा। हम इस आवश्यक काम के लिए तपोमूर्ति पं०देवप्रकाश जी तथा दानी ला० जगतराम जी को पूर्व ही बधाई देते हैं।

—त्रिलोकचन्द्र

सिद्धान्त चर्चा

परमात्मा सर्वव्यापक है

लेखमाला नं.—३

(ले०—श्री पं. देवप्रकाश जो आर्यसमाज उज्जैन)

तदेजति तन्नैजति तद्
दूरे तदन्तिके
तदन्तरस्य सर्वस्य तदु
सर्वस्यास्य बाह्यतः
यजुः अ. ४०

'वह सर्व शक्तिमान ब्रह्म गति शून्य प्रकृति को गति देता है, परन्तु स्वयं गति में नहीं आता, वह दूर भी है और समीप भी है और वह सब के भीतर भी और बाहर भी है, इस मन्त्र में कैसी सुन्दरता से भगवान को सर्व गत और सर्वव्यापक प्रति पादित किया है। ऐसा मानने से ही उसे अविनाशी माना जा सकता है, किन्तु बाइबल का खुदा एक देशी इधर उधर आने जाने वाला तथा सीमित है।

श्री पण्डित देव प्रकाश जी पूर्व आचार्य आर्य समाज के बड़े ही तपस्वी, अनथक कार्यकर्ता अर्बी फारसी के के बड़े विद्वान हैं! गम्भीर वक्ता व लेखक हैं। धार्मिक आलोचनात्मक लेखों का क्रम लिख रहे हैं। यह उसी क्रम का तीसरा लेख है—सं०

जैसे :—

आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथिवी को सिरजा और पृथिवी सूनी और सुनसान पड़ी थी और गहरे जल के ऊपर अन्धियारा था और परमेश्वर का आत्मा जल के ऊपर ऊपर मण्डलाता था।' उत्पत्ति १-२-३ उर्दू अनुवाद में है गहिराईयों पर अंधेरा था। यदि परमेश्वर का आत्मा जल पर डोलता था तो परमेश्वर का शरीर कहां था? कोई पादरी इस पर कह सकता है कि परमात्मा का शरीर नहीं होता, किन्तु हम सारी बाइबल में परमेश्वर को शरीर धारी ही देखते हैं। जैसे :—

(१) 'और उन्होंने खुदा की आवाज जो ठण्डे समय बाग में फिरता था' उत्पत्ति ३-८ यहां आवाज और बाग में फिरना शारिरिकता का द्योतक है।'

(२) और फिर परमेश्वर ने कहा, कि हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनावें।' उत्पत्ति) -१-२६ इन्सान के शरीर को देख कर खुदा का शरीर भी होना आवश्यक है क्योंकि उपमा से समानता होने पर शरीर का होना अनिवार्य है।

३. और खुदावन्द उस शहर और बुर्ज को जिसे बनी आदम बनाते थे देखने के लिये उतरा उत्पत्ति ११-६ यहां भी खुदा का उतरना उसके स्थान परिवर्तन और एक देशी होने का द्योतक है।

'खुदाबन्द ने जैसा फ़रमाया था सारा पर नजर की और खुदावन्द ने जैसा कि कहा था, सारा के लिए किया चुनांचे सारा हामिला (गर्भवती) हुई, इन्जील उर्दू उत्पत्ति २१-१-२ परमात्मा का दृष्टिपात करना ही उसके एक देशी होने का प्रमाण है। ऐसे अनेक ही प्रमाण हैं। खुदा का आकर बातें करना, खरूज २६-४३ बनी इसराईल में सकूनत करता खरूज २६-४५। इसी प्रकार खुदा के आने जाने बातें करने आदि के तो बाइबल में अनगणित प्रमाण है। हमारे कहने का तात्पर्य यह है कि सब स्थानों पर खुदा शरीरधारी के रूप में गया परन्तु यहां केवल यह लिखा कि 'खुदा का रूह पानियों पर डोलता था तो प्रश्न होता है कि शरीर कहां था? और फिर जब पानी पर था तो वचन और पवित्रात्मा कहां थे? जमीन और आकाश के बनाने का जिकर तो बाइबल में है किन्तु पानी के बनाने का जिकर नहीं और होता भी कैसे? यदि पानी न होता तो खुदा का रूह कहां डोलता? पानी पर डोलने से भी एक देशी ही रहता है एक देशी होने से विनाशी होगा विनाशी होने से खुदा नहीं होगा।

इसी प्रकार नये नियम में है —

'उसी रात खुदावन्द उसके (पौलुस के) पास खड़ा हुआ और कहा कि खातिर जमा रख' २३-१६ वह पापों को धोकर उच्चस्थान पर महां प्रभु की दाहनी ओर जा बैठा स्वयं भी यीशु ने कहा, कि 'मनुष्य के पुत्र को कादरे मुतलक (सर्वशक्तिमान) की दहनी ओर बैठे' देखोगे मत्ती २६-६४ उपरोक्त सब प्रमाणों से यह सिद्ध है कि ईसाईयों का खुदा सीमित है।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

भारत को अराष्ट्रीय तत्वों से बचाने के लिये अखिल भारतीय अराष्ट्रीयमत निरोध समिति को स्थापना

महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती जी द्वारा देश की जनता से ईसाइयत के विरुद्ध तीव्र आंदोलन करने को प्रेरणा

नई दिल्ली, केरल, आंध्र. बिहार, उड़ीसा, उत्तर प्रदेश, पंजाब, गुजरात, मध्यप्रदेश, आदि के आर्य-समाजों के प्रतिनिधियों की एक विशेष बैठक पूज्यपाद महात्मा आनन्द स्वामीजी सरस्वती के साथ त्यागी तपस्वी महात्मा आनंद भिक्षु जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। उपस्थित प्रतिनिधियों ने सर्व सम्मति से निश्चय किया कि आर्य समाज को अपनी पूरी शक्ति देश में फैल रही अराष्ट्रीय विचारधारायें व उन षड्यन्त्रों क समाप्त करने में लगा देना चाहिये जिनसे आज राष्ट्र की स्वतन्त्रता और एकता को भारी खतरा पैदा हो गया है। इस मीटिंग में आगामी वर्ष के लिये निम्न दस सूत्री कार्यक्रम निश्चित किया गया :—

कार्यक्रम

१—केरल, गोआ, छोटा नागपुर, उड़ीसा, आसाम में एक-एक सम्मेलन करना।

२—इन पांचों क्षेत्रोंकी भाषाओं में उस क्षेत्र की आवश्यकता के अनुरूप उन्हीं की क्षेत्रीय भाषाओं में साहित्य तैयार करना।

३—उक्त पांचों क्षेत्रों की जनता में जागृति उत्पन्न करना, उन्हें विदेशी पादरियन पादरियों के षड्यन्त्रों से परिचित कराकर उन्हीं के द्वारा विदेशी मिशनरियों के राजनीतिक षड्यन्त्र समाप्त करने या भारत छोड़ने के लिए बाधित व इसी उद्देश्य के लिए कार्यक्रम आयोजित करना।

४—पूरे देश को प्रत्येक सम्भव प्राप्त उपायों द्वारा विदेशी ईसाई मिशनों की योजनाओं से परिचित करना।

५—सरकार को विदेशी पादरियों द्वारा किए जा रहे बलात् धर्म परिवर्तन रोकने के लिए विवश और प्रेरित करना।

६—धन व छल द्वारा किए गए धर्म परिवर्तित व्यक्तियों को पुनः आर्य धर्म में दीक्षित करना।

(शेष पृष्ठ ६ पर)

आर्यसमाज ठोस कार्य करे !

(श्री पृथ्वीचन्दजी, एम.ए. यंग इंडिया अकेडैमी, होशियारपुर)

मनुष्य के कर्तव्य दो प्रकार के होते हैं, 'स्वान्तः सुखाय', 'परान्तः सुखाय:।

'स्वान्तः सुखाय' कर्म, मानव की निजी उन्नति अथवा सुख के लिए और 'परान्तः सुखाय' दूसरों के कल्याण अथवा सुख के लिए होते हैं। आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द वीत-राग संन्यासी होते हुए भी इस निश्चय पर पहुंचे कि लोगों के कल्याणार्थ देश में भ्रमण कर-कर के उनके अज्ञान को दूर करना ही चाहिए, अतः उन्होंने न केवल भारत के कोने-कोने से बल्कि सारे संसार पर से अवैदिक अन्धकार दूर किया। यह उस महान युग पुरुष का 'परान्तः सुखाय' कर्तव्य था।

परन्तु आज हम देखते हैं, कि समाज के साप्ताहिक सत्संग कुछ अधिक 'स्वान्तः सुखाय' प्रोग्राम ही पेश करते हैं। हवन, सन्ध्या, प्रार्थना, व्याख्यान जो प्रायः आध्यात्मिक विषय पर ही होता है, कि परमात्मा के समीप एक व्यक्ति कैसे जा सके! परन्तु समाज के अन्दर वर्तमान आर्थिक और सामाजिक विषयों तथा राजनीतिक समस्याओं पर तनिक भी विचार नहीं होता, जैसे समाज की स्टेज पर ये निषिद्ध विषय हों! क्या इन से मानव जाति की उन्नति अथवा कल्याण नहीं होता? अथवा इन समस्याओं के सही हल सत्सङ्गों में प्रस्तुत करना किसी ईश्वरीय नियम का उल्लंघन करना है? यह "परान्तः सुखाय" कर्तव्य आर्यसमाज बिल्कुल नहीं कर रहा। परिणाम यह है कि साप्ताहिक सत्सङ्गों में उपस्थिति घटती चली जा रही है, एवं एक प्रकार से आर्यसमाज की उपयोगिता घटती चली जा रही है।

आज पबलिक को आवश्यकता है आटे की, शुद्ध खाद्य पदार्थों की। आर्य समाज में सेठ साहूकार अथवा धनाढ्य भी तो होंगे ही। क्या वे अपने आर्यसमाजी भाइयों के लिए आर्यसमाज की अध्यक्षता में या आर्यसमाज के अन्दर अथवा उसके समीप 'आर्य-सस्ता-खाद्य-भण्डार' नहीं खोल सकते? आज विवाह पर हजारों रुपया खर्च आता है जो एक साधारण व्यक्ति की हिम्मत से बाहर है। ग्रामों तथा शहरों में भी अधिकतर लोग इतना अधिक खर्च विवाह पर नहीं कर सकते। लोगों की इस कठिनाई को आर्य समाज क्यों दूर नहीं करता? आर्य समाज ग्रामों में इश्तहार बांटे कि जो लोग विवाह आदि या (यज्ञोपवीत आदि संस्कारों) पर रुपया खर्च नहीं कर सकते अथवा खर्च न करना चाहें वे आर्यसमाज के सत्संगों पर पधारें, विवाह या यज्ञोपवीत आदि संस्कार बिना खर्च के करा दिया जावेगा। ऐसे अवसरों पर आर्य समाज के उपदेशक पहले घन्टा पौन घन्टा आर्य समाज के सिद्धांतों का प्रचार करें, तत्पश्चात विवाह आदि का कार्य सम्पन्न कराएं अथवा संस्कार, फलाइंग स्क्वाड रखे जावें जो ग्राम ग्राम में जाकर लोगों में संस्कार बिना खर्च के करावें। इस प्रकार आर्य समाज लोक प्रिय बनेगा तथा ग्रामों में भी प्रचार होगा। ग्रामों में आज तक आर्य समाज नहीं पहुंचा, संस्कार बिना खर्च कराने के कारण आर्य समाज ग्रामों में पहुंच जाएगा। जो लोग आर्य समाज के संस्कार स्क्वाड द्वारा बिना खर्च कर के विवाह आदि संस्कार करायेंगे, वे समाज के नियम ग्रहण करेंगे, अथवा कम से कम समाज के प्रति आभारी तो अवश्य होंगे ही।

आर्यसमाज अपनी उन्नति के लिए अपने प्रोग्राम को महर्षि के बताए हुए तीन भागों में बांटे: विद्या सभा, धर्म सभा, राज्य सभा इन सभाओं के सदस्य भिन्न-भिन्न सरकारी नौकरियों से रिटायर्ड अथवा अन्य अनुभवी वयोवृद्ध आर्यसज्जन होने चाहिएं।

आर्य विद्या सभा—मानव मात्र के कल्याण के लिए सही विद्या संसार के कोने-कोने तक कैसे पहुंचे? तथा भारत में वर्तमान शिक्षा का सुधार कैसे हो? इसपर अपने सुझाव जनता तथा सरकार के सामने रखे। सही शिक्षा क्या है? कैसे दी जा सकती है? भारत में हिन्दी का प्रचार शीघ्र कैसे हो सके? इत्यादि इन प्रश्नों पर यह सभा प्रकाश डालता रहा करे।

आर्य धर्म सभा—आर्यसमाज अधिकतर आजकल धर्म पर बल दे रहा है। साप्ताहिक सत्संगों तथा वार्षिक उत्सवों पर धर्म चर्चा ही अधिक होती रहती है और वह भी शायद भारत की सीमाओं के अन्दर ही! क्या भारत के बाहर भी आर्यसमाजों के उत्सवों पर भारतीय आर्य-नेता आर्य धर्म प्रचारार्थ जाते हैं? विदेशों में प्रचारार्थ आर्यसमाज एक विशेष सभा बनाए, उसमें ऐसे उपदेशक रखे जो आर्य धर्म का विदेशी भाषाओं में वहां जा-जा कर प्रचार कर सकें। शुद्धि के कार्य को प्रगति देना इसी सभा का विशेष कर्तव्य हो।

आर्य राज्य सभा—संसार तथा भारत में किस तर्ज का राज्य होना चाहिये। क्या विश्व-कल्याण की भावना रखने वाले आर्यसमाज का यह कर्तव्य नहीं कि वह संसार तथा भारत की दुखी मानवता का इस विषय में मार्ग दर्शन करें?

प्रत्येक नगर नगर में जहां जहां आर्यसमाजें हैं, वहां वहां ये तीनों सभाएं होनी चाहिएं ताकि इन विषयों पर स्थानीय समस्याओं का हल वे किया करें और लोगों के कष्ट दूर कर सकें।

आर्य राज्य सभा में राज्य

(शेष पृष्ठ ६ पर)

मधु कलश

कोई चीज़ नहीं है जग में अपनेपन से बढ़कर
प्यार भरे मन में रहते हैं परमपिता परमेश्वर
कुतर-कुतर कर खा जाते हैं कपड़े को ज्यों कीड़े
नष्ट ईर्ष्या कर देती है इन्सानों को अक्सर

★

जितने सोये वही बहुत है लेकिन अब तो जागो
कर्म सेज के अन्दर आकर करतब को अनुरागो
कायर को दुनिया के अन्दर जगह नहीं है कोई
दुविधाओं को गले लगाओ बच करके मत भागो

★

नई नसों से नर खून की है निर्बाध खामी
हो तेरा हर कदम लिहाज़ा दुनिया में लासानी
स्वर्ग लोक को लाकर रख दो धरती के चरणों में
बार-बार जीवन के अन्दर आती नहीं जवानी

—विजय निर्बाध

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

(पृष्ठ ४ का शेष)

७ पिछले क्षेत्रों में कार्य करने के लिए योग्य कार्य कर्ता तैयार करने के लिए एक शिक्षिण शिवर लगाना।

८. आगामी नवम्बर मास मे समस्या के भावी हल के लिए एक अखिल भारतीय महा सम्मेलन आयोजित करना।

९. ईसाई परम्पराओं के त्याग और स्वदेशी परम्परा को ग्रहण करने के लिए देश को तैयार करना।

१०. ईसाईयों के स्कूलों में बच्चों को न पढ़ाने के लिए माता पिता को प्रेरित करना।

सर्व सम्मति से महात्मा आनन्द भिक्षु जी सरस्वती को समिति का अध्यक्ष चुना गया। देश के प्रसिद्ध नेता प्रो० रामसिंह जी एम० ए० केन्द्रीय संचालक नियुक्त किये गये, श्री पं० रघुवीर सिंह जी शास्त्री संयोजक, पं० भारतेन्द्रनाथ साहित्यालंकार प्रचार मंत्री, और श्री ब्रह्मदत्त जी भारतीय प्रकाशन-मंत्री चुने गये। समिति के सदस्यों की नामावली निम्न प्रकार है :—

(१) श्री जगदेव सिंह जी सिद्धांती, संसद् सदस्य, (२) श्री स्वामी समर्पणानन्द जी सरस्वती (३) श्री रामगोपाल जी शास्त्री वैद्य करोलबाग दिल्ली, (४) श्री पं० अमरसिंह जी आर्य पथिक, शास्त्रार्थमहारथी, (५) श्री पं० क्षतीश कुमार जी वेदालंकार, दिल्ली। (६) श्री पं० दयाराम जी शास्त्री, मंत्री आयसमाज रीडिगरोड, नई दिल्ली। (७) श्री डा० रघुवीरदास जी शर्मा, प्रधान आर्य उप प्रतिनिधि सभा, फर्रुखाबाद (८) पं० मदनमोहन जी विद्यासागर, प्रभु मन्दिर हैदराबाद (९) श्री नरेन्द्रभूषण जी चेगूर (केरल) (१०) श्री अभयशरण जी आयुर्वेदालंकार, आर्य समाज गोरखपुर, जबलपुर। (११) श्री बनारसीसिंह जी सहसम्पादक वीर अर्जुन दिल्ली (१२) श्री ओमप्रकाश जी आर्य, आर्यसमाज नयाबांस दिल्ली (१३) श्री राजेन्द्र मलिक, मंत्री आर्यसमाज कार्नवालिस स्ट्रीट कलकत्ता (१४) बटुकृष्ण जी वर्मन, मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा, बंगाल (१५) श्री प्रेमचन्द जी शर्मा एम० एल० सी० हाथरस (१६) महेन्द्र प्रताप शास्त्री, सासनी हाथरस (१७) शिवचरण जी अजमेर (१८) पं० आनन्द प्रिय जी, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, गुजरात (१९) श्री भगनलाल व्यास एडवोकेट बम्बई (२०) पवन कुमार बंसल कांटाबाजी उड़ीसा (२१) श्री रामविचार जी उपाचार्य दयानन्द ब्राह्म विद्यालय हिसार (२२) सन्तोषराज जी, मंत्री आर्य प्रादेशिक सभा जालन्धर (२३) ब्रह्मचारी दत्तमूर्ती जी, असुराश्रम गोरेगांव बम्बई। (२४) श्री भगवनदेव जी शर्मा, बड़ौदा।

भारतेन्द्रनाथ
प्रचार मन्त्री
अराष्ट्रीय मत निरोध समिति

आर्यसमाज चार चमन अशोक कालोनी करनाल

५-६-७ दिसम्बर को नवीन आर्यसमाज का वार्षिकोत्सव बड़ी धूमधाम व उत्साह के साथ सम्पन्न हुआ। सभा प्रधान श्री प्रिं० रलाराम जो M.A.M.L.A. के भाषणों से समाज में नवीन जागृति पैदा हो गई तथा श्री पं० त्रिलोकचन्द्रजी शास्त्री सम्पादक आर्यजगत व श्री रामेश्वरानन्द जी M.L.A. तथा अन्य महानुभावों के व्याख्यानों से जनता अति तृप्त हुई। यह इस समाज का प्रथम वार्षिकोत्सव बड़ी सफलता के साथ सम्पूर्ण हुआ। ५१/- वेद प्रचारार्थ सभा को प्राप्त हुए।

रणधीर
मन्त्री समाज

हिन्दू धर्म की अग्नि परीक्षा

(ले० श्री सुन्दरलाल जी बोहरा गुलाबसागर जोधपुर)

धनुर्धर किन्तु धैर्यवान व्यक्ति ही धर्म की ध्वजा को थाम सकते हैं। जिस समाज के वृद्धों में भी युवकोचित उत्साह है, समुद्र-सी गम्भीरता है और समय के अनुसार भावी पीढ़ी को निर्देशन देने की क्षमता है उस समाज की शान्ति और अस्तित्व को भयकर से भयंकर बवण्डर भी विक्षुब्ध नहीं कर सकते। आपसी संगठन, कुशल नेतृत्व व सहिष्णुता सम्प्रदाय विशेष को सदा बल ही प्रदान करते हैं। इतिहास भी उसी समुदाय का गुण गान करता है जो एक ही समय में साधुओं के सदृश शीलवान व सैनिकों जैसे शूरों से ओतप्रोत रहताहै। जिस संगठनमें कोरे फक्कड़ ही फक्कड़ भर्ती हो जाए तो वह संगठन इहलौकिक समस्याओं से सम्बन्धित न रह कर शनः शनैः पारलौकिक गुत्थियों को सुलझाने में ही उलझ जाता है। संन्यासियों के हाथ मे दण्ड का रहना इस बात का स्पष्ट प्रतीक है कि संन्यासी को शीलवान होने के साथ ही साथ शूर रहना भी आवश्यक है। यही बात थी कि राजर्षि होते हुए भी विश्वामित्र को श्री राम-लक्ष्मण को अपनी रक्षार्थ आमन्त्रित करना पड़ा। और यों भी सन्यासियों व धर्म-प्रचारक अपने भेष को ही कलंकित करते हैं। वैदिक धर्म के पुनर्संस्थापक श्री कुमारिल भट्ट, समर्थ गुरु रामदास, महर्षि दयानन्द और स्वामी विवेकानन्द जैसी निडरता ही किसी धर्म विशेष का प्राण हैं। यही कारण है कि हिंदू धर्म देहकी नश्वरता पर अहर्निश बल देता है। सही अर्थ में कर्मयोग उसी साधक का सफल व गौरवशाली सिद्ध होता है जो कर्म की साधना में अपने प्राणों की भी प्रवाह नहीं करता।

आज भी हिन्दू धर्म को ऐसे ही निडर और प्रबल धर्म-प्रचारकों की आवश्यकता है। राष्ट्र द्वारा अपनाई गई धर्म निरपेक्ष-नीति हिन्दू धर्म के लिए गला घोंटने वाली ही सिद्ध हुई है। जिस प्रकार बिना नाम का कोई व्यक्ति नहीं होता ठीक उसी तरह बिना धर्म के कोई राष्ट्र अथवा समुदाय नहीं होता—

(क्रमशः)

आर्यसमाज ठोस कार्य करे?

(पृष्ठ ५ का शेष)

सम्बन्धी चर्चा सदा होती रहनी चाहिये। तथा संसदों में भेजने योग्य सदस्य निश्चित किये जाने चाहिए।

ईसाई लोग भारत में निर्धनों में अधिक प्रिय इसलिये हैं कि वे उन्हें धन, शिक्षा, दवाई आदि से सहायता देते रहते हैं। आज भी भारत को पिछड़ा हुआ अथवा निधन देश कह कर ईसाई देश ही भारत की सहायता कर रहे हैं, उन के गिरजों में विवाह बपतिस्मा आदि संस्कार बिना खर्च के होते हैं। आर्य समाज रूढ़ियों से बच कर चले और जनता के कल्याणार्थ अपने प्रोग्राम को बदलते हुए समय के अनुकूल बनाए।

भौतिकवाद मानवता को निष्ठुर बना देता है, आज मानवता निष्ठुर हो रही है, अतएव आटमबम्ब बनाये बैठी है तथा भय का राज्य संसार पर छा रहा। अध्यात्मवाद मानवता को कोमल तथा यज्ञ मय बनाता है। आज संसार को आटमिक बम्ब की नहीं, आत्मिक आनन्द की जरूरत है। अतः आर्य समाज अध्यात्मकवाद का प्रचार पश्चिम में करे, तथा भारत के अन्दर लोगों की सामाजिक समस्याओं का समाधान उक्त प्रकार से करे॥

व्याकरण का सूर्य अस्त

आर्यसमाज तथा भारत के सारे क्षेत्र में यह समाचार बड़े ही दुःख से सुना जाएगा कि आर्य समाज की विशिष्ट विभूति, ऋषि दयानन्द जी के अनन्य निष्ठावान परमभक्त, वेदों के प्रकाण्ड पण्डित, संस्कृत के प्रख्यात स्कालर, व्याकरण अष्टाध्यायी तथा महाभाष्य के धुरन्धर पण्डित, काशी और भारतीय विद्वत् परिषद् के मूर्धन्य नेता, वेद वाणी के सम्पादक, त्याग तपस्या, सरलता सादगी की सजीव प्रतिमा श्री प. ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु काशी में स्वर्गवासी हो गए। उनके देहावसान पर कितना शोक छा गया यह तो सबके मन जानते हैं। व्याकरण का सूर्य अब अस्त हो गया। सारे भारत में एक यह दिव्य विभूति थी जिसने ऋषि दयानन्द द्वारा लिखित आर्ष पाठ्य प्रणाली को क्रियात्मिक रूप दिया था। अष्टाध्यायी द्वारा व्याकरण को पढ़ाना अपनी निष्ठा बनाकर उसे सारे देश में चमत्कार के रूप में दिखा दिया। श्री रामलाल कपूर ट्रस्ट को भी यह भारी श्रेय है कि इस ट्रस्ट के द्वारा बड़ी संख्या में वैदिक पुस्तकों वा भारी साहित्य प्रकाशित होता है। श्री पण्डित जी ने अपने जीवन में श्री पं. युधिष्ठिर जी मीमांसक जैसे वेद व व्याकरण के प्रकाण्ड पण्डित समाज को दिये। ब्रह्मदत्त जी तो चले गए। उनका चलाया महान् कार्य चलता रहे। ट्रस्ट अपना कर्तव्य निभाता रहे। सारे देश को भारी क्षती पहुंची। मौत ने व्याकरण के इस सूर्य को भी अस्त कर दिया।

आर्य समाज रामगढ़ (मसीहगढ़) नई दिल्ली-२५ का वार्षिकोत्सव

दिनांक २०-१२-६४ को आ० स० रामगढ़ के पांचवें वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में बाद दोपहर को श्री भक्तराम जी एडवोकेट की अध्यक्षता में ईसाई प्रचार निरोध सम्मेलन का आयोजन हुआ जिस में श्री पं० हरिशरण जी ने कहा कि वेद प्रचार कार्य आसाम आदि ईसाईयों के गतिविधि केन्द्रों में विशेष रूप से किया जावे। (२) जहां जहां ईसाईयों का जोर है वहां स्कूल कालिज आदि स्थापित कर भावी सन्तति को सचेत किया जावे। (३) धार्मिक प्रचार के अतिरिक्त गरीबों के लिए काटेज इण्डस्ट्री का भी प्रबन्ध करना चाहिए। (४) नवयुवक प्रचारकों को उन स्थानों पर आकर्षित वेतन देकर वहीं बसाया जावे जहां ईसाईयों का अधिक प्रचार है। इन के बाद श्री हरदयाल जी देवगुण ने कहा कि ईसाईयों की निम्न वर्ग से सहानुभूति नितांत थोथली है और सब से बड़े ईसाई देश अमेरिका में भी यह लोग अस्पृष्यता को नहीं मिटा सके और जहां भी इनका प्रचार हुआ है कि वही इलाका देश से जुदा होना चाहता है, नागालैंड हमारे लिए एक ऐसा ही सजीव उदाहरण है। नियोगी की रिपोर्ट के अनुसार प्रत्येक ईसाई स्कूल में देश भक्ति की भावना को न्यून किया जाता है।

श्री पं. रुचि राम ने अपने बम्बई भ्रमण के विषय में बताया कि कारडीनल ग्रीसस के विचारानुसार (जैसा कि उस ने पोप पाल को बताया) ईसाई प्रचार में एक मात्र बड़ी बाधा आर्य समाज और सत्यार्थ प्रकाश नामक पुस्तक है जिस को जब्त करने की हम ने नाकामयाब कोशिश भी की थी।

अन्त में श्री भक्तराम जी ने कहा कि आर्य समाज को खन्डन का काम बन्द न करना चाहिए। (२) हर वार्षिकोत्सव पर शास्त्रार्थ होना चाहिए। (३) वर्तमान नेताओं का ध्यान ईसाईयों के कुचक्रों की ओर दिलवाना चाहिए।

—ओमप्रकाश 'अंशु'
मन्त्री आर्य समाज रामगढ़
नई दिल्ली

श्री रघुवीर सिंह जी शास्त्री मन्त्री आर्यप्रतिनिधि सभा पंजाब द्वारा प्राप्त चुनाव

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, गुरुदत्त भवन, जालन्धर

अन्तरंग सभा २०२१-२२ (१९६४-६५)

१. श्री प्रो० रामसिंह जी (सभा प्रधान)
२. „ लाला हंसराज जी गुप्त (सभा उपप्रधान)
३. „ नवनीतलाल जी एडवोकेट „
४. „ रघुवीरसिंह जी शास्त्री (सभा मन्त्री)
५. „ मनोहर जी विद्यालंकार (सभा उपमंत्री)
६. „ म० भरतसिंह जी म्युनिसीपल कमिशनर रोहतक „
७. „ विद्याभास्कर जी सरीन लुधियाना „
८. „ रामनाथ जी भल्ला „
९. „ रामचन्द्र जी जावेद (पुस्तकाध्यक्ष)
१०. „ आचार्य भगवानदेव जी रोहतक
११. „ प्रो० शेरसिंह जी एम० एल०-सी० रोहतक
१२. „ खुशीलाल जी सूद शिमला
१३. „ जगदेवसिंह जी सिद्धान्ती दिल्ली
१४. „ कर्नल सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार गुरुकुल कांगड़ी
१५. „ लाला लालचन्द जी एडवोकेट जालन्धर।
१६. „ स्वामी समर्पणानन्द जी महाराज दिल्ली।
१७. „ लक्ष्मीदत्त जी दीक्षित, प्रिंसिपल आर्य कालेज पानीपत।
१८. „ भूपसिंह जी लोधी रोड, नई दिल्ली।
१९. „ डिप्टी शेरसिंह जी रोहतक
२०. „ चौ० देसराज जी दरियागंज, दिल्ली।
२१. „ स्वामी सत्यानन्द जी वैदिक साधन आश्रम जमुनानगर
२२. „ तीर्थराज जी वैद्य मोगा
२३. दिलीपसिंह जी आर्य, पानीपत
२४. कंवलसिंह जी V. P. O. नाहरी जिला रोहतक
२५. प्रो० रणजीतसिंह जी जाट कालेज, रोहतक।
२६. ठा० हरफूलसिंह जी ग्राम बराणी जिला रोहतक
२७. रघुवीरसिंह जी गुरुकुल सिंहपुर रोहतक
२८. „ शिवकरण जी चरखीदादरी जिला महेन्द्रगढ़
२९. „ धर्मपाल जी आर्य, नरवाना मण्डी
३०. „ शेरसिंह जी V. P. O. मालोट रोहतक
३१. „ राजसिंह जी किनारी बाजार, दिल्ली
३२. „ देवेन्द्रकुमार जी नवांशहर (जालन्धर)
३३. „ जयसिंह आर्य, कोसली जिला गुड़गांवां
३४. „ पं. महामुनि जी आचार्य, गुरुकुल भैंसवाल रोहतक
३५. सत्यदेव जी विद्यालंकार जी० बी० रोड, दिल्ली

चरित्र निम

लेखक—श्री पिशोरील

धूम्रपान :—(Smoking) धूम्रपान भारतवर्ष में इतना बढ़ गया है कि छोटे बड़े गरीब अमीर सब इस विष का पान करने लगे हैं। बच्चों को भी सिगरेट बीड़ी पीने की लत लग गयी है। घर, दफ्तर, दुकान, मन्दिर, धर्मशाला जल्से जलूस सभा सोसाइटी में, गाड़ी, बस तथा गली बाजार में यहां तक कि बैठकर भी सिगरेट पीते रहते हैं। रोगी के पास भी बैठे हुए सिगरेट सुलगाई जाती है। विवाह उत्सव में तथा मृतक के घर शोक प्रकट करते हुए भी सिगरेट पीने में शर्म महसूस नहीं करते। शमशान भूमि में जबकि सामने चिता जल रही हो सिगरेट के कश वहां भी लगते रहते हैं।

एक बार मेरे सामने एक व्यक्ति अपने छोटे बच्चे को गोद में ले कर सिगरेट पिला रहा था मुझे बहुत दुःख हुआ और क्रोध भी आया मैंने उसे कहा 'मूर्ख ! बच्चे को विष क्यों पिला रहा है।' वह घबरा कर कहने लगा, 'कैसा विष' मैंने कहा, 'यह सिगरेट जो पिला रहे हैं यह विष ही तो है।' उसने फिर कहा, 'क्या करूं, इस को आदत पड़ गई है, यह मांगता है न दूं तो रोता है।' यह एक सच्ची घटना है। क्या यह कम दुःख की बात है।

शराब आदि नशे तो सेवन करने वाले को हानि पहुँचाते हैं परन्तु धूम्रपान से उनको भी हानि होती है जो इसका सेवन नहीं करते किन्तु पास में बैठे होने के कारण सांस के द्वारा उनके अन्दर भी यह विष पहुँच जाता है तम्बाकू के अन्दर निकोटीन (NICOTINE) नाम का विष होता है जो स्वास्थ्य के लिए अत्यन्त हानिकारक है। इस विषय में डाक्टर, वैद्य, हकीम सब सहमत हैं। इस से खांसी, दमा; खून की खराबी, और केन्सर तथा टी. बी. (T. B.) जैसे भयानक रोग भी हो जाते हैं। टी. बी. के विषय में डाक्टरों की खोज (RESEARCH) यह है—कि टी. बी. के रोगियों में अधिक संख्या उनकी होती है जो कि अधिक तम्बाकू पीते हैं। इस से फेफड़े गलने सड़ने लगते हैं अन्त में मनुष्य टी. बी. का शिकार हो जाता है। तम्बाकू पीने वाले युवक दौड़ने भागने वाली खेलों में पीछे-पीछे रहते हैं। क्योंकि उनका सांस जल्दी फूल जाता है अधिक तम्बाकू पीने वालों की सन्तान निर्बल, रोगी तथा अल्पायु होती है। राजनैतिक आन्दोलनों में जो लोग सत्याग्रह करते रहे हैं उनमें जो तम्बाकू पीने के अधिक व्यसनी थे। उन्हें जेल में तम्बाकू न मिलने के कारण माफी मांग कर जेल से बाहिर आना पड़ा।

जो व्यक्ति स्वयं तम्बाकू पीते हैं उनके बच्चों को भी यह बुरी लत लग जाती है। उनके बच्चे छिप-छिप कर सिगरेट बीड़ी पीने लगते हैं। पैसे न हों तो घर से चोरी करके सिगरेट बीड़ी खरीद कर पीते हैं।

इससे स्वास्थ्य की हानि के साथ धन की भी बड़ी भारी हानि होती है। एक व्यक्ति प्रतिदिन कम से कम दो आना की सिगरेट-बीड़ी पीता होगा। इसके साथ दियासलाई का खर्च मिला कर एक वर्ष में ५० रुपए से अधिक खर्च हो जाते हैं और पचास वर्ष में ढाई हजार रुपए का तम्बाकू एक ही व्यक्ति पी जाता है। अगर घर में चार व्यक्ति तम्बाकू पीने वाले हों तो दस हजार रुपया खर्च हो जाता है। भारतवर्ष में जितने लोग तम्बाकू पीते हैं यदि इन सब का हिसाब लगाएं तो अरबों रुपया तम्बाकू की भेंट हो जाते हैं।

मैं उन लोगों की सेवा में निवेदन करना चाहता हूं जिनको अपनी सन्तान का अथवा अपने देश के नवयुवकों का हित प्रिय है तो वे स्वयं इस विष लता से बचें और दूसरे लोगों को भी इस विषपान से बचाएं। चरित्र निर्माण में धूम्रपान भी एक भारी रुकावट है। (क्रमशः)

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साधारण अधिवेशन

३१ जनवरी सन ६५ को सम्पन्न हो रहा है, जिन समाजों का दशांश अभी तक सभा के कार्यालय में नहीं आया वे शीघ्र भेजने की कृपा करें।

—ज्ञान चन्द
मन्त्री सभा

घड़ोठी रोहतक में वेद प्रचार

श्री पं. प्रभुदयाल जी आर्य प्रभाकर ने अपनी मंडली सहित घड़ोठी में चार दिन तक वेदप्रचार किया जिससे प्रभावित होकर प्रादेशिक सभा को १०१/-वेद प्रचारार्थ दान प्राप्त हुआ। इस कार्य में चौ० रामचन्द्र जी सरपंच व चौ० धारासिंह जी ने विशेष सहयोग दिया। सभा इन सज्जनों का धन्यवाद करती है।

शोक समाचार

आर्यसमाज लोहगढ़ अमृतसर

राष्ट्र पण्डित ब्रह्मचारी ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु की दुःखद घटना को सुनकर आर्यजगत चकित रह गया, सारी संस्थाएं बन्द हो गईं। और सब स्थानों पर सभाएं करके पंडित जी की सेवाओं की सराहना की गई।

पिण्डीदास ज्ञानी

आर्यसमाज रामगढ़ (मसीहगढ़) देहली

श्रीयुत राष्ट्र कवि मैथलीशरण जी गुप्त एवं श्री पूज्य पं० ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु के दुःखद देहांत पर आर्यसमाज रामगढ़ मसीगढ़ नई दिल्ली हार्दिक शोक प्रकट करता हुआ प्रभु से प्रार्थना करता है कि वह इन महापुरुषों को सद्गति प्रदान करे। —ओ. पी. 'अंशु'

आर्यसमाज चण्डीगढ़ सैक्टर ८

श्री वीरेन्द्र जी व श्री नरेन्द्र जी एम. ए. की पूज्य माता जी तथा आर्य जगत के महा विद्वान श्री पं० ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु के निधन पर शोक प्रगट करते हुए सभी बहिन भाईयों ने श्रद्धांजलि भेंट की।

आशुराम पुरोहित

जिला वेद प्रचारिणी सभा होशियारपुर

श्री वीरेन्द्र जी आस्तिक 'प्रताप' तथा नरेन्द्र जी एम. ए. की पूज्य माता जी के निधन पर तथा वेदों के प्रकाण्ड पंडित ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु की आकस्मिक मृत्यु पर गहरा शोक प्रकट करती हुई दोनों आत्माओं की सद्गति के लिए प्रभु से प्रार्थना करती है और उनके परिवारों को इस दारुण कष्ट सहने की शक्ति प्रदान करने की ईश्वर याचना करती है।

—बूटाराम मन्त्री सभा

मुद्रक व प्रकाशक श्री सन्तोषराज जी आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर द्वारा वीर मिलाप प्रैस, मिलाप रोड जालन्धर से मुद्रित तथा आर्यजगत कार्यालय महात्मा हंसराज भवन निकट कचहरी जालन्धर शहर से प्रकाशित मासिक—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर



टैलीफोन नं० ३०५७ [आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधिसभा पंजाब जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd. No. P. 1:

एक प्रति का मूल्य १३ नये पैसे — वार्षिक मूल्य ६ रुपये

वर्ष २५ अंक २) २७ पौष २०२१ रविवार—दयानन्दाब्द १४०— १० जनवरी १९६५ (तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

वेद सूक्तय:

त्वं वृषन् वृषेदसि

हे जगत् के स्वामी प्रभु देव! आप ही वृषन—सुखों की वर्षा करने वाले हो। आनन्द के वपक हो तथा वृषा इन्—आप ही सच्ची शांति के दाता हो आप के सिवाय और कोई भी शांति तथा सुखों का दाता नहीं है।

नो राये दुरोवृधि

जगदीश्वर ! आप दया करते हुए राये धन तथा सुख प्रदान करने के लिए नः—हमारे दुरः—द्वार वृधि खोल दीजिये। हम आप के हैं, आप के द्वार पर खड़े हैं। सुख के भण्डार ! अपनी कृपा के कपाट खोल देवें।

द्युमन्तं त्वा हवामहे

विश्व के मालिक ! आप, द्युमन्त—तेज प्रकाश के भण्डार आप को हम सारे आप के भक्त बन कर हवामहे—बुलाते हैं, पुकारते हैं। आप के सिवाय हम पुकारें भी किस को। और हमारा है भी कौन ?

सा म वे द से

वे दा मृ त

ओ३म् ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः। तेभिर्नो अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुंचन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यो स्वर्केभ्यः इदन्न मम ॥

अर्थ—हे वरुणदेव ! आप के (ये) जो (ते) तेरे (शतम्) ये सैंकड़ों तथा (सहस्रम्) हजारों (यज्ञियाः) यज्ञ के (पाशाः) फन्दे और बन्धन (वितताः) फैले हुए हैं (महान्तः) तथा बड़े २ हैं। हे देव ! (तेभिः) उन सारे पाश फन्दों से (नः) हमें (अद्य) आज इस जीवन में (सविता) सविता बन कर (उत) तथा (विष्णुः) सर्व व्यापक विष्णु बने हुए आप (विश्वे) उन सब को (मुञ्चन्तु) मुक्त कर दें। उन पाशों से छुड़ा देवें हमें आप और ये (मरुतः) ज्ञानी विद्वान मरुत स्वर्काः) पूजा के योग्य ये विद्वान लोग। यह भेंट वरुण के लिए, सविता विष्णु के लिए है तथा सारे देवों के लिए एव पूजनीय मरुतों विद्वानों के लिए है। (स्वाहा) मेरा कथन सत्य हो।

भाव—प्रभो ! इस जगत में जीवन को बन्धन में डालने वाले अनेक पाश हैं जो समय २ पर हमें फंसा लेते हैं। वरुण देव ! कृपा करके उन बड़े २ सैंकड़ों हजारों बन्धनों से हमें मुक्त कर दें। हम उन में कभी न फंसें। आप विष्णु हैं, सविता हैं, आपसे याचना है कि आपकी दया का दान मिले। विद्वानों तथा पूजनीय ज्ञानी पुरुषों का पथप्रदर्शन मिले। वे हमें ऐसे २ पाशों से रहित करें—सं०

ऋषि दर्शन

आत्मवदानन्दप्रदम्

यह उत्तम राज्य धर्म और क्षत्रिय का वीर शासन आत्मा के समान या अपने ही आदमी के समान आनन्द देने वाला होता है। कष्ट कभी पास नहीं आने देता—

सर्वेभ्यो महत्तरम्

यह क्षत्रिय वीर सदाचारी राजा का काम सारे कामों से महत्व वाला होता है। अच्छे शासक के राज्य में ही सारी प्रजा उन्नति किया करती है। सुखी रहती है।

राजन्ये सत्यविद्या

क्षत्रिय में सत्यविद्या होनी चाहिए। राजा तथा शासक का धर्म है कि वह प्रजा के प्रत्येक कार्य का निर्णय सत्य के अनुसार ही करता रहे। जहां रिश्वत प्रलोभन या भय होता है वहां सत्य नहीं है।

भा ष्य भू मि का से

अधिष्ठाता—श्री संतोषराज जी — सम्पादक—त्रिलोक चन्द्र शा

धार्मिक चर्चा—

राष्ट्र के पुरोहित

लेखक—श्री पं० सत्यप्रिय जी शास्त्री सिद्धान्त शिरोमणि
प्राध्यापकः—दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार

वेद का पवित्र वचन है "वय राष्ट्रे जागृयामः पुरोहिताः" अर्थात् हम पुरोहित अपने राष्ट्र के प्रति जागरूक रहें। सामान्यतः जन्मना ब्राह्मण तथा अन्यों के कुलों में जा कर धार्मिक कृत्य सम्पन्न कराने वाले को ही साधारणमति जन पुरोहित नाम से पुकारते हैं। परन्तु इसके मूल में जो गम्भीरता एव सौन्दर्य निहित है विज्ञजन ही उसका स्वाद ले सकते हैं। महर्षि यास्क ने निरुक्त में लिखा है "पुरोहितः करमात् पुर एनंदधति" अर्थात् जिसे जीवन रूपी लता के विकासार्थ अपने सन्मुख रख कर शिक्षा ग्रहण कर सकें। जो आदर्श हो, Model हो, जनता उसके जीवनरूपी चित्र को सन्मुख रख कर अपने जीवनरूपी श्वेतपत्र पर भी सर्वांग विकास रूपी विचित्र रंगों से विचित्र चित्र तैयार कर सकें। उसके जीवन का हर एक पहलू अपने यजमानों के लिए आकर्षक एवं अनुकरणीय रहें तथा वे बरबस ही जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पुरोहित द्वारा प्रस्तुत आदर्श का अनुकरण करने में तत्पर हो जायें। किसी दण्डभय, अनर्थभय, लोभ अथवा शापभय से नहीं प्रत्युत उसके जीवन की नैतिकता इतनी ऊंची हो कि अपने यजमानों को भी नैतिकरूप से उतनी ऊंचाई पर जाने को प्रेरित करती रहे। यदि आज हमारे स्वतन्त्र राष्ट्र में ऐसे पुरोहित सर्वदा जागरूक निस्तन्द्र रहें तो राष्ट्रिय स्वाधीनता को कोई भी आन्तरिक वा बाह्य भय की चिन्ता न सताये। वैसे राष्ट्र का प्रत्येक नागरिक पुरोहित है। नहीं है तो होना चाहिये, सच्चे पुरोहित के अभाव में राष्ट्र पतित एवं विनाशोन्मुख हो जाता है, उसे उस अवस्था में जाने से कोई शक्ति नहीं रोक सकती। शक्ति तथा अधिकार के नशे में चूर आज के शासकों को वेद के इस पवित्र आदेश को भुलाना न चाहिये। आज शासकों का प्रयत्न होना चाहिये कि राष्ट्र में राष्ट्र हितैषी पुरोहितों की संख्या बढ़ायें, स्वयं उनकी जीवन ज्योति से अपने जीवन को भी प्रज्वलित करें। आज जब कि चारों ओर से अनैतिकता अराष्ट्रीयता जाति भेद आदि आन्तरिक शत्रु एवं पश्चिम तथा उत्तर की दिशाओं से अन्य दुर्दान्त देश हमारी स्वाधीनता पर दांत कटकटा रहे हों तो ऐसे पुरोहितों को नितान्त आवश्यकता है। जो देशवासियों में स्वाधीनता के प्रति स्नेह जगा सकें। आज सिसोदिया कुल के पुरोहित के सदृश राष्ट्र-प्रेमी पुरोहितों की उपस्थिति सर्वथा वांछनीय है जो राष्ट्र में उत्पन्न फूट के विनाश के लिए प्राणों की भेंट चढ़ा सकें आज स्वातन्त्र पथ रक्षक राणाप्रताप, शिवा, सांगा, छत्रसाल जैसे शूरमाओं की उपस्थिति भी राष्ट्र चाहता है। जो परिवार के स्नेह सूत्र की परवाह न कर घास पात की रोटियां खा, बन पर्वत एवं मरु प्रदेश की खाक छानकर भी स्वाधीनता के दीपक की ज्योति को जलाये रखने में अपना गौरव एवं जीवन की सार्थकता समझें। आज राष्ट्र को उन भामाशाहों की आवश्यकता है जो अपने जीवन भर की नहीं वरन अपने पूर्वजों को खून पसीने की कमाई को भी राष्ट्र रक्षा में अर्पण करके ही सन्तोष एवं सुख का श्वास लेते। इतना सब होने पर भी यदि राष्ट्र में विद्वान् जो भारतीय जनता में अपनी सभ्यता, संस्कृति एवं परम्पराओं के प्रति प्रेम जगा सकें न होंगे तो राष्ट्र का वास्तविक उत्थान होना सम्भव न होगा। जो देश, जो संघ अपनी संस्कृति को भुला बैठते हैं ससार में उनका अस्तित्व धूल में मिल जाता है। अपना प्राचीन गौरव एवं इतिहास ही समाज, देश एवं संघों को आगे बढ़ने एवं अपनी सत्ता को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए प्रोत्साहित करता है। जिन की सभ्यता एवं संस्कृति विनष्ट हो जाती है, उनका बाह्य स्वरूप विनष्ट होना कठिन नहीं है। उसी भाव को जगा कर राष्ट्रवासियों में उस की रक्षा एवं स्थिरता तथा अभिवृद्धि के लिए उनको उद्यत करने वाले वास्तवासिक पुरोहित ही होते हैं। भगवान करे कि संकटोपन्न स्थिति युक्त हमारे देश में ऐसे पुरोहित बड़ी संख्या में हों तथा वे अपने कर्तव्य का पालन कर स्वाधीनता के रक्षक बनें।

विचार तरङ्ग (२)

(ले०—श्री राममूर्तिजी कालिया, एम.ए.मालवीय नगर नई दिल्ली)

कुछ ऐसी विचित्र बात है कि साधारणतया मनुष्य पापों के फल को भोगना नहीं चाहता किन्तु फिर भी पाप करने में उसे संकोच नहीं। पुण्यों के फल को उसको चाहना है किन्तु पुण्य कार्य करने के लिए उद्यत नहीं। साधारण बोलचाल की ही बात है। कटुता के प्रयोग से दूसरे का मन संतप्त होता है खिन्नता होती है, वैमनस्य बढ़ता है, हृदय छलनी हो जाता है यह कौन नहीं जानता। कटु वाणी से दूसरों के मुखों की मुस्कान को अपहृत कर लेना मन को गुलामी डाल देना, कितना बड़ा पाप है किन्तु यह सब जानते हुए भी, इस क्रिया से हम कितना बचते हैं इसका अनुमान हम स्वतः कर सकते हैं। विपरीत इसके वाणी में माधुर्य ले आना कितना उत्तम है। कोसों चलने की थकान हवा हो जाती है जब कर्ण रन्ध्रों में माधुर्य पूर्ण शब्दों का समावेश होता है। किन्तु जानते हुए भी कि 'मधुर वचन हैं औषधि, कटुक वचन हैं तीर' हम मधुर भाषी बनने का प्रयास नहीं करते।

मधुर बोलने से विपक्षी को वश में किया जा सकता है। 'नाथ संभु धनु भंजनिहारा, होइहि केउ एक दास तुम्हारा' कह कर श्री रामचन्द्र को मारने के लिये आतुर परसा उठाये हुए परशुराम को मन्त्रमुग्ध सा बना लिया था। श्री राम के बोलनेमें कुछ विशेषताएं थीं। विद्वान् लेखक गोस्वामी तुलसीदास ने इस ओर संकेत किया है। राम जहां भी बोले वहां 'देश, काल, अवसर अनुसार, बोले वचन विनीत विचारी। बोलने की ये पांचों विशेषतायें धारण करने योग्य हैं।

व्यर्थ की बकवाद में न जाने क्यों, कई आनन्द अनभव करते हैं। मेरे विचार में सहस्त्रों बेकार के शब्दों से तो वह एक शब्द कहीं अच्छा है जिस से किसी हृदय को शान्ति मिले। चुप रहना बहुत अच्छा है, बकवाद की तुलना में चुप्पी तो स्वास्थ्य के लिये योग्य डाक्टर का काम करती है। 'Dr Diet Drn Quiet aud Dr

(शेष पृष्ठ ८ पर)

आर्य जगत्

वर्ष २५] रविवार २०२१, १० जनवरी १९६५ [अंक २

मकर संक्रांति का संदेश

पर्व और त्योहार समाज व देश के लिए सजीवनी का काम देते हैं। वर्ष के बाद आने वाला पर्व हो या त्योहार हो—सारे समाज में नया जीवन डाल देता है। उसका उद्‌बोधन कर देता है। इसी लिए पर्वों त्योहारों का राष्ट्र के जीवन में बड़ा महत्व होता है। कुछ पर्व धार्मिक या राष्ट्रिय जीवन से सम्बन्ध रखते हैं और कुछ मौसम के साथ। चाहे किसी प्रकार का भी पर्व हो—उस से सारे देश को एक नया जीवन मिलता है, आगे बढ़ने का सन्देश प्राप्त होता है। पर्व को मनाते हुए सारा समाज अपने बीते समय की त्रुटियों पर विचार करके भविष्य के लिए आगे बढ़ने की दीक्षा लिया करता है। ये पर्व या त्योहार जीवन के लिए आवश्यक व्रत का रूप होते हैं। मकर संक्रांति के पवित्र पर्व का सम्बन्ध विशेष रूप से मौसम के साथ है। दो-दो मास की एक ऋतु बनती है। ये सारी छः प्रचार की समय २ पर आने वाली मौसमें अपने साथ भिन्न २ प्रकार का जहां परिवर्तन लाती हैं। वहां इन का सन्देश भी अपना २ होता है। वर्ष के पौष-माघ ये दो महीने हेमन्त ऋतु के माने गये हैं। इस मौसम में शीत प्रधान होता है। हिमपात भी होता है। वायु बड़ी ठण्डी चलती है। रक्त का संचार ठण्डा होने से मन्द हो जाता है। यह मौसम कड़ाके की सर्दी का होता है। शरीर को ठीक रखने के लिए तथा जाड़े से सुरक्षित होने के लिए गर्म वस्त्रों का एवं गुड़, तिल या इसी प्रकार के अन्य पदार्थों का विशेषत: प्रयोग किया जाता है। अग्निदेव चाहे सूर्य के रूप में हो या अग्नि के रूप में, इस मौसम में बड़ा प्यारा लगता है। पौष मास बीत जाने और माघ के प्रारम्भ में पहिले दिन ही सक्रान्ति को मकर संक्रांति के नाम से यह पर्व मनाया जाता है। अन्न के लिए भी वर्षा की आवश्यकता होती है। हेमन्त का आधा भाग भी गुजर जाता है। भारत में इस पर्व पर यज्ञ करने की परम्परा है। हेमन्त के कड़ाके के जाड़े को आर्यों का चैलेंज था कि हेमन्त! नदियों के जल को जमा सकते हो, प्रकृति मे शीतलहर चलाकर शीतपन पैदा कर सकते हो। पर हमारे जीवन मे ठण्ड नहीं पैदा कर सकते। हमारे समाज की गर्मी को नहीं कम कर सकते। आज के दिन से सूर्य उत्तरायण होने लगता है। उसका ताप गर्मी बढ़ने लगती है। हेमन्त से आर्य जीवन की सदा टक्कर रही है। आर्यो! ध्यान रखना। यह हेमन्त हमारे समाज के शरीर के रक्त को, काया को, उत्साह को ठण्डा न करने पाए। खूब संघर्ष की अग्नि प्रदीप्त करके आगे बढ़ते चलो। विचारों, कार्यों, प्रगति, साहस में उत्तरायण ला दो। समाज की भी आज संक्रान्ति का दिन है। उत्साह की अग्नि से हेमन्त को भगा दो।

—त्रिलोक चन्द्र

आर्य नेताओं पर वार

आर्यसमाज एक विशाल आन्दोलन है! हर जीवन के क्षेत्र में इस का निष्काम काम सारे देश का आज भी नेतृत्व कर रहा है। किन्तु दुःख होता है कि देश को देशभक्ति का सर्वप्रथम पाठ पढ़ाने वाले आर्य समाज के मान्य वीरों के साथ भी सरकार की ओर से बुरे व्यवहार को देख कर मन क्षुब्ध हो कर रोष भी आता है। गत दिनों बम्बई में ईसाईयों का एक सम्मेलन हुआ। रोम से पोप पाल भी पधारे। धर्मनिरपेक्ष सरकार ने एक साम्प्रदायिक जल्से के लिए अपनी धर्म निरपेक्षता को एक कोने में रख कर बहुत कुछ सुविधा दे कर सम्प्रदाय के जाल मे उलझा दिया। किन्तु जब हमें पता लगा कि मध्य दक्षिण भारत के आर्य नेताओं को उन दिनों के अपने नगर व घर में ही पाबन्दी लगा कर बाहिर न निकलने का आदेश दिया तो यह सुन कर बड़ा ही खेद हुआ।

लातुर दक्षिण हैदराबाद के आर्य समाज के नेता श्री. डी. आर दास जी बड़े प्रसिद्ध हैं। समाज व जनता मे उनकी बड़ी प्रतिष्ठा है समाज के मान्य सज्जनों में गिने जाते हैं। उन की सौम्यता, व्यावहार, तथा बोल चाल सब को मोह लेता है। वहां समाज एवं आर्य प्रतिनिधि सभा के मान्य स्तम्भों मे से हैं। उन का तो देवता कहा जाता है। व्यक्तिगत परिचय के आधार पर हम कह सकते हैं कि जीवन के आदर्श पुरुष हैं। उनका अपने पराये पूरा-पूरा मान करते हैं। पर जब सुना कि वहां के मजिस्ट्रेट ने ईसाई सम्मेलन बम्बई के दिनों में एक आर्डर देकर उनको लातूर से बाहिर जाने पर पाबन्दी लगा दी। हमें बड़ा दुःख है। आर्य-समाज सभ्यता का पुजारी व विधान का प्रेमी है। श्री डी. आर दास जी पर पाबन्दी हमारे विचार में सारे समाज पर ही पाबन्दी है। उनका अपमान सारे समाज का अपमान है। चाहे समय बीत गया पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली तथा अपनी सारी प्रान्तीय सभाओं को इसके बारे में हैदराबाद की सरकार को कड़े शब्दों में लिखना चाहिए। यह प्रश्न श्री डी. आर, दास जी का नहीं वरन् सारे समाज का है। आगे के लिए ऐसा न होवे। समाज को ऐसा कमजोर नहीं समझना चाहिए प्रबल है।

—त्रिलोकचन्द्र

पं. दौलतराम जी शास्त्री

अमृतसर आर्य समाज की विभूति हैं। सारा जीवन समाज की संस्था में अर्पित कर दिया। भारी समाज की सेवा की है। सारा परिवार समाज के रंग में रंगा है। इनके सुपुत्र प्रिंसिपल हंस स्वरूपजी एम. ए. श्री वैशम्पायन जी, वैद्य विद्यासागर जी आर्य समाज की निधियां हैं। पण्डित जी ने आर्यसमाज के महाधन पं. अमीचन्द जी के सारे गीतों को ढूंढ-ढूंढ कर अमी सुधा के रूप में सुन्दर पुस्तक प्रकाशित करवाई है। पं० अमीचन्द जी का जीवन महर्षि दयानन्द जी के एक ही वाक्य से बदल गया था। कितने मीठे गीत लिखे। आज भी समाजों में जय-जय पिता—आदि के उनके गीत गाए जाते हैं। समाज उनको भूल गया था। पं. दौलतराम जी को इस बात का श्रेय है कि पं. अमीचन्द के गीतों का संकलन करके बड़ी भारी कमी पूरी कर दी—सं.

श्रीयुत डाक्टर जी स्वाध्यायशील सज्जन हैं। दर्शनों पर गम्भीर चिन्तन मनन करते हैं। आर्यजगत में समय २ पर अपने संचित विचार लिखने की कृपा करते रहते हैं। गत लेख में हेय और हेयहेतु पर प्रकाश डाला जा चुका है। इस में इस से आगे हान और हानोपाय पर बड़ा गम्भीर विवेचन है।—स०

दर्शन चर्चा—

जीवन का दर्शन

(ले० श्री डाक्टर शंकरदास जी लारेंस रोड अमृतसर)

दर्शनशास्त्र के विषय

दर्शन शास्त्र के चार प्रतिपाद्य विषय हैं। हेय (दुःख) हेयहेतु (दुःख का कारण) हान (दुःख का नाश) और हानोपाय इन सब का भली भान्ति ज्ञान होने पर दुःखों की अत्यन्त निवृत्ति होती है एवं शाश्वत सुख की प्राप्ति होती है जो कि प्रत्येक का ध्येय है। यहां से पहले 'आय जगत' के अंक में पहले दो का अर्थात हेय—दुःख और हेयहेतु दुःख का कारण के वास्तविक स्वरूप का वर्णन कर चुका हूं। अब उस के आगे हान—दुःखों की निवृत्ति का वास्तविक स्वरूप आरोग्यता (health) पर विचार करते हैं—योग के साधन पाद के २५वें सूत्र में कहा है—तदभावात् संयोगाभावो हान तद्दृशे: कैवल्यम्। उस अविद्या के अभाव से संयोग का अभाव हान है। वह द्रष्टा पुरुष का कैवल्य है। उस संयोग के हेतु रूप अविद्या के अभाव से बुद्धि और पुरुष का संयोग का अभाव अर्थात् सर्वथा बन्ध रहित होना है। वह द्रष्टा का कैवल्य है, पुरुष का अलग रहना गुणों से सयोग रहित होना। दुःख कारण की निवृत्ति में दुःख का उपराम-आरोग्य-healthy होना हान है। उस समय स्वरूप में प्रतिष्ठा वाला पुरुष स्वस्थ आत्मा होता है।

अब हान की प्राप्ति का उपाय अर्थात् निवृति के उपायों का वास्तविक क्या है? कहते हैं। योग साधन पाद के २६ वें सूत्र में आता है कि :—

विवेकख्यातिर विप्लवा हानोपाय :

विप्लव रहित विवेक दृशिका निरोध समाधि हान का उपाय है। बुद्धि और पुरुष के अलग होने का भान-दर्शन-ज्ञान विवेक ख्याति है और मिथ्याज्ञान जिससे निवृत्त हो गया है, ऐसी विवेक ख्याति अविप्लव अर्थात् शुद्ध और निर्मल कहलाता है। जब मिथ्या ज्ञान जले बीज के समान नष्ट उत्पत्ति या न उत्पन्न करने वाला हो जाता है। उस के रजो गुण नैमित्तिक क्लेश के दूर हो जाने पर सत्व के परम प्रकाश में, निर्मलता में परम वशीकार संज्ञा वैराग्य शुद्ध हो जाता है ऐसी निर्मल विवेक ख्याति हान का उपाय है। उस से मिथ्या ज्ञान का बीज दग्ध हो कर उत्पन्न करने के योग्य नहीं होता निर्मल विवेक ख्याति में योगी की जिस विशेष ज्ञान वाली ऊंची प्रज्ञा होती है। उसका स्वरूप बतलाते हैं। योग दर्शन २-२७ में कहा है तस्य सन्तधा प्रान्त भूमि: प्रज्ञा—

उस निर्बाध विवेक ख्याति वाले की, निरोध समाधि वाले योगी की सात प्रकार की अशुद्धि के आवरण मल रूप के चले जाने पर बुद्धि में अन्य ज्ञान की उत्पत्ति के अभाव में विवेक योगी की सात प्रकारकी प्रज्ञा हो जाती है। यथा—

१—हेय मान लिया। अब जानने योग्य नहीं रहा।

२—हेय के हेतु अब क्षीण हो गए!

३—हान-मोक्ष का साक्षात्कार कर लिया है।

४—हान का उपाय निर्मल विवेक ख्याति सम्पादन कर लिया है। अब कुछ करना शेष नहीं रहा। यह प्रज्ञा की चार प्रकार की कार्य कर्तव्य की मुक्ति है। यह प्रज्ञा पर वैराग्य की पराकाष्ठा है। बुद्धि व्यापार की प्रान्त रेखा है।

चित्त (बुद्धि) व मुक्ति तीन प्रकार की है।

५—गुण अधिकारों से निवृत्त हुई बुद्धि का कर्तव्य भोग अपवर्ग-मोक्ष देना समाप्त हो गया।

६—बुद्धि को बनाने वाले गुण अपने में लय होने लगे। प्रयोजन शेष से निवृत्त हो गई।

७—गुणसम्बन्ध से रहित स्वरूप मात्र ज्योति वाला निर्मल केवल पुरुष है।

इस प्रकार सात प्रकार की उत्कृष्ट भूमि वाली अवस्था वाली प्रज्ञा को अनुभव करता हुआ केवल या जीवन्मुक्त कहा जाता है। बुद्धि के अपने कारण में लीन होने से मुक्त कुशल या विदेह मुक्त हो जाता है।

अब कैवल्य दर्शन की देने वाली विवेक ख्याति की उपलब्धि के साधन बतलाते हैं। विवेक ख्याति की सिद्धि के साधनों का वास्तविक स्वरूप आरम्भ किया जाता है। दवाई की प्राप्ति के साधन। क्योंकि बिना साधन आरोग्यता-स्वास्थ्य की सिद्धि नहीं होती। यह विवेक ख्याति या तत्व ज्ञान किस प्रकार से होता है। न्याय के ४-२-३८ में आता है—

समाधि विशेषाभ्यासात्-अर्थात् समाधि विशेष के अभ्यास से विवेक ख्याति या तत्व ज्ञान उत्पन्न होता है। इन्द्रियों से हटाये धारक प्रयत्न से धारण किये और तत्व जानने की इच्छा से युक्त मन का आत्मा के साथ संयोग है, वह तत्व ज्ञान है। यह विवेक ख्याति का मूल कारण है। उसके होने से ही श्रोत्र आदि इन्द्रियों के शब्द आदि विषयों में बुद्धि उत्पन्न नहीं होती और उसके अभ्यास करने से तत्व ज्ञान होता है। जब समाधि-भावना विशेष रूप से बढ़ जाती है तो उसके अभ्यास से एक प्रकार का विशेष धर्म उत्पन्न होता है, तब तत्व ज्ञान होता है' इस योगाभ्यास का उपदेश महात्माओं ने वन, गुफा, नदी तीर आदि स्थानों में किया है। क्योंकि वहां मन जल्दी एकाग्र होता है।

प्रस्ताव नं० ५

आर्यसमाज योगेन्द्रनगर की अन्तरंग सभा का चुनाव

आगामी वर्ष के लिए निम्नलिखित पदाधिकारी सर्व सम्मति से चुने गए।

प्रधान—श्री गुरुदयाल जी

उपप्रधान—श्री केवलदास बतरा जी व माता वृजरानी जी

मन्त्री—मुरारीलाल आर्य

उपमन्त्री—श्री केदारनाथजी सूद

प्रचारमन्त्री—श्री अच्छरसिंहजी

कोषाध्यक्ष—श्री जयलालजी सूद

आयव्यय निरीक्षक—श्री गंगाधर जी शर्मा

अन्तरंग सभा के सदस्य—सर्वश्री गिरधारी जी, बाबू परमानन्द जी संतोषचन्द्र जी कस्तूरीलाल जी

पुस्तकाध्यक्ष बाद में अन्तरंग सभा या प्रधान समाज मनोनीत करेंगे।

—मुरारीलाल आर्य मन्त्री
आर्यसमाज

वेदों का पढ़ना पढ़ाना सुनना सुनाना आर्योंक परम धर्म है

आर्यसमाज के उपकारी कार्य—

स्वतन्त्रता-आन्दोलन

(ले०—श्रीमित्रसेनजी आर्य एम.ए. शास्त्री साहित्याचार्य ज्वालापुर)

****

'जहां-जहां आर्यसमाज का जोर है वहां पर राजद्रोह प्रबल है।' ये शब्द श्री वैकेटाईन शिरोल ने इन्डिया अनरेस्ट नामक पुस्तक में लिखे, आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाजियों में स्वतन्त्रता की भावना कूट-कूट कर भर दी थी। आपने सत्यार्थ प्रकाश के अष्टम समुल्लास में भारत वर्ष की परतन्त्रता का कितने दुःखमय शब्दों में चित्र खींचा 'अभाग्योदय से आर्यों के आलस्य प्रमाद तथा परस्पर के विरोध से अन्य देशों में राज्य करने की तो कथा ही क्या कहनी किन्तु आर्यावर्त में भी आर्यों का अखण्ड स्वतन्त्र और निर्भय राज्य इस समय नहीं है। जो कुछ भी है वह विदेशियों से पादाक्रान्त हो रहा है। दुर्दिन जब आता है तब देश वासियों को अनेक आपत्तियां भोगनी पड़ती हैं। कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशी राज्य है वह सर्वप्रिय उत्तम होता है। अथवा मतमतान्तर के आग्रह से रहित अपने पराये का पक्षपात शून्य प्रजा पर माता-पिता के समान कृपा, दया और न्याय के साथ विदेशियों का राज्य पूर्ण सुखदायक नहीं।' ये भावनाएं उस समय की थीं जब कि यहां विदेशियों का राज्य था।

आर्यसमाज और अंग्रेजी शासक

आर्यसमाज की प्रगति की ओर शंकित दृष्टि से देखते हुए पंजाब के तत्कालीन गवर्नर सर लुई डैन ने कहा था, 'जो संस्था आज धार्मिक तथा सामाजिक सुधार का उद्देश्य रखती है। क्या यह सम्भव नहीं है कि वही अपने उचित आदर्शों से विमुख होकर एक ऐसी राजनीतिक संस्था में परिवर्तित हो जाये जिस का ध्येय सरकार के प्रति वफादारी से मेल न खाता हो।'

इसी प्रकार के विचार अनेकों व्यक्तियों ने लिखे इसका परिणाम यह हुआ कि आर्य समाज अंग्रेजों की दृष्टि में खटकने लगा उन्होंने इसके मार्ग को अभिरुद्ध करने के लिए अनेकों प्रयत्न किये। इस मनोवृत्ति का परिचय सर वेलन्टाइन के निम्न शब्दों से भी हो जायगा।

"The whole drift of Dayanand's teachings is for less to reform Hinduism than to rouse it into active resistance to the alien influences which threatened in his opinion, to denationalise it. Hence the outrageously aggressive tone of his writings wherever he allu les either to Christianity or to Mohamadanism"

वायसराय को भय

जब सन १८७३ई० में स्वामी जी कलकत्ते में थे उस समय आपकी साभाओं की अध्यक्षता वहां के एक बिशप महोदय भी किया करते थे, उन्हें महर्षि के इस्लाम और ईसायत सम्बन्धी ज्ञान को देख कर आश्चर्य चकित हो उठते थे। विशेष रूप से जब उन्हें यह ज्ञान हुआ कि स्वामी जी अरबी और अंग्रेजी के ज्ञाता नहीं थे। ऋषि की ख्याति तात्कालिक वायसराय लार्ड नार्थ ब्रुक के कानों में पहुंची। उन्होंने ऋषि से मिलने की इच्छा प्रकट की। साक्षात्कार के समय दोनों में वार्तालाप इस प्रकार से हुआ—

वा०—आपके द्वारा अन्य धर्मों पर जो आक्रमण किये जाते हैं उस से हिन्दुओं और मुसलमानों में आपके प्रति शत्रुता की भावना बढ़ रही है। क्या आपको इन शत्रुओं से किसी प्रकार का भय है? क्या ऐसी स्थिति में आपको हमारी सरकार की ओर से किसी प्रकार के संरक्षण की आवश्यकता है?

दया०—मुझे अपने मत का प्रचार करने की ब्रिटिश राज्य में पूर्ण स्वतन्त्रता है, और मुझे व्यक्तिगत रूप से कोई खतरा नहीं है।

वा०—पण्डित दयानन्द, यदि ऐसा है तो क्या आप ब्रिटिश राज्य के इन उपकारों की प्रशंसा करने के लिये तैयार हैं? जो आपके देश पर उसके द्वारा किये गये हैं। आप भारत में ब्रिटिश राज्य के स्थायित्व के लिये अपने उपदेशों में कामना किया करें।

दया०—मैं ऐसे किसी भी सुझाव को मानने के लिये तैयार नहीं हूं। मेरा यह दृढ़ मत है कि भारत को विश्व के राष्ट्रों में सम्मान पूर्ण स्थान उसी स्थिति में मिल सकता है, जबकि भारतवर्ष पूर्ण रूपेण स्वाधीनता प्राप्त करलें मैं प्रातःकाल और सायंकाल प्रार्थना करते समय परम पिता परमात्मा से यही विनय करता हूं कि—देश को विदेशी राज्य सत्ता से मुक्ति प्रदान करे।

आचार्य दयानन्द के द्वारा आशा के विपरीत विचारों को सुन कर वायसराय का भ्रम मिट गया। उसने अपनी इस भेंट का वृत्तान्त लन्दन को उस समय भेजे गये एक दस्तावेज में दिया था जो उन्होंने इन्डिया आफिस लन्दन को भेजा था। उसने लिखा था कि इस विद्रोही फकीर पर कड़ी दृष्टि रखी जाय।

दिल्ली दरबार

सन् १८७७ में लार्ड लिटन ने दिल्ली में एक दरबार किया। जिस में भारत के समस्त राजा, नवाब, नेता सम्मिलित हुये। क्रांतिकारी दयानन्द ने भी अजमेरी गेट के पास कुतुबरोड पर सेठ शेरमल के बाग मे एक कांफ्रेंस का आयोजन किया। इस में बड़े-बड़े नेता बा० केशवचन्द्रसेन, सरसैयद अहमद खां आदि पधारे। उस समय के अखबार बताते हैं कि उस कांफ्रेंस में ऋषि ने देश की स्वतन्त्रता और उन्नति करने के लिये प्रस्ताव रखा था।

सामूहिक राजनीति

आर्य समाज ने सामूहिक रूप से राजनीति का डंका नहीं बजाया। यह सत्य होते हुये भी इस बात पर दोमत नहीं हो सकते कि व्यक्तिगत रूप से कोई भी आर्य समाजी ऐसा नहीं होगा जिस ने स्वतन्त्रता संग्राम में किसी न किसी प्रकार की सहायता न पहुँचाई हो। बल्कि उस में बलिदान देने वाले तथा जेल जाने वाले वीरों में अस्सी प्रतिशत वीर आर्य समाजी ही थे। उन में से कुछ नेता तो बहुत ही प्रसिद्ध हुये हैं। पंजाब केसरी ला० लाजपत राय तथा स्वामी श्रद्धानन्द जी के नाम व काम को महात्मा गांधी आजीवन न भूल सके। वे लिखते हैं:—

I can hardly describe any episode in my life since then without referring to my relations with them. For though Shradhanand ji, Deshbandhu, Hakim Saheb and Lalaji are no more with us to day. We have the good luck to have a host of other Veteran Congress leaders sill living and working in our midst."

इनके अतिरिक्त सर्व श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा, सरदार भगतसिंह रामप्रसाद बिस्मिल, राजा महेन्द्र प्रताप, गणेश शंकर विद्यार्थी.

(शेष पृष्ठ ६ पर)

स्वतन्त्रता-आंदोलन

(पृष्ठ ५ का शेष)

घनश्याम सिंह गुप्त, ला० राम नारायण लाला देवदत्त कलंको, सत्यदेव आर्य, बाबूलाल दीक्षित, पं. शिवदयालु देवता स्वरूप भाई परमानन्द, लाला हरदयाल आदि आदि मुख्य बीर हैं।

आर्य समाज की अनेकों संस्थाओं ने भी इस आन्दोलन में रचनात्मक भाग लिया, स्थानाभाव के कारण हम यहां दो का ही वर्णन कर रहे हैं।

गुरुकुल कांगडी

इस आन्दोलन में स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा स्थापित गुरुकुल कांगड़ी के अध्यापकों और ब्रह्मचारियों ने विशेष उल्लेखनीय कार्य किया। जिनके कारण भयंकर विपत्तियां गुरुकुल पर आई किन्तु उन्होंने बिना भय के अपने इस कार्य को आगे बढ़ाया।

अन्य गुरुकुल

गुरुकुल कांगड़ी ही नहीं अपितु आर्यसमाज द्वारा स्थापित लगभग २०० गुरुकुलों में स्वतन्त्रताकी आग भड़की हुई थी, वहां के एक-एक ब्रह्मचारी के मन में Do or Die करो या मरो की भावना भरी गई थी। इन्हीं गुरुकुलों में ब्र० सत्यमित्र जैसे शहीद बनाये गए। भारत के स्वातन्त्र्य इतिहास में उनके नाम सदैव के लिए स्वर्णाक्षरों में अंकित हो गये।

स्वतन्त्रता का मूल

आज जो भारत में स्वतन्त्रता का सूर्य उदय हुआ सारे देश में राजनैतिक धार्मिक तथा समाजिक उन्नति ने परिवर्तित होते हुए जो रूप ग्रहण किया उसका प्रारम्भ आर्यसमाज द्वारा ही हुआ था, इसीलिए वीर सावरकर ने कहा था 'आर्य समाज कांग्रेस की जननी है।'

आर्यसमाज के ग्रंथों में राजनीति के उच्चतम सिद्धान्तो का, राष्ट्रीयता तथा देश भक्ति का सर्वत्र वर्णन मिलता है। ऐसी कोई बात नहीं जो इनमें न लिखी हो, एक स्थान पर लिखा है कि 'क्षत्रियों को युद्ध में एक हाथ से रोटी खाते और जल पीते जाना और दूसरे हाथ से दुश्मन को मारते जाना। अपनी विजय ही आचार और पराजय ही अनाचार है।

आर्याभिविनय में स्वतन्त्रता से सम्बन्धित लेख ही अधिक हैं। जैसे :—हे सर्व सौख्यप्रद ईश्वर! अखण्ड चक्रवर्ती राज्य केलिए हम लोगों को यथावत पुष्ट कीजिए अन्य देशवासी हमारे देश पर कभी न राज्य करें और हम लोग कभी पराधीन न हों, इस प्रकार से हमने संक्षेप में देखा कि आर्य समाज का स्वतन्त्रता आन्दोलन में सर्वाधिक योग था, इसके सदस्यों ने कितना कार्य किया। आज जब राष्ट्र पर विपत्ति छाई हुई है तब तो आर्यसमाज का विशेष उत्तरदायित्व है। अतः मैं महर्षि दयानन्द के शब्दों में समस्त भारत वासियों को कहना चाहता हूं 'जो उन्नति चाहो तो आर्य समाजके साथ उसके उद्देश्यानुसार आचरण करना स्वीकार कीजिए नहीं तो कुछ भी हाथ न लगेगा।'

जिज्ञासु जी का शोक दिवस

आर्य केन्द्रीय सभा अमृतसर की ओर से आर्यसमाज श्रद्धानन्द बाजार में कैप्टन केशवचन्द जी प्रधान की अध्यक्षता में सारे समाजों व नगर की गरायमान्य जनमण्डल की ओर से शोक दिवस मनाया गया जिस में व्याकरण के सूत्र तथा वेदों के प्रकांड विद्वान् ऋषि दयानन्द जी के परमभक्त स्वर्गीय पं० ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु के प्रति श्रद्धांजलियां पेश की गई। इस में श्री प्रधान जी कैप्टन केशव चन्द जी, सनातन धर्म के नेता श्री पं० मायाधारी जी शास्त्री, श्री मा० जगन्नाथ जी, श्री ज्ञानी पिण्डीदास जी, श्री पं० धर्मपाल जी म्यूनिसिपल कमिश्नर, श्री पं० रुद्रदत्त जी शर्मा, श्री पं० ओ३म् प्रकाश जी महोपदेशक, पं० त्रिलोकचन्द्र शास्त्री, श्री विश्वनाथ जी मोवर प्रधान, समाज के महारथी श्री पं० दौलतराम जी शास्त्री आदि सज्जनों ने उस स्वर्गीय महान् तपस्वी विद्वान् के जीवन की सरलता, विद्वत्ता तथा दीक्षा पर प्रभावशाली विचार प्रकट किए। श्री रामलाल कपूर ट्रस्ट ने भी समाज के क्षेत्र में जितना शानदार काम किया तथा इस समय भी कर रहे हैं। उनको भी विशेष स्वर्गीय पण्डत जिज्ञासु जी के कार्य में श्रेय है। धन्यवाद किया गया। जिज्ञासु जी को अभी भारत सरकार की ओर से उनके महान् कार्य पर पद्मभूषण की उपाधि एवं पन्द्रह सौ वार्षिक पुरस्कार मिला था। सब की आंखों में स्वर्गीय देव को याद करते हुए आंसू भरे थे।

समाज में चोरी

एक अर्जुनलाल नाम का आदमी जिस की आयु २५ वर्ष आंख में फोला, यू० पी० का रहने वाला था आर्यसमाज दसुहा में सेवादार था। वह समाज का बाजा और कुछ रुपये लेकर भाग गया है अन्य समाजों के अधिकारी उस से बचें और मिले तो पोलीस के हवाले कर दें।

मन्त्री
आर्यसमाज दसुहा

हिन्दू धर्म की अग्नि परीक्षा

(ले०—श्री सुन्दरलाल जी वोहरा गुलाब सागर जोधपुर)

यही सनातन प्रकृति रहती आई है। राष्ट्र को धर्म से रहित घोषित करना मानव शरीर में व्याप्त दिव्य संस्कारों का हनन करना है 'अथातो धर्म जिज्ञासा' की परम्परा को ही समूल उखाड़ फेंकना है। जिस प्रकार एक व्यक्ति का देश बदल जाने पर भी उसके संस्कार नहीं बदले जा सकते ठीक वैसे ही देश के शासन-संचालन की भाषा पाश्चात्य रहने पर भी राष्ट्र के धर्म को उसी रंग में नहीं रंगा जा सकता पशु भी अपने मुखड अथवा मालिक के नाम से जाने जाते हैं—बिना मालिक के पशु काजी हाउस में लाए जाकर नीलाम किए जाते हैं।

धर्म-निरपेक्षता की नीति हिन्दू धर्म के लिये आज थूहर के कांटों के समान सिद्ध हो रही है। हर शिक्षित व संस्कृत व्यक्ति इस धर्म-हीन नीति के कारण वैचारिक भूल भुलैया में फंस गया है। समस्त सरकारी अधिकारी चाहे हिन्दू ही क्यों न हों फिर भी वे इस नीति की ओर अंगुली तक नहीं उठाते। हम लोगों से तो वे प्राणहीन पत्थर की मूर्तियां ही अच्छी हैं जो बिना हाथ-पैर हिलाएं अपने ऊपर गिर रहे तूफानी ओलों को भी टुकड़े टुकड़े कर देती हैं। तनिक सोचिए, हमारे 'वैयक्तिक स्वतन्त्रता' व 'स्वतन्त्र चिन्तन' के भ्रम कितने तथ्यपूर्ण हैं? उस व्यक्ति के वंश का नामोनिशान तक नहीं रहता जो हर स्थितिमें मार खानाही जानता है। यदि हमारी तरह ही शिवाजी और गुरु गोविन्दसिंह 'हम किसकी चिन्ता करें' का बुर्का ओढ़ लेते तो क्या आज मराठों और सिखों का गौरव कायम रह पाता? किसी दर्जी से कपड़ा सिलवाने का अर्थ यह तो नहीं है कि वह अपने स्वयं के शरीर के अनुरूप ही कपड़े की कटाई व सिलाई कर दे—उस वस्त्र की सिलाई से दर्जी की कुशलता अवश्य झलकेगी, किन्तु अन्ततः वह वस्त्र तो हमारा ही होगा। उसी प्रकार राष्ट्र की नीति को धर्मरहित रखकर हमें अपनी सनातन संस्कृति व संस्कारों से विलग नहीं किया जा सकता। (क्रमशः)

इतिहास में महात्मा हंसराज जी

(श्री राजेन्द्र जी जिज्ञासु एम. ए. शोलापुर)

आज महात्मा हंसराज जी के जीवन पर इतिहास के विद्यार्थी के रूप में इतिहास की दृष्टि से संक्षिप्त रूप डाल रहा हूं आशा है पाठकों को रुचि कर होगा राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम में स्वदेशी आन्दोलन को बड़ा महत्व है। विदेशी वस्तुओं और वस्त्रों के बहिष्कार ने स्वतः ही स्वदेश प्रेम की भावना को जागृत कर दिया। गांधी जी ने १९२० में स्वदेशी आन्दोलन को जन्म दिया। गांधी जी का स्वदेशी आन्दोलन उनके अपने मस्तिष्क की उपज न था अपितु २ जनवरी १९०७ को कलकत्ता में अपने एक ओजस्वी भाषण में लोकमान्य तिलक जी ने विदेशी सरकार से नामिल वर्तन और स्वदेशी का स्पष्ट शब्दों में जनता को सन्देश दिया था।

इतिहासकार इस बात से भी आंखें नहीं मूंद सकते कि आर्य समाज के आदिकाल के नेता श्रद्धेय ला० साईं दास जी अपने आचार्य ऋषि दयानन्द जी के आदेश अनुसार कट्टर स्वदेशी प्रेमी थे। इतिहास के पृष्ठ बोल-बोल कर साक्षी देते हैं कि सबसे पहला भारतीय जिसने भारतीय नवयुवकों को अंग्रेज की नौकरी न करने का उपदेश दिया वह यशस्वी ला० साईं दास जी ही थे। विचित्र बात तो यह है कि वह स्वय सरकारी नौकरी में थे।

उन्हीं ला० जी के प्रभावशाली व्यक्तित्व ने आर्यसमाज को तरुण तपस्वी हंसराज दिया जो स्वदेशी आन्दोलन को विराट रूप देने में सारे राष्ट्र का अग्रणी बना। महात्मा जी स्वदेशी वस्तुओं का प्रयोग करते थे। उनके देश प्रेम के परिणाम स्वरूप १९०६ में आर्यसमाज अनारकली लाहौर से एक आर्य बन्धु ने स्वदेशी वस्तुओं की एक दुकान खोली।

पाठक नोट करें कि पूज्य भारत केसरी लोकमान्य तिलक जी ने स्वदेशी पर कांग्रेस मंच से १९०७ में पहला भाषण दिया पर मूक तपस्वी हंसराज का आन्दोलन १९०६ में साकार रूप धारण कर चुका था।

पाठकगण! इतिहास की एक छोटी-सी घटना ध्यान देकर पढ़ें। घटना छोटी है पर इसका महत्व इतिहास के पृष्ठों का अवलोकन करने वाले ही समझ सकते हैं। पूज्य महात्मा हंसराज की पुण्य प्रेरणा से आर्य कुमार सभाओं ने स्वदेशी के Pledge शपथ दिलाने आरम्भ किये। १९०६ की बात है लाहौर डी० ए० वी० स्कूल में आर्य कुमार सभा के मन्त्री मेरे मान्य बुजुर्ग ला० देशराज जी (भू० पू० मन्त्री प्र० सभा) थे। एक अंग्रेजी साबुन कम्पनी का कोई एजेन्ट स्कूल में आया और अपनी साबुन की टिकिया के प्रचार के लिये सब छात्रों को प्रयोग के लिये कोई भेंट दी। आर्य कुमारों की प्रखर देश भक्ति का इस से बढ़ कर और क्या परिचय हो सकता है कि आर्य कुमार सभा का सदस्य बनते हुए स्वदेशी का जो व्रत आर्य कुमारों ने लिया था उसको निभाते हुए सब ने मुफ्त में प्राप्त विदेशी वस्तु एक दम फैंक दी। यह किस का प्रभाव था? मूक तपस्वी हंसराज का।

स्वदेशी आंदोलन के जन्मदाता हंसराज की सूझबूझ का दिग्दर्शन इस बात से होता है कि राष्ट्रभाषा के माध्यम द्वारा बच्चों को शिक्षा देने का सर्वप्रथम विद्यालय पंजाब में महात्मा जी ने ही खोला और यह था लाहौर का दयानन्द नार्मल स्कूल।

आज राष्ट्र की निर्धनता से टक्कर लेने के लिये शिल्प विद्यालयों पर बल दिया जा रहा। मानना पड़ेगा कि राष्ट्र का पहला मनीषि जिस ने शिल्प विद्यालय खोलकर दिखाया वह था त्याग का हिमालय हंसराज जिस ने लाहौर में दयानन्द इन्डस्ट्रीयल स्कूल खोला जो वटवृक्ष के रूप में आज जालन्धर में मेहरचन्द इन्स्टीचूट के रूप में लहलहा रहा है।

शिक्षा शास्त्रियों में उस युग में सब से पहले हंसराज ही थे जिन की संस्था में न तो कोई विदेशी शिक्षक रखा गया और न ही प्रबन्धक कमेटी में कोई विदेशी लिया गया। वेद ज्योति से उजाला लेकर महान ऋषि से प्रेरणा पाकर और अपनी अद्वितीय साधना की शक्ति से जिस ने अराष्ट्रिय शक्तियों से सफलता पूर्वक टक्कर लेकर देश का नवनिर्माण किया उस महान विभूति हंसराज के जीवन की एक झांकी मैंने पाठकों की भेंट की है।

वेद निष्ठ के रूप में, ऋषि-भक्त के रूप में, समाज सुधारक के रूप में, आर्य मिशनरी के रूप में, दीन बंधु के रूप में, ईश उपासक के रूप में और संगठन-कर्त्ता के रूप में महात्मा जी का दिव्य जीवन हम सब को वेद पथ पर चलने व समाज सेवा की प्रेरणा दे रहा है। प्रभु हमें आर्य बनने का सामर्थ्य दें।

दयानन्द-वचनामृत

ऐसा राज नियम और जातीय नियम हो कि कोई जन अपने लड़के लड़की को घर में न रक्खे—पाठशाला में अवश्य भेजे। जो न भेजे उसे दण्ड दिया जाए। वे ही जन धन्यवाद के योग्य हैं, कृतकृत्य हैं जो अपनी सन्तानों के शारीरिक आत्मिक बल को ब्रह्मचर्य से, उत्तम शिक्षा से और विद्या दान से बढ़ाते हैं। जिस देश में ब्रह्मचर्य का पालन, विद्या की वृद्धि और वेदोक्त धर्म का प्रचार हो, वही देश सौभाग्यशाली समझना चाहिए। जिन जनों का मन विद्या—विलास में तत्पर रहता है, जो सत्य भाषणादि नियम पालन करते हैं, अभिमान और अपवित्रता से ऊपर हैं, दूसरों की मलिनता दूर करते हैं, सत्योपदेश से और विद्या दान से संसारी जनों के दुःख दूर करने से सुभूषित हैं और वैदिक कर्मों से परोपकार करने के लिए रात दिन लगे रहते हैं, वे नर-नारी धन्य हैं"

(स्वामी सत्यानन्द जी)

जालन्धर में श्री हरि वल्लभ ऐतिहासिक संगीत मेला

२६-२७ २८-२९ को बड़ी धूमधाम से सम्पन्न हुआ भारत वर्ष के उच्चकोटि के कलाकार पधारे। इस मेले का उद्घाटन मुख्य मन्त्री कामरेड श्री राम कृष्ण जी ने किया। दूसरे दिन श्री प्रबोधचन्द जी ने २९ को स० दरबारासिंह जी ने भाग लिया।

आर्य प्रादेशिक सभा मुख्य भजनीक श्री मेलाराम जी रेडियो सिंगर को राग सुनाने के वास्ते चार अवसर प्रदान किए गए इससे प्रादेशिक सभा को ख्याति प्राप्त हुई।

आर्य प्रादेशिक सभा जा...

...वार्षिक साधारण अधिवेशन ...१-६५ को आर्य समाज ...रोड अमृतसर में दो बजे ...दोपहर सम्पन्न हो रहा है। सब प्रतिनिधि ठीक समय पर पधार कर दर्शन दें।

नोट—जिन समाजों का दशांश अभी तक सभा के कार्यालय में नहीं आया ... शीघ्र भेजने की कृपा करें।

...
मन्त्री सभा

आर्य समाज मोखरा (रोहतक)

का उत्सव १८-१९-२० दिसम्बर को चौ० रामस्वरूप जी आर्य की अध्यक्षता में सुचारु रूप से सम्पन्न हो गया। इस में श्री भूराराम जी व सभा की भजन मण्डलियों ने भाग लिया। इस उत्सव का जनता पर विशेष प्रभाव पड़ा।

एक दर्शक

विचार तरंग

(पृष्ठ २ का शेष)

Marryman, विश्व के प्रसिद्ध तीन डाक्टर हैं।

शरीर पर काबू पाने का उपाय बतलाते हुए एक प्राकृतिक ढंग के चिकित्सक का कहना है कि **'If you can control tongue, you can control your whole body'** तभी तो कबीरदास ने कहा कि 'हिये तराजू तोलि कै' तब मुख बाहिर खोल।' किसी अनुभवी का यह कथन निश्चय ही लाभास्पद है कि 'मुख के भीतर क्या जाता है और क्या बाहिर आता है, दोनों के विषय में सतर्कता की आवश्यकता है।

किन्तु ईश्वर बचाए उन लोगों से जो

'बोलहिं मधुर वचन जिमि मोरा, खाई महा अहि हृदय कठोरा।

...समाज, मेस्टन रोड, कानपुर

आर्यसमाज, मेस्टन रोड का ८५ वां वार्षिकोत्सव शिवरात्री के अवसर पर २६ फरवरी से १ मार्च १९६५ तक मनाया जाना निश्चित हुआ है। बृहद यज्ञ, भजन, प्रवचन, व्याख्यान आदि के अतिरिक्त इस अवसर पर एक 'वेद सम्मेलन' आयोजित किया जा रहा है जिसमें लब्ध प्रतिष्ठित विद्वानों के सम्मिलित होने की आशा है।

—विद्याधर सं० मन्त्री

आर्य समाज पुराणी मंडी जम्मू में श्रद्धानन्द बलीदान दिवस समारोह

जम्मू २५ दिसम्बर आर्यसमाज पुरानी मंडी जम्मू की तरफ से श्रद्धानन्द बलिदान दिवस बड़े समारोह से मनाया गया। प्रातः हवन यज्ञ हुआ दोपहर आर्य कन्या महाविद्यालय में लड़कियों और स्टाफ ने बड़े उत्साह से इस दिन को मनाया। लड़कियों ने अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी के प्रति अपनी श्रद्धांजलि भजनों तथा व्याख्यानों द्वारा पेश करते हुए उनके जीवन पर प्रकाश डाला। रात को पूज्य पं० हरिश्चन्द्र जी शास्त्री, श्री मोहनलाल मोतियाल और कविराज विष्णु गुप्त प्रधान मंत्री आर्य समाज ने स्वामी जी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए जनता से अपील की कि हमें भी उनकी तरह अपने जवानों को क्रियात्मक बनाना चाहिए तभी आर्यसमाज उन्नति कर सकेगा।

टंकारा के लिये जम्मू से जत्था

इस वर्ष टंकारा सम्मति की ओर से विशेष तौर पर ऋषि बोधोत्सव मनाने के लिए टंकारा में जो प्रबन्ध किया है—उस में योग लेने के लिए २५ स्त्री पुरुषों का जत्था जाने के लिये तैयार हो गया है—आर्य जनता में काफी उत्साह पाया जाता है—सम्भव है और भी बहुत से लोग समय पर तैयार हो जावें—क्योंकि मुलाजिम अवकाश के लिये प्रबन्ध कर रहे हैं—

कविराज विष्णु गुप्त
प्रधान मन्त्री
आर्यसमाज पुरानी मंडी जम्मू

मुफ्त साहित्य प्रचारक मासिक, आर्य समाजों, पुस्तकालयों तथा व्यायामशालाओं की मांग आने पर मुफ्त १ वर्ष तक दिया जाएगा। लिखें जयदेव आदर्श पो. बा. ४६ बड़ोदा-१

यह सेक्युलरिज़म है या भयानक फिरका प्रस्ती?

आर्य समाज ..., अमृतसर के सत्संग में श्री प्रोफैसर राजेन्द्र जिज्ञासु जी के पत्र द्वारा यह जानकर दुख हुआ कि हमारी सरकार की आरि नन्दन नीति (शत्रुओं को प्रसन्न रखने वाली अनीति) के कारण बम्बई में ईसाइयों के भारी सम्मेलन के दिनों में कितने ही हिंदु सभाई महानुभावों के अतिरिक्त आर्यसमाज के प्रतिष्ठित कार्यकर्ता श्री हरिश्चन्द्र जी पद यात्री प्रधान आर्यसमाज औराद (महाराष्ट्र) तथा श्री डा० डी. आर. दास जी आर्यसमाज लातूर को स्थान बद्ध (नज़रबन्द) रखा गया ताकि कहीं बम्बई में हो रहे ईसाईयत के तौफानी प्रचार में विघ्न का कारण न बन सकें। अर्थात् यहां विदेशियों और विधर्मियों को तो अपने प्रचार का पूरा अधिकार प्राप्त है परन्तु हम अपने देश में भारत के प्राचीन धर्म और संस्कृति के पक्ष में मुंह नहीं खोल सकते। यह अत्यन्त अफसोस नाक और शरमनाक है।

आर्यसमाज की ओर से भारत सरकार की इस धर्म तथा देश के लिए घातक नीति की कठोर निन्दा की गई और उपरोक्त महानुभावों को देश और धर्म के हित कठिनाई एवं प्रतिबन्ध सहन करने पर बधाई दी गयी तथा शुभ कामनाएं की गयी।

—निवेदक रुद्रदत्त शर्मा

शोक समाचार

आर्यसमाज दसूहा में शोक सभा हुई जिसमें महाशय कृष्ण जी की धर्मपत्नी के देहावसान पर शोक प्रकट किया और उनके सुपुत्र श्री वीरेन्द्र तथा नरेन्द्रजी से सहानुभूति प्रकटकी गई। —मन्त्री आर्यसमाज दसूहा

मुद्रक व प्रकाशक श्री सन्तोषराज जी आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर द्वारा वीर मिलाप प्रैस, मिलाप रोड जालन्धर से मुद्रित तथा आर्यजगत कार्यालय महात्मा हंसराज भवन निकट कचहरी जालन्धर शहर से प्रकाशित मासिक—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर



टैलीफान नं० ३०५७ [आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधिसभा पंजाब जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd. No. P. 121

एक प्रति का मूल्य १३ नये पैसे · वार्षिक मूल्य ६ रुपये

वर्ष २५ अंक ३) २७ पौष २०२१ रविवार—दयानन्दाब्द १४०– १७ जनवरी १९६५ (तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

वेद सूक्तय:

इन्दो द्युम्न उत्तमे

हे परमात्मन् ! इन्दो-सारे ऐश्वर्यों के मालिक देव । हम तेरे उपासक तेरे उत्तमे-उत्तम सब से श्रेष्ठ द्युम्ने बल तेज, के आधीन रहें । तेरी आज्ञा और नियमों का पालन करते रहें ।

रक्षा समस्य नो निद:

परमेश्वर ! आप कृपा करते हुए न:—हमारी समस्य-सारे निद:-निन्दा करने वाले लोगों से रक्षा-रक्षा करें । जो धर्म के सत्य और ज्ञान के सदा निन्दक हैं । जिनका काम ही परनिन्दा करना है, उनसे हमें बचाओ ।

सोम द्युमां असि

हे सोम भगवान् ! आप सोम हैं, शीतलता और शान्ति के भण्डार हो और आप द्युमा हो, प्रकाशमय होकर सबको प्रकाश देने वाले हो । संसार में इन चमकने वाले सूर्य आदि में आप की ज्योति है ।

सा म वे द से

वे दा मृ त

**ओम् उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं विमध्यमं श्रथाय ।
अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम
स्वाहा । इदं वरुणायाऽदित्या याऽदितये इदन्न मम ॥**

ऋक् १-२४-१५

अर्थ :—हे प्रभो ! यह (उदुत्तमं) उत्तमकोटि का (वरुण) हे वरुणदेव ! (पाशम) पाश बन्धन को (अस्मत्) हम से (अधमं) अधम कोटि के तथा (विमध्यमं) मध्यम कोटि के बन्धन को (श्रथाय) शिथिल कर देवें । (अथ) तथा हे (आदित्य) अविनाशी परमात्मन् (व्रते) व्रत में (तव) तेरे (वयम्) हम सब (अनागस:) निष्पाप होकर (अदितये) सुख आनन्द के लिए (स्याम) होवें । (स्वाहा) यह कथन सत्य होवे । यह वरुण देव के लिए, अमर भगवान के लिए, आनन्द सुख के लिए है । मेरे लिए नहीं है ।

भाव:—हे वरुण देव ! आप के नियम सब जगह प्रतीत होते हैं । आप के ये नियम ही सब को पाशों के समान बांधे हुए हैं । छूट कर कोई भी जा नहीं सकता चक्र की भांति यह सारा चर अचर का चक्र इन नियमों में बन्धा हुआ चक्कर खा रहा है । परमात्मदेव ! ऐसी कृपा कर देवें । ये तीन प्रकार के पाश उत्तम मध्यम और अधम के रूप में जो हमें बान्ध लेते हैं । तीन लोक, वित्त व पुत्रों की एषणाओं में बन्ध जाते हैं फिर दु:खी होते हैं । पिता जी । इन से मुक्त कर के निष्पाप कर दो । इन का प्रयोग करते हुए इन के लिए पाप न करें । ये पाश न बन सकें । हम आनन्द के लिए आप के पास ही आ सकें । बन्धन से मुक्त हो कर ही आ सकेंगे । तेरे ही बन जावें । सं.

ऋषि दर्शन

जितेन्द्रिय तया एव

राजा और उसके सारे राज्य के हरेक कर्मचारी को चाहिए कि अपनी इन्द्रियों को जीते । काम, क्रोध लोभ, मोह अहंकार में कभी न फंसें । तभी राज्यकार्य चला करता है ।

ओज एव क्षत्रम्

ओज-बल शक्ति, तेज ही क्षेत्र माना गया है । यह ओज बल विषयों के पीछे भागने से नहीं मिलता । जो शासक विलासी है उसका तो राज्य छीन लेते हैं । आत्मदमन सबसे जरूरी है ।

सुखैरेधमानं करोति

यह ओज और अपने को वश में करने से जो बल मिलता है वह उसे तथा राजधर्मको बल शक्ति से भरपूर कर देता है । बलशाली बना देता है ।

भा ष्य भू मि का

अधिष्ठाता—श्री संतोषराज जी

सम्पादक—त्रिलोक चन्द्र शास्त्री

धार्मिक चर्चा—

योऽस्मान् द्वेष्टि

ले०—श्री पं. सत्यप्रिय जी शास्त्री सिद्धांत शिरोमणि
प्राध्यापक :—दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार

वेद की पवित्र एवं सर्वजन कल्याणी शिक्षाओं तक जिन की पहुंच नहीं होती ऐसे महामतिमान् लोग प्रायः वेदपर पक्षपात का आरोप लगाया करते हैं। 'योऽस्मान द्वेष्टि यंचवयं द्विष्मस्तंवो जम्भेदध्मः॥ इस वेदोक्ति को देख वे चौंक उठते हैं तथा बिना आगा पीछा देखे कहने लगते हैं देखो जी! कितने कमाल की प्रार्थना है 'जो हम से द्वेष करे वा जिस से हम द्वेष करें उसे आपके न्याय पर छोड़ते हैं।' दोनों ओर से आप बच गये। यही नहीं प्रत्युत वेद ने ऐसे आर्यों के लिये लिखा 'अहं भूमिमददामार्या॥ अर्थात् मैंने यह भूमि आर्यों को ही दी है। इसी पक्षपात के प्रवाह में बह कर यास्क लिख गये 'आर्य ईश्वर पुत्रः॥ क्या शेष सभी ईश्वर के पुत्र नहीं है? कहां तक गिनायें वेद ने तो औषधियोंसे भी अपनों को सुख तथा परायों को दुःख देने को लिख दिया यथा 'सुमित्रिया न आप औषधयः सन्तु योऽस्मान् द्वेष्टि यं च वय द्विष्मः॥ इस से बढ़ कर पक्षपात और क्या होना है?

ऐसे सज्जनों की सेवा में वेद का यथार्थ अभिप्राय अवगत कराने के लिये ही निम्न पंक्तियें लिखी जा रही हैं। वेद एक ऐसे उत्कृष्ट समाज का चित्र उपस्थित करता है जिस में अनैतिकता, पापाचार तथा स्वार्थ के दर्शन न होते हों। इस लिये नहीं कि भौतिक दण्ड का भय हो आर्य दंड का भय हो अथवा अन्य कोई भय हो प्रत्युत इस लिए कि उन सामाजियों का अन्तरात्मा अपनी प्रेरणासे इन से घृणा करता हो, जिस में साक्षात् पवित्रता एवं नैतिकता के दर्शन ही हों। ऐसे पवित्र समाज में यदि कोई कुत्सित आचार फैलाने की ताक में हो तो निश्चय ही वह दण्डनीय है। मानव जीवन में यही दो प्रवृत्तियां सदा से टकराती आई हैं। ऐतिहासिकोंने इन्हें देवासुर संग्राम की संज्ञा प्रदान की है। विश्व में विद्यमान देवत्व का अंश आर्य कहलाता है। क्योंकि आर्य नाम सर्वस्वामी परमेश्वर का है, तद्वत् पवित्र आचरण करने वाले पुत्र तुल्य होने से आर्य हैं। पिता की आज्ञानुसार जो चले वास्तविक पुत्र वही कहलाता है, केवल मात्र शरीरज होने से उतना पुत्र नहीं है। उसी आज्ञानुवर्ती पुत्र के लिए ही पिता अपनी संपत्ति सौंपता है, उसे ही अपना उत्तराधिकारी बनाता है। ऐसे आत्मानुरूप पुत्र का जो द्वेषी वह उसका भी द्वेषी है। यही आर्य के ईश्वर पुत्र होने का रहस्य है। पिता परमेश्वर के ऐसे अमृत पुत्र आपस में प्रेम से रहें। यदि कोई उनके पवित्र संगठन से द्वेष करे तो वे पिता के आश्रय से शक्ति द्वारा प्रतिकार करें। पवित्र संगठन में बद्ध सभी अंग अपने संगठन की पवित्रता, उच्चता एवं नैतिकता की रक्षा के लिए ऐसे संगठन से द्वेष करेंगे ही। क्योंकि इसी में उनका आदर्श है। जैसे यदि एक पुरुष सभी की निन्दा करता हो किसी को भी अच्छा न कहता हो तो वह स्वयं निन्दनीय होता है। वैसे ही जिसको सभी कोई निन्दा करते हों कोई भी प्रशंसा न करता हो वह भी निन्दनीय है। ऐसे ही जो सबसे अप्रसन्न रहता हो किसी से कभी भी प्रसन्न न हो तो समझो वह स्वयं खोटा है। ऐसे ही जिससे कोई भी प्रसन्न न हो। सब ही अप्रसन्न हों वह भी खोटा है। यही 'योऽस्मान् द्वेष्टि यं च वयं द्विष्म्' का रहस्य है। वेद तो सभी को आर्य बनाना चाहता है। परन्तु तभी बनेंगे जबकि आप जो पिता परमेश्वर है उसके सदृश गुण कर्मस्वभाव युक्त होवें। उस पवित्राचरण में जो बाधक हो उसे यथा सम्भव परे करें। उस परमपिता की इस अनन्त सृष्टि में सारे कुत्सित अथवा सारे श्रेष्ठ हो नहीं सकते। कुछ आदेशानुवर्ती तथा अन्य विपरीतगामी होंगे, इस अच्छी बुरी, पाप-पुण्य, देवासुर भाव के संग्राम को ही उक्त मन्त्र में वर्णित किया गया है। अतः हम उठें, नैतिकता की चोटी पर चढ़कर उस आर्य पिता के वास्तविक आर्य पुत्र बनें।

प्रश्न पहेलियों को बताओ तो जानें

पारितोषिक व उपाधियां प्राप्त कीजिए

१. परमात्मा पर विश्वास और उसकी प्रार्थना उपासना से क्या लाभ है।

२. संध्या और यज्ञ क्यों करने चाहिएं।

३. शिखा सूत्र क्यों धारण करना चाहिए।

४. जीवन को सुखी बनाने का श्रेष्ठ साधन क्या है।

५. आदि सृष्टि में किन महर्षियों के द्वारा वेदों का ज्ञान प्राप्त हुआ था।

६. वेद कितने हैं और उनके क्या नाम हैं।

७. महर्षि दयानन्द तथा आर्य समाज का देश पर क्या क्या उपकार है।

८. हमें आर्य समाज के सिद्धान्तों को क्यों अपनाना चाहिए।

९. जीवन का रहस्य क्या है।

१०. संसार में अमर कौन कौन जन होते हैं।

११. महर्षि दयानन्द की सब से बड़ी दया क्या है।

१२. वैदिक युग का नवनिर्माण कौन करेगा।

१३. हमें आर्य क्यों बनना चाहिए।

१४. वैदिक रवि का उदय कब होगा।

१५. कौनसी भाषा विश्व की राष्ट्र भाषा बनने योग्य है।

१६. संसार की सब से प्राचीन भाषा कौनसी है।

१७. जीवन की सफलता के सुनहरे साधन क्या हैं।

१८. पापों से बचने का साधन क्या है।

१९. मन पर विजय किस प्रकार कर सकते हैं।

२०. आत्म उन्नति का अनुपम साधन क्या है।

२१. किन ग्रन्थों का हमें स्वाध्याय करना चाहिए।

२२. संसार की उन्नति में अपनी उन्नति क्यों समझनी चाहिए।

२३. मांसाहार से क्या हानि है।

संसार से मत मतान्तरों को तथा गुरुडम अविद्या अन्धकार को कैसे मिटाया जा सकता है।

२५. धर्म का मर्म क्या है।

२६. किस धर्म के अपनाने से तथा उसके व्यापक प्रचार से विश्व में अपना चक्रवर्ती साम्राज्य स्थापित हो सकता है।

देश की स्वतंत्रता व अखंडता के लिए हमें अपना सर्वस्व न्योछावर कर सकते हैं या नहीं

२८. स्वराज्य की प्राप्ति का शंखनाद किसने किया था।

(शेष पृष्ठ ८ पर)

आर्य जगत्

वर्ष २५] रविवार २०२१, १७ जनवरी १९६५ [अंक ३

सभा का वार्षिक अधिवेशन

एक वर्ष के बाद आर्य समाजों की ओर से चुने गए माम्य प्रतिनिधि आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के वार्षिक साधारण अधिवेन में मिलकर बैठते हैं। बीते हुए वर्ष के सारे कार्यों का विवरण सुनते तथा आगामी वर्ष के लिए सभा का बजट भी स्वीकृत करते हैं। नए वर्ष के लिए निर्वाचन के साथ-साथ इस वर्ष के लिए कार्य को प्रगतिमय बनाने की भी विविध सुन्दर योजनाएं नियत करते हैं। हमारी आर्यप्रादेशिक सभा पंजाब के आरम्भ से लेकर आज तक के इतिहास की परम्पराएं बड़ी ही सुन्दर व उत्तम स्तर की हैं। चर्चाएं तथा मन के उद्गार यहां पर आने वाले सज्जन सभा के हित, उन्नति को सामने रखकर प्रकट करते हैं एक विशाल परिवार के नाते हरेक बात पर विचार होता है। किन्तु उसमें मनोभेद नहीं होता। मतभेद बुरा नहीं पर मनोभेद बुरा है। यहां तो इस बात पर कभी विवाद नहीं हुआ कि अमुक सज्जन को क्यों प्रधान चुना जाता है वरन यहां तो प्रार्थना करके प्रधान-पद का महान् दायित्व सम्भालने के लिए जोर दिया जाता है। सभा की यह पुरानी परम्परा है महात्मा आनन्द स्वामी जी के बाद सौम्यमूर्ति प्रिंसिपल रलाराम जी एम. ए. जैसे सादगी, योग्यता की सजीव प्रतिमा को विवश करके प्रधान निर्वाचित किया। यहां प्रधान पद के लिए कभी लिप्सा नहीं देखी। सभा की यह विशेषता है। सभा का सारा परिवार सभा के लिए काम करना अपना कर्तव्य व धर्म समझता है।

इस बार सभा का अधिवेशन जैसा कि सभा मन्त्री जी ने आर्य जगत् के गत अंक में सूचित किया है आर्य समाज लारेंसरोड अमृतसर में ता. ३१ जनवरी ६५ रविवार को दोपहर के दो बजे से आरम्भ हो रहा है। अमृतसर की समाजें लोहगढ़, लक्ष्मणसर, लारेंसरोड, पुतली घर, नवां कोट, कटड़ासफेद आदि सभा से सम्बन्धित हैं। बड़ी २ समाजें हैं, बड़ी २ शिक्षण की संस्थाएं भी यहां हैं। सभापरिवार में यहां के बड़े २ प्रसिद्ध सज्जन रहते हैं। वर्षों से अन्तरंग में भी बड़ा उत्तम काम करते हैं। आर्य समाज लारेंसरोड भी उन में एक विशेष व विशाल समाज है। बहुत बड़ा एवम् अतीव भव्य मन्दिर है। देखने से ही सम्बन्धित है। न केवल मन्दिर ही सुन्दर है वरन यहां के सारे कार्यकर्ता अधिकारी भी उत्साही हैं। इस समाज में सभा का इस बार का अधिवेशन होने जा रहा है। बाहिर से आने वाले मान्य सज्जन सभा से सम्बन्धि० इस मन्दिर तथा यहां के अधिकारियों व सारे परिवार के काम को देख कर प्रसन्न होंगे।

अधिवेशन में बैठ कर सब ने सोचना होगा कि सभा ने गतवर्ष कितना काम किया है तथा इस नये वर्ष के लिए और भी प्रगति से किस प्रकार से कार्य किया जा सकता है। आज का समय विशेष विषम का समय है। भ्रष्टाचार का सर्वत्र हाहाकार है विलास का विराध आचारवान् राम को उठा कर ले जाने में लगा है। विधर्मी अपना रुपया पानी के समान बहा रहे हैं। अनेक समस्याएं हैं। सिर जोड़ कर सब पर विचार होना है।

—त्रिलोक चन्द्र

सदाचार समिति

विदेशी सत्ता के चले जाने पर राष्ट्र के शासन के आसन पर अपने ही लोग बैठे हैं। इन सतरह वर्षों में भारतीय जीवन का स्तर कहां से कहां पहुंच गया है—यह चित्र सब के सामने ही है। जीवन के विविध क्षेत्रों में फैले हुए भ्रष्टाचार को देखकर ही गृहमन्त्री श्री नन्दा जी ने संयुक्त सदाचार समिति का गठन किया है। इस की शाखा पंजाब में है इस के नेता श्री वीरेन्द्र जी को बनाया गया है। आज के युग में जनता में देशभक्ति के स्थान पर स्वार्थभक्ति अधिक आ गई है। हमारी भावनाएं समाप्त होती जा रही हैं। अपने घर भरने की मनोवृत्ति का जोर है। इस दिशा में हम सदाचार समिति के गठन का स्वागत करते हैं। इस के द्वारा अपने प्रान्त में भी सुधार होता रहे। आर्यसमाज तो आरम्भ से ही इस पर बल देता आया है। हमें प्रसन्नता है कि इस प्रान्त में इस समिति का नेता भी आर्य परिवार के प्रसिद्ध व्यक्ति को चुना गया है। आर्य समाज भी प्रत्येक समारोह में आचार निर्माण सम्मेलन का अवश्य आयोजन करे।

प्रशंसनीय समिति

दुर्गापुर में सम्पन्न हुए अखिल भारतीय कांग्रेस के अधिवेशन के समारोह में बंगाल के मुख्य मन्त्री श्री पी. सी. सेन ने अपना भाषण शुद्ध हिन्दी में दिया। कुछ लोगों ने बंगला में जब बोलने को कहा तब वे बोले—कि बंगाली और हिन्दी एक ही हैं। मैं हिन्दी बोलने को प्राथमिकता देना चाहता हूं। शुद्ध हिन्दी का भाषण सुनकर सब हैरान भी हुए कि बंगाल का मुख्य मन्त्री कितनी उत्तम हिन्दी बोलता है तथा प्रसन्नता भी प्रकट की। हम उनके इस राष्ट्रभाषा के प्रेम की प्रशंसा करते हुए राष्ट्र के सारे अन्य नेताओं से भी ऐसी आशा करते हैं। देशभक्ति में राष्ट्रभाषा भी तो आती है। हिन्दी किसी एक प्रांत की नहीं वरन् भारत की भाषा है। अब अंग्रेजी का बेकार मोह छोड़ कर हिन्दी का प्रचार किया जाए। अंग्रेजों की मानसिक सन्तान बन कर हीन भावना व दासता की मनोवृत्ति ठीक नहीं है। सतरह वर्ष में तो एक बच्चा-बच्ची किसी भाषा में एम. ए. भी कर लेता है। पर खेद है कि हम अभी राष्ट्रभाषा हिन्दी बोल भी नहीं सकते। श्री सेन जी ने राष्ट्रभाषा के प्रेम का जो परिचय दिया है—उसे सारे बङ्गाल में भर देवें।

टंकारा की ओर

इस बार महर्षि दयानन्द सरस्वती के जन्मस्थान टंकारा में प्रतिवर्ष शिवरात्री पर जो शानदार मेला लगता है, उसकी विशेष धूमधाम है। दिल्ली से स्पेशल गाड़ी चलेगी। एक स्पेशल ट्रेन तो भर गई, जितनी सीटें थीं प्रायः पूर्ण हो गई। दिल्ली तथा अन्य नगरों से भी आर्य भाई तैयार हैं। हमें अमृतसर का पता है। कमाल का उत्साह है। यहां के समाज के बड़े-बड़े मान्य स्तम्भ इस बार वहां जा रहे हैं। लगभग सत्तर सज्जनों की भरी पूरी बोगी जायगी। श्री म० रतनचन्द जी कसीरमार्शला जैसे पुराने वृद्ध तथा ला० जगतराम जी, केन्द्रीय सभा के प्रधान कैप्टन केशवचन्द जी, मन्त्री ला. गुरचरण दत्त जी, पुराने महारथी ज्ञानी पिण्डीदास जी, श्री पं० धर्मपाल जी म्युनिसिपल कमिश्नर, पं० रुद्रदत्त जी शर्मा प्रधान समाज लक्ष्मणसर'

(शेष पृष्ठ ६ पर)

भगवान कल्याणकारी है

(श्री पं. देवप्रकाश जी आर्य समाज उज्जैन)

स नः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो
भव सचस्व नः स्वस्तये
ऋ-१-१-७

वेद ने कहा—हे तेजस्वी ईश्वर पुत्र के लिए पिता की तरह हमको उत्तम प्रकार से प्राप्त हो और हमारे कल्याण के लिए हमारा उत्थान कर यह तो वेद का ईश्वर है, मगर अब ईसाईयों का ईश्वर भी देखिये 'हमारा परमेश्वर आयेगा और चुप न रहेगा, उसके आगे आगे आग भस्म करती आयेगी। और उसकी चारों ओर बड़ी आंधी चलेगी, वह अपनी प्रजा का न्याय करने के लिए ऊपर के आकाश को और पृथ्वी को भी पुकारेगी।'
भजन संहिता ४०-२-३

देख लीजिए खुदा की शान ईसाइयों का खुदा कैसा है, फिर लिखा कि 'मेरे पुत्र प्रभु की ताड़ना को हल्की बात मत जान और जब वह तुझे घुड़के तो दिल न छोड़ क्योंकि प्रभु जिसे प्रेम करता है, उसकी ताड़ना भी करता है, और जिसे पुत्र बना लेता है उस को कोड़े भी लगाता है।' इब्रानियों १२-६

'क्यों साहिब खुदा का प्रेम कैसा है, क्या इसी बूते पर ईसाई खुदा को प्रेम बताते हैं आगे फिर लिखा—

यदि वह ताड़ना जिसके भागी सब होते हैं तुम्हारी नहीं हुई तो तुम पुत्र नहीं, पर व्यभिचार की सन्तान ठहरे। इब्रानियों १२-८

कैसी ऊट पटांग बात है कि खुदा ताड़ना न करे तो मनुष्य हरामजादा हो जाता है क्या किसी का हरामजादा होना खुदा की ताड़ना न करने पर निर्भर है या उसकी माता के व्यभिचार पर यह तो कहा जा सकता है कि जिस की ताड़ना न की जाय तो वह बिगड़ जाता है मगर हरामजादा होने से इस बात का क्या सम्बन्ध है। जुदा नहीं हो सकते किन्तु यहां जुदा-जुदा प्रमाणित होते हैं, अब वचन देह धारी हुआ (यूहन्ना १-१४) यूहन्ना की पहली पत्री(१-या-१-२) देहधारी होने का मतलब साफ है कि यह एक ऐसी वस्तु है, जिसका सम्बन्ध एकता के नाते किसी दूसरे के साथ नहीं यदि दूसरे के साथ होता तो जब वचन गर्भ में आया तो एक होने के नाते तीनों को ही मरियम के गर्भ में आना चाहिए था मगर हम देखते हैं कि यीशू तो गर्भ में है, और खुदा आसमान पर है और पवित्रात्मा कबूतर की शक्ल में नजर आती है! और तीनों ही स्थूल अवस्था में हमारे सामने हैं, जैसा कि हम पहले बाइबल में खुदा का शरीर धारी होना लिख चुके हैं इन तीनों को हम जुदा-जुदा चेतन अवस्था में देख रहे हैं यदि यह तीनों एक होते तो गर्भ में आने की अवस्था यीशु के सूली पर चढ़ते समय तीनों एक साथ ही होते, जुदा-जुदा कैसे हो गए, शरीर धारी होकर जब यीशु मरियम के गर्भ से पैदा हुआ तो इसमें रूह वही थी जो पिता में है या दूसरी रूह थी यदि दूसरी थी, तो दो रूहें जुदा-जुदा होने से दो सत्ताएं हो गईं यदि एक ही रूह तीनों में थी तो जब यीशु जीवित संसार में फिरता था तो उस समय और दोनों भी इसके साथ ही होने चाहिए थे यदि एक सत्ता तीन टुकड़े हो गई तो निज व्यक्तित्व में विभाग हो जाने से विनाश आवश्यक है, क्योंकि जो वस्तु विभाग को स्वीकार करती है उसका वह शरीर अवश्य विनाशी होता है, इस पर बहुत विवेचना की जा सकती है परन्तु यह छोटी-सी पुस्तिका इसके योग नहीं कहने का मतलब यह है कि वेद एक प्रभु को मानता है और ईसाई मत एक में मिश्रित मानता है जिसे कोई दार्शनिक स्वीकार नहीं कर सकता।

ईश्वर एक है

न द्वितीयो न तृतीयश्चतुर्थो नाप्युच्यते न पंचमो न षष्ठः सप्तमो नाप्युच्यते नाष्टमो न नवमो दशमो नाप्युच्यते य एतं देव मेक वृतं वेद।
अथर्व०॥

वह परमात्मा न दो है न तीन न चार न पांच न छे न सात न आठ न नौ अर्थात् वह अकेला एक ही वर्तमान है इस मन्त्र में २-से १० तक गिन्ती करके अच्छी प्रकार बता दिया। आगे है स एक एक वृदेक एव अथर्व १३-४-७

वह ईश्वर निस्सन्देह एक है—
एको विश्वस्य भुवनस्य राजा
ऋ० ६-३६ ४

वह सब लोकों का एक मात्र राजा है वेद ने बल पूर्वक सृष्टि के आदि में घोषणा की कि वह भगवान पतिरेक आसीत सारे संसार का एक ही पति है।

मगर इंजील क्या कह रही है

आदि में वचन था और वचन परमेश्वर के साथ था और वचन परमेश्वर था यही आदि में परमेश्वर के साथ था, सब कुछ इसी के द्वारा उत्पन्न हुआ उस में से कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न न हुई यूहन्ना १-१-८-३

वह सिद्धान्त जो लिखा गया केवल यूहन्ना ने ही वर्णन किया है और किसी ने इसे नहीं कहा उपरोक्त यूहन्ना के वचन में दो का ही उल्लेख है मगर ईसाई तीन मानते हैं, वचन, पिता और पवित्र आत्मा है, इनका किसी स्थान पर भी किसी इंजील में वर्णन नहीं, वर्णन पहले था। मगर उसको इंजीलों से निकाल दिया गया, वह यूहन्ना का पहला पत्र-बाब-४-या ७-८ में था हम पूछते हैं कि यह वचन पिता और पवित्रात्मा गुण हैं या द्रव्य-द्रव्य हों तो भी और गुण हों तो भी तसलीस सिद्ध नहीं हो सकती द्रव्य होने पर तीन सत्तायें पृथक्-पृथक् होकर स्वतन्त्र सत्तायें सिद्ध होंगी, गुण होने पर एक ही सत्ता रहेगी क्योंकि वस्तु के गुण तो वस्तु के साथ ही रहते हैं।

मधु कलश

मनुज नहीं हैं जिनके अन्दर सहज आत्मविश्वास नहीं है
व्यर्थ जिए गए मर मिटने का जीवन में अभ्यास नहीं है
लाखों के मालिक हों चाहे लेकिन उनको निर्धन समझो
धीरज का धन इस दुनिया में जिन लोगों के पास नहीं है।

★ ★ ★

भर-भर के नित नई तिजोरी फिरता क्यों इर्षाया
जग के काम नहीं आती जो मिट्टी है वह माया
है सच्चा धनवान दोस्तो वह दुनिया के अन्दर
जिसके मन को सपने तक में लोभ नहीं छू पाया

★ ★ ★

लेकर के अवलम्ब सत्य का निर्भय सदा विचारिए
दुनिया भर की चिन्ता तज कर परमेश्वर से डरिए
मत करिए आरम्भ काम को हिम्मत अगर नहीं है
लेकिन जब आराम करें तो निश्चित पूरा करिए

—विजय 'निर्बोध'

युवक-स्तम्भ—

सादर नमस्कार

श्री करनैलसिंहजी 'विद्यार्थी' विद्यावाचस्पति लेखराम नगर कादियां

****

नमस्कार पूर्वक प्यारे ! आपके समक्ष आगे भी कई बार आने का अवसर प्राप्त हुआ है। मगर इस बार मैं एक अनोखी सी चीज, अजीब-सा सन्देश लेकर आया हूं। ऐसा जादू जिसके बारे में आपको पता है पर इस समय नहीं जानते। ऐसा जादू जिसकी हमारे देश, समाज राष्ट्र, जाति, परिवार को अत्यन्त आवश्यक है जिसके बिना हम उन्नति नहीं कर सकते। इतना ही नहीं बल्कि उसके बिना सारे का सारा राष्ट्र, देश, विश्व निर्जीव-सा प्रतीत होता है।

क्या आप जानते हैं वह जादू क्या है, किसे कहते हैं। आपके पास भी होगा, आपके परिवार में भी होगा, आपके शहर एवं नगर में भी होगा पर आप उसको जानते हुए भी नहीं जानते। क्या आप नहीं जानते, नहीं पहचान सके, बताऊं मैं हां-हां यदि मैंने ही बताना है तो सुनिए वह जादू कौन-सा है पर इससे पूर्व कि मैं कुछ कहूं, आपको उस जादू के बारे में बताऊं एक बात कहे देता हूं कि बीच में किसी ने नहीं बोलना और ध्यान पूर्वक उसको सुनना, पढ़ना। हां कोई गल्ती हो तो एक हाथ से कान मेरा पकड़ लेना पर मारना न।

इस खून की होलियों से लत-पथ हुए उत्साह, उमंगों तरंगों, जोश, से सुशोभित जादू का पवित्र नाम है 'युवक-शक्ति' 'नौजवान' क्रान्ति दल 'युवक संगठन'। वह शक्ति (Power) वह संगठन, वह क्रान्ति जिस के क्रांतिकारी, जादूगर थे भारत के महान ऋषि, भारत के तपस्वी ओजस्वी भारत के नव-निर्माता महर्षि श्री स्वामी दयानन्द जी महाराज इसी एक भारत के महान जादूगर ने न केवल अपने ही निजी जादू से स्वयं ही सारे भारत देश को हिला, तोड़ फोड़ा एवं जोड़ा बल्कि ऐसे २ महान जादूगरों को भी पैदा किया (Training) किया जिन्होंने न केवल अपने ही देश में महान कार्य किया बल्कि विदेशों में भी जाकर विदेशी सरकार को हिलाया तोड़ा फोड़ा और बता दिया कि इस जादू (युवक शक्ति) में कितना बल होता है।

यह वही जादू है जिसको शेरे बबर लाला लाजपतराय, सरदार अजीतसिंह, देवता स्वरूप भाई परमानन्द, शहीदे-आजम भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव, काकोरी केस के महान् अभियुक्त क्रांति सम्राट श्री रामप्रसाद बिस्मिल, श्री गेन्दा लाल दीक्षित, श्री रोशन सिंह आर्य, लोह पुरुष सरदार पटेल, लेखनी सम्राट श्री पं. लेखराम, सारे का सारा जीवन आर्य समाज, राष्ट्र देश को देने वाले वीर श्रद्धानन्द महात्मा हंसराज, महर्षि के महान शिष्य श्री दामोदर सावरकर आदि आदि महान् आत्माओं ने स्वदेश में महर्षि स्वामी दयानन्द जी सरस्वती के चरणों में बैठकर इस जादूगर से जादू प्राप्त कर सारे देश को जगा दिया फिर क्या था जादू से भारत का प्रत्येक प्राणी परिचित हो गया और इस के सहारे अंग्रेज विदेशियों के ऐसे कान पकड़े कि उन को स्वदेश से बाहिर ही निकाल कर छोड़ा। ये था महान जादू महान जादूगर का।

पर इस जादू ने (युवक शक्ति) ने स्वदेश में ही कार्य नहीं किया था, स्वदेश को ही नहीं जगाया था, स्वदेश को ही नहीं बताया था बल्कि परदेश में भी जा जा कर विदेशी सरकार को हिला दिया था, उस को भी बता दिया था कि इस जादू (युवक संगठन) में कितनी ताकत है।

क्या आप नहीं जानते निडर क्रांतिकारी नेता जी सुभाष का नाम, क्या आप क्रांतिकारियों के परम गुरु श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा को नहीं जानते, क्या आप गणेश शंकर विद्यार्थी, घनश्यामसिंह गुप्त, ला० रामनारायण, देशभक्त ला० हरदयाल, श्री कर्तारसिंह जी, मास्टर अमीर चन्द जी आदि का नाम नहीं जानते? कैसी हलचल मचा दी थी श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा ने विदेश में, कितनी निडरता दिखलाई थी श्री नेताजी ने हिटलर को सभी जानते हैं इस बारे में।

यह है एक झलक, एक दृष्टि, एक दृश्य की रूप रेखा उस जादू की, उस महान सन्देश की जिस को मैं आप के समक्ष रखना चाहता था, जिस जादूगर के जादू को आप तक पहुँचाना चाहता था, जिस जादू से आप को परिचित कराना चाहता था।

प्रिय पाठकगण, समझ लिया, देख लिया, पहचान लिया महान जादू (युवक-संगठन) को कितनी ताकत होती है, कितना बल होता है इस शक्ति में जिस के बारे में १८५७ का गदर प्रमुख प्रमाण के रूप में आप के समक्ष उपस्थित ही तो है। इसीलिये ही तो उस समय इस क्रांति की मशीन आर्य-समाज को राजद्रोही, गदर के मूल कारण ठहराया गया था। यदि आप को नहीं पता तो श्री बकेटाईन शिरोल कृत पुस्तक इण्डियन अनरेस्ट नामक आज ही पढ़िये और वहां पर स्पष्ट ये शब्द नोट करें कि :—

"जहां जहां आर्य-समाज का जोर है वहां पर राजद्रोह प्रबल है।"

अस्तु, यदि आप चाहते हैं कि आजके युग में ये फैल रही अविद्या, अंधकार, कुरीतियां चाहे वे समाज में हों, चाहे राष्ट्र में, चाहे देश में वो दूर हो जाएं अथवा आप, आप का समाज राष्ट्र व देश पवित्र, सुखी हो जाये तो आज ही भारत के महान जादूगर से जादू लें, सीखें, और युवक-संगठन की ओर ध्यान दें, युवक समाजें, अपने पुत्रों को, युवकों को युवक समाजों में भेजें, युवकोपयोगी साहित्य उन्हें दें। हमें प्रसन्नता है कि आर्यसमाज के महान् साप्ताहिक पत्र "आर्य-जगत" ने एक पूरे का पूरा पृष्ठ आर्य युवकों को दे दिया है जिस में युवकोपयोगी सामग्री का ही समावेश होगा। जिस प्रकार मैंने आगे भी कहा है कि "युवक संगठन" (जादू) ही एक मात्र उपाय है एक जाति को उठाने, जगाने का, एक राष्ट्र को बलवान तथा ताकतवर बनाने का सो आर्य-जगत के समक्ष, आदरणीय पाठक-गण के सामने मैं फिर यही कहूंगा कि कोई भी देश धन से भरा हुआ हो तो उसे हम उन्नत, समृद्धिशाली नहीं कह सकते, कोई भी परिवार, राष्ट्र, देश आबादी से भरपूर हुआ हो तो उसे हम उन्नत नहीं कह सकते अथवा किसी भी देश की उन्नति उस देश के बड़े-बड़े मकानों, कारखानों से नहीं नापी जाती। उस देश की उन्नति यदि नापी जाती है तो इससे कि उसमें रहने वालों का व्यवहार कैसा है सभ्य हैं या असभ्य, समझदार हैं या मूर्ख विद्वान् हैं या अनपढ़,

(शेष पृष्ठ ६ पर)

सादर नमस्कार।

(पृष्ठ ५ का शेष)

परिश्रमी हैं या कमजोर कृतज्ञ हैं या कृतघ्न, उत्साही, निडर हैं या डरपोक, ईश्वर-भक्त हैं या नास्तिक राजनीतिज्ञ हैं या नहीं आदि-आदि महान गुणों द्वारा ही उसको मापा जा सकता है। कोई अच्छा इन्सपैक्टर स्कूल अथवा कालिज की बड़ी-बड़ी इमारत को ही देखकर उसकी उन्नति-अवनति नहीं बता सकता यदि वह देखेगा तो यही देखेगा कि विद्यार्थियों में कुछ गुण हैं या नहीं।

अस्तु ये सब गुण उन में तभी आ सकते हैं जब कि उन्होंने बचपन में ही किसी से सीखें हों। तो ज्यादा अपने सन्देश को न कहता हुआ मैं पाठकों से यही कहूँगा कि युवक समाजों को ज्यादा से ज्यादा खोलें प्रचार करें ताकि आप के युवक, राष्ट्र, देश के युवक आज की चल रही बुरी आंधी से बचकर अपने आप का, समाज का, राष्ट्र का व देश का भला कर सकें।

यही सन्देश मैं लेकर आप के समक्ष खड़ा हुआ था; यही अजीब बात, जादू महान् जादूगर (ऋषि दयानन्द) का आप को बताना चाहता था सो बता दिया। आप को सत्य कहता हूं इस में बहुत ताकत है एक बार अजमा कर तो देखें। युवक संगठन का महान् विस्तृत उद्देश्य दूसरे अंक में दूंगा। तथा आप से भी यही कहूँगा कि अपनी २ युवकोपयोगी सामग्री 'सम्पादक आर्य युवक स्तम्भ मार्फत आर्य जगत कार्यालय निकट कचहरी जालन्धर।' को भेंट करें। अन्त में पुनः आप को नमस्कार कहता हूं।

सभा का वार्षिक अधिवेशन

(पृष्ठ ३ का शेष)

श्री भोलानाथ जी प्रधान पुतली घर श्री विश्वनाथ जी पूर्व प्रधान श्रद्धानन्द बाजार समाज, श्री मथुरादास जी मन्त्री नवांकोट, ला० अमरनाथ जी ला० भगवानदास जी, ला० अमृतलाल जी प्रधान श्रद्धानन्द बाजार समाज वैद्य कुन्दनलाल जी एम. ए., डा० सावित्री जी बहिन सावित्री जी बहिन सावित्री चोपड़ा जी बहिन कौशल्या देवी जी, बहिन मायादेवी जी आदि सत्तर भाई बहिनें आ रहे हैं। टंकारा ऋषि व आर्यसमाजों के जयघोषों से गूंज उठेगा। जहां पर पंजाब पहुँच जाये वहां जोश का क्या ठिकाना—

—सं०

हिन्दू धर्म की अग्नि परीक्षा

(ले०—श्री सुन्दरलाल जी वोहरा गुलाब सागर जोधपुर)

(गतांक से आगे)

देश की हर समस्या को पाश्चात्य परिस्थितियों के दृष्टि कोण से देखने का ही यह फल है कि आज ईसाई मत हिंदुत्व पर हावी होता जा रहा है। नागालैण्ड के रूप में ईसाइयत भारत में स्थायी रूप से अपना मठ कायम कर रही है। आज भारत में एक करोड़ के करीब ईसाई गृहस्थ व सात हजार से ऊपर ईसाई धर्म-प्रचारक हैं। आए दिन नए-नए चर्चों की स्थापना हो रही है। प्रतिमास तीस हजार के करीब नादान व निरक्षर आदिवासी व अन्य हिन्दुओं को ईसाई बनाया जा रहा है। करोड़ों रुपया ऋण के नाम में विदेशों से प्राप्त करके भारत-स्थित ईसाई संस्थाएं ईसाइयत का प्रचार करने में लग रही हैं। औरंगजेब ने तलवार के बल पर हिन्दुओं से उनका ईमान बदलवाया था, अंग्रेजों ने सरकारी पद का प्रलोभन देकर ईसाइयत को भारत में पनपाया था, और आज वे उच्छिष्ट ईसाई संस्थाएं भोले-भाले ग्रामीणों को आर्थिक व चिकित्सा-सम्बन्धी सुविधाओं का प्रलोभन देकर उन्हें भ्रष्ट कर रही हैं। विदेशों से पाठ्य-पुस्तकों के नाम पर प्रति वर्ष हजारों रुपये का हिन्दू धर्म-विरोधी साहित्य हिन्दुओं में ही लाकर बांटा जाता है। अफसोस, चश्मा लगाने पर भी हमारी आंखों का दृष्टि-दोष नहीं जाता है।

सिवाय इस्लाम व ईसाई धर्म-प्रचारकों के मानव-इतिहास में किसी ने भी तलवार नहीं उठाई। शक्कर की चासनी में तैयार की हुई कुनैन की गोलियां खिलाने में ईसाई मिशनरी ही गौरव का अनुभव कर सकते हैं, एक हिन्दू धर्म-प्रचारक असत्य को सत्य का जामा पहनाने की स्वप्न में भी कल्पना नहीं करता।

ईमानदारी व निष्पक्षता से देखा जाय तो आज भारत में बसे हुए समस्त मुसलमान व ईसाई लोग निश्चित रूप से हिंदू ही हैं। यह भला हम कैसे मान सकते हैं कि अपने को अहिन्दू कहने वाले सब लोग शरणार्थी अथवा खानाबदोश जातियों के रूप में ही आए हैं। हमारे आपसी मनमुटाव व मठों, मन्दिरों तथा घाटों पर लड़ने की प्रवृत्ति ने ही हम लोगों में से करोड़ों भाइयों को इस्लाम व ईसाई होने को मजबूर किया है। आज देश के अनेक प्रांतों में मुसलमानों के शादी-कार्य ब्राह्मण पंडित ही सम्पन्न करवा सकते हैं। ईसाई बने हुए परिवारों के सिर्फ नाम बदल जाते हैं, लेकिन उनके रीति-रिवाज सौ की सदी हिंदू ही बने रहते हैं, भला सात समुद्र पार के रीति-रिवाजों को यहां पर कैसे थोपा जा सकता है, लोगों के जन्मजात संस्कारों को कैसे बदला जा सकता है? जो भी हो, हिंदुओं की संख्या व शक्ति को तो अवश्य ही धक्का लगता है। सही शब्दों में आज हिंदू धर्मपर अमावस्या की कुहरेभरी रात्रि छा रही है फिर भी हमारी कुम्भकर्णी-निद्रा नहीं टूटती है-इसका अर्थ तो यही हुआ कि रात को हमारे मकान में आग लगी है और हम रजाई ओढ़े हुए पड़े हैं। हिन्दू धर्म के लिए आजकी तुलना में बुरे दिन शायद ही कभी आए हों, तिस पर भी हमारी धमनियों में उबाल (Ferment) नहीं आता। ऐसा लगता है जैसे हमारा रक्त आज नसों में सर्द होकर (Congealed) रह गया है। 'उत्तिष्ठत जागृत प्राप्य वरान्निबोधत' के उद्घोषक आज न जाने कहां समाधिस्थ हो गए हैं। सीमा से अधिक सहिष्णुता साधक और समुदाय का निश्चित रूप से सत्यानाश कर डालती है। कोरा शुष्क वेदान्त बघारने वाला धर्म पीपल के शुष्क पत्ते की तरह हवा में उड़कर पूर्ण हो जाता है। आज हमें गंगा-तट पर बैठकर गीता का गुनगुनाना शोभा नहीं देता, आज हमें शरीर पर धूनि की राख रमाना व गले में रुद्राक्ष डालकर भिक्षान्न का भोग लगाना उचित नहीं लगता, आज हमारे लिए भांग व गांजे लोटे चढ़ाना व चिलम के कश खींचना कदापि शोभनीय नहीं है, आज हमारे लिए मंदिरों में बैठकर औरतों को भागवत की कथा सुनाना रत्ती भर भी लाभदायक नहीं है।

हर युग का अपना धर्म होता है—सन्देश होता है। धर्म कोई जड़ अथवा स्थिर रहने वाले उपादानों से नहीं बना है। सन्यासियों व मनीषियों का धर्म वैराग्य व ज्ञान की ओर उन्मुख रहता है जब कि गृहस्थी लोग उसी धर्म को ग्रहण करते हैं जो उन के जी को भाए।

(क्रमशः)

सिंहावलोकन

(श्री उत्तमचन्द जी 'शरर' पानीपत)

****

आर्य वीर दल पंजाब ने गत वर्ष जो महासम्मेलन करनाल में किया, उस से प्रेरित होकर इस बार मध्य प्रदेश ने भी भूपाल में प्रान्तीय वीर सम्मेलन रखा। मुझे भी जाने का अवसर मिला। गाड़ी में दिल्ली से मुसलमान भाइयों का एक बड़ा जन-समूह भोपाल जा रहा था। पूछने पर ज्ञात हुआ कि वहां उनकी तबलीगी कान्फ्रैन्स है। गाड़ी के डिब्बे में प्रायः सभी मुसलमान नमाज पढ़ते रहे तथा कई कुरान का पाठ करते। सम्भवतः संसार के सब स्थानों से यह भाई एकत्रित हुए थे। मेरे साथ मुम्बासा तथा मराकश के मुसलमान दोस्त बैठे थे आपस की मीठी चुटकियां चलती रहीं। मुझे उन्होंने भोपाल कान्फ्रेंस सुनने का निमन्त्रण दिया। मैंने भोपाल में भी उनका प्राधान्य पाया। हिन्दु प्रायः भीरू, संघर्ष से भागने वाला, तथा अपने धर्म से अपरिचित देखा। बार-बार अपनी दुरवस्था देख इकबाल का यह पद्य याद आता था।

'काफ़ले देख और उनकी तेज
रफ्तारी भी देख।
रहरवे दरमान्दा की मंजिल से
बेजारी भी देख'

भोपाल में आर्य वीर सम्मेलन में अनेकों विद्वानों के दर्शन हुए वहां तपोमूर्ति पं. देवप्रकाश जी ने तो दर्शन देकर ही मुझे निहाल कर दिया। सादगी का प्रतीक, दयानन्द का दीवाना, सच्चा मिशनरी, उज्जैन के बहाईमत के विरुद्ध मोर्चा लिए खड़ा है। नाम की इच्छा नहीं काम की धुन है। काश! आर्यसमाज में प्रत्येक आर्य सभासद पं. देवप्रकाश जी की भावना वाला होता।

दल की परिस्थिति मध्यप्रदेश में अच्छी है। सम्भवतः पंजाब से भी अच्छी। कुल मिलाकर पांच हजार सैनिक प्रांत भर में आर्य प्रातः की दैनिक शाखाओं में आते हैं। मेरे लिये तो यह एक आदर्श है। जिसकी प्राप्ति के लिये जाने कितने नवयुवक कार्यक्षेत्र में कूदने चाहियें।

गुड़गांव में मार्च मास में प्रांतीय सम्मेलन की प्रार्थना करने के लिये मैं गुड़गांव भी गया। वहां पांच समाजें प्रेम तथा उत्साह से कार्य कर रही हैं। मेरी प्रार्थना को स्वीकार करते हुए छावनी समाज ने अप्रेल मास में होने वाले अपने उत्सव को स्थगित कर दल के सैनिकों को सम्मेलन के लिये आशीर्वाद दिया। स्वागत समिति का निर्माण भी हो गया जिस के प्रधान श्री ठा० आनन्दपाल जी एडवोकेट मन्त्री चौ० वजीरचन्द जी तथा कोषाध्यक्ष श्री म० नौतनदास जी चावला नियत हुए। आर्यसमाज भीमनगर के सुयोग्य प्रधान श्री रामचन्द्र जी ने उस समय १०१) सम्मेलन के लिये अपनी समाज से दिया। २७ २८ मार्च को सम्मेलन हो रहा है। आर्यों का उत्साह प्रशंसनीय था।

पिछले दिनों वल्लभगढ़ के उत्सव से लौटने पर मुझे पानीपत में अपने वारन्ट गिरफतारी का ज्ञान हुआ। सुना है कि यह नारायणगढ़ में की गई मेरी किसी तकरीर के आधार पर थे। जमानत हुई और इस से बढ़कर मुझे ज्ञान हुआ कि पंजाब ही नहीं, पंजाब से दूर बैठे आर्य भी मुझे अपने प्रेम का पात्र समझते हैं। व्यक्ति [illegible] लिखे पत्र इस सम्बन्ध में आर्य भाईयों के आये जिन में सहायता के लिये offer की गई थी। इसी प्रकार दिल्ली की केन्द्रीय समाज ने भी श्रद्धानन्द दिवस पर गांधी ग्राऊंड में मेरी सहायता की घोषणा की। आर्य प्रादेशिक सभा तथा 'आर्य जगत का मैं किन शब्दों में धन्यवाद करूं। सभा ने मेरी सहायता के लिए मुझे पत्र लिखा तथा आर्य जगत के योग्य सम्पादक ने सर्व प्रथम मेरे सम्बन्ध में अपने पत्र में टिप्पणी लिखी। आर्य गजट ने भी इस विषय में लिखा। मुझे अम्बाला के डा. हरि प्रकाश जी तथा श्री राजाराम सिंह जी का विशेष धन्यवाद करना है जिन्होंने मेरी जमानत के लिए काफी कष्ट सहा। करनाल को आर्य समाजों से तो मेरी आत्मीयता है, अतः वहां के आर्यों ने भी मेरा उत्साह बढ़ाने में कसर नहीं रखी। भाई जिज्ञासु जी पं० भगवानदास, डा. बहल, प्रो. राम प्रकाश तथा भाई बीरुराम जी की कृपा से तो मैं दब कर नतमस्तक हो गया। आर्य भाईयों से प्रार्थना है कि वे विशेष चिन्ता न करें। मुझे प्रसन्नता है कि Case मुफ्त पर हुआ है जिसे कठिनाइयों को सहने का ही नहीं निमन्त्रित करने का भी चाव रहता है।

आर्य नेताओं की आपस की कशमकश देख कर उदासी होती है। यदि म० आनन्द भिक्षु जी तथा श्री आनन्द स्वामी जी मध्यस्थ का कार्य कर इस विवाद को समाप्त करा सकें तो समाज का उपकार होगा। आर्य भाईयो में ऋषि के मिशन के लिये अत्यन्त श्रद्धा है। डर है कि नेताओं की आपस की खींचतानी इसे कम न कर दे।

करनाल में ईसाइयत ने पिछले दिनों भ्रम फैलाकर हिन्दु जनता को काफी धोखा दिया। संभवतः ७ हजार हिन्दु उनके उस जाल में फंसा था। इस अवसर पर करनाल समाज ने कैम्प लगा कर हिन्दुओं को सचेत किया। श्री बर्क साहब श्री मामचन्द जी डा० गणेशदास जी तथा श्री बीरुराम जी ने अत्यन्त परिश्रम कर इस जाल से हिन्दुओं को बचाया। सोचता हूं यदि ऋषि का आर्य समाज न होता, तो हिंदुओं को इस गर्त में गिरने से कौन बचाता?

रोहतक में पांचवां हरयाणा आर्यसम्मेलन की जोरदार तैयारियां

कार्यालय—दयानन्द मठ रोहतक

दिनांक २०-१२-६४ को दयानंद मठ रोहतक में हरयाणा के आर्य कार्यकर्ताओं की एक आवश्यक सभा मान्यवर श्री आचार्य भगवान देव जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई, जिस में १५० प्रतिनिधियों ने भाग लिया। सर्वसम्मति से निर्णय हुआ कि आर्यसमाज के प्रचार को प्रगति देने तथा शुद्धि के क्रियात्मक आन्दोलन द्वारा भूले जाटों के साथ रोटी बेटी का व्यवहार करके उनको आर्यसमाज में मिलाने के लिये तथा अराष्ट्रीय ईसाई प्रचार को रोकने के लिये रोहतक में १९, २०, २१ मार्च १९६५ को हरयाणा आर्य महासम्मेलन की जोरदार तैयारियां की जा रही हैं। अतः समस्त आर्य (हिन्दू) जगत से प्रार्थना है कि सम्मेलन को सफल बनाने के लिये तन मन धन की सहायता कृतार्थ करें। भरतसिंह, म्यूनिस्पल कमिशनर

संयोजक—हरयाणा आर्य महासम्मेलन, रोहतक

शोक समाचार

डी. ए. वी. H/S स्कूल गुरदास के अध्यापक वर्ग तथा छात्रों ने महता मदनगोपाल जी की धर्मपत्नी श्रीमती प्रमिला के निधन पर शोक प्रकट किया तथा दिवंगत आत्मा की सद्गति के लिए व उनके परिवार को इस दारुण कष्ट सहन करने की प्रभु से प्रार्थना की गई।

मुलकराज
हैडमास्टर

प्रश्न पहेलियों को....

(पृष्ठ २ का शेष)

२९. सब सत्य विद्याओं की पुस्तक कौन-सी है।

३०. विश्व को मानवता का संदेश देने वाला कौन-सा धर्म है।

३१. महर्षि दयानन्द की सर्व प्रसिद्ध पुस्तक का क्या नाम है।

३२. विश्व में वैदिक स्वराज्य क्यों स्थापित होना चाहिए।

३३. क्या हम पुनः भारत को विश्व का गुरु बना सकते हैं।

३४. हमें सोलह संस्कार क्यों करने चाहिएं।

३५. भारत में विश्व के मानव समाज का पथ प्रदर्शन करने वाली कौन सी संस्था है।

३६. हम भारतीय सभ्यता को ही क्यों अपनाएं विदेशी सभ्यता को धारन करने में क्या हानि है।

३७. मानव जीवन का अन्तिम लक्ष्य क्या है।

३८. मनुष्य मुक्ति किस प्रकार पा सकता है।

३९. संसार में प्राणों से भी प्रिय वस्तु क्या है जिसके लिए हम सर्वस्व न्यौछावर करके उसकी रक्षा कर सकते हैं।

४० मृत्यु के साथ जाने वाली कौन-सी वस्तु है।

४१. विश्व की विख्यात विभूतियों में विश्व वन्दनीय महर्षि दयानन्द का सर्वोच्च स्थान क्यों है।

४२. मानव जीवन हमें किस लिए प्राप्त हुआ।

४३. सृष्टि को आदिकाल को कितने वर्ष बीत चुके हैं।

नोट—उपरोक्त प्रश्नों के सही उत्तर देने वाले सभी बालक बालिकाओं को पारितोषिक व पुरस्कार दिया जावेगा। अपने उत्तर निम्न पते पर भेजें।

वेदपथिक धर्मवीर आर्य
झंडाधारी उपदेशक अध्यक्ष
आर्य हवन सामग्री निर्माण
शाला सराय रहेल्ला नई
दिल्ली ५

आर्यसमाज (अनारकली) मंदिर मार्ग नई दिल्ली

आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग की साधारण वार्षिक बैठक रविवार दिनांक २४-१-६५ को प्रातः ११ बजे आर्यसमाज भवन में होगी। आपसे प्रार्थना है कि आप दर्शन देने की कृपा करें।

प्रधान जी की आज्ञानुसार,
दयाराम शास्त्री, मन्त्री,

कार्यक्रम

१. पिछली बैठक की कार्यवाही की पुष्टि।

२. वर्ष १९६५ के लिए अधिकारियों का चुनाव तथा अन्तरंग सभा का निर्माण।

३. फुटकर प्रधान जी की आज्ञा से।

नोट :—यदि, आपने आर्यसमाज का चन्दा वर्ष १९६४ का अभी तक नहीं दिया तो वह कृपया शीघ्र भेज दें, ताकि आपको सभासद घोषित किया जाए।

धन्यवाद।

★

पुरस्कार विजेता

आर्य युवक परिषद् दिल्ली की सत्यार्थ प्रकाश परीक्षाओं में इस वर्ष निम्न विद्यार्थी पुरस्कार के भागी बने :—

सत्यार्थ [illegible],—श्री [illegible] [illegible] नई दिल्ली।

सत्यार्थ विशारद—कु. मंजुलता ([illegible]), श्री. [illegible] प्रकाश (दिल्ली) श्री. [illegible] प्रसाद (कैथिया)

सत्यार्थ भूषण—कु. आशा [illegible] (रामपुर), अशोक कुमार ([illegible]), आशा रानी (रामपुर)।

सत्यार्थ रत्न—कु. उषा ([illegible]) श्री. गुलाब चन्द (लाखेरी) श्री प्रवीण (दिल्ली)।

प्रधान—देवव्रत धर्मेन्द्र

हीरक जयन्ती समारोह

आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान का हीरक जयन्ती समारोह दिनांक २९, ३० व ३१ मई सन १९६५ को ऋषि निर्वाण स्थली, अजमेर में पूर्ण सफलता के साथ मनाने का निश्चय किया गया है। इस समारोह को महत्वपूर्ण और उपयोगी बनाने का पूर्ण प्रयास किया जा रहा है। इस में कई आवश्यक और उपयोगी सम्मेलनों का आयोजन भी किया गया है। यथा—वेद सम्मेलन, आर्य सम्मेलन संस्कृति संरक्षण सम्मेलन, महिला सम्मेलन, राष्ट्र रक्षा सम्मेलन और राष्ट्र भाषा सम्मेलन आदि।

—मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा
राजस्थान

मुद्रक व प्रकाशक श्री [illegible] की आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर द्वारा वीर मिलाप प्रैस, मिलाप रोड जालन्धर से मुद्रित तथा कार्यालय कार्यालय महात्मा हंसराज भवन निकट कचहरी जालन्धर शहर से प्रकाशित मालिक—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर



टैलीफोन न० ३०५७ [आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधिसभा पंजाब जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd. No. P. 121

एक प्रति का मूल्य १३ नये पैसे वार्षिक मूल्य ६ रुपये

वर्ष २५ अंक ४) १२ माघ २०२१ रविवार—दयानन्दाब्द १४०— २४ जनवरी १९६५ (तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

वेद सूक्तय:

सत्यं वदयामि नानृतम्

मैं सत्य बोलूंगा, असत्य नहीं। मानव संकल्प कर ले कि मैं अपने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में, कार्य में सत्य का प्रेमी बनकर सत्य ही बोलूंगा, झूठ नहीं बोलुंगा तो कितना हित हो।

त्रयो दासा आञ्जनस्य

ज्ञानी मनुष्य को तीन अपना दास बनाते हैं। उसका नाश कर देते हैं। ये तीन शत्रु हैं जिन से एक ज्ञानी पुरुष का जीवन नष्ट हो जाता है। इन से सर्वत्र बचना ही चाहिए। कौन २ से ?

तक्मा बलास आदहि:

इन में पहला तक्मा है अर्थात निराशावाद, दूसरा बलास-बुरे विचार तथा तीसरा आदहि:विषय ये तीनों मनुष्य समाज तथा समूचे देश के जीवन को मार देते हैं। इन से सदा बचें।

सा म वे द से

वे दा मृ त

बलिदान की अमर ज्योति

अग्निर्वृत्राणि जङ्घनद्द्रविणस्युर्विपन्यया। समिद्धः शुक्र आहुतः॥

वेद का उपदेश है कि अग्नि आहुतियों को प्राप्त होकर खूब प्रदीप्त होता है। अन्धकार तथा रोग के कीटों को मार देता है। राष्ट्र की स्वतन्त्रता के अग्नि को प्रदीप्त करने के लिए भी वीर-पुरुषों के जीवन की आहुति चाहिए। विदेशी सत्ता का उन्मूलन करने के लिए स्वराज्य आंदोलन की अग्नि को चमकाने में पंजाब केसरी ने छाती पर लाठियां खा कर अपना बलिदान देकर बड़ा भारी कार्य किया। इस २८ जनवरी को उन बलिदानी वीर लाला लाजपतराय जी के जीवन से हम धर्म व देशार्थ तन-मन-धन देना सीखें।

ऋषि दर्शन

नमस्कृत्य राजकर्म

राजा को चाहिए कि राज्य कर्म को आरम्भ करते हुए सर्व-प्रथम भगवान् को नमस्कार करे। राजा व सारे कर्मचारी प्रभु के भक्त उपासक तथा अटल विश्वासी हों।

ऋद्धियुक्तं वीरवत्

ऐसा राज्य, जिसमें प्रभु का भजन होता है, सदा धन-धान्य से भरपूर तथा वीरता से भरा होता है। उसमें किसी प्रकार की कमी नहीं होती। सब सुखों से भरा होता है।

वीरपुरुषोजायते

ऐसे देश में वीर पुरुष होते हैं। उनका मान होता है। जहां का शासक, कर्मचारी सदाचारी तथा प्रभु विश्वासी वीर है वहां वीरों का जन्म होता है।

भा ष्य भू मि का से

अधिष्ठाता—श्री संतोषराज जी सम्पादक—त्रिलोक चन्द्र शास्त्री

योगदर्शन में भी आता है कि—
योगांगानुष्ठानादशुद्धिक्षये
ज्ञान दीप्तेराविवेक ख्यातेः

योग अङ्गों के अनुष्ठान से अशुद्धि के क्षय होने पर विवेक ख्याति पर्यन्त ज्ञान की दीप्ति बढ़ती जाती है। योग-समाधि के आठ अङ्ग हैं। उनके सेवन से पांच पैरों वाले अविद्या, अस्मिता, राग, अभिनिवेश रूप अशुद्धियां अर्थात् मिथ्या ज्ञान के नाश होने पर सम्यक् यथार्थ ज्ञान का प्रकाश बढ़ता है। जैसे २ साधन अनुष्ठान में लाये जाते हैं, वैसे २ क्लेश रूपी अशुद्धि हल्केपन को प्राप्त होती जाती है तथा ज्ञान के प्रकाश की दीप्ति बढ़ती जाती है। यहां तक कि यह ज्ञान के प्रकाश की वृद्धि उच्चता को प्राप्त होती जाती है कि यह विवेक ख्याति पर्यन्त पहुंच जाती है। अर्थात् सत्व, रज, तम गुणों और पुरुष के स्वरूप का ज्ञान साक्षात् हो जाता है। योग के अंगों के अनुष्ठान अशुद्धि के वियोग का कारण है और विवेक ख्याति की प्राप्ति का कारण है। जैसे धर्म सुख प्राप्ति का साधन है, अन्य कोई कारण नहीं है।

कारण कितने हैं

कितने कारण शास्त्र में होते हैं? नौ ही कारण है। उत्पत्ति, स्थिति, अभिव्यक्ति, विकार, प्रत्यय, प्राप्ति, वियोग, अन्यत्व और धृति—ये नौ कारण हैं। अब योग के अङ्ग दिखलाते हैं। यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रतिहार, धारणा, ध्यान, समाधि ये आठ अङ्ग है।

जैसे इससे पहले सूत्र में ऊपर कह आए हैं। इन अंगों के अनुष्ठान से अशुद्धियों के नाश होने पर ज्ञान का प्रकाश बढ़ते-बढ़ते विवेक ख्याति की सीमा तक हो जाता है। अर्थात् यमनियमों से मल

दर्शन चर्चा

जीवन का दर्शन

(ले०—श्री डा० शंकरदास जी लारेंस रोड अमृतसर)

विक्षेप आदि क्लेश रूप अशुद्धियों का नाश, फिर आसन, प्राणायाम और प्रतिहार से धारणा-धारणा शक्ति की योग्यता, फिर धारणा-ध्यान और समाधि से विवेक-ख्याति की साक्षात् प्राप्ति। मोक्ष के लिए आत्मविद्या का लगातार पढ़ना, सुनना और विचार करना तथा अध्यात्मशास्त्र जानने वालों के साथ बुद्धि की परिपक्वता के लिए सदा वार्तालाप करना चाहिए। उसके सन्देह की निवृत्ति होती है। अज्ञात विषयों का बाध और निश्चित ज्ञान विवेक होते हैं। अब सम्वाद का प्रकार दिखाते हैं—असूया रहित जो शिष्य गुरू सहाध्यायी, उत्कृष्ट ज्ञानवान तथा मुमुक्षु हैं—इनके द्वारा अध्यात्म विद्वान से सत्संग करे। तत्व की जिज्ञासा होने पर अपने प्रयोजन के लिए प्रतिपक्षी होकर प्राप्त होवे। अर्थात् अपने प्रयोजन का अर्थी पक्षपात छोड़कर तत्व का निर्णय करे। जब अपने पक्ष का हठ होता है तब लोग न्याय का अतिक्रमण करने लगते हैं। जैसे बीज की रक्षा के लिए सब ओर से कांटेदार शाखा लग देते हैं। उसी प्रकार वैसे ही तत्व निर्णय की रक्षा के लिए जल्प और वितण्डा है। जिज्ञासु को हठ से इनका आश्रय नहीं लेना चाहिए।

जीवन का उद्देश्य दुःखों की अत्यन्त निवृति प्राप्त करना है। जैसा महर्षि कपिल ने अपने सांख्य दर्शन के पहले सूत्र में कहा है। अथ त्रिविधदुःखात्यन्तनिवृत्तिरत्यन्त पुरुषार्थः—क्योंकि बिना दुःखों से छुटकारा पाये शाश्वत नित्य सुख की प्राप्ति नहीं हो सकती। सारे प्राणी सदा इसी की तलाश में हैं। दुःख-दुःख का कारण, दुःख का नाश और नाश का उपाय—इन सब के वास्तविक स्वरूप पर विस्तार से आर्यजगत के गत अंकों में समय २ पर विचार कर आया हूं। गतांक में योग दर्शन के सूत्र विवेक-ख्यातिरविप्लवा हानोपायः—अर्थात् दुःखों के नाश का साधन निर्बाध—यथार्थ विवेक ख्याति है। इस पर विचार हो चुका है। अब आगे यह विचार करना है कि यह विवेक ख्याति है क्या? इस का यथार्थ स्वरूप क्या है?

क्योंकि इस को भली-भान्ति जान लेने से ही दुःखों की अत्यन्त निवृत्ति तथा परमानन्द की प्राप्ति होगी। व्यास मुनि ऊपर के सूत्र के नीचे इस का अर्थ करते हैं। सत्व पुरुषान्यता प्रत्ययो विवेकख्यातिः—अर्थात् सत्व व पुरुष के अलग होने का यथार्थ भान ज्ञान विवेकख्याति है। ऐसा ही सांख्य दर्शन में भी तत्वाभ्यासात विवेकख्यातिः अर्थात तत्वके अभ्यास करने से विवेक ज्ञान की सिद्धि हो जाती है। मुख्य तत्व दो ही हैं। जड़ और चेतन इनमें जड़ तत्व के मुख्य रूप से चौबीस विभाग हैं। चेतन तत्व पुरुष शुद्ध स्वरूप से परमात्मतत्व कहलाता है। जीवात्मा का अपने शुद्ध स्व-रूप को पाकर परमात्व तत्व का पाना उसका अन्तिम ध्येय है। यही वास्तविक ज्ञान है। इन्हीं दोनों आत्माओं को योग दर्शन की परि-भाषा में पुरुष और पुरुष विशेष कहा गया है। सर्व प्रथम क्रमशः जड़ तत्व के चौबीस विभाग, पुरुष पुरुष विशेष परब्रह्म पुरुषोत्तम परमात्मा के वास्तविक यथार्थ स्व-रूप की परीक्षा करें—

जड़ तत्व

यह जड़ तत्व दृश्य प्रपञ्च जगत् (**Manifested state**) जो कुछ भी देखने, सुनने तथा समझने में आता है। यह प्रकाश (**light**) क्रिया (**activity**) स्थिति स्वभाव वाला है। अथवा विभाग के शब्दों में प्रोटीन (**Porton**) इलक्ट्रोन (**Electrone**) और न्यूट्रोन (**Nuetron**) का बना हुआ है और दर्शनों के शब्दों में इस को सतोगुण रजोगुण व तमोगुण कहते हैं। ये तीनों गुण नित्य हैं। इन में सतोगुण प्रकाश स्वभाव वाला है, रजोगुण क्रिया स्वभाव वाला है, तथा तमोगुण स्थिति स्वभाव वाला है। भूत और इन्द्रियों के रूप में प्रतीत सत्व, रज, व तम रूप प्रकृति तथा उनके विकारों का नाम दृश्य प्रपञ्च है।

(अपूर्ण)

सार्वदेशिक विद्यार्य सभा की परीक्षाएं

इस वर्ष मार्च, अप्रैल में होने वाली सार्वदेशिक विद्यार्य सभा की परीक्षाएं दिनांक १७ व १८ अप्रैल १९६५ दिन शनिवार व रविवार को होंगी। सभी परीक्षार्थियों व केन्द्रों को सूचित किया जाता है कि वे शीघ्र ही परीक्षा आवेदन पत्र सभा कार्यालय से मंगा कर, परीक्षा शुल्क सहित भरकर शीघ्र ही सभा कार्यालय को भेज दें। जो आर्य समाज एवं आर्य संस्थाएं नये केन्द्र स्थापित करना चाहें वे कार्यालय से पत्र व्यवहार करें। आर्य समाज तथा आर्य संस्थाएं इस परीक्षा में अधिक से अधिक विद्यार्थी भेजेंगी ऐसी हमें पूर्ण आशा है।

वैद्यनाथ शास्त्री
संयोजक

आर्य जगत्

वर्ष २५] रविवार २०२१, २४ जनवरी १९६५ [अंक ४

पंजाब केसरी लाजपतराय

भारत के गत स्वतन्त्रता के महान संग्राम में दूसरे महापुरुषों के उदात्त नामों के साथ २ वीर बलिदानी लाला लाजपतराय का नाम भी सदा चमकता रहा है। इतिहास में बाल-पाल-लाल की जिस त्रिमूर्ति की प्रसिद्धि है, उस में हमारे पंजाब के शेर इस शिरोमणि लाजपत का समावेश भी है। लाला से वीर लाजपत का ग्रहण होता है। स्वर्गीय लाला जी केवल पंजाब के लिए ही लाज नहीं थे अपितु सारे राष्ट्र के लाज व मस्तक थे। उनका जीवन सदा चमकने वाला प्रकाशस्तम्भ है, जिस से चारों दिशाओं में वीरता, देश-भक्ति, स्वाभिमान, स्पष्टवादिता, संस्कृति गौरव, विद्वत्ता, त्याग बलिदान, नेतृत्व आनन्दमय जीवन, आचार-विचार, वीर गर्जना, क्रियात्मिक रूपता आदि की अनेकों किरणें निकल कर आज भी सब को जगमगाने का कार्य कर रही हैं। आर्यसमाज और महर्षि दयानन्द के कितने परमभक्त थे—वे सदा कहा करते थे—आर्यसमाज मेरी माता है। स्वामी दयानन्द को ही मैंने एकमात्र गुरु माना है। जो कुछ भी मेरे जीवन में मातृभूमि की सेवा की, स्वतन्त्रता की भावना, लोकसेवा की विचारधारा या निर्भ-यता की शक्ति है—यह सब मैंने उसी स्वामी दयानन्द से सीखी हैं। आर्यसमाज रूपी माता की गोदी में बैठकर मैंने जीवन में देशभक्ति का पुनीत पाठ पढ़ा है। कितना उच्च विचार और आर्य समाज के लिए कितने उदात्त भाव पंजाब केसरी के मन में थे।

आज के नेता तो पश्चिम के लोगों को अपना नेता मानते और लिखते हैं। कोई मेजिनी, कोई गैरीबाल्डी कोई टालस्टाय और कोई लेनिन को अपना गुरू मानते हैं। उनके मानसपुत्र बने हैं। किन्तु भारतीय युग में अपनी गर्जना, वीरता एवं बलिदान से कमाल की हलचल मचाने वाला, अमेरिका में जाकर भी अपनी ओजस्विनी लेखनी व वाणी से विचार क्रांति पैदा कर देने वाला यह वीर मानव शेर भारतीय सभ्यता से प्रेरणा लेता है। आर्य समाज को अपनी माता कहता है। स्वामी दयानन्द को अपना विचार गुरू मानता है। कितने गौरव की बात है। अमेरिका में जाकर अंगरेजी में The Arya Samaj 'आर्यसमाज नामकसात-आठ सौ पृष्ठों की पुस्तक लिखकर सारे पश्चिमके विचारों का सन्देश देता है। आये हुए सायमन कमीशन का वापस जाओ—कहने वाले लाहौर में निकले उस भारी जलूस का स्वयं नेतृत्व करके अपने शरीर व छाती पर हंसते-हंसते लाठियां खाने वाला वीरशेर क्या भुलाया जा सकता है। आज भी उस केसरी के वीरता और शब्द आकाश में गूंजते हैं। अंगरेजो! मेरी छाती पर लगी लाठियां तुम्हारे कफन की कील होंगी। वीर बलिदानी के वचन सत्य निकले अंगरेजी शासन, राज्य सत्ता के कफन का कील बनीं। आज विदेशी सत्ता चली गई। उस वीर लाजपतराय की जयन्ती आई है। ता० २८ जनवरी से सारे देश में जयन्ती आरम्भ हो रही है। वह प्रेरणा के स्रोत हैं। देश की लाज न भुला देना। आज यदि लाजपत होते देश की ऐसी अवस्था न होती। लाज की लाज बनाए रखो।

—त्रिलोक चन्द्र

आओ संकल्प लेवें

तारीख २६ जनवरी को सारा देश गणतन्त्र दिवस मना रहा है। इस बार यह दिवस विशेष महत्व का है। हमारे संविधान के अनुसार इस २६ जनवरी ६५ से राष्ट्र भाषा हिन्दी का सारे कार्यों में संचलन होना है। किन्तु यह हमारा सौभाग्य नहीं कि यह संविधान का संकल्प व निर्णय पूर्ण नहीं किया जा रहा। लोक सभा ने पारित कर दिया कि अभी अंगरेजी भी उसी प्रकार से चलती रहेगी। दो प्रतिशत भी सारे देश में अगरेजी पढ़े लिखे शायद होंगे किन्तु यह अंग्रेजों के मानसपुत्र अपनी आवाज से हिन्दी को दबाये बैठे हैं। सतरह वर्षों के बाद भी अभी तक विदेशी भाषा के व्यामोह को छोड़ नहीं सके। चीन और लंका हमारे बाद मुक्त हो कर भी अपनी भाषा को लागू कर चुके हैं। सारे देशों में अपनी २ भाषा हैं, पर अभी तक हमारा दुर्भाग्य ही है हमें अपनी राष्ट्रभाषा से कितना प्यार है। यह पता लगता है।

हम इस अवसर पर उत्तर प्रदेश की सरकार विधान सभा के विधायकों तथा जनता को भूरि २ बधाई देते हैं कि भारतीय संविधान का समादर करते हुए इसी २६ जनवरी से अपना सारा सरकारी कार्य हिन्दी में कर रहे हैं। उत्तर प्रदेश की मुख्यमन्त्री मान्या सुचेता कृपलानी ने सरकारी कागजों फायलों पर क्रियात्मिक रूप से अपने हस्ताक्षर भी हिन्दी में करने प्रारम्भ कर दिये हैं। बड़े गौरव की बात है। उत्तर प्रदेश ही भारतीय जनता का नेतृत्व कर रहा है। दूसरे बहाना बनाने वाले प्रान्तों के लिए पथ-प्रदर्शक बन गया है बहुत बधाई है। सब कुछ हो सकता है पर जब किसी की नीयत हो तभी। हमने पंजाब की सरकार तथा जनता से विशेष कहना है। यहां आर्यसमाज की दोनों प्रतिनिधि सभाएं हैं। हमारी बड़ी २ संस्थाएं हैं। विशाल संगठन है। सनातनधर्म सभा, जैन सभा तथा राजनीतिक संगठन भी बड़े २ हैं। पर हिन्दी का स्थान कितना नीचे है। मन पर चोट लगती है। छोटा-सा पंजाब भी दो भागों में बंटा है। कितना खेद है दोनों भाईयों के बीच भाषा की ही बार खड़ी कर दी गई है। सारे प्रांत में दोनों जौन हटाकर दोभाषी प्रांत बना देवें। दोनों भाषाएं मिल कर चलें तो यह वैमनस्य की दीवार गिरा दी जाये। प्रान्त का कितना कल्याण होगा। बाजारों की पट्टिकाएं हिन्दी में नहीं हैं, पत्र व्यवहार हिन्दी में नहीं हैं। पंजाब में तो अगरेजी का बोलबाला हो रहा है। पहले पांचवी से थी अब तीसरी से कोशिश हो रही है। संस्कृत तो नये पाठ्यक्रम के अनुसार निकाल दी गई है अंगरेजी को और ज्यादा कर दिया गया है। जहां आर्यसमाज है वहां ऐसी अवस्था है। आओ! इस २६ जनवरी गणतन्त्र दिवस पर अपने जीवन व कार्यों को हिन्दीमय बनाने का संकल्प लो।

—त्रिलोक चन्द्र

आधुनिक भारत के एक ओजस्वी, यशस्वी, मनस्वी, तपस्वी, निर्माता—लाला लाजपत राय

(ले०-प्राध्यापक राजेन्द्र पाल जी जिज्ञासु--दयानन्द कालेज शोलापुर)

आधुनिक भारत का इतिहास लाला लाजपत राय जी के साहसिक एवं स्फूर्तिदायक महान कार्यों के बिना अधूरा और अपूर्ण है। इसके सम्बन्ध में इतिहासकारों एवं इतिहास लेखकों के दो मत नहीं हो सकते। सारा देश इस महान मनस्वी एवं प्रतापी की जन्म शताब्दी मनाने जा रहा। इस पुण्य राष्ट्रिय पर्व पर मातृभूमि के पराक्रमी एवं तेजस्वी सेनापति के जीवन पर प्रकाश डालने के लिये यह संक्षिप्त लेख भावी भारत के निर्माता तरुण बंधुओं की भेंट है। यह उल्लेख करने की आवश्यकता नहीं कि दयानन्द संस्थाओं से सम्बधित होने के कारण हमें लाला जी से विशेष आत्मीयता रखने का गौरव है। लाला जी राष्ट्र के लिये तो ज्योति पुंज थे ही साथ ही वे दयानन्द संस्थाओं के महान स्वदेशी शैक्षणिक आन्दोलन के प्रमुख संस्थापकों में से एक थे। इस महान आन्दोलन के लिये जीवन की आहूति देने वाले सर्वत्यागी महात्मा हंसराज के वे सहपाठी एवं घनिष्ठ सखा भी थे।

लाला जी का जन्म पंजाब के लुधियाना जिला में हुआ। उन के पिता जी एक राजकीय शाला में उर्दू, फारसी के अध्यापक थे। उन की माता जी एक सरल स्वभाव की धार्मिक भारतीय महिला थीं। उन के मान्य पिता श्री राधाकिशन जी उर्दू के अच्छे लेखक थे। लाला जी ने साहित्यिक प्रतिभा पैतृक सम्पदा के रूप में प्राप्त की। समाज सेवा एवं धर्म निष्ठा की विमल सबल भावना पूज्या माता जी से आप ने प्राप्त की। लाहौर में जब उच्च शिक्षा के लिये आप गये तब आप को महान विभूतियों की मित्रता प्राप्त हुई एक थे अज्ञान अंधकार के संहार एवं ज्ञान ज्योति के प्रसार के लिये तिल तिल जलने वाले त्यागमूर्ति महात्मा हंसराज और दूसरे थे अपने समय के मनीषि पं. गुरुदत्त जी विद्यार्थी।

ये तीनो युवक पंजाब के प्रसिद्ध समाज सुधारक प्रखर देशभक्त ला. साईंदास जी के सम्पर्क में में आकर आर्य समाज में प्रविष्ट हो गये। लाला साईंदास जो महर्षि दयानन्द के प्रभाव के कारण इतने कट्टर देशभक्त थे कि कांग्रेस के जन्म से भी पूर्व स्वदेशी वस्त्रों को पहनते थे और खानपान आदि में भी विदेशी वस्तुओं का प्रयोग नहीं करते थे। भारतीय नवयुवकों को विदेशी सरकार की प्रेरणा देते थे (यद्यपि स्वयं वे सरकारी नौकरी में थे।) ऐसे विचारशील मनुष्य के प्रभाव से इन तीनों महापुरुषों ने सारा जीवन लोक सेवा के लिये भेंट कर दिया।

लाला जी वकील बनकर हिसार नगर में वकालत करने लगे वकालत के कार्यों से बचा हुआ शेष सारा समय कुरीति निवारण यथा अस्पृश्यता के उन्मूलन, निरक्षता के नाश, बाल विवाह खण्डन तथा देश प्रेम की भावना उभारने एवं राष्ट्रीय स्वाभिमान जागृति करने में लगाते। निर्धन तथा पीड़ित जनता के दुःख, कष्ट, क्लेश आदि दूर करने में जुटे रहते। आप के यशस्वी कार्यों ने आपकी कीर्ति सर्वत्र प्रसारित कर दी।

आप व्यापक क्षेत्र में उतरने के लिए पंजाब की राजधानी लाहौर चले गये। १८८८ कांग्रेस के प्रयाग अधिवेशन पर अंग्रेज सरकार ने प्रतिबंध लगाया। लाला जी जन्म-जात योद्धा थे। आप सरकारी प्रकोप की चिन्ता न करते हुए वहां पहली बार कांग्रेस में भाग लेने पहुँचे। तब कांग्रेस बाबू लोगों की, अंग्रेजी शिक्षित चन्द लोगों की टोली थी। जनता से कांग्रेस अछूती थी और राजभक्त थी। आपने कांग्रेस में प्रवेश पाकर इसे जनता जनार्दन की संस्था बनाया। इस में नवीन चेतना का संचार कर के इस को एक राष्ट्रीय हितों की रक्षण व पोषक बनाकर स्वाधीनता के लिए जूझनेवाली जन-शक्ति का रूप दिया। इस महान परन्तु पुण्य प्रयास में आपको मातृभूमि के बलि महान सूपूत लोकमान्यतिलक जीका एवंश्रीबिपन चन्द्रपाल जी का सहयोग मिला। आप भारतीय राजनीति की त्रिमूर्ति बन गये। देश 'पाल,' लाल' की जय जयकार से गूंज उठा।

साम्राज्यवाद की नींव हिलने लगी। परिणाम स्वरूप आप को तथा आपके एक क्रान्तिकारी सखा वीरवर अजीतसिंह (वीर भक्तसिंह के चाचा) को १९०७ में देश से निष्कासित करके बन्दी बना दिया गया। इतिहास के पृष्ठ इस बात के साक्षी हैं कि वे सर्व प्रथम भारतीय देशभक्त थे जिन्हें स्वाधीनता संग्राम में देश प्रेम के कारण देश निकाला मिला। उन पर यह आरोप लगाया गया कि ५०००० आर्य समाजियों की वे सेना तैयार कर के सशस्त्र क्रांति का सूत्रपात करना चाहते हैं।

लाला जी को निष्कासित करके अंग्रेज सरकार भारतीय जनता की भावनाओं को दमन न कर सकी। परिणाम उलटा हुआ। लोग और भड़के। इतिहास के तथ्य ये कहते हैं कि लाला जी के निष्कासित होने से आतंकवाद के युग का आरम्भ हुआ। बङ्गाल, महाराष्ट्र एवं पंजाब के शूरवीर युवकों ने क्रांति की ऐसी लहर चलाई कि शासन की नींव हिलने लगी।

लाला जी ने किसानों एवं श्रमिकों के हितों की रक्षा के लिये महान साधना की। भारत के वर्तमान युग के सर्वप्रथम किसान आंदोलन के सूत्रधार वही थे। अस्पृश्यता निवारण के लिये तो उन्होंने दिन रात प्रयत्न किया। आर्य समाज अस्पृश्यता अथवा जन्मगत भेदभाव को वेद विरुद्ध मानता है। आप ने एक अस्पृश्य समझे जाने वाले परिवार के एक बालक को अपने पुत्र के समान पाला व पढ़ाया। उस को घर में रखकर एक सच्चे आर्य समाजी नेता के रूप में आपने देश वासियों के सम्मुख एक ऊंचा उदाहरण उपस्थित करके अस्पृश्यता की जड़ों को काटा।

भूकम्प, बाढ़, दुष्काल, पीड़ितों की सहायता व सेवा करने में आप सदा उद्यत रहे। आप ने उत्तर भारत के ऐतिहासिक अनाथालय भिवानी की स्थापना करके सहस्रों

(शेष पृष्ठ ५ पर)

आधुनिक भारत के एक ओजस्वी.......

****

(पृष्ठ ४ का शेष)

अनाथों की रक्षा व पालनपोषण किया। क्षयरोग के रोगियों विशेष रूप से स्त्रियों के लिये गुलाब देवी अस्पताल खोला। पंजाब के सुप्रसिद्ध सार्वजनिक पुस्तकालय द्वारकादास पुस्तकालय के संस्थापक आप ही थे। दयानन्द संस्थाओं को प्रतिवर्ष आप अपनी आय का एक मुख्य भाग दान में देते रहे। इस प्रकार दिल खोलकर विद्या के प्रकाश के लिये आप ने दान दिया।

आपकी लिखित पुस्तकें राष्ट्र की ठण्डी रंगों में गर्म रक्त का संचार करने का कारण बनी। आप द्वारा लिखित श्री कृष्ण चरित्र, ऋषि दयानन्द, वीर शिवाजी, पं. गुरुदत्त जी विद्यार्थी, गेरी बालडी एवं मिज्जनी की जीवनियां हमारे स्वाधीनता संग्राम के इतिहास में अपना विशेष महत्व रखती हैं। हम यह तथ्य भूल नहीं सकता कि आप पहले इतिहासकार थे जिन्होंने यह सिद्ध किया कि वीर शिवाजी राष्ट्रवादी थे। 'लुटेरा' या 'पहाड़ी चूहा' नहीं थे। आपके युक्ति व प्रमाणों ने इतिहासकारों को नई दिशा का बोध कराया। ये पुस्तकें तब डी. ए. वी. संस्थाओं में भी पढ़ाई जाती थी। शिक्षा विभाग ने स्कूलों के मुख्याध्यापकों के नाम इन पुस्तकों के सम्बन्ध में विज्ञप्ति भेजी। दयानन्द कालेज, लाहौर के आचार्य महात्मा हंसराज जी से भी डी. पी. आई. ने इस सम्बन्ध में प्रश्न पूछे। सरकार राष्ट्रीय चेतना से पहले ही सटपटा रही थी। लार्ड कर्जन के युग में युनिवर्सिटी एक्ट बनाकर शिक्षा संस्थाओं पर सरकारी नियन्त्रण बढ़ाने का प्रयोजन ऐसी पाठ्य पुस्तकों का पठन-पाठन रोकना भी था।

प्रथम महायुद्ध के समय १९१४ से १९२० तक पुनः लाला जी को देश से निष्कासित होना पड़ा। देश हित में इतना महान तप हमारे इतिहास का एक स्वर्णिम पृष्ठ तथा हमारी गौरव निधि है। पराधीनता से उन्हें ऐसी घोर घृणा थी कि अपनी पुस्तक अनहैपी इंडिया की भूमिका में आपने लिखा है कि खूंटे से बंधे हुए कुत्ते का पक्ष लेना इतना कठिन नहीं जितना कि किसी दास की वकालत करना। स्वाधीनता का प्रेम उनकी रग-रग और नस-नस में था। आप जब हिसार नगर पालिका के मन्त्री थे तो पंजाब के अंग्रेज राज्यपाल को मान पत्र भेंट करने का प्रश्न आया। आपने वह मानपत्र स्वयं लिखा। यदि मेरी स्मृति मेरे साथ धोका नहीं करती तो मुझे खूब याद है कि वह मान पत्र अंग्रेजी में नहीं दिया गया था। वह मानपत्र तो था पर चापलूसी पत्र नहीं था उस में दीन-हीन पीड़ित जनता के सुखदुःख की कहानी थी। यह साहसपूर्ण घटना तब की है जब अंग्रेजों की चापलूसी करना कर्तव्य एवं गौरव समझा जाता था।

एक बार एक राष्ट्रीय आन्दोलन में आप जेल गये। सरकार ने आप की प्रतिष्ठा को ध्यान में रखकर आपको साधारण सत्याग्रहियों से विशेष सुविधायें दीं पर आप ने इस भेद का विरोध करके जन-साधारण के सा रहने की मांग की। आपको जेल में क्षय रोग होने की आशंका पैदा हो गयी। भारत वर्ष आपके रोग का समाचार पाकर तिलमिला उठा। सरकार ने आप को छोड़ दिया। आप स्वस्थ हो गये परन्तु कुछ वर्ष बाद साईमन कमीशन के आगमन पर राष्ट्रव्यापी रोष जब फैला तो लाहौर में साईमन कमिशन के विरोध में निकाले गये जलूस का नेतृत्व आपने किया। सरकार ने आप पर लाठियां बरसाईं। भारत का केसरी लाठियों के प्रहार के सम्मुख बुढ़ापे में डटा और वीर गति पा गया। बलिदान होने से पूर्व केसरी ने दहाड़ कर कहा 'मेरे शरीर पर पड़ी एक-एक लाठी अंग्रेजी साम्राज्य के कफन का कील सिद्ध होगी।'

अंग्रेज चले गये। वीरों का रक्त रंग लाया परन्तु युवको आओ सोचें क्या हुतात्माओं का स्वप्न साकार हो गया? क्या मानसिक दासता चली गई। क्या अंग्रेजी का मोह शेष नहीं। क्या भावात्मिक एकता देश में है?

यदि ये कुभावनाएं हैं तो हम सब अपना कर्तव्य सोचें। महान मनस्वी, ओजस्वी, तपस्वी तेजस्वी तथा यशस्वी लाजपतराय का बलिदान हमें कुछ करने की प्रेरणा देता है।

बधु वर्ग से बस प्यार न करना
जिसने सीखा॥
देश जाति उपकार न करना
जिसने सीखा॥
विनय युक्त व्यवहार न करना
जिसने सीखा॥
हां! जन्म गया निःसार न
जीना उसने सीखा॥

सिद्धांत चर्चा

ईश्वर किसी का शत्रु नहीं

लेख—श्री आचार्य देव प्रकाश जी आर्य समाज उज्जैन मध्य भारत

****

अभ्रातृव्यो अनात्वमनापि-
रिन्द्र जनुषा सनादसि
युध इदापित्व मिच्छसे
सा. पू. ५-२-१

इस मन्त्र में कहा गया है कि हे अखण्ड ऐश्वर्य संपन्न जगदीश्वर। तेरी किसी के साथ न शत्रुता है और न बन्धुत्व है और न तुझे किसी की सहायता की आवश्यकता है। तू अपने स्वरूपसे ही अनादि है। पुरुषार्थ तथा सत्कर्मोंके अनुष्ठान से ही तुझे भक्त जन अपना बन्धु बनाते हैं।

परमात्मा के लिये कहा गया है कि वह किसी का न मित्र है न शत्रु। किन्तु जरा ईसाईयों के खुदा को भी देख लीजिए खुदा स्वयं कहता है।

तू ने प्रतिमा न बनाना...न उन की उपासना करना क्योंकि मैं तेरा परमेश्वर यहोवा जलन रखने हारा ईश्वर हूं। और जो मुझ से बैर रखते हैं उन के बेटों पोतों और परपोतों को भी पितरों का दण्ड दिया करता हूं निर्गमन २०-४-६

सब पहिलौठे मर जायेंगे

फिर मूसा ने कहा यहोवा यों कहता है कि आधी रात के लग भग मैं मिस्र देश के बीच में हो कर चलूंगा। तब मिस्र में सिंहासन पर विराज ने हारे फिरौन से ले कर चक्की पीसने हारी दास तक सब के पहिलौठे वरन पशुओं तक के सब पहिलौठे मर जायेंगे और सारे मिस्र देश में हा हा कार मच जायगा।

निर्गमन ११-४-५-६

खुदा युद्ध करेगा

तब यहोवा निकल कर उन जातियों से ऐसा लड़ेगा जैसा वह संग्राम के दिन में लड़ा था।

जकयाह १४-३

तुम्हारा परमेश्वर यहोवा जो तुम्हारे आगे-आगे चलता है, सो आप तुम्हारी ओर से लड़ेगा कि उसने मिस्र में तुम्हारे देखते तुम्हारे लिए किया व्यवस्था विवरण १-३० खुदा के युद्ध करने के तो अनेकों प्रमाण बाईबलमें पाए जाते हैं। इतने से ही पाठकों को बाइ-

(शेष पृष्ठ ६ पर)

ईश्वर किसी का शत्रु नहीं

(पृष्ठ ५ का शेष)

बल के खुदा का पता लग जाएगा कि उसका क्रोध कितना वेगवान है कि पशुओं तक को भी गारत कर देता है। बदला लेकर छोड़ता है। इतना खूंखार खुदा जिनका होगा उसके बन्दे क्या करेंगे। मगर जो उन्होंने किया वह इतिहास के पत्रों में दर्ज है। मन्त्र का दूसरा पहलू (पक्ष) है कि भगवान को अपने काम में किसी की सहायता लेने की आवश्यकता नहीं पड़ती। किंतु ईसाइयों के खुदा को देखिए।

जब यहोशापात् और इस्राईल के राजा ने चार सौ नबियों को इकट्ठा कर गिलाद के रामोत पर चढ़ाई करने के लिए पूछा,...तब यहोवा ने पूछा इस्राईल के राजा अहाब को कौन ऐसा बहकाएगा, कि वह गिलाद के रामोत पर चढ़ाई करके खेत आए ..तब एक आत्मा पास आकर यहोवा के सम्मुख खड़ी हुई और कहने लगी कि मैं उसको बहकाऊंगा, यहोवा ने पूछा कि किस उपाय से उसने कहा है मैं जाकर उसके सब नबियों में बैठकर उनसे झूठ बुलवाऊंगा।

यहोवा ने कहा तेरा उसको बहकाना सफल होगा, जा कर ऐसा ही कर...उस आत्मा ने ऐसा ही किया और इस्राल के राजा को मरवा दिया: इतिहास २ अध्याय १८ पूरा यह है ईसाईयों के खुदा की कारगुजारी कि इस्राएल के राजा को मरवाने के लिए एक आत्मा से सहायता ली,

यहोवा रथ वालों को न निकाल सका

और यहूदा ने चारों ओर की भूमि समेत अज्जा अशकलोन और एक्रोन को ले लिया और यहोवा यहूदा के साथ रहा सो उस ने पहाड़ी देश के निवासियों को निकाल दिया, पर नीचान के निवासियों के पास लोहे के रथ थे, इसलिए वह उन्हें न निकाल सका। नियायियों १-१६-२० देखिये अब लोहे के रथ वालों को ईसाईयों का खुदा और यहूदा दोनों मिलकर भी न निकल सके यह है ईसाईयों का खुदा सहायता के लिये यहूदा के साथ भी गया मगर लोहे के रथ वालों के साथ मुकाबिला न कर सका।

हिन्दू धर्म की अग्नि परीक्षा

(ले०—श्री सुन्दरलाल जी वोहरा गुलाब सागर जोधपुर)

(गतांक से आगे)

भला हिन्दू धर्म में ऐसी क्या नपुंसकता आ गई है, जिसके कारण इस में लोगों को आकर्षित करने की क्षमता का ही ह्रास होता जा रहा है। ये शादी शुदा पादरी लोग हम पर टिड्डियों की तरह छा रहे हैं, भला फिर हमारे नैष्ठिक ब्रह्मचारी व भगवाधारी लोग क्या कर रहे हैं? उस साधक का आत्म-ज्ञान अथवा आत्म-शोधन ही आत्म-घातक है जो अपने सह-धर्मियों के साथ आत्मीयता का अभाव रख कर भी आत्म-गौरव का अनुभव करता है। बड़े दुःख के साथ कहना पड़ता है कि हमारी इस एकांत-साधना की प्रवृत्ति ने ही हमारे मध्य हमारे ही भाइयों को विधर्मियों के रूप में लाकर खड़ा कर दिया है। इस सन्दर्भ में आर्य-समाज द्वारा पोषित शुद्धि-आंदोलन निश्चित रूप से एक प्रशंसनीय कदम है। लेकिन कालिय के फनों की तरह बढ़ रहे ईसाई मत के लिये अनेकों शुद्धि-प्रचारकों की आवश्यकता है, अनेकों निर्भीक व निष्पक्ष समाचार पत्रों की आवश्यकता है व आवश्यकता है हिन्दुत्व के गौरव अनेकों विवेकानन्दों की।

विश्व का इतिहास साक्षी है कि पिछले पांच हजार वर्षों में अनेकों सभ्यताएं व सम्प्रदाय उत्पन्न हुए और आंधी की उपस्थिति में जलते हुए दीपकों की तरह शांत हो गये। पर हिन्दू धर्म के सनातन सिद्धांतों पर कोई खरोंच नहीं लगी। बौद्ध और जैन धर्म भी हिन्दुत्व के ही पोषक बन कर रहे। यही कारण है कि—

यूनान मिश्र रोमां
सब मिट गए जहां से।
कुछ बात है कि हस्ती
मिटती नहीं हमारी॥

लेकिन आज इस बात को समझने वाले शिक्षित व संस्कृत लोग ही विधर्मी बनते जा रहे हैं। अनुभव व अध्ययन के आधार पर यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि अपना धर्म व ईमान वही व्यक्ति बदलता है जिस में विपत्तियों से लड़ने की हिम्मत व हौसला नहीं होता। आप राजस्थान के किसी एकदम निर्धन राजपूत से धर्म परिवर्तन की बात कहिये, वह आपके सामने तलवार निकाल कर खड़ा हो जाएगा। हिन्दू धर्म के आधार स्तम्भ ऐसे ही निर्धन किंतु स्वधर्माभिमानी लोग हैं। इन्हीं रणबांकुरे लोगों के जीते जी पानी की तरह करोड़ों रुपया बहा देने पर भी भारतीय ईसाई पादरी निराशा व विषाद का ही अनुभव करते हैं। अपने को शिक्षित व सस्कृत (!) कहने वाले हमारे समाज से इसी क्षत्रियोचित का दिवाला निकलता जा रहा है। धर्म को पोंगापन्थियों की माया व धोखेबाजी के विशेषणों से जोड़ कर इस लोगों ने हिन्दू धर्म को बदनाम करने में कोई कसर नहीं रख छोड़ी है।

इसलिये यह अत्यावश्यक है कि युवकों को धार्मिक शिक्षा दी जाए। लेकिन धार्मिक शिक्षा का यह अर्थ नहीं है कि सम्प्रदाय विशेष के शूरों अथवा सन्तों की जीवन गाथाएं पढ़ाई जाएं, अपितु धार्मिक शिक्षा से तात्पर्य है औपनिषदिक परम्परा का संवर्धन, नचिकेता-सी निडरता व आरुणि जैसी गुरुभक्ति का युवकों के जीवन में बीजारोपण। सही शब्दों में धर्म हमारी अपने आत्म व अपने समाज के प्रति संस्कार, ज्ञात, सात्विक जिज्ञासा है इस जिज्ञासा को सचेतन बनाए रखना ही धर्म का पालना करना है।

अत: हमारी वर्तमान पीढ़ी का जीवन-दर्शन 'एकला चलो रे, के स्थान पर 'एकला रेवनीनै वंकला चलो' (**Meditate alone but move in the company**) ही होना चाहिये।

आज इसी बातकी आवश्यकता है कि अविलम्ब रूप से हिन्दू-समुदाय को गतिमान (**movilize**) किया जाय। आपसी मन मुटाव का परित्याग किया जाय। कोई बौद्ध नहीं है, कोई जैन नहीं है।

(क्रमशः)

आर्यसमाज शोलापुर

रविवार दि. १०-१-६५ को आयसमाज शोलापुर की साधारण सभा में निम्नलिखित की मृत्यु पर शोक प्रस्ताव स्वीकार किए गए :—

(१) पद्मभूषण वेदज्ञ पं. ब्रह्मदत्त जी 'जिज्ञासु'

(२) श्रीमान महाशय कृष्ण जी की पत्नी।

(३) हैदराबाद राज्य के स्वतन्त्रता संग्राम के वीर योद्धा श्री मधुसूदनजी लोकसभा सदस्य।

दिवंगत आत्माओं के परिवारों से सहानुभूति प्रकट की गई।

—मन्त्री आर्यसमाज

विचार तरंग [3]

लें०—श्री राममूर्ती कालिया, एम.ए. मालवीय नगर नई दिल्ली)

✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻

प्रेम अथवा प्यार बड़ा सुन्दर शब्द है। सौन्दर्य की चाहना प्रेम में बराबर रहती है। अधिकतर यह बल हृदय का है। 'ढाई अक्षर प्रेम के पढ़े सो पंडित होय की उक्ति' का सम्बन्ध इसी बात को प्रकट करता दीखता है। सौन्दर्य की ओर झुकाव स्वाभाविक है। सौन्दर्य से प्रेम, निस्सन्देह हृदय की रिक्ता की पूर्ति है। किन्तु स्मरण रहे कि कायिक प्रेम ही प्रेम नहीं है। प्रेम का यह अंग तो पाशविक है। यह तो अधिकतर आंख का विषय है और फिर 'आंख का नूर नहीं। तभी तो कवि पुकार उठा 'दिले बीना भी कर खुदा से तलब।'

प्रेम चाहे प्रकृति—सौन्दर्य से हो अथवा मानव-सौन्दर्य से, वह जीवन का प्रमुख प्रेरणा स्रोत है। संसार में व्यावहारिकता का आधार मूल सिद्धान्त प्रेम ही तो है। प्रेम का अर्थ मानव के चमड़े से प्रेम करना थोड़े ही है। कुरुपता में भी तो सौन्दर्य विद्यमान हो सकता है। गोरी चमड़ी में भी तो काले दिल होते हैं। चटक-मटक से प्रेम में कोई स्थायित्व थोड़े ही होता है। तभी तो कहा 'हुस्ने सुरत चन्द रोजा हुसने सीरित मुश्किल, उससे खुश होती हैं आंखें इस से खुश होता है दिल।'

अभागा है वह प्राणि जिसने प्यार नहीं किया। हिन्दी के सुप्रसिद्ध गीतकार श्री नीरज ने ऐसे लोगों को 'दुश्चरित' की संज्ञा दी है। उनका कहना है कि वह प्यार ही क्या जिसमें वासना हो या जिसमें शर्म का अभाव हो या सभ्यता की हीनता हो। जरा उनके शब्दों को ध्यान से देखें—

'प्यार है कि सभ्यता राजी खड़ी,
प्यार है कि वासना बुझी पड़ी,
प्यार है कि आंख में शर्म जड़ी,
प्यार बिन मनुष्य दुश्चरित्र है।

प्राकृतिक छटा से प्यार तो ईश्वर से प्यार है। पर्वतों की उच्चता से, घटियों की गहनता से वारिद घने और सुन्दर वनों से, मृग और मृगनियों, से पुरुषों की लावण्यता और सुकुमारता से प्रेम ही तो सच्चा प्यार है। ऐसा प्रेम हृदय की शुद्धता का प्रतीक है। प्रेम में हृदय की शुद्धता ही तो महत्वपूर्ण है। इस तरह के प्रेम के बिना, नीरज के ही शब्दों में 'प्रेम हीन गति प्रगति विरुद्ध है।'

अत्यन्त शोक जनक

डी. ए. वी. हायर सैंकडरी स्कूल दसूहा के प्रिंसिपल पं. चिर जीव लाल जी ऋषि का आकस्मिक एवं हृदय विदारक देहांत का समाचार सुन कर किस को भारी दुःख व शोक न होगा? देव स्वभाव के ऋषि सचमुच तपस्वी ऋषि ही थे स्कूल को इतना ऊंचा ले जाने में तथा आर्य समाज की उन्नति में उन का भारी हाथ है। ऋषि जी वास्तव में आर्य समाज की बड़ी कीमती निधि थे। दिल के दौरे ने उन को इस अल्पायु में ही हम से छीन लिया। उन के परिवार, स्कूल व समाज को उन के दुःखद निधन पर भारी धक्का लगा। वज्रपात ही हुआ है। उनका चले जाना स्वप्न में भी न आया था। बड़ी सौम्य-मूर्ति थे आंखें साश्रु, दिल शोकातुर हैं सारे परिवार के साथ हम भी रोते हैं प्रभु दिवंगत को शान्ति, परिवार को सहन शक्ति प्रदान करें। क्षति पूरी न होगी।

स्वामी [illegible] जी

[illegible] का संक्षिप्त जीवन [illegible] कि उनकी जयन्ती के उपलक्ष्य में १५५०० प्रतिया छापी गई थीं। वे समाप्त हो चुकी हैं अब उनका दूसरा संस्करण प्रकाशित हो रहा है। २२५० कापियों का आर्डर आ चुका है जिन संस्थाओं स्कूलों, कालिजों व आर्य समाजों को और कापियों की आवश्यकता हो वे अपने आर्डर श्री दीवान चन्द जी M. A. ६३ कानपुर छावनी या आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा निकट डिस्ट्रिक कोर्ट के पते पर ३१ जनवरी तक भेजने की कृपा करें। ५० रु०) प्रति सैं०ड़ा कीमत है।

व्यावस्थापक

महर्षि दयानंद ट्रस्ट टंकारा

महर्षि दयानन्द संस्कृत विश्व विद्यालय टंकारा सौराष्ट्र विश्व विद्यालय की आगामी परीक्षा फरवरी १९६५ के अन्त में होगी प्रत्येक आर्यजनों संस्कृतानु रागियों से निवेदन है कि समस्त भाषाओं की जननी वेद वाङ्मयी स्पर्शशून्या परात्मिका सुरभारती भारती के प्रचार एवं प्रसारार्थ परीक्षाओं को सफल बनाकर राष्ट्रोद्धार कार्य में यथासम्भव सक्रिय सहयोग देने का प्रयत्न करें।

प्रस्तोता कार्यालय टंकारा से पत्राचार करने का कष्ट करें।

आनन्दप्रिय पण्डित
मन्त्री महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा

अखिल भारतीय अराष्ट्रीय-मत-निरोध समिति

कैरल में ६० ईसाईयों को शुद्ध
विदेशी पादरियों के विरुद्ध अभियान आरम्भ,

चैंगानूर। यहां के प्रतिष्ठित परिवारों की शुद्धि १० जनवरी को हुई। जिस में ६१ व्यक्तियों ने पुनः वैदिक धर्म ग्रहण किया।

अराष्ट्रीय मत निरोध समिति के क्षेत्रीय संचालक के विशेष प्रयत्नों का यह प्रथम प्रभावशाली परिणाम है। कैरल से विदेश पादरियों के के षडयन्त्र समाप्त करने के लिये तीव्र अभियान आरम्भ कर दिया गया है।

अमर शहीद श्रद्धानन्द के ३६ प्रश्नों के वितरण से ईसाईयों में खलबली मच गयी है। इस सफलता से दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार के कार्यकर्ताओं का पूरा सहयोग समिति को प्राप्त हो रहा है। चेंगानूर में समिति का कार्यालय खुलजाने से राष्ट्रवादी तत्वों में हर्ष लहर दौड़ गयी है। ईसाईयों के अत्याचारों से त्रस्त हिन्दुओं में एक बार फिर नवजीवन आ गया है।

प्रचार मंत्री

आर्यसमाज (अनारकली)
मन्दिर मार्ग नई दिल्ली

आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग की साधारण वार्षिक बैठक रविवार दिनांक २४-१-६५ को प्रातः ११ बजे आर्यसमाज भवन में होंगी। आप से प्रार्थना है कि आप दर्शन देने की कृपा करें।

प्रधान जी की आज्ञानुसार,
दयाराम शास्त्री, मन्त्री

कार्यक्रम

१. पिछली बैठक की कार्यवाही की पुष्टि।

२. वर्ष १९६५ के लिए अधिकारियों का चुनाव तथा अन्तरंग सभा का निर्माण।

३. फुटकर प्रधान जी की आज्ञा से।

नोट—यदि, आपने आर्य-समाज का चन्दा वर्ष १९६४ का अभि तक नहीं दिया तो वह कृपया शीघ्र भेज दें, ताकि आपको सभासद घोषित किया जाय। धन्यवाद

चुनाव

आर्यसमाज दसूहा

प्रधान—श्री हरवंसलाल जी मुजरिम

उपप्रधान—श्री राजेन्द्रनाथ जी

मन्त्री—श्री अयोध्या प्रकाश जी बस्सी

उपमन्त्री—श्री सुरेन्द्र कुमारजी श्री अमीर चन्दजी

कोषाध्यक्ष—श्री देवीदयाल जी

पुस्तकाध्यक्ष—श्री मथुरादासजी

स्कूल प्रबन्धक कमेटी में ला० दुर्गादास जी वकील मैनेजर, श्री ओम प्रकाश जी सैक्ट्री तथा सर्व श्री देवीदयाल जी, जमनादास जी, हरवंस लाल जी मुजरिम, अयोध्या प्रकाश जी साधारण सदस्य चुने गये।

भवदीय—अयोध्या प्रकाश
मन्त्री—आर्य समाज दसूहा

आर्य युवक समाज लेखराम नगर कादियां

प्रधान—श्री अमृत लाल जी

उपप्रधान—श्री खिरातीलाल जी 'सोहल'

संरक्षक—श्री दयानन्द जी आर्य

मन्त्री—श्री अरुण कुमार जी आर्य,

उपमन्त्री—श्री ... अशोक जी गुप्ता

प्रचार मंत्री—श्री रवीन्द्र जी, व श्री सुरेन्द्र जी,

पुस्तकाध्यक्ष—श्री जोगेन्द्र जी व श्री शान्ति जी,

अंतरंग सदस्य—श्री रोशन लाल जी, रमेश सेठ अश्वनी सेठ, राज कुमार सुशील कुमारा करनैल सिंह, श्री तरलोक कुमार जी श्री ईश्वर जी, श्री सतीश कुमार जी मनोत, श्री सुखासिंह, बलविन्दरसिंहजी।

अरुण कुमार
मंत्री

आर्यसमाज सैक्टर ८ चंडीगढ़

प्रधान—श्री नानकचन्द पंडित

उपप्रधान—श्री सन्तराम सैनी श्री सीताराम वोहरा, श्री प्रि० हरिराम जी प्रि० त्रिलोकी नाथ जी

मन्त्री—प्रो० कृष्ण कुमार धवन

सहायक मन्त्री—श्री देशराज मलिक

उपमन्त्री—श्री रामप्रताप शर्मा श्री विजय कुमार, श्रीमती ज्ञानवती महाजन।

कोषाध्यक्ष—श्री सरदारीलालजी

पुस्तकाध्यक्ष—श्री अविनाशी लाल जी

निरीक्षक—श्री रामलाल जौहर

...—श्री ... आहूजा जस्टिस दयाकृष्ण महाजन, श्री परमेश्वरी दास बहिल श्री प्रि० गिरधारीलाल गुप्ता इसके अतिरिक्त २१ अन्तरङ्ग सदस्य निर्वाचित हुये।

आशुराम आर्य
पुरोहित

आर्य युवक परिषद देहली

प्रधान— श्री देवव्रत जी धर्मेन्दु

उपप्रधान— „ ...

„ „ ईश्वर दत्त

„ „ जगदीश विद्यार्थी

„ „ रामदेव तनेजा

मंत्री— „ ओम प्रकाश

उपमन्त्री— „ ओमप्रकाश कोहली

„ „ नरेन्द्र प्रकाश

परीक्षा मंत्री—„ ...

प्रचार मंत्री—„ ... शर्मा

कोषाध्यक्ष—„ ...

—चरण ...

शोक समाचार

डी.ए.वी. गर्ल्ज हाईस्कूल गुरदासपुर

श्री महता मदनगोपाल जी की धर्म पत्नी श्रीमती प्रमिला के देहावसान पर स्कूल की अध्यापिकाओं तथा छात्राओं ने शोक प्रकट करते हुए दिवंगत आत्मा की सद्गति के लिए व उनके परिवार को धैर्य व शान्ति प्रदान करने के लिए प्रभु से प्रार्थना की गई।

—मुख्याध्यापिका गर्ल्ज हाई स्कूल

आर्य समाज प्रधान मुहल्ला रोहतक

दिनांक २३ पौष २०२१ वि० को आर्य समाज के साप्ताहिक सत्संग में 'श्री वीरेन्द्र तथा नरेन्द्र की पूज्य माता जी (महाशय कृष्ण जी की पत्नी) और आर्य समाज के प्रकांड पंडित पूज्य श्री ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु के देहावसान पर 'शोक सभा में' शोक प्रस्ताव पास करते हुए दोनों महान आत्माओं की सद्गति के लिए परम पिता से प्रार्थना की गई।

महानन्द आर्य

आर्य समाज लक्ष्मणसर अमृतसर

अपने सत्संग में आर्यसमाज के चोटी के विद्वान, वेदों के अद्वितीय ज्ञाता और व्याकरण के सूर्य एवं त्याग और तपस्या की मूर्ति श्री पंडित ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु के दुखद देहान्त को देश तथा धर्म के लिये असह्य और न पूरी हो सकने वाली क्षति समझते हुए हार्दिक शोक मनाया गया।

रुद्रदत्त शर्मा

डी. ए. वी. हा०सै० स्कूल दसूहा

१४ जनवरी १९६५ को स्कूल के अध्यापक वर्ग तथा विद्यार्थियों की शोक सभा सर्वगुण सम्पन्न श्री चिरंजीलाल जी ऋषि, प्रिंसीपल डी. ए. वी. हा० सै० स्कूल दसूहा के आकस्मिक स्वर्गारोहण के उपलक्ष्य में हुई, जिसमें सब ने ईश्वर से प्रार्थना की कि उनकी आत्मा को सदगति प्रदान करें, और उनके सम्बन्धियों को इस असह्य दुःख सहने की शक्ति प्रदान करें

—अध्यापक वर्ग, डी.ए.वी हा० सै० स्कूल, दसूहा

मुद्रक व प्रकाशक श्री सन्तोषराज जी आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर द्वारा वीर मिलाप प्रेस, मिलाप रोड जालन्धर से मुद्रित तथा आर्यजगत कार्यालय महात्मा हंसराज भवन निकट कचहरी जालन्धर शहर से प्रकाशित मालिक—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर



टैलीफोन नं० ३०५७ [आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधिसभा पंजाब जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd. No. P. 121

एक प्रति का मूल्य १३ नये पैसे वार्षिक मूल्य ६ रुपये

वर्ष २५ अंक ५) १९ माघ २०२१ रविवार—दयानन्दाब्द १४०– ३१ जनवरी १९६५ (तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

वेद सूक्तय:

परिद्युत्तं सनद्रयिम्

हे धनपते ! मुझे, हमें ऐसा राय धन परिसनद-दीजिए, प्रदान करें, वह सम्पत्ति भर दें जो कि द्युम्नम् कान्ति वाली हो। जो परिश्रम से, उत्तमरीति से कमाई गई हो। चोरी आदि से दूषित न हो।

भरद्वाजं न:

और नः-हमारे में वाजं-अन्न तथा ज्ञान भरद्-भर दीजिए, हमें अन्न की तथा ज्ञान की आवश्यकता है। दोनों प्रसाद, हे प्रभो ! आपकी कृपा से ही मिलते हैं। अन्नपति बन तथा ज्ञानी बनें।

विश्वा अप द्विषो जहि

हे भक्त मानव ! तू अपने सारे द्वेषियोंको शत्रुओंको मार दे, दूर भगा दे जीवन को मारने वाले बाहिर के शत्रु हों या अन्दर के दुश्मन हों तु इनको भगा दे मार दे।

सा म वे द

वे दा मृ त

ओ३म् संगच्छध्वं संवदध्वं संवो मनांसी जानताम्।

देवा भागं यथापूर्वे संजानाना उपासते ॥ वेद

वेद का यह उपदेश है कि सारे मिलकर चलो। मिल कर बोलो। सबके मन एक होवें। जीवन का वही मार्ग हो जो ज्ञानियों के लिए होता है।

यह संगठन, एकता तथा प्रेम के पवित्र सूत्र में पिरोने वाला वेदोपदेश व्यक्ति व समाज के लिये समान रूप से है। जहां एकता वहीं देवता। जहां प्यार वहीं सुख का संसार। संगठन जीवन और विगठन मौत है। शरीर का स्वास्थ्य, परिवार की प्रगति, सभा संस्था समाज की वृद्धि, राष्ट्र की शान्ति का मूल एकता में ही निहित है सिर जोड़कर काम करने वाला समाज शक्तिशाली बन जाता है। सभा भी विराट् शरीर है। हम सब उस के अंग व घटक हैं सब का संगठन व प्रेम होवे। इस वेद के पुनीत उपदेश को जीवन में धारण करें।

अभी बहुत काम है

आर्य प्रादेशिक सभा पञ्जाब के सौम्यमूर्ति तपस्वी प्रधान मान्यवर प्रिंसिपल पण्डित रलाराम जी एम० ए० एम० एल० ए० ने आर्य समाज के लिए अपने एक सन्देश में कहा है–

आर्यसमाज के सामने अभी बहुत काम है। आज का संसार भोगवाद की ओर तेजी से बढ़ता जा रहा है। जीवन में भक्ति की आस्था कम होती जा रहा है। उस के परिणाम स्वरूप अशान्ति व लिप्सा बढ़ रही है। आर्य समाज एक विशाल कार्यक्रम को लेकर निकला है। सारे जीवन को संतुलित करके विश्व को मानव-धर्म का सन्देश देना इसका प्रमुख काम है। हमें आज तो अधिक उत्साह से अपने काम में आगे बढ़ना है। संकल्प शक्ति को दृढ़ करना है।

अधिष्ठाता—श्री संतोषराज जी सम्पादक—त्रिलोक चन्द्र शास्त्री

विद्वानों के विचारार्थः — संसार को आर्य बनाओ

ले०:—श्री पं. सत्यप्रिय जी शास्त्री सिद्धान्त शिरोमणि
प्राध्यापकः दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार

इस विश्वरूपी राज्य की स्थापना के साथ ही महाराजाधिराज परमेश्वर ने अपनी जीवरूपी प्रजा को सुव्यवस्थित जीवन बिताने के लिये वेद ज्ञानरूपी संविधान प्रदान किया। वेद का सम्पूर्ण उपदेश जीवों के जीवन कल्याणार्थ है। इसका कोई उपदेश ऐसा नहीं जिसे जीव के द्वारा आचरण करने में असम्भव कहा जा सके। क्योंकि असम्भव आचरण का उपदेश करने वाला बुद्धिमानों की श्रेणी में नहीं गिना जा सकता। ऋग्वेद का निम्न-मन्त्राशय मनुष्यों के लिये एक उत्तम उपदेश करता है।

"कृण्वन्तो विश्वमार्यम्"—यह मंत्रभाग आर्यसमाज की वेदी से बड़े जोरदार शब्दों में बोला जाता है। बहुत सी पत्रपत्रिकाओं तथा पुस्तकों के मुख पृष्ठ पर अंकित होता है। कई संस्थाओं के तो आदर्श वाक्यों में इसको स्थान प्राप्त है आज तक इसका जो अर्थ बोला जाता रहा है, वह इन पृष्ठों में विचार का विषय है। सर्वत्र ही इसका अर्थ किया जाता है "संसार को आर्य बनाओ" इसके अतिरिक्त कई वैयाकरण "कृण्वन्त" शब्द को शत्र न मानकर अर्थ करते हैं "संसार को आर्य बनाते हुए चलो" उक्त वाक्य के दोनों ही अर्थ तार्किक दृष्टि से समझ से बाहर हैं। क्योंकि संसार को आर्य बनाने का भाव जो महानुभाव इससे ग्रहण करते हैं। उस भाव में दोष हैं। जब से संसार बना है तभी से दस्यु और आर्य दो दल हैं तथा संसार की समाप्ति तक रहेंगे। हां यह अवश्य है कि कभी कोई दल न्यूनाधिक हो सकता है। परन्तु किसी दल का सर्वथा अभाव हो जाना सर्वथा असम्भव एवं कल्पनातीत है। यह तो इस पृथ्वी पर सम्भव नहीं, जिस पर हम रहते हैं। यदि कथञ्चित् मान भी लें कि इस समस्त पृथ्वी पर आर्य हो जावेंगे तो फिर अन्य लोकवासियों को भी तो आर्य बनाना होगा। क्योंकि वे भी विश्व में हैं, परमेश्वर की प्रजा होने से वेद की व्यवस्था में वे भी आ जाते हैं। इस प्रकार जहां २ परमेश्वर वहां २ उस का राज्य होने से उस की प्रजा में उस के इस आदेश का प्रसार करना होगा जो कि सर्वथा असम्भव है क्योंकि अगणित लोक लोकान्तर होने से यह आदर्श मूर्त रूप धारण नहीं कर सकता है। यदि उस का आदेश चरितार्थ नहीं हो सकता तो फिर ऐसे असम्भव उपदेश का उपदेष्टा परमेश्वर बुद्धिमान कैसे? महर्षि कपिल ने अपने शास्त्र में लिखा है 'नाशक्यो पदेशविधि रूप दिष्टेऽप्यनुपदेशः॥ सांख्य १—९ अर्थात असम्भव उपदेश का विधान नहीं किया जाता। क्योंकि असम्भव उपदेश तो विहित होने पर भी आचरण में न आने से अनुपयोगी एवं निरर्थक है। मन्त्र का उक्त अर्थ करने पर क्या महर्षि कपिल की डिग्री वेद के उपदेष्टा परमेश्वर पर लागू न होगी? और यदि 'सज्जन तोषन्याय' से मान भी लें कि कभी न कभी तो सारा संसार आर्य बन ही जायगा तो फिर उस अवस्था में भी निम्न दोष होंगे। १= वेद की आवश्यकता नहीं रहेगी। क्योंकि अनार्य को आर्य बनाने के लिये भी तो वेद है। जब वे आर्य बन गये तो इस की आवश्यकता नहीं है। २= उक्त वेद वाक्य से पूर्व है—'अपघ्नन्तो ऽराव्णः' अर्थात कंजूसों का विनाश करो, क्योंकि वे अनार्य हैं। इसी प्रकार 'अक्षैर्मा दिव्य' 'तन्त्वासीसेनविध्यामः' 'जहि यातुधानम्' 'मा हिंसीः द्विपादं' इत्यादि वेद के आदेशों की क्या गति होगी। क्योंकि सभी संसार आर्य—श्रेष्ठ—धर्मात्मा हो जावेगा ऐसे पाप कोई करेगा नहीं तो ये वेद के आदेश तो गए रद्दी की टोकरी में। जब कि वेद का ज्ञान तीनों कालों के लिए आवश्यक माना गया है। इसी कारण वह नित्य हैं। अतः दोनों स्थितियों में कोई न कोई दोष अवश्य है। इस विवेचन के पश्चात अब अपना समझा हुआ अर्थ भी प्रकट कर देना आवश्यक है। मेरी अपनी तुच्छ मति के अनुसार इस वाक्य का यों अर्थ किया जाना वेद के अभिप्राय के के सर्वथा अनुकूल रहेगा।

'मनुष्य जीवन के (विश्वम्') सब पहलुओं को सर्वांग रूप में (आर्यम् कृण्वन्तः) श्रेष्ठ बनाते हुए चलो। अर्थात मनुष्य को सर्वांग रूप में बनाते हुए चलो। जिसे भी आर्य बनाएं वह अपने जीवन में अधिक आर्यत्वको धारण करे। ऐसा अर्थ करने पर वेद के अन्य आदर्शोंकी निरर्थकता अथवा असम्भवत्वादि दोष उपस्थित नहीं होते। क्योंकि सदा अनार्यों को ही आर्य बनाते चलेंगे, आर्य बनने से पूर्व वे अनार्य होंगे ही। तथा च हर क्षण विश्व में उत्पन्न होते रहते हैं। वे अपने पूर्व जन्म की पाप वासनाएं लेकर आते हैं तो उन्हें नित्य आर्य बनाते रहेंगे। परन्तु यदि विश्व-संसार को ही आर्य बनाना अर्थ करें तो नित्य-प्रति उत्पन्न होने वाले बच्चे क्या उत्पन्न होते ही आर्य होकर वेदानुसार आचरण करेंगे। अतः मनुष्यों के जीवनों को विश्व रूप से आर्य बनाते चलें यह ही वेद का आदेश है।

मधु कलश

जो भी आया चला गया वह रुकता कौन यहां है
दुनिया सिर्फ मुसाफिरखाना घर तो असल वहां है
नाम मौत का सुनकर साथी उतर गया मुंह कैसे
मर जाने से ज्यादा सुन्दर घटना और कहां है

* * *

कदम कदम पर लिया मोर्चा जरा न साहस हारा
मेहनतकश ने हिम्मत करके भू पर स्वर्ग उतारा
लक्ष्मी जी ने दया दिखादी मगर साथियो जिस पर
आंखें खोकर हाथ अक्ल से धो बैठा बेचारा

* * *

बात शुरू करने से पहले उसका अन्त टटोलो
मौन रहो पर गलत बात पर हरगिज मुंह मत खोलो
निकल गए जो शब्द लौटकर आते नहीं दुबारा
इसीलिए जब जब भी बोलो सोच समझ कर बोलो!

—विजय निर्बाध

क्रमशः

आर्य जगत्

वर्ष २५] रविवार २०२१, ३१ जनवरी १९६५ [अंक ५

समाजों के प्रतिनिधियों से

आर्यसमाज लारेंस रोड अमृतसर के सुन्दर और विशाल मन्दिर में आज तारीख ३१ जनवरी ६५ रविवार को आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर का वार्षिक साधारण अधिवेशन हो रहा है। उस में पंजाब, दिल्ली, हिमाचल तथा जम्मू काश्मीर के सभा से सम्बन्धित समाजों के मान्य भाई बहिन प्रतिनिधि के रूप में इस महत्त्व पूर्ण अधिवेशन में भाग लेने और गत वर्ष के बीते काम को सुनने व इस नये वर्ष के सारे कार्यक्रम पर विचार करके क्रियान्वित रूप देने के लिए पधार रहे हैं। उन सब का आर्यजगत की ओर से स्वागत करते हैं। पधारने वाले सारे सज्जनों की सेवा में दो आवश्यक निवेदन करना चाहते हैं।

आज का भौतिकवादी, भोग प्रधान युग उनकी आंखों के सामने है। भ्रष्टाचार का कितना भयानक प्रवाह चल रहा है। चारों ओर विषैला वातावरण बनता जा रहा है। धर्म की ओर रुचि कम होकर धन ही जीवन के लिए सब कुछ बन गया है। धर्म को धन ने दबा दिया है। धनियों ने धर्मियों पर अपना अधिकार कर लिया है। अब धर्म के स्थान पर धन का आदेश चलने लगा है। खानपान बहुत ही बिगड़ चुका है। जीवन की किसी बात पर भी अंकुश नहीं रहा। सारा देश, युवक मंडल धर्म से दूर भागता जाता है। इस भीषण आंधी को आर्यसमाज के सिवाए और कौन रोक सकता है। ऐसे अधिवेशन में भ्रष्टाचार के इस प्रवाह के मुकाबिले की भरपूर तैयारी करनी होगी। ईसाईयों के प्रचार का कितना बड़ा तूफान आया हुआ है। केवल बातों से उसे नहीं रोका जा सकता उसके लिए बहुत बड़े साधनों की आवश्यकता है। विशेष योजनाएं बनानी होंगी। गत सतरह १७ वर्षों में चालीस लाख हिन्दु समाज के विशाल परिवार के अंग इससे जुदा होकर उनमें चले गए। इस गम्भीर प्रश्न पर भी विचार करना है।

वेद प्रचार की बड़ी समस्या है। इसके लिए सिर जोड़कर बैठना होगा। दूसरों को अलग कर देना आसान है पर अलग हुओं को मिलाना कठिन है। महात्मा हंसराज जी के त्यागमय आदर्श को फिर से लाना होगा। आज बड़े-बड़े परिवार अपना एक-एक लड़का इस वेद प्रचार के कार्य में देने के लिए मैदान में निकलें। दूसरों को प्रचारक बनने के लिए कहना सरल है पर स्वयं तथा अपने परिवार के किसी अंग को प्रचार कार्य में लगाने से ही समाज उन्नत होगा। प्रायः विद्वान् सभाओं से अलग हो गए व होते जा रहे हैं। इस पर विचार करना होगा। श्रद्धा, सहानुभूति, उदारता से भरे हुए एवं काफी समय दे कर पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी जी, प्रिंसिपल रलाराम जी प्रधान सभा जैसे देवता सभा कार्य में समाजों में निरन्तर घूमने वाले तथा सभा के लिए बहुत कुछ करने वाले देवता मैदान में लाने होंगे। सभा के वेद प्रचार फंड को मजबूत करना होगा। आज कितनी ही समस्याएं हैं जिन पर सब को मिल कर प्रेम से विचार करना है। आर्यसमाज लारेंस रोड अमृतसर के विशाल मन्दिर में बैठ कर इस बार सभा के अधिवेशन को प्यार भरा अधिवेशन बना कर सभा को तन मन धन से उन्नत करने का निर्णय करके उठें। आर्य प्रादेशिक सभा प्रगति करती जाये। —त्रिलोकचन्द्र

यह भी व्रत लेवें

गत २६ जनवरी गणतन्त्र दिवस पर भारत के छः प्रांतों उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश, राजस्थान, बिहार दिल्ली और हिमाचल में हिन्दी सरकारी भाषा सारे सरकारी कार्यों में जारी हो गई है। बड़ी प्रसन्नता है। दक्षिण में कुछ विघटनकारी तत्व हिन्दी के विरुद्ध जो भी काम करते हैं। उस पर खेद है। हमें प्रेम से अपना काम करते जाना है। इस अधिवेशन में आने वाले सारे प्रतिनिधि भी यह व्रत लेकर जावें कि हम भी अपने निजी सारे कामों में हिन्दी का प्रयोग करेंगे। आर्यसमाजों व सभाओं व अपनी संस्थाओं केन्द्र बने इस पंजाब की इस दिशा में क्या दशा है—यह देख सुनकर मन भर आता है। जीवनको हिंदी मय बनाने का व्रत लेवें।

संस्कृत की सुध लो

देश विभाजन से पूर्व पंजाब में संस्कृत का बड़ा प्रचार था। जब मैंने शास्त्री की परीक्षा दी उस वर्ष तीन सौ लगभग विश्वविद्यालय की शास्त्री परीक्षा में बैठे। तब अंगरेजी राज्य था। फिर भी उनको रोते थे कि हमारी संस्कृत को दबाया जाता है। पर आज हमारे प्रान्त में संस्कृत को क्या दशा है इसे देखकर तो रोना आ जाता है। शास्त्री परीक्षा में वर्ष में कितने बैठते हैं तथा स्कूलों में और सरकार की ओर से इसके साथ क्या सलूक हो रहा है। यह अतीव खेद का विषय है। जब से स्कूलों को हायर सैकण्डरी का दर्जा दिया गया है, तब से तो संस्कृत सर्वथा प्रायः समाप्त कर दी गई है। विषयों का मिश्रण ही ऐसा किया गया है कि छात्र संस्कृत लेता ही नहीं। नवम कक्षा से समाप्त हो गई। जब आगे ही संस्कृत नहीं तो छोटी कक्षाओं में लड़के क्यों पढ़ें ? बड़ा भारी आघात है। किसी को भी ध्यान नहीं है ? क्या आर्यसमाज इस ओर ध्यान देकर सुधार करने का प्रयत्न करेगी ? —सं.

अमूल्य वचन

★ बिना पुरुष कारेण दैवं न सिध्यति (पुरुषार्थ के बिना प्रारम्भ नहीं बनता)।

★ कटु वचन का घाव बड़ा गहरा होता है।

महात्मा वर्मचन्द दिवस

प्रति वर्ष की भांति इस बार भी ता० १८ से २३ जनवरी तक प्रातः सायं स्वर्गीय महात्मा वर्मचंद जी संस्थापक डी. ए. वी. हायर सैकंडरी स्कूल लेखराम नगर वादियां का दिवस मनाते हुए यजुर्वेद यज्ञ उनके सुपुत्र ला० जगदीश मित्र जी ने अपने परिवार में रखा। इस में पं० मुनीश्वर देव जी, पं० गंगाराम जी शर्मा, पं० मेलाराम जी रेडियो सिंगर, पं० अमरनाथ प्रेमी पं० त्रिलोकचन्द शास्त्री शामिल हुए। ला० जगदीश मित्र जी का परिवार विशुद्ध आर्य परिवार है। दोनों समय खूब रौनक रही। पूर्णाहुति पर तो सारे नगर के हिन्दु सिख मुस्लिम तथा अन्य सज्जन शामिल थे। सभा को वेदप्रचार दिया गया—

विशेष लेख—

वाल्मीकिय रामसम्वाद

लेखक—श्री ज्ञानी पिण्डीदास जी आर्यसमाज लोहगढ़ अमृतसर

****

मान्यवर श्री ज्ञानी पिण्डीदास जी आर्यसमाज एवं सभा के पुराने स्तम्भों में से हैं। आपके लेखन तथा प्रवचन में बड़ा प्रभाव होता है। स्वाध्याय बड़ा विशाल है। आर्यजगत में आपने गतांकों में दो विशेष लेखमाला लिख कर बड़ी नवीन प्रमाण सामग्री पेश की थी। आपकी सदा कृपा है। यह विशेष लेखमाला भी आपकी कृपा का प्रसाद है—सं०

देश विभाजन के दुर्भाग्य पूर्ण दिनों में पश्चिमी पंजाब का एक विस्थापित ब्राह्मण परिवार अपना सर्वस्व पाकिस्तान में छोड़ आया, परन्तु अपने प्राणों से भी अधिक प्रिय समझ कर ब्राह्मी लिपि में लिखा हुआ 'वाल्मीकीय राम सम्वाद' एक जीर्ण-शीर्ण ग्रन्थ, येन, केन प्रकारेण भारत की पवित्र भूमि पर सुरक्षित ले आने में सफल हुआ। स्वर्गवासी श्री देवेन्द्र कमल एम० ए० कार्यालय मन्त्री हिंदु महासभा देहली के सद्-प्रयत्नों से इसे देवनागरी लिपि में लिखा जा सका। इसी लिपि-परिवर्तन में उक्त हस्तलिखित प्रति, जरजरित अतः चूर-चूर हो गई।

श्री पं० त्रिलोकचन्द्र शास्त्री के आग्रह के कारण उक्त पुस्तक में से कुछ संक्षिप्त विषय पाठकों की भेंट कर रहा हूँ। आशा है यह पंक्तियां रुचि कर सिद्ध होंगी।

प्रथमोऽध्याय—मुख्य प्रश्नः

अपने राज्याभिषेक के चतुर्थ वर्ष में, पंचम मास के प्रथम दिवस, इक्ष्वाकु कुल तिलक भगवान राम ने अपने मंत्रियों, पुरोहितों सेनाध्यक्षों तथा पुरवासी महानुभावों की सभा को सम्बोधित करते हुए कहा—

'हिमाचल की उपत्यका में स्थित दारंघण नामी राज्य पर आक्रमण करके हमने वहां के राजा को दण्ड दिया है। इसके सम्बन्ध में क्षेत्रों में आपत्ति उठाई जा रही है। उसी का निराकरण करने के लिए हमने आप सज्जनों को कष्ट दिया है। सुनिए—

यह दारंघण नामी जनपद हमारी देवतुल्य प्रजा एवं वेदप्रतिपादित सद्धर्म का विरोधी था, इस कारण—

दारंघेषु ध्रुवाख्येयो दंडितो पापकृन्महान् ।
देव मानव सरोधी भव्याचरित पामरः ॥७॥

अर्थात्—देव-मानव विरोधी दुष्कृत्यों के कारण पृथिवी भर में कुख्यात पामर दारंघण नरेश ध्रुवण को हमने दण्डित किया है।

वेद निंदा प्रवृत्तो ऽसावराति: वेद मार्गिणाम् ।
पवित्रेक्ष्वाकु-राष्ट्रस्य सदाऽसौद्यानिकारकः ॥८॥

अर्थात्—उक्त अनर्थ कारी राजा वेद, वैदिक धर्मियों तथा पवित्र इक्ष्वाकु-राष्ट्र के विरुद्ध घृणा का प्रचार करता था।

वेदमार्ग-विरुद्ध तु धर्ममेक प्रवर्तितम् ।
निपीडिताः जनाः सर्वे तन्निर्देश-विरोधिनः ।९।

अर्थात्—उसने वेदमार्ग विरोधी एकमत प्रचलित किया था। जो लोग उसकी आज्ञा (नये मत) नहीं मानते थे, उन्हें वह दारुण दुःख देता था।

नवीनैर्मतवादैस्तु क्लीवत्वं जायते यथा ।
दुर्मतिः खलु तस्यैषा चरित्रे हानिकारका ॥१०॥

अर्थात—इन भ्रष्टाचार पूरित सिद्धान्तों के कारण हमारी प्रजाओं में नपुंसकता तथा हीन भावना उत्पन्न होने लगी थी।

अहिंसा या ध्रुव प्रोक्ता लोक संप्लव कारिणी।
हेतु वादैः समायुक्ता ह्यतीवानर्थदायिनी ॥१५॥

अर्थात—उक्त ध्रुवण द्वारा प्रचारित (अनुचित) हिंसा अत्यन्त संप्लव तथा अनर्थ कारिणी थी।

वेदात् विरोधिनो या तु विधातृ विधिनाशिनी।
अहिंसा सा यदा ग्राह्या सर्व धर्मस्तदा मृतः ॥१६॥

अर्थात—ऐसी अहिंसा वेद मार्ग तथा ईश्वरीय नियमों के प्रतिकूल है यदि इसे स्वीकार कर लिया जाय तो धर्म का सर्वनाश समझो।

यद्यहिंसा भवेन्मार्गे दुष्टचौराश्च तस्कराः।
भुवि प्रादुर्भविष्यन्ति त्वशान्तिर्महती भवेत् ॥१७॥

अर्थात—इस अहिंसा को सिद्धान्त रूप से सर्वोपरि मान लेने से संसार में दुष्टों, चोरों, डाकुओं एवं तस्करों की अभिवृद्धि के कारण महान अशान्ति व्याप्त हो जाएगी।

जगत् मायामयं सर्वं समाजः स्यादवास्तवः।
ध्रुवणो मतमिदं सर्वं सत्यं स्वयंहि केवलम् ॥१९॥

अर्थात्—ध्रुवण का मत यह है कि संसार मायामय है, समाज वास्तव में कुछ नहीं और कि अपना व्यक्तित्व (स्वार्थ) ही सब कुछ है।

ईदृशी भावना येषां यौथ बुद्धि कथं भवेत् ।
धर्म व्याजेन स्वार्थत्वं श्रेष्ठ शत्रु धरातले ॥२०॥

अर्थात्—जिन की इस प्रकार की भावना हो उन में संगठन की भावना कैसे उत्पन्न हो सकती है? धर्म का छद्मवेष ही संसार में सब से बड़ा शत्रु है

मायामयः समाजश्चेदरमद्राष्ट्रं भवेत्तथा।
मायामयो ही सम्राट तु भविष्यति न संशयः ॥२ ॥

अर्थात्—यदि समाज ही मायामय है; झूठा है, तो हमारा राज्य, राष्ट्र एवं राजा सभी मायामय झूठे स्वीकार करने पड़ेंगे।

राष्ट्रद्रोही-भाषणं तु राष्ट्रद्रोह करं भृशम्।
समाजक्षय कृत् ज्ञेयं न क्षन्तव्यं कदाचन ॥२३॥

अर्थात्—इस प्रकारके राष्ट्रद्रोही भाषण, राष्ट्र एवं समाज विध्वंसक हैं अतः क्षन्तव्य नहीं हैं।

तस्मात्तस्मै दण्ड दानं युक्तं ह्यमन्यत ॥२४॥

अर्थात्—अतः ऐसे लोगों को दण्ड देना युक्ति-युक्त ही है ऐसा माना गया है।

"भारत में ईसाई-मत कैसे फैला ?"

(१०—के.एन. शास्त्री एम.ए.बी.टी. साहित्यालंकार गोंदिया)

ईसाई मिशनरियों की अनुचित गतिविधि और कार्य आजकल चर्चा के विषय बन गए हैं। अबसे ईसाइयों की घृणित हरकतों का भंडा फोड़ हुआ है और केन्द्रीय एवं राज्य सरकारों का ध्यान इस ओर गया है तब से ईसाइयों की बेचैनी बहुत बढ़ गई है और वे अपनी करतूतों को छिपाने का भरसक प्रयत्न कर रहे हैं। असल बात यह है कि भारत में प्रारम्भ से ही ईसाई प्रचारक अधिकतर अपढ़ों और पिछड़ी हुई जातियों के लोगों के बीच वांछनीय या अवांछनीय जिस प्रकार भी चाहे प्रचार कार्य करते और लोगों को ईसाई बनाते चले आये हैं। कोई उनके कार्यों की समीक्षा या रोक-टोक करने वाला न था। यदि कभी किसी अन्य धर्म-प्रचारक या समाज सुधारक ने उनके कार्यों की ओर सरकार का ध्यान आकृष्ट भी करना चाहा तो वह आवाज बहरे कानों में पड़ी क्योंकि सरकार भी विदेशी थी।

सच्ची धार्मिक जिज्ञासा और पिपासा से धर्म परिवर्तन करने वाले भारतीय ईसाइयोंकी संख्या नगण्य है किन्तु धनादि के प्रलोभन और बहकावे—फुसलावे में आकर व धोखे से ईसाई बनने वालों की संख्या बहुत अधिक है। प्रमाणार्थ मैं ईसाइयों की एक शाखा 'मेथो-डिस्ट एपिस्कोपल कलीसिया' के तवारीखी बयान का कुछ अंश नीचे उद्धृत करता हूं जिस से पाठकों को पता चल जायगा कि उक्त कलीसिया का काम कब, कैसे और किन के बीच शुरू किया गया था।

आरम्भ की कहानी

मेथोडिस्ट एपिस्कोपल कली-सिया के तवारीखी बयान (हिन्दो-स्तान में काम का आरम्भ)—मेथो० एपि० कली० ने अपना काम हिन्द में सन् १८५६ में शुरू किया। जब विलियम बटलर साहब अमरीका मुल्क से तशरीफ लाये तो उन्होंने अवध व रोहेलखंड को खिदमत का खेत (सेवा क्षेत्र) चुना और चूंकि लख-नऊ में कोई जाए सकूनत (रहने की जगह) न मिली, बरेली में काम शुरू किया। हिंद के गदर से बरेली में काम बन्द हुआ लेकिन १८५८ में लखनऊ में सकूनत इख्तियार की गई और मिशन का काम अज़सरे नौ (नये सिरे से) शुरू हुआ।

सन् १८७० तक मेथो० एपी० कली० ने बशारती (शुभ सन्देश सम्बन्धी) और तालीमी महकमों में वह काम कायम किया जो हमारी कलीसिया की सबसे बड़ी कामयाब मिशन की बुनियाद साबित हुआ।...लेकिन शुरू में हिदायत पाकर हमने बशारती काम (ईसाई लोग अपने धर्म-प्रचार के कार्य को ईसा के शुभ-संदेश प्रसार के नाम से पुका-रते हैं। शुमाली (उत्तरी) हिन्द के देहात में किया किया जिसका नतीजा यह हुआ कि 'नीच कौमों में एक बड़े शुमार (एक बहुत ही बड़ी संख्या) ने बप्तिस्मा पाया (बप्तिस्मा पाना ईसाई हो जाना) इस से मसीहियत की जानिब इजमाई तहरीक शुरू हुई (अर्थात् ईसाई धर्म प्रचार का सामूहिक कार्य प्रारम्भ किया गया) जिसकी वजह से कई लाख नौ मुरीद (नये अनुयायी) हमारी कलीसिया (मंडली) में देहाती इलाकों में शामिल हुए।"

—(देखो ईसाइयों की गीत की किताब) पब्लिशिंग हाउस, लखनऊ से प्रकाशित सन् १९३४ का संस्करण पृष्ठ ३९६ से ४०४ तक)

उपर्युक्त उद्धरण से स्पष्ट है कि ईसाइयों ने अपना प्रचार क्षेत्र विशेषतः देहात बनाया और अपना कार्य अपढ़ों व 'नीच कौमों में किया क्योंकि अपढ़ लोग इनकी चिकनी चुपड़ी बातों में तर्क-वितर्क नहीं कर सके और अंध विश्वास में पड़ कर या इनके धोखे में आकर ईसाई बन गये। ईसाइयों के कार्यों का बाह्य स्वरूप शिक्षा-प्रसार या स्वास्थ्य सुधारादि कुछ भी रहा हो किन्तु आंतरिक भावना ईसाइयत के प्रचार की थी जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण यही है कि आज तक देहातों से अविद्या और अशिक्षा का दूर होना तो दूर रहा किंतु उस ओर कोई उल्लेखनीय कार्य भी नहीं हुआ। अलबत्ता गांव के गांव ईसाई अवश्य बन गये जैसा कि उपर्युक्त उद्धरण से स्वयं प्रमाणित होता है।

अन्य उदाहरण

एक दूसरा उदाहरण त्रावणकोर रियासत का दिया जा सकता है:—

त्रावणकोर में ईसाई मत का सूत्रपात कैसे हुआ? इस सम्बन्ध में श्री कन्हैयालाल मिश्र ने (जो स्वयं वहां प्रचारार्थ गये थे) एक विस्तृत वर्णन 'सन्मार्ग' में निकाला था। वह लेख 'नवभारत' दिल्ली के २२ जून १९५० के अंक में भी प्रकाशित हुआ था जिसका प्रमुख अंश निम्नलिखित है:—

"...............सन् १६०० में सैन्ट थामस नामक पादरी त्रिवेन्द्रम (त्रावणकोर) से ४० मील दूर 'क्वैलन' नामक बंदर में उतरा। उसने सारे राज्य में भ्रमण कर यह अनुभव किया कि इस राज्य के निवासी कट्टर हिंदू हैं। ये साधारण प्रचार से ईसाई नहीं बन सकते। वहां के हिन्दुओं का वेदों पर पूर्ण विश्वास है। यही सोच वह काशी आया और अपने को 'नैपाली ब्राह्मण' बताकर उसने संस्कृत पढ़ना प्रारम्भ किया। ६ वर्ष तक संस्कृत की शिक्षा प्राप्त करने के बाद वह संन्यासी का रूप धारण कर पुनः त्रावणकोर राज्य में आया। वहां एक स्थान पर बैठकर उस ने संस्कृत में 'जजर वेद' नामक एक पुस्तक लिखी, जिस में उस ने बाइबिल में जहां-तहां वर्णित ईसामसीह के चमत्कार संकलित किए। इसे पूर्ण कर लेने के बाद उस ने त्रावणकोर की राज-धानी त्रिवेन्द्रम से ४२ मील दूर 'नागट कोयल' में सन् १६१६ में बड़ा सुन्दर मंडप बना उस 'जजर-वेद' की कथा को 'वेद कथा' के नाम से कहना प्रारम्भ किया जो एक वर्ष तक चलती रही। कथा सुनने केलिए दूर-दूर से हिंदू जनता टूट पड़ी और बड़ा श्रद्धापूर्वक सुनती रही। एक वर्ष समाप्त होने पर पूर्णाहुति का समय आया। हिंदुओं ने एक बड़ा भोज आयोजित किया जिस में १०१ ब्राह्मण थे और शेष 'नायर' आदि इतर जातियों के लोग। उस भोज में सबकी कुल संख्या दस सहस्र थी।...सब प्रकार का भोजन बनाया गया। (नकली) संन्यासी जी बराबर भोजनालय में आते-जाते रहे व ध्यानपूर्वक बनती रसोई की परीक्षा करने के बहाने प्रत्येक पदार्थ को निकाल-निकाल कर देखते जाते थे। भोजन बना। यज्ञ-मंडप के भीतर ब्राह्मण लोग बैठे। उससे बाहर मैदान में शेष स्त्री-पुरुष संन्यासी जी की आज्ञा से एक साथ बाहर पंक्तिवार बैठ गये। केले के पत्तों पर विधिवत् भोजन परोसा गया।

(क्रमशः)

आर्य संगठन के मार्ग में बाधाएं

(लेखक—श्री पिशौरीलाल जी 'प्रेम' ददाहू, जि० सिरमौर H.P.)

संसार के बड़े-बड़े धुरन्धर विद्वान, देश सुधारक, धार्मिक नेता सार्वजनिक सभाओं में व्याख्यान देते हैं। समाचार-पत्रों में लेख छपवाते हैं। पुस्तकें लिखते हैं। गोष्ठियां बुलाते हैं ताकि किसी न किसी प्रकार मानव जाति का संगठन हो सके। तथा ससार में सुख और शान्ति का साम्राज्य हो सके। प्रत्येक धार्मिक तथा राजनैतिक सभा के मंच से यही स्वर सुनाई पड़ेता है कि संगठन होना चाहिए। वार्षिक उत्सवों, सम्मेलनों तथा पर्वों पर भी संगठन का राग अलापा जाता है साधारण से साधारण और बड़े से बड़ा व्याख्याता भी जब तक संगठन के विषय में कुछ शब्द कह न दे अपने व्याख्यान को अधूरा समझता है। सारांश यह है कि प्रत्येक बुद्धिमान पुरुष संगठन का इच्छुक है।

इतने प्रयत्नों के होते हुए भी संगठन नहीं होता। बड़ी-बड़ी जातियों, हिन्दु-मुसलमान तथा ईसाइयों का संगठन होना तो असम्भव समझा जाता है। परन्तु एक ही हिन्दु जाति में आर्यसमाजी सनातनधर्मी तथा सिक्ख भाई भी आपस में नहीं मिल सकते। एक ही आर्यसमाज में भी फूट पाई जाती है। छोटी से छोटी आर्य-समाज जिसमें गिनती के ही सभासद हैं वे भी आपस में संगठित नहीं रह सकते। यह अवस्था कितनी शोचनीय है ? क्या कारण है जो संगठन नहीं होता :—हमारे भाइयो ! यदि आप वास्तव में यह समझते हैं कि फूट से जाति व देश विनाश की ओर जा रहे हैं, शारीरिक आत्मिक और समाजिक अवस्था दिन प्रति-दिन अवनति की ओर वेग से बढ़ रही है। आर्य समाजों की व्यवस्था चिन्तास्पद होती जा रही है। वैदिक धर्म के प्रचार में सैंकड़ों अड़चने पैदा हो रही हैं। नये-नये मतों और विचारधाराओं का प्रसार हो रहा है। अविद्या अन्धकार छाया हुआ है। चरित्र हीनता बढ़ रही है। स्वतन्त्र भारत में भी गौ हत्या की जाती है। शरणार्थियों की समस्याओं का अभी तक भी पूर्णतया समाधान नहीं हो पाया। भारतीय जनता कई प्रकार के दुःख अनुभव कर रही है। यह फूट पिशाचिनी हमें पतन के गहरे गर्त में लिये जा रही है। इसके कुछ कारणों का वर्णन मैं आप लोगों के सम्मुख निवेदन करता हूं जिन्हें दूर करने से संगठन की देवी का शुभागमन अवश्य हो सकता है।

१ स्वार्थ—एक व्यक्ति योग्य न होते हुए भी यह चाहता है कि मेरी प्रतिष्ठा हो, मान हो प्रशंसा हो। यह एक प्रकार का स्वार्थ है। एक व्यक्ति यह चाहता है कि मेरे व्यक्तिगत कार्य में कोई बाधा न आए आर्थिक हानि भी न हो समय भी व्यय न हो। समाज को उन्नत करने के लिये किसी प्रकार का कष्ट भी न उठाऊं, परन्तु फिर भी मेरी श्लाघा हो, यह दूसरे प्रकार का स्वार्थ है। एक आदमी यह चाहता है कि मैं किसी बड़े आदमीकी सेवा न करूं बल्कि मुझे बड़ा समझ कर मेरी सब सेवा करें। मैं किसी की सहायता न करूं, किसी के दुःख सुख का साथी न बनूं, परन्तु मेरी सहायता हो, मेरे दुःख सुख में सब सम्मिलित हों। मैं किसी की सम्मति के आगे न झुकूं, मेरी सम्मति के आगे सब झुकें। इस प्रकार के स्वार्थ फूट के मूल कारणों में से होते हैं। अतः हमें इन स्वार्थ पूर्ण भावनाओं को त्याग देना चाहिए।

२. अभिमान—एक व्यक्ति समझता है कि मैं बड़ा दानी हूं, मेरे ही दान पर समाज चल रहा है। दूसरा कहता है कि मैं बड़ा योग्य तथा विवेकी हूं, समाज के सभी काय मेरी योग्यता पर निर्भर है। यदि मैं कार्य न करूं तो समाज की व्यवस्था शिथल हो जाए। इस के अतिरिक्त एक व्यक्ति को यदि अपने चौधरीपनका अभिमान है तो दूसरे को अपने सरकारी पद का गर्व है। एक को यदि व्यापार में उन्नत होने के कारण अभिमान है तो दूसरा यूंही धन की मादकता में चूर है। तात्पय यह है कि हरेक व्यक्ति को किसी न किसी प्रकार का अभिमान अवश्य रहता है।

३ हठ:—एक व्यक्तिके विचार में एक बात समाज के लिए लाभकारी है। वह उसे समाज की अंतरंग सभा में या साधारण सभा में रख देता है। दूसरे समासद के विचार में वह सम्मति इतनी अच्छी नहीं, बहु सम्मति से उसका विरोध होता है। परन्तु वह फिर भी अपनी बात पर अड़ा ही रहता है। यह कदापि नहीं सोचता कि यदि मेरी सम्पति अच्छी होती तो उसे अवश्य मान लिया जाता। वह अपनी बात मनवाने के लिए दुराग्रह करता है। किसी प्रकार भी अपनी बात को वापस लेने में उद्यत नहीं होता। इसी प्रकार समस्त कार्यों में हठ किया जाता है।

८ ईर्ष्या—एक दानी पुरुष धर्म और परोपकार के कार्यों में उदारतापूवक दान देता है, इसलिए उसकी प्रतिष्ठा होती है। एक व्यक्ति का विद्वान तथा योग्य होने के कारण सम्मान होता है। एक व्यक्ति के मन में त्याग का प्राधान्य है। वह तन-मन तथा धन से समाज की सेवा करता है। इसलिए उसकी प्रशंसा होती है इन्हें देखकर वे व्यक्ति जिन में कोई भी गुण नहीं होते, किसी प्रकार की योग्यता नहीं रखतेवे ईर्ष्या तथा द्वेष से जल उठते हैं। वे योग्य बनने का प्रयत्न नहीं करते, स्वयं उन्नत बनने के लिए पुरुषार्थ नहीं करते बल्कि ईर्ष्या तथा द्वेष की धधकती हुई भट्ठी में जलते हुए दूसरों को गिराने के घृणित प्रयत्न करते हैं। यद्यपि वे अपने इस दुःसाहस से स्वयं ही प्रतिदिन गिरावट की ओर जाते हैं और साथ-साथ समाज में भी फूट डलवा कर समाज कार्य में बाधक बन जाते हैं।

प्रिय पाठकगण ! मैंने केवल आर्यसमाज को दृष्टिगोचर रखकर ये कुछ उदाहरण दिये हैं। यदि आप स्वयं परीक्षा के लिए किसी सभा, समाज, जाति, सम्प्रदाय, नगर, ग्राम, कुटुम्ब—परिवार बल्कि दो भाइयों तक में फूट देखें। और इसके कारणों पर विचार करें तो आप को उपरोक्त कारणों में से एक न एक कारण अवश्य जान पड़ेगा। यद्यपि इस फूट के और भी कई कारण हो सकते हैं परन्तु जहां तक मैंने विचार किया है, ये मूल कारण हैं। इस लिए इन कारणों को दूर करने का भरसक प्रयत्न कीजिये। मन पर जो स्वार्थ का पर्दा पड़ा हुआ है उसे उठा दो और योगीश्वर दयानन्द के उपदेशानुसार निस्वार्थ होकर धर्म के कार्यों को करते जाओ। अभिमान को त्याग कर नम्रता का भूषण धारण करो। मूर्खों की भांति हठ को छोड़ अपनी बुद्धि को अल्प समझते हुए बहुमत के आगे झुकना सीखो। ईर्ष्या और द्वेष से मन को पृथक रखते हुए केवल प्रेम और मित्रता की भावनाओं से मन को उज्ज्वल कर दो। दूसरों के सम्मान में अपना सम्मान और दूसरों की उन्नति में अपनी उन्नति समझो। फिर देखिए कि संगठन रूपी देवी का कितनी जल्दी शुभ आगमन होता है।

आवश्यक सूचना

आर्यजगत के लेखकों से निवेदन

आर्य जगत में प्रकाशनार्थ लेख व कविता कागज के एक ही तरफ लिखने की कृपा करें। और लेख हिन्दी भाषा में ही होने चाहिएं। वरना प्रकाशन में विलंब होने की सम्भावना बनी रहेगी।

व्यावस्थापक।

आह ! पं० चिरञ्जीलाल जी ऋषि

(ले०—श्री हंसराजलाल जी मुजरिम प्रधान आर्यसमाज दसूहा)

वेदों के परम विद्वान स्वर्गीय पं० मस्तराम जी ऋषि दसूहा निवासी की धर्मपत्नी की अर्थी आप अपने कन्धों पर उठाकर श्मशान भूमि में ले गए। मृतक शरीर का पूर्ण वैदिक रीति से संस्कार करने के बाद आपके हृदय में असह्य पीड़ा हुई जिस से आप एकदम मूर्छित हो गए। डा० शामलाल बख्शी तथा डा० बसन्त-राम धीर के सतत प्रयत्नों से जब आप कुछ स्वस्थ हुए, तो पूर्ण स्वास्थ्य लाभ के लिए आपको सिविल हस्पताल जालन्धर में दाखिल किया गया जहां हृदयरोग विशेषज्ञ डा० सेठी की एक माह की चिकित्सा से स्वस्थ होकर आप घर वापिस आगए।

आपने अपने को पूर्ण स्वस्थ समझ कर प्रधान आर्य समाज दसूहा को पत्र लिखा—'कि अब मैं अपना शेष जीवन समाज की निःशुल्क सेवा में लगाऊंगा।' यह सूचना महात्मा देवी चन्द जी ऐम. ए. होशयारपुर को भेजी गई।

परन्तु भाग्य में कुछ और ही बदा था। थोड़े दिनों के पश्चात् पुनः आप की अवस्था बिगड़ गई। दोबारा स्वास्थ्य प्राप्ति के लिए आप को सिविल हस्पताल जालन्धर में प्रविष्ट होना पड़ा। डा: सेठी की चकित्सा से पुनः नीरोग होते दिखाई दिए। १२ जनवरी लोहड़ी के पवित्र त्योहार के दिन जब आप नीरोगता का प्रमाण पत्र ले कर प्रसन्नचित दसूहा आने की तैयारी में थे कि ठीक प्रातः सवा नौ बजे जलपान करने के बाद तीन ऐसी हीकें आईं, जो महाप्रयाण का आह्वान सिद्ध हुईं; डा० महोदय के आने तक आपके प्राणपखेरू उड़ चुके थे।

दुःख की बात है कि इसी दिन ग्यारह बजे ऋषि प्रेमियों को डा० ज्योति द्वारा कार में लाया हुआ ऋषि जी का का शव मिला। यह शोक समाचार दसूहा नगर तथा समीपवर्ती इलाका में जंगल की आग तरह फैल गया। हजारों नर-नारी तथा बाल वृद्ध शोकसमाचार सुनते ही फूट फूट कर रोने लगे। दूसरी सुबह उनके पुत्र-पुत्री देहली और नंगलटाउनशिप से रोते-बिल-खते आ पहुंचे। ऋषि जी की शव-यात्रा ठीक सवा ग्यारह बजे आरम्भ हुई, जिसके साथ असख्य नर-नारी और विद्यार्थी इस महान आत्मा पर पुष्प वर्षा करते हुए श्मशानघाट आ पहुंचे। उनके आवासस्थान से श्मशानघाट तक का सारा मार्ग रोती और बिलखती हुई जनता से अटा पड़ा था। नगरवासियों को अपार श्रद्धा की यह हालत थी कि मकर संक्रान्ति होते हुए भी सारे नगर में पूर्ण हड़ताल थी, जिस का उदाहरण दसूहा के इतिहास में नहीं मिल सकता। ओ३म के झण्डे अर्थी के साथ थे और आप का मृतक शरीर केसरी रंग के शुद्ध खद्दर में लिपटा हुआ था। पूर्ण वैदिक रीति से ससम्मान अन्त्येष्टि संस्कार किया गया।

तदनन्तर शोक सभा हुई जिस में नगर के सभी सम्प्रदायों तथा राजनैतिक पार्टियों के गण्यमान्य महानुभावों ने भाग लिया। शोक सभा के प्रधान ला. जमुना दास जी बी. ए. बी. टी. थे। ऋषि जी की सेवा में श्रद्धांजलियां अर्पित करते हुए कहा गया—'कि डी. ए. वी स्कूल दसूहा एक कर्मठ तथा शुभ चिन्तक प्रिन्सीपल से वंचित हो गया है, इलाका का प्रकाशस्तम्भ गिर गया है, आर्य समाज दसूहा एक त्यागी, अनुभवी, स्वाध्यायप्रेमी और वेद के परम विद्वान् से वंचित हो गया है।

परमात्मा हम सबको सामर्थ्य दें कि हम स्वर्गीय ऋषि जी के जीवन से प्रेरणा लेते हुए स्कूल, समाज और देश की सेवा करते रहें।

हिन्दू धर्म की अग्नि परीक्षा

(ले०—श्री सुन्दरलाल जो वोहरा गुलाब सागर जोधपुर)

(गतांक से आगे)

यहां आर्य समाजी पराये नहीं हैं, कबीर पन्थियों की काशी तीन लोक से न्यारी नहीं है, ग्रन्थ-साहब के पुजारी हमसे अलग नहीं हैं, कोई वल्लभ अथवा रामानुज सम्प्रदायी नहीं हैं, शैव और वैष्णव का भाव पानी के ऊपर की काई मात्र है—हम सब हिन्दू हैं—वैदिक धर्म के अनुयायी। हिन्दुओं एक होओ—संघे शक्तिः कलौयुगे।

आज हमारा धर्म खतरे में है, गाय का कत्ले-आम हो रहा है, हमारे देव स्थान व मठ खतरे में हैं, हमारी मां बेटियों का शील खतरे में है—हिन्दुओं जागो। हिन्दुओ एक होओ—एकोऽहं बहुस्याम् !

नाम पर मत लड़ो। भेष पर मत लड़ो। मन्दिरों और मठों पर मत लड़ो। तीर्थों पर दंगा मत करो। मूर्तियों पर मत लड़ो। ईसाई और इस्लाम के मतावलम्बी आपके ईर्ष्या, द्वेष, मनमुटाव व आत्मजनों के प्रति तिरस्कार की भावना के जीते-जागते प्रमाण हैं। आपकी नपुंसकता एक करोड़ ईसाइयों के रूप में आपकी नींद हराम कर रही है, फिर भी आप रजाई ओढ़ने का विफल प्रयास कर रहे हैं। बर्फानी हवा में मलमल के वस्त्र पहनने वाले को निश्चित रूप से निमोनिया होता है। ठीक उसी प्रकार अपने धर्म पर संकट आया हुआ देखकर भी जो उदासीन बने रहते हैं, उनका इस धरातल से नामो-निशान ही मिट जाता है। यह निश्चित मानिये कि मनुष्य होकर भी जो धर्म संकट के समय मूक बना रहता है वह आने वाले जन्म में जिराफ बनता है !

अतः अपने को हिन्दुत्व के प्रतिनिधि और हिन्दू-दर्शन के साधक व ज्ञाता मानने वाले ओ मनीषियो, आप अपनी मोहमयी निद्रा का त्याग कीजिए। हिमालय और विन्ध्याचल की गुफाओं में आंखें मूंदकर बैठने वाले ओ श्रद्धेय सन्यासियो, आप बाहर आइये और अपने भेष को धर्म-हिताय समर्पित कीजिए। गन्दी गलियों और गरीबों के जीवन पर लिखने वाले ओ कवियो और लेखको, आप अपनी लेखनी को हिन्दुओं में स्वधर्माभिमान जगाने के लिए समर्पित कर दीजिये। राष्ट्र के ओ करोड़पति महाजनों, आप रंगरेलियां मनाना छोड़िए, और हिन्दू धर्म के प्रचारार्थ मुक्त कर से धन प्रदान कीजिए। यह हिन्दू धर्म की अग्नि परीक्षा का काल है।

वेदों का पढ़ना पढ़ाना
सुनना सुनाना
आर्यों का
परम धर्म है

केरल में आर्यसमाज

अंधेरे में एक किरण

लेo:—श्री राजेन्द्र जी जिज्ञासु M. A. दयानन्द कालेज शोलापुर

आर्य जगत के पाठकों को ज्ञात ही है कि दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय का एक सुयोग्य एवं कर्मठ स्नातक केरल में उक्त विद्यालय की ओर से महर्षि का सन्देश सुना रहा है। ठीक तो यह होगा कि हम ऐसा कहें कि अंधकार को चीरने वाली केरल के अंधेरे में एक ही किरण है और वह हैं श्री पं. नरेन्द्र जी विद्याभूषण B. A. आप उसी प्रान्त के हैं। हिन्दी के हैं। हिन्दी के अतिरिक्त अंग्रेजी व दक्षिण भारत की चार क्षेत्रीय भाषाएं भी जानते हैं। एक पत्र में सहायक सम्पादक के पद पर आसीन २५० अथवा ३०० की नौकरी छोड़ कर कांटों वाली राह पर चल पड़े हैं। उस क्षेत्र में उतरे हैं जहां उनका सहायक सिवा भगवान के कोई नहीं। क्या मैं ऐसा लिखूं कि सिवाए भगवान के कोई सहायक नहीं? विद्यालय सम्भवतः उनको १२५) मासिक दक्षिणा देता है। आर्य समाज के सब सैनिकों को नरेन्द्र जी की पीठ पर हाथ रखकर यह बताना होगा कि वह पादरियों की अराष्ट्रीय गतिविधियों का प्रतिकार करते समय अकेला नहीं सारा आर्यसमाज उसके पीछे है। अमृतसर के लक्ष्मणसर समाज, महाशय हंसराज ट्रस्ट, गुजरात प्रदेश के सारजपुर आर्य समाज ने उनको साहित्य प्रकाशन के लिये धन भेजा है। साहिबपुर समाज ने श्री उपाध्याय जी कृत २००० अंग्रेजी ट्रैक्ट भेज कर इस दिशा में आर्यों का मार्ग दर्शन कर रहा है। बाबू कृष्णलाल जी टोहाना ने अपने पूरे सहयोग का वचन दिया है। कुछ धन केरल से भी मिला है विद्यालय ने मलायलम में साहित्य प्रकाशन आरम्भ कर दिया है। तीन ट्रैक्ट छप चुके हैं। एक ट्रैक्ट के लिये महाशय हंसराज ट्रस्ट बरेटा ने भी कुछ धन दिया है। नरेन्द्र जी ५ आर्य युवक समाजें स्थापित कर चुके हैं।

अभी सूचना आई है कि चैंगनूर के एक प्रिंसिपल आर्य युवक समाज के सदस्य बन गये हैं। चैंगनूर नरेन्द्र जी का मुख्य कार्य केन्द्र है। इतने से ही आर्य जन सन्तुष्ट न हों यह मत सोचें कि पोपों के पादरियों के दुर्ग इतनी शीघ्रता व सुगमता से ढह जायेंगे। बड़ा तप त्याग करना पड़ेगा। कई नरेन्द्र वहां चाहियें। यदि आर्य समाज और नरेन्द्र वहां नहीं भेज सकता तो क्या आर्य जगत के पाठक अपनी क्षमता अनुसार दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय द्वारा या सीधा नरेन्द्र जी का ...... मैं आर्य साहित्य विशेष रूप से उपाध्याय साहित्य भेजेंगे? हिन्दी मैं भी साहित्य भेजा जाना चाहिए। डा. दीवान चन्द जी का वेद सन्देश पुस्तक अत्यन्त उपयोगी रहेगा। धन भी चाहिए ताकि केरल में शीघ्र भाषा में भी साहित्य प्रकाशन होता रहे। ३ ट्रैक्टों का प्रकाशन तो हेमराम के आर्य समाज के लिये होगा की बात नहीं। वेद और ऋषि ग्रंथ भी छपने चाहियें। आर्यो कुछ सोचो। तुम्हारे उपदेशक ने साधन ही न होने के कारण अपनी अल्प दक्षिणा से पैसे लगा कर कुछ साहित्य लोगों तक पहुंचाया है। ...... हमारा विद्वान कार्य करे? यह हमारे लिये लज्जा की बात है। उपदेशक हमारा त्यागी हो- यह गौरव की बात है परन्तु हमारे असहयोग के कारण उसे भूखा रहना पड़े यह अच्छी बात नहीं। मैं उन से समाचार प्राप्त करता रहता हूं। आर्य जन निम्न पता पर उन से सम्पर्क जोड़ें

Pt. Narendra Bhooshan Ji B. A. C/o Aryan Youth League Chengannur Kerala.

शादीपुर जुलाना (संगरूर) वेद सप्ताह

१४. १. ६५ से २०. १. ६५ तक वेद सप्ताह मनाया गया। श्री ...... राम जी की मंडली ने भजनों और उपदेशों से वेद प्रचार कार्य एक सप्ताह तक किया जनता पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा। पाठशाला के छात्र व छात्राओं का भी मनोरंजन कार्यक्रम चलता रहा। उन्हें पारितोषिक भी दिए गये। इस अवसर पर सभा को १३८ रु० किराया आदि वेद प्रचारार्थ प्राप्त हुआ।

इस अवसर पर नांदल निवासी श्री रामलाल जी का सहयोग मिलता रहा।

आदर्श विवाह

बटाला के आर्यसमाज के पुराने ...... कार्यकर्ता श्री ...... जी के ...... प्रिय दर्शनकुमार जी बी. ए. का शुभ विवाह गत दिनों ...... के ला० जगन्नाथ जी की सुपुत्री कुमारी सुरेन्द्र जी के साथ पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ। विवाह संस्कार पं० त्रिलोकचन्द्र जी शास्त्री आर्य प्रादेशिक सभा ने कराया। ...... टिक्का आदि अवैदिक रीतियां नहीं की गईं। श्री सत्यपाल जी वर्षों तक ...... बटाला समाज के मन्त्री व कार्य कन्या हाईस्कूल के मैम्बर भी रहे हैं। सारा परिवार ही ऊंचे दर्जे का आर्य परिवार है। बड़ा समारोह था। इस अवसर पर उन्होंने सभा को २०) रु० और उनकी सुपुत्री कमला महापाल जी बम्बई ने १०) रु० दान दिये। बधाई!

लारेंस रोड आर्यसमाज

आर्यसमाज लारेंस रोड अमृतसर के मान्य अधिकारी एवं सदस्यों में स्वाध्याय की विशेष रुचि है दैनिक यज्ञ कथा होती है। गत २५ दिसम्बर से प्रातःकाल सत्संग में पं. त्रिलोकचन्द शास्त्री की वैशेषिक दर्शन के सूत्रों की दैनिक कथा होती रही है सज्जन व देवियें अपना-अपना समय देकर पधारते हैं। गम्भीर स्वाध्याय ...... चलता रहता है।

शोक प्रस्ताव

जिला वेद प्रचारिणी सभा, होशियारपुर, अपने माननीय सदस्य पं. चिरंजीलाल जी ऋषि, प्रिंसिपल डी. ए वी. हायर सैकण्डरी स्कूल दसूहा, के देहान्त पर हार्दिक शोक तथा सम्वेदना प्रकट करती है।

ईश्वर से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करें, और उनके परिवार जनों को इस दारुण दुःख के सहन करने की शक्ति दें। —हंसराज मन्त्री

मुद्रक व प्रकाशक श्री सन्तोषराज जी आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर द्वारा वीर मिलाप प्रैस, मिलाप रोड जालन्धर से मुद्रित तथा आर्यजगत कार्यालय महात्मा हंसराज भवन निकट कचहरी जालन्धर शहर से प्रकाशित मासिक—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर



टेलीफोन नं० ३०५७ [आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधिसभा पंजाब जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd. No. P. 12

एक प्रति का मूल्य १३ नये पैसे | वार्षिक मूल्य ६ रुपये

वर्ष २५ अंक ६) २८ माघ २०२१ रविवार—दयानन्दाब्द १४०— ७ फरवरी १९६५ (तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

वेद सूक्तय:

सत्यं वक्ष्यामि नानृतम्

मैं सत्य बोलूंगा, असत्य नहीं। मानव संकल्प कर ले कि मैं अपने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में, कार्य में सत्य का प्रेमी बन कर सत्य ही बोलूंगा झूठ नहीं तो कितना हित हो।

योत्रदासा आंञ्जनस्य

ज्ञानी मनुष्य को तीन अपना दास बनाते हैं। उसका नाश कर देते हैं। ये तीन शत्रु हैं जिन से एक ज्ञानी पुरुष का जीवन नष्ट हो जाता है। इन से सर्वत्र बचना ही चाहिए। कौन २ से-?

तक्मा बलास आदहि:

इनमें पहला तक्मा है अर्थात् निराशावाद, दूसरा बलास-बुरे विचार-तथा तीसरा आदहि:- विषय ये तीनों मनुष्य समाज तथा समूचे देश के जीवन को मार देते हैं। इन से सदा बचें।

शो म वे द से

आर्य प्रादेशिक सभा के मनोनीत प्रधान

श्री यश जी



श्री महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज के सुपुत्र श्री यश जी आर्य प्रादेशिक सभा के ३१ जनवरी सन् १९६५ के साधारण अधिवेशन में जो कि आर्यसमाज लारैंस रोड अमृतसर में सम्पन्न हुआ, सर्वसम्मति से प्रधान निर्वाचित हुए।

अधिवेशन में नए प्रधान को अधिकारीवर्ग और अन्तरंग सभा के सदस्य तथा सार्वदेशिक सभा के सदस्य मनोनीत करने का सर्वाधिकार सौंपा गया।

ऋषि दर्शन

य: पराक्रमवत्तम:

जो परमेश्वर सारे चर-अचर जगत् में पराक्रमवत्तम:— सब से अधिक पराक्रम बल वाला है। उसके समान कोई भी शक्तिशाली नहीं। सब बलवानों के अभिमान उसके सामने टूट जाते हैं।

सर्वोत्कृष्ट बल सहित:

जितने भी इस विश्व में उत्तत-उत्तम बल और शक्तियां दिखाई देती हैं सब उसी की दी हुई हैं। उन बलों का वही परमात्मा ही आधार और भंडार माना जाता है। सब स्थानों पर उसी का तेज है।

गुणैरत्यन्त श्रेष्ठ:

सारे गुणों से भरपूर तथा सबसे श्रेष्ठ उत्तम है। गुणों का भण्डार है। मनुष्य जो भी गुण चाहता है, उसी प्रभु से ही प्राप्त हो सकता है। सारे जगत् में सब से उत्तम भी प्रभु है।

भा ष्य भू मि का से

अधिष्ठाता—श्री संतोषराज जी | सम्पादक—त्रिलोक चन्द्र शा

धर्म का वास्तविक-स्वरूप

लेखक:-पं० रविदत्त जी पारीक आर्य (विद्यावाचस्पति, प्रभाकर)
(आर्य कन्या महाविद्यालय, हांसी)

यह एक सर्वसम्मत तथा सत्य से परिव्याप्त तथ्य है कि वर्तमान युग का मानव अपने जीवन को सर्वांश में उन्नति की ओर अग्रसर देखना चाहता है, चाहे मनुष्य जीवन में वह उन्नति शारीरिक हो या आध्यात्मिक हो अथवा आधिदैविक हो वा आधिभौतिक हो एवं चाहे मानसिक हो। यह एक मानव में अपनी स्वाभाविक प्रवृत्ति है कि वह जीवन रूपी नैया को सर्वोन्नत देखना ही अपने जीवन की चरमसीमा समझता है। अब मनुष्य के सम्मुख सब से महत्व पूर्ण प्रश्न यह है कि वे कौन से उपयुक्त साधन जुटाये जिस से मनुष्य का जीवन उन्नत हो। यदि मनुष्य निर्लेप भाव से अपने अन्तःकरण में विचारे तो इस का केवल मात्र एक ही साधन हो सकता है और वह है धर्म के सर्वश्रेष्ठ वास्तविक स्वरूप को समझना? क्यों कि मनु महाराज ने तो अपने सत्य ग्रन्थ मनुस्मृति में इस विषय को स्पष्ट करते हुए लिखा है कि :—

धर्मो एव हतो हंन्ति,
धर्मो रक्षति रक्षितः।
तस्माद्धर्मो न हन्तव्यो,
मानो धर्मो हतो वधीत्॥

अर्थात् जो मानव संसार में आ कर धर्म की रक्षा करता है धर्म उन को रक्षा करता है और जा धर्म को रक्षा नहीं करता उसे धर्म नष्ट-भ्रष्ट कर देता है। पाश्चात्य जगत् के विद्वान हैनरी इर्डसन ने धर्म की परिभाषा इन शब्दों से की है कि :—

It is fandamentelly an expression of life through the medioum of the language.'

अर्थात् मनुष्य अपनी जीवन सम्बन्धिनी संचित अनुभूतियों की अभिव्यक्ति वाणी के माध्यम से कर के दूसरों के अन्तः करणों में शान्ति प्रदान करता है, यही धर्म का वास्तविक स्वरूप है। क्योंकि नीतिकारों ने मनुष्य और पशु के अन्दर केवल मात्र धर्म का ही अन्तर बतलाया है उन का कहना है कि :—

आहारनिद्राभयमैथुनंच
सामान्येतत्पशुभिर्नराणाम्।
धर्मो हि तेषामधिको विशेषो,
धर्मेण हीनाः पशुभिर्समानाः॥

अर्थात् आप जानते हैं कि आहार, निद्रा, भय, मैथुनादि कृत्य पशु और मनुष्य में समकक्ष पाये जाते हैं यदि दोनों में कोई अन्तर है तो केवल धर्म ही का है अर्थात् धर्म विहीन मनुष्य पशु के तुल्य होता है। इतना धर्म का स्वच्छ स्वरूप मानव के सम्मुख होने के उपरान्त यह मानव अधम कुकृत्यों में क्यों प्रवृत्त होता है। इस विषय की भावना को व्यक्त करते हुए कवि लिखता है कि—

धर्मम् प्रसङ्गादपिनाचरन्ति,
पापं प्रयत्नेन समाचरन्ति।
आश्चर्यमेतत् हि मनुष्यलोके,
अमृतं परित्यज्य विषं पिबन्ति॥

अर्थात मनुष्य अधर्म रूप विष का पान धर्म रूप अमृत को छोड़ कर क्यों करता है। यह विचार न करना ही मनुष्य की धर्माऽन्धता है। यदि हम दर्शन शास्त्रों की ओर दृष्टिपात करें तो वहां से भी हमें धर्म के विषय में यही विचार-धारा उपलब्ध होती है कि—

'अथातोधर्मं व्याख्यास्यामः'

महर्षि कणाद अपने वैशेषिक दर्शन को आरम्भ करते समय लिखते हैं कि अब हम धर्म की व्याख्या करते हैं और वह धर्म क्या है कि—

'यतोऽभ्युदय निःश्रेयससिद्धिः स धर्मः'

जिस से मनुष्य का इहलोक भी उन्नत हो और उसी प्रकार परलोक भी उन्नत हो ऐसे कृत-संचित कर्मों का नाम ही तो धर्म है। दूसरे शब्दों में कर्त्तव्य परायणता को जीवन में धारण करना ही धर्म कहलाता है। धर्म मनुष्य के मन को सुसंस्कृत कर देता है। धर्म मनुष्य की एक उच्च मनोभावना है जितने भी सद्गुण सम्भव हो सकते हैं उन सब का परिगणन धर्म में किया जा सकता है। मनु महाराज ने इन गुणों को निम्न प्रकार से व्यक्त किया है कि—

धृति क्षमा दमोस्तेयं,
शौचमिन्द्रिय निग्रहः।
धीर्विद्यासत्यमक्रोधो,
दशकं धर्म लक्षणम्॥

वेदःस्मृतिसदाचारः
स्वस्य च प्रियमात्मनः।
एतच्चतुर्विधं प्राहुः,
साक्षाद्धर्मस्य लक्षणम्॥

अर्थात सत्य, सेवा, क्षमा, अहिंसा तथा काम, क्रोध, मोह इत्यादि की विजय इन्द्रियों पर संयम इन सभी गुणों का अभ्यास धर्माचरण के लिए आवश्यक माना गया है। संसार के सभी भागों में, सभी कालों में इस धार्मिक प्रवृत्ति के अनेक सन्त महात्मा होते रहे हैं। जिन्होंने अपने इन सद्गुणों द्वारा लोगों की सेवा की और उनके हृदयों को जीत लिया है। क्योंकि सांसारिक लोग इन महात्माओं के उपदेश एवं प्रवचन सुनते हैं जिससे उनके अशान्त चित्त को शान्ति प्राप्त होती है। धर्म का जन्म हृदय में होता है। जो मानव धर्म की छत्र-छाया में पल्लवित और पोषित होता है वह अधर्म व्यभिचार कुकृत्यों से प्रत्युत सजग रहता है। अतः धर्माधर्म विवेक मनुष्य के लिए परमावश्यक है। भारत की सभ्यता और संस्कृति भी केवल धर्म के बल पर ही तो स्थिर है। धर्म को स्थिर रखने का केवल एक ही साधन है जो मनु महाराज ने बतलाया है कि:—

'वेदोऽखिलो धर्म मूलम्'

अर्थात् वैदिक विचारधारा धर्म का ज्योति-स्तम्भ(**Light house**) है। इसलिए कहा गया है कि धर्म का सूत्र बड़ा विस्तृत सूत्र है। कबीर ने धर्म का सम्बन्ध शरीरस्थ मनोवर्गों से सम्बद्ध किया है। वे भी प्रश्नात्मक ढंग से एक पद्य में पूछते हैं कि :—

झीनी झीनी बीनी चदरिया?
काहे के ताना, काहे के बाना,
कोन्न तार से बीनी चदरिया?
इंगला, पिंगला ताना भरनी,
सुख मन तार से बीनी चदरिया।

इसी बात को मनु महाराज ने इन शब्दों में व्यक्त किया है कि—

'शरीर माद्यम् खलु धर्म साधनम्'

अर्थात् वास्तविक रूप से शरीर ही धर्म का अनर्घ्य साधन है।

अतः जो मानव अपने विचारों को स्थिर बनाकर सत्यता से धर्म का अवलम्बन लेता है और इहलोक तथा परलोक को उन्नत करता है, वह मानव स्वच्छ धार्मिकता का अनुयायी है। यह धर्म का वास्तविक स्वरूप जिस के आधार पर मानव अपनी सम्पूर्ण शक्तियों का विकास कर सकता है। और अपने जीवन को समुन्नत बना सकता है।

—

आर्य जगत्

वर्ष २५] रविवार २०२१, ७ फरवरी १९६५ [अंक ६

सभा अधिवेशन के बाद

आर्य प्रादेशिक सभा पंजाब जालन्धर का वार्षिक साधारण अधिवेशन गत सप्ताह ता० ३१ जनवरी ६५ रविवार दोपहर दो बजे आर्यसमाज लारेंसरोड अमृतसर के सुन्दर हाल में बड़े समारोह से माननीय सौम्यमूर्ति प्रिंसिपल रलाराम जी एम. ए. की प्रधानता में सम्पन्न हो गया। आर्यसमाज लारेंस रोड के प्रधान श्री सेठी जी, मन्त्री श्री डाक्टर देवव्रतजी महाजन, वैद्य विद्यासागर जी आदि सारे सज्जनों ने मिलकर बाहर से पधारने वाले प्रतिनिधि महानुभावों का सम्मान स्वागत करने में बड़ी श्रद्धा प्रेम का परिचय दिया। प्रायः पंजाब के सारे जिलों तथा देहली और हिमाचल की समाजों से दूर-दूर से चलकर पधारे हुए थे। शिमला, जोगेन्द्र-नगर, देहली आदि स्थानों से आने वाले सज्जनों को देखकर उन सबके सभा प्रेम का पता लगता था। प्रातःकाल सत्संग में प्रिंसीपल रलाराम जी एम. ए., का गम्भीरता भरा प्रवचन हुआ। भोजन के पश्चात् ठीक समय पवित्र गायत्री मन्त्री के मिलकर उच्चारण करने के बाद कार्यक्रम आरम्भ हुआ। समाज के मन्त्री डा० महाजनजी ने सारे सज्जनों का आर्य समाज की ओर से स्वागत करते हुए बड़े सुन्दर मजे हुए शब्दों में अभिनन्दन किया। सभा के कार्यों पर विचार विमर्श होता रहा। अनेक सज्जनों ने अपने २ सुझाव पेश किए। सभा की परम्परा के अनुसार निर्वाचन सर्वसम्मति से हुआ। सभा के प्रधान पद के लिए श्रीयुत यश जी पूर्व पंजाब शिक्षा मन्त्री का नाम पेश होकर सर्वसम्मति से निर्वाचन हो गया। सभा के अधिकारियों, अन्तरग सदस्यों तथा सार्वदेशिक सभा के लिए इस वर्ष भेजे जाने वाले सदस्यों के चुनने का सर्वाधिकार भी श्री प्रधान यश जी को सौंप दिया गया। इस प्रकार से यह सारा कार्यक्रम सम्पन्न हो गया। बाद में समाज की ओर से जलपान सम्मान का बड़ा ही उत्तम प्रबन्ध था। सेवा में कोई कमी न थी।

अधिवेशन हो चुका। समाजों के मान्य सज्जनों ने बड़ी कृपा कष्ट करके सभा की प्रगति के लिए अपना समय दिया। अब सब का कर्तव्य है कि सभा के कार्य को आगे ले जाने के लिए इसी प्रकार का सहयोग देते रहें। आज के युग में आर्य समाज की कितनी आवश्यकता है। यह सब जानते हैं। सभा को तन मन धन देने वालों की आवश्यकता है। इसलिए जब सब ने सभा का सूत्र श्रीयुत यश जी को सौंप दिया है। आईए! हम माननीय प्रधान जी को सभा कार्य में पूरा २ सहयोग देकर वेद प्रचार के काम को ऊंचा करें। हम सब काम में जुट जाएं।

—त्रिलोकचन्द्र

न्याय्यात् पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः। (धीर पुरुष न्याय के मार्ग से विचलित नहीं होते)।

युवक स्तम्भ :—

पीछे-हटो

सम्पादक :—करनैल सिंह 'विद्यार्थी' लेखराम नगर (कादियां)

भाइयो! हम जिस उद्देश्य को ले कर आगे बढ़े हैं, जिस उद्देश्य की पूर्ति के लिये हम ने इस स्तम्भ को लिया है वह लक्ष्य, वह उद्देश्य बहुत महान है, बहुत बड़ा है। इस लक्ष्य के लिये हम को कुछ धारण करना है, कुछ ग्रहण करना है एवं कुछ को छोड़ना है, कुछ त्यागना है। पर बन्धुवर इस से पहले कि हम कुछ गुण कुछ अच्छाइयां, कुछ आदतें डालें ग्रहण करें, यह जरूरी है कि हम बुराइयों को सब दोषों एवं बुरी आदतों को छोडें, त्याग देवें क्योंकि उस लोटे, उस बर्तन, उस घड़े में पानी नहीं पड़ सकता जिस में पहले ही गन्दगी हो, उस बर्तन में दूध नहीं समा सकता जिस में पहले ही गन्दगी हो। जो पहले ही गन्दगी से भरा पड़ा हो। अस्तु ज्ञात हुआ है कि पहले अवगुणों को, दोषों को, बुरी आदतों, बुराइयों को त्यागना छोड़ना ही उत्तम है यदि हम अच्छाइयों सद्गुणों, अच्छी आदतों को धारण करना चाहते हैं, यदि हम अपने लक्ष्य को सफल करना चाहते हैं, यदि हम आगे बढ़ना चाहते हैं तो।

कई भाई यह कहेंगे कि यदि हमारे देश पर दुश्मन हमला कर दे, यदि हमारी संस्कृति, सभ्यता पर हमारे धर्म पर विदेशी विधर्मी आक्रमण कर दें तो क्या हम अपने अथवा एक दूसरे के अवगुण ही देखते रहें। यदि ऐसा ही करते जाएं तो हमारी आपस में मुठभेड़ ही हो जाए फलतः क्या फायदा है पीछे हटने का आपस में लड़ने-झगड़ने का।

पर भाइयो! आप ही सोचें एवं जवाब देवें कि एक खेल में प्रथम रहने वाला खिलाड़ी छाल मारने (आगे दौड़ने) से पहले जरूर पीछे हटेगा या आगे बढ़ेगा। आपका उत्तर जरूर यही होगा कि एक लम्बी छाल के लिए उस खिलाड़ी को जरूर पहले पीछे हटना पड़ेगा, एक फुटबाल के खिलाड़ी को लंबी किक् मारने के लिए जरूर अपनी टांग को पीछे हटाना होगा। तभी वह लम्बी किक् लंबी दौड़ मार सकता है। इसी प्रकार यदि हम दुश्मन को पछाड़ना चाहते हैं, यदि हम शत्रु का मुकाबला करना चाहते हैं तो जरूर हमें अपनी कमजोरियों को, अपनी कमी को जो सेना को अच्छी प्रकार हुकम देने में, खाद्य-सामग्री को पहुंचाने में योग्य हथियारों आदि में हो सकती हैं। उनके मुताबिक उनको देख कर मुकाबला कर सकते हैं। यदि हमारे पास काफी सेना अथवा शत्रु का मुकाबला करने के लिये अथवा किसी चीज को विजय करने के लिए हमारे पास सब समान है, सब जरूरती चीजें हैं और केवल एक ही चीज की कमी है वो यह कि हम यह नहीं देखते कि हम में कौन-कौन सी त्रुटियां हैं किन-किन बातों की ओर यदि ध्यान न दिया गया तो हम असफल हो सकते हैं। किन-किन साधनों का अभाव है आदि-आदि यदि हम न देखेंगे तो जरूर पिछड़ेंगे जरूर हमारा सारा का सारा सामान बिना किसी खास तरीके से व्यर्थ

(शेष पृष्ठ ६ पर)

आर्य प्रादेशिक सभा पंजाब जालंधर का वार्षिक संक्षिप्त विवरण

सभा की शानदार प्रगति का कार्यक्रम

प्राक्कथन

परमात्मा की अपार कृपासे हम सब फिर अपने वार्षिक अधिवेशन के लिए यहां एकत्रित हुए हैं। पिछले वर्ष हमें फरवरी के बाद फिर जुलाई में अधिकारियों के चुनाव के लिए एकत्रित होना पड़ा था, क्योंकि महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज ने हमारी प्रार्थना को स्वीकार न करते हुए प्रधान पद ग्रहण करने से इन्कार कर दिया था। अतः यही उचित समझा गया था कि समाजों के माननीय प्रतिनिधियों को फिर से कष्ट दिया जावे। आप ने पुनः चुनाव करके अधिकारी नियत कर दिए।

पिछले वर्ष पहले अधिवेशन के लिए भी हम अमृतसर में ही इकट्ठे हुए थे। अमृतसर हमारे पंजाब राज्य का प्रमुख ऐतिहासिक नगर है। यह केवल गुरु की ही नगरी नहीं अपितु अब शहीदों की भी नगरी है। जहां जल्यां वाले हत्याकांड में जनरल डायर की गोलियों से सहस्रों नर-नारी मौत के घाट उतारे गये।

इन हताश व्यक्तियों ने भारत को स्वतन्त्रता की मंजिल के बहुत समीप ला खड़ा किया। आर्य समाज के दृष्टिकोण से अमृतसर का महत्व कोई कम नहीं है। भगवान् दयानन्द ने स्वय अपनी उपस्थिति में अमृतसर समाज की स्थापना की। यह आर्य समाज रूपी वटवृक्ष जो आप यहां खूब फलता हुआ देख रहे हैं, स्वामी दयानन्द जी महाराज के अपने हाथों का लगाया हुआ है। इसी लिए यहां के आर्य समाजी भाईयों का उत्साह अत्यन्त प्रशंसनीय तथा स्फूर्तिदायक है। यहां के आर्य समाजी, आर्य समाज के प्रचार तथा प्रसार में सदैव अग्रसर रहे हैं। उनको भगवान दयानन्द तथा आर्यसमाज के प्रति अगाध तथा विशेष विशुद्ध श्रद्धा को देख कर मन गद्गद् प्रसन्न होता है।

ज्ञानी पिण्डीदास जी, पं० रुद्रदत्त जी, वैद्य विद्यासागर जी, डा० वेदव्रत जो, ला० खुशीराम जी महाजन, श्री मोहनलाल जी अरोड़ा, श्री चुन्नीलाल जी खन्ना, कैप्टन केशवचन्द्र जी, चौ० भक्त राम जी प्रिन्सीपल, प्रिन्सीपल सी० एल० अरोड़ा यह चन्द प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं जिनके नाम विशेषतया उल्लेखनीय हैं। बावा प्रद्युम्न सिंह जी तथा बावा गुरमुख सिंह जी ने जो आर्य समाज की सेवाएं की हैं वह तो आर्य समाज के इतिहास का अंग बन चुकी हैं।

मैं आर्य समाज लारेन्स रोड़ का आभारी हूं कि उन्होंने हमारी प्रार्थना को सहर्ष स्वीकार किया और हमें यह वार्षिक अधिवेशन यहां करने का अवसर दिया। उन के हार्दिक आतिथ्य के लिए हम सब उनके धन्यवादी हैं।

शोक समाचार

१९६४ वर्ष भारत के लिए अशुभ ही रहा क्योंकि भारतवासियों के हृदय सम्राट तथा नव-भारत के निर्माता पं० जवाहरलाल नेहरू स्वर्ग सिधार गये तथा समस्त भारत को शोक-सागर में निमग्न कर गये। इस युगपुरुष के निधन से जो राष्ट्र को क्षति हुई है उसकी पूर्ति अत्यन्त कठिन है।

श्री ला० शंकरदास जी त्रेहन आज हमारे मध्य में नहीं हैं। उनके निधन से जो आर्यसमाज की हानि हुई है उसका अनुमान करना कठिन है। आप आर्यसमाज के एक अनथक सेवक तथा भगवान दयानन्द के एक सच्चे भक्त थे।

पं० ब्रह्मदत्त जिज्ञासु जी की मृत्यु से एक महान तपस्वी विद्वान आर्यसमाज के क्षेत्र से उठ गया है। उनकी स्थान पूर्ति बड़ी कठिन प्रतीत होती है।

श्री वीरेन्द्र जी की पूज्य माता की मृत्यु से सारे सामाजिक जगत को बड़ा ही शोक हुआ है। चौधरी बलवीरसिंह जी होशियारपुर के पिता जी माता जी, केशवचन्द जी अमृतसर की धर्म पत्नी, पं. चिरंजी लाल जी ऋषि दयालु के देहान्त से क्षति हुई है।

वेद प्रचार

आज का युग बड़ी असाधारण गर्दनतोड़ गति तथा विस्मयकारी परिवर्तन का है। बड़े सचेत व्यक्ति पिछड़ जाते हैं। इस क्षिप्रभावी परिवर्तन तथा विद्युत-तुल्य गति का परिणाम तीव्र विश्वव्यापी अशान्ति तथा जीवन की अस्थिरता है। नवनीता का आकर्षण इतना बढ़ गया है कि यह अब मानव को चुन्धया रहा है। प्राचीन विचार धाराओं को लोग अवहेलना तथा उपेक्षा की दृष्टि से देख रहे हैं। नैतिक मूल्यों को आज का व्यक्ति महत्वहीन तथा तिरस्कार समझता है। उसका परिणाम मानव समाज के लिए भयङ्कर हो रहा है। वैसे तो यह विश्व-व्यापी घटना बताई जाती है परन्तु हम अपने देश में इस मनोवृत्ति के फलस्वरूप अनैतिकता, उच्छृङ्खलता, अनाचार तथा दुराचार को पनपता तथा उच्च नैतिक आदर्शों तथा सिद्धांतों को गर्त भ्रममात्र बनाया जाकर पांव तले रौंदा जा रहा देखते हैं।

इस शोचनीय, दुखद परिस्थिति का एक ही इलाज है, धर्म प्रचार, विशुद्ध धर्म प्रचार। अन्य कोई उपाय इस रोग की औषधि नहीं। इसलिए धार्मिक संस्थाओं को विशेषता आर्य समाज को धर्म अथवा आध्यात्मिक ज्ञान के प्रसार के लिये कटिबद्ध हो जानी चाहिये। धर्म प्रचार इस तीव्रगति से तबदील होते हुए संसार की प्रमुख मांग है, वरना मानव पूर्णतया अपने पांव से उखड़कर विनाश की चट्टान से नीचे गिरकर चूर हो जायेगा। वेद प्रचार, चरित्रवान् विद्वानों द्वारा किया हुआ वेद प्रचार, इस विनाशोन्मुख संसार को बचा सकता है। आर्यसमाज का यह विशेष उत्तरदायित्व है कि वैदिक जीवन प्रणाली का बलपूर्वक समर्थन तथा प्रचार करें। यह जिम्मेदारी स्वामी दयानन्द जी ने आर्यसमाज को अपना उत्तराधिकारी घोषित करके हमारे कन्धों पर रखी है। इसे निभाना, हमारा परम कर्त्तव्य है। हम इस परीक्षा में उत्तीर्ण नहीं हो रहे

धर्मप्रचार की आवश्यकता बढ़ी है परन्तु हमारा धर्म प्रचार घटा है, हमारा प्रयत्न शिथिल हुआ है। हतोत्साह होने का प्रश्न ही नहीं। हमारा ही लक्ष्य बदल गया है। भौतिक दृष्टिकोण ने हमें प्रभावित ही नहीं पराजित कर दिया है। इस बात को तो हम भूल ही गए हैं कि धर्म प्रचार केवल मौखिक नहीं होता यह वस्तुतः आदमी के चरित्र तथा व्यक्तित्व से अधिकतया होता है। निराशा की बात यह है कि आर्यसमाजी आपस के झगड़ों में इतने उलझ गए हैं कि अमुचिन्तन तथा वेद-प्रचार के लिए उनके पास न समय

न शक्ति शेष रह गई है पोलीटीकल पार्टियों के संचालन तथा चुनाव में जितना हेर-फेर, दम्भ तथा धोखा प्रयोग में लाया जाता है लगभग इतना ही नैतिक पतन तथा धर्म हनन आर्यसमाज के कई चनावों में वर्ता जाता है। हैरानी यह है कि आर्यसमाजी जनता इसकी सहायक बनकर धर्मग्लानि की समर्थक बन रही है। अतः पदलोलुपता से पैदा हुए अनाचार का इलाज प्रतिदिन कठिन होता जा रहा है मुझे पूर्ण आशा है कि धर्माभिमानी तथा सत्यप्रिय आर्य सज्जन इस अनैतिक तथा आसुरी प्रवाह को धर्मरूपी तथा सदाचाररूपी बन्ध लगाकर रोकने का भरसक प्रयत्न करेंगे। भगवान इस में अवश्य हमारे सहायक होंगे।

वेद प्रचार तथा सभा की आर्थिक स्थिति

अधिक धर्म प्रचार की आवश्यकता स्पष्ट है ही। परन्तु जितनी इस प्रचार की मांग है उसे हमारी सभा पूरी नहीं कर रही। उस का विशेष कारण धन का अभाव है। आप सब सज्जनों की सहायता से, येन केन प्रकारेण, यह वर्ष आप की सभा ने आर्थिक पहलू से निभा ही लिया है। परन्तु प्रतिदिन हम ने प्रचारकों की कमी को अनुभव किया है। अप्रैल के बाद के तीन महीनों में सभा की आर्थिक स्थिति शोचनीय तथा चिन्ताजनक थी, परन्तु आर्य समाजों के उदार सहयोग द्वारा एवं महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज तथा डा० मेहर चन्द महाजन जी के प्रशंसनीय सहयोग से हम इस स्थिति को काबू में लाने के लिए समर्थ हुए। इस के लिए मैं अपनी आर्य समाजों तथा अपने पूज्य नेताओं का दिल से आभारी हूं। हमें कम से कम दो उपदेशक तथा दो भजनीक और रखने चाहिएं ताकि हम आर्य जनता की धर्म पिपासा को तृप्त कर सकें।

मैं अपने कर्तव्य में प्रमादी बनूंगा यदि मैं अपनी सभा के उपदेशक तथा भजनीक महोदयों के प्रति अपना तथा सभा का आभार प्रकट न करूं।

महात्मा हंसराज जन्म शताब्दी

पूज्य महात्मा हंसराज जयन्ती अर्थात् जन्म शताब्दी मनाने का आप की सभा ने निश्चय किया हुआ है। यह भी निश्चय है कि यह जन्म शताब्दी एक बड़े पैमाने पर मनाई जावे। जिससे कि उस महान् व्यक्ति का यथोचित मान हो। तथा सभा शताब्दी द्वारा अधिक संगठित तथा कार्य कुशल बन सके। इसके प्रचार क्षेत्र का अभिवांछित विकास तथा विस्तार हो। प्रारम्भिक आयोजन किया जा चुका है। वार्षिक चुनाव के बाद जो भी अधिकारी होंगे वे अवश्य इस पवित्र कार्य को लगन तथा उत्साह के साथ आरम्भ कर देंगे। मुझे पूर्ण आशा है कि आप सब भाइयों के हार्दिक सहयोग से इस व्रत के पालन में सभा को पूर्ण सफलता प्राप्त होगी।

अनाथालय फिरोजपुर

स्वामी दयानन्द जी दीन दुखियों तथा दरिद्र के परम सहायक तथा निष्काम सेवक थे। उन्होंने अपने हाथों से फिरोजपुर में अनाथालय स्थापित किया। आज यह हम बड़े हर्ष तथा गर्व के साथ कह सकते हैं कि यह अनाथालय बड़े ही सन्तोषजनक ढंग से देश अथवा राष्ट्र की सेवा कर रहा है। इस सफलता का श्रेय दीवान जयकिशन जी नन्दा को है। हम इस अवसर पर इनकी धर्म पत्नी बहिन चनन देवी जी की अनथक तथा निष्काम सेवाओं के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट किये बिना नहीं रह सकते।

मधु कलश

बिना जले दीपक दुनिया को ज्योति नहीं दे पाता
झुक जाता है कर्मशील के आगे भाग्य विधाता
जो चाहा करता है साथी दीप स्वयं के ढकना
उसका सुखद भविष्यत अक्सर बिना ढके ढक जाता

★ ★ ★

भाग्यहीन है धराधाम पर जिसे नींद है प्यारी
जागो, उठो, चलो आजीवन कैसे हिम्मत हारी
अरे आलसी ! चींटी तक से मात खा गए तुमतो
देखो तो अनवरत साधना करती है बेचारी

★ ★ ★

गिरते जन को संबल देकर नई दिशा दिखलाए
इस वाणी का मोल यही है नवजीवन दे पाए
हंसी-हंसी के अन्दर भी वह बात न मुंह से निकले
जो अपने मित्रों के मन को कभी ठेस पहुंचाए

★ ★ ★

—विजय 'निर्बाध'

क्रमशः

आर्य युवक संगठन

कोई भी धार्मिक संस्था सफल तथा उन्नतिशील नहीं हो सकती यदि वह नवयुवकों तथा बालकों के मनों को प्रभावित तथा आकर्षित करने का प्रयास नहीं करती। उस का भविष्य तभी उज्ज्वल हो सकता है जब नवयुवक उस संस्था या आन्दोलन में पर्याप्त संख्या में सम्मिलित हों। हमारे स्कूल तथा कालिज इस क्षेत्र में उपयोगी बन रहे हैं, तथापि उस प्रगति से हम सन्तुष्ट नहीं हैं। अपने स्कूलों तथा कालिजों के विद्यार्थियों को भी एक वृहद् युवक संगठन में संगठित करने की आवश्यकता है। हमारे प्रो० वेदी राम जी इस ओर विशेष ध्यान दे रहे हैं। आशा है युवक संगठन की ओर हमारी समाजें अधिक ध्यान देंगी ताकि आर्य समाज के विचारों का संचार नवयुवकों के अन्दर हो सके।

अन्त में मैं आप सब का, विशेषतया सारी अंतरङ्ग सभा के मन्त्री जी तथा अन्य अधिकारी वर्ग का हार्दिक धन्यवाद करता हूं कि उन्होंने मुझे पूरा-पूरा सहयोग देकर सभा के काम को चलता रखने के समर्थ बनाया।

रलाराम प्रधान सभा

मैं उन सब अध्यापक तथा अध्यापकगण व अवैतनिक प्रचारकों का भी जिन में लाला देवीचन्द जी तथा प्रिंसीपल ज्ञानचन्द जी के नाम उल्लेखनीय हैं, धन्यवादी हूं।

सफलता तो भगवान की देन है। आशा है हम सब भगवान की कृपा के पात्र बनने का प्रयत्न करेंगे ताकि हम दयानन्द के पवित्र मिशन को आगे ले जा सकें। इसी में हमारे जीवन की कृतज्ञता है।

—

पीछे-हटो

(पृष्ठ ३ का शेष)

ही नष्ट हो जायेगा।

सो यदि हम, हमारा परिवार हमारा समाज, राष्ट्र व देश सफल हो सकता है तो जरूर हमें अपनी बुराईयों को देखना चाहिए, जरूर अपनी त्रुटियों पर विचार करना ही होगा तभी हम उन्नति की ओर बढ़ सकते हैं।

आज यदि हममें, हमारे परिवार में हमारे समाज में, हमारे देश व राष्ट्र में यदि कोई फूट पाई जाती है यदि कोई कमी व असफलता पाई जाती है तो वह इसी एक बड़े कारण से ही है कि हम अपने अन्दर झांक कर नहीं देखते हम अपने आपको नहीं देखते कि हम में कितनी कमियां हैं कितनी बुराईयां हैं, हम दूसरों को तो उपदेश देते हैं पर स्वयं उन पर चलते नहीं। यही कारण है कि हम उन्नति की ओर नहीं बढ़ रहे। सो हमें आगे बढ़ने के लिए युवकों में देश प्रेम लाने के लिए युवकों में धर्म का ज्ञान प्रसारण करने के लिये उनको वेद-पथ पर लाने के लिए आर्य युवक बनाने के लिए पहले हम सब को स्वय आर्य (श्रेष्ठ) बनना है, पहले हम सब को युवक हृदय रखना होगा, पहले हम सब को बुराईयों, त्रुटियों, अवगुणों से पीछे हट कर अपने हृदय को पवित्र, साफ करना होगा। ताकि उसमें आगे बढ़ने के लिए अच्छाईयों, सद्गुणों का प्रवेश हो सके।

हम सब युवकों में यही तो बुराइयां हैं कि हम सिगरेट, तम्बाकू, बीड़ी, मांस, शराब, दुर्व्यसन, सिनेमा, असत्य भाषण, अनादर करना तथा शिष्टाचार के गुणों का अभाव आदि दुर्गुणों में फंसे पड़े हैं अतः युवक-स्तम्भ में अच्छाइयों के ग्रहण करने से पहले बुराईयों को छोड़ने के लिए लिखा जाएगा यानि पीछे हटना ही पड़ेगा।

भारत में ईसाई-मत कैसे फैला

ले०—श्री के. एन. शास्त्री एम.ए.बी.टी. साहित्यालंकार गोंदिया

(गतांक से आगे)

सन्यासी जी खड़ाऊं पहिने एक ओर से दूसरी ओर तक इसलिए घूमे कि वे स्वयं देखकर सन्तोष कर लें कि प्रत्येक को प्रत्येक पदार्थ मिल गया है सब ओर चक्कर लगाने के बाद उन्होंने सब को भोजन करने की आज्ञा दी। लोगों ने भोजन प्रारम्भ किया। जब सब लोगों का भोजन लगभग समाप्त हो रहा था उसी समय संन्यासी शीघ्रता से अपने निवास स्थान के भीतर घुसा, अपने पादरी के वस्त्र पहिन कर बाहर निकला और भोजन करते हुये हिन्दुओं के बीच में घूमने लगा। उस ने घोषित किया कि वह वास्तव में संन्यासी नहीं बल्कि ईसाई पादरी है। हिन्दू जनता अवाक रह गई। उस में से कुछ लोगों को अत्यन्त क्रोध आया वे उठे, पादरी साहब को पकड़ कर भूमि पर पटका और गला घोंट कर एक मिनट में ईसा मसीह के पास पहुंचा दिया। संन्यासी जी तो मर गये किन्तु दस हजार हिन्दुओं को एक साथ ईसाई बनाते गये। अन्य हिन्दुओं ने इस घटना को सुनकर दस सहस्र हिन्दुओं का बहिष्कार कर दिया। वह 'अजरवेद' पुस्तक इस समय पेरिस के अजायबघर में रखी है। यहीं से ईसाइयों की इस राज्य में जड़ जमी। इन्हें ईसाई बनाने में सेण्ट थामस ने बाइबल की कथा 'वेद-कथा कह कर सुनायी थी। अतः ये लोग बाइबल को 'वेद' के नाम से पुकारने लगे और उन के पादरी 'वैदिक मिशनरी नाम से प्रसिद्ध हुये।'

सर्वत्र वही जाल

केवल उत्तर-प्रदेश या सुदूर दक्षिण में ही ईसाइयों ने अपना जाल बिछाया हो और अनुचित मार्गों को अपना कर ईसाई मत फैलाया हो यह बात नहीं है बल्कि सारे भारत में ईसाई मिशनरियों ने उसी ढंग से ईसाई मत का प्रचार व प्रसार किया और लोगों को ईसाई बनाया। हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, विन्ध्य प्रदेश और मध्य भारत इत्यादि के पर्वतीय तथा वनीय विभागों एवं नितान्त पिछड़े हुए स्थानों में भी इन ईसाई मिशनरियों ने किन-किन अनुचित साधनों या हथकंडों और प्रलोभनादि द्वारा बेचारे अबोध और भोले भाले आदि वासियों को ईसाई बनाया, ये बातें अब छिपी नहीं रह गई हैं।

गरीबों को प्रलोभन

विन्ध्य प्रदेश और मध्य प्रदेश आदि में आदिवसियों को नमक, कपड़ा, पैसे, मिर्ची इत्यादि देकर धर्म-परिवर्तन के लिये मजबूर करना, स्कूलों में ईसाई मत की शिक्षा देना और 'तकावी' के लिये रुपये देकर सवर्ण हिन्दुओं के प्रति विद्रोह की भावना भरना तथा निम्न वर्ग के लोगों को धर्म-परिवर्तन के लिये मजबूर करना इत्यादि बातें अब प्रकट हो चुकी हैं और उनके सम्बन्ध कोई न कोई विस्तृत जानकारी आजकल प्रायः पत्रों में प्रकाशित होती रहती है। राज्य सरकार द्वारा मध्य प्रदेश के आदि वासि क्षेत्रों में ईसाई मिशनरियों की करतूतों की जांच करने के लिए नियुक्त 'नियोगी समिति के समक्ष जशपुर के अग्रगण्य नागरिक एडवोकेट आर. के. देशपांडे ने उक्त क्षेत्र में ईसाई मिशनरियों की राष्ट्र विरोधी करतूतों पर प्रकाश डालते हुए एक विस्तृत स्मृति पत्र प्रस्तुत किया है। श्री देशपांडे ने अपने स्मृति पत्र में यह स्पष्ट किया है कि ईसाई मिशनरी किस प्रकार भोले-भाले अबोध आदि वासियों की निर्धनता, अन्धविश्वास तथा उनके क्षेत्र चिकित्सा की सुविधा के अभाव आदि का लाभ उठाकर उन्हें धर्म परिवर्तन पर विवश करते हैं। श्री देश पांडे ने स्पष्ट रूप से लिखा कि ये धर्म-परिवर्तन धर्मों की श्रेष्ठता के आधार पर कदापि नहीं हुए हैं। धर्म-परिवर्तन के इन हथकंडों में एडवोकेट महोदय के कथनानुसार सर्व अधिक प्रचलित साधन हैं—मिशनरियों द्वारा आदि—वासियों को ऋण देना। ऋण देने की प्रथम शर्त तो ऋण लेने वाले को चोटी कटवावे को रहती है तथा उसके पश्चात उन्हें ऋण परिशोध के लिये रविवार की प्रार्थनाओं आदि में सम्मिलित होने और अत में धर्म परिवर्तन करने पर विवश होना पड़ता है। इसके उपरान्त मिशनरी ग्रामीण आदिवासियों को स्वर्ग का लालच दिखाकर ईसाई बना लेते हैं। ऋण के पश्चात् उनके धर्म-परिवर्तन के प्रमुख साधन हैं—स्कूल और अस्पताल।

जशपुर क्षेत्र में मिशनरी कई सामान्य प्राथमिक पाठशालाएं, कुछ पूर्व माध्यमिक पाठशालायें और एक हाई स्कूल चला रहे हैं। पाठशालाओं का कार्य ईसाई पादरियों के ही हाथों और उनके द्वारा धर्म-परिवर्तन इतना व्यवस्थित रहता है कि किसी पाठशाला में किसी आदिवासी द्वारा गैर ईसाई के रूप में प्रवेश कर उसी रूप में बाहर निकलना अत्यन्त विरली घटना है।

(क्रमशः)

विचार तरंग नं० (४)

ले०श्रीराम मूर्ति जी कालिया, एम.ए. मालवीय नगर, नई दिल्ली

विश्व में अनेक महान भूतियां हुईं और होंगी भी। उन की मान्यताएं, नदी के प्रवाह सदृश्य अबाध गति से संसार में चलती रही हैं और चलेंगे भी। संसार ऐसी विभूतियों का स्मरण करता है, उन की बातों का मनन करता है और उन को जीवन में पथ पदर्शक बना पूजन भी करता है। प्रश्न यह है कि क्या पूजा, अर्चन उस व्यक्ति की है अथवा किसी और वस्तु की ? अंग्रेजी की एक कहावत है कि **It is not the gun that bires but it is the man behid the gun that bires.'** अर्थात गोली बन्दूक नहीं चलाती अपितु बन्दूक के पीछे बैठा आदमी चलाता है। इसी भान्ति हम कह सकते हैं कि संसार में पूजा व्यक्ति की नहीं अपितु उस व्यक्ति में विद्यमान गुणों की हुआ करती है। उन गुणों में परहित की भावना और उस को चरितार्थ करने के लिये अभीष्ट बालिदान की वृत्ति की पूजा होती है। क्षुधितों, दलितों की सेवा में प्राणों की आहुति देने की जो भावना है कद्र तो उस की है। इसी भावना से ओत प्रोत हो कर हमारे समस्त राजा शिवी, वीर दधीची, सत्यवीर हरिश्चन्द्र, राम, भरत, कृष्ण और अर्जुन, बुद्ध और गान्धी, अरविन्द और दयानन्द का पावन स्मरण किया जाता है। राम की पूजा राजा के पुत्र होने के नाते से थोड़े ही है। वह तो तब से है जब से उन्होंने राज्य को तुच्छ समझ, साधु समाज के सुख के लिए ,भुजा उठाकर 'निसिचर हीन कर हूं मांह' की घोषणा की और इस प्रतिज्ञा की पूर्ति के लिए बन की यात्रा की। अतः कवि ने ठीक ही कहा है, सच्चा इष्ट एक बलिदान,

इसी दृष्टि से मानव तन का हुआ सृष्टि में श्रेष्ठ स्थान।'

बलिदान की भावना के साथ परहित की भावना का होना परमावश्यक है इस भावना से और कोई भावना श्रेष्ठतर नहीं है। साथ ही यह भी स्मरण रहे कि 'पर पीरा सम नहीं अधमाई।' परहित की भावन से वशीभूत हृदय बड़ा सुखी हृदय माना गया है। धनवान धन को, विद्वान विद्या को बलवान बल को जब लुटाता है तो निश्चय ही इसका मन बड़ा संतुष्ट होता है। उसके मन के सुख का कोई पारावारा नहीं रहता। त्याग अथवा बलिदान की संक्षिप्त आत्मा है **'Attachment to detachment or detachment to attachment'** ऐसे ही लोगों के लिए हिन्दी के श्रेष्ठतम् कवि तुलसीदास ने कहा है कि :—

'परहित बस जिन्ह के मन माहीं
तिन्ह कहुं जग कुछ दुर्लभ नाहीं।'

———

आर्यसमाज लक्ष्मणसर अमृतसर

२४ जनवरी रविवार हिन्दी दिवस मनया गया, जिसमें प्रभावशाली भाषणों के साथ एक प्रस्ताव द्वारा भारत सरकार को हिन्दी की २६ जनवरी से देश की राष्ट्रभाषा प्रचलित करने के लिये भारत-सरकार की सराहना करते हुए उसे बधाई दी गई और समस्त कार्यों में अंगरेजी की गुलामी को शीघ्रातिशीघ्र दूर करने की मांग की गई।

(२) पंजाब की ७१ प्रतिशत जनता हिन्दी भाषी होने पर भी इसे हिन्दी भाषी प्रान्त स्वीकार न करने के विरुद्ध घोर घोष प्रकट किया गया और कैरों शाही के समय से हिंदी पर हो रहे अन्याय को तुरन्त दूर करने पर बल दिया गया औरपंजाब सरकार के सभी फार्म नोटिस और घोषणाएं तथा पत्र व्यवहार हिन्दी में अथवा हिन्दी और पंजाबी दोनों भाषाओं में करने की मांग की गई।

(३) हिन्दी प्रेमी जनता को अपने नीजि तथा कारोबारी कामों में, तार एवं पत्र व्यवहार, निमन्त्रण साइनबोर्ड, तथा विज्ञापन आदि छपवाते समय हिन्दी को प्रमुखता दे कर 'हिन्दी' की उन्नति की ओर ठोस पग उठाने की प्रेरणा की गई। —निवेदक रुद्रदत्त शर्मा

———

प्रादेशिक आर्य-युवक-संगठन, पजाब

आवश्यक सूचना

सभी सबन्द्ध आय युवक समाजों के अधिकारियों की सेवा में प्रार्थना है कि वह अपने युवक समाजों की वार्षिक रिपोर्ट की दो प्रतियां साप्ताहिक "आर्य जगत" में प्रकाशित कराने व कार्यालय के कार्याथ, शीघ्राति शीघ्र प्रा० वेद राम शर्मा डी०ए०वी० कालेजजालंधर के पते पर भिजवाने की कृपा करें।

साथ ही अपन युवक समाज के अधिकारियों के २"×३" के साईज के फाटो और ब्लाक भी भेज दें। जिस से उन्हें भी समाचार पत्रों में प्रकाशित कराया जा सके। भवदीय

प्रादेशिक युवक संगठन (पंजाब)
योगेन्द्र सिंह यादव मंत्री

आर्य समाज पुल बंगश देहली

चुनाव

१. प्रधान—श्री नन्द लाल जी उप-प्रधान—श्रीरामधनजी श्रीदेवदत्त जो मन्त्री—सुदेश कुमार, उप-मंत्री श्री पारवानी जो श्री सावण मल जी कोषाध्यक्ष-श्री राम शरणजी निरीक्षक —श्री राज कुमार जी सेठ, भंडारी —श्री वृज लाल जी

२. २४.१.६५ को हिंदी दिवस मनाया।

३. २८.१.६५ को लाजपत राये जन्म शताब्दी मनायी गई।

४. ६.१.६५ को बसन्त पंचमी मनाई।

५. सरदी के दिनों में बे घर लोगों के लिए समाज मंदिर खोल दिया गया।

—सुदेश कुमार मन्त्री

केरल में शुद्धि कार्य

श्रीयुत पं० नरेन्द्र जी दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार की ओर से केरल प्रान्त में लगभग एक वर्ष से वैदिक धर्म का प्रचार कार्य कर रहे हैं। श्री पण्डित जी ने जनवरी मास में चंगवाशेरी में १८ ईसाई परिवारों को जिन में २६ पुरुष २५ स्त्रियां और ११ बालक हैं, शुद्ध किया है। यह उनका अत्यन्त प्रशसनीय कार्य है, आर्य जनता का कर्त्तव्य है कि उन्हें आर्थिक सहायता प्रदान करके इस पवित्र कार्य को अग्रसर करने में सहयोग प्रदान करें। जिस में कि केरल में फले हुए ईसाईयत के आतंक को दूर किया जा सके।

निवेदक रामविचार उपाचार्य

वरं मृत्युर्न पुनरपमानः।
अपमान सहने से मरना अच्छा है।

आपदर्थे धनं रक्षेत् (मुसीबत के वक्त के लिए धन रखना चाहिए)

आर्यसमाज जालन्धर के समाचार

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के आदेशानुसार आर्यसमाज जालन्धर के समस्त सभासदों तथा अन्य हिन्दी प्रेमियों ने बड़े समारोह से २१-१-६५ को हिन्दी दिवस मनाया। हवन यज्ञ प्रार्थना आदि के पश्चात् प्रण किया कि भविष्य में हम अपने कारोबार में हिन्दी का ही प्रयोग किया करेंगे। तथा निम्नलिखित प्रस्ताव सर्वसम्मति से स्वीकार किए गए।

(१) भारत सरकार ने तमाम राज्यों में हिन्दी चालू करने तथा राजसी कारोबार के व्यवहार में लाने का जो निश्चय किया है वो अत्यन्त सराहनीय है वे सारे देश को एकता के सूत्र में पिरोने की एक कड़ी है। इस शुभ निश्चय का हृदय से स्वागत करते हैं तथा भारत सरकार को बधाई देते हैं। भारत सरकार ने ना जाने क्यों पंजाब राज्य को इस सूची में शामिल नहीं किया। अतः बलपूर्वक अनुरोध करते हुए भारत सरकार से आग्रह करते हैं कि पंजाब राज्य को भी सूची में लिया जावे ताकि राज्य की पूर्ण अखण्डता कायम रहे। —मोहनलाल गुप्ता प्रधान

चुनाव

आर्य समाज मण्डी (H. P.)

प्रधान—कैप्टन इन्द्रसैन जी
उपप्रधान—पं० महेन्द्रलाल जी एडवोकेट और श्री इन्द्रसिंह जी
मंत्री—चेतराम बहेल
उपमंत्री—श्री हरिश्चन्द्र जी
प्रचारमंत्री—पं० केवलराम जी
कोषाध्यक्ष—श्री होशराज जी
पुस्तकाध्यक्ष—मा. माधवरामजी
आडीटर—मा. विद्यासागर जी

अंतरंग सदस्य

स्वामी कृष्णानन्द जी, ला. मायाधर जी ठेकेदार ला. परमानन्द जी सहगल, श्री हेमप्रभ जी वैद्य, श्री नन्दलाल जी सोढ़िया, श्री भगवानलाल जी चावला, डा. हरि सिंह जी तथा आठवां नाम बाद में घोषित होगा। —चेतराम बहेल

आर्य समाज खन्ना

आर्य समाज का यह अधिवेशन केन्द्रीय सरकार का २६ जनवरी सन् १९६५ से राज्य भाषा के रूप में व्यवहार करने का जो निश्चय [illegible] उस का स्वागत करती है। हिंदी राज्यों में पंजाब के प्रांत को छोड़ दिया गया है इस का उसे खेद है। आर्य समाज केन्द्रीय सरकार से प्रार्थना करती है कि पंजाब को भी हिंदी राज्यों में शामिल किया जावे। और पंजाब के साथ भी हिन्दी का ही व्यवहार किया जावे। पंजाब में बहुत संख्या हिन्दुओं की है और हिन्दी लिपी ही प्रायः प्रयोग में लाई जाती है इस लिये यह उचित है कि केन्द्रीय सरकार पंजाब के साथ भी अन्य राज्यों का व्यवहार करें।

मुंशी राम प्रधान

"टंकारा"

(श्री वल्लभ जी आर्य विदिशा (म० प्रा०)

धन्य धन्य है पावन भूमि, पुण्य भूमि टंकारा की
जिसमें जन्मे जगद्गुरु ऋषि दयानन्द जी सरस्वती।
जग जड़वादी, पशुसदृश अज्ञान-कूप में स्थित था,
नाना कल्पित मत प्रचलित थे, मानव पथ से विचलित था,
इसी भूमि से दयानन्द सी दिव्यज्योति तब प्रकट हुई
हो गया नष्ट अज्ञान-तिमिर, जो उठा अवनि आलोकित था।
धन्य धन्य सौभाग्य शालिनी, स्वर्ग-भूमि टंकारा की
जिस में जन्मे धर्म-प्रवर्तक दयानन्द जी सरस्वती।
धर्म शत्रु-दानव-दल को अति प्रबल, भू पर हुंकारा था,
वाममार्ग का नग्न नृत्य, पोपों का बजा नगारा था,
इस माता के गर्भ से तब एक महावीर का जन्म हुआ—
सिंहनाद कर जिस ने दिग्विजयी सत्-धनु टंकारा था।
धन्य-धन्य है धर्म भूमि वीर भूमि टंकारा की
जिस में जन्मे वीर पुरुष ऋषि दयानन्द जी सरस्वती।
वैदिक धर्मामृत-धारा की, हे अनुपम स्थान है तू!
दयासिन्धु, आनन्ददायिनी, कल्याणमयी महान् है तू!
तेरे दर्शन हेतु हे जननी, सदा कार्यजन आयेंगे—
वेदमूर्ति, योगीवर, गुरुवर, आप्त की जन्म स्थान है तू!
धन्य धन्य है भुवन मोहिनी, सुखद भूमि टंकारा की
जिस में जन्मे 'सत्यार्थ प्रकाश' देव दयानन्द सरस्वती।

आर्य कन्या विद्यालय गोविंद नगर, कानपुर

लाला लाजपतराय पर आर्य समाज को गर्व है।

गोविन्द नगर में सर्व साधारण सभा।

आर्य समाज गोविन्द नगर हाल में लाला लाजपतराय जन्म शताब्दी के अवसर पर एक विशाल सभा श्री देवीदास जी आर्य (सभासद महापालिका) की अध्यक्षता में हुई। प्रारम्भ में आर्य कन्या विद्यालय (जू० हा० स्कूल) गोविन्द नगर की छात्राओं के गीत व भाषण हुए। श्री देवीदास जी आर्य ने अपने भाषण में कहा कि लाला लाजपतराय महर्षि दयानन्द और आर्य समाज की प्रेरणा से ही इतने बड़े महान नेता, देश भक्त और बलिदानी हुए। इस पर आर्य समाज को लाला जी पर गर्व है। आर्य समाज ने अनेक देश भक्त शहीद पैदा किए जिन्होंने देश की स्वतन्त्रता के लिए अपना सर्वस्व स्वाहा कर दिया। लाला जी को भारतीय संस्कृति, सभ्यता व वैदिक धर्म पर अगाध श्रद्धा थी।

—शांति भूषण मन्त्री समाज

मुद्रक व प्रकाशक श्री सन्तोषराज जी आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर द्वारा वीर मिलाप प्रेस, मिलाप रोड जालन्धर से मुद्रित तथा आर्यजगत कार्यालय महात्मा हंसराज भवन निकट कचहरी जालन्धर शहर से प्रकाशित मासिक—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर



टैलीफोन नं० ३०५७ [आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधिसभा पंजाब जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd. No P. 121

एक प्रति का मूल्य १३ नये पैसे — वार्षिक मूल्य ६ रुपये

वर्ष २५ अंक ७) ३ फाल्गुण २०२१ रविवार—दयानन्दाब्द १४०— १४ फरवरी १९६५ (तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

वेद सूक्तय:।

उत्तिष्ठत सन्नह्यध्वम्

हे वीर जनो! उत्तिष्ठत—उठकर खड़े हो जाओ और संनह्यध्वम्—अच्छी प्रकार से तैयार हो जाओ। वीरो! सोने या चुपचाप बैठने से अब क्या लाभ है। शत्रु को ठिकाने लगाने के लिए उठ कर तैयार हो जाओ।

अमित्राननुधावत

वीरो! अमित्रान्—जो वैरी हैं, शत्रु हैं, राष्ट्र के घातक बन कर आते हैं उनके अनु—पीछे धावत—दौड़ो उन पर मिल कर धावा बोल दो। वैरी, शत्रु हैं। अभी २ सारे वीर मिल कर उन पर हल्ला बोल दो। कोई भी जाने न पाए।

यश्च दिप्सति

सुनो! जो भी हमारा वैरी शत्रु बनकर हमें दिप्सति—सताता है; आक्रमण करता मारता है। उसे हम छोड़ नहीं सकते। ऐसे घातक वैरी को हम भी कुचल कर रख देंगे। भगा देंगे।

अथर्ववेद से

वेदामृत

ओम् भवतन्न: समनसौ सचेतसावरेपसौ। मा यज्ञं हिंसिष्टं मा यज्ञपतिं जातवेदसौ शिवौ भवतमद्य न: स्वाहा। इदं जातवेदोभ्याम् इदन्नमम॥

यजु: ५-३

अर्थ—हे यज्ञ करने वाले स्त्री-पुरुष! आप दोनों ही (भवतम्) होवो (न:) हमारे इस यज्ञ में (समनसौ) समान व सु मन वाले (सचेतसौ) समान एक चित्त वाले तथा (अरेपसौ) पाप से रहित दोनों इस प्रकार एक मन व एकचित्त हो कर (यज्ञं) यज्ञ की (मा) मत (हिंसिष्ट) हिंसा करें। यज्ञ चलता रहे। और (यज्ञपतिम्) यज्ञ के पति पालक रक्षक की भी (मा) मत हिंसा होने देवें। (जातवेदसौ) ऐसे आप ज्ञानी बन कर (शिवौ) कल्याण करने वाले (भवतम्) होवें (अद्य) आज (न:) हमारे लिए आप सुखकारी बने। यह आहुति ज्ञानियों के अर्पण है मेरे लिए नहीं।

भाव—यज्ञ परोपकार से प्रेम करने वाले हे स्त्री पुरुषो! आप एक मन, एकचित्त तथा पापरहित होकर इस यज्ञ के शुभ कार्य में लगे रहें। कभी यज्ञ का लोप न होने देवें। यज्ञ करने वाले का भी लोप न हो। यज्ञपति उस परमात्मा को भी अपने जीवन के दूसरे धन्धों में लगकर विस्मरण न कर बैठना। यज्ञ व यज्ञपति दोनों का लोप न करने देना। प्रभु व प्रभुभक्ति दोनों आवश्यक हैं। सब के लिए कल्याणकारी बनना है। ज्ञान तथा अग्निमय बनने की दीक्षा लेनी है। स्त्री और पुरुष दोनों ही यज्ञ, परिवार यज्ञ, विश्व यज्ञ के अंग हैं—सं०

ऋषि दर्शन

क्षत्रियो वीर पुरुष:

क्षत्रिय कौन है जो वीर पुरुष है या वीर पुरुष ही क्षत्रिय कहलाने का अधिकारी है। निर्बल को क्षत्रिय के नाम से नहीं पुकारा जा सकता। वीरता के बिना क्षत्रिय कौन हो सकता है।

प्राणिमात्रस्याधिपति:

ऐसा वीर पुरुष ही सारे प्राणियों का रक्षक हो सकता है। जो दूसरों की रक्षा नहीं कर सकता। जो स्वयं निबल है वह किस काम का है। उस से जीव मात्र को क्या लाभ होगा। इस लिए वीर नर ही राजा बने।

दुष्ट प्रजानामत्ता

ऐसा शक्ति से भरा हुआ क्षत्रिय शासक ही दुष्ट लोगों को नाश करने में; दण्ड देकर उनको ठीक करने तथा उन से सारी प्रजा की रक्षा करने में समर्थ होता है। वह वीर पुरुष बुरे लोगों को खा जाता है।

भाष्य भूमिका से

अधिष्ठाता—श्री संतोषराज जी — सम्पादक—त्रिलोक चन्द्र शास्त्री

(गतांक से आगे)

मानसिक रचना सृष्टि के सूक्ष्म अंगों की रचना और भौतिक रचना उसका स्थूल रूप है। बुद्धि के कार्य उसकी भावना में आदि का क्षेत्र सब मानसिक रचना के अंग हैं। जब यह तीनों गुण साम्य अवस्था-गतिशून्य अवस्था (inactive state) में रहते हैं। उस अवस्था का नाम प्रकृति है। इस प्रकृति से महत्व-बुद्धि, महत्व से अहंकार अहंकार से पंचतन्मात्रा (शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध) और पांच ज्ञानेन्द्रियां (senses of perception) और पांच कर्मेन्द्रियां (organs of action) और मन उत्पन्न होते हैं। पंचतन्मात्राओं से पंचमहाभूत अर्थात् आकाश, वायु, तेज, जल, और पृथिवी उत्पन्न होते हैं। इस प्रकार ये जो बीस गुण कहलाते हैं। चेतन स्रष्टा अर्थात् प्रकृति शक्ति का स्वामी लोकोपकार के लिए इससे सृष्टि निर्माण कराता है।

योग दर्शन २-१६ में इन गुणों की अवस्था इस प्रकार वर्णन की है विशेष-पांचमहाभूत-पांच ज्ञानेन्द्रियां, पांच कर्मेन्द्रियां, एक मन— ये कुल मिलकर १६ विशेष अर्थात् सुख-दुःख और माहेरूप धर्म से युक्त हैं। इनके सम्बन्ध से पुरुष सुखी-दुःखी और मूढ़ हो जाता है। अवशेष-पांच तन्मात्रा छटा अहंकार, ये कुल छः इनका स्वरूप इन्द्रिय गोचर नहीं। इसलिए इनको अवशेष कहते हैं।

लिंगमात्र-प्रकटता, अभिव्यक्ति (Menifestion) का बीज होने से इसका नाम बुद्धि है। क्योंकि यह सत्तामात्र है, इसी लिए इसको लिंगमात्र कहते हैं।

अलिंग—मूलप्रकृति जो कि तीनों गुणों (सत्व-रजस-तमस) की साम्य अवस्था है। समष्टि बुद्धि इसका पहिला कार्य है। अलिंग की अवस्था नित्य है और पहली

दर्शन-स्वाध्याय

जीवन का दर्शन

(ले—श्री डा० शंकरदास जी लारेंस रोड अमृतसर)

तीनों अवस्थाएं अनित्य हैं। गीता तथा उपनिषदों में इसका वर्णन अव्यक्त नाम से किया गया है। इसकी प्रलय में सम अवस्था और उत्पत्तिमें विषय अवस्था होती है।

मूल प्रकृति तो प्रकृति है। बुद्धि, अहंकार और पंचतन्मात्रा प्रकृति और विकृति दोनों गुण वाले हैं। मन तथा दसों इन्द्रियां, पांच महाभूत ये सोलह विशेष केवल विकृतियां हैं। और पुरुष (जीवात्मा तथा परमात्मा) न तो प्रकृति है और न विकृति है। प्रकृति उसे कहते हैं जिसका कारण कोई न हो परन्तु वह स्वयं दूसरे का कारण हो। विकृति उसे कहते हैं जो स्वयं कार्य हो परन्तु किसी का कारण न हो। तथा प्रकृति विकृति उसे कहते हैं जो किसी का कार्य हो और उससे जो अन्य कार्य उत्पन्न होते हैं उनका कारण हो।

यहां पर एक शंका होती है कि प्रकृति से उत्पन्न २३ तत्वों का और उनसे बने हुए समस्त चराचर जगत् का कारण जड़ प्रकृति ही है और वे सब कार्य हैं। प्रकृति उनका मूल कारण है, और वे सब जड़ हैं। एक प्रकृति के कार्यों में विचित्रता कैसे ? अर्थात् जड़ होते हुए उनमें भिन्न-भिन्न प्रकार की क्रियाएं क्यों होती हैं ? यदि निमित्त शक्ति बाहर से आती है तो हरेक जड़ पदार्थ में अपनी-अपनी विशेष प्रकार की क्रिया क्यों होती है ? एक नियम रहता है। एक विवेक पूर्वक क्रम दिखलाई देता है। कार्य करने के तरीके में भी एक दूसरे जड़ पदार्थ से भेद रहता है। यह बुद्धि उनमें कहां से आती है ? दो विशेष प्रकार के पदार्थ मिलकर एक नया पदार्थ उत्पन्न कर देते हैं। इनमें ऐसी क्षमता योग्यता होने का क्या कारण है ? ऐसी शंका जड़ प्रकृति के विकारों के सम्बन्ध में बहुत उठाई जाती है। सांख्य दर्शन के सिद्धान्त के विचार से ऐसी शंकाओं का उठाना स्वाभाविक है। क्योंकि वह प्रकृति को एक स्वतन्त्र सत्ता मानते हैं, जिसका अर्थ यह है ये सब बुद्धि और क्रम के लक्षण स्वतन्त्र प्रकृति में अपने ही होने चाहिएं। परन्तु एक अविवेकी जड़ तत्व में उनका होना सम्भव नहीं प्रतीत होता। इसलिए अब उनका समाधान करते हैं—

जब हम किसी कारखाने में जाते हैं तथा भिन्न-भिन्न मशीनों को बिजली की शक्ति से चलता हुआ देखते हैं, तो वे क्रियाएं बिजली की नहीं होतीं। यह बात स्पष्ट है। ये क्रिया शक्तियां मशीनों का ही धर्म है जो उनमें अव्यक्त रूप से रहता है। जड़ वस्तु का धर्म होने से स्वयं तो वह प्रकट नहीं होती, बिजली शक्ति उसे प्रकट कर देती है। इसी प्रकार से ऐसा कहा जा सकता है कि जड़ प्रकृति स्वामी लोकोपकार के लिए जड़ के समस्त तत्वों तथा भूतेन्द्रिय जगत की क्रियाओं में जो प्रकृति के पदार्थ ही के कार्य में उनमें कुछ गुण और धर्म छिपे रहते हैं। उनसे सृष्टि का निर्माण कराता है। वे जड़ पदार्थ के धर्म होने को कारण स्वयं तो प्रकट नहीं होते किन्तु चेतन तत्व की चेतनता के द्वारा अपने-अपने भिन्न-भिन्न रूपों में व्यक्त होकर सृष्टि की रचना होती है। इस प्रकार भूतेन्द्रिय जगत् के सब पदार्थ यद्यपि जड़ हैं तथापि उनमें अपने-अपने धर्म और गुण रहते हैं। ये गुण और धर्म जड़ तत्वों के ही विकार होते हैं। चेतन तत्व निर्विकार होता है। उसमें केवल चेतनता होती है। अर्थात् वृक्षों में वृक्षों के धर्म, मिट्टी में मिट्टी के धर्म जल में जल के, अग्नि में अग्नि के धर्म अलग-अलग दीखने में आते हैं। गुण और धर्म के बिना किसी पदार्थ का अस्तित्व ही असम्भव है। धर्म का अर्थ ही यह है कि जिससे धर्मी तत्व का धारण हो सके। अपने धर्म के अस्तित्व से पदार्थ बना रहता है। जातियां वर्णाश्रम इसी धर्म की सत्ता से बने रहते हैं। उस धर्म के नष्ट होने पर वह पदार्थ भी नष्ट हो जाता है। यदि जल का धर्म जल से तथा अग्नि का धर्म अग्नि से अलग कर दिया जाए तो जल एवं अग्नि का अस्तित्व किसी अवस्था में भी नहीं रह सकता। इन धर्मों का प्रकट होना ही जड़ पदार्थों में अलग-अलग लक्षण मिलने का कारण है। यह धर्म प्रकृति के पदार्थों और तत्वों में तीनों गुणों सत्व-रज-तम के रूप में रहते हैं। अपनी-अपनी मात्राओं की भिन्न-भिन्न मात्रा में रहते हुए सृष्टि के पदार्थों में भिन्नता पैदा कर देते हैं। (क्रमशः)

बाढ़ आर्यसमाज का वार्षिक चुनाव

प्रधान—श्री डा० जयदेव जी उप-प्रधान—श्री देवेन्द्र कुमार जी तथा रामस्मरदास आर्य प्रधान-मन्त्री—श्री लक्ष्मीकान्त जी, उप-मन्त्री—श्री चन्द्र दीप राम, लेखा निरीक्षक—श्री मदन मोहन जी पुस्तकाध्यक्ष—श्री हरिदेव जी।

—मन्त्री लक्ष्मी कांत
आर्यसमाज बाढ़ (पटना)

——

आर्य जगत्

वर्ष २५] रविवार २०२१, १४ फरवरी १९६५ [अंक ७

अधिवेशन का समारोह

आर्य प्रादेशिक सभा पंजाब जालन्धर का कार्य बड़ा व्यापक है। देश विभाजन के बाद जालन्धर में आकर सभा ने अपने लोक सेवा कल्याण के तथा वेद प्रचार के महान् कार्य को लेकर अपने प्रैस तथा प्लेट फार्म द्वारा प्रचार व साहित्य के काम को बड़े शानदार रूप से किए जा रही है। पंजाब में अमृतसर जिले से लेकर गुड़गांव तक सारे प्रान्त में, हिमाचल, जम्मू काश्मीर एवं देहली राज्य में इससे सम्बन्धित समाजों का बड़ा ही गौरव भरा कार्य हो रहा है। यही कारण है कि सभा के वार्षिक अधिवेशन में सब स्थानों के गण्य-मान्य प्रतिनिधि दूर-दूर से कष्ट उठाकर और काफी व्यय करके सभा के इस प्रगतिमय कार्य में शामिल होते हैं।

आर्यसमाज लारेंसरोड अमृतसर में गत रविवार ३१ जनवरी को प्रिंसीपल रलाराम जी एम. ए. सभा प्रधानजी की प्रधानता में अधिवेशन प्रारम्भ हुआ। इसमें अमृतसर, फिरोजपुर, नाभा, होशियारपुर, टोहाना, गुरदासपुर, जालन्धर, लुधियाना, अम्बाला, करनाल, पानीपत, देहली, शिमला जोगेन्द्र-नगर हिमाचल, साम्बा जम्मू, हिसार, गुड़गांवां, रोहतक आदि सारे जिलों से, देहली तथा हिमाचल प्रान्त से भी प्रतिनिधि सज्जन पधारे थे। उनके दिल में सभा के लिए बड़ा प्रेम है।

स्वर्गीय देवता महात्मा हंसराज जी द्वारा स्थापित व चालित, इस के पश्चात् तपस्वी सन्त महात्मा आनन्द स्वामी जी द्वारा वर्धित सभा के प्रति सब की ऐसी आस्था देख कर मन बड़ा प्रसन्न होता था अधिवेशन में अपने अमृतसर, जालन्धर, होशियारपुर, हिसार, शिमला, गुरदासपुर, लेखराम, नगर कादियां, फिरोजपुर आदि के कालेजों स्कूलों के अपने मान्य प्रिंसिपलों, मुख्याध्यापकों, तथा समाजों के मान्य अधिकारियों की उपस्थिति से गौरव था। परिवार को उन्नति पथ पर ले जाने तथा बीती कमियों पर विचार करने के समान सभा के बीते वर्ष के कार्यों तथा आगे के वर्ष के कार्यों पर दिलखोल कर विचार होता रहा। आर्यसमाज में कितने अच्छे बोलने वाले हैं, उन के विचार सुन कर समाज के मान का अनुमान होता था। सभा के कामों पर खूब विचार विमर्श चलता रहा। वृद्ध विधान की चर्चा भी चली। वार्षिक विवरण तथा बजट भी आये। विश्वेश्वरानन्द संस्थान पर भी विचार होता रहा। सभा की सब से बड़ी विशेषता यह है कि परम्परानुसार निर्वाचन सर्व सम्मति से होता है। इस बार भी आर्य जगत के तपस्वी सन्त महात्मा आनन्द स्वामी जी के सुपुत्र योग्य वक्ता श्री यश जी पूर्व शिक्षामन्त्री पंजाब को सर्वसम्मति से सभा का प्रधान चुन कर अन्य सारे निर्वाचन व सार्वदेशिक सभा के लिए भी सदस्यों को चुनने के अधिकार श्री. प्रधान जी को सौंप दिए गए। शान्तिपाठ के साथ बड़ा ही उत्तम समाज की ओर से जलपान का प्रबन्ध था। समाज की सेवा न भूलेगी। सं.

आर्य प्रादेशिक सभा के १९६५ के लिए निम्न सदस्यों के नाम

श्री यश जी सभा प्रधान ने घोषित किये

उपप्रधान—श्री भीमसैन जी बहल प्रिंसिपल डी० ए० वी० कालिज जालंधर
,, ,, इन्द्रसैन जी जालन्धर
,, ,, धर्मपाल जी अमृतसर
,, ,, प्रिन्सीपल रलाराम जी होशियारपुर
मन्त्री—श्री सत्यदेव जी एम. ए. विद्यालंकार जालन्धर
उपमन्त्री—श्री डा० देवव्रत जी लारैंस रोड, अमृतसर
,, ,, पं० दुर्गादास जी सम्पादक आर्य गजट, जालन्धर
,, ,, कैप्टन शिवराम जी—ओबराय, जालन्धर
कोषाध्यक्ष—श्री सतोषराज जी—दयानन्द मोडल स्कूल, जालन्धर
पुस्तकाध्यक्ष—श्री प्रो० वेदप्रकाश जी मल्होत्रा डी. ए. वी. कालिज, जालंधर

प्रतिष्ठित सदस्य—

श्री महात्मा आनन्द स्वामी जी
,, जस्टिस मेहरचन्द जी महाजन
,, सूर्यभानु जी वायस चांसलर, कुरुक्षेत्र यूनिवर्सिटी
,, प्रिंसिपल दीवानचन्द्र जी वायस चांसलर, आगरा यूनिवर्सिटी
,, डा. गोवर्धनलाल दत्त, वायस चांसलर विक्रम यूनिवर्सिटी उज्जैन
,, महात्मा देवीचन्द्र जी एम. ए. होशियारपुर
,, कैप्टन केशवचन्द्र जी, अमृतसर
,, प्रिंसिपल ज्ञान चन्द्र जी हिसार
,, देसराज जी महाजन माडल टाऊन, जालन्धर
,, ज्ञानी पिंडीदास जी. अमृतसर

सदस्य-अंतरङ्ग सभा—

(१) कुमारी विद्या आनन्द प्रिंसिपल हंसराज महिला कालिज, जालंधर
(२) श्री प्यारे लाल जी बेरी प्रिन्सीपल S.D.A.S. H/S स्कूल, जालंधर
(३) ,, बलदेव राज जी प्रधान म्युनीसिपल कमेटी, जालन्धर
(४) ,, विद्या सागर जी वैद्य आर्य समाज लारैंस रोड, अमृतसर
(५) ,, एम.सी. औली—अम्बाला छावनी
(६) ,, प० रुद्रदत्त जी प्रधान आ० स० लक्ष्मणसर, अमृतसर
(७) ,, बलदेवसिंह जी भंडारी एडवोकेट, गुरदासपुर
(८) ,, प्रो० रामविचार जी दयानन्द ब्रह्ममहाविद्यालय, हिसार;
(९) ,, म० संतराम जी प्रधान आ. स. मोडल टाऊन, लुधियाना
(१०) ,, परमेश्वरीदास जी बहल लुधियाना
(११) ,, प्रि० हरिराम जी डी. ए. वी. H/S स्कूल चण्डीगढ़
(१२) ,, बैजनाथ जी 'महेन्द्र' डी. ए. वी. H/S स्कूल, होशियारपुर
(१३) ,, प्रिंसीपल सत्यप्रकाश जी डी.ए.वी. H/S स्कूल, शिमला
(१४) ,, पं० विश्वम्भरदत्त जी करनाल
(१५) ,, ओमप्रकाश जी पानीपत
(१६) ,, पं०दयारामजी शास्त्री एम.ए. आर्यसमाज मंदिर मार्ग नईदेहली
(१७) ,, कृष्णलाल जी गुप्त आर्य समाज, जम्मू
(१८) ,, भगत बुड्ढा मल जी भार्गव कैंप, जालन्धर
(१९) ,, पं. त्रिलोकचन्द्र जी शास्त्री बी.ए. गुरदासपुर
(२०) ,, पं० खुशीराम जी होशियारपुर
(२१) ,, ज्ञानचन्द्र जी भाटिया मोडल टाऊन, जालन्धर

सृष्टि नित्य पथप्रदर्शक है

(ले०—आचार्य देवप्रकाश जी आर्यसमाज उज्जैन (मध्यप्रदेश)

ऋतस्य पथा प्रेता ऋतस्य धीति-
र्वृजनानि हन्ति। यजु० ७-४५

सृष्टि नियम के पथ पर चलो, सृष्टि नियम का स्वाध्याय तुम्हें पापों से बचा देगा।

सत्यासत्य का विवेक सन्मार्ग के साधन हैं

निर्माया उत्ये असुरा अभूवन्त्वं
च मा वरुण्य कामयासे।
ऋतेन राजन्न नृतं विविञ्च-
न्मम राष्ट्रस्याधिपत्यमेहि ॥
ऋ० १०-१२४-५

स्वार्थमय असुर भी छल रहित हो जाने से सफलता को प्राप्त करते है और जो पहिले ही सत्यानुगामी हैं जो ऋत सत्य से असत्य का विवेक करता है वह मेरे राष्ट्र स्वामित्व को प्राप्त करता है। वेद ने कहा जो मेरे कानून सृष्टि नियम पर चलता है वह पाप में लिप्त नहीं होता और सत्य असत्य का विवेकी पुरुष ही मेरे राज्य का अधिकारी होता है। मिथ्यावादि मेरे राज्य में प्रविष्ट नहीं हो सकता यीशु ने अपने शिष्यों को कहा, कि किसी को मत कहना कि मैं मसीह हूं मत्ति १६-२० लूका ९-२२ मर्कस ८-२७ से मसीह शिष्यों को सत्य विद्या का अच्छा उपदेश देता है झूठ बोलकर ईसाई मत का प्रचार अब आप ईसाई मत को देखें कि वहां सत्य की कोई कीमत नहीं।

पौलूस रसूल ने कहा

यदि मेरे झूठ के कारण परमेश्वर की सच्चाई उसकी महिमा के लिए अधिक करके प्रकट हुई तो फिर क्यों पापी की नाई मैं दण्ड के योग्य ठहराया जाता हूं। और हम क्यों बुराई न करें कि भलाई निकले, रोमियों—३-७-८।

इस में स्पष्ट झूठ बोलकर ईसाई मत का प्रचार करना लिखा है आगे देखिए लिखा है कि मैंने ईसाई मत प्रचार के लिए कई रंग बदले—

पौलूस रसूल कहता है

ताकि सुसमाचार में जो मेरा अधिकार है उसको मैं पूरी रीति से काम में लाऊं क्योंकि सबसे स्वतन्त्र होने पर भी मैंने अपने आपको सबका दास बना दिया है, कि अधिक लोगों को खैंच लाऊं मैं यहूदियों के लिए यहूदी बना, कि यहूदियों को खैंच लाऊं, जो लोग व्यवस्था के अधीन हैं। उनके लिए मैं व्यवस्था के आधीन न होने पर व्यवस्था के आधीन बना, कि उन्हें जो व्यवस्था के आधीन हैं, खींच लाऊं,... व्यवस्था हीन बना, ताकि व्यवस्था हीनों को खींच लाऊं, मैं निर्बल के लिए निर्बल-सा बना, ताकि निर्बलों को खींच लाऊं मैं सब मनुष्यों के लिए सब कुछ बना हूं ताकि किसी न किसी रीति से कई एक का उद्धार कराऊं और मैं सब कुछ सुसमाचार के लिए करता हूं कि औरों के साथ उसका भागी हो जाऊं, -१-कुरिन्थियों-९-१८ से २३ माफ्त यह वह व्यक्ति पौलूस है जिसने ईसाई मत का प्रथम और सबसे बढ़कर प्रचार किया है यही क्या इन पश्चिमी मतों के आदि गुरू हजरत इब्राहीमने अपनी पत्नी को झूठ बोलने के लिए कहा कि तू यह कहना कि मैं इब्राहीम की बहिन हूं और उसने ऐसा ही कहा उत्पत्ति १२-१३

डाकू के साथ सलीब पर स्वर्ग लोक का वादा

यीशु के साथ दो डाकू और भी सूली पर लटकाए गए थे उनमें से एक यीशु की निन्दा करके कहा, क्या तू मसीह नहीं तो अपने आपको और हमें बचा, इसपर दूसरे ने फटकारा...तब उस चोर ने कहा, कि हे यीशु ! जब तू अपने राज्य में आए मेरी सुध लेना। उसने (यीशु ने) उस से (चोर से) कहा मैं तुझ से सच्च कहता हूँ कि आज ही तू मेरे साथ स्वर्ग लोक में होगा, लूका २३—भारत ३९ से ४३ तक।

यीशु ने चोर से वादा तो कर लिया मगर स्वर्ग में मसीह नहीं गया और चोर न जाने कहां यीशु की प्रतीक्षा में बैठा रहा जैसा कि लिखा है।

यीशु मरीयम को मिला उसने समझा माली है...तो फिर यीशु ने उसको कहा कि मुझे मत छू क्योंकि मैं अब तक पिता के पास ऊपर नहीं गया यूहन्ना २०-१६-१७ फिर अब्वारे के पहिले दिन उन से मिला, और कहा...यह कह कर (यीशु उसने उन पर फूंका और उन से कहा—पवित्र आत्मा लो। जिस के पाप तुम क्षमा करो वे उनके लिए क्षमा किए गये हैं, जिन के तुम रक्खा वे रक्खे हुये हैं यूहन्ना, २०—१९ से २३ –जैसा चोर को चकमा दिया था यहां शिष्यों को भी वैसा ही पाप निवृत्ति के लिए दिया, इसी प्रकार हफ्तों ही यीशु इधर-उधर फिरता रहा जिस चोर के साथ स्वर्ग जाने का वादा था, वह कहां गया, इधर-उधर फिरने के बाद भी यीशु खुदा के दहने हाथ जा बैठा हम पूछते हैं—कि वह चोर उसी दिन क्या यीशु के साथ स्वर्ग गया यदि नहीं तो और झूठ किस को कहते हैं इस प्रकार के और बहुत से प्रमाण हैं मन्त्र वे था सृष्टि नियम का स्वाध्याय सो ईसाई सृष्टि को नहीं जानते देखिये सृष्टि नियम विरुद्ध बातें—

(१) एक बड़ा सा मच्छ...योना को निगल गया और योना उस मच्छ के पेट में तीन दिन और तीन रात रहा योना १-१७ फिर उस मच्छ ने योना को स्थल पर उगल दिया योना २—१०

(२) लूत की स्त्री ने उसके पीछे से दृष्टि फेर कर ताका वह लोन का खम्बा हो गई उत्पत्ति १९-२६

अग्नि में डाला

राजा नबूकद् नेस्सर ने शद्रक मेशक अवेद्नगो को सात गुना तेज अग्नि जला कर बक्त तीनों को आग में डाला गया किन्तु आग में डालने वाले जल मरे और वह तीनों बच गये।

सूर्य को रोक दिया

और जिस दिन खुदावन्द ने अमूरियों को बनी इस्राएल के आगे ला के उन के काबू कर दिया उस दिन यश ने खुदावन्द के हजूर बनी इस्राएल की आंखों के सामने यूं कहा कि ऐ सूर्य तू जबहून पर ठैरा रह और ऐ चांद तूं भी वादिए ऐलून के दरमियान, ठैरा रह तब सूय खड़ा रहा और चांद ठैर गया......और आसमान के बीचों बीच ठैर रहा, और करीब दिन-भर के पच्छिम की तरफ को माइल न हुआ, यशू चाव-१०-आ १२ से १४ तक उर्दू—कैसी ऊट पटांग बात है सूर्य दिन-भर ठहरा रहा कितना सृष्टि के खिलाफ है।

जमीन पर लकड़ी मारने से जूएं पैदा हो गई

तब खुदावन्द ने मूसा से कहा, हारुन से कह कि अपना असा (डंडा) बढ़ा और इस जमीन की गर्द (मिट्टी) को मारताकि वह तमाम मुल्क मिस्र में जुएं बन जावें उन्होंने ऐसा ही किया और अपना डंडा गर्द (धूली) पर मार। और वह इनसान और हैवान पर जूएं बन गई। (क्रमशः)

श्रीयश जी सभा का यश बढ़ायें

ले०—पं० चन्द्रसेन जी आर्य हितैषी उपदेशक सभा सोनीपत निवासी

अमृतसर भारत का प्रसिद्ध और दानी नगर है पंजाब का हृदय ही समझना चाहिये यहां की लारेंस रोड आर्यसमाज सारे पंजाब में अपना उच्च स्थान रखती है सौभाग्य से इसके सभी अधिकारीगण तथा सदस्य प्यारे दयानन्द के दिवाने हैं। इस समाज का सम्बन्ध आर्य प्रादेशिक सभा से है ३१-१-६५ को रविवार बाद दोपहर दो बजे विशाल भवन में सभा का वार्षिक अधिवेशन प्रिं० रलाराम जी एम. ए. की प्रधानता में शुरू हुआ। इस सभा की स्थापना पूज्य महात्मा हंसराज जी ने की, अपने जीवन काल में ही सभा को चहुं दिशी फैलाया स्वयं जनता की प्रेरणा पर कई वर्ष प्रधान रहे बिरला जैसे दानियों ने इस सभा की सहायता की भारत के कोने २ में इस के प्रचारक जाते रहे सभा ने क्या २ काम किया इस का लम्बा इतिहास बन सकता है। अपने जीवनकाल में महात्मा जी ने ला० खुशहालचन्द जी खुर्सन्द को सभा सम्भाल दी इन्होंने भी सभा को उन्नत शिखर पर पहुंचा दिया सैंकड़ों समाजों का जाल सा बिछा दिया। दुर्भाग्य से देश विभाजन हुआ आर्यसमाज को भारी क्षति उठानी पड़ी सभा का ढांचा फिर बना, महात्मा खुशहाल चन्द जी ने सभा को सुचारु रूप से चलाया लगभग १२-१३ वर्षों से इन्होंने संन्यास आश्रम में प्रवेश किया। पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी नाम से प्रसिद्ध है सारे आर्य जगत को इन पर गौरव है संन्यासी होने के बाद भी जनता के आग्रह पर सभा के प्रधान रहे। कई वर्षों से सभा के प्रधान नहीं हैं परन्तु सहयोग देते हैं सभा की अवस्था बड़ी ढीली सी है प्रचारक कम हैं सभा के अधिकारी कई उलझनों में फंसे रहने के कारण सभा को ऊंचा न ले जा सके। ऐसी सभा की आर्थिक अवस्था है कभी-कभी मासिक दक्षिणा देने में कठिनाई रही समाजें भी सुस्त-सी रहीं, आज पंजाब में नेता नहीं के बराबर है समाज में अनेकों नवयुवक हैं पर उनमें नेता पन की झलक नहीं पंजाब का राजनीतिक ढांचा ऐसा विचित्र है आर्यसमाज इसके कारण पिछड़-सा गया है। एक ऐसे नव-युवक हैं जो कि बहुत ही गम्भीर योग्य वक्ता आदर्श आर्य महान नेता पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी जी सरस्वती के होनहार आर्य रत्न श्री यश जी मालिक दैनिक मिलाप, जिनकी सारे पंजाब में धाक है ३१-१-६५ वार्षिक अधिवेशन में सम्मिलत थे और जो कुछ हुआ उसे देखकर मन में उदासीनता की हौस का वातावरण निराशा-जनक था परन्तु चुनाव के समय आश्चर्य जनक आशा की झलक देखने में आई इससे पूर्व विचार उठता था प्रधान पद का नाम आने पर सम्भव है दंगल हो जाए किसी को शायद साहस भी न हो कि किस का नाम रखें। ऋषि के भक्त उत्साही कार्यकर्ता श्री दुर्गादास शर्मा सम्पादक आर्य गज़ट ने श्री यश का नाम सभा के प्रधानपद वास्ते पेश किया धर्मवीर और कुशल प्रिंसिपल श्री भीमसैन जी बहल ने अनुमोदन किया इस बीच एक माननीय सज्जन ने पुराने कर्मठ आर्य नेता कैप्टन केशवचन्द जी का नाम प्रधान पेश किया इस दूरदर्शी नेता ने अपनी असमर्थता प्रगट की अपना नाम वापिस लिया इस अधिवेशन में एक उत्साह की लहर दौड़ पड़ी हाल वैदिक नारों से गूंज उठा तालियों की झड़ी-सी लग गई। सभा के पुराने से पुराने लोह पुरुष एवं नेता ला. इन्द्रसैन जी ने बाकी सर्व अधिकार श्री यश जी को दिए जाएं ऐसा जनता से अनुरोध किया सबने स्वीकृति दी निडर एवं साहसी नेता चौ० बलवीरसिंह जी ने जोरदार शब्दों में ला० इन्द्रसेन जी के विचारों का समर्थन किया।

चौधरी जी ने श्री यश जी से ये आशा प्रकट की कि सभा को हर दृष्टि से ऊंचा उठाएं क्योंकि सभा शिथिल अवस्था में है। इतनी भूमिका क्यों बांधी सभा बड़े नाजुक दौर से गुजर रही है प्रचारक कम हैं काम बहुत है आर्थिक संकट महान है जिस कारण सभा की ये अवस्था है। सभा को पुरानी तरह ऊंचे शिखर पर लाएं कम से कम दो तीन लाख की राशि इकट्ठी कर कर सभा को सुदृढ़ कर दिया जावे आप श्री यश जी इस कार्य को आसानी से कर सकते हैं आपका जहां पंजाब भर में प्रभाव है वहां भारत की राजधानी दिल्ली और दूसरे प्रान्तों में भी प्रभाव है सारे आर्य जगत को आप पर गौरव है। आप राजनीति क्षेत्र के भी अनुभवी नेता हैं राजनीतिक कार्य भी बहुत हैं, परन्तु वेद प्रचार विना भी तो संसार का कल्याण नहीं हो सकता इसलिए अपने महान पुरुषार्थ से स्वर्गवासी सुधारक पूज्य महात्मा हंसराज जी के अधूरे कार्य को पूरा करें पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज के आशीर्वाद से एवं प्रभु की अपार कृपा से इस शुभ कार्य में जुट जाएं प्रभु आपको शक्ति दें सभा का स्टाफ एवं प्रचारक मंडल आपका साथ देगा विश्वास करें—भगवान जहां आपका यश बढ़ाएं वहां सभा का भी बहुत यश बढ़े। इसलिए मैंने लिखा श्री यश जी सभा का यश बढ़ायें।

वाल्मीकीय राम संवाद

(श्री पिंडीदास जी ज्ञानी अमृतसर)

(गतांक से आगे)

दग्धास्माभिः पुरी तस्य
दारंघ नामिका हि या।
व्यभिचारस्य तु दोषेण
नास्तिक्येन विदूषिता॥२५॥

अर्थात—व्यभिचार तथा नास्तिकता के विष से संसिक्त होने के कारण उसकी दारंघ नामी पुरी को हमने भस्म कर दिया है।

वेद द्रोह - करो धर्मो
न स्थास्यति धरातले।
वेद बाह्यो हि यो धर्म-
श्चेश्वरस्य विरोधकः॥२६॥

अर्थात—वेद बाह्य, वेद विरोधी धर्म प्रतिकूल जो मत हैं उनका अस्तित्व हम सहन नहीं कर सकते।

अयोध्यापति भगवान राम के उपरिलिखित भाषण को सुनकर आनन्द विभोर सुमन्त्र बोला—

'प्रभो! जम्बू द्वीप निवासिनी प्रजा भाग्यशालिनी है जिसके रक्षक आप सरीखे नर रत्न हैं। आपने अपने प्रबल भुजदण्ड के प्रभाव से हिमालय से लेकर समुद्र पर्यन्त तमाम राक्षसों का विध्वंस कर दिया है। कोई समय था जबकि विन्ध्य पर्वत के दक्षिण स्थित तारिका सुबाहु, मारीच, खर-दूषण, बाली तथा रावण के प्रान्तों में कोई भी आर्यावर्त निवासी व्यक्ति सुख पूर्वक निवास नहीं कर सकता था। वहां वेद-प्रचारक ऋषि-मुनियों पर अत्याचार हुआ करते थे। परन्तु अब प्रभु कृपा और आपके प्रभाव से शत्रुओं का नाश होकर समस्त भू-मण्डल में वेद-ज्योति का प्रकाश फैल रहा है। हम आपके समक्ष प्रतिज्ञा करते हैं कि—

वेद वाक्यस्य रक्षार्थं
धर्मस्यापि पुरुषेर्ये।
योत्स्यामहे वय सर्वे
यावज्जीवन धरातले॥३४॥

अर्थात्—वेद वाक्य की रक्षा तथा सद्धर्म के प्रचारार्थ यावज्जीवन हम युद्ध करते रहेंगे। (क्रमशः)

भारत में ईसाई-मत कैसे फैला

ले०-श्री के. एन. शास्त्री एम.ए.बी.टी. साहित्यालंकार गोंदिया

(गतांक से आगे)

इसी प्रकार ईसाई मिशनों द्वारा परिचालित अस्पतालों में भी आदिवासियों को यह कह कर फुसलाया जाता है कि वहां दी गई दवाई तभी असर करेगी जब कि मरीज ईसाई धर्म को अंगीकार करे।

स्वतन्त्रता-प्राप्ति के बाद

वैसे तो ईसाई मिशनरियों के अनुचित कार्य प्रारम्भ से ही होते चले आ रहे हैं किंतु स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद भारत-सरकार की धार्मिक स्वतन्त्रता की घोषणा के साथ-साथ मिशनरियों ने अधिक द्रुतगति से कार्य प्रारम्भ कर दिया जिसका परिणाम यह हुआ कि आज ईसाइयों की संख्या पहिले की अपेक्षा बहुत अधिक है। इस समय भारत में ईसाइयों की कुल संख्या लगभग १ करोड़ है जब कि सन् १९२१ में केवल ३९ लाख थी। अकेले हैदराबाद स्टेट में १९५१ की जनगणना में १९४१ की अपेक्षा हिन्दुओं की संख्या २.८ प्रतिशत न्यून हुई है जब कि ईसाइयों की संख्या में ३२ प्रतिशत की वृद्धि हुई है। इन आंकड़ों से यह स्पष्ट है कि ईसाइयों ने भारत की स्वतन्त्रता के बाद अपनी संख्या को कितना बढ़ाया है।

विदेशी मिशनरियों की सोसाइटियों के काम के बारे में पूछे गए प्रश्नों का उत्तर देते हुए १५ अप्रैल सन् १९५३ को राज्य-परिषद् में तत्कालीन उपगृह मन्त्री श्री बी. एन. दातार ने कहा कि 'अप्रैल सन् १९५१ से पांच विदेशी सोसाइटियों ने जिनमें से ब्रिटिश और चार अमरीकी हैं, भारत में काम करने की आज्ञा मांगी। एक सोसाइटी की प्रार्थना नामन्जूर कर दी गई और बाकी चार का मामला विचाराधीन है।' उपमन्त्री ने आगे बताया कि...... इस समय भारत में ६५ कैथोलिक और ५० प्रोटेस्टेन्ट संस्थाएं कार्य कर रही हैं उपमन्त्री ने कहा कि १९५० से १९५२ तक १७८६ ईसाई मिशनरी भारत में आये। इनमें कामनवेल्थ देशों से आये मिशनरी शामिल नहीं हैं जो विदेशियों पर लागू होने वाले कायदे-कानूनों के आधीन नहीं हैं। इनके अतिरिक्त हजारों देशी ईसाई प्रचारक भी इस कार्य में संलग्न हैं।"

उपर्युक्त प्रमाणों से यह स्पष्ट है कि ईसाइयों की संख्या और प्रचार व प्रसार कार्य की गति बड़ी तेजी से बढ़ रही है और इस प्रकार प्रतिदिन अनेकों हिन्दुओं को ईसाई बनाया जा रहा है। अकेले छत्तीसगढ़ में १ वर्ष में ईसाई मत-प्रसारार्थ अमेरिका ने २० लाख डालर दिये हैं।

अनुचित धर्म-परिवर्तन पर रोक

उपर्युक्त उदाहरणों से स्पष्ट है कि ईसाइयों की संख्या दिन-दूनी, रात चौगुनी बढ़ रही है किन्तु भय, धमकी, बल, प्रलोभन, दबाव या अनुचित प्रभाव से धर्म-परिवर्तन के लिए विवश करना या किसी को अबोध अज्ञान और अनजाने में विधर्मी बनाना सर्वथा अनुचित, अवैधानिक और अन्याय पूर्ण है। ईसाई मिशनरियों द्वारा-परिवर्तन का कार्य न केवल धार्मिक दृष्टि से अवांछनीय है किन्तु धर्म-परिवर्तन की ओर में विदेशी मिशनरियों की बड़ी बड़ी राजनीतिक चालें व हथकंडे हैं जिनसे देश को बड़ा नुकसान पहुंच रहा है। अतः इस प्रकार के धर्म परिवर्तन पर सरकार द्वारा तुरन्त रोक लगायी जानी चाहिए।

यह लेख सन् १९५४ में जब ईसाई मिशनरियों की बेजा हरकतें बड़े जोर-शोर से चल रही थीं और मध्य प्रदेश शासन ने उनकी जांच 'नियोगी' समिति की नियुक्ति की थी, लिखा गया था एवं आर्य मित्र, के ईसाई-मत-समीक्षक में प्रकाशित भी हुआ था। आज भी ईसाइयों की गति-विधियां वही बनी हैं बल्कि दिनों-दिन बढ़ रही हैं अस्तु यह लेख आज भी उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि १० वर्ष पूर्व था। अतएव इसे पुनः प्रकाशित किया जा रहा है।

चरित्र निर्माण में भारी रुकावटें—६

लेखक—श्रीकिशोरीलाल जी 'प्रेम' रेणुका जिला सिरमौर (H. P.)

भाग (१)—चरित्र का शत्रु मांसाहार :—(मांस मनुष्य का प्राकृतिक भोजन नहीं) संसार में दो प्रकार के जीव हैं—एक मांसाहारी जैसे शेर, चीता, कुत्ता तथा बिल्ली आदि। दूसरे शाकाहारी जैसे गाय, भैंस, भेड़ बकरी तथा घोड़ा आदि।

(१) शेर, कुत्ता आदि की जन्म के समय आंखें बन्द होती हैं कुछ समय के बाद खुलती हैं परन्तु गाय, भैंस, आदि की आंखें जन्म होते ही खुल जाती हैं मनुष्य की आंखें भी जन्म होते ही खुल जाती हैं इसलिए मनुष्य मांसाहारी नहीं। (२) शेर, चीता आदि को पसीना नहीं आता परन्तु गाय तथा घोड़े को पसीना आता है मनुष्य को भी पसीना आता है इस लिए मनुष्य मांसाहारी नहीं है।

३. शेर तथा कुत्ता आदि जिह्वा से पानी पीते हैं परन्तु गाय, भैंस आदि मुंह से पानी पीते हैं मनुष्य भी मुंह से पानी पीता है इस लिए वह मांसाहारी नहीं है "शेर तथा कुत्ते आदि के दांत और पंजे तेज और नोकीले होते हैं आंतें भी छोटी होती हैं। गाय तथा भैंस आदि के दांत और पंजे नोकीले और तेज नहीं होते आंतें भी लम्बी होती हैं। मनुष्य के दांत और पंजे नोकीले नहीं होते और आंतें भी लम्बी होती हैं इसलिए मनुष्य मांसाहारी नहीं है। मांसाहारी जीव स्वभाव से ही मांस खाने लगते हैं परन्तु मनुष्य को जब तक मांस खाना न सिखाया जाए वह कदापि मांस नहीं खा सकता।

६. मनुष्य की आकृति बन्दर से मिलती है और बन्दर मांसाहारी नहीं है इसलिए मनुष्य भी मांसाहारी नहीं।

७. आप बाजार में जा रहे हैं फलों की दुकानों को देखते हैं सेब, संतरे, अनार तथा अंगूरों को देख कर आपका मन प्रसन्न हो जाता है प्रफुल्लित हो जाता है परन्तु जब कसाइयों की दुकानों के आगे से गुजरते हैं जहां खून हड्डियां तथा सड़ी हुई खालें पड़ी होती है जिसे देखकर आपके मन में घृणा उत्पन्न होती है। इसलिए कि मांस आपका प्राकृतिक भोजन नहीं स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से :—अमेरिका के अन्दर एक परीक्षण हुआ। समान आयु तथा समान स्वास्थ्य के तीन बच्चों को लिया गया। एक भोजन के रूप में केवल दूध दिया गया दूसरे को फल और तीसरे को मांस दिया गया। कुछ समय बाद परीक्षा हुई। स्वास्थ्य में फलाहारी प्रथम रहा और दूधाहारी द्वितीय। बौद्धिक विकास में दूधाहारी प्रथम फलाहारी द्वितीय और बेचारा मांसाहारी दोनों बातों में पीछे रहा। (क्रमशः)

डी. ए. वी. कालिज प्रबन्ध-कर्तृ सभा, नई दिल्ली

का चुनाव सन् १९६५ के लिए श्री मेहरचन्द्र जी महाजन पूर्व चीफ जस्टिस भारत सरकार के नेतृत्व में २४-२-६५ को सम्पन्न हुआ

प्रधान—डा० गोवर्धनलाल दत्त जी उपकुलपति-उज्जैन यूनिवर्स्टी

उपप्रधान—डा० मेहरचन्द्रजी महाजन, भूतपूर्व चीफ जस्टिस आफ इण्डिया

„ राय बहादुर मनमोहनजी, भूतपूर्व डिप्टी डायरैक्टर, पंजाब

„ राय बहादुर डा० महाराज कृष्ण जी कपूर।

„ मिस्टर जस्टिस जीवनलालजी कपूर, भूतपूर्व जज सुप्रीमकोर्ट

„ श्री सूर्यभानु जी, उपकुलपति

„ राय बहादुर बृजमोहनलाल, भूतपूर्व चीफ इंजिनियर

प्रधानमंत्री—राय बहादुर डा० गणेशदास कपूर।

मन्त्री—श्री लालचन्द खन्ना, भूतपूर्व इन्कमटैक्स कमीश्नर।

„ श्री दौलतराम महता, भूतपूर्व डायरेक्टर हैल्थ सरवसिज।

„ राय बहादुर अमरनाथ पुरी, भूतपूर्व कलैक्टर आफ कस्टमज

„ श्री एस. वर्मा, चीफ एकाउंटेंट पंजाब नैशनल बैंक

„ श्री बृजलाल धवन, एडवोकेट

„ श्री आर. एन. गुप्ता, मैसर्ज आर. एन. गुप्ता एंड कम्पनी

कोषाध्यक्ष—श्री पन्नालाल सूद

„ श्री जैसाराम

„ „ तीर्थराम तुल्ली, जनरल मैनेजर, न्यू बैंक आफ इण्डिया।

„ श्री सेवाराम कपूर, भूतपूर्व जनरल मैनेजर, लक्ष्मी कमर्शियल बैंक लिमिटेड

जी. डी. कपूर
प्रधान मन्त्री

आर्य समाज शोलापुर के समाचार

(१) नये वर्ष के लिए सर्व सम्मति से निम्न निर्वाचन किया गया :—प्रधान प्रिं. भगवान दास जी, उपप्रधान श्री हीरालाल जी एंव श्री अशोक कुमार जी आर्य, मन्त्री श्री चन्द्रभानु जी, उपमन्त्री श्री अंबादास जी व प्रो. गजेन्द्र जिज्ञासु, कोषाध्यक्ष श्री सेठ वंशीलाल जी। अन्तरंग के शेष सभा सद चुनने का का अधिकार प्रधान जी को दिया गया।

(२) समाज की अंतरंग ने सर्वसम्मति से प्रस्ताव स्वीकार किया कि दयानन्द प्रबंध कर्ता सभा से प्रार्थना की जाय कि प्रिं. भगवान दास जी को शोलापुर में ही रहने के लिए प्रेरित किया जाय अन्यथा दक्षिण भारत में आर्य समाज के संगठन को भारी हानि होगी।

(३) निश्चय हुआ कि कालेज कमेटी को एक हजार रुपया भेज कर एक प्रतिनिधि भेजने का अधिकार मांगने की प्रार्थना की जाय।

(४) श्री सेठ बलदेव जी, श्री अशोक कुमार जी, श्री अंबादास जी, श्री सेठ संगा जी, श्री गुणवन्त जी पाटील आदि दानदाताओं का धन्यवाद किया गया।

(५) सीढ़ियों के निर्माण के लिए सेठ बलदवा जी व सेठ वंशी लाल जी ने क्रमशः १००१ व २००० रुपये का दान दिया।

(५) आर्य समाज के वार्षिक अधिवेशन के अवसर पर सेठ बलदवा जी के ५४वें जन्म दिवस पर उन का अभिनन्दन किया गया।

(७) पोप के आगमन पर आर्य समाजी कार्यकर्ताओं को स्थानबद्ध करने पर सरकारी नीति की निन्दा की गयी। स्थानबद्ध किये गये आर्य वीरों को बधाई दी गयी।

(८) देश में बढ़ रहे नैतिक पतन व भ्रष्टाचार पर चिन्ता प्रकट की गयी। सरकार से मांग की गयी कि भ्रष्टाचार को रोकने के लिए अपराधियों को घोर दण्ड दे।

(९) बम्बई प्रतिनिधि सभा के लिए प्रतिनिधि भेजने का अधिकार प्रधान जी को दिया गया।

करनाल जिला में वेद प्रचार की धूम

श्री ठा० दुर्गासिंह जी तुफान द्वारा सम्पन्न कार्यक्रम

आर्यसमाज मैंथी खुर्द का उत्सव २३-२-६५ से २५-२-६५ तक

„ तरावड़ी का उत्सव २६ से २८ फरवरी तक

„ सुवरी २-३-६५ से ४-३-६५ तक

„ दहा ५-३-६५ से ७-३-६५ तक

„ कुंजपुरा ८-३-६५ से १४-३-६५ तक

„ शामगढ़ १६-३-६५से२१-३-६५ तक

„ सुलतानपुर२६-३-६५से२८-३-६५तक

ये उपरोक्त उत्सव चौ०शिवराम जी व श्री डा० गणेशदास जी की निगरानी में हो रहे हैं।

आर्यसमाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग नई दिल्ली

का सन १९६५ के लिए निम्न प्रकार से चुनाव सम्पन्न हुआ।

प्रधान— श्री तीर्थराम जी झांडा

उप-प्रधान—राय बहादुर डा० गणेशदास कपूर

„ —प्रिंसिपल शांति नारायण

„ „ हरिश्चन्द्र जी

„ —श्री गणपतराय तलवाड़

„ „ लालचन्द जी खन्ना

„ „ सेवाराम जी कपूर

„ „ दयाराम जी शास्त्री

मन्त्री— „ सोमनाथ जी गुप्त

उप-मंत्री-„ दरबारी लाल जी

„ „ मुन्शीराम सचदेवा

„ „ प्रकाशचन्द जी महता

„ „ गोपालकृष्ण दत्त

„ „ राधाकृष्ण ठाकुर

„ प्रो. मोहनलाल जी

„ श्री भगवत स्वरूप जी

कोषाध्यक्ष „ बृजलाल सोनी

सहायक„-„ प्रेमकृष्ण भारद्वाज

लेखानिरीक्षक—श्री रामशरण कपूर

—दरबारी लाल उप-मन्त्री
आर्यसमाज (अनारकली)
मन्दिरमार्ग नई दिल्ली

केन्द्रीय आर्य सभा, कानपुर

कानपुर से भगाई गई हिन्दू लड़की रहस्य मय ढंग से बरामद

दो मुसलमान युवक गिरफ्तार

जूही लेबर कालौनी से गत २६ जनवरी की संध्या में एक पंजाबी ब्राह्मण परिवार की १४ वर्षीय कन्या कुमारी हर्ष बाला को जब वह बाजार जा रही थी, रहस्यमय ढंग से भगा दिया गया था। इस घटना से काफी संसनी फैल गई थी चूंकि भगाने वाले दो मुसलमान युवक थे। इसकी सूचना यहां के प्रसिद्ध आर्य समाजी नेता श्री देवीदास जी आर्य (सभासद महापालिका) को दी गई। श्री आर्य ने पुलिस अधिकारियों से मदद मांगी। अन्त में दूसरे ही दिन लड़की को भगाने वाले मास्टर अब्दुल सतार सिद्दीकी व उसके एक साथी को गिरफ्तार कर लिया उनके कब्जे से लड़की की कुछ चीजें भी पुलिस को मिलीं। लेकिन लड़की नहीं मिल सकी। अभियुक्त ने अपना अपराध भी स्वीकार कर लिया। यह सिद्दीकी मास्टर एज.जी. स्कूल में लड़की को पढ़ाता था।

एस. पी. सिटी श्री जे. एन. अवस्थी ने श्री आर्य को विश्वास दिलाया कि वे बाद में चैन लेंगे जब तक लड़की बरामद नहीं होती। श्री आर्य और श्री अवस्थी के प्रयत्नों का यह फल निकला कि यह लड़की कल चमन गंज के निकट रक्षा में किसी अन्य शहर ले जाते हुए पकड़ ली गई। रक्षा के साथ चलने वाले दो आदमी भाग गये। लड़की शारीरिक व मानसिक पीड़ा से अति अधिक पीड़ित है। इस को पुलिस ने परेड अस्पताल भेज दिया। पुलिस शेष अभियुक्तों की तलाश में है।

जाति भूषण, मन्त्री

रजिस्टर्ड नं० पी०१२१

आज लगाओ नारा

(प्रणेता–नामदेवराव गनगने "पथरोट")

देश स्वतन्त्र हुआ है, किन्तु हिन्दी पड़ी थी कारा।
लो मुक्त हुई है हिन्दी माता आज लगाओ नारा ॥
शतशः कण्ठों से निकली थी इन्हीं स्वरों की धारा।
हिन्दी भाषा अमर रहे ये आज लगाओ नारा ॥
जिसकी मंगल मनोकामना करते पुष्प चढ़ाते।
वे सभी पुरातन काव्य-मनीषी मन ही मन हर्षाते ॥
महावीर, जयशंकर ने था अपना जीवन वारा।
लो मुक्त हुई है हिन्दी माता आज लगाओ नारा।
कविकुल ने निज शक्ति लगाकर काव्य-वाटिका सींची।
हा ! अपनों ने ही वर्षों तक थी इसकी गरदन भींची ॥
जो सुरभित करती सदा सर्वदा जीवन-वृक्ष हमारा।
लो मुक्त हुई है हिन्दी माता आज लगाओ नारा ॥
भारत के आंगन में मादक वसन्त फिर से आया।
साढ़े सत्रह वर्षों जिसकी कारा में कृश काया ॥
स्वागत हेतु आज हिन्दी के उसने देश निहारा।
लो मुक्त हुई है हिन्दी माता आज लगाओ नारा ॥
महा प्रतापी दयानन्द की सहर्ष विजय मनाओ।
हुई साधना हिन्दी प्रेमियो की वह सफल सुनाओ !
हिन्दी प्रेमियो ! दिवस मनाकर बुलन्द करो नंगारा।
लो मुक्त हुई है हिन्दी माता आज लगाओ नारा ॥

पुस्तक परिचय

यज्ञ और हवन

ले० वेद पथिक धर्म वीर आर्य झंडाधारी।

मुद्रक—सार्वदेशिक प्रेस दरिया गंज देहली—७

२०×३०=१६ पर छपी पुस्तक का मूल्य २५ पैसे, पृष्ठ सं० १६ वैसे तो श्री धर्मवीर जी की अनेक रचनायें आर्य संसार में प्रकाशित होकर वैदिक विचार धारा को प्रोत्साहित करके उसके भंडार को पूर्ण कर रही हैं। लेकिन आज आप उपरोक्त सुमन लेकर उसकी सुगन्ध से आर्य जगत को आप्लावित कर रहे हैं। इस पुस्तक की अनेक गण्यमान्य नेताओं और आर्य संन्यासियों ने मुक्तकंठ से प्रशंसा की है। हमारी प्रबल इच्छा है कि पं जी का परिश्रम तभी सफल होगा। जबकि इस पुस्तक का प्रत्येक आर्यगृह, आर्य संस्थाओं, स्कूलों, कालजों व कन्या विद्यालयों में पर्याप्त संख्या में प्रचार हो।

सौ या इस से अधिक प्रतियां मांगने पर २५ प्रतिशत कमीशन दिया जाएगा।

प्राप्तिस्थान–वेदपथिक धर्मवीर आर्य झंडाधारी सराय रुहेला नई देहली—५

भारतीय स्वाधीनता संग्राम और आर्य समाज

श्री राजेन्द्र जी जिज्ञासु एम. ए. आर्य जगत के प्रसिद्ध वक्ता तथा है आपकी अनेक रचनाएं समय पर प्रकाशित होकर आबाल वृद्ध तथा विशेषकर नव युवकों की नसों में उत्साह भर देती हैं।

पहले आप पंजाब की आर्य युवक संस्थाओं के प्रकाश स्तम्भ थे जब से आप दक्षिण में पधारे हैं तब से वहां आर्य समाजों में नवीन जागृति पैदा कर दी है। स्थान २ पर पर्यटन करके वैदिक धर्म का मंत्र फूंक रहे हैं ।। आपकी मनोवृत्ति का इस पुस्तक के नाम से ही आभास हो जाता है। आपका प्रायः सभी साहित्य आर्य समाज का दिग्दर्शन कराने तथा उसकी ख्याति को बढ़ाने का काम देता है। आर्य समाज ने देश को स्वतन्त्र कराने में क्या-क्या कार्य किए हैं इसका संक्षिप्त तथा तथ्यपूर्ण वर्णन इस छोटी-सी पुस्तक में आपको पढ़ने को मिलेगा। मूल्य—४० पैसे एक प्रति का।

प्राप्ति स्थान : —मन्त्री आर्य समाज शोलापुर।

५वां हरयाणा आर्य महा सम्मेलन रोहतक

१९-२०-२१ मार्च १९६५ को रोहतक में ५वां हरियाणा आर्य महा सम्मेलन सम्पन्न हो रहा है जिसकी तैयारियां बड़े उत्साह से हो रही हैं। इस सम्मेलन में अनेक समयोपयोगी प्रस्ताव स्वीकृत करके उन्हें क्रियात्मक रूप दिया जाएगा।

सम्मेलन की रसीद बुक छप चुकी है जो आर्य सज्जन मंगाना चाहें वे कार्यालय दयानन्द मठ रोहतक से मंगा सकते हैं। स्वागत समिति का सदस्य बनने के लिए ५) रु० फीस है तथा प्रतिनिधि बनने की फीस २) रु० है।

भरतसिंह आर्य मंत्री
दयानन्द मठ रोहतक

आर्य जगत का
ऋषि-बोध-अंक

प्रति वर्ष की भान्ति इस बार भी आर्य जगत का ऋषि-बोध अंक २ मार्च १९६५ को बड़ी सजधज के साथ पुस्तकाकार में प्रकाशित हो रहा है। मुख पृष्ठ पर महर्षि दयानन्द की की शिवरात्री का तिरंगा चित्र होगा। यह विशेषांक पाठकों को शिवरात्री से चार दिन पूर्व मिल जाएगा। विशेषांक २१, २८ फरवरी और ७ मार्च का सम्मिलित अंक होगा। इस विशेषांक में उच्चकोटि के विद्वानों, महात्माओं तथा नेताओं के विचार आपको पठनार्थ मिलेंगे। मनमोहक समयोपयोगी कविताओं से अलंकृत होगा। सभी आर्य समाजों व संस्थाओं से निवेदन है कि अधिक से अधिक संख्या में अपने २ आर्डर १९.२.६५ तक देने की कृपा करें। तथा प्रसाद रूप में वितरण करें।—व्यवस्थापक

मुद्रक व प्रकाशक श्री सन्तोषराज जी आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर द्वारा वीर मिलाप प्रैस, मिलाप रोड जालन्धर से मुद्रित तथा आर्यजगत कार्यालय महात्मा हंसराज भवन निकट कचहरी जालन्धर शहर से प्रकाशित मासिक—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर



टेलीफोन नं० ३०४७ [आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधिसभा पंजाब जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd. No. P. 121

एक प्रति का मूल्य १३ नये पैसे वार्षिक मूल्य ६ रुपये

वर्ष २५ अंक ११) १ चैत्र २०२१ रविवार—दयानन्दाब्द १४०— १४ मार्च १९६५ (तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

वेद सूक्तय:

अग्नेरपि दधामि तम्

जो भी हमारा शत्रु वैरी होगा, मारने या हमला करने आयेगा। वह सुन लेवे। उसे मैं अग्नि के मुख में डाल दूंगा। उसे भस्म करने के लिए अग्नि की लपटों में फैंक दूंगा। मेरे हाथों से किसी प्रकार भी बच कर नहीं जायेगा।

तं प्रत्यस्यामि मृत्यवे

मैं अपने देश के, धर्म व सभ्यता के वैरी शत्रु को पकड़ कर मृत्यवे-मौत के सामने प्रत्यस्यामि-फैंक दूंगा उसे मौत के मुख में देकर उस से सर्वथा छुटकारा पा लूंगा। वैरी मुझ से बच कर जा नहीं सकेगा।

द्विषतां वर्च आददे

जितने भी मेरे दुश्मन बने हैं वे सारे ही वैरी कान खोल कर एक बार नहीं सौ बार सुन लेवें कि मैं अपनी शक्ति से, बल से उन सब शत्रुओं के बल का छीन लूंगा। मेरे सामने तो उन में से किसी की भी नहीं चलेगी।

अथर्ववेद से

वेदामृत

ओ३म् अयाश्चाग्नेऽस्यनभिशस्तिपाश्च सत्यमित्त्व मयासि। अयानो यज्ञं वहास्ययानो धेहि भेषजं स्वाहा॥ इदमग्नये अयसे इदन्न मम॥

कात्यायन श्रौ० २६-११

अर्थ—हे परमेश्वर! आप (अयाः च) अन्दर बाहिर सर्वत्र व्यापक (असि) हो (अग्ने) हे अग्नि देव प्रभो! आप ही (अनभिशस्ति पाः) जिन में किसी प्रकार का कमी और दोष नहीं है, निर्दोष हैं, उन लोगों के पालन करने वाले हो। यह बात (सत्यम्) सत्य (इत्) ही है कि आप (अया असि) सुख और कल्याण के करने वाले हो। आप (अया) कल्याण कर्ता हो (नः) हमारे इस (यज्ञम्) यज्ञ आदि शुभ कर्म को (वहासि) वहन करते ले जाते हो। हे (अया) सुखदायक देव! (नः) हमें (धेहि) धारण कराओ, प्रदान करो (भेषजम्) औषधियों के रूप में मंगल वस्तुएं। यह आहुति सुखदायक अग्नि रूप प्रभु के अर्पण है मेरे लिए नहीं है।

भाव—दया के सागर हे दयालो देव! आप सुखों के भंडार होकर सदा सुख देने वाले हो, अया हो कल्याण कारक हो। निर्दोष और पवित्र मानियों विद्वानों की पालना करते हो। इस में तनिक भी सन्देह नहीं है। कृपा करो। यह हमारा यज्ञ शुभ कर्म आप के अर्पण है। शक्ति हमारे जीवन में ऐसी भर दीजिए, ताकि ऐसे २ पवित्र यज्ञ आप की कृपा से दूर २ तक फैलाते रहें। हमें मंगलमयी औषधियां वनस्पतियां प्रदान करें—सं०

आर्यसमाज लारेंस रोड

अमृतसर की ओर से श्रीयुत यश जी

की सेवा में सभा वेद प्रचार में १००१) रुपये की थैली भेंट

आर्यसमाज लारेंस रोड अमृतसर में रविवार के विशेष सत्संग अधिवेशन में सभा प्रधान माननीय श्रीयुत यश का सारगर्भित एवं प्रभावशाली भाषण हुआ। इस के पश्चात समाज के महामन्त्री डाक्टर देवव्रत जी महाजन ने आर्यसमाज की ओर से सभा के प्रधान जी का स्वागत सम्मान करते हुए पुष्पमाला के साथ सभा के वेद प्रचार के लिए १००१) रुपयों की थैली भेंट की।

संस्थाता—श्री संतोषराज जी सम्पादक—त्रिलोक चन्द्र शास्त्री

महात्मा हंसराज जन्म शताब्दी

(ले० श्री यश जी प्रधान आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा जालन्धर)

महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज ने अपनी पुस्तक 'हंसराज' में लिखा है—

'तब बी० ए० पास कर लेना ई० ए० सी० बन जाने के बराबर था। यदि हंसराज जी चाहते तो अपने मित्र राजा नरेन्द्रनाथ की तरह डिप्टी कमिश्नर और फिर कमिश्नर बन कर अपनी गरीबी मिटा डालते। घर के लोग उस दिन की प्रतीक्षा में थे जब हंसराज जी ग्रेजुएट बनकर दौलत से खेलने लगें या कोई सरकारी नौकरी स्वीकार कर घर की मुसीबतें समाप्त कर दें। परन्तु सूर्य के प्रकाश का कोई समेट नहीं सका। नदी एक खेत को नहीं सींचती। बादल एक पर्वत पर नहीं बरसता। और घर वालों की आशाएं, सम्बन्धियों की उमंगें, दौलत का चाव हंसराज को कैद नहीं कर सका! उन्होंने अपना जीवन देश और समाज के अर्पण कर दिया। और जिस महात्मा हंसराज ने अपना घर संवारने की बजाय अपने समाज को बनाने के लिए इतना महान त्याग किया, उसी महात्मा हंसराज की जन्म-शताब्दी इस वर्ष मनाई जा रही है। आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के निर्णय के अनुसार जन्म-शताब्दी समारोह महात्मा जी के जन्मदिन १९ अप्रैल से आरम्भ होकर १५ नवम्बर को समाप्त होगा। १५ नवम्बर को महात्मा हंसराज जी का स्वर्गवास हुआ था। जिस महान् आत्मा ने अपने जीवन में कभी मान की भूख अनुभव नहीं की, उन के जन्म के सौ वर्ष बाद यदि हम उन्हें याद करते हैं तो इस से महात्मा जी को नहीं, हमें ही लाभ हो सकता है। महात्मा हंसराज जी का सम्पूर्ण जीवन तप और त्याग का जीवन था। आज यदि हम उन की जीवन गाथा को दोहराते हैं तो इसलिए कि उनके तप और त्याग से हम स्वयं भी प्रेरणा ले सकें।

हमारे देश में आज भी पढ़े-लिखे लोगों की तो कमी नहीं है बल्कि पढ़े-लिखों की संख्या अब पहले से बहुत अधिक हो गई है। पहले तो पढ़े लिखों की खोज करनी पड़ती थी, अब दरबदर बेकार फिरते हैं। कमी यदि है तो तप और त्याग की। ऐसे लोगों की जो अपने जीवन की आहुति देकर समाज और राष्ट्र की सेवा कर सकें। सामयिक रूप से कहीं मान या यश मिलता हो तो कई लोग भावनाओं में आकर कुर्बानी देने के लिए भी तैयार हो जाते हैं। इस कुर्बानी के महत्व को मैं अपेक्षा नहीं करता परन्तु सही कुर्बानी वही है जो निष्काम भाव से की जाए। और निरन्तर की जाए। लगन और श्रद्धा के साथ अपने काम में लगे रहने वाले तो आज कहीं नजर नहीं आते। समाज का ढांचा कुछ न कुछ तो सदा बना रहता है परन्तु उसकी बुनियादें तभी सुदृढ़ होती हैं जब उसका आधार तप और त्याग करने वाले महात्मा हों। पंजाब में यदि आर्य समाज एक जीवित सशक्त संस्था बन सकी तो केवल इसलिए नहीं कि इसके सिद्धांत अच्छे थे बल्कि इस लिये कि इसे तप और त्याग करने वाले सेवक मिल गए। इन सेवकों में महात्मा हंसराज का प्रमुख स्थान है,

महात्मा हंसराज जी अपने तप और त्याग से केवल शिक्षण संस्थाओं का ही जाल नहीं बिछा दिया बल्कि उत्तरी भारत में वेद प्रचार का प्रबन्ध करने के साथ साथ देश-भर में हर जगह दुखी लोगों की सहायता का अभियान भी चलाया। बीकानेर में अकाल पड़ा या कांगड़ा में भूचाल आया, मालाबार में दंगे हुए या कोहाट में आतंक फैला, क्वेटा का शहर खण्डहर बन गया या गढ़वाल में लोग भूखे-प्यासे मरने लगे जहां कहीं भी मानवता ने आवाज दी, महात्मा हंसराज जी अपने साथियों सहित वहां पहुंच गए। वास्तव में आर्य समाज की शक्ति बड़े-बड़े स्कूल और कालिज नहीं थे, लम्बी-चौड़ी सम्पत्तियां भी नहीं थीं, आर्य समाज की शक्ति वह सेवा थी जो उसके सेवक अपने प्राणों की बाजी लगा कर किया करते थे। अब तो भगवान की कृपा से अकाल कम पड़ते हैं और यदि पड़ें भी तो अपने देश में अपना राज्य होने के कारण किसी को भूखों नहीं मरना पड़ता। वैसे भी अब प्रबन्ध करना बहुत आसान है। थोड़े से समय में ही हर जगह अनाज की भरी हुई गाड़ियां पहुंच जाती हैं। परन्तु उन्नीसवीं शताब्दि के अन्तिम दिनों और बीसवीं शताब्दि के प्रारम्भिक वर्षों में परिस्थितियां इससे बिल्कुल भिन्न थीं। जहां कहीं अकाल पड़ता, लाखों लोग मौत के शिकार होने लगते, भूख से बेबस माताएं अपने बच्चे बेच देतीं, पिता अपनी लड़कियां बेच डालते। ऐसी घटनाएं भी होतीं कि जब एक-एक सेर अनाज के बदले मां-बाप ने अपने जिगर के टुकड़ों को दे डाला हो। तब महात्मा हंसराज जी और अपने दूसरे नेताओं के मार्ग-दर्शन में आर्य समाज मैदान में उतरता था। उसके सेवक रुपया, अनाज और कपड़े लेकर अकाल-ग्रस्त क्षेत्रों में पहुँच जाते। इसी प्रकार यदि कहीं भूचाल आता, बाढ़ से गांव और क्षेत्र तबाह हो जाते, आर्यसमाज उनकी सहायता करता। यह थी आर्यसमाज की शक्ति का रहस्य। आर्यसमाज की इसी सेवा ने लाखों नवयुवकों को अपनी ओर खींचा था। आज सेवा की भावना कम हो गई, संस्थाओं का मोह अधिक। इसी लिए आर्य समाज कमजोर हो गया। सेवा की यह भावना तप और त्याग करने वाले महात्मा ही पैदा कर सकते हैं। महा-पुरुष सदा नहीं रहा करते परन्तु उनका जीवन प्रकाश का एक स्थायी स्तम्भ होता है। उनकी याद मनाने का अर्थ उन्हें मान देना नहीं बल्कि प्रकाश के स्तम्भ से प्रकाश प्राप्त करना है।

महात्मा हंसराज की सबसे बड़ी विशेषता एक और भी थी। उन्होंने केवल स्वयं ही आर्यसमाज और मानवता की सेवा नहीं की बल्कि सेवकों की एक पंक्ति खड़ी कर दी। उन्होंने एक ऐसी शमा जलाई जिसके इर्द-गिर्द परवाने जमा होने लगे। ऐसे परवाने जिन्हें अपने जीवन की कोई परवाह नहीं थी। आज पंजाब और भारत के दूसरे भागों में आर्य समाज के इतने स्कूल और कालिज नजर आ रहे हैं, यह उन परवानों की कुर्बानी का ही फल है जो जीवन भर तिल-तिल जलते रहे लेकिन उस शमा को बुझने नहीं दिया। परवाने अब भी आ सकते हैं केवल शमा को रोशन करने की आवश्यकता है। इस आवश्यकता को पूरा करने के लिए ही आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा ने महात्मा हंसराज जन्म-शताब्दी मनाने का फैसला किया है। एक बात स्पष्ट कर दूं, जन्म-शताब्दी मनाने का फैसला प्रादेशिक सभा ने अवश्य किया है परन्तु महात्मा हंसराज केवल आर्य समाज के नहीं थे। उन्होंने सम्पूर्ण

(शेष पृष्ठ ३ पर)

आर्य जगत्

वर्ष २५] रविवार २०२१, १४ मार्च १९६५ [अंक ११

देवता की जयन्ती

आर्य प्रादेशिक सभाने इस अप्रेल की १७-१८-१९ तारीख को जालन्धर में उस महान स्वर्गीय देवता महात्मा हंसराज जी की जन्म शताब्दी बड़े ही समारोह से मनाने का आयोजन आरम्भ कर दिया है। सभा के प्रधान माननीय यश जी तथा सारे अधिकारी सज्जन इस काम में जुटे हुए हैं। सभा का समस्त प्रचारक वर्ग भी तथा अपनी समाजें व संस्थाएं भी इस में रात दिन एक कर रही हैं। समय बहुत थोड़ा है पर काम बड़ा विशाल है। वह स्वर्गीय देवता साधारण आत्मा न थी। महान आत्मा थी। किसी एक के भी न थे वरन् सारे जन जीवन के लिए उन का जीवन था। भारत में और विशेष कर पंजाब मे जा विशाल डी. ए. वी. की विशाल सरस्वती नदी प्रचार की बहती है इस के महान मानस तो महात्मा जी थे। उन के तप, त्याग तथा बलिदान ने भारत में शिक्षा का भारी काम किया है। जन्म के सौ वर्ष के बाद उन की शताब्दी का समारोह उन के अनुरूप ही मनाना चाहिए। यही प्रबन्ध किया जा रहा है उनकी स्मृति में एक सप्ताह पहले बड़े २ नेताओं के प्रमुख प्रवचन कराने का आयोजन भी जा रहा है। यह जयन्ती समारोह अप्रैल से आरम्भ हो कर नवम्बर तक चलता रहेगा। अनेक नगरों में भिन्न २ समय मेंशानदार समारोह होते रहेंगे। बड़ा भारी जलूस भी निकलेगा जो उत्साह एवं उल्लास का परिचय देगा। समय बहुत थोड़ा है। सामने भारी काम पड़ा है। इसे सब ने मिल कर करना है। इस लिए हम इस अवसर पर अपनी सारी शिक्षण संस्थाओं के माननीय अधिकारियों प्रबन्धकों तथा शिक्षा विशारदों की सेवा में नम्रता से निवेदन करना चाहते हैं कि उस देवता की याद में मनाये जाने वाले इस महान समारोह के लिए तन, मन, धन से जुट जाएं। जिस महान् तपस्वी ने अपना यौवन भरा जीवन आर्य-समाज की सेवा में समर्पित कर दिया। सारी आयु लिप्सा रहित होकर सेवा कार्य में लगे रहे। उसकी शताब्दी बड़े ही शानदार ढंग से मनानी चाहिए। सभा अपने कर्तव्य को निभाने चली है सारी संस्थाएं और समाजें दिल खोलकर इस आवश्यक काम में जुट जायें। सब मिल कर सहयोग देवें तभी देवता की याद उचित ढंग से मनायी जा सकती है। सभा के हाथ तथा अंग संस्थाएं और समाजें ही हैं। उनके सहयोग से ही यह विशाल काम उत्तमता से सम्पन्न किया जा सकता है। इस काम के लिए सभा ने महात्मा हंसराज शताब्दी धन निधि को एकत्रित करने के लिए नोटों की किताबें छपवा दी हैं। सारे स्कूलों में कालेजों में तथा समाजों में ये नोट भेजे जा रहे हैं प्रकाशित अपीलें भी भेजी जा रही हैं। उनसे अनुरोध किया जाता है कि आजके युग में अपने महान नेताओं की भव्य स्मृति समाज और संस्था को बहुत ऊंचा कर देती है। यह अप्रैल का समारोह इतनी शान से मनाया जाए कि जिसे देखकर सारे गौरव से मस्तक ऊंचा कर लेवें। एक बात हमें स्मरण रखनी चाहिए कि ऐसे समारोह बार-बार तो आया नहीं करते। एक बार ही आते हैं। उसके लिए आस्था में कोई कमी न की जाए। आज से इस काम में दिल खोलकर जुट जाएं।

—त्रिलोकचन्द्र

भावगीत—

विडम्बना

(ले०—श्री डा० देवव्रत जी महाजन मन्त्री आर्य समाज लारेंस रोड अमृतसर)

मान्यवर मन्त्री श्री डाक्टर जी बड़ी मंजी भाषा में बोलते तथा लिखते हैं। इन भाव गीतों में उत्तम भाषा में जीवन का सन्देश दिया है—मधुर रस का साहित्य का स्वादन करें—

जर्जर कुटीर के प्रांगण में
दीपक जल रहा था
मन्द-मन्द लौ से
तम हरता, प्रकाश देता,
रोम-रोम जलता-कर्तव्य संतुष्ट।
लौ को चूमने
सर्वस्व बलिदान को तत्पर
कतिपय भ्रमर
मधुर संगीत सुना रहे थे-दीपक को
डाह से जल उठी बिजली की बत्ती
साथ के भव्य-भवन में
इंगित से पुकारा भ्रमरों को
प्रकाश यौवन चाहने से न ?
लो जी भरकर आनन्द लूटो
और छेड़ दो अपनी अनूठी तानें
अपने को भूल जाऊं मैं—
और अपने में खो जाओ तुम।
हंस कर उत्तर दिया पतंगे ने—
दम्भिनी! तेरा निज का है ही क्या ?
जिस को भूलेगी तू
यह सौंदर्य, प्रसाधन क्या है
निज का रूप ही क्या है तेरा ?
पर की दमक पर की चमक
विडम्बना त्याग से जूझेगी
मुझे छोड़ दे मेरे हाल पर
सुन्दर बनी-ठनी वेश्या से
मेरी कुरूप मां ही भली।

आर्यसमाज माडलटाऊन
यमुना नगर

प्रधान—श्री दीनानाथ जी चण्डोक
उपप्रधान—श्री मेलाराम वासन व श्री मदनलाल वासुदेव जी।
मंत्री—श्री मनोहरलाल जी साहनी
उपमंत्री—श्री शक्तिकुमार जी पहुजा
कोषाध्यक्ष—श्री मदनलालजी तनेजा

इसके अतिरिक्त अंतरंग सभा के सदस्य श्री प्रधान जी की अनुमति से चुने गये।

मन्त्री आर्य समाज

महात्मा हंसराज जन्म....

पृष्ठ २ का शेष)

मानवता की सेवा की, सारे पंजाब का निर्माण करने के लिए तपस्या की इस लिए उनकी जन्म-शताब्दी में सभी को भाग लेना चाहिए।

इस सिलसिले में पंजाब के प्रमुख नेताओं की ओर से पांच लाख रुपया इकट्ठा करने की अपील की गई है। मैं आशा करता हूं कि जहां सभी जन्म-शताब्दी के के विभिन्न समारोहों में पूरा भाग लेंगे वहां इस महान् यज्ञ में भी अपनी आहुति डालेंगे। महात्माओं ने हमारे देश पर जो उपकार किए हैं उनका बदला तो हम चुका ही नहीं सकते परन्तु उनकी याद अच्छी तरह से मना कर अपने जीवन को सफल बनाने की कोशिश अवश्य कर सकते हैं।

अविद्या का नाश हमारा उद्देश्य है

(ले०-शास्त्रार्थ केसरी पं० अमरसिंह जी आर्यपथिक
विरजानन्द वैदिक संस्थान गाजियाबाद)

अविद्या मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु है। महर्षि पतञ्जलि जी ने पांच क्लेश गिनाये हैं—

अविद्याऽस्मितारागद्वेषाभिनिवेशाः पञ्च क्लेशाः ॥ (योगदर्शन)

१ अविद्या २ अस्मिता ३ राग ४ द्वेष ५ अभिनिवेश ये पांच क्लेश हैं इन में अविद्या पहिला क्लेश है। यही नहीं कि—इसकी गणना प्रथम की गई है किन्तु महर्षि पतंजलि जी ने और भी कहा कि—

अविद्या क्षेत्रमुत्तरेषाम्—अविद्या अन्य सारे क्लेशों का क्षेत्र अर्थात् उत्पत्ति स्थान है अविद्या से ही सब क्लेश उत्पन्न होते हैं। अविद्या महाभयंकरी और सर्वनाशकरी राक्षसी है।

भारतीय विदेशी शत्रुओं से कभी भी कायरता के कारण नहीं हारे हैं भारत में जब से अविद्या का निवास हो गया। तभी से हम विदेशी दुर्बलों के भी सम्मुख हार खाने लगे।

महाराजा धीर जिसको आजकल दाहर कहा जाता है बड़ा वीर पुरुष था, उसके सिन्ध देश पर जब मुहम्मद बिन कासिम अरब से चढ़कर आया तब उसने अपनी सेना को बढ़ाना चाहा परन्तु देश में अविद्या घर कर चुकी थी इस कारण देश के बहुसंख्यक बौद्ध और जैनों ने यह कहकर सेना में भर्ती होने से इन्कार कर दिया कि—हमारे धर्म में मारना और मरना अधर्म है। ये लोग सेना में भर्ती नहीं हुए।

मुलतान में एक मार्तण्ड का मन्दिर था जिसके ऊपर सोना चढ़ा हुआ था। प्रातःकाल जब सूर्य उदय होता था तब उस की किरणें मन्दिर पर पड़ती थी और मन्दिर भी सूर्य सा दिखाई पड़ता था ऐसा लगता था कि दो सूर्य हैं।

जब मुलतान पर मुसलमानों का कब्जा हो गया तब मार्तण्ड का भक्त कन्नौज का राजा मुलतान को मुसलमानों से छुड़ाने के लिये भारी सेना ले कर आया। मुलतान के मुसलमान हाकिम को जब उस के आने का पता लगा, तो उस ने उस राजा के पास अपने दूत के हाथों चिट्ठी भेजी कि यदि आप मुलतान पर आक्रमण करोगे तो हम तुम्हारे मार्तण्ड भगवान की आंख फोड़ देंगे। और तुम्हारे देव की आंख फूटने पर तुम्हारा नाश हो जायगा। इस चिट्ठी को पढ़ते ही वह राजा अपनी सेना को ले कर चुपचाप लौट गया। उस के लौट जाने पर मुसलमानों ने मार्तण्ड की आंख ही नहीं फोड़ी उस समूचे को ही नष्ट कर दिया और मन्दिर को तोड़ और लूट कर उस के धन से भारी सेना बना ली।

मुहम्मद बख्तियार खिलजी थोड़े से ही सैनिक लेकर बंगाल में गया था। उस समय बंगाल का राजा लक्ष्मण सेन था। लक्ष्मणसेन को ज्योतिषियों ने बताया कि हमने गणवर्ग मिलाकर यह जान लिया है कि—इस समय लड़ाई में तुम्हारी भारी हार होगी। और तुम्हारी मृत्यु एक ऐसे विधर्मी युवक के हाथ से होगी जिसकी दोनों भुजाएं घुटनों से नीचे तक लम्बी होंगी। महाराजा लक्ष्मण सेन ने गुप्तचर भेजकर पता लगाया कि—जो मुसलमान युवक हमसे लड़ने को आया है उसकी भुजाएं ऐसी ही तो नहीं हैं गुप्तचरों ने बताया कि उसकी भुजाएं बहुत लम्बी हैं घुटनों से नीचे तक लटकती हैं। लक्ष्मणसेन यह सुनकर बिना युद्ध किए अपने दुर्ग के चोर द्वार से निकलकर भाग गया। रुधिर की एक बूंद भी बिना बहाए उसके राज्य पर मुहम्मद बख्तियार खिलजी का अधिकार हो गया। अविद्या ने बंगाल को विदेशी विधर्मियों के हाथ में दे दिया। सत्य है अविद्या सारे ही क्लेशों और अनर्थों की जननी है।

महर्षि पतंजलि जी ने योगदर्शन में अविद्या के चार अंग बताये हैं—

'अनित्याशुचि दुःखानात्मसु नित्यशुचि सुखात्मख्यातिरविद्या।

अर्थात अनित्य को नित्य अशुद्ध को शुद्ध दुःख को सुख और जड़ (अनात्मा) को चेतन (आत्मा) जानना अविद्या है।

राम कृष्णादि जन्मने और मरने वाले थे उनको तथा उनकी एवं शिवलिंगादि की अनित्य मूर्तियों को नित्य अविनाशी परमेश्वर का दर्जा देना अविद्या का प्रथम अंग (अनित्य को नित्य मानना) है।

राम कृष्णादि के शरीर भी रजवीर्य के संयोग से बने थे उनके शरीरों में भी रक्त मांस चर्बी हड्डियां और चर्म था। उनके शरीरों से भी मलमूत्र थूक आदि निकलते और शरीरों में मलमूत्रादि रहते भी थे।

मूर्तियां मिट्टी की हों या पत्थर की चांदी की हों या सोने की सभी को धोना या मांजना पड़ता है, उनको पवित्र बनाने के लिए उनपर फूल चढ़ाये जाते, धूप जलाई जाती और चन्दन का लेप किया जाता है।

वह शरीर और मूर्तियां जिनको शुद्ध करने के लिए नित्य प्रयास करना पड़ता है उनको नित्य शुद्ध परमेश्वर मानना अविद्या का दूसरा अङ्ग (अशुद्ध को शुद्ध जानना) है।

शिव के पूजक शैव भंग चरस और गांजा आदि को शिव का प्रसाद मानकर प्रयोग करते हैं और उनसे भांति-भांति के पाप करते और दुःख भोगते हैं। काली, दुर्गा, चामण्डा शक्ति के भक्त शाक्त भैंसे और बकरे काटते मांस खाते और शराब पीते हैं ये सब भी दुःख के ही साधन हैं, मद्य, मांस, मीन, मुद्रा (एक प्रकार के पकौड़े) और मैथुन जो दुःख के ही साधन हैं इनको मुक्ति और सुख का साधन मानना अविद्या का तीसरा अंग है।

तीर्थयात्रा के नाम पर यात्री लोग अपार धन व्यय करते तथा यात्रा में महान् क्लेश उठाते हैं कितने ही व्रतोपवास करके शरीर को सुखा लेते हैं। कई ठड़ेश्वरी कहलाते दिन-रात खड़े ही रहते उन के पैर सूज जाते हैं। कई अपना एक हाथ खड़ा ही रखते हैं वह हाथ सूख जाता है उस में नख बड़े २ हो जाते हैं।

कई अपने चारों ओर पांच स्थान पर अग्नि जलाकर तापते हैं। यह सब दुःख में सुख मानना रूप अविद्या का तीसरा अंग ही है।

मूर्तियां, मिट्टी, पत्थर, चांदी, सोना, किसी की भी हों वह सब जड़ ही हैं उनके साथ चेतन का व्यवहार करना, उनको खिलाने-

(शेष पृष्ठ ५ पर)

ज्योति की किरण

(ले०—प्रसिद्ध नेता श्री कैप्टन केशवचन्द जी अमृतसर)

आज का सारा वातावरण दूषित है, विषैला हो रहा है। इसका प्रमुख कारण यह है कि आज के युग में राजनीति स्थिति का रूप कुछ इस प्रकार का बन गया है कि उस में उदात्त भावना तथा सर्वहित साधना के स्थान व्यक्तिगत स्वार्थ का बहुलता से समावेश होता जा रहा है। इसी का परिणाम आज के जनजीवन में दिखलाई देता है। इसके विषैले प्रभाव से वर्तमान काल में सारी प्रजा ग्रसित होती जा रही है। स्वार्थ से पूर्ण मनोवृत्ति के कारण लोगों की प्रवृत्तियां भी प्रायः दोष युक्त हो चुकी हैं। सारे अपने ही आस-पास की दुनिया को देखने में लगे हैं। दूर तक देखने वाले बहुत कम ही हैं। चारों ओर भ्रष्टाचार का बोल बाला है। ऐसा प्रतीत होता है कि नैतिकता के मानवीय किनारे सर्वथा टूट गए हैं तथा अनाचार की बड़ी दरार पड़ चुकी है जिसका पाटना बड़ा कठिन हो गया है। जीवन का प्रत्येक क्षेत्र ही दोष पूर्ण होने लगा है। यह अवस्था किस सीमा तक पहुंचेगी? इसका चिन्तन करके मन कांप जाता है। यह महासंक्रामक रोग बन गया है, जिस से सारे समाज का विराट् पुरुष व्याकुल व व्यथित हो रहा है कि इसका परिणाम क्या होगा?

बाहिर के पश्चिमी देश (West Nations) भौतिकवाद में भारी उन्नति कर चुके हैं। इन की भोगवादी प्रवृत्तियों ने उन को विज्ञान के पथ पर चला कर सब को वैज्ञानिक बना दिया है। भूमि का कोना २ जान लेने के बाद समुद्र के गहरे जल-तल में पहुंच कर वहां की गुप्त तथा रहस्यमयी सृष्टि को भी लोगों के सामने ला कर रख दिया है। गिरिराज हिमालय के उच्चतम शिखर गौरीशंकर पर जा कर अपनी शक्ति का परिचय दे दिया है। नभ के भी तारे तोड़ लाये हैं। अब चन्द्रमा व मंगल आदि ग्रहों में जाने की तैयारी में लगे हुए हैं। विज्ञान की उन्नति में कमाल की हद तक जा पहुंचे हैं। जनसंख्या की वृद्धि अलग एक विषम तथा विकट प्रश्न बन गया है। यदि यही स्थिति रही तो पचास वर्षों के बाद इस धरती पर ठहरने का भी स्थान न मिलेगा। शायद इसीलिए चन्द्र आदि में पहुंचने की तैयारी की जा रही है। अन्य भी अनेक समस्याएं हैं जो कि विषम बन कर सामने खड़ी हैं।

इस विकट अवसर पर प्रकाश की एक किरण दिखाई देती है। जब तक भारत वर्ष जो कि आध्यात्मिकता का महान् केन्द्र है, के आध्यात्मवाद के सन्देश को नहीं अपनाया जायेगा, तब तक ये विषम गुत्थियां सुलझ नहीं सकेंगी। अमेरिका आदि पश्चिमी देश मानसिक शान्ति के लिए भारत में ही आते हैं। कीवन मारग्रेट जब भारत आईं तो कहा कि मुझे यहां कोई ऐसा आध्यात्मिक केन्द्र, वन, आश्रम दिखाओ, जहां पर मैं मानसिक शान्ति प्राप्त कर सकूं, नगर व कलाकेन्द्र तो मेरे अपने देश में भारत से बड़े हैं। उनको देखने में भारत में नहीं आई। मैं तो भारत को मानसिक शान्ति का केन्द्र मानती हूं। उसी की तलाश मुझे है।

आज भौतिकवादी जीवन में बड़ा Frusatrtion है। शान्ति-पथ नहीं दिखाई देता। ऋषिदयानंद का नारा था, वेदों की ओर चलो, **Back to the vedas.** अपनी सारी आयु ही इसी वेद प्रचार में लगा दी। भारत की सारे विश्व में यही विशेषता है कि उस के पास अध्यात्म वाद का बहुत बड़ा भण्डार है। यह खजाना इस को परम्परा से विरासित में मिला है। यही अन्धेरे में उजाला करता है। जैसे इस अन्धकार में शिवरात्रि प्रकाश बन कर आई है। उसी प्रकार से आज के भोगवादी भौतिक युग के गहन तम में भारतीय अध्यात्मवाद प्रकाश है। भौतिक वाद के निरंकुश मस्त हाथी पर अध्यात्मवाद का अंकुश रखना होगा। तभी विश्व के जीवन में शान्ति होगी। आज की शिवरात्रि के पुण्य पर्व पर हम ने सारे संसार को इसी अध्यात्मवाद का सुन्दर उपदेश देना है।

—

अविद्या का नाश...

(पृष्ठ ४ का शेष)

पिलाने भोग लगाने, उनको सुलाने जगाने का यत्न करना, उनकी स्तुति करना उनसे कुछ मांगना यह सब जड़ को चेतन, अनात्मा को आत्मा जानना मानना रूप अविद्या का चौथा अंग है।

देश का अरबों रुपया इन्हीं अविद्या के कार्यों में लगा हुआ है और लगता चला जा रहा है। महर्षि दयानन्द जी महाराज ने हम को आर्य समाज के आठवें नियम के द्वारा आदेश दिया है कि 'अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिये। इस लिए हम को भी से पाखण्डों का खण्डन करने का प्रण लेना चाहिये। अविद्या का नाश और विद्या की की वृद्धि करनी चाहिये।

भयानक हत्या

गत दिनों पंजाब के पूर्वमुख्य मन्त्री सरदार प्रतापसिंह जी कैरों तथा उन के साथ अन्यतीन साथियों की जी. टी. रोड़ को चलने वाली सड़क पर दोपहर के समय जिस ढंग से भयानक हत्या कर दी गई। उस की किस ने निन्दा नहीं की? तथा किस ने रोष प्रकट नहीं किया? इस हत्या ने एक भारी आ'क पैदा कर दिया। पंजाब के वर्तमान इतिहास पर यह हत्या एक काला धब्बा है। सरकार की ओर से इस का सुराग लगाने तथा हत्यारों को पकड़ने का प्रयत्न जारी है। हमें पूरी आशा है कि हत्यारे जरूर पकड़े जायेंगे। इस हत्या-काण्ड ने सारे देश में एक सनसनी पैदा कर दी है। यदि चमकने वाले सूर्य के प्रकाश में भीषण हत्याकांड निरन्तर चलने वाली सड़क पर होने लगें तो सुरक्षा के प्रबन्धों का क्या बनेगा? हम चाहते हैं कि पुलिस का परिश्रम जल्दी सफल हो ताकि हत्या के कारणों और हत्यारों की सारी स्थिति जनता के सामने आ जाए। हम जनता तथा नेताओं से यह भी कहना चाहते हैं कि इस समय भिन्न-भिन्न प्रकार के वक्तव्य देने से पूर्णतया सावधानी वर्ती जाये ताकि रात दिन एक कर हत्या का सुराग लगाने वाली पुलिस का ध्यान इधर-उधर न चला जाए।

वेदों का पढ़ना पढ़ाना सुनना सुनाना आर्यों का परम धर्म है इसलिए इस पर आचरण करें।

(गतांक से आगे)

और सब जमीन की गर्द तमाम मिस्रह के मुलक में जूए बन गई, और इनसान और हैवान को जूएं लिपट रही थी।

खरूज १६-१७-१८

सात रोटियों से चार हजार का औरपांचरोटियां औरदो मछलियों से बच्चों और औरतों से अलावा को भोजन कराया है पहिले में ७ टोकरे बचे और दूसरे में १२ टोकरे बचे पहला हवाला मरकुस ८-१ से ६ तक दूसरा मत्ती १४-१६ से २१ तक यह मसीह के चमत्कार हैं जिन को सुनासुना करलोगों को बहकाया जाता है यह सब मन घटन्त बातें हैं इस के लिए चन्द्र नगर के प्रसिद्ध ईसाई चीफ जस्टिस श्री जय कालियट साहिब अपनी पुस्तक बाइबल इन इण्डिया में लिखते हैं 'क्या कोई गंभीर विचारों वाला मनुष्य यह मान सकता है कि यदि ईसाने यहूदियों के सामने वे सारे चमत्कार दिखलाए होते, जो बाईबल के लेखक उस के साथ ठहराते हैं तो वह उस का जय-जय कार न करते ! भारत में बाइबल भाग २ पृ-४११ फिर लिखते हैं भला अब कोई मनुष्य हमारे अदर आवे जो अपने जीवन के तीन वर्षों में चमत्कारों पर चमत्कार दिखलाता रहा हो पानी की मदिरा बना देता हो पांच मछलियों और दो तीन रोटियों के हाथ दस पन्द्रह सहस्र व्यक्तियों की क्षुधा निवृत कर देता हो मृतकों को जिलाता हो, बहरों को कान और अन्धों को आंखें देता हो इत्यादि, फिर देखते हैं लि उस को बदनाम करने की कि फारीसी और किस याजक की शक्ति है मान्य ४११

महान ईसाई तत्व वेता का जीवन चरित जैसा कि उस के इतिहास लेखकों और उस के प्रेरितों ने हम तक पहुंचाया है

सृष्टि नियम पथ प्रदर्शक हैं

(ले०—आचार्य देवप्रकाश जी आर्यसमाज उज्जैन (मध्य प्रदेश)

संदिग्ध प्रमाणों वा कूट रचनाओं का एक जाल है जो लोक-कल्पना को प्रभावित करने और नवीन धर्म को दृढ़ता पूर्वक प्रतिष्ठित करने के लिए बनाया गया है भारत में बाइबल ३६५

जैसा कि हम पहिले कह चुके हैं, उसका समाधान यह है कि यह सब व्यापार संदिग्ध प्रमाण हैं ईसा इस जगत में से प्रायः अलग-थलग ही निकल गया, संसार ने उस पर बहुत थोड़ा ध्यान दिया पीछे से उस के शिष्यों ने पूर्व से आई हुई कुछ इबरानी भविष्यद्वाणियों को अपनाकर और कृष्ण के आचरण और उसके जीवन की थोड़ी कम अलौकिक और अधिक संभाव्य विशेषताओं को आधार लेकर उसे एक पौराणिक नायक बना दिया। भा० मे० बा० पृ ४१/२

इन चमत्कारों के सम्बन्ध में सय्यद अहमद खां महोदय ने एक अत्यन्त महत्वपूर्ण तर्क दी है आप लिखते हैं—कि सृष्टि नियम के विरुद्ध बातों के लिए यह कह देना कि खुदा की कुदरत है, उसने ऐसा ही कर दिया होगा, मूर्ख और बुद्धि हीन तथा अदूरदर्शी लेखकों का काम है, तफसीर कुरान जिलद-६ पृष्ट-१२२

फिर आगे लिखा—कि यह कह देना कि खुदा ने जिस-जिस फितरत पर (स्वभाव पर) किसी को बनाया है उस को परिवर्तन न करने से खुदा की असमर्थता प्रमाणित होती है मूर्खों का कथन है, क्योंकि किसी शक्तिमान व स्वतन्त्र का अपनी बनाई हुई फितरत या कानूने कुदरत (सृष्टि नियम) पर अटल रहना उस की कुदरत की दलील है, न कि उस की असमर्थता की—कुरान जिलद-६-पृष्ट-१४१

चमत्कारों के विषय में सर सयद महोदय ने एक और तर्क बहुत ही उत्तम लिखी हैं, आप लिखते हैं—

खुदा ने जो कानूने कुदरत (सृष्टि नियम) बना दिया है उसमें किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं हो सकता, न खुदा उसमें परिवर्तन करता है न करेगा सृष्टि नियम के प्रतिकूल करने से खलफे वादा (प्रतिज्ञा भंग) और किज्ब (झूठ) खुदा की जात पर लाजिम आता है जिल्द तीन पृ० ३८ हमारी समझ में किसी पर चमत्कार और करामात के होने का विश्वास करना जाते बारी की तौहीद फिलसफात (प्रभु की स्वभाविक अद्वितीय शक्ति पर) पर ईमान को नाकिस और ना मुकम्मल (त्रुटि पूर्ण और अधूरा) कर देना है पृ० ३२-जि-३

चमत्कारों के अनर्गल होने के विषय में जो साम्प्रदायक और मिथ्यामत मतान्त्रों का एक मात्र सहारा और आधार है अधिक लिखना पुस्तक को बढ़ाना बा देना होगा, उपरोक्त दोनों महानुभावों का युक्त तर्कवाद काफी है। बाईबल तो ऐसे अन्ध विश्वासों से भरी पड़ी है एक मिथ्यावाद का नमूना बताकर इस प्रकरण को खतम करेंगे।

अन्धा क्यों हुआ ?

जाते हुए उसने एक मनुष्य को देखा जो जन्म का अन्धा था और उसके (यीशु के) चेलों ने उससे पूछा कि हे रब्बी किसने पाप किया कि वह अन्धा जन्मा इस मनुष्य ने या उसके माता-पिता ने। यीशु ने उत्तर दिया कि न तो इसने न इसके माता-पिता ने, पर यह इस लिए हुआ कि परमेश्वर के काम उसमें प्रगट हों। युहन्ना ६-१ से-१२ त०

कितना मानवताको कलंकित करने वाला विचार है कि अन्धा इसलिए किया गया कि यीशो का चमत्कार इस से प्रकट हो ऐसी अनर्गल बातें कह कर ही ईसाईयों की बुद्धि पर ताला लगा दिया है ताकि वह सत्यासत्य का विचार ही न कर सकें, क्या ऐसा मनुष्य जो इस प्रकार तथ्यहीन मनघड़न्त अन्ध विश्वास में जकड़ने वाली बातें पेश करे, क्या वह पथ-प्रदर्शक कहलाने योग्य हो सकता है भगवान पर कलंक लगाने वाला स्वार्थी मनुष्य जो कहे कि मेरे चमत्कार प्रकट होने के लिए खुदा ने इसे अन्धा कर दिया था कितना गलत ख्याल है क्या और कोई मार्ग महत्ता प्रकट करने का नहीं था सत्य पुरुषों काम है कि इस अविद्या के गर्त में पड़े हुए मनुष्यों को निकाल भ्रान्ति से बचाकर सत्यपथ का अनुगामी बनाना चाहिये—

कबरें खुल गईं और मुर्दे शहर में चले गये।

यीशु फिर बड़ी आवाज से चिल्लाया और जान दे दी और मुकद्दस का पर्दा ऊपर से नीचे तक फट गया दो टुकड़े हो गया और जमीन कांपी और चट्टानें तड़क गईं और कबरें खुल गईं और बहुत से जिस्म उन मकद्दसों के जो सो गये थे जी उठे और उसके जी उठने के बाद कबरों से निकल कर मुकद्दस शहर में गए और बहुतों को दिखाई दिये। मत्तीबाब २७-५१ से ५३ तक मत्ती महोदय का नौहा क्या है एक बाजीगर का तमाशा है ईसाईयों के विचार में मुर्दे कबरों में सोते हैं कि उठ कर भागे यह है इन्जील की शिक्षा।

—

चरित्र निर्माण में भारी रुकावटें—६

ले०—श्री पिशोरीलाल जी 'प्रेम' रैणुका जिला सिरमौर (H.P.)

नोट—इससे पूर्व का भाग १४.२.६५ के अंक में पढ़ें।

(गतांक से आगे)

१८९८ में जर्मनी में एक और परीक्षण किया गया कुछ मांसाहारियों तथा कुछ शाकाहारियों का ७० मील चलने का मुकाबला हुआ सब शाकाहारी निश्चत स्थान पर स्वस्थ पहुंच गए सब से पीछे जो शाकाहारी पहुंचा उसके एक घंटे बाद पहला मांसाहारी पहुंचा। परन्तु वह भी बहुत थक गया था शेष सब मांसाहारी निश्चित स्थान पर पहुंच ही न सके। १९०२ में इस प्रकार का और परीक्षण जर्मनी में किया गया इस मुकाबले में १८ शाकाहारियों तथा १४ मांसाहारियों ने भाग लिया। जिस में १० शाकाहारी सफल हुए और मांसाहारी केवल ३ सफल हुए। शाकाहारियों में जो सब से पहले निश्चित स्थान पर पहुंचा उसके मुकाबले में जो मांसाहारी प्रथम पहुंचा वह प्रथम पहुंचने वाले शाकाहारी से ७ घंटे बाद पहुंचा। आयुर्वेदिक वैद्यों की बहु-सम्मति तो मांस खाने के विरुद्ध है परन्तु बहुत से यूनानी हकीम तथा अंग्रेजी डाक्टर भी मांस खाने के विरुद्ध हैं उनकी सम्मति में मांस खाने से अपेन्डीसाइटिस, टाईफाईड अजीर्ण, कब्ज, सिर दर्द, गठिया कैन्सर, मानसिक थकावट, किट, कोढ़, तपेदिक आदि बीमारियों का मनुष्य शिकार हो जाता है। मैं इस चर्चा को विस्तार के भय से हकीमों डाक्टरों तथा वैद्यों के नाम तथा सम्मतियों से बढ़ाना उचित नहीं समझता। यदि पाठकगण चाहें तो ये सब नाम आदि उपस्थित किए जा सकते हैं। कसाई लोग जिन पशुओं को मारते हैं उनमें से कई पशुओं को कई प्रकार के रोग होते हैं और वही रोग खाने वाले को लग जाते हैं।

वीरता के दृष्टिकोण से :—फलाहारी राम, लक्ष्मण, हनुमान, सुग्रीव आदि ने मांसाहारी रावण कुम्भकर्ण और मेघनाथ आदि को मारा। दूध और मक्खन खाने वाले कृष्ण ने कंस को मारा। पृथ्वीराज ने मुहम्मद गौरी को कई बार पराजित किया। शाकाहारी राणा प्रताप शिवाजी ने मांसाहारी मुसलमानों के छक्के छुड़ा दिए थे महर्षि दयानन्द तो मांसाहारी नहीं थे। किस प्रकार उन्होंने विक्रमसिंह को चार घोड़ों की गाड़ी को अपने बाहुबल से रोका राव कर्णसिंह की तलवार को तोड़ा। दलदल में फंसी गाड़ी को अपने कन्धों के बल से निकाला। पाठक वृन्द मांस खाने से वीरता तो नहीं आती परन्तु क्रूरता अवश्य आती है।

धार्मिक दृष्टिकोण से :—वेद का उपदेश है 'अहिंसा परमोधर्मः' अर्थात् अहिंसा परमधर्म है। जब अहिंसा परम धर्म है तो हिंसा के महां पाप होने में क्या सन्देह है। 'आत्मवत् सर्व भूतेषु।' अर्थात सब जीवों को अपनी आत्मा के समान समझो। फारसी का एक कवि कहता है 'हरचा बर खुद न पसन्दी बर दीगरां मपसन्द' अर्थात् जो बात आप अपने लिए पसन्द नहीं करते उस को दूसरों के लिए पसन्द न करें। आप तो अपने शरीर में कांटा चुभना भी पसन्द नहीं करते परन्तु दूसरे जीवों पर छुरी चलाना कैसे पसन्द करते हैं? 'मित्रस्य चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे' अर्थात् सब प्राणियों को मित्र की दृष्टि से देखो चाहे वह पशु, पक्षी, कोई भी जीव हो सन्त तुलसीदास जी कहते हैं 'दया धर्म का मूल है पाप मूल अभिमान तुलसी दया न छोड़िये जब लग घट में आया' गुरु नानक जी ने कहा है 'जेरत लगे लगे कपड़ा जामा होय पलीत जेरत पीवें मानसा ते क्यों निर्मल चित्त' अर्थात् जब कपड़े को लहू लग जाता है तो वह अपवित्र हो जाता है जब उसी खून को आदमी पी ले तो उसका मन कैसे पवित्र रह सकता है? आगे फिर कहते हैं :—'उन झटका उन बिसमिल कीनो, दया दुहां ते भागी' अर्थात् मुसलमानों ने कलमा पढ़ कर जीव की गरदन काट दी और सिक्खों ने झटका कर लिया, दया तो दोनों के मन में न रही।

संसार के सब महान व्यक्ति मर्यादा पुरुषोत्तम राम योगेश्वर कृष्ण, महावीर, स्वामी दयानन्द, महात्मा गांधी, भगवान तिलक, मालवीय जी, स्वामी श्रद्धानन्द, स्वामी विवेकानन्द, स्वामी रामतीर्थ स्वामी रामकृष्ण परमहंस, सुकरात, महात्मा टालसटाय; योगी अरविन्द घोष महाकवि टैगोर कहां तक लिखूं सब ने ही मांसाहार निषेध किया है। यहां तक कि ईसाइयों के धर्मग्रन्थ इंजील और मुसलमानों के धर्मग्रंथ कुरान शरीफ में भी कई स्थानों पर मांस खाने का निषेध किया गया है हज को जाते हुए मुसलमानों के लिए मांस खाना वर्जित है।

मांसाहारी बहाना बनाते कि हम तो जीवों को मारते नहीं बाजार से साग सब्जी के समान मोल लाते हैं। हमें क्यों पाप लगेगा। कसाई कहते हैं हम तो खाने वालों के लिए मारते हैं हमारा तो यह व्यवसाय है, पाप खाने वाले को होगा परन्तु प्यारे पाठक वृन्द! भगवान के दरबार में यह बहाना बाजी नहीं चलेगी। कसाइयों की इतनी बड़ी संख्या होने की जिम्मेवारी मांस खाने वालों पर ही तो है। मानव धर्मशास्त्र मनुस्मृति में लिखा है। कि मारने वाला खण्ड, खण्ड करने वाला एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने वाला, सम्मति देने वाला, बेचने वाला, खरीदने वाला, पकाने वाला, तथा खाने वाला इन सब का पाप बराबर है। (क्रमशः)

बाल्मीकीय राम सवाद

नोट—इस से पूर्व का भाग १४-२-६५ में पढ़ें

क्योंकि—

अपराजया नः सेना
रामचन्द्रेण पालिता।
प्रतिभूर्वेद विस्तारश्शांति
रक्षा महाव्रता ॥३५॥

अर्थात्—आप की अध्यक्षता में हमारी विजयवाहिनी अजेय रूप धारण कर चुकी है जो कि वेद विस्तार, शांति रक्षा एवं धर्म प्रचार के लिये प्रतिभू (गारंटी) है। अतः

नमस्ते राम चन्द्राय
वेद धर्मविदे दृढम्।
तुभ्यं याचामहे श्रोतुं
वेदधर्मं सुनिर्मलम् ॥३६॥

अर्थात्—वेद-धर्म-मर्मज्ञ, दृढ़-व्रत आप श्री रामचन्द्र जी को नमस्कार करके सुनिर्मल वेद धर्म का तत्व सुनाने की प्रार्थना करते हैं। कृपया अखिल विश्व के अस्तित्व, सब प्रकार के मानव चरित्र, न्याय-अन्याय, भलाई-बुराई समाज-योजना, राष्ट्र-तत्व, राज्य-सत्ता, सेना, आत्मा-परमात्मा आदि के गुप्त रहस्यों का उपदेश कीजिये।

इति श्री वाल्मीकि विरचिते श्री राम सम्वादे मुख्य प्रश्नो नाम प्रथमोऽध्यायः।

आर्य विद्या सभा,।

धर्म-शिक्षा पुरस्कार प्रतियोग।

इस वर्ष यह परीक्षा ४ दिसम्बर १६६४ को हुई। अभी तक १८४५ परीक्षार्थियों के प्रवेश पत्र प्राप्त हुए। १३१८ सफल रहे और परिणाम ७२ प्रतिशत रहा।

इस परीक्षा के परिणामस्वरूप निम्नलिखित छात्रों ने पुरस्कार प्राप्त किये।

रोल नं०	नाम छात्र व संस्था	स्थान	पारितोषिक राशि
	छठी कक्षा		
४६	सर्वजीतकौर, गढ़दीवाला	प्रथम	२० रु.
५०	कैलाशचन्द्र ,,	दूसरा	१६ ,,
११०	कीरतीलाल, दसूहा	तीसरा	१६ ,,
१७५	राजरानी, कादियां	चौथा	१४ ,,
४८	सुरेन्द्रपाल, गढ़दीवाला	पांचवां	१४ ,,
४६	पवन कुमार ,,	छटा	१२ ,,
१८३	शिमला, साईदास कन्या, जालन्धर	सातवां	११ ,,
३७३	शशिप्रभा, कन्या स्कूल यमुनानगर	आठवां	१० ,,
	सातवीं कक्षा		
५६८	जोगेन्द्रपाल साईंदास, जालन्धर	प्रथम	२० ,,
६०१	महेन्द्रपाल ,,	दूसरा	१६ ,,
५६६	मदनमोहन ,,	तीसरा	१६ ,,
५६६	अशोक कुमार साईंदास स्कूल जालन्धर	चौथा	१४ रु.
५६७	अशोक कुमार ,,	पांचवां	१४ ,,
६७०	बिमलादेवी वेदकौर गर्लज कादियां	छटा	१२ ,,
६६६	तृप्ता जैन कन्यास्कूल पट्टी	सातवां	१२ ,,
८६८	महेन्द्रकुमार चण्डीगढ़	आठवां	१० ,,
	आठवीं कक्षा		
६०५	राजेन्द्रकुमार, अम्बाला कैन्ट	प्रथम	२० ,,
६०८	....	दूसरा	१६ ,,
६०४	गुरनामसिंह.......	तीसरा	१६ ,,
१०४४	अशोककुमार, कलानौर	चौथा	१४ ,,
१००२	रामजीदास, साईंदास, जालन्धर	पांचवां	१४ ,,
१००४	राजीवचन्द्र......	छटा	१२ ,,
६६१	दिलीपकुमार, शिमला	सातवां	१२ ,,
१०७२	शिवरानी कन्या स्कूल कादियां	आठवां	१० ,,
	नवीं कक्षा		
१४०१	सीताराम साईंदास जालन्धर	प्रथम	२४ ,,
१३६६	अशोक नागपाल.......	दूसरा	२० ,,
१५३३	ऊषा ग्रोवर, पानीपत	तीसरा	२० ,,
१४६५	सुदेशकुमारी कादियां	चौथा	१६ ,,
१३५०	सुखराम, गढ़दीवाला	पांचवां	१६ ,,
	परमेश्वर स्वरूप भटिन्डा	छटा	१२ रु.
	सुरेन्द्रबाला कादियां	सातवां	१२ ,,
४०	केवलकृष्ण नकोदर	आठवां	१० ,,
	दसवीं कक्षा		
२०२२	प्रमिला, सरस्वती स्कूल, अमृतसर	प्रथम	२४ ,,
१७०५	अरुणकुमार, अम्बाला कैन्ट	दूसरा	२० ,,
२०२१	शशिबाला, सरस्वती कन्या, अमृतसर	तीसरा	२० ,,
२००६	रामसिंह, हिसार	चौथा	१६ ,,
१७७०	गिरधर सुम्मन, मंगवाल	पांचवां	१६ ,,
१७०२	पवनकुमार, अंबाला कैन्ट।	छटा	१२ ,,
१७४०	नरेश, फिरोजपुर कैन्ट।	सातवां	१२ ,,
१७४६	विजयकुमार, गढ़दीवाला।	आठवां	१० ,,
	ग्याहरवीं कक्षा		
२२००	राजेन्द्रसिंह, चन्डीगढ़।	प्रथम	२५ ,,
२१४१	सुधीररत्न, साईंदास जालन्धर।	दूसरा	२० ,,
२१६६	सुभाष महाजन, चन्डीगढ़।	तीसरा	१५ ,,

देवराज महाजन
एजुकेशनल एडवाईजर

शोक सभा

आचार्य श्री प्रिंसिपल ज्ञानचन्द जी की अध्यक्षता में हुये 'श्री दयानन्द ब्राह्म महा विद्यालय हिसार' पंजाब के छात्रों की वाग्वर्धिनी सभा के इस अधिवेशन में उपस्थित सब छात्र एवं अधिकारी गण, अपनी इस संस्था के मान्य उपाचार्य श्री पण्डित रामावतार जी एम. ए. के पूज्य पिता श्री ला. बिहारी लाल जी चोपड़ा ८३ वर्ष आयु के, २२ मार्च सोमवार को आकस्मिक निधन पर हार्दिक शोक प्रकट करते हैं, तथा परमेश्वर से दिवंगत आत्मा को शान्ति एवम् शोक सन्तप्त परिवार को धैर्य (एवं शान्ति) प्रदान के लिये प्रार्थना करते हैं।

—मंत्री—

जगदीश चन्द्र 'वसु'
दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार

मुद्रक व प्रकाशक श्री सन्तोषराज जी आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर द्वारा वीर मिलाप प्रैस, मिलाप रोड जालन्धर से मुद्रित तथा आर्यजगत कार्यालय महात्मा हंसराज भवन निकट कचहरी जालन्धर शहर से प्रकाशित मालिक—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर



टेलीफोन नं० ३०५७ [आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधिसभा पंजाब जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd. No. P. 121

एक प्रति का मूल्य १३ नये पैसे वार्षिक मूल्य ६ रुपये

वर्ष २५ अंक १२) ८ चैत्र २०२१ रविवार—दयानन्दाब्द १४०— २१ मार्च १९६५ (तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

वेद सूक्तय:

एनमधरांच पादयामि

देखो तो सही। मैंने अपने बल से देश की भक्ति की शक्ति पाकर अपने एनम्—इस शत्रु वैरी को उसकी सारी मण्डली समेत अधरांचम्—नीचे की ओर पादयामि—ठोकर मारकर भूमि पर गिरा दिया है। ज़मीन पर पटक दिया है।

अपि वृश्चामि ओजसा

उस भयानक घातक शत्रु को उसके दल बल समेत ही अपनी वीरता के द्वारा तेज ओज के साथ वृश्चामि—काटकर रख दिया है। उसका सारा दल समाप्त कर दिया है। मेरे ओज के सामने तो वह बस हो गया है। दम तक नहीं मारता।

दुर्हार्दो द्विषतः शिर:

मैंने तो द्वेषी, पापी अत्याचारी वैरी का सिर भी काटकर रख दिया है, वह शत्रु मुझे मारने आया। राष्ट्र को हानि पहुंचाने आया। पर मैंने तो उसका काम तमाम करके रख दिया।

अ थ र्व वे द से

वे दा मृ त

ओ३म् सूर्योज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा॥
ओ३म् सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा॥
ओ३म् ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा॥

यजु० अ० ३ मन्त्र ९

अर्थ—वह परमेश्वर (सूर्य) जड़ चेतन सब का आत्मा है वही (ज्योतिः ज्योति.) सारे प्रकाशकारी पदार्थों का प्रकाशक व ज्योति है और वही (सूर्यः) परमेश्वर है—यह आहुति उसी प्रभु के अर्पण है। वह भगवान (सूर्य.वर्चः) सब का ज्ञान दाता और ज्योति दाता है। वह वर्चस् है। यह आहुति उसी के अर्पण है। तथा वही सूर्य है, वही दिव्य ज्योति है, तेज व प्रकाश का भण्डार है। यह आहुति उसी महती महिमा वाले महान देव को समर्पित है।

भाव:—लोगो! याद रखो कि वह परमेश्वर चराचर संसार का स्वामी तो है ही। इस के साथ २ वह प्रकाशमय भी है। जितनी भी ज्योतियां विश्व में चमकती हैं। ये सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र, अग्नि, विद्युत एवं और भी जितने २ सूर्य महामण्डल हैं। आकाश में दिव्य पदार्थ हैं। इन सब को वही प्रभु ही ज्योति प्रदान करता है। इन में उसी का दिया हुआ तेज है, उसी का प्रकाश है। तमेव भान्तमनुभाति सर्वम् उसी के प्रकाश से ये सारे प्रकाश वाले हैं। वह सूर्य है, अग्नि है, प्रकाशभण्डार है, तेज का महान् स्रोत है, वर्चस् है। ज्योतिः तथा परम ज्योति है। उसी को अपनी आहुतियां भेंट किया करो उसी को अपना समर्पण करते रहें। प्रभो! मेरी आहुतियां आपके लिए हैं। मुझे तेजस् वर्चस् दे दो—सं०

ऋषि दर्शन

वेदस्य रक्षक:

इस प्रकार का वीर क्षत्रिय पुरुष ही वेद का रक्षक हो सकता है। प्रभु का ज्ञान वेद है। उसी से ही सारे राज्य में सुख शान्ति होती है। ज्ञान का प्रकाश है—जो उसे बुझाए उससे वीर सदा रक्षा करता करता रहे।

धर्मस्य च रक्षक:

वीर क्षत्रिय राजा का कर्तव्य है कि वह धर्म की रक्षा किया करे। जिस देश में धर्म मारा जाता है, वहां पर पाप फैल कर प्रजा का नाश होने लगता है। इसलिए वीर पुरुष धर्म की रक्षा करता रहे।

परमेश्वर इष्ट: करणीय:

भगवान् को सदा अपना इष्ट प्यारा बनाए रखें। राजा या शासक का धर्म है कि राज्य के आसन पर बैठ कर परमेश्वर को भुला मत देवें अभिमान या प्रलोभन में आकर प्रभु का विस्मरण न करें।

भा ष्य भू मि का से

अधिष्ठाता—श्री संतोषराजजी

सम्पादक—त्रिलोक चन्द्र शास्त्री

बड़े दुर्भाग्य का विषय है कि लगभग ८०० वर्ष पर्यन्त हमारे देश पर विदेशियों और विधर्मियों का रहा। इस दासत्व काल में हमारी राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक साहित्यिक और धार्मिक अवनति पूर्ण रूपेण हुई। ऐसे भयानक भयंकर समय में राष्ट्र की परिस्थिति अत्यन्त विचारणीय थी। परन्तु जगत्-गुरु महर्षि स्वामी दयानन्द जी महाराज ने सर्व प्रथम उन्नसवीं शताब्दी में स्वातन्त्र्य घोष का नाद बजाया। उन्होंने बड़े ओज पूर्ण शब्दों में कहा, 'वयं यतिमहि स्वराज्यम्' अर्थात् हम हमारे स्वराज्य का प्राप्त करें। अब हम स्वतन्त्र हैं, परन्तु अब भी हमारे सम्मुख सब से महत्व-पूर्ण प्रश्न यह है कि इस प्राप्त की हुई स्वतन्त्रता को किस प्रकार सुरक्षित रखें। अब भी कुछ ऐसे देश हैं जो हमारी इस प्राप्त की हुई स्वतन्त्रता को हड़प करना चाहते हैं। स्वामी जी का जो दिव्य दृष्टिकोण राष्ट्र के प्रति था वह यही तो था कि हमारे देश से छुआ छात एवं जातित्व का भाव समाप्त हो जायें, परन्तु आज भी हम इस कार्य में बहुत थोड़ा परिवर्तन देख रहे हैं। महर्षि की दुःख भरी आहों को बन्धाते हुए एक कवि ने अपने भाव इस प्रकार व्यक्त किए हैं कि :—

"दुनिया शो मत में आओ न हरगिज।

आ कर यूं हिं अपनी इज्जत गंवाओ न हरगिज ॥

यदि बैठोगे आग के पास जा कर।

तो उठोगे इक दिन कपड़े जला कर ॥

भला तुम कपड़े बचाते रहे।

मगर सेक तो रोज खाते रहे॥'

अर्थात् यह भाव भरी दुनियां अब तक महर्षि बताए अनर्घ्य मार्ग

'महर्षि का राष्ट्र के लिए दिव्य दृष्टि-कोण'

लें० श्री पं. रविदत्त जी आर्य [आर्य कन्या महा विद्यालय, हां०]

पर नहीं चलेगी तब तक अपने किसी भी वास्तविक लक्ष्य को नहीं प्राप्त कर सकते। यह एक सत्य है। भविष्य हमें बुला रहा है, पता नहीं हम किधर जायेंगे। महर्षि की दिव्य दृष्टि इसी लिए तो राष्ट्र को एक बनाने की थी। वे प्रत्येक जन-साधारण के अन्तः करण में जन-जागरण की भावना भरना चाहते थे। उन्होंने बताया कि सर्व हमारी वेश भूषा, सभ्यता एवं संस्कृति, खान-पान व्यवहार यथा योग्य होना चाहिए तत्पश्चात् ही हम राष्ट्र को किसी प्रकार की चुनौती दे सकते हैं। 'हमारे देश की एक भाषा होना बड़ा अनिवार्य है' निम्न उक्ति तो महर्षि ने आज से सैकड़ों वर्ष पूर्व ही हमें बतलाई थी। परन्तु फिर भी जब १५ अगस्त १९४७ को भारत स्वतन्त्र हुआ तभी से हिन्दी को राष्ट्र-भाषा एवं राज्य भाषा होना चाहिए था परन्तु अब भी कई चीन सम्बन्धी कम्यूनिस्ट और अंग्रेजी समर्थक लोग २६ जनवरी १९६५ को हुई राज्य भाषा हिन्दी के ऊपर आक्षेप करते हैं। इस स्थिति में हम आर्यों को जो कि जगत्-गुरु ऋषि के अनुयायी हैं चुप नहीं बैठना चाहिए। यदि इस विषय में सरकार कोई ढील करें या अपनी तुच्छ दब्बू नीति लगायें तो इस से भी हमें सजग रहना चाहिए। राष्ट्र को सुचारू रूप से चलाने के लिए केन्द्र का पुष्ट होना आवश्यक है। यदि अब भी भारत में ऐसे लोग विद्यमान हैं कि जो इस पवित्र अवनि के अन्न, जल, वायु से जीवित रह कर मक्का, युरोसलम, और इंगलैण्ड की उन्नति चाहते हैं तो उन्हें भी देश से खदेड़ भगाना चाहिए। आर्य भाषा के प्रचार एवं प्रसार में जो बाधक तत्व हैं उन्हें भी हमें निर्मूल नष्ट-भ्रष्ट कर देना चाहिए। संविधान की रक्षा के लिए सरकार को सचेत जागरूक रहना चाहिए। संविधान बना कर सरकार स्वतः ही उस का मर्दन एवं उल्लंघन करती है तो वह सरकार कभी भी सफल नहीं हो सकती। यही तो स्वच्छ और निर्मल उस महर्षि दयानन्द का मन्तव्य था।

१८ वर्ष हुए अंग्रेज हमारे भारत को छोड़ चुके हैं परन्तु अब भी उन की सभ्यता और संस्कृति हमारी सन्तति के मन और मस्तिष्कों से दूर नहीं हुई हम अपने जीवन के प्रत्येक पक्ष में इंगलैण्ड और अमेरिका का अनुकरण कर के अपने जीवन को सार्थक समझते हैं। देखिए। यह हमारे जीवन की कितनी भूल है। सुधारकों का मत था कि विदेशी स्वर्ग से अपना स्वदेशी नरक भी अच्छा है। अब भारतीयों को चाहिए कि वे अपनी स्वाधीनता के लिए तत्पर रहें। इस विषय में आर्य समाज तो देश के लिए सदा सही एक जागरूक प्रहरी है। और भविष्य में भी रहेगा। महर्षि स्वामी दयानन्द जी महाराज का दिव्य दृष्टिकोण यही था कि उनकी की भावना प्राणी मात्र के लिए एक रही। जैसे कवि ने कहा है कि :—

नत्वाहं कामये राज्यं,
नस्वर्गं न पुनर्भवम्।
कामये दुःख तप्तानां,
प्राणीनामार्त्तिनाशनम् ॥

यही उच्च भावना राष्ट्र के प्रति महर्षि की थी। सारे जीवन में उन्होंने दुःखी राष्ट्र के दुःख को दूर किया। राष्ट्र के लिए उन की ईश्वर से केवल यही प्रार्थना थी।

न मैं चाहता हूं न वो चाहता हूं।
फकत तेरे दर की, रजा चाहता हूं॥

ऋषि दयानन्द के इस दिव्य दृष्टिकोण को धारण करने का सामर्थ्य ईश्वर हमें दे और हम राष्ट्र रक्षा एवं भाषा के लिए सदैव सर्वोद्यत रहें। राष्ट्र की तन-मन-धन से रक्षा करना ही हमारा धर्म है तभी हम जीवित और जागृत माने जा सकते हैं। भारत के गौरव तथा सभ्यता एवं संस्कृति की रक्षा करना हमारा परम कर्त्तव्य है, क्यों कि राष्ट्र रक्षा से ही हमारी गौरव और गरिमा है। यही जगत् गुरू महर्षि स्वामी दयानन्द जी महाराज का राष्ट्र के लिए दिव्य दृष्टिकोण था।

वैदिक संन्यास आश्रम गाज़ियाबाद में वेदोपदेशक महाविद्यालय खुल गया

तपोमूर्ति कर्मवीर श्री स्वामी विज्ञानानन्द जी के शुभ कामनाओं के अनुसार उन्हीं के बनाये वैदिक संन्यास आश्रम और विरजानन्द वैदिक संस्थान की ओर से उपदेशक विद्यालय का शुभारम्भ विधिपूर्वक शिवरात्रि से हो रहा है। बड़े २ विद्वान् अध्यापक विद्यमान हैं विद्यार्थी भी आ गये हैं और आ रहे हैं।

यहां बड़े २ विशाल पुस्तकालय हैं अनुसन्धान और ग्रन्थ निर्माण का महान कार्य होता है।

अमरसिंह आर्य पथिक

आत्म साहाय्यं हि उत्तमम् (अपनी सहायता आप करना उत्तम है)।

आर्य जगत्

वर्ष २५] रविवार २०२१, २१ मार्च १९६५ [अंक १२

म.त्मा हंसराज शताब्दी समारोह [१]

महात्मा हंसराज शताब्दी समारोह पूज्य महात्मा जी के जीवन के विविध प्रसंगों तथा कार्यरूपों को आर्य जगत के सामने लें आप तथा आर्यसमाज में एक नए उत्साह का संचार कर सके, इस के लिए सब से पहली आवश्यकता सर्वजनीन सहयोग की है। महात्मा जी का व्यक्तित्व इतना बहुमुखी था कि उसका प्रभाव देश के जन समाज के सब भागों पर पड़ा। इसलिए उनकी शताब्दी पर समाज के सब स्तरों का भाग लेना आवश्यक है।

प्रत्येक व्यक्ति के दो मुख्य सहायक होते हैं। एक उसके भाई और दूसरा उसकी सन्तान। भाई बांह होती है, भाई के अलग होने पर या मृत्यु होने पर प्रायः कहा जाता है कि मेरी बांहें टूट गईं। लक्ष्मण के शक्ति लगने पर भगवान् राम ने विलाप करते हुए कहा था कि जहान में सब कुछ फिर मिल सकता है पर सगा-मा जाया भाई फिर कहीं नहीं मिल सकता।

समाज के क्षेत्र में भाई अपने धर्म-बन्धु, भिन्न-भिन्न स्तर के लोग होते हैं। आर्यसमाज का अछूतों में कार्य तथा शुद्धि कार्य में भाईयों को अलग होने से बचाने का कार्य था। म० हंसराज जी ने मलकानों की शुद्धि का कार्य करते हुए अपना स्वास्थ्य भी गंवा दिया था। डी. ए. वी. कालिजों में प्रारम्भ से ही छूत-अछूत समस्या का अन्त कर दिया गया था। पर स्वा. दयानन्द का स्वप्न कभी नहीं पूरा हुआ। वे जन्मगत भेदों का नाश चाहते थे। आज गवर्नमैंट की हरिजन सम्बन्धी नीति के कारण ये भेदभाव और दृढ़ हो गए हैं, आर्यसमाज के मार्ग में और अधिक कठिनाइयां आ गई हैं। आर्यसमाज केवल सवर्ण हिन्दुओं का ही समाज न बन कर रह जाए, इस बात से विशेष सावधान होना पड़ेगा। इस बात के लिए भगीरथ प्रयत्न करना पड़ेगा कि प्रत्येक आर्यसमाज शहर की हो या गांव की वह जन समूह की (Masses) की होनी चाहिए कुछ ऊंची श्रेणियों की (Classes) की न हों।

जालन्धर में आय-भक्त विरादरी के लोगों में आयसमाज के कार्य के लिए अपूर्व उत्साह दिखाई दे रहा है। यह कुछ आर्य भाइयों के विशेष परिश्रम का परिणाम है।

म० हंसराजजी की इस पवित्र जन्म शताब्दी पर हम उन प... च आ उ पू प्र उ ह

हर्ष-सूचना तथा बधाई

श्रद्धेय ला० सूर्यभानु जी वाइस चांसलर, कुरुक्षेत्र यूनिवर्सिटी के कार्य करने में ३ वर्ष की और वृद्धि के समाचार से सम्पूर्ण आर्यजगत में प्रसन्नता की लहर दौड़ आई है, इस महान संस्था ने उनके तत्वावधान में आगे भी बहुत उन्नति की है।

श्रद्धेय ला० सुर्यभानु जी का वहां इस रूप में होना ही आर्य-वैदिक आदर्श और संस्कृति की सुव्यवस्था तथा वृद्धि का प्रमाण है। आर्यजगत का पूर्ण विश्वास है कि इन आने वाले ३ वर्षों में भारतीय आदर्शों की पालना तथा परिष्कार के लिए स्थापित इस महान संस्था में इस दिशा में और भी अधिक कार्य होगा।

सम्पूर्ण आर्यजगत की ओर से मान्य ला० सूर्यभानु जी को बहुत २ बधाई हो।

भवदीय

सत्यदेव मन्त्री सभा

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा को वेदप्राचारार्थ प्राप्त धन की सूची

हंसराजमहिलाकालिजजालंधर ४१/-
संतराम जी आर्य रोरी (हिसार) २०/-
आर्यसमाज जुलाना शादीपुर ११६/-
" " बुटाना खेड़ा १७/-
" " भिगाना १२/-
" " भैंणी खेड़ा १५/-
" " चुड़ाना ४२/-
" " पौली (संगरूर) ८/-
" " निडाना ३३/-
" रेलवे कालोनी जालंधर ६१/-
चौ. दीपचन्द्र जी कालावड़ ८०/-

महात्मा हंसराज जयन्ती संबंधी प्राप्त धन राशि की सूची

श्री देवराज जी सैनी सीनियर सब जज रोहतक—१०/-
आर्यसमाज खरकाली ७/-
" दादूपुर (करनाल) ११/-
श्री बलदेवसिंह जी भंडारी एडवोकेट गुरदासपुर मारफत पं. खुशीराम जी (नोटों की राशि) ३००/-
पं त्रिलोकचन्द्र जी द्वारा कादिया से ६०/-
" अमरसिंह जी द्वारा (कोट जि० अंबाला से) १७४/-
आर्यसमाज मिर्चपुर(हिसार) २००/-
श्री जयलाल रघुवीरसिंह जी २५/-
डा० परसराम जी सांपला मंडी ५/-
ी ज्ञानीराम जी आर्यसमाज नाथवाला ५४/-

दानी सज्जनों का सभा की ओर से बहुत २ धन्यवाद

नोट—सभी आर्य बन्धुओं व महात्मा हंसराज जी के भक्तों से सानुरोध प्रार्थना है कि महात्मा हंसराज जन्म शताब्दी अत्यन्त नजदीक आ गई है इसको सफल बनाने के लिए अधिक से अधिक धन एकत्रित करके सभा के कार्यालय में भिजवाने का कष्ट करें।

सत्यदेव मन्त्री सभा

श्री मनसाराम जी अकौंटैन्ट ११/-
" मोहनलाल जी गुप्त लजाख १०/-

लाला लाजपतराय और आर्यसमाज

(ले०—श्री आशुराम जी पुरोहित आर्यसमाज चण्डीगढ़)

लाला जी अपनी आत्मकथा में लिखते हैं। कि 'मैं नहीं भूल सकूंगा उस प्यार को जो पहली बार १८८२ में आर्यसमाज के उत्सव में जानेपर मेरे साथ स्वर्गीय लाला साईंदास जी ने किया। मुझे पकड़ लिया और अलग ले जाकर कहने लगे कि हमने बहुत समय तक प्रतीक्षा की है। अब तुम हमारे साथ मिल जाओ। वह मेरे साथ बातें कर रहे थे। उधर मेरे मुंह की ओर देखने और पीठ पर प्यार का हाथ फेरते जा रहे थे। मैंने 'हां किया। उन्होंने प्रवेश फार्म मंगा लिया। मैंने कुछ सोचा। वह हंसने लगे और कहा कि मैं तुम्हारे हस्ताक्षर लिए बिना नहीं जाने दूंगा मैंने हस्ताक्षर कर दिये। उस समय उनके मुख पर जो मचक प्रसन्नता की दिखाई दी उसका वर्णन मैं नहीं कर सकता। ऐसा प्रतीत होता था कि उनको हिन्दुस्तान की बादशाहत मिल गई है।'

नये आने वाले व्यक्ति का आर्य समाज में किस प्रकार समादर होता था। यह उदाहरण इस का स्पष्ट रूप है।

लाला जी स्वयं आगे लिखते कि 'जब मैंने आर्य समाज की इस नाव पर पैर रखा, उस समय यह एक छोटी सी नाव थी परन्तु अब जहाज बन गई है। हिन्दु जातीयता बेड़े में आर्य समाज को ऊंचा स्थान प्राप्त है।'

लाला जी का १९०६ का वह ऐतिहासिक व्याख्यान जो उन्होंने देश-निकाले से वापसी पर लाहौर आर्य समाज के मंच से दिया वह आर्य-समाज की एक बहुमूल्य सम्पत्ति है।

आप ने कहा कि 'मेरे जीवन का जो भाग निकृष्ट है वह मेरा अपना है किन्तु जीवन का अच्छा और लोगों में प्रशंसनीय जो भाग है वह सब आर्य-समाज की बदौलत है। आर्य समाज ने मुझे वैदिक धर्म से प्यार करना सिखाया। प्राचीन आर्य-सभ्यता का मान करना सिखाया। पुराने आर्यों से मेरा सम्बन्ध करा कर मुझे उन का सेवक और भक्त बनाया। आर्य समाज ने मुझे अपनी जाति से प्यार करना सिखाया और बलिदान का मार्ग दिखाया। आर्य समाज ने मेरे अन्दर स्वतन्त्रता की रूह फूंकी और संगठन का पाठ पढ़ाया। आर्य समाज ने मुझे यह शिक्षा दी कि समाज, देश और धर्म की पूजा करनी चाहिए। जो मनुष्य इनकी सेवा में बलिदान करता है और दुःख उठाता है उसे स्वर्ग का राज्य मिलता है। 'अन्त में लिखते हैं कि यदि मैं आर्य समाज में प्रवेश न करता तो ईश्वर ही जाने मैं क्या होता किन्तु यह सत्य है कि जो कुछ मैं आज हूं वह न होता।

निःसन्देह लाला लाजपतराय का जीवन आर्यसमाज ने वैदिक धर्म के रंग में दिया था। १७००० रुपये की मासिक आय पर भी वह अपना एक प्रतिशत १/१०० मासिक चन्दे के रूप में आर्य समाज को को देते रहे। सार्वजनिक कार्यों के लिए वह निरन्तर दशांश १०/१०० निकालते थे। देश और विदेश में आर्य समाज के प्रचार की धूम मचा दी। तीन-तीन व्याख्यान देना। बाहर जाकर प्रचार करना। आर्य समाज के लिए सदस्यों की भरती करना। अनेक समाचार पत्र निकालना और अपने लेखों से उन को भरना। डी. ए. वी कालेज का निर्माण। दलितोद्धार, अकाल पीड़ितों की सेवा, और उधर स्वतन्त्रता के युद्ध में भी अपने बलिदानों का पूरा भाग देते रहना। साथ ही एक सफल वकील होते हुए अपने (clients) के अभियोग की पूरी तैयारी करके इतनी भारी आय परिवार-पालन के लिए कमाना। यह सब उनकी जीवन-गाथा का दैनिक कार्य-क्रम था। अमेरिका में आर्यसमाज के प्रचार की धूम मचाने वाले यही महापुरुष थे जनकी जयन्ती आज सारे देश में नहीं सम्पूर्ण विश्व में मनाई जा गई है। इसलिए यह कहना और मानना सर्व सत्य है कि यह आर्य-समाज के थे और निःसंदेह आर्य समाज को लाला लाजपतराय के महान् व्यक्तित्व ने ऊंचा किया।

फ्रांस के प्रसिद्ध विद्वान् रोमां रोलां ने ठीक कहा है कि 'मैं समझता हूं कि यदि स्वामी दयानन्द सरस्वती आज हमारे मध्य में होते तो वह लाला लाजपतराय के जीवित-जागृत चित्र को देखकर अत्यन्त प्रसन्न होते। वह वीर थे। उन्होंने न्याय और सत्य की रक्षा में अपना जीवन अर्पण किया हुआ था।

स्वर्गीय लाला जी की महान् सेवाओं का वर्णन करते हुए महात्मा गांधी ने इन शब्दों में श्रद्धांजली भेंट की थी।

'लाला लाजपत राय एक संस्था थे। उन की राष्ट्रीयता अन्तरराष्ट्रीयता से पूर्ण थी। वह बड़े उत्साही समाज सेवक और धर्म सुधारक थे। ऐसे एक भी सार्वजनिक आंदोलन का नाम लेना सम्भव नहीं जिस में कि लाला जी सम्मिलित न थे। सेवा करने की भूख उन की कभी समाप्त नहीं हुई।'

भगवन तेरी माया यह कैसा खेल रचाया

रचयिता—श्री धर्म चन्द्र जी शास्त्री साधु आश्रम होशियारपुर

(तर्ज—बोल राधा बोल)

सुहृद आपत्काले हि संध्यते (आपत्काल में मित्र की जांच होती है)।

डा सम्पूर्णानंद जी की सेवा में—

विचार वाटिका

(ले०—श्री राजेन्द्र जी जिज्ञासु प्राध्यापक दयानन्द कालेज शोलापुर)

★✵✵✵✵✵✵✵✵✵✵✵✵✵✵✵✵✵✵✵✵✵✵★

अविवेकी कौन ? डा० सम्पूर्णानन्द जी के प्रति मेरे मन में बड़ा आदर है। वह वेदनिष्ठ हैं और राष्ट्र के चिन्तनशील नेता हैं परन्तु उनकी कई मान्यताओं से हमें घोर मतभेद होता है यथा फलतः ज्योतिष के भ्रममूलक विचार में उनका अंध विश्वास। इन्हीं दिनों डा० सम्पूर्णानन्द जी के किसी लेख पर एक विद्वान आर्य भाई ने राष्ट्रीय संघ की पत्रिका **Organiser** में अपने विचार प्रकट किये। डा० सम्पूर्णानन्द जी ने उसके प्रत्युत्तर में एक छोटा सा लेख उस में दिया है। अपने लेख में डा० जी ने यह भी लिख मारा है कि वह व्यक्ति बड़ा अविवेकी या उतावला होगा जो यह समझता है कि ऋषि दयानन्द से पूर्व शंकर आदि महापुरुषों को वेदों के अर्थ नहीं आते थे। अंग्रेजी में उन्होंने **Rash** शब्द का प्रयोग किया है। डा० जी ने वेद के प्रसिद्ध द्वा सुपर्णा... के ऋषि दयानन्द द्वारा किये गये अर्थों का झुठलाया है। आर्यजगत के पाठक जानते हैं कि इस मन्त्र में ईश्वर जीव व प्रकृति के सम्बन्ध की चर्चा है। डा० जी लिखते हैं कि यहां दो पक्षी जीव व ईश्वर नहीं अपितु अज्ञानी व ज्ञानी जीव हैं।

आर्यगण ! शंकर आदि आचार्य लोग विद्वान थे इसमें सन्देह ही क्या है परन्तु जहां तक उनके वेद के अर्थों को समझने की योग्यता का सम्बंध है मैं पूज्य डा० सम्पूर्णानन्द जी से ही जानना चाहूंगा कि वह ही बतायें कि यदि इन आचार्यों को वेद के अर्थ आते थे तो इन्होंने उसका प्रकाश क्यों न किया ? डा० सम्पूर्णानन्द जी सदैव कहते हैं कि वेद में से अनेक गीतायें निकाली जा सकती हैं पर हिंदु समाज ने गीता पर वेद को वार दिया है। मैं उनके विचार का बड़ा पोषक हूं परन्तु वही बतायें, कि वेद की अवहेलना करने वाले कौन थे ? यदि यह लोग वेद के अर्थ को जानते थे तो वेद की रक्षा क्यों न की ?

डा० जी का इतिहास बताता है कि जब आर्यसमाज के शुद्धि के शंख नाद से देश में चेतना आई तो गांधी जी भी चक्र में आ गये कि हिन्दु धर्म में शुद्धि कैसे ? जब महात्मा गांधी जी को शुद्धि के विषय में एक पुराना मराठी का लेख दिखाया गया तो उन को विश्वास हुआ कि आर्य समाज द्वारा प्रतिपादित सिद्धांत मन गढन्त नहीं। प्रश्न यह है कि 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' यह वेद आदेश इन वेद के अर्थ जानने वालों के ध्यान में क्यों न आया ? शंकर आचार्य जी भंगी को देखकर भाग खड़े हुए उस समय 'मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे' का अर्थ क्यों न सूझा। स्त्रियों व शूद्रों पर वेद की कल्याणी वाणी के द्वार बन्द करते हुए 'यथेमां वाचं कल्याणीम्' का ईश्वरीय वाक्य क्यों भूल गया।

मैं मानता हूं कि यह महापुरुष विद्वान थे परन्तु आचार्य दयानन्द की मान्यताओं की पुष्टि में जब हम वेद का प्रमाण देते हैं तो लुड़कती हुई मिटती हुई, और खिसकती हुई पौराणिक रूढ़ियों के पोषक भी यहीं युक्ति देते हैं कि वेद के यही अर्थ तो नहीं जो ऋषि दयानन्द ने किये थे। डा० संपूर्णानन्द जी स्वय विचारें कि ये लोग वेद अर्थ जानते थे तो बाल विवाह अस्पृश्ता व मूर्ति पूजा बहुदेवतावाद, समुद्र पार न जाना, कबर पूजा, भूतप्रेत आदि में विश्वास, कर्म-सिद्धान्त की मान्यता होते हुए भी गुरु कृपा से पाप क्षमा, तीर्थ-यात्रा उपवास आदि से कुकर्म करके भी फल से बचने की भ्रष्टाचार पोषक धारणाएं राष्ट्र में क्यों पनपती रहीं ?

रही बात द्वा सुपर्णा,—मन्त्र के अर्थों की सो माननीय डा० जी से हमारी प्रार्थना है कि सायणाचार्य जी ने दो पक्षियों से जीव व परमात्मा यही भाव लिया है। निरुक्तकार का भी यही मत है। श्री शङ्कर आचार्य जी ने भी मुण्डक उपनिषद् व वेदांत दर्शन के भाष्य में जीव व परमात्मा यही अर्थ लिया है। डा० सम्पूर्णानन्द जी ने नाम तो शकर आचार्य जी का लिखा है परन्तु द्वा सुपर्णा के अर्थ को झुठलाने के लिये सांख्यकों की दुहाई दे दी है। मै माननीय विद्वान् नेता से कहूंगा कि वेद की रक्षा के लिए आचार्य दयानन्द जी को समझने का पूरा प्रयत्न करें। यह देव दयानन्द ही था जिस ने सब का विरोध मूल लेकर वेद का नाद बजा दिया। यह देव दयानन्द ही थे जिन की कृपा से मुझ जैसे ब्राह्मणेतर परिवार में उत्पन्न एक दो चार नहीं अपितु लाखों लोग आर्य समाज के मंच से वेद का प्रचार करते हैं। उस देव दयानन्द ने कार्य क्षेत्र में उतरते ही उस विषम वातावरण में श्री पं० श्यामकृष्ण वर्मा व पण्डित गुरुदत्त जी विद्यार्थी को वेद के असाधारण योग्यता के पंडितों की पंक्ति में लाकर खड़ा कर दिया। इन दोनों मेधावी पण्डितों ने पश्चिमी स्कालरों से लोहा लेकर वेद के गौरव की स्थापना की तब भी वेद अर्थ जानने वाले काशी आदि स्थानों में अनेक होंगे (आप ऐसा मानते होंगे) परन्तु कोई पश्चिमी स्कालरों से लोहा लेने निकल न सका। डा० जी को ध्यान रहे ये दोनों मेधावी पण्डित ब्राह्मणेतर परिवारों में पैदा हुए। इन के पश्चात भी वेद विद्या की रक्षा के लिये स्वा० स्वतन्त्रानन्द जी, पं० मनसाराम जी, पं० रामचन्द्र जी देहलवी सरीखे न जाने कितने तपस्वी त्यागी महात्मा कार्य क्षेत्र में उतरे। वर्ण व्यवस्था का शुद्ध वैदिक स्वरूप विश्व के सामने लाने वाले देव दयानन्द की महत्ता यहीं नहीं घटाई जा सकती।

--

आर्यसमाज लोहगढ़ (अमृतसर)

चुनाव

चुनाव से पूर्व आर्यसमाज लोहगढ़ में पं० लेखराम जी का बलिदान दिवस मनाया गया इस अवसर पर श्री धर्मपाल जी बी.ए. का प्रभावशाली भाषण हुआ तत्पश्चात् निम्न प्रकार से चुनाव सम्पन्न हुआ।

प्रधान—श्री ज्ञानीपिंडीदास जी
उपप्रधान—श्री प्रिंसीपलC.L.अरोड़ा
,, ,, भक्तराम जी
,, ,, बूटाराम जी
मन्त्री—,, प्रो० मुकन्दलाल जी
उपमन्त्री—,, पं. शिवकुमारजीशर्मा
,, ला. रोशनलाल जी
कोषाध्यक्ष—,, पं. पूर्णचन्द्र जी एडवोकेट
एडीटर—,, प्रो. एम.के. गुप्ता
पुस्तकाध्यक्ष-,, मा. मथुरादास जी

प्रतिष्ठित सदस्य—सर्वश्री बाबा गुरमुखसिंह जी, बाबा हरभजनसिंह जी, देशराज जी पुरी, हंसराज जी मित्तल एडवोकेट, शांति स्वरूप जी एडवोकेट, श्री गंगाराम जी, श्री धर्मपाल जी, प्रिंसीपल सरीन जी और प्रो० आर-एस शर्मा।

१६ सदस्य अंतरंग सभा के निर्वाचित हुए।

पिंडीदास ज्ञानी
प्रधान सभा

चरित्र निर्माण में भा...

ले०—श्री पिशोरीलाल जी 'प्रेम' रेणुका जिला सिरमौर

(गतांक से आगे)

सर्वश्रेष्ठ प्राणी के दृष्टिकोण से :—मानव सब जीवों में सर्वश्रेष्ठ प्राणी है। इसलिए कई लोग कह देते हैं—कि ईश्वर ने मनुष्य को खाने-पीने के लिए तो बनाया है। अरे भोले मनुष्य ! यह जीव आपके खाने के लिए नहीं बनाये अपितु अपने कर्मों का फल भोगने के लिए उत्पन्न किए हैं। सर्वश्रेष्ठ मानव को इनसे लाभ उठाने का अधिकार तो है परन्तु मारकर खाने का अधिकार नहीं है।

गाय, भैंस, बकरी आदि दूध देती हैं, भेड़ें भी दूध देती हैं और ऊन भी। प्राकृतिक भंगी सुअर और कीड़े-मकोड़े गन्द को खाकर पृथ्वी को साफ करते हैं पानी को मछलियां साफ करती हैं। मुर्दे तक खा जाते हैं। पक्षी कई प्रकार के विषैले कीटाणु खाकर वायुमंडल को शुद्ध करते हैं ऐसे उपकारी जीवों को जिह्वा के स्वाद के लिए मारना मानव की क्या सर्वश्रेष्ठता है ? मांस भक्षक कदापि सर्वश्रेष्ठ नहीं हो सकते, सर्वश्रेष्ठ तो रक्षा करने वाले दयालु ही बन सकते हैं।

ऐ सर्वश्रेष्ठ मानव ! अपने मन में सोच-विचार कर। जब तू अपने हाथ में छुरा लेकर भेड़ बकरी को मारता है क्या उन्हें दर्द नहीं होता। क्या वे चीखते-चिल्लाते नहीं। क्या वे तड़पते नहीं ! अगर तू दानव बन गया है और उनकी चीत्कार नहीं सुनता तो भगवान तो अवश्य सुनेगा। वह दयालु तो सबका पिता है न्यायकारी है। इस अत्याचार का फल तो तुझे अवश्य भुगतना पड़ेगा।

लेख लम्बा हो रहा है इसलिए समाप्त करता हुआ सर्वश्रेष्ठ मानव की सेवा में नम्र निवेदन करूंगा—कि मांस छोड़ने से कोई हानि नहीं होगी, कष्ट नहीं होगा, दुःख नहीं होगा अपितु इसके त्यागने से कई प्रकार के रोगों से तथा महापाप से मुक्ति मिलेगी, आत्मिक बल, मानसिक शक्ति प्राप्त होगी, बुद्धि विकसित होगी, विचार पवित्र होंगे, दया की भावना बढ़ेगी तथा सुख-शांति का वरदान मिलेगा। और चरित्र निर्माण में सहायता मिलेगी।

(क्रमशः)

नये बालकों का प्रवेश

निःशुल्क प्रकाशन की कृपार्थ

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के विद्यालय विभाग में नये बालकों का प्रवेश वार्षिकोत्सव पर १२ से १५ अप्रैल १९६५ तक होगा। गुरुकुल की उपाधियां सरकार और विश्वविद्यालयों द्वारा स्वीकृत हैं। आश्रम प्रणाली, शुद्ध जलवायु, उत्तम आहार व्यवहार इस संस्था की मुख्य विशेषतायें हैं। प्रवेशार्थ प्रार्थना पत्र तथा नियमावली आचार्य गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय जिला सहारनपुर से मंगावे जा सकते हैं। आचार्य

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय,

हरिद्वार

... उत्सव

सैक्टर ८ चण्डीगढ़ ...सी जिला हिसार, सभा करनाल आदि सुप्रसिद्ध समाजों में ऋषि-बोध उत्सव बड़े उत्साह से मनाया गया तथा अनेक विद्वानों ने अपने भाषणों द्वारा ऋषि चरणों में श्रद्धांजलियां अर्पित कीं।

शोलापुर के समाचार

शिक्षा जी विद्यापीठ के कुलगुरु डा० पवार कालेज के एक नये भवन का उद्घाटन करने के लिए पधारे। आपने कालेज की आश्चर्यजनक प्रगति पर बोलते हुए आचार्य भगवानदास जी की ... और ... कर्मठता की भूरि-भूरि ... की।

विद्या के ... आर्य समाज ने हिन्दी मराठी व ... में वैदिक साहित्य ...

(२) विद्यापीठ का एक आयोग दयानन्द संस्थाओं के निरीक्षण के लिए आया। आयोग के सदस्य डा० शिंगटे ने दयानन्द कालेज को विश्वविद्यालय का भूषण कहा।

(३) ऋषि बोधोत्सव सोत्साह सेठ केशवलाल जी की अध्यक्षता में मनाया गया। मराठी के यशस्वी कवि श्री कुञ्जबिहारी, श्री डा० श्री कुलकर्णी जी, श्री लोखंडे जी, श्री कुमार काठोवले के बाद प्रा० जिज्ञासु जी व हरिश्चन्द्र जी गुरु जी के भाषण हुए। सेठ जी ने ऋषि दयानन्द व आर्यसमाज की राष्ट्र को देनपर ओजस्वी भाषण दिया।

धर्मवीर लेखराम बलिदान पर्व भी समाज ने मनाया विभिन्न वक्ताओं ने हुतात्मा को श्रद्धांजलि भेंट की।

(४) महात्मा हंसराज जन्म शताब्दी मनाने का निश्चय किया।

विनीत—राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

उप-मन्त्री

अखिल भारतीय निबन्ध रचना

आर्य समाज सिकन्द्राबाद के तत्वावधान में प्रथम पुरस्कार प्रतियोगिता

आर्य समाज सिकन्द्राबाद के तत्वावधान में प्रथम निबन्ध प्रतियोगिता के लिए निबन्ध आमंत्रित हैं। सर्वश्रेष्ठ निबन्ध के लेखक को १०१ रुपये का पुरस्कार दिया जाएगा। द्वितीय और तृतीय श्रेष्ठ निबंधों पर क्रमशः ५१ रु. और २१ रुपये के पुरस्कार दिये जाएंगे श्रेष्ठ निबन्धों को प्रकाशित करने का प्रयत्न भी किया जाएगा प्रकाशित निबन्धों के लेखकों को समुचित पारिश्रमिक देने का प्रयत्न भी किया जाएगा। आर्य शिक्षालयों, कालिजों, स्कूल गुरुकुल में कार्य करने वाले सभी अध्यापक इस प्रतियोगिता भाग ले सकते हैं। निबन्ध का विषय है। समकालीन आर्थिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक सुधारकों में महर्षि दयानन्द का स्थान, निबन्ध भेजने की अन्तिम तिथि —३१-५-६५

विस्तृत जानकारी के लिए लिखिए

अखिल भारतीय निबन्ध रचना

आर्यसमाज, राष्ट्रपति रोड,

सिकन्द्राबाद

आर्यसमाज मिरचपुर में प्रचार

श्री प० प्रभुदयाल जी आर्य प्रभाकर अपनी भजन मंडली समेत मिरचपुर में वेद प्रचार कार्य करते रहे। श्री हरिश्चन्द्र जी के भजनों व जीतराम जी ढोलकिया ने ऐसा समा बांधा कि जनता मंत्र मुग्ध हो गई। यह प्रचार ४ मार्च से ८ मार्च तक प्रतिदिन होता रहा। समाज के प्रधान मातुराम जी चौ० जुगलाल जी, चौ० सूबाराम जी आदि सज्जनों के सहयोग से यह समारोह सफल हो गया। आर्य जगत मिरचपुर निवासियों को, विशेषकर चौ० मातुराम जी प्रधान आर्यसमाज मिरचपुर का अति धन्यवादी है इस अवसर पर २००) रु० महात्मा हंसराज जयन्ती वास्ते प्राप्त हुआ इस पुरुषार्थ के लिए मंडली का भी धन्यवाद किए बिना हम नहीं रह सकते।

मुद्रक व प्रकाशक श्री सन्तोषराज जी आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर द्वारा वीर मिलाप प्रैस, मिलाप रोड जालन्धर से मुद्रित तथा आर्यजगत कार्यालय महात्मा हंसराज भवन निकट कचहरी जालन्धर शहर से प्रकाशित मासिक—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर

उद्बोधन

(ले० श्री प्रो० योगेन्द्रसिंह जी यादव मंत्री आर्य युवक समाज डी० ए० वी० कालिज चण्डीगढ़)

****

दैनिक स्वाध्याय में वेद भगवान की 'उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत' पंक्तियां आंखों के सामने आईं।

एक विचार ने मस्तिष्क में जन्म लिया: कितना सामयिक उद्बोधन है यह! लगता है मानो आज ही के लिए लिखा गया हो जबकि हम सब यदि सुसुप्त न भी हों तो भी प्रमाद के बाहुपाश में अवश्य जकड़े हुए हैं।

सोचता हूं कितना विशाल क्षेत्र है हमारा, महर्षि दयानन्द के स्वप्न को साकार करने हेतु कितने सोपान अभी हमें और चढ़ने हैं? यही आज प्रत्येक ऋषि-भक्त आर्य को विचारना है।

राष्ट्र के पुनरुत्थान के लिए आर्य समाज ने क्या नहीं किया? इसके प्रवर्तक ऋषिवर दयानन्द के ही सुप्रयत्नों का सुफल है। आधुनिक भारत का नव-निर्माण इसका चारित्रिक पुनर्गठन और सामाजिक पुनरुद्धार! मौलाना हसरत मोहानी के विचारों में तो भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में भी अपने प्राणों की बाजी लगा देने वालों में से नब्बे प्रतिशत व्यक्ति इसी आर्यसमाज रूपी पाठशाला में दीक्षित हुए थे।

सन १९२० ई० तक समस्त राष्ट्र का पथप्रदर्शन करने वाली यह संस्था आज प्रसुप्त क्यों? अपनी शिथिलता का ही एक प्रमाण देना चाहूंगा—गजेटिड अवकाशों की सूची देखने पर आपको पता लगेगा कि इस धर्म (Secular) राज्य में प्रायः सभी मतों अथवा उन मतों से सम्बन्धित व्यक्तियों के नाम से कोई न कोई अवकाश अवश्य है। उदाहरणतया:—महावीर जयन्ती, बुद्ध पूर्णिमा, गुरु नानक जन्म-दिन, गुरु गोविन्दसिंह जन्म-दिवस, रविदास जयन्ती, मुहर्रम, गुड-फ्राइडे, क्रिसमस (xmas) आदि-आदि किन्तु आर्यसमाज जैसे देशभक्त संगठन एवं समस्त भारत ही नहीं अपितु मानव मात्र का जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में मार्ग-प्रदर्शन करने वाले देव दयानन्द के नाम से कोई भी अवकाश नहीं।

क्यों?

इसे अपनी सरकार की धर्म निरपेक्षता (secularism) का आदर्श कहूं या अपनी शिथिलता? कदाचित कुछ व्यक्ति कहेंगे कि अधिक अवकाश का होना एक राष्ट्रीय क्षति है। आंशिक रूप से इसे सत्य माना जा सकता है। आंशिक रूप से इस लिये कि यही बात हम अन्य मतों से सम्बन्धित पर्वों पर भी लागू कर सकते हैं। यह सौतेली मां वाला व्यवहार हमारे ही साथ क्यों? फिर हम अवकाश मांगते ही कहां? हमारा तो इतना सा कथन मात्र है कि कुछ पर्व जो दैवयोग से ऋषि-जीवन से भी सम्बन्धित हैं क्या हम उनके नाम के साथ नहीं जोड़ सकते?

ब्रिटिश राज्य में तो सम्भवतः यह इसलिये नहीं हो पाया होगा क्योंकि हम उनकी 'ब्लैक लिस्ट' में थे। परन्तु अब कि हम स्वाधीन भारत के स्वच्छन्द वातावरण में श्वास ले रहे हैं, हम क्यों उस महापुरुष के जीवन से किसी अवकाश को सम्बन्धित न कर पाये? शायद इसलिये कि वर्तमान सत्ताधिकारी इतने दब्बू हैं कि उन्हें डर लगता है कहीं दूसरे मतावलम्बी इस बात से चिढ़ न जायें, कहीं वह हर आठवें दिन उनकी सिर-दर्दी का कारण न बन जायें। क्या खबर उन बेचारों को कि आज तो दूसरे मतावलम्बी भी ऋषि गुणगान कर के अपने को धन्य समझते हैं? मेरी बात की पुष्टि करेगी ऋषि-बोधोत्सव के अवसर पर नेहरू पार्क चण्डीगढ में उस महामानव को विभिन्न मतावलम्बियों द्वारा दी गई श्रद्धांजलियां।

पंजाब के आर्य युवकों के समक्ष यह समस्या आज से नहीं अपितु अनेक वर्षों से आ रही है। उन्होंने इसके लिए अधिकारियों तक अनेक शिष्टमण्डल भेजे और इस सम्बन्ध में लेख भी लिखे। पंजाब प्रान्तीय आर्य वीर दल, पंजाब प्रान्तीय आर्यकुमार परिषद् एवं प्रादेशिक आर्ययुवक संगठन के बीस प्रतिनिधियों का एक शिष्ट-मण्डल २५ फरवरी १९६५ को इस सम्बन्ध में मुख्यमन्त्री, गृहमंत्री, शिक्षामंत्री एवं सार्वजनिक निर्माण विभाग मन्त्री से मिला। उनके पिछले प्रयत्नों का प्रतिफल मिला हमें शिवरात्रि के अवकाश के रूप में। किन्तु अभी हमें राजकीय पत्रों में शिवरात्रि के साथ "ऋषि बोधोत्सव" अथवा "महर्षि दयानन्द जन्म दिवस" भी लिखवाना है, जिसके लिए अधिकांश अधिकारियों ने आश्वासन दिया है। हमें आशा ही नहीं वरन पूर्ण विश्वास है कि हम अपने इस कार्य में अवश्य ही सफलता प्राप्त करेंगे। आवश्यकता है संगठन, सहयोग एवं कर्मठता की। इस कार्य में यथा सम्भव हमारा सहयोग देने वाले चौ० रणसिंह एम० एल० ए० एवं प्रि० रलाराम जी एम० एल० ए० धन्यवाद के पात्र हैं।

जिस उत्साह, लगन, एवं निष्ठा से प्रो० उत्तमचन्द जी 'शरर', श्री बीरूराम जी एवं श्री रामप्रकाश जी रिसर्चस्कालर पंजाब के आर्य-युवकों में जान डालने में तत्पर हैं यदि ऐसे ही कुछ युवक कार्य-क्षेत्र में उतरें तो वह दिन दूर नहीं जब हम महर्षि के सपने को साकार कर सकेंगे।

आर्य युवको उठो, जागो और अपने वरों को प्राप्त करो। वेद भगवान हमें कह रहे हैं, 'कृतं मे दक्षिणे हस्ते जयो मे सव्य आहितः।'

आर्यसमाज के समाचार

प्रधान मोहल्ला रोहतक शहर

लाजपत राय शताब्दी दिवस:— दिनांक १६ माघ को ईसाई निरोध समिति के कार्यालय में मनाया गया।

वसन्त पर्व:—वीर हकीकत राय की याद में आर्य समाज मन्दिर में रविवार २६ माघ को मनाया गया।

हिन्दी भाषा रक्षा दिवस दिनांक १० फागुण सं० २०२१, रविवार के दिन पूज्य आचार्य भगवान देव जी महाराज की अध्यक्षता में मनाया गया। जिस में दो प्रस्ताव पारित हुये। एक प्रस्ताव में भारत सरकार से मांग की गई, कि हिन्दी भाषा को राष्ट्र तथा राज्य भाषा बनाए रखने में दृढ़ता दिखाए। यदि इस सम्बन्ध में किसी प्रकार की ढील की गई, तो आर्य समाज के लिये असह्य होगा। दूसरे प्रस्ताव में जनता से अनुरोध पूर्वक प्रार्थना की गई, कि अपने काम-काज तथा व्यवहार में हिन्दी का प्रयोग करें। पुनश्च दिनांक १० फागुण को आर्य समाज को दिये जाने वाले सात्विक अढ़ाई हजार रुपए दान से नये कमरे का शिला न्यास पूज्य आचार्य भगवान देव जी महाराज द्वारा सम्पन्न हुआ।

महानन्द आर्य B.A.



टलीफोन नं० ३०५७ [आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधिसभा पंजाब जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd. No. P. 121

एक प्रति का मूल्य १३ नये पैसे वार्षिक मूल्य ६ रुपये

वर्ष २५ अंक १३) १५ चैत्र २०२१ रविवार—दयानन्दाब्द १४०— २८ मार्च १९६५ (तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

वेद सूक्तय:

जितम् अस्माकम्

हे वैरियो ! बार-बार सुन लो कि संग्राम में विजय हमारी है। शत्रुओं के साथ टक्कर लेने में हमारी हर प्रकार की जय ही जय है। वैरियों की हर अवस्था में हार है, मौत ही मौत है। हमारी तो जय ही जय है।

उद्भिन्नमस्माकम्

यह भी शत्रु सुन लेवे कि विजय के साथ-साथ हमारी वृद्धि ही है। उन्नति ही उन्नति है, शत्रुओं का तो नाश ही होगा। जय ही जय है। हमने संग्राम में पग धरकर जीतना ही सीखा है। हारना सीखा ही नही है।

अभ्यष्टां विश्वाः पृतनाः

देखो! ये जितने भी मेरे या हमारे पृतनाः—वैरी हैं, विरोधी या घातक हैं—वे विश्वः—सारे के सारे मैंने अभ्यष्टाम्—पराजित कर दिये हैं। उन सबको हरा दिया है मार-मारकर भगा दिया है। कोई भी खड़ा नहीं हो सका।

अ थ र्व वे द से

वे दा मृ त

ओ३म् सजूर्देवेन सवित्रा सजूरुषसेन्द्रवत्या।
जुषाणः सूर्यो वेतु स्वाहा ॥ यजु० अ० ३ मं० ९

अर्थ—वह परमेश्वर (सजूः) सदा सहायक और प्यारा है (देवेन) दिव्य प्रकाश से भरे हुए (सवित्रा) सूर्य के साथ और (सजूः) सदा साथ रहता है (उपसा) उषाकाल के साथ (इन्द्रवत्या) इन्द्र वाली सूर्य वाली उषा के साथ है (जुषाणः) सदा वर्तमान है। ऐसा प्रभु (सूर्यः) प्रकाशक तथा चराचर में व्यापक होकर (वेतु) हम भक्तों को ज्ञान से भर देवे। प्रकाश तथा बुद्धि से मालामाल कर देवे। यह पवित्र आहुति उसी भगवान् के अर्पण कर रहा हूं। उसी के लिए समर्पित है।

भाव :—हे दयालो! सारे विश्व के प्रकाश देने वालों को प्रकाश देने वाले परमदेव! आप इस ब्रह्माण्ड में सर्वव्यापक हो रहे हैं। अनन्तनेत्र होकर प्रत्येक के बाहर और अन्दर के कर्मों को, भावों को देखते व जानते हैं। जैसे उषा के साथ सूर्य मिला हुआ है तथा उसे दिव्य सूर्य के साथ प्रकाशवती उषा मिली रहती है। भगवन्! ऐसी कृपा करो कि हम आपके भक्त और उपासक भी सदा आपकी उपासना के साथ जुड़े रहें। किसी भी अवस्था में हम आपके आश्रय का परित्याग न करें। जिस भी स्थान पर हों, अवस्था में हों, आपकी भक्ति व प्रेम का प्यारा प्याला सदा पीते रहें। हमारे पास जो कुछ भी है—यह प्रभो! आपका ही तो दिया हुआ है। आपके भण्डार से ही तो लिया है। यह हमारी श्रद्धा से भरी हुई आहुति आपके ही अर्पण है। स्वीकार करें—सं०

ऋषि दर्शन

मनुष्याः परमेश्वर पूजकाः

सारे मनुष्यों को चाहिए कि वे अपने जीवन में परमात्मा की पूजा करते रहें। आस्तिक बनकर प्रभु का भजन निरन्तर करें। धनमद, जनमद, यौवनमद या बलमद में आकर भगवान् को भूल न जावें।

चक्रवर्ति सार्वभौमः

ऐसा वीर क्षत्रिय, प्रभु प्यारा दुष्टों को मारने वाला, ज्ञान और धर्म की रक्षा करने वाला राजा या शासक संसार में चक्रवर्ति राज्य को प्राप्त कर लेता है। सारे संसार में उसका शासन हो जाता है।

राष्ट्रे कदाचिदनिष्टं न

ऐसे शासक वीर राजा के राज्य में कभी कोई किसी प्रकार का अनिष्ट नहीं होता। कोई उत्पात, गड़बड़, अशान्ति नहीं होती। राज्य में सर्वत्र सुख शान्ति रहती है।

भा ष्य भू मि का से

अधिष्ठाता—श्री संतोषराज जी

सम्पादक—त्रिलोक चन्द्र शास्त्री

धर्म का सच्चा स्वरूप

(ले०—श्री आचार्य मित्रसेन जी एम० ए०, अलीगढ़)

आज का शिक्षित युवक धर्म शब्द से ही चिढ़ना प्रारम्भ कर देता है। उसकी दृष्टि में धर्म व्यर्थ की ही वस्तु है। उसके विचारों के अनुसार धर्म के कारण विश्व में अनेक युद्ध हुए, हत्याएं, ईर्ष्या-द्वेष, लूट-पाट, कत्ले-आम, हिंसा (बलि), चोरी, झूठ, ढोंग, व्यभिचार, भ्रष्टाचार आदि अनेक कुकृत्य हुए और आज भी हो रहे हैं। अतः धर्म से पृथक रहने में कल्याण है। उसका नाम भी न लेना चाहिए। उससे पूछा जावे कि धर्म किसे कहते हैं? तो उत्तर देगा यही ईसाई, बौद्ध, हिन्दू, पारसी, इस्लाम आदि। यदि यही धर्म का वास्तविक अर्थ है तब तो कुकृत्य होंगे ही।

धर्म क्या है! यह अत्यन्त गहन विषय है। बड़े-बड़े ऋषि-मुनियों ने इसका समाधान करने का प्रयत्न किया है। उन्हीं के ग्रन्थों के स्वाध्याय से मनन किया जावे तो धर्म का यह तात्पर्य निकाला जा सकता है—

धर्म शब्द का अर्थ

धर्म शब्द अनेक अर्थों में प्रयुक्त हुआ है। साधारणतः यह माना जाता है कि यह संस्कृत की 'धृ' धातु से सिद्ध हुआ है। इसका अर्थ है 'धरतीति धर्मः' अथवा 'येनैवद्धार्यते, स धर्मः'

अर्थात् :—जिसके द्वारा संसार का धारण (रक्षण) किया जाता है। अथवा जो धारण किया जा सके। नारायनोपनिषद् में लिखा है—

धर्मो विश्वस्य जगतः प्रतिष्ठां लोके धर्मिष्ठं प्रजा उपसर्पन्ति धर्मेण पापमपनुदीत धर्मे सर्वं प्रतिष्ठितं तस्माद्धर्मं परमं वदन्ति।

भगवान् वेद व्यास जी महाराज लिखते हैं :—

धारणाद्धर्म इत्याहुर्धर्मो धारयते प्रजाः।
यत्स्याद्धारण संयुक्तो स धर्म इति निश्चयः॥

अर्थात्—धारण करता है इसलिए धर्म को धर्म कहा गया है। धर्म प्रजाओं को धारण करता है, जो धारण करने की योग्यता रखता है वही धर्म है।

इसे हम यों स्पष्ट समझ सकते हैं। ब्रह्माण्ड दो भागों में बांटा सकता है जड़ और चेतन् जड़ पदार्थों में भी धर्म होता है जैसे जलमें जलत्व पृथिवि में पृथिवीपन आदि। चेतन के भी पशु, पक्षी, मानव आदि भेद किये जाते हैं। सभी में अपना अपना धर्म विद्यमान रहता है। इन सबमें मनुष्य ही ऐसा प्राणी है जिसमें अन्नमय, मनोमय, विज्ञानमय और आनन्दमय कोश रहते हैं। अन्य प्राणियों में नहीं कारण है कितने ही किस में कितने कोश रहते हैं कि मनुष्य को सभी सुख प्राप्त हैं। मनुज योनि में भी अनार्य, आर्य, आर्यो में भी ब्राह्मण क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र भी योग्यता आदि की दृष्टि से उत्तमता होती है। इससे यह सिद्ध होता है कि जिस शक्ति ने जीव को जड़ से पृथक् कर रखा है और जो प्रत्येक जीव की रक्षा कर रही है, एवं जो शक्ति मनुष्य को उन्नत बनाती हुई अन्त में मोक्ष दिलाती है वही शक्ति धर्म है। महर्षि कणाद ने कहा :—

यतोऽभ्युदयनिःश्रेयस सिद्धिः सधर्मः

वैदिक अर्थ

ऋग्वेद में धर्म शब्द का अनेक अर्थों में प्रयोग हुआ है। कहीं विशेषण के रूप में, कहीं संज्ञा के रूप में, कहीं धर्मन् शब्द का प्रयोग हुआ है और कहीं पुलिंग अर्थ में तो कहीं उभयलिंग में। यहां इसका प्रयोग धारण करना, आलम्बन देना, पालन करना आदि धर्मों में हुआ है। जैसे—

तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
प्रथमा धर्मा, सत्ना धर्माणि।
इत्यादि।

अथर्व वेद में धर्म का अर्थ 'धार्मिक क्रिया संस्कार करने से अर्जित गुणों के रूप में प्रयुक्त हुआ है। (देखिये अथर्व०६।६।१७)

उपनिषदों में अर्थ

छान्दोग्योपनिषद् में धर्म का अत्यंत महत्वपूर्ण अर्थ किया है जिसे हम निम्न प्रकार से बांट सकते हैं।

१. यज्ञ, अध्ययन और दान (गृहस्थ)

२. तपस्या (वानप्रस्थ और सन्यास)

३. ब्रह्मचारित्व

यह अर्थ आश्रम विशेषों के कर्तव्यों को सूचित करता है। विस्तार से जानने के लिये वहीं देखना लाभप्रद होगा।

तैत्तिरीयोपनिषद् में इस का अर्थ (जो छात्रों के लिये प्रयुक्त हुआ है) है सत्यं वद 'धर्मं चर' गीता में कहे गये 'स्वधर्मे निधनं श्रेयः' का भी यही अर्थ समझ में आता है। मनुस्मृति के प्रसिद्ध टीकाकार श्री मेध्नीतीर्थ के अनुसार स्मृतिकारों के इस के पांच स्वरूप (अर्थ) माने हैं।

१. वर्ण धर्म
२. आश्रम धर्म
३. वर्णाश्रमधर्म
४. नैमित्तिक धर्म (प्रायश्चित्त आदि)
५. गुण धर्म (राजा आदि के कर्तव्य)

धर्म क्या है ?

धर्म के ऊपर लिखे गये विभिन्न अर्थों से यह ज्ञात होता है कि सभी ने इसके 'धारण करना' अर्थ अवश्य माना है। प्रश्न यह होता है कि धारण क्या करें? उत्तर भिन्न-भिन्न दृष्टिकोणों से दिया जा सकता है परन्तु सर्वमान्य उत्तर होगा कि इस लोक और परलोक में कल्याणप्रद आप्त पुरुषों के उपदेश ही धारण करने योग्य हैं। आप्त पुरुषों का लक्षण है—

अद्वेष्टा सर्वभूतानां
मैत्रः करुण एव च।
निर्ममो निरहंकारः
समदुःखसुखीः क्षमी॥
सन्तुष्टः सततं योगी
यतात्मा दृढ़ निश्चयः॥
गीता १२।१३-१४॥

अर्थात—जो सब प्राणियों में द्वेष भाव से रहित, स्वार्थ रहित, सब का प्रेमी और दयालु है। ममता, अहंकार रहित, सुख-दुःख में समान भाव रखने वाला, क्षमाशील, सन्तोषी, योगी, संयमी और दृढ़निश्चयी है वह आप्त पुरुष है। उक्त गुणों की कसौटी पर वेद तथा तदनुकूल स्मृति आदि ही खरी उतरती हैं अतः उन्हीं का कथन धर्म कहा जा सकता है।

परिभाषा

धर्म की परिभाषा बताते हुए, उक्त कथन का समर्थन करते हुए पूर्वमीमांसा में महर्षि जैमिनि ने लिखा है—

चोदना लक्षणार्थो धर्म ॥१।१।२॥

अर्थात्—वेदविहित अनुशासनों के अनुसार चलना ही धर्मः है। वैशेषिककार ने वेद को ही उन्नति का कारण मानकर लिखा—

यतोऽभ्युदय निःश्रेयससिद्धिः स धर्मः॥

धर्म की कुछ एकांगी परिभाषा भी उत्तर कालीन साहित्य में प्राप्त होती है। जैसे—

आचारः परमोधर्मः ॥मनु० १।१०८
श्रुति प्रमाणको धर्मः॥

(शेष पृष्ठ ७ पर)

आर्य जगत्

वर्ष २५] रविवार २०२१, २८ मार्च १९६५ [अंक १३

महात्मा का महापर्व

महात्माओं का जीवन सारे समाज व राष्ट्र के लिए एक दिव्य प्रकाश होता है। वे सब के लिए होते हैं, उनका प्रत्येक कार्य समाज के स्तर को उन्नति के पथ पर ले जाने वाला होता है। यही कारण है कि महानात्माओं का जन्म दिन हो या स्मृति दिवस हो—किसी एक व्यक्ति, परिवार, नगर प्रांत के नहीं होते वरन् सारे राष्ट्र के जीवन के लिए हुआ करते हैं। महात्मा इसी कारण से महात्मा कहलाते हैं। आत्मा का सम्बन्ध एक शरीर या एक सीमित स्थान के साथ होता है—किन्तु महान् आत्मा का शरीर भी विशाल तथा परिवार भी महान् हुआ करता है। इसी लिए महात्मा लोग सारे देश के होते हैं। उन पर सब को मान होता है। उनके दिन भी राष्ट्र के महान् पर्व बन जाते हैं।

सारे भारत में डी० ए० वी० आंदोलनकी ज्ञान धारा को प्रवाहित करने वाले स्वर्गीय महात्मा हंसराज जी भी महात्मा थे। जीवन में मन, वचन तथा कर्म में महान् थे। उनका अपना तो कुछ था ही नहीं। भूमि, भवन और सम्पत्ति यदि वह चाहते तो पता नहीं कितनी बना लेते। सर्विस में कितने ऊंचे स्थान पर वह पहुँच जाते। आज भी कालेज हैं तथा उन में नाना प्रकार के प्रिंसिपल हैं किन्तु महात्मा हंसराज कोई नहीं। आज के युग में भव्य कोठियों, कारों व धन धन भण्डारों वाले तो प्रिंसिपल हैं पर त्याग तपस्या वाले नहीं है। जैसे ऋषि दयानन्द के बारे में एक नेता ने कहा था कि **Dayanand was Dayanand**—उसी प्रकार उस स्वर्गीय देवता के बारे में बिना संकोच यह लिखा तथा बोला जा सकता है कि **Hansraj was Hansraj**-अर्थात् हंसराज हंसराज थे। **D. A. V.** आन्दोलन के संस्थापक, आर्य प्रादेशिक सभा के प्रष्ठिापक, भगवान् के उपासक, जीवन के साधक, वेद प्रचार के आराधक तथा त्याग, तप, प्रेम, प्रभाव, चरित्र, संयम के शासक महात्मा हंसराज किस के लिए श्रद्धा के पात्र नहीं थे।

आर्य प्रादेशिक सभा जालन्धर ने इस देवता की सौ वर्षीय जन्म शताब्दी बड़े समारोह से जालन्धर में १७ से १९ अप्रेल इसी आने वाले मास में मनाने की योजना ही नहीं—इसके लिए भारी तैयारी भी हो रही है। बड़ा भारी समारोह होगा-बड़े २ नेता संन्यासी महात्मा तथा अन्य प्रसिद्ध व्यक्ति पधारेंगे। सभा के मान्य प्रधान श्री यश जी ने कितने सुन्दर लेख लिखे हैं तथा सभा मन्त्री प्रो. सत्यदेव जी विद्यालंकार ने कैसा भव्य सन्देश दिया है। समय थोड़ा व कार्य बड़ा है। सारी समाजें, संस्थाएं तथा भाई-बहिनें इस महान कार्य में सभा को पूरा २ सहयोग देवें। इस पवित्र काम के लिए प्रसिद्ध नेता संन्यासी महात्मा आनन्द स्वामी जी, डा० मेहरचन्द जी महाजन. डा० गोकुल चन्द नारंग, डा. दीवान चन्द जी कानपुर, ला. देवीचन्द जी एम. ए., प्रिंसिपल रलाराम जी एम. ए., श्री यश जी प्रधान श्री पं. सत्यदेव जी विद्यालंकार मन्त्री सभा ने अधिक से अधिक राशि सभा को भिजवाने की अपील की है। सारे ही इस काम में अभी से जुट जावें।

[—त्रिलोकचन्द्र

हार्दिक बधाई

कुरुक्षेत्र यूनिवर्सिटी के माननीय वायस चांसलर प्रिंसिपल सूर्यभानु जी एम. ए. को इस ऊंचे पद पर आसीन रह कर कार्य करने की तीन वर्ष की और अवधि सरकार ने प्रदान की है। इस के लिए हम सम्मान के योग्य प्रिं० वायस चांसलर जी को हार्दिक बधाई देते हैं। उनकी प्रबन्ध पटुता, योग्यता, गम्भीरता तथा महान अनुभव ने कुरुक्षेत्र के इस महान विश्वविद्यालय को थोड़े ही समय में बहुत ऊंचा कर दिया है। हम तो उस दिन की प्रतीक्षा में हैं जब यह यूनिवर्सिटी सारे विश्व का जीवन तीर्थ बनकर गीता प्रकाश के समान ज्ञान की ज्योति का महान् केन्द्र बन जायगा।

इसी प्रकार से

माननीय प्रिंसिपल गोवर्धनलाल जी दत्त ने विक्रम यूनिवर्सिटी से रिटायर होने के बाद डी० ए० वी. कालेज मैनेजिंग कमेटी नई देहली के प्रधानपद को स्वीकार करके अब देहली पधार कर इस विशाल शिक्षा मिशन के प्रबन्ध तथा इसे उन्नत करने में अपना सारा समय देना आरम्भ किया है। समाज के लिए बड़े गौरव की बात है। माननीय प्रिंसिपल जी भारत के माने हुए शिक्षा विशेषज्ञ अनुभवी तथा आर्यसमाज के महान नेता हैं। प्रभु करें कि प्रिंसिपल सूर्यभानु जी तथा प्रिंसिपल जी. ए. दत्त जी बहुत लम्बी आयु वाले हों। देश की ये संस्थाएं इन के सहयोग में प्रगति पथ पर चलती रहें।

भाव गीत—

अहम्

(डा. श्री देवव्रतजी महाजन आर्यसमाज लारेंसरोड अमृत[sic]

पूर्णिमा की रात्री,
शशिकिरणें बिखर बिखर [illegible]
चहुं ओर—सर्वत्र
धीर-गम्भीर समुद्र भी मच[illegible]
उठा—
धीरता खोकर, गम्भीरता खो[illegible]
विह्वल होकर उछलने लगा
चन्द्र से भी छिपी न रही—
यह उछल कूद
हंसकर कहा उसने—
अभिमान में आगये क्या ?
तुम मुझे न पकड़ पाओगे
मेरी बुलन्दी तक न पहुँच पा[illegible]
समेट डालो अपने बाहुओं [illegible]
और छोड़ दो इस हठ को।
हुँकार ने चोट खाई
चंचल समुद्र विफर उठा
चन्द्र मन्थर गति से चल[illegible]
रहा बिना उधर ध्यान दिए।
थकाहारा समुद्र शांत हो रहा
अपने 'स्व' में।

मोहन आश्रम हरिद्वार में

ऋषि-मेला

ईश्वरभक्ति तथा वैदिक धर्म का प्रचार ही

इस आश्रम का मुख्य उद्देश्य है। महर्षि जी के भक्तों को य[illegible] जान कर बड़ी प्रसन्नता होगी कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज की पाखंड-खंडिनी पताका के नीचे मोहन आश्रम हरिद्वार में पूर्ववत इस वर्ष भी ता० ८, ९, १० और ११ अप्रेल सन ६५ को ऋषि मेला मनाया जावेगा जिस में आर्य समाज के बड़े-बड़े पूज्य महात्मा संन्यासी और विद्वान् महानुभावों का सदुपदेश होंगे। उन्हीं दिनों में यजुर्वेद के विशेष-विशेष अध्यायों के मन्त्रों द्वारा बृहद्यज्ञ भी होगा

(स्वामी) सच्चिदानन्द तीर्थ अधिष्ठाता
मोहन आश्रम हरिद्वार

ऋषि दयानन्द ने नई जागृति जो शंख फूका, यद्यपि उस का अभिप्राय समस्त मानव मात्र को [जग]ाना था, पर इसका विशेष [प्रभ]ाव स्वाभाविक तथा हिन्दू जाति [तथा] धर्म पर पड़ा। इसके अनेक [का]रण हैं, पर मुख्य कारण यह है [कि] ऋषि दयानन्द को आधार वेद [औ]र शास्त्र थे। वेद और शास्त्र की [बा]त यदि कोई सुनना चाहता है [तो] हिन्दू ही है। ईसाइयों या [मुस]ल्मानों से यह आशा रखना [कि] वे वेदशास्त्र की बात सुनेंगे-बहुत [क]ठिन बात है। इस लिए ऋषि [दय]ानन्द के समय से भी और उन [के] बाद भी आर्य समाज का मुख्य [प्र]भाव-क्षेत्र हिन्दू जाति ही रहा। [अन्]य धर्मों और सम्प्रदायों पर जो [प्र]भाव हुआ वह सीधा न था।

ऋषि दयानन्द के जागृति-नाद [से] जो चेतना आई उसके अनेक रूप [थे।] एक रूप अपने दलित भाइयों का [उ]द्धार तथा पतित होते हुए लोगों को [ब]चाना था। इस लिए आर्य समाज [के] समस्त बड़े नेताओं ने इन दोनों [दि]शाओं में कार्य किया।

१९१९ में अमृतसर कांग्रेस के [अ]धिवेशन के बाद एक सुधार [स]म्मेलन हुआ। म. हंसराज ने [उ]स के प्रधान पद से भाषण देते [हु]ए दो बातों पर विशेष बल दिया। [ए]क जाति पाति की संकीर्णता की [नि]न्दा करते हुए उन्होंने परस्पर [ख]ान पान और विवाह सम्बन्ध न [ह]ोने की हानियों की ओर संकेत [कि]या। साथ ही ऊंच नीच की भावना हो जाने कसे अधूरी रह जाती है इस को भी स्पष्ट किया। दूसरे दलित जातियों के प्रश्न को भी उन्होंने उठाया। यद्यपि पंजाब में ये समस्याएं उतनी भयंकर रूप में नहीं जितनी कि यू. पी. तथा बिहार आदि अन्य प्रान्तों में हैं, [फि]र भी समाज के नेताओं ने [इ]धर प्रारम्भ में अधिक ध्यान दिया।

महात्मा हंसराज शताब्दी समारोह—२

(ले०—श्री सत्य देव जी मंत्री आर्य प्रादेशिक सभा जालन्धर)

१९२६ में डी. ए. वी. कालिज लाहौर के बोर्डिंग में भी यह समस्या उठी थी जब कि ब्राह्मण रसोइए लोगों ने चमार विद्यार्थियों को भोजन खिलाने से इन्कार कर दिया था। महात्मा जी ने इस समस्या को ऐसे सुन्दर ढंग से सुलझाया कि बोर्डिंग के सात सौ विद्यार्थियों ने मिल कर रसोइए लोगों का विरोध किया और कहा कि उन में से कोई भी भोजन नहीं करेगा यदि चमार विद्यार्थी उन के साथ भोजन न कर पाएंगे।

इस पहले निश्चय का यह प्रभाव हुआ कि आज तक किसी भी डी. ए. वी. कालेज के कालेज के बोर्डिंग में यह प्रश्न फिर नहीं उठा। कोई भेद-भाव न रहा।

इसी महात्मा जी के कार्य का एक रूप मालावार में मोपलाओं द्वारा बलात मुसलमान बनाए गए हिन्दुओं की शुद्धि का कार्य था। आर्यसमाज ने अपने सिद्धान्त के अनुसार अछूत जातियों में भी वहां कार्य किया, उन्हें आर्यसमाजी बनाया। अबोध मालावारी हिन्दुओं ने इसका विरोध किया शायद संसार भर में हिन्दू जाति ही एक ऐसी अभागी जाति है जिसे अपनी संख्या की वृद्धि से डर लगता है। आर्यसमाज को म० हंसराज के नेतृत्व में, मालावार में, हिन्दुओं को बचाने के काम में सवर्ण हिन्दुओं का विरोध भी सहना पड़ा। अदालतों के द्वारा, शुद्ध किए हिन्दुओं तथा आर्यसमाज में दीक्षित अछूतों के लिए सड़कों पर चलने का अधिकार करना पड़ा।

शुद्धि के सम्बन्ध में म० हंसराज के ये अमर वाक्य, जो कि सन् १९२७ की आर्य कांग्रेस के प्रधान पद से, दिल्ली में कहे गए, आर्यसमाज के कार्य-कर्ताओं को सदा स्मरण रखने चाहिए :—

"शुद्धि कार्य में हमारी अपूर्व सफलता से कुछ मुसलमान भन्ना गए और उन्होंने हिन्दुओं को आतंकित करना शुरू किया।

ऐसी खूनी घटनाओं से कुछ हिन्दू भयभीत हो जाते हैं। हत्याएं, घाव और धमकियां देख कर वह चीख उठते हैं, अब क्या होगा? लेकिन, देवियो और सज्जनों! इस बूढ़ी अवस्था में भी मुझे इनमें से कोई भी चीज न डरा सकती है और न निराश कर सकती है। जब मैं यह बातें देखता हूँ तो मेरे दिल में एक ज्वाला प्रज्वलित होती है अपने धर्म के प्रति प्रेम की ज्वाला।"

ऐसे धर्म-प्रेम की ज्वाला से समृद्ध महान् पुरुष की जन्म-शताब्दी पर प्रत्येक आर्यसमाजी व्यक्ति के हृदय में म० हंसराज के कार्य को आगे बढ़ाने का नया संकल्प जागना चाहिए।

म० हंसराज शताब्दी जयन्ती दान निधि

शताब्दी के सम्बन्ध में कार्य अब जोर-शोर से हो रहा है। संस्थाओं तथा आर्यसमाजों को दान सम्बन्धी पत्र तथा नोट भेजने का कार्य ला० सन्तोषराज जी बड़ी तत्परता से कर रहे हैं। यदि किसी समाज तथा अन्य संस्था के पास सभा की ओर से सूचना न भी पहुंचे तब भी वे अपना पवित्र कर्तव्य समझकर इस महायज्ञ में अपनी आहुति अवश्य देने की कृपा करें।

सभा का उपदेशक मण्डल भी इस कार्य में पूरी तरह लगा हुआ है पं० खुशीराम जी कई बड़ी-बड़ी समाजों से धन संग्रह कर रहे हैं। पं० चन्द्रसैन तथा म० मेलाराम जी जम्मू तथा आस-पास के प्रदेश में धन संग्रह के लिए कार्य कर रहे हैं। पं० त्रिलोकचन्द तथा म० राजपाल-मण्डली हिसार, दिल्ली की ओर गए हैं। पं० ओम्प्रकाश जी भी इसी प्रकार पहाड़ी प्रदेश में जा रही हैं।

आर्यसमाजों से नम्र निवेदन है कि जहां भी सभा के कार्यकर्ता शताब्दी की सम्बन्धमें पहुंचे उनका पूर्ण सहयोग द्वारा उत्साह बढ़ाएं।

श्री अमरसिंह जी की मण्डली ने अम्बाला प्रदेश में कार्य कर धन एकत्र किया है तथा श्री भूराराम जी की मण्डली ने, तथा श्री प्रभु-दयाल जी ने रोहतक जिला में कुछ कार्य किया है, धन भेजा है तथा कुछ और कार्य कर रहे हैं। अब्दुर्रहीम खानखाना प्रसिद्ध कवि भी थे और दानी भी। वे दान देते समय सदा आंख नीची रखते थे। उनका कहना था कि दान कोई और (भगवान) देता है, मेरे ऊपर दाता होने का लोग भ्रम करते हैं अतः मैं लज्जा वश आंख नीची कर दान देता हूं। ला. परमेश्वरी दास जी बहल भी आर्य समाज के इस ही प्रकार के दानी हैं। अभी-अभी उन्होंने शताब्दी कोष में ११००/- दान दिया है। इसके पहले भी आर्य समाज किला के मन्दिर-निर्माण में उन्होंने ५०००) दिया था। सबसे विशेष बात उनके दान में सात्विक भाव है—दान वह ऐसे देते हैं जैसे कोई दान लेकर उन पर ही अहसान कर रहा हो। इसी प्रकार श्री देसराज जी भाटिया एम-ए-हैड मास्टर आर्य हाई आर्य नाभा तथा पं. धर्मदेव जी अध्यापक आर्य हाई स्कूल नाभा का सभा को सहयोग

(शेष पृष्ठ ५ पर)

महात्मा हंसराज जन्म शताब्दी

(ले० श्री यश जी प्रधान आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा जालन्धर)

१९ अप्रैल को महात्मा हंस राज जी का जन्म हुआ था और १५ नवम्बर को देहांत। शताब्दी समारोह का आरम्भ जन्म दिन से भी दो दिन पहले हो जाएगा। वेसे तो उस दिन सभी नगरों में पंजाब के निर्माता और शिक्षा के देवता को श्रद्धांजलियां भेंट की जाएंगी। लेकिन जालन्धर और दिल्ली में यह दिन अधिक व्यापक स्तर पर मनाने की तैयारियां हो रही हैं। जालन्धर में झंडा लहराने की रस्म अदा करने के बाद एक बहुत बड़ा जलूस निकाला जाएगा। इस जलुस का प्रबन्ध श्रीमेहरचन्दजी जौली और श्री प्यारेलाल जी बेरी प्रिंसीपल साईं दास हायर सैकेन्डरी स्कूल जालन्धर कर रहे हैं। प्रबन्धकों की ओर से तो सभी निमन्त्रण-पत्र जाएंगे। मैं अभी से उत्तरी भारत के सभी स्कूलों और आर्य समाजों को सूचना दे देना चाहता हूं कि उन्होंने इस जलूस में भाग लेना है। १८ अप्रैल को जन्म शताब्दी का उद्घाटन समारोह होगा और १९ अप्रैल को शिक्षा-सम्मेलन और आर्य-सम्मेलन होंगे। महात्मा जी की जन्मशताब्दी के अवसर पर शिक्षा-सम्मेलन और आर्य-सम्मेलन का विशेष महत्व है। महात्मा जी ने अपने जीवन में दो महान काम किए, शिक्षा-प्रचार और वेद-प्रचार, इसलिए इन सम्मेलनों में इन बातों पर ही विचार होगा। इस समारोह से पहले भी जालन्धर में दो कार्यक्रम होंगे। एक महायज्ञ जो बैसाखी के दिन शुरू होगा, १९ अप्रैल को इसकी पूर्णाहुति पड़ेगी। इसके अतिरिक्त महात्मा हंसराज स्मारक भाषण-माला १२ अप्रैल से शुरू हो जाएगी। इस भाषण-माला में भाषण देने के लिए कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के उपकुलपति श्री सूरजभान, उज्जैन विश्वविद्यालय के उपकुलपति डाक्टर गोवर्धनलाल दत्त, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, प्रो० अब्दुल मजीद खां, डाक्टर गोकुलचन्द नारंग, डाक्टर अनूपसिंह की स्वीकृति आ चुकी है। कुछ और महानुभावों को भी निमन्त्रण दिया गया है। जन्म-शताब्दी को मनाने के लिए जगह-जगह अलग कमेटियां बनाई जा रही है है। आर्य प्रादेशिक सभा के प्रधान के नाते जहां मैं यह जन्म-शताब्दी अधिक से अधिक उत्साह के साथ मनाने की अपील करता हूं, वहां आर्यसमाज के श्रद्धालुओं का ध्यान इस ओर भी दिलाना चाहता हूं कि महात्मा जी का स्मारक बनाने के लिए हमें पांच लाख रुपया इकट्ठा करना है। यह राशि अधिक नहीं है।

वार्षिक चुनाव

आर्यसमाज होशियारपुर का वार्षिक चुनाव २८-३-१९६५ को प्रात. दस बजे आर्यसमाज मन्दिर में होगा जिस में नये साल के लिए अधिकारी चुने जायेंगे उसी दिन डी० ए० वी० कालिज मैनेजिंग कमेटी होशियारपुर के लिए २० प्रतिनिधियों का चुनाव भी किया जायेगा।

लभ्भूराम शर्मा मन्त्री

वैदिक धर्म गान मन भाया

(ले०—श्री मित्रसेन जी आर्य एम० ए०, साहित्याचार्य)

वर वीणा के तार हिले हैं,
आर्य सुमन नव भाव मिले है।
आस भरे अरविन्द खिले हैं,
क्या अनुपम गुंजार सुनाया,
वैदिक धर्म-गान मन भाया॥

जाति कर रही थी जब क्रन्दन,
हृदय कर उठा किसका स्पन्दन।
प्रकृति अश्रु से करती अर्चन,
जीवन का सन्देश सुनाया।
वैदिक धर्म-गान मन भाया॥

कोई भूला जन्त्र-तन्त्र में,
कोई पश्चिम विषम मन्त्र मे।
जीवन है केवल स्वतन्त्र में,
अपने पन का ज्ञान कराया।
वैदिक धर्म गान मन भाया॥

अरे विश्व को भ्रान्ति नहीं है,
परिश्रम निर्मम क्रान्ति नहीं है।
सत्य, स्नेह, सुख, शान्ति यही है,
जिसने सबको प्रेम सिखाया।
वैदिक धर्म-गान मन भाया॥

महात्मा हंसराज शताब्दी समारोह

(पृष्ठ ४ का शेष)

भी प्रशंसनीय है आपने अनथक परिश्रम करके २००/-महात्मा हंसराज जयन्ती के लिए एकत्रित करके भेजा है इसके लिए सभा उनकी आभारी है।

नीचे लिखी शताब्दी कोष की राशियों के लिए दाता महोदयों का धन्यवाद :—

श्री प० अमरसिंह जी द्वारा
आर्यसमाज रायपुर रानी
(अम्बाला) १००/-
,, विलासपुर ,, ४५/-
,, बिचपड़ी ,, ५५/-
श्री बाबू राम जी वा ला० मातूराम जी अंबाला मारफत पं० त्रिलोकचन्द्र जी द्वारा १००/-
श्री प० खुशीराम जी द्वारा पानीपत से ५००/-
वृन्दावन डी. ए. वी. गर्ल्स मिडिल स्कूल रमदास १५/-
आर्य हाई स्कूल नाभा
श्री त्रिलोकचन्द्र जी द्वारा २००/-

पादरी अब्दुल्लहक साहिब को खुला चैलेंज

हम आर्य जगत की ओर से ईसाई जगत् के पादरी श्री अब्दुल्लहक साहिब को खुला चैलेंज देते हैं कि वे आर्यसमाज के प्रसिद्ध विद्वान् श्री पं० अमरसिंह जी शास्त्रार्थ महारथी के साथ शास्त्रार्थ करें ताकि सत्यासत्य का निर्णय हो सके। शास्त्रार्थ की ये शर्तें हैं—

१. शास्त्रार्थ लेखबद्ध और मौखिक दोनों रूप में हो सकता है।

२. लेखबद्ध शास्त्रार्थ केवल हिन्दी भाषा में ही होगा।

३. शास्त्रार्थ यदि छपवाना हो तो हिन्दी भाषा में छपवाने के लिए हम आधा खर्च दे देंगे।

४. यदि लेखबद्ध शास्त्रार्थ हिंदी भाषा में स्वीकार न हो तो केवल मौखिक रूप से ही शास्त्रार्थ कीजिए।

रामविचार सत्यप्रिय
प्राध्यापक दयानन्द ब्रह्ममहाविद्यालय,
हिसार

स्वराज्य मन्त्रदाता महर्षि दयानन्द

(ले० श्री रत्न जी विद्यावाचस्पति मंत्री नगर आर्यसमाज जोधपुर)

स्वाधीनता संग्राम के बारे में इतिहासकारों को अत्यधिक भ्रांति है। बड़े-बड़े शिक्षाशास्त्री, दार्शनिक समाजशास्त्री, इतिहासवेत्ता और राजनीतिज्ञ अन्धकार में हैं। उन्हें भारत की जनक्रांति के जन्मदाता के बारे में सत्य का पता नहीं और घोर घने अन्धेरे में काली बिल्ली को ढूंढने का असफल प्रयत्न कर रहे हैं। इस विषय पर मेरी स्पष्ट घोषणा है और मैं पूर्ण तथ्यों के साथ सगर्व कह सकता हूं कि महर्षि दयानन्द ने भारत वासियों को स्वराज्य का मन्त्र दिया और भारतवर्ष के प्रसुप्त लोगों को जागृत कर जनक्रांति का सूत्रपात किया। इतिहास की तिथियां इसकी साक्षी दे रही हैं। श्रीमती एनी बिसैंट ने अपने अध्यक्षीय भाषण में महर्षि दयानन्द सरस्वती को ही भारतीयों को मानसिक दासता से मुक्त कराने वाला प्रथम व्यक्ति स्वीकार किया था तथा उनके पश्चात् आज तक कई कांग्रेसी नेताओं ने भी महर्षि को इसी प्रकार की श्रद्धांजलियां अर्पित की हैं। भारतीय लोकसभा के भूतपूर्व अध्यक्ष श्री अनन्तशयनम् आयङ्गर ने भी कहा है कि महात्मा गांधी यदि देश के राष्ट्र पिता हैं तो महर्षि दयानन्द राष्ट्र के पिता-मह हैं।

भारतवर्ष में स्वराज्य, स्वदेश-भक्ति तथा विदेशी शासक अंग्रेजों को भारत से निकालकर भारत को स्वतन्त्र करानेकी मौलिक विचार-धारा सर्व प्रथम महर्षि दयानन्द सरस्वती ने ही दी। सन् १८६३ से लेकर आपने ग्रन्थों की रचना शुरू की, उनमें सत्यार्थ प्रकाश, आर्याभि-विनय, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, यजुर्वेद तथा ऋग्वेदभाष्य, उपदेश-मञ्जरी में महर्षि ने स्थान-स्थान पर भारतीयों को स्वतन्त्र, अखण्ड निर्भय स्वराज्य प्राप्त करने की प्रेरणा दी। इससे यह सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है कि महर्षि के हृदय में दासता के प्रति कितनी घृणा थी और स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए कितनी प्रबल ज्वाला धधकती थी। महर्षि ने सत्यार्थ प्रकाश के छठे सम्मुल्लास में निर्भीकता और साहस से लिखा-'विदेशी राज्य चाहे कितना ही अच्छा हो अपने राज्य की तुलना नहीं कर सकता।' अष्टम समुल्लास में लिखा—'कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशी राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है। अथवा मतमतान्तर के आग्रह रहित, अपने और पराये का पक्षपातशून्य, प्रजा पर माता-पिता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं है। परन्तु भिन्न-भिन्न भाषा पृथक पृथक शिक्षा, अलग २ व्यवहार का विरोध छूटना अति दुष्कर है। बिना इसके छूटे परस्पर का पूरा उपकार और अभिप्राय सिद्ध होना कठिन है।' एकादश समुल्लास में लिखा—'सृष्टि से लेकर पांच सहस्र वर्षों से पूर्व समय पर्यन्त आर्यों का सार्वभौम चक्रवर्ती अर्थात् भूगोल में सर्वोपरि एकमात्र राज्य था अन्य देशों में माण्डलिक अर्थात् छोटे-छोटे राजा रहते थे क्योंकि कौरव पाण्डव पर्यन्त यहां के राज्य और राज्य शासन में सब भूगोल के सब राजा रहते थे।' दशम समुल्लास में लिखा—'देखो ! जब आर्यों का राज्य था तब ये महोपकारक गाय आदि पशु नहीं मारे जाते थे तभी आर्य्यावर्त्त वा अन्य भूगोल के देशों में बड़े आनन्द में मनुष्यादि प्राणी वर्त्तते थे।' महर्षि दयानन्द की प्रबल राष्ट्रीय विचारधारा से भयभीत हो कर ही तत्कालीन अंग्रेज शासकों ने महर्षि के पीछे गुप्तचर लगा रखे थे।

जनवरी सन् १८७३ में अंग्रेज वायसराय लार्ड नार्थ ब्रुक से कलकत्ता में हुई भेंट महर्षि की स्वदेश भक्ति तथा निर्भीकता का साक्षात् प्रमाण है। उस भेंट में एक प्रश्न के उत्तर में महर्षि ने कहा था—'यह मेरा दृढ़ विश्वास है कि मेरे देश वासियों को अबाध राजनैतिक उन्नति और संसार के राज्यों में समानता का स्थान पाने के लिये शीघ्र पूर्ण स्वतन्त्रता मिलनी चाहिये। श्रीमान जी ! ईश्वर से नित्य प्रातः सायं उस की अपार कृपा से इस देश की विदेशियों की दासता से मुक्ति की ही मैं प्रार्थना करता हूं।' इस स्वराज्य-मन्त्र को देश के कोने-कोने में फैलाने हेतु एवं सारे देश के सोये लोगों को जीवित एवं जागृत करने के लिये महर्षि दयानन्द ने सन् १८७५ ईसवी में दृढ़तम दश नियमों के आधर पर आर्य समाज की स्थापना की। समस्त देश में जागृति हो गई और महर्षि दयानन्द की एक ही हुँकार से लोग उठ खड़े हुए। महर्षि ने सत्यार्थ प्रकाश के एकादश समुल्लास में लिखा—"इसलिये जो उन्नति करना चाहो तो 'आर्यसमाज' के साथ मिलकर उसके उद्देश्यानुसार आचरण करना स्वीकार कीजिये नहीं तो कुछ हाथ न लगेगा क्योंकि हम और आप को अति उचित है कि जिस देश के पदार्थों से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है, आगे होगा उसकी उन्नति तन, मन, धन से सब जनें मिल कर प्रीति से करें। इसलिये जैसा आर्यसमाज आर्यावर्त्त देश की उन्नति का कारण है वैसा दूसरा नहीं हो सकता। यदि इस समाज को यथावत् सहायता देवें तो बहुत अच्छी बात है क्योंकि समाज का सौभाग्य बढ़ाना समुदाय का काम है, एक का नहीं।'

इस प्रकार स्वराज्य मन्त्र से समस्त भारत मे हलचल मच गई और अंग्रेज साम्राज्यवाद की नींव हिल गई। महर्षि दयानन्द द्वारा लगाई हुई देश में स्वतन्त्रता प्राप्ति की आग ने उनके पीछे कई नेताओं के मनों को उद्वेलित किया और उन्होंने हंसते-हसते देशकी स्वतन्त्रता के लिये प्राणों की आहुति दे दी। देश में जीवन उसी समय आया जबकि महर्षि दयानन्द के अनुयायी भारत केसरी लाजपतराय, लाला हरदयाल, श्री अजीत सिंह, भाई परमानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द आदि महानुभावों ने देश की स्वतन्त्रता की बलिवेदी पर प्राण न्यौछावर करने का दृढ़ संकल्प कर लिया। फलस्वरूप अंग्रेजों को अपना बोरिया-बिस्तर बांधकर भारत कूच करना पड़ा और १५ अगस्त १९४७ को भारत स्वतन्त्र हो गया।

महर्षि दयानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय टङ्कारा (सौराष्ट्र)

आर्ष पद्धति के अनुरागियों की उत्कंठा का एकमात्र साधन इस सरल संस्कृत परीक्षा का प्रचार एवं प्रसार के लिए आप आर्यजनों से निवेदन है कि आगामी सितम्बर १९६५ में होने वाली परीक्षाओं में सक्रिय योगदान देकर राष्ट्रोत्थान कार्य का एकमात्र साधन संस्कृत भाषा प्रचार को अदम्य उत्साह से पल्लवित पुष्पित एवं फलित करने का शुभ कार्य करें।

विशेष जानकारी के लिए प्रस्तोता कार्यालय टङ्कारा से पत्राचार करें।

निवेदक—आनन्द प्रिय पण्डित
मन्त्रीः—महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टङ्कारा

विचार तरङ्ग [५]

(ले०—श्री राममूर्तिजी कालिया, एम.ए., मालवीय नगर, नई दिल्ली)

उपनिषद् का कथन है, 'असतो मा सद् गमय' अर्थात् '**From the Unreal lead me to the Real**' असत् से सत्य की ओर जाने का संकल्प बहुत उत्तम है। कौन नहीं चाहता अन्धकार से निकल प्रकाश में विचरण करना। जानते हुए भी, भल एवं अनभल की प्रतीति होने पर भी 'जो जेहि भाव नीक तेहि सोई' ही देखने में आता है। अनभल के पक्षपाती का भलाई दिखती हो, किन्तु मेरे विचार में उसे भलाई का ज्ञान होता ही नहीं या वह लुप्त प्राय होता है। सत् और असत् दो विपरीत मार्ग हैं इसमें संशय है नहीं।

सत् क्या है असत् क्या है, यह निर्णय देना सहल नहीं, यह तो अनुभवी व्यक्तियों का विषय है। ब्रह्म सत्य है जगत मिथ्या है या दोनों सत्य हैं, इस विवाद से यहां अभिप्राय नहीं। कहने और करने में, शब्द और उसके अर्थ में पूर्ण ताल-मेल हो, यही सत्य है और इसके प्रतिकूल असत् है। छल छिद्र से युक्त हृदय को असत् की सज्ञा दी जा सकता है और निष्कपट और सरल हृदयी को सत की। सत्य का आह्वान हमारी परम्परा है। "धर्म न दूसर सत्य समाना' अनुभव की वाणी है। 'सूर्य टरै चन्द्र टरै-टरै जगत व्यवहार' इतने पर भी 'टरै न' सत्य विचार' इस सिद्धांत को जीवन में चरितार्थ करने वाले सत्यवीर हरिश्चन्द्र की तो यह वंश परम्परा चली कि सत्य के पालन में प्राणों का मूल्य हेच है। महाराज दलीप, दशरथ और योगियों के हृदयों में रमने वाले राम इसी परम्परा के अनन्य‍त हैं। श्री राम के विषय में तो 'सत्य सन्ध, पालक श्रुति सेतु' कहा गया। वस्तुतः राम की कथनी और करनी में गहरा तालमेल रहा। 'तुम्ह जो कहहु करहु सब सांचा' राम के विषय में ही तो कहा गया है। सत्य की वास्तविक अनुभूति ही तो इस देश का पुरातन धर्म रहा है।

सत्य और असत्य को परखने की कसौटी भी है। सत्य यद्यपि तर्क से ऊपर है तथापि तर्क स्वाकार करता है। असत्य यद्यपि तर्क से निम्न है किन्तु इसे अस्वाकृत करता है।

सत्य का मार्ग है कठिन। साहस और पौरुष, मार्ग में आने वाले नाना व्यवधानों की अवहेलना करने निमित्त, संजोना पड़ता है। सत्यमार्ग पर आरुढ व्यक्ति के हृदय को सुख के क्षणों में ही विश्राम नहीं अपितु दुख के भयंकर क्षणों में भी गुदगुदी अनुभव होती है। वह दुःख का आह्वान करता है। ऐसे लोग ही तो कह उठते हैं 'अगर आसानियां हों, जिन्दगी दुशवार हो जाये।'

अमूल्य वचन

नीच लोग विघ्न भय के कारण कार्य आरम्भ ही नहीं करते, मध्यम श्रेणी के मनुष्य कार्य आरम्भ तो कर देते हैं परन्तु विघ्न पड़ने पर उसे बीच में छोड़ देते हैं किन्तु उत्तम लोग बार २ विघ्न पड़ने पर भी आरम्भ किये हुए कार्य को नहीं त्यागते।

जाग जाग चेतना

(ले०—श्री विद्यासागर जी शर्मा दयानन्द मठ दीनानगर)

जाग जाग चेतना!
जाग जाग राष्ट्र-प्राण!
जाग जाग एकता!
जाग जाग जाति-प्राण!

एक हो स्वदेश के वीर जाति एक प्राण।
समग्र वीर एक हों एक पन्थ वे प्रयाण॥ जाग जाग चेतना०
समस्त राही एक हों नव्य-पन्थ वे प्रयाण।
सुपन्थ वह वरो कि जिस से होवे राष्ट्र-त्राण॥ जाग जाग चेतना०
प्रजा जगे जो सुप्त है हृदय में धार नव्य-प्राण।
जागे सुप्त आत्म-तत्व जागे उसका सुप्त-प्राण। जाग जाग चेतना०

धर्म का सच्चा स्वरूप

(पृष्ठ २ का शेष)

हारीत ने धर्म श्रुति प्रमाणक ही माना है। बौद्ध साहित्य में धर्म को बुद्धि की शिक्षा का द्योतक ही माना गया है। साथ ही इसे अस्तित्व का एक तत्व, मन एवं शक्ति का एक तत्व भी माना गया है।

गौतम धर्म सूत्र ने वेद को ही धर्म का मूल माना है—

वेदो धर्म मूलम्। तद्विदां च
स्मृतिशीले॥१।१।२॥

आपस्तम्ब सूत्र ने कहा है जो धर्मज्ञ है, जो वेदों के ज्ञाता हैं, उन का मन ही धर्म प्रमाण है।

धर्मज्ञ समयः प्रमाणं
वेदाश्च॥१।१।१।२४

यही बात वशिष्ठ धर्म सूत्र में लिखी है—

श्रुति स्मृति विहितो धर्मः॥

याज्ञवल्क्य स्मृति में लिखा है—

श्रुतिः स्मृतिः सदाचारः स्वस्य
चाप्रियमात्मनः।
सम्यक् संकल्पजः कामो धर्म
मूल मद स्मृतम्॥१।७॥

कहा यह जा सकता है कि वेद बहुत प्राचीन हैं, नये युग में वे फिट नहीं होंगे। निवेदन यह है कि वे प्राचीन हैं। अतः उनका अनुभव अधिक है इसलिए वे जो कहेंगे ठीक, खरा और कल्याणप्रद ही कहेंगे। पढ़ना तो उन्हें ही चाहिए, तदनुकूल आचरण भी करना चाहिए। उनके पढ़ने में यदि कठिनाई हो तो संक्षेप में धर्म के लक्षण निम्न कहे जा सकते हैं:—

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं,
शौचमिन्द्रिय निग्रहः।
धीर्विद्या सत्यं म क्रोधो,
दशक धर्मलक्षणम्॥

यह ऐसा लक्षण है जिसे संसार का प्रत्येक मानव स्वीकार करेगा। चाहे वह किसी भी मत का मानने वाला हो। अतः यह निश्चित है, कि धर्म के मूल उपादान वेद हैं, स्मृतियां आदि हैं तथा परम्परा से चलता आया शिष्टाचार, सदाचार। वेदों में स्पष्ट रूप से धर्म विषयक विधियां प्राप्त नहीं होतीं, किंतु उनका प्रासंगिक निर्देश अवश्य प्राप्त होता है। कालान्तर में उनका व्याख्यान स्मृति आदि, ग्रन्थों में कर दिया गया है। वही धर्म अनुकरणीय हो सकता है।

चुनाव

आर्यसमाज विक्रमपुरा (किला) जालन्धर

यह चुनाव १२-३-६५ को सायंकाल चार बजे नए समाज मन्दिर में सम्पन्न हुआ। सर्व प्रथम स्वर्गीय ला० शंकरदास जी त्रेहन के निधन पर शोक प्रकट किया गया तथा उनकी आत्मा की सद्गति के लिए प्रभु से प्रार्थना की गई। तत्पश्चात् श्री प्यारे लाल जी बेरी साईदास हा० सै० [illegible] के प्रधान निर्वाचित हुए। उन्हें ही शेष अधिकारी वर्ग के चुनने का पूर्ण अधिकार सौंपा गया। तद्नुसार निम्न सज्जन समाज के अधिकारी तथा अंतरंग सदस्य चुने गए।

उपप्रधान—श्री हुकमचन्द जी भल्ला, भीमसैन जी बहल, संतोषराज जी, देशराज जी महाजन।

मन्त्री—श्री रामलालजी शर्मा, श्री आनन्द सागर जी आर्य।

उपमन्त्री—श्री नरदेव जी, श्री ज्ञानचन्दजी लूथरा, श्री देवीदास जी गुप्ता, वेदमित्र जी।

कोषाध्यक्ष—पं० सीताराम [illegible]

पुस्तकाध्यक्ष—श्री केवलराम [illegible]

निरीक्षक—श्री मुरलीधरजी [illegible]

अन्तरंग सदस्य

[illegible] सत्यदेवजी विद्यालंकार, श्री पी.पी. तारा, श्री वेदीराम जी अरोड़ा, श्री खुशहाल चन्द जी पराशर श्री यश जी एम. एल. ए., श्रीमती सरला जी कौशल, श्री दुर्गादत्त जी, श्री भीमसैन जी मेहरा, श्री बालकृष्ण जी, श्री प्रकाशदेव जी, श्री पी. डी. चौधरी, श्री अयोध्याप्रसाद जी, श्री जगन्नाथ जी सग्गी; रामलाल जी सग्गी, श्री वैद्य ... नाथ जी सग्गी; श्री [illegible] जी दुग्गल, श्री ओम्प्रकाश जी नारंग, श्री बी० एल० चौधरी, श्री हरकतराम जी महाजन, श्री हंसराजजी महाजन, श्री दुर्गाचन्दजी श्री मोहनलाल [illegible], श्री प्रेम [illegible]

[illegible] शर्मा मन्त्री

आर्य समाज शाहपुर करनाल

श्री [illegible] जी प्रधान

[illegible]

,, सोम प्रकाश जी मन्त्री

,, रघुवीर सिंह उप-मन्त्री

,, रघुनाथ सिंह पुस्तकाध्यक्ष

,, हरिश्चन्द्र जी खजांची

सोम प्रकाश

मंत्री आर्य समाज

आर्य समाज गुरुद्वारा रोड देहली

का उत्सव २१ मार्च से २८ मार्च तक सम्पन्न हो रहा है। २१ मार्च से २८ मार्च तक प्रतिदिन प्रातः ५½ बजे से ७½ बजे तक यजुर्वेद पारायण महायज्ञ होगा। श्री जैमनि जी शास्त्री की अध्यक्षता में यज्ञ के पश्चात प्रवचन भी हुआ करेगा।

२१ मार्च से २६ मार्च तक रात के ८ बजे से १० बजे तक श्री स्वामी [illegible] कथा हुआ करेगी। सब धर्म प्रेमी इस शुभवर पर पधार कर धर्म लाभ प्राप्त करें।

मोद प्रकाश शास्त्री

मंत्री समाज

आर्यकुमार सभा बाजार सीताराम देहली का चुनाव

प्रधान—पं० राजाराम जी शास्त्री

उप-प्रधान-श्री अविनाश कुमार

मन्त्री — ,, राम कुमार गुप्ता

उप-मन्त्री-,, अशोक कुमार जी

उप-मन्त्री-श्री विनोद कुमार जी

कोषाध्यक्ष—श्री शिवकुमार जी

पुस्तकालयाध्यक्ष—श्री मोहनलाल जी

क्रीड़ा अध्यक्ष—श्री [illegible]

तेजराम पुरोहित

वेद पथिक श्री धर्म वीर जी भण्डाधारी सराय रुहेला नई दल्ली से

दैनिक वेद संदेश को

प्रकाशन कर रहे हैं।

यह पत्र संसार में वेद प्रचार के कार्य को तीव्र गति प्रदान करेगा [illegible] ऊंचा बनाने में सहायक सिद्ध होगा।

वेद संदेश का प्रथम अंक शिवरात्री के अवसर पर विशेषांक के रूप में प्रकाशित हो चुका है जो कि शिक्षण संस्थाओं के लिए स्थायी सम्पत्ति है इस की कीमत एक रुपया है अधिक से अधिक संख्या में मंगा कर सम्पादक महोदय का उत्साह वर्धन करें।

एक कापी का मूल्य १० पैसा है। ३/- मासिक, ८/- त्रैमासिक, १५/- अर्ध वर्ष का २५/- वार्षिक चन्दा है।

प्राप्ति स्थान—धर्म वीर आर्य भण्डा धारी सराय रुहेला नई देहली-५

श्री आत्मानन्द वैदिक साधन आश्रम यमुना नगर का

चौदहवां वार्षिक साधना शिविर

३१ मार्च से ४ अप्रैल १९६५ [illegible] रविवार, श्रद्धा और उत्साह से सम्पन्न होगा। इस शुभ अवसर पर श्री महात्मा आनन्द स्वामी जी श्री स्वामी रामेश्वरा नन्द जी, आदि अनेक सुविख्यात विद्वानों के भाषणों के अतिरिक्त प्रतिदिन प्रभात को श्री स्वामी आत्मा नन्द जी (मेरठ) कि आध्यात्मिक प्रशिक्षण प्राणायाम और योग सम्बन्धी प्रवचन हुआ करेंगे। अतः आप स्वयं तथा अपने बन्धुओं समेत, अवश्यमेव पधार कर इस धर्म सम्मेलन की शोभा बढ़ायें।—दर्शनाभिलाषी

स्वा० सत्यानन्द सरस्वती

आर्य जगत

का

महात्मा हंसराज जन्म शताब्दी

विशेषांक

महात्मा हंसराज जी की जन्म शताब्दी के उपलक्ष्य में यह विशेषांक जनता की भेंट किया जा रहा है।

यह विशेषांक २०×३०/१६ पुस्तकाकार में १०० पृष्ट का प्रकाशित होगा जिस में महात्मा हंसराज जी के जीवन संबंधी [illegible] संग्रह होगा। मुख पृष्ठ पर महात्मा जी का तीनरंगा चित्र होगा।

लेखक महोदयों तथा कवियों से प्रार्थना है कि वे अपनी रचनाएं १-४-६५ तक सभा कार्यालय में भेजने की कृपा करें।

यह विशेषांक ५००० हजार की संख्या में प्रकाशित हो रहा है अतः व्यापारियों तथा विज्ञापन दाताओं के लिए सुवर्ण अवसर है अपने २ विज्ञापन देकर लाभ उठाएं।

नोट :—४ और ११ अप्रैल का अंक बंद रहेगा १८ अप्रैल का विशेषांक आप के हाथों में होगा पाठक नोट कर लें। इस विशेषांक की कीमत 50 N.p. होगी।

व्यवस्थापक

मुद्रक व प्रकाशक श्री यशोवराज जी आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर द्वारा वीर मिलाप प्रेस, मिलाप रोड जालन्धर से मुद्रित तथा आर्य जगत कार्यालय महात्मा हंसराज भवन निकट कचहरी जालन्धर शहर से प्रकाशित आर्य जगत—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर



टैलीफोन नं० ३०५७ [आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधिसभा पंजाब जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd. No. P. 121

एक प्रति का मूल्य १३ नये पैसे | वार्षिक मूल्य ६ रुपये

वर्ष २५ अंक १४) | २२ चैत्र २०२१ रविवार—दयानन्दाब्द १४०— ४ अप्रैल १९६५ | (तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

वेद सूक्तय:

सहे पिशाचान् सहसा

मैं वीर हूं। अपनी वीरता भरी शक्ति से उन सारे पिशाचान-पिशाचों राक्षसों, वैरियों और तमाम शत्रुओं को अपने सहसातेज से, बल पराक्रम से सहे-पराजित कर दूंगा। हरा कर भगा दूंगा। उन की क्या मजाल कि मेरे सामने दम भी मार सकें?

एषां द्रविणं ददे

यह बात भी याद रख लो कि मैं अपने राष्ट्र पर हमला करने वाले उन नर पिशाचों का सारा माल भी छीन लूंगा। ऐसे अत्याचारी अपना सब कुछ मेरे सामने छोड़ कर भाग जायेंगे। जिस सम्पत्ति पर मान करते हैं, वह तो उन से छीन ली जायगी—

सर्वान् दुरस्यतो हन्मि

सुनलो! जितने भी दुरस्यत दुष्टता करने वाले, घात लगानेवाले पिशाच पापी तथा आक्रमणकारी हैं जो राक्षस हैं उन सब को ही मैं अपनी शक्ति से मार कर रख दूंगा। अब मेरे सामने से वे बच कर जा ही नहीं सकते।

अथर्ववेद से

वेदामृत 7·4-65.

ओ३म् भूरग्नये प्राणाय स्वाहा। इदमग्नये प्राणाय इदं न मम॥ ओम् भुवर्वायवेऽपानाय स्वाहा। इदं वायवेऽपानाय इदन्न मम॥ ओम् स्वरादित्याय व्यानाय स्वाहा। इदमादित्याय व्यानाय इदन्न मम॥

अर्थ—मेरी यह आहुति उस (भू:) प्राण स्वरूप (अग्नये) सब के पूज्य तथा सर्वव्यापक (प्राणाय) सब विश्व को गति देने वाले परमात्मा के लिए अर्पित है। मेरे लिए नहीं है। यह आहुति (भुव:) दुःख नाशक (वायवे) सर्वत्र रमे हुए और (अपानाय) सारे कष्टों को दूर करने वाले परमेश्वर के लिए है। मेरे लिए नहीं। यह आहुति उस (स्व:) सुखरूप (आदित्याय) दुःखहारक एवं आनन्द दायक परमात्मा के लिए है, मेरे लिए नहीं है।

भाव:—हे परमेश! आप भू: हैं। प्राणरूप और सब को प्राणशक्ति देने वाले हैं। आप अग्नि और प्राण हैं सब के पूज्य आप ही तो हैं। हमारे जीवन के तमाम कष्टों, क्लेशों, दुःखों को दूर करने वाले आप ही हैं जितने भी सुख व आनन्द हैं, जिनकी साधना में हम जीवन पर्यन्त लगे रहते हैं। उनके आप ही तो भण्डार हैं। सुखमय से ही सुख मिलता है। आनन्द से ही तो आनन्द की प्राप्ति होती है। हमने नाना प्रकार के पदार्थों को पूज करके देख लिया सुख की साधना में पता नहीं कहां २ मारे २ फिरे। परन्तु सुख नहीं मिला। अब आपकी शरण में आए हैं। ये सारी सामग्रियां आपके अर्पण हैं। सुखी करो—सं०

ऋषि दर्शन

यथावत् प्रजापालनम्

जिस राज्य में भली प्रकार सारी प्रजाओं का यथा योग्य पालन होता है। सारी प्रजाएं अपने २ स्थान पर अपने २ धर्म नियम व कर्तव्य के पालन करने में किसी प्रकार की बाधा अनुभव नहीं करती—सब का पूर्णतया पालन होता है।

दुष्ट कर्मणामन्तकारि

और जो राज्य दुष्ट पुरुषों द्वारा किये जाने वाले दुष्ट कर्मों का अन्त करने वाला होता है। जिस शासक के राज्यमें बुरे लोग खुलकर नहीं खेल सकते, वरन् उनकी सारी बुराईयों को बल से कुचल दिया जाता है। सिर नहीं उठाते—

तदेव श्रेष्ठं राज्यम्

वही राज्य शासन उत्तम होता है। उसी में सारी प्रजा सुख से निवास किया करती है। उस राजा व शासक से सारे प्रसन्न रहते हैं। उसी का राज्य फूलता-फलता बढ़ता जाता है—

भाष्य भूमिका से

अधिष्ठाता—श्री संतोषराज जी | सम्पादक—त्रिलोक चन्द्र शास्त्री

सन्ध्या का लक्ष्य

ले०—श्री पं० सत्यप्रिय शास्त्री सिद्धांत शिरोमणि
प्राध्यापक :—दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार

— ऋषिवर दयानन्द ने वैदिक सन्ध्या में जो अद्भुत क्रम रखा है वह भी उनकी आर्ष बुद्धि का परिचायक है। सन्ध्या के स्थूलरूप से चार भाग हैं—१. इन्द्रियस्पर्श, मार्जन तथा प्राणायाम, २. अघमर्षण, ३. मनसा परिक्रमा, ४. उपस्थान। इस क्रम के द्वारा हम अपने जीवन लक्ष्य की ओर बढ़ते हैं। मानव को पदार्थ चतुष्टय की प्राप्ति करनी है। अर्थात् धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इनको प्राप्ति के निमित्त यह दिव्य देह है। यह ही प्रति दिन हम सन्ध्या द्वारा विचार करते हैं। सन्ध्या के आरम्भिक अंग के साथ शरीर का विशेष सम्बन्ध है, क्योंकि इसी का इस में विशेष वर्णन है। इस शरीर के द्वारा ही हम धर्माचरण कर सकते हैं। अथवा यह अमूल्य शरीर हमें धर्माचरण के निमित्त मिला है। धर्म क्या है? महर्षि कणाद ने वैशेषिक दर्शन में लिखा है— 'यतोऽभ्युदयनिःश्रेयसःसिद्धिः स धर्मः' अर्थात ऐसे पवित्र कर्म करना जिन से कि हमारा इस लोक तथा परलोक में हित हो। ऐसे कर्म इसी मानव जीवन में सम्पन्न हो सकते हैं क्यों कि परमेश्वर की शिल्पकला का यह सर्वोत्कृष्ट नमूना है। यह अमूल्य विषय विचारों की धूल में मिलाने को नहीं मिला, क्यों कि यह अगणित जन्मों के सञ्चित पुण्यों का परिणाम है। सन्ध्या का दूसरा अंग अघमर्षण है इस का 'अर्थ' के साथ सम्बन्ध है। क्योंकि इस सृष्टि के पदार्थ परमेश्वर प्रदत्त हैं, अतः धर्म पूर्वक ही लेवें तभी हम अपने अघों अर्थात् पापों (भावी) को दूर कर सकेंगें। हम थोड़ा सा धन संग्रह कर इतरा जाते हैं कि मैं बड़ा धन पति हू। बस यहीं से पाप बढ़ने लगता है। हम यदि सभी पदार्थ उसी मालिक के मान कर स्वयं को उन का केवल मात्र उपभोक्ता मानें तो अघ का अंकुर झुलस जाय। अरे? देखो वह विश्वपति कभी नहीं कहता कि मैं इतनी बड़ी सृष्टि का मालिक हूं, किन्तु मनुष्य तू उसी के पदार्थों को लेकर अभिमान में फूल कर कुप्पा हो जाता है। याद रख ये सब पदार्थ उसी के हैं, हमें तो कुछ काल के लिये उपयोग मात्र के लिये मिले हैं। इन में अपनत्व जोड़ने से क्या लाभ? मनसा परिक्रमा के साथ काम का सम्बन्ध है। उन मन्त्रों में सामाजिक वातावरण चित्रित किया है। हमें भी अपनी कामनाओं की पूर्ति करते समय समाज के हित का भी ध्यान रखना है। हम कामनाएं तो करें किन्तु वे सामाजिक हितों के साथ टकराकर कुव्यवस्था उत्पन्न न करें। साथ ही वे समाज द्वारा निर्धारित कल्याणी परम्पराओं की रक्षा करने वाली भी होवें। हमारे जीवन के निर्माण में समाज का बड़ा हाथ रहा, अतः हम समाज के निर्माण में भी वैसा ही हाथ रखें। अर्थात् हम समाज के अङ्ग बनकर रहें न कि समाज को अपने स्वार्थ के लिये पंगु बना देवें। उपस्थान मन्त्रों द्वारा हम अन्तिम पदार्थ मोक्ष को हस्तगत करते हैं, जिस की प्राप्ति प्रकृति पुरुष के विवेचन से होती है। अतः इस अङ्ग में ईश्वर के स्वरूप का वर्णन है। जहां हमें प्रकृति के पदार्थों से उपयोग लेना है, वहां उन से छूटना भी है, छूटें तब जब कि बकने के लिये उस से उत्तम पदार्थ मिल जाये। वह परमेश्वर ही है। उस के निकट स्थित हो कर जीव भौतिक पदार्थों से स्नेह हटा लेता है। क्यों कि इन पदार्थों का सुख तो क्षणस्थायी भी है जब कि उस आत्मा से प्राप्त आनन्द चिरस्थायी है। क्योंकि वह आनन्द का स्रोत तथा अमृत है। अतः यथार्थ आनन्द की प्राप्ति का मूल तो वही है। उस प्राप्ति ही जीवन का लक्ष्य है, क्योंकि उस की प्राप्ति से अपना स्वरूप भी ज्ञात हो जाता है। जब विश्व के चेतन स्वामी को प्राप्त कर लिया तो जड़ पदार्थों से क्या लाभ? उपासक को इन पदार्थों में अनासक्ति हो जाती है। वह इन को छोड़ देता है। अतः एव सन्ध्या के अन्त में समर्पणवचन कर सन्ध्या द्वारा इन्हीं चार पदार्थों की प्राप्ति की प्रार्थना उपासक प्रति दिन करते हैं। जो कि सन्धा का लक्ष्य है।

आत्म-विनय

—श्री नामदेव रामन गडगने 'पथरोट' वैदिक साधन आश्रम यमुनानगर

ईश हे ! निर्मल मन कर दे !
हृदय-म्लानता कर प्रक्षालित,
उज्ज्वलता भर दे !

दूर हटा दे ! कलुष वृत्तियां,
शुद्ध हृदय भर निगम सूक्तियां,
वाणी संस्कृत मधुर मन्त्र को—
मानस में धर दे !

निगम शास्त्र का, करूं अनुशीलन
मनन श्रवन से, ज्ञान उपार्जन,
शक्ति पुञ्ज दे ! शमित चित्त को—
ज्योतिर्मय कर दे !

तोड़ गिराऊं, भव के बन्धन,
आत्म ज्योति से पाऊं स्पन्दन,
देव ! वेद के मन्त्र छन्द का—
मधुर कराठ स्वर दे !

अमूल्य वचन

★ वेश्या आंगन की भांति राजनीति के अनेक रूप हैं। कहीं सत्य कहीं असत्य वादिनी, कहीं कठोर कहीं प्रिय भाषिणी, कहीं दयालु कहीं हिंसा करने वाली और कहीं संचय करने वाली कहीं खर्च करने वाली।

★ क्रोध करने वाले राजा अपने मित्र को भी नहीं छोड़ते। जैसे होम करने वाले को भी यदि अग्नि छू जाये तो जला ही देती है।

आर्य जगत्

वर्ष २५] रविवार २०२१, ४ अप्रैल १९६५ [अंक १४

महात्मा हंसराज जन्म शताब्दी समारोह—३

सन १८८६ के लगभग स्वामी श्रद्धानन्द जी, जो इन दिनों ला० मुंशीराम जी के नाम से वकालत के काम में लगे हुए थे—उनकी लड़की ईसाई प्राइमरी स्कूल से पढ़कर आई। घर में आकर उसने माता पिता को प्रसन्न करने के लिए स्कूल में सीखा हुआ गीत सुनाया—'ईसा-ईसा बोल, तेरा क्या लगेगा मोल।' बच्ची के गीत ने ला० मुन्शीराम को चौंका दिया। उनकी समझ आगया कि क्रिश्चियन निश्चय ही सोसाइटियों के चलाए हुए स्कूल और कौलिज हिन्दू जाति के बच्चों को छीनने के सूक्ष्म प्रयत्न हैं। इन का परिणाम आगे चल कर भयंकर होगा।

इस ही विचारधारा का परिणाम ला० मुन्शीराम जी तथा ला० देवराज जी के प्रयत्नों से स्थापित कन्या महाविद्यालय जालन्धर है।

जो बात ला० मुन्शीराम जी को १८८६ सन में प्रेरणा दे सकी, उस ही बात ने सन १८७६ के लगभग महात्मा हंसराज को जो उस समय लाहौर क्रिश्चियन स्कूल में विद्यार्थी थे—प्रेरणा दी। स्कूल के ईसाई अध्यापक मि० आर० सी० दास ने वैदिक धर्म और हिन्दु सभ्यता पर आक्षेप किए। विद्यार्थी हंसराज को आक्षेपों के उत्तर देने पर बेंतें खानी पड़ीं और स्कूल से निकाल दिया गया।

सन् १८७७ में स्वामी दयानन्द लाहौर आए और विद्यार्थी हंसराज तथा उन जैसे सैंकड़ों हजारों विद्यार्थियों को ईसाई प्रभाव से बचने का मार्ग प्राप्त हो गया। यह वह प्रेरणा-बीज था जो सन् १८८५ में वृक्ष के रूप में उन के आत्म त्याग के रूप में प्रकट हुआ और ला० हंसराज सन् १८८६ में दयानन्द एंग्लो-वैदिक हाई स्कूल लाहौर के पहले अवैतनिक मुख्याध्यापक नियुक्त हुए। वे पहले भारतीय हिन्दू मुख्याध्यापक थे जिन्होंने आगे आगे जाने वाली सैंकड़ों हजारों हिन्दू शिक्षा संस्थाओं के लिए मार्ग प्रशस्त कर दिया।

इस्लाम ने हिन्दू जाति पर राज्य शक्ति और तलवार से आक्रमण किया था। ईसायत का आक्रमण और अधिक सूक्ष्म था और भयंकर था। उनका आक्रमण जो आज से दो-ढाई सौ वर्ष पहले प्रारम्भ हुआ था, और आज भी स्वतन्त्र भारत में चल रहा है। हस्पताल का काम, स्कूलों तथा कालिजों का चलाना, धन की सहायता, ये इस आक्रमण के भिन्न-भिन्न रूप थे। भेड़िया मेमने का रूप धर आगे बढ़ रहा था और बढ़ रहा है।

आज भी भारत की स्वतन्त्रता के बाद भी लाखों बच्चे और बच्चियां इस आक्रमण का शिकार हो रहे हैं। हिन्दू जाति, भारतीय परम्पराओं और भारतीय सभ्यता को छोड़ कर ईसायत के रंग में रंगे जा रहे हैं। हमारी सरकार और धनपति-मंडल जिनकी मशीनरी चलाने के लिए अमेरिका तथा इंगलैण्ड की सहायता अपेक्षित है इस भयंकर आक्रमण और समस्या की ओर से जानबूझ कर आंखें मूंदे बैठे हैं। नागालैंड, केरल तथा आंध्र देश की समस्याओं के आधार में इस धर्मपरिवर्तन का बहुत बड़ा भाग है।

आर्यसमाज के प्रवर्तक ऋषि दयानन्द ने तथा उनके पटु शिष्यों ने इस समस्या का प्रारम्भ से ही मुकाबला करने की ठानी। इसके लिए अनेक सूत्री कार्यक्रम बनाया गया। डी. ए. वी. स्कूल तथा कालिज, गुरुकुल, कन्या पाठशालाएं तथा महाविद्यालय अनाथालय, तथा अन्य अनेक संस्थाएं

(शेष पृष्ठ ४ पर)

महात्मा हंसराज जन्म शताब्दी समारोह

यह समारोह ११ अप्रैल से १९ अप्रैल १९६५ तक साईंदास एंग्लो संस्कृत हाई स्कूल के विशाल क्रीड़ा क्षेत्र में मनाया जा रहा है। बाहर से आने वाले सब आर्य भाइयों के निवास तथा भोजन का प्रबन्ध भी वहां ही होगा।

समारोह का रूप बहुत भव्य तथा विशाल होगा। शोभायात्री-जलुस के लिए, जो १७ अप्रैल होगा सब आर्यसमाजों तथा आर्य संस्थाओं से प्रार्थना की जा रही है। सबकी मण्डलियां अपने साज के साथ होंगी, जिसपर 'महात्मा हंसराज जन्म शताब्दी समारोह तथा 'संस्था का नाम' अंकित होगा।

कार्य-क्रम की रूप रूप-रेखा निम्न है :—

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब के तत्वावधान में महात्मा हंसराज जन्म शताब्दी महोत्सव साईंदास एंग्लो संस्कृत हाई स्कूल के क्रीड़ा क्षेत्र में मनाया जा रहा है। इस सम्बन्ध में निम्न कार्य-क्रम होगा :—

१—यज्ञ—११ अप्रैल १९६५ से १९ अप्रैल १९६५
७ से ९ प्रातःकाल
प्रवचन ९ से १० प्रातःकाल

२—स्मारक व्याख्यानमाला
सायकाल ७ से ८
११ अप्रैल डा० हजारी प्रसाद त्रिवेदी—अध्यक्ष हिन्दी विभाग पंजाब यूनिवर्सिटी चण्डीगढ़।
१२ अप्रैल श्री मुरारजी देसाई—भूतपूर्व अर्थ मन्त्री भारत सरकार
१३ अप्रैल श्री अब्दुल मजीद खान।
१४ अप्रैल श्री सूर्यभानु जी—वाइस चांसलर कुरुक्षेत्र यूनिवर्सिटी कुरुक्षेत्र।
१५ अप्रैल डा० जी० एल० दत्ता—वाइस चांसलर विक्रम यूनिवर्सिटी तथा प्रधान डी. ए. वी. कालेज प्रबन्धकर्तृ कमेटी चित्रगुप्त मार्ग नई दिल्ली।
१६ अप्रैल डा० गोकलचन्द नारंग।

३—१३ अप्रैल को विक्रमपुरा आर्यसमाज मन्दिर किला का उद्घाटन उत्सव ११ बजे प्रातः होगा।

४—१७ अप्रैल को एक विशाल जलूस (शोभायात्रा) जिस में आर्य संस्थाएं और आर्य समाजें भाग लेंगी।

५—१८ तथा १९ अप्रैल के मुख्य समारोह
१८ अप्रैल—प्रातः वेद सम्मेलन सायं आर्य युवक सम्मेलन।
१९ अप्रैल—प्रातः शिक्षा सम्मेलन सायं कवि दरबार।

६—१९ अप्रैल से १५ नवम्बर तक भिन्न-भिन्न संस्थाओं और स्थानों पर विभिन्न समारोह—
क—भाषण प्रतियोगिताएं ख—खेल प्रतियोगिताएं
ग—व्याख्यान तथा भाषणों के कार्यक्रम घ—निबन्ध प्रतियोगिता
ङ—प्रदर्शिनी—विज्ञान—कला।

आर्यसमाज जोगेन्द्र नगर (हि० प्र०)

को ओर से दिनांक ८ अप्रैल से १३ अप्रैल तक यज्ञ महोत्सव

आर्य जनता तथा आस-पास की आर्यसमाजों को यह जानकर हर्ष होगा कि दिनांक ८ अप्रैल से १३ अप्रैल तक यज्ञमहोत्सव रामनवमी व आर्यसमाज स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित किया जा रहा है जिस में आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब के सुप्रसिद्ध प्रचारक पण्डित त्रिलोकचन्द जी शास्त्री तथा आर्य जगत की प्रसिद्ध चिमटा भजन-मण्डली पधार रही है तथा आर्य नेताओं को भी निमन्त्रित किया गया है आर्य जनों से प्रार्थना है कि इस शुभ पवित्र कार्य में सहयोग देकर लाभ उठाएं।

—मुरारी लाल मंत्री आर्यसमाज

महात्मा हंसराज जन्म-शताब्दी समारोह—३

(पृष्ठ २ का शेष)

हिन्दू जाति के बच्चों की सांस्कृतिक तथा धार्मिक सुरक्षा के लिए स्थापित की गई।

इन संस्थाओं में महात्मा हंसराज द्वारा प्रारम्भ किया डी. ए. वी संस्थाओं का समूह एक विशेष देश-व्यापी आन्दोलन का रूप धारण कर चुका है। यह आन्दोलन हिन्दू बच्चों में भारतीयता लाने की दिशा में तथा उन्हें दूसरे प्रभावों से बचाने में एक महत्वपूर्ण कार्य करता है।

महात्मा हंसराज जन्म शताब्दी के इस पावन पर्व पर हमें यह देखना है कि डी. ए. वी. संस्थाएं अधिक से अधिक पुष्ट हों, इनके द्वारा हमारे बच्चे अधिक से अधिक भारतीय आदर्शों और परम्पराओं को अपनाने वाले हों और सबसे बढ़कर ये संस्थाएं आर्य समाज की, हिन्दू जाति की तथा राष्ट्रीयता की चेतना को व्यापक और समृद्ध बना सकें।

महात्मा हंसराज का प्रारम्भ किया हुआ कार्य तभी सफल हो सकता है जब कि डी. ए. वी आन्दोलन जन समाज का जनता द्वारा अपनाया हुआ आन्दोलन बने।

—सत्यदेव

आचार्यवर श्री पं. ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु की स्मृति में

श्री जिज्ञासु स्मारक-निधि

श्री पूज्य गुरुवर पं. ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु की स्मृति में किसी विशेष काय करने के लिए उनके प्रायः सभी शिष्यों, भक्तों और प्रेमी जनों ने आग्रह किया है। मैं फरवरी ६५ की वेदवाणी में लिख चुका हूँ कि आपके द्वारा शेष रहे और चलाये जा रहे कार्य के लिए भी पर्याप्त धन की आवश्यकता है। उनकी स्मृति में विशेष कार्य को करने के लिए अलग धन की आवश्यकता होगी। इसलिए मैंने सब परिस्थितियों पर विचार करने के पश्चात यह निर्णय किया है कि श्री पूज्य गुरुवर की स्मृति में—

५०,०००) पचास हजार रु० की श्री जिज्ञासु स्मारक-निधि स्थापित की जाए और इस स्मारक निधि का रुपया श्री रामलाल कपूर ट्रस्ट में ही जिज्ञासु स्मारक निधि के नाम से जमा हो तथा इसी के अन्तर्गत कार्य हो। इस निश्चय के पश्चात मैं उनके सभी शिष्यों भक्तों और प्रेमीजनों से निवेदन करूंगा कि यदि वे वस्तुतः अपने आचार्यवरकी स्मृति अक्षुण्ण रखना चाहते हैं तो वे उदारता पूर्वक इस स्मारक निधि में अपना-अपना भाग अधिकसे अधिक अर्पित करके आचार्य ऋण से उऋण होने की दिशा में प्रयत्नशील हों।

आप सब के सहयोग का आकांक्षी—युधिष्ठिर मीमांसक

राहुल जी के ग्रन्थ—ऋग्वेदिक आर्य की एक समीक्षा

(ले०—श्री प्रो० भवानीलाल जी भारतीय एम० ए० गवर्नमैंट कालेज पाली)

इतिहास, पुरातत्व, धर्म राजनीति, विज्ञान, साहित्य आदि विविध विषयों पर निर्बाध लेखनी चलाने वाले स्व० महा पण्डित राहुल सांकृत्यायन ने ऋग्वेद के आधार पर वेद कालीन आर्यों के जीवन के सम्बन्ध में एक ग्रन्थ लिखा था—ऋग्वेदिक आर्य। अपने जीवन में विविध मतों और आस्थाओं को स्वीकार करने वाले राहुल जी के व्यक्तित्व से परिचित कोई भी व्यक्ति अनुमान लगा सकेगा कि उक्त पुस्तक में क्या हो सकता है? राहुल जी एक समय परसा (बिहार) के वैष्णव मठ के महन्त थे और अयोध्यामें सत्यार्थ-प्रकाश के अध्ययन ने उनके वैष्णव जीवन की इति श्री करदी। वे एक कट्टर आर्यसमाजी बन गए। आगरे में उन्होंने स्व० महेश प्रसाद मौलवी आलिम फाजिल द्वारा संचालित आर्यमुसाफिर विद्यालयमें शिक्षा पाई, परन्तु उन पर शीघ्र ही बौद्ध मत का रंग चढ़ गया और वे तुरन्त ही भिक्षु बन कर विभिन्न बौद्ध देशों में भ्रमण के लिये निकल गये। एक भिक्षु के लिए उचित और आवश्यक संयम, नियम और वैराग्य की मात्रा का भी उन में अभाव ही रहा। फलतः वे पुनः गृहस्थ बने और खान-पान, आचार, व्यवहार और नैतिकता की सभी मर्यादायें उन्हें व्यर्थ ज्ञात हुईं। अब उन पर मार्क्स और लेनिन के द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद ने जादू फेर दिया और वे मरते दम तक साम्यवादी विचारधारा के बिना दाम के गुलाम रहे।

राहुल जी ने आर्यों के प्रति अपने सम्पूर्ण पूर्वाग्रहों और पक्षपात पूर्ण धारणाओं को पुस्तक रूप में निबद्ध करने के लिए 'ऋग्वेदिक आर्य' की रचना की। इसका एक प्रत्यक्ष प्रमाण तो इसी बात से मिल जाता है कि उन्होंने अपने उस ग्रन्थ की भूमिका में भारत के विगत इतिहास का जो एक सिंहावलोकन किया है उस मेंप्रत्येक युग के लोगों को मांसाहारी बनाने में वे नहीं चूके उदाहरणार्थ उनके निम्न वाक्य देखिये—

सन् १८५० से १९५०—अधिकांश लोग मांसाहारी हैं।

सन् १७५० से १८५०—,,

सन् १६५० से १७५०—मांसाहारी अधिक हैं।

सन् १५५० से १६५०—अधिकांश लोग मांसाहारी हैं।

सन् १४५० से १५५०—लोग अधिकांश मांसाहारी हैं।

सन् १३५० से १४५०—,,

सन् १२५० से १३५०—अधिकांश मांसाहारी हैं। इस प्रकार मांसाहार के आरोप को वे इतिहास के अतीत युग तक ले जाते हैं। मानो राहुल जी इसी कार्य के लिए नियुक्त किये गये हों कि वे पुराकालीन लोगों के आहार की समीक्षा करें और उन्हें मांसाहारी सिद्ध करें। अस्तु।

ऋग्वेद के आधार पर आर्यों के जीवन और उनकी सभ्यता, संस्कृति तथा विचारधारा का जो निवेदन राहुल जी ने प्रस्तुत किया है, उसका मूलाधार ही गलत है। वे तो मानते हैं कि ऋग्वेद कोई इतिहास की पुस्तक नहीं है।

(क्रमशः)

क्या प्रदर्शन ही जीवन है ?

(ले०—श्री सुन्दर लाल जी वोहरा जोधपुर)

अन्तःकरण की शुद्धि बिना व्यक्ति के चरित्र में निखार नहीं आ सकता। कुत्सित अन्तःकरण वाले व्यक्ति को हर क्षण दूषित विचार घेरे रहते हैं। तामसिक अन्तःकरण वाला व्यक्ति उपलब्ध मधुर रस को भी मदिरा में बदलने की चेष्टा करता है। ऐसे व्यक्ति के जीवन में अशान्ति और उद्दण्डता पूर्णरूपेण व्याप्त रहते हैं। उसकी वाणी और कार्य इतने तामसिक हो जाते हैं कि सत्व गुण का उसके समीप फटकना ही दुष्कर हो जाता है। उसकी हर क्रिया में अहंकार की छाया स्पष्ट प्रतीत होती है। यदि सत्साहित्य और सत्संगति से वह एक निश्चित समय के लिये दूर रह जाता है, तो वह एक पूरा नट बन जाता है। वह अपने भले अथवा बुरे, हर कार्य की प्रसिद्ध चाहता है। ऐसे व्यक्ति का आत्म-सुख इसी में निहित है कि उसकी हर बे सिर पैर की बात को लोग सुनें और उसे वाहवा दें। इस प्रकार उसका अहं असामान्य रूप से अमर्यादित हो जाता है। अपने अहं के प्रदर्शन के दौरान वह अनेक लोगों से ईर्ष्या मोल लेता है, बिना जाने पहचाने लोगों की घृणा का पात्र बनता है, अनेकों व्यक्तियों से व्यंग्य-प्रधान झिड़कियां सुनता है, फिर भी वह 'एक्टिंग' करना बन्द नहीं करता। उसकी अकड़ में लेशमात्र भी लोच नहीं आती। विज्ञापन के युग में रह कर भी यदि उसका सांगोपाङ्ग विज्ञापन न हुआ तब तो उसका जीवित रहना ही निरर्थक है।

राष्ट्र में आज सर्वत्र प्रदर्शन और प्रदर्शकों की ही तो भीड़ लगी है। व्यक्ति अपनी आंखों से अन्धे बन कर राहजनों की आंखों से अपने आप को देखना चाहते हैं। घर बर्बाद हो जाए, कोई परवाह नहीं, स्वास्थ्य क्षीण हो जाए, कोई चिन्ता नहीं, कर्जदार बन जायं, कोई विषाद की बात नहीं—हमारी कलंगी सब से ऊपर रहनी चाहिये। चारण भाटों के हवाई घोड़ों पर सवार होकर असंख्य राजा महाराजा मिट्टी में मिल गये, शायरों और चापलूसों की वाहवाहियों पर झूम-झूम कर न जाने कितने नवाबदीन बनकर रह गये, अपने को पुजवाने और प्रतिष्ठित कराने के भ्रम में न जाने कितने साधक भ्रष्ट हो गये, अपने आपको पर्दे पर देख कर विभोर होने वाली न जाने कितनी सम्भ्रान्त युवतियां वाराङ्गनाएं बन गईं; अपनी विद्वता का सिक्का जमाने के मद में असंख्य धुरन्धर विद्वान अष्टावक्र द्वारा परास्त कर दिए गये—फिर भी व्यक्ति के अहं का अस्तित्व अक्षुण्ण है। आखिर सिर थाम कर मिल्टन को लिखना ही पड़ा,—

"Fame is the last infirmity of the noble mind"—यशलिप्सा व्यक्तित्व की अन्तिम दुर्बलता है वित्तेष्णा से और पुत्रेष्णा से विरक्त होना सहज है. किन्तु लोकेष्णा के अष्टबाहु (**OctoPus**) से बचना तलवार की धार पर धावना है।

प्रत्येक व्यक्ति औरों से सहानुभूति की अपेक्षा करता है। यह व्यक्ति का अर्जित दोष नहीं है। 'हमें भी कोई सुनें', चित्त में इस प्रकार की चुलबुलाहट का होना प्रकृति जात है। अध्ययन और अभ्यास के द्वारा हम प्रकार के नैसर्गिक संस्कार का उदात्तीकरण कर सकते हैं, किन्तु इसका पूर्णरूपेण वाष्पीकरण तो तभी हो हो सकता है जब जीवात्मा का इस देह से कोई सम्बन्ध ही न रहे। जहां जीवित शरीर है वहां सहानुभूति का भाव भी है। लेकिन जहां यहां यह सहानुभूति का भाव अपने वाहवाही का चोला पहनाने की ताक में भटकता है, वहां साधक (व्यक्ति) निश्चित रूप से भ्रष्ट हो जाता है। व्यक्ति मानापमान के जाल में उलझ कर उन्मत हो जाता है। उसके अंतःकरण पर अहंकार का एकछत्र राज्य हो जाता है। मन, बुद्धि और चित्त तमोगुणी अहंकार के अर्दली बनकर रह जाते हैं।

हमारे हर कार्य में आज लोकदिखावा है। जुलूस निकालना और भीड़ लगाना—ये दो महान् कार्य हैं। चाहे किसी मृत व्यक्ति की अर्थी निकालनी हो अथवा किसी किशोर का यज्ञोपवीत संस्कार करना हो—सिक्कों की बौछार होनी चाहिए, व फोटोग्राफरों को किराए पर लाकर फोटो खिचवाने चाहिये। जहां तीन दिनों में शादी-कार्य पूर्ण किया जा सकता है वहां तीन दिनों में तो गणेश-प्रतिष्ठा ही नहीं हो पाती। ब्राह्मण को भरपूर दक्षिणा मिलती है, बिरादरी वालों को माल खाने को मिलता है, तब फिर शास्त्र-नियत व्यवस्था को कौन माने ? और यों धनिक परिवार वालों में होड़ चलती है—लोग देखेंगे किसने अपने बेटे अथवा बेटी की शादी धूमधाम से की। आगे जाकर यही होड़ रीति-रिवाज बन जाता है, बेचारे मध्यम व निम्न श्रेणी के लोग अपना सिर थामकर रह जाते हैं।

जहां खादी अथवा रेजी से काम चल सकता है वहां मखमल और नायलन लाने की चेष्टा की जाती है। बड़े-बड़े भोज और पार्टियों का आयोजन किया जाता है ताकि हमारी प्रसिद्धि फैले, लोग हमारे नाम से परिचित हो सकें। पानी की तरह—

(क्रमशः)

पं० त्रिलोकचन्द्र जी शास्त्री बी.ए. व राजपाल मदन मोहन जी चिमटा मंडली द्वारा जयंती के लिए प्राप्त धन राशि

बाबू प्रकाशचन्द्रजी एडवोकेट हिसार ११०/-
प्रि० देवराज जी गुप्ता डी. ए. वी. कालिज हिसार १००/-
आर्यसमाज हिसार १२५/-
श्री आत्माराम जी हिसार ५१/-
प्रि० ज्ञानचन्द जी २०/-
जयदेव जी की माता जी से २१/-
डी. ए. वी. हाई स्कूल के अध्यापक वर्ग से २५/-
पं० जगन्नाथ जी द्वारा आर्य कन्या पाठशाला से १२५/

हिसार से ७००/- रु० प्राप्त हुआ।

श्री नंदा जी मैनेजर पंजाब नेशनल बैंक हिसार, समाज प्रधान सेठ फतेचन्द जी, बाबू प्रकाशचन्द जी एडवोकेट, श्री राम विचार जी एम. ए., पं० जगन्नाथ जी प्रबन्धक कन्या पाठशाला हिसार, पं० मुरारी लाल जी शास्त्री इन सज्जनों के जयन्ती धन संग्रह में सहयोग देने के लिए सभा उनकी अत्यन्त कृतज्ञ है। और पूर्ण आशा है कि इस पवित्र कार्य में बढ़चढ़ कर सहायता करेंगे।

सत्यदेव मन्त्री सभा

श्रद्धा का स्वरूप

(ले०—श्री नामदेवराव जी गनगने 'पथरोट' यमुनानगर(अम्बाला)

वर्तमान काल में चारों ओर से यही ध्वनि श्रुति गोचर हो रही है कि आर्यसमाज में श्रद्धा का अभाव है अथवा श्रद्धा नाममात्र भी नहीं है। लोगों को प्रायः इस प्रकार की चर्चा करते हुए भी देखा जाता है कि जो श्रद्धा तथा कथित सनातन धर्मियों में है वह हम में नहीं है। यदि वह श्रद्धा हम लोगों में आजाय तो सोने में सुगन्धी का काम हो जाए। परन्तु प्रश्न तो यह है कि उन लोगों में तो अन्धी श्रद्धा है यदि वह हम में आ जाए तो उस से क्या लाभ? श्रद्धा का जो स्वरूप वेदों में वर्णित है यदि उसको हम लोग ग्रहण कर लें अथवा उस पर आचरण करना आरम्भ कर दें तो उन पौराणिक भाइयों की अन्धी श्रद्धा की ओर हमें देखना ही न पड़े। अतः हमें वेदों में वर्णित श्रद्धा को ही ग्रहण करना चाहिये और उस पर आचरण करना चाहिये। हम जितनी श्रद्धा और विश्वास परम पवित्र वेदों पर रखते हैं, उतना किसी अन्य पर नहीं। हमारे पास वेद जैसी अनुपम निधि होकर भी हम अन्य लोगों का मुख देखते क्यों फिरें? हमें क्या आवश्यकता कि हम अपने मुख से ऐसी अन्धी श्रद्धा के लिए कहते फिरें? जब कि हमारा वेद ही परम निधान है। आओ हम देखें कि वेद ने श्रद्धा का कौन सा स्वरूप हमारे सम्मुख रखा या हमें उपदेश दिया यजुर्वेद में मन्त्र आता है—

दृष्ट्वा रूपे व्याकरोत् सत्यानृतेप्रजापतिः।
अश्रद्धामनृतेऽदधाच्छ्रद्धा ँ सत्येप्रजापतिः ॥१९-७७॥

पदार्थः—(दृष्ट्वा) संप्रेक्ष्य (रूपे) निरूपिते (वि+आ+अकरोत्) करोति (सत्यानृते) सत्यं चानृतं च ते (प्रजापतिः) प्रजायाः पालकः (अश्रद्धाम्) अप्रीतिम् (अनृते) अविद्यमाननृतं यस्मिंस्तस्मिन्नधर्मे(अदधात्) दधाति (श्रद्धाम्) श्रत् सत्यं दधाति यया ताम् (सत्ये) सत्सु भवे (प्रजापतिः) परमेश्वरः।

जो (प्रजापतिः) प्रजा का रक्षक परमेश्वर (ऋतेन) यथार्थ अपने सत्य विज्ञान से (सत्यानृते) सत्य और भूठ जो (रूपे) निरुपण किए हुए हैं उनको (दृष्ट्वा) ज्ञान दृष्टि से देख कर (व्याकरोत्) (वि+आ+अकरोत्) विविध प्रकार से उपदेश करता है जो (अनृते) मिथ्या भाषणादि में (अश्रद्धाम्) अप्रीति को (अदधात्) धारण कराता है और (सत्ये) सत्य में (श्रद्धाम्) प्रीति को धारण कराता है।

भावार्थ :—सबका पालन-पोषण करने वाले प्रजापति परमात्मा ने सम्यक् प्रकार से विचार कर सत्य और असत्य के दोनों रूपों को सर्वथा पृथक् किया। उसी परमेश्वर ने सत्य में श्रद्धा तथा असत्य में अश्रद्धा को प्रतिष्ठित किया (रक्खा) और मनुष्यों को सत्य में श्रद्धा को रखने का व असत्य में अश्रद्धा को रखने का उपदेश दिया। जहां पर प्रसंग-वश उव्वटा चार्य का भाष्य भी उपस्थित करना उचित समझते हैं। जिससे पौराणिक भाइयों को भी पता चले कि वे लोग सत्य में श्रद्धा रखते हैं अथवा असत्य में। अत-एव शुक्ल यजुर्वेद का उद्धरण प्रस्तुत करते हैं। 'दृष्ट्वा रूपे। उपलभ्य रूपे सत्यानृतयोः। इदं सत्य मेवं रूपमिदं मनृतमेवं-रूपमिति व्याकरोत। व्याकरणं प्रथक कार्यावस्थानम् कथं व्याकरोत। अश्रद्धाम् अनृते अदधात् अनृतनिमित्तत्वात् अश्रद्धायाः। श्रद्धामास्तिक्यम् सत्ये। कः अदधात् प्रजापतिः। सत्यमेतत् ऋतेनेति व्याख्यातम्।

इस भाष्य से विस्पष्ट है कि सत्य में ही श्रद्धा को रखना चाहिए। महर्षि दयानन्द ने श्रद्धा की यही परिभाषा की है कि 'श्रत् सत्यं दधाति या सा श्रद्धा' अर्थात् जो सत्य में प्रीति को धारण कराती है उसे श्रद्धा कहते हैं। ऋषि के मन्तव्यानुसार अनृत तथा अधर्म में ही अश्रद्धा करनी चाहिए धर्म में नहीं।

तथा कथित सनातन धर्मी भाई जो पाषाणादि की मूर्त्तियों में श्रद्धा रखते हैं वह श्रद्धा नहीं कहाती प्रत्युत अश्रद्धा कहाती है। अश्रद्धा को ही अविद्या और अधर्म कहा है। पौराणिक भाई जिसे सत्य समझ कर पूजते हैं वह असत्य है। जिसको श्रद्धा समझते हैं वह अश्रद्धा है तथा जिसे धर्म समझते हैं वह नितांत अधर्म है। जबकि उव्वटाचार्य ने वेदभाष्य में खुली घोषणा की कि "श्रद्धामास्तिक्यं सत्ये" अर्थात् सत्य में श्रद्धा (आस्था) रखना ही आस्तिक्य (आस्तिकता) है, तो भी पौराणिक भाई इस ओर स्वार्थ के कारण ध्यान नहीं देते और इसी निजी स्वार्थ के लिए अपने आचार्यों का अपमान करते हैं। अतः उनको चाहिये कि वे अपनी इस अन्ध श्रद्धा को छोड़कर श्रद्धा के वास्तविक स्वरूप को समझें। जिस से कल्याण के भागी वे भी बन सकें!

परमपिता परमात्माने कल्याणी वाणी (वेदवाणी) के द्वारा उपदेश दिया कि हे लोगो! सत्य में ही श्रद्धा रक्खो और असत्य में अश्रद्धा रक्खो। यह बात सर्वथा सत्य ही है। जिन लोगों ने सत्य का आश्रय लिया उन्हीं का कल्याण हुआ। हमारे शास्त्रों में सत्य की महिमा वर्णित है। असत्य के अनेकों दोष बताए तथा अत्यधिक निन्दा की है। अतः हमें सत्य और असत्य के रूप को पहिचानना चाहिये। स्वाभाविक रूप से भी मनुष्य की सत्य मे ही श्रद्धा (निष्ठा) है। यह प्राकृतिक नियम होते हुए भी संसार में सत्य को असत्य के आवरण से ढांप दिया जाता है। एक पैसे की वस्तु बेचने वाला भी बिना भूठ के बात नहीं करता और यदि सत्य कहे भी तो कोई उसका विश्वास नहीं करता क्योंकि मिथ्या भाषण की रीति प्रबलता पर है। यदि हम बिना वाद-विवाद के कुछ लेना चाहें तो सर्वथा असंभव है। रेल पर जब पूरी बेचने वाला भी बिना भूठ के बात नहीं करता और यदि सत्य कहे भी तो कोई उसका विश्वास नहीं करता क्योंकि मिथ्या भाषण की रीति प्रबलता पर है।

(क्रमशः)

पं. प्रभुदयाल जी प्रभाकर की मंडली

आजकल महात्मा हंसराज जयन्ती के लिए धन समहार्थ हरियाणा प्रांत में प्रचार कर रही है। अतः सभी समाजें व संस्थाएं पं० जी को पूरा २ सहयोग देकर जयन्ती को सफल बनाएं।

२—जयन्ती पर बाहर से पधारने वाले सज्जनों का भोजन निवास आदि का प्रबन्ध हंसराज नगर जो कि साईंदास ऐंग्लो संस्कृत H/S स्कूल के क्रीड़ाक्षेत्र में बनाया गया है, में होगा। ऋतु अनुकूल वस्त्र आदि का प्रबन्ध सभी आगंतुक अपना स्वयं ही करके आवें।

भारत के महान् सेनापति श्री सुभाषचन्द्र बोस जी ने एक बार बहुत सुन्दर कहा था। लोगों से, भारतवासियों से अपील करते हुए उस भारत-सपूत ने बहुत ही सुन्दर कहा था कि :—

"Give me blood (young-men) and I will give you Freedom."

अर्थात् हे भारतवासियो मुझे नौजवान दो, नौजवान-का खून दो और मैं तुम्हें उसके फलस्वरूप स्वतन्त्रता दूंगा।

भाइयो कैसी पवित्र ओजस्वी भावना थी उस सेनापति की। क्यों कि युवकों, नौजवानों की मांग की थी उसने, क्यों नौजवानों जैसा खून, जोश मांगता था वह। इसीलिए ही, हां-हां इसीलिये ही तो वह मांगता था क्योंकि यही शक्ति, यही ताकत, यही तोप ही तो विदेशियों को, विधर्मियों को निकाल सकती थीं। हमारे चरित्रनायक को को यह पता था कि युवक शक्ति यह कार्य कर सकता है।

ठीक इसी प्रकार भारत के महान् सपूत ऋषि दयानन्द की आशाओं के स्तम्भ, युवक-निर्माता महात्मा हंसराज का निश्चय था कि युवक ही कुरीतियों, बुराइयों, पाखण्डों, आडम्बरों, अविद्या, अज्ञान का नाश कर सकते हैं युवक शक्ति ही ऋषि का सन्देश फैला सकती है। यही एक उद्देश्य था, यही एक लक्ष्य था, यही एक ध्येय था त्यागमूर्ति महात्मा हंसराज का, जिसकी पूर्ति के लिए उसने इन डी० ए० वी० स्कूलों, कालेजों, संस्थाओं का निर्माण किया था। यदि मेरी उक्त बातों पर आप को विश्वास नहीं आता तो लीजिये, सुनिये ७ नवम्बर १८८३ की सभा का निश्चय जिसकी गश्ती-चिट्ठियां उन दिनों

युवक स्तम्भ :—

युवक-निर्माता महात्मा हंसराज जी

ले०—श्री करनैलसिंह विद्यार्थी (कादियां)

सब आर्य समाजों को भेजी गई थीं—"हम एक ऐसी संस्था स्थापित करना चाहते हैं जिस में वर्तमान शिक्षा प्रणाली के अवगुणों को त्याग कर केवल गुणों को ही ग्रहण किया जायेगा। संस्कृत और हिन्दी की शिक्षा द्वारा शिक्षित और अशिक्षित वर्ग का मिलाप कराया और ऋषियों के ग्रन्थ पढ़ा कर परमात्मा और आत्मा की उलझनें सुलझाई जायेगी, शिल्प का भी प्रबन्ध किया जायेगा। इसी उद्देश्य से दयानन्द कालिज स्थापित करने का निश्चय किया गया है, जहां...विशेष कर वेदों की शिक्षा दी जा सके।'

भाइयो यह था उद्देश्य उस महात्मा का। वह चाहता था कि मेरे प्रत्येक स्कूल कालिज से अथवा दूसरी संस्थाओं से सुयोग्य, चरित्रवान, देशभक्त, वैदिक-विचार धाराओं से ओत प्रोत, ऋषि के दीवाने परवाने निकलें, एक से एक बढ़ कर निकलें जिस से कि देश से प्रत्येक प्रकार की बुराई दूर हो जाए।

महात्मा जी सदा ही नये से नये युवकों को आर्य समाज के सम्पर्क में लाने का बहुत प्रयत्न किया करते थे युवकों ही को क्या वह तो कालेज, स्कूल के अध्यापकों प्राध्यापकों को प्रति सप्ताह समाज मन्दिर में बुलवाया करता था वाद-विवाद हुआ करता था और स्वयं उन को उनकी त्रुटियां बताया करता था। इसी लिये ही तो उसे युवक-निर्माता कहा जाता है आओ जरा युवक निर्माता की डायरी को तो देख लें। देखो ४ अप्रैल १९२३ की डायरी, वहां स्पष्ट, लिखा आप पायेंगे कि '...Professer... **addressed the weekly congraction of the Lahore Arya Samaj. He needs much improvement. I am glad, However, that I have introduced a new worker into this field.'**

अर्थात्—'प्रोफेसर...ने आर्य समाज लाहौर के साप्ताहिक सत्संग में अपना व्याख्यान दिया। अभी उन्हें अधिक उन्नति की आवश्यकता है। फिर भी मैं प्रसन्न हूं कि मैं इस क्षेत्र में एक नये कार्यकर्ता को ले आया हूं।'

८ जुलाई १९२१ को डायरी में वे लिखते हैं—

'I said Pandit Lakhpat Rai that we should utilize young-men. Sadhus and Vanprasthis. New workers come out their rank. They should spend your months together in retreat like Buddhist Bhikshus and devote the rest of their time to missionary work.'

किस प्रकार उनकी इच्छा है कि मेरे नवयुवक बुद्ध भिक्षुओं के समान बाहिर जाकर दूसरों की सेवा करें, प्रचार करें, यह सब आप उनके उक्त शब्दों द्वारा जान सकते हैं।

हां यदि और कुछ देखना है इस बारे में तो देखिये १० अक्तूबर १९२३ की डायरी के ये शब्द—

'Professer Mehr chand came to see me I suggested to him that he should selectfive students and train them.' अर्थात् प्रो० मेहरचन्द मेरे पास मुझे मिलने आये तो मैंने उन्हें कहा (सलाह दी) कि वह पांच सुयोग्य विद्यार्थियों को लेकर उन्हें अच्छी प्रकार प्रचारार्थ तैयार करें।

भाइयो इस से बढ़कर भी और कोई उदाहरण हो सकता है उस युवक निर्माता महात्मा हंसराज का, कि वह युवकों की कितनी उपयोगिता समझता था और किस लगन से उन्हें तैयार करके समाज में लाकर उन पर आर्य सिद्धान्तों को रंग चढ़ाता था। इसीलिये ही तो उसने अपने कालेज मे एक बहुत बड़ी युवक-समाज का निर्माण किया हुआ था। पर आज इन स्कूलों में क्या हो रहा है इसके सम्बन्ध में मेरे नहीं बल्कि आर्य समाज के दीवाने राजेन्द्र 'जिज्ञासु' के विचार सुनीये—

हमारे विद्यालयों के अध्यापक और अध्यापिका भी फैशन में वैसे ही पड़े हुए हैं जैसे सरकारी व ईसाई स्कूलों के पढ़ाने वाले। हमारी छात्र छात्रायें भी वैसे ही सिनेमा के चटोरे हैं जैसे दूसरे। भेद क्या है...हमारे स्कूलों, कालिजों में नाटक नाच, सब कुछ होते हैं (लड़कों की स्टेज पर लड़कियां गाती, कव्वालियां बोलती, नाचती व भंगड़ा पाती है) और तो और नकली दयानन्द और नकली विरजानन्द बना कर आर्यों की भावना से खिलवाड़ किया जाता है......सहशिक्षा सब संस्थाओं में प्रचलित हो रही है।......"

अतः भाइयों, डी. ए. वी. संस्थाओं पर विराजमान विभूतियो चेतो, जागो, उठो! बच्चों को सच्ची शिक्षा दो, पवित्र शिक्षा दो, युवक निर्माता की भावना को सजीव करो, यही महात्मा का सन्देश है।

—

रजिस्टर्ड नं० पी० १२१

हमारी प्यारी मा

ले०—पं. चन्द्रसेन जी आर्य हितैषी, उपदेशक सभा, सो०. वासी

****

बन्धुओ हमारी कई माताएं हैं। ईश्वर, जन्म देने वाली, मातृभूमि, माता ये चारों अपनी विशेषताओं के कारण हमारी माताएं हैं। इन के अतिरिक्त एक और मां है जिस के द्वारा हम अपने को दुर्गुणों से बचा कर परिपूर्ण मनुष्य बनने का पाठ सीखते हैं। जिसके फलस्वरूप हम आनन्द तथा मुक्ति पद को प्राप्त होते हैं वह है हमारी प्यारी मां आर्यसमाज। इस मां का जन्म आज से नब्बे वर्ष पूर्व भारत की सौंदर्य भरी नगरी बम्बई में उन्नीसवीं शताब्दी के महान सुधारक सन्त दयानन्द सरस्वती के द्वारा हुआ। इस मां ने अपने जन्म काल से लेकर आज तक विशेष कर तीन उपदेश दिये जो इसके दस सुनहरी नियमों में से एक आदेश और महान सुन्दर है। "संसार का उपकार करना इस आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना। जरा इन तीन शब्दों की गहराई में जाएं और मनन करें तो स्वयं भी सुखी रहेंगे संसार भी सुखी रहेगा। शारीरिक दृष्टि से हमें ब्रह्मचर्य के पालन से ऊपर उठना चाहिये कोई कष्ट क्लेश नहीं आएगा और तो और मौत पर भी विजय पाऐंगे जैसे वेद में आया है 'ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्यु मुपाघ्नत सौ साल से अधिक जीने के लिये हमें ऐसी राम बाण औषधि पीनी पड़ेगी।

इस से हमारी इंद्रियां वश में होंगी शुभ काम करने की इच्छा जागृत होगी, आलस्य कोसों दूर भागेगा। कर्मों की गति बड़ी विचित्र है जैसा कहा कर्मणों गहना गति, कर्म की गति बड़ी गहरी अनोखी होती है इस कर्मचक्र को को आत्मिक शक्ति वाला व्यक्ति ही समझ सकता है।

जब शारीरिक और आत्मिक शक्तियां सुदृढ़ होंगी तो तीसरी सामाजिक शक्ति भी अपने आप ही पवित्रता के रङ्ग में रङ्ग जायेगी संसार के उपकार सेवा करने की भावना बिना किसी लोभ और लालच के मनुष्य कर सकता है। 'परोपकाराय सतां विभूतय,: की ज्योति जग उठती है इस ज्योति से मनुष्य स्वयं तो जगमगा उठता है वह संसार को भी इस सामाजिक ज्योति से जगमगा देता है इससे मनुष्य में बुराई आने का साहस नहीं होता। आज जो भी धार्मिक सामाजिक और राजनीतिक रोशनी एवं सुधार देखते हैं—इसका मुख्य कारण हमारी प्यारी मां आर्यसमाज है आज २-४-६५ को इस मां का जन्म दिन है इसका जन्म दिन शान से मनायें। लोग अपने घरों तथा आर्य मंदिरों में दीप माला मनायें।

आर्य समाज के किये उपकारों को याद किया जाए। उसी के अनुसार हम अपना जीवन बनाएं। यह वह हमारी मां आर्य समाज है जो कभी नहीं मर सकती बल्कि सोतों को जगाने वाली है ऐसी मां के चरणों में रहने वाली जातियें। कभी गिरावट की ओर नहीं जातीं, हां जो अपनी मां का वफादार नहीं रहता वह स्वयं मिट जाता है।

आर्य जगत के पाठकों से निवेदन

२८-३-६५ के आर्य जगत में प्रकाशित महात्मा हंसराज जन्म शताब्दी की सूचना में परिवर्तन कर दिया गया है। आर्य जगत का साधारण प्रकाशन यथा पूर्व प्रकाशित होता रहेगा उसके साथ ही आर्य जगत का शताब्दी अंक भी प्रकाशित होगा जो कि पाठकों की सेवा में १५ अप्रैल को पहुंच जायगा। यह विशेषांक १०० पृष्ठों के पुस्तकाकार में प्रकाशित होगा। जिस में महात्मा जी के जीवन से सम्बंधित आर्य जगत के उच्चकोटि के विद्वानों के लेख व कविताए होंगी। व्यापारी लोग अपने विज्ञापन देकर लाभ उठाएं। —व्यवस्थापक

आर्यसमाज सांबा

ऋषिबोध उत्सव के उपलक्ष्य में प्रादेशिक सभा के उपदेशक पं. चन्द्रसेन जी, तथा ज्ञानचन्द जी, त्रिकुटा मंडली के उपदेश व मनोहर भजन होते रहे जनता अति प्रभावित हुई।

आर्य समाज सांबा के भामाशाह श्री लाला [illegible] ने एक हारमोनियम [illegible] समाज का दालान [illegible] का वचन दिया है जिसके अनुसार काम शुरू कर दिया है।

इसी अवसर पर श्री वेदप्रकाश जी वर्मा के सुपुत्र का नामकरण संस्कार श्री पं. राजपाल जी ने कराया। बालक का शुभ नाम राजीव रखा गया। उपस्थित सज्जनों ने बच्चे को दीर्घायु होने का आशीर्वाद दिया। कार्य समाप्ति पर १५/- सांबा समाज को दान में मिले।

★ मानव जीवन धूप और छाया की भान्ति परिवर्तित है अतः इस पर अभिमान करना व इतरना सर्वथा निर्मूल है।

आओ हम प्रतिज्ञा करें। अपनी प्यारी मां के दस सुनहरी नियमानुसार अपने जीवन को बनएंगे। हमारा कर्त्तव्य हमें चेतावनी देता है कि हमारा परम सौभाग्य है कि हमारी मां आर्य सामज है।

महात्मा हंसराज जन्म शताब्दी के उपलक्ष्य में प्राप्त धन राशि

श्री पं० चन्द्रसेन जी द्वारा—

आर्यसमाज सांबा		२००/-
,,	अखनूर	२५/-
,,	राजौरी	२७५/-
,,	पुंछ	६५/-
,,	रामनगर	२०/-
,,	ऊधमपुर	१०१/-

श्री पं० त्रिलोकचन्द्र जी शास्त्री द्वारा ४००/-

,, ,, ५००/-

श्री पं० अमरसिंहजी द्वारा अम्बाला से २१२/-

सभा की ओर से उपरोक्त सज्जनों का अतिशय धन्यवाद।

सत्यदेव—मन्त्री सभा

शोक समाचार

आर्यजगत को यह दुःखद समाचार पढ़कर अति खेद होगा कि प्रादेशिक सभा के हैड क्लर्क श्री पं० जमनादास जी की माता का २३ मार्च को १० बजे प्रातः उनके अपने निवास स्थान चक माईदास जिला जालन्धर में स्वर्गवास हो गया है। माता जी ६० वर्ष की वृद्धा होते हुए भी अपने नित्य कर्म को श्रद्धा भक्ति से निभाती रहीं। रस्म पगड़ी शनिवार ३ अप्रैल को सायंकाल उनके घर पर की जायगी, आर्यजगत की ओर से हार्दिक सहानुभूति है।

मुद्रक व प्रकाशक श्री सन्तोषराज जी आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर द्वारा वीर मिलाप प्रेस, मिलाप रोड जालन्धर से मुद्रित तथा आर्यजगत कार्यालय महात्मा हंसराज भवन निकट कचहरी जालन्धरशहर से प्रकाशित मालिक—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर



टेलीफोन नं० ३०५७ [आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधिसभा पंजाब जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd. No. P. 121

एक प्रति का मूल्य १३ नये पैसे   वार्षिक मूल्य ६ रुपये

वर्ष २५ अंक १५)   २९ चैत्र २०२२ रविवार—दयानन्दाब्द १४०— ११ अप्रैल १९६५   (तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

वेद सूक्तय:

तपनो अस्मि पिशाचानाम्

मैं देश, धर्म और मानवता का रखवाला बनकर आया हूं। जितने भी पिशाच हैं राक्षस हैं, अत्याचारी हैं, उन सब को ही मैं तपाने वाला हूं। मेरे आगे उनकी कोई भी चाल चल ही नहीं सकती। भली प्रकार उनको पीस डालने वाला हूं।

ते न विंदन्ते न्यंचनम्

जितने भी वैरी शत्रु हैं तो जब वे मेरे सामने आते हैं सारे अपने-अपने न्यचनम् दाव-पेच, चौकड़ियां भरना भूल जाते हैं। सारी चालें उनकी धरी रह जाती है। मैं उन सब की तमाम चालों को विफल करके रख देता हूं। फंस जाते हैं।

न पिशाचैः संशक्नोमि

सारे कान खोलकर मेरी बात सुन लेवें। कि मैं ऐसे पिशाचों, राक्षसों से कभी समझौता नहीं करता हूं। दुष्टों से मेरा समझौता हो ही नहीं सकता। उन की गत बनाना ही मेरे जीवन का प्रयोजन है।

अथर्ववेद से

वेदामृत

11-4-65.

ओ३म् भूर्भुवः स्वरग्नि वाय्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः स्वाहा। इदमग्नि वाय्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः इदन्न मम॥

अर्थ—हे प्रभो! आप (भू:) प्राणस्वरूप व प्राणों के प्यारे हैं (भुव:) आप सारे दुःखों के नाश करने वाले तथा (स्वः) सुखरूप होने से सब को सुख देते हैं। आप (अग्नि:) सब के पूज्य देव हैं (वायु:) सारे ब्रह्माण्ड में व्यापक हो रहे हैं। (आदित्य) दुःख हर्ता हैं, अन्धकार को दूर कर के ज्योति प्रदान करते हैं। आप (प्राण) प्राणस्वरूप हैं, सब के प्राण हैं। आप (अपान) कष्ट निवारक हैं तथा (व्यान) सुख धारक हैं—इसलिए मेरी ये तमाम आहुतियां आपके अर्पण हैं।

भाव—मानव! तू इधर उधर उधर क्यों भटकता है? क्या मिला है तुझे? कौन-सी वस्तु है जिसकी पूजा नहीं कर चुका और कौन-सा स्थान है जहां पर तूने जाकर सुख की तलाश नहीं की। कौन-सा जड़ या चेतन देव है जिसके आगे तूने अपनी कीमती भेंट नहीं धरी? पर बतला तो सही कि तुझे नाना स्थानों पर भटकने, अनेकों के पूजने या भेंट धरने से मिला क्या? थक कर बैठ गया है। रेत के कणों से पानी की आशा करना अपने को धोखा देना है। सुख आनन्द को पाना है तो उसी सर्वव्यापक भगवान की शरण में जा। वही भूः है भुवः व स्वः है। सुख उसी से मिलेगा। अग्निमय देव! कृपा करो। अपने आशीर्वाद का प्रसाद दे दो—सं०

ऋषि दर्शन

वेदं परमेश्वरंच वेत्ति

जो मनुष्य वेद को जानता, मानता, पढ़ता पढ़ाता है तथा परमेश्वर को मानता व जानता है। उसका परमभक्त है तथा जो भी ज्ञान का प्यारा है. अज्ञान का विरोधी है, उसके दूर करने में लगा रहता है—वेद व प्रभु का प्यारा है।

स एव ब्राह्मणः

वही ब्राह्मण है, वही ब्राह्मण बनने और कहलाने का अधिकारी है। ब्राह्मण होने की सब से बड़ी तथा आवश्यक यही कसौटी है कि जो वेद व भगवान् को जानता है। ब्रह्म जानाति ब्राह्मणः—ब्रह्म ज्ञानी ब्राह्मण है।

यो जितेन्द्रियो विद्वान्

और जो मनुष्य विद्वान् है, शूरता वीरता आदि गुणों से भरा हुआ है। तथा अपनी इन्द्रियों को जिसने अपने वश में किया हुआ है। वीर होकर विलासी नहीं, अपनी इन्द्रियों का दास नहीं—आत्मवशी है।

भाष्यभूमिका से

अधिष्ठाता—श्री संतोषराज जी   सम्पादक—त्रिलोक चन्द्र शास्त्री

आधुनिक मानव जीवन में धर्म का स्थान

श्री पं० रविदत्त जी आर्य 'विद्यावाचस्पति, प्रभाकर

[पुरोहित—आर्यसमाज, हांसी]

आधुनिक मानव जीवन में धर्म का स्थान है कि नहीं, यदि है तो कितना है ? और उसका वास्तविक स्वरूप क्या है। इत्यादि प्रश्न सभी आधुनिक काल में महान विवाद के विषय बन चुके हैं। इस प्रकार के और भी अनेकों प्रश्न धार्मिक व्यक्ति के सामने उपस्थित होते हैं। परन्तु प्रायः सभी व्यक्ति अपनी अपनी शक्ति, योग्यता, रुची एवं स्वभाव के अनुकूल इन का समाधान कर लेते हैं। आधुनिक मानव का जीवन और धर्म का समन्वय बहुत ही सुगमता से हो जाता है। इस का कारण अवश्य है और वह यह है कि भारतीय सभ्यता और संस्कृति में विचार सहिष्णुता का ओत-प्रोत होना और समय समय पर शास्त्रकारों द्वारा किये गये धर्म के व्यापक लक्षणों का उद्घोष होना इस के लिये मनुष्य की आर्य संस्कृति तथा धर्म में सहिष्णुता का होना अनिवार्य है। विविध सम्प्रदायों के प्रति सहिष्णुता एवं सम्मान का भाव भारतीय सभ्यता और संस्कृति का प्रमुख अङ्ग है।

उपरोक्त कथन के लिए अधोलिखित वेद मन्त्र अनावश्यक न होगा कि— 'माता भूमिः पुत्रोहं पृथिव्याः' अर्थात पृथिवी हमारी माता है और हम सब उसके पुत्र हैं। यह मानव जीवन के लिए जो कि वास्तव में धार्मिक है विशाल दृष्टिकोण एवं उदात्त भावना ऋग्वेद एवं अथर्ववेद के पृथिवी सूक्त में सर्वत्र भरी पड़ी है। यदि हम में वास्तविक धर्म की सद्भावना हो तो हम सब वेद के शब्दों में भाई भाई बन कर रह सकते हैं ! पृथिवी के सम्पूर्ण मानवों में वेद ही तो भ्रातृत्व का सतत सम्बन्ध सर्वप्रथम उद्घोषित करता है। धर्म ही मनुष्य के लिए और आधुनिक मानव जीवन के लिए अनर्घ्य औषध है जो सर्वदा मानव को पूर्णरूपेण पवित्र करती है। परन्तु मनुष्य की यह रहस्यात्मक वार्ता समझ में नहीं आती कि वह अमृत का परित्याग करके क्यों विष का पान करता है। इसी बात की पुष्टि में एक कवि का श्लोक उधृत करना अनावश्यक न होगा। उनका कथन है कि :—

धर्मं प्रसङ्गादपि नाचरन्ति,
पापं प्रयत्नेन समाचरन्ति।
आश्चर्यमेतत् हि मनुष्यलोके,
अमृतं परित्यज्य विषं पिबन्ति॥

अतः आधुनिक जीवन के साथ मनुष्य को धर्म का सम्मिश्रण करना ही अच्छा है। क्योंकि मनुष्य धार्मिकता को ही ग्रहण करके अमृतत्व को प्राप्त कर सकता है। दूसरे देशों की दृष्टि में हमारा आर्य-भारत-वर्ष इसी लिए गौरव-पूर्ण रहा है कि इस में प्रारम्भ से ही धर्म की प्रधानता मानव जीवन के लोभ विनाश तथा जीवन को अग्रसर एवं प्रगतिशील बनाने के लिए रही है। शुद्धरूपेण मनुष्य अपनी भावनाओं को तभी अभिव्यक्त कर सकता है जब कि उसका अन्तःकरण धार्मिकता से परिमार्जित हो। धर्म एक आधुनिक मानव जीवन की उदात्तभावना एवं प्रखर-प्रेम-श्रोत का नाम है। अष्टाध्यायी के कर्ता महर्षि पाणीनि ने धर्म शब्द की व्युत्पत्ति "धृ" धारणे धातु से की है। क्योंकि धर्म को मनुष्य धारण करके अपने जीवनस्थ दुर्गुणों का बहिष्कार करता है। हमारे महर्षियों ने धर्म की परिभाषा दोनों लोकों की सिद्धि प्राप्ति लिखी है। धर्म विहिन मनुष्य पशु-सदृश कहा जाता है जैसा की एक कवि का कथन है कि :—

साहित्य-सङ्गीत-कला-विहिनाः,
साक्षात्पशु पुच्छ विषाणहिनाः।
तृणं न खादन्नपि जीवमानः,
तद् भागधेयं परमं पशुनाम्॥

अर्थात् उपरोक्त धर्म को अमर वा गौरवशाली बनाने वाली साहित्य-सङ्गीत एवं कला जिस मानव के पास नहीं है वह वास्तव में अशाष्ट भोजी—विषाण-विहिन पशु सदृश मानव है। यदि हम धर्म के अटूट—वास्तविक मार्ग पर चलते रहें तो हमारे जीवन में दुःख, संकट, क्लेश आ ही नहीं सकते, क्योंकि ये तभी आते हैं जब कि मनुष्य अकर्मण्य और अधर्मी होकर अपने जीवन के प्रमुख पथ से सर्वदा से पथ-भ्रष्ट हो जाता है। क्योंकि धर्म में सच्ची श्रद्धा रखने वाले भरतीय हमेशा सुखी रहें। पाश्चात्य विद्वान श्री प्रो० मैक्स-मूलर यदि वास्तव में धार्मिक और संस्कृत-भाषा के प्रति अटूट श्रद्धा रखने वाले होते तो वे कदाचित वेदों के विषय में ये शब्द न कहते कि—**'If we must emPloy tecknical terms religion of the Vedas is polythesum not moniotheism'**

अर्थात यदि हम पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग करें तो वेद का धर्म एकीश्वरवाद का धर्म नहीं अपितु बहुदेववाद का धर्म है। धर्म के वास्तविक स्वरूप को जानने वाला व्यक्ति ऐसी भ्रान्त विचार धारा संसार में कभी नहीं फैला सकता। अतः हम निर्भ्रान्तता से कहसकते हैं कि श्री प्रो० मैक्समूलर धर्म से हो सकता है कि अनभिज्ञ थे। वेद और धर्म के प्रति ऐसा कहना और लिखना सर्वदा अनिष्टकारी व्यक्तियों का काम है। धर्म पर चलने के लिए विशाल हृदय शिव संकल्पमन और प्रखर बुद्धि चाहिए। महा कवि हिन्दी पद्य-विभाग के शिरोमणी श्री श्रीधर पाठक ने कहा है कि—

सारा सांसारिक सुख पाकर,
ईश्वर को पहिचानो हो।
उसकी विद्यमानता, सत्ता,
विशिष्ठ वस्तु मात्र में जानो हो॥
जब उसका यह अग बना हुआ है,
निश्चय उसको प्यारा है।
इस में दोष लगाना केवल
अपने लिए दोष का द्वारा है॥
परम, पवित्र, पावनी, पृथिवी
भरी सकल चतुराई से।
पद-पद पर शोभा छाई,
ईश्वर की रघुराई से॥

धर्म का ऐसा विशिष्ट, विशद, प्रख्यात, लुभान्वित वर्णन धर्म के विविधांगों को जानने वाला व्यक्ति ही कर सकता है अतः पाश्चात्यों की भ्रांतियां जो धर्म विषयक हैं वे अमूल-असत्य से परिव्याप्त हैं। अतः आधुनिक मानव जीवन में धर्म के लिए जब तक विशिष्ट स्थान न होगा तब तक हमारी गौरव और गरिमा नहीं बढ़ सकती। अतः मानव जीवन में धर्म को स्थान देना अत्यावश्यक है।

आर्य अनाथालय फिरोजपुर छावनी में वेद प्रचार

२१-३-६६ से २१-३-६५ तक प्रातः ५-३० से ८ बजे तक सामवेद यज्ञ और उपदेश तथा रात्रि को ८ से ६॥ बजे तक भाषण व प्रवचन पूज्य आचाय कृष्ण जी द्वारा होते रहे। जनता पर बड़ा प्रभाव पड़ा और पूरा २ लाभ उठाया।

प्रताप चन्द महता
अधिष्ठाता

सम्पादकीय—

आर्य जगत्

वर्ष २५] रविवार २०२१, ११ अप्रैल १९६५ [अंक १५

जन्मशताब्दी का मेला

आर्य प्रादेशिक सभा पंजाब जालन्धर शहर की ओर से त्याग व तपस्या के अनुपम प्रतीक जीवन बलिदानी, शिक्षा भागीरथी के वर्तमान युग के महान भगीरथ एवं डी. ए. वी. रूप विशाल आन्दोलन के प्रथम सूत्रधार स्वर्गीय महात्मा हंसराज जी की जन्मशताब्दी इसी अप्रैल को ता० १७ से १९ तक जालन्धर शहर में बड़ी ही धूम-धाम से मनाने का आयोजन किया जा रहा है। इस में सभा को जहां डी. ए. वी. कालेज कमेटी नई देहली का पूर्ण सहयोग मिल रहा है। सारे कालेजों, स्कूलों व पाठशालाओं के सारे सज्जन बड़ा हाथ बंटा रहे हैं, वहां आर्य समाजें एवं परिवार भी पूरी तरह से साथ दे रहे हैं। आर्य सार्वदेशिक सभा और आर्य प्रतिनिधि सभा के मान्य सज्जन भी सहयोगी बने हुए हैं। महात्मा हंसराज जी के पवित्र जीवन त्याग के प्रति किस का मस्तक नहीं झुकता? वह सब के थे। शिक्षा के महान क्षेत्र में भारतीय इतिहास में इस युग में उनका स्थान सब से ऊंचा है। राष्ट्रिय शिक्षा में तो वह शिक्षा के प्रथम आचार्य कहा जाता है। सौ वर्ष के बाद उनकी जीवनशती उनके अनुरूप ही होगी। वैसे तो शताब्दी का कार्यक्रम तारीख ११ अप्रैल रविवार से प्रातःकाल वेदयज्ञ तथा सार्य महात्मा हंसराज स्मारक प्रवचनमाला से प्रारम्भ हो जायगा। इस में डा० हजारी-प्रसाद जी, श्री मुरार जी देसाई पूर्व वित्तमन्त्री भारत सरकार, डा० अब्दुलमजीदखां, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के उपकुलपति प्रिंसिपल सूर्यभानु जी, विक्रम विश्वविद्यालय के वायसचांसलर डा० गोवर्धनलालजी दत्त, वृद्ध नेता डा० गोकुलचन्दजी नारंग, भाग लेंगे। ता० १७ शनिवार को भारी जलूस निकलेगा। जालन्धर के इतिहास में यह स्मरणीय रहेगा। ता० १८ व १९ अप्रैल को विशेष कार्यक्रम होंगे। यह शताब्दी समारोह देखनेवाला होगा। सभा के मान्य प्रधान श्री यश जी, मन्त्री श्री प० सत्यदेव जी विद्यालंकार तथा अन्य सारे सज्जन जुटे लगे हुए हैं। बड़ा उत्साह है। सौ वर्ष के बाद उस तपस्वी देवता की जन्मशती का महापर्व आया है। इसे शतवर्षीय पर्व कहा जा सकता है। सभा तो इस के लिए दिन रात एक करके अपने कर्तव्य में लगी हुई है। सब भाईयों बहिनों, संस्थाओं, समाजों तथा परिवारों से निवेदन है कि इस महापर्व में शामिल होने के लिए अभी से तैयारी कर लेवें। सभा को अभी से सूचना देने की कृपा करें कि कहां से कितने २ भाई बहिन पधार रहे हैं। सभा को इस महान् दिवस मनाने के लिए यज्ञ में अपनी आहुति भी डालते रहें—

—त्रिलोकचन्द्र

सज्जनों की उदारता

सभा के आदेशानुसार सभा के सारे उपदेशक भजनीक भाई महात्मा हंसराज जयन्ती का प्रचार करने तथा इसी सम्बन्ध में सभा द्वारा छापे जन्मशताब्दि नोटों का धन लेने के लिए भिन्न-भिन्न स्थानों पर गए हुए हैं। हम तीनों भी—मैं तथा पं. राजपाल मदनमोहन जी चिमटा मंडली सभा के कार्यक्रम पर गए। नाभा, हिसार तथा देहली गुरुद्वारा रोड समाज के उत्सव में पहुंचे। नाभा में अपने आर्य हाई स्कूल के मान्य मुख्याध्यापक श्री देसराज जी भाटिया एम. ए. तथा श्री पं. धर्मदेव जी शास्त्री का रात दिन का इस बारे में किया परिश्रम नहीं भूलेगा। दुकान-दुकान पर चलकर हाथ बटाया। हिसार में वा. प्रकाशचन्द जी एडवोकेट, प्रि. जगन्नाथ जी एम. ए, प्रि० देवराज जी गुप्त एम. ए. श्री नन्दलाल जी मन्त्री समाज, सेठ फतहचन्द जी प्रधान, प्रिं० ज्ञानचन्द जी, प. मुरारीलाल जी शास्त्री, प्रो. रामविचार जी, पंजाब नैशनल बैंक के मैनेजर श्री नन्दा जी, प्रि. गिरधारी लाल जी ने बड़ा ही सहयोग दिया। इसी प्रकार देहली में सभा के पुराने महारथी डा. गोविन्दरामजी ला० गोपालदास जी सोनी, श्री. लक्ष्मीदास जी डा० चमनलाल जी चावला, श्री पृथ्वीचन्द जी सभ्रवाल पं. दयाराम जी शास्त्री, प. मोद प्रकाश जी, पं. सत्यदेव जी शास्त्री व प्रि. चौहान जी सल्वान स्कूल, ला. बंसीलाल जी ला. रामलाल जी, ला, रामदास जी, बहिन पुष्पा जी, श्री. रामलाल जी आदि ने बड़ा ही सहयोग दिया। अम्बाला में डा. मिलखीराम जी व शहर के सज्जनों ने भी बड़ा सहयोग दिया सब के आभारी हैं। सब के स्नेह एवं उदारता से इस काम के लिए अब तक २०००/-रुपये मिले जो सभा में जमा कराये गए।

—त्रिलोक चन्द्र

मधु कलश

लक्ष्य सिद्धि के लिए निरन्तर तीर बढ़ पर खाना
मिट जाना पर गलत जगह पर सिर को नहीं झुकाना
पत्थर में भी प्राण फूंक दो जीवन के अनुरागो
आलस करने का मतलब है जीते जी मर जाना

★

पद पाया, पैसा भी पाया, बहुत बड़े कहलाये
तब भी तुम सच्चे अर्थों में सफल नहीं हो पाये
अगर सफलता इस जीवन में सखे नापना चाहो
देखो इस दुनिया में तुम ने कितने मील बनाये

★

दुनिया भर का दर्द रात दिन अपना करके गाया
बलिवेदी पर अरमानों को अपने आप चढ़ाया
जब जब चाहे दोष देखने मैंने खुद को देखा
और स्वयं से आगे फिर मैं लेश नहीं बढ़ पाया

—विजय निर्बाध

(क्रमशः)

महात्मा हंसराज जी की जन्म शताब्दी के अवसर पर

आर्यजगत् का शताब्दी विशेषांक प्रकाशित हो रहा है जिस में उच्चकोटि के विद्वानों के लेख व कविताएं संग्रह की गई हैं। इसे पढ़कर अपने जीवन को त्याग, तपस्या, सरलता का आदर्श बनाएं। यह विशेषांक स्कूलों, कालिजों, समाजों व पुस्तकालयों के लिए स्थायी सम्पत्ति होगी। इसे पढ़ें और अन्य बंधु बांधवों को पढ़ाएं।

राहुल के ग्रन्थ—ऋग्वेदिक आर्य की एक समीक्षा

ले०—श्री प्रो० भवानीलाल जी भारतीय एम० ए०
गवर्नमैंट कालेज पाली

(गतांक से आगे)

उसमें आर्य ऋषियों ने अपने सम्मान्य देवताओं की स्तुतियों का संग्रह किया है। फिर भी ऋग्वेद में आनेवाले तथाकथित राजाओं, जनपदों, ऋषियों और नदियों के नामों के आधार पर वे कल्पना के रंग भरते जाते हैं। हमारा राहुल जी के मत से मौलिक विरोध है। वेद के अर्थ की जो परम्परा अनादि काल से हमारे देश में प्रचलित रही है उसकी यदि वेद के अध्येता उपेक्षा करें, तो हमारा यह निश्चित विश्वास है कि वे वेद के सत्यार्थ को त्रिकाल में भी नहीं समझ सकते। किसी भी भाषा को पढ़ने या समझने में उस भाषा के ही व्याकरण आदि की सहायता लेनी पड़ेगी। अतः वेद के व्याकरण निरुक्त और निघंटु, ब्राह्मण और प्रातिशाख्य आदि की उपेक्षा कर यदि राहुल जी ने वेद पढ़े तो वे वेद के मौलिक अर्थ को कैसे समझ सकते थे? वेद में हमें जो राजाओं और ऋषियों के नाम दीख पड़ते हैं उनके रहस्य को हृदयंगम करने के लिए हमें मनुस्मृति के इस सिद्धांत को स्वीकार करना ही पड़ेगा—

सर्वेषांतु नामानि कर्माणि
च पृथक् पृथक्।
वेद श०देभ्यः एवादौ
पृथक् संस्थाश्च निर्ममे॥

अर्थात् संसार में लोगों ने वेद के अनुसरण पर ही विभिन्न व्यक्तियों और संस्थाओं का नामकरण किया गया है। इस दृष्टि से यदि वेद में आने वाले सुदास, दिवोदास अनु, पुरु, द्रह्यु, यदु, कुरु, भरत, वसिष्ठ, विश्वामित्र, भारद्वाज, जमदग्नि, कण्व, गंगा, यमुना, सरस्वती, असिक्नी, शतद्रु, परुष्णी, द्विषद्वती आदि नामों पर हम विचार करें तो ये नाम व्यक्ति वाचक न रह कर सामान्य संज्ञायें रह जाती हैं। आचार्य दयानन्द ही नहीं अपितु सायणादि भाष्यकारों ने भी 'नहुषा' का अर्थ 'मनुष्याः' और 'कण्व' का अर्थ मेधावी किया है। 'कण्व' आदि को विशेषण के रूप में प्रयुक्त किया जाकर उनके 'कण्वतम' जैसी **Supercative degree** के प्रयोग यह बताते हैं कि ये शब्द किसी व्यक्ति के सूचक नहीं हैं। अतः इस तथ्य को स्वीकार कर लेने के पश्चात ऋग्वेद के आधार पर इतिहास का जो भवन खड़ा किया गया है वह ताश के पत्तों की भांति गिर जाता है।

यदि राहुल जी पूर्वाग्रह और पक्षपात युक्त धारणाओं को छोड़ कर ऋग्वेद कालीन आर्यसमाज का सांस्कृतिक मूल्यांकन करते तो हमें कुछ भी आपत्ति नहीं होती। परन्तु हम तो यह जानते हैं कि उनका यह सम्पूर्ण प्रयास ही आर्यों के महान अतीत को क्षुद्र बताने और हमारे अरबों वर्षों के इतिहास की सीमा को कुछ शताब्दियों की परिधि में ही सीमित करने का षड्यन्त्र है। अपनी पुस्तक के प्रथम अध्याय में वे लिखते हैं—'हमारे इतिहास वेत्ता महाभारत काल की धारणा बनाकर इतिहास को हजारों साल पीछे ले जाने की कोशिश करते हैं। वस्तुतः आर्यों का भारत में प्रवेश ई-पू० १५०० से पहिले नहीं मालूम होता।' यह है राहुल जी का अनोखा काल निर्णय राहुल जी से तो वे पाश्चात्य विद्वान् ही अच्छे हैं जो वेदकाल को ईसा से २५००-३००० वर्ष पूर्व मानते हैं। परन्तु हमारा निवेदन है कि प्रसिद्ध इतिहासज्ञ पं. भगवद्दत्तजी ने आर्य इतिहास की प्राचीनता को सिद्ध करने के लिए जो प्रमाण अपने भारत वर्ष के बृहद् इतिहास में प्रस्तुत किये हैं उनकी विद्यमानता में वेद के काल को इतना नवीन बतलाना सत्य का अपलाप करना है।

राहुल जी की अन्याय स्थापनायें भी ऐसी ही हैं। उनके लिए प्रमाण जुटाने का भरसक प्रयत्न करते हुए भी राहुल जी ने अधिकांश स्थानों पर केवल अंधेरे में ही टटोलने का प्रयास किया है। उन्हें अपने कथन पर स्वयं भी विश्वास नहीं है। अतः वे सम्भावनाओं से ही अधिकतर काम लेते हैं। जिस प्रकार भारतीय विद्या भवन के तत्वावधान में प्रकाशित **Vedic Age** की यथार्थ समीक्षा करते हुये आर्यजगत् के मूर्धन्य विद्वान पं० धर्मदेव जी विद्या मार्तण्ड ने उसे **a book of probabitities** (सम्भावनाओं की पुस्तक) कहा है, राहुल जी की प्रस्तुत पुस्तक भी उसी कोटि की है।

राहुल जी ने आर्यो को गडरिये, भेड़ बकरी पालने वाले, घुमक्कड़ और नागरिक जीवन से अनभिज्ञ बताया है। साथ ही वे सिन्ध घाटी में निवास करने वाली द्राविड़ जातियों को उनसे कहीं अधिक सभ्य, सुसंस्कृत तथा नागरिक सभ्यता का अनुयायी मानते हैं। परन्तु जिस आर्य जाति ने नासदीय सूक्त जैसे दार्शनिक सिद्धान्त का प्रचार किया वह सामाजिक दृष्टि से अविकासित थी यह कथन विडम्बना के अतिरिक्त और क्या हो सकता है।

आर्यों के खाद्य का विचार करते हुए उन्होंने आर्यों को मांस भक्षक ही नहीं अपितु गोमांस भक्षक सिद्ध किया है परन्तु प्रमाण दिये हैं बृहदारण्यक उपनिषद् और मज्झिम निकाय के। यदि ब्राह्मणों के विरोधी बौद्ध आर्यों को गोमांस भक्षक बतायें तो आश्चर्य ही क्या? परन्तु ऐसे पक्षपात पूर्ण वचनों का क्या प्रमाण हो सकता है? इसी प्रकार आर्यों के 'सोम' को राहुल जी ने भंग का नशा बताया है। वैदिक सोम के पीछे जो आध्यात्मिक भावना है उसे न समझ कर यदि कोई इस प्रकार का अनर्थ करें तो वह असम्य ही ही समझा जायगा।

ऋग्वेद के मंत्रों में जो वैज्ञानिक और आलंकारिक रहस्य भरे पड़े हैं उन्हें न समझकर शम्बर, वृत्र, आदि तथाकथित असुरों के इन्द्र से युद्धों की कल्पना करना और इन्हीं निर्बल आधारों पर ऋग्वेदिक आर्यों के राजनैतिक इतिहास की योजना करना बालू के आधार पर सुदृढ़ भवन बनाने के तुल्य ही है। सम्भावनाओं से तो यहां भी राहुल जी का पीछा नहीं छूटा है। सम्पूर्ण पुस्तक के पीछे लेखक का पूर्वग्रह युक्त दृष्टिकोण निहित है। यह तो उसी से स्पष्ट हो जाता कि आर्यों के धर्म की चर्चा करते समय लेखक ने वैदिक एकेश्वरवाद के प्रतिपादक उस प्रसिद्ध मन्त्र की सर्वथा अवहेलना ही की है जो 'एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति' की घोषणा करता है। इसी प्रकार विभिन्न मन्त्रों के आधार पर देवताओं का जो स्वरूप प्रतिपादित किया गया है वह भी पूर्णतया अवास्तविक और विवादास्पद है। यह कहना कि वैदिक

(शेष पृष्ठ ५ पर)

महात्मा हंसराज जन्म.....

(पृष्ठ ६ का शेष)

एक भयंकर बन्धन को—जिससे सारा संसार बन्धा है काट दिया।

डी. ए. वी. कालिज के प्रिंसिपल पद से मुक्त होने के लिए लिखे उन के पत्र में उनकी नम्रता का भाव बहुत स्पष्ट है। विद्यार्थियों द्वारा दिए मान पत्र के उत्तर में उन्होंने बतलाया कि प्रिंसिपल पद त्याग करने पर अपने प्रण की पूर्ति में सहायक अपने भाई, भावज, राय बहादुर ला० मुवराज, भगत ईश्वर-दास, ला. द्वारकादास तथा ला० लाजपतराय के चरणों को छूकर उन्होंने उनका धन्यवाद किया।

जिन लोगों के कारण महात्मा हंसराज ने हुए उनके मनों में सम्भवतः महात्मा जी के लिए कम सम्मान का भाव न था। पर 'अहम्' का त्याग कोई विरला कर सकता है।

धन के मोह का और अहम् का अभिमान का त्याग जिसने कर दिखाया सच्चे अर्थों में वही महात्मा है। जन सेवा का कार्य बिना इन बन्धनों के काटे नहीं होता। यदि बन्धन न कटें तो जनसेवा अपनी सेवा हो जाती है, परार्थ न होकर स्वार्थ हो जाता है। आज देश में चारों ओर यही हो रहा है। देश के सेवक अमीर हो रहे हैं और जनता दुःखी और दरिद्र हो रही है। सर्वत्यागी दयानन्द के महान् शिष्य त्याग तथा तपस्या की मूर्ति महात्मा हंसराज की शताब्दी हमें अवश्य कुछ न कुछ प्रेरणा देगी, हमारे सामाजिक जीवन को पवित्र करेगी।

—सत्यदेव मन्त्री सभा

राहुल का ग्रन्थ—

(पृष्ठ ४ का शेष)

आर्य परलोक और पुनर्जन्म को नहीं मानते थे, वेद के दर्शन से अपनी अनभिज्ञता प्रकट करना है। इस प्रकार ६०० पृष्ठों का यह बृहद् पोथा ऋग्वेद के समाज का एक भ्रांत चित्र ही उपस्थित करता है क्योंकि जब तक पूर्वाग्रह और पक्षपात से मुक्त होकर कोई भी व्यक्ति निष्पक्ष दृष्टि से किसी धर्म ग्रन्थ की आलोचना करता है तभी उस ग्रन्थ के साथ न्याय कर सकता है। परिशिष्ट रूप में लेखक ने लगभग १।। हजार ऋचाओं का हिन्दी भाषार्थ भी दिया है जिनके प्रमाण उसने स्थान २ पर दिये हैं। परन्तु वैदिक ऋचाओं का यह अनुवाद सर्वथा भ्रष्ट, दोषपूर्ण तथा मक्षिका स्थाने मक्षिका वाला है। अतः इस अनुवाद को देखकर कोई व्यक्ति यह नहीं कह सकता कि यह ऋग्वेद ही संसार का आदि धर्म ग्रन्थ है जिसका प्रशस्ति पाठ सभी पौरस्त्य और पाश्चात्य मनीषियों ने किया है तथा जिसके लिये मैक्समूलर को यह लिखना पड़ा—

यावत्स्थास्यन्ति गिरयः
सरिताश्च महीतले।
तावद् ऋग्वेद महिमा
लोकेषु प्रचरिष्यति॥

जन्म शताब्दी धन राशि

(पृष्ठ ८ का शेष)

आर्यसमाज आदर्शनगर	३७)
आर्यसमाज गोविन्दगढ़ जालंधर	३०)
आर्यसमाज न्यू रेलवे कालोनी जालन्धर	२६)
श्री निरञ्जन दास जी	१०)
,, वैद्य नरदेव जी	५)
मारफत पं. वजीरचन्द्र जी ऊना	१६२)
पं. अमरसिंह जी अंबाला द्वारा	३३१)
श्री मेलाराम जी द्वारा (जम्मू प्रांत से)	२४६)
,, पं० त्रिलोकचन्द्र जी शास्त्री बी० ए० द्वारा	७६२)
,, प्रिं० देवराजजी गुप्ता(हिसार)	१०१)
पं० दयाराम जी शास्त्री एम०ए० (देहली)	१००)

प्रादेशिक सभा की ओर से दानी महानुभावों का हार्दिक धन्यवाद। हमें पूर्ण आशा है कि इसी प्रकार तीव्रगति से धन संग्रह का कार्य चलता रहेगा। सत्यदेव मंत्री

क्या प्रदर्शन ही जीवन है ?

(ले०—श्री सुन्दर लाल जी वोहरा जोधपुर)

(गतांक से आगे)

रुपया बहा दिया जाता है। ग्रामोफोन के रिकार्ड बजा-बजा कर सारी बस्ती की नींद हराम कर दी जाती है; विद्यार्थियों को अपने अध्ययन से विरक्त किया जाता है. वासना-प्रधान गीतों को गुञ्जा-गुञ्जा कर समस्त गांव अथवा बस्ती के वातावरण को उत्तेजित किया जाता है। यज्ञोपवीत जैसे पवित्र संस्कार के अवसर पर भी नाच-गान का कार्यक्रम तो रहता ही है। अफीम, चाय, सिगरेट और शराब के बिना शादी-कार्य ही सूना है। हमें हर कार्य में 'लुत्फ' चाहिए। घोड़े पर चढ़कर, अंग्रेजी बैण्ड व तवायफों के के साथ, जब तक दूल्हा गांव अथवा शहर की गलियों से न गुजरे तब तक शादी का मजा ही किरकिरा है। एक दूसरे को नीचा दिखाने की इस अन्धा धुन्ध दौड़ में आज न जाने किस-किस तरह के कुत्सित उपायों द्वारा धन का संग्रह किया जाता है। सही अर्थ में आज राष्ट्र में व्याप्त रिश्वतखोरी काला बाजार व गबन के सारे दुष्कर्मों के पीछे हमारी प्रदर्शन की प्रवृत्ति ही प्रधान है।

आज सम्पूर्ण राष्ट्र नट बन गया है और तो और, हम आत्म-कल्याण के कार्यों को भी 'अप-टू डेट' बनाना चाहते हैं। वह कीर्तन ही 'नीरस' है जिसमें लाउडस्पीकर ग्रामोफोन न रखा हुआ हो। फिल्मी गानों की तर्ज में जब तक भजनों का आलाप न किया जाए तब तक 'जागरण' का 'जमना' ही कठिन है। लोग कीर्तन-स्थल पर इस तरह बन-ठन कर जाते हैं मानो किसी नर्तकी का नाच देखने जा रहे हों ! मुंहमांगा पारिश्रमिक देकर गवैयों को बुलाया जाता है। सही शब्दों में आज हमारे कीर्तन आदि के पुनीत कार्यक्रम भगवद्भजन के साधन न रह कर गान-विद्या की प्रतियोगिता के दंगल बन कर रह गये हैं।

इस 'विण्डो ड्रेसिंग' और 'वैनिटी शो' की कुत्सित व्याधि हमारे शिक्षण-संस्थानों में तो असाध्य ही होती जा रही है। जो शिक्षण-संस्थान अपने 'वार्षिक दिवस' अथवा 'सांस्कृतिक कार्यक्रम' पर अधिक से अधिक पैसा खर्च कर सकता है, अधिक से अधिक आधुनिक कवियों व सङ्गीतज्ञों को निमन्त्रित कर सकता है; षोडशवर्षीय किशोरियों को सभा-मंच पर नचा कर दर्शकों से तालियां बजवा सकता है, वही संस्थान आज की परिभाषा में अधिक उन्नत व आधुनिक (**advanced**) है।

हम जनसेवा करना चाहते हैं लेकिन संवाद दाताओं और फोटोग्राफरों की सेना को साथ में लेकर। जलाश्रय बन कर तैयार है; विद्यालय का भवन बन चुका है; चिकित्सालय में औषधियां और डाक्टर आ चुके हैं, लेकिन 'उद्घाटन' के अभाव में ये चमगादड़ों के आवास-स्थल ही बने रहेंगे। प्रति वर्ष इन उद्घाटन-समारोहों पर लाखों रुपया पानी की तरह बहाया जाता है। सड़कें तोड़ी जाती हैं, तोरण-द्वार बनाये जाते हैं। जिस संस्था अथवा स्थल का उद्घाटन करना होता है वहां एक सप्ताह तो 'तैयारियां' करने में ही लग जाता है। इसके उपरान्त भी राष्ट्र की आर्थिक स्थिति स्वस्थ नहीं है।

आज घर घर में वक्ता और नेता भरे पड़े हैं। हरेक व्यक्ति बोलने के लिये उतावला है। (क्रमशः)

महात्मा हंसराज जन्म शताब्दी समारोह प्रोग्राम को अन्तिम रूप

१७ अप्रैल को विराट जलूस : देशभर के नेता भाग लेंगे

जालन्धर ४ अप्रैल—(स्टाफ रिपोर्टर से) डी० ए० वी० आन्दोलन के प्रवर्तक महात्मा हंसराज के जन्म शताब्दी समारोह के कार्यक्रमों को अंतिम रूप दे दिया गया है। समारोह ११ अप्रैल से १६ अप्रैल तक चलेगा और इस दौरान बड़े-बड़े विद्वानों के व्याख्यान होंगे। १७ अप्रैल को जालन्धर में एक विराट जलूस निकाला जाएगा जिस में पंजाब भर के लोग सम्मिलित होंगे।

११ अप्रैल से ही साईंदास ऐंगलो संस्कृत हायर सैकेंडरी स्कूल अड्डा कपूरथला के प्रांगन में रोज प्रात: ६ से ८ बजे तक हवन यज्ञ हुआ करेगा और ८ से ९ बजे तक प्रवचन। हवन यज्ञ की १६ अप्रैल को पूर्णाहुति डाली जाएगी।

११ अप्रैल को हंसराज-स्मारक भाषण माला आरम्भ होगी। सभी भाषण सायं छ बजे ऐंगलो स्कूल के हाल में हुआ करेंगे। विस्तृत कार्यक्रम इस प्रकार है—११ अप्रैल— आचार्य हजारी प्रसादजी द्विवेदी, १२ अप्रैल—श्री मोरार जी देसाई, १४ अप्रैल—कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के उपकुलपति श्री सूर्यभानु १५ अप्रैल —प्रो० अब्दुल मजीदखान और १६ अप्रैल—डा० अनूपसिंह संसद सदस्य भाषण देंगे। १७ अप्रैल को भाषण माला का अंतिम भाषण उज्जैन विश्वविद्यालय के उपकुलपति डा० गोवर्धनलाल दत्त का होगा जो प्रात: साढ़े नौ बजे डी. ए. वी. कालेज जालन्धर के हाल में होगा। १७ अप्रैल को ही दोपहर बाद अढ़ाई बजे साईंदास ऐंगलो स्कूल के प्रांगण में ध्वजारोहण के बाद वहां से एक विराट जलूस शुरू होगा जो माईहीरांगेट, खिंगरांगेट, चौक पंजपीर, मिलाप चौक, नेहरू-गार्डेन्ज और जी. टी. रोड, तथा अड्डा बस्तियां से होता हुआ स्कूल में जाकर खत्म होगा।

मुख्य समारोह १८ अप्रैल को सायं पांच बजे शुरू होगा जिसमें केन्द्रीय शिक्षा उपमन्त्री श्री भक्त दर्शन गुरु गोलवल्कर पंजाब के मुख्य मन्त्री श्री रामकिशन, श्री सूर्यभानु जस्टिस मेहरचन्द महाजन ज्ञानी गुरुमुखसिंह मुसाफिर, श्री गुरदयालसिंह ढिल्लों प्रोफैसर दीवानचन्द शर्मा प्रिन्सिपल दीवानचन्द तथा कई अन्य विद्वान भाग लेंगे।

१६ अप्रैल को दोपहर बाद तीन बजे सम्मेलन होगा इसी दिन रात को ऐंगलो स्कूल में एक कवि सम्मेलन होगा जिसमें सर्वश्री देवराज 'दिनेश', चिरंजीत, गिरिजा कुमार माथुर, पद्मसिंह शर्मा कमलेश, जयनाथ नलिन, उदयभानु हंस, सुदर्शन बाहरी, शकुन्तला वास्तव, नन्दकिशोर रजनीश, श्यामाचरण श्री वास्तव, कस्तूरी कश्यप, खुशीराम वशिष्ठ, त्रिलोकी नाथ रंजन और विजय निर्बाध के भाग लेने की आशा है।

महात्मा हंसराज जन्म शताब्दी—४

महात्मा हंसराज जी के जीवन के दो महत्वपूर्ण पहलुओं पर पहले लेखों में प्रकाश डाला गया। उन्होंने आर्यसमाज के क्षेत्र में भिन्न २ स्तर के लोगों को लाकर किस प्रकार संगठित किया तथा आर्यसमाज को बलवान् किया, एक रूप यह है। शुद्धि और अछूतोद्धार इस ही कार्य के भाग हैं। उनके जीवन का दूसरा मुख्य कार्य शिक्षा प्रचार द्वारा आर्यसमाज को और भारतीय वैदिक आदर्श तथा परम्पराओं को बलवान करना था। उनके जीवन का यौवन का भाग इस काम के अर्पित हुआ। उन्होंने एक तरह से अपने जीवन के दोनों भागों को यथार्थ में—परोपकार में लगाया, यौवन में शिक्षा द्वारा आर्यसमाज का तथा वेद प्रचार का कार्य किया तथा ४८ वर्ष की आयु से लेकर मृत्यु पर्यन्त आर्य-प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा को बलवान् बनाकर, इसके द्वारा तथा और भी अनेक संस्थाओं द्वारा देश तथा जाति का कार्य किया।

इन सब कार्यों के पीछे एक बहुत बलवान् व्यक्तित्व होनी चाहिए। बहुत प्रबल इच्छा शक्ति होनी चाहिए। शरीर और मन में बहुत सहने की सामर्थ्य होना चाहिए। और इन सब के साथ-साथ स्वभाव में कोमलता और दृढ़ता का वह मेल होना चाहिए जिसके विषय में कवियों ने कहा है :—

वज्रादपि कठोराणि
मृदूनि कुसुमादपि।

महापुरुषों के मन फूल से भी कोमल तथा वज्र से भी कठोर होते हैं।

महात्मा हंसराज का व्यक्तित्व एक बलवान और प्रभावी व्यक्तित्व था। ऐसा व्यक्तित्व बिना लगातार साधना के नहीं बन पाता। जीवन में ये विलक्षण गुण अपने आप ही नहीं आ जाते। प्राचीन साधना के विचारों को लें तो हम महात्मा हंसराज को एक उच्चकोटि का कर्मयोगी कहेंगे। वे बन नहीं गए, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान के विशेष अभ्यासी नहीं बने। संध्या तथा जाप तो उनके जीवन के अंग थे—जो हर सद् गृहस्थ के होने चाहिएं। पर फिर भी वे एक ऐसी शान्ति, स्थिर तथा स्पष्ट, प्रसार गुण सम्पन्न मनोवृत्ति को प्राप्त कर पाए जिसके लिए तपस्या और योग किया जाता है। यह उनके जीवन की विशेषता है!

भगवान् कृष्ण ने गीता में कहा है :—

प्रसादे सर्व दु:खानां
हानि रस्यो पजायते
प्रसन्न चेतसो ह्याशु:
बुद्धि:पर्यव तिष्ठति॥

अर्थात मन के निर्मल होने पर दु:ख का नाश होता है और बुद्धि स्थिर होती है।

बुद्धि की स्थिरता और मन की निर्मलता से मानव जीवन की अमूल्य संपत्तियां महात्मा हंसराज को प्राप्त थीं। इसी से हम उन्हें सच्चे अर्थों में महात्मा कह सकते हैं।

ये गुण उनकी तपस्या का परिणाम थे। धन का मोह उन्होंने प्रारम्भ-यौवन से ही त्याग दिया। एक माया का बंधन कट गया। पर यह बंधन आसानी से नहीं कटा होगा। परिवार हीन अकेले साधु के लिए भी धन का मोह छोड़ना कठिन है। पर पुत्र तथा पुत्रियों वाले गृहस्थ के लिए तो जानबूझ कर गरीबी को निमन्त्रण देना भीषण परीक्षा में से गुजरना है—तपस्या है। इस तपस्या ने उनके

(शेष पृष्ठ ५ पर)

कर्णरन्ध्रों के बीच नितान्त प्रवेश करते हुए शब्दों का हमारे हृदय पर गहरा प्रभाव पड़ता है चाहे वह अच्छा हो अथवा बुरा। उच्च विचारों की प्राप्ति के लिये उत्कृष्ट विचारों का श्रवण आवश्यक है। जिन को ऐसा सौभाग्य उपलब्ध नहीं है उनके कानों की उपमा 'श्रवण रन्ध्र अहि भवन समाना' दी गयी है। अहि सांप को कहते हैं। कहने का भाव विषैले पदार्थों से है।

व्यवहारिक जीवन में बोलने की अपेक्षा सुनना कठिन है। सुनने वाला बुद्धिमान ही होता है और बोलने वाले के भाग्य में प्रायश्चित्त बदा रहता है। हम अधिक सुन सकें, इसलिये दो कान मिले और कम बोलते को एक जिह्वा मिली। सुन करके ठीक निर्णय देना, चारित्रिक प्रबलता का प्रतीक है। ऐसे स्वभाव को बनाने में हमें नितान्त प्रयत्नशील रहना होगा। थोड़ी अप्रसन्नता शत्रुता अवश्य पल्ले पड़ती है। किन्तु नैतिकता के बल के आधार पर जिसे न्याय की प्राप्ति होती है उसका मन तो खिलखिला उठता है। ऐसे ही चरित्रवान व्यक्तियों

विचार तरंग [९]

ले०-श्री राममूर्ति कालिया, एम. ए. मालवीय नगर, नई देहली

की दशा का जो न्याय लुटाते हैं बखान करते हुए कहा गया है कि 'अपने भी खफा मुझ से हैं, बेगाने भी नाखुश'।

विद्वानों का कहना है '**Hear both sides**' अर्थात् दोनों ओर की सुनो' वस्तुतः बात का स्पष्टीकरण तो तभी होता है। अपनी-अपनी तो सभी हांक देते हैं। गृहस्थ की अनेक समस्याओं का हल हो सकता है, यदि बातें दोनों पक्षों की सुनी जायें। एक की सुन कर निर्णय दे देना बुद्धिमत्ता नहीं है, उस से समस्या पेचीदा हो जाती है और निर्णय देने वाले को कुछ समय बाद बुरी तरह पछताना पड़ता है।

किसी की न सुनना शायद पाप है। सुन करके अनसुनी करना अन्याय है और उस पर खिल्ली उड़ाना घोर उद्दण्डता है। यह मत समझें कि दुर्बल की सुनाई नहीं होती। संसार की एक प्रबलतम शक्ति है जो सांसों की धड़कन से भी, आंख की पलक की झपक से भी अधिक नीरव ध्वनि को सुन लेती है। इसी शक्ति के लिये तो कहा गया है—

'बिनु पद चलइ सुनहि बिनु काना, कर बिनु करम करहिं विधि नाना।'

कबीर दास ने तो घोषणापूर्ण शब्दों में कहा है, 'च्यूंटि के पग नूपर बाजे, सो भी साहब सुनता है।'

भावगीत—टीकोज़ी

(डा० देवव्रत जी महाजन, अमृतसर)

चाय मेज पर रखी थी,
टीकोज़ी से ढांप दी गई,
ठण्डी न हो जाये कहीं,
उफन का धुआं दबा रहे।

मेरे अन्दर भी तूफान उठते हैं,
फफकारते हैं...... ....,
संसार मुझे बहुत शांत जानता है,
यह सब टीकोज़ी की बदौलत है।

मेरी टीकोज़ी बहुत बारीक है,
किसी को उनका आभास भी नहीं होता,
मैं उसकी रक्षा में सर्वस्व लगा के बैठा हूं,
जी ने की इच्छा के बिना भी अभी और जो जीना है।

अब तङ्ग आ गया हूं...........
इस कृत्रिम दिखावे के जीवन से,
मालूम नहीं अभी कब तक ऐसे चलना होगा,
दम घुटा घुटा सा है शरीर टूटा-टूटा।

डरता रहता हूं—टीकोजी
मेरे पहले फट न जाये कहीं,
एक बार फटी..............
गरीब की किसी चादर की तरह,
सिल न पायेंगी,
धागे भी तो उलझे हैं।

उफ, कितनी तेज़ उफन है आज,
टीकोजी चढ़ी है,
कौन जान सकता है अन्दर क्या है?
क्यों है ?
कब तक जीना होगा मुझे !

गोहाना में प्रचार

गोहाना काठ मण्डी जि० रोहतक में आर्य प्रादेशिक सभा के श्री प्रभुदयाल जी आर्य प्रभाकर, हरिश्चन्द्र, जीतराम की मण्डली ने प्रचार किया जनता पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा लोगों ने महात्मा हंसराज जयन्ती के लिये १४९) रु० दान दिया। इस शुभ कार्य में श्री पं० बद्लुराम जी विकल और श्री मन्त्री रामप्रकाश जी ने पूर्ण रूप से भाग लेकर चन्दा करवाया है। आर्य प्रादेशिक सभा इन दोनों सज्जनों का धन्यवाद करती है।

आर्य समाज ततारपुर के समाचार

आर्य समाज ततारपुर डा० बाबूगढ़ छावनी जिला मेरठ(उ०प्र०) का प्रथम वार्षिकोत्सव ता० १३-१४ १५ मार्च को बड़ी धूमधाम से सम्पन्न हुआ इस शुभ अवसर पर आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वानों के भाषण व भजन होते रहे।

होली पर्व

अगले दिन ता० १६ मार्च को सायंकाल एक नव-निर्मित विशाल यज्ञकुण्ड में होली पर्व का यज्ञ सोल्लास सम्पन्न हुआ। ग्राम की जनता ने सोत्साह भाग लिया।

निर्वाचन

प्रधान—श्री गंगा सहाय जी
उपप्रधान—श्री ओंकारसिंह जी
मन्त्री—श्री भीकम सिंह जी
उपमन्त्री—श्री महेन्द्र पालसिंह जी
कोषाध्यक्ष—श्री प० ओमप्रकाश जी पटवारी
पुस्तकाध्यक्ष—श्री रामपाल जी
आय-व्यय निरीक्षक—श्री रामरिच्छपाल शर्मा अध्यापक।

इसके अतिरिक्त ६ अन्तरंग सभा के सदस्य निर्वाचित हुए।

भीकमसिंह मंत्री समाज

आर्य विद्या सभा, चित्रगुप्त रोड, नई दिल्ली

धर्म-शिक्षा पुरस्कार प्रतियोगिता, परीक्षा १९६४

इस वर्ष यह परीक्षा ४ दिसम्बर १९६४ को हुई। छठी से ११वीं श्रेणी तक १८५८ परीक्षार्थियों के प्रवेश पत्र प्राप्त हुए। १३१८ विद्यार्थी सफल रहे और परिणाम ७२ प्रतिशत रहा।

इस परीक्षा के परिणामस्वरूप निम्नलिखित छात्रों ने पुरस्कार प्राप्त किये।

रोल नं०	नाम छात्र व संस्था	स्थान	पारितोषिक राशि
	छठी कक्षा		
४६	सर्वजीतकौर, गढ़दिवाला	प्रथम	२० रु.
५०	कैलाशचन्द्र ,,	दूसरा	१६ ,,
११०	कीरतीलाल, दसूहा	तीसरा	१६ ,,
१७५	राजरानी, कादियां	चौथा	१४ ,,
४८	सुरेन्द्रपाल, गढ़दीवाला	पांचवां	१४ ,,
[illegible]	पवनकुमार ,,	छटा	१२ ,,
१८३	शिमला, साईं दास कन्या, जालन्धर	सातवां	१२ ,,
३७२	शशिप्रभा, कन्या स्कूल यमुनानगर	आठवां	१० ,,
	सातवीं कक्षा		
५१८	ओमेन्द्रपाल साईं दास, जालन्धर	प्रथम	२० ,,
६०१	महेन्द्रपाल ,,	दूसरा	१६ ,,
५९९	मदनमोहन ,,	तीसरा	१६ ,,
५१६	अशोक कुमार साईं दास स्कूल जालन्धर	चौथा	१४ ,,
५९७	अशोक कुमार ,,	पांचवां	१४ ,,
६७०	विमलादेवी बेदकौर गर्ल्ज़ कादियां	छटा	१२ ,,
६९९	तृप्त जैन कन्यास्कूल पट्टी	सातवां	१२ ,,
८९८	महेन्द्रकुमार चण्डीगढ़	आठवां	१० ,,
	आठवी कक्षा		
९०५	राजेन्द्रकुमार, अम्बाला कैंट	प्रथम	२० ,,
९०८	अशोक कुमार ,,	दूसरा	१६ ,,
९०४	गुरनामसिंह ,,	तीसरा	१६ ,,
१०४४	अशोककुमार, कलानौर	पांचवां	१४ ,,
१००२	रामजीदास, साईं दास, जालन्धर	चौथा	१४ ,,
१००४	राजीवचन्द्र ,, ,,	छटा	१२ ,,
९९१	दिलीपकुमार, शिमला	सातवां	१२ ,,
१०७२	शिवरानी कन्या स्कूल कादियां	आठवां	१० ,,
	नवमी कक्षा		
१४०१	सीताराम साईं दास जालन्धर	प्रथम	२४ ,,
१३९९	अशोक नागपाल...... ,,	दूसरा	२० ,,
१५३३	ऊषा ग्रोवर, पानीपत	तीसरा	२० ,,
१४६५	सुदेशकुमारी कादियां	चौथा	१६ ,,
१३५०	सुखराम, गढ़दीवाला	पांचवां	१६ ,,
१३५७	परमेश्वर स्वरूप भटिन्डा	छठा	१२ ,,
१४६१	सुरेन्द्रबाला कादियां	सातवां	१२ ,,
१५५०	केवलकृष्ण नकोदर	आठवां	१० ,,
	दसवीं कक्षा		
२०२२	प्रमिला, सरस्वती स्कूल, अमृतसर	प्रथम	२४ ,,
१७०५	अरुणकुमार, अम्बाला कैन्ट	दूसरा	२० ,,
२०२१	शशिबाला, सरस्वती कन्या, अमृतसर	तीसरा	२० ,,
२००६	रामसिंह, हिसार	चौथा	१६ ,,
१७७०	गिरधर सुमन, मंगवाल	पांचवां	१६ ,,
१७०२	पवनकुमार, अंबाला कैन्ट	छटा	१२ ,,
१७४०	नरेश, फिरोजपुरकैन्ट	सातवां	१२ ,,
१७४६	विजयकुमार, गढ़दीवाला	आठवां	१० ,,
	ग्यारहवीं कक्षा		
२२००	राजेन्द्रसिंह, चण्डीगढ़	प्रथम	२५ ,,
२१४१	सुधीररत्न, साईं दास जालन्धर	दूसरा	२० ,,
२१९६	सुभाष महाजन, चण्डीगढ़	तीसरा	१५ ,,

देवराज महाजन
एजुकेशनल पड़ताजर

महात्मा हंसराज जन्मशताब्दी संग्रहीत धन राशि

श्री पं० ओम्प्रकाश जी आर्योपदेशक सभा द्वारा महात्मा हंसराज जी जन्मशताब्दी महोत्सव के लिए १७३३ रु. की राशि प्राप्त हुई। इस राशि में १६०० रुपये आर्य समाज लक्ष्मणसर के आर्य बन्धुओं तथा स्त्री समाज की महिलाओं के पुरुषार्थ से प्राप्त हुए हैं। आर्यसमाज लक्ष्मणसर अमृतसर तन, मन, धन से इस पुनीत कार्य में सहयोग प्रदान कर रहा है सभी दान-दाताओं का तथा आर्य समाज लक्ष्मणसर व आर्य स्त्री समाज लक्ष्मणसर अमृतसर का हम हार्दिक धन्यवाद करते हैं।

दान-दाताओं की सूची इस प्रकार है—

आर्य स्त्री समाज लक्ष्मणसर अमृतसर	१२५)
श्री ज्ञानचन्द जी रंग वाले	१५०)
,, रोशन लाल जी	१०१)
,, जगदीश राज जी	१०१)
,, प्राणनाथ जी	१०१)
,, दिवान चन्द चरणदास जी	५५)
,, धर्मपाल जी बी. ए.	५१)
,, सत्यपाल ओहरी	५१)
,, अमरनाथ लोहे वाले	१००)
,, बृजलाल घी वाले	३१)
,, तिलकराज जी	५१)
,, फकीरचन्द जी रंग वाले	३५)
,, सत्यपाल इन्द्रपाल जी	३०)
,, जगन्नाथ दरियां वाले	३०)
,, कुन्दनलाल जी	२५)
,, मदन लाल जी	२५)
,, ओम्प्रकाश जी द्वारा	९६)
,, जुगल किशोर जी द्वारा	१००)
,, मदन गोपाल जी द्वारा	२५)
,, गिरधारी लाल जी	२५)
,, हीरा लाल जी	२०)
,, मुनी लाल माघो लाल	२५)
,, ओम्प्रकाश सरदारी लाल	१०)
,, श्रीराम जी	१०)
,, पं० रुद्रदत्त जी	११)
,, म० गंगाराम जी	११)
,, सत्यपाल जी	११)
,, राजकुमार जी	११)
,, बनारसी दास जी	१५)
,, कुन्दनलाल जी	१५)
,, कंवलकृष्ण जी	११)
,, शोरीलाल जी	११)
,, दीवानचन्द द्वारा	१०)
,, रूपलाल जी	५)
,, पं० रामदेव जी शास्त्री	५)
,, मास्टर मेहरचन्द जी	५)
,, महादेव जी	५)
,, जागीरीमल जी	५)
आर्यसमाज नवां कोट अमृतसर द्वारा श्री मथुरादास जी प्रधान सभा	२५)

(शेष पृष्ठ ५ पर)

मुद्रक व प्रकाशक श्री सन्तोषराज जी आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर द्वारा वीर मिलाप प्रैस, मिलाप रोड जालन्धर से मुद्रित तथा आर्यजगत कार्यालय महात्मा हंसराज भवन निकट कचहरी जालन्धरशहर से प्रकाशित मासिक—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर

[आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधिसभा पंजाब जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd. No. P. 121

एक प्रति का मूल्य १३ नये पैसे 30.4.65 वार्षिक मूल्य ६ रुपये (जन्मशताब्दी के लेख अन्दर पढ़ें

वर्ष २५ अंक १९) १२ वैशाख २०२२ रविवार—दयानन्दाब्द १४०— २ मई १९६५ (तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

देवता का अमर सन्देश

वेद का धर्म सार्वभौमिक धर्म और इस के सिद्धांत अटल हैं, वेदों के पठन-पाठन और उन में दिए हुए उपदेशों को ग्रहण करने से आर्य-जाति की बुराइयां दूर होकर उसका कल्याण होगा। यह धर्म केवल आर्य जाति के लिए ही नहीं है। वेद प्रत्येक जाति का कल्याण चाहता है शर्त केवल यह है कि उनपर आचरण किया जाए। यह कल्याण वेदों के प्रकाश एवम् आचरण करने से ही हो सकता है।

महात्मा हंसराज जी

वेदामृत

ओ३म् आपो ज्योतीरसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरों स्वाहा ॥

अर्थ—हे प्रभो ! आप (आपः) सर्वत्र व्यापक हैं (ज्योतिः) ज्योतिःस्वरूप होकर सब को प्रकाश देने वाले हैं (रसः) परमरस हैं, रसीले हैं. जीवन के रस आप हैं आप (अमृतम्) अमृत हैं, अविनाशी हैं। आप (ब्रह्म) सब से महान हैं, सारे चराचर में रमे हुए हैं। आप (भूः) प्राणस्वरूप हैं अजन्मा हैं (भुवः) दुःख के हर्ता हैं तथा (स्वः) सुखों के वर्षक हैं सुखदाता हैं। (ओम्) आप सब के रक्षक पालक हैं। यह मेरी दी आहुति आपके अर्पण है। इसे स्वीकार करो।

भावः—हे मेरे देव ! आप क्या कुछ नहीं हैं ? हमारे जीवन के आधार बन कर क्या २ नहीं देते हो। भगवन् ! आप सर्वव्यापक हो। आप से छिप कर हम कहां जाकर पाप कर सकते हैं ? सर्वत्र रम कर आप सब का सब कुछ देखते हो। आप प्रकाश के भण्डार हो। हमारे जीवन के लिए मधुरतम रस हो। आपकी उपासना में, भक्ति में जो रस मिलता है, जिस सोम रस के प्याले का घूंट पीने को मिलता है। उस रस के सामने संसार के सारे रस सारे स्वाद फीके हैं, बेकार हैं। आप अमृत हैं। सदा एक रस हैं। जन्म बन्धन से परे हैं। सुखदायक व दुःखनाशक हैं दयालु देव ! हमारी ये सारी आहुतियां, वाणी व मन की स्तुतियां आपके ही अर्पण हैं—सं०

देवता की याद

स्वर्गीय तप और त्याग के प्रतीक महात्मा हंसराज जी के जीवन के बारे में आर्य जगत् के प्रसिद्ध सन्त महात्मा आनन्द स्वामी महाराज अपने सन्देश में कहते हैं—एक ही बार आग में छलांग लगा कर पतंगे की तरह जल मरना निस्सन्देह वीरता है—लेकिन आजन्म पग-पग पर अपनी भावनाओं, उमंगों और लालसाओं को रौंदते हुए रहना और अपने पथ से विचलित न होना सब से बढ़कर वीरता, पराक्रम और साहस की बात है।

महात्मा आनन्द स्वामी जी

अधिष्ठाता—श्री संतोषराज जी सम्पादक—त्रिलोक चन्द्र शास्त्री

जलूस प्रारम्भ हुआ। उस दिन पञ्जाब के भिन्न २ नगरों से नाना स्कूलों के बड़े सुन्दर बैंड भारी संख्या पहुंचे हुए थे। बाहिर से बड़ी संख्या में नर-नारी तथा युवक भी शामिल थे। जनता का ठाठें मारता हुआ सागर उमड़ता दिखाई देता था। अमृतसर, कांगड़ा, दौलतपुर, होश्यारपुर, कादियां, अलावलपुर, करतारपुर, नाभा, बस्ती नौ जालन्धर, लभूराम द्वाबा हाई स्कूल, बलाचौर, उरमुड़ टांडा, विक्टर H/S स्कूल, मेहरचन्द टैक्नीकल स्कूल, दयानन्द मोडल स्कूल दसूहा, साईंदास स्कूल आदि कितने ही डी. ए. वी. तथा आर्य स्कूलों के शानदार बैंडों को साथ लेकर उनके छात्र अपनी २ विशेष वेश में जलूस में शामिल थे। कई गवर्नमैंट स्कूल के बैंड भी थे। इस के साथ २ मेहरचन्द टैक्नीकल कालेज, साईंदास स्कूल व अन्य स्थानों की अद्‌भुत झांकियां भी साथ थीं जलूस में सजे हुए कई घोड़ों पर अपने सज्जन बैठे थे। ओ३म की पताका आगे २ लिये चल रहे थे। स्काऊटस भी थे। कई प्रकार की भजन-मडलियां थीं। वहां पर साईंदास स्कूल का युवक समाज, द्वाबा स्कूल भजन-मंडली आर्यसमाज लछमणसर अमृतसर, आर्यसमाज लोहगढ़, आर्यसमाज नवांकोट, आर्यसमाज श्रद्धानन्द बाजार, आर्य समाज लारेंसरोड, पुतलीघर अमृतसर, कालोना, केन्द्रीय समाज अमृतसर, केन्द्रीय समाज जालन्धर, माडल-टाऊन समाज, अलावलपुर, होश्यारपुर, आर्यसमाज जम्मू पुरानी मंडी, धर्मसाला समाज, डी. ए. वी. कालेज युवक समाज जालन्धर, आर्य समाज रोहतक, दयानन्द ब्राह्ममहाविद्यालय रोहतक, स्त्री समाज कादियां, बटाला समाज, आर्यसमाज माडलटाऊन जमुना नगर, महात्मा हंसराज स्कूल भटिंडा, बस्ती गुजां समाज, सिविल लाईन समाज, माडलहाऊस समाज आर्यसमाज लुधियाना, आर्यसमाज साम्बा जम्मू, आर्यसमाज धर्मसाला, आर्यसमाज नाभा, आर्यसमाज देहली, अम्बाला छावनी समाज, आर्यसमाज गुरदासपुर, चंडीगढ़, शामचुरासी समाज, सोनीपत समाज, आर्यसमाज टोहाना, नूरनखेड़ा, भंभेवा रोहतक।

आदि समाजों के सज्जन, आर्य प्रादेशिक सभा के सारे उपदेशक भजनीक महोदय एवं सारे अधिकारी कार्यकर्ता शामिल थे। हसराज महिला कालेज की मंडली बाहिर से आई हुई देवियां तथा जालन्धर की बहिने माताए भारी सख्या में साथ थीं। महात्मा आनन्दभिक्षु जी तथा स्वामी प्रणवानन्द जी सजे हुए ट्रक पर बनी हुई हवनशाला में बैठ कर यज्ञ करते जाते थे। डी. ए. वी. कालेज जालन्धर के माण्य प्राध्यापक, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने भी उन दिनों इस जयन्ती के लिए सभा कार्यालय बन्द कर दिया था। उस सभा के सज्जन भी वेद प्रचाराधिष्ठाता श्री पं. शांतिप्रकाश जी समेत जलूस में शामिल थे। जालन्धर नगर के हर कोने से मान्य प्रतिष्ठित सज्जन साथ थे। अनुपम दृश्य था।

उस विशाल मैदान में सर्वप्रथम वेद मन्त्रों के सम्मिलित उच्चारण के बाद हंसराज गर्ल्स स्कूल की छात्राओं ने मधुर गीत गाया। आर्य प्रादेशिक सभा के माननीय प्रधान श्रीयुत यश जी ने ओ३म् पताका लहराते हुए सारे जनसमाज को इसकी महत्ता तथा वर्तमान भौतिकवादी युग को आस्तिकता का सन्देश घर २ पहुंचाने के लिए प्रभावशाली उद्‌बोधन से भरा सन्देश दिया। भाव भरे शब्दों में दिल की बात कही कि आज सारे विश्व को इसी की बड़ी आवश्यकता है। आर्यसमाज का सबसे बड़ा सन्देश अस्तिकता की भावना का प्रसार करना है। सारा मैदान जनता से भरपूर था। केसरी पगड़ियों, दुपट्टों में भाई-बहिनों की बड़ी शोभा थी। आर्यसमाज अमर रहे, स्वामी दयानन्द की जय, महात्मा हंसराज की जय के गगनभेदी घोषों से सारा आकाश गूंज उठा। एक खुली जीप में सभा प्रधान श्री यश जी केसरी पगड़ी पहिरे खड़े थे। के दोनों ओर अपार नर-नारियों बच्चों बूढ़ों की भीड़ लगी हुई थी। जालन्धर के इतिहास में ऐसा अपूर्व दृश्य आंखों से कम ही देखने को मिला है। नेताओं के लिए स्वागती द्वार तो और भावना से बनते होंगे पर आर्यसमाज के इस देवता की शताब्दी के मौके पर लोगों ने दिल की श्रद्धा का जो परिचय दिया वह कभी नहीं भूलेगा। इन स्वागती द्वारों से जनता के दिल में आयसमाज तथा इसके महान् कार्यों के प्रति श्रद्धा का परिचय मिलता था। स्थान २ पर लोगों की ओर से जलूस पर पुष्पों की वर्षा हो रही थी। सभा प्रधान श्री यश जी की जीप पर तो पुष्प बरस ही रहे थे तथा उनके गले में आर्य समाज के इस काम को देख कर पुष्पों की मालाएं डाली जा रही थीं। सारा वातावरण ही हंसराजमय बन गया था। मिलाप भवन के सामने तो पुष्पों की वर्षा का दृश्य देखने वाला था। स्वर्गीय मास्टर नन्दलाल जी के घर द्वार के सामने ला० इन्द्रसेन परिवार के द्वारा पुष्पों व इलायची से सत्कार किया गया। महात्मा हंसराज अमर रहे के घोषों से नगर गूंज गया। आर्यसमाज के संगठन, शक्ति प्रेम की धूम मच गई। दयानन्द ब्राह्ममहाविद्यालय के ब्रह्मचारियों के गीत,

(शेष पृष्ठ ७ पर)

सम्पादकीय--

आर्य जगत्

वर्ष २५] रविवार २०२१, २ मई १९६५ [अंक १९

आर्यसमाज अमर रहे

गत दिनों जालन्धर नगर में जो जीवन, उत्साह, जोश धर्मभाव, श्रद्धा, संगठन का दृश्य महात्मा हंसराज जन्म शताब्दी के समारोह में ता. १७ से १९ अप्रैल तक आंखों से देखा, जो भाषण कानों से सुने तथा जो प्रसाद मन को प्राप्त हुआ, वह लेखनी का विषय नहीं, वाणी का तो बन ही नहीं सकता। आर्य प्रादेशिक सभा पंजाब जालन्धर की ओर से स्वर्गीय देवता महात्मा हंसराज जी की जन्मशती जिस शान से मनाई गई है, वह सदा के लिए इतिहास की स्मृति बन गई है। अखिल भारतीय स्तर में सभा के माननीय प्रधान श्री यश जी, अधिकारिगण, उपदेशक भजनीक विभाग हमारी सारी डी. ए. वी. आर्य संस्थाएं, आर्यसमाजें, युवक स्त्रीसमाजें तथा जनता मिलकर इस जयन्ती को इतना शानदार रूप दे सके हैं, वे सारे बधाई के पात्र हैं। उस देवता की जयन्ती उनके अनुरूप ही मनाई गई। हर प्रकार के नेता आए। समाज के भी तथा दूसरे भी। ऐसा प्रतीत होता था कि आर्यसमाज ने अपने महान् मिशन के कारण सबको एक वेदी पर लाकर मिला दिया है। उस महात्मा हंसराज जी के जीवन का ही यह प्रभाव था कि उनको श्रद्धांजलियां भेंट करने के लिए आर्यसमाज के नेता सरकार के बड़े-बड़े मन्त्री, शिक्षाशास्त्री, हिंदु-सिख मुसल्मान ईसाई मिलकर उस दिव्य महापुरुष के त्यागमय जीवन के सामने मस्तक झुकाने आ गए। आर्यसमाज को इस बात का गौरव है और इस बात का हमें मान होना चाहिए।

सारा पंजाब, स्कूल के बैंड, समाजें, युवक उमड़-उमड़ इस महापर्व में आए। ग्यारह तारीख से व्याख्यानमाला आरम्भ हो गई थी। १७ से जलूस आरम्भ होकर १९ रात को महान् कवि दरबार पर समाप्त हुआ। प्रातः विक्रमपुरा समाज में वेद पारायण यज्ञ चलता था। रात को व्याख्यान माला चलती। इस माला में आचार्य प्रसाद जी द्विवेदी, प्रिंसीपल सूर्यभानु जी वायस चांसलर, प्रो. अब्दुलमजीद खां, श्री मुरार जी देसाई, डा. अनूपसिंह जी, गोवर्धन लाल जी दत्त प्रधान दयानन्द कालेज कमेटी, प्रो. दीवानचन्द शर्मा एम. पी. आदि महानुभाव पधारे। इस समारोह में गुरुकुल कांगड़ी के आचार्य पं. प्रियव्रतजी की प्रधानता में वेद सम्मेलन भी एक विशेष समारोह था। धर्मप्रचार सम्मेलन व कवि दरबार भी हुआ श्रद्धांजलि सम्मेलन भी शानदार रहा। साईंदास स्कूल उन दिनों एक चहलपहल से भरा हुआ नगर दिखाई देता था। बाहिर से आने वालों ने तथा नगर की जनता ने श्रद्धा से भरे सहयोग में कमाल कर दिया। श्री यश जी प्रधान सभा या पं० सत्यदेव जी विद्यालंकार मन्त्री सभा को दिया गया सम्मान सारी सभा और सारे समाज को था। आर्य प्रतिनिधि सभा का कार्यालय भी इस मौके पर बन्द था। वेद प्रचाराधिष्ठाता पं० शान्तिप्रकाश जी के भी दो प्रभाव शाली भाषण हुए। शताब्दी समारोह में पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज तथा डा० मेहरचन्द जी महाजन का अभाव सबको रह-रह कर याद आता था। शताब्दी समारोह जालन्धर से आरम्भ हुआ है। नाना नगरों में मनाया जाकर नवम्बर में देहली में धूमधाम से इसकी पूर्णाहुति होगी।

—त्रिलोकचन्द्र

शक्ति हमारे अपने अन्दर है

आर्य प्रादेशिक सभा जालन्धर के महामन्त्री मधुर स्वभावी श्री पण्डित सत्यदेव जी विद्यालंकार एम. ए. ने धर्म-प्रचार सम्मेलन का कार्य संचालन करते हुए महात्मा हंसराज शताब्दी समारोह के अवसर पर अपना जो सारगर्भित, प्रभावशाली तथा अनुभवों पर आधारित भाषण दिया—उसे संक्षेप से जगत् के प्रेमी पाठकों की सेवा में पहुंचाने के लिए दिया जाता है—सं०

आज हम उस युग पुरुष महात्मा की जीवनशती मनाने के लिए एकत्रित हुए हैं। उनके दिव्य जीवन से अपने जीवन को आलोकित करने के लिए प्रयत्नशील हैं। वास्तव में यह बात है कि महात्माओं के कर्म ही उनकी जन्म शताब्दी मनवाते हैं। उनके सारे जीवन में लोक सेवा का इतना भाव भरा होता है, सबको ऊंचा उठाने का इतना परिश्रम होता है तथा यज्ञमय जीवन के पथ पर चलने का ऐसा उद्बोधन होता है कि आने वाला जनसमाज स्वयं ही ऐसे महापुरुषों का शताब्दीसमारोह मनाना अपना कर्तव्य समझता है। उनके कर्मों मे इतनी शक्ति व प्रेरणा भरी होती है कि प्रत्येक नर-नारी उनको अपने लिए पथ-प्रदर्शक समझकर उनके बताए मार्ग पर चलता है। उनके नाम में शक्ति होती है, काम में प्रेरणा भरी होती तथा जीवन में आदर्श की चेतना का समावेश होता है। उनके कार्य की प्रत्येक दिशा एक नया चमत्कार बताने वाली होती है। उनके उपकारी काम ही पर्व बन जाते हैं। ऐसे-ऐसे महापुरुषों के जन्म समारोहों से सारी जनता को भारी उत्साह मिलता है।

इस प्रकार के सम्मेलनों से आर्यसमाज के विशाल संगठन, परस्पर के कार्य और शक्ति का परिचय मिलता है। आर्यसमाज में काम करने वालों को भी इस समारोह के शानदार अवसर पर स्वयं अपने महान् मिशन की पूर्ति की स्फूर्ति मिला करती है। अपने जीवन व प्रचार कार्य के विराट् स्वरूप के दर्शन होते हैं। इस रूप में ऐसे ऐसे समारोह आने वालों में उत्साह उल्लास, कार्य-कुशलता की भावना भर दिया करते हैं। शताब्दी का समारोह तो अभी आरम्भ हुआ है। जम्मू, अमृतसर, हिसार, चण्डीगढ़ अम्बाला, जमनानगर तथा देहली आदि स्थानों पर इस प्रकार के समारोह मनाए जाएंगे। इस बात की प्रसन्नता है कि जनता में अपने महापुरुषों के लिए भारी उत्साह है। लाहौर में तो आर्यसमाज की शक्ति का रूप देखा था पर क्वेटा जैसे बलोचों पठानों से भरे प्रान्त में भी आर्य-

(शेष पृष्ठ ६ पर)

महात्मा हंसराज जन्मशताब्दी के समारोह में वेद सम्मेलन एक विशेष महत्वपूर्ण आयोजन था। ता० १८ अप्रैल रविवार को गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार के माननीय तथा वेदों के धुरन्धर विद्वान आचार्य प्रियव्रत जी वेदालंकार की प्रधानता में यह वेदसम्मेलन आरम्भ हुआ। इस में आर्यसमाजों के सज्जन एवं जनता बड़ी संख्या में उपस्थित थी। आचार्य जी का भाषण बड़ा गम्भीर, खोजपूर्ण, मार्मिक तथा चेतना दायक था—अपने भाषण में आप ने कहा—

वेद विश्व के लिए कामधेनु और कल्पलता का रूप हैं

महात्मा हंसराज जी धर्म शिक्षा स्वयं पढ़ाते थे

आचार्य प्रियव्रत जी गुरुकुल कांगड़ी का प्रवचन

पूज्य महात्मा हंसराज जी विरले महापुरुषों में थे, जो कि रोज २ नहीं आया करते। महात्मा जी ने शिक्षा के क्षेत्र में जीवन बिताते हुए जो सेवा की वह सदा स्वर्णाक्षरों में लिखी व स्मरण की जाएगी। वह चोटी के नेताओं में से एक थे जिन्होंने वैदिक दुंदुभि बजाई, जिन पर स्वामी जी के चुम्बकीय जीवन ने सीधा प्रभाव डाला। अपना सारा जीवन ही सेवा में समर्पित कर दिया। महात्मा जी ऋषि के मतवाले थे। जिन लोगों ने अपने को सर्वात्मना ऋषि के कामों में होम कर दिया महात्मा हंसराज उन में से थे। उन्होंने अपना जीवन मुख्यरूप से शिक्षाक्षेत्र में बिताया। उस में भी मूल प्रेरणा ऋषि दयानन्द के विचारों की थी। जो विद्यार्थी उनके सम्पर्क में आये वे बन गए। डी. ए. वी. कालेज के सर्वप्रथम पाठ्यक्रम में अष्टाध्यायी, महाभाष्यादि रखे हुए थे। प्रतीत होता है कि बाद में कई कठिनाईयों के आजाने के कारण वे रखी न जा सकीं। महात्मा जी के दिल में एक आग जलती थी। कालेज में विद्यार्थियों को धर्मशिक्षा वे स्वयं पढ़ाते थे। आर्यसमाज को अपना सारा जीवन ही भेंट कर दिया। इस देवता का ऐसे २ समारोहों में जितना भी गुणगान किया जाये थोड़ा है। परन्तु जो काम वे करते थे हम भी वही करें तभी ठीक है। आज का यह वेद सम्मेलन भी उन के विचारों की पूर्ति के लिए है। ऋषि दयानन्द भी जीवन पर्यन्त यही काम करते रहे। अपने पीछे अपने शिष्यों को भी वेद प्रचार का काम सौंप गये कि वेद स्वाध्याय से जो ज्ञान रत्न मिलें उनको संसार में बिखेर देवें।

आर्यसमाज के दस नियम बनाये। ये नियम दस प्रतिज्ञाएं हैं। प्रत्येक भाई बहिन आर्य समाज का सभासद बन कर इन पर हस्ताक्षर करके स्वीकार करता है। प्रत्येक नियम का अपना २ बड़ा मूल्य व महत्व है। उन में से एक नियम यह है— वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना पढ़ाना और सुनना सुनाना सब आर्यों का परम-धर्म है। आर्य बन कर हम वेदों को सब सत्य विद्याओं का पुस्तक मानेंगे तथा इन का प्रचार करेंगे। यह हमारे जीवन में परमधर्म **(Highest duty)** होगा। ऋषि की वेद के बारे में ऐसी मान्यता थी। उनका यह विचार अपनी ओर से नहीं था वरन आरम्भ से लेकर आज तक जितने भी आचार्य मुनि तथा विचारक हुए हैं, सब ने वेद की मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की है। तैत्तिरीय ब्राह्मण में कथा आती है। भारद्वाज ऋषि ने स्वाध्याय किया अपने दूसरे जन्म में और तीसरे जन्म में भी वेद पढ़ते रहे। उन के पास इन्द्र आकर बोले—भारद्वाज! यदि आप को चौथा जन्म मिले तो क्या करेंगे? ऋषि बोले—मैं वेद ही पढ़ूंगा। इन्द्र ने बड़े २ तीन पहाड़ों से एक २ मुट्ठी मिट्टी की भर कर कहा कि जैसे ये तीन मुट्ठियां इन पर्वतों के सामने जितनी सत्ता रखती हैं वैसे ही वेदरूपी भण्डार से आप ने अब तक मुट्ठियों के रूप में प्राप्त किया है। अनन्ता वै वेदाः। वेद महान् हैं। मन्त्रों की दृष्टि से नहीं अपितु ज्ञान की दृष्टि से यह बात कही जा सकती है। रामायण के श्लोक या महाभारत का कलेवर इन से बड़ा है पर ज्ञान के विचार से वेदों की बहुत बड़ी महत्ता है मनु जी के बारे में सारे मानते हैं कि—यद् वै मनुरवदत् तद् वै भैषज्य भैषज्यतायाः अर्थात् जो कुछ मनु ने कहा है वह दवाईयों की परम दवाई है। रूस के विद्वान् श्री. आस्किन हुए हैं। उन्होंने एक प्रसिद्ध ग्रन्थ लिखा है। **The new model of Universe** उसमें एक अध्याय **Social System** का भी लिखा है वहां पर आश्रमों की चर्चा करते हुए उसने मनु के वर्णाश्रम को अपना आधार मानकर ही समाज निर्माण की व्यवस्था बताई है। वह कहता है कि आज समाज को बनाने वाले जितने भी वाद **Isms** हैं, उनसे विश्व का भला नहीं होगा। केवल मनुप्रतिपादित समाज विधान से ही सब का कल्याण हो सकता है। मनु महाराज वेद के बारे में लिखते हैं—सेनापत्यं च राज्यं च दण्डनेतृत्वमेव च। सर्वलोकाधिपत्यं च वेद शास्त्रविदर्हति। सब कुछ वेदों से ही मिल सकता है।

महात्मा व्यास जी वेदान्त में ब्रह्मचर्चा करते हुए उसे सिद्ध करने के लिए शास्त्र योनित्वात् की सब से बड़ी युक्ति देते हैं कि हमें ऋग्वेदादि शास्त्र दिखाई देते हैं। ये अपने में इतने पूर्ण हैं, सब सत्य विद्याओं के भण्डार हैं, ऊंचे जीवन सन्देश से भरे हैं कि इनको मनुष्य तो बना नहीं सकता। इसलिए इनका बनाने वाला इतने ऊंचे ज्ञान का देने वाला परमेश्वर ही हो सकता है। वेदादि सर्वज्ञ प्रतीत होते हैं। इनमें सम्पूर्ण ज्ञान भरा हुआ है। इनको सर्वज्ञ ही बना सकता है। मनुष्य का ज्ञान तो बहुत थोड़ा है और न ही मनुष्य सर्वज्ञ बन ही सकता है। इससे प्रतीत होता है कि परमेश्वर की सत्ता विश्व में विद्यमान है। व्यासमुनि के दिल में वेदों के प्रति कितनी श्रद्धा है। इतने महान् ऋषि होकर भी वेदों के प्रति कितनी भारी आस्था रखते हैं, यह परिचय भली भांति मिल जाता है। स्पष्ट है कि हमारे पुरातन ऋषि मुनि जिनके विचारों के सामने आज का सारा संसार मस्तक झुकाता है, उनके जीवन में वेदों तथा उनके धर्म के लिए कितनी श्रद्धा कूट २ कर भरी हुई थी। यह हमारे लिए बड़े गौरव सम्मान की बात बन जाती है।

(अपूर्ण)

आर्यसमाज करौल बाग नई देहली

वार्षिकोत्सव १-२-३ मई को बड़ी धूमधाम से सम्पन्न हो रहा है। इस उपलक्ष्य में २५ अप्रैल को एक जलूस निकलेगा। २३ अप्रैल से ३० अप्रैल तक प्रतिदिन रात को ८ बजे से १० बजे तक कुंवर सुखलाल जी की कथा व ब्रह्मानन्द मंडली के भजन हुआ करेंगे।

दयालचन्द्र, मन्त्रीसमाज

भारत अपने नैतिक आध्यात्मिक आदर्शों से जीवत है

स्कूलों में नैतिक धार्मिक शिक्षा पर कोई पाबन्दी नहीं

भारत के शिक्षा उपमन्त्री श्री भक्तदर्शन का प्रवचन

महात्मा हंसराज जन्म-शताब्दी के महासम्मेलन में जालन्धर में विशाल जनसमूह के सामने भारत सरकार के शिक्षा उपमन्त्री श्री भक्तदर्शन जी ने अपना उद्‌बोधक प्रभावशाली भाषण जिस मंजी हुई, भावभरी हिन्दी में दिया, उसे सुन कर तो रोम २ प्रसन्न हो गया। सब के लिए एक आदर्शमय सन्देश था। जो लोग अंगरेजी से चिपटे लिपटे हैं, हिन्दी को गौण रूप देते हैं, या बोलने में संकोच करते हैं—उन को भारत सरकार के इस बड़े व्यक्ति का हिन्दी प्रेम आदर्श सामने रखना चाहिए। भाषण कमाल का था—सं०

भारत एक महान देश है। इस ने बड़े २ व्यक्तियों को जन्म दिया है। पंजाब की भूमि को भी बड़ा श्रेय है।राष्ट्र ने स्वामी दयानन्द स्वामी विवेकानन्द, लाला लाजपत राय महात्मा हंसराज आदि सन्त महात्माओं को पैदा किया उन्होंने अपने जीवनकाल में नैतिक व आध्यात्मिक भाषणों के द्वारा भारत की पताका को दूर २ तक फहराया। पंजाब का प्रांत तो वीर व सन्त भूमि के नाम से प्रसिद्ध है। विद्यार्थी जीवन में उनके भाषणों को सुन कर दिल में हुंकार पैदा होती थी। स्वामी श्रद्धानन्द का नाम भी उसी माला में गिना जाता है। महात्मा हंसराज जी भी इसी पंजाब की पवित्र भूमि के महारत्न हैं जिन की शताब्दी आज हम मना रहे हैं। हंस नाम भी कितना सुन्दर है। हंस में नीर-क्षीर में विवेक करने की अद्‌भुत शक्ति होती है महात्मा हंसराज तो केवल हंस ही नहीं थे वरन् हंसशिरोमणि थे। उस विवेकी हंस ने हमारी शिक्षा प्रणाली के गुण दोषों को नीर-क्षीर के समान विवेचन करके हमारे सामने गुणों को पेश कर दिया। D. A. V. शब्द में स्वामी दयानन्द का नाम आता है। उस युग देवता ने उस समय देश में प्रकाश की मशाल जलाई, जब चारों ओर अन्धकार ही अन्धकार था। स्वामी जी ने सारे समाज को उद्‌बोधन दिया। इस बात को जीवन में भर दिया कि किसी भी बात को लेने में उसे प्राचीन व नवीन तर्क की कसौटी पर कस कर ही स्वीकार करना चाहिए। इन संस्थाओं के साथ जिन को महात्मा हंसराज ने पाला पोसा D. का शब्द रखा। यह बात बड़ी महत्वपूर्ण है। इसे भूलें नहीं। स्वामी दयानन्द का सन्देश हमारे सामने सदा बना रहे।

आज हम औद्योगिक क्रान्ति से गुजर रहे हैं। सामाजिक सकट भी सामने है। इन को दूर करना है इसी संकल्प को ले कर भारत ने योजनाबद्ध विकास के कार्य को आरम्भ किया है। हमने विज्ञान की शरण ली है। पुराने आदर्शों, मान्यताओं तथा परम्पराओं को स्वीकार कर के आगे बढ़ना है। इस वृद्ध पुरातन भारत ने अपने लम्बे जीवन में अनेक उत्थान-पतन देखे हैं, किन्तु इस ने अपने आदर्शों को सदा सामने रखा है। प्रत्येक शिक्षाशास्त्री तथा देश सेवक के सामने भी यही मान्यताएं रहनी हैं। दोनों हाथों में से एक हाथ में तो विज्ञान का चमत्कार तथा दूसरे में आध्यात्मिकता का आदर्श है। इन दोनों का संगम है। D. के बाद V. का यह वैदिक शब्द हमारी संस्कृति की आधार-शिला है। इसी विशेषता ने भारत को जगद्‌गुरु बना दिया था। मैं इसी नाते स्वर्गीय महात्मा हंसराज जी के प्रति अपनी श्रद्धांजलि भेंट करता हूं। महात्मा जी सारे देश की विरासत थे। हमारे देश ने अनेकता में एकता का समन्वय किया है। पारस्परिक समस्याओं का समाधान करने के लिए मिल कर बैठना सिखाया है। हम इस दिशा में आगे बढ़े हैं।

आज हम स्वतन्त्र हैं। देश में शिक्षा का प्रसार किया जा रहा है। परन्तु वास्तविक शिक्षा पूर्ण रूप से नहीं दी जा रही। ये विश्वविद्यालय नहीं है वरन् विष-विद्यालय बन गए हैं। शिक्षा का हल नहीं निकल पाता। हमने शिक्षा आयोग से अनुरोध किया है कि वह ऐसी सिफारिश करे जिससे इसमें नैतिकता तथा आध्यात्मिक शिक्षा भी साथ-साथ रखी जा सके। डी. ए. वी. कालेज परिवार में बड़े योग्य २ महानुभाव बैठे हैं। आप के पास भी आयोग के सज्जन आएंगे तथा सम्मति मांगेंगे। आप भी लिपिबद्ध करके उसको अपने सुझाव देंगे। शिक्षा के क्षेत्र में डी. ए. वी. कालेज ने जो शानदार योग दिया है उससे लाभ उठाएं। भारतीय विधान में भारत को धर्म-निरपेक्ष राज्य घोषित किया है। ऐसा क्यों? इसका अर्थ धर्म विरुद्ध नहीं है पर यहां पर अनेक मत-मतांतर हैं, जहां तक राज्य का सम्बन्ध है वह समानता पर आधारित होना चाहिए। इसी विचार से धर्म निरपेक्ष राज्य बनाया। भारत में सब को समानता प्राप्त है। आप अपने स्कूलों में शिक्षा की मूलाधार नैतिकता एवम् आध्यात्मिक तत्वों का समावेश करें। आप आर्यसमाज के कार्यकर्ता डी. ए. वी. के लोग हैं। आप के सामने शिक्षा की बात करना नानी के आगे ननिहाल की बात करने के समान है। यहां की लड़कियों के वेदमन्त्रों के उच्चारण के समान सारी संस्थाओं में ऐसा सस्वर मन्त्रगान हो। महात्मा हंसराज के नेतृत्व में जो शिक्षा का काम हुआ है वह आप को आगे बढ़ाना होगा। आज जैसी हमारी शिक्षा प्रणाली है उस से यह आशा तो की जा सकती है कि हमारे युवक आसमान पर तो पहुँच जायें पर शायद जमीन पर वापस न आ सकें। पण्डित नेहरू जी ने कहा था कि युवक बेशक आकाश पर घूमें किन्तु उनके चरण इस धरती पर रहें। मैं उस दिन की प्रतीक्षा में हूं कि हमारे युवक विज्ञान के चमत्कारों से धरती के चारों ओर परिक्रमा करेंगे। उनके दोनों हाथों में से एक में विज्ञान होगा तो दूसरे हाथ में वेद या गीता की पुस्तक होगी। आज मशीनें बन रही हैं पर मनुष्यता नहीं बनती। ये विद्यालय मानवता के बनाने वाले कारखाने हैं जहां मनुष्यता को बनाना होगा। दयानन्द के नाम से सम्बन्धित संस्थाएं अब यही काम करें। महात्मा हंसराज जी अन्तिम दिनों में निराश हो गये थे कि इन संस्थाओं से वैसे युवक बनेंगे कैसे? मेरी आत्मा को तभी शांति मिलेगी जब कि आर्यसमाज की इन डी. ए. वी. संस्थाओं से वैसे आदमी निकलेंगे आप इस पर विचार करें कि आज इन में क्या न्यूनताएं आ गई हैं। इनका सुधार करें। जयन्ती सौ साल बाद न मना कर एक सौ एक वर्ष मे मनाई। चलो दान के समान सौ न हो कर एक सौ एक वर्ष की परिपाटी को कायम रखा।

महात्मा हंसराज सचमुच महात्मा थे
हिन्दी ही देश की राष्ट्रभाषा हो सकती है

सभा के प्रधान श्री यश जी का भाषण

✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻

आर्य प्रादेशिक सभा पञ्जाब जालन्धर के माननीय प्रधान श्रीयुत यश जी का सभा द्वारा महात्मा हंसराज जी की जन्म शताब्दी समारोह मनाने में प्रमुख हाथ है। सभा प्रधान बनते ही जयन्ती मनाने का बीड़ा उठाया। समय बहुत थोड़ा था, काम बहुत भारी था। किन्तु उनके उत्साह का क्या कहना? सभा के सारे उपदेशक भजनीक उन के प्रेमपूवक आदेश को ले कर सभा के छापे जयन्ती के नोटों को लेकर भिन्न २ स्थानों पर फैल कर सन्देश व धनार्जन में जुट गये। अधिकारी सज्जन भी काम पर लग गये। इतने अल्प समय में इतना शानदार समारोह सम्पन्न हो गया। समाजें, संस्थाएं तथा जनता ने तन मन धन देने में उदारता का परिचय दिया। श्रद्धाञ्जलि समारोह के महासम्मेलन के अवसर पर श्री यश जी ने सभा-प्रधान के नाते मान्य अतिथियों का स्वागत करते हुए उद्‌गारों से भरा हुआ जो ओजस्वी भाषण आरम्भ में दिया—वह संक्षिप्त रूप से दिया जाता है—सं.

आज हम उस तपस्वी, कर्मयोगी महात्मा हंसराज जी की जन्म शताब्दी समारोह को मनाते हुए इस श्रद्धाञ्जलि समर्पण करने के महा सम्मेलन में बैठे हैं। महात्मा जी केवल आर्यसमाज, आर्यप्रादेशिक सभा डी. ए. वी. कालेज या पंजाब के ही नहीं थे अपितु सब के थे। शताब्दी व्याख्यानमाला में इस का परिचय मिल गया है। श्री मुरार जी देसाई आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, वायसचांसलर सूर्यभानु जी, प्रो० अब्दुलमजीदखां, डा० अनूप सिंह जी, वायसचांसलर डा. जी. एल. दत्त जी, प्रिंसिपल रलाराम जी, प्रिं० ज्ञानचन्द जी, आचार्य प्रियव्रत जी गुरुकुल कांगड़ी, पं० शांति प्रकाश जी अधिष्ठाता वेद प्रचार आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब भारत सरकार के शिक्षा उपमन्त्री श्री भक्तदर्शन जी, कामरेड रामकृष्ण जी मुख्य मन्त्री पंजाब, ज्ञानी गुरमुखसिंह मुसाफिर, श्री अब्दुलकादिर, श्री अमरसिंह जी दोसांझ, श्री भगवद् दयाल प्रधान पंजाब कांग्रेस कमेटी, श्री डा० बलदेव प्रकाश प्रधान जनसघ, कैप्टन केशव चन्द जी सरीखे सज्जन तथा अपने सभा, स्कूल कालेज समाजों के परिवार के भाई बहिनें भी हैं। महात्मा जी सब को प्यारे थे। आर्यसमाज के लिए यह श्रेय की बात है। आज हिन्दी ही देश की राष्ट्र भाषा हो सकती है और कोई भाषा नहीं। हिन्दी और पंजाबी में कोई झगड़ा नहीं। हिंदी का झगड़ा यदि किसी से हो सकता है तो अंग्रेजी से। हिंदी देश के २४ करोड़ लोगों की भाषा है जब कि अंग्रेजी को जानने वालों की संख्या बहुत कम है।

आज हम महात्मा हंसराज जी की सेवाओं का सही मूल्यांकन नहीं कर रहे हैं। कुछ समय बीत जाने पर हम उनके उपकारों व सेवाओं का सही अर्थ जानेंगे। वह सही अर्थों में महात्मा थे। उन्होंने हमेशा दिया ही, कभी कुछ लिया नहीं।

आर्यसमाज बाढ़ (पटना)

आर्यसमाज बाढ़ में आर्यसमाज स्थापना दिवस बड़े उत्साह से सम्पन्न हुआ। जिसमें आर्य सदस्यों के अतिरिक्त बाल-विद्या सदन के छात्रों ने भी भाग लिया। तथा सर्व साधारण जनता को भी प्रेरित करके समाज मन्दिर में लाया गया। सब से प्रथम सामूहिक रूप से संध्या हवन हुआ। तत्पश्चात् ध्वजारोहण किया गया। इस अवसर पर तन, मन, धन देकर समाज की शक्ति को बढ़ाने तथा नवीन नवयुवकों को समाज में लाने और आत्म नीरिक्षण करके अपने को उन्नत करने की भावनाएं दी गईं।

—चन्द्रदीप उपमन्त्री

राजस्थान में हीरक जयन्ती समारोह

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान की हीरक जयन्ती समारोह ५, ६ और ७ जून को अजमेर में आना सागर स्थित ऋषि उद्यान में मनाया जाएगा! इस अवसर पर भारत के प्रसिद्ध संन्यासी महात्मा तथा नेताओं के पधारने का प्रबन्ध किया जा रहा है। जयन्ती के संचालक श्री करण शारदा राजस्थान की समस्त समाजों व आर्य संस्थाओं से इस सुअवसर को सफल बनाने के लिए स्वागत समिति की तन मन धन से सहायता करें। उनका अति धन्यवाद होगा।

श्री करण शारदा
प्रचार मन्त्री।

अमरीकी हथियारों के प्रयोग से वाशिंगटन अनभिज्ञ

अमरीकी विदेश विभाग ने कहा है कि उसे इस बात की जानकारी नहीं है कि अमरीका में बने हथियारों का कच्छ सीमा पर भारत पाक लड़ाई में प्रयोग किया जा रहा है।

शक्ति हमारे अपने...

(पृष्ठ ३ से आगे)

समाज के जलूसों, जल्सों की बड़ी धाक थी। याद रखिए कि शक्ति तो अपने अन्दर है। यही आत्म-विश्वास के रूप में बड़ा काम करती है। इस अन्दर की शक्ति को विस्मरण मत करो। हां यह और बात है कि इस शक्ति को हम सुला दें या जगा दें। महात्मा जन जो शब्दों के बीज होते हैं आगे चल कर वही विशाल वृक्ष बनते हैं मेरे चाचा जी अपने गांव में सत्यार्थ प्रकाश के कारण नेता बने। दो मुसलमान बच्चे भी उनके विचारों के बन गये व्यक्ति के विचारों का प्रभाव पड़ता है। शब्द बीज पनपते हैं महात्मा हंसराज जी की शब्द शक्ति ने आज कितना काम किया है यह सामने है। हम अपना काम किए जाएं। दूसरे चाहे कुछ कहें पर हम आत्म विश्वास के बल पर जीवन पथ पर आगे बढ़ते जाएं—

जम्मू सीमा पर जासूसी उड़ानें

एक पाकिस्तान जैट विमान को कल प्रातः जम्मू सीमा के छम्ब सैक्टर में अंतर्राष्ट्रीय सीमा के साथ-साथ पाकिस्तानी प्रदेश में पन्द्रह मिनट तक उड़ान करते देखा गया। ख्याल है कि विमान जासूसी उड़ान पर था।

पाक विमान गिराने का आदेश

प्रतिरक्षा मंत्री श्री चह्वाण ने आज लोकसभा में घोषणा की कि भारतीय सेना को स्थायी आदेश प्राप्त है कि यदि कोई पाक विमान भारत की नभ सीमा का अतिक्रमण करें तो उसे गोली मार कर गिरा लिया जाए।

वेद का भाष्य सारी भाषाओं में करें

अपने जीवन को वेदमय बना देवें

श्री पं. रामविचार जी एम. ए. हिसार का भाषण

वेद सम्मेलन जन्म-शताब्दी में वेदों के प्रचार के बारे में बोलते हुए दयानन्द ब्राह्म महा-विद्यालय हिसार के उपाचार्य श्री पं० रामविचार जी एम. ए. ने ओजस्वी भाषण में जनता का ध्यान आकर्षित करते तथा जीवन पथ का निर्देश करते हुए कहा —

परमात्मा ने सब के कल्याण के लिए आदि सृष्टि में ऋषियों को चार वेद दिये। यही मान्यता सबको मान्य थी। यही बात ऋषि दयानन्द ने प्रतिपादित की। वेद आज भी उसी अक्षुण्ण रूप में विद्यमान हैं इन में किसी प्रकार का भी परिवर्तन नहीं हुआ। वेद ही मानव समस्याओं का समाधान कर सकते हैं। सर्व वेदात् प्रसिध्यति। सब कुछ वेदों से ही सिद्ध हो सकता है। खेद है कि आज के युग में वेदों का भाष्य ठीक न होने से वेदों पर भी अनेक प्रकार के असंगत व असम्बद्ध लांछन लगाए जा रहे हैं। बम्बई से प्रकाशित होने वाली पुस्तक **Vedic Age** 'वैदिक एज' में वर्तमान विद्वानों ने घटिया प्रकार के आक्षेप किए गए हैं जो कि नितान्त गलत हैं। वेदों में तो निष्पाप बनने का सुन्दर उपदेश है सारा दोष सायण व महीधर भाष्यों का है जिनको आधार बना कर लोगों ने आक्षेप किये हैं। केवल संस्कृत का विद्वान वेदों के आशय को नहीं समझ सकता। भाष्यकार के लिए योगी होना आवश्यक है। आज इस बात की आवश्यकता है कि वेदों के आशय को दूसरे देशों की जनता तक कैसे पहुंचाया जाये। गत दिनों पादरी अ० तुल्हक ने हिसार में मुझ से पूछा कि हमारी भाषा उर्दू है और आप के वेद उर्दू भाषा के रूप में मिलते नहीं फिर भला हम वेदों को क्यों कर पढ़ें? आज बायबल का अनुवाद संसार की तमाम भाषाओं में हो गया है। आप जिस भाषा में चाहें उसे पढ़ सकते हैं। पर वेदों के विषय में ऐसी बात नहीं है। स्वामी जी के बाद पं० तुलसीराम जी व पं० क्षेमकरण जी ने भाष्य किया। आगे हम कहां बढ़े हैं।

दूसरी बात यह है कि आज हमारे में कितने घर ऐसे हैं, कितने परिवार हैं जहां वेद हैं। हमारे घरों परिवारों में और तो हर प्रकार की सामग्री है पर वेद भी हैं या नहीं। कितने घरों में वेद का पाठ होता है। यदि हमारे घरों में वेद पाठ नहीं होता तो और जगह कैसे होगा। अपनी सत्ता को पहिचानो। दूसरे लोग कहां पहुंच गए और हम कहां पर हैं। दूसरों के घरों में अपने २ धर्म ग्रन्थ मौजूद हैं तथा उनका पाठ भी होता है पर हमारे परिवारों की हालत हमारे सामने है। घर परिवार, सन्तान व जीवन को वेदमय बनाओ।

जयदेव ब्रादर्ज बड़ौदा—१

सूचित करते हैं कि जिन [illegible] सभा चित्र गुप्त रोड नई देहली की धर्म शिक्षा परीक्षा में प्रथम और द्वितीय दर्जे पर रहे हैं उन छात्रों को एक-एक पुस्तक फ्री देना चाहते हैं। अतः पारितोषिक प्राप्त छात्र आर्य विद्या सभा चित्र गुप्त रोड नई देहली को अपना पूरा पता लिख-कर मंगा सकते हैं। फर्म की ओर से पुस्तकें सभा को पहुंचा दी गई हैं।

—आत्माराम पथ बड़ौदा—१

हमें वेदवाणी और देववाणी से कितना प्रेम है ?

आर्यसमाज संस्कृत वालों का मान करे

श्री पं ओ३म् प्रकाश जी महोपदेशक सभा का भाषण

महात्मा हंसराज जन्म शताब्दी वेद सम्मेलन में आर्य प्रादेशिक सभा के महोपदेशक श्री पं. ओ३म् प्रकाश जी आर्य ने अपने दिल के ओजस्वी उद्गारों को प्रकट करते हुए वेद प्रचार की वर्तमान अवस्था का सुन्दर चित्रण करते हुए अपने प्रभावशाली भाषण में कहा—

इस सम्मेलन में वेद के सम्बन्ध में चर्चा की जा रही है वेद प्रचार के प्रति हमारे क्या कर्तव्य हैं तथा वेद प्रचार का विस्तार कैसे किया जा सकता है? इन दो-तीन आवश्यक बातों की ओर आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं। प्रश्न पूछा है कि इस धरती पर देखने किस से हो—नेत्र कौन से हैं? उत्तर दिया है कि वेदरूपी नेत्रों से। वेदश्चक्षुः सनातनम्। धर्म का पता लगाने की कसौटी कौन-सी है? उत्तर मिलता है कि वेद ही ऐसी सुन्दर कसौटी है कि जिसके द्वारा जीवन की प्रत्येक बात को कसा जा सकता है। परन्तु आज की हमारी अवस्था क्या है? हम वेदवाणी से तो क्या देववाणी से भी गये हैं। स्वराज्य में दशा सुदशा नहीं है। हमें संस्कृत से प्रीति नहीं रही। आज भी हम विदेशी भाषा के अनुरागी बने हुए हैं। आज भी दासता की बेड़ियों से हम ने अपने आपको बांध रखा है। क्या बनेगा हमारा? पहले के लोग कहते थे कि वेद को शंखासुर हर कर ले गया। आज भी वही स्थिति बनती जाती है। हमें अपनी जगह पर सोचना होगा।

आज वेदों पर औरों की दृष्टि भी जाती है। यह स्वामी दयानन्द जी की कृपा का प्रसाद है। वेदों के बारे में दूसरों का दृष्टिकोण भिन्न है और हमारा दृष्टि बिन्दु भिन्न है। वेद को हम सर्गारम्भ में दिया प्रभु का ज्ञान मानते हैं।

कई लोगों के नामों के साथ वेदी, द्विवेदी, त्रिवेदी के शब्द जुड़े हुए हैं। आर्यसमाज से पूर्व वेदी थे पर तोते की भांति रटने वाले थे। वेदों को गुप्त रखते थे। आज समाज ने भी क्या कोई वेदी, द्विवेदी बनाये हैं? किसी ने आचार को परमधर्म कहा है तो किसी ने अहिंसा को। पर स्वामी दयानन्द ने वेद को परम-धर्म माना है। वेद ज्ञान की खान है। सारी उलझनों को सुलझाते हैं। अपने जीवन को वेदमय बनाओ। वेद के दीवाने परवाने बनना है। इसके बिना वेद प्रचार नहीं होगा। यहां पर पंजाब में क्या हो रहा है। संस्कृत की क्या दुर्दशा हो रही है। संस्कृत का कितना बहिष्कार किया जा रहा है। संस्कृत कौन और क्यों पढ़े। संस्कृत वालों के साथ क्या व्यवहार किया जाता है? अपने देश में और अपने राज्य में अपनी देव-वाणी और उसके पढ़ने वालों के साथ इतना अपमान? कौन पढ़ेगा? इस लिए संस्कृत वालों का मान करना सीखो, प्रोत्साहन दो। वेद प्रचार के लिए पूरी शक्ति लगा दो तभी भला है।

महात्मा हंसराज अमर रहें

(पृष्ठ २ का शेष)

बहिनों का उत्साह, युवकों का जीवन उल्लास; बैंडों की तानें सब में जोश भर रही थीं। सारे नगर में घूमकर जलूस वापस उसी स्थान पर आकर समाप्त हो गया। अमार्क का दृश्य था।

वाग दान

आर्य जगत को यह पढ़कर अति प्रसन्नता होगी कि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के वेद प्रचार अधिष्ठाता श्री शान्ति स्वरूप जी के सुपुत्र चिरंजीव सुभाष जी का वाग्दान श्री पं० त्रिलोक चन्द्र जी शास्त्री बी. ए. सम्पादक आर्यजगत की सुपुत्री सुश्री सरस्वती जी के साथ निश्चित हुआ है। इस के लिए दोनों परिवारों को आर्य जगत की ओर से बधाई हो।

राजपाल मन्त्री
उपदेशक विभाग A.P.P. सभा

डी.ए.वी. कालेज प्रबन्ध-कर्तृ सभा नई देहली

दयानन्द ऐंग्लो वैदिक कालेज ट्रस्ट तथा मैनेजमैंट सोसायटी, नई देहली का वार्षिक अधिवेशन (Society Meeting) रविवार दिनांक ९ मई १९६५ की सायंकाल ४ बजे (On Sunday, the 9th May, 1965 at 4.00 p.m.) डी० ए० वी० कालेज प्रबन्धकर्तृ सभा नई देहली के कार्यालय में होगा। आपसे सविनय निवेदन है कि आप इ दर्शन देकर कृतार्थ करें।

कार्यक्रम

१. पिछली बैठक दिनांक १०-५-६४ की कार्यवाही की पुष्टि। प्रतिलिपि संलग्न)

२. प्रबन्धकर्तृ सभा की वार्षिक रिपोर्ट १९६४-६५।

३. वर्ष १९६४-६५ का आय तथा व्यय का ब्यौरा।

४. प्रबन्धकर्तृ सभा द्वारा परामर्शित वर्ष १९६५-६६ का आनुमानिक आय तथा व्यय का ब्यौरा। (बजट की प्रति बैठक से कुछ दिन पूर्व भेजी जायगी)।

५. फुटकर।

नोट :—बैठक के पश्चात् प्रधान जी की ओर से 'जलपान' का प्रबन्ध होगा।

प्रधान जी की आज्ञानुसार,
गणेशदास कपूर प्रधान मन्त्री

टोहाना निवासी का सात्विक दान

दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार के छात्रावास का उद्घाटन श्री गुप्ता जी ने अपने करकमलों से किया। इस शुभ अवसर पर विद्यालय की ओर से उन्हें अभिनन्दन पत्र भेंट किया गया।

गुप्ता जी ने ८०००/- के दान की घोषणा की तथा दो हजार नकद दिया। २०००/ वेद प्रचार के लिए दिया। इस धन से एक भजन मंडली रखी जायगी जो वेद प्रचार का कार्य करेगी।

इस ८०००/- के अतिरिक्त १००/- विद्यालय के खर्च के लिए ५ वर्ष तक देने का आश्वासन दिया। —व्यवस्थापक

आर्यसमाज हिसार का चुनाव

प्रधान—श्री मुरारी लाल जी शास्त्री, उपप्रधान—श्री सेठ फतेहचन्द्र जी; चौ० नत्थनलाल जी —नन्दलाल आर्य, उपमन्त्री—श्री अमृतसिंह जी आर्य। प्रचारमंत्री—श्री रामविचार जी एम० ए० कोषाध्यक्ष—श्री सीताराम जी आर्य, एडीटर—दीनदयाल जी आर्य, पुस्तकाध्यक्ष—सुखदेवराज जी आर्य।

नंदलाल आर्य
मन्त्री समाज

शोक समाचार

आर्य जगत को यह दुःखद समाचार पढ़कर अति खेद होगा कि श्री लालचन्द्र जी जो कि विभाजन से पूर्व फिनांशल डिपार्टमैंट शिमला में एक उच्च अधिकारी थे तथा कृष्णनगर लाहौर के निवासी थे, ११ अप्रैल शनिवार को प्रातः ११ बजे मंसूरी में स्वर्गारोहण कर गए हैं।

आप कट्टर आर्यसमाजी होते हुए, ईश्वर परायण, सुयोग्य लेखक और कवि भी थे। आपके समय २ पर आर्य जगत में लेख भी प्रकाशित होते थे। आर्यजगत उनकी आत्मा की सद्गति व उनके परिवार को धैर्य प्रदान करने की प्रभु से प्रार्थना करता है।

आर्यसमाज खन्ना

वार्षिकोत्सव ३० अप्रैल और १-२ मई रविवार तक बड़े समारोह से सम्पन्न हो रहा है इस अवसर पर पं. त्रिलोकचन्द जी शास्त्री महोपदेशक सभा की कथा २६ अप्रैल से आरम्भ हो रही है तथा हजारीलाल जी के भजन होंगे।

मुंशीराम प्रधान समाज

सांच (जिला करनाल) में वेद प्रचार

२६ से ३१ मार्च तक आर्य समाज सांच का वार्षिकोत्सव बड़ी धूमधाम से सम्पन्न हुआ। चौ० नन्दराम जी, चौ० मामचन्द्र जी, चौ० देसराज जी, चौ० अमरसिंह जी आदि सज्जनों की लगन प्रशंसनीय है। अनेक संन्यासी व उपदेशक महानुभावों के व्याख्यान तथा भजन होते रहे। इस अवसर पर २१/रु गुरुकुल घरोंडा, ५१/अरोड़ सभा, तथा ५१/ महात्मा हंसराज जन्मशताब्दी को दान दिया।

—नन्दराम प्रधान आर्यसमाज सांच

आर्य समाज प्रधाना मोहल्ला के समाचार

ऋषि बोधोत्सव— १८ फाल्गुन सोमवार को यह पवित्र पर्व मनाया गया। प्रातः प्रभातफेरी की गई और पश्चात साप्ताहिक सत्संग में ऋषि के जीवन पर विविध महानुभावों ने भजनों तथा प्रवचनों द्वारा प्रकाश डाला। रात्रि को दीपमाला की गई।

पंडित लेखराम बलिदान दिवस

आर्य समाज के कार्यकर्ताओं के टंकारा ऋषि मेला पर जाने के कारण यह दिवस नहीं मनाया गया।

आर्यसमाज स्थापन दिवस

९० वर्षीय आर्यसमाज दिवस दिनांक ३० चैत्र शुक्रवार, विक्रम के नये वर्ष के दिन बड़े समारोह पूर्वक मनाया गया। आर्य सार्वदेशिक सभा के आदेश अनुसार प्रातः प्रभात फेरी सांय जलसा और रात्रि को आर्यों ने दीपमाला की।

दान राशि

बीस रुपया श्री महर्षि टंकारा ट्रस्ट, बीस रुपए आर्य सार्वदेशिक सभा दिल्ली, तथा दो सौ रुपए महात्मा हंसराज जन्म शताब्दी के उपलक्ष्य में आर्य प्रादेशिक सभा जालन्धर एवम् आर्य समाज के सदस्यों ने एक सौ रुपए हरियाणा महा सम्मेलन रोहतक को दिये गये।

आर्य केन्द्रीय सभा की स्थापना

आर्य समाज की गतिविधियों का अवलोकन करने तथा उसे सुव्यवस्थित रूप देने हेतु नगर की एक दर्जन आर्य संस्थाओं ने मिल कर आर्य केन्द्रीय सभा का निर्माण किया है। (विद्यार्थी)

★ जो विपत्ति में धीरज रखता है वही मनुष्य है।

मुद्रक व प्रकाशक श्री यशोधराज जी आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर द्वारा वीर मिलाप प्रैस, मिलाप रोड जालन्धर से मुद्रित तथा आर्य जगत कार्यालय महात्मा हंसराज भवन निकट कचहरी जालन्धरशहर से प्रकाशित मासिक—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर



टेलीफोन नं० ३०५७ [आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधिसभा पंजाब जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd. No. P. 12

एक प्रति का मूल्य १३ नये पैसे वार्षिक मूल्य ६ रुपये (जन्मशताब्दी के लेख अन्दर

वर्ष २५ अंक २०) १९ वैशाख २०२२ रविवार—दयानन्दाब्द १४०— ९ मई १९६५ (तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

महात्मा जी ने हमेशा दिया ही लिया कुछ नहीं

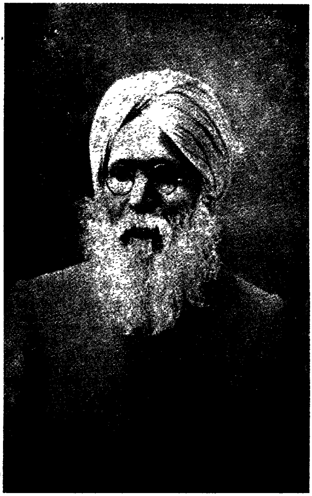
महात्मा जी सब के प्यारे थे। आर्यसमाज के लिए यह श्रेय की बात है। आज हिन्दी ही देश की राष्ट्र भाषा हो सकती है और कोई भाषा नहीं। हिन्दी और पंजाबी में कोई झगड़ा नहीं। हिन्दी का झगड़ा यदि किसी से हो सकता है तो अंग्रेजी से। हिन्दी देश के २८ करोड़ लोगों की भाषा है। जब कि अंग्रेजी को जानने वालों की संख्या बहुत कम है।

आज हम महात्मा हंसराज जी की सेवाओं का सही मूल्यांकन नहीं कर रहे। कुछ समय बीत जाने पर ही हम उनकी सेवाओं व उपकारों का सही अर्थ जानेंगे। वह सही अर्थों में महात्मा थे। उन्होंने हमेशा दिया ही, कुछ लिया नहीं।

श्री भक्त दर्शन जी

शिक्षा उपमन्त्री

महात्मा हंसराज जी



जिनकी जन्म शताब्दी १९ अप्रैल से १५ नवम्बर तक भिन्न-भिन्न नगरों में मनाई जा रही है।

संस्कृति की छाप

सादगी व सभ्यता की मूर्ति प्रिंसिपल रलाराम जी एम. ए. एम. एल. ए. पूर्व प्रधान आर्य प्रादेशिक सभा पंजाबने शिक्षा सम्मेलन में बड़ा सुन्दर सन्देश देते हुए कहा—

शिक्षा के क्षेत्र में त्रुटियां आने का एक मुख्य कारण यह है कि कुछ लोग यह समझने लगे हैं कि अध्यापकों को खरीदा जा सकता है, नौकर रखा जा सकता है यह बात याद रखनी चाहिए कि हमें ज्ञान और विज्ञान की इस ढंग से शिक्षा देनी चाहिए कि उस पर प्राचीन भारतीय संस्कृति की छाप हो। तभी देश का कल्याण सम्भव है और इस प्रकार की शिक्षा ही मानवता का मान बढ़ायेगी।

प्रिंसिपल रलाराम जी

एम. ए. एम. एल. ए.

अधिष्ठाता—श्री संतोषराज जी सम्पादक—त्रिलोक चन्द्र शास्त्री

भारतीय संस्कृति के सद्गुणों की शिक्षा

शिक्षा में देश भक्ति व चरित्र निर्माण भर दो

शिक्षा सम्मेलन सभा में सभा प्रधान श्री यश जी का भाषण

महात्मा हंसराज जन्म शताब्दी के अवसर पर शानदार शिक्षा सम्मेलन, विक्रम विश्व विद्यालय उज्जैन के वायस चन्सलर डा० गोवर्धन लाल जी दत्त, प्रधान दयानन्द कालिज कमेटी नई दिल्ली, की प्रधानता में सम्पन्न हुआ। जिसमें बड़े २ प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री नेता, प्रिंसिपल रला राम जी एम० एल० ए०, प्रिं० ज्ञान चन्द जी एम० ए० आचार्य हिसार, प्रिं० देसराज जी महाजन, प्रो० दीवान चन्द शर्मा एम० ए० एम० पी० तथा सभा के माननीय प्रधान श्री० यश जी पूर्व शिक्षा मन्त्री पंजाब थे। इन्होंने वर्तमान शिक्षा पर विचार प्रकट किये। यश जी ने कहा—

शिक्षा जीवन का निर्माण करने का बड़ा उत्तम साधन है। राष्ट्र की उन्नति भी प्रायः इसी पर निर्भर होती है। यदि शिक्षा का स्तर उचित है तो समझ लो कि देश का स्तर भी ठीक है। यदि इस में गड़ बड़ है तो राष्ट्र के जीवन में गड़ बड़ पैदा हो जाती है। इसलिए शिक्षा की ओर विशेष ध्यान देना चाहिए। हमारे शिक्षक राष्ट्र के निर्माता हैं। हमारी शिक्षा का ढांचा ऐसा होना चाहिए जिस में परिश्रम के सद्गुण तथा प्राचीन भारतीय संस्कृति का समन्वय हो। हमें एक राष्ट्र तैयार करना है जिस में राष्ट्रिय चरित्र उच्च हो, जो अनुशासन बद्ध हो। यह शिक्षा नैतिक और सामाजिक रूप से उन्नत हो। ऐसा शिक्षा के प्रसार से ही हो सकता है।

आज विज्ञान और टैकनालोजी का युग है। परन्तु स्वर्गीय श्री. जवाहरलाल नेहरू का यह कथन पूर्णसत्य है कि जब तक विज्ञान और अध्यात्मवाद का समन्वय नहीं होगा, विज्ञान, मानव के कल्याण का नहीं विनाश का कारण बनेगा। आज सभी ओर से यह आवाज उठ रही है कि देश की शिक्षा का ढांचा अच्छा नहीं है। यह चर्चा जितन तेजी से की जाती है यदि उतनी तेजी से शिक्षा के ढांचे में सुधार के लिए सोचा जाये तो अनेक समस्यायें हल हो सकती हैं। नित्य शिक्षा-व्यवस्था की निन्दा करने से विद्यार्थियों पर भी कोई अच्छा प्रभाव नहीं पड़ता।

गुरु और शिष्य में आज परस्पर सम्बन्ध क्या और कैसा है? यह किसे पता नहीं। दोनों ओर ही त्याग और श्रद्धा की भावना नहीं रही। अतीत में गुरु शिष्य का सम्बन्ध आध्यात्मिक माना जाता था और आज यह दुकानदार और ग्राहक का सम्बन्ध रह गया है। अध्यापकों में मजदूर जत्थेबन्दी की भावना आ गई है हर काम का मापदंड पैसा हो गया है। हमें केवल अध्यापकों से एक आदर्श अध्यापक बनने की अपेक्षा नहीं करनी चाहिए बल्कि कोई ऐसा समाधान ढूंढना चाहिए कि अध्यापकों को उनका वही पुराना सम्मान मिल सके। इस के साथ अध्यापकों को भी अध्यापन कार्य को एक व्यवसाय नहीं समझना चाहिए। यदि इन बातों पर विस्तार से विचार किया जाए तो शिक्षण संस्थाओं का दूषित वातावरण ठीक हो सकता है और शिक्षा का स्तर भी उन्नत हो सकता है। कम से कम आर्य समाज की शिक्षण संस्थाओं में यह समस्या हल होनी चाहिए। ऐसा होने पर ही इन शिक्षा संस्थाओं के छात्रों पर डी. ए. वी. की पुरानी छाप कायम रह सकेगी जिस के सम्बन्ध में आज यह शिकायत है कि वह लोप होती दिखाई दे रही है।

सच्चे सन्यासी को मेरा सादर नमस्कार

आर्यसमाज आज के पतन को रोके

पंजाब के मुख्य मन्त्री कामरेड रामकृष्ण जी भाषण

महात्मा हंसराज जन्मशताब्दी के समारोह श्रद्धांजलि सम्मेलन में विशाल जनता के सामने उस स्वर्गीय तपस्वी त्यागी देवता महात्मा हंसराज जी के आदर्शों, के महान् कार्यों, बलिदान तथा सन्यासमय कर्मयोग प्रति अपनी आन्तरिक श्रद्धांजलि भेंट करते हुए मुख्य मन्त्री जी ने बड़े सुन्दर भाषण में कहा—

आज हमारा सौभाग्य है कि हम पंजाब केसरी ला. लाजपतराय जी की जयन्ती मनारहे हैं वहां आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब द्वारा महात्मा हंसराज जन्म शताब्दी भी मनाई जा रही है। आज का समारोह बड़ा ही सुन्दर है। यह शताब्दी मनाते हुए हम अपना कर्तव्य पूरा कर रहे हैं। लाला लाजपतराय ने अपने खून से राष्ट्र को सींचा और महात्मा हंसराज जी ने अपना सारा जीवन देकर राष्ट्र की सेवा की। महर्षि दयानन्द ने अपने समय में क्रान्ति की थी, महात्मा हंसराज ने उसी आदर्श को आगे बढ़ाया। स्वामी दयानन्द सरस्वती हंसराज के रूप में देश के लिए अपनी चमक छोड़ गए। इस तपस्वी महात्मा ने मन-वचन कर्म से महर्षि के काम को पूर्ण करने का बीड़ा उठा लिया। महात्मा जी ने साधना रूप में सेवा की वह सच्चे सन्यासी थे, कर्मयोगी थे। शिक्षा के क्षेत्र में भारी क्रान्ति ला दी। डी. ए. वी. की संस्था देशभक्ति के काम में अग्रणी बनी हुई है। दो तीन बातें इस के बारे में कहनी हैं—

पहली बात यह है कि जिस समाज को महात्मा जी स्थापित करना चाहते थे। क्या वह आज बन गई है? आज देश में चरित्र का क्या पतन हो रहा है। बांध बन रहे हैं, सुन्दर २ भवनों का निर्माण किया जा रहा है पर खेद है कि नैतिकता नाश की ओर जा रही है। क्या हमारा इस बात की ओर ध्यान है? आज हम प्रतिज्ञा करें कि इस पतन को रोकने का प्रयत्न करेंगे।

महात्मा हंसराज जी जब प्रिंसिपल का काम सम्भाल कर कार्य क्षेत्र में उतरे तो मैं भी उनके चरणों में बैठा। उन में यह विशेषता थी कि जो भी उनके पास बैठता था, जीवन में प्रेरणा लेता था। वह सैर करने जाते तो अपने साथ टीचर तथा विद्यार्थियों को साथ ले जाते। मार्ग में उन से बातें करते हुए उनको राष्ट्रिय चरित्र का उपदेश देते थे। क्या आज भी वह गुण हमारे अन्दर है इस पर सोचें। आज हमारा राष्ट्रिय चरित्र कहां भागा जा रहा है। भारत ने हर क्षेत्र में बड़े २ आदमी पैदा किए। पचास वर्ष में वहां कितने महात्मा, त्यागी, देश भक्त तथा तपस्वी पैदा हुए हैं। डी. ए. वी.

(शेष पृष्ठ ६ पर)

सम्पादकीय—

आर्य जगत्

वर्ष २५] रविवार २०२१, ९ मई १९६५ [अंक २०

वीरो ! तय्यार रहो

वेद में आता है कि—"वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिता:" हम राष्ट्र में पुरोहित बन कर जागते रहें। आज इस सन्देश को घर २ परिवार २ और प्रत्येक जीवन में पहुंचाने की आवश्यकता है। आर्यसमाज के महान प्रवर्तक ऋषि दयानन्द सरस्वती ने वैदिक देशभक्ति, राष्ट्र प्रेम की उदात्त भावना का सुन्दर सन्देश दिया है। आर्यसमाज ने देशभक्ति के मार्ग पर चलते हुए सारी जनता का नेतृत्व किया। अमर ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश में राजधर्म को लेकर वीरता भरे भावों में सुनहली पंक्तियां लिखी हैं। जब भी किसी प्रकार के शत्रु ने राष्ट्रभावना या भूमि पर आक्रमण किया, तभी २ आर्यसमाज ने जनता के विचारों में वीरभावना का सन्देश देकर अपने देशभक्ति के कर्तव्य का पालन किया।

आज भारत के अपने ही पड़ोसी देश पाकिस्तान ने सारी मर्यादाओं को तोड़ कर टैंकों के बल पर भारत की भूमि पर आक्रमण किया है। रणकच्छ के इलाके में संग्राम की ज्वाला भड़का दी है। सीमा का अतिक्रमण करके भारतीय इलाके में आगया। किन्तु हमारे भारतीय सेना के वीरों ने अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए वीरता का परिचय देते भारत के भाल को ऊंचा किया है। शत्रु दल को मार २ खदेड़ दिया है। राष्ट्र की सेना ने अपनी पुरानी वीरपरम्परा का परिचय दिया है। हमारा देश कमजोर नहीं है। चीन ने धोखे से अपना काम किया। उस से गठजोड़ करने वाले पाकिस्तान ने भी भारत को समझने में भूल की है। उसे यह भ्रम हो गया कि भारत शांतिवादी है। हो सकता है कि इसे चीन आदि राष्ट्र की शह हो। किन्तु अब उस की आंखें सदा के लिए खुल जानी चाहिएं। भारत शांतिवादी है और संसार के युद्ध को रोकने में इसका बड़ा हाथ है। शांति के स्थापन के लिए यह अपने प्रयत्न भी जारी रखेगा—किन्तु अन्याय तथा अत्याचार के सामने इस ने कभी मौन हो कर सिर नहीं झुकाया। हमारे देश का इतिहास इस बात की गवाही देता है कि हम विश्वप्रेमी हैं। किन्तु यह भी सब जानते हैं कि जब हमारे साथ कोई भी किसी दलबल के नशे में अन्याय करता है, तो उस समय हम अपना प्रचण्ड दण्ड-रूप भी दिखाने में देर नहीं करते। अन्याय में तो हमने रावण, कंस, जरासन्ध, और कौरवदल तक को भी न छोड़ा। अन्यायी के अन्याय, अत्याचारी के अत्याचार को समाप्त करने के लिए भारत-रूपी रुद्र रुद्ररूप बना कर अपनी तीसरी अग्नि की आंख खोल कर उसके अन्याय को भस्म कर डालता है। पाकिस्तान ने कितनी बार भारतीय सीमाओं का अतिक्रमण किया। अब तो उसने निर्लज्ज एवं कृतघ्न होकर टैंकों से आक्रमण करने का दुस्साहस किया है। उसे भारत के सैनिकों की वीरता का जल्दी परिचय मिल जाएगा।

सेना अपना काम कर रही है। हमारा भी देश रक्षा के प्रति कर्तव्य है। हम भी इस स्थिति में सरकार को पूर्ण सहयोग देवें। कोई ऐसी बात न करें जिस से कोई कठिनता पैदा होवे। जनता में वीरभावना भर दें। वीरो ! तैयार रहो। अपनी मातृ-भूमि की रक्षा तथा सम्मान का व्रत लेकर उसे क्रियात्मिक रूप दो। पाकिस्तान को ऐसा छटी का दूध याद करा दो कि वह फिर कभी भारत की ओर बुरी दृष्टि से देखने का साहस न कर सके। आज देश हम से यही चाहता है वीरो ! उठो। अब विलास, नाचने, भंगड़ा डालने, शराब में मदमस्त रहने तथा भोगों में फंसने का समय नहीं। मातृ-मन्दिर का मान सर्वप्रथम है। आर्यसमाजें प्रत्येक स्थान पर राष्ट्ररक्षा सम्मेलनों का आयोजन करें। —त्रिलोकचन्द्र

वेद अनुसन्धान को क्रियात्मिक रूप देवें।

वेद और विज्ञान का समन्वय करना है

सभा मन्त्री श्री पं. सत्यदेव जी विद्यालंकार

महात्मा हंस राज जन्म शताब्दी के अवसर पर वेद सम्मेलन में आर्य प्रादेशिक सभा के मान्य मन्त्री श्री पं. सत्यदेव जी विद्यालंकार एम. ए. ने जनता के सामने एक आवश्यक भाषण में एक विचारणीय विषय पर बोलते हुए कहा—

आज कल हम अपनी वेदी से, भाषणों तथा वेद सम्मेलनों में एक बात कहा करते हैं कि आज के पढ़ाये जाने वाले इतिहास को बदला जाये। वेदों के बारे में पढ़ाई जानी वाली विचार शैली को बन्द किया जाये। ऊपर के स्थानों में जब हमारे ही लोग बैठे हैं तो फिर क्यों ऐसा इतिहास तथा ऐसी वेदों के सम्बन्ध में असत्य धारणाएं पढ़ाई जाती हैं। उन को तबदील क्यों नहीं किया जाता। उसके बारे में एक बात कहनी है। उसे सदा स्मरण रखियेगा।

बात यह है कि हमारे इतिहास की कड़ियां मिलानी होंगी। जब तक संसार के सामने पुरातन इतिहास की कड़ियां क्रमवार रखी नहीं जाएंगी तब तक आधुनिक विद्वान् हमारी बातें सुनने को कभी तैयार नहीं होंगे। आचार्य रामदेव जी ने भारत का इतिहास लिखा था। किन्तु यदुनाथ सरकार उसे इतिहास नहीं मानते। वह कहते हैं कि वह और कुछ हो सकता है परन्तु इतिहास नहीं हो सकता। आज जो बड़े-बड़े लोग शिक्षा स्थानों पर बैठे हैं। उनका दिमाग वेद को उस रूप में नहीं मानता जिस रूप में हम वेद को मानते हैं। उन लोगों को पहले Convince कराना होगा। स्वर्गीय पं. ब्रह्मदत्त जिज्ञासु ने ऋषि के अष्टाध्यायी शैली के एक सत्य को प्रमाणित करने के लिए अपना सारा जीवन लगा दिया था। तब कहीं जाकर लोग ऋषि की उस सच्चाई के कायल बने। ऋषि दयानन्द ने वेद को सब सत्य विद्याओं का पुस्तक लिखा व माना है। सारे विज्ञान वेदों में हैं। हमें उन सिद्धान्तों को को प्रमाणित करना होगा। उसके

(शेष पृष्ठ ६ पर)

महात्मा हंसराज जी नम्रता की मूर्ति थे

उन से मैंने जीवन में बहुत कुछ सीखा

शास्त्रार्थ महारथी श्री पं० शान्तिप्रकाश जी

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के वेद प्रचार अधिष्ठाता श्री पं० शान्ति प्रकाश जी, शास्त्रार्थ महारथी ने महात्मा हंसराज शताब्दी समारोह के धर्म प्रचार सम्मेलन में बड़े ही मार्मिक शब्दों में अपने जीवन के अनुभवों को लेकर श्रद्धा-ञ्जलि भेंट करते हुए कहा—

राष्ट्र निर्माण के लिए वेद के भद्रमिच्छन्त ऋषयः—मन्त्र में आता है कि तपस्वी तथा दीक्षित महात्मा राष्ट्र को बहुत ऊंचा ले जा सकते हैं। पूज्य महात्मा हंसराजजी ने अपने सारे जीवन में घोर तपस्या की। सारी आयु एक पाई भी नहीं ली। उस महान् त्यागी और परम तपस्वी के त्याग-तप का ही यह प्रभाव है कि आज शिक्षा क्षेत्र में इतना विस्तार है। जब मैं पढ़ता था तो मुझे इच्छा हुई कि मैं महात्मा जी के दर्शन करूं। मेरे मन में प्रचारक बनने की इच्छा थी। हम बच्चे थे और उसी विद्यार्थी वेश में ही जाकर महात्मा जी से मिले। पूज्य महात्मा जी ने हमारे नमस्ते का उत्तर उठकर हाथ जोड़कर नमस्ते के रूप में दिया। हमने सादर पूछा कि आप ने उठने का कष्ट क्यों किया हम तो बच्चे हैं। वे गम्भीरता से बोले देखो बेटे! यदि मैं उठ कर नम्रता का परिचय न दूं तो नम्रता का यह गुण तुम्हारे जीवन में कैसे आयेगा? जो बात मैं देना चाहता हूं उसे सर्वप्रथम मुझे कर के दिखानी चाहिए। आज भी महात्मा जी के वे शब्द मेरे कानों में गूंजते हैं। उनका पढ़ाया हुआ क्रियात्मक पाठ मेरे जीवन को मार्ग दिखाता रहता है। वे नम्रता, की सजीव मूर्ति थे।

राष्ट्र पर कोप की लहर सवार थी। स्वामी श्रद्धानन्द जी पर गोली चलाई गई थी। सारे देश में हल-चल मच गई। लाहौर से समाज के सब बड़े २ लोग देहली चले गए। आर्य जनता बड़ी उत्तेजित थी। उस समय पूज्य महात्मा जी का महान् व्यक्तित्व ही था जिस ने सारी जनता के जोश व अग्नि ज्वाला को अपने प्रभाव-अमृत से शान्त रखा। महात्मा जी का जीवन प्रभाव आज भी मन में श्रद्धा की तरंगें पैदा कर देता है।

महात्मा हंसराज जी सच्चे नेता थे। योगी थे। उनका योग पर्वत कन्दरा का नहीं था। योगः कर्मसु कौशलम्, कर्म में कुशलता पाकर उस में लगे रहना योगी की परिभाषा है। महात्मा जी समाज के पिता थे। कर्मयोगी थे। बन्धन मुक्त थे। उन्होंने जीवन भर महान कर्म किया। शिक्षा का भी और धर्मप्रचार का भी। लोकसेवा का भी तथा सभा का भी। परन्तु क्या मजाल कि अपना कुछ स्वार्थ सिद्ध किया हो। समाज के थे, समाज के लिये जिये तथा समाज का ही काम किया। यजुः के शब्दों में उनका जीवन यज्ञमय था।

वेद का प्रचार परम धर्म परम कर्तव्य है

विश्व-कल्याण केवल वेदों से ही होगा

आचार्य प्रियव्रत जी गुरुकुल कांगड़ी का भाषण

हंसराज शताब्दी पर वेद सम्मेलन में गुरुकुल कांगड़ी के आचार्य श्री पं. प्रियव्रत जी वेदवाचस्पति ने वेदों के बारे में अपना जो सभापति पद से बोलते हुए गम्भीर एवम् जीवन दायक भाषण दिया था। उसका प्रथम भाग तो गत अंक में दिया जा चुका है। दूसरा भाग इस अंक में दिया जा रहा है। —सं०

महर्षि पतञ्जलि भारतीय जीवन में बड़ा ऊंचा स्थान रखते हैं। उन्होंने तीन रोगों का इलाज किया। शरीर के लिए चरक जैसा आयुर्वेद का महान् ग्रंथ बनाया। मन को एकाग्र व पवित्र बनाने के निमित्त योग दर्शन तथा वाणी को शुद्ध बनाने के लिए महाभाष्य लिखा। शरीर, मन, वाणी तीनों के रोगों की चिकित्सा की। पाणिनीय अष्टाध्यायी में भारतीय वैज्ञानिक प्रतिभा चरम सीमा तक पहुंच गई थी। संसार की सारी भाषाओं के ग्रंथ यदि डुबो दिये जाएं। उनकी डिक्टेशनरियां तथा व्याकरण की पुस्तकें बचा रखी जाएं तो उनकी उनके द्वारा पूरी-पूरी भाषा नहीं बन सकेगी। उनका सारा शब्द भण्डार नहीं बनेगा। किन्तु इस ओर भारत का यदि सारा संस्कृत साहित्य समाप्त हो जाए पर पाणिनीय अष्टाध्यायी की मूल पुस्तक ही बाकी बच जाए तब भी संस्कृत के साहित्य का सारा शब्द-भण्डार अष्टाध्यायी से उसी प्रकार का बनाया जा सकता है। महाभाष्य से सारे शब्द ठीक तरह निकल आते हैं। इतना बड़ा विद्वान् पतञ्जलि अपने महाभाष्य में वेद के बारे में कितनी कमाल की बात लिखते हैं—एकः शब्दः सुप्रयुक्तः सम्यग्ज्ञातः स्वर्गे लोके कामधुक् भवति। वेद का एक सूक्त, एक मन्त्र नहीं २ एक शब्द भी यदि भली भान्ति पढ़ लिया जाये, मनन कर लिया जाये तब भी वह सब साधना को सिद्ध करने वाला होगा है। वेद सही अर्थों में कामधेनु है, कल्पलता है। वेद का स्वाध्याय जीवन को मालामाल कर देता है। ऋषियों की यह परम्परा थी कि वेद से ही प्रत्येक काम का उपदेश देते थे। ऋषि दयानन्द के सामने भी यही परम्परा थी। वेद निष्ठा की पुरातन परम्परा का पालन किया। यदि कल्याण चाहते हो तो वेद के अनुकूल जीवन बनाओ। वेद स्वयं कहता है कि—यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्य..स्वाय चारणाय च। सब को वेद पढ़ाओ। अपनों तथा परायों को भी। सा प्रथमा संस्कृति विश्ववारा—वेद First Culture है। इस का प्रवाह अच्छिन्न रूप से बहता है। वेद बीच में लुप्त हो गए थे। ऋषि दयानन्द ने वेद संसार को दिया हमारे ऊपर जिम्मेदारियां सौंपी थीं। महात्मा हंस राज जी, स्वामी श्रद्धानन्द जी, पं. गुरुदत्त जी ने इसी वेद के लिए अपना जीवन अर्पित किया। आप को पता ही है कि नालन्दा विश्वविद्यालय की पुस्तकों को निरन्तर ६ मास तक जलाया गया। विरोधियों ने हमारे साहित्य को मिटाने के लिए क्या कुछ नहीं किया। महात्मा हंसराज जन्म शताब्दी के शुभावसर पर हमारा कर्तव्य है कि हम वेद निष्ठा का संकल्प लेवें। वेद प्रचार हमारे जीवन का प्रमुख कार्य होना चाहिए।

परमेश्वर का ज्ञान वेद भी नित्य है

आज हम प्रदर्शनी में अधिक लगे हैं

श्री प० सत्यप्रिय शास्त्री हिसार का भाषण

महात्मा हंसराज जन्मशताब्दी के समारोह में वेद सम्मेलन में वेद के बारे में अपना गम्भीर भाषण देते हुए दयानन्द ब्राह्ममहाविद्यालय हिसार के प्राध्यापक श्री पं० सत्यप्रिय जी शास्त्री जी ने अपने प्रवचन में कहा—परमेश्वर ने यह विशाल जगत् बनाया। इसका उपयोग करने के लिए वेद रूप ज्ञान भी प्रदान किया। वेदज्ञान के बिना संसार के नानाविध पदार्थों के सदुपयोग करने का परिचय कैसे मिलता। वेदों से प्रत्येक वस्तु के भलीभांति उपयोग करने का ज्ञान मिलता है। जो पदार्थ नित्य होता है, उसके गुण भी नित्य होते हैं परमेश्वर नित्य है अतः उसका ज्ञान वेद भी नित्य है। ईश्वर सत्य है उसके वेद में भी सब सत्य विद्याओं का भण्डार भरा हुआ है। संसार में मनुष्यों की व्यवस्था बदलती रहती है। समय-समय पर उसमें नाना प्रकार के परिवर्तन आते रहते हैं। परन्तु परमेश्वर के बनाये नियमों में किसी प्रकार की तबदीली नहीं हुआ करती। जैसे नियम बना दिये सदा उसी तरह के रहते हैं। जो काम जिस इन्द्रिय से पहले समय में होता था, वही काम उस इन्द्रिय से आज भी वैसा होता है। आंख से पूर्व के लोग भी देखने का काम लेते थे, आज भी आंख देखने का काम देती है। उस नियम में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। यही बात सारी इन्द्रियों के बारे में कही जा सकती है। भगवान् के सारे काम तथा नियम अटल हैं। वह नित्य है उसके बनाये प्रकृति के नियम भी नित्य हैं। उनमें कोई गड़बड़ नहीं हो सकती।

वेद परमात्मा का दिया नित्य ज्ञान है। वे लोग भूल में हैं जो वेदों के शब्दों को देख कर इतिहास की कल्पना करने लगते हैं। वेदों में अनित्य इतिहास नहीं है शब्दों को देख कर लौकिक पुरुषों के इतिहास की मनमानी कल्पना कर लेना बुद्धिमत्ता नहीं। संसार के पदार्थों के नाम वेद के शब्दों को ले कर रखे गये हैं। ऋषि दयानन्द ने इस रहस्य तथा तत्व को समझा। वह योगी थे, ऋषि थे। वेद के यौगिक अर्थों को ले कर वेदार्थ को समझाने की शैली सब के सामने रखी। वेद में आये हुए अश्व, अहि, गौ, अग्नि आदि शब्दों को ले कर लौकिक अर्थों से भिन्न यौगिक अर्थ कर के वेद की महत्ता का प्रतिपादन किया। आरम्भ मे तो कई लोग चिल्लाये पर बाद में ऋषि के सामने मस्तक झुका दिया। पौराणिक विद्वान् भगवत् पादाचार्य ने अपने सामवेद के भाष्य में ऋषि पथ पर चलते हुए यौगिक अर्थ ही किए हैं। आज विश्व उसी ओर मुड़ता जा रहा है। किन्तु हम प्रदर्शनी दिखाने में अधिक लगे हुए हैं। वेद का बड़ा काम हम ने अभी करना है। सब से बड़ा काम यही है अन्य सब कुछ गौण है।

विश्व वेद प्रचार महामण्डल

(के पदाधिकारियों का निर्वाचन)

संरक्षक—पं. अलगूराय शास्त्री तथा डा० युद्धवीर सिंह प्रधान—देव प्रकाश पातंजल मन्त्री—धर्मवीर जी प्रचारमंत्री—श्री देवव्रत धर्मेन्द्र कोषाध्यक्ष—सेठ लक्ष्मीचन्द

बिहारीलाल—उपमन्त्री

मैंने सब कुछ आर्यसमाज से पाया

अपनी संस्कृति के परमभक्त बनो

मार्शल-ला बन्दी श्री रत्नचन्द जी अमृतसर

अमृतसर जलियांवाला बाग कांड पर जब मार्शल-ला लगा। तब आर्यसमाज का यह शेर भी बन्दी बनाया गया। ९०-९२ वर्ष के यह मान्य वृद्ध श्री महाशय रतनचन्द जी इस अवस्था मे भी स्वर्गीय महात्मा हंसराज जन्मशताब्दी के समारोह पर जालन्धर पधारे तथा जनता में भाव-भरी आंखों और भरे दिल से जो उदात्त सन्देश दिया। उसका एक २ शब्द जीवन का पाठ है। इस बलिदानी वीर के विचारों को जगत के प्रेमियों तक पहुंचाया जा रहा है—स०

मेरी आयु इस समय ९० वर्ष के ऊपर है। इस वृद्धावस्था में भी मैं अमृतसर से यहां जालन्धर में इसलिए आया हूं ताकि मैं उस तपस्वी व त्यागी महात्मा हंसराज की जन्मशताब्दी का यह सुन्दर समारोह अपनी आंखों से देख सकूं तथा मैं भी अपने दिल के भाव श्रद्धांजलि के रूप में महात्मा जी के प्रति प्रकट कर सकूं। यही भावना मुझे वहां से आपके बीच खींच कर ले आई है। ऐसे अवसर कभी २ ही आते हैं। भाग्यशाली हैं हम जो कि ऐसे समारोहों में शामिल होकर अपने कर्तव्य का पालन करते हैं। मुझे भी बड़ी खुशी है कि मैं आज इस जल्से में शामिल हो रहा हूं। अपनी आंखों से यह सुन्दर दृश्य देख रहा हूं।

मैं महात्मा जी का भक्त हूं। मुझे बहुत सजाएं हुईं किन्तु मुझे जीवन में जो भी देश की सेवा करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। वह आर्यसमाज की कृपा से ही तो हुआ है। यदि आर्यसमाज न होता पता नहीं क्या बनता। मैंने समाज में आकर यश प्राप्त किया। लोग मेरी थोड़ी बहुत प्रशंसा करते हैं, यह मेरी नहीं है, इसका सारा श्रेय आर्यसमाज को ही मिलता है। मेरा जो कुछ भी यश है तो आर्यसमाज की कृपा से। शुभ कार्य के लिए पहिले परिश्रम तो करना ही पड़ता है। विद्यार्थी पहिले तप तपता है फिर उसे कुछ मिलता है।

मैं आज ही आया हूं। आप से निवेदन कर रहा हूं कि मैं महात्म हंसराज जी के जीवन से ही आकर्षित व प्रभावित हुआ हूं। मैं जब मार्शल-ला में बंधा हुआ ले जाया जा रहा था। तब हमने कहा कि हम पैदल जाएंगे। जब अनारकली में महात्मा जी मिले। आशीर्वाद देकर बात कही—देखो! 'देश के लिए कष्ट पाया है। परन्तु एक बात का ध्यान रखना कि अपनी भारतीय संस्कृति की ओर लोगों को, विशेष कर युवकों को खींचने का प्रयत्न करना।'

आज सैक्यूलरवाद में फंस कर लोग विशेष कर आज के युवक आर्य-संस्कृति से दूर भागते जा रहे हैं। आपने इनको संस्कृति पथ पर लाना है। यही महात्मा जी का उपदेश है। यही बात कहने मैं यहां आया हूं इस वातावरण में आर्य संस्कृति को बचाए रखो।

—

वेद प्रचार को क्रियात्मक रूप दें

वेदवाणी को सब जगह पहुंचाओ

(वेद सम्मेलन में प्रिंसिपल ज्ञान चन्द जी हिसार का भाषण)

महात्मा हंस राज शताब्दी में श्री प्रियव्रत जी आचार्य गुरुकुल कांगड़ी की प्रधानता में जो शानदार वेद-सम्मेलन हुआ लोगों के मन पर उस की छाप बनी रहेगी। इस में सभा मन्त्री श्री पं. सत्य देव जी विद्यालंकार एम. ए., प्रिं. ज्ञान चन्द जी एम. ए. आचार्य दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार, पं. राम विचार जी एम. ए. हिसार, पं. सत्यप्रिय जी शास्त्री, पं. ओं प्रकाश जी महोपदेशक सभा, पं. शान्ति प्रकाश जी वेद प्रचाराधिष्ठाता आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, पं. त्रिलोक चन्द्र शास्त्री, कुमारी निरूपमा अम्बाला, श्री दयानन्दार्य एम. ए., श्री सत्यपाल भिक्षु जी ने भाग लिया। परमधर्म वेद के बारे में सुन्दर विचार रखे गये। प्रिंसिपल ज्ञान चन्द जी एम. ए. ने अपने सारगर्भित भाषण में कहा—

वेद के सम्बन्ध में मैं तीन बातें कहना चाहता हूं। तैत्तिरीयोपनिषद् में आता है कि आचार्य कुल में रह कर विद्या समाप्त करने पर ब्रह्मचारी को वापस लौटते समय मुख्यादेश दिया जाता था उस में आचार्य कहते थे कि—स्वाध्यायान्मा प्रमदः। वेद के पठन पाठन में कभी छुट्टी न करना। जीवन पर्यन्त वेद का स्वाध्याय करते रहना, आवश्यक है।

२—दूसरा उपदेश शतपथ में आता है कि वेद का स्वाध्याय करने वाला परमचिकित्सिक आत्मनो भवति अपना वैद्य स्वयं बन जाता है। उसके जीवन में रोग पैदा ही नहीं होते। यदि बीमारियां या बुराईयां आती भी हैं तो उनका इलाज वेद का स्वाध्यायी स्वय कर लिया करता है। ऋषि ने वेद के पढ़ने पढ़ाने सुनने सुनाने को परमधर्म लिखा है। जहां तक हो सके वेद के स्वाध्याय को जीवन में धारण करो। वेद के स्वाध्याय के बिना जीवन उस पुष्प के समान है जिस में और तो सब कुछ है पर सुगन्धि नहीं है। वेद के बिना मानव जीवन गन्धहीन है। मधुमय नहीं बन सकता।

३—तीसरी बात यह कहनी है कि वेद में स्वयं उपदेश है कि यथेमां वाचं कल्याणीम्—वेद वाणी को सब के पास पहुँचा दो। यदि वेद का केवल यही मन्त्र ही बचा होता तब भी वेद संसार में सब से ऊंचा माना जाता। जो आनन्द मुझे वेद के स्वाध्याय में आता है वह और किसी चीज में नहीं आता। वेदों के सरल सूक्त जनता तक पहुंचाये जायें तो बड़ा लाभ होगा। लोगों में इस की बड़ी भूख है। उसे शान्त करने के लिए वेद के प्रचार की बड़ी आवश्यकता है। वेद प्रचार का कोई क्रियात्मक पहलू निकालें। **We could make it popular.** इसे सब तक पहुंचाया जाये। तभी कल्याण होगा और तभी सम्मेलन की सफलता होगी।

—:—

वेद अनुसन्धान को क्रियात्मक रूप देवें

(पृष्ठ ३ का शेष)

लिए बड़े-बड़े विद्वान् इस ओर लगे तभी प्रमाणित होकर संसार को इस विचार का हम बना पाएंगे। आर्यसमाज के विद्वानों को चाहिए कि वेद को सब विद्याओं का पुस्तक सिद्ध करने के लिए क्रियात्मक रूप देवें। इस ओर विशेष ध्यान देवें। आज का युग वैज्ञानिक है। विज्ञान ने बड़ी उन्नति की है। मैं आपसे अपने अनुभव की बात कहता हूं कि आज हमें वेद के काम को प्रमुख मानकर चलना होगा। इसके लिए बहुत कार्य करना पड़ेगा। वेद का सारे विज्ञानों के साथ सम्बन्ध है। इसकी विशेष खोज करनी होगी। ऋषि दयानन्द ने आर्यसमाज की स्थापना इसी वेद प्रचार के प्रमुख काम के लिए की थी। उनके जीवन का अपना ध्येय भी वेद प्रचार था। परन्तु अब आर्यसमाज ने प्रमुख वेद के काम को गौण तथा गौण कामों को प्रमुख मान लिया है। काम कैसे बनेगा। आज हम वेदनिष्ठा की दीक्षा लेकर जावें।

सच्चे संन्यासी को मेरा...

(पृष्ठ २ का शेष)

आन्दोलन ने कितने बड़े २ नेता दिये हैं? उस समय बिजली का युग न था फिर भी कितना उन्नति थी। आज बिजली है पर चरित्र नहीं है। इस बात पर हमें विचार करना चाहिए।

महात्मा हंसराज जी सुधारक थे, बलिदानी थे। आज सुधार की बड़ी आवश्यकता है। आर्यसमाज ने बड़ा काम किया। आज महात्मा जी के प्रति श्रद्धांजलि भेंट करता हूं। त्यागमय जीवन था। मैं स्वय भी उनके चरण चिन्हों पर चलूं। उनका प्रकाश मुझे मार्ग दिखाता रहे। भगवान से मेरी यही प्रार्थना है।

आर्य विद्या सभा, चित्रगुप्त मार्ग, नई दिल्ली

आर्य विद्या सभा का साधारण आगामी अधिवेशन, श्रीयुत डाक्टर गोवर्धन लाल जी दत्त, प्रधान सभा की आज्ञानुसार शनिवार, ८ मई १९६५ सायंकाल ठीक चार बजे डी. ए. वी. कालेज प्रबन्धकर्त सभा के कार्यालय में होना निश्चित हुआ है।

सभामन्त्री, श्री प्रि. राजेन्द्रनाथ जी चोपड़ा, अन्तरंग सभा के सभी सदस्यों को ठीक समय पर पधारने व अधिवेशन में सक्रिय भाग लेने के लिए आमन्त्रित करते हैं।

डाक द्वारा सदस्यों को सूचना मन्त्री जी की ओर से भेजी जा रही है, समय ५ के स्थान चार बजे सायंकाल निश्चित हुआ है। सदस्य समय परिवर्तन नोट कर लें। —निवेदक देवराज

महाजन एजुकेशनल एडवाईजर

आर्य कन्या महाविद्यालय बड़ौदा

नवीन प्रवेश

आर्य कन्या महाविद्यालय हिन्दी माध्यम विभाग के नवीन प्रवेश के लिये प्रार्थना पत्र ता. ३० मई तक आ जाने चाहिए वार्षिक शुल्क ६०० रु० है।

मैट्रिक पास कन्याएं व्यायाम महाविद्यालय के गुजरात सरकार मान्य सार्टीफीकेट आफ फिजीकल एज्युकेशन के (c. p. ed.) के एक वर्ष के कोर्स में भी प्रविष्ट हो सकेंगी।

संस्कृत के साथ मैट्रिक उत्तीर्ण कन्या गुजरात सरकार मान्य हमारे आयुर्वेद महाविद्यालय में आयुर्वेद प्रवीण पांच साल के कोर्स में प्रविष्ट हो सकेंगी।

सब संस्थाएं आर्य कन्या महाविद्यालय के अन्तर्गत हैं। आश्रम जीवन में संस्था के नियमों के आधीन प्रवेश मिल सकेगा। आवेदन पत्र भेजें।

आचार्या

आर्य कन्या महाविद्यालय,

आत्माराम पथ बड़ौदा

दिल्ली की भाषा और

(श्री रघुवीर सिंह जी शास्त्री, सम्राट प्रेस, देहली)

जनसंघ ने दिल्ली की द्वितीय भाषा पंजाबी की मांग का प्रस्ताव कर एक ऐसा अप्रिय विवाद आरम्भ कर दिया है जिससे हिन्दी के हित को ही नहीं अपितु जनसंघ की ख्याति को भी भारी क्षति पहुंची है।

जनसंघ की इस मांग से आश्चर्य एवं भ्रम दोनों तो फैले ही हैं, साथ ही पंजाब एवं दिल्ली में हिन्दी के पक्ष को भारी आघात लगा है। सन् ५७ में पंजाब में आर्यसमाज द्वारा चलाये गए प्रभावशाली हिन्दी आन्दोलन की गूंज अभी मन्द नहीं पड़ पाई है। इस आन्दोलन में जनसंघ ने आर्यसमाज के साथ कन्धे से कन्धा मिला कर काम किया था। पर्याप्त संख्या में जनसंघ के नेता तथा कार्यकर्ता जेलों में गए और सरकारी दमनचक्र के शिकार बने।

इस आन्दोलन में पंजाब की भाषा समस्या के सम्बन्ध में हमारा पक्ष यह था कि पंजाब की बहुसंख्यक जनता की भाषा हिन्दी है। किसी एक वर्ग के लोग यदि साम्प्रदायिक आवेग के वशीभूत होकर गुरुमुखी लिपि में लिखित पंजाबी को अपनी भाषा कहें तो तो कोई आपत्ति नहीं। सबको अपनी भाषा के सम्बन्ध में स्वतंत्रता होनी चाहिए। इस वर्ग की भावनाओं का सम्मान करते हुए ही हमने यह भी स्वीकार किया था कि जालन्धर क्षेत्र में जहां उस वर्ग आबादी है, वहां हिन्दी तथा गुरुमुखी लिपि में पंजाबी दोनों ही भाषाएं प्रशासन एवं शिक्षा दोनों क्षेत्रों में चालू रहें। परन्तु हरिहाणा तो विशुद्ध हिन्दी भाषी क्षेत्र है। सम्भवतः एक दो प्रतिशत ऐसे लोग मिल जाएं जो किसी आग्रहवश पंजाबी को अपनी भाषा कहें। अतः इस क्षेत्र में केवल हिन्दी भाषा ही रहे। यहां भी कोई पंजाबी पढ़ना चाहे तो किसी को कोई आपत्ति नहीं हो सकती, परन्तु इन दो प्रतिशत की खातिर ९८ प्रतिशत पर पंजाबी नहीं लादी जानी चाहिए। सरकार ने सारे पंजाब में पंजाबी की अनिवार्यता का जो कानून लागू किया था, उसी को समाप्त करने के लिए यह आंदोलन चलाया गया था, जिसमें हिन्दी प्रेमी जनता ने भारी बलिदान एवं त्याग का परिचय दिया था। हमारा स्पष्ट नारा था कि हमारी भाषा पंजाबी कदापि नहीं है, केवल हिन्दी ही है। पर हम भाषा के सम्बन्ध में सबकी स्वतन्त्रता के पक्षपाती हैं, सबकी भावनाओं का सम्मान करते हैं। न हम किसी पर हिन्दी लादना चाहते हैं और न हिंदी भाषियों पर पंजाबी का लादा जाना पसन्द करते हैं।

इस पृष्ठ भूमि में जबदिल्ली प्रदेश जनसंघ का नया प्रस्ताव पढ़ते हैं तो आश्चर्य एवं खेद की सीमा नहीं रहती। यदि दिल्ली की भाषा के प्रसंग में पंजाबी की मांग के लिए यह हेतु दिया जाता है कि ८० प्रतिशत जनसंख्या पंजाबी है तो फिर पंजाब में किया गया वह संघर्ष किसी भी प्रकार युक्तिसंगत नहीं ठहरता। क्या वह इतना भारी बलिदान एवं जनाधन की आहुति सब अविवेकपूर्ण था। दिल्ली प्रदेश के जनसंघ के इस प्रस्ताव के लगभग साथ ही साथ पंजाब विधान सभा में भी जनसंघी सदस्य डा० बलदेवप्रकाश ने कहा है कि पंजाब का प्रत्येक शहर तथा गांव द्विभाषी है अर्थात हिन्दी और पंजाबी बोलने वाला है। डा० बलदेवप्रकाश की इस स्थापना के पीछे यही हेतु प्रतीत होता है कि पंजाब के हिन्दी भाषी क्षेत्र में भी प्रायः सर्वत्र देश विभाजन के पश्चात् पंजाबी भाषा लोग पहुंच गये हैं। यदि डाक्टर साहिब की इसी बात को सत्य मानें तो इसका सीधा अर्थ यह है कि हरियाणा के अतिरिक्त सारे पंजाब की एकमात्र भाषा पंजाबी है। उनके मन्तव्य के अनुसार तो स्थिति इस प्रकार बनती है कि जालन्धर तथा पटियाला आदि क्षेत्रों की भाषा केवल पंजाबी है। और कुछ पंजाबी भाषियों के हरियाणा में बस जाने के कारण हरियाणा द्विभाषी हो गया है। स्थिति का इस से अधिक गलत एवं भ्रामक चित्रण नहीं हो सकता। यह पक्ष स्वयं परस्पर विरोधी है। किस आधार पर डाक्टर साहिब पंजाब के प्रत्येक शहर तथा गांव के द्विभाषी होने का दावा करते हैं। इस तर्क के अनुसार तो दिल्ली की प्रमुख भाषा पंजाबी ही होनी चाहिए। हिन्दी को अल्पसंख्यक जनता की भाषा मान कर तदनुरूप ही उसका स्थान निर्धारित किया जाना चाहिए। फिर यह बात यहीं तक क्यों रहेगी उत्तर प्रदेश के अनेक शहरों तथा राजस्थान के भी कुछ भाग में पंजाबी लोग बस गये हैं। वहां भी पंजाबी भाषा की मांग उठेगी। पंजाब और दिल्ली में तो एक प्रकार से जनसंघ ने हिंदी भाषा के अस्तित्व पर करारी चोट लगाई है। हिंदी का आधार ही सारा मानों समाप्त कर दिया है। जनसंघ ने आज वही वाणी बोली है। जिसे मास्टर तारासिंह बीस वर्षों से बोलते चले आ रहे हैं। इससे मास्टर तारासिंह की मरी साम्प्रदायिकता को मानो प्राणदान मिल गया है। पंजाब की हिंदी प्रेमी जनता के मन में एक भारी टीस कि हिंदी की रक्षा के लिए इतनी भारी कीमत चुकाने के पश्चात् भी उस कांग्रेसी शासकों के धोखे में पड़कर निराश होना पड़ा। जनता उसे दिन की प्रतीक्षा में है जब कि पंजाब के वर्तमान ढांचे में परिवर्तन हो और इस परिवर्तित परिस्थितियों में भाषा सम्बन्धी अन्याय एवं अनिवार्यता से मुक्ति पानेका अवसर मिले। परन्तु

जनसंघ के इस प्रस्ताव ने इसे और भी अधिक निराश कर दिया है। हिन्दी प्रेमी जनता को यह लग रहा है कि उससे तो वे कांग्रेसी शासक से अच्छे हैं जो तथा कथित पंजाबी क्षेत्र में भी हिन्दी का स्थान तो स्वीकार करते हैं जब कि जनसंघ के नये मन्तव्य के अनुसार तो उसका वहां अस्तित्व ही समाप्त हो जाता है। क्या जनसंघ को समझने में भी जनता भूल का ग्रास बनी है ! आवश्यक है कि अब जनता जनसंघ से स्थिति का स्पष्टीकरण करने की मांग करे। जनसंघ की इस नई मांग के पीछे क्या रहस्य है समझ में नहीं आता। क्या यही समझा जाये कि राजनैतिक संस्थाओं की कोई स्थिर नीति नहीं होती। मौलिक से मौलिक विसयों में भी वे अपना दृष्टिकोण बदलने पर कभी संकोच नहीं करते यदि उन्हें किसी राजनैतिक लाभ की आशा हो। हमारा जनसंघ के नेताओं से नम्र अनुरोध है कि वे अपने इस विचित्र प्रस्ताव पर फिर गम्भीरता से विचार करें और हिन्दी का पोषण करने वाले हाथों द्वारा उसकी हत्या होने से बचावें।

आचार्य मित्रसेन जी आर्य शास्त्री एम० ए०



...ए० के साथ ... का सम्पन्न हो रहा है। आप आधुनिक काल के लेखकों व कवियों में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं, नवयुवक होने के नाते आपकी लेखनशैली में वीर रस का आभास पाया जाता है। अब तक आप उच्चकोटि की आर्य विचारधारा की १० पुस्तकें लिख चुके हैं। आपके शुभ विवाह का समाचार सुनकर आर्यजगत को हार्दिक प्रसन्नता हुई है। आर्य जगत परिवार की ओर से नव-दम्पति को अनेकशः बधाई। हम आप के आर्य परिवार से आर्य जगत की उन्नति में सहयोग की पूर्ण आशा रखते हैं।

पुस्तक समीक्षा

रुद्रस्तोत्र अथवा

भक्त की पुकार

कीमत—५० नये पैसे

सम्पादक—वैद्य मोहनलाल जी आर्य प्रेमी अजमेर

उपरोक्त पुस्तक 'आर्य प्रेमी' मासिक पत्रिका का दीपावली विशेषांक है। यजुर्वेद के सोलहवें अध्याय के सम्पूर्ण मंत्रों का भावार्थ अत्तिमरी भाषा में दिया गया है। पुस्तक के नाम से ही इसकी उपादेयता प्रकट हो रही है। ईश्वर भक्त किस प्रकार मंत्रों से ईश्वर की आराधना करता हुआ अपनी तुच्छता को प्रकट करता है यही बताना इस पुस्तक का लक्ष्य है। पुस्तक के अन्त में महात्मा आनन्द स्वामी महाराज की कथोपरांत बोली जाने वाली आरती तथा अन्य सुन्दर प्रसिद्ध भजनों का संग्रह है। पुस्तक सर्वांगपूर्ण तथा गैटअप चित्ताकर्षक है। ईश्वर भक्तों के लिए अमूल्य निधि है।

प्राप्ति स्थान—सम्पादक आर्य प्रेमी, *P. B. 27*, अजमेर

सुशीला गीता शतक :—

ले०—सुशीला देवी एम. ए.

प्रकाशक—चमूपति साहित्य प्रकाशन विभाग आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, गुरुदत्त भवन जालंधर

मूल्य १ रुपया। पृष्ठसंख्या ११६

इस पुस्तक में लेखिका ने संस्कारों, पर्वों, सत्संगों आदि पर छात्र-छात्राओं के गाने योग्य नई पुरानी तर्जों पर १०० भाव पूर्ण गीतों को संकलित किया है। मुख-पृष्ठ मन-मोहक छपाई आदि की दृष्टि निर्दोष है।

आत्मानन्द लेखमाला—

ले० प्रि० रामचन्द्र जी जावेद एम० ए०। प्रकाशक आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब गुरुदत्त भवन जालन्धर।

मूल्य 1.25 N.P. पृष्ठ संख्या 928

उपरोक्त पुस्तक में स्वर्गीय पूज्य आत्मानन्द जी महाराज के कुछ लेखों को बड़ी विद्वत्ता के साथ संग्रह किया गया है। प्रत्येक लेख मानव जीवन को सार्थक बनाने वाला है। अध्यात्मवाद से पूर्ण है।

पंजाब का आर्यसमाज—

ले० श्री रामचन्द्र जी जावेद एम०ए० प्रिंसीपल एन. डी. विक्टर H/S स्कूल जालन्धर छावनी।

प्रकाशक— चमूपति साहित्य प्रकाशन विभाग आर्य प्रतिनिधि सभा गुरुदत्त भवन जालन्धर।

मूल्य 2 रुपए। पृष्ठ संख्या 128।

श्री जावेद जी का आधुनिक हिन्दी लेखकों में प्रमुख स्थान है। पुस्तक बड़ी छानबीन तथा परिश्रम के साथ लिखी गई है।

आर्य समाज के इतिहास काल को तीन भागों में विभक्त करके प्रत्येक काल के महापुरुषों के नाम पर उपकालों का नाम रखा गया है ऐसा करने से उस काल की विशेषता प्रकट होने लगती है। पुस्तक के अंत में परिशिष्ठ भाग जोड़कर सोने में सुहागा का काम कर दिया गया है। इसमें पंजाब की आर्य समाजों व शिक्षण संस्थाओं की विस्तृत सूची भी दी गई है। सभी समाजों तथा सभाओं के लिए अत्यंत उपयोगी है। सभी कालों के मुख्य व्यक्तियों के चित्र दिए गए हैं। पुस्तक सब प्रकार से उपयोगी व ग्राह्य है। सभा सोसाइटियों के लिए अमूल्य निधि है।

प्राप्ति स्थान—आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, गुरुदत्त भवन जालन्धर

आर्य समाज शोलापुर

२.४.६५ को प्रातः अशोक कुमार जी आर्य की अध्यक्षता में आर्य समाज स्थापना दिवस मनाया गया। श्री सत्यवीर जी शास्त्री व श्री अम्बा दास जी के भजन हुए तत्पश्चात् प्राध्यापक राजेन्द्र जिज्ञासु तथा श्री अशोक कुमार जी ने आर्य समाज के कामों, सिद्धान्तों व उद्देश्य पर प्रकाश डाला।

सायंकाल को हनुमान मन्दिर में तैलगू भाषी आर्य भाईयों ने आर्य समाज स्थापना दिवस मनाया। श्री बाबू सिंह जी आर्य, श्री लक्ष्मण जी के भजनों के पश्चात् श्री राजेन्द्र 'जिज्ञासु' ने हिन्दी में वैदिक धर्म व आर्यसमाज विषय पर भाषण दिया। माननीय श्री बालैया जी मलगम ने तैलगू में आर्य समाज का सन्देश सुनाया। युवकों ने इस समारोह में विशेष रूप से भाग लिया। तैलगू भाषी भाईयों में श्री बालमा जी के प्रयास से आर्य समाज का प्रचार बढ़ रहा।

—राजेन्द्र 'जिज्ञासु' उप-मन्त्री आर्यसमाज

श्री मद्दयानन्द धर्मार्थ औषधालय अलावलपुर की अपील

यह औषधालय १६४० से अलावलपुर व आस पास ही ग्रामीण जनता की निशुल्क सेवा कर रहा है। कई बार इसे बन्द करने का विचार उठा परन्तु इस इलाका में और कोई औषधालय न होने के कारण इस विचार को स्थगित करके २५००० रु० का स्थायी फण्ड स्थापित करने का निश्चय किया गया है। जो सज्जन कम से कम ५००/- की राशि एक साथ व चार भागों में देंगे वे औषधालय के संरक्षक माने जायेंगे। जो कम से कम १००/- देंगे, वे इसके परम सहायक समझे जायेंगे। उनका शुभ नाम पत्थर में सदा के लिए अंकित कर दिया जाएगा। अतः दानी सज्जनों से नम्र प्रार्थना है कि वे इस पवित्र कार्य में दान देकर अपनी कमाई सार्थक करें तथा गरीब जनता का आशीर्वाद प्राप्त करें

गुरु प्रसाद मन्त्री आर्य-समाज, अलावलपुर

मुद्रक व प्रकाशक श्री सन्तोषराज जी आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर द्वारा वीर मिलाप प्रैस, मिलाप रोड जालन्धर से मुद्रित तथा आर्यजगत कार्यालय महात्मा हंसराज भवन निकट कचहरी जालन्धरशहर से प्रकाशित मालिक—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर



टेलीफोन नं० ३०५७ [आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधिसभा पंजाब जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd. No. P. 1

एक प्रति का मूल्य १३ नये पैसे 15-5-65 वार्षिक मूल्य ६ रुपये (जन्मशताब्दी के लेख अन्य

वर्ष २५ अंक २१) २ ज्येष्ठ २०२२ रविवार—दयानन्दाब्द १४०— १६ मई १९६५ (तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

वेद सूक्तय:

न स्तेनैर्न वनर्गुभि:

जो लोग स्तेन हैं—चोर हैं, जिन का काम दूसरों के पदार्थों को चुराना है तथा जो वनर्गु: हैं - डाका डालने वाले बड़े २ डाकू हैं। बन में छिप कर आने जाने वालों को लूट कर जीवन बिताना जिन का काम है—ऐसों से मेरा कोई समझौता नहीं हो सकता। उन का मैं शत्रु हूं।

यमहं ग्राम मा विशे

देखो! मैं जिस भी ग्राम में, कस्बे या शहर में प्रवेश करता हूं। जिस भी स्थान पर मैं पहुंच जाता हूं। मैं अपना पैर टिका देता हूं। जहां पर मेरा आना जाना हो जाता है। मेरे वहां पहुंच जाने के बाद क्या होता है ? सुनो—

पिशाचास्तस्मान्नश्यन्ति

उस ग्राम से, कस्बे या शहर से जितने भी पिशाच रहते हैं, राक्षस या वैरी दुष्ट लोग होते हैं। वे सारे के सारे मुझे वहां आया देख कर भाग जाते हैं। मेरे सामने वे टिक ही नहीं सकते—वह स्थान छोड़ देते हैं।

अथर्ववेद से

वेदामृत

ओ३म् यां मेधां देवगणा: पितरश्चोपासते।
तया मामद्य मेधयाऽग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा।

यजु० अ० ३२ मन्त्र १४

अर्थ—हे पिता जी! (यां) जिस (मेधां) मेधा बुद्धि को (देवगणा:) देवता लोग (पितर:) पालन करने वाले पूज्य पितर लोग (च) और (उपासते) इच्छा करते हैं उपासना करते हैं। (तया) उसी मेधासे (माम्) मुझे (अद्य) आज (मेधया) मेधा बुद्धि व पवित्र ज्ञान से (अग्ने) हे पूजनीय परमेश्वर! (मेधाविनं) बुद्धि वाला (कुरु) कर दो, बना दो—यह प्रार्थना सत्य है।

भाव:—ज्ञान के भण्डार परमात्मन्! आज मैं आप के द्वार पर उस मेधा बुद्धि की याचना करने आया हूं, जिस की उपासना देवगण किया करते हैं। जिस की कामना तथा पूजा पूजनीय पितर लोग किया करते हैं। जिस को प्राप्त कर लेने से मेधावी व ज्ञानी बन जाते हैं। मैं भी उसी मेधा बुद्धि को मांगने आ पहुंचा हूं। भली-भांति देख लिया है। सब कुछ मिल जाये पर मेधा के बिना सब अधूरा है। अज्ञान के कारण सब कुछ गंवा बैठा हूं। इस मेधा के बिना अग्नि से लाभ के स्थान पर अपनी वस्तुओं को ही जला बैठा हूं। इस के बिना विद्या अविद्या बन गई है। मन से पाप कर्म करने लगता हूं। मानवता का मान समाप्त कर दिया है। कृपा करो! पिता जी! मेधावी बना दो। आज ही यह प्रसाद दे दो—सं०

ऋषि दर्शन

स एव राजन्य:

वह क्षत्रिय बनने का अधिकारी है नहीं। जो भोग विलास में पड़ा है और जो निर्बल कायर है। जिसे रक्षा कार्य में रुचि नहीं है, वह क्षत्रिय नहीं होता। जिसका बल देश धर्म रक्षण में लगे वही क्षत्रिय हो सकता है—

ब्राह्मणै: राजन्यैश्च

इस प्रकार के प्रभु प्रेमी ज्ञानी ब्राह्मणों से और अपनी इन्द्रियों को जीतने वाले वीर-नर, देश व धर्म की रक्षा हित अपना जीवन बलिदान करने वाले सच्चे ब्राह्मणों एवं शूरवीर क्षत्रिय लोगों से राष्ट्र का कल्याण तथा सुख होता है।

महाधन: संग्राम:

संग्राम, युद्ध को बड़े धनों वाला कहा गया है। राष्ट्र के जीवन में संग्राम का भी ऊंचा स्थान है। इस से देश में उत्साह, देशभक्ति की भावना तथा शत्रु दमन होकर अनेक धन सम्पत्तियों की प्राप्ति होती है—

भाष्य भूमिका से

अधिष्ठाता—श्री संतोषराज जी

सम्पादक—त्रिलोक चन्द्र शा

संसार के सभी मतों के विद्वानों ने जीवन के विषय में जो विचार किया, उन सब में ... आदि स्रोत परमेश्वर, प्रदत्त, वेदज्ञान रहा। वेद में मानव जीवन का सर्वाङ्गीण वर्णन है। जीव अपने शुभाशुभ कर्मों के फलस्वरूप विभिन्न शरीरों को प्राप्त होता है, जहां वह पूर्वकृत कर्मों का फल भोगने के साथ २ नवीन कर्मों का संग्रह करता जाता है। वेद ने मानव शरीर को अनेक उपमाओं से मण्डित किया है। इस शरीर को वेद ने 'दैवी नौ' कहा है। ऐसा समझिये कि यह अपार संसार एक महान् समुद्र है, जिसे हम मानव देह रूपी दिव्य नौका से पार कर रहे हैं। छिद्रवाली नौका बीच धार में डुबा देती है। हम भी यदि इस अपनी जीवन नैया में कामक्रोध लोभ रूपी छिद्र करेंगे तो अपने लक्ष्य तक न पहुंच कर बीच में ही डूब जायेंगे, हम बच नहीं सकते, अतः बचने के लिए इसे 'सुत्रामाणं' अर्थात् छिद्र रहित=न डुबाने वाली अर्थात् रक्षिका बनाओ। हम इस पर स्वस्तये=कल्याण के लिये आरूढ हैं न कि डूब मरने के लिये। अतः संसार सागर में तैरने वाले ओ मानव मांझी? तू अपनी नैय्या को डगमगाने न दे। देख यह समुद्र तूफानों तथा भयानक जन्तुओं से भरा है, तुझे सम्भल कर चलना होगा। अतः हाथ से धर्म एवं ईशोपासना रूपी बल्ली चप्पू को हाथ से न छोड देना, सदाचार की पतवार को सम्भाले रहना तभी तेरे जीवन की सार्थकता होगी। वेद ने इस शरीर को 'रथ' भी कहा है। 'रथेतिष्ठन्नयति वाजिनः पुरो यत्र यत्र कामयते०" यजु। इसी भाव को लेकर उपनिषत्कार ऋषि ने उपदेश दे गये—"आत्मानं रथिनं विद्धि शरीरं रथमेवतु" अर्थात् शरीर रथ है तथा आत्मा रथी है। इसका

शरीर की उपमा

ले०—श्री प० सत्यप्रिय जी शास्त्री सिद्धांत शिरोमणि

प्राध्यापक—दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार

ड्राईवर बुद्धि है, मन इसका हैंडल है तथा इन्द्रियां इसके घोडे अथवा चक्र हैं। धर्म रूपी सीधी सड़क है जिस पर इसे चलाना है। परन्तु अधर्म रूपी खाई खड्डों से बचाकर चलना है। साथ ही अन्त में हम ने इसे छोड़ना है क्योंकि यह तो यात्रा के लिए वाहन है, साधन है, साध्य नहीं। परन्तु सज्जनों आज हम पडाव को ही लक्ष्य समझ बैठे हैं, उसी का परिणाम है कि आज हम शरीर के स्वामी नहीं, प्रत्युत यह ही हमारा स्वामी है। अतः जहां चाहे हमें ले जा रहा है। तीसरी उपमा वेद ने इसे अयोध्या नगरी से दी है। 'अष्टचक्रा नव द्वारा देवानां पूरयोध्या' पाठक यह अयोध्या न समझें जिसका स्वामी तीन रानियों वाला राम का पिता दशरथ था, प्रत्युत इस अयोध्या का राजा वह दशरथ है जो कभी जीर्ण-शीर्ण नहीं होता है। हम सब इस नगरी के मालिक हैं। आवश्यकता इस बात की है कि हम अपनी इस नगरी को अयोध्या—अपराजिता बनायें। अर्थात् आसुरी प्रवृत्तियों के प्रबल आक्रमण से भी न हारने वाली बनायें। यह तब बनेगी, जब कि इसे 'देवानां पू' अर्थात् देवों की नगरी बनायेंगे। हमें चाहिये कि हम अपनी इस नगरी के नागरिक होने का अधिकार दैवी भावनाओं को ही दें, जब असुरी भावनायें इसकी नागरिका बनेंगी तभी यह पराजिता हो जावेगी। हम सोचें कि हम में से कितने हैं जो अपनी इस नगरी से आसुरी वृत्तियों को उजाड रहे होते हैं?

इस प्रकार वेद ने शरीर को जितनी भी उपमायें दी हैं। उन सबके द्वारा ही जीव और शरीर का पार्थक्य सिद्ध होता है। यह शरीर हमारा साधन है। हमने इसके द्वारा अपने आत्मिक लक्ष्य तक पहुँचना है। यदि हम इस को प्राप्त करके भी अपने जीवन लक्ष्य को न प्राप्त कर सके तो उपनिषत्कार ऋषियों के चेतावनी भरे शब्दों में हमारा सर्वस्व नष्ट हो गया—इह चेदवेदी दथ सत्य मस्ति न चेदि हावेदीन्महती विनष्टि।

वैदिक धर्म-गान मन भाया

ले०—श्री मित्रसेन जी आर्य एम० ए० साहित्याचार्य

(१)

वर वीणा के तार हिले हैं,
आर्य सुमन नव भाव मिले हैं।
ओम भरे अरविन्द खिले हैं,
क्या अनुपम गुंजार सुनाया।
वैदिक धर्म-गान मन भाया॥

(२)

जाति कर रही थी जब क्रन्दन,
हृदय कर उठा किस का स्पन्दन।
प्रकृति अश्रु से करती अर्चन,
जीवन का सन्देश सुनाया।
वैदिक धर्म-गान मन भाया॥

(३)

कोई भूला जन्त्र तन्त्र में,
कोई पश्चिम विषम मन्त्र में,
जीवन है केवल स्वतन्त्र में,
अपने-पन का ज्ञान कराया।
वैदिक धर्म-गान मन भाया॥

(४)

अरे विश्व का भ्रान्ति नहीं है,
परिश्रम निमम क्लान्ति नहीं है।
सत्य, स्नेह, सुख, शान्ति यही है,
जिस ने सब को प्रेम सिखाया।
वैदिक धर्म-गान मन भाया॥

आ. भा. आर्य संन्यासी सम्मेलन अजमेर

हरिद्वार में हुई "मण्डल" की बैठक के निश्चयानुसार अजमेर में होने वाली 'हीरक जयन्ती' के शुभ अवसर पर महर्षि उद्यान में दिनांक ५ जून को "अखिल भारतीय आर्य संन्यासी सम्मेलन" होगा। जिसके सभापति पद के लिये पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी जी से प्रार्थना की जा चुकी है। सर्वश्री स्वामी सम्पूर्णानन्द जी, स्वामी रामेश्वरानन्द जी प्रमुख और परिव्राजकाचार्य मेधार्थी स्वामी एम. ए. के पधारने की स्वीकृति प्राप्त हो चुकी है। विभिन्न सदस्यों की बैठक में रजिष्ट्री करने का अन्तिम निर्णय होगा। सब आर्य संन्यासियों को इस सम्मेलन में अवश्य आना चाहिए। ठहरने व भोजन की समुचित व्यवस्था होगी। प्रधान—

स्वामी आनन्द

सम्पादकीय—

आर्य जगत्

वर्ष २५] रविवार २०२१, १६ मई १९६५ [अंक २१

देश भक्ति के पथ पर

पाकिस्तान के विश्वासघाती तथा दूसरों के खूटे पर नाचते हुए विवेक शून्य अधिकारियों ने अपनी सेना द्वारा भारत के रण कच्छ की भूमि पर आक्रमण करके रक्त धारा प्रवाहित की है। अपनी करतूत का तो उसे पता लग ही गया है कि वह कितने पानी में है। अमरीका के टैंकों का प्रयोग करके भी उसे भारतीय वीर सेना के जवानों द्वारा दी गई मार जीवन तक भूलेगी नहीं। यदि हमारे देश के नेता मानवता के पुजारी न होते और पाकिस्तान के बुद्धि शून्य कर्णधारों के समान विस्तार वाद के सिद्धान्त को मानने वाले होते तो पाकिस्तान की इस शरारत का मजा उसे उसके इलाके में प्रविष्ट होकर कब का चखा चुके होते। किन्तु भारत अपनी मर्यादा रखता है। सारे विश्व को इसी मर्यादा पर चलाना चाहता है। यह तो निश्चित है कि पाकिस्तान को भारत का रणकच्छ का इंच २ खाली करना पड़ेगा। भारत उस से खाली कराकर ही दम लेगा। इस में तनिक भी सन्देह नहीं रहना चाहिए। भारत की शक्ति के प्रति किसी को भी भ्रम नहीं होना चाहिए। हमारा एक पुरातन नियम है कि हम शान्तिवादी हैं। किसी को भी नहीं छेड़ते। जियो और जीने दो का सिद्धान्त मानते हैं। किन्तु यदि किसी ने भारत के साथ शत्रुता का व्यवहार किया या भारत को कमजोर समझा तो फिर हमारा इतिहास साक्षी है कि हम ने ऐसे दुष्ट छेड़ने वाले को फिर कभी छोड़ा नहीं है। शान्ति क्रांति में बदल गई। जल की शीतलता ज्वाला की भीषणता में दिखाई देने लगी। राम के रूप में हमने भारतीय भूमि पर हमला करने वाले रावण, खर दूषण, बाली, विराध, सुबाहु, लवणासुर, कबन्ध आदि न जाने कितने राक्षसों को मार २ कर समाप्त कर दिया। किसी को भी न छोड़ा। जरासन्ध, जयद्रथ, कंस, कर्ण दुश्शासन, कीचक, दुर्योधन को नहीं छोड़ा। अपने गुरु द्रोण व दादा भीष्म तक को क्षमा न किया। जो भी राक्षसों का पक्ष लेगा हम उसके शत्रु हैं। कृष्ण बन कर हम ने नीति से सब को यमलोक पहुंचा दिया। यूनान के सिकन्दर व उसके सेनापति सिल्यूकस को चाणक्य की नीति से चन्द्रगुप्त तथा पुरु के रूप में ऐसी मार मारी कि एक तो घर जाता २ रास्ते में ही मर गया और दूसरा अपनी लड़की विवाह में देकर भारत का साला बन गया। विक्रम बन कर शकों को मारा। शिवा से टकराने वाला औरंगजेब आज औरङ्गाबाद की मिट्टी में अस्थि पंजर की शकल में पड़ा है। कई अत्याचारी आए और भारत की भूमि में दब गए। वीर गोविन्द व बन्दा वैरागी के द्वारा दी गई मार को पढ़ कर आज भी शत्रु कांपते हैं। नलवा का नाम तो आज भी यवनों के लिए परमाणु बम बना हुआ है। भारत जल भी है और ज्वाला भी है। यह बुझाना भी जानता है तथा जलाना भी जानता है। पाकिस्तान ने छेड़ा है अब उसे भी छोड़ेंगे नहीं।

जनता से कहना है कि ऐसे विषम समय में देश की रक्षा के लिए अपने स्वार्थ को छोड़ दो। देशभक्ति प्रमुख है। आर्य समाजें राष्ट्ररक्षा सम्मेलनों को आयोजन करके जनता में वीर भावना जगायें। प्रत्येक छोटा बड़ा देशसेवा के पथ पर चले। —त्रिलोकचन्द्र

सिद्धान्त चर्चा

महापुरुषों की पहचान

(ले०-आचार्य पं. देव प्रकाश जी आर्य समाज उज्जैन)

समस्त जगत् इस बात पर एक मत है कि महापुरुष उसी को माना जाता है जो मार्गच्युत लोगों को सन्मार्ग बताए। भूले हुये को ठीक मार्ग पर ले जाये। अंधों को कूप में गिरने से बचाये, बीमारों को औषधि दे कर उन की बीमारी को दूर करे। मगर जब ईसा के वाक्यों को पढ़ते हैं तो हमें उलटा दिखाई देता है। यत्न किया जाता है कि लोग सत्य पथ पर चलने के अधिकारी कहीं न बन जावें। पहिले हम वेद के दो मन्त्र लिख कर फिर ईसा महोदय के वचन लिखेंगे। वेद तो कहता है उत देवा अवहितं देवा अन्यथा पुन: कि हे विद्वान उठ और गिरे हुओं को उठा।

'इन्द्रं' वर्धन्तो अप्तुर: कृण्वन्तो विश्वमार्यम्, अपघ्नन्तो ऽराव्ण:,

ऋ-९-६३-५

हे विद्वानों नास्तिक भावों को परे हटाते हुए ईश्वर के नाम को बढ़ाते हुए अर्थात् आस्तिक भावों का प्रचार करते हुए संसार को श्रेष्ठ बनाओ। दूसरा मन्त्र है यथेमां वाचं कल्याणीं मावदानि जनेभ्य:। ब्रह्म राजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय यजु-२६ २

इस वेद मन्त्र में प्रत्येक मनुष्य को चाहे वह ब्राह्मण हो, क्षत्रिय हो, शूद्र हो, भृत्य हो, अति शूद्र हो सब को वेद पढ़ने का अधिकार है। मगर अब यीशु को देखें यीशु ने कहा उन की आंखें अन्धी कर दो।

उस ने कहा कि हे प्रभु ! हमारे समाचार की किस ने प्रतीति की है और प्रभु का भुज बल किस पर प्रगट हुआ...यशायाह ने फिर कहा उस ने उन की आंखें अन्धी और उन का मन कठोर किया है ऐसा न हो कि वह आंखों से देखें और मन से समझें और फिरें (नेकी की ओर) और मैं उन्हें चन्गा करूं यूहन्ना-१२-३९ से ४१ तक यहां पर यह है कि अंधा इस इसलिए किया कि मन को समझने के अयोग्य इसलिए बना दिया कि समझकर और देखकर सत्य को न ग्रहण कर लें

यीशु ने कहा कि मैं दुनिया में न्याय के लिए आया हूं, ताकि जो नहीं देखते वह देखें और जो देखते हैं, वह अन्धे हो जावें।

यूहन्ना ९-३९-४०

यीशु ने कहा—मैं तुम से कहता हूं कि जिस के पास है उस को दिया जावेगा और जिसके पास नहीं उससे वह वह भी लिया जावेगा जो उस के पास है।

लूका १९-२६-२७

कैसा न्याय है जिसके पास थोड़ा है उसको और देना चाहिए या जो है सब उस से ले कर उस को मुहताज कर देना चाहिए इसी लिए योशु के चेलों ने समझा कि ऐसी बातों को कौन मानेगा तो एक

(शेष पृष्ठ ६ पर)

संसार के सभी मतमतांतरों का मूल स्रोत भारत में है

अंग्रेजों की अन्धाधुन्ध नकल करना दास मनोवृत्ति है

शिक्षा शास्त्री प्रो० अब्दुलमजीदखां का भाषण

प्रोफैसर अब्दुलमजीदखां भारत के बड़े प्रसिद्ध और पुराने शिक्षा विशेषज्ञ हैं। बड़ा ही प्रभावशाली बोलते हैं। लेखक भी प्रसिद्ध हैं। यह बड़े उदार विचार तथा राष्ट्रियता की भावना से भरपूर हैं। विविध सम्मेलनों में मंजे हुए विचार प्रकट करते रहते हैं। धार्मिक जगत् में भी प्रोफैसर जी का बड़ा गम्भीर व समन्वयात्मक स्वाध्याय है। संकीर्णता तो इनके जीवन को छू तक नहीं सकी। तङ्ग दिली की दुनिया से बहुत ऊंचे उठे हुए हैं। देश भक्ति के रस में मस्त हैं। महात्मा हंसराज शताब्दी के अवसर पर स्मारक व्याख्यानमाला में प्रोफैसर जी ने जालन्धर में बड़ा ही प्रभावशाली तथा संगठनात्मक भाषण दिया—अपने भाषण में जनता को आदर्शत्यागी के शीर्षक पर सम्बोधन करते हुए कहा—

आज हम उस महापुरुष महात्मा हंसराज जी की सौ वर्षीय शताब्दी का यह भारी समारोह मना रहे हैं। मेरे भी जीवन का यह बड़ा सौभाग्य है कि मैं भी इस शुभ काम में शामिल होकर अपने दिल की बातें कहने आया हूं। मनुष्य को अपने जीवन में कई प्रकार के अच्छे मौके मिलते रहते हैं जिन में उसे बड़ी खुशी अनुभव होती है। किन्तु मैं सच कहता हूं कि उन में इस प्रकार का शुभ अवसर तो कभी-कभी ही मिला करता है। इस में मिली खुशी का अनुमान किया ही नहीं जा सकता। ऐसे २ अवसर तो सच्चे अर्थों में महान पर्व कहे जा सकते हैं। ये कभी २ आते हैं और अपने पीछे लोगों के लिए एक शानदार सन्देश दे जाते हैं। हमें हर किसी की अच्छाइयों को ग्रहण करने तथा बुराइयों की हर अवस्था में उपेक्षा करते रहने की शिक्षा महात्मा हंसराज जी ने ही दी। उनका सारा जीवन इसी विशेष गुण से भरपूर था। सद्गुणों से उन्होंने कभी आंखें बन्द नहीं कीं और बुराईयों से उनको कभी लगाव नहीं हुआ। महापुरुषों की स्मृति उनके जीवन के गुणों को धारने से ही मनाई जाती है। उन का जीवन आदर्श हमारे जीवन के लिए भी आदर्श बन जाये—यही सच्ची यादगार है, वास्तविक शताब्दी का उपदेश है और महापुरुष की आज्ञा का पालन है। इस के विपरीत कोरी बातों का दिवस ही बन जाता है।

महात्मा हंसराज जी ने शिक्षा के प्रसार को अपने हाथ में लेकर व्यक्ति को ऊंचा उठाने का बीड़ा उठाया। इस बात के कहने में कोई भी अत्युक्ति नहीं होगी कि पंजाब में आज जहां कहीं भी कोई स्नातक है ग्रेजुएट है वह महात्मा जी की कृपा का फल है। उनके पढ़ाए हुए लोग आज भारत के सभी प्रान्तों में ऊंचे २ स्थानों पर बैठे हुए हैं। उनके जीवन विचारों व कार्यों में कुछ विशेषता है। दूसरे लोग उन में कुछ सुगन्धि अनुभव करते हैं। आज के व्यक्तियों की अपेक्षा उन में बड़ा अन्तर प्रतीत होता है। शिक्षा तो आज भी उसी प्रकार की है, पढ़ाने वाले भी हैं, किन्तु महात्मा हंसराज जी जैसे आदर्श गुरु आज कहां मिलते हैं। उन जैसा त्याग, तप आज किस के जीवन में दिखाई देता है। उन में त्याग तथा उदारभावना से भरा हुआ यज्ञमय आदर्श प्रधान था परन्तु खेद है कि आज के युग में उस भावना का सर्वथा लोप होता जा रहा है। आज के लोगों में स्वार्थ की प्रवृत्ति और धन बनाने की वृत्ति काम करने लगी है। जीवन का प्रभाव घट गया है, पैसे का भाव बढ़ चुका है। यही कारण है कि आज शिक्षा के मैदान में वह पुरानी बातें नहीं है, जिन के द्वारा जीवन ऊंचा बना करता था। महात्मा जी आदर्श त्यागी थे। महान् शिक्षक थे, जीवन के निर्माता थे। जो भी एक बार उन के सम्पर्क में आ गया, उस पर उन के उच्च जीवन की अमिट छाप पड़ गई। उसके विचारों को एक नई मोड़ मिल गई। उस के विचार बड़े-बड़े प्रलोभनों में भी चट्टान के समान अटल रहे। आज इस बात की कमी होती जा रही है। जीवन की छाप अपने शिष्यों पर लगाने वाले विरले ही हैं। सारे देश के सामने यह समस्या आ खड़ी है। इस की ओर ध्यान देना होगा। याद रखें कि शिक्षा का प्रसार वही कर सकता है जिसका दिल साफ हो और दिमाग गन्दा न हो। महात्मा जी इस प्रसंग में एक स्वच्छ एवं पूर्ण व्यक्ति थे। उनका समूचा जीवन एक त्यागी का था। उन्हें धन, दौलत, सत्ता किसी से भी कोई लगाव या लालच न था।

मैंने सारे धार्मिक ग्रन्थों का स्वाध्याय करने में कुछ रुचि ली है। उस अनुभव से कह सकता हूं कि जो धर्म है वह कभी संकीर्ण नहीं हो सकता और जो संकीर्ण है वह धर्म कभी नहीं हो सकता। भारत के राष्ट्रपति डा. राधाकृष्णन के शब्दों में संसार भर के धर्मों का निचोड़ एक शब्द में आ जाता है और वह है सहिष्णुता हमारे वेदों में विश्वनागरिकता का सन्देश मौजूद है और ये हमें मानव धर्म सिखाते है। महात्मा खुशहाल चन्द जी (अब महात्मा आनन्द स्वामी जी सरस्वती) वर्षों पूर्व दैनिक मिलाप में ऋग्वेद का एक मन्त्र लिखा कर उस का अनुवाद भी देते थे। जिस का यह उपदेश था कि किसी से ऐसा व्यवहार नहीं करना चाहिए जो यदि कोई दूसरा तुम से करे तो तुम्हें बुरा लगे। यदि हम वेद के इस उपदेश को अपने जीवन में ले आयें तो संसार में चल रहे अनेकानेक झगड़े सदा के लिए मिट जायें।

यहूदियों के पैगम्बर हजरतमूसा के पवित्रग्रन्थ पर वेदों का प्रभाव दिखाई देता है जब कि मूसा से हजरत ईसा ने काफी कुछ लिया और बाद में इस्लाम के पैगम्बर मुहम्मद ने ईसा की शिक्षाओं का असर लिया। सिख धर्म के रूप में फिर यह क्रम भारत में आ गया। स्वामी दयानन्द भारत में क्रान्ति वाले पहले महापुरुष थे। हिन्दु मुस्लिम एकता के लिए उन्होंने सब से पहले १८७५ में एक एकता सम्मेलन बुलाया था जिस में ब्रह्मसमाज के प्रवर्तक केशव चन्द्र सेन और सर सैयद अहमद खां शामिल हुए थे। दुर्भाग्य से वह सम्मेलन असफल रहा।

महात्मा हंसराज जी ने डी. ए. वी. आन्दोलन की बुनियाद रखते हुए यह सोचा कि भारत की प्राचीन संस्कृति के साथ २ हमें उस की शिक्षा में योरुप की अच्छी बातें भी ग्रहण करनी चाहिएं परन्तु दास मनो वृत्ति से अंग्रेजों की

(शेष पृष्ठ ६ पर)

(नोट—इससे पूर्व का भाग ११-४-६५ के अंक में पढ़ें

यदि हम बिना वाद-विवाद के कुछ लेना चाहें तो सर्वथा असंभव है। रेल पर जब पूरी बेचने वाले से पूछते हैं कि पूरी गर्म है ? तो उत्तर मिलता है कि हां, जी ! गर्म है। परन्तु जब लेकर देखो तो दिन की बासी निकलती है। शिक्षा वाले से पूछो कि क्या किराया लेगा तो कहेगा बारह आने परन्तु ठहर जायेगा तीन या चार ही आने पर। वकील से पूछो कि क्या मेहनताना लोगे तो उत्तर मिलेगा कि ५० रु०) परन्तु ठहर जायेंगे २०) रु० पर ही। झूठे गवाहों की तो बात ही न पूछिये। जिस फीस के चाहिए ले लो। दो आने से लेकर २०) रु० एक के सभ्य जन प्रतिभू (साक्षी) के लिए प्रस्तुत हैं। दस बीस रुपये दे दीजिए, बस फिर झूठ और बुराइयों के पुल बांध दें कि प्राचीन समय के भाटों को भी हरा दें। इसी प्रकार झूठी प्रशंसा या निन्दा करना तो मुख्य काम हो रहा है। बाजारों में चले जाइये झूठे दलालों की पंक्तियां दूकानों पर दीखेंगी। डाक्टरों के पास तो सत्य का नाम भी नहीं मिलेगा। इस प्रकार झूठ की सर्वत्र दुन्दुभि बज रही है और सत्य के दर्शन दुर्लभ क्या असम्भव हैं। दीन मनुष्य ही मिथ्या भाषण नहीं करते अपितु बड़े २ उच्च कर्मचारी भी इस रोग से ग्रसित हैं।

आज झूठ के बोझ से सत्य विलुप्त होने को है। अतः हम अमृत पुत्रों को चाहिये कि असत्य के आवरण का आश्रय न लेकर सत्य का आश्रय लेना सीखें, क्योंकि परमात्मा ने सत्य में ही श्रद्धा को प्रतिष्ठित किया तथा उपनिषदें भी सत्य का ही वर्णन करती हैं। तैत्तिरीय आरण्यक प्रपाठक। अनुवाक ६२ में आया है कि—

श्रद्धा का स्वरूप

ले०—श्री नामदेवराव जी गनगने 'पथरोट' यमुनानगर(अम्बाला)

'सत्यं परं परꣳ सत्य सत्येन न सुवर्गाल्लोकाच्च्यवन्त कदाचन सता ꣳहि सत्य, तस्मात् सत्ये रमन्ते।' 'किं भगवन्तः परमं वदन्तीति। तस्मै प्रोवाच—सत्येन वायुरावाति, सत्येनादित्यो रोचते दिवि, सत्यं वाचः प्रतिष्ठा, सत्ये सर्वं प्रतिष्ठितम् तस्मात् सत्यं परमं वदन्ति।'

अर्थात् सत्य भाषण और आचरण से उत्तम धर्म कोई नहीं है। क्योंकि सत्पुरुषों में भी सत्य ही सत्पुरुषपन है। सत्य से ही मनुष्यों को व्यवहार और मुक्ति का सुख मिलता है। अतः सत्य में रमण करना चाहिए। सत्य को उत्तम किस लिए कहते हैं ? सत्य जो ब्रह्म है उससे वायु का रक्षण होता है (चलती है) सूर्य उदित होता है, सत्य से ही वाणी में प्रतिष्ठा है (आस्था, विश्वास होता है) तथा सत्य में ही सब प्रतिष्ठित हैं। इसीलिए सत्य को सर्वोत्तम कहा है।

मुण्डकोपनिषद में

"सत्येन लभ्यस्तपसाह्येष आत्मा सम्यग् ज्ञानेन ब्रह्मचर्येण नित्यम्। अन्तः शरीरे ज्योतिर्मयोहि शुभ्रोयं पश्यन्ति यतयः क्षीणदोषाः॥ सत्यमेव जयते नानृतं सत्येन पन्था विततो देवयानः येनाक्रमन्त्यृषयो ह्याप्तकामा यत्र तत्सत्यस्य परमं निधानम्॥ मु० ३। खं० १। का० ५, ६॥

अर्थात् जो सत्य आचरण रूप धर्म का अनुष्ठान, ठीक-ठीक विज्ञान और ब्रह्मचर्य का पालन करते हैं, इन शुभ गुणों से सब का आत्मा परमेश्वर जाना जाता है। जिसको निर्दोष अर्थात् धर्मात्मा, ज्ञानी, संन्यासी लोग देखते हैं॥

जो सत्य का आचरण करने वाले हैं, वे ही मनुष्य सदा विजय और सुख को प्राप्त करते हैं। जो मिथ्या आचरण करने वाले हैं, वे सदा पराजय और दुःख को प्राप्त होते हैं। विद्वानों का जो मार्ग है वह भी सत्य से ही खुलता है। जिस मार्ग से ऋषि, महात्मा, आप्तपुरुष चलकर, जहां ब्रह्म ही सत्य स्वरूप से प्रतिष्ठित है, सत्य से सुख को प्राप्त होते हैं।

परन्तु सत्य के ऊपर आवरण है जैसा कि यजुर्वेद के ४० वें अध्याय में विस्पष्ट रूप से सचेत किया गया है—

'हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितम्मुखम्' इत्यादि।

अर्थात् हे मनुष्यो (हिरण्मयेन) स्वर्णादि चमकदार वस्तुओं के (इच्छा रूपी) (पात्रेण) आवरण से (सत्यस्य मुखम्) सत्य का मुख (अपिहितम्) आवृत हुआ है (ढंपा हुआ है)। यदि तुम चाहते हो कि सत्य धर्म को प्राप्त होकर उन्नति को प्राप्त हों तो उस पर्दे को उठा दो क्योंकि इस आवरण की उपस्थिति में सत्य धर्म का ज्ञान नहीं हो सकता और सत्य धर्म के ज्ञान के बिना तदनुसार आचरण नहीं हो सकता एवं आचरण के बिना जीवन नहीं हो सकता। क्योंकि हम में सद्धर्म का ज्ञान एवं तदनुसार आचरण भी नहीं, अतः हम जीवित कैसे कहला सकते हैं, जब तक परमात्मा की अमृत छाया, (पवित्र वेद-विधान के) आश्रय में आकर अमृत न बन जावें। यद्यपि हमें परमात्मा की छाया में लाकर बहुत से महर्षियों ने जीवित बनाने का प्रयत्न किया परन्तु वाममार्ग की उपासना से हमें कभी परमात्मा पर विश्वास ही नहीं हुआ। अतः असत्य (अश्रद्धा) से ढपे हुए सत्य के आवरण को उठा दो, जिस से हमें वास्तविक सत्य से प्रीति हो। सत्य के प्रति प्रीति एवं अनुराग होना ही श्रद्धा कहलाती है। सर्वसुखाय वेद ने जो स्वरूप श्रद्धा का हमारे सामने रखा उसे हम समझने का प्रयत्न करें, जिस से हम अपने जीवन को उज्ज्वल बना सकें। हम यदि वेद प्रणीत श्रद्धा को अपने जीवन में स्थान देंगे तो हमें विद्वानों का आदर करना आयेगा तथा देश एवं जाति के प्रति श्रद्धामयी सम्मान और स्वाभिमान की भावना हमारे हृदयों में पनप उठेगी, जिसका परिणाम यह होगा अश्रद्धा (असत्य) [अन्धी श्रद्धा] को कहीं भी स्थान न मिलेगा। "श्रत् सत्यं दधाति या सा श्रद्धा" इसी को स्थान मिलेगा, जिससे हमारा जीवन फिर से जगमगा उठेगा और सर्वत्र आनन्द एवं पारस्परिक प्रेम का स्रोत बहेगा। अतः आओ हम अपने जीवन में अश्रद्धा (असत्य) को स्थान न देकर वास्तविक श्रद्धा को ही स्थान दें, जिस से हमारा, राष्ट्र का, जाति का तथा संसार का कल्याण हो सके।

—

अमूल्य वचन

✶ बिना मांगे ही सूर्य कमलों को विकसित करता है, चन्द्र भी बिना कहे ही को प्रफुल्लितकिसी करता है औरमेघ भी बिना याचन किये पराये के हित वर्षा करता है उसी प्रकार सन्त लोग भी बिना मांगे ही लोगों की भलाई किया करते हैं।

✶ छांटा हुआ वृक्ष फिर बढ़ सकता है, क्षीण चन्द्रमा फिर पूरा हो जाता है यही देख कर सन्त लोग विपत्ति से नहीं घबराते कि फिर भी दिन फिरेंगे।

प्रभावशाली वक्ता—लाला लाजपतराय

[ले०—पं० भक्तराम जी (अफ्रीका वाले) जालन्धर]

एक बार स्वर्गीय स्वनाम धन्य देश भक्त लाला लाजपत राय महाविद्यालय ज्वालापुर के महोत्सव में पधारे थे। उनका भाषण सुनने के लिए जनता उमड़ पड़ी थी होगा कोई जन समूह बीस पच्चीस सहस्र का। महाविद्यालय के विस्तृत आम्रवन का वह दृश्य किस को भूल सकता है? लालाजी भाषण देने खड़े हुए। जनता की करतल ध्वनि ने आकाश गुंजा दिया। फिर सभा में एकदम सन्नाटा छा गया। उपस्थित जनता उत्सुक थी कि लाला जी न जाने क्या कहेंगे. । लाला जी दो मिनट चुप रहे और आम्रवन में समुपस्थित जनसमूह की ओर देखते रहे। दो मिनट के पश्चात् एकदम बिजली की तरह कड़के—

"क्या भारत में कोई ब्राह्मण है ?"

इतना प्रश्न पूछ कर फिर चुप हुए उत्तर सुनने के लिए। प्लेट फार्म पर दिग्गज सनातनी पण्डित, विद्वान, संन्यासी, आर्यसमाज के शिष्ट-विशिष्ट विद्वान् बैठे थे। फिर लाला जी दूसरी बार कड़के—'क्या भारत में कोई ब्राह्मण है ?" बोलते क्यों नहीं !" एक ओर से आवाज उठी, "ब्राह्मण नहीं है, कोई ब्राह्मण नहीं है।"

प्लेट फार्म पर बैठे हुए पंडितों ने आवाज लगाई, (साधु संन्यासी भी आवाज लगाने में सम्मिलित थे) कि "हैं, ब्राह्मण हैं, पृथिवी ब्राह्मणों से शून्य नहीं है।'

इस पर लाला जी बड़े जोर से कड़के और उन्होंने कहा :—

"यदि भारत में ब्राह्मण हैं तो वेदों की रक्षा क्यों नहीं हो रही है ? यह गो वंश के वंश का इतना बड़ा संहार क्यों हो रहा है? भारत वर्ष दीन, हीन, मलिन, पराधीन क्यों हो रहा है ? दुःख, दारिद्र्य, व्यसन, संकट में क्यों फंस रहा है ? संसार में अनाचार व अत्याचार क्यों फैल रहा है ? बड़े राष्ट्र छोटे राष्ट्रों को क्यों निगल रहे हैं ?" इत्यादि।

फिर क्या था सभा में सन्नाटा छा गया और लाला जी ने अपनी वाणी—प्रतिभा शालिनी वाणी के प्रवाह में जो कुछ कहा वह जिस ने सुना वे भी धन्य, लाला जी भी धन्य। ऐसा व्याख्यान कदाचित् कहीं किसी ने सुना होगा।

२८२ ईसाईयों की शुद्धि

४-४-६४ को मावेलिकरा (केरल) में, दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार के स्नातक श्री नरेन्द्र भूषण जी के द्वारा २८२ ईसाई शुद्ध किये गये। ये २८२ नवीन आर्यों के लिए एक "आर्य कालिज" बना कर उनको पुनर्वास कराने का परिश्रम श्री नरेन्द्र भूषण जी कर रहे हैं। अनेक प्रकार की समस्याएं उनके कार्यक्षेत्र में प्रतिबन्ध बनी हुई हैं। लेकिन बड़ा प्रतिबन्ध आर्थिक दुर्बलता है। जो सज्जन उनको प्रोत्साहन व सहयोग देना चाहते हैं वे कृपया निम्न पते पर पत्र व्यवहार करें।

श्री नरेन्द्र भूषण **B. A.**
आर्य मिशनरी
चेंगन्नूर (**Chengannor**)
केरला (**Kerala State**)

उद्घाटन समारोह

दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय के छात्रावास (वैदिक आश्रम) का उद्घाटन श्री युत् ला. वृजलाल जी गुप्त प्रधान आर्य समाज टोहाना ने रविवार ११-४-६५ को यज्ञोपरांत अपने कर कमलों से सम्पन्न किया। नगर की जनता ने पर्याप्त संख्या में पधार कर समारोह की शोभा बढ़ाई। कार्यक्रम बहुत सुन्दरता के साथ सम्पन्न हुआ।

निवेदक
राम विचार-उपाचार्य

पं० रुद्रदत्त जी शर्मा का जनता से निवेदन

भारत सरकार बधाई की पात्र है जिसने संविधान के अनुसार २६ जनवरी १९६५ से सम्पूर्ण देश में नहीं तो उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र आदि हिन्दी भाषी प्रान्तों में हिन्दी को राज्य भाषा के रूप में लागू करना स्वीकार कर लिया है। परन्तु इतने मात्र से तो राष्ट्र भाषा का प्रश्न हल नहीं होगा, विशेषतः जबकि मद्रास, बंगाल और आंध्रा आदिमें हिंदीके विरुद्ध भयानक आग भड़काई जा रही है और इधर पंजाब की तीन चौथाई हिन्दी प्रेमी जनता पर जबरदस्ती गुरमुखी ठोंसी हुई है। आज हिन्दी प्रेमी सज्जनों तथा संस्थाओं को इस अन्याय को दूर कराने के लिए कटिबद्ध होकर कांग्रेस सरकार को खुले शब्दों में चेतावनी दे देनी चाहिये कि यदि कम्यूनिस्टों और देश द्रोहियों की विनाशकारी कारवाहियों के लिये उन्हें कड़ा दण्ड देने के स्थान पर उनकी अनुचित और अन्याय पूर्ण मांग स्वीकार की गयी तो इसे किसी अवस्था में सहन नहीं किया जायेगा।

परन्तु हिंदी के साथ हो रहे अन्याय की जुम्मेवारी पर्याप्त मात्रा में हमारे अपने ऊपर भी आती है। हम स्वयं इसकी बुरी तरह अवहेलना कर रहे हैं। हमारे निजि और कारोबारी कामों में हिंदी का नाम तक नहीं मिलता। अतः देश को एकता की लड़ी में पिरोने के लिए हमें व्रत लेना चाहिये कि आज से हमारे घरेलु एवं कारोबार सम्बन्धित सभी कामों में हिन्दी को प्रमुखता दी जायेगी। अर्थात्—

१—हमारे पत्र व्यवहार तथा दफ्तरी कार्य हिंदी में होंगे।

२—प्रतिदिन छपने वाले विज्ञापन और निमन्त्रण पत्र हिंदी में होंगे।

३—हमारी दुकानों और दफ्तर के साइन बोर्ड यदि केवल हिंदी में नहीं तो इनमें सब से ऊपर तथा सबसे अधिक स्थान हिंदी को दिया जायेगा।

४—हमारे विद्यालयों आदि सभी संस्थाओं का सम्पूर्ण काम हिन्दी में होगा)

जहां हमें उपरिलिखित कर्तव्य पालन के लिये स्वयं प्रतिज्ञा करनी चाहिये वहां दूसरों से भी करानी चाहिये। यदि सच्चे हृदय से हम इस व्रत को विस्तृत रूप में कार्यान्वित करने में जुट जायेंगे तो बहुत शीघ्र राष्ट्र भाषा को इसका उचित स्थान दिला सकेंगे। यह राष्ट्र की सब से बड़ी सेवा होगी।

महापुरुषों की.....

(पृष्ठ ३ का शेष)

और ऐसा प्रतिबन्ध लगा दिया कि झूठी बात को झूठ न कहे प्रश्न किया है कि—

कौन झूठा है। सिवाये इसके जो यीशु के मसीह होने का इन्कार करता है मुखालिफ मसीह वही है, जो बाप और बेटे का इन्कार करता है उसके पास बाप भी नहीं और जो बेटे का इन्कार करता है, उसके पास बाप भी है युहन्ना का पहला खत २-२२-२३

कैसा विचित्र मन्तव्य है कि जो यीशु के नाम पर कह दिया जावे कोई उससे इन्कार करे।

संसार के सभी........

(पृष्ठ ४ का शेष)

अन्धाधुन्ध नकल करना देश के लिए हानिकारक होगा। यह बात उन्होंने सामने रखी।

महात्मा हंसराज को अंग्रेजों ने आई. सी. एस. में आने के लिए तीन हजार रुपये मासिक की पेशकश की थी परन्तु महात्मा जी ने उसे नहीं माना। डी. ए. वी. को अपना जीवन भेंट कर दिया। कितने ही नवयुवक महात्मा हंस राज और उन के अन्य तपस्वी साथियों श्री पं. गुरुदत्त विद्यार्थी आदि से प्रभावित हुए। उन्होंने शिक्षा क्षेत्र में काम करने के साथ २ देश भक्ति के कार्य में भी जुट गए।

विचार तरङ्ग [७]

(ले०श्री राममूर्ति जी कालिया, एम ए., मालवीय नगर, नई दिल्ली)

✶✶✶✶✶✶✶✶✶✶✶✶✶✶✶✶✶✶✶✶✶✶✶✶

संसार स्वप्नवत है, ऐसी अनेकों की धारणा है। किसी ने इसे पानी का बुदबुदा, प्रभात का तारा कहा और किसी ने सिकता में अंकित रेखा सा, वात-विकम्पित दीप शिखा-सा और काल कपोलों पर आंसू-सा कह करके इसकी व्याख्या करने का प्रयत्न किया है। जीवन के अस्थायित्व और क्षण-भंगुरता को दृष्टि में रखते हुए, इस कथन में सत्य तो दिखता है। स्वप्न कई प्रकार के होते हैं, उस में मन हर्षोल्लासमय भी हो जाता है और कभी २ गला भी घुटने लगता है। कहने का मेरा आशय यही है कि जीवन यदि स्वप्नवत भी है तो भी आनन्दयुक्त ही होना चाहिये। उसके लिये सतत प्रयत्नशील रहने की आवश्यकता है। आस्थावान होने से, कर्मशील बनने से और प्रेमयुक्त हृदय के रखने से जीवन में स्वर्गिक आनन्द का अनुभव किया जा सकता है।

सर्व-ऐश्वर्य - सम्पन्न होने के बाद व्यक्ति यदि विनयशीलता जीवन में ले आवे तो सोने पर सुहागे की बात है। **The greater man greater Courtsy** की कहावत ठीक ही है। नम्रता के बलबूते पर ही तो व्यक्ति गुणों से सम्पन्न होता है। फिर बड़ा बन कर अकड़ने की बात ही क्या है? फलदार टहनियां कभी ऊपर थोड़े ही उठती हैं वे तो और भी झुकती हैं। ऐश्वर्य से युक्त किन्तु विनयशीलता से हीन व्यक्ति के लिये ऐश्वर्य ही अग्नि का रूप धारण कर लेता है और तिल-तिल करके उसी में भस्मीभूत होना प्रारम्भ हो जाता है। रावण के समान, अपने भौतिक व्यक्तित्व को पुत्रैषणा, वित्तैषणा और लोकैषणा के महामोह से अभिभूत करके दशों दिशाओं में अपना ही डंका बजाने वाले व्यक्ति को तभी होश आती है जब वह अपनी ही आंखों से भौतिकता की स्वर्णमयी लंका को धू-धू करती हुई ज्वाला की लपटों में नाश होते देखता है किन्तु उस परिस्थिति में वह असहाय, निःसम्बल हुआ करता है और पंख-विहीन पक्षी की तरह फड़फड़ाता हुआ प्राणों का विसर्जन कर देता है।

विनयशीलता को अंकुरित एवं विकसित करने के लिए एक उपाय है। कहने में सरल, अपनाने में कठिन है। अपना लिया जाय तो आनन्द की अनुभूति सम्भव है। 'सबहिं मानप्रद आपु अमानी' बस यही है नुसखा जिस से तापों का हरण हो जाता है। दुःख का अभाव ही तो सुख है। सुख स्वतः कोई वस्तु थोड़े ही है। अपने मान की अनिच्छा होने पर मान तो पीछे-पीछे भागता है। दूसरों को यथोचित मान देने में भरसक आनन्द होना चाहिये। मंगलाप्रसाद पारितोषक के लिए प्रस्तावित किये गये अपने नाम का सुनकर, सन्तों की सी उदारता और बच्चों की सी चपलता लिए हुए हिंदी के परम मेधावी कवि श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला जी बोल उठे थे—

'भागती फिरती थी दुनिया
जब तलब करते थे हम,
हमने हसरत छोड़ दी,
वह बेकरार आने को है।'

दूसरों की भावनाओं की कदर करना, स्नेह और सच्चाई से व्यवहार करना, प्रमाणिकता पूर्वक प्रशंसा करनी और प्रोत्साहित करना यह व्यवहारिक कुशलता का ही

क्या प्रदर्शन ही जीवन है

(श्री सुन्दर लाल जी वोहरा जोधपुर)

नोट—इस से पूर्व का भाग ११. ४. ६५ के अंक में पढ़ें

✶✶✶✶✶ . ✶✶✶✶✶✶✶✶✶✶✶✶✶✶✶

सहिष्णु व संयमित रह कर विचारवान बनना किसी को भी पसन्द नहीं है। आज तो जिस किसी को भी अक्षर-ज्ञान हो गया है वह अपने आप को कवि कालिदास से कम नहीं समझता, जिस किसी को भी गीता का एक श्लोक याद हो गया तो वह अपने आप को जगद्गुरु शंकराचार्य मान बैठा, यदि किसी को रामायण की एक अर्द्धाली याद हो गई तो वह स्वयं को गोस्वामी तुलसीदास मान बैठा। गम्भीरता तो आज अजायबघर की वस्तु हो गई है। हरेक व्यक्ति अपनी फोटो खिचवाने को आतुर है। अपने को 'शिक्षित' कहने वाला जनसमुदाय अपनी ही छाया के पीछे बावला है। पर्दे (**Veil**) वाले स्वयं को पर्दे (**Screen**) पर देखने को व्यग्र हैं समझ में नहीं आता यह किस प्रकार की जिज्ञासा है?

राष्ट्र में जिधर भी देखो उधर अहम् का और नग्नता का प्रदर्शन (**ego and exhibition**) है। हमारी पवित्र पुरियों पर 'पेरिस' हावी होता जा रहा है। शिव-पार्वती को भी हम 'हालीवुड कलर' में ही देखना पसन्द करते हैं। हम अपने हर अर्जित गुण का पैसे और प्रदर्शन में मूल्यांकन करते जा रहे हैं। कला, साहित्य और समाज-कल्याण की प्रचलित आधुनिक परिभाषाओं ने हमारे अन्तःकरण को कलुषित और विक्षुब्ध ही किया है, दिनों दिन हमें उद्दण्ड और आवारा बनाया है यही कारण है कि हम आध्यात्मिक रूप से दिवालिये बनते जा रहे हैं। सही शब्दों में—

काबा ईमान का आज रुखसत
हो गया।
इल्म हिन्दुस्तान में सिर्फ मकसद
— हो गया॥

प्रतीक है। बड़े से बड़ा आत्मसन्तोषी व्यक्ति भी प्रोत्साहन और प्रशंसा का भूखा होता है। यदि आप उन को ये दे सकें तो उत्तम रहता है। किन्तु स्वयं मान की आकांक्षा न करें। ऐसा करने से खिन्नता और ग्लानि से बचे रहेंगे।

आर्य समाज न्यूटाऊन शिप नं० १ फरीदाबाद में

महात्मा हंसराज जयन्ती प्रचार सप्ताह समारोह सम्पन्न

सभा की ओर से पं० ओमप्रकाश जी तथा श्री पं० मेलाराम जी रेडियोसिंगर २५-४-६५ से २-५-६५ तक निरन्तर वेद प्रचार करते रहे। इन के प्रचार से प्रभावित हो कर टाऊन नं० ३ के आर्य बन्धुओं ने भी चार दिन अपने समाज में बड़ी श्रद्धा और प्रेम से प्रचार कराया।

फरीदाबाद टाऊन के आर्य भाई परस्पर प्रेम पूर्वक कार्य करते हैं। संख्या में स्वल्प होनेपर भी उत्साह और श्रद्धा से भरपूर है। जयन्ती के लिए २५१) की पहली किश्त नं० १ टाऊन शिप ने भेज दी है। १०१) वेद प्रचार में भी भेंट किया है। और आर्य जगत् का शुल्क भी दे दिया है।

नं० ३ टाऊन वाले आर्य बंधुओं ने ५१) मार्ग-व्यय के निमित्त भेंट करके अपनी विशेष श्रद्धा का परिचय दिया। सभी समाजों के सुयोग्य अधिकारी धन्यवाद के पात्र हैं। सुना है कि नं० १ टाऊन समाज के भी प्रधान जी महात्मा हंसराज जयन्ती के लिए एक सहस्त्र की राशि एकत्र करने के लिए कृत संकल्प हैं।

भगवान उन्हें इस शुभ कार्य में सफलता प्रदान करें।

सम्वाद दाता

महात्मा हंसराज जन्म-शताब्दी पर प्राप्त धन की सूची

(गत विवरण से आगे)

जम्मू प्रांत से श्री मेलाराम जी द्वारा १००/-
स्त्री आर्यसमाज यमुनानगर २५०/-
स्वामी आनन्द भिक्षु जी महाराज ११/-
श्री मूलचन्द्र जी गुरदासपुर १०/-
डी. ए. वी. H/S स्कूल (कमाहीदेवी) २१/-
श्री बद्रराज जी अम्मा (फिरोजपुर) १०००/-
डी. ए. वी स्कूल अंबाला छावनी ५००/-
श्री अमरसिंह जी उपदेशक द्वारा २३६/-
श्री रघुवीरसिंह जी खरक६१ ५०/-
वैद्य विद्यासागर जी अमृतसर १०१/-
श्री प्रभुदयाल जी उपदेशक द्वारा १३७६/-
आर्य समाज कैंटी २५/-
छेदीलाल बृजलाल जी उकलाना मंडी २१/-
गणेशदास मानुराम जी उकलाना मंडी २१/-
तेजराम अमरसिंह जी उकलाना मंडी ११/-
रामधारी मल फूलचन्द जी ,, ११/-
गणेशीलाल रामचन्द्र जी ,, ११/
जमनादास छबीलदास जी ,, ११/-
सुखेभान जयदयाल जी ,, ५/-
गणपतराय ओमप्रकाश जी ,, ६/-
आर्यसमाज लक्ष्मणसर अमृतसर श्री ओमप्रकाश जी द्वारा ४००/-
जिला करनाल से ठा. दुर्गासिंह जी द्वारा ८००/-
श्री सुमेरसिंह जी रोहतक १७६/-

ज्ञान चन्द्र जी भजनीक द्वारा २३/-
राम लाल जी गुप्ता जालन्धर १०१/-
आर्य समाज (का. वि.) अंबालाछावनी ५००/-
,, योगेन्द्र नगर (प. त्रिलोक चन्द्र जी शास्त्री द्वारा २०१
आर्य समाज कादियां ३०/-
आर्य समाज मोडलटौन यमुना नगर १०००/-
,, समाज भंभेवा संगरूर) ३००/-
,, समाज सोनीपत पं० चन्द्र सेन जी द्वारा ३८६/-
श्रीमती सुमित्रा देवी जम्मू १२५/-
,, चन्द्रकान्ता ,, ३६/-
,, ,, द्वारा (पुनम) १००/-
आर्य समाज अलवल पुर १०/-
शहजादा नंद जी अमृतसर २५०/-
श्री रत्न लाल जी मिश्रा (कांगड़ा) ३००/-
आर्य समाज कोतवाली बाजार धर्म शाला २००/-
,, लारैंस रोड़ अमृतसर १५००/-
स्त्री आर्य समाज कोतवाली बाजार धर्मशाला २००/-
म. हंसराज H/S स्कूल भटिंडा १०००/-
डी. ए. वी. H/S ऊना (होशियारपुर) ४५/३०
आर्यसमाज मोडल टौन लुधियाना ५०००/-
आर्यसमाज कमाहीदेवी पं० त्रिलो[illegible] बी०
बीबी धर्मदेव. ५१/-
आर्यसमाज आदर्श नगर, द्वारा श्री धृतराम जी ५००/-
मंगतराम जी सोधपुर(करनाल)५/-
श्रद्धानन्द जी रंधौली ,, ३/-
सुश्री सुदेश कुमारीजीजालन्धर ५/-
,, पुष्पा जालन्धर ५/-
,, कृष्णा देवी जालन्धर ३/-
,, कमलादेवी जालन्धर ३/-
श्री अमृतलाल जी पुरी धर्मशाला १०/-
डा० धर्मदेव जी धर्मशाला ५/-
अलायचन्द्र जी महता (फिरोजपुर छावनी) ५/-
श्री मेलाराम जी वफा ५०/-
आर्यसमाज नूरपुर कांगड़ा ११०/-
श्री ओमप्रकाश जी उपदेशक सभा ३५४/-
स्त्री आर्यसमाज बस्ती गुजां जालन्धर २५/-
श्री विद्याभूषण जी अकोला ५/-
प्रो० बंसीलाल जी जालन्धर ६०/-
श्री सतलाल जी रोरी(हिसार)२०/-
आर्यसमाज मंडी (H. P) १६०/-
श्री जगदीशराम जी शकरगढ़ हाई स्कूल ५०/-
आर्यसमाज फरीदकोट १००/-
डी. ए. वी. कालिज चंडीगढ़ ११३५/-
डी. ए. वी. स्कूल कादियां ५०/-
वेदकौरआर्य गर्लहाईस्कूल कादियां ५०/-
स्त्री आर्यसमाज कादियां २०/-
आर्यसमाज (का. वि.) फिरोजपुर छावनी १०० -
हंसराज महिला कालिज जालंधर ७३७/-
डी. ए. वी. H/S स्कूल यमुना नगर ५०४-

[illegible] धन
[illegible]ाज टिटोली ४० -
,, [illegible]सोरा (करनाल) १३/-
,, गंगाना (रोहतक) १५/-
,, [illegible]नूर १५०/-
,, खन्ना १०१-
,, धारीवाल १४२/-

आर्य समाज जोगिन्द्रनगर

का वार्षिक महोत्सव आर्य समाज के विशाल मन्दिर में हुआ। प्रातः काल यज्ञ होता था। समाज के प्रधान श्री गुरदयाल मांज जी, युवक श्री मुरारी लाल जी, श्री जय लाल जी, श्री उपप्रधान जी, श्री मिलखी राम जी आदि सारे सज्जनों के उत्साह से जल्सा धूमधाम से हुआ। सभा की ओर से पं. त्रिलोक चन्द शास्त्री, पं. राज पाल मदनमोहन जी की भजन मंडली आई। मंडी से श्री इन्द्रसिंह जी उपप्रधान आये पूर्णाहुति पर बड़ी रौनक थी। राष्ट्र रक्षा सम्मेलन, चरित्र सम्मेलन, महात्मा हंसराज दिवस, ला. लाजपतराय दिवस आदि सम्मेलन हुए। प्रीतिभोज में तो कमला था। सैंकड़ों ने मिल कर भोजन किया। सभा को महात्मा हंसराज शताब्दी के लिए २०१) रु. मिले श्री मांज जी व मन्त्री मुरारी लाल जी सब को बधाई।

आर्य समाज खन्ना

का सालना जलसा इस वार बड़े ही समारोह से मनाया गया। श्री ला. मुन्शी राम जी, मा. प्रधान समाज प्रिं. नन्दलाल, मा. सुखदेव मदन गोपाल डाक्टर जी के उत्साह से समारोह खूब रहा। इस में सभा से श्री पं. सत्यदेव जी विद्यालंकार एम, ए. पं. चन्द्र सेन जी पं. राज पाल मदन मोहन मंडली, व पं. सोभा राम जी मंडली पं. राम चन्द जी पधारे। समाज के प्रधान श्री मुंशी राम जी ने समाज को ओर से १०१) रु. के नोटों की माला सभा मन्त्री पं. सत्य देव जी विद्यालंकार के गले में सम्मान पूर्वक डाली। जलसे से पूर्वकथा होती रही। जलसा बड़े ही समारोह से हुआ। देवियों की श्रद्धा भी बड़ी थी। प्रधान श्री मुंशी राम जी तो समाज के दीवाने हैं। उनका सारा परिवार ही समाज सेवा में लगा रहा।

मुद्रक व प्रकाशक श्री सन्तोषराज जी आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर द्वारा वीर मिलाप प्रैस, मिलाप रोड जालन्धर से मुद्रित तथा कार्यालय महात्मा हंसराज भवन निकट कचहरी जालन्धरशहर से प्रकाशित मालिक—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर



टेलीफोन नं० ३०५७ [आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधिसभा पंजाब जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd. No. P. 12

एक प्रति का मूल्य १३ नये पैसे — वार्षिक मूल्य ६ रुपये (जन्मशताब्दी के लेख अन्दर

वर्ष २५ अंक २३) १६ ज्येष्ठ २०२२ रविवार—दयानन्दाब्द १४०— ३० मई १९६५ (तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

वेद सूक्तय:

धूरसि धूर्व धूर्वन्तम्

हे वीर ! तू धू: असि—मार सकने वाला है। धूर्व—मार दे धूर्वन्तम्—मारने वाले शत्रु को। जो तुझे मारता या शत्रु बन तेरी भूमि पर हमला करता है। तू वीर बन कर उस शत्रु को मार दे। मसल कुचल दे।

अमित्रहा वृत्रहा

हे वीरनर ! तू अमित्रहा—अमित्र को शत्रु को मार डालने वाला है। और तू ही वृत्रहा—वृत्र को राक्षस को मार देने वाला है। जो अत्याचारी बनकर अपने दलबल के नशे में चूर होकर हमला करता है—ऐसे वृत्र को मार दे। तू वीर है वह शत्रु तुझ से बच न पायें।

क्षत्रस्य योनिरसि

हे वीर ! तू क्षात्र बल का, क्षात्र शक्ति का घर है, केन्द्र है। तू वीर है और वीरता का भंडार है। तेरे विचारों में बल भरा है, हाथों भुजाओं में शक्ति है, आंखों में तेज है। सब प्रकार से तू वीरता का प्रतीक है। वीरता रूप है।

इदमुग्र सहो मम

यह मेरा सह:—बल पराक्रम शक्ति बड़ा भारी है, उग्र है। मुझे कोई भी भूल कर निर्बल न समझे। मैं बलवान हूं। मेरा बल बड़ा है। मेरा तेज ज्यादा है। मेरी शक्ति शानदार है। राक्षसों की क्या मजाल कि मेरे सामने टिक सकें।

अथर्ववेद से

वेदामृत

२५.५.६५

ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव।
यद्भद्रं तन्न आसुव ॥ यजु० अ० ३०-३

अर्थ-- हे (सवित) सकल जगत् के उत्पत्ति कर्ता समग्र ऐश्वर्य युक्त (देव) शुद्ध स्वरूप सब सुखो के दाता परमेश्वर आप कृपा करके (न: हमारे (विश्वानि) सम्पूर्ण (दुरितानि) दुर्गुण, दुर्व्यसन और दुखो को (परासुव) दूर कर दीजिए (यत्) जो (भद्रम्) कल्याणकारक गुण, कर्म स्वभाव और पदार्थ हैं (तत् न:) वह सब हम को (आसुव) प्राप्त कीजिए।

(ऋषिभाष्य)

भाव:-- परमदेव ! सब को आनन्द देने वाले प्रभो ! समस्त ऐश्वर्य से भरे हुए महान् देव ! हम नाना प्रकार के दुर्गुणों से भरे हुए हैं। ये हमें आप से दूर रखते है। हमारे मन के कपड़े को मैला कर देते है। आपकी शरण में आकर ही हम इन सारे दुर्गुणों को, बुराईयों को दूर सकते है। कृपा करो कृपा लो। हमारे तमाम इन दुर्व्यसनों को दूर करके इन के स्थान उत्तम गुण प्रदान करे। जो भी हमारे लिए भद्र पदार्थ व गुण है। उन से मालामाल कर दीजिए। बुराइयों से परे होकर उत्तम विचार वाले बन जाएं। दया करो दयानाथ--सं०

ऋषि दर्शन

राष्ट्रपालन मेव अश्वमेध:

देश तथा राज्य का पालन करना ही अश्वमेध यज्ञ है। यह जो अश्वमेध नाम का बड़ा यज्ञ कहा जाता है वह देश के भली-भान्ति पालने का नाम ही है। जिसमें प्रजा की रक्षा एवं दुष्टों को दिया जाये वही अश्वमेध है

नाश्व हत्वा होमकरणम्

घोड़े को मारकर उसके अंगों को काट कर होम करने का नाम अश्वमेध नहीं है। यह तो अज्ञानियों मिथ्याचारियों ने मान रखा है अश्व घोड़े का नाम ही नहीं वरन् राष्ट्र को भी अश्व कहा है—मेध उसके पालन को कहा है।

राजन्य: शूरो निर्भय:

क्षत्रिय को तथा शासक को सदैव शूरवीर होना चाहिए। उसे किसी से भी किसी प्रकार का भय नहीं होना चाहिए तभी वह राज्य की पालना कर सकता है और आततायियों को घोर दण्ड भी दे सकता है।

एको राष्ट्री विशमत्ति

नहीं तो अकेला राज्य का अधिनायक डिक्टेटर बना हुआ राजा शासक उस सारे राज्य को तथा उसमें निवास करने वाली प्रजा को खा जाता है। उत्पात मचा कर सारे देश को स्वार्थ में पड़ कर खा जाता है—

भाष्य भूमिका से

अधिष्ठाता—श्री संतोषराज जी
सम्पादक—त्रिलोक चन्द्र

दर्शन-चर्चा

जीवन दर्शन का तत्व

(ले०-डा. शंकरदास जी, लारेंसरोड अमृतसर)

श्री. डाक्टर शंकरदास जी अमृतसर वाले बड़े स्वाध्यायशील सज्जन हैं। दर्शनों के पढ़ने में विशेष रुचि लेते हैं। प्रार्थना स्वीकार करके आर्यजगत् के प्रेमी पाठकों के लिए कभी २ अपना मधुसंचय देकर कृपा किया करते हैं। उनके लेखों में गम्भीर तत्वों का विवेचन होता है—सं.

प्रकृति की जितनी विकृतियां हैं वे सब इन तीनों गुणों के ही विकार हैं। वास्तव में प्रकृति और विकृति के विकार इन तीनों गुणों के ही विभिन्न स्वरूप हैं। मूल प्रकृति इन तीनों गुणों की साम्य अवस्था का ही नाम है। वास्तव में प्रकृति गुणवती नहीं वरन गुणमयी व गुणस्वरूपा है। जैसे एक वन के वृक्ष ही वन कहलाते हैं। वृक्षों से अलग कोई वन नहीं अर्थात् इन तीनों गुणों को धारण करने वाली प्रकृति इन गुणों से कोई भिन्न वस्तु नहीं। गुण ही नित्यतत्व (Itom) हैं। जैसे सांख्य में कहा है—

सत्वादीनामतद्धर्मत्वं तद्रूपतत्वात्

सत्वादिगुण प्रकृति के गुण नहीं किन्तु प्रकृति स्वरूप हैं। इनका गुण नाम बन्धन का हेतु होने से है। सतोगुण सुख की आसक्ति और ज्ञान के अभिमान से जीवात्मा को शरीर में बान्धता है और इसी प्रकार रजो गुण इस जीवात्मा को कर्मों की ओर उन के फल की आसक्ति में बान्धता है। तमोगुण उस को प्रमाद, आलस्य, निद्रा द्वारा बान्धता है। अर्थात् ये तीनों गुण प्रकृति कहलाते हैं और समस्त भूतेन्द्रियात्मिक जगत् के आधार बन कर पुरुष तत्व की प्रेरणा द्वारा अपनी अव्यक्त अवस्था से जाग्रत व्यक्त हो कर विश्व का क्रियात्मिक रूप धारण कर लेते हैं तथा रागद्वेष के विषय बन कर अन्यों को सुख दुःख दिया करते हैं। इस लिए सांख्य दर्शन के तत्वज्ञान (विवेक ख्याति) की पूर्णता प्राप्त करने के लिए महर्षि कपिल के अनुसन्धान के सत्-रज-तम प्रधान विषय हैं, जिन का भली भान्ति समझ लेना अत्यन्त आवश्यक है। सतोगुण से ज्ञान की उत्पत्ति होती है। रजोगुण से मन की कामात्मक वृत्तियां जाग्रत होती हैं और तमोगुण द्वारा प्रगति उन्नति में रुकावट आती है अर्थात् प्रगति में निद्रा, आलस्य और प्रमाद-बाधक हो जाते हैं।

इन गुणों में विशेषता यह है कि ये परस्पर विरोधी होते हुए भी उपयोगी सिद्ध होते हैं। जैसे दीपक में तेल, बत्ती, अग्नि तीनों एक दूसरे के शत्रु हैं, परन्तु तीनों मिल कर घर को प्रकाशित कर देते हैं। इसी प्रकार तीनों गुण मिल कर पुरुष को भोग और अपवर्ग प्रदान करते हैं। यह कहना भी ठीक नहीं कि इन तीन गुणों में कोई अच्छा है और कोई बुरा है। रजोगुण और तमोगुण को हानिकारक समझते हैं परन्तु ये हानिकारक नहीं हैं, पुरुष के लिए कल्याण कारक हैं। गाढ़ निद्रा के लिए तमोगुण की आवश्यकता है।

★

आर्यसमाज के नियम संस्कृत पद्यों में

श्री मद्दयानन्द यतीरितानि समाज देशोन्नति सन्निधानि।
इमानि मद्यो नियमानि दृष्ट्वा स्मृत्यै द्रुतं स्याद्धितिलिखामिपद्ये॥
देव प्रिये यं सुरगीर्विशेषेणाऽऽर्षि प्रिया
अस्मादनुद्यतोऽत्र श्लोकैःस्मृति हेतवे॥

(१) सद्विद्यानाञ्च सर्वासां यच्च विज्ञान साधितम्,
सर्वेषांलोकवस्तूनमादिमूलो महेश्वरः।
इत्यत्र प्रथमे ह्युक्तं द्वितीयं च ततः शृणु॥

(२) ईश्वरः सच्चिदानन्दो निराकारोऽतिशक्तिमान्,
न्यायकारी दयालुश्चाजन्मानन्तोऽमरोऽभयः।
निर्विकारस्तथाऽनादिरतुल्यःसर्वधारकः।
सर्वेश्वरः सदाव्यापी अन्तर्यामोच निर्जरः॥
नित्यः पवित्रः स्रष्टाचेत्युपास्योस्ति सदा बुधैः।

(३) तृतीयो वेद विषये नियमोस्तिविचक्षणैः,
उद्घाट्य श्रवणाद्वार श्रोतव्योह्यार्यबन्धुभिः।
वेदस्तु सर्वविद्यानां निर्भ्रान्तानांच पुस्तकम्,
पठनं पाठनं तस्य श्रवणं श्रावणं तथा।
आर्याणां परमोधर्मो विधेयः प्रतिवासरम्॥

(४) चतुर्थः सत्यग्रहणे मिथ्यात्यागे च मानवैः।
सदैवोद्योगिभिर्भाव्यतेनार्यत्व प्रतीयते॥

(५) पञ्चमः सर्वकर्माणां सत्यासत्यसुनिर्णयम्।
कृत्वा धर्मानुसारेण कर्तव्यःस्यादुपक्रमः॥

(६) षष्ठे आर्यसमाजस्य मुख्योद्देशोहि संसृतेः।
शरीरात्मसमाजस्था नामुन्नत्यै यत्नवान् सदा॥

(७) सप्तमे यदिमानुष्यं सफलो कर्तुमिच्छसि।
प्रीति पूर्वं यथायोग्यं धर्मेण कुरु वर्तनम्॥

(८) अष्टमेऽज्ञाननाशश्च ज्ञानवृद्धिः सदा बुधैः।
कर्तव्या सर्वलाभाय तदाहुः कार्य मुत्तमम्॥

(९) नवमे न निजोन्नत्यै केवलं हर्षमावहेत्।
मन्येत्सर्वस्य जगतश्चोन्नतौ च निजोन्नतिम्॥

(१०) दशमे च समाजस्य सर्वसौख्यकरं नयम्।
सुपाल्यं पर तन्त्रेण, स्वनियमे च स्वतन्त्रता॥

प्रणवानन्द सरस्वती परिव्राजक

धन्यवाद

महात्मा हंसराज शताब्दी के सम्बन्ध में लेखराम नगर कादियां में मान्यवर डा० केदारनाथ जी व श्री चाननशाह जी, डी. ए. वी. स्कूल के प्रिंसिपल श्री मा. प्रतापसिंह जी, वेदकौर गर्ल्स स्कूल की मुख्याध्यापिका श्रीमती सन्तोष जी वेदी तथा स्त्री आर्यसमाज ने प्रार्थना पर निम्न राशि सभा के लिए १९०/- की प्रदान करके कृतार्थ किया है। इस के लिए सब का धन्यवाद है। विवरण इस प्रकार है— ७०) रुपये वेदकौर आर्य गर्ल्स स्कूल कादियां से, ५०) डी. ए. वी. स्कूल कादियां. २०) रु० पूर्व भी आये थे। ३०) रु० डा० केदारनाथ जी व श्री चरननशाह जी कादियां, २०) स्त्री आर्यसमाज कादियां सभा में जमा करा दिए गए।

त्रिलोक चन्द्र शास्त्री

सम्पादकीय—

आर्य जगत्

वर्ष २५] रविवार २०२१, ३० मई १९६५ [अंक २३

राष्ट्रभाषा के प्रेमियों से

राष्ट्रभक्ति की परिभाषा में भूमि भवन, भावना के प्रेम के साथ देशभाषा का प्यार भी आ जाता है। भाषा राष्ट्र का मुख होता है जिस को साधन बनाकर उस देश की जनता अपने मन की सारी भावनाएं दूसरों तक प्रकट करती है। प्रयेत्क देश-भक्त को अपनी भाषा पर पर बड़ा ही गौरव हुआ करता है। इतिहास के पन्ने इस बात की साक्षी देते हैं कि छोटे २ बच्चों ने भी अपनी भाषा के लिए कितना बलिदान। किया जिस देश की अपनी भाषा नहीं अथवा जिस देश के वासी अपनी राष्ट्रभाषा के प्रति प्यार नहीं रखते वे गूंगे हैं, मानसिक दास बन जाते हैं। भाषा में भावना निहित होती हैं। भाषा मनोविचारों का सब से बड़ा साधन है भाषा प्रेम देश प्रेम की कुंजी है।

भारत ने विदेशी साम्राज्य की सत्ता को समाप्त कर देने के बाद अपने राष्ट्र की भाषा देवनागरी लिपि में हिंदी घोषित की। संविधान में लिखा गया। देव दयानन्द ने बहुत पहले देवनागरी को ऊंचा स्थान देकर आर्यसमाज को इसके प्रचार का सन्देश दिया था। आर्य समाज ने इस के प्रसार में कमाल कर दिया। हिंदी जनता की भाषा बन गई। अन्त में राष्ट्रभाषा के के आसन पर आसीन हो गई। मार्ग में बड़ी २ बाधाए खड़ी की गई। सरकार ने भी इसके प्रसार के प्रति वह रुचि नहीं दिखाई जोकि उसे दिखानी चाहिए थी, न ही इस सम्बन्ध में विशेष प्रयत्न हुआ। देश में तथा सरकार में ऐसे तत्व भी थे और अब भी हैं जो दिल से हिंदी को नहीं चाहते। कितनी लज्जा की बात है कि आज भी विदेशी भाषा अंग्रेजी को ही राष्ट्रभाषा बनाये रखने के लिए तथा हिन्दी को हटाने के लिए कितना विद्रोह होता है, एवं क्षति पहुंचाई जाती है। बड़े २ लोगों को ऐसा करने मे संकोच नहीं होता। यह देश का दुर्भाग्य है कि अपने स्वार्थ के लिए विशाल भाषा से विद्रोह करने में लज्जा अनुभव नहीं की जाती। सरकारी कार्यालयों में भी अंगरेजों के मानस पुत्र पुत्रियां बैठी हैं जो कि विदेशी भाषा अंग्रेजी जो कि दो प्रतिशत की भाषा भी नहीं, जिसे भारतीय विधान में स्वीकृत भाषाओं में कोई स्थान प्राप्त नहीं बनाये रखने मे तनिक भी शर्म अनुभव नहीं करते। ऐसे लोग काले अंग्रेज हैं। इन को भारतीय कहना भी भारत का अपमान करना है। इस के साथ इस बात का अधिक खेद है कि आज महर्षि दयानन्द के आर्यसमाज के नाम की संस्थाओं में भी राष्ट्रभाषा से विशेष प्यार नहीं, वहां पर सारे काम अंग्रेजी में होते हैं। सारा कार्यक्रम अंग्रेजी में जारी है। बातचीत, प्रस्ताव तथा विवरण लेखन सब कुछ विदेशी भाषा में है। दीक्षान्त समारोहों में ऐसा प्रतीत होता है कि हम किसी विदेश में अंग्रेजी संस्था में बैठे हैं। लोगों के मन में राष्ट्रभाषा के लिए भावना नहीं है। हीनभावना है। हिन्दी का गौरव नहीं। जो अंग्रेजी में बोले वह सम्मानित होता है तथा राष्ट्रभाषा-भाषी साधारण कोटि में आजाता है। ऐसा राष्ट्र भाषा का अपमान शायद भारत के सिवाय कहीं पर भी नहीं होता। राष्ट्रभाषा वाले धक्के खाते हैं। उनकी कहीं पर भी गति नहीं होती। दूसरों में तो होनी नहीं, अपने हां भी यही अवस्था है। जिस प्रकार आज के युग में धन धर्म पर सवार होकर अपना नंगा नाच नाच रहा है। धर्म दब गया है। उसी प्रकार अंग्रेजी ने हिंदी को दबा दिया है अंग्रेजी वाले देवी पुत्र बन कर हिन्दी प्रेमियों को निकृष्ट कोटि का समझते हैं। बात कड़वी है पर है यही। जो काम हम हिंदी में भी कर सकते हैं, जो निमन्त्रण पत्र हम राष्ट्रभाषा में भी निकाल सकते हैं, जो भाषण हिंदी में दिए जा सकते हैं—वे भी अंग्रेजों के मानस पुत्र ये लोग राष्ट्रभाषा मे न करके अंग्रेजी में कर के देशभाषा से विद्रोह कर रहे हैं। ऐसे लोगों को वाल्मीकि, व्यास, कालीदास प्यारा नहीं वरन् शेक्सपीयर, मिल्टन प्यारा है। खेद है कि इसे, अंग्रेजों के मानस पुत्र आज हमारे देश में व संस्थाओं में ऊंचे आसनों पर बठ कर राष्ट्र-भाषा की जड़ें खोखली कर रहे हैं हम हैं कि आंखों से देखकर भी मौनव्रती बन गए हैं। इस अवस्था में परिवर्तन की आशा कैसे हो सकती है। यदि किसी संस्था का निमन्त्रण अंग्रेजी में आता है तो हमारा कर्तव्य है कि हम उस समारोह में न जाएं। उसका सर्वथा बहिष्कार कर दें। जो हमारी राष्ट्र-भाषा का अपमान करता है, वह देशभक्त कैसा? चाहे एक व्यक्ति हो, परिवार हो या संस्था हो। आर्य समाज तो आरम्भ से ही एक शानदार सुधारक संस्था है। इस ने बड़े २ सुधार किए हैं। प्रखर प्रभावों को रोका है। इस अंग्रेजी व्यामोह के प्रभाव से भी टक्कर लेनी होगी। (अपूर्ण)

त्रिलोक चन्द्र

सराहनीय काम

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से मद्रास में विशेष कार्य करने के लिए अपना एक उपकार्यालय खोल दिया गया तथा वहां पर एक अनुभवी विद्वान को भेज कर उन की देख-रेख में उस प्रदेश में वैदिक धर्म प्रचार एवं हिन्दी प्रसार का कार्यक्रम चलाने की योजना बना दी गई है—यह शुभ ठोस पग उठा कर सार्वदेशिक सभा ने अपने कर्तव्य का पालन किया है। सभा का यह पग सराहनीय है। मद्रास में गत दिनों हिन्दी भाषा के विरोध की आड़ ले कर वहां की जनता को जिस प्रकार भड़काया गया तथा लोगों ने जो कुछ किया उसे देखते हुए आर्यसमाज की शिरोमणि सस्था ने अपना कार्यक्रम वह जारी कर दिया है। आर्यसमाज के सिवाय चिन्ता भी किस को है हम सभा को वधाई देते हुए सा समाज से कहना चाहते हैं कि मद्रास में द्राविड़ कड़घम संस्था तथा दूसरे लोगों के फैलाये हु विषैले विचारों को रोक कर व की जनता से सम्पर्क बढ़ा क वास्तविक तथ्यों का बोध कराने निमित्त सार्वदेशिक सभा ने जो पग उठाया है। उस में प्रत्येक आर्य हिन्दु भाई-बहिन सहयोग बने। अब समय है कि आर्य समाज भारत के दक्षिण प्रान्त मद्रास, केरल आदि में धर्म प्रचार तथा हिन्दी प्रचार का कार्य करे यदि वहांसमाज का काम इध के समान होता तो ऐसी अवस्था न होती। वहां संस्कृत के प्रेमी हैं। उन को जल्दी अपने विचार का बनाया जा सकता है।

'राष्ट्र भाषा और हमारी भूलें'

'बाबू ! जरा पता लिख देना' इन शब्दों ने सिधा मेज पर लिखते हुए बाबू जी के कानों में प्रवेश किया परन्तु बाबू जी ने इन शब्दों का कोई आवभागत न किया। ...प...त...श्रा लिखवाना था बाबू जी ....ऊं हूं बाबू जी कुछ बड़बुड़ाए परन्तु इस के आगे न बढ़े। पास में खड़ा बूढ़ा जिस के हाथ में थमा वह पोस्ट कार्ड यूं डोल रहा था मानो बालिका झूला झूल रही हो।

पुन: बूढ़े ने सर्व-साहस बटोर कर कहा......'बाबू साहिब ! एड्रैस लिखवाना था।' 'लेकिन मुझे तो फुर्सत नहीं देखो तो कितना 'बिजी' हू' बाबू जी झुंझलाते हुए गर्दन ऊंची करते हुए बोले। ......'सूर्य के ढलते प्रकाश में उन के उप-नेत्रों के शीशे दमक पड़ते थे।

यह कोई पहला अवसर न था, बाबू जी की गली में रहने वाला वह बूढ़ा, इस प्रकार से कई बार तंग करता रहा था बाबू जी का उस से नफरत करना एवं बूढ़े का बाबू जी से बेजोड़ प्यार, बढ़ चढ़ कर था।

बाबू जी ने सोच विचार के उपरान्त चश्मे को रूमाल का आर्शीवाद देते हुए वह पत्र मांगा और दूसरे क्षण ही (पता तो मालूम था ही) आंगल भाषा में एड्रैस लिख दिया। कार्ड को लौटाते हुए बोला 'पत्र लिखा किस ने' उत्तर था 'राजे ने' बड़ा अच्छा लेखा है, पता भी उससे लिखवा लेना था" बाबू जी ने विश्राम लेते हुए कहा।

बाबू जी यह पत्र उसी पाते से लिखवाया है जो छठी पढ़ता है, वह अंग्रेज़ी तो जाने नहीं, बोला इसी लिए आप के (घोरे पास) आया था, क्यों बाबू। अब तो यह जल्दी पहुँचेगा न ? 'हां ! हां !" बाबू जी ने छुटकारा पाने हेतु टालते हुए कहा।

ठीक यही मनोदशा असंख्य नर-नारियों की है, जो हर पहलू में केवल इंगलिश का ही अवलम्बन लेते हैं एवं अपना हर कार्य का श्री गणेश अंग्रेजी से करते हैं। उक्त प्रसंग उन लोगों के विषय में है जो अपना पत्र आदि लिखते तो सारा का सारा हिन्दी में हैं परन्तु उस पर पता इंगलिश में लिख देते हैं। हम अंग्रेजी के मूलतः विरोधी नहीं, इसका अन्तर्राष्ट्रीय भाषाओं में अपना सम्मानित स्थान है। परन्तु प्रश्न तो यह उठता है कि हम आखिर कब तक इस लंगड़ी भाषा का सहारा लेते रहेंगे ? उत्तर मिलता है, 'इसके बगैर उच्च शिक्षा एवं कतिपय कार्यों में रुकावट पड़ती है।" तो क्या रूस, जापान, जर्मनी आदि ये देश इस के बिना कैसे उन्नतशील हो रहे हैं ! अब उत्तर इसका मौन में ही मिलेगा। तो ऐसा सब कुछ होते हुए भी क्या हम राष्ट्र भाषा के प्रति उदासीन नहीं ? कहां तक इस कारणवश राष्ट्र-भाषा के प्रचार-प्रसार में बाधा पड़ती है ! कभी आप ने विचारा ?

> श्री सुदर्शन जी अंशु...आधुनिक गद्य लेखकों में उदीयमान लेखक हैं। चलती फिरती भाषा में उपयोगी विचारों को जनता में व्यक्त करना ही उनकी प्रवृत्ति है।
>
> उपरोक्त लेख में हिन्दी की दुर्दशा को विनोद शैली में प्रकट किया है। अवश्य पढ़िए और विचार करके देखिए कि लेखक के विचार कहां तक संगत हैं। और आप उनके साथ किस सीमा तक सहमत हैं।
>
> —व्यवस्थापक

आपके दैनिक कार्य-कलाप से राष्ट्र भाषा कितनी दूर है ! कभी विचारा आपने ? यदि नहीं, तो कीजिए जरा अपने दैनिक कार्यों का अवलोकन।

(१) एक सज्जन प्रभाकर, साहित्य रत्न आदि उत्तीर्ण हैं. हिन्दी ऐसे लिखते हैं मानों मोती गूंथे हों परन्तु इन सब से सजी-संवरी निज पाती (पत्र) पर रख देते हैं मानों पौराणिक भाइयों की न्याईं नवनिर्मित सजे-धजे भवन पर जैसे 'नज़र बट्टू' अर्थात पते के रूप में अंग्रेजो को।

(२) हमारे असंख्य आर्य स्कूलों एवं कालिजों के स्कूल कालिज बोर्डों पर हिन्दी को प्राथमिकता नहीं दी जाती।

(३) दिल्ली से निकलने वाले आर्य समाजिक विचारधारा के दो दैनिक पत्र (उर्दू और हिन्दी के) जिस के अपने कार्यालय में राष्ट्र भाषा को निकृष्ट स्थान दिया है।

(४) सारे भारत में सब से अधिक बिकने वाला दिल्ली से निकलने वाला एक हिन्दी दैनिक अपने ही नाम के पीछे अंग्रेजी की दुम लगाए हुए है।

(५) लगभग तीन वर्ष हो गए श्री कालूलाल जी श्रीमाली तत्कालीन शिक्षामंत्री भारत प्रशासन, करनाल के दयानन्द महिला महाविद्यालयमें पधारे अंग्रेजीको प्रथम स्थान देते हुए उक्त कालिज के नामपट ने उनका स्वागत किया। बाद में उनका स्वागग अंग्रेजी में दी गई कार्यक्रम की लिस्ट ने किया जिससे वह अच्छे खासे प्रभावित हुए। जिससे अभी हाल ही हुए हिन्दी आन्दोलन के उपरांत भी हिन्दी-प्रेमी सज्जनों की निष्ठा पर वह व्यंग्य कर सकें।

(६) उसी नगर की मुख्य आर्य समाज के अपने वाचनालय में जो निर्देश-पट्टिका लगी रहती थी वह थी गए जमाने की भाषा उर्दू में, कई बार उक्त समाज के अधिकारियों का ध्यान आकर्षित किया गया परन्तु सब असफल परन्तु यह उनका मामला अधिक दिन न चल सका बार-बार पत्र डालने पर उनको वह बार्ड वहां से हटाना पड़ा।

इस प्रकार के उदाहरणों की कभी नहीं लिखता चलूं तो पन्ने के पन्ने भर जावें परन्तु मनुष्य को इशारा काफी होता है। उक्त छः प्रकार के भिन्न २ प्रसंगों में हमें अपने दैनिक कार्यों की झलक मिलती है और मालूम पड़ता है कि हम राष्ट्रभाषा के सम्बन्ध में कहां तक जागरूक हैं और यदि हमारी मनोदशा यही रही तो हिन्दी पर पड़े हुए राष्ट्रभाषा के सुनहरे आवरण की जगह वह काली यामिनी ले लेगी।

क्या राष्ट्र-भाषा के प्रति आप कर्तव्यशील बनेंगे ? क्या आप

श्री सुदर्शन जी अंशु, नई दिल्ली

अपने दैनिक कार्यों में हिंदी को स्थान देंगे ? यदि हां तो आज के शुभ दिन में ही उस नाम-पट (नेम प्लेट) को हटा दीजिए जो अंग्रेजी में लिखे हुए हैं अपने घर की शोभा निमित्त राष्ट्रभाषा में ही अपनी 'नेम-प्लेट' लिखवाइए। अपने कार्यों में हिंदी को प्राथमिकता दीजिए। आप द्वारा किया हुआ यह तुच्छ कार्य ही एक क्रांति का रूप ले लेगा और राष्ट्रभाषा की प्रगति निज गृह से ही प्रारम्भ हो जावेगी।

★ न्यायकारी निर्बल का भी समर्थन करो।

आर्य समाज की कहानियां नं० ५

(श्री राजेन्द्र जी जिज्ञासु एम० ए०, प्राध्यापक दयानन्द कालेज, शोलापुर)

वीर दानी :—महाशय कुन्दन लाल जी धुरी निवासी आर्यसमाज के प्रति श्रद्धा का सजीव रूप हैं। बड़े प्रेमी परन्तु अत्यन्त स्पष्टवादी हैं। यद्यपि आज कल आर्थिक संकट में हैं, परन्तु किसी समय बड़े धनीमानो थे और अपनी तिजोरी को बिना देखे दान देते थे। उनकी दानशीलता की मैं ने कई कहानियां सुनी हैं परन्तु एक दो यहां देता हूं।

एक बार पं० हरदयालु जी ने धुरी में उत्सव पर कह दिया, कभी वह समय भी था जब हमारे देश में विद्वानों को सोने के पात्रों में भोजन कराते थे परन्तु आज देश पराधीनता के कारण कंगाल भी है और श्रद्धा भी नहीं। यह सुन कर महाशय जी उत्सव से उठ गये। अगले दिन भोजन का निमन्त्रण आप के हां पा कर पं० हरदयालु जी आप के घर गये। पं० जी यह देख कर दंग रह गए कि महाशय कुन्दन लाल जी ने सोने के गिलास में पानी भेंट किया। यह नहीं कि उनके घर सोने का गिलास था अपितु, जब भाषण सुना घर के भूषण लिये और स्वर्णकार को कहा जैसे कैसे भी हो रात रात में शुद्ध सोने का गिलास बना कर दे। पं० जी को जल भेंट करके आप बोले "प० जी यह न कहना कि आर्य समाज में कोई श्रद्धालु नहीं जो वेद का उपदेश देने वालों को आज सोने के पात्र में खिला-पिला नहीं सकता।' यह है उनकी श्रद्धा।

उनके दान से बीसियों आर्य संस्थाएं लाभान्वित हुई पर दान की एक विचित्र कहानी पढ़िए। एक बार महात्मा आनन्द स्वामी जी वहां पधारे। उन्होंने महाशय रानपाल मण्डली व मान्य ठाकुर जी को बुलाया या वे स्वयं उनके दर्शन अर्थ वहां आ गए यह मुझे स्मरण नहीं रहा। भोजन महाशय जी के हां था। महाशय राजपाल जी ने भोजन करते समय यूं ही महात्मा जी से कह दिया कि ठाकुर जी की जेब कट गई है कोई ३०० रु० की हानि हुई है।

महाशय जी ने विदाई के समय ठाकुर जी को वे रुपये दिए। ठाकुर जी ने बहुत न की परन्तु आप बोले कि प्रभु ने जब हमको सुख सम्पत्ति दी है तो हमारे विद्वान् क्यों दुःखी हों? श्रद्धा से वशीभूत होकर ठाकुर जी ने वे रुपये ले लिए। खेद है कि राजनैतिक दलों के दूत-पूत, श्रद्धाविहीन चौ०पदलोलुप, पैसा पन्थी, निष्क्रिय लोग समाजों में घुसकर हमारे समाज के घातक बने हुए हैं। यह श्रद्धा, यह दानशीलता और यह प्रेम हमारी कीर्ति व शोभा के कारण रहे हैं। अब तो पाखण्ड खण्डन करो तो पाखण्डियों से सांठ-गांठ रखने वाले पदों के प्यारे प्रधान मन्त्री जलभुन जाते हैं कहते हैं 'समाज की हानि कर दी।' समाज हितैषी युवक इस परिस्थिति पर विचारें और सिद्धान्तों के प्रचार का युग पूरे वेग से लावें ताकि पुनः ऐसे आर्य पुरुष समाजों में पैदा हों।

आर्यत्व कैसा हो—

कुछ दिन हुए शोलापुर से दयानन्द संस्थाओं के एक हितैषी के कुटुम्ब के एक युवक ने अध्ययन के लिये मुसलिम विश्वविद्यालय अलीगढ़ जाना था। हमारे कालेज के उप आचार्य मान्य डा० सोनी जी ने मुझे कहा कि मैं चाहता हूं कि उक्त युवक का संरक्षण वहां कोई आर्यसमाजी करे ताकि वह कुछ प्रभाव लेकर आये। वसे डा० सोनी जी का विश्वविद्यालय के प्रतिष्ठित कुछ मुसलमानों से परिचय है। यह एक विचारणीय समस्या थी। आपने मुझे कहा कि क्या अलीगढ़ के किसी आर्यसमाजी को जानते हो? मुझे एक वकील महाशय का नाम ज्ञात था पर भूल गया। मैंने कहा कि कोई नहीं प्रि० भगवान्दास जी की ओर से पत्र प्रधान आर्यसमाज के नाम दे दें। प्रि० साहिब को हिन्दी आंदोलन के सेनानी के रूप में सब आर्य समाजी जानते हैं। अभी पत्र टाईप कराने के लिए लिखा ही जा रहा था कि मुझे स्मरण हो आया कि पूज्य स्वा० ध्रुवानन्द जी का साधु आश्रम अलीगढ़ में है और वह प्रि० साहिब से सुपरिचित हैं। पत्र में लिखा गया कि इस युवक का संरक्षण किसी प्रभावशाली व्यक्ति को सौंपें ताकि आर्यत्व से यह प्रभावित हो।

स्वामी जी की अनुपस्थिति में उनके आश्रम के अध्यक्ष डा० सुरेन्द्रकुमार जी ने पत्र लेकर उक्त युवक का संरक्षक **(Caurdian)** बनकर उसकी सारी समस्या का समाधान कर प्रि० साहिब को लिखा आप निश्चिन्त रहें। सहस्रों मील की दूरी पर बैठा एक आर्यसमाजी हमारा कुछ लगता है। आर्य का आर्य पर क्या अधिकार है और आर्यपन क्या है? इस प्रकार के सब प्रश्नों का उत्तर उपरोक्त कहानी देती है। इस आर्य मर्यादा अनुसार किए गये व्यवहार से यहां आर्य समाज को अपने प्रचार व संगठन में जो बल मिलेगा उसकी कल्पना हम ही कर सकते हैं। जो युवक वहां डाक्टरी के ऊंचे अध्ययन के लिये गया है वह क्या आजीवन यह भूल सकेगा कि एक सर्वथा असम्बन्धित एवं अपरिचित व्यक्ति ने केवल आर्य होने के नाते मेरा संरक्षक बनना स्वीकार किया!

वन्दे मातरम्-श्री रामचन्द्र राव जी वन्देमातरम् एम०एल०ए० आंध्र प्रदेश आर्यसमाज के यशस्वी योद्धा हैं। हैदराबाद सत्याग्रह के समय १६ वर्षीय इस वीर की गुदा में बैंत मार मार के निढाल किया गया और कहा गया कि वन्दे मातरम् मत बोलो पर अचेत अब वीर बेहोशी में भी यही बोलता रहा और आज वह इसी नाम से विख्यात हैं। इस प्रकार के साहसी बलिदानी योद्धा की यह कहानी लम्बी है पर संक्षेप से लिखी है। १७ सितम्बर १९४८को हैदराबाद राज्य को निजामशाही से मुक्त कराया गया उस समय भी जब चारों ओर लूट मार और आग लगाने की दुर्घटनायें हो रही थीं। जब 'स्वतन्त्र हैदराबाद' का विरोध करने वालों को चुन-चुन कर गोली का निशाना बनाया जा रहा था तब जान तली पर धर कर इस वीर ने अपने वीर भाई श्री वीरभद्र जी एवं श्री करणसिंह जी आदि सहयोगियों तथा अपने दल को साथ लेकर निज़ामशाही तथा निज़ामशाही का आधार एवं पोषक रज़ाकार गुण्डों की संस्था व मजलिस इत्तहादउलमसलमीन जैसी देशद्रोही संस्था के सब षड्यन्त्रों व गतिविधियों का ब्योरा हैदराबाद में स्थित भारत सरकार के प्रतिनिधि श्री के० एम० मुन्शी को निरन्तर पहुंचा कर हैदराबाद रूपी नासूर का फोड़ा समाप्त कराने का महान क्रान्तिकारी कार्य सम्पन्न कराया। देश के ऐसे सपूतों का जीवन हमें सदैव प्रेरणा देता रहे।

★ जहां चाह है वहां राह है।

★ प्राण जायें पर वचन न जाई।

धर्म और एकता

(श्री बूटाराम जी, मन्त्री जिला वेद प्रचारिणी सभा, होशियापुर)

धर्म के दो अंग हैं। एक सिद्धान्त '(Ideology)' और दूसरा 'धर्माचरण (Practice)।' दोनों का महत्त्व समान है। इन का एक दूसरे के साथ समवाय सम्बन्ध है। यहां तक कि एक, दूसरे के बिना चल ही नहीं सकता जैसे कि पक्षी के दो पंख हों तभी वह उड़ सकता है अथवा एक गाड़ी के दो पहिये हों तभी वह चल सकती है, इसी प्रकार 'सिद्धान्त' 'धर्माचरण' के बिना कोरा बुद्धिवाद है और धर्माचरण बिना सिद्धान्त के एक ऐसी निराधार और निष्प्रयोजन दौड़ है जिस का न कोई उद्देश्य और न लक्ष्य। अतएव मनुष्य जीवन की सफलता तथा पूर्णता के लिए इन दोनों का समन्वय करना अत्यन्त आवश्यक है।

फिर भी 'सिद्धान्त' का स्थान अपेक्षाकृत मुख्य है और नींव के समान है। पर मुश्किल यह है कि वर्तमान काल में इतने 'वाद' (Isms) चल पड़े हैं और उनकी इतनी भरमार हो गई है कि साधारण मनुष्य के लिए उनमें से यह निर्णय करना अत्यन्त कठिन हो गया है कि इनमें से कौन-सा सही और मानने योग्य है और कौन-सा नहीं। एक भूल-भुलियों का कुचक्कर-सा बन गया है। धार्मिक दृष्टि से यदि इसकी अपेक्षा भी की जाए तो भी देश के हित में इस स्थिति पर अवश्य ध्यान देना चाहिए क्योंकि इतने 'सम्प्रदायों' के होते हुए राष्ट्रीय-एकता कदापि सम्पन्न नहीं हो सकेगी। सम्प्रदायकता में दोष तो हैं ही, पर उससे एक बात का प्रमाण भी मिलता है और वह यह कि एक विचार (अथवा सिद्धान्त) के मानने वाले लोग ही एक गुट में संगठित होते हैं। एक विचार-धारा का क्षेत्र जितना विशाल होगा और जितना जन-समूह उस क्षेत्र के अन्दर आया होगा उतनी ही उसकी शक्ति और उतना ही उसका प्रभाव होगा। जितने कम सम्प्रदाएं होंगे उतनी ही अधिक जन-सख्या किसी एक गुट में होगी। उदाहरण के लिए भारत में बसने वाले दो बड़े गुटों को लीजिए हिन्दू और मुसलमान। मुसलमानों की विचार धारा (सिद्धान्त) एक है। किताब एक है धार्मिक और सामाजिक मान्यताएं एक हैं। इसलिए वह सब के सब 'एक जमायत' हैं। और एक शक्ति भी। इसके विपरीत हिन्दुओं में सम्प्रदायों की इतनी भरमार है कि उनकी गणना करना भी कठिन है। फलतः किसी भी 'एक' हिन्दू-सम्प्रदाय की जन-सख्या इतनी नहीं जितनी मुसलमानों की है। इस दृष्टि से मुसलमान हिन्दुओं की अपेक्षा अब भी अधिक शक्तिशाली है। इस कथन का अभिप्राय यह कदापि नहीं कि हिन्दुओ और मुसलमानों में किसी प्रकार की होड़ (मुकाबले) की भावना पैदा की जाए अपितु यहां यह दिखलाना मकसूद (अभिष्ट) है कि जहां विचारों की एकता होती है और जितना जन-समूह उस 'एक' विचारधारा को अपनाता है उतनी ही उसमें शक्ति और बरक्त होती है। इस नियम का शायद हिन्दुओं, ने सब से ज्यादा उलंघन किया है और उनको इसका कटु फल भी भोगना पड़ा है। गत लगभग एक हजार वर्ष का इसका इतिहास इसकी मुंह बोलती तसवीर है। तिस पर भी इन्होंने इतिहास से न कुछ सीखा है और न ही भुलाया है। अब भी वक्त है कि वह चेतें और 'एक-मत' होने का यत्न करें। एक धर्म ग्रन्थ नियत करें और एक ही भाषा। इस में प्रान्त-वाद को बिल्कुल न आने दें। बल्कि राष्ट्रीय स्तर पर इन दोनों बातों का निर्णय करें। यह निर्णय क्या होगा यह तो कहना कठिन है, हां एक बात निस्सकोच कही जा सकती है कि एक धर्म ग्रन्थ यदि कोई हो सकता तो वह 'वेद' ही हो सकता है जिसे इस देश के सभी ऋषि, मुनि, स्मृति-कार, शास्त्र-कार, उपनिषद्-कार, आचार्य-गण, रामायण महाभारत एवं गीता-कार यहां तक कि मध्यकालीन सन्त महात्मा और गुरुजन भी मानते आये हैं। दूर दक्षिण में केरल और तामिल नाड के अन्दर कुमारल भट्ट, शंकराचार्य, रामानुजाचार्य, सायणाचार्य आदि महान् दार्शनिक-आचार्यों ने वेद को ही अपना मुख्य धर्म ग्रन्थ मान कर अपना प्रचार किया और बुद्ध धर्म जैसे देश-व्यापी धर्म को परास्त किया तथा देश के चारों कोनों में मठ स्थापित किये। उत्तर भारत तो वेदों का घर है ही। पंजाब के नदों के किनारे यह लिखे गए। गंगा, यमुना, नर्मदा, गोदावरी के तट पर इन का यशोगान होता रहा। उत्तराखंड की पर्वत मालाओं की गुफाओं में योगी जनों ने इन के मर्म को खोजा और जाना। समूचे देश के धार्मिक साहित्य में जो स्थान वेद का सदा से चला आया है वह अन्य किसी ग्रन्थ का न हुआ है न हो सकता है। अतएव इसे ही सब भारतवासियों को अपना धर्म-ग्रंथ मानना चाहिये। आधुनिक काल के युग-प्रवर्तक महर्षि दयानन्द ने इस पर विशेष बल दिया है और योगी अरविन्द जैसे मनीषियों ने इसका समर्थन किया है!

भाषा के सम्बन्ध में दुर्भाग्य से बहुत मत-भेद पैदा हो गया है। राष्ट्रीय भाषा का नियत करना और उसे लागू करना भारत-सरकार का काम है। वह जो भाषा नियत करे उसे सब को मानना चाहिये। फिर भी जैसे वेद को धर्म ग्रंथ ही मानना सब के लिए अभीष्ट और हितकर है ऐसे ही (और वेद के स्तर को पहुँचने के लिए) समूचा देश नहीं तो कम से कम हिन्दू वर्ग तो 'संस्कृत' को अपनी जातीय भाषा मान ले। यदि मुसलमान भाई अरब और फारिस देश की भाषा और लिपि को अपना सकते हैं तो हिन्दू अपने इस देश की गौरवमय भाषा को अपनाने में क्यों संकोच से काम ले।

संगठन के यही दो (एक धर्म-ग्रन्थ और एक भाषा) मूल मन्त्र है और इन्हीं को अपनाने से कल्याण होगा।

संस्कृत-परिषद् नाभा

रविवार, १६ मई १९६५ को आर्य हाई स्कूल नाभा के भवन में संस्कृत परिषद् नाभा की मासिक गोष्ठी सम्पन्न हुई। श्री देशराज जी भाटिया, मुख्याध्यापक के सभापतित्व में प्रो० वृन्दावन जी शर्मा ने विदेशों में संस्कृत के महत्व पर प्रकाश डालते हुए वहां के विश्व-विद्यालयों में संस्कृत के अध्यायन और अनुसन्धान के उच्च प्रबन्ध का विस्तार से वर्णन किया। यह परिषद् संस्कृत भाषा, साहित्य तथा संस्कृति के प्रसार के लिए स्थापित की गई है।

विद्यासागर
प्रचार मन्त्री नाभा

अमूल्य वचन

★ मित्र को पाप करने से बचावे, उसको भलाई की शिक्षा दे, उसकी गुप्त बातों को छिपावे, गुणों को प्रकट करे और विपत्ति काल में भी उसका साथ न छोड़े तथा यथा शक्ति द्रव्य से भी उसकी सहायता करे। यही मित्रों का लक्षण है।

वैदिक विज्ञान अनुसन्धान कार्य में

(ले० श्री रामप्रकाश जो एम० एस० सी० आनर्स, पंजाब विश्व विद्यालय चण्डीगढ़)

मुझे अध्ययन काल से ही आर्य समाज के सिद्धान्तों के प्रति अत्यन्त रुचि है। अत: मेरे लिए वेद-विद्या विज्ञान की पुस्तकें हैं। विज्ञान का विद्यार्थी होने के कारण मुझे मुनिवर गुरुदत्त विद्यार्थी, एम० ए० के वैदिक विज्ञान प्रतिपादक ग्रन्थों में अत्यन्त रुचि रही है। परन्तु तत्पश्चात् के विद्वानों के ग्रन्थों में उस विचारधारा के दर्शन नहीं हुए।

मैं जब एम० एस० सी० के उत्तरार्द्ध में था तो मुझे आर्य-पत्रों द्वारा श्री पं० वीरसेन जी वेदश्रमी के वैदिक विज्ञान सम्बन्धी कई लेख पढ़ने को मिले और अब भी बहुत कुछ उनके प्रकाशित लेखों एवं अप्रकाशित ग्रन्थों के वैज्ञानिक अंश को पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उनके पढ़ने से मुझे अत्यन्त हर्ष हुआ और आशा जागृत हुई कि देव दयानन्द के स्वप्न को वे साकार करने के प्रयत्न में खूब आगे बढ़ रहे हैं और उसमें सफल होंगे। अनेक बड़े-बड़े वेद के विद्वानों ने उनके लेखों की प्रशंसा की है और मैं भी यही अनुभव कर रहा हूं कि वेद मन्त्रों के द्वारा विज्ञान-प्रदर्शन तथा उनके परीक्षण भी वे बहुत उचित रीति से कर रहे हैं और करना चाहते हैं। जो कार्य वास्तव में करना था वह किसी ने नहीं किया उसे वे करने में संलग्न हैं। उनमें वेद के अनेक प्रकार के कार्यों को करने की क्षमता है जो अन्य विद्वानों में नहीं पाई जाती।

वेद से विज्ञान प्रदर्शन का कार्य अत्यन्त महत्वपूर्ण है और इसके लिए उत्तम साधनों से ही यह शक्ति प्राप्त होती है। इस कार्य में परीक्षण अत्यन्त आवश्यक हैं और परीक्षण के लिए धन की भी अत्यन्त आवश्यकता है। यज्ञ द्वारा वर्षा कराने एवं रोकने के कार्य के उन्होंने कुछ परीक्षण भी किए हैं तथा कुछ परीक्षण और भी उनको करने हैं, जिससे वेद के यज्ञ-विज्ञान को वे एक निर्णयात्मक स्थिति में वैज्ञानिक जगत के सम्मुख रख सकें।

सम्प्रति भूमंडल पर विज्ञान ने अपना इतना अधिक वर्चस्व जमा लिया है कि धार्मिक ग्रन्थ का नाम लेना या धर्म की चर्चा करना एकदम असामयिक, अनुपयुक्त एवं अशिक्षितपन माना जाने लगा है। क्या आप चाहते हैं कि वेद इसी प्रकार त्याज्य श्रेणी में परिगणित किया जावे ? यदि नहीं तो अविलम्ब ही वेद के कार्य के लिए बड़ी से बड़ी भेंट बिना संकोच के अवश्य ही श्री पं० वीरसेन जी वेदश्रमी, वेद सदन, महारानी रोड इन्दौर २. म० प्र० को भेजकर वेद के कार्य को उन्नत करने में सहयोग देना ही चाहिए।

श्री वेदश्रमी जी ने यज्ञ-द्वारा वर्षा कराने और रोकने के विभिन्न ऋतुओं में परीक्षण करने की योजना बनाई है, जिसके अनुसार ५ प्रकार से इस कार्य के परीक्षण करना वे चाहते हैं और उन पांचों प्रकार के परीक्षणों को ५-५ बार कर के उनके परिणामों को अंकित करके उनका वैज्ञानिक विश्लेषण करना चाहते हैं। इस कार्य के इन परीक्षणों में कम से कम एक लाख रुपया व्यय विवरण सहित भी तैयार किया है वह वास्तव में बहुत ही कम राशि है। यदि एक-एक परीक्षण का ४-४ हजार रुपया एक-एक धनीमानी जन या समृद्ध समाजें भी देवें तो २५ व्यक्ति या समाजों से इस राशि की पूर्ति हो जाती है। अथवा एक-एक सहस्र देने वाले सौ व्यक्ति या समाजें भी इस राशि की पूर्ति कर सकती हैं। जिस से जो कुछ भी सहयोग बने देकर इस कार्य को आगे बढ़ाना चाहिए।

एक समय था जब कि शास्त्रार्थों से आर्यसमाज ने वैदिक धर्म की विजय की पताका सर्वत्र फहराई थी। परन्तु अब विज्ञान का युग आ गया है और इस में वैज्ञानिक कार्यों की ही प्रधानता है। यदि ऐसे समय में भूमंडल के शिक्षित समाज एवं वैज्ञानिक क्षेत्र में वेद के महत्व को प्रकट करना है तो वेद के क्रियात्मक वैज्ञानिक स्वरूप को प्रस्तुत करना होगा। अत: श्री वेदश्रमी जी जो यज्ञ-द्वारा वर्षा-विज्ञान के परीक्षण करना चाहते हैं व अत्यन्त आवश्यक एवं पूर्ण समयोचित हैं। इस कार्य में श्री पं० वीरसेन जी वेदश्रमी, महारानी रोड, इन्दौर २, को अवश्य ही पूर्ण सहयोग सब को देना चाहिए।

मधु कलश

मेरा और तुम्हारा कैसा सब कुछ अपना मानो
मेरा रूप तुम्हारा दर्पण सीधी सच्ची जानो
मुझे जानने की इच्छा है साथी अगर तुम्हारी
जैसे भी हो सब से पहले अपने को पहचानो

★

मनुज नहीं हैं मानवता से दूर विचरने वाले
देवरूप हैं, दीनदुखी की पीड़ा हरने वाले
औरों को दुःख देने वाले सुखी नहीं रह सकते
हिंसा के ही घाट उतरते हिंसा करने वाले

★

बाधाओं से चलो खेलते विघ्नों को अपना लो
जिसका अन्त सुखद हो ऐसे दुख को गले लगा लो
अगर आज की खुशी माइदे कल को डंक तुम्हारे
अपने हाथों उसे आज ही खंड खंड कर डालो

—विजय निर्बाध

(क्रमशः)

आवश्यकता

म० आनंद स्वामी जी ७ से १० जून तक लुधियाना में कथा

महात्मा आनन्द स्वामी जी सरस्वती के प्रवचन तथा कथा का आगामी कार्यक्रम इस प्रकार है। महात्मा जी २२ मई से ३० मई तक नैनीताल में कथा करेंगे। इसके बाद १ से ४ जून तक हरिद्वार में और फिर ७ से १० जून तक आर्यसमाज हाल बाजार लुधियाना में कथा करेंगे।

शुभ विवाह

मंडी फैन्टेन गंज के प्रसिद्ध व्यापारी तथा पंजाब व्यापार मंडल के सदस्य व पूर्व कार्यकर्ता प्रधान ए० पी० पी० सभा जालन्धर के श्री ला० इन्द्रसैन जी की सुपुत्री कुमारी शक्ति का पाणि ग्रहण संस्कार २२ मई की रात को उनके निवास स्थान बजुरा होशियारपुर में, पंजाब विधान परिषद् के सभापति श्री ला० दुर्गादास जी खन्ना के सुपुत्र श्री वृजलाल जी खन्ना के साथ धूम-धाम से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर कामरेड श्री रामकृष्ण जी प्रधान मन्त्री पंजाब सरकार, श्री हरबंसलाल जी स्पीकर पंजाब असेम्बली, श्री जगन्नाथ जी एडवोकेट जनरल पंजाब, कपूरसिंह जी एम० एल० ए०, श्री [illegible] जी एम० एल० ए०, श्री वृषभानु जी एम० एल० ए०, श्री दर्शनसिंह जी एम० एल० ए० व पंजाब सरकार के वरिष्ट अधिकारी और नगर के प्रतिष्ठित गण्यमान्य सज्जन मिलनी के अवसर पर विद्यमान थे।

विवाह कार्य श्री पं० रविदत्त जी पुरोहित ने पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न कराया। इस अवसर पर वर पक्ष की ओर से १०१/- रु० दान की घोषणा की गई।

आर्य जगत की ओर से इस नवीन दम्पती को मंगल कामनाएं प्राप्त हों। श्री ला० इन्द्रसैन जी को बहुत २ हार्दिक बधाई हो।

—व्यवस्थापक

महात्मा हंसराज जन्म शताब्दी संबंधी दानसूची

जो कि आर्य समाज माडल टौन जालन्धर से प्राप्त हुई।

श्री [illegible] जी [illegible]	२५/-
,, इन्द्र चन्द्र जी सुराना	१०/-
,, कृपाराम जी कोहली	१०/-
,, हरिराम जी...	५/-
,, साईंदास जी...	१०/-
,, त्रिलोक चन्द्र जी...	५/-
,, वेदप्रकाश जी मलहोत्रा	१०/-
,, शिवराम जी ओबराय	५/-
श्रीमती शकुन्तला देवी जी	२/-
वैद्य प्रकाश चन्द्र जी	२/-
श्री सोमासिंह जी	५/-
गुप्तदान	१/-
श्री ज्ञानचन्द्र जी भाटिया	१०/-
श्रीमती पार्वती देवी जी	२/-
कर्नल दत्ता जी	८/-
श्री विश्वनाथ जी चावला	५/-
बख्शी शेरसिंह जी स्टेट बैंक जालन्धर	२५/-

शिवराम ओबराय

कोषाध्यक्ष समाज

आर्यसमाज लक्ष्मणसर

आर्य समाज लक्ष्मणसर की ओर से इन दिनों चौरस्ती अटारी के समीप पटेल चौक में लगभग ३ सप्ताह से कथा का कार्यक्रम चल रहा है। पहले श्री स्वामी गंगागिरि जी की मनोहर कथा होती रही। आजकल श्री पं० ओम प्रकाश जी महोपदेशक आ० प्रा० प्रतिनिधि सभा की सुन्दर कथा हो रही है जिस का अति उत्तम प्रभाव पड़ रहा है। पौराणिक स्त्री पुरुष भी भारी संख्या में आ रहे हैं। कथा का यह क्रम ३० मई तक इसी [illegible] रहेगा।

[illegible] वाही प्रतिदिन प्रातः संध्या [illegible] और प्रभु भक्ति के गीतों के साथ आरम्भ होकर $7\frac{1}{4}$ से $8\frac{1}{4}$ बजे तक श्री पण्डित जी की कथा होती है।

राष्ट्र-रक्षा प्रस्ताव

१६ मई रविवार कथा की समाप्ति पर देश की आधुनिक स्थिति के सम्बन्ध में श्री पं० ओम्प्रकाश जी तथा रुद्रदत्त जी शर्मा ने गम्भीर विचार देते हुए निम्न प्रस्ताव प्रस्तुत किया जो सर्व सम्मति से स्वीकृत हुआ।

यह अधिवेशन इस संकटकाल में भारत सरकार को हर प्रकार के सहयोग का विश्वास दिलाता हुआ देश के अन्दर रहने वाले आस्तीन के सांपों अर्थात छिपे शत्रुओं तथा पाकिस्तान और चीन जैसे कुटिल नीतिज्ञ मक्कार शत्रुओं से पूर्णतया सावधान रहने के लिये प्रेरणा करता है और अन्दर तथा बाहर के दोनों शत्रुओं के साथ किसी प्रकार की रियायत अथवा नरमी न दर्शाते हुए उन्हें न केवल रण कच्छ से अपितु कश्मीर आदि के इलाकों से भी तुरन्त बाहिर निकाल देने की सबल मांग करता है।

रुद्रदत्त शर्मा प्रधान

शोक समाचार

A. S. H/S स्कूल नकोदर

के अध्यापक वर्ग तथा छात्रों की बैठक में जालन्धर निवासी, रिटायर्ड श्री मास्टर रलाराम जी के निधन पर गहरा शोक प्रकट किया गया।

मास्टर जी दृढ़ आर्य समाजी और शिक्षित व्यक्ति थे। उनका सारा जीवन शिक्षा प्रसार और आर्य समाज की सेवा में व्यतीत हुआ। आप सामाजिक क्षेत्र में समाज के पितामह कहाते थे।

भगवान से उनकी आत्मा की सद्गति के लिए तथा सम्बन्धियों को धैर्य प्रदान करने के लिए प्रार्थना की गई।

जगदीश [illegible]

प्रिन्सीपल स्कूल

साईंदास A.S. H/S स्कूल जालन्धर

के छात्र तथा अध्यापक वर्ग की यह विशेष बैठक पूज्य मास्टर रलाराम जी महंगी के देहांत पर हार्दिक शोक प्रकट करती है।

पूज्य मास्टर जी ने चालीस वर्ष स्कूल की अविस्मरणीय सेवा की। उनकी अवस्था अस्सी वर्ष की थी वे स्कूल के सर्वप्रिय वृद्ध पितामह माने जाते थे।

भगवान से प्रार्थना है कि वे पूज्य मास्टर जी की आत्मा को सद्गति प्रदान करें तथा उन के सम्बन्धियों को इस अपार वियोग दुःख को सहन करने की शक्ति दें।

[illegible] अध्यापक मण्डल

आर्य वीरदल पानीपत

की शोक सभा में श्री उत्तमचन्द्र जी 'शरर' प्रो० आर्य कालिज पानीपत के भाई श्री [illegible] जी की आकस्मिक मृत्यु पर हार्दिक शोक प्रकट करते हुए उनकी आत्मा की सद्गति तथा परिवार को इस दारुण दुःख सहन करने की शक्ति प्रदान करने के लिए परमपिता प्रभु से प्रार्थना की गई।

इन्द्रभानु आर्य नगर नायक पानीपत

मुद्रक व प्रकाशक श्री सन्तोषराज जी आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर द्वारा वीर मिलाप प्रैस, मिलाप रोड जालन्धर से मुद्रित तथा आर्यजगत कार्यालय महात्मा हंसराज भवन निकट कचहरी जालन्धर शहर से प्रकाशित मालिक—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर।



टेलीफोन नं० ३०५७ [आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधिसभा पंजाब जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd. No. P

एक प्रति का मूल्य १३ नये पैसे वार्षिक मूल्य ६ रुपये (जन्मशताब्दी के लेख

वर्ष २५ अंक २) ९ ज्येष्ठ २०२२ रविवार—दयानन्दाब्द १४०— २० मई १९६५ (तार 'प्रादेशिक' जाल

स्वाध्याय महिमा

ये ह वै के च श्रमा इमे द्यावा पृथिवी अन्तरेण, स्वाध्यायो हैव तेषा परमाकाष्ठा, य एवं विद्वान् स्वाध्यायमधीते, तस्मात् स्वाध्यायोऽध्येतव्य: ।

(श० ब्रा० ११-५-७ २)

"इस द्यौ और पृथिवी के अन्दर जितने प्रकार के परिश्रम हैं, स्वाध्याय ही इन सब की परमकाष्ठा है, उसके लिये जो ठीक ठीक जानता हुआ स्वाध्याय करता है। इस लिये स्वाध्याय नियम से करना चाहिये।"

पुन: आगे चल कर इसी ब्राह्मण में कहा है, "वह नख के अग्र तक तप तप रहा, जो ठीक जानता हुआ स्वाध्याय करता है।" शतपथ ब्राह्मण में तो यहां तक लिखा है कि "(स्वाध्यायशील पुरुष) एकाग्र-मन हो जाता है। पराधीन नहीं होता। दिन प्रतिदिन अपने प्रयोजनों को साधता है। अपने आप का परम चिकित्सक बन जाता है। इन्द्रियों का संयम, सदा एक रस रहना, ज्ञान की वृद्धि, यश, और लोगों को सुधारने तथा निपुण करने का काम, यह सब फल स्वाध्याय और प्रवचन करने वाले को मिलते हैं।"

(शतपथ ब्राह्मण ११-५-७-१

भारत के विख्यात संन्यासी



आनन्द स्वामी जी महाराज सरस्वती

जिन्होंने पिछले दिनों वैदिक साधन आश्रम तपोवन दे में साधना शिविर का संचालन ।

ईश्वर प्रणिधान

त्वे अपि क्रतुर्मम्

ऋग्वेद ७-३१-

मेरे कर्म आप ही के अर्पण हों। आप ही के लिए हों।

ईश्वर प्रणिधान का भ यह है कि जो भी कर्म कि जाये, फल सहित उन सारे क को ईश्वर के अर्पण कर दि जाय। इसी को भक्ति वि का भी नाम दिया जाता यह नियम पांचों नियमों प्राण है। इसी एक नियम धारण कर लेने से समाधि सिद्धि बताई गई है।

मेरा मुझ को कुछ नहीं
जो कुछ है सब तोर
तेरा तुझ को सौंपते
क्या लागे है मोर

यत्करोषि यदश्नासि
यज्जुहोषि ददासि य
तत् तपस्यसि कौन्तेय

——— गीता

अधिष्ठाता—श्री संतोषराज जी

धार्मिक विचार

(ले०–विजय लक्ष्मी जी नारंग प्रभाकर, जम्मू तवी)

"क्या ईश्वर सृष्टि कर्ता है"

ईश्वर सृष्टि कर्ता है। ईश्वर ने जो भी चीजें बनाई हैं सब नियम पूर्वक बनायी हैं। हम देखते हैं कहीं तो ऊंचा पहाड़ है, कहीं नीची खाई है। कहीं भयानक जंगल हैं तो कहीं रेतीला मैदान है। कहीं झाड़ झकाड़ हैं तो कहीं कल कल करती नदियां, झरने तथा सरोवर हैं। यदि आप कहें कि इन में ईश्वर का कौन सा क्रम और कौन सा नियम है। सब यूंही ऊबड़-खाबड़ बे नियम संसार बना हुआ है। नियम-पूर्वक जो कार्य होता है वह एक ढंग के साथ बना हुआ होता है। मनुष्य एक मकान बनाता है, उस में नियम पूर्वक आंगन, कमरे, रसोईघर, शौचालय आदि की व्यवस्था करता है। माली बाग लगाता है, उसमें नालियां, क्यारियां, गमले, पेड़-पौदे नियम पूर्वक लगाता है। दुकानदार दुकान लगाता है। सारा सौदा नियम पूर्वक सजाता है। यदि आप कहते हैं कि इस प्रकार मनुष्य के कार्य में तो नियम पाया जाता है, परन्तु सृष्टि में कोई नियम नहीं है।

यह कहना बेसमझी का प्रमाण देना है। मैं पूछती हूँ क्या कारण है कि सूर्य पूर्व दिशा से उदय होता है और पश्चिम में अस्त हो जाता है। क्यों नहीं पश्चिम से उदय होने लगता, क्या यह नियम नहीं है। मनुष्य की बनाई हुई अच्छी से अच्छी घड़ी सुस्त हो जाती है, परन्तु परमात्मा की बनाई हुई सूर्य रूपी घड़ी में कभी एक सैकिण्ड का भी अन्तर होता ? चन्द्रमा के घटने-बढ़ने ... होने का नियम ... इसी नियम ...ने क्या कारण है कि चने के बीज से चना पैदा होता है, गेहूं नहीं। क्या कारण है कि आम से आम ही पैदा किया जा सकता है, सेब या सन्तरा नहीं क्या कारण है कि बच्चा उत्पन्न होकर पहले जवान होता है बाद में वृद्ध ? क्यों नहीं पहले वृद्ध हो कर बाद में जवान होता। क्या कारण है कि आंख से दिखाई देता है, सुनाई नहीं देता क्या कारण है नाक सूंघ सकती है, चख नहीं सकती।

इन सब के लिये नियम ही तो हैं। यह कह देना कहीं पहाड़ हैं, कहीं नदियां हैं कहीं समुद्र हैं, ऊंचे नीचे टीले हैं, इसलिये सृष्टि नियमबद्ध नहीं, कोरी अज्ञानता है। आप अपनी अल्प बुद्धि के पैमाने से सृष्टि को नापते हैं। संसार का नियम है, जो बात जिसकी समझ में नहीं आई वह उस में दोष निकालता है। एक चींटी जब मनुष्य के शरीर पर चढ़ जाती है, और सिर पर पहुंचती है तो बालों में उलझ कर सोचती है कि शरीर कैसा बे नियम बना हुआ है। कैसा सिर झांड़-झकाड़ है। सिर से उतर कर नीचे माथे पर आती है तो सोचती है, यहां कैसा समतल मैदान है। फिर जरा नीचे उतरती है तो आंखों की भौओं में उलझ कर सोचती है, यहां कैसा कांटों का जाल बिछा हुआ है। फिर जरा नीचे उतरती है और आंखों के पास आती है तो सोचती है अरे! यहां कैसी खाई बना रखी है। फिर जरा नीचे आती है तो नाक को नीचे से देखती है तो ...नी है यहां तो सुरंगें खोद रखी ... ...नी है तो मूछों ... घना चींटी अपनी बुद्धि के नाप से मनुष्य के शरीर को नापती है और उसे बे नियम बताती है। यदि चींटी की सुविधा के लिए मनुष्य के शरीर को बिल्कुल सपाट और साफ मैदान कर दिया जाए, नाक के छेद बन्द कर दिये जायें, मूंछ और सिर के बाल साफ करके आंखों के गढ़े भर दिये जायें नाक को काट कर माथे की तरह सारी शकल को समतल कर दिया जाये, तब कहीं उसके लिए मनुष्य का शरीर नियम पूर्वक हो सकता है। मैं पूछती हूं यदि चींटी की भावना और बुद्धि के अनुसार मनुष्य का शरीर बना दिया जाए तो मनुष्य मनुष्य रहेगा और उसमें वह सौंदर्य और ज्ञानेन्द्रियों तथा कर्मेन्द्रियों का नियम-पूर्वक व्यवहार रहेगा ? हरगिज नहीं। दूसरा उदाहरण यह है कि एक कारीगर मशीन बनाता है। उस मशीन में हजारों पुर्जे हैं। कोई पुर्जा गोल, कोई लम्बा, कोई चौड़ा तो कोई टेढ़ा है। कोई बहुत छोटा, कोई बहुत बड़ा तो कोई चपटा आदि है। यदि कोई व्यक्ति कहे यह कैसा नियम का सिलसिला जोड़ रखा है। यह कैसे बेतरतीब पुर्जे बनाये हैं।

बताओ उस मनुष्य का ऐसा सोचना क्या बुद्धि पूर्वक है ? मशीन के बनाने वाले ने जिस २ प्रकार के पुर्जे बनाना उचित समझा, उसी प्रकार के बनाये। वह जानता था कि इसी प्रकार के पुर्जों से मशीन चल सकेगी और वह प्रयोजन सिद्ध हो सकेगा जिसके लिए मशीन बनाई गई है। अगर वह सारे पुर्जे एक जैसे गोल या लम्बे बना देता तो मशीन चल सकती थी ? ...भी नहीं ! यही हाल उस ब्रह्म और उसकी सृष्टि का है। इसी सृष्टि रूपी मशीन में कहीं बड़े पहाड़ हैं, कहीं छोटे टीले हैं, कहीं समुद्र हैं, कहीं नदियां हैं, कहीं बन हैं तो कहीं झाड़ियां हैं। परन्तु इस सृष्टि रूपी मशीन का एक प्रयोजन है। वह प्रयोजन है, जीवों का कल्याण। अज्ञानी मनुष्यों को सृष्टि रूपी मशीन के पुर्जे भद्दे और बेनियम नज़र आते हैं, क्योंकि वह न तो जगत का प्रयोजन समझता है और न सृष्टि रूपी मशीन के समुद्र, नदी, पहाड़ आदि पुर्जों की उपयोगिता समझता है। माली और दुकानदार आदि का जो उदाहरण मैंने दिया है। उनके नियम अत्यन्त छोटे हैं, इस लिये उन्हें, आप शीघ्र समझ लेते हैं। सृष्टि के नियम विशाल और अत्यन्त सूक्ष्म हैं। ज़रा विचार तो करो जिस मस्तिष्क से संसार के मनुष्य नियम बनाते हैं, वह मस्तिष्क भी उसी नियामक प्रभु का बनाया हुआ है, जिस ने सृष्टि के असंख्य नियम बनाये हैं। यदि संसार में नियम न होते, तो ईश्वर को मानता ही कौन ? सृष्टि में जितने भी सूर्य, चांद, तारे हैं वह नियम पूर्वक उदय होते हैं तथा अस्त होते हैं। इन शक्तियों को अपने नियन्त्रण में रखने वाली इन शक्तियों से भी बड़ी एक शक्ति है। वह है ब्रह्म। सृष्टि के अटल नियम ही सृष्टि कर्ता ईश्वर को बतलाते हैं।

अमूल्य वचन

★ कान की शोभा शास्त्र सुनने से होती है न कि कुण्डल पहिनने से, हाथ की शोभा दान देने में है न कि कड़ुए पहिनने में, इसी प्रकार शरीर की शोभा उपकार करने से होती है न कि चन्दन लगाने से।

सम्पादकीय—

आर्य जगत्

वर्ष २५] रविवार २०२१, २३ मई १९६५ [अंक २२

भाषा सम्बन्धी आंकड़े

पंजाब में गत दिनों जनगणना के भाषा के जो आंकड़े प्रकट किये गये। उनको लेकर आर्यसमाज के नेता श्री लाला इन्द्रसेन जी पूर्व कार्यकर्ता प्रधान सभा ने दैनिक पत्रों में प्रांत की जनता का ध्यान अपने विशेष वक्तव्यों को देकर इस ओर दिलाया था। आर्य जगत् के एक अंक में भी उनका वक्तव्य प्रकाशित हुआ था। इन आंकड़ों से भली-भांति ज्ञात हो गया है, कि पंजाब में हिन्दी भाषा भाषी एक करोड़ तेरह लाख की संख्या में हैं जिन्होंने जनगणना में अपनी भाषा हिन्दी लिखवाई है तथा ८३ लाख नर-नारी ऐसे हैं, जिनकी भाषा पंजाबी है। इन भाषा के आंकड़ों से से पता लग गया कि पंजाब में हिन्दी भाषा बोलने और लिखने वाले पंजाबी भाषा-भाषियों से तीस लाख अधिक हैं। अब यह केवल मौखिक रूप या अनुमान के रूप में नहीं प्रत्युत् सरकारी रिकार्ड पर भी आ गया है। जनगणना को हुए बड़ा समय बीत गया। सन् १९६१ को जनगणना हुई और आज १९६५ बीत रहा है। अब तक सरकार ने स्वयं भाषा के आंकड़े प्रकाशित नहीं किये। इस बात के लिए श्री ला० जगत् नारायण जी बधाई के पात्र हैं जिन्होंने राज्य परिषद में अपना इस सम्बन्ध में प्रश्न पूछ कर सरकार से ये आंकड़े प्राप्त किये तथा ला० इन्द्रसेन जी भी धन्यवाद के पात्र हैं कि जिन्होंने एक दो तीन लगातार इस सम्बन्ध में आवश्यक लेख लिख कर सब का ध्यान इस ओर खींच कर गम्भीरता से इस पर विचार करने का अवसर दिया। आज यह बात स्पष्ट हो गई है कि पंजाब में हिन्दी भाषी अत्यधिक बहुमत में हैं। तीस लाख का बहुमत कुछ कम नहीं होता। यह भारी संख्या है। इस के साथ २ एक बात और भी कह देते हैं कि प्रति वर्ष पंजाब विश्वविद्यालय की परीक्षाएं होती हैं। उनके आंकड़ों से भी यह स्पष्ट हो जाता है कि प्रान्त मे हिन्दी लेने वाले विद्यार्थी बहुत बड़ी संख्या में हैं तथा उनका भी बहुमत होता है जिन का माध्यम हिन्दी भाषा में होता है। इन तथ्यों से कोई भी तो इन्कार नहीं कर सकता।

आर्यसमाज एक उदार विचारों को रखने वाला सार्वभौमिक आन्दोलन है। पक्षपात या तंगदिली इसके पास तक नहीं फटकती जिस समाज के सिद्धान्त एवं नियम में संसार का उपकार करना और सब की उन्नति में अपनी उन्नति समझना कर्तव्य हो उस के कार्यों में किसी भी भाषा के प्रति मनमुटाव कैसे हो सकता है। आर्य समाज के महारथियों ने अर्बी, फारसी, इंगलिश, उर्दू आदि विदेशी भाषाएं भी सीखीं तथा सीखते हैं। किन्तु आर्यसमाज तो न्याय चाहता है। पंजाब में आर्य समाज की धारणा यह है कि हिंदी को उस का उचित स्थान दिलाया जाये। हम पंजाबी को फूलता फलता देखना चाहते हैं परन्तु हिन्दी के प्रति यदि पूरा न्याय न किया जाये तो दिल में क्षोभ तो अवश्य होता है। आर्यसमाज ने इसी न्याय को प्राप्त करने के लिए आन्दोलन किया। भारी बलिदान भी दिये। अब तो आंकड़े सामने आगये। सरकार का भी इस दिशा में कर्तव्य है तथा आर्यसमाज के नेता सब को साथ लेकर इस पर विशेष विचार करें।

—त्रिलोक चन्द्र

संयुक्त सदाचार समिति

आज भारत में जीवन की क्या दशा है? लोगों का मन किस प्रकार की दिशा में दौड़ता है, भ्रष्टाचार का कितना बोल-बाला हो रहा है—इस पर किसी की भी कुछ कहने की गुंजायश नहीं है। राष्ट्र की कोई भी राजनीतिक, धार्मिक, संस्था हो, किसी विचार का भी छोटा बड़ा दल हो—सब की ओर से निरन्तर भ्रष्टाचार को रोकने के लिए प्रयत्न किया जाता है। इस बुराई या बीमारी के कारणों पर तो मतभेद हो सकता है परन्तु इस बात में किसी को भी मतभेद नहीं कि देश में भ्रष्टाचार की बाढ़ बढ़ती चली आती है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में, प्रत्येक संस्थान यहां तक कि हर एक कार्य में भ्रष्टाचार का राक्षस मुख बाये सब को खाता चला जा रहा है। यह तूफान बड़ा प्रबल है जिसकी लपेट में धीरे २ सारा जीवन ही आता जा रहा है। इस भ्रष्टाचार ने सब की आंखें नीचे कर दी हैं। यदि यह इस प्रकार से चलता गया और इसे बलपूर्वक न रोका गया तो राष्ट्र का भविष्य बड़ा ही दूषित हो जायगा। मोटे शब्दों में कहना हो तो दाल में काला नहीं वरन् सारी दाल ही काली प्रतीत होने लगी है। कुएं में ही भाग पड़ी सी दिखाई देती है। आज भोग-प्रवृत्ति की प्रधानता के कारण, धन का महत्व बढ़ जाने और धन ही पूजा का स्थान बन जाने के कारण आज सारी जनता धन के भण्डार भरना चाहती है। उसे इस बात की चिन्ता नहीं है कि धन कमाने के साधन उचित हैं या अनुचित। आज तो यही विचार काम करता है कि धन एकत्रित करना चाहिए चाहे उसे अर्जन करने के लिए कैसे भी साधन क्यों न प्रयोग में लाये जायें। इसी भावना ने भ्रष्टाचार की बीमारी को जन्म दिया है तथा उसे बढ़ाती जा रही है। सारा देश ही इस महान रोग से रोगी होने लगा है।

आर्यसमाज तो अपने आरम्भ जीवन से ही प्रत्येक भ्रष्टाचार के विरुद्ध रहा है। सदा ही अपने प्रयत्नों से इस का प्रतिकार करता चला आ रहा है। उसे भ्रष्टाचार से कभी भी समझौता नहीं करना। न ही उस ने कभी समझौता किया ही है। आचार तथा न्याय इस के कर्तव्यों में विशेष कर्तव्य है। आज रिश्वत का कितना जोर है। अब यह बात कहने सुनने से भी ऊपर चली गई है। भ्रष्टाचार कई प्रकार के रूपों मे, कई प्रकार के वस्त्रों को धारण कर बहुरूपिया बन कर सामने आता तथा अपना काम करता है। भारत के गृहमंत्री श्रीयुत नन्दा जी के प्रयास प्रभु करें सफल हों। वे कई बार कह चुके हैं कि भ्रष्टाचार का उन्मूलन करना है। इस के लिए अब उन्होंने सारे देश में एक संयुक्त सदाचार

(शेष पृष्ठ ४ पर)

मध्य वर्ग की शिक्षित नारी का जीवन

(श्रीमती अरुणा जी आर्य प्रभाकर, जालन्धर छावनी)

मानव जीवन का स्तर उस के पारिवारिक वातावरण के अनुसार ऊंचा उठ सकता है। प्रायः देखा जाता है कि मनुष्य के विचार वातावरण के अनुकूल बनते हैं। हर एक राष्ट्र, देश, गांव नगर, जाति का वातावरण भिन्न होता है। नगर का निवासी ग्राम में आ कर ग्राम के वातावरण को देख विचित्रतापन अनुभव करेगा तथा ग्राम निवासी नगर के वातावरण को देख अजीब सा अनुभव करेगा।

मनुष्य तो समाज के बाह्य अंगों पर सभी पर दृष्टिपात करता हुआ प्रत्येक स्थान पर अपना व्यवसाय करता हुआ विचरता है। वह प्रायः सभी परिस्थितियों से परिचित होता है। उसे एकाएक किसी परिस्थिति का सामना करना पड़ जाए तो उसे इतनी कठिनाई का सामना न करना पड़ेगा जितना कि एक स्त्री को। कारण कि पुरुष स्वतन्त्र है और नारी नहीं। पर आप पढ़ कर विस्मित भी होंगे तथा हंसेंगे भी। आप का विस्मित होना व हंसना ठीक है। पर ज़रा मेरी बात को ध्यान से सुनियेगा। ये आप की बात ठीक है कि आज के इस प्रगतिवादी क्रान्तिकारी युग में नारी पुरुष के समान स्वतन्त्र हैं, उस के समानाधिकार हैं। पर जब एक कन्या अपने मां बाप के परिवार को छोड़ कर अपने पतिदेव के घर में प्रवेश करती है तब से उसकी स्वतन्त्रता उत्तरदायित्व की शृंखलाओं से आबद्ध हो जाती है।

विवाहोपरान्त जिस उत्तरदायित्वपूर्ण वातावरण में प्रवेश करती है—उसे देखते हुए यह मानना पड़ेगा कि उस की ज़िम्मेवारियां पुरुष अर्थात् अपने पति से कहीं अधिक चढ़ी-बढ़ी और महत्वपूर्ण हैं। उसे न केवल अपने स्वामी के आराम की चिन्ता है बल्कि साथ में सास, ससुर, जेठ, जिठानी, देवर, देवरानी, ननद या अन्य परिवार के सभी लोगों के आराम का पूरा २ प्रबन्ध और चिन्ता करनी पड़ती है।

वो अपने मां बाप के परिवार से अपने पति के पारिवारिक वातावरण की भिन्नता को देख एक बार घबरा जाती है। असमंजस में पड़ जाती है। कहां तो वह बिना सोचे समझे प्रत्येक काम कर डालती थी निर्भीकता से। जो इच्छा हुई काम कर लिया, खा पी लिया। बिना इच्छा के कोई भी काम न करना। पर ऐसा होने पर भी उसे किसी के क्रुधित होने का भय नहीं होता। लेकिन विवाह के पश्चात् उसे एक २ कदम भी देख कर कर रखना पड़ता है। इच्छा हो या न हो पर प्रत्येक कार्य करना पड़ता है फिर भी भय बराबर बना रहता है कि न जाने पसन्द आएगा या नहीं। काम की बात तो अलग रही। एक अनोखी बात और है कि लड़का शादी से पूर्व चाहे कैसा भी हो अपनी माता बहन, भाई, पिता के साथ कैसा भी व्यवहार करता हो पर शादी उपरान्त उस का व्यवहार पत्नी द्वारा सिखलाया जाना ही कहा जाएगा। इस का कारण क्या है? मेरी तो समझ में नहीं आता? यदि विवाहोपरान्त लड़के के स्वभाव में परिवर्तन आ जाए तब तो ये किसी हद तक ठीक हो सकता है पर एक बात और है। फिर भी ये आवश्यक नहीं कि पत्नी ही सिखलाती हो। क्योंकि जब वह अपनी पत्नी के प्रति अपनी मां, बहन का व्यवहार कुछ और देखेगा तो वह उसे सहन नहीं कर सकता। जो अपने माता-पिता से दबते हैं वो तो मौन रहते हैं पर दूसरे मौन नहीं रह सकते। ऐसी परिस्थिति में बेचारी लड़की अकारण ही निर्दोष होते हुए फंस जाती है। सभी दोष उस पर लगाए जाते हैं।

कहते हैं कि यदि नारी अपने सभी अरमानों को कुचल कर प्रत्येक परिवार के प्राणी के प्रति अपना कर्त्तव्यपरायण हो कर चलती चले तो उस का जीवन सुखी हो सकता है। पर आज कल कई मध्यम परिवारों की अवस्था ऐसी है कि सब कुछ करने पर भी वह सन्तुष्ट नहीं हैं। उसे शान्ति प्राप्त नहीं है। चाहे पति की ओर से वो सन्तुष्ट हो पर जब तब परिवार के सभी सदस्य उससे प्रसन्न न हों तब तक उस की आत्मा को शान्ति नहीं मिल सकती। ऐसी दशा उन लड़कियों की होती हैं जो अपनी कौमार्यावस्था में ये सोचती हैं कि हम अपनी ससुराल को स्वर्गधाम बनाएगी पर सब स्वप्न अधूरे रह जाते हैं।

संयुक्त सदाचार समिति

(पृष्ट ३ का शेष)

समिति का गठन भी किया है। जिस में राष्ट्र की सारी संस्थाओं का सहयोग चाहा है। आर्यसमाज इस का सहर्ष स्वागत करता है। यह काम सब का है जहां २ सदाचार समिति का गठन हो वहां पर आर्यसमाज के सारे भाई-बहिनों, संस्थाओं का कर्तव्य है कि इस समिति को पूर्ण सहयोग देकर भ्रष्टाचार को दूर करने में अपनी पूरी शक्ति लगा देवें। इस में सब का भला है।

—त्रिलोक चन्द्र

Aaya Samaj
Sector 8-C,
Chandigarh,

This meeting of the Arya Samaj, Sector 8, Chandigarh, held on the 2nd May. 1965, under the chairmanship of Shri Nanak Chand Pandit, condemns the agression by Pakistan on Indian territory in Rann of Kachh, urges upon all Indians to resist this naked brute force with all their resources and sacrifice and assures the Prime Minister and Govt. of India of their full support and confidence in the national leadership.

Joint Secretary.

मैंने सिविल हस्पताल में...

(पृष्ठ ६ का शेष)

एक दातुन और दो-दो गोली हाज़मा की दे जाते हैं श्री घनश्याम लाल जी संचालक पुस्तक निधि जो दैनिक मिलाप में काम करते हैं, हर रोज आते हैं बीमारों को कार्ड लिफाफा और पढ़ने की पुस्तकें दे जाते हैं। श्री बलदेव राज सबका मैनेजर कंटीन भी बिमारों को चाय, दूध, पानी गर्म करने से नहीं रोकते

गवर्नमैंट पंजाब ध्यान दें

सिविल हस्पताल के मुलाज़िमों के क्वार्टर हस्पताल में होने चाहिएं ताकि ठीक समय पर रोगियों की देख-भाल कर सकें। मैंने श्री निर्मल प्रकाश चीफ़ मैडिकल आफ़िसर मिसिज खोसला इंचार्ज हस्पताल डा. एम. एल. सेठी, डा. तेजासिंह डा. नीवर, श्री मालक राम स्टाफ सबसे भेंट की।

गुणैर्विहीनाः बहु जल्पयन्ति

(ले०—श्री प० रविदत्त जी पारीक आर्य 'विद्यावाचस्पति, प्रभाकर' आर्यसमाज, हांसी)

आर्यसमाज की अमरता आर्यत्व के पनपने में निहित है। न कि विदीर्ण करने वाले पापासक्त कुकर्मों में। आर्य जाति ने आरम्भ से ही युवा सृष्टि को आर्य बनाने में साधना की, तप-तपा। कारण एक ही लक्ष्य में था कि देव दयानन्द के बताए हुए सन्मार्ग का घर-घर में डंका बजे। प्राचीन गौरव की पुनीत रक्षा हो तथा धर्म की रक्षा हो। परन्तु आज का नवयुवक समाज कहता है कि यह युग नया युग है और नई ही बातें हुआ करती हैं जब ऐसी बातें देश के कर्णधारों से सुनते हैं तो ध्यान आता है कि भारतवर्ष के अभी बुरे दिन शेष हैं। ऐसा प्रलाप करने वाले युवकों को मैं चुनौति दे देना चाहता हूं कि क्या स्वामी श्रद्धानन्द जी को स्वाधीनता के लिए जलना यदि न होता, यदि माननीय महात्मा हंसराज जी जैसा त्यागी वेद के लिए तन-मन-धन न लुटाता, बिस्मिल की विकास-शक्ति यदि विदेशियों का विरोध न करती, तो अये ! युवक वृन्द ! क्या पूंछ लूं कि स्वाधीनता आने पर आप स्वतन्त्र हो सकते थे ? आज मेरे देश का युवक सिग्रेट पीता है, सिनेमा से शृङ्गार सीख कर अपने महापुरुषों का अपमान करता है। इसी क्षीणता को देख कर मुझे यह श्लोक उधृत करना अनुचित न होगा और यह किसी कवि ने वास्तविक ही कहा है कि—

सम्पूर्ण कुम्भो न करोति शब्दम्,
अर्द्धो घटो घोषमुपैति नूनम्।
विद्वान कुलीनो न करोति गर्वम्,
गुणैर्विहीनाः बहु जल्पयन्ति ॥

बन्धुओं ! आजकल के मानव समाज में कितनी धृष्टता आ गई है कि वह अपने महापुरुषों को सर्वथा भूला बैठा है। वर्तमान युग के नवयुवक समाज का वास्तविक चित्रण श्री बाणभट्ट ने कादम्बरी में ठीक किया है। कविवर ! लिखते हैं कि :—गर्भेश्वरत्वमभिनव यौवनत्वम प्रतिमरूपत्वम मानुषशक्तित्वञ्चेति महतीयं खल्वनर्थ परम्परा। सर्वाविनयानामेषामायतनम्, किमुत समवायः।'

अर्थात् यदि मनुष्य की दशा उपरोक्त कथन के आधार पर गर्भावस्था से ही ऐश्वर्यशाली, नवयौवन, प्रखर रूप तथा असीम शक्ति हो तो मनुष्य के जीवन में अनर्थों की पराकाष्ठा हो जाती है। इन में से यदि एक भी शक्ति किसी के पास असीम रूप में हो तो वह मनुष्य भी अनर्थ करता है परन्तु जहां चारों समवाय रूप इकट्ठी हो तो प्रचुर मात्रा में अनर्थों की पराकाष्ठा होती है। ऐसा मनोवैज्ञानिक विशिष्ट उपदेश यदि आज के उत्तेजित नव-युवक को प्राप्त हो जाये तो वह गुणों से रहित हो कर बहुजल्पिता न करें। क्योंकि यौवन के समय मनुष्य की प्रकृति कैसी होती है उसका विशद चित्रण भी कादम्बरी के रचयिता श्री बाणभट्ट ने किया है कि :—

'यौवनारम्भे च प्रायः शास्त्र-जल प्रक्षालननिर्मलापि कालुष्यमुपयाति बुद्धिः। अनुज्झितधवलतापि सरागैव भवति यूनां दृष्टिः। अपहरित च वात्येव शुष्कपत्रं समुद्भूतरजो भ्रान्तिरतिदूरम् आत्मेच्छया यौवन समये पुरुषं प्रकृतिः।'

अर्थात् प्रारम्भिक यौवन समय में यदि युवक की बुद्धि को शास्त्र रूप जल से प्रक्षालित भी किया जाये तब भी उसकी मलीनता दूर नहीं होती। युवक की अत्यधिक शुद्ध बुद्धि भी सराग होती है। पुरुष का स्वभाव भी तथा मन भी यौवन समय में शुष्क पत्र के समकक्ष होता है जैसे कि आंधी और तूफान शुष्क पत्र को अपने साथ कहीं का कहीं उड़ा कर ले जाते हैं और यथेच्छ फैंक देते हैं ठीक इसी प्रकार से नव-नवीन युवक का मन भी उसे विषय विकार रूपी तूफान में उड़ा कर असुसंस्कृत गढ़े में डाल देता है। अतः युवकों को अपनी जीवनस्थ स्थिति को समझ कर बहु जल्प करना छोड़कर सच्ची श्रद्धा और आस्था से उस जगत गुरु महर्षि स्वामी दयानन्द जी महाराज के बताये हुए सन्मार्ग का अनुकरण करना चाहिए। इन के हृदयस्थ वही भावना होनी चाहिए जो कि अमर शहीद राम प्रशाद जी बिस्मिल के हृदय में थी। उन से फांसी पर चढ़ते हुए किसी सज्जन ने पूछा आपकी अन्तिम अभिलाषा क्या है ? तब उन्होंने उत्तर दिया— **"I wish the down fall of British Rule ?'** 'कि मैं अंग्रेजी राज्य का पतन चाहता हूं" भारत को आंख दिखाने वाले देशों के प्रति युवकों की यही भावना होनी चाहिए। न कि वे बहु जल्प होकर देश के लिए भार रूप बने रहें। यदि आज के युवक इस पथ के पथिक होंगे, तभी उन्हें वृद्धों के द्वारा–**'May dō them good?'** का शुभाशीर्वाद प्राप्त हो सकता है। युवक मानव समाज का ज्योति स्तम्भ (**Light House**) हुआ करता है। यदि वह ही बहु-जल्प गुण विहीन हो गया तो संसार की स्थिति बनी न रह सकेगी। इसी तथ्य को लेकर ही तो श्री भर्तृहरि जी ने कहा है कि—

'यस्याङ्के ऽखिल्लोकवत्सलं शील समुन्मीलति' तुषे पुरुषैव लोकस्थितिः स्थीयते। अर्थात् महात्मा हंसराज एवं जितने भी लोकस्थ महापुरुष हुए हैं उन्हीं के किए गए जीवन संचार के आधार पर भी लोकस्थिति बनी हुई है।

अतः हे युवक आर्यो ! आप की परीक्षा है सत्यार्थप्रकाश के पाठक वीरो ! कहीं इस बात को अनसुनी न कर देना। गुरुकुल के ब्रह्मचारियो ! महर्षि के लगाए आर्य समाज रूप कल्पवृक्ष का निर्माण पं० लेखराम, महात्मा हंसराज एवं स्वामी श्रद्धानन्द तथा अन्य महापुरुषों की भांति करते रहना। हम आर्यों ने भारती सभ्यता संस्कृति और प्राचीन गौरव की रक्षा करने का व्रत लिया अतः इसे उत्तेजित अवस्था में पूर्ण करना है। इस गति में आ हुए नवयुवक की चिन्ता यदि आर्य समाज को नहीं है तो और कि को है। ऐ युवक ! नष्ट न हो भ्रष्ट न हो, ठंडे दिल से छाती पर हाथ रख कर उन मह आत्माओं का धन्यवाद कर जिन ने तेरी सोती आत्मा जगाई विश्वास कर चाहे न कर, च जल्प कर या कुछ भी कर दे देवानन्द ने तुझे चरित्र निर्माण का प्यारा संदेश दिया था जो आज कल तुझे विष के त लगता है। हे देश के कर्णधार मेरे शब्दों की ओर ध्यान दे मानसिक, सामाजिक और धार्मिक जीवन का निर्माण करो। जल्प तथा गुण विहीनता सम्बन्ध रखने वाले कुकृत्यों अपने जीवन से सर्वदा के बहिष्कार कर दो। तभी हम और हमारे देश भारत का गौरव है अन्यथा नहीं।

—

तामीरे मिल्लत

(ले०--श्री सत्यवीर जी शास्त्री शोलापुर)

✱✱✱✱✱✱✱✱✱✱✱✱✱✱✱✱✱✱

कुछ वर्ष बीत गए। किन्तु उस माने को लोग नहीं भूले। वह ाना था रजाकारों का। उस जमाने े देखने वाले कई स्त्री-पुरुष विद्यान हैं, जिन्होंने रजाकारों के त्याचारों को प्रत्यक्ष देखा है। ज़ाकार मुसलमानों ने किस प्रकार अत्याचार किए इसकी कुछ सीमा हीं। रजाकारों ने हिन्दुओं के घर लाए, दुकानें जलाईं, मन्दिर लाए, धर्मशालाएं जलाईं। रज़ा-ार मुसलमानों ने सिंधियों को टा, पंजाबियों को लूटा, मराठों ो लूटा, किसानों को लूटा, स्वारियों को लूटा, सबको लूटा।

आज फिर रज़ाकार भारत की ान्ति समाप्त करने लगे हैं। होंने 'तामीरे मिल्लत' की स्था-ना की है।

'तामीरे मिल्लत' संस्था के ुख कार्यकर्त्ता सब हैदराबाद ़ासी हैं। वहां से ही इस संस्था सञ्चालन हो रहा है। स्थान-्थान पर इस संस्था की शाखाएं ़ोली जा रही हैं। कुछ मुसलमान ़ौर हिन्दु साधुओं जैसी वेश-ूषा पहन कर प्रचार करते हैं।

ं तामीरे मिल्लत क्या है? नके उद्देश्य क्या हैं? इसके ्याय में महाराष्ट्र के प्रमुख पत्र जसरी' के दो लेख पढ़ने योग्य हुई प्रथम लेख दिनांक २३-३-६५ सी 'भाषा संघर्षाच्या लामाचा न' इस शीर्षक में छपा है।

दूसरा ७-४-६५ के केसरी तामीरे मिल्लत ची रक्षाकारी .वया' इस शीर्षक में छपा है। क महोदय ने हिन्दुओं को वनी दी है। हिन्दुओं को ान होना चाहिए नहीं तो लगने पर पानी के लिए कुआं खोदने से कुछ हाथ नहीं आयेगा, सब जल कर भस्म हो जायेगा। यदि हिन्दुओं ने इस समय सावधानी नहीं बरती तो इसका परिणाम बहुत ही बुरा होगा।

गुंजोटी में २-४-६५ को तामीरे मिल्लत की स्थापना करने के लिए हैदराबाद निवासी सैयद गौस आए थे। जो अखिल भारतीय तामीरे मिल्लत के उपाध्यक्ष हैं। गुंजोटी में तामीरे मिल्लत की स्थापना हो चुकी है। यह वह स्थान है जहां शस्त्रधारी रजाकारों ने मन्त्री के घर पर धावा बोल दिया। तथा भाई बन्सीलाल जी की जय के नारे लगवाए थे। परिणाम श्री वेदप्रकाश जी भोजन को छोड़ कर फूल की माला लेकर दौड़ पड़े। शस्त्रधारी रजाकारोंने उनको पकड़ कर नीचे गिराकर कहा गायका मांस खाकर मुसलमान बन जाओ। किन्तु उस वीर ने कुछ भी स्वीकार नहीं किया परिणाम पांच छः सौ रजाकारों ने एक वीर वेदप्रकाश को जान से मार दिया था।

गुंजोटी में तामीरे मिल्लत की स्थापना करने पर रात्रि को सभा हुई। अध्यक्ष सैय्यद गौस ने हिन्दू संस्कृति पर अपनी इच्छानुसार टीका टिप्पणी की। श्री दिगम्बर राव जी के प्रेरणा से नवयुवकों ने कुछ प्रश्न लिख कर दिए किन्तु उत्तर गोल मोल थे तथा कुछ प्रश्नों के उत्तर ही न दिए गए। जिन का उत्तर नहीं दिया गया उस में से दो प्रश्न यहां लिखे जाते हैं।

प्रश्न नं० ६—हिन्दू धर्म और संस्कृति पर उर्दू पत्रों में टीका होती है। जिससे धार्मिक द्वेष की भावना बढ़ रही है। तथा जगह जगह दंगे होते हैं। कुछ विचारवान् लोगों का कहना है दंगे करने में मुसलमानों का ही अधिक हाथ होता है। तामीरे मिल्लत का क्या-पक्ष होगा? प्रश्न नं० ४—अकबर की नीति तथा धार्मिकता और औरंगजेब की नीति तथा धार्मिकता इस दृष्टि से तामीरे मिल्लत किसको मानेगी?

अन्त में सभा समाप्त हो गई। कुछ लोगों ने राष्ट्रगीत बोलने की इच्छा प्रकट की। प्रबन्धकों ने राष्ट्रगीत बोलने से इन्कार किया। राष्ट्रगीत नहीं बोला। भारत माता की जय आदि के नारे भी नहीं लगाए। इस से पता चलता है कि भारतीय मुसलमानों में भारत के प्रति कितनी हमदर्दी है? ऐसा व्यवहार करना राष्ट्र का अपमान है। देश का दुर्भाग्य है। क्या हम सब इस चेतावनी से सावधान होंगे?

मैंने सिविल हस्पताल जालन्धर में क्या देखा ?

श्री जगन्नाथ जी सग्गी वैदिक मिशनरी अलावलपुर

✱✱✱✱✱✱✱✱✱✱✱✱✱✱✱✱✱✱✱✱

मेरी दोनों टांगों में एग्ज़ीमा हो गया। मैंने इन रोगों के स्पैशलिस्ट श्री पी. एल. पुरी को दिखाया। आपने मुझे हस्पताल में दाखिल होने के लिए परामर्श दिया। मैंने उनकी नेक सलाह पर आचरण किया और हस्पताल में दाखिल होगया मैंने देखा कि श्रीपुरी साहिब हर रोगी से बड़ी अच्छी तरह से व्यवहार करते हैं जिन रोगियों को देखने से हमें घृणा आती है पुरी साहब उन रोगियों से हाथ मिलाते और उनकी पीठ पर थपकी देकर तसल्ली देते हैं। सब को लाला जी, बाबू जी और श्रीमान् जी और स्त्रियों को बहिन जी, माता जी और बेटी कह कर बुलाते हैं। क्यों न हो आप एक प्रसिद्ध खानदानी आर्य घराना राय बहादुर बद्री दास जी के भतीजे हैं और सिविल हस्पताल जालन्धर और गुलाब देवी हस्पताल में आनरेरी सेवा करते हैं।

नर्सिंग स्टाफ

मैंने देखा कि नर्सिंग स्टाफ की तमाम सेविकाएं अपनी डयूटी बड़ी अच्छी तरह देती हैं उनके मन में बिमारों के पेशाब, टट्टी और वस्त्रों के बदलने में घृणा की प्रतीति नहीं होती जब कि ऐसी दशा में हमारे घर के बच्चे नाक चढ़ाते हैं।

चीफ मैडिकल आफिसर ध्यान दें

मुझे हस्पताल में नीचे लिखी त्रुटियां नजर आई हैं जिनकी तरफ आपका ध्यान दिलाना चाहता हूँ।

१. रोगी अधिक हैं पखाने कम हैं।

२. कई बार पुरुषों के पाखानों में स्त्रियां चली जाती हैं।

३. गो फ्लैश सिस्टम है पानी खींचने वाली जंजीर काम नहीं करती।

४. पाखाने में प्रायः गन्दगी रहती है।

५. पाखानों के चारों तरफ खून अलूदा कपड़े पड़े रहते हैं।

६. टट्टी में जो लोटा है उस में कई छेद हैं।

७. कई २ वार्डों के बाहर अन्धेरा रहता है कोई बिजली का बल्ब नहीं, रोगियों को बाहर जाने में कष्ट होता है।

निष्काम सेवा

हर रोज रात को सरदार सज्जन सिंह जी आफ मखयाना आते हैं और रोगियों को एक-

(शेष पृष्ठ ४ पर)

ईश्वर और मौत को हरदम स्मरण रखो

प० भगतराम जी शर्मा
अफ्रीका वाले

उपनिषदों में एक दृष्टान्त आया है कि एक राजा में रात को स्वप्न आया कि वह एक भेड़िये के डर से मैदान में भागा जा रहा है। दौड़ते २ उसे एक वृक्ष मिल गया। वह इस पर चढ़ गया और उसे शान्ति आ गयी, परन्तु नीचे दृष्टिपात की तो क्या देखता है कि सांप मुंह खोले बैठा है। दूसरी ओर स्याह व सफेद चूहे वृक्ष की जड़ों को खोखल कर रहे हैं। वृक्ष के ऊपर शहद की मक्खियों का छत्ता है। ऊपर देख रहा था कि शहद की एक बूंद उस के मुंह में पड़ गयी। सारे दुःख भूल गया। शहद का मजा ले ही रहा था कि इतने में इसकी आंख खुल गयी। अब वह सोचता है कि यह क्या स्वप्न है? उपनिषत्कार इसकी इस प्रकार व्याख्या करते हैं कि वह मैदान जिस में वह भाग रहा था यह संसार है। वह भेड़िया जिसके डर से भाग रहा था मौत है। वृक्ष मनुष्य की आयु है। सांप मौत की चिंता। सफेद व स्याह चूहे दिन और रात हैं जो मनुष्य की आयु को काट रहे हैं। जो दिन गुज़रता है वही आयु को कम करता है। मक्खियां शरीर के रोग हैं। इतने कष्ट होते हुए भी मनुष्य इनको भूल जाता है। किस लिए? शहद की बूंद रूपी इन्द्रियों के विषय से।

भर्तृहरि ने कहा है कि दिन और रात के चक्र में आयु व्यतीत हो रही है। सामने देख रहा है कि अमुक बूढ़ा हो गया। अमुक का पुत्र मर गया। इन अवस्थाओं को देख कर भी भयभीत नहीं होता। इस का कारण केवल यह है कि मनुष्य संसार के चक्र में आया हुआ है। जिस प्रकार एक शराबी नशे की हालत में मानापमान की परवाह नहीं करता। इसी प्रकार संसार के मोह रूपी नशे में मनुष्य मृत्यु की परवाह नहीं करता।

छान्दोग्य उपनिषद में आया है कि आत्मा जन्म और मरण के बन्धन से परे है। जन्म और मृत्यु तो इस शरीर का है। इसीलिए कहा है कि नीरोगी की अवस्था में ही इस का स्मरण करो ताकि अन्त अच्छा हो और अन्तिम समय इसकी याद लाये। जो लोग सारी आयु सांसारिक कार्यों में गुज़ारते हैं उनको अन्त में वही धंधे याद आते हैं। इसलिए वह समय बहुत बुरी तरह गुज़रता है।

महात्मा कृष्णचन्द्र ने कहा है कि प्रभु का स्मरण अन्त समय अवश्य आना चाहिए। एक नवयुवक कालेज में पढ़ता है। डाक्टर उसकी दाढ़ निकालने लगे उस समय उसको कहे कि अब कालेज की ओर ध्यान करो तो दर्द से लाचार विद्यार्थी को कालेज की याद नहीं आ सकती परन्तु ऋषि दयानन्द जिस के सारे शरीर पर छाले पड़ चुके हैं प्राणांत होने में दस पन्द्रह मिण्ट की देर है उस समय उस के मुंह से निकलता है 'ईश्वर! तेरी इच्छा पूर्ण हो!' यह है अभ्यास की शक्ति।

अफीम साधारण व्यक्तियों के लिए विष है पर जिन का स्वभाव बन चुका है उन के लिए अफीम एक खुराक है। इसी प्रकार यदि ईश्वर के स्मरण का अभ्यास करोगे तो मौत के समय वही याद आयेगा। और उस समय मृत्यु का भय न रहेगा। चील उड़ती है तो उसके पंख नहीं हिलते। मुरगाबी के उड़ने में पानी बाधक नहीं होता क्योंकि इन दोनों का अभ्यास है। कौआ पानी में गोता लगाये तो उसके लिए उड़ना कठिन हो जाता है क्योंकि इसका अभ्यास नहीं है। इसलिए परमात्मा के स्मरण का अभ्यास करके पापों से बचना चाहिए ताकि मौत का डर न रहे।

★

> आप सच्चे अर्थों में आर्य हैं। सम्पूर्ण जीवन में बाह्य आडम्बरों से कोसों दूर रहे हैं। सात्विक वृत्ति के सज्जन हैं। मन और वाणी में एक समान हैं। आप के लेखों में अन्तस्तल से निकले भावों की प्रतिछाया होती है। उपरोक्त लेख में उनकी आत्मा की वास्तविक ध्वनि निकल रही है। —व्यवस्थापक

नई-कामना

(सुश्री सुशीला देवी जी आर्या, आर्य कन्या गुरुकुल नरेला)

हम जलें, संसार को प्रकाश देने के लिये,
हम मिलें, संसार को उल्लास देने के लिये,
हम चलेंगे राह को नई गति प्रदान कर,
दुर्मति में सद्मति की ज्योति का विधान कर,
हम निराश मनुज को विश्वास देने के लिये।
कंटकों की गोद में निर्भीक पलते जाएंगे,
हर्ष देने को किसी को, हर्ष से मुरझाएंगे,
हम खिलें संसार को सुवास देने के लिये।
शक्तियां लगें हमारी अभ्युदय निर्माण में,
इन्द्रियां जुटें हमारी विश्व के कल्याण में,
हम हंसें ह्रास को विकास देने के लिये।
ज्ञान हमने था दिया जब वेद का भूलोक को,
ले चले थे हम दिशा विदिशा में आलोक को,
उस सुनहरे काल का आभास देने के लिये।
हम नये प्रभात की नई किरण समान हैं,
हम पतन में लिख रहे उत्थान का विधान हैं,
आंसुओं को हम चले हैं हास देने के लिये।
हम धरा पर निष्कलंक प्यार के आगार हैं,
दीन हीन त्रस्त मानवों के हम आधार हैं,
आश्रय विहीन को आवास देने के लिये।

आर्यसमाज गोरखपुर (जबलपुर) M.P.

में २५ अप्रैल को महात्मा हंसराज जन्मशताब्दी बड़े उत्साह से मनाई गई। साधारण कार्यवाही के पश्चात् महिला समाज तथा बालक-बालिकाओं द्वारा महात्मा जी को श्रद्धांजलियां भेंट की गईं तथा उनके द्वारा किए गए त्याग, तपस्या, उदारता आदि गुणों पर प्रकाश डालते हुए उनके गुणों को अपने जीवन में ढालने की प्रतीज्ञा की गई। समाज के नवयुवक प्रतिदिनि सत्सङ्ग पद्धति अपना कर अपने जीवन को सफल बना रहे हैं।

आनन्द स्वरूप चावला
मन्त्री समाज

अदालती नोटिस

इश्तहार जेर दफा ५ रूल ३०
मजमूआ ज़ाबता दिवानी
बा अदालत जनाब श्री जगवंत सिंह जी सीनीयर सब जज
फिरोजपुर

अपील नं. ६३ सन् १९६४

चाननसिंह, यमनसिंह, सरवनसिंह पुत्रान सुंदरसिंह जाट, साकन सहा सिंह वाला तहसील मोगा—
अपीलान्टस

बनाम—गुरदित्त सिंह आदि...
रिसपांडेंट

अपील बा हुक्म अदालत श्री. पी. सी. सिंगला सब जज III क्लास मोगा मिति ३०-४.६४

बनाम-गुरदित्त सिंह पुत्र सुंदरसिंह पुत्र मानसिंह साकन सहासिंह वाला मुकदमा मुंदर्जा अनवान वाला में मुसमी गुरदित्त सिंह मज़कूर तामील नोटिस करने से जानबूझ कर गुरेज़ करता है और रूपोश है। इसलिए इश्तार हज़ा बनाम गुरदित्त सिंह मज़कूर जारी किया जाता है कि अगर गुरदित्तसिंह मज़कूर मिति २६. ५. ६५ को बामुकाम फिरोजपुर हाजिर अदालत हज़ा में नहीं होगा तो इसकी निसबत कारवाई इक तरफा अमल में आवेगी।

आज बा मिति ४.५.६५ को बा हस्ताक्षर मेरे और मोहर अदालत के जारी हुआ।

जगवंतसिंह
सीनीयर सब जज
फिरोजपुर

महात्मा ...

श्री महात्मा हंस राज जन्म शताब्दी के उपलक्ष्य में यहां विशेष व्याख्यानों का क्रम चलता रहा जिस में श्री स्वामी चक्रवर्ती जी, श्री पं० गुरुदेव जी शास्त्री तथा श्री ज्ञानी पिण्डी दास जी के प्रवचन होते रहे। यह सिलसिला लगभग एक सप्ताह तक चालू रहा। जिस में आश्रम वासियों के अतिरिक्त कुछ अन्य लोग भी भाग लेते रहे। व्याख्यानों में महात्मा हंसराज जी के गुणकीर्तन के पश्चात् लोगों को प्रेरणा की गई कि वे भी उस महात्मा जी के सद्गुणों को धारण करके सच्चे अर्थों में उनको अपनी श्रद्धांजलि भेंट करें।

स्वामी सच्चिदानन्द
सरस्वती
प्रबन्धक आश्रम

आर्य समाज चंडीगढ़

(सैकटर २२ ए)

आर्य समाज सैकटर २२ की यह साधारण सभा भारत सरकार को निश्चय दिलाती है, कि प्रत्येक आर्य समाजी देश की इस परिस्थिति में देश के साथ है और देश रक्षा के लिये तैयार है।

यह भी निश्चय हुआ है कि इस प्रस्ताव की एक २ प्रति मान्य प्रधान मन्त्री भारत सरकार, मुख्य मन्त्री पंजाब सरकार, श्री मन्त्री आर्य सार्वदेशिक सभा देहली, मान्य रक्षा मन्त्री भारत सरकार, तथा मान्य गृह मन्त्री जी की सेवा में भेजी जावें।

भवदीय
केसर दास
मन्त्री

★ आत्मवत् सर्व भूतेषु यः पश्यति स पण्डितः (विद्वान् वही है जो अपने सदृश सब को देखता है)।

...ाल में राष्ट्र-रक्षा दिवस

आज दि० ६-५-६५ को आर्य सार्वदेशिक सभा और पंजाब आर्य वीरदल के आदेश पर 'करनाल आर्य वीरदल' ने चौड़ा बाजार करनाल में राष्ट्र-रक्षा दिवस बड़े उत्साह के साथ मनाया।

आर्य युवक नेता सर्वश्री प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु एम० ए० और प्रो० रामप्रकाश एम० एस० सी० रिसर्च स्कालर ने वर्तमान संकट पर प्रकाश डालते हुए जनता से अपील की कि जनता पाकिस्तान को मार भगाने में सरकार को पूर्ण सहयोग दे। ओजस्वी वक्ताओं ने जनता में देश के प्रति उत्साह और जोश भरा। सब ने देश सेवा का पवित्र व्रत लिया। प्रस्ताव पास किए गए जिन में सरकार को राष्ट्रीय संकट में सहयोग का आश्वासन दिलाते हुए यह मांग की कि वह पकिस्तान से दृढ़ता से पेश आये। शेख अब्दुल्ला की गिरफ्तारी पर सरकार को बधाई दी गई। देश के सभी राजनैतिक दलों से अपील की गई कि वह राष्ट्रीय संकट काल में कोई आन्दोलन खड़ा करके सरकार के मार्ग में बाधा न बनें।

—वीरूराम मन्त्री

आर्य समाज स्थापना दिवस एवं नव संवत्सर पर्व

आर्य समाज खंडवा पूर्व निमाड़ में दि० २-४-६५ को आर्य समाज स्थापना दिवस एवं संवत्सर-पर्व समारोह पूर्वक मनाया गया। प्रातः ५॥ बजे से प्रभात फेरी निकाली गई जो नगर के भिन्न २ मोहल्लों से होती हुई समाज मन्दिर में ६ बजे ध्वजारोहण के साथ समाप्त हुई। इस अवसर पर मांगी लाल जी, सुख राम जी के भजनोपदेश होते रहे।

(ग्राम प्रचार)

दिनांक ३-४-६५ को छोटा बोरगांव में श्री पुनमचन्द जी आर्य ग्राम पंचायत सदस्य के सहयोग से गनगौर उत्सव में सुख राम जी आर्य का (मानव जीवन और धर्म, हमारे देवी देवता और उन की पूजा) इन विषयों पर सारगर्भित भाषण हुआ। जनता पर अच्छा प्रभाव पड़ा। इसी अवसर पर समाज की ओर से धार्मिक ट्रेक्ट प्रचारार्थ वितरण किये गये।

राम चन्द्र
मन्त्री
आर्य समाज, खन्डवा

NOTICE

Dear Brother,

The annual meeting of the General Body of the All India Dayanand Salvation Mission, Hoshiarpur will be held at Mission's Office, Ram Ashram, R. B. Jodha Mal Road Hoshiarpur on Sunday, the 23rd. May, 1965, at 5 P. M. All the members are cordially invited to attend the meeting Punctually.

By order of
the President,
Shadi Lal
Secretary Mission.

जिन ग्राहकों ने चंदा अभी तक नहीं भेजा है कृपया जल्दी से जल्दी भेजने का प्रबन्ध करें

मुद्रक व प्रकाशक श्री सन्तोषराज जी आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर द्वारा वीर मिलाप प्रेस, मिलाप रोड जालन्धर से मुद्रित तथा आर्य जगत कार्यालय महात्मा हंसराज भवन निकट कचहरी जालन्धर शहर से प्रकाशित मालिक—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर



टैलीफोन नं० ३०५७ [आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधिसभा पंजाब जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd. No. P.

एक प्रति का मूल्य १३ नये पैसे — वार्षिक मूल्य ६ रुपये

वर्ष २५ अंक २४) — २३ ज्येष्ठ २०२२ रविवार—दयानन्दाब्द १४१— ६ जून १९६५ — (तार 'प्रादेशिक' जालन

वेद सूक्तयः

वीरता का सन्देश

स्वायसा असयः सन्ति

हमारे पास स्वायसाः—उत्तम लोहे के फौलाद के बने हुए असयः—तलवार आदि फौलादी शस्त्र हैं। हे वैरी। याद रखना। हमारे पास तेरा क्चूमर निकालने के लिए फौलाद के बने विविध अस्त्र शस्त्र हैं।

उत्तिष्ठैव परेहीतः

हे हिंसा। उठ खड़ी हो और यहां से हमारे पास से परेहि—भाग जा, दौड़ जा। खबरदार। हमारे पास आने का तेरा कोई काम नहीं है। जा! दौड़ जा। यहां से उठकर अभी भाग जा अन्यथा तू बच नहीं सकती।

विद्मा ते कृत्ये

हे कृत्ये! पाप अन्याय से भरी हुई हिंसा! ते-तेरी शक्ति-बल को, तेरे सारे माया कपट को, दांव-पेच को हम सारे विद्मा जानते हैं। हम से तेरी कोई बात गुप्त नहीं। हमारे सामने तेरी दाल नहीं गलेगी।

व्याघ्र जम्भयामसि

हे बाघ! चीरने-फाड़ने वाले घातक वैरी! सुन ले। यदि तू अपने-आप को बाघ के समान फाड़ देने वाला समझता है, तो हम भी वीर हैं। हम तो तेरे जैसे बाघ को कुचलने वाले हैं तुझे कुचल कर रख देंगे।

अथर्ववेद

वेदामृत

ओ३म् अग्ने नय सुपथाराये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्। युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम॥

यजु० ४०-१६

अर्थ—हे (अग्ने) स्वप्रकाश ज्ञानस्वरूप सब जगत् के प्रकाश करने हारे (देव) सकल सुखदाता परमेश्वर, आप जिस से (विद्वान्) सम्पूर्ण विद्या युक्त है कृपा करके (अस्मान्) हम लोगों को (राये) विज्ञान वा राज्यादि ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिए (सुपथा) अच्छे धर्म युक्त आप्त लोगों के मतों से (विश्वानि) सम्पूर्ण (वयुनानि) प्रज्ञान और उत्तम कर्म (नय) प्राप्त कराइये और (अस्मत्) हम से (जुहुराणम्) कुटिलतायुक्त (एनः) पाप रूप कर्म को (युयोधि) दूर कीजिए इस कारण हम लोग (ते) आपको (भूयिष्ठाम्) बहुत प्रकार की स्तुतिरूप (नमः उक्तिम्) नम्रता पूर्वक प्रशंसा (विधेम) सदा किया करें और सर्वदा आनन्द में रहें। (ऋषिभाष्य)

भाव—परमेश्वर! आप हमारे नायक बन कर हमें सुपथ से ले चलें। हमारी बुराईयां दूर कर दें। हम आप के ही उपासक बन कर सदा आपकी उपासना किया करें—सं०

ऋषि दर्शन

आश्रमा अपि चत्वारः

आश्रम भी चार हैं। सौ वर्ष की आयु को चार भागों में बांटा गया है। पचीस२ वर्षों का एक२ आश्रम बनाया गया है। ताकि जीवन का सारा कार्य उत्तमता से चलता रहे। आश्रमों की व्यवस्था भी चार प्रकार की है।

ब्रह्मचर्य गृहस्थ वानप्रस्थ सन्यास भेदात्

इन चारों में पहला आश्रम ब्रह्मचर्य है २५ वर्ष तक माना गया है। दूसरा गृहस्थाश्रम है जो पचास वर्ष तक होता है। तीसरा वानप्रस्थ पचहत्तर वर्ष तक और चौथा संन्यास आश्रम है जो सौ वर्ष तक चला करता है। चार आश्रम हैं।

ब्रह्म-चर्येण सद्विद्या

पहले ब्रह्मचर्य आश्रम में उत्तम विद्या शिक्षा पढ़नी चाहिए। जितना भी हो सके इस अवस्था में ऊंची से ऊंची शिक्षा प्राप्त करने में लगा रहे।

सभयैव राज्यप्रबन्धः

उसके साथ सारे राज्य का प्रबन्ध करने के लिए एक उत्तम व्यक्तियों की सभा बना देनी चाहिए। मन्त्रिमंडल तथा लोक सभा अवश्य बनानी चाहिए ताकि उस शासन को मर्यादा नियमों में रखा जा सके।

भाष्यभूमिका से

अलौकिक हंस

(श्री पं० सत्य प्रिय शास्त्री जा सिद्धान्त शिरोमणि)
प्राध्यापक :—दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार

आदि सृष्टि में सच्चिदानन्द द्वारा प्रदत्त वेद ज्ञान के द्वारा, [?]व समाज ज्ञान के उच्च [?]र पर पहुचा । आर्यों के म द्वेष एवं कलह के कारण [?]भारत के पश्चात् अन्धकार का पदार्पण हुआ । उस समय का तत्व वेत्ता न होने से [?]जीय जन-समूह भटका । [?]वैद्योपदेष्टृत्वात्तत्सिद्धिः.' तथा [?]रम्पान्ध परम्परा' महर्षि कपिल इन वचनों के अनुसार भेड ल प्रारम्भ हुई । उस स्थिति में [?]त्र चालाक भेड़िये भी थे । जो [?]द से तो शून्य थे, परन्तु वेद के [?]स्यों, अलकारों एव उदाहरणों [?] न समझ कर उनको अपना [?]न्यताओं के साचे में ढाल कर [?]नता के अज्ञान एव भोलेपन से [?]पना उल्लू साधते थे । ऐसे महा-[?]तिमानों की कृपा से कुछ [?]ध्यात्मिक अलकार भौतिक [?]प मे एव भौतिक अलंकार [?]ध्यात्म रूप मे प्रचलित हो [?]ये । जिनका यथार्थ अर्थ नहीं [?]मझा गया । उन्हीं मे से हस का [?]र्णन भी है । इस सम्बन्ध मे [?]म्न धारणाये प्रचलित है ।

वह श्वेत रग का होता है, [?]सका वास स्थान मानसरोवर । उसका भोजन मोती होते हैं [?]था यदि दूध मे पानी मिला हुआ हो तो हस उसमें अपनी चोंच डाल कर जल को छोड़ दूध मात्र [?]ी लेता है । ब्रह्मा जो सृष्टि का स्रष्टा है उसका वह वाहन हैं ।

ये धारणायें हैं जो आज के इस वैज्ञानिक युग में भी हमारे समाज में प्रचलित हैं । आश्चर्य यह है कि इस प्रकार का पक्षी आज तक किसी ने नहीं देखा । मानसरोवर की यात्रा कर आने वालों को भी वहा इस हस के दर्शन नहीं हुए । वास्तव में यह एक अध्यात्म हस का वर्णन है । वह है आत्मा-जीव । इसका स्वरूप सांख्य शास्त्र ने शुद्ध अर्थात् निर्मल लिखा है । महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भी सत्यार्थ प्रकाश में जीवात्मा स्वभाव से शुद्ध है, इस का उल्लेख किया है । शुद्धता का प्रतीक श्वेत रंग है, जो कि हंस पक्षी का माना गया है । शरीर में जीवात्मा का स्थान हृदय माना गया है । इसके लिये अध्यात्म-शास्त्रों में 'अगुठष्मात्र' शब्द है । नवीन गवेशकों के अनुसार शरीर में दो हृदय हैं । एक छाती के पास है । जिसका कार्य रक्त शुद्धि है । इस का परिमाण बन्द मुट्ठी के बराबर होता है । दूसरा हृदय शिर में है, जोकि अगुष्ठ परिमाणी है । उसी में आत्मा का वास है । साधारण भाषा में मन तथा हृदय पर्याय होते हैं, इसी कारण जीव इस मान सरोवर में रहता है ऐसा कहा जाता है । जीवों में मनुष्य ही सर्वश्रेष्ठ पदार्थ ज्ञान रूपी रत्न का उपभोग करने से वही मानो उसका मुक्ताभक्षण करना है । विश्व में उच्चकोटि के वैरागी जो श्रेयमार्ग के राही होते हैं, वे अपनी ज्ञान मनन-विवेचन रूपी चोंच डालते हैं, जिस से प्रकृति रूपी पानी तथा आत्मा रूपी दूध जो मिले हैं वे पृथक २ हो जाते हैं । वे आत्मा रूपी ब्रह्म विद्या रूपी दूध का पीते हैं, प्रवृत्ति रूपी पानी को छोड़ देते हैं । अर्थात प्रेय मार्ग वा प्रवृत्ति मार्ग को छोड़ श्रेयमार्ग वा निवृत्ति मार्ग को अपनाते हैं । इसीलिए हमारे देश में साधु सन्यासियों के नाम से पूर्व परम हस परिव्राजक शब्द जुड़ा होता है । क्योंकि उनका कार्य ब्रह्मविद्या रूपी दूध को पीना होता है । ब्रह्मा नाम है चतुर्वेद वेत्ता का जो कि श्रेष्ठ चरित्र वाला हो । ऐसे व्यक्ति ही सृष्टि की व्यवस्था करने वाले होने से मानों रचयिता हैं । वे ही जीवनन्मुक्त पुरुष आत्मा रूपी हंस को सवारी करते हैं । इसीलिए सांख्य में कहा 'चक्रभ्रमणवद्धृत शरीर.' अर्थात् आत्मारूप से विशेष जीवन व्यतीत करते हैं । महर्षि यास्क ने हंस शब्द का निर्वाचन करते हुए 'हन' धातु से इस शब्द की सिद्धि स्वीकार की है । इस धातु के दो अर्थ हैं 'हिंसा-गत्यो.' हिंसा और गति । महर्षि दयानन्द जी के अनुसार गति के तीन अर्थ 'ज्ञान गमन प्राप्ति' हैं । अब हंस का अर्थ है जो ससार में श्रेष्ठ ज्ञान का सचय करे, तदनुसार अपने जीवन में गति करे, पुनश्च अपने अन्तिम लक्ष्य मोक्ष को प्राप्त करे, इसलिये व्याकरण की दृष्टि से भी जीवात्मा ही श्रेष्ठ हंस सिद्ध होता है ।

इस प्रकार वेद के अनेक अलंकार तथा भाव हैं जिनका मध्य-काल में यथार्थ अर्थ न समझने से साधारण मानव समाज में आज भी भ्रान्ति है । आर्य विद्वानों का कर्तव्य है कि वे ऐसे २ वेद के रहस्यों को जनमन तक पहुंचाने में प्रयत्नशील होवें । यही ऋषिवर दयानन्द का सन्देश है ।

——

यज्ञिय-प्रार्थना

ओं अग्न आ याहि वीतये गृणानो हव्यदातये ।
नि होता सत्सि बर्हिषि ॥ साम० ॥
हे विश्व-याग का आग ! हमारे हृदय में तू जाग !
हे विश्व-याग की आग !

गति स्नेह को लेकर आजा !
संचालन करने को आजा !
जड़ता मान्य आदि को ले जा !
हव्यवाट बन देवों को तू कर दे वितरित भाग !
हे विश्व-याग की आग !

तुम्हें हव्य जो देते है हम ।
झट अन्यों को देते हो तुम ॥
और यज्ञ मय करते हो तुम ।
दो वरदान कृपानिधान ! बना दो सुन्दर जीवन-याग !
हे विश्व-याग की आग ॥

एक व्यक्ति में कहां शक्ति है ?
समष्टि में ही निहित शक्ति है ॥
बिना बोध के नहीं मुक्ति है ।
अग्नि-देव हे उदासीन हो, अङ्ग अङ्ग में जाग ।
हे विश्व-याग की आग ॥

—नाम देव राव गन गने "पथ रोट"

अमूल्य वचन

★ न हि सत्यात् परो धर्मः । (सत्य से बढ़ कर और कोई धर्म नहीं है) ।

सम्पादकीय--

आर्य जगत्

वर्ष २५] रविवार २०२१, ६ जून १९६५ [अंक २४

जीवन का हिन्दीकरण

राष्ट्रभाषा के प्रचार के लिए दो प्रमुख साधन हैं। एक का संबंध सरकार से है तथा दूसरा जनता के हाथ में होता है। केवल सरकार द्वारा किया जाने वाला प्रयत्न भी सफल नहीं होता, यदि उसके साथ जनता का सहयोग न हो। इसी प्रकार यदि केवल लोग ही दौड़-धूप में लगे हों किन्तु सरकार सर्वथा उदासीन बनी रहे। इन दोनों अवस्थाओं में भी किसी कार्य को सुचारु रूप से किया नहीं जा सकता। राष्ट्र भाषा के प्रसार के लिए भी यही दोनों बातें आवश्यक हैं। भारत के संविधान में देवनागरी लिपि में हिन्दी को राष्ट्रभाषा स्वीकार किया गया। यह सत्य है कि राष्ट्रभाषा घोषित हो जाने पर भी इसके प्रसार के लिए सरकार की ओर से उतना ध्यान नहीं दिया गया जितना आवश्यक था। थोड़े-से अंगरेजी के प्रेमी अन्दर से नहीं चाहते कि अंगरेजी चली जाए, और हिन्दी लागू हो जाए। इसमें बड़े-बड़े लोगों का भी हाथ है। राष्ट्रभाषा के प्रति इतनी उपेक्षा विश्व के अन्य किसी राष्ट्र में भी नहीं देखी जाती। इतने वर्षों के बाद भी आज इन लोगों का अंगरेजी के साथ इतना मोह है। राष्ट्रभाषा के प्रचार में सरकार कीड़ी की चाल चल रही है। अब जनता सतर्क न हो तो ऐसी अवस्था होती रहती रहती है। उदासीन व्यक्ति दूसरे को क्या जगाएगा? खेद तो यह है कि लोगों के मन की अवस्था भी विचित्र-सी है। सेठ गोविन्ददास जी जैसे मान्य वरिष्ठ हिंदी भाषा प्रेमी तो विरले हैं जो समय २ पर जनता के साथ २ राज्यसत्ता को भी कड़े शब्दों में झंझोड़ते रहते हैं। अन्य प्रान्तों की चर्चा न करके अपने प्रान्त पंजाब के बारे में कहा जा सकता है कि यहां के लोग राष्ट्रभाषा के प्रसार में कहते बहुत हैं पर जीवन व व्यवहार में हिन्दी प्रेम बहुत कम है। आप पंजाब के नगरों के बाजारों में घूम कर देखें कि दुकानों के ऊपर जो नामपट्ट लिखे हैं वे हिन्दी में कितने हैं। अमृतसर हो या जालन्धर, अम्बाला हो या लुधियाना किसी भी नगर में जायें, विचित्र तमाशा किया जाता है। दास मनोवृत्ति का खुला प्रदर्शन हो रहा है। राष्ट्र-भाषा हिन्दी के लिए मन में भावना ही नहीं। बड़ी वेदना होती है। सरकार को बेशक कोसो परन्तु अपने आप को भी तो कोसा करो। हमारे व्यापार, दुकान, स्कूल कालेजों के नाम पत्र उसी प्रकार अंगरेजी में हैं। तनिक भी परिवर्तन नहीं हुआ। हमें लाज ही नहीं आती कि हम स्वयं अपनी राष्ट्रभाषा का कितना अपमान कर रहे हैं। विवाहों पर जो निमन्त्रण पत्र छापे जाते हैं वे प्रायः अंग्रेजी भाषा में होते हैं। स्टेशनों से पता करें कि अंग्रेजी के रेलवे टायम-टेबल कितने बिकते हैं तथा हिन्दी की समय सारिणी कितनी। डाकखाना में जाकर तमाशा देखें कि कार्डों, लिफाफों पर पता किस भाषा में लिखा जाता है। सरकार की ओर से हिन्दी में तार देने का उत्तम प्रबन्ध है पर लोग कितने राष्ट्रभाषा में तार देते हैं? यह देखकर शर्म आती है। हमें अपनी राष्ट्रभाषा से प्यार ही नहीं है। हम केवल सरकार को दोषी बता कर कोसने में कोई कसर नहीं उठा रखते, किन्तु स्वयं अपने घरों में व्यवहार में हिन्दी से प्यार नहीं करते। जो हम अपने आप कर सकते हैं वह क्यों न करें। जीवन तथा कार्यों का हिन्दीकरण करना होगा तभी राष्ट्रभाषा का प्रसार हो सकेगा।

—त्रिलोकचन्द्र

आवश्यक और विचार—

आज उन आर्य भाई बहिनों, सभाओं तथा विशेषतः सार्वदेशिक सभा से एक आवश्यक तथा विचार करने योग्य निवेदन करना है। वह यह है कि आर्यसमाज ने वैदिक धर्म के सिद्धांतों के प्रचार के लिए अपने आरम्भ के युग में हरेक सम्प्रदाय वादियों से भारी शास्त्रार्थ किए तथा अपनी छाप सबपर लगादी समाज के शास्त्रार्थ महारथियों की विजय पताका आज भी लहराती है। किन्तु अब समाज से प्रायः शास्त्रार्थ के महारथी धीरे २ समाप्त होते जा रहे हैं। ईसाईयों, मुसलमानों, जैनियों तथा पौराणिकों के साथ टक्कर लेने वाले समाज में बहुत ही इने-गिने महारथी हैं। खेद तो यह है कि उनकी भी उपेक्षा की जा रही है। शास्त्रार्थ महारथी पं. राम चन्द्र जी देहलवी, पं. शान्तिप्रकाश जी, ठा. अमरसिंह जी आदि सज्जन समाज की विभूति हैं। परन्तु इस मैदान में नया कौन आ रहा है। समाज व दयानन्द के नाम की कितनी संस्थाओं का जाल बिछा है। लाखों का बजट है। हजारों पढ़ाने वाले एवं लाखों पढ़ने वाले हैं। किन्तु उनमें कितने सिद्धांतों को जानने मानने वाले हैं। इस पर पर्दा ही पड़ा रहे तो ठीक है। दूसरी ओर आज भी पौराणिक हों या जैनी, मुसलमान हों या ईसाई—आर्य समाज के मुंह आते रहते हैं। वे सब अपने काम में पहले से भी अधिक तय्यारी से लगे हैं। उनसे टक्कर कौन लेगा? आर्यसमाज में भी अपूज्य पूज्य बन गये तथा पूज्य अपमानित होने लगे। शास्त्रार्थ के मैदान में आने की बात तो दूर रही, प्रचारक बनने के क्षेत्र में भी अब पढ़ा लिखा युवक कम आता है। बड़ा अभाग होता जा रहा है। धर्म का धन पतियों द्वारा अपमान देख क लोगों ने जीवन की धारा ही बद ली है। सारे समाज के लिए य गम्भीर समस्या है।

शास्त्रार्थ की तैयारी के लि आवश्यक है कि आर्यसमाज विशेष ध्यान देना होगा। इ की उन लोगों को तनिक भी चि नहीं जिन को न वेद प्यारा अ न ही समाज से हित है। दयानन्द पर श्रद्धा तथा सिद्ध पर आस्था है। ऐसे लोग अ समाज में हैं तो, या तो कमाने के लिए या अपने स्व साधन की पूर्ति के लिए। इ लिए वेद पर कोई आक्रमण सिद्धांतों पर घात करे, आर्यस को बुरा भला कहे, विषैला सा लिखे। उनके सामने केवल अ धन कमाना ही प्रयोजन है। f हम तो उन से कहना चाह जिनके लिए समाज माता का है। वेद प्राण है तथा दय नायक है! इस समस्या पर हम चाहते हैं कि सार्वदे सभा ऐसा एक आवश्यक वि जारी करे जिस में केवल

(शेष पृष्ठ ६ पर)

आर्यसमाज की अमूल्य संपत्ति

आर्यसमाज के वीरों की कहानियां (१)

(विनय प्रकाश, कक्षा ११वी पुत्र प्रि० भगवानदास जी, सोलापुर)

आजकल आर्यसमाज एक बहुत बड़ी संस्था बन गई है। जिस का नाम भारत में ही नहीं संसार में भी सूर्य की तरह चमक रहा है। जो कि घर घर में ज्ञानरूपी प्रकाश को फैला रहा है। आर्यसमाज ज्ञान का भंडार है। यह भंडार और यह चमक इसको अपने आप नहीं मिली। यह उन वीरों द्वारा मिली है जिन्होंने अपना बलिदान किया है। अपनी जिन्दगी आर्य समाज को बनाने में लगा दी है। आर्यसमाज का नाम उज्ज्वल करने के लिये उन्होंने तन, मन, धन से आर्यसमाज की सेवा की है। उन वीरों के बलिदान के परिणाम स्वरूप आज आर्यसमाज संसार का पथ प्रदर्शक बन गया है। क्या आप उन वीरों को जानते हैं? प्रत्येक आर्य भाई-बहन को जानना ही चाहिए। मैं कुछ कहानियां नीचे लिख रहा हूं।

दण्डी गुरु विरजानन्द जी महाराज—विरजानन्द जी का बचपन का नाम वृजलाल था। इनका जन्म १८५५ विक्रमी में हुआ था। पांच वर्ष की आयु में ही चेचक से उनकी आंखें चली गयीं। परन्तु वे अपने पूज्य पिता नारायण दत्त जी से संस्कृत पढ़ने लगे। कुछ वर्ष पश्चात उनके माता पिता का देहान्त हो गया। उनके देहान्त के बाद विरजानन्द जी के भाई ने इनके साथ कठोर व्यवहार करना शुरू किया। जिस से दुःखी होकर वे पन्द्रह वर्ष की आयु में हृषिकेश की ओर चले गये। वहां से तीन वर्ष बाद वे हरिद्वार गये। वहां पर स्वामी पूर्णानन्द जी की विद्वता से प्रभावित होकर वे उनके शिष्य हो गये। विरजानन्द जी के आंखे न होने के कारण उन्होंने श्रवण और स्मरण शक्ति से ज्ञानोपार्जन किया।

फिर वे काशी गये। वहां उन्होंने अनेक ग्रन्थ पढ़े। फिर उन्होंने अपने ज्ञान को पर्याप्त समझ कर अपने शिष्यों को पढ़ाना शुरू किया। एक बार जब वे सोरों गये तो वहां गंगा तट पर वे विष्णु स्तोत्र का मधुर पाठ कर रहे थे। अचानक अलवर नरेश ने उनका शुद्ध उच्चारण आदि देखा। वे विरजानन्द जी से प्रभावित हुए। उन्होंने विरजानन्द जी को अपना गुरु मान लिया। अलवर नरेश की सहायता से उन्होंने एक 'शब्द बोध' नामक ग्रन्थ लिखा। अलवर नरेश हर रोज नियमित समय पर उन से पढ़ने आते थे। लेकिन चार वर्ष बाद एक दिन वे समय पर नहीं आये तो खिन्न होकर दंडी जी वहां से चले आये। इतने वे समय के पाबन्द थे। एक राजा का गुरु होना कोई हंसी खेल नहीं है। समय पर न आने के कारण वे चले गये यही उनका आदर्श था वहां से फिर वे सोरों गये। सोरों में बीमार हो गये और फिर स्वस्थ हो कर मुरसान गये। वहां उनका आदर हुआ। फिर भरतपुर चले गये वहां भी विरजानन्द जी का पूर्ण स्वागत हुआ। भरतपुर से आप मथुरा चले गये। मथुरा में आप ने अपनी पाठशाला स्थापित करदी। धीरे-धीरे उनकी पाठशाला को अलवर, भरतपुर तथा जयपुर आदि राज्यों से सहायता मिलने लगी। पाठशाला में शिक्षणकार्य निःशुल्क होता था, और दण्डी जी स्वयं अध्यापन कार्य किया करते थे।

मथुरा में कृष्ण स्वामी बहुत प्रसिद्ध थे। एक बार 'अजाद्युक्ति' में कौन-सा समास है इस विषय पर कृष्ण स्वामी और विरजानन्द जी के शिष्यों में मतभेद हो गया। बढ़ते-बढ़ते बात यहां तक बढ़ी कि कृष्ण स्वामी और विरजानन्द जी का शास्त्रार्थ होने का निर्णय हुआ। जिस दिन शास्त्रार्थ था उस दिन कृष्ण स्वामी को शास्त्रार्थ में आने का साहस न हुआ। शास्त्रार्थ के आरम्भ से अन्त तक विरजानन्द जी ने व्याकरणों की छानबीन की। परन्तु अन्त में उनकी आस्था पाणिनी जी पर रह गयी। विरजानन्द जो ऋषिकृत ग्रन्थों को आर्ष तथा मनुष्य कृत ग्रन्थों को अनार्ष समझते थे।

अब मथुरा की पाठशाला में विशेषता आ गई। वे विद्यार्थी को जितनी देर चाहते थे, पढ़ाते थे। वे प्रत्येक ग्रन्थ को क्रम से पढ़ाते थे और शब्दोच्चारण का विशेष ध्यान रखते थे। चक्षुओं का अभाव होते हुए भी उन्होंने अपने शिष्यों द्वारा बहुत से ग्रन्थ कंठस्थ कर लिये थे। वे पंडितों से मिलकर शास्त्र चर्चा किया करते थे। इसका परिणाम यह हुआ कि वे अद्वितीय तथा अपूर्व विद्वान हो गये।

दंडी जी को एक ही धुन थी, और वह यह कि ऋषि कृत ग्रंथों की प्रचार प्रणाली बनी रहे। जयपुर नरेश से उन्होंने एक सार्वभौम सभा बुलवाने का आग्रह किया था, जिसमें वह देश भर के विद्वानों को निमंत्रित कर के आर्ष तथा अनार्ष ग्रंथों का निर्णय करना चाहते थे। परन्तु महाराज जयपुर के मंत्रिमंडल ने स्वीकृति न दी। अब दंडी जी नित्य इस चिन्ता में रहते थे कि उनका लक्ष्य पूरा कैसे होगा?

एक दिन दंडी जी के पास दयानन्द नाम के शिष्य आये। दण्डी जी ने उनकी मेधा जानकर सोचा कि, 'अब मुझे योग्य शिष्य मिल गया है।' धीरे-धीरे दयानन्द जी की विद्या पूरी हो गई। दंडी जी ने उनसे भारत में आर्ष ग्रन्थों का प्रचार करने की दक्षिणा मांगी। दयानन्द ने अपने गुरू का आदेश स्वीकार कर लिया। दण्डी जी को अपने शिष्य पर विश्वास था। स्वामी विरजानन्द जो क्वार बदी १३ संवत् १९२५ को परलोक सिधारे।

उनकी मृत्यु सुनते ही दयानंद जी ने कहा, 'आज व्याकरण का सूर्य अस्त हो गया।' आर्य समाज के इतिहास में दण्डी विरजानन्द जी का स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण है। वे आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द जी के गुरु थे। दयानन्द जी ने जिस प्रकाश को फलाया था वह उन्हें गुरू विरजानन्द जी से मिला था। दूसरे शब्दों में वैदिक प्रकाश के मूलपुंज विरजानन्द जी थे। (क्रमशः)

नई संतती के नवीन लेखक विनय प्रकाश जी, दयानन्द कालिज शोलापुर आप श्री भगवान दास जी एम० ए० प्रिन्सीपल दयानन्द कालिज शोलापुर, के सुपुत्र हैं ११वीं कक्षा के विद्यार्थी हैं। इस विद्यार्थी जीवन में ही उनको लिखने की रुचि है। इस लेख से पूर्व भी आपके दो तीन लेख प्रकाशित हो चुके हैं। ठीक है यथा राजा तथा प्रजा। वर्तमान लेख में स्वामी दयानन्द जी की संक्षिप्त जीवन यात्रा है। यह लेखमाला क्रमशः पाठकों की सेवा में आती रहेगी।

—व्यवस्थापक

नारी स्तम्भ—

भारत की सीमाओं पर खतरे की घंटी बहिनो ! क्या आप ने भी सुनी ?

(लेखिका—कु० सुशीला आर्या एम.ए. आर्ष कन्या गुरुकुल, नरेला)

भारत की सीमाओं पर खतरे की घण्टी बज रही है। इस में किसी को कोई सन्देह नहीं। यह ठीक है कि घण्टी रह-रह कर बजती है। हमें चौंका कर यह पुनः बन्द हो जाती है। कई बार तो हम इसे सुन कर भी अनसुनी कर देते हैं। कई बार इसे सुनने के भय से कान मून्द कर मुख भर बोल देते हैं कि कोई बात नहीं। किसी शरारती बन्दर ने अनजाने में ही घण्टी बजा दी थी। पर यह सब हमारा भ्रम है। घण्टी यह जान बूझ कर बजाई जा रही है और किसी चतुष्पद द्वारा नहीं अपितु द्विपद मानव द्वारा ही। इसको रह-रह कर होने वाली ध्वनि को सुन कर अनसुनी करना निर्विवाद रूप से हमें महगा पड़ेगा। भविष्य का इतिहास इसे एक अक्षम्य अपराध कह कर स्मरण करेगा। इस लिए समस्त देश को अपनी समस्त श्रवण शक्ति संचित कर इसे सुनना तथा प्रत्युत्तर में कटिबद्ध हो खड़े हो जाना है। किन्तु प्रस्तुत प्रसङ्ग में हमने केवल इस देश की देवियों से एक बात पूछने के लिए लेखनी उठाई है, और वह यही कि बहिनो ! सीमाओं पर बजने वाली खतरे की घण्टी आप ने भी सुनी है क्या ?

क्या कहा ? क्यों नहीं सुनी ? हम क्या इस देश में नहीं रहतीं ? हमें क्या देश से प्यार नहीं ? क्या हमारे कान बहरे हो गए हैं ? क्षमा कीजिए लक्षणों से स्पष्ट विदित है कि मेरे देश की बहिनों के कर्णरन्ध्रों तक अभी इस घण्टी की भयावह ध्वनि नहीं पहुँच पाई है। आप कहेंगे इसका क्या प्रमाण ? प्रमाण देने के लिए पत्रों में लिखने की आवश्यकता भी नहीं किन्तु फिर भी बन्द कानों पर ढोल पीटने के यत्न में ऐसा करना पड़ रहा है। इस देश के और नगरों को बात जाने दीजिए राजधानी की सड़कों पर लहराते जनसमूह के बीच प्रवेश कर देखिए। वहां दुर्गा, लक्ष्मी, कर्मवती और जवाहरबाई की सन्तानों का जो रूप दृष्टि में आएगा उसे देख कर थोड़ी-सी भी भावनाओं वाला हृदय जिस व्यक्ति का होगा वह यह बयान दिए बिना नहीं रह सकता कि भारत की नारी को भारत की संकट कालीन स्थिति स्मरण ही नहीं है। वह तो अपने ही राग-रंग की उत्तुङ्ग तरङ्गों में बही जा रही है। उसके मुख पर केवल वस्त्राभूषणों, रङ्गोली गोष्ठियों की ही चर्चा है। उसका ध्यान समाचार पत्रों की फैशन प्रतियोगिताओं पर जाता है, प्रसाधन के साधनों के विज्ञापन उसके समाचार पत्र दर्शन की सीमा बन कर रह गए हैं। झीने और भद्दे सिले वस्त्रों में से शरीर का प्रदर्शन करना ही उसकी कला रही गई है। सच पूछिए तो वह इस देश में नहीं रह रहीं। अन्न जल वस्त्र सब यहां के ग्रहण करके भी स्वप्न रूस और वर्त्तानिया के लेता हैं। उसे देश से प्यार भी नहीं। यदि होता तो अपनी प्यारी वस्तु की चिंता कौन नहीं करता ? हमे बतलाइए भारतीय नारी ने सीमा सङ्कट पर कब किस रूप में चिंता व्यक्त की ? उसे केवल अपने बनाव शृंगार से लगाव है। अपने हाव-भाव, चाल-ढाल, वेष-भूषा आचार-व्यवहार से देश के चरित्र पर पानी फेरने का जो बीड़ा देश की निन्यानवे प्रतिशत बहिनों ने उठा रखा है वह इस निष्कर्ष की घोषणा कर रहा है कि उसके कानों में शृंगार और प्यार के रिकार्डों की ध्वनि इतनी ऊपर तक भर गई है कि खतरे की घण्टी की ध्वनि मन्द पड़ने से सुनाई ही नहीं पड़ती। कानों में सुनने की शक्ति तो है किन्तु वे कुछ और ही सुन रही हैं।

> कु० सुशीला जी M. A. स्त्री जाति में ही नहीं अपितु पुरुष समाज में भी ख्याति प्राप्त लेखिका हैं। कई समाचार पत्रों में नारी स्तम्भ की सम्पादिका भी रह चुकी हैं। नरवाना में आर्य कन्या महा विद्यालय की कई वर्ष तक संरक्षिका रही हैं। आज कल आप आर्ष कन्या गुरुकुल नरेला के सचालन में हाथ बटा रही हैं। प्रस्तुत लेख में फैशन परस्ती से स्त्री जाति को दूर रहने का आदेश देते हुए सीमाओं पर होने वाले प्रतिदिन के आक्रमणों के प्रति स्त्री जाति का क्या कर्त्तव्य है इस लेख में पढ़िए।
>
> व्यवस्थापक

बहिनो ! हम कहां से कहां आ पहुंचीं ? याद है आपके उत्तरदायित्व कितने बड़े थे ? वेद ने आपको 'पुरन्धि' कह कर सम्मानित किया था। देश के नगरों को धारण-उनका रक्षण-करना आपका दायित्व था। देश क्या है ? इन्हीं पुरों-नगरों का समुच्चय। इसको रक्षा का दायित्व भार वहन करने वाली योषा-युवतियों की प्रार्थना देश के लिए वेद ने की है ? आज देश के मुख्य नगर भारत की राजधानी दिल्ली पर कोई संकट आ खड़ा हो, शत्रु किसी ओर से बढ़कर इसे तहस-नहस करने पर उतारू हो जाए, भारतीय नारी को इसकी कुछ चिन्ता है ? वह तो अपनी रक्षा में ही असमर्थ है। वेशभूषा का इतना विकृत ढंग निकाला है कि शक्लें देखने में लज्जा आए। फिर न पूर्ण गति से चल सकती हैं। बस तक में सवार होने में कठिनाई। कोई वस्तु हाथ से छूटकर गिर जाए तो दूसरों के कटाक्षों तथा उपहास का पात्र बने और यह सब किस प्रयोजन से ? केवल नवीनता, आधुनिकता और फैशन के नाम पर। पतन की चरम सीमा है। जीवन में केवल कृत्रिमता रह गई है। भारतीय नारी को देश की रक्षा के लिए ही इन सब व्यसन पाखण्डों को तिलाञ्जलि दे सच्चा सादा जीवन अपनाना चाहिए। याद रखिए-सीमाओं पर का खतरा हमारे लिए सबसे बड़ा अभिशाप है। स्त्री और बच्चे, दो देशों की शत्रुता के सबसे निरीह शिकार होते हैं। इसलिए आप कम-से कम अपनी रक्षा में तो सबल समर्थ होने को कृतसङ्कल्प हों। राष्ट्ररक्षिका और 'पुरन्धि' न सही अपने चरित्र की रक्षा द्वारा ही देश की कल्याण कामना में सहयोग दें। यदि अब भी आपने कानों में रूई के फाहे दबाकर बिल्ली से भीत कबूतर की भान्ति आंखें बन्द करने की नीति अपनाए रखी तो भविष्य का अन्धकारमय स्वरूप देखने के लिए तैयार रहना पड़ेगा। इसके लिए उचित यही है कि अपने उज्ज्वल अतीत को स्मरण करते हुए वर्तमान की कालिमा को थोड़ा-थोड़ा करके धो डालिए इसीमें आपका तथा देश का हित है।

हमें अपनी माता की लाज...

(पृष्ठ ७ का शेष)

-ट दिए तो भारत के परवाने कृष्ण, बलराम के रूप में मैदान में आ कूदे—जब कौरवों ने अपने अन्याय बल से तंग करना चाहा वो भारत के वीर पांडव के रूप में आये—जब गौरी, महमूद, औरंगजेब, बाबर, अकबर, अंग्रेज ने अपनी टेढ़ी नजर भारत पर डाली तो भारत ने चौहान, दुर्गावती, शिवा, संग्रामसिंह, प्रताप, भगतसिंह, सुभाष बिस्मिल दुर्गा, लक्ष्मी आदि के द्वारा उस अन्याय, अत्याचार का मुंह तोड़ जवाब दिया—उनके बने बनाये चक्रव्यूह को अभिमन्यु बनकर अर्जुन बन कर छिन्न-भिन्न किया।

तो फिर ये चीन, पाकिस्तान किस का बेचारा है उठो! 'वयं राष्टे जागृयाम पुरोहिताः' का नारा लेकर राष्ट्र के सच्चे पुरोहित बनें दुश्मन को ललकारें, पछाड़ें।

वीरो! सेना तो अपना काम करेगी ही, आओ हम भी देश में अपना काम करें—देश में बढ़ रहे गद्दारों को, जासूसों को चुन २ कर मारें—उनकी खबर निकटवर्ती पुलिस दफ्तर को दें—ये जो प्रतिदिन घटनायें घट रही हैं, कभी रेलगाड़ी के उलटने, कभी गेहूं के जलने, कभी गुरु ग्रन्थ साहिब के पन्नों को फाड़ने की—इन के पीछे जरूर कोई न कोई हाथ है—जरूर जासूस कार्य कर रहे हैं—इनको पकड़ो, मारो, नानी याद करा दो और अपनी माता की लाज को बचाओ—(सभी युवक समाजों से मेरी विनती है कि वह देश की रक्षा के लिए प्रत्येक कार्य करें)।

आर्यसमाज होशियारपुर का चुनाव

प्रधान—प्रिंसिपल बैजनाथ जी, उपप्रधान—प्रि० सत्यप्रकाश सालिक जी, उपप्रधान—चौधरी प्रेमचन्द जी, „ श्री बलबीर सिंह ओहरी, मन्त्री—श्री राजेन्द्रपाल महता, उपमन्त्री—श्री रामरखा जी उपमंत्री—श्री धर्मवीर कपूर, पुस्तकाध्यक्ष—श्री बिहारी लाल जी, कोषाध्यक्ष—श्री गणेशदास सेठी, सभासद—चौधरी बलबीर सिंह जी

„ ठाकुर मेहर चन्द एडवोकेट
„ श्री विश्वेश्वरदास भण्डारी
„ श्री हरबंस लाल महता
„ „ केप्टन नन्द सिंह जी
„ „ पं० लभूराम शर्मा
„ „ तेजासिंह जी,
„ „ पं० देवीदास शास्त्री
„ „ ओम प्रकाश वर्मा, एम० ए०

राजेन्द्रपाल महता मन्त्री समाज

श्री प्रिंसिपल भगवान दास जी पंजाब में

डी. ए. वी. कालेज शोलापुर के प्रिंसिपल श्री भगवान दास जी ५ वर्ष कार्य करने के पश्चात् ५ जून शनिवार को **Bombay Express** से साढ़े सात बजे चल कर एक बजे अम्बाला नगर पधार रहे हैं। आर्य समाजों से प्रार्थना है कि प्रत्येक स्टेशन पर अपने माननीय नेता का स्वागत करके कर्त्तव्य का पालन करें।

आवश्यकता और विचारने योग्य

(पृष्ठ ३ का शेष)

दस ही योग्य विद्यार्थी तैयार किये जाएं। उनमें दो २ को एक २ सम्प्रदाय के लिए आठ दस वर्षों में पूर्ण रूप से तैयार किया जाए। उनको हर बात से निश्चिन्त कर दिया जाये। आज इसकी बड़ी आवश्यकता है, —सं०

विविध संग्रह (पृष्ठ ८ का शेष)

महर्षि दयानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय टंकारा

—विश्वविद्यालय की सरल संस्कृत परीक्षाएं सितम्बर सन् ६५ के अंत में होंगी। ये परीक्षाएं आर्ष पद्धति के अनुसार चलाई गई हैं। अतः भारी संख्या में प्रविष्ट होकर संस्था का उत्साह वर्धन करें।

वेद पथिक धर्मवीर जी का अनुकरणीय दान

—धर्मवीर जी ने धर्मवीर ग्रन्थमाला के सैंकड़ों साहित्य सुमनों की आय वेदप्रचारार्थ दान देने के लिए शुभ संकल्प किया है। वेद और विज्ञान १/- वेद संदेश १/- यज्ञ और हवन .२५ इन पुस्तकों को खरीद कर घर २ में इन का प्रचार करें। मिलने का पता—धर्मवीर ग्रन्थमाला प्रकाशन विभाग सराय रुहेला नई देहली—५

आर्य समाज (गुरुकुल विभाग) फिरोजपुर का चुनाव

प्रधान—श्री तुलसीराम जी, उपप्रधान—म. मदनजित जी, डा. साधुचन्द्र जी, मंत्री—हवन लाल जी महता, उपमन्त्री—श्री खुशीराम जी, श्री खेम चन्द्र जी, पुस्तकाध्यक्ष—महता विश्वम्भर नाथ जी, कोषाध्यक्ष—श्री मोहन लाल जी, निरीक्षक—श्री बूटाराम जी, अंतरंग सदस्य—श्री कवर चन्द्र बेरी, श्री मुलखराज जी, श्री बरकत राम जी, श्री देश बन्धु जी, श्री जवाहर लाल जी।

—हवनलाल महता, मंत्री सभाज

पाकिस्तान का कच्छ सीमा पर पिछले दो मास से अधिकार

—पाकिस्तान ने कच्छ सीमा के कंजरकोट स्थान पर जबरदस्ती अधिकार कर लिया है और उसे वह अपनी सीमा के अन्तर्गत बताता है। भारत सरकार पाकिस्तान को इस इलाके से निकालने की सिरतोड़ कोशिश कर रही है।

शेख का विदेशों में जहरीला आंदोलन

—शेख साहब ने हज यात्रा के बहाने भारत से पासपोर्ट लेकर विदेशों में जो विष वमन किया है। उसके फलस्वरूप अपना पास पोर्ट भी रद्द करा बैठा है तथा ऊटकमंड में नजरबंदी की हवा खा रहा है।

जोर्डन में डा० जाकिर हुसैन का अद्वितीय स्वागत

अम्मान—३० मई भारत के उपराष्ट्रपति डा० जाकिर हुसैन के जोर्डन की तीन दिन की यात्रा पर यहां पहुंचने पर भव्य स्वागत किया गया। क्यों न भला स्वागत होता जबकि भारत शांति का दूत है।

मंगलमय हो मिलन तुम्हारा

अलीगढ़ निवासी श्री वासुदेवजी अध्यापक के सुपुत्र आर्य जगत के उदीयमान लेखक, कवि और वक्ता आचार्य मित्रसेन एम० ए० का शुभ विवाह आर्य नगर जि० बदायूं निवासी श्री भद्रगुप्त जी आर्य की सुपुत्री आयु० विजय लक्ष्मी एम०ए० के साथ पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ। संस्कार ब्र० जगदीश जी विद्यार्थी तथा ब्र० यशःपाल जी शास्त्री ने कराया। आर्यजगत परिवार की ओर से नवदम्पति को हार्दिक बधाई। —व्यवस्थापक

★ मनः सत्येन शुध्यति। सच बोलने से मन शुद्ध होता है।

युवक स्तम्भ :—

हमें अपनी माता की लाज बचानी है ! लुटेरे, चोर, गद्दारों को खत्म करना है !

(ले०—करनैलसिंह विद्यार्थी विद्यावाचस्पति)

अपनी मात किसे प्रिय नहीं होती, कौन है जो अपनी माता से प्यार नहीं करता। संसार का हर मनुष्य ही नहीं बल्कि प्रत्येक प्राणी अपनी माता से प्रेम करता है—कभी-कभी यह प्रेम, प्यार दूसरा पक्ष भी अपना लेता है—हम अपनी माता से लड़-झगड़ भी सकते हैं, आवेश में आकर उसे गालियों की, अच्छी बुरी बातों की आन्धी में भी बहा देते हैं। एक मिनट के लिए सोचिए कि यदि यही गालियां कोई अंजान अपरिचित मनुष्य हमारी माता को दे और हम पास में बैठे हुए हों तो क्या हम चुप हो रहेंगे ? या उस गालियां देने वाले मनुष्य को हम जिन्दा ही जाने देंगे ? क्या हम उसका जवाब (ईंट का जवाब पत्थर के रूप में) न देंगे ?

यदि उसका जवाब पत्थर ही देना है, यदि उसकी गालियों का जवाब देना है, तो हे आर्य जाति के बहादुर वीरो ! देश के परवानो ! धर्म के दीवानो ! अपनी माता से प्यार करने वालो ! जागो ! उठो ! तैयार हो जाओ ! अपनी माता के अपमान का बदला लेने के लिए, उसपर बर्षाई हुई गालियों का प्रत्युतर देने के लिए। आज पाकिस्तान व चीन जैसे लुटेरों ने, विश्वासघाती मित्रों ने, चोरों, बदमाशों ने एवं बेईमानों ने हमारी प्यारी भारत माता का अपमान किया है, उस पर डाका डाला है—

अतः ये लुटेरे, बदमाश जाने न पावें, देखना कहीं भाग न जायें। इनको चुन-चुन कर मारो। ऐसा मारो, ऐसा मारो कि इनको अपनी नानी याद आ जाए फिर कभी भी हमारी प्यारी माता की तरफ निगाह भरकर देख न सके—

हे स्वामी दयानन्द के निडर प्यारो, लेखराम से निर्भय दुलारो, श्रद्धानन्द से राष्ट्र के सच्चे देश-भक्तो महात्मा हंसराज की आंख के तारो, भगतसिंह, सुखदेव, बिस्मिल, आजाद जैसे देश दीवानो उठो ! आगे बढ़ो। देखो, देखो तुम्हारी माता की लाज आज अपमानित हो रही है उसे बचाओ, उठाओ। जान जाती है तो जाने दो, स्त्री, पुत्र छूटते हैं तो छूटने दो, घर बाहिर छूटता है तो छूटने दो माता की इज्जत हमारी इज्जत है आप सब की इज्जत है अतः सबसे पहले अपनी माता को बचाओ, उसकी रक्षा करो लुटेरों, बेईमानों व बदमाशों से—

हे भारतमाता की आशाओं के परवानो ! बेशक हम शान्तिवादी हैं, बेशक हमारी माता ने शान्ति की ही घुट्टी दी है पर जब लुटेरे बईमानों, अत्याचारियों ने शान्ति को छोड़ दिया हो, भारत पर जबरदस्त आक्रमण किया हो तो भारत के वीरों ने उनका मुंह तोड़ जवाब दिया है—जब रावण के रूप में यह अत्याचार हुए तो भारत के वीर राम बन कर मैदान में आ गये—जब कुम्भ, मेघनाथ ने जुलम के बादल छाये तो लक्ष्मण, हनुमान आदि वीरों ने उनको उखाड़ फैंका जब जरासंध कंस ने भारतवासियों को नाना प्रकार के

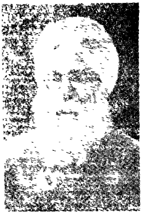
(शेष पृष्ठ ६ पर)

महात्मा हंसराज जी की स्मृति में

(श्री राममूर्ति जी कालिया एम. ए., नई दिल्ली)

(१)

आर्य जाति के सरवर में
अगणित हंसों ने,
समय समय पर बार अनेक
किया विचरण है।
इन हंसों में हंसराज भी
आ पाए थे,
आर्य जगत ने जिसका
आज किया सिमरण है।



(२)

वरद पुत्र तुम हंसवाहिनी
के, व्रतधारी,
झंकृत किया उसी की
वीणा के तारों को,
नाश दीनता का शिक्षा से,
तुम ने समझा,
पार किया वेदों की
तरणी से सारों को।

(३)

ढांपा औरों के छिद्रों को
संकट सहकर,
सरस बनाना चाहा तुम ने
नीरस रहकर।
विस्तृत सागर की छाती पर
फेन सजी ज्यों,
खादी फबती अहो साधुवर
तव शरीर पर।

(४)

सादगी, सरसता और विजय की
प्रतिमा तुम,
तेज पुंज बन तम चलते
तो तम मिटता था।
सागर का गाम्भीर्य उच्चता
थी नग की सी,
इतने पर भी लोक श्रेय से
डर लगता था।

(५)

भारत की सांस्कृतिक नाव
जब डोल रही थी,
उस को खेने महापुरुष
पतवार बन गए।
राष्ट्र पताका, धर्म ध्वजा के
दण्ड रूप बन,
आङ्गल शासन नाश हेतु
असिधार बन गये।

(६)

भूखे, नंगे, दलितों के तुम
आलम्बन बन,
दक्षिण का उत्तर से जिसने
भेद न माना।
याद करेंगे पुरी, कांगड़ा
छत्तीसगढ़ को,
क्षयपीड़ित की सेवा में भी
खेद न जाना।

(७)

हाथ जोड़ व बन कृतज्ञ
रतलाम खड़ा है,
जय निनाद कर खड़े हो गये
मालाबारी,
गढ़वाली सेवायें तेरी,
भूलें क्यों कर,
आर्यजातियां ऋणी है तेरी
सारी की सारी।

(८)

तव जीवन सद्ग्रंथ बना
जो बना बड़ा है,
रखेंगे जो ताक, भला फिर
कहां भला है,
करें निरन्तर पाठ सभी
यह मेरी लालसा,
मनन करें औ आचरण,
कवि कहे चला है।

अन्तस्तल से बधाई

मान्यवर श्री ला० इन्द्रसेन जी उप प्रधान आर्य प्रादेशिक सभा पंजाब जालन्धर की विदुषी सुपुत्री सौभाग्यवती शक्ति जी का शुभ विवाह श्री बृजलाल जी खन्ना सुपुत्र श्री दुर्गादास जी खन्ना चेयरमैन पंजाब कौंसिल के साथ बड़े समारोह से सम्पन्न हुआ। इस शुभावसर पर श्री प्रधान जी को अन्तस्तल से बधाई हो। श्री ला० इन्द्रसेन जी का परिवार आर्यसमाज के लिए एक स्तम्भ परिवार है। स्वर्गीय मास्टर अन्दलाल जी के शुभ नाम व निष्काम काम को कौन नहीं जानता। आर्यसमाज, दयानन्द कालेज कमेटी, आर्य प्रादेशिक सभा तथा जालन्धर में इस परिवार ने जो काम किया व करता है। उस पर गर्व है। प्रभु मंगलमय जोड़े को सर्वदा सुखी रखे। ला० धर्मपाल जी के सारे परिवार को बधाई—सं०

आर्यसमाज पुलबंगश

आर्यसमाज पुलबंगश देहली सभा से सम्बन्धित समाजों में प्रसिद्ध समाज है। मान्य श्री राजकुमार जी ने इस समाज के लिए बड़ा काम किया है। आजकल इसके मन्त्री श्री सुरेश कुमार जी युवक, धर्मनिष्ठ तथा मीठे स्वभाव के हैं। प्रातः पौने पांच बजे से ६ बजे तक दैनिक सत्संग लगता है। देवियों की श्रद्धा तथा सज्जनों का समाज प्रेम बहुत अच्छा है। देखकर चित्त गद्गद् प्रसन्न हो जाता है। श्री पं० गणेशदत्तजी वाचस्पती ने वहां बैठकर समाज के काम को चार चांद लगा दिए हैं। समाज का काम उन्नति पर है। वहां प्रातः प्रचार का अवसर मिला। दिल बड़ा ही खुश हुआ। सभा को शताब्दी नोटोंके ३०)रु. मन्त्रीजी ने एकत्रित कर दिए। धन्यवाद—सं.

नाभा में संस्कृत प्र[illegible]

यह पढ़कर बड़ी [illegible] कि नाभा में आ[illegible] शास्त्री तथा अन्य संस्[illegible] ने संस्कृत प्रसार के लिए आर्य ह[illegible] स्कूल नाभा के प्रिंसिपल श्री ला. देसराज जी भाटिया एम. ए. की प्रधानता में संस्कृत परिषद् की स्थापना करके संस्कृत प्रचार का काम भी प्रारम्भ कर दिया है। दो बैठकें भी हो गई हैं हम इस पवित्र काम के लिए बहुत-बहुत बधाई देते हैं। आज संस्कृत के साथ जो सरकार की तथा संस्थाओं की ओर से व्यवहार हो रहा है, उसे देखकर दिल खिन्न हो जाता है कि संस्कृत के साथ इतना अन्याय। नाभा के समान सारे नगरों में संस्कृत परिषद् बननी चाहिएं बहुत-बहुत बधाई हो—सं.

आर्यसमाज गोविन्दनगर

आर्यसमाज गोविन्द नगर की ओर से कानपुर में आर्य कन्या हाईस्कूल रहा है जिस के प्रधान कानपुर कारपोरेशन के वीर निर्भीक सदस्य, अनथक कार्यकर्ता, सच्चे आर्य श्री देवीदास जी आर्य तथा मन्त्री श्री कान्तिभूषण जी हैं तथा श्री बहुल जी, मलिक जी आदि सज्जनों के उत्साह से समाज व स्कूल शान से चलता है। इस का महोत्सव धूमधाम से मनाया गया। जिस में सभा की ओर से पं० [illegible] जी [illegible] मण्डली, पं० त्रिलोकचन्द्र शास्त्री शामिल हुए। वहां की जनता की उपस्थिति तथा श्रद्धा धर्म प्रेम दर्शनीय था। कानपुर के मेयर सरदार इन्द्रसिंह जी व पूर्व मेयर सेठ रतनलाल जी भी सम्मेलनों में पधारे। स्त्रियों का कार्यक्रम, राष्ट्ररक्षा सम्मेलन सुन्दर था। मान्यवर कुंवर सुखलाल जी भी पधारे सभा को २३०) रु० शताब्दी नोटोंका वेद प्रचारार्थ मिला। मार्ग व्यय अतिरिक्त था। बधाई।

[illegible]ध संग्रह

[illegible] होशियारपुर का उत्सव

[illेgible]समाज ऊना का ४७वां वार्षिकोत्सव ४-५-६ जून को [illegible] रहा है, जिस में आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब के उपदेशक और भजनीक पधार रहे हैं।

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान की हीरक जयन्ती

—२-३-४ अक्तूबर १९६५ को अजमेर में अनासागर स्थित ऋषि उद्यान में मनाई जा रही है। भारत के अनेक मन्त्री मंडल के सदस्य तथा महात्मा संन्यासी पधार रहे हैं।

आर्य कन्या महाविद्यालय बड़ोदा

—में कन्याओं का नया प्रवेश २७ से ३० जून तक हो रहा है। प्रार्थी, कन्याओं के प्रवेश के लिए आचार्या, आर्य कन्या महाविद्यालय कारेली बाग से प्रवेश पत्र मंगाकर १० जून से पूर्व भर कर भेज दें।

दयानन्द सालवेशन मिशन (गुजरात शाखा) कारेलीबाग बड़ोदा

—के प्रधान पं० आनन्द प्रिय जी द्वारा ४००० स्त्री पुरुषों की (वागसो मोपला कुटुम्ब की) शुद्धि की गई। इसका प्रभाव उत्तम रहा।

अखिल भारतीय संस्कृत विद्यापीठ देहली

—की शासन विकास की योजनानुसार विद्यापीठ में प्रवेश लेने वाले चुने हुए छात्रों को महामहोपाध्याय में १२/- शिक्षाचार्य तथा आचार्य में ७५/- शिक्षा शास्त्री और शास्त्री में ५०/-छात्र वृत्तियां दी जाएंगी। प्रवेशार्थी उपरोक्त पतेपर १५ जून तक अपने प्रवेशपत्र भेज दें।

शेख और चीनी प्रधानमन्त्री की वार्ता

—जो पिछले दिनों चीन के प्रधान मन्त्री और शेख के मध्य हुई, वह अभी रहस्यमय बनी हुई है विवरण आने पर भेद खुलेगा।

(शेष पृष्ठ ६ पर)

मुद्रक व प्रकाशक श्री [illegible] जी आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर द्वारा वीर मिलाप प्रेस, मिलाप रोड जालन्धर से मुद्रित तथा आर्यसमाज कार्यालय महात्मा हंसराज भवन निकट कचहरी जालन्धर शहर से प्रकाशित मालिक—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर



टैलीफोन नं० ३०५७ [आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधिसभा पंजाब जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd. No. P. 1

एक प्रति का मूल्य १३ नये पैसे वार्षिक मूल्य ६ रुपये

वर्ष २५ अंक २५) ३० ज्येष्ठ २०२२ रविवार—दयानन्दाब्द १४१— १३ जून १९६५ (तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

उपासना यज्ञ का निमंत्रण

प्र मित्राय प्रायम्णे
सचथ्यमृतावसो।
वरुथ्ये ३ वरुणे छन्द्यं वच:
स्तोत्रं राजसु गायत ॥

सामः ऐन्द्रकांड

अथ—हे सत्य से प्रेम करने वाले ! ज्ञानी मनुष्य अपने हृदय के मित्र भगवान की स्तुति के गीत गाओ। ये तुम्हारे गीत वेद के अनुसार हों। सच्ची स्तुति के हों। आनन्दमय शब्दों से भरे हों और इन शब्दों में भगवान की महत्ता का प्रकाशन हो। क्योंकि वह परम प्रभु न्यायकारी हैं। तुम्हारे हृदय में सदा वर्तमान है। सदा तुम्हारा कल्याण चाहने वाले हैं। तुम्हारे सब विघ्नों को निवारण करने वाले हैं, और वह राजाओं के भी राजा हैं।

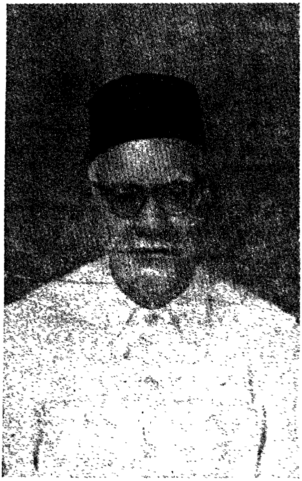
वयमेनमिदा ह्योऽपीपेमह
वज्रिणम्।
तस्मा उ अद्य सवने सुत
भरा नूनं भूषत श्रुत॥

साम० एन्द्र कांड

अथ—हम जिन्हें इस भगवान का ज्ञान है, पिछले जीवन में भी पापियों को दण्ड देने वाले भगवान को प्रसन्न करने की चेष्टा करते रहें। हे उपासको ! इस उपासना यज्ञ में सम्मिलित होकर इस जीवन में भी उसकी ही स्तुति करो और उस से ही सम्पूर्ण ज्ञान के साथ और आनन्द के सार को प्राप्त करो।

म० देवीचन्द्रजी के सामवेद भाष्यसे

म० देवीचन्द्र जी एम. ए.



आप की आयु का मुख्य भाग डी० ए० बी० कालिजों, स्कूलों और विशेष कर होशियारपुर की प्रसिद्ध आर्यसमाज के प्रधान पद पर व्यतीत हुआ है। आज कल आप वेद प्रचारिणी सभा के प्रधान हैं। वृद्धावस्था में भी आपने यजुर्वेद और सामवेद का अंग्रेज़ी भाष्य समाप्त करके अथर्ववेद का भाष्य कर रहे हैं। इस प्रकार चारों वेदों का अंग्रेज़ी में भाष्य करने का लक्ष्य पूर्ण कर रहे हैं।

आत्मिक उन्नति का मार्ग

नकिष्टं कर्मणा नशद्यश्चकार सदा वृधम्।
इन्द्रं न यज्ञै विश्वगूर्तमृभ्वसमधृष्टं धृष्णु मोजना ॥

साम० ऐन्द्र कांड

जो मनुष्य अपने कर्मों से और यज्ञों के द्वारा सदा उन्नति के मार्ग पर चलता है उसको कोई हानि नहीं पहुंचा सकता। जैसे सबसे प्रशासित, ज्ञान से युक्त, अपनी शक्ति द्वारा अपराजेय तथा विपत्तियों को धैर्य से सहने वाले राजा को कोई नष्ट नहीं कर सकता।

त्वमंग प्रशसिषो देव: शविष्ठ मर्त्यम्।
न त्वदन्यो मघवन्नस्ति मर्डितेन्द्र ब्रवीमि ते वच: ॥

साम० ऐन्द्र कांड

अर्थ—हे सर्वश्रेष्ठ शक्ति सम्पन्न ! हे सब के प्रकाशदेव ! आप इस मरणधर्मा शरीर में जीवन दान देते हो। हे ऐश्वर्यवान् ! आपके बिना संसार में कोई सुख सांत्वना देने वाला नहीं, इसलिए मैं आपकी सेवा मे निवेदन करने आया हूं।

म० देवीचन्द्रजी के सामवेद भाष्य से

धिष्ठाता—श्री संतोषराज जी

प्रचार का प्रकार

(लेखक—श्री पं० सत्य प्रिय जी शास्त्री, सिद्धान्त शिरोमणि:)
प्राध्यापक :—दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय, हिसार

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने देह त्याग से पूर्व ही परोपकारिणी सभा के नाम स्वीकार पत्र लिखते हुए भविष्य में यह समिति आर्यजगत् का नेतृत्व करेगी, इस आशा के साथ लिखा था कि देश देशान्तरों तथा तथा द्वीप द्वीपान्तरों में योग्य उपदेशकों को भेजकर वैदिक धर्म का प्रचार भी इसका कर्तव्य होगा। उस सभा के इस उद्देश्य को भूल जाने पर प्रान्तीय एवं सार्वदेशिक सभा ने उसको यथा शक्ति प्रारम्भ किया। जो कार्य इन सभाओं ने उपदेशकों द्वारा किया वह अपूर्व एवं अवर्णनीय है। आज भी यथाशक्ति चल रहा है। परन्तु समय के साथ यदि अन्य प्रकार उपयोग में लाया जाय तो हो सकता है कि सामयिक दृष्टि से हमारे सिद्धान्तों के परिचय का क्षेत्र विस्तृत हो जाये। समाजों की वर्तमान स्थिति यह है कि तीन दिन उत्सव के नाम पर ढोलढमक्का पीट कर पुन: वर्षभर अमन चैन का राज्य होता है। इससे उपदेशकों के इधर-उधर जाने में किराये के रूप में धन का व्यय अतिमात्रा में होता है, तथा तीन दिन के बाद श्रोताओं पर से उपदेश का रंग उतरना शुरू हो जाता है। इससे अच्छा है कि हम कोई ऐसा कार्यक्रम अपनाएं जिससे व्यय न्यून तथा प्रचार का प्रभाव स्थायी होवे। मेरी अपनी तुच्छ मति से यदि प्रचार का निम्न कार्यक्रम अपनाएं तो हमारे विचारों का क्षेत्र विस्तृत होने की अधिक सम्भावना है। वर्ष भर में से कोई चार मुख्यपर्व चुन लें। उदाहरणार्थ बोध रात्रि, वेद सप्ताह, दशहरा अथवा, दीपावली और मकर संक्रान्ति। इन पर्वों में यथा शक्ति तीन-तीन मास का अन्तर हो। प्रत्येक समाज अपने उत्सव बन्द करके वर्ष में चार वैदिक अथवा आर्ष ग्रंथों की कथाओं का आयोजन करें। उचित समझें तो कथा के साथ वेदपारायण यज्ञ भी हों, उस कथा का काल एक सप्ताह अथवा एक पक्ष तक रहे। अवसर के लिए एक उपदेशक तथा एक भजनोपदेशक पर्याप्त रहेगा। इस आयोजन के द्वारा स्थायी प्रचार होगा। उस अवसर पर आर्य साहित्य की विक्री का विशेष आयोजन भी हो। इस से आर्यों में स्वाध्याय की प्रवृत्ति जागृत हो। इस प्रकार तीन २ मास के अंतर से वर्ष में चार कथायें होंगी तो प्रचार का स्थायी प्रभाव होगा। उपदेशकों के इधर-उधर घूमने पर किराये में व्यय होने वाली राशि की भी बचत होगी। एक कथा में सभा को वेद प्रचारार्थ न्यून से न्यून ५०) रु० मिलें तो भी सभा घाटे में न रहेगी। इसके अतिरिक्त प्रत्येक समाज में पुरोहित रहना आवश्यक हो। ईसाइयों के चर्च तथा सिक्खों के गुरुद्वारे इसी आधार पर चलते हैं कि वहां पादरी तथा ग्रन्थी होते हैं। उन पुरोहितों को दक्षिणा इतनी हो कि आर्थिक चिन्ता न सताये, साथ में उसे गुरु तुल्य समझा जाये न कि वेतन भोगी सेवक। तभी इस ओर युवक आ सकेंगे। यदि आर्य समाज साधुओं को आकृष्ठ कर उन्हें उपदेशक बनायें तो और भी अच्छा रहे। भारत में आज लाखों साधु हैं। क्या, आर्यसमाज के सन्यासी उन्हें खींचकर आर्यत्व के रंग में रंग कर आर्योपदेशक नहीं बना सकते? उपदेश का कार्य उनके द्वारा अच्छा हो सकता है। इससे आर्थिक दृष्टि से भी लाभ होगा तथा विचारों के प्रचार फैलाने में श्रद्धास्पद उनका वेश अतिसहायक सिद्ध होगा। क्योंकि दान की भावना तो प्रतिदिन ह्रास को प्राप्त हो रही है। दान के पैसे से इस युग में यह कार्य अधिक दिनों तक चलता दिखायी नहीं देता। इसी प्रकार प्रचार का कार्य रहा तो आर्य समाज की कमर टूट जायगी। अत: अब तो युग के परिवर्तन के साथ-साथ हमें अपने कार्यक्रम को तथा प्रचार के प्रकार को भी परिवर्तन करना पड़ेगा, तभी जाकर हम अपने विचारों से अधिक संख्या में जनता को परिचित करा सकेंगे। केवल मात्र उसी ढर्रे पर चलते हुए हम लकीर के फकीर तो बने रहेंगे, परन्तु जनता तक हम अपने विचार न पहुंचा सकेंगे। अत: आर्यसमाजें, प्रान्तीय सभाएं, सार्वदेशिक सभा एवं आर्य विद्वान इसी ओर विशेष ध्यान देने की कृपा करें।

मधु कलश

विद्वानों का मान जगत में मूढ़ नहीं कर पाते
नादानों में हीरे मोती पत्थर समझे जाते
साक्षात भगवान उतर कर धरती पर आ जायें
मगर नास्तिक उनको भी तो माथा नहीं नवाते

★

सम्भव है धरती से उड़कर चन्द्रलोक तक जाना
आसमान के तारे चुनकर झोली में भर लाना
हो सकता है हर अनहोनी सहज सरल हो जाए
नामुमकिन है मगर मूढ़ को हित-अनहित समझाना

★

माना आज हकूमत मेरी कदर नहीं कर पाई
अवहेला पूंजीपतियों ने पीड़ा ही पहुंचाई
लेकिन अब भी महामगन हूं अपने मन के अन्दर
जनता ने तो कदम कदम पर जयमाला पहनाई

—विजय निर्बाध

श्री देवीदास जी आर्य

गोविन्द नगर कानपुर के आर्यसमाज के निर्भीक नेता, आर्य कन्या स्कूल के प्रधान श्री देवीदास जी आर्य पर सारा आर्यसमाज जितना गौरव करे थोड़ा है। आर्य निर्भीक होता है, जनता के लिए बड़े से बड़ा बलिदान भी कर सकता है, लोक-सेवा में जुटा रहता है। यह देखना हो तो श्री आर्य जी को देखा जा सकता है। मुसलमानों के षड्यन्त्रों द्वारा हिन्दु परिवारों की लड़कियों को मुस्लिम चंगुलसे छुड़ाने में श्री आर्य जी ने कितनी बार अपना जीवन जोखम में डाला है—ये वीरता की घटनाएं वहां की जनता से सुनकर मस्तक गर्व से ऊंचा हो जाता है। कानपुर कारपोरेशन में श्री आर्य जी की सिंह गर्जना का वहां सब पर भारी प्रभाव है। आर्यसमाज व कन्या स्कूल के लिए आर्य जी वरदान हैं। आर्यसमाज में इन जैसे निर्भीक, निस्स्वार्थ पुरुष विरले ही हैं। —सं.

सम्पादकीय—

आर्य जगत्

वर्ष २५] रविवार २०२१, १३ जून १९६५ [अंक २५

हम शक्तिशाली हैं

भारत निर्बल नहीं है। इसकी वीरता का पुरातन इतिहास वीर कार्यों से भरा हुआ है। वर्तमान गाथाएं भी शूरता के कारनामों से कम नहीं है। भारतीय जनता ने अनेक प्रकार के भीषण संग्रामों का दृश्य देखा है। शत्रुओं से लोहा लिया तथा उनको छटी का दूध पिलाया है। हमारे वीर सैनिकों की परम्पराएं आज भी देश-विदेश के मैदानों से जुड़ी हुई हैं। कई बार हम को दुर्बल समझकर वैरियों ने किसी नशे में अन्धे होकर छेड़ा है। हमारी भूमि पर, भावना पर, दलबल से हमला करके भारतीय जीवन को पराजित करने का प्रयत्न किया परन्तु भारत ने प्रायः उन सारे शत्रुओं तथा भयानक आक्रमणकारियों की कबरें अपने हां ही बना दी हैं ताकि उनकी कबरों को अपनी व पराई जनता देख सके। हमारे मन में मातृभूमि के प्रति अगाध श्रद्धा है। भावना के लिए बलिदान करने की चाह है। सब छेड़ने वालों को मज़ा चखाकर हमने हमेशा के लिए गाड़ दिया है। आज फिर हमारे वीर गाथा काल को भुलाकर चीन के बाद पाकिस्तान के अयूब ने भारतभूमि पर आक्रमण करने की नीचता दिखाई है। कछ के रण में रण का खेल खेला है। चिन्ता की कोई बात नहीं। ऐसे खेल भारत के वीरों ने इससे पूर्व भी देखे हैं। विश्वासघाती लोगों को खेलने का फल भी दिया है। छेड़ने वालों को हमने कभी छोड़ा नहीं। यदि हमारे नेताओं ने कभी किसी प्रकार की कायरता दिखलाई तो जनता की प्रबल आवाज उनको शक्तिशाली बना देने में समर्थ है। ऐसा विश्वास है।

भारत के पास किसी वस्तु की कमी नहीं है। धनबल, जनबल, शस्त्रबल तथा नीतिबल सब कुछ है किन्तु उसे स्वयं प्रयोग करने की आवश्यकता पड़ती है।

हम सारे देशवासी राष्ट्र के पुत्र-पुत्रियां हैं। माता का मान सर्वप्रथम है। कौन है जो अपनी मातृभूमि का अपमान सह सकता है? हमारा तन, मन, धन सारा जीवन ही भारत के सम्मान के लिए भेंट है। कभी २ शत्रु अन्धा होकर भारतीयों की शक्ति को, लाठी की मार को भूल जाता है। वह अपने अन्धेपन मे भारी भूल कर बैठता है। मार खाने पर उसकी आंखें खुलती हैं। सिर धुन कर रोता चिल्लाता है। अब भी यही होगा। इस के लिए जनता को अपने नेताओं को सावधान व सजग करना होगा। इस बात की प्रसन्नता है कि आर्यसमाज वर्तमान राष्ट्रिय संकट में अपने कर्तव्य को पहिचान कर जनता का इस दिशा में बड़ी उत्तमता से नेतृत्व कर रहा है। आर्यसमाज के उत्सवों, समारोहों पर राष्ट्ररक्षा सम्मेलन के उत्साह भरे दृश्य देख कर लोगों के जोश का पता लगता है। गोविन्द नगर कानपुर के श्री देवीदास जी आर्य के नेतृत्व में राष्ट्ररक्षा सम्मेलन देखकर तो मन बड़ा ही प्रसन्न हुआ। सारे समाजों में ही ऐसा जोश है। सारी जनता जाग पड़ी है। बच्चे २ के मन में अपने देश के लिए जोश का सागर उमड़ रहा है। इसलिए जब मातृभूमि के लिए ऐसा जनजागरण हो जाये तो फिर कौन हमारे मान को चुनौती दे सकता है। शत्रु ने हम पर वार किया है। हम शक्ति से उसे चने चबवा देंगे—त्रिलोकचन्द्र

संस्कृत की सुध लो

भारतीय जीवन में संस्कृत को बड़ा महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। यह विश्व की समस्त भाषाओं की जननी है। हमारे सारे ग्रन्थ इसी भाषा में हैं। इस में सम्पत्ति गुप्त है। संस्कृत के बिना संस्कृति अधूरी है। सारा संसार संस्कृत के पठन-पाठन को अपने २ राष्ट्र में लागू कर रहा है। रामायण, महाभारत, उपनिषद्, दर्शन, कालिदास को पढ़ने के लिए पश्चिमी लोगों ने अपने जीवन इस में लगा दिए। आज भारत की सत्ता अंग्रेजों के हाथ में नहीं। हमारे संविधान में भारतीय चौदह भाषाओं में से संस्कृत भी शामिल है। लोकसभा में संस्कृत में भाषण दिया जा सकता तथा इसी में शपथ भी ग्रहण की जा सकती है। हमारे नेता संस्कृत के लिए बहुत कुछ कहते रहते हैं। भारत सरकार संस्कृत के लिए क्या प्रोत्साहन देती है, इस पर इस समय कुछ लिखना या कहना नहीं। अन्य प्रान्तों में संस्कृत के साथ क्या सलूक होता है? यह भी इस लेख का विषय नहीं। हम तो अपने प्रान्त पञ्जाब में संस्कृत पर कितना कुठाराघात किया जा रहा है। इसके प्रति क्या उपेक्षा वरती जा रही है। इस के पठन-पाठन पर कैसे २ प्रतिबन्ध लगाए जाते हैं। यह देखकर दिल बड़ा दुःखी होता है।

देश विभाजन से पूर्व पञ्जाब में जब अंग्रेज़ी सत्ता थी, शिक्षा-दीक्षा उनके हाथों में थी, तब स्कूलों में संस्कृत पढ़ने की आजादी थी। संस्कृत के विद्यालयों में भी संस्कृत के पढ़ने वालों की संख्या काफी थी। प्रतिवर्ष शास्त्री की परीक्षा में लगभग तीन सौ विद्यार्थी बैठा करते थे। इसी प्रकार स्कूलों में भी संस्कृत पढ़ाने का विदेशी सत्ता की ओर से काफी प्रबन्ध था। चाहे जनता के भय से हो या किसी और विचार से। जो विद्यार्थी चाहता खुले रूप से संस्कृत ले सकता था। साइंस के साथ जो भी चाहे संस्कृत पढ़ता था। किन्तु अत्यन्त खेद से कहना पड़ता है कि अपने लोगों के हाथ मे शिक्षा की बागडोर है, विश्वविद्यालय में तथा विधानसभा में अपने ही मान्य सज्जन हैं, पर संस्कृत का कितना भट्टा बिठा दिया गया है। आज संस्कृत के साथ कितना बुरा व्यवहार किया जा रहा है। यह देख कर दिल बैठ जाता है। अपने ही लोगों द्वारा भारतीय संस्कृति की आत्मा संस्कृत की इतनी मिट्टी पलीद की जायगी। इसकी आशा भी नहीं की जा सकती थी। संस्कृत वालों का क्या मान है? आज पंजाब में हाई स्कूलों को जब से हायर बना दिया गया है। वहां पर योग्य छात्र जो साइंस का विषय लेकर पढ़ते हैं—उन के लिए संस्कृत लेना सर्वथा निषिद्ध कर दिया गया है। छात्र संस्कृत लेना चाहते हैं पर ले नहीं सकते। ऊपर से निषेध है। ग्रुप ही विषयों के ऐसे बनाये

(शेष पृष्ठ ६ पर)

आर्यजगत और महात्मा हंसराज जी

महर्षि दयानन्द ने सत्य सनातन वैदिक धर्म के प्रचार के लिये आर्य समाज की स्थापना की। उनके अखण्ड ब्रह्मचर्य, सत्यता एवं निर्भयता के बल से आर्यसमाज का प्रकाश थोड़े समय में सूर्य की किरणों की न्याईं सारे संसार में फैलने लगा। लोग वेद की मधुर वीणा पर मुग्ध हुए झूमने लगे। महर्षि के परलोक सिधारने के पश्चात उनके सुयोग्य शिष्यों श्री महात्मा हंसराज, स्वामी श्रद्धानन्द पं० गुरुदत्त एम० ए० पं० लेखराम और लाला लाजपत राय आदि के अनुपम तप और त्याग से आर्यसमाज का काम दिन दुगनी रात चौगुनी उन्नति करता गया। पक्षपात की पट्टी के कारण कोई जबान पर लाये या न लाये परन्तु हृदय से सभी मानते हैं कि स्वदेश और स्वधर्म के प्रति उच्च भावना और जागृति व स्वतन्त्रता प्राप्ति का सब से अधिक श्रेय महर्षि दयानन्द और उनकी आर्य समाज रूपी सेना को प्राप्त है। परन्तु स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् अथवा इस से कुछ पूर्व से ही आर्यसमाज की प्रगति में क्षीणता आनी आरम्भ हो गयी और आज आर्यसमाज के अटल सिद्धांतों में किसी प्रकार का अन्तर न आने के बावजूद आर्य समाज के कार्य में भूमि और आकाश का अन्तर दिखाई देता है। आर्य समाजें और उनके भव्य-भवन खड़े हैं परन्तु इनमें पहले का सा जीवन दिखाई नहीं देता। आर्य समाजें शायद पहले से बढ़ गई हों परन्तु आर्यसमाजियों की संख्या घट रही है। देश के कोने-कोने में आर्यसमाज और दयानन्द के नाम पर स्कूलों कालजों और गुरुकुलों का जाल बिछा हुआ है। अनाथालय और हस्पताल भी चल रहे हैं, परन्तु आर्यसमाज का प्रचार समाप्त हो चुका प्रतीत होता है। दैनिक सत्संग तो बहुत कम समाजों में दिखाई देंगे, सामाजिक सत्संगों में भी पहले की सी रौनक नहीं होती। आर्य-संस्थाओं की बाह्य शोभा यद्यपि बढ़ चुकी है। कालेजों और गुरुकुलों की विशाल और गगन-चुम्बी इमारतें अद्वितीय दृश्य प्रस्तुत कर रही हैं, किन्तु निर्जीव शरीर की तरह इनमें से आत्मा निकल चुकी प्रतीत होती है। अब साधारण जनता में आर्यसमाज की साख घट रही है। इस सारी परिवर्तन का कारण क्या है और इसका उपाय क्या हो? यह प्रश्न आर्यसमाज के

ले० श्री प० रुद्रदत्त जी शर्मा
प्रधान आर्यसमाज लक्ष्मणसर
अमृतसर

प्रत्येक हित चिन्तक को धुन की तरह खा रहा है।

आर्यसमाज के पास शक्ति और साधनों की कमी नहीं। सभी प्रान्तों में प्रतिनिधि सभायें और उसके ऊपर सार्वदेशिक प्रतिनिधि सभा स्थित है। भारी संख्या में उपदेशिक, भजनीक और पुरोहित कार्य कर रहे हैं। स्कूलों, कालजों, और गुरुकुलों में सहस्रों अध्यापक और प्राध्यापक काम कर रहे हैं और लाखों विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं, और इन पर करोड़ों रुपए व्यय हो रहे हैं, परन्तु इनका परिणाम उन्नति की बजाये अवनति के रूप में दिखाई दे रहा है जिसे देखकर उस नौका की याद आती है जिसके मल्लाह रात भर चप्पु चलाते रहे, किन्तु दिन चढ़ने पर मालूम हुआ कि नौका अपने स्थान से एक इंच भी आगे नहीं बढ़ी थी। कारण खोजने पर पता लगा कि नौका का रस्सा नदी के किनारे एक वृक्ष से बन्धा हुआ था जिसे खोले बिना अन्धेरी रात में मल्लाह व्यर्थ चप्पु चलाते रहे। ठीक इसी तरह आज आर्य समाज के महान उद्योग तथा परिश्रम का कोई परिणाम निकलता दिखाई नहीं दे रहा।

डी. ए. वी. कालेज की नींव ऋषि के मिशन के प्रचार के लक्ष्य से रखी गई थी। महात्मा हंसराज जी ने ऊंचे से ऊंचे सरकारी पदों को लात मार कर फकीराना जीवन व्यतीत किया। वह प्रिंसिपल होते हुये भी धर्म-शिक्षा स्वयं पढ़ाया करते थे। महात्मा जी ने शिक्षा के क्षेत्र में जितना अपूर्व काम किया उसके पीछे आर्यसमाज के प्रचार की धुन काम कर रही थी, जो आज दिखाई नहीं देती। आज कालेज और गुरुकुल तो विद्यमान हैं परन्तु महात्मा हंसराज और स्वामी श्रद्धानन्द दिखाई नहीं देते। जिन विद्यालयों में से देश और धर्म के दीवाने तथा आर्य समाज के मस्ताने निकला करते थे, वही आज वेदीन, कम्युनिस्ट और नास्तिक उत्पन्न करने की फैक्टरियां सिद्ध हो रहे हैं। कारण यह कि हम अपने उद्देश्य से भटक गये हैं और साधन को ही उद्देश्य समझ कर इस से चिमट गये हैं। जब तक महात्मा जी जीवित रहे उन्होंने सरकार से किसी प्रकार की सहायता लेना स्वीकार न किया ताकि यह वेदप्रचार के मार्ग में बाधा सिद्ध न हो। आर्य समाज की अधिकतर शक्ति संस्थाओं में लग चुकने और संस्थाओं में वेद प्रचार के प्रति उदासीनता आ जाने से आर्य समाज को असह्य धक्का लगा है। डी. ए. वी. कालज मैनेजिंग कमेटी के सन्चालक स्वयं इसे अनुभव कर रहे हैं। प्रोफेसरों को धर्म शिक्षा की ट्रेनिंग दी जा रही है और इस में उनकी रुचि बढ़ाने के लिये विशेष ऐलाऊंस दिये जा रहे हैं। निस्संदेह यह सराहनीय पग है परन्तु समय और परिस्थिति के अनुसार इस प्रश्न की ओर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है ताकि आर्य समाज में युवक शक्ति को पुनर्जीवित किया जाये जिससे महर्षि की जगाई ज्योति अमर रूप धारण कर सके।

महात्मा जी की स्मृति मनाने का इससे अच्छा और क्या ढंग हो सकता है, कि जहां हम आर्य समाजों में प्रचार की गति को तीव्र करने के लिए कटिबद्ध हो जायें वहां महात्मा जी के पद चिन्हों पर चलते हुए इन संस्थाओं को इनके वास्तविक उद्देश्य की पूर्ति का साधन बनायें और यह संसार के भ्रम और अन्धकार के मिटाने के लिए "ज्योति स्तम्भ" अर्थात् **Light house** सिद्ध हों। क्या आर्य समाज के नेता और संस्थाओं के कर्णधार इस प्रश्न पर सम्मिलित रूप में गम्भीरता पूर्वक विचार करके श्री महात्मा जी तथा उनके प्यारे आर्य समाज के प्रति सच्ची श्रद्धा का प्रमाण देंगे।

श्री पं० ओमप्रकाश जी शास्त्री अमृतसर में

केन्द्रीय आर्य सभा अमृतसर की ओर से श्री पं० ओमप्रकाश जी शास्त्री खतौली निवासी के प्रातः ७ से ८ बजे तक पटेल चौक अमृतसर में और रात को ९ से १० बजे तक आर्य समाज श्रद्धानन्द बाजार अमृतसर में भाषण हो रहे हैं। जनता अधिक संख्या में पधार कर लाभ उठाएं।

रुद्रदत्त शर्मा
प्रधान आर्यसमाज
लक्ष्मणसर, अमृतसर

नारी स्तम्भ :—

विवाह का टीका या कलंक का टीका

लेखि०—कु० सुशीला आर्या एम० ए० कन्या गुरुकुल नरेला

हिन्दू समाज में प्रचलित अनेक कुरीतियों में से विवाह के समय कन्या पक्ष की ओर से जो टीका भेजा जाता है। उसको प्राप्त करने के लिए भोलानाथ जी M. B. B. S. के पिता लोभीमल जी तैयार हैं। टीका क्या है, क्यों दिया जाता है, कौन देता है, किस समय दिया जाता है, आदि धाराओं का स्पष्टिकरण लेखिका महोदय ने व्यंग्य हास्य में दर्शाया है। व्यंग्य से इस कुरीति का निराकरण किया है, लेख रोचक और प्रभावोत्पादक है।

—व्यवस्थापक

आज ला० लोभीलाल जी के घर में खूब चहल-पहल मची हुई है। उन्होंने अपने पड़ोसियों की इसी अवसर के लिए मांगी हुई बैठक पूर्ण यत्न से सजाई है। ग्रामोफोन पर रिकार्ड कानों के परदे फाड़ने वाली ध्वनि से बज रहे हैं। वर्षा ऋतु होने पर भी रही-सही धूलि को भूमिसात करने के लिए जल का छिड़काव किया गया है। उनके परिचित लोग आ रहे हैं। मेजों पर बढ़िया मेजपोष बिछाकर फूलदान सजाए गए हैं। उनके सुपुत्र श्री बाबू भोलानाथ जी एम. बी. बी. एस. माडर्न साज सज्जा से अलंकृत गौरव से फूले हुए हैं। गृह देवियां गीत गा रही हैं। कैसी चहल-पहल है, यह आज? क्या बाबू साहब की शादी होने जा रही है? जी नहीं आज उनका टीका आया है। क्या कहा टीका। जी हां। अच्छा यह टीका क्या बला होती है, जी। इन्फ्लुएंजा तपेदिक चेचक हैजा व टायफाइड का टीका तो हमने भी सुना है किन्तु विवाह का भी टीका होता है यह आज ही सुना। अर्थात् जैसे इन रोगों से बचने का टीका लगवाना होता है क्या उसी प्रकार विवाह रूपी राज रोग से बचने के लिए ही इस टीके की व्यवस्था की जा रही है।

धत्तेरे की। आपने खूब बात में से बात निकाली किन्तु मात खा गए क्योंकि विवाह कोष में टीका शब्द का वह अर्थ नहीं जो चिकित्सा कोष में है। यहां टीका विवाह का निरोधक नहीं अपितु साधक है। तो यों कहिए कि टीका विवाह की भूमिका है।

लड़के के माथे पर लगा हुआ बिक्री का लेबल है। यह प्रमाण-पत्र है कि लड़का बिक चुका है और कोई खरीदार बोली देने का यत्न न करे। यह तो No Vacancy का बोर्ड है।

क्या कहा आपने? टीके का खरीदारी से क्या सम्बन्ध? कहां टीका और विवाह कहां व्यापार और मरघट? कहां टीका कहां बोली? कोई तालमेल तो बैठता नहीं।

तालमेल तो तब बैठे जब आप को टीका शब्द का अर्थ बोध हो। विवाह कोष में टीका शब्द का अर्थ बड़ा भेद भरा है। यह इसी शताब्दी के उत्तरार्द्ध का प्रसिद्ध आविष्कार है। कई कई बिरादरियों में तो विवाह से दस बीस दिन से लेकर दस बीस महीने पहले तक लड़के के पिता की कुल परम्परा, आर्थिक स्थिति उसकी शैक्षणिक योग्यता स्वास्थ्य तथा आकृति के अनुपात से दस बीस तीस पचास हजार तक रुपया करवा लिया जाता है और इस बड़ी राशि के टैक्स के रूप में मुंह मांगे फल मिठाइयां मेवे और न जाने क्या २ जो जी में आ आए वसूल किया जाता है। इसका नाम है टोका? क्यों समझे आप कुछ?

हां, समझे, परन्तु यह इतना सब कुछ देता है कौन? देता है कौन? वही जिसके घर में कन्या के जन्म का दुर्भाग्य उदय हुआ हो। जिसे समाज में नाक बचाने की चिन्ता हो। जिसे कन्या के हाथ जरूर पीले करने हों।

वाह साहब! खूब की आपने टीका पर टीका-टाप्पणी। पर हमें इस से क्या? न हमारे लड़की न लड़का। न टोका लेना न देना। बस इतना लाभ हमें इस दांत घिसाई से अवश्य हो गया कि हम तो टीका का अर्थ निरोधक रूप में ही लेते थे आज इसकी श्लेष शक्ति का भान हो गया। हमारी साहित्यिक प्रवृत्ति को तो इतना ही वास्ता है। और वे चले गए।

किन्तु टीके की टीप-टाप में फंसे अनेक लोभीलालों की सेवा में हमें एक निवेदन करना है और वह यह कि श्रीमान् जो यह टीका आपके समाज के माथे पर कलंक का टीका है। कठोर शब्दों के लिए बुरा न मानिए। यदि यह टीका टिका रहा तो समाज टिका नहीं रहेगा। पारिवारिक जोवन को विशृंखलित करने आप के घरों में कन्याओं अथवा यों कहिए सम्पूर्ण नारी जाति की मान हानि करने में इसका महत्वपूर्ण हाथ है। हम आपके विवाह विषयक निजी स्वहितकारी मामले में कोई व्यवधान नहीं बनना चाहते। आप खुशी से ले दे करें।

(क्रमशः)

जगति के सब मानव हंस तेरा गुणगान करें

(ले०—आचार्य श्री मित्रसेन एम० ए०, कटरा अलीगढ़)

दयानन्द की दिव्य वाटिका के अनुपम थे रखवाले,
देश जाति की कलियों को विकसित करने वाले,
निष्प्राण पड़े प्राणी को जीवन-रस देने वाले,
युग-निर्माता मुने! तुम्हारे उपकारों का ध्यान धरें।
जगती के सब मानव हंस तेरा गुण-गान करें।

जग के श्रेष्ठ तपस्वी और सत्य अहिंसा के साधक,
मानवता के परम हितैषी त्यागवृत्ति के थे पालक,
सर्वोत्तम विद्यादान मान तुम रहे सदा ही अध्यापक,
पायें गुण उन्नति को और अवगुण सब के नित्य मरें।
जगती के सब मानव हंस तेरा गुण-गान करें॥

दीन दुःखी दलित देश की बुरी दशा को लख करके,
पीड़ित अनाथ विधवाओं के वरदाता जीवन भर के,
दास्य भाव में बंधी मात के विचरे तुम रक्षक बन के,
परम दयालु धर्म धुरी सब तुम से ही अनुराग करें।
जगती के सब मानव हंस तेरा गुण-गान करें॥

सभी सद्गुणों के धारक रहे अपूर्व प्रतिभाशाली,
शस्य श्यामला भारतमाता आज गुणों से है खाली,
पुनः हंस आकर के तुम फैला दो उस पर हरियाली,
हंस-हंस बन दूध नीर को सफल दशा में आज करें।
जगती के सब मानव हंस तेरा गुण-गान करें॥

आर्य समाज हाल बाजार लुधियाना में—

म. आनन्द स्वामी जी महाराज का भाषण

अश्लील चित्रों की निन्दा : इससे विचार दूषित होते हैं

लुधियाना में वयोवृद्ध आर्य संन्यासी महात्मा आनन्द स्वामी जी सरस्वती ने यहां एक पत्रकार सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए बताया कि आर्यसमाज देश की हालत सुधारने और स्वामी दयानन्द के उपदेशों का प्रचार बढ़ाने के लिए ११ जुलाई को एक साधु सम्मेलन बुला रहा है।

सम्मेलन हनुमान रोड आर्य-समाज नई दिल्ली में होगा।

उन्होंने कहा कि देश पर संकट आया हुआ है। इसका हमें पूरी तरह मुकाबिला करना चाहिए। पिछले दिनों चीनी हमले के समय हम ने सभी आर्यसमाजों के साधुओं को प्रचार के लिए लगा दिया था। दुर्भाग्य की बात है कि लाहौर के अनारकली बाजार में एक आर्यसमाज मन्दिर था। उस मंदिर में बंगाल आदि के क्रांतिकारी पंजाब के लोगों को बताया करते थे कि क्रांतिकारी पार्टी का सदस्य बनने वाले व्यक्ति की परीक्षा लेने के लिए एक मोमबत्ती जलाकर उसके ऊपर उसकी बांह कर दी जाती थी ताकि देखा जाए कि वह व्यक्ति किस सीमा तक तकलीफ सह सकता है, इसके अलावा तांबे का पैसा गर्म करके शरीर को लगाया जाता था। इसके अलावा देश की स्वतन्त्रता के लिए माताओं, बहिनों ने भी बलिदान दिए थे। लेकिन अब हम आरामपरस्त हो रहे हैं और धन संग्रह की दौड़ में लगे हुए हैं। देश में रिश्वत बढ़ रही है और हमारे देश के गृहमंत्री श्री नंदा जड़ों को पानी की बजाए पत्तों को पानी दे रहे हैं, एक सदाचार समिति बनाई गई है ताकि भ्रष्टाचार खत्म किया जाए। लेकिन उन से मिलने के लिए उनके चपरासी से इजाजत मांगनी पड़ती है पहले चपरासी को खुश किया जाना जरूरी होता है। इसलिए आज आर्यसमाज को ये विचार बदलने की कोशिश करनी चाहिए।

उन्होंने कहा कि देशका विभाजन हुआ हालांकि महात्मा गांधी विभाजन नहीं चाहते थे। विभाजन का विचार सबसे पहले अंग्रेजों ने लंडन में अब्दुललतीफ को बताया था और उसे कहा था कि वह भारत जाकर दो राष्ट्रों के सिद्धान्त का प्रचार करे। इसके लिए मुस्लिम लीग बनाई गई। कराची में उसका प्रथम अधिवेशन हुआ। जिसमें देश के विभाजन का प्रस्ताव पास न हो सका। उस समय मि० जिन्नाह ने भी इसका विरोध किया था। फिर निजाम हैदराबाद ने इस विचार का प्रचार करने के लिए लाखों रुपए खर्च किए। लीग का दूसरा अधिवेशन लाहौर में हुआ जिसमें दो राष्ट्रों के सिद्धान्त के आधार पर देश के विभाजन का प्रस्ताव पास हुआ। महात्मा जी ने कहा कि इन गंदे विचारों के कारण ही हमारे देश की तबाही हो आई और विभाजन हुआ। एक काश्मीर के दो टुकड़े हो गए। इन गन्दे विचारों ने परमाणु बम से भी अधिक तबाही मचाई कि लाखों परिवारों को बेघर होना पड़ा। इतना भारी नुक्सान हुआ। यह अंग्रेज की चाल थी कि यदि उन्होंने भारत छोड़ना है तो पहले पाकिस्तान बनाकर ताकि भारत को दिन-रात चैन न आ सके। अंग्रेज की खींची हुई रेखा आज तक कायम है। महात्मा जी ने कहा कि इस देश में कई ऐसे लोग हैं जो चीन के एजेंट हैं। ये लोग सही अर्थों में राष्ट्र का विनाश करने वाले हैं। ये बातें स्वामी दयानन्द जी ने लिखी थीं।

उन्होंने आगे कहा कि अयूब और चीन का मुकाबला करने के लिए हमें अपने विचार शुद्ध करने चाहिएं, क्योंकि शुद्ध विचारों से ही शरीर भी शुद्ध और स्वस्थ रहता है। आजकल ऐसे कपड़े चल पड़े हैं जिन में से सारा शरीर नग्न नजर आता है। मैं फैशन के विरुद्ध नहीं, परन्तु देखना यह है कि फैशन हमें पतन की ओर तो नहीं ले जाता। उन्होंने बच्चों को ईसाई स्कूलों में शिक्षा देने का विरोध किया।

शत्रु के प्रति व्यवहार

(पृष्ठ ७ का शेष)

दूसरी ओर विरोधी दल। किन्तु पाकिस्तान एवं चीन के द्वारा आक्रमण का सामना करने के लिए हम सब एक हैं। ४६ करोड़ हाथ एवं ४६ करोड़ पांव एक उद्देश्य के लिए अग्रसर होंगे।

कहने का भाव यह था कि इस समय युद्ध-नीति का भार सेना को सौंपे जाने पर आवश्यकता एकता की है। 'आओ हम एक हो जाएं। भेद-भाव भूल जाएं। भारत की एक-एक इंच भूमि की रक्षा करते हुए, भारत-माता की लाज बचाएं।'

वेदप्रचारार्थ दान सूची

आर्यसमाज टौनशिप नं० १ फरीदाबाद	१०१/-
,, शांति नगर सोनीपत	२००/-
ओ. पी. नदा जी जम्मू	११/-
आर्यसमाज लारेंस रोड, अमृतसर	२५२/-
,, लक्ष्मणसर अमृतसर	२०१/-
श्री गुरुचरणदत्तजी अमृतसर	१००/-
आर्यसमाज प्रधाना मुहल्ला रोहतक	१००/-
,, ऊना (होशियारपुर)	१००/-

संस्कृत की सुध लो

(पृष्ठ ३ का शेष)

गये हैं। विदेशी सत्ता के समय तो साइंस के साथ संस्कृत लेने में खुली छूट थी पर अब पाबन्दी है। कितना अन्याय है। दुःख यह है कि इस अन्याय के विरुद्ध कोई बोलता ही नहीं। छात्र बड़े निराश होते हैं। जब नवम कक्षा में संस्कृत पर सायंस के साथ पाबन्दी है तो छोटी कक्षाओं में कौन संस्कृत लेगा। आगे कौन लेगा। संस्कृत समाप्त की जा रही है। पंजाब की संस्कृत परिषद् पता नहीं कहां सो रही है। आर्यसमाज को क्या हो गया। संस्कृत पर इतना अन्याय पूर्ण प्रतिबन्ध और वह बोले न? विचित्र बात है। इस प्रतिबन्ध को दूर करने के लिए सारे आवाज उठावें। —सं०

आर्यसमाज लक्ष्मणसर अमृतसर

की ओर से सर्वसाधारण की उपस्थिति में निम्न प्रस्ताव पास हुआ। यह जलसा कैरोल बाग. (देहली) पोलीस की ओर से आर्य वीरों पर भोली जनता को इसाई पादरियों के हाथ फेरकर और यसू मसीह से प्रार्थना करके सभी बीमारियां दूर करने के पाखण्ड जाल से सावधान करने पर लाठी चार्ज करने और आर्य प्रचारकों को गिरफ्तार करने के घृणित कार्य को बदकिस्मत भारत सरकार की इस संकट काल में भी अपनों से वैर और शत्रुओं को प्रसन्न रखने की कायरता नीति का परिणाम समझते हुए इसके विरुद्ध जबरदस्त रोष प्रकट करता है तथा गिरफ्तार किए गए आर्य प्रचारकों की तुरन्त रिहाई और जनता को धोखा देकर लूटने और धर्म भ्रष्ट करने वाले ईसाई पादरी की डिफेंस एक्ट द्वारा तुरन्त गिरफ्तारी की जबरदस्त मांग करता है।

—रुद्रदत्त शर्मा

वेद-वाणी संस्कृत में—

शत्रु के प्रति व्यवहार

ले०—बलदेवराज गुप्ता एम० ए० ५४ लोलकापीयर, ईस्टरन होस्टल, विश्वविद्यालय अन्नामलई नगर मद्रास

आज कलियुग में सर्वत्र युद्ध की परिस्थितियां देखकर कई लोग सोच सकते हैं कि कलि (कलह) का अर्थ युद्ध है इसलिए कलियुग में ही युद्ध के बादल छाए रहते हैं। यद्यपि भारतीय-परम्परानुसार 'शान्ति' का पथ ही श्रेय है, किन्तु युद्ध तो वैदिक-काल से चले आ रहे हैं। देवासुरों के संग्राम की गाथाएं वैदिक-साहित्य एवं उत्तर कालीन ब्राह्मण-उपनिषद्-साहित्य में सर्वत्र उपलब्ध हैं। रामायण, महाभारत, कर्नाटक, पानीपत एवं स्वतन्त्रता-संग्राम के युद्ध भी प्राचीन युद्ध-परम्परा के इतिहास पर प्रकाश डालते हैं। इसी अवश्य-भावी युद्ध की शंका के कारण ही शायद संस्कृत-साहित्य में शत्रु के प्रति व्यवहार का विस्तृत वर्णन मिलता है।

आज भारत-माता के प्रांगण में शत्रु प्रवेश कर चुका है। पाकिस्तान एवं चीन की धमकियों को पढ़कर मेरे मन में महाभारत का निम्नलिखित श्लोक का सहसा स्मरण हो जाता है। 'सूच्यग्रं नैव दास्यामि विना युद्धेन केशव।' हा! बिना युद्ध के कौरव अपने ही भाईयों को सूई के अग्र नोक के समान स्थान देने को तैयार नहीं तो पाकिस्तान एवं चीन हमें शांति के साथ कहां हमारी मातृ-भूमि के पुनीत-पावन स्थान को खाली करेंगे। आखिर युद्ध का मुकाबला करना ही होगा। शत्रु को खदेड़ना ही होगा। आज शत्रु के साथ कैसा व्यवहार किया जाए? इसका उत्तर संस्कृत की प्राचीनतम पुस्तक ऋग्वेद के तृतीय मण्डल के एक मन्त्र में इस प्रकार है—

"उद्वृह रक्षः सहमूलमिन्द्र
वृश्चा मध्यं प्रत्यग्रं शृणीहि
कीवतः सललूकम् चकर्थब्रह्मद्विषे
तपुषि हेतिमस्य ॥"

अर्थात् हे इन्द्र (भारत सेना के सेनापति! अथवा राष्ट्रपति अथवा प्रधान-मन्त्री महोदय जी!) जैसे भी हो (चाहे हमें निर्धन ही क्यों न रहना पड़े, विदेशी सहायता भी क्यों न लेनी पड़े) शत्रु (पाकिस्तानी सेना) को जड़ से उखाड़ दो और उस शत्रु को अपने वश में करके (जेल आदि में डालकर उसके शरीर के मध्य-भाग (दिल छाती आदि) को (निर्दयता व निडरता से) चीर फाड़ दो। तदुपरान्त शरीर के आगे के भाग (बाजु सिर आदि) को भी काट दो ब्रह्म (शान्ति के प्रिय देवता-भारतीयों से ही द्वेष करने वाले (युद्ध की धमकी देनेवाले शत्रु (पाकिस्तान अथवा चीन) पर तपाने वाले एवं जलते हुए शस्त्रों (**Firing** आदि) से प्रहार करो। इन सललूकम् (दौड़ने अथवा अपनी नीति से खिसकने वाले चीन व पाकिस्तान) शत्रु को (अपनी सीमा के पार) बहुत दूर के देश में भेज दो (भगा दो)। इसी प्रकार के असंख्य मन्त्र वेदों में हैं।

हां! मनुस्मृति के कुछ श्लोकों में भी शत्रु के प्रति व्यवहार का सिंहावलोकन कीजिए :—

"उपरुध्यारिमासीत राष्ट्रं
चास्योपपीडयेत्।
दूषयेच्चास्य सततं यवसान्नोद-
केन्धनम्॥
भिन्द्याच्चैव तडागानि
प्राकारपरिखास्तथा।
समवस्कन्दयेच्चैनं रात्रौ
वित्रासयेत्तथा॥"
मनु०[७।१९५-१९६]

(यदि बहुत ही संकट-कालीन परिस्थिति हो, यानि युद्ध भयंकर रूप धारण कर चुका हो तो) राजा (प्रधानमन्त्री आदि) का चाहिए कि (सेना-नायक की सहायता से) शत्रु को चारों ओर से घेर ले और शत्रु को अपने कब्जे से कहीं बाहिर न जाने दिया जाए। (ऐसा होने पर) शत्रु के राज्य (पाकिस्तान आदि) को (खूब) तङ्ग करे। यहां तक कि वहां के अन्न, जल ईन्धन आदि सब को नष्ट कर देवे। फिर शत्रु के राज्य में स्थित तालाब एवं प्रकोट (शत्रु के द्वारा स्थापित चौकियों) एवं खाईयों को तोड़ डाले। रात के समय (जब वे सोए हों, उनका कोई सहाई न हो) उन्हें खूब डराए, धमकाए और किसी प्रकार भी उनको जीतने का प्रयत्न करे। (शत्रु कठोर-नीति से ही झुकेगा)।

मैं मानता हूँ कि देव-वाणी संस्कृत में वर्णित नीति अत्यन्त कठोर है। किन्तु आज के युग में 'ईंट का जवाब पत्थर से न दिया जाए तो जो परिणाम होते हैं आप जानते हैं। एक श्लोक हितोपदेश का भी देख लीजिए—

'शत्रुणा न हि संद-
ध्यात्सुश्लिष्टेनापि सन्धिना।
सुतप्तमपि पानीयम्
शमयत्येव पावकम्'
(मित्रलाभ से)

(हे राजन् प्रधानमंत्री जी!) (सीमा उलंघन के उपरांत) यदि शत्रु (पाकिस्तान) हमारे साथ बातचीत (सन्धि) करना चाहे तो उसके साथ कभी सन्धि न करें। यदि शत्रु से सन्धि करोगे तो (भारत के वीरों के हृदयों में देश-भक्ति की) प्रदीप्ताग्नि उसी प्रकार शांत हो जाएगी जैसे गर्म पानी भी अग्नि को शांत कर देता है। (शत्रु जब तक भारत-माता के पवित्र-स्थान से खदेड़ न दिया जाए, तब तक कोई बात न हो)।

इस लघु लेख में वेद-मनु-स्मृति व अन्य संस्कृत के इस प्रकार के अत्यन्त ओज पूर्ण मंत्रों एवं श्लोकों का सकलन असम्भव है। अतः उपसंहार के रूप में एक दो ही मंत्र एवं श्लोक प्रस्तुत करता हूं।

आज जब युद्ध का सामना करने के अतिरिक्त कोई राह नहीं, तो प्रधान मंत्री एवं राष्ट्रपति स्पष्ट घोषणा कर दें—

'उत्तिष्ठत संनह्यध्वमुदारा
केतुभिः सह। सर्वा उतरजना
रक्षोस्य मित्राननुधावत्।'
अथर्व० ११-१०-१

अर्थात् (भारत के) वीर सैनिको! अब (इस सकटकालीन परिस्थितियों में) उठो, कमर कसकर (युद्ध के लिए) तैयार हो जाओ। विजय पताका हाथों में पकड़ लो। जो भी शत्रु हैं उनपर धावा बोल दो (अन्त में विजय हमारी होगी),

हम सब ४८ करोड़ भारतीयों का कर्त्तव्य है कि आपस के भेद-भावों को भूलकर एक हो जाएं। पुनः मैं आपका ध्यान महाभारत के इस श्लोक की ओर आकृष्ट करता हूं—

'परस्पर विरोधे तु वयं
पंचैव ते शतम्।
परैः परिभवे प्राप्ते वयं
पंचोत्तर शतम्॥'

अर्थात् आपस के विरोध में तो हम पांच पाण्डव एक ओर हैं १०० कौरव दूसरी ओर हैं। किन्तु विदेशी आक्रमण होने पर हम (एकता के सूत्र में बन्धकर) १०५ हैं। (इसी प्रकार परस्पर विरोध में तो एक ओर शासक पार्टी है,

(शेष पृष्ठ ६ पर)

गुड़गावां में आदर्श सम्मेलन

६ मई को आर्य समाज नई कालोनी गुड़गावां में श्री सत्यदेव जी वोहरा, पी० ई० एस० रिटायर्ड प्रोफेसर सत्यभूषण जी एम० ए० श्री रामतीर्थ जी अध्यापक परिवार सहित यजमानों ने पंडित तेजराम जी पुरोहित वैदिक मिशनरी से सावित्री यज्ञ कराया।

तत्पश्चात् श्री सत्यदेव वोहरा की प्रधानता में निम्न प्रस्ताव पारित हुआ जो सर्व सम्मति से पास हुआ।

प्रस्ताव—९ मई १९६५

सम्मेलन गुड़गावां का

यह सम्मेलन भारत सरकार और प्रान्तीय राज्य से प्रार्थना करता है कि देश में अनाज के संकट और खाद्य की कमी को पूरा करने के लिए वैज्ञानिक और प्राकृतिक साधनों से अनाज और चारे को बढ़ाने का प्रयत्न किया जाये।

किसानों को बिजली, पानी, बीज, कृषि के साधन प्राप्त करने के लिए सहायता तकाबी ऋण आदि देकर उनका उत्साह बढ़ाया जाए, और इसके बांटने का ढंग ठीक किया जाए। और ये सहायता किसान को विशेष संस्था के द्वारा उसके ग्राम में मिले, ताकि बटवारे की शिकायत पैदा न हो।

किसी व्यापारी को अनाज का स्टाक एकत्रित करने की अनुमति न हो। ब्लैक का कैसे वालों के विरुद्ध सख्त कार्यवाही की जाए।

ईमानदार अधिकारी स्टाक जमा करने वालों और अत्याधिक मुनाफा खोरों की सख्त देखभाल करें। ऐसे स्वार्थी शत्रुओं को सरकार बड़ी-बड़ी सजा दें।

—तेजराम पुरोहित

रामरक्खी बावा डी.ए.वी. गर्ल्ज कालेज बटाला

जिला गुरदासपुर और विशेष रूप से बटाला निवासियों को यह जानकर बहुत प्रसन्नता होगी कि पंजाब विश्व विद्यालय ने इस चालू सैशन से रामरक्खी बावा डी.ए.वी. गर्ल्ज कालेज को मान्यता प्रदान करदी है। मैट्रिक हायर सैकण्डरी के परिणामों की घोषणा होते ही प्री-यूनीवर्सिटी तथा बी. ए. प्रथम वर्ष (**Pre-Uneverisity and B. A. 1st year**) का प्रवेश आरम्भ हो जायेगा।

लड़कियों का यह मान्यता प्राप्त कालेज जिला भर में लोगों के लिये वरदान सिद्ध होगा। इस महान कार्य की सफलता का श्रेय बटाला के सन्त महाशय गोकुलचन्द जी प्रसिद्ध शिक्षा-विशारद, श्री भीमसेन जी बहल प्रिंसीपल डी० ए० वी० कालेज जालन्धर, तथा श्री युगल किशोर भारद्वाज प्रिंसीपल डी० ए० वी० हायर सैकण्डरी स्कूल बटाला को प्राप्त है। इन सज्जनों के पुरुषार्थ के साथ-साथ श्री दुर्गादास जी, उनके सुपुत्र बावा सोहनलाल जी अफ्रीका निवासी तथा बटाला नगर के दानवीरों ने भी इस यज्ञ को सम्पूर्ण करनेमें प्रशंसनीय सहयोग दिया है।

जिला गुरदासपुर के निवासी श्री डी०एल०दत्ता प्रधान डी०ए०वी० कालेज प्रबन्धकर्त्री सभा नई देहली तथा उप-कुलपति विक्रम विश्वविद्यालय के विशेष रूप से आभारी हैं कि उन्होंने लड़कियों के लिये मान्यता प्राप्त कालेज स्थापित करके इलाके की बहुत बड़ी कमी को पूरा किया है। श्री मेहरचन्दजी महाजन भूतपूर्व मुख्य न्यायाधीश सुप्रीम कोर्ट तथा भूतपूर्व प्रधान डी० ए० वी० कालेज प्रबन्ध कर्त्री सभा नई देहली के भी बहुत आभारी हैं, जिनके आशीर्वाद तथा व्यक्तिगत रुचि के बिना इतने थोड़े समय में इतना महान कार्य सम्पन्न नहीं हो सकता था।

राज्य भर के दानी सज्जनों से प्रार्थना है, कि इस कालेज को एक सर्वोत्तम संस्था बनाने के लिये दिल खोल कर दान दें। कालेज के प्रबन्धकों से प्रार्थना है कि वे बाहर से प्रवेश करने वाली छात्राओं के लिये होस्टल का भी कोई न कोई प्रबन्ध अवश्य करें, ताकि अधिक से अधिक छात्राएं उच्च से उच्च शिक्षा प्राप्त करने का सुअवसर प्राप्त कर सकें।

देवराज सोनी मन्त्री
आर्यसमाज कालिज विभाग, बटाला

समाचार संग्रह

शिलीगुड़ी जि० दारजलिंग में गायत्री महायज्ञ

—आर्य जगत के विद्वान श्री मुरारी लाल जी शास्त्री आजकल शिलीगुड़ी जि० दारजलिंग में श्री सेठ छबीलदास जी आर्य वालसमद (हिसार) के निमन्त्रण पर पधारे हुए हैं। उनकी देखरेख में ७ से १३ जून तक गायत्री महायज्ञ प्रारम्भ हो रहा है। जनता पहुँचकर लाभ उठाएं।

आर्य कन्या महाविद्यालय बड़ोदा

—इस संस्था ने कालिज विभाग में पांच कन्याओं को निशुल्क स्नातिका परीक्षा उत्तीर्ण करने के लिए सराहनीय पग उठाया है। प्रत्येक प्रकार का खर्च संस्था के ऊपर होगा केवल १०/-मासिक अन्य खर्च के लिए कन्या को देना होगा। कन्या का संस्कृत लेकर मैट्रिक उत्तीर्ण होना आवश्यक है। अथवा दसवीं कक्षा के समान कोई और शिक्षा प्राप्त होना आवश्यक है।

वैदिक सिद्धांत शिक्षा शिविर

—विरजानन्द वैदिक संस्थान के वेद विद्यालय दयानन्द संन्यास आश्रम गाजियाबाद में १३ जून से १३ जुलाई तक वैदिक सिद्धांत शिक्षा शिविर का आयोजन हो रहा है शिक्षा में रुचि रखने वाले शिक्षार्थी मैनेजर संन्यास आश्रम गाजियाबाद से पत्र-व्यवहार करें। पठन कार्य के लिए उच्चकोटि के विद्वानों का प्रबंध किया गया है।

गुरुकुल आर्य नगर कुरड़ी (हिसार)

—एक अनुभवी शास्त्री पास अध्यापक की आवश्यकता है वेतन योग्यतानुसार दिया जाएगा। पत्र-व्यवहार आचार्य गुरुकुल आर्य नगर कुरड़ी (हिसार) के पते पर करें।

पं. प्रभुदयाल मण्डली का प्रचार

श्री पं. प्रभुदयाल जी मंडली सभा की ओर से रोहतक जिला में धूमधाम से प्रचार कार्य में लगी हुई है। ग्राम स्याहड़वा, घड़ौंठी, जुलाना, ठिगाणा आदि ग्रामों में प्रचार करके आर्यसमाज का सन्देश दिया। महात्मा हंसराज शताब्दी के नोटों के १४८) रु० दान के रूप में एकत्रित कर के सभा को भिजवाये दिये।

मुद्रक व प्रकाशक श्री सन्तोषराज जी आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर द्वारा वीर मिलाप प्रेस, मिलाप रोड जालन्धर से मुद्रित तथा आर्यजगत कार्यालय महात्मा हंसराज भवन निकट कचहरी जालन्धर शहर से प्रकाशित मालिक—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर।



टेलीफोन नं० ३०५७ [आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधिसभा पंजाब जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd. No. P. 1?

एक प्रति का मूल्य १३ नये पैसे | वार्षिक मूल्य ६ रुपये

वर्ष २५ अंक २६) | ७ आषाढ़ २०२२ रविवार—दयानन्दाब्द १४१— २० जून १९६५ | (तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

वेद सूक्तय:

वीरता भरे वेद वचन

योऽस्मान द्वेष्टि

सारे लोग मेरी गर्जना को सुन लेवें कि जो भी हम से द्वेष करेगा। जिसने हमारे प्रति अपने दिल में थोड़ा-सा भी अनिष्ट का चिन्तन किया, हम से वैरता का भाव रखने का विचार किया तो सुन लो।

पृथिव्यास्तं निर्भजाम:

ऐसे दुष्ट, अत्याचारी, अपने दल बल पर झूठा अभिमान करने वाले वैरी शत्रु को हम वीर पुरुष सारे मिल कर अपनी वीरता से पथिव्या :—पृथिवी पर से उसे निर्भजाम :—उखाड़ कर फैंक देंगे। मूली गाजर के समान समूल उखाड़ देंगे।

अन्तरिक्षात्तं निर्भजाम:

ऐसे राष्ट्रघाती को, हिंसक को तो हम यदि अन्तरिक्ष मार्ग से आयेगा या भागना चाहेगा तब हम उसे उस अन्तरिक्ष मार्ग से भी उखाड़ कर फैंक देंगे। बच कर वह जायेगा कहां ? उसे अन्तरिक्ष में भी छोड़ेंगे नहीं।

एतत् स ऋच्छात्

जो कोई भी हम पर, हमारी भूमि व भावना पर चोट करने आयेगा तो वह हमारी मार से खट्टी मुंह की ही खायेगा। उसे छटी का दूध याद आ जायेगा। उसका हमला उसी की मौत का कारण बन जायगा।

अथर्ववेद से

वेदामृत

ओ३म् सर्वं वै पूर्णं स्वाहा

अर्थ—हे भगवान् ! यह सर्वं—सब कुछ वै—निश्चय करके पूर्णं—पूर्ण हो जाये—स्वाहा—यह उक्ति ठीक है। प्रभो ! मेरा प्रत्येक पदार्थ आपके ही अर्पण है जो भी आपकी कृपा से यज्ञ आदि शुभ कर्म में या हम सारे आपके पुत्र-पुत्रियां मिलकर सम्पादन करते हैं। यह सब आपकी कृपा से पूर्ण हो जाये। आपके ही सब कुछ अर्पण है।

भावार्थ—प्रत्येक नर नारी अपने जीवन के नानाविध मार्गों पर चलते हुए चाहते हैं कि हमरा जीवन का कार्य पूर्ण हो जाये। छात्र अपनी विद्या को पूर्ण देखना चाहता है, व्यापारी अपने व्यापार में कोई न्यूनता नहीं चाहता। धर्म प्रचारक हो, राष्ट्र प्रेमी समाजसेवी हो अथवा विश्व हितैषी हो—सारे अपने २ कार्यों में पूर्णता चाहते हैं। सब यही चाहते तथा कहते हैं कि सर्वं वै पूर्णम्—हमारा हर काम, प्रत्येक साधना पूर्णता को प्राप्त हो जाये। तब इस का उपाय क्या है ? ओ३म् स्वाहा—अपने कार्य को करते हुए अपने आप को प्रभु के अर्पण कर दीजिए। कर्तव्य तो करना ही है। प्रमादी नहीं बनना। खूब परिश्रम करना है। जीवन व जगत एक संग्राम है—परन्तु सब कुछ करते हुए प्रभु के अर्पण कर देवें। उसी का आश्रय, आलम्बन लेकर, सहारा लेकर कार्य करें। प्रभो ! मैं तेरा तू मेरा। मैं पुत्र तू पिता है—सं०

ऋषि दर्शन

गृहाश्रमेणोत्तमाचरणानाम्

गृहस्थाश्रम में उत्तम आचरण कार्य करने चाहिएं। यह आश्रम इसीलिए है कि इसमें श्रेष्ठ कर्म किए जाएं तथा राष्ट्र की सेवा करने के लिए उसके द्वारा शुभ कर्मों की मर्यादा पाली जाए।

वानप्रस्थेन ब्रह्मोपासनम्

तीसरे वानप्रस्थाश्रम में मनुष्य एकान्त सेवन किया करे तथा जीवन में विशाल बनने के लिए ब्रह्म की उपासना करता रहे। इस आश्रम में ज्ञान की प्राप्ति करके भगवान की भक्ति का तत्व प्राप्त करता रहे।

संन्यासेन मोक्षप्रापणाम्

चौथा आश्रम सन्यास नाम का है। इसमें परमानन्द को पाने के निमित्त मोक्ष साधना के लिए सब कुछ छोड़कर सारे विश्व का बनना पड़ता है। यह आश्रम मोक्ष प्राप्ति के लिए द्वार माना गया है।

एक: पुरुषो राजा नैव

अकेले पुरुष को राजा नहीं बनाना चाहिए। अधिनायकवाद या डिक्टेटरशिप अच्छी नहीं होती। राज्य व शासन का सारा सूत्र अकेले एक आदमी के हाथ में कभी नहीं देना चाहिए। इस प्रकार का राज्य बिगड़ जाता है।

भाष्य भूमिका से

अधिष्ठाता—श्री संतोषराज जी

सम्पादक—त्रिलोक चन्द्र

सम्पादकीय—

आर्य जगत्

वर्ष २५] रविवार २०२१, २० जून १९६५ [अंक २६

पनपता हुआ पाखण्ड

आर्यसमाज पाखण्ड के नाना-विध अन्धकार को दूर करने के लिए अपने आरम्भिककाल से ही लगा हुआ है। यह पाखण्ड समयर पर बहुरूपिया बन कर जनता को सुमार्ग से विचलित करके उसे ऐसे वैसे पथ पर डाल देता है, जिस के द्वारा सारे समाज का आगे चल कर पतन होने लग जाता है। स्वामी दयानन्द के युग में भारत में नगर भी थे, नदियां तथा पर्वत भी थे, जनता के पास प्रत्येक प्रकार की सुखसुविधा की सामग्री भी प्रचुर-मात्रा में विद्यमान थी। एक-एक विषय के प्रकाण्ड विद्वान भी थे, जो लगातार एक २ शब्द के बाल की खाल उतारने में लगे हुए थे। किन्तु पाखण्ड के जाल के तारों ने सारे समाज के जीवन को बहुत बुरी तरह अपने बन्धन में बान्ध रखा था। चारों ओर पाखण्ड का प्रसार हो रहा था। भगवान के नाम पर धर्म के नाम पर, देवी देवों के नाम पर तथा शास्त्रों के नाम पर पाखण्ड अपनी पराकाष्ठा तक पहुंच चुका था। रोगी के शरीर पर विषैले फोड़े के समान भारतीय जीवन पर भी पाखण्ड का यह भीषण फोड़ा था जिसे चीरने का काम महर्षि दयानन्द ने करके सारे देश को बचा लिया। आर्यसमाज ने पाखण्ड के खण्डन में भारी काम किया है। इस के बिना कौन कह सकता है कि समाज के विराट शरीर की क्या अवस्था होती?

किन्तु यह पाखण्ड जड़ वाले विषैले फोड़े की भान्ति ही अपना स्थान २ रूप बदलता रहता है। आज आर्य समाज राष्ट्रनिर्माण के काम में लगा है। अवसर पाकर यह पाखण्ड फिर भयंकर रूप बना कर देश में पनपने लगा है। हिन्दू समाज बड़ा ही कमजोर है। इस के नर नारियों को चाहे पीरों फकीरों पर झुका लो, चाहे तो मसजिदों के आगे नतमस्तक करवा दो। पीरों की दरगाहों देहली व अजमेर में हमने स्वयं आंखों से सैंकड़ों रुपये चढ़ाते देखा। ईसाइयों के मिशनरी, बहाईमत के लोगों के अनेक प्रकार के पाखण्ड के सामने ये लोग बहते चले जाते हैं। स्वत्व एवं स्वाभिमान का नाम तक भी दिल में नहीं पैदा होता। जहां पर चाहो माथा रगड़वा लो, जहां चाहो पैसे भेंट करवा लो जहां चाहो इनको चेले चेलियां बना लो। मोम की नाक के समान सब पाखण्डों के सामने हिन्दु समाज झुकता चला जाता है। विचित्र तमाशा है। आज का हिन्दु सर्वथा खिलौना बन गया है। कोई भी इस खिलौने से जब चाहे खेल सकता है। इतिहास से अभी तक इस समाज ने पाठ पढ़ना सीखा भी नहीं।

ब्रह्मकुमारियों के मतको चलाने वाले दादा लेखराज के पाखण्ड ने सिन्ध में ओं मंडली की आड़ में और अब ब्रह्मकुमारी मत के रूप में कितने परिवारों की युवती कुमारियों के पवित्र जीवन से खिलवाड़ नहीं की। आनन्दपुरी मत के पाखण्ड ने क्या-क्या रूप नहीं दिखाए साथ-साथ इस हंससम्प्रदाय ने कैसे-कैसे पतन के रूप प्रकट करके पाखंड का प्रचार नहीं किया। पीकदान ले पीक करावें। फिर सब पीक आप पी जावें— जैसा निन्दित प्रसाद का प्रचार करने वाले राधा स्वामी मत ने पाखंड का कितना लम्बा चौड़ा जाल नहीं फंसाया? कितने पाखंड चल रहे हैं। हिंदुसमाज सबमें फंस जाता है। आर्यसमाज बाहर के शत्रु के समान ये मत भी हमारी भावनाओं से खेलते हैं। कमर कसकर उठकर इन सब के खंडन लिए के, तैयार हो जाओ। खंडन चक्र चला दो।

—त्रिलोकचन्द्र

आर्यनेता प्रिं. भगवान् दास जी

आर्यसमाज को जहां अपने साधु महात्माओं पर, तपस्वी विद्वानों, देशभक्त नेताओं, दिन-रात धर्म प्रचार के लिए घर छोड़कर घूमने वाले प्रचारकों पर बड़ा गौरव है, वहां शिक्षा के विशाल क्षेत्र में काम करने वाले अपने प्रिंसिपलों पर भी बड़ा मान है। उन में मान्यवर प्रिंसिपल भगवान् दास जी एम. ए. पर तो विशेष गर्व है। शिक्षा संस्थाओं के सुप्रबन्ध के साथ २ आर्यसमाज के रंग में रंगे हुए इन जैसे दो-चार ही प्रिंसिपल होंगे माननीय प्रिंसिपल भगवान् आरम्भ से ही आर्यसमाज के लिए एक विभूति बन कर आये। पञ्जाब में हिन्दी आन्दोलन में आप ने जो विशेष कार्य किया वह तो इतिहास की कभी न भूलने वाली सम्पत्ति है। निर्भीकता तथा जीवन में किसी भी कीमत पर किसी के सामने न बिकना यह आप की विशेषता रही है। पंजाब के शोलापुर महाराष्ट्र जा कर आप ने वहां के डी. ए. वी. कालेज को कितना उन्नत किया, यह तो वहां जाकर ही देखा जा सकता है। वहां आर्यसमाज के काम में कमाल कर दिया। सारा बम्बई, महाराष्ट्र और आन्ध्रप्रदेश आपके जीवन, तप के सामने मस्तक झुकाता है। श्री. राजेन्द्र जिज्ञासु एम. ए. जैसे युवक से काम लेना आप की दूरदर्शिता की निशानी है। आप पांच वर्षों बाद पंजाब में डी. ए. वी. कालेज अम्बाला में वापस आये हैं। जो स्वागत आप का पानीपत, करनाल, अम्बाला के स्टेशनों पर किया गया वह अपना उदाहरण आप ही है। हम आर्यसमाज के महान् नेता का हार्दिक स्वागत करते हैं। पांच वर्ष बाद पंजाब को फिर प्रिंसिपल भगवान् दास जैसा आर्यसमाज को नेता मिल गया। प्रभु उन को सदा स्वस्थ रखें, आर्यसमाज तथा युवक वर्ग अब आगे ही आगे बढ़ेगा। क्या ही उत्तम हो कि श्री. राजेन्द्र जिज्ञासु जी को भी वापस पंजाब में लाया जाये। हम पुनः प्रिंसिपल जी का हार्दिक स्वागत करते हैं।

—सं०

समाजविभूति पं० देवप्रकाश जी

इसी प्रकार अर्बी संस्कृत महाविद्यालय अमृतसर के पूर्व आचार्य विद्या की साक्षात् मूर्ति, आर्यसमाज के अनथक मूक कार्यकर्ता तथा तपस्या, त्यागकी पराकाष्ठा, महात्मा हंसराज के परमभक्त अर्बी फारसी के प्रकांड विद्वान पं० देवप्रकाश जी भी आर्यसमाज की विभूति हैं। कितना काम किया? कितने जीवन बनाये? निरन्तर बीस वर्षों से मध्यप्रदेश में भीलों के उन जङ्गलों में चुपचाप बिना

(शेष पृष्ठ ८ पर)

दी पंजाब को-अपरेटिव बैंक लि०

THE PUNJAB CO OPERATIVE BANK LTD

प्रधान कार्यालय : अमृतसर

शाखाएं देहली चांदनी चौक, जालन्धर तथा रोपड

संचालकों की विज्ञप्ति

भागधरों की सेवा में

वर्ष १९६४ के काम काज पर सचालकों की विज्ञप्ति

१ इस वर्ष का लाभ, आयकर के लिए रु० ७१,२११/८८ रखने के पश्चात, रु० १,५२,३९१/५९ का हुआ और रिजर्व बैंक क ६. ३ ६४ के आदेशानुसार उनसे मन्जूरी मांग कर ६ रुपए प्रतिशत लाभांश बांटने के लिए सचालक प्रस्ताव पेश करेंगे और बाकी रुपए **Contingent Reserve** में डालने की सम्मति देते हैं। इससे **Contingent Reserve** में कुल रुपए ५ ४४ ४३३/६३ हो जावेंगे। अभी रिजर्व बैंक ने डिविडेण्ड देना मन्जूर नहीं किया पर अब मन्जूरी मिलने की आशा की जा सकती है।

२ २९ ४ १९६४ को पाकिस्तान सुप्रीम कोर्ट ने हमारी अपील पर हमारे पक्ष में फैसला दिया कि हमारी जो जायदाद पाकिस्तान में है वह सब **Non evacuee** है और पाकिस्तान सरकार न तो इसे (विस्थापित कोष) **Rehabilitation Pool** में ले सकती है और न ही इस जायदाद पर मिलने वाले किराए आदि को (किराया कोष) **Rent Fool** में जमा कर सकती है। इस अदालत ने यह भी निश्चित किया कि जो हमारी जायदाद कसटोडियन के कब्जे में है उस का कब्जा कसटोडियन से हटाने के लिए पाकिस्तान की केन्द्रीय सरकार द्वारा एक (घोषणा) **Notification** करना आवश्यक है। क्योंकि सरकार द्वारा ऐसी घोषणा करनेका विषय अदालतके समक्ष नहीं उठाया गया इसलिए इसपर कोई निर्णय नहीं दिया गया। बैंक ने इस फैसले के अनुसार पाकिस्तान सरकार को आवेदन पत्र दिया है कि वह ऐसी घोषणा करे, पर अभी तक उसका उत्तर नहीं मिला। सचालक आशावादी हैं कि वहां पर जायदाद की वसूली होने की अब सम्भावना हो गई है।

३. बैंक की आयकर की जो अपीलें वर्ष १९५४ तथा १९५५ की हाईकोर्ट में दाखल की गई थी उनकी सुनवाई अभी तक नहीं हुई है।

४. संचालक बैंक के कार्यफल को सतोष जनक समझते हैं।

जगराम
चिरञ्जीव लाल अग्रवाल
दीना नाथ
चन्द्र गुप्त
} संचालक

तिथि २०. ३. ६५

Auditor's Report

We have audited the annexed Balance Sheet of th Punjab Co-operative Bank Ltd., as at 31st December, 1964 and the annexed Profit and Loss Account of the Bank for the year ended on that date in which are incorporated audited returns from all Branches in India visited by us for the purpose of the report and the unaudited return of Lahore branch outside India not visited by us.

In accordance with provisions of Section 29 of the Banking Companies Act, 1949 read with the proviso to Sub-Sections (1) and (2) of Section 211 and sub-section (5) of section 211 and 227 of the companies Act, 1956, the Balance Sheet and the Profit and Loss account are not required to be and are not drawn up in accordance with the sixth schedule to the Companies Act, 1956. They are therefore, drawn up in conformity with form A and B of the Third schedule to the Banking Companies Act, 1949.

We report that :—

(a) We have obtained all the information and explanations which to the best of our knowledge and belief were necessary for the purpose of our audit, and have found them to be satisfactory.

(b) The transactions of the Bank which have come to our notice have been within the powers of the Bank.

(c) In our opinion proper books of accounts as required by law have been kept by the Bank so far as appears from our examination of those books and proper returns adequate for the purpose of our audit have also been received from Branches of the Bank, except the Lahore City Branch which was burnt during the communal disturbances in 1947.

(d) The Bank's Balance Sheet and Profit & Loss Account dealt with by this report are in agreement with the books of account and returns.

(e) The assets and liabilities of Lahore branch have been incorporated at par.

(f) In our opinion and to the best of our information and according to the explanations given to us the said accounts give the information required by the Companies Act, 1956, in the manner so required for Banking Companies and on such basis the said Balance Sheet gives a true and fair view of the state of affairs of the Bank as at 31st December, 1964 and the Profit and Loss account gives a true and fair view of the profit for the year ended upon that date.

New Delhi
Dated : 22nd March, 1965

V. K. Mehta & Co.
Chartered Accountants
Auditors.

THE PUNJAB CO-OPERATIVE
BALANCE SHEET AS

Previous Year's Figures	CAPITAL & LIABILITIES	AMOUNT Rs. P	TOTAL Rs. P
	1. Capital		
25,00,000	Authorised Capital 50000 Shares of Rs 50/ each	25 00 000 00	
10,00,000	Issued & subcribed capital 20000 Shares of Rs 50/ each	10 00 000 00	
10,00,000	Amount called and paid in full		10 00 000 00
	2. Reserve Fund & other Reserves		
10,00,000	(i) General Reserve	10 00 000 00	
3,17,318	(ii) Contingent Reserve	4 52 042 04	14,52 042 04
	3. Deposits & other Accounts		
40,42,334	Fixed Deposits	39 75 183 63	
9,45,558	Saving Bank Deposits	9 67 651 94	
30,13,559	Current accounts and contingency accounts	31 60 233 85	
13,499	Employees security deposits	14 784 09	81 17 853 51
	4. Borrowing from other Banking companies, Agents etc		
Nil	In India		Nil
Nil	Outside India		Nil
	Particulars		
Nil	(i) Secured (against pledge of Govt. Securities)	Nil	
Nil	(ii) Unsecured	Nil	
Nil	**5. Bills Payable**		Nil
	6 Bills for Collection being bills receivable as per contra		
8,20,280	Payable in India	7 75 942 57	
Nil	Payable outside India	Nil	7 75 942 57
	7. Other Liabi ities		
2,077	(i) Rebate interest	714 36	
10,572	(ii) Dividend unclaimed	10 564 00	
1,513	(iii) Dharmada (Benevolent Fund)	1 512 89	
10,000	(iv) Gratuity & Pension Fund	10 000 00	
44,874	(v) Investment Depreciation reserve	44 874 31	
38,098	(vi) Provision for Bad & doubtful debts	38 098 17	
7,857	(vii) Provision for interest charged on specified accounts or Bad & doubtful debts	11 353 03	
Nil	(viii) Provision for income tax	33 800 00	1 50 916 76
7,73,878	**8. Acceptances, Endorsements and other obligations as per Contra**		8 46 028 18
	9. Profit & Loss Account		
1,40,954	Profit as per last balance sheet	2 11 047 92	
	Less Appropriation:		
1,40,041	Contingent Reserve	2 10 135 07	
913	Balance brought Forward	912 85	
2,10,135	Add profit for the year brought from Profit & Loss Account	1 52 391 59	1 53 304 44
	10. Contingent Liabilities		
	(a) Income-tax assessments for accounting year 1959 onwards are pending,		
	(b) Guarantees given by the Bank for Rs. 8,46,028 13 (Previous year Rs. 7,73,878.13)		
	NOTE ·		
	(i) No depreciation has been charged on immovable property left in Pakistan.		
	(ii) The adequacy of the provision of gratuity is subject to ascertain ment of the amount.		
1,22,52,465	Total		1,24,96 087 45

Certified in terms of our annexed report of even date.

New Delhi
22nd March 1965

V.K. MEHTA & CO.
Chartered Accountants.

BANK LIMITED, AMRITSAR.
AT 31ST DECEMBER, 1964.

Previous Year's Figures	PROPERTY & ASSETS			AMOUNT Rs.	P.	TOTAL Rs.	P.
	1. Cash						
13,93,456	In hand and with Reserve Bank and State Bank of India including foreign currency notes ...					9,89,715	67
	2. Balance with other Banks						
5,70,579	(a) In current account (i) In India	5,01,716	72				
841	(ii) Outside India	7,451	28	5,09,168	00		
Nil	(b) In deposit account (i) In India	7,25,000	00				
Nil	(ii) Outside India	Nil		7,25,000	00	12,34,168	00
4,90,000	**3. Money At call & short notice** ...					3,00,000	00
	4. Investment at Cost						
	(i) Securities of the Central & State Govts. and other Trustee Securities including treasury bills of the						
9,82,439	Central & State Govts. Market value	18,76,210	25	19,53,048	00		
	(Previous Year)	9,39,655	50				
	(ii) Shares						
11,154	(a) Ordinary shares fully paid up	11,158	50				
6,41,531	(b) Preference shares do	4,04,453	74	4,15,612	24		
	Note: (a) Shares on which market quotations are available:						
	Previous year 6,32,601 14 Book Value	3,95,523	74				
	7,24,716 00 Market Value	5,52,945	00				
	(b) Shares for which market quotations are not available. Book value	20,088	50				
	(Previous year)	20,083	75				
Nil	(iii) Debentures or Bonds ...			Nil			
Nil	(iv) Other investments ...			Nil			
Nil	(v) Gold ...			Nil		23,68,660	24
	5. Advances						
	(a) Loans, Cash Credits & Overdrafts						
49,57,846	(i) In India ...			44,43,310	94		
4,95,128	(ii) Outside India ..			4,94,627	79		
	(b) Bills discounted & Bills purchased						
1,90,290	(i) In India ...			54,252	40		
Nil	(ii) Outside India ...			Nil		49,92,191	13
	particulars as per separate schedule attached (Provision for bad & doutful debts has been made as per contra)						
	6. Bills receivable being Bills for collection as per contra						
8,20,280	(i) Payable in India ...			7,75,942	57		
Nil	(ii) Payable outside India ...			Nil		7.75,942	57
7 73 878	**7. Constituents liabilities for acceptances endorsements and other obligations as per contra.** ...					8,46,028	13
1 93 215	**8. Premises at cost as at 31 12-63.**	1,93,626	20				
411	Additions during the year	2,782	87	1,96,409	07		
64 773	Less depreciation upto 31 12 63	66,136	03				
1 363	For the current year	1,398	05	67,534	08	1,28,874	99
	9 Furniture and Fixtures						
45 122	Last Balance	45,122	27				
Nil	Addition during the year	296	70	45,418	97		
27 016	Less Depreciation upto 31 12-63	29,519	82				
2,504	For the current year	1,589	90	31,109	72	14,309	25
	10 Other Assets						
10,028	(i) Interest accrued on investments but not realized ...			34,576	50		
28,998	(ii) Misc account recoverable ...			32,875	24		
10,834	(iii) Due from Banks in Liq and under scheme ...			10,776	13		
1,85,065	(iv) Income Tax deducted at source on yield of investment			1,85,064	86		
308	(v) Stamps in hand ...			267	87		
19,125	(vi) Advance payment of Income Tax ...			19,124	95		
908	(vii) Advance payment of deposit insurance premium ...			1,005	70	2,83,691	25
	11 Non-Banking Assets Acquired in satisfaction of Claims						
3,79 649	(i) Land & House Property at cost	3,62,605	81				
1,588	Additions during the year	6,920	00				
	Total	3,69,525	81				
18,631	Less sales during the year	Nil		3,69,525	81		
1,64 080	(ii) Other assets at cost	1,64,080	00				
Nil	Additions during the year	48,400	41				
	Total	2,12,480	41				
Nil	Less Sales during the year	19,500	00	1,92,980	41	5,62,506	22
1,22,52,465	Total					1,24,96,087	45

VEDPAL SURI
General Manager

JAG RAJ
CHANDRA GUPTA
CHIRANJIV LAL AGGARWAL
DINA NATH
Directors.

THE PUNJAB CO-OPERATIVE BANK LIMITED, AMRITSAR.

PROFIT & LOSS ACCOUNT FOR THE YEAR ENDED 31ST DECEMBER, 1964.

Previous Year's Figures	EXPENDITURE		AMOUNT Rs.	P.	TOTAL Rs.	P.
1,76,075	1. To interest paid on deposits, borrowings etc. ...				1,89.728	50
1,23,382	2. To salary & Allowances & Provident Fund ...				1,35,459	00
1,200	3. To Directors & Local Committee member's fees & allowances		1,150	00		
22,164	4. (a) To Rent, Taxes, Insurance, Lighting etc	21,001 61				
3,389	(b) To Deposit insurance premium	3,880 03	24,881	64		
6,840	5. To Law Charges ...		5,175	75		
6,581	6. ,, Postage, Telegrams & Stamps ...		7,498	28		
800	7. ,, Auditor's Fee ..		900	00		
4,545	8. ,, Depreciation on and repairs to the Banking company's property ..		3,471	94		
5,051	9. ,, Stationery, Printing & Advertisement ...		5,007	46	48,085	07
Nil	10. ,, Loss on sale of or dealing with non-banking assets ...		Nil			
Nil	11. (a) To Loss on Redemption of Government Securities ...		156	25		
11,172	(b) ,, Loss on Sale of shares of Tata Iron & Steel Co. Ltd. ...		68,567	40	68,723	65
	12. To Other Expenditure :					
3,41,059	Bad Debts written off ...		137	00		
250	Income tax penalty paid ...		Nil		137	00
Nil	13. To Provision for Income tax					
	Tax at Source ...		37,411	89		
	Balance Provision ...		33,800	00	71.211	89
2.10,135	14 To Balance of Profit ...				1,52,391	59
	Particulars of the remuneration paid to the General manager during 1964 :—					
	(i) Salaries	1,938 75				
	(ii) Allowances	Nil				
	(iii) Sitting fees	Nil				
	(iv) Bonus	Nil				
	(v) Employers contribution to Provident Fund pension fund or any other superannuation Fund	102 36				
	(vi) Payment by way of gratuities, pensions or otherwise, in excess of employer's contributions and interest thereon	Nil				
	(vii) The monetary value of any other benefits or perquisites	180 00				
		2,221 11				
9,12 643	Total				6,65,736	70

Previous year's Figures	INCOME	AMOUNT Rs.	P.	TOTAL Rs.	P.
	1. By Interest and Discount				
2,99,551	(a) Interest and Discount ...	3,59,338	81		
36,206	(b) Interest on Govt Securities .	54,656	51	4,14,005	32
34,417	2. ,, Commission Exchange & Brokerage ..			39,760	47
6,550	3. ,, Rent ...			8,382	45
250	4. ,, Net profit on sale of investment, gold and silver, land, premises and other assets (not credited to reserve or any particular fund or account)			1,545	00
Nil	5. ,, Net profit on revaluation of investment, gold and silver, land, premises and other assets (not credited to reserve or any particular fund or account)			Nil	
	6. ,, Income from non-banking assets and profit from sale of or dealing with such assets				
17,514	(a) Rents on Property .	16,594	94		
40	(b) Income from land ...	20	00		
56,369	(c) Profit on sale of Property ..	Nil		16 614	94
	7. ,, Other Receipts				
5,709	(a) Miscellaneous Earnings ...	6,087	65		
1,14,130	(b) Dividend on Shares ..	1,10,286	39		
1,438	(c) Refund of Income Tax ...	Nil			
110	(d) Written off bad debts realized ...	487	08		
3,40,359	(e) Transferred from contingent Reserve ...	68,567	40	1,85,428	52
9,12,643	TOTAL			6,65,736	70

The Punjab Co-operative Bank Limited Amritsar.

Schedule of Particulars required by the Banking Companies Act, 1949 (Act X of 1949) attached to and forming part of the Balance Sheet as at 31 December, 1964.

Previous Year's figures		Loans, Advances, Cash Credits and Overdrafts	Rs. P.
50,20,344	(i) Debts considered good in respect which the bank is fully secured .		44,18,807 99
6,22,920	(ii) Debts considered good, for which the bank holds no other security than the debtor's personal security. ...		5,73,383 14
Nil	(iii) Debts considered good, secured by the personal liabilities of one or more parties in addition to the personal security of the debtor.		Nil
Nil	(iv) Debts considered doubtful or bad, not provided for. ...		Nil
56,43,264			
Nil	(v) Debts due by Directors or Officers of the Bank or any of them either severally or jointly with any other person.	Nil	
Nil	(vi) Debts due by companies or firms in which the Directors of the bank are interested as directors, partners or managing agents or in the case of private companies, as members.	Nil	
Nil	(vii) Maximum total amount of loans, including temporary advances, made at any time during the year to Directors or Managers or Officers of the Bank or any of them either severally or jointly with any other person.	Nil	
Nil	(viii) Maximum total amount of loans, including temporary advances, granted during the year to the companies or firms in which the Directors of the Bank are interested as Directors, Partners or Managing Agents or, in the case of private companies, as members.	Nil	
Nil	(ix) Due from Banking companies. ...	Nil	
	TOTAL		49,92,191 13

JAG RAJ
CHIRANJIV LAL AGGARWAL

प्यारे महात्मा जी की याद

पं० चन्द्रसेनजी आर्य हितैषी, उपदेशक सभा, सोनीपत निवासी

बन्धुओ ! देश व जातियां अपने महान पुरुषों की याद अवश्य मनाती हैं। चाहे जन्म-दिन के रूप में। या बलिदान के रूप में। ये महापुरुष हमारे पथ प्रदर्शक होते हैं, इनके बताए पथ पर चलकर हम भी सुख, शान्ति व कल्याण के भागी बनते हैं। आज से एक सौ वर्ष पहले सन् १८६४, १९ अप्रेल को पंजाब की वीर भूमि होशियारपुर के निकट बिजवाड़ा कस्बे में एक महापुरुष एवं सुधारक ने जन्म लिया, जिसका नाम हंसराज रखा गया। पांच-छः बर्ष के बालक ने पढ़ना शुरू किया, अच्छी शिक्षा प्राप्त कर ली। वे चाहते तो ऊंचे से ऊंचे पद पर पहुच लाखों रुपए कमा सकते। माता-पिता ने इसी आशा से इतनी शिक्षा दी। पर यहां तो ला० हंसराज के अपने जीवन का पन्ना पलट चुका था, अपना जीवन, दयानन्द के मिशन को चारों ओर फैलाना है, इस निमित्त अर्पण कर दिया। वास्तव में महात्मा का यही लक्षण होता है। इनके बड़े भाई ने अपने प्यारे हंसराज की भावना का सम्मान किया इनको सदैव के लिए कुछ मासिक खर्चा देना किया। पूज्य महात्मा जुट गए डी. ए. वी. कालिज की सेवाओं में। जीवन भर शिक्षा के क्षेत्र में लगे रहे। सच्चे अर्थों में पंजाब के निर्माता बने। इस दूर-दर्शी महात्मा हंसराज ने वेद प्रचार के कार्य को बढ़ावा देने के लिए आर्य-प्रादेशिक सभा की स्थापना की। सैंकड़ों प्रचारक विद्वानों ने इस ओर से सारे देश भर में ऋषि सन्देश सुनाया, और वेद विरोधियों का मुंह बन्द किया आना सैंकड़ों डी. ए. वी. संस्थाओं और समाजों का जालसा बिछ गया है। ये सब इस महान् विभूति सुधारक महात्मा हंसराज जी के सदप्रयत्नों का परिणाम है। मुझे जहां तक याद आता है १५-११-३८ को महात्मा जी स्वर्ग सिधारे। मैं कई वर्ष लाहौर रहा, इनकी अर्थी का जलूस डी० ए० वी० कालिज से चला। नगर के मुख्य २ बाजारों से होता हुआ सायं दरयाए रावी के किनारे पहुंचा। आग की लपटों में शरीर जल गया लाखों लोगों की आंखों में आंसुओं की धारा बह रही थी मानों हमारा भाग्य विधाता चला गया। लाहौर में उनके दर्शनों वास्ते सारा पंजाब टूट पड़ा दिल्ली तक के लोग आए। वह दृश्य आज भी उसी तरह मेरी आंखों के सामने घूम रहा है। वह अनारकली बाजार मल्ले की हट्टी का दर्दनाक दृश्य पत्थर दिल को भी रुला रहा था। अब उनकी प्यारी सभा ने १९ अप्रैल १९६५ को जन्मशताब्दी मनाई है। वेद-प्रचार जो महात्मा जी का मुख्य काम था उसके बारे में सभा के मनोनीत होनहार हमारे प्रधान श्री यश जी ने पांच लाख रु० की अपील की है। जनता दे रही है और देगी। १५ नवम्बर १९६५ तक वेदप्रचार धन लेना है यानी १५-११-६५ को भोग पड़ेगा। कृपया अपने प्यारे महात्मा की याद में उनके अधूरे कार्य को पूरा करें। यही सच्ची याद है। आज वेद-प्रचार की पहले से भी अधिक आवश्यकता है। जरा अपने प्यारे महात्मा जी ने कितने कष्ट सहे इस पर विचार करें। आओ इनकी शताब्दी मनाते हुए हम नई करवट बदलें जमाना महात्मा जी के मार्ग पर आना चाहता है। हम लाने वाले बनें मेरे विचार में यही प्यारे महात्मा जी की याद है।

महात्मा हंसराज

जन्म-शताब्दी पर

प्राप्त धन की सूची

पं. त्रिलोक चन्द्र जी द्वारा	१००/-
डी. ए. वी. कालिज हिसार	११६८/-
आर्यसमाज माडल टाऊन जालन्धर	२५/-
सोहनलाल गर्ल हाई स्कूल अम्बाला	२००/-
साईंदास H/S स्कूल जालन्धर	१०००/-
डी.ए.वी. कालेज अंबाला	४४६/-
आर्य गर्ल हाई स्कूल गोविंद नगर कानपुर	१७०/-
पं. ओमप्रकाश जी उपदेशक द्वारा	७५/-
जसराज जी जग्गा फिरोजपुर	२२५/-
पं. प्रभुदयाल जी प्रभाकर पौली	१४८/-
डी. ए. वी. स्कूल ऊना	१०१/-
आर्यसमाज औराद(महाराष्ट्र)	१०/-
पं. ओम प्रकाश जी उपदेशक द्वारा	२५१/-
पं. अमरसिंह उपदेशक द्वारा	१८०/-
आर्यसमाज सुजानपुर श्री. मेलाराम जी द्वारा	६६/-
दीवान साईंदास जी वकील कठुआ जम्मू	१०/-
आर्यसमाज कठुआ मेलाराम जी द्वारा	१८६/-
आर्यसमाज बस्ती गुजां श्री मेलाराम जी द्वारा	१००/-
रामरखा मल वैसाखीराम एन्ड सन्ज़ बस्ती नौ	८५/-
श्री हंसराज महाजन एन्ड सन्ज़	१५/-

गुरुकुल आर्य नगर (कुरड़ी) हिसार

इसमें इस समय ४० ब्रह्मचारी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। पांच अध्यापक अध्यापन कार्य रहे हैं। शीघ्र ही यह गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय से संबधित हो जाएगा। इस गुरुकुल का प्रवेश शुल्क २५/- तथा भोजन व्यय का १५/-मासिक लिया जाता है। घी, दूध ब्रह्मचारियों का अपना होता है।

गुरुकुल प्रणाली के इच्छुक माता-पिता अपने पुत्रों को शीघ्र प्रवेश कराकर लाभ उठाएं।

—आचार्य गुरुकुल आर्य नगर

विवाह का टीका या कलंक का टीका

(गतांक से आगे)

किन्तु विवाह की पवित्र धवलता पर यह टीका न लगने दें। स्नेह सम्बन्धों पर धन की धूल न जमने दें। मध्यवर्ग के बहु संख्यक परिवारों की विवशता देखकर अनदेखी न करें। इस सामाजिक बुराई के निराकरण के लिए आज ठोस कदम उठाने की आवश्यकता है। हम जब भी सम्भल जाएं अच्छा है क्षणिक लोभ के आवेश मे आकर सामाजिक जीवन को छिन्न-भिन्न करने वाले इस बुरे रिवाज का आंचल छोड़ सुमार्ग पर आना चाहिए। यह काम माताओं बहिनों के किए ही होगा इस में कोई सन्देह नहीं। हमें लड़के लड़कियों के विवाह के अवसर पर होने वाली धूमधाम व शानशौकत पर कोई आपत्ति नहीं केवल एक सामाजिक बुराई के रूप में इसके प्रचलन का विरोध है। इस से तो कोई भी अपरिचित नहीं कि इस कुप्रथा ने परिवारों में वैर विरोध कलहकी जड़ें जमाई है। बस इन्हीं जड़ों को उखाड़ने की दिशा में कुछ यत्न करने के लिए निवेदन करना हमारा प्रयोजन है।

अमूल्य वचन

★ अन्यायकारी बलवान् के भी नाश करने का यत्न करे।

★ असतो मा सद्गमय। (ईश्वर ! मैं असत् को त्याग कर सत ग्रहण करूं)

★ तमसो माज्योतिर्गमय। (अन्धकार से चल कर प्रकाश की ओर चलूं)

श्री स्वामी सोमानंद जी

आप चिरकाल से अस्वस्थ चले आ रहे हैं। आजकल आप बरेली में स्वास्थ्य लाभ कर रहे हैं।

आर्य परिवार की ओर से उनको स्वास्थ्य प्रदान करके वैदिक धर्म के पुनीत प्रचार कार्य में तत्पर होने की परम देव प्रभु से हार्दिक कामना की प्रार्थना है।

मंत्री

A. P. P. सभा जालन्धर

हर्ष सूचना

'आर्य जगत' के पाठकों को यह पढ़कर परम प्रसन्नता होगी कि 'आर्यजगत' के लेखक व वक्ता शिवपूजन सिंह जी कुशवाहा ४१ वर्ष की आयु में लिपिक का कार्य करते हुए भी आगरा विश्वविद्यालय की एम. ए. संस्कृत परीक्षा द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण हुए। अब तक आपकी ३७ पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

आर्यजगत की ओर से उन्हें इस अभूतपूर्व सफलता पर बहुत-बहुत बधाई।

आर्य समाज मोहदीपुर

मोहदीपुर, करनाल आर्य समाज ग्राम का उत्सव धूमधाम से हुआ है तो ग्राम पर समाज मन्दिर तथा नरनारियों की उपस्थिति देखकर अचम्भा होता है। सारा ग्राम ही आर्यसमाज बन गया है। [illegible] बच्चियों की धर्मरुचि भी भारी है। मान्य मास्टर धर्मसिंह जी सचमुच देव स्वभाव के बड़े ही आदर्श जीवन के सज्जन हैं। जल्से में स्वामी रामेश्वरानन्द जी M. P. पं. त्रिलोक चन्द शास्त्री, वृद्ध महारथी पं. विश्वम्भर दत्त जी, करनाल जिले के मण्डलाधीश ठा. दुर्गासिंह जी तूफान, ठा. मोहनलाल जी, डा. गणेशदास जी, चौ. हुकुमचन्द जी, श्री. वीरूराम जी एम. ए. करनाल चौ. नत्थासिंह जी, श्री नत्थूराम जी, श्री हरिदत्त वर्मा देहली, पधारे। खूब समारोह था। सभा को मार्गव्यय के अतिरिक्त ७५)- वेद प्रचार में मिला।

अति ज़रूरी इतला

डी० ए० वी० कालेज

(लाहौर) अंबाला

तमाम क्लासों (प्री यूनिवर्सिटी प्री मैडीकल, प्री इंजीनियरिंग थ्री ईयर डिग्री कोर्स आर्ट और साईंस का दाखिला १ जौलाई १९६५ को शुरू हो रहा है। [illegible] करके नाम पहले भी रजिस्टर्ड कराए जा सकते हैं पढ़ाई और बोर्डिंग हौस का अत्युत्तम प्रबन्ध है। प्रोस्पैक्टर के लिए लिखें।

भगवान दास एम० ए०

प्रिंसीपल डी० ए० वी०

कालिज अंबाला

आर्यसमाज रोहतक

रोहतक में आर्य समाज प्रधाना मुहल्ला एक जागता हुआ समाज है। इसके मान्य प्रधान जी, मन्त्री श्री भवानी दास जी, श्री परमानन्द जी विद्यार्थी [illegible] सारे सज्जन बड़े उत्साही हैं। पुरोहित श्री प्रभुदयाल जी और श्री नन्दलाल जी सारे सज्जन खूब काम करते हैं। आर्य वीर दल के कुमारों में श्री जगदीशचन्द्र जी बड़ा काम करते हैं। श्री विद्यार्थी जी का तो सारा परिवार समाज सेवा में अर्पित हुआ ही [illegible] चाहिए। एक सप्ताह तक सभा के पं. त्रिलोकचन्द शास्त्री व पं. मेलाराम जी रेडियो सिंगर की कथा होती रही। राष्ट्र रक्षा सम्मेलन में तो कमाल का उत्साह था। रोहतकमें दयानन्द मठ का भी एक विशेष स्थान है। वहां के स्वामी सोमानन्द जी भी सौम्य-मूर्ति हैं। कथा में नर-नारियों का धर्म प्रेम भी कमाल का था। १००) सभा वेद प्रचार में तथा ५) मठ समाज ने दिए।

आर्यसमाज ऊना का ४७वां वार्षिकोत्सव

४, ५, ६ जून को बड़े समारोह [illegible]मा। जिस में प्रो० सत्यदेव जी विद्यालंकार एम. ए. मन्त्री आर्य प्र. [illegible] सभा, प० हरिराम जी वेद-प्रचाराधिष्ठाता, प० मेलाराम जी रेडियो सिंगर पं० हज़ारीलाल जी भजनोपदेशक जालन्धर, कैप्टन बूटाराम जी मन्त्री जि. वे. प्र. सभा और प० दयानन्द जी एम. ए. (सुपुत्र प० त्रिलोकचन्द जी शास्त्री बी. ए. सम्पादक आर्यजगत) होशियारपुर से पधारे। उनके शिक्षाप्रद उपदेशों और मनोहर भजनों का जनता पर अच्छा प्रभाव पड़ा। प० सत्यदेव जी विद्यालंकार एम. ए. की अपील पर १४६०) रु० उत्सव के समय दान एकत्रित हुआ। वेदप्रचार के लिये १०१) तथा महात्मा हंसराज जन्मशताब्दी के लिये १०१) भेंट किया गया। इस से पूर्व जालन्धर के जन्मशताब्दी समारोह पर २१०) पहले भी भेंट किये जा चुके हैं। कुल ३११) जन्मशताब्दी के उपलक्ष्य में और १०१) वेदप्रचार फण्ड में भेंट किया गया। मार्ग व्यय इस के अतिरिक्त दिया गया।

शांति स्वरूप मन्त्री

आर्य समाज ऊना।

आर्यजगत रोहतक के समाचार

२७ वैशाख सं० २०२२ को आर्य केन्द्रीय सभा रोहतक की ओर से आर्यसमाज शिवा जी [illegible] मे सम्मिलित सत्संग आयोजित हुआ। १३ जून ६५ को आर्य केन्द्रीय सभा रोहतक की [illegible] सम्मिलित सत्संग हुआ। १४ जेठ से २०जेठ तक आर्य समाज प्रधाना मोहल्ला मे वेद कथा होती रही। कथावाचक आर्य प्रादेशिक सभा की ओर से पं० त्रिलोक चन्द जी शास्त्री B. A. महोपदेशक तथा प्रो० मेलाराम जी रेडियो सिंगर पधारे। कथा के बाद राष्ट्र रक्षा सम्मेलन हुआ। जिस में अनेक विद्वानों के भाषण हुए इन भाषणों में राष्ट्र रक्षा के विचार जनता के सम्मुख रखे—सर्वदानद

समाजविभूति...

(पृष्ठ २ का शेष)

किसी एषणा के ईसाईयों के जाल को काटने के लिए काम कर रहे हैं। हज़ारों ईसाई बने भीलों को वापस ले आये। ईसाईयों के डेरे व केन्द्र इस विभूति ने बन्द करवा दिये। बहाई मत के पाखण्ड को नष्ट कर दिया। रतलाम, झाबुवा, उज्जैन के सारे इलाके में कितनी तपस्या की। आर्यसमाज के इस तपस्वी ने कितना काम किया। देख सुन कर सिर झुक जाता है। लोकैषणा से सर्वथा दूर। मैं जानता हूं कि इन चार शब्दों के लिखने पर मुझे उनकी ओर से क्या कुछ सुनना पड़ेगा। श्री पंडित देवप्रकाश जी भी पंजाब में आ रहे हैं। हम चाहते हैं कि उनको यहां पर ठहरने की प्रार्थना करके पञ्जाब में विशेष योजना बद्ध कार्य किया जाये। अर्बी फारसी के प्रकांड पण्डित हैं। आर्य समाज एक विशेष विद्यालय खोल कर इन से शास्त्रार्थ महारथी बनाने का काम लें। अमृतसर वालों से विशेष निवेदन है। —सं०

मुद्रक व प्रकाशक श्री ज्योतिषराज जी आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर द्वारा वीर मिलाप प्रेस, मिलाप रोड जालन्धर से मुद्रित तथा आर्यजगत कार्यालय महात्मा हंसराज भवन निकट कचहरी जालन्धर शहर से प्रकाशित मालिक—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर



टैलीफोन नं० ३०५७ [आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधिसभा पंजाब जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd. No. P 121

एक प्रति का मूल्य १३ नये पैसे 25-6-65 वार्षिक मूल्य ६ रुपये

वर्ष २५ अंक २७) १४ आषाढ २०२२ रविवार—दयानन्दाब्द १४१— २७ जून १९६५ (तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

वेद सूक्तय:

तपसा युजा विजहि शत्रून्

हे वीर ! आप तप से भरपूर हो कर शत्रुओं को समाप्त कर दो । जितने भी राष्ट्र के घाती हैं, पीड़ा देने वाले वैरी हैं, उन से नरमी का व्यवहार कभी न कर के अपनी पूरी शक्ति से उन को चकनाचूर कर देना है ।

अभिविश्वा असि स्पृधः

हे नायक ! आप विश्वा-सारे स्पृधः—शत्रुओं को अभि-असि—सहन कर सकने की शक्ति रखते हो । वैरी आप का क्या बिगाड़ सकते हैं । सारे वैरियों को आप पराजित करने का बल रखते हो उन को दबा दो ।

त्वं तूर्य तरुष्यतः

हे राष्ट्र के वीर नर ! त्वं-तू तूर्य-नाश कर दे, जो तेरा तरुष्यतः—वध करना चाहता है । जो तेरा या तेरे देश, संस्कृति का शत्रु बन कर आता है, उसे मार दे । उस को नानी याद करा दे । तू वीर है !

दिग्भ्यस्तं निर्भजामः

हे वैरी ! तू चाहे चारों दिशाओं में से किसी भी दिशा में भाग कर चला जा, छिपने का प्रयत्न कर । पर सुन ले—हम सब तुझ को (चारों दिशाओं से उखाड़ कर फैंक देंगे । तुझे मार २ कर मार देंगे ।

ऋग्वेद से

भारत के उच्चकोटि के संन्यासी



पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी जी सरस्वती

जिन की प्रधानता में भारत के आर्य संन्यासियों का विशेष सम्मेलन ता. ११ जुलाई ६५ को आर्य समाज हनुमान रोड नई देहली में हो रहा है ।

जीवन का सन्देश

आर्यजगत् के प्रसिद्ध तपस्वी सन्त महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज के प्रवचन बड़े महत्व भरे होते है जीवन बना देते है । बारह महीने निरन्तर भ्रमण करके ब्रह्मदान देते रहते है ।

अपने एक प्रवचन में सब के नाम एक सन्देश देते हुए कहा—

देश पर सकट आया हुआ है । इसका हमें मुकाबिला करना चाहिए । देश की स्वतन्त्रता के लिए माताओं बहिनो ने भी बलिदान दिए । परन्तु अब हम आराम-परस्त हो रहे है और धन-सग्रह की दौड़ में लगे हुए हैं । देश में रिश्वत बढ़ रही है । गन्दे विचारों के कारण ही हमारे देश की तबाही आई और विभाजन हुआ । शुद्ध विचारों से शरीर भी शुद्ध और स्वस्थ रहता है ।

अधिष्ठाता—श्री संतोषराज जी

सम्पादक—त्रिलोक चन्द्र श

सम्पादकीय—

आर्य जगत्

वर्ष २५] रविवार २०२१, २७ जून १९६५ [अंक २७

आशा और विश्वास

आर्यसमाज के विशाल परिवार की यह विशेषता है कि उसका प्रत्येक अंग अपने-अपने स्थान पर बड़े महत्त्व का सेवा कार्य कर रहा है। नाना प्रकार की प्रवृत्तियां अपने-अपने पुनीत कर्तव्य में लगी हुई हैं। उन महान् घटकों में समाज के संन्यासी महात्माओं का स्थान तो बहुत ही ऊंचा है। आर्यसमाज में पहले तो संन्यासी बनते ही कम हैं। जो बनते हैं उनमें सबका अपना-अपना स्थान है। सारे साधु सन्त समाज सेवा में अपने-अपने पथ पर चलते हुए लगे हुए हैं। स्वर्गीय स्वामी विश्वेश्वरा नन्द जी, महात्मा नारायण स्वामी जी, स्वामी आत्मानन्द जी, स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी आदि तो महान कार्य करके चले गए। श्रद्धानन्द जी व महात्मा हंसराज जी के वैदिक मिशन को कौन भुला सकता है। वर्तमान समय में महात्मा आनन्द स्वामी ने जीवन में समाज की प्रवचनों, उपदेशों तथा साहित्य से सेवा की तथा कर रहे हैं। इसी प्रकार स्वामी ध्रुवानन्दजी, महात्मा आनन्द भिक्षु जी स्वामी समर्पणानन्द जी, स्वा. मुनीश्वरानन्द जी आदि सन्त घूमकर जो ज्योति प्रदान कर रहे हैं उससे बड़े जीवनों का सुधार हो गया। जनता पर संन्यासी के जीवन का विशेष ही प्रभाव पड़ता है। वे अपनी साधना के बाद ही जनता के क्षेत्र में कार्य करने निकलते हैं। इसलिये उनकी वाणी जनवाणी या युग वाणी बन जाती है। लोगों में महात्माओं पर बड़ी श्रद्धा होती है। ये युग निर्माता होते हैं। आर्यसमाज को अपने इन मान्य सन्तों पर बड़ा मान है। इन को आवाज में सारा समाज बोलता है। इनका कार्य सर्वजनीन होता है।

वर्तमान राष्ट्र के भोगमय वातावरण तथा समाज में फैलने वाली निराशा की भावना को देख कर आर्य समाज के श्रद्धास्पद संन्यासी बेचैन हो उठे हैं। समाज में प्रगति लाने के लिए तथा जन-जीवन को झंझोड़ने के लिए विशेष कार्यक्रम की योजना तैयार होने लगी है। आर्यसमाज के तपस्वी, मधुरभाषी सदा प्रसन्न महात्मा आनन्द स्वामी जी की अध्यक्षता में इसी जुलाई मास की ता. ११ को आर्यसमाज हनुमान रोड नई देहली में भारत के आर्य सन्यासियों की एक विशेष महत्त्वपूर्ण बैठक हो रही है। यह बैठक केवल बैठक नहीं होगी वरन् सन्यासी मण्डल इस में विशेष कार्यक्रम बना कर समाज में शंखनाद कर के जनता को विशिष्ट योजना देंगे। सारा समाज इसी ओर अपनी आंखें लगाये बैठा है। आज सारा समाज तारों के समान अलग २ हो रहा है। इसमें स्वार्थ की भावना भर गई है। निजहित ने परहित को दबा दिया है। सर्वत्र भ्रष्टाचार का बोलबाला है। आर्य समाज का संन्यासी मण्डल मैदान में निकला है। प्रभु कर कि यह पवित्र मिशन सफल हो कर सञ्जीवनी का काम करे।

—त्रिलोकचन्द्र

पंजाब के प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री श्री सूर्यभानु जी को आर्यजगत् तथा आर्य परिवार की ओर से बधाई

आर्यसमाज के सब क्षेत्रों में यह समाचार अत्यन्त हर्ष से सुना गया कि श्री सूर्यभानु जी, जो कि प्रांत के महान् शिक्षा शास्त्री हैं तथा पंजाब की आर्यसमाजों के तथा डी. ए. वी. कालिज संस्थाओं के महान् नेता हैं, उनको पंजाब विश्वविद्यालय का उपकुल पति वाइस चांसलर नियुक्त किया गया है।

श्री सूर्यभानु जी ने डा. ए. वी. संस्थाओं तथा इंगलैंड में उच्च शिक्षा प्राप्त की है। शिक्षा के क्षेत्र में उनका प्रिंसिपल के रूप में, अनेक संस्थाओं के अध्यक्ष के रूप में, डी. ए. वी. कालिज मैनेजिंग कमेटी के मान्य सदस्य के रूप में तथा कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के उपकुल पति के रूप में काम करने का बहुत विस्तृत और उच्च कोटि का अनुभव है। उनका शिक्षा समस्याओं का अध्ययन भी बहुत गहरा है तथा शिक्षा कार्यों का व्यावहारिक ज्ञान भी बहुत ऊंचा है।

पंजाब के कालिज-शिक्षा के क्षेत्र में उनका स्थान निश्चित रूप से सर्वोच्च है।

उनके पंजाब विश्व विद्यालय के उपकुलपति होने से यह महान विश्व-विद्यालय देश भर के विश्व-विद्यालयों में महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर सकेगा इस बात की पूरी आशा है।

आर्यजगत की ओर से तथा समस्त आर्यसमाज परिवार की ओर से उनको इस उच्च पद को प्राप्त करने पर बहुत २ बधाई।

विश्वविद्यालय के कुल पति, पंजाब के माननीय राज्य पाल जी का भी इस उत्कृष्ट निर्वाचन पर जितना धन्यवाद किया जाए थोड़ा है।

श्री प० सत्यदेव जी विद्यालंकार एम० ए० मन्त्री आर्य प्रादेशिक सभा, जालन्धर

गुरुकुल कांगड़ी विश्व-विद्यालय में नये बालकों का प्रवेश

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के विद्यालय विभाग में नये बालकों का प्रवेश अब हो रहा है। पढ़ाई १ जुलाई से प्रारम्भ हो जायगी। गुरुकुल की उपाधियां सरकार और विश्वविद्यालयों द्वारा स्वीकृत हैं। सरकार ने गुरुकुल को यूनिवर्सिटी स्वीकार कर लिया है।

आश्रम प्रणाली, शुद्ध जलवायु उत्तम आचार व्यवहार इस संस्था की मुख्य विशेषताएं हैं। प्रवेशार्थ प्रार्थना पत्र तथा नियमावली आचार्य गुरुकुल कांगड़ी विश्व-विद्यालय जिला सहारनपुर यू० पी० से मंगाये जा सकते हैं। प्रियव्रत

—आचार्य

आर्यजगत के पाठकों से नम्र निवेदन

आर्यजगत के २० और २७ जून के अंकों में कोई विशेष लेख नहीं दे सके, क्योंकि आर्थिक दृष्टि से विज्ञापनों का प्रकाशन आवश्यक था। अतः पाठक निराश न हों। —व्यवस्थापक

★ उतावला सो बावला

★ मृत्योर्मा अमृतं गमय (मृत्यु से अमृत की ओर चलूं)

अपूर्व त्याग और बलिदान की परमनिष्ठ मूर्त्ति—महात्मा हंसराज

श्री पं. आगुरामजी आर्यपुरोहित

सन् १८८० में जबकि लार्ड आर कोटल भारत देश के मन्त्री थे प्रो० मोक्षमूलर ने इन्हें पत्र लिखा कि यदि इस समय भी ईसाई मत भारत में पांव नहीं जमा सकता तो सोचना होगा कि दोष किसका है? हिन्दुओं को ईसाई बनाने के लिए कितने दृढ़ संकल्प विदेशी राज्याधिकारियों तथा ईसाई-प्रचारकों के उस समय थे, इस बात का अनुमान करना ज्यादा कठिन नहीं है। एक नहीं अपितु अनेक साधन ईसाईयत की बाढ़ को इस देव-भूमि पर लाने के लिये बरते जाते थे। इस साधन को हम 'राज्य-शक्ति' कह सकते हैं। दूसरा प्रकार देखिये। आक्सफोर्ड से जर्मनी में अपनी पत्नी के नाम यह महोदय एक पत्र में लिखते हैं कि मैं वेदों का अनुवाद कर रहा हूं, जिसे पढ़ कर भारत के हिन्दु-ईसाई मत को सहज से ग्रहण कर लेंगे। इनकी वेद पर जो श्रद्धा चिरकाल से चली आ रही है वह जड़-मूल से उखड़ जायेगी। इस साधन को हम 'ज्ञान-बल' कह सकते हैं। एक बोडन महोदय जो आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी में प्रोफेसर थे तथा ईस्ट इंडिया कम्पनी के प्रबन्ध में जिन का विशेष हाथ था, इन्होंने पर्याप्त धन उक्त कम्पनी से इस यूनिवर्सिटी को दिलाया, इस लिये कि वहां संस्कृत की श्रेणी खोली जाये। जिसमें पादरी लोग संस्कृत पढ़ और इसके साहित्य का अध्ययन कर भारत में जाकर वहां के लोगों को आर्य व वेद-धर्म की असारता बतला कर ईसाई बना सकें।

यह तीसरा प्रकार है जिसे हम धन-बल कह सकते हैं। चौथा साधन प्रचार-बल है। जिस का अनुकरण दिल्ली सेंटस्टीफेन कालेज के प्रोफैसर आयरलैण्ड ने किया। कालेज से त्याग-पत्र देकर पादरी बन गया। भारत में इस व्यक्ति ने ईसाईमत का खूब प्रचार किया।

अंग्रेजी राज्य के कर्णधारों को अपने आधनिस्थ राज्यों की प्रजा को सदा से ईसाई बनाने की कैसी कुटिल-नीति तथा सुदृढ़ योजना रही है, इस तथ्य पर एक निर्पक्ष अमेरिकन लेखक श्री परमेसी ने अपनी पुस्तक 'ओरियन्टल एण्ड ओक्सीडेन्टल कल्चर' में पूर्णतया प्रकाश डाला है। वह लिखते हैं कि 'ईसाई मिशनरी न केवल विदेशों में अंग्रेजी साम्राज्य के लिए मैदान ही तैयार करते हैं अपितु जब साम्राज्य अपने पांव जमा लेता है तो इसकी नींव को सुदृढ़ करने के लिए इन्हीं मिशनरियों में काम लिया जाता है। ज्यों ही किसी देश पर अंग्रेजी राज्य अपना पूरा कब्जा कर लेता है त्यों ही उस देश में पादरियों का सैलाब आरम्भ हो जाता है। उदाहरणतया पुर्तगाल और फ्रांस के भारत में पांव जमाने के साथ कैथोलक पादरियों की और बर्तानिया के अधिकार में आने के पश्चात प्रोटैस्ट० मिशनरियों की बाढ़ आ गई।' यही कारण था कि मैकाले ने भारत का शासन संभालते ही यह घोषणा कर दी कि अंग्रेजी-शिक्षा-पद्धति के द्वारा भारत एक शताब्दी में ही अपनी सभ्यता को खो बैठेगा। साथ ही एक कट्टर पक्षपाती शासक के रूप में यह विषैला वक्तव्य देने में भी संकोच न किया कि 'वेद शास्त्र बनाने वालों को इतनी भी बुद्धि नहीं थी जितने कि कुत्ते और बिल्ली को होती है।'

हृदय फट गया यह देख और सुनकर पं० गुरुदत्त जी का, कि यह लोग हमारी प्राचीन वैदिक संस्कृति को नाश करना चाहते हैं।' यह विचार कर लेखनी उठाई और बहुत थोडे समय में इस बाढ़ के मुकाबले में जो अद्भुत कार्य किया वह युगों तक भारत के इतिहास मे आर्यसमाज की कीर्ति को अमर बना रखेगा।

प्रश्न सब से बड़ा यह था कि विदेशी आंगल-भाषा को जो कि राज्य भाषा के रूप में भारतीयों के गले बलात् मढ़ दी गई है किस प्रकार इस के द्वारा ही वैदिक धर्म की प्राचीनता का प्रसार कर न केवल विदेशी शासकों की कुटिल नीति को नष्ट-भ्रष्ट कर इन के ईसाईयत के स्वर्ण स्वप्नों को मिट्टी में मिलाया जाये, अपितु यह भी कि विदेशी शासन को भी इस के द्वारा उखाड़ने का पूरा प्रयास किया जाये। जिस का संकेत वा प्रेरणा महर्षि दयानन्द ने अपने सद्ग्रन्थों में स्वराज्य तथा सार्वभौमिक आर्य-राज्य की स्थापना के लिये दी थी। जिस का वर्णन करते हुए ला० लाजपतराय अपनी आत्म-कथा में लिखते हैं कि 'मैं लाला हंसराज और पं० गुरुदत्त से प्रायः मिला करता था, और हमारी बात-चीत आर्य-समाज और दयानन्द ऐंगलो वैदिक कालेज पर ही हुआ करती थी। हम इन दोनों को स्वदेश भक्ति तथा जातीय-भक्ति का केन्द्र बनाना चाहते थे।

सुधन्य थे महात्मा हंसराज जिन्होंने इस महा तूफान का सामना करने के लिये वैदिक शिक्षा के इस यज्ञ-कुंड में सर्वस्व त्याग के साथ आत्म-बलिदान बलिदान की सर्व-प्रथम आहुति डाल कर दयानन्द कालेज की वैदिक-भावना को भारत के जन-जन के अन्दर भर दिया।

महर्षि दयानन्द जैसे महान् आत्मा की स्मृति में किसी आंदोलन को जन्म देना इतना कठिन नहीं था जितना कि किसी उच्च-शिक्षा प्राप्त व्यक्ति का अपने आप को समिधा बना कर इस यज्ञाग्नि को प्रचण्ड करना।

हंसराज जी ने जब बी. ए. उत्तीर्ण किया उसमें बड़े से बड़े राजकीय पद इन के पांव चूमने को तय्यार थे। यह सन् १८८५ का काल था। परन्तु जब इन्हें पता लगा कि महर्षि की स्मृति में खुलने वाला स्कूल व कालेज धनाभाव के कारण रुक रहा है तब रह रह कर इन के मन में यह प्रश्न घूमने लगा कि जिस ऋषि-महान् ने लोक-हित के लिये अपना सारा जीवन बलिदान कर दिया, उन की स्मृति में चलाये हुए यज्ञ के लिये क्या मैं कुछ नहीं दे सकता? व्याकुलता पर व्याकुलता बढ़ती गई।

अन्ततः कठोर निश्चय कर अपने ज्येष्ठ भ्राता मुल्खराज के पास पहुंच गये। 'बहुत दुःख की बात है कि दयानन्द कालेज जैसा कल्याणकारी कार्य धनाभाव के कारण शिथिल हो रहा है। मेरी इच्छा है कि बिना पैसा लिये अपना जीवन इस के लिये दान कर दूं। परन्तु यह काम आप की सहायता के बिना नहीं हो सकता।'

ज्येष्ठ ने अनुज के महान संकल्प को सुना। मन में हर्ष हुआ। उस समय ला० मुल्खराज ८०) रु. मासिक पाते थे। ४० रु. आधा वेतन हंसराज जी के निर्वाहार्थ निश्चित कर दिया। दोनों भाइयों ने त्याग का दृढ़ निश्चय कर लिया। एक ने अपने सारे जीवन का और

(शेष पृष्ठ ८ पर)

अपूर्व त्याग थो

(पृष्ठ ७ का शेष)

दूसरे ने अपनी आधी जीविका का।

अन्ततः वह महान शुभ घड़ी आई जब कि आर्यसमाज लाहौर के प्रधान को अपना कुछ लेने के जीवन दान की प्रतिज्ञा-पत्र स्नातक हंसराज जी ने दे दिया और ३ नवम्बर १८८५ को आर्य समाज की अन्तरङ्ग सभा ने अपार हर्ष और शतशः धन्यवाद के साथ इसे स्वीकार कर लिया।

हंसराज महात्मा बन गये। चहुँ ओर हर्ष का उमड़ा हुआ सागर था और उठ रही थी जन-जन के हृदय से मंगल कामनायें 'महात्मा हंसराज अमर रहे।'

महात्मा जी का जन्म १९ अप्रेल १८६४ में बिजवाड़ा जिला होशियारपुर (पंजाब) में हुआ। १८८५ में लाहौर मिशन-कालेज से बी. ए. पास किया। ३ नवम्बर १८८५ को जीवन दिया। १८८९ में डी. ए. वी. कालेज लाहौर के प्रिन्सिपल बने। १९१३ में विश्राम लिया। १८९४ से १९३८ तक

नवम्बर १९२८ ... न

महान लीला का अन्त हो गया।

२६ वर्ष डी. ए. वी. आंदोलन की सेवा और इतना ही काल आर्य समाज की सेवा के लिए महात्मा जी ने अत्यन्त हर्ष के साथ गरीबी के जीवन को अपने लिए चुना। भारी राज्य पदों और अनेक चमकीले सांसारिक स्वार्थों का परित्याग करके।

निःसन्देह निष्काम सेवा का यह महान आदर्श इतिहास के अन्दर बेजोड़ उदाहरण बना रहेगा।

केवल यही नहीं अपितु सम्पूर्ण जीवन का यदि हम अध्ययन करें तो हमें बलिदान की पराकाष्ठा महात्मा जी के महान जीवन में पग-पग पर दृष्टि-गोचर होगी।

श्रीमद् भगवद् गीता का यह उपदेश आपके वीत राग जीवन में साक्षात मूर्तिमान होता दीख रहा है।

अनाश्रितः कर्मफलं कार्यं कर्म करोति यः।
स संन्यासी च योगी च न निरग्नि र्न चाक्रियः॥

अजमेर की अर्ध-शताब्दी चल रही थी। बात निकल पड़ी कि महात्मा हंसराज पर जोर दिया जाये कि वह सन्यासाश्रम को ग्रहण करलें। स्वामी सर्वदानन्दजी महाराज प्रायः लाहौर में महात्मा जी के पास आकर ठहरते थे। स्वामी अच्युतानन्द जी ने कह दिया हंसते हुए कि यह कार्य स्वामी सर्वदानन्द जी को सौंपा जाए जो कि साथ बैठे थे। इस वीत राग संन्यासी ने यह सुन तुरंत ही कह दिया कि भाई, ऐसे व्यक्ति को जो कि अपने युवा काल से ही संन्यासाश्रम में प्रविष्ट हो चुका है मैं कैसे साहस कर सकता हूं कुछ और कहने का।' भगवान हम सब को इनके सुपथ पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे।

तरावड़ी का उत्सव

आर्यसमाज तरावड़ी जिला करनाल का उत्सव वर्षों बाद समारोह से सम्पन्न हुआ। श्री चौ० इन्द्रसिंह जी प्रधान, चौ० होन्दा राम जी युवक मन्त्री जी, श्री साधुराम जी, चौ० तेलूराम जी आदि सब के उत्साह से मनाया गया। जल्से में स्वामी रामेश्वरानन्द जी एम. पी. श्री पं० विश्वम्भर दत्त जी, पं० त्रिलोक चन्द शास्त्री, प्रो० उत्तम चन्द जी एम० ए० प्रिं० मेला राम जी बर्क, श्री वीरू राम जी एम० ए०, श्री राम प्रकाश जी एम० ए०, डा० गणेशदास जी, चौ० शिव राम जी, ठाकुर दुर्गासिंह जी करनाल मंडल, पं० चन्द्रसेन जी, पं० जगत राम जी, चौ० रत्थासिंह जी, डा० मोहन लाल जी आदि पधारे। सभा को ५१) रु० वेद प्रचार मिला।

अति ज़रूरी इतला

Rs. 30 Crores Earned From General Insurance In 1963

NEW DELHI, June 19 (PTI)

The net premium income in India in all classes of general insurance business of Indian insurers increased to Rs. 30.01 crores in 1963 from Rs. 26.54 crores in 1962.

In the case of non-Indian insurers, the net premium income in India in all classes of general insurance business increased to Rs. 10.11 crores in 1963 from Rs. 9.06 crores in 1962.

मुद्रक व प्रकाशक श्री सन्तोषराज जी आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर द्वारा वीर मिलाप प्रैस, मिलाप रोड जालन्धर से मुद्रित तथा आर्यजगत कार्यालय महात्मा हंसराज भवन निकट कचहरी जालन्धर शहर से प्रकाशित मालिक—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर



टेलीफोन नं० ३०५७ [आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधिसभा पंजाब जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd. No. P. 1

एक प्रति का मूल्य १३ नये पैसे वार्षिक मूल्य ६ रुपये

वर्ष २५ अंक २८) २१ आषाढ़ २०२२ रविवार—दयानन्दाब्द १४१— ४ जुलाई १९६५ (तार 'प्रादेशिक' जालन्ध

वेद सूक्तय:

वेद के वीरता भरे वचन

दिवस्तं निर्भजाम:

कोई शत्रु चाहे वह द्युलोक से हम पर आक्रमण करे या हमला करके द्युलोक में भी बचने के लिए चला जाये—परन्तु वह सुन लेवे कि हम उसे द्युलोक से भी उखाड़ कर फैंक देंगे। वहां भी उसका कचूमर निकालेंगे।

उद्वृह रक्ष: सहमूलम्

हे इन्द्र! नायक वीर नर! जो रक्ष:—राक्षस है, वैरी बनकर आक्रमण करता है—उस का सहमूलम्—मूल सहित जड़सहित उद्वृह—उखाड़ कर फैंक दे उस की सारी शक्ति छिन्न-भिन्न कर दे उसका समूल नाश कर डाल।

दहन् रक्षांसि विश्वहा

जितने भी रक्षांसि—राक्षस हैं, मान व शरीर में राक्षस बन कर विनाश अत्याचार की आग भड़काते फिरते हैं उन सब को सदा ही जला डाल। अपने तेजोबल, शस्त्रबल से समाप्त कर दे। किसी को बचने मत दे।

अग्ने तिग्मेन दीदिहि

हे अग्निमय वीर! आप अपने तिग्मेन—तेजोबल से, प्रताप से, शक्ति से, दीदीहि—चमकता रह। अग्नि के समान चमकता हुआ अपने वैरियों को राष्ट्रघातियों को, हमला करने वालों को अपनी बल की आग में जला डाल—भस्म कर दे।

ऋ ग वे द से

वे दा मृ त

ओ३म् त्वं नो अग्ने महोभि: पाहि विश्वस्या अराते:। उत द्विषो मर्त्यस्य ॥ साम आग्नेय कांड।

अर्थ—हे अग्ने-अग्निमय (त्वम्) न (न:) हमें (महोभि:) उत्तम साधनों द्वारा (पाहि) रक्षा करो (विश्वस्या:) सब प्रकार के (अराते:) सुख न देने वाले पुरुष से बचा (उत) तथा (द्विष:) द्वेषी (मर्त्यस्य) मनुष्य से रक्षा कर। जो हमें दु:ख देता है और हमसे द्वेष करता है—ऐसे लोगों से, शत्रुओं व विरोधियों से हमारी रक्षा करो।

भाव—हे अग्ने-अग्निमय राष्ट्र के वीर नेता। आपका नाम अग्नि है। अग्नि के समान आप में गति है। आप सारी जनता के आगे चलने वाले नायक हैं तथा सारे समाज एवं देश को प्रगति के पथ पर आप स्वयं आगे रहकर आगे ले जाने वाले हैं। अग्नि के समान विरोधियों को जला देने की शक्ति आप में है। अग्निमय हो। हम आशा तथा विश्वास से यही कहते व चाहते हैं कि जो भी समाज, राष्ट्र, आचार तथा मानवता के विरोधी हैं, द्वेषी हैं, जो देवगुणों का परित्याग करके राक्षस बनकर सारे समाज के लिए विपत्तियों का कारण बनते हैं। विनाश के उपद्रव मचाकर जीवन को मौत में बदलते रहते हैं। हे नायक रूप अग्निमय वीर! उन सबको अपनी वीरता की ज्वाला की लपेट में लेकर भस्म कर डाल। अग्नि के समान उनकी सारी सत्ता को राख बना दे। सारा समाज राक्षसों से रहित बना दे।

—सं०

ऋषि दर्शन

आचार्यो विद्याध्यापक:

आचार्य उसे कहा जाता है जो कि अपने शिष्य को उत्तम विद्या एवं ऊंचा ज्ञान देता है। अपने आचरण के द्वारा शिष्य के आचार विचार व्यवहार को बनाने के लिए उसे हर प्रकार की योग्य विद्या प्रदान करता है।

धर्मानुष्ठानेन

तथा आचार्य वह है जो धर्म का सदा अनुष्ठान करता है। स्वयं धार्मिक हो कर अपने शिष्य को धर्म क पथ पर चलाता है। स्वयं अनुष्ठान करके उस से भी अनुष्ठान कराता है। उसे ही आचार्य कहा जाता है।

विद्यायुक्तो विद्वान्

विद्वान् उस को कहते हैं जो कि विद्या से भरपूर हो। विद्या वह है जो सत्य-असत्य में विवेचन का काम कर सके। पुस्तकी विद्या का नाम विद्या नहीं वरन् आचरण में लाना ही विद्या है—

महाधन: संग्राम:

संग्राम, युद्ध को बड़े धनों वाला कहा गया है। राष्ट्र के जीवन में संग्राम का भी ऊंचा स्थान है। इससे देश में उत्साह, देशभक्ति की भावना तथा शत्रु दमन होकर अनेक धन सम्पत्तियों की प्राप्ति होती है—

भा ष्य भू मि का से

अधिष्ठाता—श्री संतोषराज जी सम्पादक—त्रिलोक चन्द्र

धर्म चर्चा

तेरी मित्रता अनश्वर है

(ले०—श्री सत्य भूषण जी वेदालंकार नई दिल्ली)

ऋग्वेद मं. ६ सू० ४५, मंत्र, २९

इस प्रकार है "दूणाशं सख्यं तव गौरसिवीर गव्यते । अश्वो अश्वायते भव । शंयुः अतिस्यतः इस मंत्र का ऋषि और इन्द्र देवता है । गायत्री इन्द्र है । इस छोटे से मंत्र में इन्द्र, परमैश्वर्य शाली प्रभु की मित्रता की कामना की गई है । हे वीर, बलवान प्रभो । तेरी मित्रता 'दूणाशं'दुर्णाशं', दुनाशं, दुष्करेण नष्टुं योग्य, कठिनाई से नष्ट होने वाली है । संसार के पदार्थों और ईश्वर से सख्य, मित्रता में बड़ा भेद है । वेद में बताया कि बलवान् प्रभो ! संसार के पदार्थों की मित्रता तो शीघ्र ही नष्ट होने वाली, क्षणभंगुर है । विश्व के प्रिय से प्रिय पदार्थ को लीजिए वह आप को अल्पकाल के लिए ही सुख दे सकेगा । पुत्र, कलत्र, धन-वैभव सभी की वही दशा है । आप की अपनी ज्ञानेन्द्रियां आंख, कान, नाक आदि आज स्वस्थ हैं, पर वृद्धावस्था में वही जवाब दे जाएंगी । तब चाहेंगे, कि मेरे दांत शीघ्र निकाल दिये जावें । इसी प्रकार प्रत्येक इन्द्रिय की दशा है । किन्तु प्रभु की मित्रता क्षणभंगुर नहीं उसका नाश असम्भव है । उसकी मित्रता से अपार आनन्द उपलब्ध होता है । उसकी उपासना से कोई पीड़ा नहीं होती । पीड़ा हो भी क्यों ? वह सच्चिदानन्द स्वरूप जो हुआ । प्रकृति सत्स्वरूप है । वह होते हुए भी जड़ है । यदि जड़ पदार्थों की ओर मोह बढ़ाएंगे, तो जड़ता ही प्राप्त होगी । अतः अपना ध्यान प्रभु की ओर लगा इष्ट, जो आनन्द का अथाह सागर है । "हेयत्वा वचनाच्च" (वे० द० अ० १. सू० ८) ब्रह्म को हेय, छोड़ने योग्य किसी शास्त्र में नहीं कहा । दुनिया के अन्य सभी पदार्थ हेय हैं । हम उन्हें नहीं छोड़ेंगे, तो वे ही हमें एक दिन छोड़ जाएंगे ।

उन्हें छोड़ना ही पड़ेगा । किन्तु प्रभु कदापि हेय नहीं । मंत्र में आगे कहा गया, "गौ रसि वीर गव्यते"—प्रभो ! आप गाय चाहने वाले के लिए गाय और घोड़ा चाहने वाले के लिए घोड़े हैं । इस का क्या तात्पर्य । केवल अभिधा से नहीं अपितु लक्षणा से इस का अभिप्राय लेना चाहिये । प्रभु का सच्चा उपासक उस से जो वस्तु मांगता है, उसे वह प्राप्त हो जाती है । इसका अर्थ यह नहीं कि आप पुरुषार्थ करना ही छोड़ दें । पुरुषार्थ तो परम आवश्यक है । अतः प्रभु को वीर, बलवान् कहा गया है । "नाय मात्मा बल हीनेन लभ्यः ।" पुरुषार्थ तो करना ही होगा किन्तु भगवान् हमारी कमी को अवश्य पूरा कर देंगे । एक बार श्री रामकृष्ण परम हंस ने अपने भक्तों को उपदेश देते हुए अन्त में कह दिया कि बहुत दिनों के बाद आज हमारी इच्छा मिठाई खाने की है । कहते हैं, तत्काल एक भक्त तभी उनके लिए मिठाई की थाली लिए आ आ गया । ऐसे अनेक उदाहरण हैं । अतः हमें ईश्वर की सच्ची जिज्ञासा प्राप्त करने का पहले अधिकारी बनना चाहिए । तभी हमारे सब मनोरथ पूर्ण होंगे । पर, आज दशा इससे विपरीत है । भौतिकवाद का साम्राज्य है । हम पागल हो गये हैं, सांसारिक पदार्थों के पीछे । उस से सुख की आशा करना, दराशा मात्र है ।

क्योंकि :—

"जब सत्य भाव प्रभु से,
मानव का होता है ।
तब मिटतीं सब विपदाएं,
कल्मष धोता है ।
जब तक है कलुष भावनाएं
इस मानस में ।
जब तक है दमन और अनृत
जीवन पथ में ।।
हिय में स्वर्गीय भावना
कैसे आ सकती ।
कैसे मंगलमय मुक्ति
मार्ग दिखला सकती ।
चर अचर सृष्टि में
आत्म भाव हो जाता है ।
तब मिटते हैं सब क्लेश
मनुज सुख पाता है ।।

मधु-कलश

अपनी मन भावन मस्ती की मुस्कान नहीं बेचूंगा मैं
जिन में मेरा सर्वस्व मुखर वह गान नहीं बेचूंगा मैं
यदि करना है तो तुम केवल मेरी मेहनत का मोल करो
चांदी के कतिपय टुकड़ों में ईमान नहीं बेचूंगा मैं

★

सब को सब का अंश विधाता देता न्यारा न्यारा
क्या कीड़ी, क्या कुंजर साथी पलता है जग सारा
फिर भी धर कर हाथ हाथ पर हरगिज बैठ न जाना
कर्म क्षेत्र में रहें कर्म रत है कर्त्तव्य हमारा

★

लाख बुरा बतलाये दुनिया बिल्कुल मत घबराओ
हिम्मत करके सत्य पथ के ऊपर बढ़ते जाओ
किया करे तारीफ़ ज़माना सुनी अनसुनी कर दो
ग़लत राह पर तुम सपने के अन्दर तक मत जाओ

—विजय निर्बाध

आर्यसमाज लक्ष्मणसर

(अमृतसर)

आर्य जगत बधाई का पात्र है जिस को इन्हीं दिनों दो अतीव हर्ष-जनक समा- चार सुनने को मिले । एक तो श्रीयुत लाला भगवानदास जी का पांच वर्षों के पश्चात पुनः पंजाब में शुभागमन और डी. ए. वी. कालेज अम्बाला का चार्ज सम्भालना है । इन के शोलापुर चले जाने से पंजाब में आर्य समाज और इस के विशाल शिक्षा क्षेत्र में जो महान क्षति उत्पन्न हो गयी थी वह अब शीघ्र पूरी होगी और इन्हें नया जीवन प्राप्त होगा ।

दूसरा शुभ समाचार श्रीयुत लाला सूर्यभानु जी का कुरुक्षेत्र यूनिवर्सिटि के एडमिनिस्ट्रेशन के सम्बन्ध में लगाये गये आक्षेप रूप बादलों को चीर कर निर्मल रूप में बरी घोषित होना तथा पहले से बहुत ऊंचे पद अर्थात् पंजाब यूनिवर्सिटि के वाइस चान्सलर नियत किये जाना आर्य जगत के लिये अत्यन्त हर्ष और गर्व का विषय है । निःसंदेह आर्य समाज और इसकी संस्थाओं में ऐसे रत्न छुपे पड़े हैं जिनकी सुयोग्यता की झलक बाहरी जगत के सामने आने पर ही उन के वास्तविक मूल्य का अनुमान लगता है ।

हम इन दोनों महानुभावों को शुभ इच्छाओं सहित हार्दिक बधाई देते हैं कि वह अपने नए आसनों पर आरूढ़ होकर अपनी तथा आर्यसमाज की ख्याति को और भी चार चांद लगाएंगे ।

सम्पादकीय—

आर्य जगत्

वर्ष २५] रविवार २०२१, ४ जुलाई १९६५ [अंक २८

महात्मा हंसराज शताब्दी

पंजाब के निर्माता, शिक्षा क्षेत्र के महान् स्तम्भ, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब, सिन्ध, बिलोचिस्तान के संस्थापक, त्याग-तप की अनुपम सजीव मूर्ति स्वर्गीय महात्मा हंसराज जी की जन्म शताब्दी का समारोह आर्य प्रादेशिक सभा पंजाब जालन्धर के सारे मान्य कार्यकर्ताओं ने मिल कर गत अप्रैल को जालन्धर में बड़ी ही धूम धाम से मनाया। सभा के प्रधान श्रीयुत यश जी ने इस के लिए बड़ा प्रयत्न किया। आपने डी० ए० वी० कालेजों, स्कूलों, आर्यसमाजों तथा मान्य परिवारों ने मिल कर इस में सहयोग दिया। वह समारोह बड़ा शानदार था, महान् एवं बड़ा रहा। सभा ने निर्णय किया था कि जालन्धर में अप्रैल से इस जयन्ती का प्रारम्भ करके आने वाले १५ नवम्बर को इस समारोह की पूर्णाहुति भी जालन्धर में ही इसी प्रकार के भव्य समारोह के साथ सम्पन्न होवे। बीच में नाना-स्थानों में उन २ समाजों के मान्य भाई बहिनों व विशाल संस्थाओं के सहयोग से जालन्धर जैसे और भी जयन्ती के समारोह होते रहें। इस सम्बन्ध में विचार विनिमय के साथ यह भी निश्चय किया गया था कि जालन्धर के बाद अमृतसर, जम्मू, हिसार, यमुनानगर तथा देहली आदि स्थानों पर भी ऐसे समारोह किये जायें। सारे सज्जनों में बड़ा उत्साह था। जनता इस भ्रम में न रहे कि महात्मा हंसराज शताब्दी जालन्धर में मनाई जा कर समाप्त हो गई है। ऐसी बात नहीं। जालन्धर में तो जयन्ती का सुन्दर प्रारम्भ हुआ था और १५ नवम्बर को यहीं इस शताब्दी की पूर्णाहुति भी इसी प्रकार शानदार रूप से होगी। अप्रैल से नवम्बर तक यह क्रम से चल रहा है तथा इसी प्रकार चलता रहेगा।

अमृतसर नगर में आर्यसमाज का विशाल केन्द्र है। बड़ी २ आर्य समाजें हैं। आर्यसमाज लोहगढ़, लारेंस रोड, लक्ष्मणसर, नवांकोट, श्रद्धानन्द बाजार, उत्तम नगर, पुतलीघर, माडलटाऊन, कटड़ा सफेद, छहरटा, खापड़ खेड़ी आदि अनेक समाजें हैं। भवन भी शानदार हैं तथा सज्जनों की भावनाएं भी शानदार हैं। आर्यसमाज का उत्साह-भरा रूप मिलता है अमृतसर में। दयानन्द कालेज व स्कूलों की भी विशाल छावनियां हैं। यह नगर व्यापार का केन्द्र है। वहां के मान्य नेताओं भाई-बहिनों ने शताब्दी समारोह मनाने के लिए अभी से शानदार तैयारियां आरम्भ कर दी हैं। यहां का समारोह भी अपनी शान का निराला ही होगा। इसी प्रकार हिसार जिला भी समाज का भारी केन्द्र है। यमुनानगर में भी कमाल का जोश है। देहली तो राजधानी है। सब स्थानों पर अलग २ समय-तारीखों में जयन्ती मनाई जायगी। प्रान्त की जनता अपने उत्साह को कम न होने दे। अब तो मान्य आर्य समाज के नेता प्रिंसिपल भगवान् दास जी भी शोलापुर से वापस अम्बाला दयानन्द कालेज में वापस पधार गये हैं। उनका पधारना भी अम्बाला व पञ्जाब में नया जीवन का कारण होगा।

सब स्थानों पर खूब तैयारी हो रही है। जनता उसी उत्साह से भर कर उस महापुरुष की स्थापित सभा आर्य प्रादेशिक सभा जालन्धर को वेद प्रचार के महान् मिशन में तन मन धन से सहयोग दें।

—त्रिलोकचन्द्र

स्वागत और बधाई

माननीय प्रिंसिपल सूर्यभानु जी एम. ए. शिक्षा क्षेत्र में विशेष ध्यान रखते हैं। अपनी गम्भीरता तथा योग्यता, प्रबन्ध पटुता के विशिष्ट गुणों से कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के उप-कुलपति जैसे ऊंचे आसन पर विराजमान हुए। वहां जाकर कुरुक्षेत्र यूनिवर्सिटी को बहुत ऊंचा कर दिया। आज वह विश्वविद्यालय देखकर कौन माननीय उपकुलपति की भूरि-भूरि प्रशंसा नहीं करेगा। यूनिवर्सिटी को कहां से उठाकर कहां पर पहुंचा दिया। अब पंजाब प्रान्त के सम्माननीय राज्यपाल महोदय ने माननीय प्रिंसिपल सूर्यभानु जी को पंजाब यूनिवर्सिटी चण्डीगढ़ का वाईस चांसलर नियुक्त कर दिया है। आर्यजगत की ओर से मान्यवर प्रिंसिपल जी का इस शिक्षा के इस प्रान्तीय महान् केन्द्र पंजाब विश्वविद्यालय के उपकुलपति जैसे सम्मान योग्य ऊंचे आसन पर विराजमान होने के लिए हार्दिक स्वागत करते हैं तथा इसके लिए बहुत २ बधाई देते हैं।

मान्यवर प्रिंसिपल सूर्यभानुजी पंजाब व देश में एक माने हुए शिक्षा शास्त्री हैं। आरम्भ से ही आपने प्रभुदत्त विशेष योग्यता से शिक्षा क्षेत्र में शानदार काम किया। आपने लण्डन विश्वविद्यालय में रहकर एम. ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की तथा विश्वविद्यालय में अपने समय में प्रथम आये थे। भारत में आकर आपने आर्यसमाज की डी. ए. वी. संस्थाओं में प्रिंसिपल बन कर बड़ा ही शानदार काम किया। जालन्धर में दयानन्द कालेज के प्रिंसिपल बन कर कालेज को सारे प्रांत में एक सर्वश्रेष्ठ कालेज बना दिया। धर्म में भी आप की रुचि है। बिना सन्ध्या किए माननीय प्रिंसिपल भोजन नहीं करते। यह बात हमारे मान्य प्रिंसिपलों के जीवन की विशेषता है। बालपन के पवित्र रङ्ग का ही प्रभाव है। आर्य प्रादेशिक सभा के प्रधान के ऊंचे पद पर भी विराजमान रहे। सभा की बड़ी सेवा की। समाजों के उत्सवों पर भी जा कर अपना अनुभव भरा प्रवचन देते रहे। आप को मिलने के लिए हर समय भी द्वार खुला था। आज पंजाब यूनिवर्सिटी के वायस चांसलर जैसे उत्तरदायित्व पूर्ण स्थान पर आसीन हुए हैं। हार्दिक बधाई के साथ हम आशा करते हैं कि आपके समय में यह विश्वविद्यालय प्रांत व देश में विशेष ख्याति को प्राप्त करेगा। पुराने वायस चांसलर ने प्रभाकर आदि हिन्दी परीक्षाओं के साथ जो कठोर व्यवहार किया है उसका निकारण भी करेंगे।

—सं०

तब और अब के आर्य...

(पृष्ठ ६ का शेष)

गले लगाया था, पीड़ित का दुःख दर्द मिटाया था, भूखे को खिलाया था, प्यासे को पिलाया था, नंगे को पहिनाया था, डूबते को बचाया था, सोते को जगाया था, लेटे को बिठाया था, बैठे को उठा कर दौड़ाया था। सारांश एक आर्य का कर्त्तव्य पूरा निभाया था।

परमात्मा करें कि आर्यसमाज का वह सुनहरी युग फिर आंखों से देख सकें।

नारी स्तम्भ—

सम्पादिका—सुशीला जी आर्या एम. ए., आर्ष कन्या, गुरुकुल नरेला (देहली)

गृह पत्नियों के सुन्दर आभूषण

कुमारी सन्तोष जी
एम० ए०, एम० ओ० एल०

नारियां प्रत्येक राष्ट्र तथा जाति का गौरव होती हैं। जिस देश की नारियां जितनी सभ्य, सुसंस्कृत, सुशिक्षित तथा अन्य नार्य्योचित गुणों से सुसज्जित होती हैं, उतना ही वह देश दिन-प्रतिदिन उत्कृष्टता की ओर बढ़ता चला जाता है। गुण-सम्पन्न नारियां ही अपने घर को स्वर्ग-धाम बना सकती हैं, समाज का सुधार कर सकती हैं तथा राष्ट्र का मस्तक ऊंचा करने में समर्थ हो सकती हैं।

वेद में स्थान-स्थान पर स्त्रियों के विषय में उपदेशात्मक मन्त्र दृष्टिगोचर होते हैं। ऋग्वेद के दशम मण्डल के एक मन्त्र में स्त्रियों के लिए षड्-भूषणों का विधान किया गया है।

इमा नारीरविधवा: सुपत्नीरांजनेन
सर्पिषा सं विशन्तु
अनश्रवोऽनमीवा: सुरत्ना आ
रोहन्तु जनयो योनिमग्रे।
ऋग्० १०/१८/७

ये पति से अविरहित साध्वी नारियां पति की उत्तम धर्मपत्नी हो कर शरीर के सौंदर्य तथा स्नेह से सुशोभित हो कर घर में प्रवेश करें। अश्रु विहीन, रोगरहित, सुन्दर रत्न, आभूषणादि व रम्य गुणों तथा सुव्यवहारों वाली, आदर्श सन्तानों को उत्पन्न करने में समर्थ स्त्रियें, प्रथम सम्मान-पूर्वक घर में आवें अथवा रथ-यानादि पर आरूढ़ होवें।

प्रथम सुन्दर भूषण है नारियों का सदा साध्वी रहना। अविधवा रहना। अच्छी स्त्रियां कभी भी किसी परिस्थिति में भी अपने पतिदेव का संग नहीं छोड़तीं। पतिवियुक्ता नारी समाज की दृष्टि में पतिता हो जाती है। स्त्रियों का अमूल्य गहना उनका पति है। सती नारियां कभी स्वप्न में भी पति से वियुक्त नहीं होतीं। अतः प्रत्येक स्थान पर नारी को चाहिए कि वह अपने पति का साथ देवे। सीता का ज्वलन्त उदाहरण हमारे सामने है। राजकुमारी होकर भी समस्त वैभव सुखों का उपयोग करके भी, वह वन में पति के साथ गई। कांटों पर शयन किया, भूखी प्यासी रही, कन्दमूल खाकर जीवन-यापन किया और इसी तरह अनगिनत कष्ट सहे, परन्तु पति से वियुक्त नहीं हुई। सुख में, दुख में, सदा उसके साथ रही।

नारियों का दूसरा आभूषण है सुपत्नी होना। नारियों के लिए सुघड़ गृहिणी होना अत्यन्त आवश्यक है। उसे समस्त गृहकार्यों में दक्ष तथा प्रवीण होना चाहिए। कोई घर में आये, उससे मीठा बोलना, उसको भोजन कराना, उसका हर प्रकार से सम्मान करना नारियां में सेवा करने का गुण होना चाहिए। आतिथ्य-कार्य में निपुण देवियां प्रत्येक अतिथि का आशीर्वाद प्राप्त करती हैं। जहां स्त्रियां सुगृहिणी होती हैं, वहां श्री तथा लक्ष्मी निवास करती है। अच्छी स्त्री, सुपत्नी, सदा पूजा के योग्य होती है और जिस घर में नारियों की पूजा होती है वह घर सुर-धाम बन जाता है। मनुस्मृति में कहा गया है—

'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते
रमन्ते तत्र देवता।'

इस कथन में किंचित मात्र भी अतिशयोक्ति दृष्टिगोचर नहीं होती।

मन्त्र में "अनश्रव": शब्द का प्रयोग किया गया है। अनश्रु होना, कभी आंसू न बहाना, सदा प्रसन्न रहना, यह नारियों का तीसरा आभूषण है। घर में मुस्कराती हुई स्त्री को देखकर सब की थकान तथा क्लान्ति जैसे दूर हो जाती है। वह स्वयं भी हंसे और दूसरों को हंसाकर उनमें नव-जीवन तथा स्फूर्ति का संचार करे। प्रसन्नता और मुस्कराहट दीर्घायु का रहस्य है।

नारियों का चौथा भूषण है—रोग से रहित रहना। नीरोगता। अच्छा स्वास्थ्य-कान्तिमान् शरीर एक स्वस्थ तन में स्वस्थ मन निवास करता है। शरीर स्वस्थ हो, ओज से परिपूर्ण हो तो समस्त कार्य सरलतापूर्वक हो सकते हैं—तथा इस के साथ ही साथ धर्म-साधन भी हो सकता है। 'शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्' कहा भी है। जो देवियां बीमार तथा दुर्बलता से पीड़ित रहती हैं, वह परिवार के प्रति अपने कर्तव्यों का पालन अच्छी प्रकार नहीं कर सकतीं और इस तरह से वह अपने परिवार, समाज तथा देश पर भारस्वरूप होकर रह जाती हैं। अस्वस्थता से यहां धन की हानि होती है, वहां सौंदर्य का भी विनाश होता है।

पांचवा आभूषण है नारियों का सुरत्ना होना। उत्तम तथा उत्कृष्ट गुण का नाम रत्न है। नारियों को गुण-सम्पन्न होना चाहिए। सच्चरित्रता, लज्जा, मधुरता: सुभाषिणी होना, आकर्षक सौन्दर्य, सुस्वास्थ्य, सुव्यवहार शुद्धता, मानस की पवित्रता, सुशीलता, सदाचार, उच्च-शिक्षा यह सब रत्न हैं। इन रत्नों का

(शेष पृष्ठ ५ पर)

नवभारत के बच्चे

श्रीमती शीला अम्बाला, सैन्ट्रल जेल

मेरे देश के प्यारे बच्चों तुम ने आगे बढ़ना है
बहुत काम बाकी है प्यारो तुमने पूरा करना है।
अभी देश में निर्धनता ने अपने पैर जमाये हैं
हम रोटी की बड़ी समस्या सुलझा अभी न पाये हैं
उठो जवानों देश की खातर तुमको यह श्रम करना है

अन्न मंगावें परदेशों से लज्जा तुम्हें न आती है
गौ का चमड़ा बदले में दें फिर भी फटे न छाती है
अभी हमें तो लाखों भूखों का यह पेट जो भरना है

छोड़ो अब तो जल्दी प्यारों उन सब खेल तमाशों को
खेल प्रेम का खेल खेल कर लेना ठण्डी सांसों को
अरे तुम्हें तो नव भारत निर्माण अभी भी करना है

देश प्रेम के लिये दयानन्द ने निज जीवन वारा था
गुरू गोबिन्द राणा प्रतापको भी निज देश ही प्यारा था
देखो तुमने सब भाईयों ने देश प्यार को भरना है

कलियों से सब कोमल साथी दीवारों में चुनवाए
तुमने ही तो भक्तसिंह से साथी फांसी लटकाए
अब भी पीछे कभी न रहना तुम्हें देश हित मरना है

स्वावलंब जब तक नहीं आवे तुम भी चैन से मत बैठो
करो परिश्रम मन से तन से दिन और रैन में मत बैठो
अरे तुम्हें बापू के स्वप्नों को भी पूरा करना है

वीर सुभाष चन्द्र की कुर्बानी बोलो क्या कुछ कम है
उनकी इच्छा पूरी कर दो यदि तुम में अब भी दम है
शान्त रहो सब मिलकर हित से देश को उन्नत करना है

स्वार्थ त्याग कर प्रेम बढ़ाओ देश को आगे ले जाओ
ऐसे काम काम करो प्यारे इतिहास में तुम यश पाओ
अभिमन्यु से वीर पुत्र हो इसे प्रमाणित करना है

शताब्दी कार्य की प्रगति

पिछले कुछ सप्ताह महात्मा हंसराज शताब्दी कार्य की कोई विशेष सूचना 'आर्य जगत' में न आ सकी। इसका यह अभिप्राय नहीं कि यह कार्य कुछ शिथिल हो गया है। जून तथा जुलाई के मासों में प्रति वर्ष प्रचार का कार्य शिथिल हो जाता है। जुलाई के पिछले सप्ताह से फिर उत्सवों के और कथाओं के कार्यक्रम चलते हैं। यही कारण है कि आजकल कुछ शिथिलता दृष्टिगोचर होती है।

जुलाई मास में कालिजों के खुलने पर एक ओर शताब्दी धन संग्रह कार्य प्रारम्भ हो जाएगा तथा दूसरी ओर इस सम्बन्ध में मनाई जाने वाली उप-शताब्दी-समारोहों का भी कार्य प्रारम्भ हो जाएगा। अब तक के विचार-विनिमय के अनुसार चार स्थानों पर उपशताब्दी समारोह मनाने का विचार चल रहा है। अमृतसर तथा हिसार इन स्थानों पर तो कार्य भी प्रारम्भ हो चुका है। अमृतसर का समारोह तो शायद जालन्धर के समारोह से भी आगे बढ़ जाये। आर्य समाज लारेन्स रोड की ओर से इस सम्बन्ध में विशेष कार्य हो रहा है। पिछले मास आर्य समाज लारेन्स रोड, केन्द्रीय आर्य समाज तथा आर्य समाज लक्ष्मणसर तीनों द्वारा ही प्रचार कार्य विशेष रूप से होता रहा है।

प्रचार की दिशा में तथा आर्य-समाज को आर्थिक रूप से पुष्ट करने की दिशा में अमृतसर का स्थान पंजाब भर में प्रथम है। जालन्धर आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का केन्द्र होते हुए भी उतना सक्रिय नहीं हो पाया।

गर्मियां कुछ कम होने पर आर्यसमाज के प्रचार कार्य की गति के तीव्र होने पर और उत्सवों की परम्परा के चालू होने पर स्वभावतः आर्य जगत का ध्यान म० हंसराज शताब्दी के अवशिष्ट कार्य पर जायगा। अभी तक बहुत कुछ करना है। धन संग्रह अपेक्षा कृत बहुत थोड़ा हुआ है।

उपशताब्दी समारोहों की एक बहुत बड़ी सुन्दर विशेषता पूज्यपाद महात्मा आनन्द स्वामी जी की कथा होगी। आर्य जगत् को यह सुन कर बड़ी प्रसन्नता होगी कि पूज्य महात्मा जी ने शताब्दी सम्बन्धी समारोहों पर समय देने का निश्चय किया है। इस से इन समारोहों की सफलता अवश्य द्विगुणित हो जाएगी, ऐसी आशा रखनी चाहिए।

प्रांत के समस्त आर्य भाइयों को आगे आने वाले मासों में, १५ नवम्बर १९६५ तक शताब्दी कार्य में सब प्रकार पूर्ण मनोयोग से जुट जाना चाहिए।

—सत्यदेव मन्त्री सभा

आर्यजगत के प्रसिद्ध नेता स्वामी ध्रुवानन्द जी सरस्वती का देहावसान

बम्बई २९ जून—आर्य नेता और सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के भूतपूर्व प्रधान स्वामी ध्रुवानन्दजी सरस्वती का आज प्रातः यहां देहान्त हो गया। आपकी आयु ८२ वर्ष की थी।

आर्यसमाजों को इस निधन से जो क्षति हुई है वह पूरी होनी अति कठिन है।

आर्यजगत् के ग्राहकों से निवेदन है चन्दा शीघ्र भेजने की कृपा करें,

साहित्यकार का निधन

साहित्य तथा पत्र कारिता के क्षेत्रों में यह समाचार अत्यन्त दुःख से सुना जायगा कि दिल्ली के सुप्रसिद्ध पत्रकार तथा जीवनी लेखक श्री सत्यदेव विद्यालंकार का दिनांक २६-६-६५ को देहान्त हो गया है। पिछले कुछ ... विद्यालंकार जी अथक अध्ययन परिश्रम के कारण नेत्रहीन हो गए थे। फिर भी उन्होंने अपना कार्य न छोड़ा। नेत्र हीन होने के बाद ही उन्होंने महाशय कृष्ण जी की जीवनी लगातार छः मास परिश्रम कर प्रदर्शित की थी। दिल्ली के अनेक प्रमुख पत्रों के वे जन्मदाता और सम्पादक रहे। पत्र सम्पादन तथा जीवनी लेखन ये उनके विशेष अंग थे।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के वे एक वीर सेनानी थे। वे और उनकी पत्नी अनेक बार जेल गए और न जाने कितने शारीरिक और आर्थिक संकट उन्होंने देश के लिए सहे।

उनकी वाणी सतेज थी, उनका मन जागरूक और उनका तन लगातार परिश्रम का अभ्यासी था।

ऐसे महान पत्रकार तथा साहित्यकार का देहान्त वास्तव में उस देश के सांस्कृतिक पक्ष की न पूरी होने वाली क्षति है।

आर्यजगत परिवार श्री विद्यालंकार जी के इस निधन पर गहरा शोक प्रकट करता है। उनके परिवार के साथ संवेदना प्रकट करता है तथा परम प्रभु के चरणों में उनकी आत्मा को सद्गति प्रदान करने की प्रार्थना करता है।

—सत्यदेव मन्त्री सभा

नंदा कांग्रेस विधायक दल को सम्बोधित करेंगे

चंडीगढ़ — यहां अधिकृत घोषणा की गई है कि श्री नंदा ६ जुलाई को प्रातः कांग्रेस विधायक दल की बैठक को सम्बोधित करेंगे।

गृह पत्नियों के......

(पृष्ठ ४ का शेष)

धारण करके नारी का रूप जगमगाने लगता है।

अन्तिम तथा छठा आभूषण नारियों का सुजननी होना। उत्तम माता बनना। नारी और पुरुष के प्रेम का प्रतीक होता है उनका ... नारी के विभिन्न रूपों में से सब... माता का रूप होता है। मातृत्व ... का उत्कृष्ट पद है। सन्तान के बिना नारी अपने आपको कहीं से बहुत रीता और खोखला-सा महसूस करती है। परन्तु उन्हें इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि उनकी सन्तान, सुसन्तान हो। वह अपने व्यवहार में, शिक्षा से बच्चों में इस प्रकार के भाव भर दें कि वह बड़े होकर देश के अच्छे नागरिक बन सकें। बच्चे प्रत्येक राष्ट्र का धन, सम्मान तथा गौरव होते हैं। आज के नन्हें शिशु ही कल देश के भावी कर्णधार बनने वाले हैं। इसलिए नारियों को चाहिए कि उत्तम जननियां होकर अच्छे तरीके से बच्चों का पालन-पोषण करें।

वेद माता ने 'अग्ने योनिम् आरोहन्तु' कहकर स्त्रियों की मान्यता और भी बढ़ा दी है। स्त्रियों को पुरुषों से ऊंचा दर्जा दिया गया है। प्रत्येक सार्वजनिक स्थान पर भी प्रथम देवियां प्रवेश करें और पुरुष उनके पश्चात्। इसी प्रकार रथ इत्यादि सवारियों पर भी पहले नारियां आरोहण करें। इस प्रकार सामाजिक व्यवहार में वेदमाता ने नारियों को उत्तम स्थान प्रदान किया है।

अस्तु, नारियों को चाहिये कि वह वेद-विहित इन आभूषणों को यथासम्भव धारण करें तथा अपने जीवन को उन्नति के मार्ग पर अग्रसर करें। जिस से देश, समाज तथा राष्ट्र का कल्याण हो।

ऋषि दयानन्द के महान् तप का प्रभाव

एक गरीब नौकर प्रचारक बन गया

(ले०—श्री बृज लाल जी गुप्ता, टोहाना)

यह महर्षि दयानन्द के महान् तप का प्रभाव ही है कि उन के अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश का अनन्य भी पढ़ता जाता है और हिन्दू समाज में फैली हुई कुरीतियों को जड़ से उखाड़ने के लिये प्रयत्न करने लगता है।

बनेर सिंह जिसे हम सब घर में बनारसी दास के नाम से पुकारते हैं टीहरी गढ़वाल का रहने वाला है। बनारसी दास हमारे पास ग्यारह बारह साल से घरेलू नौकर है। जब यह हमारे पास आया तो बिल्कुल अनपढ़ था। यहां आकर उसने स्वयं हिन्दी सीखी और छोटी २ पुस्तकें पढ़ने लगा। जिस कमरे में यह सोया करता वहां मेज पर एक मोटे अक्षरों का सत्यार्थ प्रकाश रखा रहता था। बनारसी दास ने सत्यार्थ प्रकाश पढ़ना आरम्भ कर दिया और उसे सारा ही समाप्त कर दिया। सत्यार्थ प्रकाश पढ़ने के पश्चात् बनारसी दास ऋषि दयानन्द का अनन्य भक्त बन गया। यह साल में एक मास के लिये अपने घर छुट्टी जाता है। इन के पहाड़ी प्रदेश में एक देवी का मन्दिर है। इस मन्दिर में हर साल मेला लगता है और देवी पर बीसियों भैंसों की बलि चढ़ाई जाती है। तीन साल हुए बनारसी दास ने इस मन्दिर में जाकर इन गरीब पशुओं पर होते हुए इस अन्याय के विरुद्ध पहली बार आवाज उठाई और छः भैंसों की जान बचा ली।

इस से उत्साहित हो कर बनारसी दास ने धर्म के नाम पर होते हुए इस पाप को रोकने के लिये अपील छपवा कर उन की कापियां भारत के राष्ट्रपति, प्रधान मन्त्री, लोक सभा के सदस्य तथा उत्तर प्रदेश विधान सभा के सदस्यों को भिजवाईं। साथ ही बहुत से इश्तहार छपवा कर अपने इलाके में बंटवाये। जिस का यह प्रभाव हुआ कि उस देवी पर बलि के लिये भैंसों का लाना ही बन्द हो गया।

इस के बाद बनारसी दास ने देखा कि उनके पहाड़ी इलाके में लड़कियों को बेचा जाता है। बिना कुछ लिये कोई भी व्यक्ति अपनी लड़की की शादी नहीं करता इस साल बनारसी दास ने इस प्रथा के विरुद्ध प्रचार किया। जिस का यह प्रभाव हुआ तीन ग्रामों के लोगों ने यह प्रतिज्ञा की कि हम अपनी लड़कियों की शादी में कुछ भी नहीं लेंगे। बनारसी दास की प्रेरणा से पंद्रह शादियां इस प्रकार की हो भी चुकी हैं जिनमें लड़की वालों ने लड़के वालों से एक पैसा भी नहीं लिया। प्रतिज्ञा करने वालों में बछैल ग्राम का रहने वाला कलमसिंह भी है जिसने अपनी एक कन्या का विवाह केवल १६) रुपये खर्च करके किया और लड़के वालों से कुछ न लिया। बाकी तीन लड़कियों की शादी भी वह उसी तरह से करेगा।

आजकल लड़कियों के बिकने की बात पढ़कर 'आर्य जगत के पाठकों को कुछ आश्चर्य अवश्य होगा क्योंकि आजकल तो हम प्रायः लड़कों के बिकने के बारे में सुनते रहते हैं परन्तु आश्चर्य की कोई बात नहीं क्योंकि गरीबों की लड़कियां बिकती हैं और अमीरों के लड़के। आजकल अमीर लोग बिना सौदा किये अपने लड़कों के रिश्ते नहीं लेते। टीके के रूप में अपने लड़कों के अधिक से अधिक दाम चार्ज करना चाहते हैं। आशा है कि बनारसी दास से प्रेरणा ले कर कुछ ऐसे नवयुवक भी निकलेंगे जो समाज में फैली हुई इस कुरीति को जड़ से निकाल कर फैंकने का प्रयत्न करेंगे।

तब और अब के आर्यसमाजी

(गतांक से आगे)

आर्यसमाज के साथ सच्चा प्रेम था उस दीवाने आर्य भाई का जिसने आर्यसमाज के एक विरोधी सुथरे के प्रचार के मुकाबिले में सुथरा बनकर आर्य सिद्धान्तों का प्रचार किया था। आर्यसमाज का नाम चमकाया था उन धर्मवीरों ने जिनका बरादरी (बेर-आदरी) ने बहिष्कार कर दिया था पर उन्होंने घुटने न टेके थे। आर्यसमाज की धूम मचा दी थी उन आर्यों ने जिन्होंने कष्ट का सामना करते हुए झूठ न बोला था।

स्वर्गीय स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी के शब्दों में आज तो विचार करना पड़ता है कि आर्यसमाजी पर विश्वास किया जाये या न। एक आर्यसमाजी के लिए यह प्रशंसा पत्र शोभाजनक नहीं। कहां हैं वे आर्यसमाजी जो आर्यसमाजी थे? उस समय किसी आर्यसमाजी के निन्दित कर्म करने पर लोग कहा करते थे—'देखो! यह आर्यसमाजी बना फिरता है? अब तो 'ईसबगोल कुछ न फरोल।' विद्वान् जो चरित्रवान् हैं उनका मान नहीं दुश्चरित्र विद्वान् लोगों की पूजा हो रही है। भ्रातृभाव का अभाव है। नवयुवक आकर्षित नहीं होते। जो भी चार समाज में आये हैं उनका प्रोत्साहन नहीं है। आचार व्यवहार में कटुता है। एक दूसरे पर विश्वास नहीं है। भ्रष्टाचार फैला हुआ है।

जिस प्रकार आज कांग्रेस-कांग्रेसियों की बुराइयों से बदनाम हो रही है आर्यसमाज भी आर्य समाजियों के अनार्यपन से कलंकित होजायेगा। हो क्या जाएगा होरहा है। जहां कांग्रेस के लिए आवाजें कसी जा रही हैं (१) कांग्रेस राज्य अनुशासन और योग्यता के बिना अंग्रेजी राज्य ही है। (२) अंग्रेज गलत नहीं कहता था कि भारती स्वतन्त्रता के योग्य नहीं। (३) कांग्रेस राज्य से अंग्रेजी राज्य अच्छा था। (४) अंग्रेजों ने भारी भूल की जो हमें कांग्रेसियों के हवाले कर गये (५) गांधी टोपी ठगी की निशानी है। (६) चोर चोरी करके जेल जाता है और कांग्रेसी जेल काट कर चोरी करता है।

वहां आर्य समाजियों को प्रमाण पत्र मिल रहे हैं:—

(१) वर्तमान आर्य समाज दयानन्द का आर्यसमाज नहीं। (२) आर्य समाजियों और दूसरे लोगों में कोई अन्तर नहीं दीखता। (३) आर्य संस्थाओं में दूसरी सभा समाजों से कम झगड़े नहीं। (४) आर्यसमाज की साख ईमानदारी के लिए प्रसिद्ध थी पर अब वहां भी गोल माल हो रहा है। (५) आर्यों के दान्त खाने के और दिखाने के और। (६) आत्मसुधार की अपेक्षा बाह्य चिन्हों की ओर अधिक ध्यान दिया जाता है। (७) हिन्दी रक्षा सत्याग्रह के समय हिन्दुओं की ओर से पूरा सहयोग मिलने पर पीठ दिखा दी। आर्य समाजी थे वे जिन्होंने किसी की बिगड़ी को बनाया था, रोते को हंसाया था, रूठे को मनाया था, बरबाद हुए को आबाद किया था, गिरते को उठाया था, जुदा हुए को

(शेष पृष्ठ ३ पर)

बड़ी प्रसन्नता का विषय है कि २, ३, ४ जुलाई को विश्व की आर्यसमाजों की शिरोमणी सभा का वृहद वार्षिक अधिवेशन कानपुर नगर में समारोह पूर्वक हो रहा है। इस अवसर पर देश-विदेश से पधारे प्रातः स्मरणीय विद्वानों एवं साधु संन्यासियों व नेताओं के विद्वत्ता पूर्ण विचार सुनने का सौभाग्य कानपुर नगर-निवासियों को प्राप्त हो रहा है, उसके लिए हम हृदय से उनका स्वागत करते हैं।

यूं तो प्रत्येक संस्था का अपना इतिहास होता है, कार्य कलाप होते हैं, परन्तु निसंदेह आर्य-समाज का इतिहास, भारतवर्ष का इतिहास है और भारत वर्ष का इतिहास आर्यसमाज का इतिहास है। परन्तु आज मैं आपको आर्य-समाज का वह गौरवमय इतिहास नहीं बताना चाहता जिसमें आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती से प्रेरित हो कर अनेकानेक युवकों ने भारत को आजाद कराने के लिए फांसी के तख्ते को हस-हंसकर चूम लिया था। भगतसिंह, लाला लाजपतराय भाई परमानन्द, लाला हरदयाल, रामप्रसाद बिस्मिल, स्वामी श्रद्धानंद, श्याम जी कृष्ण वर्मा आदि अनेक क्रान्तिकारी आर्यसमाज के ही तो सपूत थे। जरा याद कीजिए उस जमाने को, जब हम अंग्रेजों के गुलाम कहे जाते थे। अपनी आर्यजाति मूर्तिपूजा, अन्धविश्वास, बाल विवाह, छुआछूत, जाति-पाति, ऊंच-नीच आदि रोगों से जर्जरित थी। दिन प्रतिदिन हमारी शक्ति कम हो रही थी। आर्य जाति के लालों को कभी धन, दौलत, मान प्रतिष्ठा व स्त्री का लालच देकर ईसाई बनाया जा रहा था तो कभी छुरे और तलवार का भय दिखकर मुसलमान बनाया जा रहा था। अपनी ही जाति

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वार्षिक वृहद अधिवेशन (कानपुर) हेतु विशेष लेख

मानवता का अडिग प्रहरी—"आर्य समाज"

ले०—श्री देवीदास जी आर्य, सभासद नगर महापालिका कानपुर

✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻

के एक बहुत बड़े अंग जिन्हें शूद्र अथवा अछूत कहा जाता है, को हम ने खुद काटकर अलग फैंक दिया था। शुद्धि की बात तो हम भूल चुके थे। सारा विश्व हमारी इस दशा पर हंसी उड़ा रहा था, उड़ाता भी क्यों न? भारतीय संस्कृति जो विश्व की सबसे पुरानी संस्कृति थी जिसके जीवन काल में ही न जाने कितने रोम बने व उजड़े परन्तु यह भारतीय संस्कृति अपनी जगह पर अडिग रही थी। ऐसे कठिन वक्त में महर्षि दयानंद ने जो क्रान्तिकारी कदम उठाकर आर्य जाति को विनाश के गर्त में गिरने से बचा लिया वह हमें आज आर्यसमाज के रूपमें फलता फूलता नजर आ रहा है।

आर्यसमाज की स्थापना

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने आर्य जाति को उत्तम सहायक व सुदृढ़ रक्षक देने की भावना से सन् १८७५ में बम्बई नगर में "आर्यसमाज" की स्थापना की। आर्यसमाज के मूल भूत आधार सिद्धान्तों एवं नियमों को पूर्णतः प्रजातांत्रिक तरीके पर बनाया। आर्यसमाज के नियमों व उप-नियमों को शुद्ध प्रजातांत्रिक ढग पर बना कर महर्षि ने विश्व को प्रजातन्त्र की एक नई विचार धारा दी। आर्य समाज के स्पष्ट एवं तर्क युक्त विचारों ने बुद्धिजीवी व्यक्तियों को अपनी ओर आकर्षित किया। उसी का यह परिणाम है। आज देश में आर्यसमाजों का जाल सा बिछा हुआ है। इस समय भारत वर्ष में ४००० से भी अधिक आर्यसमाजें हैं और अफ्रीका, अमरीका, सिंगापुर, बर्मा, वैस्ट इंडीज, यू०के०, ईराक, अरब, मारीशस, स्याम, फिजी आदि देशों में भी आर्यसमाज का कार्य बड़ी ही सफलता पूर्वक चल रहा है।

शिक्षा क्षेत्र में सेवाएं

आर्यसमाज ने अपने प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती की इच्छा-नुसार स्थान स्थान पर विद्यालय, कालेज और महाविद्यालय खोले जिन में करोड़ों लड़के-लड़कियों ने शिक्षा ग्रहण कर अपने जीवन को सफल बनाया और लाखों आज भी शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। महात्मा हंसराज जी ने डी०ए०वी० कालेजों को स्थापना का बीड़ा उठाया तो स्वामी श्रद्धानन्द जी ने गुरुकुल परिपाटी को पुनर्जीवित किया। तभी तो महात्मा गांधी ने आज से ३८ वर्ष पूर्व १९२७ ई० में गुरुकुल कांगड़ी के उत्सव पर भाषण देते हुए कहा था कि आर्यसमाज के शिक्षा विस्तार के कार्यों की मैं विशेष प्रशंसा करता हूं। सरकार के बाद आर्यसमाज ही एक मात्र संस्था है जो शिक्षा प्रसार का कार्य कर रही है? इस समय २००० से भी अधिक स्कूल, कालेज महिला विद्यालय, आयुर्वेदिक, मेडीकल एवं टेक्नीकल कालेज आर्यसमाज द्वारा संचालित हो रहे हैं।

अन्य सेवा कार्य

आर्यसमाज ने केवल शिक्षा के क्षेत्र में ही कार्य किया हो ऐसी बात नहीं। आर्यसमाज तो 'कृण्वंतो विश्वमार्यम' के उद्देश्य को लेकर चला है। अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए आर्यसमाज ने स्थान-स्थान पर [illegible] अंधविद्यालय, [illegible] बड़े पुस्तकालय, व्यायामशालाए व योग शिक्षालयों की स्थापना की है। मेरे विचार से शायद ही कोई ऐसी अन्य राष्ट्रीय संस्था हो जिस ने इतनी संख्या में अपने सेवा केन्द्र खोले हों।

एक करोड़ सदस्य

सार्वदेशिक आर्य सभा को रिपोर्ट के अनुसार वहां १९४१ में आर्यसमाज के सदस्यों की संख्या ४५ लाख थी वह आज बढ़ कर एक करोड़ के लगभग हो गई है। आर्यसमाज के सिद्धांतों को मानने वालों की संख्या तो इस से कई गुना अधिक है।

ऋषि ऋण

इतना सब कुछ होने के बाद भी आर्यसमाज निरन्तर अपने कार्य क्षेत्र की वृद्धि कर रहा है और करता रहेगा क्योंकि उसको अपने सेवा कार्यों पर कभी सन्तोष नहीं आता और अपने संस्थापक महर्षि दयानन्द के ऋण से उऋण होने के लिए कटिबद्ध है अर्थात भारत को ही नहीं सम्पूर्ण विश्व को आर्य बनाना है।

म. देवी चन्द जी अस्वस्थ

सुप्रसिद्ध आर्य नेता म० देवी चन्द जी एम. ए. (प्रधान होशियार पुर ज़िला वेद प्रचारिणी सभा) कुछ समय से अस्वस्थ हैं। आजकल नई दिल्ली में इलाज करवा रहे हैं। उनका वहां का पता **D—16/I, Have Khas, New Delhi—16** है,

ईश्वर से प्रार्थना है कि वह उनको शीघ्र पूर्ण स्वास्थ्य प्रदान करें ताकि वह वेदों का अंग्रेजी में जो अनुवाद कर रहे हैं वह पूरा कर सकें तथा धर्म प्रचार कार्य को पुनः पहले जैसे उत्साह से सम्पन्न करते रहें

बूटाराम मंत्री

संस्कृत परिषद् नाभा

संस्कृत परिषद् नाभा की चतुर्थ मासिक गोष्ठी ११ जून १९६५ को आर्य हाई स्कूल नाभा में श्री प्रिंसिपल बी० डी० बत्रा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। श्री प्रो० वेदप्रकाश जी के भाषण के पश्चात् इन्हीं के पूज्य पिता श्री तुलसी राम जी आर्य के, एवं श्रीमती विमला बत्रा के माननीय पति श्री शिव राम जी बत्रा के निधन पर शोक प्रस्ताव पास करते प्रभु से दिवंगत आत्माओं की शुभ-गति के लिए प्रभु से प्रार्थना की गई।

—विद्या सागर प्रचार मन्त्री

आर्य समाज, नारनौल

चुनाव

प्रधान—श्री ईश्वरदास जी बजाज उपप्रधान—श्री लखमीराम जी एडवोकेट, उपप्रधान—श्री अजायब राम जी एडवोकेट, मन्त्री—श्री वैद्य हरिश्चन्द्र जी आर्य, उपमन्त्री—श्री रामशरण जी आर्य, उपमन्त्री—श्री गिरधारी लाल जी संघी, पुस्तकाध्यक्ष—श्री राजकुमार शर्मा आर्य, पुरोहित—श्री रैमलदास जी आर्य, कोषाध्यक्ष—श्री [illegible] जी आर्य, लेखानिरीक्षक—श्री [illegible] जी आर्य

वैद्य हरीशचन्द्र
निर्वाचित मन्त्री आर्य समाज

ईसाई पादरियों की देश-द्रोही गति विधियों पर सरकार कड़ा प्रतिबन्ध लगाए।

सरकार को कड़ी चेतावनी

वेद विश्वविद्यालय निर्माण समिति के मन्त्री वेद पथिक पं० धर्मवीर आर्य मंडाधारी ने केन्द्रीय सरकार से यह मांग की है कि ईसाई पादरी धर्म प्रचार के नाम पर अपने चर्चों में तथा स्कूलों कालिजों और अस्पतालों में जनता की सेवा के नाम पर दिन प्रतिदिन लाखों हिन्दुओं को ईसाई बनाने का कार्य कर रहे हैं।

श्री मंडाधारी जी ने बतलाया है कि यदि ईसाई पादरियों के कुचक्र पर अंकुश न लगाया गया तो ये भविष्य में देश के विभाजन की देशद्रोही मांग उपस्थित करके राष्ट्र के लिए खतरा पैदा कर देंगे।

श्री मंडाधारी जी ने देश के [illegible] सुखावह हाता।

—पं० देवव्रत धर्मेन्दु

आर्यसमाज कालिज विभाग फिरोजपुर शहर

चुनाव

श्री मेहर चन्द जी अग्रवाल प्रधान, श्री एल० डी० कालड़ा प्रिंसिपल उप प्रधान, श्री [illegible] प्रकाश जी [illegible] शर्मा मन्त्री, श्री राजकुमार जी धवन उप मन्त्री, श्री मेहरचन्द जी कटारिया कोषाध्यक्ष, श्री मोहन लाल जी गुलाटी पुस्तकाध्यक्ष, श्री चौ० अर्जुन दास जी मैम्बर अंतरंग सभा, श्री जगदीश चन्द्र जी आहुजा अंतरंग सभा, श्री रघुबीर जी शास्त्री अंतरंग सभा।

—ब्रह्म दत्त शर्मा मन्त्री
आर्यसमाज फिरोजपुर

अमूल्य-वचन

★ उत्तम पुरुष वे हैं जो अपना स्वार्थ छोड़ कर दूसरों के कार्य करते हैं, मध्यम श्रेणी के पुरुष वे हैं जो अपने स्वार्थ को साधते हुए भी परोपकार करते हैं और जो अपने स्वार्थ के लिए दूसरों का काम बिगाड़ते हैं उन्हें मनुष्य के रूप में राक्षस समझना चाहिए। और जो बिना किसी प्रयोजन के दूसरों के कार्य की हानि करते हैं उन्हें क्या कहा जाय? यह तो हमारी समझ में नहीं आता।

[illegible]ज मन्दिर सदर [illegible]दिल्ली—६४

[illegible] वार्षिकोत्सव

उप-प्रधान—१. श्री [illegible] जी [illegible], प्रो० कोमराज जी।

मन्त्री—श्री मूलशंकर जी शास्त्री, सहायक मन्त्री—श्री राजेन्द्र कुमार जी गोयल, उप-मन्त्री—श्री ओम्प्रकाश जी, कोषाध्यक्ष—श्री अभिराम जी, उप-कोषाध्यक्ष—श्री देवराजजी [illegible], पुस्तकाध्यक्ष—,, श्रीमदेव जी, भण्डारी—श्री तेजभान जी, यज्ञ-संयोजक—श्री नन्दलाल जी, लेखानिरीक्षक—श्री [illegible] जी।

प्रतिष्ठित सदस्य :

[illegible], श्री पृथ्वीराज जी शास्त्री, श्री नरसिंह जी।

अन्तरंग सदस्य :

श्री दीनानाथ जी, श्री हरीश-चन्द्र जी आर्य, श्री [illegible] जी, श्री अश्विनीकुमार जी, श्रीगिरधारी लाल जी, लाला हुकुमचन्द, श्री बलदेव राज जी, श्री सुखदेव जी।

—[illegible]

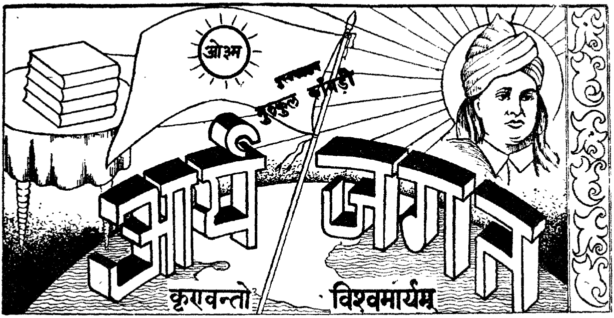
शिमला व अन्य पहाड़ी स्थानोंके विकास के लिए उपसमिति नियुक्त

चण्डीगढ़, २८ जून—पंजाब सरकार ने गत वर्ष के रोहतक जिले के बाढ़ पीड़ित इलाकों के लिए चारे आदि की सहायता के लिए अढ़ाई लाख रु० मंजूर किए हैं।

निर्णय पंजाब मंत्रिमण्डल की एक बैठक में किया गया।

मंत्रिमंडल ने बैठक में [illegible] कसित करने के लिए शिमला जिला में शिमला, कंडाघाट, चैल और कसौली के महत्वपूर्ण स्थानों के विकास की सिफारिशें देने के लिए आज एक उप-समिति नियुक्त करने का भी निर्णय किया। समिति में वित्तमंत्री श्री कपूरसिंह, व्यापार और भाव आयोजन मन्त्री श्री प्रेमसिंह 'प्रेम', स्वास्थ्यमंत्री श्रीमती ओम प्रभा जैन, उद्योगोंके उपमंत्री श्री ज्ञानचन्द, पर्वतीय क्षेत्रों के कमिश्नर, शिमला जिला परिषद के अध्यक्ष और इस प्रदेशके विधायक शामिल हैं।

मुद्रक व प्रकाशक श्री सन्तोषराज जी आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर द्वारा वीर मिलाप प्रैस, मिलाप रोड जालन्धर से मुद्रित तथा आर्यजगत कार्यालय महात्मा हंसराज भवन निकट कचहरी जालन्धर शहर से प्रकाशित मासिक—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर



टैलीफोन नं० ३०५७ [आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधिसभा पंजाब जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd. No. P.

एक प्रति का मूल्य १३ नये पैसे 52. 7. 65 वार्षिक मूल्य ६ रुपये

वर्ष २५ अंक २९) २ आषाढ़ २०२२ रविवार—दयानन्दाब्द १४१— ११ जुलाई १९६५ (तार 'प्रादेशिक' जालन्ध

वेद सूक्तय:

यो अघ स्तेन आयति

यह मेरी घोषणा है—इसे सारे सावधान हो कर सुन लेवें कि जो भी आज स्तेन—चोर डाकू और हमारा वैरी बन कर आयगा—जिस ने भी हमारे धन पर, भूमि पर और किसी प्रकार की भी सम्पत्ति पर हाथ डालने का प्रयत्न करेगा—तो

स सापेष्टा अपायति

इस प्रकार का वैरी, शत्रु, चोर डाकू हम से कुचला जायगा। उसे हम पीस कर रख देंगे। वापस बच कर वह जा नहीं सकेगा। उसका ~~सब~~ कुछ हम यहीं पर समाप्त कर देंगे। शत्रु का वापस बच कर जाने देना हम ने सीखा नहीं।

यातुधानमथोवृकम्

जो भी यातुधान है—यातना या दुःख देने वाले लोग हैं, या नर के चोले में भेड़िये के समान हैं। जो दूसरों को मार कर, चीर फाड़ कर अपना ही पेट भरने वाले हैं। भेड़ियाधसान जिन की वृत्ति है। उन सब को मैं ठीक कर दूंगा।

न पापमुपजायते

जहां पर मेरा डेरा बसेरा हो जाता है, वहां से सारे बुरे लोग उस जगह को छोड़ कर भाग जाते हैं। वहां पर किसी को पाप करने की मजाल नहीं हो सकती। जब पापी ठहरते नहीं तो फिर पाप कैसे कर सकते हैं?

अ थ र्व वे द से

वे दा मृ त

ओ३म् नमस्ते अग्न ओजसे गृणन्ति देवकृष्टय:। अमैरमित्र मर्दय॥ साम० आग्नेय काण्ड

अर्थ—हे अग्ने-अग्निमय नायक नेता! (नमस्ते) आपका स्वागत हो। इस (ते) तेरे (ओजसे) बलशक्ति के लिए (नम: गृणन्ति) नमस्कार कहती व करती हैं (देव) दिव्यगुणों वाले वीर नर! ये (कृष्टय:) मनुष्य प्रजा, सारी जनता आपका सत्कार करती है। हे अग्निरूप नेता! तू अपने (अमै:) बल पराक्रमों से (अमित्रम) शत्रु को (अर्दय) पीड़ित कर दे। समाज के शत्रुओं तथा राष्ट्र के वैरियों को ठीक कर दे।

भावार्थ—हे वीर नर! आपके पास अग्नि की शक्ति है। जैसे अग्नि की ज्योति सारे अन्धेरे को भगा देती है। प्रातःकाल निकलने वाला अग्निमण्डल का गोला सूर्य के रूप में रात के तमाम अन्धकार को समाप्त कर देता है, उसी प्रकार हे नायक! आपकी वीरभावना तथा देशभक्ति के प्रकाश के सामने राष्ट्रघातियों का अन्धेरा टिक कैसे सकता है। हे वीर नायक! जितने भी राष्ट्र के लोग हैं—सारे बड़ी भावना से आप का सम्मान स्वागत करते हैं। इस आपकी वीरता शक्ति को देखते हुए, समाज के विरोधियों को भस्म कर देने वाली आपकी शक्ति के सामने नमस्कार करते हैं। आप सारे समाज के, राष्ट्रीय जीवन के रक्षक हो, नायक तथा नेता हो। अग्नि के समान आगे २ रह कर सब को मार्ग दिखाने का काम करते हो। सारी जनता आपका स्वागत करती है।

वीर नायक! जो भी अमित्र है, राष्ट्र का घाती है। किसी प्रकार से देश, समाज, मानवता को हानि पहुंचाने में लगा हुआ है। उसे अपने बल शक्ति से उखाड़ फैंको। मसल कर रख दो। कुचल दो।—सं०

ऋषि दर्शन

स एव प्रजापति:

वह ही भगवान प्रजाओं का सारे संसार के जड़ चेतन पदार्थों का पति है। रक्षक है, ये सारी उसी की प्रजाएं हैं। हमारा सबका वही पिता, रक्षक और पालन करने वाली सच्ची माता है।

तत्सामर्थ्यादेव इदम्

उसी महान् शक्तिमय परमात्मा की सामर्थ्य से ही यह सारा विश्व बनता, चलता और काम करता है। उसी नियामक के अटल नियमों व विधाता के विधान से यह सब कुछ चल रहा है।

सनातनत्वेन वर्तमान:

वह परमेश्वर सनातनकाल से वर्तमान है। भगवान् अनादिकाल से है। न कभी पैदा हुआ तथा न कभी मरता है। अनादि, अनन्त उसका सनातन रूप है।

मनुष्यस्य दुःखमेव

इस मार्ग से परे हट जाना मनुष्य के लिए दुःख ही है। ब्रह्म की उस पुरुष की उपासना के स्थान पर प्रकृति की जड़ पदार्थों की पूजा करना दुःख का कारण है। सुख प्राप्त नहीं मिलता।

भा ष्य भू मि का

महात्मा आनन्द स्वामी जी सरस्वती आर्य जगत् के प्रसिद्ध सन्त हैं। सन्यास लेने के बाद सारे भारत का भ्रमण किया है। तप के भारतीय पुरातन पसिद्ध स्थानों गंगोत्तरी, कैलाश, मानसरोवर, तिब्बत, व्यास कुण्ड आदि हिमालय के तपस्य के विशेष केन्द्रों की यात्रा व साधना की है। इस ८२ वर्ष की अवस्था में भी सारे भारत का भ्रमण करते हुए पिपासु जीवनों की प्यास बुझाने के लिए प्रवचन के अमृतभरे प्याले पिलाते रहते हैं। डलहौजी से अस्वस्थ होकर अमृतसर दो चार दिन स्वास्थ्य लाभ के लिए पधारे। किन्तु आर्य समाज लारेंसरोड के सज्जनों के प्यार से समाज में अपना उपदेश प्याला पिला गये। आर्य जगत् के प्रेमी पाठकों केलिए प्रसाद दियाजाताहै-सं०

जीवन निर्माण

तपो मूलं हि साधनम्

पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी जी महातमा का मधुर प्रवचन

भारत में बम्बई और अमृतसर नगर कस्टम ड्यूटी Custem duty) के नगर हैं। आने जाने वाले पदार्थों पर कस्टम लिया जाता है। इसी तरह अमृतसर लारेंस रोड वाले समाज के भाईयों की भी नज़रें बड़ी तेज़ हैं। आते जाते ये भी कस्टम लेने में नहीं चुकते। यहां पर मैं भी पकड़ा गया हूं। इन के प्यार को मैं टाल नहीं सका। मैं गत ग्यारह मासों से भारत के प्रायः सभी प्रान्तों में घूमा हूं। सब स्थानों से एक ही आवाज़ सुनाई दी है कि आज दुनिया बिगड़ गई है। प्रश्न है कि इस का क्या बिगड़ा है? चन्द्रमा की शीतल रश्मियां, सूर्य की किरणें वैसी ही हैं। गंगा यमुना की धाराओं का जल तरह प्रवाहित है। ये तो बिगड़े नहीं फिर बिगड़ा क्या है? बात यह है कि विचार लोगों के बिगड़ गए हैं। विचारों के बिगड़ने से सब कुछ बिगड़ जाता है! यह दुनिया १५० वर्षों से बिगड़ती चली आती है। युरोप में डारविन और कारलायल हुए, जिन्होंने सबको यह विचार दिया कि मनुष्य पशु की सन्तान है। हमारे भारत में भी चार्वाक हुए कहा कि यह जीवन केवल खाने-पीने और मौज उड़ाने के लिए मिला हैं। खाओ-पीओ मौज मेला करो—संसार में न तो कोई परमेश्वर है और न ही धर्म की आवश्यकता है। यही शरीर, जीवन और यही लोक है। इसके सिवाय सब झूठ है। जितने भोग भोग सकते हो भोग लो। पूर्व युग मे ये विचार **Unorgnise** असगठित थे। किन्तु कारलायल व डारविन आदि ने इन विचारों को **Organised** करके एक मन्डल स्थापित कर दिया जिसका काम इन विचारों का प्रचार करना काम था। एक नियमित **Plan** योजन बद्ध होकर ये विचार मौखिक तथा लिखित रूप में जनता में फैलाये जाने लगे।

जिस कम्युनिज्म की विचारधारा का प्रचार कम्युनिस्ट करते हैं। उन लोगों के जीवन में मुख्य रूप से केवल दो प्रयोजन हैं। भूख और डाकमवासना की तृप्ति। पेट का ध्यान तथा अपनी इन्द्रियों को तृप्त करना। इन्हीं दो बातों का ही ये लोग प्रचार करते हैं। कम्युनिस्टों का सारा विविध विचार प्रचार चाहे किसी रंग में भी हो, केवल इन्हीं सिद्धान्तों के गिर्द ही घूमता रहता है। भूख या माया का भोग तथा अपनी कामवासना को पूर्ण करना। इनसे ऊपर वे जाते ही नहीं हमारे देश के गृहमन्त्री श्री. नन्दा जी देश से भ्रष्टाचार मिटाने में लगे हुए हैं। वह सज्जन हैं पर सच्चाई यह है कि पत्तों को पानी दे रहे हैं। जिस विचार धारा के कारण यह बिगाड़ पैदा हो रहा है, जिस कारण से देश के शरीर में यह भ्रष्टाचार का भयंकर रोग उत्पन्न हो रहा है, जो इस सारे विचार का कारण बना हुआ है उसे ठीक नहीं किया जा रहा। उस मूल कारण की ओर तो किसी का भी ध्यान गया ही नहीं। ऐसी स्थिति में यह रोग दूर कैसे होगा। यह पौदा हरा भरा कैसे किया जा सकता है बीमारी जड़ों में लगी हुई है और दवाई उस के पत्तों की को जा रही है फिर भला वृक्ष के हरा भरा होने की आशा किस प्रकार की जा सकती है? यही बात इस समय भी की जा रही है। ऋषि दयानन्द जी ने कहा था कि मै लोगों की विचार धारा बदलना चाहता हूं विचारों के सुधरने पर सब कुछ स्वयं सुधर जाता है। अपने पूनाके एक भाषण में स्वामी जी ने कहा था कि मैं हवाई जहाज बना सकता हूं, परन्तु यह तुच्छ चीज़ है। वेद की विचारधारा का प्रचार हो जाये तो सारा जीवन ठीक हो जाएगा। विचारधारा रूपी मूल कारण को ठीक करना होगा तभी यह बिगड़ता हुआ विश्व बनेगा। इसके ठीक किए बिना संसार की अवस्था लाख कोशिश करने पर भी नहीं सुधरेगी।

आज की दुनिया में केवल भूख और अपनी इन्द्रियों की वासनाओं को तृप्त करने पर ही सारा जोर लगाया जाता है। जब इन्द्रियों की तृप्ति में कोई अड़चन आ जाये तब बड़ा शोर मचाया जाता है। आज कोका-कोला का जोर है। न मिले तो लोग बेचैन हो जाते हैं पहले यह कहां था। हमने इसका नाम भी नहीं सुना था। नाम भी क्या रखा है—कोला। एक कपड़े का नाम है पाप—लेन इस का नाम पुण्यलैन क्यों न रख लिया। पीने की वस्तु का नाम कोला तथा पहिरने के वस्त्र का नाम पाप कैसे २ नाम रखे जा रहे हैं? हमारा जीवन आराम तलब हो गया है। हमने अपने जीवन के साथ ऐसी २ वस्तुएं जोड़ ली हैं जिन के बिना अब हम चल ही नहीं सकते। उनका हमारा जीवन दास बन चुका है। यही काम तृप्ति तथा आराम तलबी हमें दुःखी बना रही है हम अपनी इन्द्रियों के दिन प्रतिदिन दास बनते जा रहे हैं। ये चीजें हमारे जीवन को अपने पाश में जकड़ कर पराधीन बनाती चली जा रही हैं।

हमारे ऋषियों ने उपनिषदों के युग में इस वास्तविकता को देख लिया था। ये उपनिषदें १५ लाख वर्ष पूर्व लिखे गये थे। मुण्डकोपनिषद् में ऋषि लिखते हैं कि—अविद्यायामन्तरे वर्तमानाः पण्डितम्मन्यमाना— आज की नई सन्तति पुराने लोगों को रूढ़िवादी कह कर पुकारते हैं। अपने को **New Light**—नई रोशनी वाला बताते हैं। उपनिषद् का ऋषि कहता है कि ऐसे लोग कष्ट-क्लेश में पड़े रहते हैं। जब स्वराज्य नहीं मिला था तब हम कहते थे कि हम स्वराज्य के बाद सुखी हो जायेंगे। अंगरेज चला गया पर जाता हुआ कैंसर का रोग लगा गया जो दवाई से नहीं जायगा। इस का तो एक ही इलाज है, वह है इसका **Major Operation**—बड़ा आप्रेशन। और इस का कोई इलाज नहीं है। भारत के उदय के दिन आयेंगे जब कि देश का भला होगा। यदि शरीर ठीक नहीं तो मन से भजन भी नहीं होता। इसी प्रकार यदि राष्ट्र भी ठीक नहीं है तो जीवन सुखी नहीं होता। हम ऋषि की विचार धारा का प्रचार करें।

सम्पादकीय—

आर्य जगत्

वर्ष २५] रविवार २०२१, ११ जुलाई १९६५ [अंक २९

आज का साहित्य

साहित्य मन का भोजन होता है। एक परिवार में रखे हुए साहित्य को देख कर उस की मानसिक अवस्था का भली भांति परिचय मिल जाता है। इसी प्रकार किसी देश में प्रकाशित होने वाले साहित्य से पता लग जाता है कि उस की प्रवृत्ति किस ओर चल रही है। साहित्य जीवन को बना भी देता है और गिरा भी देता है। इस लिए यह बार २ कहा जाता है कि प्रत्येक व्यक्ति इस विचार का ध्यान रखे कि उस के घर में सत्साहित्य जावे ताकि घर वालों को उत्तम विचारों का भोजन मिलता रहे। स्वाध्याय की इसी कारण से महिमा गाई गई है। उत्तम ग्रन्थों का पढ़ना पढ़ाना आवश्यक है। जीवन का यह जरूरी अंग है। किसी बच्चे के हाथ में एक पढ़ी जाने वाली पुस्तक को देख कर उस की संगति का ज्ञान कर लेना आसान होता है। साहित्य की ओर ध्यान देना चाहिए।

आज हमारे देश में जिस प्रकार का साहित्य लिखा-लिखाया जा रहा है अथवा जिस साहित्य का सब स्थानों पर प्रचार किया जाता है। उसे देखते हुए किस सच्चे भारतीय का दिल दुःखी नहीं होता ? आप स्टेशनों के पुस्तक भण्डारों को देख लेवे या बाजार में बिकने वाले साहित्य को देखें। समाचार पत्रों की दुकानों पर खड़े हो जावें अथवा जहां पर पत्रिकाएं बिकती हैं उन को देखें। जितने भी उपहार गृह हैं जहां पर लोग बैठ कर खाते पीते हैं— वहां मेजों पर रखे हुए साहित्य का अवलोकन करें। भाव यह है कि आज जिधर भी जाकर प्रसारित किये जाने वाले साहित्य देख लीजिए। फिर सोचकर बताये कि जन-जीवन किस पथ पर भाग रहा है। विशेष कर छात्र-छात्राओं को पढ़ने के लिए जैसा साहित्य भी प्रकाशित किया जाता है। उसे देखकर तो मन एकदम व्याकुल बन जाता है कि इस साहित्य के विचारों को भोजन करने वाले युवक युवतियां अपने भविष्य जीवन में क्या बनेंगे यह सारा चित्र सामने आ जाता है। बाढ़ केवल पानी की ही नहीं होती, साहित्य के विचारों की बड़ी प्रखर धारा होती है जिस में तेजी से प्रभावित होने वाले को रोका न गया तो फिर उस का सम्भालना सरल नहीं होता। आज के ऐसे विलासमार्ग पर चलाने वाले बुरे साहित्य के द्वारा भारतीय जीवन सम्पत्ति का विनाश किया जा रहा है। सम्भलने की आवश्यकता है। बाहिर का शत्रु इतनी हानि नहीं करता जितनी हानि यह अश्लील साहित्य तथा गन्दे चित्र कर डालते हैं। मनोरञ्जन की आड़ में जीवन को खोखला कर देते हैं। मन को गिरा देते हैं।

इसके रोकने के दो साधन हैं। एक तो ऐसे साहित्य के विरुद्ध जोरदार आंदोलन करते रहें। लोगों को सचेत व सतर्क करते रहें ताकि उन के बच्चे इस साहित्य से सावधान रहें। दूसरा उपाय यह है कि अधिक से अधिक सत् साहित्य का निर्माण होता रहे। अब आज के युग में आर्य समाज ने संस्थाओं में जहां बड़ा काम किया वहां अब उत्तम साहित्य लिख लिखवा कर परिवार में ऊंचे स्तर के साहित्य के द्वारा उत्तम विचारों को पहुंचाने का काम अपने हाथ में लेवें।

—त्रिलोक चन्द्र

स्वामी ध्रुवानन्द जी

आर्यसमाज लारेंस रोड अमृतसर में कथा के प्रसंग में समाज के श्री मन्त्री जी ने जिस समय आर्यसमाज के प्रसिद्ध श्री स्वामी ध्रुवानन्द जी महाराज के अत्यन्त दुःखद निधन का समाचार देते हुए शोक प्रस्ताव रखा तो सारे नर-नारी स्तब्ध रह गये। आर्य-समाज में पहिले संन्यास ही लेने वाले कितने हैं। उनमें भी उच्च-कोटि के सन्त महात्मा लोग तो वैसे भी विरले हैं जिनपर सारे समाज को मान है। फिर स्वामी ध्रुवानन्द जी सरीखे प्रसिद्ध संन्यासी का चले जाना किसे दुःखी नहीं करेगा ? स्वर्गीय स्वामी जी महाराज आर्यजगत के महान नेता थे। तपोमूर्ति स्वामी सर्वदा-नन्द जी महाराज के योग्यतम शिष्य थे। आरम्भ में ही सारा जीवन अविवाहित रहने का व्रत ले लिया था। महाराज शाहपुर के गुरू होने के नाते राज गुरू बन गये थे। संन्यास से पूर्व राजगुरू धुरेन्द्र शास्त्री कहलाते थे। संन्यास बाद स्वामी ध्रुवानन्दजी बन गए।

स्वर्गीय स्वामी जी बड़े विद्वान् थे। बड़ा मीठा मंजा हुआ बोलते थे। तथा लिखते थे। उत्तर प्रदेश में सभा को अनेकों वर्ष प्रधान रहे। वर्षों सार्वदेशिक सभा देहली के भी प्रधान रहे। पांच-छः वर्ष तक अफ्रीका, नैरोबी, मारीशस आदि विदेशी स्थानों में पधारकर वैदिक धर्म का प्रभाव पूर्ण प्रचार किया। हैदराबाद में आर्यसमाज द्वारा किये गये सत्याग्रह में स्वामी जी अधिनायक बनकर बहुत बड़ा जत्था लेकर वहां जाकर सत्याग्रह किया तथा जेल में रहे। सारा जीवन कार्य रत रहे। जीवन प्रभावशाली था। पहले ही संन्यासी नहीं हैं न बनते हैं। उन मे भी स्वामी जी चले गए। सारे समाज को भारी क्षति हुई है। उनकी स्वर्गीय आत्मा की शांति के लिए प्रभु से प्रार्थी हैं। आर्य समाज से कहना है कि निश्चिन्त ऊंचे सज्जन इस सन्यास मार्ग में आवें ताकि देश का कल्याण हो। पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी जी इसी सप्ताह देहली में भारत भर के आर्य सन्यासियों का एक विशेष सम्मेलन बुला रहे हैं। स्वामी ध्रुवानन्द जी तो पहले ही चले गये। उनकी समाज को अभी बड़ी आवश्यकता थी। प्रभु के सामने मौन ही रहना होता है।

प्रिं ज्ञानचन्द जी भाटिया

अभी २ स्वामी ध्रुवानन्द जी महाराज के चल बसने की पंक्तियां लिखी ही जा रही थीं कि आर्य-प्रादेशिक सभा पंजाब के पूर्व मन्त्री प्रिंसिपल ज्ञानचन्द जी भाटिया के दुःखद देहावसान का समाचार मिला। प्रिंसिपल भाटिया जी की मौत भी सचमुच हृदय विदारक है। कितना समाज का काम करते थे। आरम्भ से ही डी० ए० वी० परिवार के साथ उनका गहरा सम्बन्ध था। लाहौर के बाद जालन्धर माडल टाऊन में रह कर वहां समाज की, सभा की, डी० ए० वी० कालेज परामर्श दात्री कमेटी जालन्धर की बड़ी ही सेवा करते थे। मौत का निर्दयी हाथ हम से उन को भी छीन कर ले गया। सारे परिवार से आर्यजगत हार्दिक समवेदना

(शेष पृष्ठ ४ पर)

पवित्रता या कफारा

(ले० आचार्य देवप्रकाश जी आर्यसमाज उज्जन मध्यप्रदेश)

पवित्रं ते वितत ब्रह्मणस्पते
प्रभुर्गात्राणि पर्येषि विश्वतः।
अतप्ततनूर्नतदामो अश्नुते
शृतास इद्वहन्तस्तत्समाशत॥
...पवित्रं विततं दिवस्पदे।
ऋ० ९-८३ १-२-३

इस मन्त्र का तात्पर्य यह है कि भगवान के पवित्र स्वरूप को ब्रह्मचर्य, सत्य भाषण, शम, दम, योगाभ्यास, जितेन्द्रिय, सत्संगादि तपश्चर्या से ही प्राप्त किया जा सकता है। जो पवित्राचरण रूप तप करते हैं वही परमात्मा को प्राप्त कर सकते हैं। कैसा सुन्दर उपदेश मानव सुधार का इस वेद मन्त्र में दिया गया है। मगर ईसाई मत में एक कफारा का सिद्धान्त है। यही ईसाई मत की जान है। यही कह कर लोगों को ईसाई बहकाते हैं कि ईसाई बन जाने से तुम्हारे पाप खुदा क्षमा कर देगा। यही कफारा का मतलब है कि यीशु पर ईमान लाने से पापों की निवृत्ति हो जायेगी। कितना मनुष्य को पथ भ्रष्ट करने वाला यह बहकावा है इंजीलों में लिखा है—

खुदा ने उनके खून के कारण ऐसा कफारा ठहराया, जो ईमान लाने से फायदा मन्द हो रोमियों ३-२५ अर्थात ईसाई बन जाने से लाभप्रद होगा लहू के बिना मुक्ति नहीं होती।

वाचा मरण पर पक्की होती है और जब तक वाचा बांधने वाला जीवित रहता है तब तक वाचा काम की नहीं होती। अतः पहली वाचा भी बिना लोहू के नहीं बांधी गई, क्योंकि जब मूसाने सब लोगों को व्यवस्था की हर एक आज्ञा सुना चुका तो उसने बकरों और बछड़ों का लोहू लेकर पानी और लाल ऊन और जूफा के साथ उस पुस्तक पर और सब लोगों पर छिड़क दिया और कहा कि यह उस वाचा का लोहू है जिस की आज्ञा परमेश्वर ने तुम्हारे लिये दी है और इसी रीति से उस ने तम्बू और सेवा के सारे सामान पर लोहू छिड़का। व्यवस्था के अनुसार प्रायः सब वस्तुयें लोहू के द्वारा शुद्ध की जाती हैं और बिना लोहू बहाये क्षमा नहीं होती इब्रानियों ९-११ से २२ तक मतलब यह है कि मूसा यह कहता था और व्यवस्था पुस्तक जिसे वह ईश्वरीज्ञान कहता था जिसे मसीह ने भी माना है। उस के अनुसार बलिदान से ही पापनिवृत्ति मानी जाती थी। इस का दृष्टांत दे कर यीशु के लिए भी कहा गया पर व्यक्ति (यीशु) तो पापों के बदले एक ही बलिदान सर्वदा के लिए चढ़ा कर परमेश्वर के दहाने जा बैठा इब्रानियों १०-१० से १२ इस में यह बताया है कि मूसा बार बार बलिदान कर के पाप क्षमा करवाने का बलिदान रचता था, ईसा के लिए कहा गया है कि उस ने एक ही बार अपना बलिदान कर के ईसाई होने वालों के गुनाहों का कफारा कर दिया अर्थात् पाप क्षमा करा दिए। यीशु पर ईमान लाना आवश्यक है मुक्ति के लिए क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रक्खा कि उस ने अपने एकलौते पुत्र को दे दिया ता कि जो कोई उस पर ईमान (विश्वास) लावो वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पावे...जो उस पर विश्वास करता है उस पर दण्ड की आज्ञा नहीं होती परन्तु जो उसपर विश्वास नहीं करता वह दोषी ठहर चुका, इसलिए कि उसने परमेश्वर के इकलौते पुत्र के नाम पर विश्वास नहीं किया यूहन्ना १६-३-१८ फिर लिखा—और उसके पुत्र यीशु का लोहू हमें सब पापों से शुद्ध करता है यदि हम कहें कि हम में कुछ भी पाप नहीं, तो अपने आपको धोखा देते हैं यदि हम अपने पापों को मान लेते हैं तो वह हमारे पापों को क्षमा करने और हमें सब अधर्मों से शुद्ध करने में विश्वास योग्य और धर्मी है यदि कहें कि हमने पाप नहीं किया तो उसे (यीशु को) झूठा ठहराते हैं यूहन्ना की पहली पत्री-१-७ से १

मनुष्य के पुत्र यीशु को पृथ्वी पर पाप क्षमा करने का अधिकार है मत्ती-९-६

न्याय करने का सब काम पुत्र को सौंप दिया है यूहन्ना-५-२१.२३

यीशु ने कहा जितने मुझ से पहले आए, वे सब चोर और डाकू हैं...द्वार मैं हूं यदि कोई मेरे द्वार भीतर प्रवेश करे तो उद्धार पाएगा, यूहन्ना-७-१

कफारा का सिद्धान्त जहां ईसाईमत का मुख्य सिद्धान्त है वहां सबसे बढ़कर संसार को अन्ध विश्वास और अविद्या के गर्त में गिराने वाला है।

★ न हि सत्यात परो धर्मः। सत्य से बढ़ कर और कोई धर्म नहीं है।

★ ओ३म् क्रतो स्मर। (हे जीव ओ३म् का स्मरण कर)

लारेंस रोड अमृतसर

आर्यसमाज लारेंस रोड में आर्य प्रादेशिक सभा के पं० त्रिलोकचन्द्र शास्त्री प्रतिदिन उपनिषदों की कथा कर रहे हैं। समाज के भाई बहिन पूरा २ लाभ उठा रहे हैं।

शोक प्रस्ताव

आर्यसमाज लारेंस रोड ने आर्यजगत् के प्रसिद्ध संन्यासी स्वामी ध्रुवानन्द जी महाराज की तथा सभा के पूर्व मन्त्री प्रिंसिपल ज्ञानचन्द जी भाटिया जालन्धर के अत्यन्त दुःखद स्वर्गवास पर भी दोनों के लिए अपने विशेष अधिवेशन में शोक प्रस्ताव मौन होकर पारित किए। प्रभु से दिवंगत आत्माओं की शांति के लिए प्रार्थना की तथा समाज की इनके चल बसने से अपार क्षति को भी अनुभव किया। स्वर्गीय श्री भाटिया जी के परिवार से हार्दिक समवेदना प्रकट करते हुए इस भारी कष्ट को सहन करने और परिवार को सहनशक्ति प्रदान करने की भी भगवान से की प्रार्थना की गई।

प्रिं० ज्ञानचन्द भाटिया

(पृष्ठ ३ का शेष)

प्रकट करता है। प्रभु से दिवंगत आत्मा को शान्ति देने की प्रार्थना है। आर्य समाज से धीरे २ स्वर्गीय प्रिंसिपल भाटिया जैसे धर्म प्रेमी, समाज सेवी आंखें बन्द करके चलते जा रहे हैं। कितनी भारी क्षति है। पुराने महारथियों के जीवन में समाजसेवा का विशेष ही जोश होता है। उनके परिवार को प्रभु इस भारी दुःख सहन करने की सहन शक्ति देवे तथा प्रभु उसको इन के जीवन पथ पर चलने की शक्ति भी प्रदान करें—सं०

नारी स्तंभ

भ्रष्टाचार-उन्मूलन में नारी का दायित्व

सम्पादिका-कु० सुशीला आर्या एम० ए० विद्यावाचस्पति
कन्या गुरुकुल, नरेला

आजभ्रष्टाचार हमारे देश की बहुत विकट समस्या है। सच पूछिए तो सीमा संकट से भी बढ़कर। क्योंकि सीमा संकट को जन्म देने का कुछ सीमा तक तथा उसे भयावह बना देने का पूर्ण उत्तरदायित्व भ्रष्टाचार के विस्तार पर है। आप कहीं जा देखिए सर्वत्र इसका बोलबाला है। शिक्षा क्षेत्र, व्यापार, राजनीति, रंगमञ्च यहां तक कि प्रेमलीला का क्षेत्र भी इससे अछूता नहीं बच सका। अब तो दिन-प्रतिदिन इसका रंग कुछ ऐसा गहरा होता जा रहा है कि इसे समाज में कोई कलंक न मान कर अनिवार्य तथा स्वाभाविक मान लिया गया है। भ्रष्टाचार के प्रति एक सामान्य जन-भावना है कि सभी ऐसा करते हैं। किन्तु फिर भी इसके उन्मूलन के लिए शासक और शासित दोनों ही किसी न किसी रूप में तत्पर दीख पड़ते हैं। क्योंकि भले ही सभी इसके शिकार हैं इससे पीड़ित भी तो सभी हैं। माना कि सभी भ्रष्टाचार में लीन हैं तथापि सभी इससे छुटकारा भी चाहते हैं। इसी लक्ष्य को लेकर अनेक स्थानों पर भ्रष्टाचार-निरोध-समितियां संगठित की जा चुकी हैं। कई नेता जिनमें श्री गुलजारी लाल नन्दा का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इस कार्य के लिए क्षेत्र में कूदे हैं। भाषणों और समाचार पत्रों द्वारा जन-रुचि उत्पन्न करने के प्रयत्न भी जारी हैं किन्तु ये सब यत्न बहुत कम सफल होने की आशा है। हमारे विचार में तो इस योजना को ठोस कार्य रूप में परिणत करने की आशा नारी के हाथ है।

आप को यह बात कुछ अटपटी लग सकती है। देखने में यही प्रतीत होता है कि देश में फैले हुए भ्रष्टाचार का नारी पर कोई दायित्व नहीं। उसका भ्रष्टाचार के प्रसार में कोई हाथ नहीं। क्योंकि यह व्यापार राजनीति और बड़ी-बड़ी योजनाओं से सम्बन्धित दोष है; कोई पारिवारिक कुप्रथा नहीं। व्यापारी संग्रह-नीति अथवा चोर-बाजारी के रूप में, राजनीतिज्ञ भाई भतीजावाद तथा कथनी व करनी के अन्तर के रूप में, अधिकारी लालफीताशाही तथा रिश्वतखोरी के रूप में, योजनाओं के संयोजक कागज की धरती पर कलम का हल चला कर 'अधिक अन्न उपजाओ' आंदोलन की सफलता की दुराशा के रूप में जो भ्रष्टाचार पनपा रहे हैं। तथा पदार्थ विक्रेताओं ने जो कोई भी वस्तु शुद्ध रूप में समाज को उपलब्ध न होने देने का ठेका उठा रखा है उसे सब से नारी सर्वथा निर्लिप्त है किन्तु वास्तविकता कुछ और ही है। प्रथम तो नारी व्यापार राजनीति आदि किसी भी क्षेत्र से सर्वथा बहिष्कृत नहीं अपितु कहा जाए कि बढ़ चढ़ कर भाग लेने में प्रतिदिन उन्नति कर रही है। फिर यदि नारी के केवल घर तक सीमित रूप पर भी विचार किया जाए तब समाज में फैले समस्त भ्रष्टाचार के सम्पूर्ण दायित्व का बोझ उसी के कन्धों पर आकर पड़ता है। आप कहेंगे, कैसे?

देखिए, प्रत्येक पुरुष किसी माता का पुत्र, किसी बहिन का भाई, किसी स्त्री का पति तथा किन्हीं पुत्रियों का पिता है। उसका कार्य धनोपार्जन करके परिवार का पोषण रक्षण करना है। वह जो भी कार्य करता है उस में कुछ न कुछ कमा कर लाता है। माता, बहिन पत्नी तथा पुत्रियों के रूप में नारी उसे व्यय करती है। कुछ परिवारों की बात छोड़िए जहां पुरुषों का स्थान स्त्रियों ने ले रखा है चर्चा सामान्य औसत परिवारों की है। अब यह नारी पर निर्भर है कि वह अपनी आवश्यकताओं को कितना बढ़ाती तथा कितना संकुचित करती है। मनुष्य की मूलभूत आवश्यकताएं रोटी कपड़ा मकानादि को छोड़कर शेष की तुलना रबड़ से की जाती है। इनका स्वभाव विस्तार संकोच-शील होता है। यदि आज की गृह-चालिका चाहे वह माता हो या पत्नी बहिन या किसी दशा में पुत्री अपनी तथा परिवार की आवश्यकताओं को उचित कमाई से पूरा करने का प्रण करती है तो उस घर में क्या मजाल जो भ्रष्टाचार की कमाई का एक पैसा भी आ सके। लोक-परलोक से डर कर चलने वाली नारी को ऐसा एक-एक पैसा सांप बनकर काटने को दौड़ता है। दूसरी ओर जो देवियां कोई मरे कोई जीए सुथरा घोल बताशे पीए की उक्ति लेकर चलती हैं उनका दृष्टि-कोण स्व-सीमित होता है। और दृष्टि की दीर्घदर्शिता नष्ट होते ही आवश्यकताएं तथा कथित सुरसा के मुख की भान्ति बढ़ती जाती हैं। उनकी पूर्ति के लिए पुरुष को बाधित होकर भ्रष्टाचार करना पड़ता है। इस रूप में नारी देश के सम्पूर्ण भ्रष्टाचार को करने का व सही करवाने का कलंक माथे पर लिए बैठी है।

हम यह गारंटी से नहीं कह सकते कि सभी पुरुष दूध के धोए हैं और केवल नारी की प्रेरणा पर ही वे व्यापारादि में अनुचित क्रियाएं करते हैं किंतु इतना दावे से कह सकते हैं कि यदि नारी चाहे तो मन के मैले पुरुषों को भी सुमार्ग पर ला सकती है। पत्नियों की शृंगार प्रसाधन सामग्री की नित्य नई मांगों से तंग आकर भ्रष्टाचार का हथियार पकड़ने वाले बहु-संख्यक पतियों की समाज में उपस्थिति से आप भी इन्कार नहीं कर सकती। अपने हृदय पर हाथ रख कर तथा आस पास के समाज पर दृष्टि डाल कर देख लीजिए आप को हमारी बात में कितने प्रतिशत तथ्य नजर आता है।

यहां दो तर्क दिए जा सकते हैं। एक तो यह कि भ्रष्टाचार के बिना जीवन निर्वाह संभव नहीं। इस के मूल में भी एक कारण है वह यह कि समाज में भ्रष्टाचार की परम्परा चल निकलने से यह स्थिति उत्पन्न हुई है। एक क्लर्क को इस लिए रिश्वत लेना पड़ती है क्योंकि उसे अपने उच्चाधिकारियों का कृपा-पात्र बना रहने के लिए उन्हें भी भेंट चढ़ानी होती है। इस प्रकार यदि ऊपर से फैली इस की शाखाएं छांट दी जाएं तो कोई भी इस की छाया में शीतलता प्राप्त करने का लोभ न कर सकेगा। सामान्य तथा यही सुनने में आता है कि क्या करें धर्म की कमाई से निर्वाह नहीं होता। इस के लिए पूर्व कथनानुसार आवश्यकताओं को अधिक न बढ़ने देना, समाज के प्रति दायित्व को समझना तथा नैतिक उत्थान के मूल्यांकन की भावना को सजग करना आवश्यक है। यदि ऐसे कुछ व्यक्तियों के उदाहरण मिल सकें तो उन से अपने जीवन का तुलना कर के भी देख सकते हैं।

दूसरा तर्क नारी के विषय में यह उठ सकता है कि बहुत दशाओं में वह चाहते हुए भी पुरुष को भ्रष्टाचार से रोक नहीं सकती। इस में भी सार है। इस युग में सबला बनने की धुन में नारी ने अपना बहुत कुछ बल खो डाला

(शेष पृष्ठ ६ पर)

श्री ज्ञानचन्द जी भाटिया का स्वर्गवास

आर्य समाज का एक और विश्वासी कार्यकर्ता मृत्यु ने छीन लिया। आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के मन्त्री, आर्य समाज मौडल टाउन के प्रधान, लोकल एडवाइज़री कमेटी के प्रधान तथा डी. ए वी. कालिज मैनेजिंग कमेटी के सदस्य रह कर श्री भाटिया जी अनेक रूपों में लगातार आर्य समाज की सेवा कर रहे थे। उनका आर्य समाज के साथ सम्बन्ध सुदीर्घ और घनिष्ठ था।

इस घनिष्ठ सम्बन्ध के दो उदाहरण कभी न भूलेंगे। महात्मा हंसराज शताब्दी समारोह में भाटिया जी की आवाज सदा इस बात के पक्ष में रही कि अधिक से अधिक धार्मिक रूप इस समारोह का होना चाहिए, लोक दिखावा कम से कम। वे अंग्रेज़ी के सुयोग्य विद्वान् थे पर डी. ए. वी. कालिज सम्बन्धी समारोहों पर सदा हिन्दी में भाषण करते, बिना इस बात की परवाह किए कि छोटे-बड़े लोग क्या कहेंगे।

स्वभाव से नम्र, मीठा और शान्ति से बोलने वाले, लगन के पक्के तथा स्वा. दयानन्द के अगाध श्रद्धालु भाटिया जी ने समाज में अपना एक सुरक्षित स्थान बना लिया था।

लाहौर की सूत्तर मंडी में पिता ला. मंढूमल तथा माता शिवदित्ती के घर में १८६५२ अक्तूबर को भाटिया जी का जन्म हुआ। मिशन कालिज से एम. ए. करने तक पूर्ण शिक्षा लाहौर में प्राप्त की सेवाकाल में लाकालिज तथा हैली कालिज आफ कामर्स में प्रोफेसर रहे। अवकाश प्राप्त करने के बाद मालेरकोटला कालिज के प्रिंसिपल रहे। उन्होंने कालिजों में तथा यूनिवर्सिटी में विभिन्न रूपों में सदा अपनी अपूर्व योग्यता का प्रदर्शन किया।

स्वास्थ्य ठीक न होने से जालन्धर आ गए। वा. २ उमंग आती कि किसी साधु आश्रम में बैठकर वानप्रस्थ रूप से जीवन व्यतीत करें पर स्वास्थ्य साथ न देता।

इसी स्वास्थ्य ने अन्तिम बार धोखा दिया और आर्यसमाज का एक सच्चा कार्यकर्ता अपना स्थान रिक्त कर गया।

समस्त आर्यजगत की ओर से भाटिया जी के परिवार के साथ हम समवेदना का प्रकाश करते हैं तथा परम प्रभु के चरणों में प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करें।

मनुष्य का मनुष्य के साथ सम्बन्ध कितना पक्का है और कितना कच्चा भी।

समाज क्षेत्र

महात्मा हंसराज शताब्दी समारोह अभी चल रहा है। १५ नवम्बर इसका अन्तिम शानदार कार्यक्रम सम्भवतः जालन्धर में ही होगा। इस प्रसंग में दो उपशताब्दी समारोह अमृतसर तथा हिसार में होने जा रहे हैं। अमृतसर में अक्तूबर मास में तथा हिसार में नवम्बर के प्रथम सप्ताह में। अन्य स्थानों पर भी अनेक रूपों में यह कार्यक्रम चलेगा। दान संग्रह का कार्य आर्यसमाज के अथक कार्यकर्ताओं द्वारा लगातार चल रहा है।

जुलाई तथा अगस्त में वेद सप्ताह मनाने के दिन भी आ रहे हैं। श्रावणी उपाकर्म (राखड़ी) के दिनों में ही वेद सप्ताह मनाने से सभा के कार्यकर्ता, उपदेशक भजनीक सब जगह पहुंच नहीं सकते। अतः यह विचार है कि भिन्न २ समाजें ने जुलाई तथा अगस्त के दो मास में भिन्न २ तिथियों पर 'वेद प्रचार सप्ताह' का निश्चय कर सभा को सूचना देने का कष्ट करें तो सभा के सुयोग्य विद्वान तथा भजनीक अनेक समाजों की सेवा कर सकेंगे।

आर्यसमाज के क्षेत्रों में स्त्री समाजों का बड़ा महत्वपूर्ण स्थान है। धन संग्रह के कार्य में देवियां पुरुषों से सदा आगे रहती हैं। साथ ही श्रद्धा-पूर्वक यज्ञ कराना भी स्त्री समाजों की अपनी एक विशेषता है। आर्यसमाज की मातृ-शक्ति का कार्य तो बड़ा प्रबल पर कोई संगठन न होने से कार्य अस्त-व्यस्त रहता है। धन का कोई हिसाब नहीं रह पाता और किसको क्या देना है इसकी भी कोई व्यवस्था नहीं रहती। सभा के नियमानुसार जहां-जहां भी पृथक स्वतन्त्र स्त्री सभाएं हैं उन्हें सीधा आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा से अपना दशांश भेजकर सम्बन्ध जोड़ना चाहिए। तभी अव्यवस्था हट सकेगी।

सत्यदेव मन्त्री सभा

भ्रष्टाचार-उन्मूलन में नारी..

(पृष्ठ ५ का शेष)

है। उसे अपने आचरणों के परिष्कार द्वारा अपने को इतनी सशक्त बनाना है कि नैतिक उत्थान के क्षेत्र में तो सर्वेसर्वा वही हो। यह कार्य केवल उसी के किए होगा। उसे अपने दायित्व के प्रति सुषुप्त नहीं रहना चाहिए। दायित्व समझने मात्र से कभी न कभी इसे वहन करने योग्य बल संचित होने की भी आशा की जा सकती है।

आर्य समाज लोहगढ़, अमृतसर

सत्संग में श्री पं. धर्मपाल जी बी. ए. ने 'देव यज्ञ के स्वरूप) के विषय पर सारगर्भित व्याख्यान दिया। तत्पश्चात् श्री स्वामी ध्रुवानन्द जी, श्री स्वा. ब्रह्मानन्द जी, तथा श्री प्रो. ज्ञानचन्द जी भाटिया एम. ए. भूतपूर्व मन्त्री प्रादेशिक सभा के निधन पर प्रस्ताव पास किए गए।

पिण्डीदास जी ज्ञानी
प्रधान समाज

शोक-प्रस्ताव

आर्य क्षेत्र के एक और नेता चल बसे

आर्य संसार को यह दुःखद समाचार सुनकर अति खेद होगा कि कल ५ जुलाई १९६५ को देहली के हस्पताल में महात्मा देवीचन्द्र जी का स्वर्गवास हो गया आप काफी समय से स्वास्थ्य लाभ के लिए देहली हस्पताल में प्रविष्ट हुए थे। आप चिरकाल तक डी. ए. वी. कालिज होशियारपुर, दयानन्द साल्वेशन मिशन होशियारपुर; जिला वेदप्रचारिणी सभा तथा प्रादेशिक सभा जालन्धर के प्रधान पद पर सुशोभित रहे आज कल आप अथर्ववेद का अंग्रेज़ी अनुवाद कर रहे थे ८५ वर्ष की आयु में आप आर्य संस्थाओं को अनाथ बना कर चल बसे। आर्यजगत और सभा उनके इस निधन पर गहरा शोक प्रकट करती है तथा उनके सम्बन्धियों से हार्दिक सहानुभूति प्रकट करती है। —व्यवस्थापक

आर्यसमाज लक्ष्मणसर (अमृतसर)

रविवार ४ जुलाई, आर्यसमाज लक्ष्मणसर के साप्ताहिक सत्संग में आर्यसमाज के चोटी के नेता और प्रसिद्ध विद्वान संन्यासी श्री स्वामी ध्रुवानन्द जी, प्रोफैसर ज्ञानचन्द जी भाटिया तथा श्री पं. सत्यदेव जी विद्यालंकार (दिल्ली वाले) के दुःखद देहान्त को आर्यसमाज के लिए न पूरी होने वाली क्षति और भारी चिन्ता का कारण समझते हुए इसपर हार्दिक शोक का प्रस्ताव पास किया तथा आर्य समाज के आधुनिक नेताओं एवं प्रतिनिधि सभाओं से प्रार्थना की गई कि वह अपने परस्पर के झगड़ों और फूट को समाप्त करके आर्य समाज के अन्दर दिन-प्रति-दिन आ रही इस कमी और निर्बलता को दूर करने का उपाय सोचें। —रुद्रदत्त शर्मा
प्रधान समाज

टंकारा यात्रा :—

गुजरात प्रान्त में आर्य समाज का प्रचार

(श्री ला. मथुरादास जी मन्त्री आर्य समाज नवांकोट अमृतसर)

श्रीयुत ला. मथुरादास जी आर्य समाज के आरम्भ से ही मौन तथा अनथक महारथी हैं। आर्यसमाज बद्दोमली जिला स्यालकोट के स्तम्भ रहे हैं। आर्य प्रादेशिक सभा के पुराने सहयोगी, महात्मा हंसराज जी के भक्त हैं। सारा परिवार ही समाज व धर्म के रंग में रंगा हुआ है। देश विभाजन के बाद अमृतसर नवांकोट समाज के आप संस्थापक हैं। बड़े मधुरभाषी हैं। टंकारा यात्रा पर गए थे। हमारी प्रार्थना पर वहां का सुन्दर वृत्तान्त लिखा है। आर्यजगत के पाठक लाभ उठावें—सं०

शिवरात्रि प्रतिवर्ष आती है। इसे सनातन धर्मी और आर्य समाजी सारे मनाते हैं। आर्य समाज मन्दिरों में ऋषि दयानन्द के प्रति श्रद्धा भाव भेंट करने के लिए उत्सव समारोह होते हैं। जलूस व प्रभात फेरियां भी समय २ पर निकाली जाती हैं। परन्तु इस वर्ष शिवरात्रि का उत्सव कुछ विशेष महत्व का था। क्योंकि छः सात वर्षों से ऋषि दयानन्द की जन्म-भूमि टंकारा में दयानन्द स्मारक ट्रस्ट स्थापित हो चुका है। श्रीयुत डा. मेहर चन्द जी महाजन पूर्व जस्टिस सुप्रीम कोर्ट इसके प्रधान हैं तथा श्री. पं. आनन्द प्रिय जी बड़ोदा इस ट्रस्ट के मन्त्री हैं। गत वर्षों में कई बार टंकारा का ऋषि मेला देखने की इच्छा हुई थी, परन्तु किसी कारण सफल न हो सकी। इस वर्ष टंकारा समिति देहली के मान्य श्री राम-लाल जी ठेकेदार के शुभ प्रयत्न से स्पेशल गाड़ी टंकारा ले जाने का प्रबन्ध किया गया। उनका यह विचार था कि एक गाड़ी का भी प्रबन्ध शायद हो, परन्तु ऋषि-भक्तों का इतना उत्साह देखने में आया कि बजाय एक गाड़ी के दो स्पेशल गाड़ियां उनको देहली से टंकारा के लिए ले जानी पड़ीं। मेरी टंकारा देखने की बड़ी देर की इच्छा इस वर्ष पूरी हुई। यह यात्रा बड़ी ही सफल रही। इसका संक्षिप्त-सा विवरण आर्यजगत के सम्पादक पं० त्रिलोकचन्द्र शास्त्री के लिखने व अनुरोध पर लिख रहा हूं। ग्यारह दिन लगातार यात्रा करते हुए कई नगर व स्थान देखे। कई अनुभव हुए। आर्य-समाज के प्रचार की कहां पर कैसी स्थिति है। अब कहां पर किस विशेष बात की आवश्यकता है—ये सारी बातें सामने आईं। यात्रा के साथ-साथ ये बातें भी आर्यसमाज के सामने आनी चाहिएं ताकि हम उनपर विचार करके समाज के प्रचार की प्रगति का प्रबन्ध कर सकें।

देहली से जब स्पेशल गाड़ी गाड़ी चलाने का विचार हुआ तो श्री वीरेन्द्र जी दैनिक प्रताप ने इस आशय के तीन-चार जोरदार लेख लिखकर आर्यसमाज का ध्यान इधर आकर्षित किया। इन लेखों से प्रभावित होकर पंजाब, उत्तर-प्रदेश, जम्मू-काश्मीर, देहली बंगाल, बिहार, मध्य प्रदेश आदि प्रान्तों से बहुत से सज्जनों ने अपनी-अपनी सीटें नियत कराईं। अमृतसर से अस्सी के लगभग, लुधियाना से सौ के लगभग, फिरोजपुर रोहतक, पानीपत, अम्बाला, चंडीगढ़ पठानकोट आदि से भी काफी संख्या में नर-नारी तैयार हुए। (क्रमशः)

—

ला० दुनी चन्द अम्बालवी

(ले०—श्री आशु राम जी पुरोहित, चंडीगढ़)

शरीरों का अन्त एक दिन अवश्यभावी है। पर जिन के जाने से एक महत्व पूर्ण स्थान देश, जाति और समाज में रिक्त हो जाये, उन का जाना स्वाभाविक तथा सब के लिये दुःखदायक होता है।

पूज्य ला० दुनी चन्द पुरानी पीढ़ी के आर्य समाजी ला० लाजपत राय, महात्मा हंसराज शहीदे, अकबर पं० लेख राम, त्याग मूर्ति पं० लखपत राय, मि० मेहर चन्द जी आदि के समकालीन निर्भय विचारशील, न्याय प्रिय और देश भक्त आर्य समाजी नेता थे। मुझे वह जब भी मिलते थे आर्य समाज की चर्चा करते हुए, और आर्य समाज के सम्बन्ध में नये-नये कार्यक्रम, नई-नई योजनाएं और नये प्रोग्राम सुनने का उत्साह रखते थे। हर बार प्रायः यह तो वह अवश्य ही पूछ लेते थे कि बताओ पण्डित जी! टेक चन्द जी समाज में आते हैं या नहीं? (आप के बड़े सुपुत्र जस्टिस टेक चन्द जो कि शराब बन्दी कमीशन के भारत में अध्यक्ष थे) इस से भी मुझे लगता था कि इन के हृदय में आर्यसमाज और वैदिक धर्म के प्रति कितनी श्रद्धा प्रेम और प्यार है तथा उसे अपनी सन्तति में भरने के लिये वह कितने उत्साहित रहते थे। प्रायः बैठने पर आर्यसमाज के भूत कालीन इतिहास को बहुत लाभदायक बातें बतलाया करते थे। परन्तु अब वर्तमान में वैसा और जोश वैदिक धर्म के प्रति आर्यसमाज में न पा कर वह दुखी मन हो जाया करते थे।

आर्यसमाज की सेवा में जुटा हुआ देख कर वह मुझ से सदा आत्मवत प्यार करते और प्रशंसा से सदा मेरा उत्साह बढ़ाया करते थे। जैसा कि समाचार पत्रों में स्वर्गीय की देश भक्ति की अनेक घटनायें निकली हैं यह तो उन के जीवन का आदर्श रूप ही थीं। साथ इस के जाति भक्ति अर्थात् कौमीयत के जज़बात भी लाला जी में सदा प्रचण्ड रहते थे।

कहीं भी किसी समय हिन्दुओं पर सामूहिक रूप से वा हिन्दू संस्कृति और धर्म पर आंच आये वा आक्रमण हो, अत्याचार हो तो वह तड़प उठते थे। टाईपिस्ट को बुला बड़ी रात गये तक लिखते रहते और टाईप कराते जाते थे। उनकी लेखनी में बड़ा बल और युक्तियों में महान औचित्य (वज़न) होता था। जिस को पढ़ और सुन कर जनता और सरकार पर एक विशेष प्रभाव होता था। सबल विरोधी भी उनके दृष्टिकोण से सहमत हो जाते थे।

गरीबों की सहायता के लिये आपके हृदय में एक अग्नि थी जो बुझाये कभी बुझी नहीं थी। कांग्रेस और कांग्रेस सरकार की वर्तमान गिरावट और अंधेर-गर्दी, महान आदर्शों से बुरी तरह भटक कर भ्रष्ट मार्ग को अपना लेने आदि की नित्य प्रति की दुर्घटनाओं से स्वर्गीय बहुत दुखी रहते थे और कभी २ अपने धारा प्रवाह जन व्याख्यानों तथा प्रैस के द्वारा इन की भरसक आलोचना किया करते थे।

आप एक सच्चे कांग्रेसी, आदर्श पालक और गांधी भक्त

(शेष पृष्ठ ८ पर)

ला. दुनीचन्द अम्बाले

(पृष्ठ ७ का शेष)

थे। पंजाब विधान सभा के द्वारा मुद्दतों आपने पंजाब की जनता की सेवा की। अपितु आपकी धर्म पत्नी श्रीमती भाग देवी भी लैजिस्लेटिव सदस्या के रूप में सेवा कार्य में साथ लगी रहीं।

जहां तक मेरा विचार है माता भागदेवी जी पंजाब की सर्वप्रथम हिन्दू देवी थीं जिन का प्रवेश असैम्बली में उस समय हुआ जबकि लोग अपने अस्तित्व को जानते ही नहीं थे और जिसकी तत्कालीन अंग्रेजी राज्य के नीचे दबे हुए होने के कारण बड़ी आवश्यकता थी। विशेषकर स्त्री सुधार के लिये। जिस कर्तव्य को इन्होंने इस रूप में खूब निभाया। आप दोनों पति पत्नी के कन्याओं की शिक्षा में प्रेम का उदाहरण आपका स्थापित अम्बाला शहर का आर्य कन्या विद्यालय है जो कि एक पवित्र स्मृति है।

इस प्रकार लगभग ६६ वर्ष की जीवन लीला की परिसमाप्ति २१-६-६५ को दिल्ली में हो गई। अतः निम्नलिखित अथर्ववेद मन्त्र के द्वारा दिवंगतात्मा की शान्ति के लिये प्रार्थी हूं।

ओ३म् तपसा ये अनाधृष्यास्तपसा ये स्वर्ययुः। तपो ये चक्रिरे महस्तांश्चिद् देवापि गच्छतात् स्वाहा॥ अथर्व वेद १८/२/१६

जिन श्रेष्ठ आत्माओं ने तप के आधार पर सदा अपना जीवन व्यतीत किया, कभी अन्याय अत्याचार के सामने सिर नहीं झुकाया अपनी तपस्या से जिन्होंने जीवन में दिव्य सुख को अनुभव किया और जो अपने तप के कारण संसार में दिव्य ख्याति को प्राप्त हुए हैं हे जीवात्मा! तू उनके मार्ग से गति करने वाला हो।

...सर ...प्रचार कार्य

...माज लक्ष्मणसर की ओर से नगर के बहुत गुञ्जान इलाका चौरस्ती अटारी के पास पटेल चौक में दैनिक प्रचार २ मई से आरम्भ किया गया। पहले एक सप्ताह श्री स्वामी गंगा गिरि जी कुलपति, गुरुकुल रायकोट की हरजस कथा होती रही। उसके पश्चात् ९ मई से आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के सुयोग्य उपदेशक श्री पं. ओमप्रकाश जी की प्रभावशाली कथा आरम्भ हुई जो निरन्तर १ जून तक जारी रही। उपस्थित दिन प्रतिदिन बढ़ती गई और आर्य सज्जनों के अतिरिक्त पौराणिक देवियां और पुरुष भी भारी संख्या में आते रहे। पण्डित जी ने इन दिनों विभिन्न धार्मिक तथा सामाजिक विषयों और गृहस्थ आश्रम में परस्पर के कर्तव्यों पर विशेष प्रकाश डाला, जिसे जनता ने अत्यन्त पसन्द किया। लोग चाहते थे कि यह कथा का कार्यक्रम अभी दो मास और चलता जाए परन्तु सभा के दूसरे प्रोग्राम के अनुसार श्री पण्डित जी को अन्यत्र जाना पड़ा और उनके स्थान पर केन्द्रीय आर्य सभा अमृतसर की ओर से बुलाए गए, श्री पं० रामचन्द्र जी देहलवी के सुयोग्य शिष्य, खतौली वाले श्री पं. ओमप्रकाश जी शास्त्री के भाषण उसी स्थान पर आरम्भ करा दिए गए जो १६ जून तक जारी रहे और जनता बड़े प्रेम और श्रद्धा से सुनती रही।

इस सम्पूर्ण कार्य-क्रम का प्रभाव बहुत अच्छा रहा और कई सज्जन आर्यसमाज के सदस्य बने।

—निवेदक सरदारी शर्मा प्रधान

महात्मा आनन्द स्वामी जी का कार्यक्रम

आर्यजगत् के प्रसिद्ध सन्त पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज इस ८२ वर्ष की अवस्था में भी धर्म प्रचार में सारा वर्ष भारत के कोने २ में परिभ्रमण करते हुए कितने व्यस्त रहते हैं इस का परिचय आप के पूर्व नियत कार्यक्रम से मिल जाता है। आप का कार्यक्रम नगरों व तिथियों समेत नीचे दिया जा रहा है। प्रभु महात्मा जी को स्वस्थ दीर्घ जीवन देवें—

२ से १२ जुलाई देहली।

१५ से ३० जुलाई बंगलौर दक्षिण भारत।

१ से ८ अगस्त मसूरी।

१२ से २० अगस्त चण्डीगढ़ आर्यसमाज ८ सैक्टर

२२ अगस्त से १५ सितम्बर तक श्रीनगर काश्मीर।

१६ से २३ सितम्बर दुर्ग भिलाई मध्य प्रदेश।

२६ से ३० सितम्बर, खतौली।

१ से ६ अक्तूबर हिसार।

११ से १७ अक्तूबर अमृतसर में।

२५ से ३१ अक्तूबर हनुमान रोड देहली।

१ से ६ नवम्बर मथुरा।

८ से १५ नवम्बर रीडिंग रोड नई देहली।

२६ नवम्बर से २ दिसम्बर आर्यसमाज दीवान हाल देहली।

२३ से ३१ दिसम्बर तक कलकत्ता।

फिर अहमदाबाद गुजरात, नवसारी, सूरत।

आर्य समाज श्री गंगानगर राजस्थान

चुनाव

प्रधान—श्री नारायण राम जी आर्य, उप प्रधान—श्री डा. खुशी राम जी, और श्री नन्दराम जी आर्य, मंत्री—श्री किशनसिंह जी, उपमंत्री—श्री गंगाराम जी एडवोकेट और श्री आत्माराम जी पटवारी कोषाध्यक्ष—श्री प्रतापसिंह जी गोदान, पुस्तकाध्यक्ष—श्री सेवाराम जी आर्य, लेखा परीक्षक—श्री इन्द्रभान जी एडवोकेट, वस्तु भण्डार—श्री घासी राम जी वेदी

इसके अतिरिक्त अन्तरंग सभा के सदस्यों एवं अन्य प्रतिनिधियों का चुनाव भी सर्वसम्मति से हुआ।

मन्त्री—आर्य समाज श्री गंगानगर

मुद्रक व प्रकाशक श्री सन्तोषराज जी आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर द्वारा वीर मिलाप प्रेस, मिलाप रोड जालन्धर से मुद्रित तथा आर्यजगत कार्यालय महात्मा हंसराज भवन निकट कचहरी जालन्धर शहर से प्रकाशित मालिक—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर।



टैलीफोन नं० ३०५७ [आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधिसभा पंजाब जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd. No. P.

एक प्रति का मूल्य १३ नये पैसे — वार्षिक मूल्य ६ रुपये

वर्ष २५ अंक ३०) ३ श्रावण २०२२ रविवार—दयानन्दाब्द १४१— १८ जुलाई १९६५ (तार 'प्रादेशिक' जालन्

होशियारपुर निवासी स्वर्गीय महात्मा देवी चन्द जी एम० ए०



जिनका देहावसान ५ जुलाई १९६५ को देहली के हस्पताल में हुआ

अविस्मरणीय इतिहास

आर्यजगत् को यह दुःखद समाचार पढ़कर अति खेद होगा, कि ५ जुलाई १९६५ को देहली के हस्पताल में महात्मा देवीचन्द्र जी का निधन हो गया।

आप चिरकाल तक डी. ए. वी. कालिज होशियारपुर के प्रिंसीपल रहे। हिंदू जाति की सामाजिक त्रुटियों को दूर करने के लिए दयानंद साल्वेशन मिशन की स्थापना की। इस संस्था के द्वारा हजारों देवियों को विधर्मी होने से सुरक्षित किया। दलित जातियों का उद्धार किया। जिले में वेदप्रचारार्थ जिला वेद प्रचारिणी सभा की स्थापना की, जिस में अनेक उपदेशक व भजनीक रखकर ग्राम-ग्राम में वैदिक धर्म का नाद बजाया। आर्य समाज होशियारपुर के कई वर्ष तक प्रधान पद पर सुशोभित रहे। आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा जालंधर के भी प्रधान पद पर रहते हुए सभा के वेद-प्रचारार्थ पंजाब के बड़े-बड़े नगरों में भ्रमण करके पर्याप्त धन संग्रह किया।

अविस्मरणीय इतिहास

आप ने होशियार पु[र] जिले के अनेक स्कूलों [में] शिक्षा विस्तार किया स्थान स्थान पर भाषणों द्वार[ा] वैदिक धर्म का प्रचा[र] किया। आपके भाषणों [में] वास्तविकता और जो[श] भरा रहता था। वाणी [में] तुमुलगर्जना थी इस बड़[ी] आयु मे भी पूर्ण स्वस्थ रह[ते] थे। कालिज से निवृत हो[ने] के बाद आजकल आप चार[ों] वेदो का अंग्रेजी में भाष्य क[र] रहे थे यजुर्वेद और सामवेद का भाष्य पूर्ण करके आज कल अथर्ववेद का भाष्य पूरा करने में दत्तचित थे परन्तु ईश्वर को यह स्वीकार नहीं था अचानक बीमार होकर देहली [में] स्वास्थ्य लाभ के लिए गए और वहां तीन-चार मास इलाज करने के बाद, ५ जुलाई १९६५ को इस नश्[वर] देह को त्याग कर स्वर्ग सिधार गए। आर्य जगत को अनाथ बना गए। इस की पूर्ति होनी अति कठिन है।

अधिष्ठाता—श्री संतोषराज जी

सम्पादक—त्रिलोक चन्द्र

'महात्मा हंसराज'

ब्राह्म समाज के निमन्त्रण पर महर्षि दयानन्द सरस्वती लाहौर पधारे तथा पंजाब प्रान्त के कई अन्य स्थानों पर भी प्रचार कार्य किया। विविध रावी आदि नदियों से सिंचित इस प्रान्त की उर्वरा भूमि में महर्षि के विचारों का बीज सब से अधिक अंकुरित, पुष्पित और फलित हुआ। महर्षि के विचारों की वाटिका ने महात्मा हंसराज जी को विद्यार्थी-काल में ही अपनी ओर आकर्षित किया और वे पूर्ण रूपेण इस रंग से रंग गये। अजमेर में महर्षि के स्वर्गवास के पश्चात्, उन के स्मारक की सर्वत्र चर्चा चली। पंजाब के नेताओं ने शिक्षा संस्था के रूप में स्मारक बनाने का निश्चय किया, जिस का नाम 'दयानन्द एङ्गलो वैदिक' रखा, और उसके संचालन के लिए एक लाख रुपये की अपील की गई।

उन दिनों बी० ए० होना एक विशेष महत्त्व रखता था। श्री हंसराज जी के बी० ए० हो जाने पर घर वालों ने न जाने क्या-क्या आशायें लगा रखी थीं। जब कि उन के सहपाठी अच्छे अच्छे सरकारी पदों को अलंकृत कर रहे थे, तब महात्मा हंसराज जी ने घर वालों और धन की चिन्ता न करते हुए 'दयानन्द एङ्गलो वैदिक' प्रबन्ध समिति के समक्ष इस कार्य के लिए अवैतनिक कार्य करने का प्रस्ताव रखा। इस से प्रबन्ध वर्ग में एक आशा की लहर, आ गई। आप ने सारा जीवन अपनी प्रतिज्ञा का पालन करते हुए गीता के निष्काम कर्म योग को चरितार्थ कर के दिखा दिया। तभी किसी कवि ने कहा था—'हंस हंस के 'हंसराज' ने तन, मन, व धन लुटा दिया'।

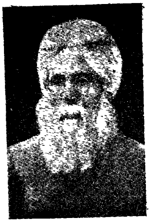
महर्षि के स्मारक का यह रूप वस्तुतः ही प्रशंसनीय था, क्योंकि यदि हम महर्षि के समग्र कार्य को एक शब्द में कहें तो वह है 'शिक्षा' यह वास्तव में गागर में सागर भरने वाली ही बात है। इसी की ही पुष्टि आर्यसमाज के आठवें नियम से होती है 'अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए' यतो हि सर्वेषांम् कष्टे, दुःख, दर्द, आपत्ति और विपत्ति का कारण संसार में एक मात्र अविद्या ही है। जिसका निवारण विद्या के द्वारा ही हो सकता है अतः एव विद्वानों ने विद्या की प्रकाश और नेत्र से उपमा दी है। ऐङ्गलो और वैदिक का यह सामयिक मेल अच्छा ही रहा।

ले०—श्री भद्र सैन जी दर्शनाचार्य वि० वे० शोध संस्थान होशियारपुर

जिस प्रकार घड़ी रखने के साथ उसको मिलाकर रखने से ही उसका लाभ उठाया जा सकता है, तथैव शिक्षा के साथ उस का सामयिक होना अत्यावश्यक हो जाता है। गुरुकुलों की महिमा चाहे कितनी भी क्यों न हो, परन्तु वहां से स्नातक होने के पश्चात् यदि कोई संसार में अपने आप को अपूर्ण समझता है तो वह महिमा धरी की धरी ही रह जाती है।

दयानन्द एङ्गलो वैदिक कालिज की अन्य राजकीय शिक्षा संस्थायें होने पर भी एक विशेष विशिष्टता थी, कि यहां भारतीय संस्कृति की सुरक्षा के लिए विशेष प्रयास किया जाता था। जहां अन्य संस्थाओं में भारतीय संस्कृति के प्रति घृणा और द्वेष की भावनायें भरी जाती थीं। जैसा कि महात्मा जी के जीवन की एक दिन की मिशन स्कूल की घटना से चरितार्थ होता है। वहां यह सोचा गया था कि यदि भारतीय संस्कृति रूपी भारत की आत्मा का नाश हो गया तो उसके बिना भारत की स्वाधीनता और पराधीनता में कोई अन्तर न होगा। अतः भारतीय संस्कृति की समृद्धि के लिए इन शिक्षा संस्थाओं में धार्मिक शिक्षा का विशेष आयोजन किया गया और महात्मा-हंसराज जी स्वयं धार्मिक शिक्षा दिया करते थे। आज महात्मा जी की इस भावना की ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

महात्मा जी के जीवन की एक सब से बड़ी विशिष्टता यह थी कि उन दिनों आप भारतीय इतिहास में सब से पहिले एक उच्च शिक्षा संस्था के प्रिंसिपल (आचार्य) होते हुए भी प्राचीन ऋषि, मुनियों की तरह तप और त्याग की एक साक्षात् मूर्ति थे और वे सच्चे अर्थों में महात्मा कहलाने के अधिकारी थे। 'सादा जीवन उच्च विचार' की लोकोक्ति उनके जीवन पर शत प्रतिशत चरितार्थ होती है। आप के इस तप और त्याग का ही परिणाम था कि विदेशी राज्य होने पर भी, उनकी सहायता के बिना ही शिक्षा संस्थाओं का जाल सा फैल गया। आप ने इस क्षेत्र की अभूतपूर्व सेवा के द्वारा शिक्षा क्षेत्र में एक अपूर्व क्रांति उत्पन्न कर दी। इन शिक्षा संस्थाओं ने हजारों की संख्या में स्नातक तैयार, करके भारत की स्तुत्य सेवा की और आज भी कर रही हैं।



स्वर्गीय महात्मा हंसराज जी

सेवा—आज कल की तरह उन दिनों यातायात आदि की पूर्ण सुविधा न थी पुनरपि हर कष्ट की परवाह न करते हुए जब जहां भी आवश्यकता पड़ी वहीं पहुँचे और दुनिया की कोई बाधा उन्हें बांध न सकी। सहानुभूति से उनका हृदय द्रवित हुआ और बीकानेर का अकाल, कांगड़े का भूचाल, मालाबार के दंगे, कोहाट का आतंक कोटा की विनाशकारी प्रलय तथा गढ़वाल आदि विभिन्न स्थानों पर दल बल सहित दीन दुखियों की सेवा के लिए पहुंचे। सेवा और सहायता करते हुए मानव, मानव बीच में धर्म आदि की दृष्टि से कोई भेद भाव न किया और न ही ईसाइयों की तरह सहायता देते हुए धर्म परिवर्तन के लिए किसी प्रकार का दबाव न डाला, अर्थात किसी को विवशता से कभी अनुचित लाभ उठाने की चेष्टा नहीं की। आपके तप और त्याग के कारण आपकी अपील पर लोगों ने हर सहायता प्रदान की।

जहां शिक्षा-शास्त्री आदि के रूप में आप में महान गुण थे, वहां आप जीवनोपयोगी साधारण समझी जाने वाली बातों की ओर भी विशेष ध्यान देते थे। आप कार्यालय में अपने या दूसरों के व्यक्तिगत कार्य न करते थे। एक बार एक व्यक्ति आपके पास कार्यालय में व्यक्तिगत कार्य के

(शेष पृष्ठ ६ पर)

सम्पादकीय—

आर्य जगत

वर्ष २५] रविवार २०२१, १८ जुलाई १९६५ [३० अंक

आर्य समाजें सावधान

भारत में अलग २ धर्मगुरू ने अपना जुदा २ मण्डल बनाकर अपना अलग ही संसार बना रखा था। व्यक्तिवाद को प्रमुखता तथा प्रधानता दे रखी थी। जिसका परिणाम देश की पराधीनता के रूप में निकला। व्यक्तिवाद समष्टिवाद के लिए घातक सिद्ध होता है। ऋषि दयानन्द ने सब से बड़ा काम अन्य कार्यों के साथ यह किया कि उस व्यक्तिवाद के विरुद्ध बड़ी भारी जीवन की बाजी लगा कर आंदोलन किया। आर्यसमाज की स्थापना करके उस में अपना व्यक्तित्व समाविष्ट नहीं किया। आर्य समाज की यह सब से बड़ी विशेषता है। उसी समष्टिवाद के सुन्दर पथ पर समाज चलता आ रहा है। प्रत्येक कार्य के लिए एक निश्चित विधान बना कर सारे समाज को उसी के अनुकूल चलने का आदेश दिया। खेद है कि आज आर्यसमाज में वह समष्टिवाद समाप्त होकर व्यक्तिवाद के नीचे दबता जा रहा है। आर्यों के हाथों से ही व्यक्तिवाद को प्रश्रय मिल रहा है तथा समष्टिवाद का अपमान किया जाने लगा है। मनुष्य चाहे कितना बड़ा क्यों न हो फिर भी समाज को उस पर बलिदान नहीं किया जा सकता हां व्यक्ति को समाज पर बलिदान किया जा सकता है। आज हम सारे समाज का, आर्य परिवारों का ध्यान एक आवश्यक बात की ओर दिला कर कहना चाहते हैं कि समाज में व्यक्तिवाद की एक भयंकर बीमारी उठने लगी है, उसे रोकने के लिए कड़ाई से तैयार होना है। यदि व्यक्तिवाद का रोग पनपता गया, उसका इलाज न किया गया, तो समाज की सारी तारें अलग २ होती जायेंगी। इस से समष्टि के जीवन में अनेक दरारें पड़ जायेंगी। बात यह है कि प्रत्येक संस्कार की एक यज्ञ पद्धति बना दी गई है। ऋषि दयानन्द ने सोलह संस्कारों के लिए बड़े परिश्रम से आर्ष दर्शन रूप से संस्कार विधि का महत्वपूर्ण ग्रन्थ लिखा। आर्यसमाज के इतिहास में ऐसा समय भी आया जब कि संस्कृत एवं वाङ्मय के धुरन्धर विद्वान् श्री पं० भीम सेन जी ने एक यज्ञ में आटे का पशु बना कर बलि की आहुति दिला दी। इस पर समाज ने अपना उग्र रूप दिखाया था। किन्तु शोक है कि अब व्यक्तिवाद फिर प्रबल होता जाता है और समाज सोया पड़ा है।

श्री स्वामी विद्यानन्द जी विदेह बड़े योग्य होंगे, मीठा बोलते होंगे तथा स्वाध्यायशील भी होंगे। किन्तु समाज ने उन से मतभेद किया। कुछ विचारों पर सार्वदेशिक सभा ने उन के लिए आर्यसमाज की वेदी बन्द कर दी। सारा विवरण भी छाप दिया। स्वामी जी का एक तो व्यक्तिगत रूप है और समाज का रूप है। उनके प्रति मुझे चाहे कितनी भी श्रद्धा हो तो भी समष्टिगत निर्णय के सामने सिर झुका देना मेरा कर्तव्य हो जाता है। प्रत्येक यज्ञ में स्वस्ति वाचन तथा शान्ति प्रकरण के मन्त्रों का संस्कार विधि से पाठ होता है। एक समष्टि परिपाटी चलती है। किन्तु स्वामी विदेह जी ने अपनी एक अलग स्वस्ति शान्ति याग पद्धति की पुस्तक लिखी है। उनको स्वामी दयानन्द जी की संस्कारविधि के स्वस्तिवाचन व शान्ति प्रकरण के वेद मन्त्रों पर शायद सन्तोष नहीं हुआ। कई स्थानों पर मान्य श्री स्वामी विदेह जी की नई यागपद्धति से मन्त्र पाठ किया जाता है। वह भी आर्यसमाज के साथ सम्बन्ध रखने वाले परिवारों में ही। कल को तीसरा सज्जन अपनी अलग परिपाटी चलायेगा। समाज का समन्वय कहां रहा। यह प्रथा अभी कहीं २ आरम्भ हुई है। हम व्यक्ति गत सम्मान करते हुए भी समष्टि के नाते ऐसी अलग परिपाटी का विरोध करते हुए सारे समाज व परिवारों से कहना चाहते हैं कि इस अलग २ प्रवाह को कड़ाई से रोकें। जहां भी देखें कड़ाई से विरोध करें। जब एक संस्कारविधि नियत है तो व्यक्तिगत यह परिपाटी क्यों? यह सिद्धान्त की दृष्टि से लिखा है, इसी रूप से इसे समझा जाये।

—त्रिलोकचन्द्र

जिला वेद प्रचारिणी सभा होशियारपुर

अपने संस्थापक—प्रधान महा० देवीचन्द जी एम. ए. की दुःखदायी मृत्यु पर गहरा शोक प्रकट करती है तथा यह सभा ईश्वर से उनकी पवित्र आत्मा के लिए सद्गति तथा उनके सबंधियों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना करती है।

दयानन्द-वचनामृत

"मैं अपना मन्तव्य उसी को जानता हूँ जो तीन काल में सब के लिए एक-सा मानने योग्य है। जो बातें सब को माननीय हैं, उन्हीं को मानता हूं—जैसे सत्य बोलना सब के सामने अच्छा है और झूठ बोलना बुरा है। मेरे विचार में सत्य भाषण, अहिंसा और दया आदि शुभ गुण सब मतों में अच्छे हैं, शेष सब वाद-विवाद, ईर्ष्या-द्वेष और मिथ्या भाषणादि कर्म सब मतों में बुरे हैं।'

(स्व० स्वामी सत्यानन्द जी)

आर्यसमाज लारेंस रोड अमृतसर

आर्यसमाज लारेंस रोड अमृतसर की यह विशेष सभा आर्य समाज के प्रसिद्ध वृद्ध नेता दयानन्द सालवेशन मिशन होशयारपुर के प्रधान आर्य प्रादेशिक सभा पंजाब के पूर्व प्रधान महात्मा देवीचन्द जी एम. ए. के दुःखद निधन पर अत्यन्त हार्दिक दुःख प्रकट करती है। महात्मा जी ने आर्यसमाज के जीवन में बड़ी सेवा की। दो वेदों का अंगरेजी अनुवाद किया। उनके चले जाने से समाज की बड़ी क्षति हुई। उनकी स्थान पूर्ति होनी कठिन है। प्रभु दिवंगत आत्मा को शांति तथा दुःखी सम्बन्धियों को इस दुःख में सहन शक्ति प्रदान करें।

आर्य प्रादेशिक सभा के पूर्व मन्त्री प्रिंसिपल ज्ञानचन्द जी भाटिया जालन्धर के दुखःद देहावसान पर भी शोक प्रस्ताव पारित कर के उनके परिवार से समवेदना करते हुए प्रभु से उनको धैर्य सहनशक्ति देने तथा दिवंगत आत्मा को शान्ति देने की प्रार्थना की गई।

विद्यासागर मन्त्री आर्यसमाज

वैदिक साधन आश्रम तपोवन देहरादून में भव्य आध्यात्मिक मेला समारोह

वैदिक साधनाश्रम तपोवन में गत २ मई से ६ मई तक भव्य तथा प्रभावपूर्ण आध्यात्मिक मेला लगा। जिसमें देश के प्रत्येक भाग से नर-नारियों ने भाग लिया।

महात्मा आनन्द भिक्षु जी के उपदेशों तथा गीतों, ब्रह्मचारी बलदेव जी के योगासनों के अभ्यासों, ब्रह्मचारी महेश जी के दिव्य गानों तथा महात्मा आनन्द स्वामी जी के मार्मिक प्रवचनों तथा प्रार्थनाओं से मेले में सम्मिलित साधक नर-नारियां विशेष रूप से प्रभावित हुए।

वैदिक साधनाश्रम तपोवन देहरादून रेलवे स्टेशन से लगभग तीन मील की दूरी पर नाला-पानी ग्राम के निकट बड़े रमणीक जंगल में कई लाख रुपये के व्यय से आज से १२ वर्ष पूर्व स्थापित हुआ था। प्रतिवर्ष वहां साधना-शिविर और गायत्री महायज्ञ होता है जिसमें सहस्रों नर-नारी भाग लेकर मानसिक शांति प्राप्त करते हैं।

इस बार भी इस आध्यात्मिक मेला से लाभ उठाने के लिये भारी संख्या में साधक तपोवन पहुंच गए। कितना सुन्दर शांत एकांत स्थान है यह। नीचे तपोवन आश्रम है जिस में २५ कमरे हैं। थोड़ी चढ़ाई चढ़ कर पृथक-पृथक बनी हुई सात कुटियाएं हैं। इससे एक मील और कठिन चढ़ाई चढ़कर साल के घने जंगल में सारे साधकों और साधिकाओं के 'आकर्षण केन्द्र श्री महात्मा आनन्द स्वामी जी की कुटिया है।

२ मई से ६ मई तक तपोवन में आध्यात्मिक मेला लगा रहा। भारत के लगभग प्रत्येक प्रांत से नर-नारी पहुंचे हुए थे। प्रातः तीन बजे सब उठ जाते और स्नानादि से निवृत्त होकर विशाल यज्ञशाला में पहुँच जाते जहां नैष्ठिक ब्रह्मचारी श्री बलदेव जी साधना-कार्य करते चित्तवृत्ति को एकाग्र करने और मन की चंचलता को मिटाने के साधन बताते। साथ ही ध्यान अवस्थित होने में मानसिक प्रेरणा देकर सहायता करते। तत्पश्चात् प्राणायाम और योग के आसनों की शिक्षा देते। सारे साधक ब्रह्मचारी बलदेव जी की साधना विधि की भूरि-भूरि प्रशंसा करते और कहते कि इतनी लाभदायक शिक्षा पहले कभी नहीं मिली। इस क्रिया के पश्चात् महात्मा आनन्द भिक्षु जी की अध्यक्षता में निरन्तर दो घण्टे गायत्री महायज्ञ होता, जिसमें लगभग २० नर-नारी आहुतियां देते थे। सारा वायु मंडल गायत्री मन्त्र के उच्चारण से गूंज उठता। बीच-बीच में महात्मा आनन्द भिक्षु जी सुन्दर आदेश और उपदेश भी देते जाते और प्रभु भक्ति के रंग में रंगे हुए गीत भी गाते जाते। भगवान ने महात्मा आनंद भिक्षु जी को बड़ा मधुर कंठ दे रखा है, जिससे यज्ञ में सबकी रुचि बढ़ जाती है। यज्ञ के पश्चात ब्रह्मचारी महेश जी और श्री इन्द्रराज जी के मधुर गीत होते। फिर महात्मा आनन्द स्वामी जी सरस्वती हृदय कपाट खोलकर आध्यात्मिक-सुधा पिलाते। इनके प्रवचन सुनने के लिए सभी लालायित रहते थे। श्री स्वामी शिवानंद जी सरस्वती, श्री आचार्य भद्रसेन जी, श्री परमेश्वरीदास जी, श्री पं. ऋषिराम जी बी०ए०, ब्रह्मचारी बलदेव जी और दूसरे महानुभावों के प्रवचन भी बड़े सारगर्भित होते थे। प्रातः की कार्यवाही के पश्चात् पुनः दो बजे सत्संग प्रारम्भ हो जाता। योग तथा गायत्री के सम्बन्ध में व्याख्या होते। तब महात्मा आनन्द भिक्षु जी फिर गायत्री महायज्ञ प्रारम्भ कर देते। भजन, कीर्तन भी होता और पुनः रात को साढ़े सात बजे से भजन तथा उपदेश रात के साढ़े नौ बजे तक जारी रहते। अंतिम ब्रह्मचारी बलदेव जी ने योगासनों का प्रदर्शन किया। उनका एक आसन ऐसा था जिसमें वह भूमि से आठ फुट ऊपर उठ जाते थे। इन आसनों को देख कर लोग प्रसन्न भी हुए और चकित भी हुए। ८ मई की प्रातः को आश्रम से तपोवन यात्रा चली। महात्मा आनन्द भिक्षु जो हाथ में 'ओम' की पताका लिए सब को गायत्री मन्त्र उच्चारण कराते हुए पर्वतारोहण कर रहे थे। एक मील की तीव्र चढ़ाई चढ़ कर जब साल के वृक्षों के घने जंगल में पहुंचे तो ऐसा प्रतीत हुआ कि जैसे किसी दिव्य स्थान पर पहुंच गए हैं। यहां पहुंच कर महात्मा आनन्द भिक्षु जी का सुन्दर गीत हुआ। ब्रह्मचारी महेश जी का दिव्य गान हुआ। श्री महात्मा आनन्द स्वामी जी ने अपनी कुटिया के बरांडे में बैठ कर ऐसी मार्मिक प्रार्थना कराई कि सब के नेत्र सजल हो हो गए और सब के हृदय में ऐसा अनुभव होने लगा कि वो शांति के इस वातावरण में गुम हो गए हैं।

महात्मा आनन्द स्वामी जी व महात्मा आनन्द भिक्षु जी द्वारा प्रभावशाली प्रवचन

इस आध्यात्मिक मेला को सफल बनाने के लिए श्री स्वामी विश्वानन्द जी सरस्वती अधिष्ठाता तपोवन, श्री पं० तेजकृष्ण जी कौल, रिटायर्ड जज, मन्त्री तपोवन, श्री सेठ हरिचन्द जी, स्वामी महेश्वरानन्द जी, श्री पटेल जी, मास्टर [illegible] सिंह जी, बा० गुरुमुख सिंह जी और स्वामी विश्वानन्द जी के प्रेमी साथियों ने पूरा सहयोग दिया।

इस शिविर में महात्मा गांधी के सम्पर्क में रहने वाले श्री स्वामी, आनन्द स्वामी जी ने सम्मिलित होकर सबको लाभ पहुंचाया। सब के यात्रियों के ठहरने का प्रबन्ध अधिक अच्छा था। मई मास होते हुए भी किसी ने भी गर्मी अनुभव न की निरन्तर आठ दिन ओकवन के निवास ने उन्हें एक अद्भुत शांति प्रदान की। ऐसे आध्यात्मिक मेले नर-नारियों के जीवन में माधुर्य और सौंदर्य उत्पन्न करते हैं। महात्मा आनन्द स्वामी की कुटिया में हर समय ही साधकों की भीड़ लगी रहती थी, जो अपनी लौकिक और परलौकिक समस्याएं महात्मा जी के समक्ष रख कर उनका समाधान कराते थे। तपे हुए हृदय आते थे और शांत होकर जाते थे। क्या अच्छा होता यदि यह शिविर पूरा एक महीना लगा रहता। सारे साधकों और साधिकाओं ने इच्छा प्रकट की कि यह शिविर साल में दो बार अवश्य होना चाहिए।

आर्य समाज बाढ़ (पटना)

आर्य समाज बाढ़ पटना के तत्वावधान में आयोजित यह सभा श्री स्वामी ध्रुवानन्द सरस्वती महाराज के निधन पर शोक प्रकट करती है। तथा ईश्वर से प्रार्थना करती है कि आर्य जगत को उनके निधन से उत्पन्न शोक को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

चन्द्रदीप—उपमन्त्री समाज

आज जिनकी चर्चा है—

श्री स्वामी ध्रुवानन्द जी महाराज

(आचार्य मित्रसेन एम० ए०, सेवा-सदन कटरा अलीगढ़)



आचार्य मित्रसेन जी एम. ए.

यह समाचार समस्त संसार में अत्यन्त दुःख के साथ पढ़ा जाएगा कि आर्य जगत के मूर्धन्य नेता महान तपस्वी, वीतराग, आजन्म ब्रह्मचारी श्री ध्रुवानन्द सरस्वती का गत दिनों बम्बई में देहावसान हो गया।

पूज्यपाद श्री स्वामी जी महाराज महर्षि दयानन्द द्वारा पुनर्जीवित आजन्म ब्रह्मचर्यव्रतियों की माला के उज्ज्वल मणि थे। आर्य समाज के प्रकाश स्तम्भ थे और इस समय तो वे उसके मार्ग प्रदर्शक थे। आप अपनी मृत्युके अन्तिम क्षण तक आर्यसमाज के हित में ही लगे रहे। ८३ वर्ष के अपने जीवन में से आधे से अधिक जीवन स्वामी जी ने मां आर्य समाज के चरणों की सेवा में ही बिताया।

स्वामी जी का जन्म उत्तर प्रदेश के मथुरा जिले के पानी ग्राम में सन १८८२ ई० में हुआ था। आपके बचपन का नाम धुरेन्द्र था। संस्कृत की प्रारम्भिक शिक्षा मथुरा के विरजानन्द आश्रम में हुई। वहीं आप कुछ छात्रों का भोजन भी बनाते थे। किन्हीं कारणों से जब वह आश्रम टूट गया तब आप रंग जी की बगिया (वृन्दावन) की पाठशाला में पढ़ते रहे। परन्तु विचारों में ऐक्य न होने से आपने वहां भी छोड़ दिया। जब स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज को इसका पता चला तो उन्होंने आपको अपने आश्रम(साधु आश्रम हरदुआगंज अलीगढ़) बुला लिया। वहां से न्याय दर्शन का अध्ययन करने के लिये आप बनारस चले गये। वहीं से आपकी प्रसिद्धि श्री धुरेन्द्र शास्त्री न्याय भूषण के नाम से हुई।

गुरुकुल वैद्यनाथ धाम के आचार्य पद पर आप की कर्मठता और योग्यता देख कर शाहपुराधीश ने युवराज श्री सुदर्शन देव की शिक्षा के लिए आपको नियुक्त किया। आचार-विचार तथा व्यवहार से प्रभावित हो कर महाराज श्री उम्मेदसिंह जी ने आप को राजगुरु की उपाधि से सम्मानित किया। स्वामी जी ने राजा अवधेश सिंह, कालाकांकर नरेश, नजरगंज, पूर्निया, विजआ, झालावाड़ा, देवास आदि के अनेक राजा महाराजाओं को धर्म शिक्षा देकर महर्षि दयानन्द का अनुयायी बनाया।

जब आर्यसमाज ने हैदराबाद में सन् १६३६ में सत्याग्रह किया उस समय स्वामी जी चौथे सर्वाधिकारी के रूप में १५०० सत्याग्रहियों के साथ कृष्ण मन्दिर गये जेल जाने से पूर्व आपने समस्त उत्तर प्रदेश का तूफानी दौरा करके धन तथा जन का संग्रह किया। सिन्ध के सत्याग्रह के आप पहले डिक्टेटर थे। उस समय कराची में सत्यार्थ प्रकाश पर लगे प्रतिबन्ध को आपने अपनी कथा वार्ताओं द्वारा तोड़ा।

श्री स्वामी जी कुमारों से अत्याधिक प्रेम करते थे। उन्हें समाज में लाने तथा उसकी सेवा करने के लिये उत्साहित करते थे। सन् १६४० में भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद के इन्दौर सम्मेलन के आप ही अध्यक्ष थे। बाद में वर्षों तक प्रधान रहे।

आप सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के लगभग ५ वर्ष तक प्रधान रहे। मृत्यु के समय भी सार्वदेशिक सभा के निर्वाचन में सम्मिलित होने के लिए आप कानपुर जाने को तत्पर हो कार में बैठने ही वाले थे कि कराल काल के कारण हृदय गति रुक गई।

स्वामी ध्रुवानन्द जी महाराज ने वर्षों तक मौरीशस, पूर्वी अफ्रीका, केनिया, युगान्डा, टांगानिका, जंजीर, दक्षिण रोडेशिया, मेडागास्कर आदि देशों में आर्यसमाज का प्रचार किया। वहां जन-जन को वैदिक सन्देश सुनाया।

आपने अपने अनेक शिष्यों को आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत के व्रती और समाज का प्रचारक बनाया। जिनमें श्री ब्र० यशपाल शास्त्री कुलपति गुरुकुल गंगीरी प्रमुख हैं।

आपकी मृत्यु के हृदय विदारक समाचार को सुनकर सहसा विश्वास नहीं होता। सत्यता तो यह है कि आज स्वामी जी महाराज के बिना आर्यसमाज अपने को अनाथ अनुभव कर रहा है।

मधु-कलश

जिनके दिल में चोर घुसा है मुंह को वही छिपाते
पाक साफ इन्सान किसी से कभी नहीं घबराते
अगर तुम्हारा मन निर्मल है निर्भय रहो निरन्तर
मैले कपड़े मात्र पाट के ऊपर पीटे जाते

★

लाख करें सत्सङ्ग तनिक भी रङ्ग नहीं दिखलाते
जन्मजात दुर्जन के दुर्गुण कभी नहीं मिट पाते
नियमपूर्वक दूध पिलाओ तुम सांपों को चाहें
मौका पाकर डस जाने की हर दम घात लगाते

★

इतने सख्त बनो मत हरगिज जो देखे घबराये
त्यागो ऐसी नरमी को भी दुनिया सिर चढ़ जाये
सही ढङ्ग से जीना है तो वक्त जरूरत समझो
जो कुछ हो सन्तुलित साथियो शेष नहीं रह जाये

—विजय निर्बाध

वज्रपात पर वज्रपात

आर्य समाज के मान्य पुराने अनुभवी का आंखें बन्द करके एक के बाद दूसरे और तीसरे चौथे का चले जाना समाज के शरीर पर भारी वज्रपात ही है। इन दिनों अभी समाज के आर्य नेता सार्वदेशिक सभा के पूर्व प्रधान श्री. स्वामी ध्रुवानन्द जी सरस्वती हमें छोड़कर चले गये। अभी २ उनका शोक दिवस भी पूरे रूप से नहीं मना पाये थे तो आर्यसमाज माडल टाउन जालन्धर के प्रधान आर्य प्रादेशिक सभा पञ्जाब के पूर्व मंत्री श्री. प्रिंसिपल ज्ञानचन्द जी भाटिया भी चले गये। और अब समाज के पुराने महारथी आर्य नेता महात्मा देवीचन्द जी प्रधान दयानन्द साल्वेशन मिशन होशियारपुर का भी देहली में दुःखद देहावसान हो गया। कितना भारी काम किया युवावस्था में एम. ए. करने के बाद अपना सारा जीवन आर्य समाज के अर्पण कर दिया। साल्वेशन मिशन बनाया, होशियार पुर जिले में स्कूलों कालजों व समाजों का जाल बिछाया। आर्य प्रादेशिक सभा के प्रधान बनकर प्रांत में कितना भ्रमण किया। वेद तथा ऋषि के अनन्य भक्त थे। क्रमशः

महात्मा हंसराज

(पृष्ठ २ का शेष)

लिए आया, इस का ज्ञान होते ही आप उसको घर ले आये और वहां आकर उसकी बात सुनी अर्थात व्यक्तिगत कार्य के लिए कार्यालय की वस्तुओं का उपयोग नहीं करते थे।

भावना वश आप किसी की भावुकता से लाभ नहीं उठाते थे। यथार्थ दृष्टिकोण को अपना कर दूसरे के हित का अधिक ध्यान रखते थे। एक वार एक व्यक्ति आपके पास आया और कहने लगा मैं इतनी सम्पत्ति दान देना चाहता हूं। आपने वार्तालाप में उसे परामर्श दिया कि पहिले अपनी भावी आवश्यकताओं का ध्यान रखते हुए उनके लिए अपने पास कुछ रख लीजिए, उसके पश्चात शेष बड़ी खुशी से दान दीजिये, जिस से किसी समस्या के कारण कल को सोचना न पड़े। अन्यथा प्रायः दान लेने वाले दूसरों को भावुक बनाकर दान लेने का ही केवल प्रयास करते हैं।

समाज के हित की दृष्टि से जीविका के क्षेत्र में तुच्छ समझी जाने वाली बातों और शारीरिक कार्यों की ओर भी लोगों का ध्यान केन्द्रित किया। उनकी प्रेरणा के बाद ही शर्मा, वर्मा शू शाप आदि कार्य प्रारम्भ हुए। जहां आपके जीवन में अनेक प्रेरणादायक गुण थे, वहां आप में एक विशेष गुण यह भी था कि आप दूसरों को कार्यक्षेत्र में आने के लिए विशेष प्रेरणा देकर उत्साहित करते थे, तथा उनके मार्ग को प्रशस्त बनाने के लिए पूर्ण सहयोग देते थे। अतः हम सब को उनकी जन्म शताब्दी के इस क्रम में उनके प्रेरणादायक जीवन से कुछ प्रेरणा ग्रहण करने का पूर्ण प्रयास करना चाहिए।

हा ! महात्मा देवीचन्द जी आर्य जगत को अनाथ कर गये

श्री पं० भक्तराम जी शर्मा (अफ्रीका वाले) जालन्धर

कितने दुःख की बात है कि पहिले ही आर्य नेता एक २ करके मृत्यु का ग्रास होते जा रहे हैं और उनका स्थान लेने वालों का अभाव है अब एक आर्य समाज का स्तम्भ टूट गया अर्थात् महात्मा देवीचन्द जी का आकस्मिक निधन हो गया। इनके वियोग से आर्य समाज को बड़ी भारी क्षति पहुंची है जिस की कल्पना नहीं हो सकती। जो ईश्वराज्ञा !

महात्मा जी शिक्षा समाप्ति के तुरन्त बाद आर्य समाज की सेवा में जुट गये। कहते हैं कि कान्वोकेशन के अवसर पर कुछ ऐसे शब्द 'मैं सरकार के प्रति भक्ति-भाव दिखाऊंगा' कहने से इनकार कर दिया था तो उपाधि नहीं मिली थी अतः वह स्वयं 'एम० ए०' नहीं लिख सकते थे। आर्य समाज के लिए उच्च सरकारी पद को ठोकर मारी। कितना त्यागमय था उस अद्भुत मिशनरी का ?

होशियारपुर और कांगड़ा जिलों में महात्मा जी ने स्कूलों का जाल बिछा दिया। फिर दलितोद्धार मण्डल और दयानन्द साल्वेशन मिशन के प्रधान के रूप में अपनों को जुदा न होने देने और गैरों को आर्य (हिन्दु) बनाने में बड़ा भारी काम किया। वह वास्तविक अर्थों मिशनरी थे। सोते-जागते उठते-बैठते आर्य समाज की ही धुन थी। युवावस्था में उनकी धर्म-पत्नी का देहान्त हो गया था। कोई पुत्र न था। केवल एक पुत्री थी फिर भी विवाह नहीं किया मेरे सामने एक भाई ने सन १६२० में पूछा कि 'आप की आयु केवल ३७ वर्ष की है। विवाह क्यों नहीं कराया' उन्होंने उत्तर दिया था, 'प्रत्येक पुरुष को एक ही विवाह करने एक ही स्त्री रखने की ईश्वराज्ञा है।' मेरे विचार में चकवा चकवी का उदाहरण भी दिया था।

मैं जब डी० ए० वी० मिडल स्कूल भेड़ा तलवाड़ा में हैडमास्टर था तो उनके सम्पर्क में आया। वह एक बार स्कूल के निरीक्षण के लिए पधारे तो मैं कुएं पर उन्हें डोल के साथ नहलाने लगा पर उन्होंने यह कह कर इनकार कर दिया कि 'रानी अपना कम कर दी की गोली कहाई ?' एक समय कहने लगे कि 'मुझे हारमोनियम आजाये तो मैं गले में बांध कर घर २ ऋषि का सन्देश सुनाता फिरूं।' एक अवसर पर शुद्धि सभा होशियारपुर के उत्सव पर गया। महात्मा जी बीमार थे। पं० लखपत राय जी उनके पास बैठे थे। दिल बहलाने के लिए दो भजन सुने।

सन १६३१ में मैं रोग ग्रस्त हो गया और रुग्णावकाश के लिए प्रिंसिपल डी० ए० वी० हाई स्कूल होशियारपुर (देवी चन्द) की सेवा में प्रार्थना पत्र प्रेषित किया। उस के उत्तर में अवकाश स्वीकृत करते हुए उन्हों जो पत्र लिखा वह नीचे उद्धृत करता हूं जिस से उनका अपूर्व स्नेह और सच्चा बन्धुभाव प्रतीत होता है—

'मैं ने आप को पहिले भी ताकीद की थी और अब फिर करता हूं कि आप को अपनी सेहत का खास ख्याल रखना चाहिए। जीवन को लम्बा बनाने की कोशिश करनी चाहिए। वैदिक जीवन इसी में है कि हम सौ वर्ष तक जीते रहें जैसा कि हम रोज सन्ध्या में प्रार्थना करते हैं। आप वरजिश बेकाइदा, खाने-पीने में लापरवाह और कानून हिफज़ान सेहत से गाफिल हैं। आर्यसमाज को आप की ज़िन्दगी की देर तक आवश्यकता है। चन्द साल जोश से काम करके चल बसना बहादुरी नहीं। इस लिये अब आप इलाज करा लें और आइन्दा अपनी गिज़ा को बेहतर बनावें और तन्दरुस्त रहा करें।' ऊपर लिखे पत्र से मुझे बड़ा प्रोत्साहन मिला।

एक बार मैं ने महात्मा जी से अपने सहयोगियों द्वारा यथोचित सहयोग प्राप्त न होने की शिकायत की तो उन्होंने कहा था—'सब समाजों में सब ही काम करने वाले नहीं होते।' दातार पुर में आर्यसमाज का उत्सव था। मैं बीमारी की दशा में वहां पहुंचा। भजनोपदेशक पधारे नहीं थे। नगर कीर्तन का समय हो गया। मुझे आज्ञा हुई नगर कीर्तन भुगताने की। नगर कीर्तन आधा भुगत गया तो भजनोपदेशक पधारे। बड़ा तीव्र ज्वर चढ़ा। रात को उपदेशकों ने बहुत सेवा की। महात्मा जी को प्रातःकाल पता लगा तो उन्होंने कुशल समाचार पूछने के पश्चात् मीठी २ झाड़ डाली—'आप स्वास्थ्य की ओर ध्यान नहीं देते। कुछ खाया-पिया भी करो। मेरा...में निर्वाह होता। तुम...में कैसे करते हो ?'

यजुर्वेद और सामवेद के अंग्रेजी में भाष्य करके महात्मा जी अपना नाम अमर कर गये। पं० भगवद्दत्त जी अनुसन्धान कर्ता ने दिल्ली के सब समाजों की ओर से मनाये गये 'आर्यसमाज स्थापना दिवस' सन् १६५४ पर (महात्मा जी ने अध्यक्ष पद ग्रहण किया था) यजुर्वेद भाष्य के सम्बन्ध में कहा था—'इस से अच्छा भाष्य हो ही नहीं सकता मैंने आद्योपांत देखा है। नपे तुले शब्द हैं।'

ऐसे महापुरुष की जिन का सारा जीवन तपोमय और त्यागमय था, सद्गति होगी ही। हम आर्य-समाजियों को उनके चरण चिन्हों पर चलने की प्रेरणा करें आर्य नेता उनके जीवन से शिक्षा ग्रहण करें।

जिला कांगड़ा में वैदिक धर्म प्रचार

आर्यसमाज धर्मशाला

आर्यसमाज धर्मशाला (कांगड़ा) के निमन्त्रण पर मैं और श्री पं. मेलाराम जी क्रमशः ५ और ६ जून ६५ को वहां पहुंच गये थे। १६-६-६५ तक आर्यसमाज मन्दिर में निरन्तर प्रचार होता रहा। धर्मशाला का सुशिक्षित वर्ग इस प्रचार से विशेष प्रभावित हुआ। भाई मेलाराम जी का मधुर संगीत श्रोताओं को मन्त्र मुग्ध कर देता था। समाज ने श्रद्धा-पूर्वक मार्ग व्यय के अतिरिक्त १११) वेद प्रचार में भेंट किये। इसके अतिरिक्त धर्मशाला समाज के पूर्व मन्त्री और प्रसिद्ध विचारशील लेखक श्री डा० धर्मदेव जी ने अपनी ओर से ५०) वेद प्रचार में भेंट किये। समाज के वर्तमान मन्त्री पं० श्री व्यासदेव जी शर्मा बड़े उत्साही और श्रद्धालु नवयुवक कार्यकर्ता हैं। उनका सारा परिवार ही समाज की सेवा में लगा रहा। इसी प्रकार श्री मान्य प्रधान जी; उप-प्रधान जी, डा० धर्मदेव जी, श्री ला० दयाराम जी श्री सुखमनदास जी श्री रामस्वरूप जी तथा दूसरे सभी आर्य बन्धु वा माताएं पूरा सहयोग प्रदान कर समाज के इस प्रचार यज्ञ को सफल बनाते रहे। सभी का धन्यवाद।

आर्यसमाज पालमपुर

१७.६.६५. से २३.६.६५. तक आर्य समाज पालमपुर में विशेष समारोह से प्रचार होता रहा। समाज के उत्साही नवयुवक मन्त्री श्री स्वराज कुमार बाली ने इस बार अपने सहयोगी कार्यकर्त्ताओं की सद्भाव से दो-तीन दिन कार्यक्रम बाहर खुले मैदान में भी रखा। समाज के प्रधान श्री ला० दीवान चन्द जी कोषाध्यक्ष श्री ला. गुजरमल जी, ला. ठाकुर दास जी आदि सज्जनों ने पूरा सहयोग दिया। यहां हमारे साथ सभा के प्रसिद्ध और पुराने भजनोपदेशक श्री पं. ज्ञानचन्द जी भी सम्मिलित रहे और भाई मेलाराम जी के साथ-साथ उनका मधुर संगीत भी जनता को आनन्दित करता रहा। मार्गव्यय के अतिरिक्त समाज ने १००) वेद प्रचार में भेंट किए। एतदर्थ धन्यवाद।

आर्य समाज नगरोट बगवां (कांगड़ा)

पालमपुर समाज मे प्रचार-कार्य समाप्त कर हम नगरोटा में प्रचारार्थ पहुंच गए। यहां समाज के प्रधान श्रीमान म० दिवानचन्द जी हुंगु वाला के सुपुत्र श्री वजीरचन्द जी समाज के विशेष प्रेमी हैं और आजकल नगरोटा बगवां के प्रधान भी वही हैं उनके बहनोई श्री हंसलाल जी समाज के मन्त्री हैं बड़े मिलन सार और शुद्ध सात्विक विचारों के सज्जन व्यक्ति हैं। इसी प्रकार समाज के कोषाध्यक्ष श्री मनोहरलाल जी साक्षात देवता है। सभी ने पूरे उत्साह और श्रद्धा से २४ से २८-६-६५ तक प्रचार का सम्पन्न कराया। श्री पं० मेलाराम जी और श्री पं० ज्ञानचन्द जी के भजन समां बांध दिया करते थे लोगों पर प्रचार का खूब प्रभाव पड़ा।

महात्मा हंसराज जयन्ती निधि में १०१) समाज की ओर से भेंट किए गये।

ओमप्रकाश
आर्योपदेशक—सभा

—:—

पं. हंसराज जन्मशताब्दी पर प्राप्त धन की सूची

मेलाराम जी भजनीक द्वारा	
आर्य समाज सुजान पुर	६६/-
दीवान साईं दास जी वकील कठुआ	१०/-
आर्य समाज कठुआ	१८९/-
श्री त्रिलोक चन्द्र जी शास्त्री द्वारा	१००/-
डी.ए.वी कालिज हिसार	११६८/-
सोहन लाल गर्ल H/S स्कूल अंबाला	२००/-
S. D. H/S स्कूल जालन्धर	१०६०/-
डी. ए. वी कालिज अंबाला	४४६/-
आर्य गर्ल हाई स्कूल गोविन्द नगर कानपुर	२३०/-
पं. चन्द्र सैन जी द्वारा	१५५/-
पं. ओम प्रकाश जी द्वारा	१३८
जसराज जी जग्गा फिरोजपुर	४१२/
श्री पं. प्रभुदयाल जी रोहतक	३०८/-
डी. ए. वी स्कूल ऊना	१०१/-
,, ,, H/S स्कूल फाजलका	२१४/-
ठा दुर्गासिंह जी तुफान करनाल	२५/
शिव लाल जी पिलाया रोहतक	१००/-
जीवन कुमार जी आर्य समाज नाहन	२५/-
प. त्रिलोक चन्द्र जी द्वारा	६७/-
श्री भूरा राम जी द्वारा	२८४/-
"अमर सिंह जी अंबाला द्वारा	५००/-
आर्य समाज कोठ ईसाखां	५५१/-

वेद प्रचारार्थ प्राप्त धन-राशि

आर्य समाज मोहोदीनापुर	७५/-
,, तरावड़ी	५१/-
,, रामपुर रोयां (करनाल)	२५/-
,, कोतवाली बाजार धर्मशाला	१११/-
डा. धर्मदेव जी धर्मशाला	५०/
आर्य समाज पालमपुर	१००/-

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का वार्षिक अधिवेशन कानपुर, जुलाई, ३,१९६५

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का वार्षिक अधिवेशन २ और ३ जुलाई, १९६५ को श्रीयुत सेठ प्रतापसिंह शूर जी वल्लभदास की अध्यक्षता में कानपुर के डी० ए० वी० कालेज भवन में सम्पन्न हुआ।

पिछले वर्ष का कार्य विवरण हिसाब के लेखे के साथ स्वीकृत हुआ और आगामी वर्ष के लिये ३८८०००) का बजट पास किया गया।

अधिकारियों का चुनाव इस प्रकार हुआ:—

प्रधान—श्रीयुत सेठ प्रताप सिंह शूर जी वल्लभ दास।

उपप्रधान—श्रीयुत पं० प्रकाश वीर जी शास्त्री संसदसदस्य, श्रीयुत डा० डी० राम जी पटना, श्रीयुत पं० नरेन्द्र जी, हैदराबाद (आन्ध्र)

मन्त्री—श्रीयुत ला० रामगोपाल जी शालवाले।

उपमन्त्री—श्रीयुत पं० राम नारायण जी शास्त्री, श्रीयुत वेणी भाई जी आर्य, श्रीयुत पं० धर्मजित जी जिज्ञासु, मद्रास।

कोषाध्यक्ष—श्रीयुत बालमुकुन्द जी आहूजा, देहली।

पुस्तकाध्यक्ष — श्रीयुत पं० वाचस्पति जी शास्त्री।

इसके अतिरिक्त १७ अन्तरंग सदस्य निर्वाचित हुए।

शुभ विवाह

गुरुकुल आर्य नगर (कुरड़ी) जि० हिसार के आचार्य श्री पं. राम स्वरूप जी शास्त्री का शुभ विवाह महाशय अभी चन्द्र जी घेड़ सिगाणी खेड़ा निवासी की सुपुत्री से २३ जून को सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आर्य प्रादेशिक सभा का श्री प्रभुदयाल जी की भजन मंडली ने भजनों उपदेशों द्वारा प्रचार किया। विवाह संस्कार पूर्ण वैदिक रीती से सम्पन्न हुआ इस शुभ कार्य के सम्पन्न होने पर प्रादेशिक सभा को ७५/- मार्गव्यय सहित प्राप्त हुए। आर्य समाज और सभा की ओर से नव दम्पती हार्दिक बधाई—प्रभुदयाल प्रभाकर

शोक प्रस्ताव

आर्य संस्थाएं न्यूड़ी

(जिला होशियारपुर)

श्री रघुनाथ सहाय गौतम आर्य संस्थाओं के सभापतित्व में शोक सभा की गई जिसमें महात्मा देवी चन्द जी के निधन पर प्रकाश डालते हुए उनके गुणों का वर्णन करते हुए उन्हें श्रद्धांजलियां भेंट की गई तथा उनकी आत्मा सद्गति के लिए प्रभु से प्रार्थना की गई।

आर्यसमाज दौलतपुर

की समाज में महात्मा देवी चन्द जी के स्वर्गवास पर गहरा शोक प्रकट करते हुए उनको श्रद्धांजलियां पेश की गई तथा उन की आत्मा की सद्गति के लिए प्रभु से प्रार्थना की गई।

ए० एस० हाई स्कूल,

अलावलपुर

के छात्रों तथा अध्यापकों की शोक सभा में महात्मा देवी चन्द जी के निधन पर गहरा शोक प्रकट किया गया तथा उनके पुरातन गुणों का गुणगान करते हुए उनके परिवार के साथ गहरी सहानुभति प्रकट की गई।

लभूराम दोआबा हायर सैकंडरी स्कूल, जालन्धर

३० जून १९६५ को दोआबा हाई स्कूल जालन्धर के छात्र और अध्यापकवर्ग की विराट सभा में श्री स्वामी ध्रुवानन्द जी महाराज पूर्व प्रधान सार्वदेशिक सभा देहली के निधन पर गहरा शोक प्रकट किया गया। उनके निधन पर आर्य जगत की जो क्षति हुई है उसे पूर्ण करने की और उन की आत्मा व परिवार को सद्गति व धैर्य प्रदान करने की प्रार्थना की है गई।

आर्यसमाज सैक्टर ८ चंडीगढ़

४-७-६५ के साप्ताहिक सत्संग के बाद श्री स्वा... महाराज, प्रो० ज्ञानचन्द जी मांटिया पूर्व प्रधान प्रादेशिक सभा प० दीनदयाल जी शास्त्री तथा ला० दुनीचन्द जी अम्बालवी के निधन समाचारों पर अत्यन्त शोक प्रकट करते हुए उनकी आत्माओं को शुभ कामनाएं चाहते हुए उनके परिवारों को इस दारुण कष्ट सहन करने की परमपिता प्रभु से प्रार्थना की गई।

डी० ए० वी. H/S स्कूल और डी० ए० वी. गर्ल्स H/S स्कूल गुरदासपुर

के अध्यापक वर्ग तथा छात्र-छात्राओं की सम्मिलित शोक सभा की गई। जिस में महात्मा देवीचन्द जी के स्वर्गारोहण पर शोक प्रस्ताव पास किया गया तथा उनकी आत्मा की शुभ गति के लिए तथा उनके परिवार के साथ गहरी सहानुभूति प्रकट करने के लिए प्रभु से प्रार्थना की गई। उनके निधन के उपलक्ष में दोनों स्कूल बंद रहे।

आर्यसमाज रेलवे रोड अंबाला शहर

की यह शोक सभा प्रसिद्ध संन्यासी स्वामी ध्रुवानन्द जी महाराज के आकस्मिक निधन पर हार्दिक शोक प्रकट करती है। शांतिनिकेतन प्रभु से उनकी आत्मा को शांति प्रदान करने की प्रार्थना करती है।

स्त्री आर्य समाज मौडलटौन जालन्धर

की यह विशेष बैठक श्री ज्ञानचन्द्र जी मांटिया के निधन पर हार्दिक शोक प्रकट करती हुई उनके परिवार से संवेदना प्रकट करती है तथा उनकी आत्मा की शुभ गति व परिवार को कष्ट सहन करने की शक्ति प्रदान करने की प्रभु से प्रार्थना करती है।

डी. ए. वी. H/S. स्कूल ऊना आर्य समाज ऊना, तथा डी. ए. वी. H/S स्कूल की प्रबंध-कर्तृ सभा

तीनों संस्थाओं ने महात्मा देवीचन्द जी एम. ए. के स्वर्गवास पर गहरा शोक प्रकट किया। महात्मा जी के गुणों पर प्रकाश डालते हुए उन्हें श्रद्धांजलियां भेंट की गई। अंत में परम पिता प्रभु से उनकी आत्मा की सद्गति व उनके परिवार को इस कष्ट सहन करने की प्रार्थना की गई।

आर्य समाज खंडवा (M.P.)

तारीख ४.७.६५ को साप्ताहिक सत्संग के बाद आर्य संन्यासी स्वामी ध्रुवानन्द जी महाराज, श्री सत्यानन्द जी आर्य संन्यासी, एवं पण्डित सत्यदेव जी विद्यालंकार के आकस्मिक देहावसान पर हार्दिक खेद प्रकट किया गया। दो मिनट मौन धारण करने के पश्चात श्रद्धाञ्जलियां भेंट की गई। उनकी आत्माओं की सद्गति के लिये प्रभु से प्रार्थना की गई।

इन महान विभूतियों से रिक्त स्थानों की पूर्ति के लिए भी ईश्वर से प्रार्थना की गई।

मुद्रक व प्रकाशक श्री सन्तोषराज जी आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर द्वारा वीर मिलाप प्रैस, मिलाप रोड जालन्धर से मुद्रित तथा आर्य जगत कार्यालय महात्मा हंसराज भवन निकट कचहरी जालन्धर शहर से प्रकाशित मालिक—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर



टेलीफोन नं० ३०५७ [आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधिसभा पंजाब जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd. No. P. 121

एक प्रति का मूल्य १३ नये पैसे वार्षिक मूल्य ६ रुपये

वर्ष २५ अंक ३१) १० श्रावण २०२२ रविवार—दयानन्दाब्द १४१— २५ जुलाई १९६५ (तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

वेद सूक्तय:

वेद की वीर भावना

जहि रक्षस: पर्वतेन

हे वीर नायक ! जो भी राक्षस हैं, शत्रु व वैरी हैं। जन-जीवन या राष्ट्र के किसी भी पदार्थ को हानि पहुंचाना चाहते हैं। उन सब घातियों को, राक्षसों को, देश के शत्रुओं को पर्वतेन—वज्र से अपने तेज २ वज्रसम शस्त्रों से जहि—मार डाल। बच कर वे जाने न पाय।

भियामित्रान्त्सृज

हे वीरता के प्रेमी! जो अमित्र हैं। देश के साथ किसी प्रकार का भी प्यार स्नेह नहीं रखते राष्ट्र की जड़ों को खोखला करने में लगे रहते हैं उन सब को वीरता से भयभीत कर दे ताकि देश को तेरे होते कोई हानि न पहुंचा सके।

दस्यूनव धूनुष्व

वीरनेत: ! ऐसे सारे संताप देने वाले दस्युओं को धुन डाल। जैसे धुनिया कपास को धुन देता है। उसी प्रकार राष्ट्र के शत्रुओं को अपनी शक्ति से धुन डाल। कचूमर निकाल दे।

अथर्ववेद से

वेदामृत

२९।७।६५

ओ३म् अग्निस्तिग्मेन शोचिषा यंस द्विश्वं न्यत्रिणम्। अग्निर्नो वंसते रयिम्॥ साम० आग्नेय काण्डम्

अर्थ :—अग्नि—नायक बन कर आगे चलने व चलाने वाला अग्नि रूप नायक अपने (तिग्मेन) तेज (शोचिषा) तेज से (यंसत्) नियमन करता है (विश्वम्) सारे (अत्रिणम्) दुष्ट को दबा देता है तथा वह अग्निमय नायक (न:) हमें (वंसते) देता है (रयिम्) धन व सुख को देता है। अग्निमय नायक अपने तीव्र बल से सारे दुष्टों का मसल देता है और सारी प्रजा को सुख से मालामाल करता है।

भावार्थ :—राष्ट्र में, समाज में भली-भान्ति चमकने वाला अग्नि रूप नेता अपनी शक्ति से जितने भी राष्ट्र में, समाज व विश्व में उत्पात मचाने वाले राक्षसवृत्ति के तत्व होते हैं, जिन का काम समय समय पर सारे समाज की शांति को भंग करके, व्यवस्था को तोड़कर तथा जन जीवन की मर्यादा को समाप्त करके उपद्रव करना है। राक्षस बन कर जो अपने स्वार्थ सिद्धि में लगा कर लोगों के धन-जीवन से खेलना होता है। राष्ट्रघाती, समाजद्रोही बन कर निरन्तर दूसरे के खून पीने का काम जिन का काम होता है। जिनसे राष्ट्र को हर समय भय ही भय होता है। हे नायक ! अपने बल की अग्नि की तेज ज्वालाओं से ऐसे २ उत्पाती राक्षसों को भस्म कर डाल। इन गड़बड़ मचाने वाले शरारती तत्वों का नियमन कर। उनको अपनी शक्ति से दबा दे ताकि वे सिर न उठाने पायें सारी प्रजा को भय रहित कर दे। उन का जीवन सुखी व निश्चिन्त हो जाये। —सं०

ऋषि दर्शन

रुचिकराय ब्रह्मणे नम:

सबसे सुन्दर, प्यारे तथा जीवन में आनन्द भर देने वाले उस व्यापक तथा महान् ब्रह्म को नमस्कार हो। उसी की भक्ति करें, उसी से आशी: मांगे तथा उसी से प्यार करें।

गुणान् मह्यं देहि

हे प्रभो ! कृपा करके मुझे शुभ गुणों का दान प्रदान करें। जीवन का बनाने वाले जितने भी उत्तम-उत्तम गुण, कर्म, स्वभाव हैं। आप अपने आशीर्वाद से मुझे प्रसादरूप में प्रदान करते रहें।

दोषांश्च विनाशय

जितने दोष हैं, दुर्गुण हैं, तथा मेरे जीवन को गिराने वाले, बिगाड़ने वाले, दूषित करने वाले जितने भी दुष्ट कर्म और स्वभाव हैं, जिनसे जीवन का पतन होता है—उनको हे परमेश्वर ! दूर भगा दो। उनका नाश कर देवें।

सुखस्य मार्ग:

जीवन में परमात्मा की उपासना भक्ति करना सुख का मार्ग है। यही केवल मात्र एक साधन है जिससे सारे दुःख दूर होते तथा सब प्रकार का सुख मिलता है।

भाष्यभूमिका से

अधिष्ठाता—श्री संतोषराज जी

सम्पादक—त्रिलोक चन्द्र शास्त्री

लोग दूर २ से ताजमहल को देखने जाते हैं एवं न्यूयार्क की १०२ मंजिल भवन-निर्माण-कला को देख कर मुग्ध होते हैं, किन्तु भगवान ने मानव-चोले को सब से उत्कृष्ट बनाया है। वेद ने अष्टचक्रा नवद्वारा देवानां पुर अयोध्या कह कर इसको भगवान् का मन्दिर बताया है। कठोपनिषद् में यम नाचिकेता को कहते हैं कि—

आत्मानं रथिनं विद्धि,
शरीरं रथमेव तु।
बुद्धिं तु सारथिं,
विद्धि मनः प्रग्रहमेव तु।

अर्थात् आत्मा रथ का कोचवान है, शरीर रथ है, बुद्धि सारथी व मन लगाम है, वेद में एक स्थान पर लिखा है कि उसी ब्रह्म की शक्ति से ये सारे काय करते हैं। लोग अमरता की तलाश मे सागर की तलाई तक जा पहुचे, आकाश नाप लिया किन्तु वेद तो 'यस्यच्छायाऽमृतं' कहता है कि उस ब्रह्म का आश्रय ही अमृत है। मानव धन-सम्पत्ति से नहीं अपितु ईश्वर विश्वास से बनता है। महाभारत में एक घटना लिखित है कि महर्षि व्यास ने भारत के सारे विद्वानों की सभा बुलाई, पूछा कि कौन सा व्यक्ति नीच है (को नरो जघन्य ?) तब एक विद्वान ने खड़े होकर कहा कि 'धनहीनो नरो जघन्य' अर्थात् धन से रहित व्यक्ति नीच है। बर्नार्ड शा के जीवन में घटना है कि एक सहभोज में उन्हें कहा गया कि अच्छे वस्त्र पहिन कर आवें। पुनः सज कर बर्नार्ड-शा आया व कपड़ों के साथ भोजन को रगड़ने लगा। पूछने पर बड़ा सुन्दर कहा कि आपने भोजन मेरी योग्यता को नहीं, बल्कि मेरे कपड़ों को दिया है। महाभारत के दूसरे विद्वान ने कहा,

धार्मिक चर्चा

ईश्वर-महिमा

श्री दयानन्द जी आर्य एम० ए० वि० वै०
शोध-संस्थान, होश्यारपुर

महर्षि ! संसार में जिस व्यक्ति के पास शक्ति नहीं वह नर जघन्य है। युगप्रवर्तक दयानन्द के पास क्या था। फिर भी उन्होंने आध्यात्मिक शक्ति से पापाचार के विरुद्ध प्रबल विप्लव पैदा कर दिया तभी मि० फौक्स पिट **General Secretary Moral Education League London** ने एक बार कहा था, मेरी सम्मति में स्वामी दयानन्द एक सच्चे जगत-पुरुष और सुधारक थे। फिर कई विद्वानों ने विज्ञान, विद्या आदि की भूरि २ प्रशंसा की, अन्त में महर्षि व्यास सारांश निकालते हुए कहते हैं कि ठीक है संसार में धन, बल आदि भी चाहिए किन्तु मेरे विचार में जो भगवान का नाम नहीं लेता वह व्यक्ति नीच है। श्री पास्कल ने लिखा है, **If there is no God, it is better to invent him and rely on him."** अर्थात् मानव को एक ऐसी अभौतिक शक्ति पर विश्वास करना चाहिए ताकि शुभ प्रेरणा प्राप्त करता रहे। शास्त्र ने केनेद मन प्रेरित' मे शब्द में उत्तर रख दिया कि वही है जो आनन्द स्वरूप है। ईश्वर-स्तुति का कितना मनोहर वर्णन है—

'अव स्मद्दीमहाव देव दम्यम्।
यथानो वस्यसस्करधथा न
श्रेयसस्करधथा नो व्यवसाययात् ॥'
यजु० ३।५८

सा वा अयमात्मा सर्वेषां भूतानामधिपतिः। सर्वेषां भूतानां राजा। बृहदा० २।५।१५।

यो ब्रह्माणं विदधाति पूर्वं यो वै वेदांश्च प्रहिणोति तस्मै तं ह देवमात्म बुद्धि प्रकाशं मुमुक्षुर्वै शरणमहं प्रपद्ये। पूर्व ६।१८।

गुरु नानक देव जी ने इतनी लम्बी यात्रा करके यह परिणाम निकाला कि नानक दुखिया सब संसारा, किन्तु इसका इलाज भी बता दिया।

सो सुखिया जो नाम आधारा।'

आज भी अनेक देवी देवता ईश्वर के स्थान पर पूजे जाते हैं, सुख कैसे हो, इससे गृहयुद्ध फल रहा है व झगड़े बढ़ रहे हैं। प्रत्येक अपने सम्बन्धित गुरु को बड़ा बनाने की होड़ में है किन्तु ईश्वर हमारा पिता है, उसको मिलने के लिए किसी एजेंट की क्या आवश्यकता। नास्तिक नीत्शे ने भी मरते समय God is now where को now here बनाया था। यदि ईश्वर न होता तो सिकन्दर क्यों छटपटाया, ईश्वर ने कर्मों के अनुसार उसे न्याय-चक्र में बांधा। महाकवि टगोर ने गीतांजलि में लिखा है कि एक सितार बजाने वाले को पन्द्रह मिंट का समय मिला, किन्तु मिंट तक सितार की ढीली तारों को कसता रहा। जब बजाने लगा तो मंत्री जी ने कहा कि समय हो गया, गायक ने कहा कि मैं तो सितार की तारें ही कसता रहा परन्तु मंत्री जी बोले कि यह १५ मिनट का समय सितार बजाने के लिए दिया था न कि सितार कसने के लिए, इसी प्रकार हे भगवन् ! यह मानव जीवन का सितार तूने इसलिए दिया था कि प्रभु का संगीत गा सकूं किन्तु शरीर रूपी सितार की तारें कसते-कसते मृत्यु आ गई, मैं तेरे मीठे संगीत न गा सका। आओ ! प्रभु के मीठे संगीत को गायें, सुनाएं।

ऊना में देवीचन्द कालिज की स्थापना

स्वर्गीय महात्मा देवीचन्द जी एम. ए के परोपकारों का भार ऊना तहसील पर बड़ा भारी रहा है। अतएव प्रिंसिपल श्रीराम जी एम ए की अध्यक्षता में डी० ए० वी० हायर सैकण्डरी स्कूल ऊना की प्रबन्धकर्त्री सभा और आर्य समाज ऊना के सदस्यों की सम्मिलित सभा ने ११ ७ ६५ के अधिवेशन में सर्वसम्मति से पास किया कि स्वर्गीय महात्मा जी की पुण्य-स्मृति में ऊना में 'देवीचन्द कालिज' स्थापित किया जावे और उस के लिये तीन लाख रुपये की अपील जारी की जावे और कोष को एकत्रित करने का कार्य शीघ्र आरम्भ कर दिया जावे। ताकि यूनिवर्सिटी से स्वीकृति लेकर जुलाई १९६६ से कालिज की श्रेणियां आरम्भ की जावें। ऊना तहसील के शिक्षा प्रेमी सज्जनों से और स्वर्गीय महान आत्मा के पुराने शिष्यों तथा श्रद्धालुओं से प्रार्थना है कि इस पुण्य कार्य में सहयोग दे कर कृतार्थ करें। इलाके की ६९ से कालिज की मांग थी। उस को पूरा करने के लिये जुलाई १९६६ से पहले २ सब तैयारियां पूर्ण करके कालिज का आरम्भ आवश्यक है। ताकि एक महान शिक्षक की स्मृति में स्थापित किया विद्या का विशाल मन्दिर जनता की मांग को भली भांति पूर्ण कर सकें।

जनता हितैषी कालिज

———

सम्पादकीय—

आर्य जगत्

वर्ष २५] रविवार २०२१, २५ जुलाई १९६५ [अंक ३१

भाषाओं की माता संस्कृत

भारत अपनी पुरातन संस्कृति के कारण आज भी सारे विश्व में महान गुरू माना जाता है। इसकी संस्कृति संस्कृत भाषा में है जिसे देवभाषा या देववाणी के नाम से भी पुकारा जाता है। हमारी सभ्यता का वेदों के बाद सारा साहित्य संस्कृत में ही मिलता है। इस में दर्शन, उपनिषदें, रामायण महाभारत, महाकाव्य तथा नाटकों की सम्पत्ति भरी पड़ी है। संस्कृत भाषा आज भी विश्व के सारे भाषा परिवार की माता मानी जा चुकी है। भारत में ऐसा युग भी था जब कि देश की जनभाषा संस्कृत थी। सारा काम इसी में चलता था। इसका शब्द भण्डार भरा हुआ है। अनेकों विदेशी आये और संस्कृत भाषा पढ़ने में अपना सारा जीवन भेंट कर दिया। भारतीय जीवन में इसका बड़ा सम्मान है। आज भी यही भाषा सारे राष्ट्र के जन-जीवन को परस्पर मिलाती है। मुस्लिम युग आया या अंगरेजी साम्राज्य आया। उन्होंने विदेशी भाषा फारसी व अंगरेजी भाषा का खूब प्रचार किया। राज्य भाषाएं अपनी २ अवस्था में ये बन गईं। फिर भी भारतीय लोग देवभाषा को पढ़ते रहे। यहां तक कि देश विभाजन से पूर्व अपने प्रांत पंजाब में संस्कृत पढ़ने तथा परीक्षा देने वालों की संख्या मिलती है। अंगरेजों के चले जाने के बाद अब जो अपने प्रांत में इस देवभाषा का जितना अपमान किया जाता है, उसे देखकर खून के आंसु रोने का दिल करता है। वर्ष के बाद संस्कृत के कितने छात्र परीक्षा में शामिल होते हैं, उस संख्या को देखकर तो हार्दिक आघात लगता है अपने देश में संस्कृत की यह दशा।

साथही एक भारी दुःख यह भी है कि अंगरेजों के राज्यमें सारे स्कूल दसवीं तक थे। उनमें सब स्कूलों में साईंस का विषय भी नियत था कि जो छात्र चाहे विज्ञान ले सकता है। साथ ही संस्कृत भी थी जो साईंस के साथ संस्कृत भी ले सकता था। खुली छुट्टी थी। लड़के साईंस, हिसाब, तथा संस्कृत के विषय लेकर ऊंचे स्तर में उत्तीर्ण होते थे। किन्तु बड़े शोक से कहना पड़ता है कि अपने लोगों के हाथों में जब से राज्य सत्ता आई या विश्वविद्यालय आए, तो पहला काम इस देवभाषा पर भयंकर वार करने का किया गया। जबसे हायर स्कूल बने हैं तब से इनमें संस्कृत को सर्वथा समाप्त करने में कोई कसर नहीं उठा रखी गई। इनमें आज कोई भी छात्र साईंस के साथ संस्कृत चाहता हुआ भी नहीं ले सकता साईंस लेने वालों के लिए संस्कृत के द्वार सर्वथा बन्द कर दिये गए। कितना अन्याय है, कितना देव भाषा का अपमान है। जो संस्कृत लेना चाहे वह संस्कृत नहीं ले सकता और जो साईंस लेना चाहे उसे संस्कृत नहीं लेने दी जाती। अपने लोगों ने यह अपमान किया है। कब से यह हो रहा है परन्तु तमाशा यह है कि किसी के कान में जूं नहीं रेंगती। असैम्बली में अपने आदमी हैं, यूनिवर्सिटी में अपने हैं, संस्थाओं में भी अपने हैं। पर भावना मर चुकी है। कोई बोलता ही नहीं है। किसी का स्वाभिमान तक नहीं जागा। इतना अपमान तो विदेशी सत्ता ने भी नहीं किया था। आर्यसमाजें भी सन्ध्या हवन में ही लगी हुई हैं। इधर उन का भी ध्यान नहीं जाता। आज स्कूलों में संस्कृत समाप्त हो रही है जब नवम कक्षा में संस्कृत नहीं रहेगी तो कालेजों में कौन पढ़ेगा। छोटी श्रेणियों में कौन लेगा? संस्कृत समाप्त तो संस्कृत वालों का क्या काम? इस स्थिति में मौन रह कर संस्कृत हत्या के साथ संस्कृति हत्या व आत्म हत्या क्यों कर रहे हो?

—त्रिलोक चन्द

आर्य संन्यासी सम्मेलन

भारत भर के आर्य संन्यासियों का महा सम्मेलन पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज की प्रधानता में देहली में बड़े समारोह से समाप्त हो गया। वहां पर सार्वभौमिक आर्य परिव्राजक संघ नाम से संस्था बनाई गई जिस के प्रधान महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज निर्वाचित हुए। देश में गोहत्या निरोध, भ्रष्टाचार निवारण तथा विदेश प्रचार आदि विशेष कार्यों को करने की योजना बनाई गई। हम संन्यासियों के इस नेतृत्व पर प्रसन्न हैं। प्रभु करे कि यह महा-सम्मेलन देश के जीवन में परिवर्तन ला सके।

आर्यो ! सोचो !!

आर्यसमाजों में मतभेद तो होता आया है पर वर्तमान समय के समान अलग २ तारें कभी नहीं हुई थीं। आजकल समाचार पत्रों में आर्यसमाजों के परस्पर कचहरियों में मुकद्दमेबाजी को पढ़कर लज्जा से आंखें झुक जाती हैं। यह सब क्या हो रहा है? क्या कोई भी ऐसे महानुभाव नहीं हैं जो कि ऐसी पराकाष्ठा की अवस्था को देख कर इस धारा को रोकने का प्रयत्न करे। जनता में सारे समाज में उपहास हो रहा है। स्मरण रखें कि यह अवस्था गौरव की बात नहीं है।

धुरी काण्ड

आर्यसमाज के योग्य विद्वान् युवक श्री राजेन्द्र जी जिज्ञासु एम० ए० प्राध्यापक दयानन्द कालेज शोलापुर ने अपने एक गत लेख में धुरी में स्वामी विद्यानन्द विदेह जी के वहां हुए प्रचार के बारे में जो कुछ लिखा है उसे पढ़कर मन में बड़ा दुःख हुआ है। यदि समाजें अपनी शिरोमणि सभा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के आदेश का पालन न करेंगी तो समाज की स्थिति कैसी बन जाएगी? यदि बात ठीक है तो हम माननीय श्री स्वामी विदेह जी से भी नम्र प्रार्थना करेंगे कि वे अपने प्रवचनों में ऐसा अवसर क्यों देते हैं जिस से जनता को ऐसा मौका मिले।

—

महात्मा देवीचन्द्र जी के निधन पर

निम्न संस्थाओंके शोक प्रस्ताव प्राप्त हुए

आर्यसमाज लक्ष्मणसर अमृतसर, आर्यसमाज अलावलपुर, आर्यसमाज चंडीगढ़ सैक्टर ८, आर्यसमाज नवांकोट अमृतसर, कनकमंडी होशियारपुर, आर्यसमाज कालिज सैक्शन गुरदासपुर, आर्यसमाज रेलवे रोड अंबाला, आर्यसमाज दीवानहाल देहली, आर्यसमाज विक्रमपुरा जालंधर, आर्यसमाज रामगढ़ मसीहगढ़ (स्वामी ध्रुवानन्द जी के निधन पर)।

संस्कृत का अनादर क्यों ? आदर कैसे हो

श्री बलदेव राज जी गुप्ता एम.ए. अन्नामलई यूनीवर्सिटी (मद्रास)

सम्पादक महोदय का लेख 'संस्कृत की सुध लो' पढ़कर आश्चर्य एवं हर्ष अनुभव किया कि संस्कृत की दुर्दशा के विपरीत आवाज उठाई जा रही है। संस्कृत की दयनीय अवस्था का कारण हम स्वयं हैं। जब दूसरे की थाली में चावल पड़े हुए देखते हैं तो वे ज्यादा दीखते हैं। इसी प्रकार जब माता-पिता विज्ञान पढ़ने वाले छात्रों को माया में खेलते देखते हैं तो वे भी सोचते हैं 'बच्चों को संस्कृत पढ़ाकर क्या लेना है। ज्योतिषी व पण्डित तो बनाना ही नहीं। विज्ञान पढ़ाकर अच्छी सर्विस मिलेगी।' किन्तु ऐसे लोगों को क्या पता कि विज्ञान के बीज संस्कृत में ही हैं। आज हम अपने आचरण व सभ्यता की अपेक्षा भौतिक जगत को अधिक महत्त्व दे रहे हैं। यही कारण है कि संस्कृत के प्रति अवहेलना की जा रही है।

संस्कृत के पतन का उत्तरदायित्व हम सरकार के कन्धों पर अवश्य डालते हैं। सरकार को दोषी बनाते हैं। किन्तु कार्य के बिना कारण नहीं। ताली एक हाथ से नहीं बजती। दोनों हाथों से बजती है। जब हम पढ़ने वाले ही नहीं तो सरकार को क्या पड़ी कि वह अध्यापकों को वृथा वेतन देवे। कई कालिजों में संस्कृत का विषय अवश्य है, किन्तु छात्र इने गिने होते हैं। संस्कृत का अध्यापक कालिज में बोझ ही प्रतीत होता है। अतः कई प्राइवेट कालिजों ने संस्कृत के विद्यार्थियों की अल्प संख्या होने से, संस्कृत के विषय को ही उड़ा दिया है। अब आत्म निरीक्षण करें तो निश्चय ही अपनी जननी की दुर्दशा के कारण हम हैं। विज्ञान पढ़ने वालों की संख्या अधिक है, इसी लिए विज्ञान के लिए सरकार ज्यादा खर्च कर रही है। संस्कृत के छात्रों की संख्या अधिक हो, तो अवश्य प्रोत्साहन मिलेगा। किसी की हिम्मत नहीं कि संस्कृत के विषय को उड़ाए। स्वतंत्र देश में तो संस्कृत के पनपने की और भी सुविधाएं हैं।

जब हम एक व्यक्ति से स्नेह करते हैं तो वह भी हम से स्नेह करता है। जब हम किसी से द्वेष करते हैं तो वह भी प्रायः द्वेष करता है। मेरे विचार में तो सभी भाषाएं व मनुष्य परमात्मा के हैं। हम परमात्मा की सन्तान हैं। उसी ने विभिन्न लोगों को विचार प्रकट करने के लिए विभिन्न-भाषा रूपी भेंट दी है। यदि हम किसी भाषा से द्वेष करते हैं तो मानो परमात्मा से दी गई प्राकृतिक भेंट से द्वेष करते हैं। परमात्मा से द्वेष करते हैं। कट्टर हिन्दुओं ने मुसलमानों के प्रति द्वेष रक्खा, मन्दिरों में आना मना किया। परिणाम-स्वरूप पाकिस्तान बना। पंजाबी के प्रति द्वेष के कारण पंजाबी-सूबा की क्रांति की ज्वाला भड़की। हम लोगों ने ही परमात्मा की अपरम्पार लीला को न समझते हुए, उसके द्वारा अन्य भेंटों रूपी भाषाओं के प्रति द्वेष-भावना के बीज बोए। उन लोगों ने भी संस्कृत को ठेस पहुंचाई। हम लोगों में एकता कहां? यदि हम एक होते तो संस्कृत की यह दशा देखने को न आती। कई लोग कुर्सी के लालच से, कई विज्ञान की माया के मोह के कारण व कई अनुकरण आदि अन्य कारणों से विमुख होते गए।

खैर! जो होना था हो गया। अब रोने धोने से क्या लाभ? रोने से तो और भी रोना आता है। बातें करने से भी क्या लाभ? बातें करने से बातें बढ़ती ही जाती हैं। आओ यदि हम संस्कृत के सच्चे प्रेमी हैं तो क्रियात्मक कार्य करें। तभी संस्कृत का उद्धार होगा। अन्यथा वह समय अवश्य आने वाला है जब भारत में हिन्दु-धर्म के लोग अल्प संख्या में होंगे संस्कृत का नाम निशान मिट जाएगा। आओ! क्या करें? सुनिए।

साधारण जन आज से यह प्रतिज्ञा करें कि 'चाहे मैंने संस्कृत पढ़ी है या नहीं। अपने बच्चों को जरूर संस्कृत कालिज में पढ़ाऊंगा ताकि संस्कृत प्राध्यापकों को स्थान मिले।' दूसरी प्रतिज्ञा यह करें 'जो संस्कृत भाषा को नहीं जानते या जो मेरी मातृ-भाषा को नहीं जानते। उनकी भाषा से द्वेष न करते हुए, उनकी भाषा को भी सीखने का प्रयत्न करूंगा ताकि उन्हें भी अपनी संस्कृत भाषा सीखने के लिए प्रेरित कर सकूं।' यह तो कार्य साधारण जन कर सकते हैं।

संस्कृत के अध्यापकों एवं प्राध्यापकों से नम्र निवेदन है कि नसल के लाभ के लिए वे यथा-शक्ति त्याग अवश्य करें। संस्कृत की कृपा से ही भाग्यवश यदि वे अध्यापक एवं प्राध्यापक बने हैं तो उसी संस्कृत-माता की सेवा में कुछ उपहार देने में लज्जा न करें। वे नए सैशन में नोटिस निकालें, 'जो भी छात्र संस्कृत का विषय लेंगे, उनको मैं अमुक इनाम दूंगा अथवा अमुक सहायता करूंगा।' यदि यह बात क्रियात्मक रूप में आ जाए तो निर्धन छात्र अवश्य संस्कृत पढ़ेंगे। ६०% प्रायः निर्धन छात्र ही होते हैं।

भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय ने बहुत स्थानों पर अपने नए सैंट्रल स्कूल खोले हैं। उन सब में संस्कृत का विषय छठी कक्षा से एकादश कक्षा तक अनिवार्य है। इसी का अनुकरण करते हुए सभी प्राइवेट स्कूल व कालिज संस्कृत का विषय अनिवार्य कर दें तो कल्याण हो जाए। मेरे मित्र रामेश्वर दयाल बंगलौर M. E. G Central School में संस्कृत के अकेले अध्यापक हैं। छठी से एकादश तक वहां संस्कृत अनिवार्य है। उन्होंने नवीं से एकादश कक्षा वालों को भी आरम्भ से संस्कृत सिखाई (क्योंकि पहले उन छात्रों को संस्कृत का विषय कहीं पढ़ना ही न पड़ा) कम से कम आर्यसमाज के सभी स्कूल व कालिज संस्कृत का विषय अनिवार्य कर दें तो अन्य कालिज अवश्य अनुकरण करेंगे। सरकारी कालिजों में संस्कृत को अवश्य ही प्रोत्साहन मिलेगा। केवल लेख लिखने व बातें बनाने से ही संस्कृत का उद्धार न होगा।

अन्त में आर्यसमाज प्रतिनिधि सभा से प्रार्थना है कि आर्य समाज ही संस्कृत की प्रतिष्ठा का प्रचार करती आ रही है, तो अब संस्कृत की दयनीय अवस्था को सहन करना क्या पाप नहीं। संस्कृत के प्रेमियों एवं विद्वानों का महासम्मेलन बुलाया जाए। उनके विचारों को शीघ्र ही क्रियात्मक रूप में लाया जाए। समूह रूप से संस्कृत के प्रोत्साहन के लिए मांग की जाए। संस्कृत की महिमा के गीतों का प्रचार किया जाए जलसे व जलूसों का आयोजन किया जाए। नए व पुराने स्कूलों व कालिजों में संस्कृत का विषय अनिवार्य बनाए जाने के लिए प्रेरित किया जाए। किन्तु यह तभी संभव है जब हम एक आवाज से क्रांति की लहर फैलाएं। दक्षिण-भारत में मद्रास राज्य में हिन्दी विरोधी आन्दोलन की एकता देखकर हैरान हो गया था। तभी सरकार ने ध्यान दिया। आओ हम सभी

(शेष पृष्ठ ६ पर)

नारी स्तभ—

संपादिक सुश्री सुशीला जी आर्या M.A. विद्यावाचस्पति आर्य कन्या गुरुकुल नरेला

"गृहस्थ जीवन सुखी कैसे ?"

पं० रविदत्त जी पारीक आर्य "विद्यावाचस्पति, प्रभालर"
(आर्य समाज, हांसी)

गृहस्थाश्रम सुखी कैसे हो, इस विषय में भिन्न-भिन्न विचार शील पुरुषों ने अपने-अपने स्वतंन्त्र विचार दिये हैं, फिर हमारे सम्मुख वह प्रश्न महत्व पूर्ण क्यों बना रहता है, क्योंकि हम ईश्वर प्रदत्त वैदिक विचार धारा का अनुगमन नहीं करते। यह एक सार्वतान्त्रिक सिद्धान्त है कि यदि मनुष्य वेदों के बताए हुए विधानों के अनुसार अपना स्वच्छ जीवन यापन करे तो वह सद्गृहस्थी बन सकता है जब कि उस में वैदिक विचार धारा का अनुकरण करने की क्षमता हो। एक सद्गृहस्थी के जीवन में प्रीति, विनय, विचार प्रौढ़ता, व्यवहार—कौशल्य, सत्कारादि गुणों का समावेश होना परमावश्यक है। इसी बात का प्रतिपादन वेद निम्न शब्दों में करता है :—

अनुव्रत: पितापुत्रो
मात्राभवतु सम्मना।
जायापत्ये मधुमर्वीम्
वाचं वदतु शान्तिवाम् ॥

नियमों और दिनचर्या में आबद्ध जीवन ही सुख और शांति प्रदायक होता है। संसार का प्रत्येक मानव सुख चाहता है परन्तु तत्सम्बधि समग्री जुटाता नहीं। गृहस्थी के लिए सुख का सर्व प्रथम साधन स्वाध्याय है जिस को कर के वह आत्म-सन्तुष्टि उपलब्ध कर सकता है। इस बात को जर्मन के प्रसिद्ध दार्शनिक शोपनहावर ने निम्न शब्दों में स्वीकार किया है कि :—

"In the whole world there is no study so beneficial and elevating as of Swadhaya. It has givan me solace in my life and it will give me so lace after my death."

अर्थात् संसार मे स्वाध्याय से बढ़कर और कोई उत्तम अध्ययन नहीं है, स्वाध्याय ने मुझे इस जीवन में शांति प्रदान की है और मृत्यु के पश्चात् भी यही मुझे शांति प्रदान करता रहेगा। यही स्वच्छ विचार जगत् गुरु, शांति के अग्र-दूत महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज के थे कि—

"स्वाध्यान्माप्रमदः" स्वाध्याय से प्रमाद न कीजिए। इस संसार में आदि से आज पर्यन्त गृहस्थों का पद सब से उच्च रहा है क्यों कि सभी आश्रमों का आदि श्रोत यह आश्रम है जैसा कि मनु महाराज ने कहा है कि :—

यथा नदीनदा सर्वे
सागरे यान्ति संस्थितीम्।
तथैव सर्वे आश्रमिण:
गृहस्थे यान्ति संस्थितीम ॥

अत: यदि उपरोक्त श्रेष्ठतमाश्रम में न्यूनता रह गई तो अन्याश्रम कैसे युक्त हो सकेंगे। क्यों कणाद मुनि ने स्पष्ट शब्दों में कहा है कि :—

'न करणा भावान् कार्याभाव.' बिना कारण के कार्य सम्पन्न नहीं होता, कारण के लिए कार्य की पुष्टता आवश्यक नहीं अपितु कार्य के लिए कारण का पुष्ट होना अनिवार्य है। इसी लिए तो विलियम सक्सपायर ने कहा है कि :—

'All the world is a stage and men and women are mearly players.'

अर्थात् ये सम्पूर्ण संसार एक रंगमंच है और इसमें उपस्थित व्यक्ति अभिनेता और अभिनेत्रियां हैं यदि यहीं युक्ति-प्रमाण युक्त न जीवन में चले तो बताओ भविष्य में नाटकीय पात्र इस नाटक रूप संसार में कैसे सफल होंगे। इसमें साफल्य प्राप्त करने के लिए अपनी अन्तरात्मा में शान्ति का अजस्र-श्रोत बहाने की परमावश्यकता है। व्यक्ति के जीवन में वाणी आंख कान और मन बहुत महत्व रखते हैं परन्तु गृहस्थी इन का सदा सदुपयोग ही करें। गृहस्थी के लिए "सदा जीवन उच्च विचार" यही उक्ति सर्वथा उपयुक्त है। दाम्पत्य-प्रेम को निभाना नर-नारी का पहला कर्त्तव्य है। प्रत्येक की उन्नति में ही अपनी उन्नति वाला भाव ले कर जो गृहस्थी गृहस्थ जीवन में पदार्पण करता है वही सफल होता है। "ममव्रते ते हृदयं दधामि मम चित्तमनुचित्त तेऽस्तु" इस कृत प्रतिज्ञा को यदि गृहस्थी स्मरण रखता हुआ जीवन सञ्चालित करे तो वास्तव में वह जीवन में सफल होकर सद् गृहस्थी कहलाने के योग्य हो सकता है।

—

देवी की महिमा

देवी ने जमाने की बिगड़ी को बनाया है,
उत्थान पतन इनके अधिकार में आया है।
जब ठान लिया मन में सत्य धर्म बचाना है,
तन मन धन भेंट चढ़ा प्रण पूर्ण निभाया है।
तप तेज दिखा रण में शत्रु के मान मारे,
वायु भी रुका बल से पर्वत को झुकाया है।
दुर्गा लक्ष्मी बन कर जब ली तलवार पकड़,
लाशों की बना सीढ़ी जा स्वर्ग को पाया है।
रावण की स्वर्ण लंका और आप दुष्ट रावण,
डट एक सती ने हा सब धूल मिलाया है।
मत समझो हमें अबला अपनी एक दृष्टि ने,
उठतों को गिरा दिया गिरतों को उठाया है।
शेरों से समर लड़ने चलते किशोर देखे,
लोरी दे सिंहनी बन जब दूध पिलाया है।
इसी देवी को दानव जन शूद्रा बतलाते थे,
ऋषि का यशगान करें फिर देवी बनाया है।
अपमान जहां इन का होती सब विफल क्रिया,
सम्मान में देवों का शुभ वास बताया है।

—सुशीला आर्या एम० ए० देहली

भाषाओं की जननी संस्कृत का अपमान

(प्रसिद्ध नेता श्री कैप्टन केशव चन्द जी अमृतसर का उद्बोधक वक्तव्य)

माननीय कैप्टन केशव चन्द जी प्रधान आर्य केन्द्रीय सभा अमृतसर आर्य समाज के बड़े प्रसिद्ध नेता हैं। राजनीति के विशाल क्षेत्र के कार्य क्षेत्र में बहुत ऊंचे पद पर कार्य करते हुए भी आर्य समाज के बहुँ मुखी कार्यों में सदा से आगे ही आगे रहे हैं। प्रायः यह देखा गया है कि आर्य समाज का कोई व्यक्ति जब किसी ऊंचे स्थान पर पहुँच जाता है राजनीति में चला जाता है या किसी दल का बड़ा अधिकारी बन जाता है तो आर्य समाज के कामों से उदासीन हो जाता है। समाज में आना ही बन्द कर देता है। किन्तु माननीय श्री कैप्टन जी के जीवन में आरम्भ से ही यह विशेषता रही है कि राजनीति के ऊंचे आसन पर बैठ कर भी आर्य समाज को सदा प्रमुख रखते हैं। अमृतसर आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान हैं। लारेंस रोड समाज के प्रत्येक काम में आप का हर प्रकार निर्माण सहयोग मिलता है। इस ८५ वर्ष की अवस्था में समाज के कार्यों में आप का उत्साह प्रशंसनीय है। आज भारत सरकार भाषाओं की जननी संस्कृत भाषा की कितनी उपेक्षा कर रही है। सब की आंखे खोलने के लिए अपने वक्तव्य सन्देश में कहा है। सं. हमें इस बात का गौरव है कि हमारे सम्माननीय राष्ट्रपति एक महान् दार्शनिक होने के साथ-साथ संस्कृत भाषा के एक उच्च-कोटि के विद्वान भी हैं। साथ ही हमें इस बात का भी गर्व ही है कि हमारे प्रधान मन्त्री जी, भी शास्त्री होने के कारण संस्कृत के प्रकाण्ड पण्डित हैं। पर भाग्य की यह कितनी विडम्बना है कि इन दोनों संस्कृत निष्ठ नेताओं के शासनकाल में ही संस्कृत भाषा के प्रति अत्यन्त उपेक्षावृत्ति से काम लिया जा रहा है। संस्कृत की जो दयनीय दशा आज है वह पहले कभी न थी।

त्रिभाषा फार्मूला (Three Language farmula) के द्वारा हिन्दी भाषियों को तीसरी भाषा के रूप में संस्कृत लेने से वंचित करके अधिकारी वर्ग ने न केवल इस महान् सांस्कृतिक भाषा का ही अपमान किया है, अपितु भारतीय संविधान के विपरीत आचरण भी किया है। संविधान की प्रामाणिक भाषाओं की सूची में संस्कृत की भी गणना है—और साथ ही इसे समस्त दूसरी भाषाओं की जननी स्वीकार किया गया है। इस सम्बन्ध में संविधान की धारा संख्या ३५१ विशेष रूप से उल्लेखनीय है, जिस में स्पष्ट घोषित किया गया है कि भारत सरकार का यह कर्तव्य होगा कि हिन्दी भाषा के प्रचार एवं प्रसार का प्रयत्न करे और आवश्यकतानुसार इस के शब्दकोष के विकास के लिए प्रमुखतया संस्कृत से और गौण रूप से दूसरी भाषाओं से सहायता ली जाये यदि संस्कृत के अध्ययन पर ही प्रतिबन्ध हो तो संस्कृत द्वारा हिन्दी के शब्दकोष का विकास कैसे सम्भव हो सकता है। इसलिए हमारा यह अनुरोध है कि त्रिभाषा फारमूला में संस्कृत के साथ जो अन्याय एवं अपराध पूर्ण व्यवहार किया गया है, उस को समाप्त किया जाये और राष्ट्रीय सार्वजनिक सेवा आयोग (Union Public Service Commisgion) द्वारा ली जाने वाली समस्त परीक्षाओं में हिन्दी भाषी आवेदकों को तीसरी भाषा के रूप में संस्कृत लेने की पूर्ण स्वतन्त्रता दी जाए। राष्ट्र की भावात्मक एवं सांस्कृतिक एकता के लिए संस्कृत को प्रोत्साहन देना नितांत आवश्यक है। हमें पूर्ण आशा है कि इस महत्वपूर्ण विषय की ओर समुचित ध्यान दिया जाएगा।

अलावलपुर समाज मन्दिर पर गहरी चोट

हिन्द समाचार ७-७-६५ के पृष्ठ न. ६ प. अलावलपुर समाज मन्दिर मोटे शब्दों में लिखे अनुमान से किसी ने लव-मैरिज की खबर छापी है। जिससे अलावलपुर की आर्य जनता को भारी दुःख हुआ है हम जनता को स्पष्ट कर देना चाहते हैं कि अलावलपुर समाज मंदिर में कभी भी इस प्रकार की लव मैरिज नहीं हुई है।

—गुरुप्रसाद मंत्री समाज

निःसन्तान परिवार ध्यान से पढ़ें

यदि आप विवाह के बाद अब तक निःसन्तान हैं तो इस रोग के सफल चिकित्सक श्री पं० श्यामसुन्दर जी स्नातक (महोपदेशक पंजाब प्रतिनिधि सभा) से मिलें या पत्र व्यवहार करें। श्री स्नातक जी भारत के अनेक परिवारों की सफलतापूर्वक चिकित्सा कर चुके हैं।

पूर्ण कोर्स ३ मास व्यय २००/-

पता—श्यामसुन्दर स्नातक महोपदेशक पंजाब सभा ३०३ रानीबाग शकूरबस्ती देहली

वज्रपात पर वज्रपात

(गतांक से आगे)

आर्यसमाज के महान स्तम्भों में शुमार होते थे। जब भाषण देते तो शेर के समान गर्जना होती थी। इस आयु में वेदों का अंग्रेजी अनुवाद करते थे। यजुः व सामवेद का इंगलिश अनुवाद पूर्ण हो कर प्रकाशित भी हो चुका था। अब अथर्ववेद में व्यस्त थे। मैंने कई बार दर्शनों पर तथा पत्रों द्वारा विनीत प्रार्थना की कि आप अब अन्य सारे कार्य छोड़कर चारों वेदों के इंगलिश भाष्य को पूर्ण करने में लगे रहे। बड़ा भारी काम है। रोगी हो कर देहली जाकर हम को छोड़ कर चले गए। कितना बड़ा वज्रपात है। उन के दोहतों व अन्य सम्बन्धियों के साथ आर्य जगत् हार्दिक समवेदना प्रकट कर प्रभु से उन को इस महान कष्ट सहन करने को धैर्य देने तथा दिवंगत आत्मा को शान्तिदान का प्रार्थी है। अब निरुक्त के भाष्यकार पालीरत्न महान् विद्वान श्री चद्रमणि जो विद्यालंकार पालिरत्न तथा प्रसिद्ध प्रसिद्ध पत्रकार श्री पं. सत्यदेव जी विद्यालंकार देहली भी हमें छोड़कर चले गए। समाज पर ही वज्रपात है। प्रभु कृपा करे—सं.

संस्कृत का अनादर क्यों?

(पृष्ठ ४ का शेष)

एक होकर संस्कृत की प्रगति हेतु सोई हुई सरकार व भटके लोगों को जगृत करें। आर्यसमाज ही इस क्रांति का आरम्भ करे अन्यथा 'संस्कृत की सुध' कौन लेगा? मेरी आवाज 'आर्यजगत' अंक तक ही सीमित न रहे तो आगामी वर्ष अवश्य संस्कृत की ज्योति जगमगाती दिखाई देगी। आशा है 'आर्यजगत' के अधिकारी स्वयं संस्कृत-विद्वानों के सम्मेलन द्वारा क्रांति लाएंगे। यही क्रांति वेद-प्रचार का साधन होगी।

उप-शताब्दी सम्बन्धी सूचनाएं

आर्यसमाज के क्षेत्रों में इस बात को सुन कर हर्ष होगा और साथ ही कुछ प्रेरणा भी प्राप्त होगी कि आर्यसमाज दसूहा ने इस बात का विचार करते हुए कि पूज्य महात्मा हंसराज जी की जन्मभूमि होशियारपुर जिला में है जिला स्तर पर उपशताब्दी समारोह मनाने का निश्चय किया है। पं० खुशीराम जी तथा आर्यसमाज दसूहा के अधिकारियों के प्रयत्न से होशियारपुर आर्यसमाज ने भी इस समारोह में पूरा सहयोग देने का वचन दिया है। चौधरी बलबीर सिंह जी इस के लिए विशेष धन्यवाद के पात्र हैं। उनके नेतृत्व में होशियारपुर आर्यसमाज तथा होशियारपुर की और जिला की शिक्षा संस्थाओं के सहयोग से जिला स्तर पर यह समारोह अच्छी तरह मनाया जा सकेगा। इस बात का पूर्ण निश्चय है।

इस कार्य को प्रारम्भ करने का श्रेय श्री पं० खुशीराम जी, आर्यसमाज दसूहा के अधिकारीगण तथा आर्यसमाज होशियारपुर के अधिकारियों को है।

यदि इसी प्रकार अन्य आर्य समाज भी जिला स्तर पर उपशताब्दी समारोह मनाने का निश्चय करें। तो इस से न केवल महात्मा हंसराज जी के प्रति हम अपनी कृतज्ञता का प्रकाशन करेंगे अपितु आर्यसमाज और विशेषकर आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा को भी पुष्ट करेंगे।

उपशताब्दी के सम्बन्ध में एक और सूचना विभिन्न आर्य समाजों की सेवा में देने की आवश्यकता है। आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के पास महात्मा हंसराज जी के बड़े साइज के रंगीन चित्र हैं। जिन समाजों ने उप शताब्दी सम्बन्ध में धन संग्रह किया था उनकी सेवा में आगे ही वे चित्र बिना किसी मूल्य के भेजे जा चुके हैं। अभिप्राय यह था कि समाजों में और आर्य समाज के प्रेमी भाईयों के घरों में पूज्य महात्मा जी के यह चित्र फ्रेम करा कर लगाये जाय ताकि हमें उनका पुण्य स्मरण रहे। जो भी आर्य समाज इन चित्रों को मंगवाना चाहें विशेषकर इसी विचार से कि वे फ्रेम करके आर्य समाज मन्दिर तथा सभासदों के गृहों की शोभा बढ़ाएगे, वे प्रादेशिक सभा के कार्यालय से इन चित्रों को मंगवा सकते हैं।

सभा के कार्यालय में महात्मा हंसराज जी के सुन्दर चित्र के साथ कुछ बैजेज़ भी बनवाये गये हैं। इन्हें स्कूलों और कालिजों में वितरण करना है। इन का नाम मात्र मूल्य भी रखा गया है। जो स्कूल या कालिज वितरण के लिए ये बैजेज मगवाना चाहें वे सभा कार्यालय को लिख सकते हैं।

आर्य समाज लरेंस रोड़ अमृतसर तथा आर्य समाज हिसार विशेष रूप में उप शताब्दी समारोह मना रहा हैं। अमृतसर में तो सितम्बर के प्रारम्भ से ही प्रचार कार्य चालू हो जायेगा। इस प्रकार पूज्य महात्मा हंसराज जी के संस्मरण में यह शताब्दी समारोह अपने पूर्ण और सफल रूप को प्राप्त कर सकेगा ऐसी आशा है।

सत्यार्थ प्रकाश परीक्षाएं

महर्षि दयानन्द के अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश को परीक्षाएं गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी सारे देश में वेद सप्ताह के उपलक्ष्य में ५ सितम्बर ६५ को होंगी। नवीन पाठ विधि तथा आवेदन पत्रादि, परीक्षा मन्त्री आर्य समाज मौडल बस्ती दिल्ली ५ से प्राप्त करें।

—देवव्रत धर्मेन्दु—प्रधान

आर्यसमाज विचार

आर्यसमाज से सम्बद्ध स्त्री-समाजों के विषय में आगे भी एक बार निवेदन किया गया था। यह प्रश्न संगठन की दृष्टि से विशेष महत्व का है इसलिए इसको और ध्यान देना बहुत ही आवश्यक है। प्रान्त भर की आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा से सम्बद्ध समाजें एक संगठन में हैं उनके आय-व्यय का नियन्त्रण है उनका परस्पर सहयोग है और इस प्रकार वे एक संगठित शक्ति के रूप में काम कर रही हैं। परन्तु स्त्री समाजों के विषय में ऐसा नहीं कहा जा सकता। वे केवल स्थानीय समाज है। उनका कोई संगठन नहीं। वे किसी केन्द्रीय समाज से सम्बद्ध नहीं। उनके आय व्यय का कोई नियन्त्रण नहीं और एक नगर की स्त्री समाज का किसी दूसरे नगर की स्त्रीसमाज से कोई सम्बन्ध नहीं। इस दृष्टि से यह ढंग आर्यसमाज के संगठन को शिथिल करने का एक बहुत बड़ा साधन है। स्त्री समाज की प्रधाना या मन्त्रिणी पर ही आश्रित होता है कि वे धन संग्रह करके जिस भी व्यक्ति, संस्था या समाज को चाहें जितना भी दे दें। यह अवस्था आर्यसमाज के सिद्धान्त और संगठन की दृष्टि से अच्छी नहीं प्रतीत होती। स्त्री समाजों को या तो स्थानीय समाज का एक अंग बन जाना चाहिए अथवा यदि वे स्वतंत्र इकाई हैं तो उन्हें सीधा आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा से सम्बन्ध होना चाहिए।

सत्यदेव विद्यालंकार एम० ए०
सभा मन्त्री

वेद-प्रचार कार्य

३—७—६५ से १३—७—६५ तक सभा के सुयोग्य उपदेशक श्री पं० ओमप्रकाश जी ने आर्यसमाज लक्ष्मणसर-अमृतसर में प्रचार के अतिरिक्त निम्न संस्कार वैदिक रीति से सुन्दर व्याख्या सहित सम्पन्न कराए।

२ नाम करण, १ यज्ञोपवीत, २ विवाह।

इन सभी संस्कारों के समय उपस्थिति पर्याप्त हुआ करती थी। सभा के लिए वेदप्रचारार्थ ७३)रुपये तथा आर्यसमाजलक्ष्मणसर अमृतसर के लिए ३८) रुपए प्राप्त हुए।

—सम्वाद दाता।

गुरुकुल कांगड़ी के विश्वविद्यालय के स्नातक मंडल में एक और की कमी

आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान, निरुक्त के महा प्रवीण पण्डित, गुरुकुल कांगड़ी के प्रोफैसर पं० चन्द्रमणि जी विद्यालंकार पाली रत्न का देहरादून के दून हस्पताल में निधन हो गया। आप ७६ वर्ष की आयु में रक्त चाप के रोग से ग्रसित थे। अंत्येष्टी संस्कार के समय नगर के प्रमुख व्यक्ति, आर्यसमाज के सदस्य तथा पुनर्वास मंत्री श्री महावीर जी त्यागी आदि उपस्थित थे। आर्यजगत उनकी आत्मा की सद्गति के लिए प्रभु से प्रार्थना करता है।

संस्कृत-परिषद्, नाभा

संस्कृत परिषद् नाभा की पंचमी गोष्ठी दिनांक १० जुलाई १९६५ को आय हाई स्कूल नाभा के भवन में श्री. साधुराम जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। एम. ए. अंग्रेजी के छात्र श्री विद्यासागर जी ने 'विख्यात प्रसिद्ध वैज्ञानिकों के संस्कृत के प्रति विचार' नामक विषय पर भाषण दिया। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि वैज्ञानिकों द्वारा बनाए हुए वायुयान टेलीविजन आदि सभी वस्तुओं को हमारे प्राचीन पूर्वज भली-भान्ति से प्रयोग में ला चुके हैं। तत्पश्चात् श्री साधुराम जी ने अपना मधुर तथा रोचक भाषण दिया।

—मुनिश्वर लाल
प्रचारमन्त्री नाभा

टंकारा यात्रा नं० २

गुजरात प्रान्त में आर्यसमाज का

श्री मथुरा दास जी प्रधान आर्यसमाज नवां कोट, अ...

(गतांक से आगे)

दोनों स्पैशल टंकारा यात्रा की गाड़ियों को ओ३म की पताकाओं तथा आर्यसमाज के विविध स्थानों के नामों के पट्टों से सजाया गया था। ऋषि दयानन्द, महात्मा हंस राज, स्वामी श्रद्धानन्द आदि नेताओं के सुन्दर चित्रों से भी ट्रेन के डिब्बे सुसज्जित हो रहे थे। इस प्रकार ये दोनों सजी हुई यात्रा गाड़ियां वैदिक धर्म की जय, ऋषि दयानन्द की जय के गगन भेदी घोषों के साथ रात के ग्यारह और साढ़े ग्यारह बजे देहली से टंकारा के लिए चल पड़ीं। उस आर्यसमाज आबू रोड के प्रेमी सज्जनों ने भी खाने पिलाने का सुन्दर प्रबन्ध किया। इस प्रकार उल्लास भरे वातावरण में जब पहली गाड़ी ब्यावर पहुँची तो सारा स्टेशन प्लेट फार्म ब्यावर नगर के प्रेमी सज्जनों से अटा पड़ा था। चारों ओर वैदिक धर्म तथा स्वामी दयानन्द की जय-जय हो रही थी। गाड़ी के सारे यात्रियों को उतार लिया गया और एक बहुत जलूस के रूप में गाते बजाते सारे नगर में घूमते हुए आर्यसमाज मन्दिर मे पहुंचे। दूसरी ट्रेन भी आ गई। उसके

श्री मथुरादास जी महर्षि दयानन्द जी के अनन्य भक्त तथा आर्यसमाज के लग्नशील कार्यकर्ता हैं। आप गत मास शिवरात्रि के अवसर पर टंकारा ट्रस्ट की ओर से ऋषि भूमि में जिस महामेले का आयोजन किया गया था, उस में पधारे थे। वहां का आंखों देखा वर्णन आर्य जगत के पाठकों के विनोदार्थ प्रस्तुत कर रहे हैं। यह यात्रा वर्णन कई अंकों में पाठकों की भेंट किया जायगा।

—व्यवस्थापक

समय जो आनन्द आ रहा था वैदिक धर्म के प्यारे श्रद्धालु ही जान सकते थे। २७ तारीख को यह गाड़ी ग्यारह बजे दिन के अजमेर पहुंची। पहले कार्यक्रम यह था कि दोनों गाड़ियां चार घण्टों के लिए अजमेर ठहरेंगी। किन्तु आर्यसमाज ब्यावर के निमन्त्रण पर अजमेर न ठहर सकीं। यात्री अजमेर में ऋषि दयानन्द वाटिका के दर्शन न कर सके। तो भी एक घण्टा अजमेर रुकीं। वहां के आर्य भाई बहिनों ने स्वागत आतिथ्य में किसी प्रकार कमी न रखी। फल-मिठाईयों से यात्रियों को तृप्त कर दिया। यात्री भी शामिल हो गए ब्यावर का आर्य समाज बहुत सुन्दर बना हुआ है। देखकर चित्त प्रसन्न हो गया। थोड़े विश्राम के बाद पंचायत घर में भोजन कराया गया। इतना बड़ा सम्मान तथा खानपान की सेवा जीवन तक याद रहेगी। हम केवल १५०० यात्री ही न थे वरन् और भी बहुत से सज्जन भोजन कर रहे थे। इस के पश्चात् हम स्टेशन पर आ गये।

ता० २८ को हम ने टंकारा पहुँचना था, किन्तु मार्ग में गाड़ी लेट हो गई। हम २८ ता० शाम के समय मौरवी पहुँचे। मौरवी से टंकारा तक छोटी लाईन जाती है, इस लिए हमें वहां पर स्पेशल को छोड़ देना पड़ा। हमारी गाड़ी जिस समय मौर्वी पहुँची तो स्टेशन पर महात्मा आनन्द स्वामी जी, पं० आनन्द प्रिय जी मन्त्री तथा श्री दीवान चन्द जी आर्य कार्यकर्ता प्रधान दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा आदि बहुत से महानुभाव पधारे हुए थे। श्रीयुत रामगोपाल जी शाल वाले मन्त्री सार्वदेशिक सभा तो हमारे साथ ही थे। बड़ौदा कन्या गुरुकुल की लड़कियों का बैंड भी स्टेशन पर मौजूद था। मौरवी में रात को हैं यात्रियों का शानदार जलूस निकाला गया। आगे-आगे सुन्दर बैंड था। पीछे सजी हुई बग्घी में राजकुमार मौरवी, महात्मा आनन्द स्वामी जी, श्री रामगोपाल जी मन्त्री और ज्ञानी पिण्डीदास जी अमृतसर बैठे थे। बाद में सारे लोग खूब गाते-बजाते लोग चल रहे थे नगर से घूमते-घूमते आर्यसमाज मन्दिर में पहुंचे। मौरवी के राजकुमार भी बड़े ही श्रद्धालु हैं। उन्होंने ही टंकारा का राजमहल आर्यसमाज को दिया है। इसका मूल्य डेढ़ लाख रुपया श्री नान जी भाई कालीदास जी पोरबन्दर ने देकर ट्रस्ट को दान दे दिया है। रात को हम सब यात्री बसों में टंकारा पहुंचे। यात्री अधिक होने के कारण रात के १२ बजे तक सारे यात्री टंकारा पहुंच सके। इस प्रकार टंकारा तक पहुंचने का कार्य तो भली भांति समाप्त हो गया। क्रमशः

...S स्कूल जालन्धर

...परीक्षा का शानदार परीक्षा परिणाम

४१० छात्र इस वर्ष परीक्षा में बैठे जिन में २७६ छात्र उत्तीर्ण हुए। पास परसंटेज ६७.४ रही जबकि यूनीवर्सिटी की ४२.८६ रही।

पंजाब की सभी संस्थाओं से अधिक छात्रों ने मैरिट लिस्ट प्राप्त की। २५ छात्र मैरिट लिस्ट में आए। १४ छात्र वृत्तियां प्राप्त होने की आशा है।

रमेश चन्द्र महाजन १५२५ नम्बर लेकर ... में चौथे दर्जे पर रहा, सुधीर रत्न कोहली १५२२ नम्बर लेकर छटे दर्जे पर रहा। विजय कुमार कपूर १४६६ नम्बर लेकर नौवें दर्जे पर रहा और हरजीत सिंह होथी १४६२ नम्बर लेकर दसवें दर्जे पर रहा।

नोट—(१) राज्यभर के पहले दस स्थानों में से चार स्थान इस स्कूल के उपरोक्त छात्रों ने प्राप्त किए।

(२) जालन्धर के लोकल स्कूलों में १७ छात्र वृत्तियों में से १४ हमारे स्कूल को मिलने की पूर्ण आशा है।

इस परीक्षा परिणाम के शानदार होने का सेहरा प्रिंसीपल श्री प्यारे लाल जी बेरी एम० ए०, बी० टी० तथा उनके परिश्रमी अध्यापक वर्ग के सिर पर ही है। आर्य जगत की ओर से इस सफलता पर प्रिंसीपल महोदय तथा उनके स्टाफ को बहुत २ बधाई हो।

मुद्रक व प्रकाशक श्री सन्तोषराज जी आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर द्वारा वीर मिलाप प्रैस, मिलाप रोड जालन्धर से मुद्रित तथा आर्यजगत कार्यालय महात्मा हंसराज भवन निकट कचहरी जालन्धर शहर से प्रकाशित मालिक—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर



टैलीफोन नं० ३०४७ [आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधिसभा पंजाब जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd. No. P. 121

एक प्रति का मूल्य १३ नये पैसे 27-7-65 वार्षिक मूल्य ६ रुपये

वर्ष २५ अंक ३१) १० श्रावण २०२२ रविवार—दयानन्दाब्द १४१– १ अगस्त १९६५ (तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

वेद सूक्तय:

वेद की वीर भावनाएं

अति धावताऽतिसरा:

हे वीरो! बढ़ने अतिसरा—आप आगे वाले हो आपका पग सदा युद्ध क्षेत्र में आगे ही आगे रहता है। अग्रगामी दल के धाक हो पीछे हटने का नाम ही नहीं लेते। इसलिए अति धावत—खूब दौड़ो। राष्ट्र पर आक्रमण करने वाले शत्रुओं के पीछे खूब दौड़ो।

इन्द्रस्य वचसा हत

सुनो! आपकी सेना का जो इन्द्र है—नेता व नायक बना है, जिस के अनुशासन में आप चल रहे हो। उस अपने इन्द्र रूपी नायक के वचसा—आदेश से, कहने से, अब वह प्रहार की आज्ञा देवें तो तुरन्त ही हत शत्रुओं पर टूट पड़ो, उसे मार कर ढेर कर दो।

अविं वृकं इव मथ्नीत

वीरो! शत्रु पर दया कृपा नहीं करनी। उसको तो वृक इव भेड़िया बन कर मथ्नीत-मथ डालो। शत्रु के लिए साक्षात भेड़िया बन जाओ। आये हुए दुश्मन पर भेड़िये के समान झपट कर उस को समाप्त कर दो।

अथर्ववेद से

वेदामृत

ओ३म् अग्ने रक्षाणो अंहसः प्रतिस्म देव रीषतः।
तपिष्ठै रजरो दह॥

साम० आग्नेय काण्डम्।

अर्थ:—हे अग्निमय नायक! आप (रक्षाणो) हमारी रक्षा करो (अंहसः) पाप और पापी से बचाओ (देव) हे दिव्य गुण वाले नेतः! (रीषतः) हिंसा कारी शत्रु से हमें बचाओ। आप तो (अजरः) कभी शक्ति से हीन नहीं होने, सदा शक्तिमय हो, इस लिए आप अपने इन (तपिष्ठैः) तेज तथा तपाने वाले शस्त्रों के साथ (दह) शत्रु को, वैरी को तपा डाल, भस्म कर दे। वैरी घातक को बचकर जाने न देना, उसे जला दे।

हे हमारे अग्निमय नेतः नायक! आप हमारे जीवनों, सम्पत्तियों तथा भूमि भवनों के रक्षक हैं। आपके होते हमें किस भय और किस बात की चिन्ता हो सकती है। जिसका नायक अग्निमय हो, अग्नि की ज्वाला के समान जिसकी शक्ति की ज्वाला चमकती हो, उस के होते भय हो भी किस से? इस लिए हे नायक! हमें पाप और पापी से बचाता रह। हमारी सब प्रकार से रक्षा कर। जो हमें मारने आता है, हमारी भूमि पर आक्रमण करने आता है या हमारी सम्पत्ति को लूटने आता है, उसे अग्नि बनकर अपने इन तेज अग्नि-बाणों से भस्म कर डाल। जीवित बचकर मत जाने दे। धर्म, देश, समाज तथा मनुष्यता के मारक को बस अपनी अग्नि ज्वाला से भस्म ही कर डाल, राख बना दे। —सं.

हे सर्व रक्षक! अपनी प्रजा में शौर्य, वीरता, उत्साह भर दो जिस से, हमारे देश पर आक्रमण करने वाले आततायियों का नाश करने में समर्थ हो सकें जिस से देश की स्वतन्त्रता चिरकाल तक स्थिर रहे। प्रभो! हमारी मनोकामना पूर्ण करो।

ऋषि दर्शन

त्रिविधं सर्व जगत्

यह सारा जगत् तीन प्रकार का है। जितना भी विश्व का पसारा है। इस के तीन प्रकार, तीन भाग और तीन रूप हैं। जड़ हो या चेतन भूमि हो या द्युलोक—सब कुछ इन तीन रूपों में ही आ जाता है।

सर्वोत्कृष्टं प्रकृत्यादिकम्

उन तीन रूपों में जगत् का उत्कृष्ट प्रथम रूप या प्रकार प्रकृति आदि का है। जिसप्रकृति से यह सारा विश्व बनता है। पंच तत्वों से शरीर आदि की रचना होती है यह प्रथम उत्कृष्ट रूप है।

क्षुद्र कृमि कीटादिकं च

जगत् का दूसरा और निकृष्ट रूप या प्रकार इन छोटे २ कृमियों और कीट पतंग आदि का है। यह विश्व का प्रकार है। नाना प्रकार के छोटे २ कीट पतंग आदि इस का निकृष्ट रूप है।

भाष्य भूमिका

प्रधाता—श्री संतोषराज जी सम्पादक—त्रिलोक चन्द्र शास्त्री

दर्शन का स्वाध्याय—

जीवन का दर्शन

(ले०–डा० शंकरदास जी लारेंस रोड अमृतसर)

श्रीयुत डाक्टर शंकरदास जी दर्शनों के स्वाध्याय में बड़ी ही रुचि लेते हैं। गहरा सोचते व मनन करते हैं। अपने लिखे विचारों से आर्यजगत के प्रेमी स्वाध्यायशील पाठकों को भी समय २ पर कृतार्थ करते रहते हैं। तीन गुणों के विवेचन में लिखते हैं—स०

यदि तमोगुण न हो तो दिमाग और शरीर को विश्राम नहीं मिल सकता। नींद का आना इसी गुण पर ही निर्भर है। इस के अभाव से स्वास्थ्य बिगड़ जायेगा। रजोगुण के अभाव में मन बुद्धि और शरीर में गति ही नहीं रहेगी, ये बेकार हो जायेंगे। रहा सतोगुण जिस को इच्छा कहते हैं, इस के रहते हुए ही मनुष्य को सुख और ज्ञान का अभिमान उत्पन्न होकर बान्धा करता है। वस्तुतः इन तीनों गुणों में न कोई बड़ा है और न कोई अच्छा। इन का दुरुपयोग और सदुपयोग ही बुरे या अच्छे परिणाम उत्पन्न किया करता है। इन का युक्त प्रयोग न करना ही हानिकारक है।

गाढ़ निद्रा (सुषुप्ति) के समय यदि मन चिन्तन में लग जाये जो कि रजोगुण का धर्म है, तो निद्रा भंग हो जायेगी और यदि कर्तव्य पालन या सत्संग के समय जबकि सतोगुण की आवश्यकता है, तमोगुण के धर्म निद्रा, आलस्य, प्रमाद के वश में हो जाना मनुष्य की सब प्रकार को उन्नति शारीरिक, मानसिक और आत्मिक में तमोगुण बाधक सिद्ध होगा। तीनों गुणों का सदुपयोग यह है कि जब-जब जितना-जितना और जिस-जिस गुण की आवश्यकता हो, तब-तब उतनी ही मात्रा में उस-उस गुण का प्रयोग किया जाए तो भोग और अपवर्ग अर्थात् संसार में अभ्युदय एवं मरने के पीछे अपवर्ग निश्रेयस दोनों की सिद्धि होगी।

गुणों की मात्रा को परस्पर ठीक रखने से संस्कार भी सुधर जाते हैं, क्योंकि गुणों की विषमता के कारण ही मनुष्य के भिन्न-भिन्न संस्कार और स्वभाव बनते हैं। उसकी भिन्न-भिन्न वासनाओं तथा संस्कारों के कारण ही गुणों में विषमता बढ़ती रहती है अर्थात् संस्कारों गुणों में परस्पर जनक व जन्य का सम्बध है। इस लिए सिद्धि के लिए अपने अन्दर सतोगुण की मात्राओं का सुधार करना चाहिए। इन गुणों का एक और विशेष धर्म है जिसको अन्योऽन्य-जनन-वृत्ति कहते हैं अर्थात् पदार्थों में एक दूसरे से उत्पन्न होने की योग्यता। इसके फल स्वरूप मन सहितदसों इन्द्रियों तथा पांच महाभूतों से आगे जो सृष्टि का विस्तार है, जो चराचर जगत् की रचना है। यह जननवृत्ति का परिणाम है। यदि यह वृत्ति न होती तो संसार में सब चमत्कार और आविष्कारों की सम्भावना ही समाप्त हो जाती। इन तीनों गुणों के विवेचन से सिद्ध होता है कि यह जगत् त्रिगुणात्मिक है और तीनों गुण सुख दुःख के अनुभवों में कारण हैं। दुःखों की अत्यन्त निवृत्ति के उपायों की जिज्ञासा में तीनों गुणोंका मनन हो।

वेद का आदेश—

किसी से कोई द्वेश न करे

श्री पं० देवप्रकाश जी आचार्य, आर्यसमाज उज्जैन

मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षन्मा
स्वसार मुत स्वसा
सम्यञ्चः सव्रता भूत्वा
वाचं वदतु भद्रया
अथर्व—३-३०-३

भाई-भाई से द्वेष न करे और बहिन-बहिन से द्वेष न रखे। एक मत और एक व्रत वाले होकर उत्तम रीति से सम भाषी हों।

वेद ने मनुष्य मात्र के लिए आज्ञा प्रदान की है कि संसार के सब प्राणी भाई-भाई और बहिनें सब बहिनें हैं, कोई आपस में द्वेष न करे मगर यीशु क्या कहते हैं।

यह न समझो कि मैं पृथ्वी पर मिलाप कराने आया हूं। मैं मिलाप कराने को नहीं तलवार चलाने आया हूं क्योंकि मैं तो इस लिये आया हूं कि मनुष्य को उस के पिता से, और बेटी को उस की मां से, और बहू को उस की सास से अलग कर दूं। मनुष्य के वैरी उस के घर के ही लोग होंगे

मती ३२-१०-३६

फिर लूका में और भी स्पष्ट कहा—

मैं ज़मीन पर आग डालने आया हूं और अगर लग चुकी होती तो मैं क्या ही खुश होता (क्यों न होता मन की भावना पूर्ण होती) लेकिन मुझे एक बपतस्मा लेना है, और जब तक वह न होले मैं क्या ही तंग रहूंगा। क्या तुम गुमान करते हो कि मैं ज़मीन पर सुलह कराने आया हूं। मैं तुम से कहता हूं नहीं, बल्कि जुदाई कराने आया हूं, क्योंकि अब से एक घर के पांच आदमी आपस में मुखालिफित (विरोध) रखेंगे। दो से तीन और तीन से दो, बाप बेटे से विरोध रखेगा और बेटा बाप से। मां बेटी से और बेटी मां से सास बहू से और बहू सास से

लूका १२—४९ से ५३

वाह! अपनी वाणी के धनी खूब चक्कर चलाया घर घर में जन-जन में कलह, द्वेष को भड़का दिया। अमन और शान्ति खतम कर दी तेरे इस मनसूबे की गवाई रोमन कैथुलिक और प्रोस्टैन्टों के युद्ध भली प्रकार से दे रहे हैं। कहां वेद ने कहा, था—अनुव्रतः पितुःपुत्रो मात्रा भवतु संमनाः जाया पत्ये मधुमती वाचं वदतु शान्तिवाम्॥ अथर्व० ३-३०-२

पुत्र पिता का आज्ञा कारी हो और माता के साथ अच्छा मन रखने वाला हो पत्नी पति के साथ मधुर और शान्दि प्रद भाषण करे।

पाटकगण! यीशु के वचनों को आप ने देख लिया, कितने विनाश कारी कुप्रव वाले हैं। प्रत्येक शासन ने दो फरीकों में द्वेष फैलाने वाले के लिये दण्ड रखा हुआ है मगर यह खुदा का पुत्र बनने का दावे दार खुदा के बन्दों में ही अशान्ति, कलह और द्वेष डालने का दावा कर रहा है, ऐसे महा पुरुष को, तो परमात्मा ही सुमति देवे।

सम्पादकीय—

आर्य जगत

वर्ष २५] रविवार २०२१, १ अगस्त १९६५ [अंक ३१

वेदः परमो धर्मः

नाना प्रकार के समय २ पर आने वाले भारतीय महापुरुषों ने अपने २ युग में अपने विचार से अलग २ बातों को परमधर्म मान कर जनता में उस का प्रचार किया। किसी ने अहिंसा को परमधर्म कहा तो दूसरे ने यज्ञ को। एक ने ज्ञान को तो अन्य ने कर्म को परमधर्म मान कर उसे प्रसारित किया। प्रायः सारे युगीन पुरुषों ने परमधर्म के विशाल शरीर के एक २ भाग को ही लेकर उसे जन जीवन के सामने पेश किया। उसी पर जोर दिया, उसी पर उसके शिष्यों ने लिखा तथा अपने २ मठ भी स्थापित कर दिए। किन्तु भारत में स्वामी दयानन्द ही एक ऐसा दिव्य पुरुष था जिस ने एक अंश को न लेकर पुरातन परम्परा के अनुरूप ही इस बात का उद्घोष किया कि परमधर्म तो केवल वेद ही हैं—वेद के सिवाय और किसी वस्तु या तत्व को भी परमधर्म के नाम से नहीं पुकारा जा सकता। परमो धर्मो वेदः—परमधर्म की कोटि में केवल वेद ही आते हैं। वेद का स्थान वेद को ही दिया जा सकता है। जीवन पर्यन्त इसी वेद रूपी परम धर्म के सिद्धांत का प्रचार किया। आर्यसमाज की स्थापना करके उसके नियमों में भी प्रत्येक आर्य नर-नारी के लिए वेद परमधर्म का पढ़ना पढ़ाना और सुनना सुनाना अनिवार्य कर दिया। यह तो हमारी न्यूनता है कि आज हम अपने इस परमधर्म को भूलते जा रहे हैं। प्रतिवर्ष श्रावणी का वेद सप्ताह आता है। हमें इसी वेद-स्वाध्याय के परम धर्म की याद दिला देता है। इस बार वेद सप्ताह १२ अगस्त से आरम्भ हो रहा है। वेद सप्ताह में रक्षा बन्धन तथा बाद में जन्माष्टमी का पुनीत-पर्व भी मिल जाता है। इस प्रकार वर्ष बाद आया हुआ यह परम धर्म वेद का सप्ताह हमारी आंखें खोल देता है। वर्ष बाद प्रत्येक आर्य भाई बहिन अपने मन से पूछे कि मैं ने वर्ष पर्यन्त इस वेद रूपी परमधर्म के लिए क्या किया है। वेद के निमित्त मैंने कितना समय दिया है, कितने मन्त्रों का स्वाध्याय किया तथा उनपर कितना मनन किया है। अपने परिवार में वेद के प्रति कितनी भावना भरी है। अपने धन में से कितना मैंने वेद प्रचार के लिए दिया है। ये प्रश्न हैं जिन पर प्रत्येक आर्य नर-नारी विचार करे। तभी ठीक है। जिस वेद रूपी परम धर्म के लिए ऋषि दयानन्द ने अपना सारा यौवन भरा जीवन बलिदान कर दिया। नाना प्रकार की यातनाएं सहीं, यहां तक कि विषपान तक कर के जीवन व भस्म तक भी दे गए। उस वेद के लिए मेरे तथा परिवार के जीवन में कितना प्रेम है। मैं वेद प्रचार के लिए क्या करता व देता हूं। वास्तव में इन प्रश्नों का उत्तर मन में आते ही दिल उदास हो जाता है। फिर भी यही कहना चाहते हैं कि यह वेद सप्ताह प्रत्येक समाज समारोह से मनाये। वेद कथाएं हों वेद-प्रचार के लिए धन से सभा को पूरा सहयोग देवें।

—त्रिलोकचन्द्र

अमृतसर शताब्दी समारोह

गत अप्रेल में जालन्धर में महात्मा हंसराज जन्म शताब्दी का समारोह धूम धाम से मनाया गया था। वह जन्म शती का प्रारम्भ था। १५ नवम्बर को उस की जालन्धर में ही शानदार रूप से पूर्णाहुति होगी। जालन्धर के बाद अमृतसर व हिसार में भी ऐसा समारोह मनाने के आयोजन किये जा रहे हैं। अमृतसर में उस स्वर्गीय देवता की जन्म शताब्दी को मनाने के लिए बड़ा ही उत्साह है। यहां पर इस महान् समारोह के लिए तैयारी आरम्भ कर दी गई है। इसके लिए प्रचार समिति का गठन हो गया है। आगामी अक्टूबर की तारीख १० से ले कर १७ तक शताब्दी का पूरा सप्ताह मनाया जाना निश्चित कर दिया गया है। बड़ी प्रसन्नता की बात है कि उन दिनों पूरा सप्ताह आर्यजगत के तपस्वी सन्त महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज ने शताब्दी के उपलक्ष्य में निरन्तर सात दिनों तक आर्यसमाज लारेंस रोड में कथा करने की स्वीकृति दे दी है। उन की प्रातः काल प्रतिदिन कथा होगी।

इस शताब्दी समारोह में बड़े २ आर्य नेताओं तथा प्रशिक्षा शास्त्रियों से पधार कर अपने प्रवचन देने की प्रार्थना की जा रही है। उन में माननीय श्री भक्त दर्शन जी उपशिक्षा मन्त्री भारत सरकार, श्री डा० गोवर्धन लाल दत्त उपकुलपति विक्रम यूनिवर्सिटी उज्जैन, श्री प्रकाश जी पूर्व गवर्नर बम्बई, श्री पं० प्रकाश वीर जी शास्त्री M. P. प्रिंसिपल सूर्यभानुजी वायस चांसलर पंजाब यूनिवर्सिटी, श्री डा. मेहरचन्द जी महाजन, प्रिंसिपल भगवान् दास जी अम्बाला आदि नेताओं से पधार कर अपने प्रभावपूर्ण भाषण देने का निवेदन कर दिया गया है। कई सज्जनों की स्वीकृति मिल चुकी है। उन दिनों प्रति रात को भिन्न-भिन्न स्थानों पर इन नेताओं के प्रवचन होंगे। ता. १६ अक्टूबर शनिवार को अमृतसर में बड़ा भारी जलूस निकलेगा जिस में नगर के अतिरिक्त बाहर गुरदासपुर, बटाला, पट्टी, धारीवाल, कादियां, आदि स्थानों से भी स्कूलों के बैंड मंडलियां शामिल होंगी। अमृतसर के अपने सारे स्कूल, कालेज, सारी आर्य समाजें एवं नगर व बाहर की जनता भी पूरा-पूरा सहयोग देगी। जलूस में आर्यसमाज की शक्ति तथा संगठन का परिचय मिलेगा। इसके अतिरिक्त आर्य समाज के अपने मान्य नेताओं को भी पधारने का सादर निमन्त्रण दिया जा रहा है। यह समारोह अमृतसर नगर के अनुरूप ही होगा।

इसके लिए निरन्तर बैठकें की जा रही हैं। उस रात की बैठक में लारेंसरोड में प्रधान श्री. मोहन लाल जी, श्री. डा. देवव्रत जी महाजन, मन्त्री वद्य विद्यासागर जी श्री. कैप्टन केशव चन्द जी, लोहगढ़ समाज के प्रधान ज्ञानी पिंडीदास जी, प्रिंसिपल सी. एल. अरोड़ा जी दयानन्द कालेज अमृतसर, लक्ष्मणसर समाज के प्रधान श्री. पं० रुद्रदत्त जी शर्मा, नवांकोट के मन्त्री श्री. मथुरादास जी तथा और भी कितने सज्जनों ने इस आयोजन के लिए सुन्दर निर्णय किए। समाचार पत्रों में भी सूचनाएं प्रकाशित की जा रही हैं। अमृतसर का यह शताब्दी समारोह दर्शनीय होगा। जनता अभी से तय्यार रहे।

—सं०

जननी जने तो भक्त जन
या दाता या शूर।
नहीं तो जननी बांझ रहे
काहे गवाए नूर ॥

निसन्देह यह भावपूर्ण दोहा किसी कवि की सहृदयता की उत्कटतम कृति है। जननी का लक्ष्य कीड़े मकौड़े पैदा करके देश की समस्या को उलझाना नहीं अपितु उसका लक्ष्य ऐसे पुत्रों को जन्म देना होना चाहिए जो भक्त दानी या शूर हों। अन्यथा उसे सन्तानोत्पत्ति की कष्टमय भट्टी में तप कर ब्रह्मचर्य का नूर गंवाने की कोई आवश्यकता नहीं। इस से उत्तम तो यही है कि वह बांझ ही रहे। कितनी मार्मिक सद्भावना है। जननी का नूर कोई साधारण सम्पत्ति नहीं यह तो देश का नूर है। यदि इस नूर को खोकर वह देश के नूर को रक्षा करने वाले लालों को जन्म देना है तो समझो खोने में भी पाना है अन्यथा वह घाटे में रहेगी। जैसे बीज अपने को गला कर वृक्ष आकृति रूप रंग, फल-फूल प्रदान करता है। ठीक इसी प्रकार माता अपने नूर से सन्तान के नूर का निर्माण करती है 'अङ्गादङ्गात् संभवति हृदयादधिजायसे'। वे जननियां ही थीं जिन्होंने उच्च-कोटि के भक्तों, दानियों तथा योद्धाओं को जन्म दिया। वास्तव में सफल जननीत्व उन्हीं का था या है। फिर देश भक्तों को जन्म देने वाली जननियां स्वनामधन्या क्यों न कही जाएं? क्योंकि देश भक्त के जीवन में कवि प्रोक्त तीनों गुण उत्तम पुत्रों के पाए जाते हैं। वह भक्त भी है, शूर भी और दाता भी। उसकी भक्ति का क्षेत्र उसका देश है। उसके लिए वह सब प्रकार की साधनाएं साधता है, तप तपता है। सर्वस्व बलिदान के इस यज्ञ में अपने एक-एक अवयव की आहुति दे डालता है तभी तो कहा है—

नारी स्तम्भ—

लोकमान्य तिलक-दिवस पर श्रद्धांजलि

कु० सुशीला आर्या एम० ए० कन्या गुरुकुल, नरेला

सूरा सोई सहारिये,
लड़े धर्म के हेत।
पुरजा २ कटि मरे,
तऊ न छाड़ें खेत ॥

शरीर और जीवन दान के समक्ष धनादि पदार्थों का दान सर्वथा तुच्छ तथा महत्वहीन है। इसलिए बन्दा वैरागी व वीर भक्त सिंह ला० लाजपतराय व लोकमान्य तिलक से बढ़ कर दानी हम किसे मानें? शेष रही शूरता। जीवन बलिदान से बढ़ कर शूरता की क्या परिभाषा होगी? युद्ध में एक बारगी सिर पर कफन बांध कर कट मरना भी शूरता है तिल २ कर अनेक कष्ट सहते हुए जीवन-भर उच्च लक्ष्य की सिद्धि हेतु अड़े रहना भी उससे कम नहीं। इस प्रकार देश भक्त में भक्ति दान तथा शौर्य का त्रिवेणी-सगम लक्षित होता है।

ऐसे महापुरुष थे लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक जिन्हें जन्म देकर जननी गौरवान्वित हो सकी थी। जिनका जीवन और मृत्यु देश के लिए प्रमाणित हुए। शौर्य और देशभक्ति उन में कूट-कूट कर भरी थी। वे स्वराज्य के मन्त्रदाता थे। 'स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है' इस मूलमन्त्र की उद्घोषणा उन्होंने बल पूर्वक की। बाल लाला और पाल का जोत्रिक स्वतन्त्रता संग्राम की रीढ़ की हड्डी माना जाता है उसमें से एक पुण्य श्लोक आप हैं। आज तिलक-दिवस के पवित्र अवसर पर हमें कुछ दायित्वों का अनुभव करना है। तिलक भारत के मस्तक के तिलक थे ऐसे अमिट जिसे काल का कराल कर कभी पोंछ नहीं सका। वे आज भी भारत के मस्तक पर अक्षय कीर्ति के रूप में विराजमान हैं। स्वराज्य भवन की नींव में पत्थर बनने वाले इस सेनानी के प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि केवल इस रूप में हो सकती है कि हम उनके सन्देश और आदेश पर विचार करें। लोकमान्य ने हमें कुछ भी दे कर स्वराज्य प्राप्त करने की स्फूर्तिदायक प्रेरणा दी। जैसे प्राण धारण करना प्राणी का जन्म सिद्ध अधिकार है उसी प्रकार स्वराज्य भी। उन्हीं महानुभावों के तप त्याग से स्वराज्य तो हमें मिला किन्तु आज इस की रक्षा का जटिल प्रश्न हमारे समक्ष है। जहां स्वराज्य प्राप्त करना हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है इसकी रक्षा करना हमारा मरण पर्यन्त कर्त्तव्य है। साथ ही स्वराज्य को पूर्णता की ओर अग्रसर करना भी। इन्हीं दो दायित्वों का निर्वाह करने पर विचार की दृष्टि से हमें तिलक जी का पुण्य स्मरण करना चाहिए। अप्राप्त की प्राप्ति और प्राप्त की रक्षा तथा रक्षित की वृद्धि यही योगक्षेम का लक्ष्य है जिस के लिए वेद में प्रार्थना की गई है 'योगक्षेमो नः कल्पताम्'। एक ओर तो हमारा स्वराज्य अपूर्ण है। क्योंकि अपनी भाषा, संस्कृति, विचार पद्धति, विकास अभीष्ट रूप से नहीं हो रहा है। इस दिशा में प्रयत्न करना स्वराज्य के उस अंश की पूर्ति तुल्य होगा जो अभी अनुपलब्ध है। दूसरी ओर स्वराज्य की रक्षा का प्रश्न है क्योंकि किसी वस्तु को पा कर खो देना न पाने से भी बदतर है। आज हमारी स्वर्ग भूमि पर चतुर्दिक शत्रुओं की गृध्र दृष्टि लगी हुई है। हमारा स्वराज्य खतरे में है। युद्ध की सम्भावनाओं का टल जाना आशाजनक भविष्य का लक्षण नहीं। कुछ दे कर कुछ लेकर कुछ खोकर पुनः मित्रता का हाथ बढ़ाना प्रपंच मात्र है। आज तो हमें कटिबद्ध होना चाहिए कि जो हमारा है उसकी जी जान से रक्षा करेंगे। स्वराज्य की प्राप्ति के लिए क्या असख्य मूल्यवान जीवन नहीं दिए गए थे। फिर इसकी रक्षा में इस मूल्यको चुकानेसे हिचकिचाहट कैसी? इन बातों पर गम्भीररूप से विचार करना देश के प्रत्येक नागरिक का कर्त्तव्य है। देवियों और माताओं का कर्त्तव्य इसे भी कुछ विशिष्ट है यह है आपको स्वराज्य की रक्षा के लिए उपयुक्त सन्तान को जन्म देना। यदि किसी परिस्थिति वश ऐसा सम्भव नहीं तो कम से कम वे देश का नूर लुटाने और भूमि का भार बढ़ाने से बचें। तिलक दिवस के अवसर पर देशवासियों से हमारी यही प्रार्थना है।

डी.ए.वी. कालेज अम्बाला को दान

आर्य समाज के क्रान्तिकारी तथा निजामी सरकार के अत्याचारों के जीवित शहीद श्री अशोक कुमार शोलापुर ने डी. ए. वी कालेज अम्बाला नगर के लिए, आर्य समाज पत्रिकाओं का एक वर्ष का व्यय, दान रूप में दिया है। अगर अन्य आर्य समाजी नेता, इस मार्ग दर्शन से लाभ उठावें तो वहां आर्य संस्थाओं की सहायता होगी, जहां आर्य समाज की पत्रिकाओं को सहायता प्राप्त होगी। आजकल श्री अशोक कुमार जी आर्य समाज शोलापुर के प्रधान हैं। उन का सारा समय धन, तथा परिश्रम, शिक्षा में आर्य समाज प्रचार पर लग रहा है। उन्होंने दो मास हुए आर्य समाज उदगीर तथा भाई श्याम लाल स्मारक स्कूल के लिए पांच हजार की धन राशि, एक अनोखे गुप्त रूप में दी थी।

भगवान दास प्रिन्सिपल

उपशताब्दी-समाचार

ले० श्री सत्यदेव जी विद्यालंकार मंत्री सभा

आर्य जगत के इस अंक में पं० त्रिलोकचन्द्र जी शास्त्री ने अमृतसर में होने वाली उप शताब्दी की तैयारियों का विस्तृत परिचय दिया है। इस से कुछ अनुभव हो सकता है कि श्री मोहनलाल जी, श्री विद्यासागर जी, कैप्टन केशव चन्द्र जी, श्री प्रिंसिपल चमनलाल जी अरोड़ा, ज्ञानी पिंडीदास जी, पं० रुद्रदत्त जी तथा डा० देवव्रत जी महाजन आदि अमृतसर के प्रतिष्ठित महानुभावों के प्रमुत्व से यह उपशताब्दी समारोह कितनी सफलता और धूमधाम से मनाया जाएगा। विशाल जलूस, देश के महान आर्य नेताओं के भाषण तथा सब से महत्वपूर्ण आध्यात्मिक वातावरण को उत्पन्न करने में समर्थ पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी जी की कथा इस समारोह के विशेष आकर्षण होंगे।

अक्तूबर १० से १७ तक मनाया जाने वाला यह समारोह जहां एक ओर अमृतसर की तथा जिले की समस्त आर्यसमाजों का शक्ति तथा संगठन का प्रदर्शन होगा वहां साथ ही आर्यजगत को प्रेरणा देने का एक महान साधन होगा और आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा को पुष्ट करने का एक विशेष प्रयत्न होगा, ऐसी आशा करनी चाहिए।

अमृतसर की आर्यसमाजों की इन तैयारियों से हिसार तथा हुशियारपुर में मनाई जाने वाली उपशताब्दी की समारोहों के कार्यकर्ताओं को भी विशेष प्रेरणा और उत्साह मिलेगा, इस में कोई सन्देह नहीं।

आर्य समाज विचार

२४-६-६५ को भार्गव कैम्प, जालन्धर की आर्यसमाज ने एक नया परीक्षण प्रारम्भ किया है। इसका उल्लेख इसलिए करना आवश्यक है क्योंकि यह एक नई दिशा की ओर प्रयत्न है और नई प्रेरणा देने वाली वस्तु है।

भार्गव-कैम्प आर्यसमाज के अधिकारियों ने अनुभव किया कि यज्ञ और संस्कारों के समय उन्हें कई बार उत्तम पुरोहित न मिलने पर कठिनता होती है। उन्होंने सोचा कि क्यों न स्वावलम्बन का आश्रय लिया जाय। बस्तियों की समाजों के साथ मिलकर उन्होंने एक योजना बनाई तथा श्री नन्दलाल जी वैदिक मिशनरी की अध्यक्षता और निर्देश में पुरोहित-शिक्षा का प्रारम्भ किया गया।

यह सुनने और पढ़ने की बात नहीं। बिना आंखों देखे इस बात का अनुमान नहीं किया जा सकता कि भार्गव कैम्प के अधिकारियों की प्रेरणा पर पहले ही दिन कितने स्त्री-पुरुषों ने इस कार्य में भाग लिया। प्रारम्भ शुद्ध-मंत्रोच्चारण स्त्री-शिक्षा से किया है। आगे क्रमशः यज्ञ करने का ढंग तथा मुख्य-मुख्य संस्कारों के कराने की विधि का प्रशिक्षण किया जाएगा।

श्री नन्दलाल जी वैदिक मिशनरी बस्तियों तथा भार्गव कैम्प की शृंखला वद्ध समाजों के मूल प्रेरणा स्रोत हैं। जिन आर्य भाइयों को शहरों की मुख्य समाजों के साप्ताहिक सत्संगों में थोड़ी उपस्थिति देखकर निराशा हुई हो, वे एक बार भार्गव कैम्प तथा बस्ती बवाखेल तथा बस्ती दानिशमंदा की नई बनी आर्यसमाजों के साप्ताहिक सत्संगों को देखने का कष्ट अवश्य करें। उन्हें पता लगेगा कि इस युग के महान् आचार्य ऋषि दयानन्द का सन्देश उर्वरा-भूमि को प्राप्त कर कितना पुष्पित और पल्लवित हो सकता है।—

स्वर्गीय महात्मा देवीचन्द जी के प्रति श्रद्धा के फूल

(श्री बूटाराम जी मन्त्री ज़िला वेद प्रचारिणी सभा होशियारपुर)

पूज्य महात्मा देवीचन्द जी एम० ए० के निधन से समस्त आर्य सामाजिक जगत को निस्संदेह एक बहुत बड़ा धक्का लगा है। होशियारपुर ज़िला की आर्य संस्थाओं (स्कूलों, कालिजों और कन्या पाठशालाओं आदि) के अतिरिक्त उनके द्वारा स्थापित तथा संचालित अन्य संस्थाओं (अखिल भारतीय दयानन्द साल्वेशन मिशन तथा ज़िला वेद प्रचारिणी सभा) को तो विशेषतया ऐसी क्षति पहुंची है जिसकी पूर्ति कठिन ही नहीं अपितु असम्भव दिखाई देती है।

महात्मा देवीचन्द जी का सारा जीवन ही निस्वार्थ सेवा में बीता। उन्होंने लगभग ५० वर्ष तक निरन्तर एक पाई पैसा लिए लिए बिना हिन्दू आर्य जाति की अनथक व परिश्रम व लगन से सेवा की। उनको अन्तिम श्वास तक भी धर्म-प्रचार कार्यों की तरक्की का ध्यान रहा। लाखों रुपए लगभग १५ लाख) दान में एकत्रित किये, परन्तु अपने लिए एक पाई तक नहीं ली बल्कि अपने पास से साधु सैंकड़ों हज़ारों का दान किया। ऐसा फकीर तो विरक्त सा-सन्यासियों में भी मिलना कठिन है। वह भी कम से कम भिक्षा में प्राप्त अन्न आदि तो ग्रहण करते ही हैं किन्तु देवीचन्द जी ने ऐसा भी नहीं किया।

उन्होंने पुराने वक्तों की उच्चतम डिग्री (एम०ए०) प्राप्त की। उसका मूल्य उघारने की बजाय अपनी योग्यता और जीवनको देश और विशेष कर महर्षि दयानन्द के मिशन को आगे बढ़ाने के लिए अर्पित कर दिया आजीवन उस व्रत को पूर्ण रूप से निभा कर दिखा दिया। ऐसे सर्वस्व त्यागी महात्मा का नाम व काम महात्मा हंस राज जीकी तरह सदा स्मरणीय रहेगा।

होशियार पुर जिले की हिन्दू आर्य जनता तो उनकी विशेष ऋणी है और सदा रहेगी कि जिसकी सेवा को उन्होंने अपना ध्येय और लक्ष्य बना रखा था और इतना कुछ कर दिखाया। यह उन्हीं के अनथक परिश्रम का परिणाम है कि होशियार पुर का ज़िला सारे भारत वर्ष में शिक्षा के क्षेत्र में पहला या दूसरा दर्जा रखता है। इस ज़िले में और साथ लगने वाले अन्य ज़िलों में उन्होंने लगभग ७५ स्कूल और पाठशालाएं आदि खोले जिन में से बहुत से आज भी चल रहे हैं। ज़िले में में आर्य समाजों का विस्तार ३५ से उठा कर ८० तक पहुंचा दिया।

उनका जीवन जहां सेवा की दृष्टि से अनुपम है वहां ईश्वर विश्वास वेदों में श्रद्धा, महर्षि दयानन्द में भक्ति और हिन्दू आर्य जाति के हितों की हर प्रकार से रक्षा करना उनके जीवन का एक विशेष अंग बन चुका था।

महात्मा देवीचन्द जी की वेदों में जो अटूट आस्था और श्रद्धा थी वह अंग्रेजी पढ़े सज्जनों में बहुत कम देखी जाती है। इस दृष्टि से तो वह अपनी मिसाल आप ही हैं। उन्होंने चारों वेदों का अंग्रेजी में अनुवाद करना अपना ध्येय बना रखा था। वह यजुर्वेद व सामवेद का अनुवाद पूरा करके छपवा गये हैं और जनता के हाथों में पहुंच चुका है। अथर्ववेद का अनुवाद भी वह कर गए हैं पर अभी छपना बाकी है। इस प्रकार उनका नाम वेदों के साथ जुड़ चुका है और यह निर्विवाद है कि जिसका नाम ईश्वरीय ज्ञान वेद के साथ जुड़ गया वह सदा के लिये अमर हो गया। क्योंकि वेद सदा रहने वाला ज्ञान-भण्डार है। जिस व्यक्ति का नाम वेद से जुड़ जाये उसके भाग्य का क्या कहना, वह स्वतः ही अमर हो गया। हमारी पीढ़ी को महान् आत्माओं में महात्मा देवीचन्द जी एक अद्वितीय अनुपम और अमर पद पा गए हैं। उनकी यादगार मनाने का एक यह भी बड़ा अच्छा ढंग होगा कि जो उनका अंग्रेजी में किया हुआ वेद अनुवाद छपने से रह गया है वह छपवाया जाए और जो अनुवाद करना बाकी रह गया है उसे पूरा किया जाए अंत में मैं उनका एक तुच्छ सहकार्यकर्ता होने और ज़िला वेद प्रचारिणी सभा का मन्त्री होने के नाते यह निवेदन करना अपना कर्तव्य समझता हूं कि महात्मा देवीचन्द जी की यह सभा अन्तिम कृति है और जैसे सब से छोटी सन्तान सब से प्रिय होती है ऐसे ही ज़िले के ग्रामों में वैदिक धर्म के प्रचार का कार्य उनको अत्यन्त प्रिय था। जिन सज्जनों और संस्थाओं से उनका सम्पर्क रहा है वह सभी इस बात को भली भांति जानते हैं। उनका साया हमारे सिर पर से उठ जाने से यह सभा अनाथ हो गयी है। जहां इसे चालू रखना लोक हित में बड़ी श्रेष्ठ बात होगी वहां उनकी यादगार का एक यह भी बड़ा उत्तम साधन होगा। मैं ज़िला निवासियों से विशेषतया प्रार्थना करता हूं कि वह इस संदर्भ में अपने कर्तव्य का पालन करते हुए इस सभा को अपना सहयोग और सहायता प्रदान करते रहें।

—बूटाराम मन्त्री

म० देवीचन्द जी के निधन पर

निम्न समाजों के शोक प्रस्ताव प्राप्त हुए जिनमें देवीचन्द जी के गुणों पर प्रकाश डालते हुए उनकी आत्मा की शांति तथा परिवार को धैर्य प्रदान करने की प्रभु से प्रार्थना की गई।

ज़िला वेद प्रचारिणी सभा होशियारपुर, आर्य समाज वज़ीर बाग श्रीनगर, आर्य समाज हिसार, आल इन्डिया महेष महा सभा दीनानगर, रंभौली (करनाल)

आर्यसमाज पुलबंगश देहली

पूज्य महात्मा आनन्द भिक्षु जी महाराज की २८-७-६५ से १-८-६५ तक यज्ञ और वेद कथा होगी रात के ८ से १० बजे तक महात्मा जी वेद कथा और पं. आशा नन्द जी मैजिक लालटैन द्वारा धर्म प्रचार करेंगे। सायं ४ से ५ तक पारिवारिक सत्संग होगा।

—सुदेशकुमार मन्त्री समाज

डी.ए.वी.हाई स्कूल हरियाणा का शानदार परीक्षापरिणाम

मिडिल परीक्षा में रामपाल ज़िले में १४ वे नंबर पर और नीलम रानी कपिल छात्राओं में चौथे नंबर पर रही। इस स्कूल ने २ छात्र वृत्तियां मिडिल में प्राप्त कीं। दसवीं का परिणाम ८५ प्रतिशत रहा। गोवर्धन लाल ६६४ नंबर ले कर प्रथम रहा।

भीमसैन कपिल
हैड मास्टर

टंकारा की यात्रा—नं. ३
गुजरात प्रान्त में आर्यसमाज का प्रचार

(गतांक से आगे)

(श्री ला० मथुरादास जी मन्त्री आर्यसमाज नवांकोट अमृतसर)

प्रातःकाल जलसा देखा। सामवेद पारायण यज्ञ हो रहा था। यज्ञ मंडप बड़ा सुन्दर बना हुआ था। पिंडाल भी काफी बड़ा था। इस वर्ष टंकारा का ऋषिमेला विशेष था। यद्यपि यह प्रतिवर्ष लगता है परन्तु इस वर्ष यात्री महल में तो ठहरे ही थे, सेहन में भी लोग ठहरे हुए थे। टंकारा ट्रस्ट वालों ने काफी प्रबन्ध कर रखा था। फिर भी यात्री अधिक होने के कारण थोड़ा बहुत कष्ट तो होता ही है। किन्तु श्रद्धालु प्रेमियों ने इस कष्ट को तनिक भी अनुभव नहीं किया। यात्रियों में कैप्टन तुलसीदास जी नेत्र विशेषज्ञ चंडीगढ़, डा० सन्तराम ढल, एक यू० पी० के सैशनजज जी, कविराज हरनाम दास जी देहली भी थे। इस प्रकार बड़े २ सज्जन पधारे हुए थे। श्री वीरेन्द्र जी दैनिक प्रताप तो सारी यात्रा में हमारे साथ रहे। टंकारा में प्रथम मार्च को एक विशाल जलूस निकाला गया। यह बहुत ही लम्बा था। लोगों में बड़ा जोश तथा उत्साह था। भजन मण्डियां बड़ी संख्या में थीं। गीत गाये जा रहे थे—'यही है वह नगरी जहां मूल जाया' 'यही हैं वह गलियां जहां मूल खेले' इस प्रकार के गीत गाते बजाते वहां पहुंचे, जहां ऋषि दयानन्द का जन्म हुआ था। वह मकान एक सज्जन ने खरीद कर बना लिया है ट्रस्ट के अधिकारियों ने उस मकान को खरीदना चाहा परन्तु वह सज्जन किसी भी मूल्य पर देने को तय्यार नहीं हैं। उनका कहना है कि पहले मेरी आर्थिक अवस्था कमजोर थी अब से मैंने इसे लिया है अब मैं धनवान हूं। इस कारण मैं इसे दे नहीं सकता। ट्रस्ट की तरफ से वहां आयुर्वेदिक फार्मेसी, उपदेशक विद्यालय, पुस्तकालय आदि अनेक काम चल रहे हैं तथा इसे और आगे बढ़ाने का काम जारी है। टंकारा ट्रस्ट की ओर से ऋषि लंगर का प्रबन्ध भी अच्छा था। दोनों प्रकार का गुजराती और उत्तर भारत का भोजन मिलता था। उस मकान को देखते हुए जलूस पिण्डाल में आकर समाप्त हुआ। ऋषि दयानन्द को जिस शिवमन्दिर में बोध हुआ था वह भी देखा। किन्तु अब इस का कोई महत्व नहीं। वह अब पुरानी हालत में है। वहां पर पुजारी बैठा था। उस ने बाहर दरवाजा पर सफेदी करा कर लिखवाया हुआ था—'दयानन्द बोधालय' सारा दिन जलसा होता रहा। जलसे में पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी जी, महात्मा आनन्द भिक्षु जी, श्री राम गोपाल जी शाल वाले, श्री वीरेन्द्र जी प्रताप, स्वामी समर्पणानन्द जी आदि के बड़े प्रभाव शाली भाषण हुए। वहां पर अपील हुई जिस में लग भग ८० हजार के लगभग रुपये इकट्ठे हो गए। महात्मा आनन्द स्वामी जी ने अपना पैन दान दिया और कहा कि इस से मैंने कितनी ही पुस्तकें लिखी हैं। इसे नीलाम किया जाए। इसकी बोली हुई और १७०० रुपए पर रुक गई। महात्मा जी ने कहा कि मैं इतने पर बेचने को तैयार नहीं हूं। इस पर बोली आगे बढ़ी और श्री भगवान देव जी आर्य बम्बई वालों ने दो हजार रुपए में खरीद लिया। टंकारा का वह महल भी देखा जो कि श्री नान जी भाई कालीदास जी ने डेढ़ लाख रुपए में खरीद कर ट्रस्ट को दान दे दिया है। उन्होंने २५ हजार रुपए लगाकर द्वार पर घंटाघर भी बनवा दिया है। महल बहुत ही उत्तम बना हुआ है। कहा जाता है कि महाराजा का इस पर दस लाख रुपया व्यय हुआ था। यह नदी के किनारे है। टंकारा यद्यपि छोटा-सा ग्राम है तथापि आर्यसमाज के इस दयानन्द के ट्रस्ट कारण अब अच्छी रौनक है। वहां में एक देवी ने गत कि वर्षों में वहां आर्यसमाज मन्दिर नहीं बन सका। यह पता लगा था स्वामी जी वंश पर आर्यसमाज स्थापित किया था। दैववश उस देवी का कुछ मास हुए स्वर्गवास हो गया। इस लिए समाज निर्माण का काम वहीं रुक गया है।

हमारी गाड़ी चूंकि रात को मौरवी से आगे चली जानी थी, इस कारण हम सब वहां से दो बजे ही मौरवी के लिए चल पड़े। टंकारा मौरवी से बारह मील है, किन्तु दो गाड़ियां ही सारे दिन में आती जाती हैं और बसें भी अधिक नहीं चलतीं। उस दिन सरकार ने अधिक बसें मंगवाईं, फिर भी शाम तक यात्री वापस मौरवी आते रहे। एक स्पेशल गाड़ी ने तो वापस देहली आना था और दूसरी गाड़ी का कार्यक्रम गुजरात के विविध नगरों में घूम कर आने का था। हमारी यह दूसरी गाड़ी थी। इसमें यात्रियों को कुछ कष्ट हुआ। क्योंकि आर्यसमाज की यह प्रथम स्पेशल यात्रा गाड़ी थी, जो कि देहली वालों (श्री मलिक राम लाल जी) ने पुरुषार्थ करके चलवाई थी। प्रथम बार यह परीक्षण किया गया था। इस लिए आवश्यक था कि कुछ न्यूनताएं सामने आएं और वे आईं भी। सब से अधिक जो कष्टदायक बात थी, वह थी कि जितनी सीटों की गाड़ी स्पेशल इस को मिली थी, सवारियें उस से कहीं अधिक थीं। इसी कारण से कष्ट अनुभव हो रहा था। प्रत्येक की यह इच्छा थी कि हम ने उसी में यात्रा करनी है और फिर सारा दिन नगरों की सैर करनी है तथा रात को गाड़ी में आराम करना है। इस प्रकार यह तकलीफ थी। इस कारण तथा अन्य कई बातों से कई यात्री सज्जन मौरवी रह गए, आगे उस ट्रेन में न जा सके।

रात को हमारी स्पेशल मौरवी से चली। सवेरे हम ११ बजे जाम नगर पहुंच गए। जामनगर के आर्यसमाजी सज्जन बड़ी संख्या में स्टेशन पर आये हुए थे। वैदिक धर्म, ऋषि दयानन्द की जय, आर्यसमाज अमर रहे के गगन-भेदी घोषों से हम सब उनके साथ जलूस के रूप में सारे नगर में घूमते हुए तीन घण्टे में आर्यसमाज मन्दिर में पहुंचे। वहां स्वागत सामान हुआ। खाना खाया।

क्रमशः

पं. त्रिलोकचन्द्र जी शास्त्री बी. ए.

सम्पादक आर्य जगत को

हार्दिक बधाई

आर्य परिवार को यह शुभ समाचार सुन कर अति प्रसन्नता होगी कि शास्त्री जी के सुपुत्र श्री० दयानंद जी आर्य, एम० ए० की परीक्षा में ५०० अंक लेकर प्रथम श्रेणी प्राप्त की है। इस सफलता का श्रेय श्री शास्त्री जी को है। आर्य जगत की ओर से तथा सभा के प्रचारक मण्डल की ओर से इस सफलता पर शास्त्री जी को अनेकशः बधाई हो। राजपाल मन्त्री

प्रचारक मंडल A.P.R.

सभा जालन्धर

रजिस्टर्ड नं० पी० १२१

करनाल में वेद-प्रचार कार्य

अरावड़ी (जिला करनाल) निवासी श्री साधुराम जी के सुपुत्र श्री प्रेमचन्द्र जी के शुभ विवाह पर प्रादेशिक सभा की मंडली (ठा० दुर्गासिंह जी व नत्थुराम जी) ने भजनोपदेशों द्वारा प्रचार किया। तत्पश्चात् आर्यसमाज कुटैल में बरात के पहुंचने के बाद दो तीन दिन तक प्रचार का क्रम चलता रहा। इस अवसर पर ५१) रुपये वेद प्रचारार्थ प्राप्त हुए। ८से१० जौलाई तक रायसरण मौजरा में प्रचार हुआ। मार्ग व्यय समेत ३१/- सभा को प्राप्त हुए। ११ चलता रहा। श्री [illegible] श्री नारायणसिंह जी, चौ० बदलू सिंह जी आदि सज्जनों के पुरुषार्थ व लग्न से प्रचार सफल रहा। ५५/- मार्ग व्यय समेत वेद प्रचारार्थ प्राप्त हुए। १५ से १८ जौलाई तक डी० ए० वी गर्ल्ज कालिज करनाल में स्वामी आनन्द गिरि जी महाराज की वेद कथा होती रही। कथा से पूर्व ठा० दुर्गासिंह जी तूफान के १/२ घंटा पूर्व तक प्रतिदिन भजन होते रहे।

डा० गणेश दास
प्रधान
दयाल पुरा समाज

जालन्धर के आर्यसमाजी कार्यकर्ताओं को पार्टी

पं० नंद लाल जी वैदिक मिशनरी ने जालंधर के प्रसिद्ध कार्यकर्ताओं की सभा अपने मकान पर बुलाई जिस में ४० के लगभग सज्जनों ने भाग लिया।

सभा की प्रधानता श्री पं० सत्यदेव जी विद्यालंकार मन्त्री आर्य प्रादेशिक सभा ने की। सर्वप्रथम, स्वर्गगत आर्यनेताओं को श्रद्धांजलियां अर्पित की गई।

तत्पश्चात् जालन्धर नगर और बस्तियों में वेद प्रचार तथा पारिवारिक सत्संग चलाने के लिए १४ सज्जनों की समिति बनाई गई। अन्त में शान्ति पाठ के साथ कार्यवाई समाप्त की गई। आगन्तुकों का मिष्टान्न से सत्कार किया गया।

———

पूज्य माता मेला देवी जीका स्वर्गवास

समस्त आर्यजगत में यह समाचार बड़े शोक से सुना जाएगा कि पूज्य माता मेला देवी जी का २४ जुलाई को ५ बजे प्रातःकाल गोबिन्द वल्लभ पंथ हस्पताल देहली में स्वर्गवास हो गया। पूज्य माता जी प्रायः दो वर्ष से अर्धांग के दुःख से पीड़ित थीं। उनकी आयु देहांत के समय ७५ वर्ष की थी।

श्री यश जी तथा श्री रणवीर जी जैसे रत्नों की माता तथा महात्मा खुशहाल चन्द जी—पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी जी की धर्मपत्नी होने का इस पुण्य श्लोक देवी को सौभाग्य प्राप्त हुआ था। उसके द्वारा यह परिवार सब प्रकार से सुखी और सम्पन्न था।

इस शोकप्रद निधन पर समस्त आर्य जगत की ओर से हम परम प्रभु के चरणों में इस पुण्य आत्मा की सद्गति की प्रार्थना करते हैं तथा उनके परिवार को इस कठोर दुःख को सहन करने की शक्ति प्राप्त हो ऐसी याचना करते हैं।

सत्यदेव—मंत्री सभा

मुद्रक व प्रकाशक श्री सन्तोषराज जी आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर द्वारा वीर मिलाप प्रेस, मिलाप रोड जालन्धर से मुद्रित तथा जगत कार्यालय महात्मा हंसराज भवन निकट कचहरी जालन्धर शहर से प्रकाशित मालिक—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर



टेलीफोन नं० ३०४७ [आपनारा ... — पुत्रपत्र] Regd. No. P. 121

एक प्रति का मूल्य १३ नये पैसे — वार्षिक मूल्य ६ रुपये

वर्ष २५ अंक ३३। १७ श्रावण २०२२ रविवार—दयानन्दाब्द १४१— ८ अगस्त १९६५ (तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

वेद सूक्तय:

वेद की वीर भावना

अक्ष्यौ निविध्य हृदयं निविध्य

हे वीर सैनिको! जो और जितने भी शत्रु हैं, उनको अक्ष्यौ—दोनों आँखें निविध्य—बींध दो निकाल दो, फाड़ दो और उनके हृदय—दिल को निविध्य—चीर कर रख दे। वे घाती दया के पात्र नहीं हैं। राक्षसों पर कैसी दया?

जिह्वां नितृन्धि प्रदतो मृणीहि

और भी करना है कि उन हिंसक शत्रु रूप राक्षसों की जीभ को काट दो और दतः—उनके मुख के सारे दांत प्रमृणीहि—तोड़ डालो। जो भी राक्षस पिशाच बन कर जनजीवन राष्ट्र का घात करे उसको अंधा कर दो। मुखतोड़ दो।

पिशाचोऽस्य यतमोजघास

यतम :—जिस भी पिशाचः—राक्षस पिशाच ने जघास—राष्ट्र के किसी को भी दबा लिया है, मार डाला है, लूट लिया है। ऐसे काम करने वाला राक्षस ही तो होगा। जो हिंसा हत्या करता है वह राक्षस ही तो है। उस नरराक्षस को हे वीरवर!

अ थ र्व वे द

वे दा मृ त

प्रत्युष्टं रक्षः प्रत्युष्टा अरातयो निष्टप्तं रक्षो निष्टप्ता अरातयः। उर्वन्तरिक्ष-मन्वेमि॥

यजुर्वेद अध्याय १ मन्त्र ७

अर्थ—मैंने अपने बल से (प्रत्युष्टं) दग्ध कर दिया है (रक्षः) राक्षस को और (प्रत्युष्टाः) दग्ध कर डाले हैं सारे ही (अरातयः) शत्रु (निष्टप्तम्) पूरी तरह से दग्ध कर दिया है राक्षस तथा सारे शत्रुओं को (निष्टप्ताः) भस्म कर दिया है अब मैं (उरु) विशाल (अन्तरिक्षम्) अन्तरिक्ष में (अन्वेमि विहार कर रहा हूं। चिन्ता शून्य हो गया हूं। अब मुझे किसी भी राक्षस या शत्रु से भय नहीं है। सब को दग्ध कर चुका हूं।

भावार्थ—सारे लोग मेरे दिल की बात सुन लेवें। प्रभु ने मुझे इतना बल और सामर्थ्य प्रदान किया है कि उसके द्वारा मैंने प्रभु कृपा से जितने भी राक्षस हैं, जिन का काम देश में उत्पात मचा कर शान्ति को भग करना है। दूसरों की हत्या करके अपना पेट भरना है, और जितने भी अराति हैं, शत्रु हैं, कृपण कंजूस हैं। अपनी सम्पत्ति को भूमि में छिपा २ कर रखते हैं, बनावटी महंगाई पैदा करके धन कमा कर राष्ट्र को हानि पहुंचाते हैं। देश का खा पीकर उसकी हत्या करने में लगे रहते हैं। हर प्रकार से राष्ट्र के जीवन को कमजोर करने में लगे रहते हैं। उन सब राष्ट्र के घातियों को, वैरियों, शत्रुओं को, खून पीने वाले राक्षसों को मैंने सहन नहीं किया, क्षमा भी नहीं किया तथा उनको आजाद भी फिरने नहीं दिया। वरन ऐसे राक्षसों को चुन २ कर मैंने प्रभुदत्त बल शक्ति से पछाड़ कर उन सब को भस्म कर दिया है। अब मैं आनन्द में हूं। देश भी सुखी है—सं०

नेहरू जी ने कहा था

भारत के प्रधान मन्त्री स्वर्गीय पं. जवाहरलाल जी नेहरू अपनी प्रसिद्ध पुस्तक हिन्दुस्तान की कहानी में आर्यसमाज की महत्ता तथा उसके महान् मिशन के चहुंमुखी कार्यों की प्रशंसा करते हुए लिखते हैं—

उन्नीसवीं सदी के पिछले आधे हिस्से में एक बहुत बड़ा सुधार आंदोलन शुरू किया गया। इसके शुरू करने वाले स्वामी दयानन्द सरस्वती गुजरात के रहने वाले थे। यह सुधार आन्दोलन था आर्य-समाज का और इसकी पुकार थी कि—

वेदों की ओर चलो

इस प्रकार के, असलियत में, यह माने थे कि वेदों के समय के आर्य धर्म में बाद में जो कुछ बातें जुड़ गई थीं, उनको अलग कर दिया जाए।

अधिष्ठाता—श्री संतोषराज जी

सम्पादक—त्रिलोक चन्द्र शास्त्री

राष्ट्र का महत्वपूर्ण स्थान

(श्री प० दमोदर सातवलेकरजी पारडी जि० बलसाड़)

वेद मन्त्रों में 'राष्ट्र' का महत्व पूर्ण स्थान वर्णन किया है। वेद हमारे सब से आदिम ग्रन्थ हैं। उन में राष्ट्र की कल्पना नहीं है ऐसा कई विद्वान मानते हैं। उनके उस अवैदिक विचार के खण्डन के लिये हम इस लेख में बताना चाहते हैं कि वेदमें राष्ट्रकी कल्पना उत्तम रीति से प्रतिपादित हुई है। देखिये—

अहं राष्ट्री संगमनी वसूनां,
चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम्।
तां मा देवा व्यदधुः पुरुत्रा,
भूरिस्थात्रां भूर्यावेशयन्तीम् ॥
ऋग्वेद १०।१२५।३

१. अहं राष्ट्री—मैं राष्ट्र की एकत्रित हुई शक्ति हूं। मैं राष्ट्र की शक्ति हूं।

२. वसूनां संगमनी—धनों को देने वाली हूं। राष्ट्र शक्ति की उपासना करने से धन प्राप्त होते हैं। मानवों के सुखपूर्ण निवास होने के लिये धन आवश्यक हैं। राष्ट्र में धन न रहा तो मानवों का निवास सुखपूर्ण नहीं हो सकता।

३. चिकितुषी—ज्ञान की वृद्धि करने वाली मैं हूं। राष्ट्र में मैं ज्ञान का प्रचार करके सब मानवों को मैं ज्ञान सम्पन्न करती हूं। अर्थात ज्ञान ही मेरा स्वरूप है जो राष्ट्र को तेजस्वी बना देता है।

४. यज्ञियानां प्रथमा—पूजनीय वस्तुओं में मैं प्रथम पूजनीय हूं। विद्वत्पूजा, विद्वत्संगतिकरण और ज्ञान प्रसार मैं राष्ट्र में करती हूं। राष्ट्र में विद्वानों का आदर सत्कार होना चाहिये, उन ज्ञानियों के साथ मित्रता करके ज्ञान प्राप्त करना चाहिये और जो ज्ञान मिले उसका प्रसार करना चाहिये। ऐसा जो करते हैं उन में प्रथम स्थान में विराजमान होने का मान राष्ट्र शक्ति का है। यह राष्ट्रीय शक्ति सब को ध्यान में रखने योग्य है। इसकी विस्मृति कभी नहीं होनी चाहिये। सदा इस का स्मरण रख कर इस विषय का अपना कर्तव्य सदा करने के लिये हर एक को सदा तत्पर रहना चाहिये।

५. तां मा देवा पुरुत्रा व्यदधुः—उस मुझे देवों ने अनेक स्थानों पर धारण किया है। ज्ञानियों ने मुझ राष्ट्र शक्ति को अनेक स्थानों में देखा है। अनेक रीतियों से अनेक स्थानों में मैं रहती हूं यह ज्ञानियों ने जाना है। ज्ञानी लोग राष्ट्र शक्ति को राष्ट्र में अनेक स्थानों में देखते हैं और वहां उस शक्ति को प्राप्त करके विकसित करके धारण करते हैं। 'विद्वांसो हि देवाः' (श.प.ब्रा.) विद्वान जो होते हैं वे राष्ट्र के देव हैं। राष्ट्र में वे आदरणीय होते हैं। विद्वान अपने राष्ट्र की शक्ति कहां कैसी है यह देखते हैं और उसका उपयोग राष्ट्र के उत्कर्ष के कार्य के लिए करते हैं। ऐसा ही करना चाहिए और अपनी राष्ट्र शक्ति को विकसित करना चाहिए। राष्ट्र में ज्ञान शक्ति, शौर्य शक्ति, वाणिज्य शक्ति तथा कर्म शक्ति ऐसी शक्तियां होती हैं। इन सब शक्तियों को सुरक्षित रखकर योग्य राष्ट्र कार्य में लगाना चाहिए। और राष्ट्र शक्ति का विकास करना चाहिए।

६. भूरि-स्था-त्रां—यह राष्ट्र शक्ति अनेक स्थानोंमें रहती है और अनेक स्थानों में रहकर सब राष्ट्र का 'त्राण' अर्थात् रक्षण करती है। यह राष्ट्र का संजीवन है। इसीसे सब राष्ट्रका उत्तम प्रकार से उद्धार होता है। ज्ञान, वीरत्व, धन, कर्म शक्ति राष्ट्र में कितनी है और किस प्रकार विकसित हुई है यह देखकर ही राष्ट्र की विशेष योग्यता है अथवा कम योग्यता है यह निश्चित हो सकता है। मानवों में गुप्त शक्ति तो रहती ही है, पर उसका विकास राष्ट्रीय प्रयत्नों से कितना हुआ है यह देखना चाहिए। जहां मनुष्य हैं वहां अनेक शक्तियां होती ही हैं, पर उनका विकास और व्यवहार किस रिति से और कितना उस राष्ट्र में किया जाना चाहिए यह देखना चाहिए।

७. भूरि आवेशयन्तीं—बहुत आवेश उत्पन्न करने वाली राष्ट्र शक्ति होनी चाहिये। आवेश निर्माण करने का अर्थ उत्साह उत्पन्न करना है। मनुष्य में उत्साह रहा तो वह अपने राष्ट्र के उन्नत होने के कार्य में स्वयं कर तथा दूसरों से करा सकता है। उत्साह हीन मनुष्य में कितनी भी शक्ति हुई तो भी वह कार्य योग्य रीति से सफल और सुफल करने में समर्थ नहीं होती। अतः सर्वत्र आवेश की अत्यन्त आवश्यकता है।

यह मन्त्र राष्ट्र शक्ति का ज्ञान देने वाला है। यह राष्ट्र की शक्ति राष्ट्र में सब प्रकार का धन उत्पन्न करती है। धन केवल पैसा ही नहीं परन्तु जिस से मनुष्य धन्य होता है वह धन है। विद्या धन प्रथम ध्यान में रखने योग्य है। विद्या धन से सब राष्ट्र के सब जनों को युक्त करना चाहिये। दूसरा धन शौर्य, वीर्य, साहस, पराक्रम रूपी है। इस वीर धन से सब शत्रुओं को परास्त करना चाहिये और अपना स्वातन्त्र्य अबाधित रखना चाहिये। राष्ट्र का संरक्षण इसी से होता है। तीसरा धन द्रव्य है यह सब व्यवहार में लगता है। सब व्यापार व्यवहार इस द्रव्य रूपी धन से होते रहते हैं। इस प्रकार मनुष्य के पास अनेक प्रकार के धन होते हैं। अतः मन्त्र में कहा है कि यह धन 'भूरि-स्था-त्रा' है। अनेक स्थानों में अनेक रूपों में रहता है। यह सब योग्य उपयोग करने पर मानव की उन्नति करता है।

तीन भाषाओं वाला फार्मूला देश घातक है

तीन भाषयों वाले नये फार्मूला द्वारा सभी प्रांतों में अपनी भिन्न-भिन्न भाषाओं तथा अंगरेजी के संयोग की आज्ञा देकर देश की राष्ट्र भाषा हिन्दी के साथ उपहास तथा विश्वास-घात किया है। सभी प्रान्तों में पृथक्-पृथक भाषाएं होने से राष्ट्र की एकता और दृढ़ता असम्भव हो जायेगी। अन्य भारतीय विधान में संस्कृत को सभी भाषाओं की जननी और राष्ट्र भाषा का शब्द कोष स्वीकार करने के बावजूद इस नये फार्मूला में संस्कृत में कोई स्थान न देकर संविधान तथा भारतीयताकी जड़ों पर असह्य कुठाराघात किया गया है।

रविवार ११-४-६५ को आर्य समाज लक्ष्मणसर के साप्ताहिक अधिवेशन में इसके प्रति घोर रोष और विरोध का प्रस्ताव स्वीकार करते हुए भारत सरकार से शीघ्रातिशीघ्र इसमें उचित संशोधन करने के लिए अनुरोध किया गया।

निवेदक—रुद्रदत्त शर्मा प्रधान

सूचना

श्री आत्माराम जी अमृतसरी के पौत्र सुरेश कुमार शान्ति मित्र जी की महर्षि दयानन्द कालिज बम्बई में हिन्दी के लेक्चरार के रूप में नियुक्ति हुई है।

सम्पादकीय—

आर्य जगत

वर्ष २५] रविवार २०२१, ८ अगस्त १९६५ [अंक ३३

रक्षा-बन्धन का व्रत

प्रतिवर्ष वेद सप्ताह आकर हमें वेद के पढ़ने-पढ़ाने और सुनने-सुनाने की प्रेरणा व चेतना देता है। पुरातन युग से वेद का यह पवित्र पर्व मनाया जाता है। भारतीय जीवन के भव्य भवन का आधार वेद ही है। वेद सनातन सत्य है, सत्य विद्याओं का भण्डार है, जीवन की सारी साधनाओं का केन्द्र है, ब्रह्म का आदि गान है, प्रभु की कल्याणी वाणी है, प्रथम संस्कृति है। प्रतिवर्ष श्रावणी उपाकर्म के पर्व पर सारा देश और समाज वेद पाठ की प्रतिज्ञा करके जीवन में व्रत लेता था। वेद को अपने जीवन में, व्यवहार में तथा परिवारों के कर्मों में लाकर उसको रक्षा का संकल्प करता था। परिवार में वेद पाठ था, संस्थाओं में वेदपाठ था, जीवन के कामों में वेद का आदेश पालन होता था, राज्य के प्रबन्धकों के सामने वेद की ज्योति काम चलाती थी, प्रजा में वेद का प्यार था। प्रभात के जागरण में तथा निद्रा के आरम्भ में वेद ही वेद था। यही कारण था कि राष्ट्र के सारे जीवन में पवित्रता, सदाचार तथा शांति का साम्राज्य था। वर्ष बाद सारा देश वेद का सप्ताह मनाता हुआ वेद श्रद्धा के व्रत को फिर-फिर दुहरा लेता था। स्वामी दयानन्द सरस्वती से पूर्व भारत के लोग वेदों को भूल गए थे। स्वामी जी ने अपना यौवन जीवन देकर भूले भारत को फिर वेदों के मार्ग पर चलाया। आर्य समाज इसी परम्परा को लेकर प्रतिवर्ष वेद सप्ताह के रूप में जनता में वेद प्रचार के लिए भावना पैदा करता रहता है। आर्य समाज की स्थापना ही तो वेद प्रचार के महान् मिशन के लिए हुई है। वेद का प्रचार ही परम-धर्म है।

ता. १२ अगस्त से वेद सप्ताह आरम्भ है। सारे समाजों में इस के बड़े सुन्दर आयोजन किए जा रहे हैं। इसी दिन रक्षा-बन्धन का पर्व भी आता है तथा इसकी समाप्ति पर युगपुरुष नीति के देवता महात्मा कृष्ण जी की जन्माष्टमी भी मनाई जाती है। एक प्रकार से यह सप्ताह त्रिवेणी ही होता है। आर्य समाजों से हम अनुरोध पूर्वक कहना चाहते हैं कि इस सप्ताह को मनाते हुए वेद प्रचार का विशेष ध्यान रखें। आज कितनी विषम अवस्था है आज भारत में ईसाई मिशन का जाल फैला हुआ है। हजारों मिशनरी भारत में फैले हुए हैं। करोड़ों रुपये व्यय किए जा रहे हैं। लाखों की संख्या में बायबल छाप कर बांटी जा रही हैं। आर्य समाज के पास कितने प्रचारक हैं? नये-नये कितने पढ़े-लिखे युवक केवल उपदेशक बनने को तैयार होते हैं? समाज के पास विशाल संस्थाएं हैं, लाखों का बजट है, हजारों कार्यकर्ता हैं, पर वेद प्रचार निधि की क्या हालत है? कहते भी शर्म आती है। विचार करें इस वेद सप्ताह पर वेद प्रचार के लिए बलिदान का व्रत लेवें —त्रिलोक चन्द्र

★

पूज्य माता मेलादेवी के प्रति अंतिम भावनाएं

दैनिक मिलाप के मालिक श्रीयुत रणवीर जी, श्री यश जी प्रधान आर्य प्रादेशिक सभा, श्री युद्धवीर जी श्री ओं प्रकाश जी, श्री चन्द्र प्रकाश जी, श्री सर्व मित्र जी की पूज्या माता मेलादेवी जी आंखें बन्द करके सदा के लिए इस भौतिक संसार से चली गईं। हार्दिक शोक एवं दुःख है। माता जी के चले जाने से कौन-सा ऐसा पुत्र-पुत्री है जिसे माता जी की जुदाई पर भारी शोक नहीं होता। माता भी माता मेलादेवी जी सरीखी—जिनका सारा जीवन भक्ति, समाज की सेवा तथा धर्म निष्ठा में बीता हो। वह हमारी भी माता जी थीं। लाहौर में सभा का कार्यालय था, वहां पर भी माता जी का वात्सल्य भरा स्वभाव सब के सिर को झुका लेता था। सभा का कोई भी सज्जन समाज का हो या प्रचारक हो—लाहौर में जब कभी आता तो माता जी का प्यार भरा स्वभाव सब के सामने था। परिवार का द्वार खुला था। पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी जी का तथा श्री रणवीर जी की माता का स्वभाव श्रद्धा से कूट २ कर भरा था। समाज के कामों में माता जी सब से आगे ही रहा करतीं। स्वभाव में मिठास तो कमाल का था, वह समय भी आया जब श्री रणवीर जी फांसी की कोठड़ी में बन्द थे, श्री यश जी जेल में बन्द थे। ऐसी अवस्था में भी माता जी के दिल में निर्बलता व चिन्ता के भाव तक पैदा नहीं हुए। महात्मा खुशहाल चन्द जी के प्रभुभक्ति से भरे जीवन के समान ही इन का जीवन भी भक्ति की भावना से भरपूर था। समाज की सेवा में कोई कमी नहीं आई। ऐसी माताएं देश में थोड़ी ही होंगी।

लाहौर चले जाने के बाद मिलाप परिवार जब देहली चला गया तब माता जी देहली में रहने लगीं। देश विभाजन से लेकर अब तक माता जी उसी प्रकार आर्यसमाज अनारकली का काम करने में सब से आगे २ थीं। उन का सारा जीवन ही तपोमय व सेवामय बन गया था। महात्मा खुशहाल चन्द जी संन्यासी बन कर, महात्मा आनन्द स्वामी बन कर, परिवार त्याग कर, सारे विश्व के बन गए। पूज्या माता जी भी समाज के काम में सारा समय देने लगीं। वह तो सफेद कपड़ों में भी सच्ची संन्यासिनी योगिनी थीं। उनके जीवन में सरलता, सौम्यता, मधुरता, सेवाभावना तथा वेद के प्रति आस्था कूट २ कर भरी थी। गत दिनों से बीमार थीं। यह बीमारी उनको ले गई। पूज्या माता जी के चले जाने से श्री रणवीर जी श्री यश जी सारे मान्य भाईयों के सारे परिवार के दुःख में सारा समाज दुःखी है। प्रभु उनको सहन शक्ति तथा माता जी की आत्मा को शान्ति प्रदान करें—सं०

शोक समाचार

आर्यसमाज लारेंसरोड अमृतसर का यह विशेष अधिवेशन दैनिक मिलाप के मालिक श्री रणवीर जी, श्री यश जी प्रधान आर्य प्रादेशिक सभा की मान्या माता जी के दुःखद निधन पर हार्दिक शोक प्रकट करता है। माता जी का सारा जीवन समाज सेवा, भक्ति तथा धर्माचरण में बीता। सादगी व नम्रता की साक्षात् प्रतिमा थीं। उनके चले जाने से परिवार व समाज को भारी क्षति पहुंची है। प्रभु से प्रार्थना है कि दिवगत आत्मा को शांति तथा सारे परिवार को इस भारी दुःख में धैर्य व सहन शक्ति प्रदान करें।

विद्यासागर मन्त्री आर्यसमाज
लारेंसरोड अमृतसर

भारतवर्ष पर्व प्रधान देश है। प्रत्येक ऋतु यहां तक कि प्रत्येक मास में कोई न कोई पर्व आता ही रहता है। इन में से कुछ पारिवारिक पर्व भी हैं, जो पारस्परिक सम्बन्धों पर प्रकाश डालते हैं। ऐसे पर्वों में रक्षा-बन्धन मुख्य है। आर्ष काल में इसे श्रावणी पूर्णिमा स्वाध्याय यज्ञ वेदपाठ के सत्र आदि के रूप में मनाया जाता था। इस के साथ राखी की परम्परा कहां से जुड़ी इसकी ऐतिहासिक गहराई में जाने से हमारा कोई प्रयोजन नहीं। आज जन सामान्य में यह पर्व इसी परम्परा को लेकर जीवित है। राखी के कोमल धागों के माध्यम से भ्रातृत्व का गठ-बन्धन करना इस पर्व का मुख्य लक्ष्य है। इतिहास में ऐसे 'राखी-बन्धन' भाइयों की गाथाएं पढ़ने को मिलती हैं। विशेषता यह है कि विजातीय विधर्मी पुरुषों को भी बहिनों ने रक्षा भेज कर भाई रूप में अपना संरक्षक चुना है। इस में इतनी सफलता मिली है कि आज राखी 'भ्रातृत्व' की प्रतीक बन चुकी है। जिस की कलाई पर राखी बन्ध गई वह बान्धने वाली देवी का भाई बन गया। यह नये सम्बन्ध की डोर है। अपने निजी भाइयों के हाथ पर बन्ध कर वह हर बार उस सम्बन्ध को दृढ़ता प्रदान करती है। पराये हाथ में बन्ध कर उसे समीप लाती है।

समय के अनुसार प्रत्येक वस्तु का महत्त्व तथा उपयोगिता होता है। राजपूत काल में देवियों ने समय-समय मुसलमानी अत्याचारों से पीड़ित होकर सतीत्व रक्षा के लिए सशक्त सबल पुरुषों को भाई बनाया। आज हमारे सामने भावनाओं का संकट है। समाज में पवित्रता और सदाचार का वातावरण विलुप्त होता जा रहा है। भाई बहिन का पुनीत भाव जगाने की आवश्यकता है। युवक

नारी-स्तम्भ—

रक्षा बन्धन का सन्देश—

भाई बहिन का पवित्र सम्बन्ध

(ले०—श्री कु० सुशीला जी आर्या एम. ए. विद्यावाचस्पति आर्ष कन्या गुरुकुल, नरेला)

******

और युवतियों में 'लड़का लड़की वाद' का प्रचार है। फिल्मों के माध्यम से हमने दूषित भावना को रङ्ग दिया है 'तू लड़की मैं लड़का, देख कलेजा धड़का।" यह हमारे चरित्र के पतन की कहानी है जिस पर से मर्यादा का झीना-सा आवरण भी दूर करने की धृष्टता की गई है। युवक और युवतियां गली बाजारों दफ्तरों विद्यालयों सड़कों आंगनों में कहीं भी मिलें सभी को सभी जगह जाना आना पड़ता है पर क्यों न हमारी मनोवृत्तियों का इतना परिष्कार हो जाए कि हम एक दूसरे को देख कर सोचें "तू बहिन मैं भाई, तुझे देख भावना भाई" और बहिन सोचे—"तू भाई मैं बहिना, मर्यादा अपना गहना।" दृष्टि ही तो है इसे कोई भी रङ्ग दिया जा सकता है। राखी का सन्देश देश की प्रत्येक नारी के लिए यही है कि वह प्रत्येक पुरुष को भाई समझे। वय के अन्तर से पिता भी समझ सकती है। इसी प्रकार पुरुष अपने को पिता व भाई समझते हुए देवियों को बेटी बहिन की दृष्टि से देखें। इस भावना का विकास करने की नितांत आवश्यकता है। यही भावना हमारे उस उज्ज्वल चरित्र का परिणाम बनेगी जिस को लक्ष्य कर महाराजा अश्वपति ने डंके की चोट से अपने राज्य के विषय में उद्घोषणा की थी "न स्वैरी स्वैरिणी कुतः।" आज स्त्री पुरुष देश का वातावरण बिगाड़ने का दोष एक दूसरे पर मढ देते हैं किन्तु रोग का इलाज यह नहीं। दानों हाथ मिलाए धुलेंगे। स्त्रियां कह देती हैं पुरुष बहुत गिर चुके हैं किन्तु उन्हें भूलना नहीं चाहिए कि उन्हें गिराने का श्रेय हमारी नारियों को ही है। क्या उनकी चेष्टाएं वेश-भूषा चाल-ढाल ऐसी है जैसी भाइयों के सामने बहिनों की होनी चाहिए। उत्तर नहीं में है। यदि बहिन का सा भाव हो तो किसी भी पुरुष को भाई बनाने में इन्कार करते हमने तो देखा नहीं। यह कोई चौथे आदर्श वाद की बात मैं नहीं लिख रही रात दिन अनुभव में आता है। मन में चाहे पहले कुछ भी रहा हो किन्तु निश्छल हृदय से मन में भ्रातृभाव रखते हुए भाई कह कर हमने जिस किसी की परीक्षा की वह इस में पूरा उतरा। ऐसे अवसर विशेषतः यात्रा काल में मिले। हिन्दू-सिख मुसलमान कोई भी हो किसी भी अवस्था का कैसी ही विचार-धारा का। भाई शब्द में यही तो जादू है बशर्ते कि वह सच्चे हृदय से निकाला हो। दो-तीन वर्ष पूर्व हम कुल्लू की यात्रा पर थे। साथ कुछ छात्राएं भी थीं। दो नव-युवक भाई उसी बस में आधुनिक युवकों का पाट अदा कर रहे थे। अकस्मात् एक बात ने सारी बात बदल दी। एक भाई ने सामूहिक रूप से हमसे प्रश्न किया आप इतनी दूर से अकेली कैसे आ गई, कोई पुरुष आपके साथ नहीं। इसका उत्तर देते हुए मैंने कहा—भाई जब आप जैसे भाई हमारे साथ हैं तो हम अकेली कैसे? हमने तो यही उचित समझा था कि यहां से किसी भाई का काम छुड़ाकर साथ ले जाएं इससे अच्छा यही है कि गाड़ी बसों में जो भाई चलते हैं उन्हीं से सेवा सहायता की आवश्यकता पूरी कर लें। आप लोग तथा और जो भी सज्जन इस बस में बैठे हैं क्या वे हमारे भाई नहीं? हमारी बात नव-युवक भाईको चोटकर गई। हमने लम्बी यात्रा तक ऐसा अनुभव किया कि उनके हाव-भाव चेष्टाएं बदली और उन्होंने उसी समयसे भाई का कर्त्तव्य निभाना शुरू किया। स्थान २ पर समानादि रखवाने में हमें लाकर पानी पिलाने में सहायता की। पुनः आर्य समाज से तनिक भी परिचय न होने पर भी और होटल में ठहरने का विचार घर से लेकर आने पर भी आर्य समाज में ठहरे तथा समय २ पर हमारे कष्ट व आवश्कताएं पूछते रहे। ऐसा एक उदाहरण है। किन्तु हमारा अनेक बार का अनुभव है। यों तो तुलसीदास जी ने राम के मुख से कहलवाया है 'मिलहिं न जगत् सहोदर भ्राता'। किन्तु निःसन्देह बहिनों के लिए पवित्र भावनाओं से खरीदे जाने वाले भाइयों की कमी इस देश में हमें तो कभी खटकी नहीं। इसी से हम ऐसा समझते हैं कि हमारे यहां राखी टीके की मर्यादा अभी भी रक्षित है।

आज चाहे भाई-बहिन की रक्षा के लिए सिर कटाने की प्रतिज्ञा न भी करें उन्हें इस पवित्र भावना का मानस के मझवार करने का सत्प्रयत्न अवश्यमेव करना चाहिए और बहिनों को भी अपने उपयुक्त गुण तथा आचरण अपनाने चाहिएं इस वर्ष का रक्षाबन्धन यदि हमें यह पुनीत सन्देश दे सके तो इसका आना सफल है। हम किसी की कलाई पर राखी बांधें या न बांधें हमारी आंख पर किसी भी नव-युवक की छाया भाई रूप में पड़नी चाहिए। कोई कारण नहीं यदि हम ऐसा वर्ताव करें तो भाई हमें बहिन न समझे।

टकारा की यात्रा नं० ४

गुजरात प्रांत में आर्य समाज का प्रचार

श्री मथुरादास जी प्रधान आर्यसमाज नवांकोट (अमृतसर)

हमें बताया गया कि यहां क्या २ देखने योग्य स्थान हैं। आयुर्वैदिक कालेज जो कि अपने प्रकार का निराला कालेज है, बहुत बड़े भवन में यह कालेज है। वहां आयुर्वैदिक की ऊंची शिक्षा दी जाती है। आयुर्वैदिक शिक्षा के लिए हर प्रकार के यन्त्र और सामग्री वहां मौजूद हैं। वहां पर पञ्जाब के विद्यार्थी भी हमें मिले। दूसरा वहां पर सोलेरियम है, वह सारे विश्व में एक है। इसका भवन बहुत बड़ा है और इसमें सूर्य की किरणों से रोगों का इलाज किया जाता है। हमें बताया गया कि यहां पुराने रोगी भी ठीक हो कर गये हैं। सारे विश्व में एक होने का कारण पूछने पर बताया गया कि इस प्रकार का हस्पताल पहले केवल पेरिस में था। जामनगर के महाराजा पेरिस गए और उन्होंने हस्पताल को देखा और उन्हें पसन्द आया, उन्होंने वहां के प्रबन्धकों से बात की कि वह भी अपने भारत में इस प्रकार का हस्पताल बनाना चाहते हैं। इसलिए वह वहां से कारीगर तथा साईदास साथ लाये जामनगर में यह हस्पताल बनवाया जो कि वहां चलता रहा। गत महायुद्ध में पेरिस का सोलेरियम तो बम वर्षा की भेंट हो गया। अब सारे विश्व में केवल यही एक है।

इसके अतिरिक्त जामनगर में दो मन्दिर बहुत बड़े हैं। हमें बताया गया कि यहां की श्मशान भूमि देखने योग्य है। वह भी जा कर देखी। वह एक वाटिका के समान बनी हुई है और वहां पर महापुरुषों की मूर्तियां बनी हुई हैं। बड़ी सुन्दरता से वह स्थान बनाया गया है। यहां सारे स्थानों को देख कर हमारी गाड़ी जामनगर से चल कर द्वारका पहुँची। प्रातः काल अन्धेरा था। गाड़ी से उतर कर हम सीधे द्वारिका पहुँचे। गोमती नदी में स्नान किया। गोमती नदी, नदी नहीं अपितु समुद्र का ही एक भाग है। खाड़ी जिस का पानी सर्वथा समुद्र के पानी सा नमकीन है। वहां मन्दिर देखने चले गए। श्री कृष्ण जी की मूर्ति का रङ्ग सर्वथा काला है। रुक्मिणी का मन्दिर भी है। यहां पर यह तो स्पष्ट हो गया कि राधा का सम्बन्ध कृष्ण जी से कोई नहीं है। यहां पर श्री कृष्ण जी ने राज्य किया। द्वारका समुद्र का किनारा होने से प्रकाश का स्तम्भ भी है और सीमेंट का एक बहुत बड़ा कारखाना भी है। वहां देखने के बाद हम ओखा स्टेशन पर पहुँचे। ओखा भी समुद्र के किनारे बन्दरगाह है। वहां पर द्वारका समुद्र में है। स्टेशन से चल कर हम समुद्र तट पर पहुँचे वहां किश्तियों में दूसरी द्वारका जो कि लगभग बारह वर्गमील का एक द्वीप है यह एक मील समुद्र में है। वहां भी जा कर मन्दिर देखे। इसके साथ २ सोने की बनी काल्पनिक द्वारका भी देखी। पुजारी ने कहा कि असली द्वारका तो समुद्र में डूब गई थी। यह उसका आकार ही बनाया हुआ है। एक बात यहां पर यह भी देखी कि पहली द्वारका में रुक्मिनी का मन्दिर था। यहां सत्यभामा का मन्दिर है। सारे स्थानों को देखने के बाद हम वापस ओखा आ गये। इस जगह डीजल, केरोसीन और पेट्रोल आदि के बड़े-बड़े टैंक हैं। बाहर से तेल बड़े-बड़े जहाजों में आता है। हमने एक जहाज देखा जिस में ग्यारह हजार टन तेल आया था। उस समय वह खाली किया जा रहा था। भूमिगत नाली के द्वारा लगभग एक मील पर जहाज से बड़े टैंकों में जा रहा था। एक दूसरा जहाज जिसमें सीमेंटकी दस हजार गुत्थी डाली जा रही थी। इस प्रकार ओखा से चलकर रेल द्वारा हम पोरबन्दर पहुंचे। यहां के प्रसिद्ध दानी और ऋषि दयानंद के परम भक्त श्री नान जी भाई कालीदास जी महता ने जो कि करोड़पति हैं, ने स्टेशन पर हमारा स्वागत किया। इनके साथ और भी बहुत से सज्जन थे। लड़कियों का बैंड भी था। वे हमें एक भारी जलूस के रूपमें ऋषि दयानन्द की जय वैदिक धर्मकी जय के घोषों में नगर में ले गये। हमें बताया गया कि जलूस की फिल्म ली जा रही है। इसके बाद हम आर्यकन्या महाविद्यालय में पहुंचे। यह विद्यालय सेठ नान जी भाई कालिदास ने बनवाया हुआ है। इस की बहुत बड़ी २ कितनी इमारतें हैं। छात्रावास भी साथ हैं। उनकी ओर से सेव का स्वागत सम्मान किया गया। कन्या महाविद्यालय के विशाल भवन के साथ २ दयानन्द वाटिका है। उस में आपने एक विशाल हाल जो कि दो सौ फुट लम्बा और १०० फुट चौड़ा है, बनवाया हुआ है। इस में चौबीस खम्भे हैं और प्रत्येक खम्भे के चारों ओर एक एक मूर्ति खड़ी बनाई हुई है। उनके सामने दीवारों में चार मूर्तियां हैं। इस प्रकार सौ महापुरुषों की मूर्तियां हैं। भारत के महापुरुषों की सभी मूर्तियां यहां पर आपको मिलेंगी। प्रत्येक मूर्ति के नीचे उनका नाम और ऊपर उनके जीवन की एक प्रसिद्ध घटना अंकित की गई है। इसके अतिरिक्त दीवारों पर भारत से सभी प्रान्तों के दृश्य अंकित किये गए हैं। इस से जहां भारत के महापुरुषों के दर्शन हो जाते हैं वहां राष्ट्र के हर प्रांत की सभ्यता के भी दर्शन हो जाते हैं। वहां पर सेठ नान जी भाई कालिदास जी की माता और पिता जी की भी मूर्तियां बनी हैं। उस विशाल भवन के मध्य में भारत का एक बहुत बड़ा माडल बनाया गया है जिसमें भारत की नदियां, पर्वत, समुद्र छोटे २ नगर दिखाये गये हैं। नदियों में पानी चलता भी दिखाया गया है। यह भारत मन्दिर वस्तुतः दर्शनीय है। चारों ओर इसके बरामदा है जिस में बहुत अच्छे २ दोहे तथा वेद एवं गीता के पद लिखे हुए हैं।

पुरोहित क्लास की स्थापना

आर्य समाज भार्गव कैंप में प० नन्दलाल जी वैदिक मिशनरी ने पुरोहित क्लास का उद्घाटन किया है। जिस में संस्कार विधि के अनुसार संस्कारों के कराने की शिक्षा दी जाएगी। साथ ही संध्या हवन के मन्त्रों को शुद्ध उच्चारण करने का अभ्यास कराया जाएगा। सब कार्य निशुल्क होगा। समय साय ६ से ७ बजे तक होगा।

प्रकाश देव
रिटायर हैड मास्टर

आर्य अनाथालय फिरोजपुर छावनी

श्री हरिश्चन्द्र जी पुनः आर्य अनाथालय फिरोजपुर में काम करने के लिये तपोवन देहरादून से वापिस आ गए हैं और अपने पुराने कार्य पर नियुक्त होकर बड़ी तत्परता के साथ कार्य कर रहे हैं। इससे अनाथालय का बड़ा लाभ हो गया है।

प्रतापचन्द्, महता

मां के चरणों में

(ले०—श्री रणवीर जी की श्रद्धांजलि)

अंग्रेजी भाषा के एक प्रसिद्ध कवि तथा कहानीकार ने अपनी मां के स्वर्गवास होने पर कहा था—'मैं, जिसे संसार के शब्दों का बादशाह कहती है' उन शब्दों की तलाश नहीं कर पाता जिनमें अपनी मां की भावना को व्यक्त कर सकूं'—मैं शब्दों का बादशाह नहीं, कवि नहीं, बहुत मामूली-सा लेखक हूं। परन्तु आज जब अपनी पूज्य माता जी के बारे में लिखना चाहता हूं तो ऐसे लगता है कि मुझे लिखना भूल गया है। २३ जुलाई की रात तक मैं बच्चा था, क्योंकि मुझे 'बच्चा' कहने वाली मां मौजूद थी। २४ जुलाई की प्रातः के प्रकाश प्रस्फुटित होने से पहले मेरा बचपन सो गया। वह बुढ़ापा जाग उठा जिसे मैं भूल गया था। मुझे 'बच्चा' कहने वाली मां इस संसार में नहीं थी—जिंदगी क्या है? मौत क्या है? मैं जानता नहीं। ज्यूं-ज्यूं सोचता हूं और ज्यूं-ज्यूं मौत समाप आती है, त्यूं-त्यूं यह राज रहस्यपूर्ण हुआ जाता है। मौत मुझे भयानक नहीं, केवल विचित्र मालूम होती है कि उसके बाद एक-दम इतना सन्नाटा क्यों छा जाता है?—संघर्ष, अभिमान, गर्व, कशमकश, प्रतिष्ठा, सूझबूझ, सबकी इस प्रकार समाप्ति क्यों हो जाती है, जैसे किसीने किताब का पृष्ठ उलट दिया हो। पहले पृष्ठ की हर बात का अन्त हो गया हो। और मौत के बाहुपाश में सोने वाली हस्ती यदि 'मां' हो तो आश्चर्य होता है कि इस प्रकार जिन्दगी की उत्पत्ति करने वाली हस्ती स्वय हो इस जिन्दगी से इतनी दूर क्यों है? यह कहना कि मुझे अपनी माता जी से प्यार था या उन्हें मुझ से, बेकार सी बात है। हर बेटा अपनी मां से प्यार करता है, हर मां अपनी संतान से—संसार के किसी भी भाग, किसी भी देश और किसी भी युग में, किसी भी व्यक्ति को तकलीफ हो तो वह 'मां' को पुकारता है। विचित्र सम्बन्ध है यह। शायद इसीलिए हमारे शास्त्रों ने 'जननी और जन्म भूमि' को स्वर्ग से भी बड़ा कहा—शायद इसीलिए उन्होंने ईश्वर को भी 'मां' के रूप में देखा शायद इसीलिए उन्होंने कहा कि मां की ममता से बड़ी कोई भावना नहीं। परन्तु इस साधारण ममता और प्यार की बात मैं नहीं कहता। इस में मधुरता है, जीवन है, वह पवित्रता है जो आध्यात्मिकता की महानतम ऊंचाइयों को जन्म देती है। परन्तु इस में कोई अनोखापन नहीं। बहुत साधारण-सी बात है यह। आज मैं अपनी 'अम्मी' को स्मरण करता हूं तो उनकी ममता से, उनके प्यार से और सन्तान के लिए उनकी बलिदान भावना से बहुत अधिक उनका वह तप स्मरण आता है जो उनके जीवन का सब से चमकता हुआ भाग था। स्मरण आता है कि मुझे फांसी के दण्ड का हुक्म हुआ। माता जी मुझे मिलने के लिए फांसी की कोठड़ी में आई, तो मैंने हंसते हुए कहा—'आप रोती तो नहीं हैं?' वह दृढ़ता से बोली—मैं क्यों रोऊंगी? मैं क्या रणवीर की माता नहीं हूं?' परन्तु मुझे ऐसा मालूम होता है कि मुझे सख्तियां झेलने, कठिनाइयों का सामना करने और अत्याचार व अन्याय के विरुद्ध क्रांति पैदा करने की भावना पैदा हुई तो तप की उस भावना के कारण से जो मेरी मां के जीवन में विद्यमान थी। उनकी इस भावना का प्रभाव मुझ पर ही नहीं हुआ। यश और युद्धवीर पर भी हुआ जो ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध तूफान की तरह आगे बढ़े। बार-बार कैद होने, बार-बार जेलों की कोठड़ियों में बन्द होने पर भी हारे नहीं; थके नहीं, पीछे नहीं हटे। अपने बेटों को बार-बार जेलों में जाते देख कर भी उन्होंने यह कभी नहीं कहा कि—"इस मार्ग पर न चलो" हमेशा यही कहा कि—"जिस मार्ग पर आगे बढ़े हो उसी पर बढ़ते जाओ। अब पीछे नहीं हटना। रुकने का नाम नहीं लेना" लेकिन उनकी इस तप की भावना का सब से सुन्दर रूप मैंने उस समय देखा जब मेरे पूज्य पिता श्री खुशहाल चन्द जी खुरसंद भगवे कपड़े पहन कर श्री आनन्द स्वामी सरस्वती बने। जब उन्होंने अपनी जीवनसंगिनी को "मां! भिक्षा दो" कह कर उनके सामने झोली फैला दी और जब माता जी ने देखा कि पति के मौजूद होने पर भी उनका पति अब है नहीं, इससे अधिक दर्दनाक दृश्य कोई हो नहीं सकता। इस से बड़ा तप मैंने कभी देखा नहीं। पिछले दिनों माता जी के बचने की कोई आशा नहीं थी। दो वर्ष से उन्हें अधरंग था। हिलना-जुलना असम्भव। तभी मालूम हुआ कि उनके पेट में बहुत भयानक प्रकार का "कैंसर" हो गया है जिसका कोई इलाज नहीं। इस के साथ ही अधरंग का एक और हमला हुआ, जबान बन्द हो गई। ऐसी स्थिति में उनके बचने का प्रश्न पैदा नहीं होता था। परन्तु पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी जी ने उनकी इस हालत के बावजूद कहा—'मैं अहमदाबाद जा रहा हूं। वहां से राजकोट जाऊंगा।' तो मैंने धीमे से कहा, 'जाइए' और जब माता जी का देहांत होने पर मैंने उन्हें बंगलौर में तार दिया कि—'माता जी अब नहीं हैं' तो उन्होंने बंगलौर से टेलीफोन पर कहा—"मैं माता जी की आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना करूंगा'

——

शोक प्रस्ताव

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब की अंतरंग सभा १.८.६५ के अधिवेशन में सब से पूर्व पूज्या माता मेलादेवी जी (माता श्री यश जी प्रधान सभा) के स्वर्गारोहण पर शोक प्रस्ताव पारित हुआ। सब उपस्थित सज्जनों ने तीन बार गायत्री मन्त्र का उच्चारण करके माता जी की आत्मा की शान्ति व उन के परिवार को इस दारुण कष्ट सहन करने की प्रभु से प्रार्थना की गई। —व्यवस्थापक

देहली पंजाबी बाग में समाज का निर्माण

समाज, स्कूल व अनुसन्धान केन्द्र प्रारम्भ

(श्री. मेहरचन्द जी पुरी पञ्जाबी बाग दिल्ली)

श्रीयुत ला. मेहर चन्द जी पुरी आर्य प्रादेशिक सभा पंजाब तथा डी. ए. वी. कालेज मैनेजिंग कमेटी के पुराने स्तम्भ, प्रेमी एवं कार्य-कर्ता हैं। सभा के कार्यों में बड़ा सहयोग देते हैं। बड़े ही मौन हो कर ठोस कार्य-कर्ता हैं। देश-विभाजन के बाद देहली आकर सभा का बहुत ठोस काम किया और कर रहे हैं। पंजाबी बाग देहली में समाज और शिक्षा प्रचार के कामों की कितनी शानदार योजना बना कर उसको क्रियात्मिक रूप दिया है यह नीचे लिखे सारे विवरण से पता लग जाता है वहां पर बहुत शानदार काम आरम्भ हो गया है। ऐसे अनथक मौन सज्जनों पर सभा को बड़ा मान है। महात्मा हंसराज जी के अनन्य भक्त हैं। प्रभु इन को सदा स्वस्थ रखें—सं०

आर्यसमाज पंजाबी बाग की स्थापना २ मार्च ६३ को की गई। आठ सज्जनों ने इसको सोसाइटी का रूप देकर २५ अप्रेल को इस की रजिस्ट्री करवाई फिर इस का सम्बन्ध आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि से करा दिया गया। इस रजिस्टर्ड सोसाइटी को पंजाबी बाग रिफ्युजीज सोसाइटी ने १८११ वर्ग गज भूमि आर्यसमाज मन्दिर बनाने के लिए १६२) प्रति गज के भाव पर और आर्य स्कूल चलाने के लिये १॥ एकड़ भूमि बिना लागत के दी, यह दोनों भूमियां आर्य समाज के नाम रजिस्ट्री हो चुकी हैं। इस समाज के इस समय १०३ सदस्य हैं। रविवार के सत्संग नियम पूर्वक होते। हैं उपस्थिति सन्तोषजनक होती है। आर्य स्त्री सत्संग प्रति बुधवार को होता है और पारिवारिक सत्संग प्रति बृहस्पति वार भिन्न २ घरों में होते हैं। सिद्धान्तों से परिचित होने के लिये प्रत्येक मास के पहले शनीवार को विचार गोष्ठी होती है, गत वर्ष १७ दिन पं० भगवद्दत्त जी रीसर्च स्कालर ने महाभारत की खोजपूर्ण कथा की और वेद सप्ताह भी उत्साह-पूर्वक मनाया गया। अब के भी १२ अगस्त से २० अगस्त तक वेद सप्ताह मनाया जायगा उसमें सम्मिलित होने वाले सज्जन सपत्नीक गायत्री यज्ञ करेंगे, और सत्य अहिंसा और ब्रह्मचर्य पालन का व्रत धारण करेंगे साथ में वेद का स्वाध्याय करने का भी प्रण लेंगे। समाज ने अपनी भूमि की सीमा दीवार और सत्संगों के लिये एक कमरा बना लिया है। इसमें एक वेद विद्यालय चलाने और एक आयुर्वैदिक औषधालय खोलने का विचार है, और औषधालय के लिये एक महानुभाव ने १५०००) देने का वचन दिया है। समाज की ही भूमि में रामलाल कपूर ट्रस्ट वालों का जिज्ञासु भवन बनाने का विचार है, जिसमें स्वर्गीय जिज्ञासु जी का पुस्तकालय और वेद वाणी का कार्यालय आ जाएगा।

एक देवी ने अपने पति के नाम पर सहदेव मल्होत्रा आर्य पब्लिक स्कूल खोलने के लिये २००००) समाज को दिया चुनांचे इस स्कूल का उद्घाटन पूज्यपाद महात्मा आनन्द स्वामी जी ने ११ मई को किया, अब स्कूल चल रहा है नर्सरी, किंडरगार्टन और पांच कक्षायें अभी खोली गई हैं जिन में लगभग ४५ विद्यार्थी प्रवेश कर चुके हैं। इसके लिये नहीं ली [illegible]क शिक्षा का उचित प्रबन्ध किया गया है। यह स्कूल ईसाइयों के मौडर्न स्कूलों के मुकाबला करने के लिये धनाढ्य लोगों के बच्चों के लिये खोला गया है और इस पर व्यय फीसों से ही किया जाएगा, आशा की जाती है कि आखिर अगस्त तक ६०, ७० विद्यार्थी प्रवेश हो जायेंगे। अभी स्कूल खेमों में चलाया गया है अपनी इमारत भी बन ही जाएगी।

पंजाबी बाग की रिफ्युजीज कोओपरेटिव सोसाइटी ने ४॥ एकड़ भूमि हंसराज पब्लिक हायर सैकेंड्री स्कूल चलाने के लिये डी. ए. वी. कालेज मैनेजिंग कमेटी को दी है जिसके लिये सुना है दो लाख रुपये श्री योधराज जी ने दिया है और डेढ़ लाख किसी और जगह से प्राप्त हुआ है यह स्कूल केवल लड़कों के लिये होगा और उपरोक्त सहदेव मल्होत्रा आर्य पब्लिक स्कूल केवल लड़कियों के लिये नर्सरी श्रेणियां दोनों के लिये, आशा है इस स्कूल का उद्घाटन नवम्बर में होगा जबकि महात्मा हंसराज शताब्दी दिल्ली में मनाई जाएगी, ऐसे ही रिफियुजी सोसाइटी ने दो एकड़ भूमि पंजाबी बाग में आयुर्वेदिक कालेज हस्पताल, रिसर्च केन्द्र खोलने के लिये अखिल भारत आयुर्वेदिक असोसिएशन को दी है वे लोग भी साल भर के अन्दर अपना कुछ कार्य आरम्भ कर देंगे, स्पष्ट है कि भारत की राजधानी में आर्य सभ्यता और संस्कृति फिर पंजाबी बाग में सजीव हो उठेगी।

श्री पं० भगवद्दत्त जी आर्य समाज ट्रस्ट और आर्य समाज और राम लाल कपूर ट्रस्ट के प्रधान हैं आर्य समाज के मन्त्री श्री बिहारीलाल जी और ट्रस्ट के मन्त्री श्री मेहरचन्द पुरी हैं।

करनाल के मुहल्लों में वेद प्रचार

करनाल नगर के भिन्न २ मुहल्लों में प्रादेशिक सभा के प्रसिद्ध गायक डा. दुर्गासिंह जी तुफान और म० नत्थूराम जी ने १५.७.६५ से ३०.७.६५ तक वेद प्रचार किया। गलियों मुहल्लों की जनता पर इस प्रचार का उत्तम प्रभाव रहा। इस में चौ. रामसिंह जी, चौ. शेरसिंह जी, प० वासुदत्त जी, पं. पूरण चन्द्र जी; श्री राधेश्याम जी और पं० हरिदत्त जी सेवक का सहयोग सराहनीय है। १२/—मुहल्ला गोडान. १२/—मुहल्ला कम्बोज दयालपुरा, ११/—मुहल्ला वकीलपुरा तथा ५०/ नोटों के प्राप्त हुए।

नोट—इस प्रकार करनाल के अन्य मुहल्ले भी प्रचार में सहयोग दें तो वहां वेद प्रचार कार्य सफल होगा वहां आर्य प्रादेशिक सभा की धन से सहायता भी हो सकेगी।

—व्यवस्थापक

चंडीगढ़ में महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज का शुभागमन

आर्य समाज सैक्टर ८ में डी. ए. वी. स्कूल में वेद सप्ताह के शुभ अवसर पर १२ से २० अगस्त तक सायं ७ से ८ बजे तक प्रतिदिन अमृत वर्षा हुआ करेगी।

आशु राम पुरोहित समाज

चण्डीगढ़ के डी. ए. वी. H/S स्कूल के उत्तम परीक्षा परिणाम पर हार्दिक बधाई

आर्यसमाज को डी. ए. वी. H/S स्कूल (लाहौर) चण्डीगढ़ पर बड़ा गौरव है। जिसके विद्यार्थी दोनों १०वीं और ११वीं कक्षा के परिणामोंमें पंजाब में प्रथम द्वितीय तथा चतुर्थ आदि स्थान प्राप्त किया है योग्यता सूची और प्रतिशत में सारे पंजाब में सब प्रथम उपलक्ष्य में मान्य [illegible] जी तथा उनके सहयो[illegible] को हार्दिक बधाई हो

आर्यसमाज लारेंस रोड अमृतसर

अमृतसर आर्यसमाज लारेंस रोड सभा के प्रसिद्ध समाजों में से है। वहां बारह मास प्रातः निरन्तर दैनिक कथा सत्संग जारी रहता है। यह समाज सभा को अपना पूरा-पूरा सहयोग देती है। इस समाज के प्रधान श्री मोहनलाल जी तथा मन्त्री श्री वैद्य विद्यासागर जी तथा अन्य समाज के सज्जनों के विचारों की एक विशेषता है कि वह चाहते हैं कि सभा रूपी केन्द्र वेद प्रचार के हर विचार में दृढ़ होता रहे। सदा स्वतन्त्र रहकर धन कमाने वाले व्यक्तियों की अपेक्षा सभा को वेद प्रचार राशि से मालामाल किया जाये। इस प्रकार के केन्द्र के प्रेमी समाजों से सभा को बड़ा बल मिलता है।

सभा के कार्यक्रम के आदेश पर लारेंस रोड आर्यसमाज में एक महीना कथा पर वहां रहना पड़ा। वहां के भाई-बहिनों का स्वाध्याय प्रेम देखकर प्रसन्नता होती है। गम्भीर से गम्भीर विषय का वे विवेचन करते हैं। सभा को वेद प्रचार के लिए २५०) भेंट किया गया। श्री पं. खुशीराम जी शर्मा महोपदेशक सभा तथा पं. राजपाल जी मदनमोहन जी मण्डली का बड़ा प्रभाव-शाली कथा प्रचार होता रहा। —सं.

आर्य जगत रोहतक के समाचार

११ जुलाई को आर्य समाज झज्जर रोड में आर्य केन्द्रीय सभा की देख-रेख में नगर की आर्य समाजों तथा आर्य संस्थाओं का सम्मिलित सत्संग हुआ। जिसमें पूज्य महात्मा देवीचन्द जी तथा स्वामी ध्रुवानन्द जी महाराज के आकस्मिक निधन पर शोक-प्रस्ताव पास [illegible] नेताओं के [illegible] होकर दो [illegible] [illegible] में प्रभु-प्रार्थना की गई।

आगामी सम्मिलित सत्संग की तिथि १५ अगस्त घोषित की गई। जो यह सत्संग। 'आर्य समाज माडल टाऊन में होगा।

२५ जुलाई को आर्य केन्द्रीय सभा के अन्तरंग में निम्नलिखित विषय पारित हुए :—

श्री विद्यार्थी जी का सुझे इजलास में पेश होने वाला विवाह में अनियन्त्रिताओं का कुछ अंश रूप में संशोधन और परिवर्द्धन किया गया।

(ख) आर्य समाज झज्जर रोड द्वारा वेद सप्ताह मनाया जाने पर केन्द्रीय सभा का योगदान देना।

(ग) कृष्ण-जन्म-अष्टमी पर्व दो दिन गांधी कैम्प रोहतक में मनाया जावे। —विद्यार्थी

चुनाव

आर्यसमाज युसफ़ सराय (ग्रीन पार्क) नई देहली

वेद प्रचार सप्ताह श्रावणी उपाकर्म के दिनों में १२ अगस्त से २० तक सभासदों तथा अन्य वेद प्रेमियों के परिवारों में सायं प्रातः सम्पन्न होगा इस अवसर पर मन्त्रों पर प्रवचन तथा मनोरंक भजन हुआ करेंगे।

—देवराज [illegible] मन्त्री समाज

आर्यसमाज झज्जर रोड रोहतक

प्रधान—श्री म० भरतसिंह जी म्यूनिसीपल कमिश्नर, उपप्रधान—श्री टालूराम जी, बहिन लीलावती जी सूरी, मन्त्री—श्री भरतसिंह जी आर्य, उपमंत्री—श्री ओम् प्रकाशजी अग्निहोत्री, कोषाध्यक्ष—श्री रामकिशनजी एडवोकेट, लेखानरीक्षक—श्री बाबू विद्याभूषण जी. पुस्तकाध्यक्ष—श्री वेदप्रकाश जी आर्य।

भरतसिंह, मन्त्री-समाज

[illegible]वीय नगर नई देहली

प्रधान—श्री रामशरणजी, उपप्रधान—श्री नन्दलाल जी, श्री चिमनलाल जी, मन्त्री—डी. आर. जुनेजा, उपमंत्री—श्री कस्तूरचन्दजी, श्री गुप्ता जी, कोषाध्यक्ष—श्री सरदारीलाल जी, पुस्तकाध्यक्ष—श्री वासुदेव जी, लेखा निरीक्षक—श्री रामादत्त जी।

डी. आर. जुनेजा
मन्त्री समाज

आर्यसमाज खंडवा (पूर्व निमाड़) M.P.

प्रधान—श्री पं. रामचन्द्रजी तिवारी
उप „—„ रामकृष्णजी पंसोलाल
„ „—„ धर्मचन्द जी महता
मन्त्री—„डा. [illegible] वर्मा
उप „ —„ [illegible] आशा स्टोर्स
प्रचार„—„ कैलाशचन्द्र [illegible]
कोषाध्यक्ष—रामचन्द्र जी आर्य
पुस्तका „—कन्हैयालाल जी [illegible]
निरीक्षक :— अनन्त रायकर।

प्रतिनिधि

श्री डा० अक्षयकुमार जी वर्मा
„ हीरानन्द जी आर्य आशा स्टोर्स
„ रामचन्द्र जी आर्य।

अंतरंग सदस्य

१. श्री डा. रघुनाथसिंह जी वर्मा
२. „ कन्हैयालाल जी खंडेलवाल
३. „ [illegible] जी [illegible]
४ „ पूनमचन्द जी आर्य।

—रामचन्द्र मन्त्री
आर्यसमाज, खण्डवा

लड़कियों की चुस्त पोशाक पर तुरन्त प्रतिबंध लगाओ

केन्द्रीय शिक्षा विभाग के अधिकारियों से स्कूलों और कालिजों महाविद्यालयों के समस्त अधिकारियों से तथा शिक्षा प्राप्त करने वाली कन्याओं के माता-पिताओं से मैं आग्रह पूर्वक विनम्र निवेदन [illegible] चाहता हूँ कि इस वर्तमान फैशन परस्ती की लानत को देश से निकालने के लिये तुरन्त आज ही कटिबद्ध हो जायें।

लड़कियों के चुस्त पोशाक के कारण उनका शील स्वभाव नष्ट होता है तथा उनके अंग-प्रत्यंग का प्रदर्शन होता है जिसका अत्यन्त बुरा प्रभाव नौजवानों के मनों पर पड़ता है।

इसके अतिरिक्त चुस्त कमीज को पहन कर तांगे और मोटरों तक में चढ़ना और उतरना अत्यन्त कठिन होता है।

इस फैशन परस्ती के भूत की लानत को देश से हटाने और मिटाने के लिये प्रबल आंदोलन प्रत्येक संस्थाओं को और आर्यसमाजों को अविलंब करना चाहिये नहीं तो देश रसातल को चला जायेगा। आजकल अन्धा-धुन्ध अनुकरण पाश्चात्य देशों की नारियों का हमारी बहन और बेटियां करती जा रही हैं। इस अर्धनग्न फैशन के अपनाने से चरित्र पतन को प्रबल प्रोत्साहन मिलता है अतः चुस्त-ड्रेस का बहिष्कार करके भारतीय वेश-भूषा को अपनाओ इसी में देश और जाति तथा धर्म और संस्कृति की रक्षा होगी।

निवेदक—धर्मवीर आर्य भंडाधारी
मन्त्री वेद विश्व विद्यालय निर्माण
[illegible]
[illegible]

शोक प्रस्ताव

३ अगस्त—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के प्रचारक विभाग की ओर से पूज्य माता [illegible] देवी जी माता श्री रणवीर [illegible] तथा महात्मा देवीचन्द जी के निधन पर शोक प्रस्ताव पारित हुआ, जिस में दोनों व्यक्तियों की आत्मा की शांति के लिए तथा उनके परिवार जनों व इष्ट मित्रों को इस वियोग को सहन करने की प्रभु से याचना की है।

राजपाल मन्त्री प्रचारक विभाग

मुद्रक व प्रकाशक श्री [illegible]राज जी आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर द्वारा वीर [illegible] प्रेस, [illegible] रोड जालन्धर से मुद्रित तथा [illegible] कार्यालय महात्मा हंसराज भवन निकट कचहरी जालन्धर शहर से प्रकाशित मालिक—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब [illegible]



टेलीफोन नं० ३०५७ [आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधिसभा पंजाब जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd. No. P. 121

एक प्रति का मूल्य १३ नये पैसे — वार्षिक मूल्य ६ रुपये

वर्ष २५ अंक ३५) ७ भाद्रपद २०२२ रविवार—दयानन्दाब्द १४१— २२ अगस्त १९६५ (तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

वेद सूक्तय:

मल्वो यो मह्यं क्रुध्यति

जो मल्व है, मैले विषैले चित्त वाला है जिस का मन छोटा और खोटा है, मैला है, पाप से भरपूर है। जो भी मुझ पर क्रोध करने वाला है। मुझे सताने तपाने के लिए तंग करता है। अपने मन में मेरे प्रति अच्छे भाव नहीं रखता।

स उ पाशान्न मुच्यते

सुनो! सुन लो! बार २ कहता हूं—कान खोल कर सुन लो कि इस प्रकार का चोर डाकू राक्षस, वैरी शत्रु जो भी है, वह मेरे पाश से बच कर नहीं जा सकेगा। उसे अपने पाश में पकड़ कर जकड़ दूंगा। बचने का उसे कोई मार्ग ही नहीं है।

परेणैतु पथा वृकः

भेड़िया! या भेड़िये की चाल चलने वाला वैरी सुन लेवें कि इस तरह का भेड़िया मुझ से दूर २ मार्ग से वापस चला जाये। मेरे सामने भी आने का साहस न करे। अरे भेड़िये! तू परे हट जा, परे भाग जा।

अथर्ववेद से

२१-८-६५ वेदामृत

श्रुष्ट्यग्ने नवस्य मे स्तोमस्य वीर विश्पते।
नि मायिनस्तपसा रक्षसो दह ॥

साम वेद आग्नेय काण्ड मन्त्र १०६

अर्थ—हे अग्निरूप राष्ट्र के नायक! (श्रुष्टि) सुनें (नवस्य) इस नये (स्तोमस्य) मेरे स्तवन को (मे) मेरे (वीर विश्पते) हे वीरता के केन्द्र प्रजा को पालने वाले राजन! (मायिनः) माया कपट आदि करके धोखे में डालने वाले दुष्ट को अपने (तपसा) तेज बल तप के साथ (रक्षसः) उस राक्षस दुष्ट हिंसक भेड़िये के समान पिशाच को (दह) भस्म कर डालो, जला डालो। आपके बल की अग्नि की ज्वाला में ऐसे हिंसक राक्षस दुष्टजन अपनी सारी शक्ति समेत जल कर राख हो जावें। उनको जहां भी मिले भून डालो।

भावार्थ:—देश की प्रजा या सारे विश्वकी जनता अपने अग्नि-समान चमकने चमकाने वाले वीर राष्ट्रनायक से नेता व सेनापति से कहती है कि हे वीरनर! आप सारे समाज के अग्रणी नायक बने हो। आग के समान प्रकाश देते हो तथा शत्रुओं को अपनी लपटों में भस्म कर डालने की आप में शक्ति है। इसलिए हम आपकी वीरता बल तेज की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए कहते हैं कि जितने भी राष्ट्र के शत्रु हैं, उत्पाती व घाती हैं, राक्षस हैं, अत्याचार करने वाले पिशाच हैं। छल-कपट माया से, नाना प्रकार के तरीकों से देश को हानि पहुंचाते रहते हैं या इसकी भूमि पर, भावना पर आक्रमण करने की सोचते हैं। हे नायक! अपने बल तेज से इन सब हिंसक राक्षसों को आग बनकर जला दे, भून डाल, भस्म कर दे। —सं०

ऋषि दर्शन

वेदानां नित्यत्वम्

वेद नित्य हैं। परमेश्वर स्वयं नित्य हैं। वेद भगवान की वाणी है। उसी का सृष्टि के आरम्भ में दिया हुआ ज्ञान है। इसीलिए नित्य प्रभु का ज्ञान भी नित्य है। अतः वेद नित्य है। इनमें सारी विद्याएं सत्य तथा नित्य ही हैं।

वेदाः प्रमाणमिति

वेद सब के लिए प्रमाण हैं। वेद स्वतः प्रमाण हैं। जैसे सूर्य को देखने दिखाने की किसी अन्य साधन की आवश्यकता नहीं होती। उसी प्रकार स्वतः प्रमाण वेदों को बताने की अन्य किसी शास्त्र की भी आवश्यकता नहीं। इनसे अन्यों की प्रामाणिकता सिद्ध होती है।

वेदानां स्वतःप्रमाणत्वात्

वेदों के स्वतः प्रमाण होने से ये सब कर्तव्यों के लिए प्रमाण माने गए हैं। और सारे ग्रन्थ तो परतः प्रमाण हैं, वेदों के अनुकूल होने से उनकी प्रामाणिकता नहीं होती। किन्तु वेद तो अपने लिए सदा ही स्वतः प्रमाण हैं।

ऋग्वेद भाष्य भूमिका से

अधिष्ठाता—श्री संतोषराज जी

सम्पादक—त्रिलोक चन्द्र शास्त्री

हिन्दी आन्दोलन के अमर हुतात्मा—

वीर सुमेर की याद में

लेखक—श्री पं० सत्यप्रिय जी शास्त्री, सिद्धान्त शिरोमणि:
प्राध्यापक:—दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय, हिसार

सन् १९५७ के अगस्त मास की २४ तारीख का मनहूस दिन था। फिरोजपुर की सेण्ट्रल कैम्प जेल में हम लगभग ७२५ सत्याग्रही भारत की राष्ट्र भाषा हिन्दी को पंजाब में कैरों शाही के पंजों से मुक्त कराने के हेतु स्वतन्त्र भारत की सरकार के कैदी बने हुये थे। उस दिन सायं के लगभग ४ बजे का समय होगा, जब कि हम अपनी २ बैरिकों से खेलने के उद्देश्य से बाहर निकले ही थे कि पश्चिम दिशा में जहां स्टोर था, उधर से शोर सुनाई पड़ा। देखते ही देखते लगभग ११५ नैतिक सिकल बन्दी हाथों में लाठी, लकड़ी, लोहे के सरिये तथा अन्य मारक शस्त्र लिये हुए हिन्दी सत्याग्रहियों के पीछे २ दौड़ने लगे। चारों ओर एक ही स्वर गूंज रहा था 'लाठी चार्ज' लाठी चार्ज' हिन्दी सत्याग्रही नंगे तथा निहत्थे इधर उधर *सिर छुपाते फिर रहे थे, किन्तु* वहां पर भी वे उन दानवों की नजरों से बच नहीं पाते थे। चारों ओर हा-हाकार, दानवता का नग्न ताण्डव तथा पैशाचिकता का राज्य ही दृष्टिगोचर हो रहा था। यहां तक कि ध्यान मग्न संन्यासी भी उन पशुओं के कोप भोजन बने, सोते हुए वृद्ध तथा बच्चे भी उन नृशंसों की नृशंसता के शिकार बने। इसके अतिरिक्त नहाते हुए तथा शौचालयों में बैठे हुए हिन्दी प्रेमियों को भी उनकी कोपाग्नि को भेंट होना पड़ा। आध घण्टे के पश्चात् जब रक्तकांड समाप्त हुआ तो चारों ओर युद्ध क्षेत्र के दृश्य दिखाई पड़ रहे थे। कई सौ लोग घायल पड़े चिल्ला रहे थे। उन सबको अन्य सत्याग्रही बाहर मैदान में ला-ला कर लिटा रहे थे। और उनके गहरे लाल घावों में कपड़े जला-जला कर भर रहे थे। वीर सुमेरसिंह को जब हम चार व्यक्ति बाहर लाये तभी से उसकी दशा निरन्तर भयानक रूप धारण करने लगी। राष्ट्र भाषा मुक्ति आंदोलन का वह अमर शहीद भूमि पर पड़ा जीवन की अन्तिम घड़ियां गिन रहा था। हम उसके चारों ओर बैठे धैर्य दायक वचन बोल रहे थे। *उसी अवस्था में बैठे मेरे* अन्त:करण में वे सारे दृश्य चलचित्र की भांति घूम गये जब से कि उस बलिदानी वीर का सम्पर्क प्राप्त हुआ। अम्बाला को जेल में प्रथम हम सब मिले। वहां नित्य-सायं को सभा होती थी, जिसमें कि एक बार बोलते हुए वीर ने आर्य समाज तथा ऋषि दयानन्द के प्रति उत्कट श्रद्धा व्यक्त की थी। साथ ही यह भी बताया था कि मैं अपने ग्राम के समाज का मन्त्री हूँ तथा आजीवन अविवाहित रहकर आर्य समाज के विस्तार का कार्य करना चाहता हूँ।' उसके दुर्बल से देह में *इतनी प्रबल इच्छा जानकर उसके* प्रति स्नेह बढ़ा। वहां से हम सब बदलकर फिरोजपुर आये। मेरे सौभाग्य से कहिये कि उस वीर का निवास मेरे निकटतम हुआ। एक दिन उन्होंने उपनिषद् पढ़ने की इच्छा व्यक्त की। मैं स्नेह वश ~~अथवा स्वभावानुसार~~ उनकी उक्त इच्छा की पूर्ति में सहयोग से इंकार न कर सका। २४ अगस्त के काण्ड से पूर्व न [illegible])। ग्रन्थ पढ़ा रहा था कि अचानक उस वीर ने पुस्तक बन्द कर कहा कि "ब्रह्मचारी जी? आज तो ऐसा दिल करता है कि इस कमजोर शरीर से छुटकारा पाकर नया बलिष्ठ शरीर धारण कर ऋषि मिशन के प्रचार में सहयोग दिया जाए? मैं चुप रहा। मुझे क्या पता था कि उसका अन्त:करण आने वाले समय का आभास प्राप्त कर चुका है। मैं सोच रहा था कि जीवन कितना अस्थिर है। इतने में कुछ शोर सुनाई पड़ा। गर्दन उठाकर देखा कि डाक्टर, कम्पाउडर, औषधियां तथा घायलों को उठाने के लिए स्टेचर लिए हुए वे ही मारने वाले न तक बन्दी हम दर्द बनकर आ पहुँचे। उस वीर को जब स्ट्रेचर पर डालकर ले जाने लगे तब जाते २ उसने अपने साथियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि 'साथियो! मैं तो जा रहा हूं। पता नहीं बचूं या नहीं परन्तु आप लोग मेरे विषय में कोई चिंता न करना, जिस काम के लिये आये हो उसे पूरा करने में प्राणपण से लगे रहना। इतना कह ही पाया था कि वे लोग उसे अस्पताल की ओर ले चले। वहां भी हमारी आंखों के आगे ही रात्रि के १-३० बजे उस वीर ने राष्ट्र भाषा के लिये अपने वतन से दूर अपना जीवन होम दिया। हम उस महानिधि को गवां कर खाली हाथ वहां से लौटे। उस वीर का बलिदान कैरोंशाही के माथे का अमिट कलंक है और देश के युवक के लिए एक नवजीवन देने वाला। हम इस अवसर पर सोचें कि आज हम उस राष्ट्र भाषा के लिये क्या कर रहे हैं? हमारी आंखों के आगे राष्ट्रभाषा का अपमान हो और हम चुप्पी साधे रहें क्या यह उस वीर के बलिदान के साथ खिलवाड़ करना नहीं? अत: आर्यो! चेतो और उस वीर की भावनाओं को क्रियात्मिक रूप देकर उसका वास्तविक श्राद्ध तथा बलिदान दिवस मनाओ।

संस्कृत-माता की पुकार

(१)

मैं देव-वाणी वेद-वाणी, संस्कृत-माता।
युगों २ से हूं सब धर्मों की मैं त्राता॥
ऋषि-समूह मुझ से ही था ज्ञान पाता।
आज मेरी दुर्दशा पै तरस न आता?

(२)

आज अपना राज्य, अपनी ही सरकार।
फिर भी नहीं मुझे जीने का अधिकार॥
सकल-ज्ञान-शाखाओं की हूं मैं आधार।
फिर क्यों सूना-सून आज मेरा दरबार?

(३)

हिन्दी आदि भाषाओं को मैंने जन्म दिया।
दिल-जान से जिनका पालन-पोषण किया॥
उन्हीं ने आज मेरा आसन छीन लिया।
अरे जालमों! मेरा गला क्यों घोंट दिया?

(४)

अब भी यदि आप प्रचार में जुट जाएं।
अपने भावी-बच्चों को संस्कृत पढ़ायें॥
फिर कोई सरकार को मेरा हाल सुनाएं।
इस तरह डूबती नैया को पार लगाएं॥

(५)

नहीं तो ऐसा जमाना है आना।
भारत से मेरा नाम है मिट जाना॥
रोकर है फिर सब ने पछताना।
तब हाथ तुम्हारे कुछ नहीं आना॥

बलदेवराज एम. ए.(संस्कृत)अम्मामालिया नगर मद्रास

सम्पादकीय—

आर्य जगत

वर्ष २५] रविवार २०२२, २२ अगस्त १९६५ [अंक ३५

वीरभावना भर दो

राष्ट्र की उन्नति के लिए यह आवश्यक है कि उसकी जनता में वीरता की भावनाएं भरी हुई होनी चाहिए। वास्तव में देश की रक्षा वीरता के विचारों से ही होती है। भावना देश के महान् जीवन के लिए संजीवनी का काम किया करती हैं। भावनाओं से राष्ट्र ऊंचा भी उठता है और नीचे भी गिरता है। जिस जनता में भावना जागती हैं वह समाज या राष्ट्र भी भली भांति जागता है, कभी मर नहीं सकता। भावना का ही तो दूसरा नाम जीवन है। भावना मर जाये तो सारा देश जीता भी मृतक समान है। इसी लिए भारतीय जनता ने अपने पुरातन तथा नूतन महान् कवियों से सदा प्यार किया है। वीरता भरे गानों का सम्मान किया। वीर पुरुषों की जीवनियों को अपने जीवन में प्राणों से भी अधिक मूल्य वाला समझा है। उनको युग पुरुष कहा गया है।

आज भारत के चारों ओर भय का वातावरण पैदा किया जा रहा है। विशेष कर इन दिनों जम्मू काश्मीर में सीमारेखा को तोड़ कर शत्रुओं ने शस्त्रों से भरपूर जो आक्रमण किया है, उस से प्रत्येक देशवासी की आंखें खुल जानी चाहिएं। अभी रण कच्छ समझौता के हस्ताक्षरों की स्याही भी सूखने नहीं पाई कि शत्रुओं ने दल के रूप में काश्मीर के प्रदेश में किस भीषणता से घातक आक्रमण करके शांति को भंगकर दिया है। यदि हमारी सेना के वीर जवान सतर्क न होते तो कितनी बड़ी हानिकी सम्भावना होती। पत्रों में आक्रमण-कारियोंके पकड़े जाने के बाद चित्रों को तथा पास छिपाए हुए टायम बमोंको देख कर अवस्था की गम्भीरता का अनुमान किया जा सकता है। शत्रु तो [illegible] शत्रु है। [illegible] शान्ति प्रिय राष्ट्रीय नेता कितना नरमी का सद्व्यवहार करते रहें पर शान्ति प्रियता की भी कोई सीमा होती है। भारत ने बहुत बार सर्पों को दूध पिलाकर देख लिया कि क्या परिणाम निकला। भारतीय युग पुरुष राम नीति एवं कृष्ण सरणी पर जब तक देश चलता रहा देश के जीवन में शांति रही। ज्यों ही हमारा मार्ग बदल गया, तभी देश को नाना विधि संकटों का सामना करना पड़ा। बिल्ली को देखकर आंखें बन्द करने वाले कबूतर की नीति जब उसे स्वय नहीं बचा सकती तो उस नीति पर चलने वाला राष्ट्र कैसे बच सकता है? भारतीय वीरों ने यह निर्बल नीति नहीं अपनाई थी। वीर राम ने राक्षसों के साथ तथा चक्र वाले कृष्ण ने शिशुपाल व कौरवों के साथ जो व्यवहार किया था—उस के सिवाय आज के युग में और कोई भी चारा नहीं है अर्जुन के विचारों में वीर भावना का शंख फूंका था। उसी वीर भावना ने कायर विचारों वाले पार्थ को वीरता का प्रतीक बनाकर कौरव दल से जूझने वाला बना दिया था। आज भी राष्ट्र के अर्जुन के विचारों में वीर भावों के शंख फूंकने का समय आ गया है। इस विषम समय में अपने-अपने मत भेदों को भुलाकर वीरता के भावों से भरकर भारत माता के मान मन्दिर का अपमान करने वाले इन आक्रमणकारियों को ऐसी मार दो कि इन में से एक भी बचकर न जाने पाये। आर्यसमाज वीर सम्मेलन बुलाकर जनता का नेतृत्व करे। —त्रिलोकचन्द्र

महात्मा हंसराज जी का जीवन

महात्मा हंसराज पंजाब के निर्माता थे। उनके जीवन से अनेक जीवन बने, चमके तथा सेवा पर आगे बढ़ते गये। महापुरुषों का जीवन एक प्रेरणा, चेतना का महान स्रोत होता है। जीवन से नया जीवन मिलता है। ऐसे महात्मा स्वयं ही संस्था तथा आन्दोलन होते हैं। स्वर्गीय महात्मा हंसराज जी की जीवन घटनाओं को लेकर आर्यजगत के तपस्वी सन्त महात्मा आनन्द स्वामी जी ने महात्मा हंसराज नाम बड़ी ही सुन्दर भाषा में पुस्तक लिखी। वह भी सभा द्वारा छपी। महान फिलास्फर डा० दीवानचन्द जी कानपुर ने भी महात्मा जी का जीवन अपने ढंग का सुन्दरता के साथ लिखा है। इन से जनता को बड़ा लाभ पहुंचा है। ये दोनों पुस्तकें हिन्दी में प्रकाशित हुई हैं। अब एक तीसरी पुस्तक महात्मा हंसराज नाम से अंगरेजी में सभा की ओर से अभी २ प्रकाशित हुई है। उसके लेखक हैं आर्यजगत के प्रसिद्ध इतिहास के विद्वान प्रिंसिपल श्रीराम जी शर्मा M. A.। आपने अपना सारा जीवन डी. ए. वी. कालेजों की सेवा में लगा दिया। शोलापुर के दयानन्द कालेज से आप सेवामुक्त होकर ऊना अपने घर पर रहते हैं। बहुत पहिले लाहौर में रहते हुए आपने आर्य प्रादेशिक सभा को महात्मा हंसराज नामक अंगरेजी में जीवन पुस्तक लिख कर दी थी। सभा ने उसे प्रकाशित किया था। अब उस पुस्तक में से संक्षिप्त करके डेढ़ सौ पृष्ठों की यह ललित अंगरेजी में पुस्तक तैयार कर सभा ने फिर प्रकाशित की है। सभा के माननीय पुस्तकाध्यक्ष विद्वान युवक प्रो० वेदप्रकाश जी मलहोत्रा एम. ए. ने सभा का यह विभाग सम्भाल कर चार चांद लगा दिये हैं। साहित्य के प्रकाशन में भी कमाल कर रहे हैं। यह सुन्दर इंगलिश में महात्मा हंसराज जी का जीवन प्रकाशित कराने में उनका ही सारा परिश्रम तपस्या है। पुस्तक बड़ी सुन्दर है। स्कूलों व कालेजों तथा इंगलिश पढ़ी जनता व युवकों के हाथों यह पुस्तक अधिक से अधिक संख्या में जानी चाहिए। हम सभा को इस प्रकाशन पर तथा मान्य प्रो० वेदप्रकाश जी को इस सत्प्रयास पर बधाई देते हुए समाजों संस्थाओं एवं युवकों से कहते हैं कि सभा के द्वारा इस इंगलिश भाषा में प्रकाशित महात्मा हंसराज जी के जीवन चरित्र को अवश्य एक बार पढ़ें, अपने-अपने मित्रों तथा संस्थाओं तक भी पहुंचाएं। महापुरुषों के जीवन से बहुत कुछ प्राप्त होता है। पुस्तक आर्य प्रादेशिक सभा जालन्धर से मिलती है—सं०

——

शहीद और साम्प्रदायिकता

(आर्य नेता कैप्टन केशवचन्द जी प्रधान का वक्तव्य)

राष्ट्र को अपने बलिदानी वीरों पर सदा मान होता है। आर्य-समाज के मान्य नेता कैप्टन श्री केशवचन्द जी प्रधान आर्य केन्द्रीय सभा अमृतसर राजनीतिक क्षेत्र के बड़े प्रसिद्ध नेता होते हुए भी आर्य समाज के कर्मठ अग्रणी हैं। इस ८४ वर्ष की अवस्था में भी उनके जीवन में कितना धर्म-प्रेम वेद निष्ठा तथा समाज सेवा का भव्य भाव भारा है, यह देख कर श्रद्धा से सिर झुक जाता है। अमृतसर में आर्यसमाज के प्रत्येक काम में वह अग्रणी हैं। समाज को उन पर गर्व है। प्रभु उनको स्वस्थ रखें। इस वक्तव्य में बड़ा आवश्यक पत्र दिया है जिन से उनकी देश-भक्ति का सच्चा परिचय मिलता है—सं०

श्रीयुत प्रधान,
म्युन्सिपल कमेटी, अमृतसर।
श्री मन्नमस्ते,

निवेदन है कि केन्द्रीय आर्य सभा, अमृतसर (**Central Organization of the Arya Samajas of Amritsar**) को यह जान कर प्रसन्नता प्राप्त हुई कि म्युन्सिपल कमेटी, अमृतसर ने नगर के कई महत्वपूर्ण स्थानों पर राष्ट्र के अमर शहीदों की प्रस्तर-प्रतिमाये (**Statues**) लगाने का निश्चय किया है। देश की बलिवेदि पर आत्मार्पण करने वाले राष्ट्र-पुरुषों की पुण्य-स्मृति के यह चिन्ह भारत की नई सन्तति को सदा राष्ट्र-चेतना और कर्तव्य-प्रेरणा देते रहेंगे। इस दृष्टिकोण से म्युन्सिपल कमेटी अमृतसर के इस निर्णय की यह सभा भूरि-भूरि प्रशंसा करती है।

इसी संदर्भ में केन्द्रीय आर्य सभा, अमृतसर का यह भी निश्चित अभिमत है कि राष्ट्र-पुरुष राष्ट्र के किसी एक दल या एक सम्प्रदाय की संकुचित सीमा में नहीं होते, अपितु समूचे राष्ट्र की सामूहिक सम्पत्ति होते हैं और उनको सदा इसी सामूहिक दृष्टि से देखा जाना ही उचित है। हमें यह जान कर दुःख हुआ है कि किसी स्थानीय संस्था ने इस राष्ट्रीय महत्व के कार्य को भी साम्प्रदायिक दृष्टि-कोण से देखते हुए म्युन्सिपल कमेटी अमृतसर को यह सुझाव दिया है कि शहीद भक्त सिंह की प्रस्तर-प्रतिमा (**Statues**) को ऐसे रूप में बनवाया जाए जिस रूप में जनता का कोई भी व्यक्ति उसे शहीद भक्तसिंह समझ ही न सके। यह एक ऐतिहासिक तथ्य है कि शहीद भक्तसिंह का जन्म एक आर्य परिवार में हुआ—उनकी शिक्षा दीक्षा आर्य संस्था में हुई—उनका यज्ञोपवीत संस्कार एक आर्य पुरोहित ने करवाया—उनके पूज्य पिता और पितामह लाहौर में आर्यसमाज के निष्ठावान् उपदेशक रहे और इसी कारण क्रान्तिकारी दल में श्री भक्तसिंह को शुरू में लाहौर के उपदेशक के साकेतिक नाम से ही पुकारा जाता था और साथ ही वह अपने क्रांतिकारी जीवन में प्रायः आर्य समाजों में ही गुप्त रूप से निवास किया करते थे—परन्तु यह सब होते हुए भी आर्य समाज एक और शहीद की पवित्र स्मृति में इन तथ्यों को भी गौण रूप देता है और उस महान् क्रांतिकारी देशभक्त को समूचे राष्ट्र की सामूहिक समझता है। इस सभा की यह निश्चित सम्मति है कि शहीद भक्तसिंह की प्रस्तर-प्रतिमा उसी रूप में होनी चाहिए जिस रूप में वह असम्बली में बम्ब फैंकने की घटना के पश्चात् एक वीर पुरुष के रूप में जनता के सम्मुख आए और जिसमें भारतीय जनता ने उन्हें अपने मन-मन्दिर में स्थान देकर अपनी स्थायी श्रद्धा का पात्र बनाया। इस विशाल देश के कोने-कोने में श्री भक्तसिंह का यही रूप—सिर पर फैल्ट धारण किए हुए—ही चिर परिचित है और सबकी निष्ठा का केन्द्र है। इसी रूप में उनकी ऐतिहासिकता है। गत ३६ वर्षों से सभी समाचार पत्रों, पुस्तकों और विज्ञापनों इत्यादियों में भी उनको सदा इसी रूप में ही स्मरण किया जाता रहा है। इस अमर हुतात्मा की पुण्य-स्मृति में देश के भिन्न-भिन्न स्थानों पर इन को जो प्रस्तर-प्रतिमायें या चित्र-प्रतिमायें प्रस्थापित हैं, वह भी उनके इसी रूप की प्रामाणिकता को परिपुष्ट करती हैं। इस प्रामाणिक ऐतिहासिक प्रेरणा के स्वरूप के संकुचित सांप्रदायिक दृष्टिकोण के दूषित सम्पर्क से परिवर्तन कर देने का कोई भी प्रस्ताव न केवल उस अमर हुतात्मा का ही अपमान है अपितु समस्त राष्ट्र का अपमान है। अतः केन्द्रीय आर्य सभा, अमृतसर म्युन्सिपल कमेटी अमृतसर के माननीय प्रधान तथा जनता के निर्वाचित प्रतिनिधि म्युन्सिपल कमिशनरों को उनके कर्तव्य का ध्यान दिलाते हुए अनुरोध करती है कि इस विषय में सब प्रकार की सांप्रदायिकता से रह-रह कर राष्ट्र की प्रेरक विभूतियों की प्रतिमाओं का निर्माण उनके प्रामाणिक चिरपरिचित रूप में ही करे और शहीद भक्तसिंह की प्रस्तर-प्रतिमा उनके फैल्ट वाले रूप में ही प्रस्थापित की जाये।

★

आर्यसमाज यमुना नगर में वेद सप्ताह

आर्य प्रादेशिक सभा के साथ सम्बन्धित समाजों में आर्यसमाज माडलटाऊन यमुनानगर (अम्बाला) का समाज भी बड़ा जागता समाज है। वहां पर शिक्षा के प्रसार रूप डी. ए. वी. हायर सैकण्डरी स्कूल, डी. ए. वी. कालेज फार गर्ल्स, शिशु पाठशाला, ड. ए. वी. स्कूल शूगर मिल आदि अनेकों शिक्षण संस्थाएं विद्या प्रचार में लगी हैं। आर्यसमाज भी प्रचार कार्य में खूब काम करता है। सेठ कृष्णाचन्द्र जी का सौम्य गम्भीर स्वभाव, श्री मनोहर लाल जी साहनी का सभा प्रेम लग्न, श्री जगन्नाथ जी कपूर का प्रभाव, श्री दीनानाथ जी चण्डोक का उत्साह, श्री कंवरभान जी का यज्ञ प्रेम, स्त्री समाज की धर्म श्रद्धा तथा समाज के सारे भाई बहिनों की समाज सेवा के प्रति रुचि प्रशंसनीय है। सभा के कार्यक्रम पर मुझे वहां वेद सप्ताह की कथा पर जाना हुआ। प्रातःकाल श्री पं० रक्षपाल जी शास्त्री की देखरेख में यज्ञ चलता था। रात को कथा प्रचार होता था। सभा के ठाकुर दुर्गासिंह जी तूफान व श्री नथूराम जी भी साथ थे। खूब भजनों का भजनों का प्रवाह चला। सप्ताह भर सवेरे व रात खूब प्रचार हुआ। उपस्थिति देखकर तो मन बड़ा प्रसन्न होता था। सभा को १००) रु० वेद प्रचार में मिले— संपादक

आर्य युवक समाज हिसार का चुनाव

अध्यक्ष—श्री पं० हरिदत्त जी शास्त्री, उपाध्यक्ष—श्री ओमप्रकाश जी, मंत्री—श्री राजेन्द्र मोहन जी, उपमंत्री—सज्जन कुमार जी संधीर कोषाध्यक्ष—श्री सुखदेवजी आर्य, पुस्तकाध्यक्ष—श्री हरिश्चन्द्र जी।]

सज्जन कुमार संधीर
उपमंत्री आ० यु० समाज

डा० भगवतशरण उपाध्याय का वेद विषयक भ्रम

(ले०—श्री प्रो० भवानीलाल जी भारतीय एम० ए०)

डा० भगवतशरण उपाध्याय एक अन्तराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विद्वान् हैं। आपने संस्कृत तथा वैदिक वाङ्मय का विशिष्ट अध्ययन किया है। वेदों के विषय में आप की जानकारी कैसी है, यह हमें इस लेख से ज्ञात हो जाएगा। आपके सांस्कृतिक निबंधों का एक संग्रह भारतीय ज्ञानपीठ वाराणसी से सन १९६० में प्रकाशित हुआ। इसमें आपके ऋग्वेद विषयक ६ निबंध संग्रहीत हुए हैं। (१) ऋग्वेद के रौमेन्टिक ऋषि (२) ऋग्वेद के समन (३) ऋग्वेद में जुवारी (४) ऋग्वेद में अगम्यागमन (५) ऋग्वेद में विधवा, सती और नियोग (६) ऋग्वैदिक युग में बहु-पत्नी तथा बहु-पति विवाह। शीर्षकों से ही जाना जा सकता है कि ये निबंध किस कोटि के होंगे।

डा० उपाध्याय का वेद का अध्ययन उस तथाकथित ऐतिहासिक प्रणाली (**Historical Method**) का आश्रय लेकर चलता है जो वेद को पुराकालीन आर्यों के जीवन तथा उनकी सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक परिस्थितियों का विवरण उपस्थित करने वाले ग्रन्थ मानते हैं। पाश्चात्य वेद विपश्चितों द्वारा आविष्कृत वेदाध्ययन की यह प्रणाली उस धार्मिक परम्परा की सर्वथा उपेक्षा ही करती है जो यह धारणा लेकर चलती है कि वेद ईश्वरीय ज्ञान है जो सृष्टि के आदिकाल में ऋषियों के हृदय में आविर्भूत हुआ था। हम उस प्रणाली के औचित्य या अनौचित्य पर कुछ भी न कहकर इतना ही निवेदन करना चाहते हैं कि किसी ग्रन्थ का अध्ययन हम चाहे किसी दृष्टिकोण से करें हमें उसके सम्बन्ध में प्रचलित अन्य परम्पराओं, मतों एवं विश्वासों के प्रति सहानुभूति धारणा तो रखनी ही पड़ेगी। हमें यह स्वीकार करने में कुछ भी आपत्ति नहीं कि वेद में जहां उच्च कोटि के धार्मिक और आध्यात्मिक सिद्धांतों का उल्लेख किया है वहां मनुष्य के लिए उपयोगी सांसारिक जीवन को किस प्रकार व्यतीत किया जाए इसके सम्बन्ध में भी आवश्यक निर्देश उपलब्ध होते हैं। परन्तु इस प्रकार के संकेतों के आधार पर ही मनमानी कल्पनाएं और नूतन स्थापनाएं नहीं की जा सकतीं।

द्वितीय बात यह है कि वेद में ऋषियों, राजाओं तथा अन्य व्यक्तियों के जो तथाकथित नाम उपलब्ध होते हैं वे वस्तुतः किन्हीं व्यक्ति विशेषों के नाम हैं या सामान्य संज्ञाएं हैं, यह भी एक विवादास्पद तथा अनिर्णीत विषय है। प्राचीनकाल में वेदार्थ की जो नैरुक्त प्रक्रिया प्रचलित थी वह सभी वेद में प्रयुक्त शब्दों के यौगिक तथा धातु मूलक अर्थ करने पर जोर देता था। महर्षि यास्क के अनुसार सभी शब्द धातुओं से बनते हैं अतः उनका रूढार्थ न लेकर धातुज अर्थ ही लिया जाना चाहिए। यद्यपि मैक्स-मूलर, मैकडानल्ड आदि पाश्चात्य तथा सिद्धेश्वर वर्मा, राजवाड़े आदि भारतीय विद्वानों ने वेदार्थ में निरुक्त की महत्ता अभी सर्वोपरि रूप से स्वीकार नहीं की है, परन्तु यह स्पष्ट है कि इन प्राचीन प्रणालियों की सम्पूर्ण रूप से अवहेलना करने से भी काम नहीं चलेगा! जब मनुस्मृति में लिखा है कि—

सर्वेषां तु स नामानी,
कर्माणि च पृथक्-पृथक्।
वेद शब्देभ्यः एवादौ,
पृथक् संस्थाश्च निर्ममे॥

अर्थात् संसार में जितने नाम विभिन्न वस्तुओं को दिये जाते हैं वे वेद के शब्दों से लेकर ही दिये जाते हैं। तो हम यह कैसे मान लें कि लाखों वर्ष पूर्व मनु ने वेद के विषय में जो मन्तव्य प्रकट किया वह मिथ्या था और हमारे आज के विद्वान् जो इन दिव्य और शाश्वत ग्रन्थों के आधार पर अपनी स्वकल्पित धारणाएं व्यक्त कर रहे हैं वे सही हैं।

अब हम डा० उपाध्याय के निबंधों की आलोचना में प्रवृत्त होते हैं। अपने प्रथम निबंध मे उपाध्याय जी ने श्यावाश्व, कक्षीवान् और विमदनाम के तीन ऋषियों की प्रणय कथाओं का वर्णन किया है। इसी प्रसंग में आप ने शशीयसी नामक एक अन्य राजकुमारी के प्रणय प्रसंग का भी उल्लेख किया है। कक्षीवान् का रोमशा नामक राजकन्या से विवाह का उल्लेख करने के अनन्तर ऋग्वेद मं० १० सूक्त ४० मंत्र ५ के आधार पर इन्हीं ऋषि का घोषा नाम की एक अन्य मंत्र द्रष्ट्री ऋषिका से विवाह का वर्णन किया है विमद और कमधु को तो आप ने ऋग्वेद काल के रोमियों एवं जूलियट की संज्ञा दी है। इस प्रकार की मनगढ़न्त कथा कहानियों का मूल वेद में देखने वाले विद्वानों के विषय में क्या कहा जाए?

अपने द्वितीय लेख में डा० उपाध्याय ने ऋग्वेद के आधार पर एक मनोरंजक मेले का उल्लेख किया है जिसे वे 'समन' कहते हैं। उन के कथन के अनुसार इस मेले में स्त्रियां विशेष कर कुमारियां वर की खोज में जाती थीं। उन्होंने इन समारोहों को 'कार्निवाल' के तुल्य माना है जो समाज के बंधन से मुक्त स्त्री पुरुषों के लिये अभिसार स्थल का काम देते थे। उपाध्याय जी ने अपने मत की पुष्टि में जर्मन पं. पिशेलको उद्धृत किया है और उसका प्रमाण देकर ऋग्वेद में उद्दाम यौन स्वातन्त्र्य के दर्शन किए हैं। संयमित दाम्पत्य जीवन का उपदेश देने वाले सिद्धान्तों की अवज्ञा कर यदि यूरोपीय पण्डित उसमें स्वच्छन्द वासना के दर्शन करें तो यह उनके पूर्वाग्रह का द्योतक है। वस्तुतः ऋग्वेद में इस प्रकार के क्रीड़ा समारोहों का उल्लेख है, यह भी तो साध्य कोटि में ही है। यूरोपीय विद्वानों से यह आशा करना कि वे वेद के सत्यार्थ को प्रकट करेंगे, दुराशा मात्र ही है।

ऋग्वेद के दशम मण्डल में जो द्यूत सूक्त आया है उसके आधार पर डा० उपाध्याय ने जुवारी का विवरण प्रस्तुत किया है उससे यह तो ज्ञात होता है कि जुआ खेलने की प्रथा कितनी भयंकर और हानिकर है। वस्तुतः वेद के इस उपदेश द्वारा कि 'अक्षैर्मा दीव्य कृषिमित कृषस्व' अर्थात् हे मनुष्य तू जुआ मत खेल, खेती कर वही तुझे धन धान्य प्रदान करेगी। परमात्मा मनुष्य के द्यूत क्रीडा जैसे भयंकर व्यसन से बचने का उपदेश दे रहा है। परन्तु यह द्यूत सूक्त किसी इतिहास का द्योतक नहीं है और न इसके आधार पर पुराकालीन आर्यों को द्यूत क्रीडा का प्रेमी ही सिद्ध किया जा सकता है।

डा० उपाध्याय ने ऋग्वेद के दशम मण्डल के यमयमी सूक्त का विवरण उपस्थित करते हुये इस प्रकरण से अगम्यागमन सिद्ध करना चाहता है। वस्तुतः यमयमी सूक्त एक अत्यन्त रहस्यपूर्ण सूक्त है। ये यम और यमी कोई साधारण मानव मानवी नहीं हैं।

(क्रमशः)

आर्यसमाज और वेद प्रचार सप्ताह

ले. वेदपथिक पं. धर्मवीर जी आर्य झंडाधारी सराय सहेला नई देहली—५

****

(गतांक से आगे)

वेद प्रचार सप्ताह हम रस्मी तौर पर न मनायें अपितु अपना और अपने परिवार का हम जीवन वेदोक्त बनायें इसी में अपना और विश्व का कल्याण निहित है।

महर्षि दयानन्द तथा आदि सृष्टि के महर्षियों की आज्ञाओं का पालन करके सोलह संस्कारों को करने का हम व्रत धारण करें। संस्कार शून्य जीवन से देश का और अपना कल्याण कदापि नहीं होगा।

आओ आज हम वैदिक युग के निर्माण का महा व्रत धारण कर के महर्षि देव दयानन्द के स्वप्नों को साकार बनायें। देश और विदेशों की समस्त आर्य समाजें क्रियात्मिक रूप से वेद प्रचार कार्य में यदि जुट जायें तो भारत की राजधानी दिल्ली नगर में वेद विश्वविद्यालय की योजना को सफल बना कर विश्व की समस्त राष्ट्र भाषाओं में वेदों का अनुवाद और प्रकाशन का कार्य प्रारंभ किया जा सकता है। विश्वकी समस्त राष्ट्र भाषाओं में वेदों के प्रचार के लिये उपदेशक तैयार करना हमारा लक्ष है। हजारों उपदेशकों के लिये शिक्षा, भोजन का तथा छात्रावास व विद्यालय का प्रबन्ध करना है।

यदि सार्वदेशिक सभा तथा समस्त आर्य प्रतिनिधि सभायें आर्य समाजें और आर्य भाई बहिनें मिल कर वेद प्रचार की विश्व व्यापी योजना की आवश्यकता पर विचार करें तो वेद प्रचार सप्ताह मनाना सफल होगा।

भारतीय संस्कृति और सभ्यता की रक्षा के लिये वैदिक धर्म का झंडा हाथ में लेकर बीड़ा उठाना होगा। अपना आचार विचार व्यवहार चाल-ढाल रंग रूप वेदानुकूल बनाना होगा।

शहीदे आजम श्रद्धेय स्वामी श्रद्धानन्द के समान शुद्धि का शैदाई और दिवाना बनना होगा।

अमर शहीद हुतात्मा पं० लेखराम का अंतिम शब्द हृदय-पटल पर अंकित करके तहरीर और तकरीर के द्वारा विश्व के ओर छोर में वैदिक विचारों के व्यापक प्रचार के लिये आर्यसमाज को शास्त्रार्थों की धूम मचानी पड़ेगी।

वेद विरोधियों को शास्त्रार्थ में परास्त करके उन्हें आर्य बनाना होगा। घर-घर में वेद ध्वनी वेद चर्चा का शंखनाद आज आर्य समाज को करना होगा। आर्य समाज की सारी शक्तियों को केन्द्रित करके विश्वव्यापी वेद प्रचार के ही कार्य मे लगाने का आज व्रत करना होगा।

विश्व वंदनीय महर्षि दयानन्द की परम पवित्र ओ३म् पताका को धारण करके अपने जीवन में व्याप्त बुराईयों को तथा राष्ट्र व्यापी पाप पाखड अविद्या अन्धकार अनाचार को दूर भगा कर नवयुग का वैदिक युग का नव निर्माण करना होगा।

ऐ आर्य बन्धुओ! महर्षि दयानन्द के सच्चे सैनिक बनकर विश्व में वैदिक स्वराज्य स्थापित करने का शुभ संकल्प धारण करो। आज वेद प्रचार सप्ताह के पावन पर्व पर विश्व के मानव समाज के नाम महर्षि दयानन्द का दिव्य सन्देश यही है कि बनो आर्य और जगत को वेदामृत का पान करा कर शुद्धि का बिगुल बजाकर आर्य बना दो। आज से वेद प्रचार हित ही हो जीवन और मरण हमारा। जीवन के अंतिम क्षण तक हम वेद प्रचार करने का महाव्रत धारण करें।

डी. ए. वी. कालिज अंबाला नगर की

आर्य युवक समाज का उद्घाटन

वीरवार ५-८-६५ को श्री भगवानदास जी एम. ए. प्रिंसिपल डी. ए. वी. कालिज अंबाला के कर कमलों द्वारा 'विद्यार्थीभवन' के छात्र वास में उद्घाटन समारोह सम्पन्न हुआ। प्रो० वेदप्रकाश जी वेदालंकार प्रधान, श्री धर्मवीर जी मंत्री तथा शेरसिह जी उपमंत्री निर्वाचित हुए।

साधारण कार्यवाही के बाद श्री वी. डी- विद्यालंकार जी ने आचार्य और शिष्य का पारस्परिक संबंध पर सारगभित संक्षिप्त-सा भाषण दिया। पश्चात श्री प्रिंसिपल महोदय ने "The Charms of the hostel life" पर अपने जीवन के अनुभव के आधार पर छात्रावास की उपयोगिता पर भाषण दिया।

प्रो० वेदप्रकाश जी वेदालंकार ने आर्य युवक समाज की स्थापना के उद्देश्यों का विशद रूप से वर्णन किया। शान्ति पाठ के साथ बैठक विसर्जित हुई।

वेदप्रकाश वेदालकार
प्रधान आर्य युवक समाज

आर्यप्रादेशिक सभा का वेद प्रचार कार्य

श्री पं. त्रिलोकचन्द्र जी शास्त्री बी. ए, ठा. दुर्गासिंह जी तुफान, व नत्थूराम जी के द्वारा आर्य समाज माडलटौन यमुना नगर का १२ अगस्त तक वेद सप्ताह का कार्य क्रम समाप्त हुआ। यहां से १००/- वेद प्रचारार्थ मिला। श्री शास्त्री जी १३ अगस्त को आर्यसमाज लारेंस रोड में वेद सप्ताह के कायक्रम पर पधार गए हैं। बड़े उत्साह से कार्य सम्पन्न हो रहा है।

—श्री पं. ओमप्रकाश जी महोपदेशक सभा, वेद सप्ताह के उपलक्ष्य में आर्यसमाज लक्ष्मणसर अमृतसर पधार चुके हैं। बृहद यज्ञ व कथा का कार्यक्रम प्रतिदिन प्रातः चल रहा है। सायं लाहौरी दरवाजा के बाहिर वाल्मीकी आश्रम में सत्संग का कार्यक्रम सम्पन्न हो रहा है। जिसमें मनोहर भजनों के साथ-साथ पं० जी की अमृत वर्षा भी होती रहेगी।

—श्री प्रभुदयाल जी आर्य प्रभाकर मण्डली समेत भवानी पहुंचे। वहां रविवार के सत्संग के अतिरिक्त दैनिक सत्संगों में भी प्रचार किया। भवानी नया बाजार की समाज ने ५१/- नोटों के बदले महात्मा हंसराज जन्म-शताब्दी के लिए प्रदान किए। यहां से बापोड़ा में प्रचार किया १०/- प्रचारार्थ प्राप्त किए। अब यह मण्डली ११ अगस्त को टिटोली पहुंच गई है, और ६ से १२ सितम्बर तक यज्ञ का प्रबन्ध कर रही है।

दयानन्द साल्वेशन मिशन होशियारपुर के समाचार

ज्ञानी रामसिंह जी ने नक्का जिला अमृतसर में ६० स्त्री पुरुषों को वैदिक धर्म में प्रविष्ट किया। और पं० तोताराम जी ने केयूर जिला गढ़वाल में ३३६ विधर्मियों को शुद्ध करके पुनः हिन्दू जाति का अंग बनाया।

—साल्वेशन मिशन के पास कुछ छात्र वृत्तियां स्कूल व कालिज के गरीब छात्रों को देने के लिए मौजूद हैं। इच्छुक छात्र अपने हैडमास्टरों प्रिंसीपलों की मारफत प्रार्थना पत्र प्रधान दयानन्द साल्वेशन मिशन हुशियार को भेजें।

रामदास प्रधान मिशन

पूज्या माता मेलादेवी जी के निधन पर

निम्न समाजों ने शोक प्रस्ताव पास करके उनकी आत्मा की शांति तथा परिवार को धैर्य प्रदान करने की प्रभु से प्रार्थना की गई।

आर्यसमाज हिसार, आर्यसमाज माटुंगा बम्बई, आर्यसमाज रैनावाड़ी (श्रीनगर)।

देवीचन्द कालिज (ऊना) के लिए दान

(८.८.६५ तक ऊना डैपुटेशन द्वारा संगृहीत)

डाक्टर मिलखी राम जी, नंगल टाऊनशिप	२०००/-
प्रिंसिपल श्रीराम जी, ऊना	१२००/-
ला० सोहनलाल जी कपिल, ऊना	१००१/-
ला० ताराचन्द जी एडवोकेट ,,	१०००/-
ला० सन्तकुमार जी एडवोकेट ऊना	१०००/-
ठा० कशमीरासिंह जी ,, ,,	१०००/-
ला० अमृतलाल जी ,, ,,	१०००/-
पं० कर्मचन्द जी ,, ,,	१०००/-
ला० शिवरामदास चेतल जी ,,	१०००/
पं० सन्ध्यालाल जी एम० ए० रायसरी	१०००/-
ला० रामरखामल जी, अर्जीनवीस ऊना	१०००/-
वज़ीरचन्द जी, ऊना	१०००/-
पं० राजाराम जी वकील, ऊना	५००/-
श्रीमती रलीदेवी जी कपिल ऊना	५०१/-
(ला. रामप्रकाश बलदेवचन्द द्वारा)हकीम ऊधमसिंह जी बहल	५०१/-
ला० धनपतराय जी अर्जीनवीस ऊना	५००/-
ला० सन्तराम जी ,, ,,	५००/-
डा० मनीराम जी ,,	५००/-
पं० विश्वम्भरदास जी कलसेड़ा	५००/-
पं० शांतिस्वरूप जी मुख्याध्यापक ,,	५००/-
चौ० हज़ारी लाल जी एडवोकेट ,,	५००/-
ला० सोहनलाल जी सुनार ,,	५००/-
प्रिंसिपल रामदास जी (Ex.M,P.) होशियारपुर	५००/-
,, रलाराम जी M. A., M. L. A. ,,	५००/-
ला० रामस्वरूप जी सोनी एडवोकेट ऊना	५००/-
पं० हंसराज जी रीटायर्ड डै० कलैक्टर चड़तगढ़	५००/-
चौ० मेलाराम जी पैंशनर गलुआ	५०१/-
ला० रामरखामल जैशीराम जी सराफ ऊना	५००/-
पं० खिरिराम जी पैंशनर ,,	५००/-
मि० रणबीरसिंह जी सैक्रेटरी यूनियन ,,	५००/-
श्रीमती शान्तिदेवी जी सुपुत्री पं० राजाराम जी ,,	५००/-
चौ० सुखदेवसिंह जो फांडा एडवोकेट ऊना	५००/-
स० हरीपसिंह जी बजाज ,,	५०१/-
श्री सुभाषचन्द शर्मा ,,	४००/-
स० हरनामसिंह, इन्द्रजीतसिंहजी बजाज ,,	२५१/-
स० प्रतापसिंह जी ,, ,,	२५१/-
स० ओतसिंह जी ,, ,,	१२५/-
,, दयालसिंह जी ,, ,,	१२५/-
हकीम नरसिंह दास जी ,, ,,	१२५/-
ला० मदनलालजी, बी.ए.बी. एड. ,, ,,	२००/-
ला० जोगिन्दरसिंह जी, ऊना	१००/-
श्री दयानन्द जी (सुपुत्र मा. दानचन्द जी)	१००/-

चौ. गुरदासराम जी हलवाई ऊना	१०१/-
ला० किशनचन्द जी बुकसैलर ,,	१०१/-
ला० रामआसरामल अमृतलाल जी मुख्तार ऊना	१०१/-
चौ. बंसीलाल जी राज ऊना	१०१/
ला० बद्रीनाथ जी कतना ,,	१०१/-
ठा० घुघरसिंह अनन्तराम जी (मलाहत) ऊना	१०१/-
स० गुरदित्तसिंह जी वेदी चण्डीगढ़	१०१/-
स० अमरसिंह हजूरासिंह जी पन्सारी, ऊना	१०१/-
ला० रौनक लाल जी अर्जीनवीस ,,	१०१/-
ला० रामआसरामल जयरथ, मुख्तार ,,	१०१/-
ला० योगराज एन-कपिल आयल मर्चेंटस ऊना	१०१/-
मा० रामरखामल द्वारा	१४०/-
प० रामरूप जी, जखेड़ा डा० रामनाथ जी बहती	१०१/-
पं० मोहनलाल जी एम० एल० ए० खड्ड	५१/-
ला० मेहरचन्द जी लोहे वाले ऊना	५१/-
ठा० सालिगराम जी ,, ,,	५१/-
ला० बलराम जी खज़ानची हलवाई ऊना	५१/-
श्री ज्ञानचन्द जी होटलवाले ,,	६०/-
मिस्त्री मेहरचन्द जी ,,	६०/-
ला० रामरखामल राधाकृष्णा जी आढ़ती ऊना	५१/-
ला० चेतराम मूलराज जी कपिल आढ़ती	५१/-
ला० अमृत सरयामल कपिल डिपोहोलडर ,,	५५/-
ला० सोहनलाल जी जीड़ सोडावाटर वाले ,,	५१/-
ला० भक्तराम जी सुनार ,,	५१/-
ला० बसन्तामल रामनाथ सूरी बर्तन वाले ,,	५१/-
ला० अविनाश कुमार ऊषा मशीन वाले ,,	५१/-
स० अवतारसिंह जी बजाज ,,	५१/-
स० अर्जुनसिंह जी ,, ,,	५१/-
ला० त्रिलोकीनाथ जी लोहे वाले ,,	५१/-
ला० मसरूमल जी भाहरी ,,	५२/-
ला० बिशनदास कर्मचन्द भाहरी ,,	५१/-
ला० बरकतराम ,, ,,	५१/-
स० हरदित्तसिंह दयाराम जी फल वाले ,,	३१/-
ला० केवलकृष्णा सोमनाथ दुकानदार ,,	३१/-
पं० गुरदासराम जी बजाज ,,	३१/-
श्री गरीबदास जी दुकानदार ,,	३१/-
डा० दयानन्द जी ,, ,,	३१/-
ला० बिहारीलाल जी दुकानदार ,,	३१/-
श्री राम हलवाई ,,	३१/-
स० सन्तसिंह जी पेण्टर ,,	२५/-
चौ० रामलोक जी हलवाई ,,	२५/-
श्री सुखदेव कौशल (H.M. Coly) ,,	२५/-
स० हरदयालसिंह जी बुक सैलर ऊना	२१/-
ला० हरजीराम जी जोड़ दुकानदार ,,	२१/-
ठा० रसीलाराम जी ,, ,,	२१/-

(शेष पृष्ठ ८ पर)

देवीर

ला० मदनलाल जी जौहरी	ऊना	
बाबा भक्तराम जी वेदी	,,	
श्री केवल कृष्ण जी हलवाई	,,	२१/-
श्री लंगन राम जी बिस्कुट वाले	,,	२१/-
ला० रामलाल जी मिहायन आढ़ती	,,	२१/-
चौ० धवखरचन्द जी सब्जी वाले	,,	२१/-
ला० रामस्वरूप रतनचन्द जी मुन्यार	,,	२१/-
स० जयवन्त सिंह जी हलवाई	,,	२१/-
स० सज्जन सिंह जी बजाज	,,	२१/-
श्री हरवंश लाल जी मुन्यार	,,	२१/-
ला० प्यारे लाल जी सुनार	,,	२१/-
ला० गुरबचन चन्द जी दुकानदार	,,	२१/-
डा० मंगतराम जी	,,	२१/-
श्री प्रीतम चन्द जी हलवाई	,,	२१/-
चौ० रैलुराम जी हलवाई	,,	१५/-
श्री दलीपसिंह प्रेमसिंह जी लेक्चरन	,,	११/-
श्री रतनसिंह हैडमास्टर	,,	११/-
श्री परमानन्द भक्तराम जी आढ़ती	,,	११/-
ला० कर्मचन्द लखानची फल वाले	,,	११/-
चौ० बृजलाल जी सब्जीवाले	,,	११/-
श्री बलदेवराज जी हलवाई	,,	११/-
ठा० पृथिवी सिंह जी होटल वाले	,,	११/-
चौ० सन्तराम जी आढ़ती	,,	११/-
ठा० रघुबीरसिंह जी बजाज	,,	११/-
चौ० धनिराम जी हलवाई	,,	११/-
ला० किशोरीलाल जी वेदी बजाज	,,	११/-
ला० हरिचन्द जी किरयाना मर्चेण्ट	,,	११/-
ला० ईश्वरदास जी द्वारा हमीरामल बिशनदास ऊना		११/-
ला० सुन्दरराम मंगतराम जी बसाती ऊना		११/-
ठा० जगतराम जी सोडावाटर वाले ऊना		११/-
ला० धनिराम जी सराफ ऊना		११/-
ला० गुरदास जी पुरी बजाज ऊना		११/-
श्री दौलतसिंह जगतसिंह जी	,,	११/-
श्री बसन्तराम जी दुकानदार	,,	११/-
श्री गुरदासराम जी सुनार	,,	११/-
श्री मंगतराम जी दुकानदार	,,	११/-
कुल जमा (इस से नीचे की राशियों का)		१३७/-
		५/-

दिल्ली डैपुटेशन द्वारा संगृहीत

रायबहादुर अमरनाथ जी पुरी तथा अन्य सदस्य नई दिल्ली		५०००/-
ला० वेदव्यास जी एडवोकेट	,,	१०००/-
डा० विद्याधर महाजन	,,	१०००/-
श्री बी० पी० शर्मा	,,	५००/-
डा० जगन्नाथ जी	,,	२०२/-
प्रो० पी० एल० सोनी	,,	२०१/-
प्रिंसिपल बालमुकन्द जी भाटिया (द्वारा)	,,	२००/-
प्रो० यशपाल जी	,,	१०१/-
प्रो० बी० सी० जोशी	दिल्ली	१०१/-
प्रिंसिपल शन्ति नारायण जी	,,	१०१/-
डा० किशोर प्रसाद जी	,,	१०१/-
श्री बी. पी. जोशी	दिल्ली	१०१/-
डा. शान्ति स्वरूप जी गांधी	,,	१०१/-
मैसर्ज आत्माराम एण्ड सन्ज	,,	१०१/-
श्रीमती सुशीला विशिष्ट	,,	१०१/-
ला० हंसराज जी एम० पी०	,,	१०१/-
डा० रामचन्द्र जी अग्रवाल	,,	१०१/-
पं० जगन्नाथजी भरद्वाज, नया नंगल	,,	१०१/-
मैसर्ज रामाकृष्णा एंड सन्ज	,,	१०१/-
ला० हंसराज जी		५१/-
श्री बी. आर. नन्दा, II सी/६३ वैलजली रोड, नई दिल्ली		१०१/-
प्रो० V.K. मित्र		२१/-

८-८-६५ तक दोनों डैपुटेशनों का योग =४२८६८/-

श्रीराम शर्मा—प्रधान—प्रबन्ध कर्तृ सभा

आवश्यकता है

एक विद्वान आर्य भजनोपदेशक की जो वैदिक धर्म का प्रचार कर सके और अवैदिक सिद्धांतों और मत-मतांतरों का खंडन कर सके—वेतन १००) से १२५) तक और भोजन। मन्त्री—

पटना जिला आर्य सभा पटना

आर्यसमाज रैनावाड़ी श्रीनगर

दो शोक प्रस्तावों द्वारा, श्रीमती मेलादेवी जी (माता श्री रणवीर जी व श्री यश जी) तथा महात्मा देवीचन्द्र जी के निधन पर शोक प्रकट करते हुए उन्हें श्रद्धांजलियां भेंट की। उनकी आत्मा की शान्ति व परिवारों को धैर्य प्रदान करने की प्रभु से प्रार्थना की गई।

श्याम सुन्दर वैद्य—मन्त्री समाज

मुद्रक व प्रकाशक श्री ... राज जी आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर द्वारा वीर मिलाप प्रैस, मिलाप रोड जालन्धर से मुद्रित तथा जगत कार्यालय महात्मा हंसराज भवन निकट कचहरी जालन्धर शहर से प्रकाशित मालिक—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर



टेलीफोन नं० ३०५७ [आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधिसभा पंजाब जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd. No P. 1?

एक प्रति का मूल्य १३ नये पैसे वार्षिक मूल्य ६ रुपये

वर्ष २५ अंक ३६) १४ भाद्रपद २०२२ रविवार—दयानन्दाब्द १४१— २९ अगस्त १९६५ (तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

वेद सूक्तय:

परमेणोत तस्कर:

और भी मेरी चेतावनी सुन लो—कि जो भी तस्कर बन कर चुपचाप लुक छिप कर आता है। मेरा, राष्ट्र का या धर्म का सामान चुराने के लिए आता है। वह भी दूर २ हो कर चला जाये सावधान ! खबरदार ! मेरे पास मत आना।

परेण दत्वती रज्जु:

ये जो काटने वाली रस्सियां हैं, कैंचियां वैरी लोग लिये फिरते हैं, जिन से लोगों की जेबों को काट २ कर उनका धन माल आदि चुरा कर लूट कर ले जाते हैं। वे भी मुझ से दूर २ होकर चले जावें। मेरे पास मत आने पावें।

परेणाघायुरर्षतु

और भी सुन लेवें - खबरदार हो जाओ। ये जो भी अघायु: हैं—पाप की इच्छा करने वाले वैरी पापी हैं। ऊपर से और अन्दर से और बन कर आते हैं। वे भी मेरे से परे २ होकर भाग जावें। खबरदार ! वे मेरे पास भूल कर भी न आने पावें—

विश्वा अप द्विषो जहि

हे भक्त मानव ! तू अपने सारे द्विषों को शत्रुओं को मार दे, दूर भगा दे। जीवन को मारने वाले बाहिर के शत्रु हों या अन्दर के दुश्मन हों; तू इनको भाग दे मार दे।

साम वेद

वे दा मृ त

तदग्ने द्युम्नमाभर यत्सासाहा सदने कञ्चिदत्रिणम्। मन्युं जनस्य दूढ्यम्॥

सामवेद० आग्नेय काण्ड मन्त्र ११३

अर्थ—हे अग्ने ! अग्निमय परमेश्वर ! कृपा करके हम में (तद्-द्युम्नम्) वह ज्ञान और बल तेज शक्ति (आभर) खूब भर दो (यत) जो जिस से हम (सासाह) पूरी तरह से (सदने) अपने घर में आये हुए (कञ्चित) जिस किसी (अत्रिणम्) शत्रु वैरी या पापी चोर को पूरी तरह से दबा देवें। हमें ऐसा बल दो ताकि हम उस (जनस्य मन्युं) लोगों के क्रोध के पात्र बनें (दूढ्यम्) दुष्ट जन को हम हे परमात्मन् ! दबा सकें। प्रभु जी हमें ऐसा तेज दीजिए, जिस से हम राष्ट्रघाती शत्रु को दबा सकें। उसकी शक्ति को नष्ट कर सकें।

भावार्थ—परमात्मन् ! आप तेज के भण्डार हो। हमें भी ऐसी शक्ति प्रदान करो ताकि हम इस बल पराक्रम से जितने भी राक्षस हैं उनको दबा कर रख दें वे सिर न उठाने पावें। वे उत्पात न मचा सकें। जितने भी दुष्टजन हैं, उपद्रवी हैं, उनकी सारी चालें हम समाप्त करके रख देवें। हमारे सामने उनकी एक भी न चल सके।

हे राष्ट्र के वीर नायक ! आप सारे राष्ट्र की जनता के जीवन में, उनके विचारों में ऐसी वीर भावना तथा राष्ट्रिय चेतना को भर दें जिस से सारी जनता वीरता का शंखनाद करती हुई देश में रहने वाले शत्रुओं को, राक्षसों तथा हिंसा करने वाले दुष्ट पुरुषों को पूरी तरह दबा देवे। वह किसी प्रकार की गड़बड़ न कर सकें। हमारे सामने वह उभर न सकें—सं०

ऋषि दर्शन

लोक: सर्वे भ्रमन्ति

जितने भी लोक लोकान्तर हैं। पृथिवि आदि लोक हैं—वे सब घूमते हैं। कोई अपनी परिधि पर घूमता है और कोई अपनी परिधि पर घूमता हुआ सूर्य के गिर्द भी घूमता है। सब में गति हैं। बिना गति कोई भी नहीं ठहरा।

सूर्यस्य परितो याति

यह हमारी भूमि सूर्य के चारों ओर घूमती है। उसके चारों ओर चक्कर लगाती रहती है। इसमें अपनी परिधि पर घूमने की गति भी है तथा सूर्य के गिर्द भी घूमने की गति है।

एव मेव सूर्य:

इसी प्रकार सूर्य भी अपनी परिधि पर आकाश में घूमता है। उसमें भी परिधि पर भ्रमण करने की गति है। नितान्त स्थिर या गति शून्य तो कोई रह नहीं सकता।

सोमश्चचन्द्र लोक:

सोम चन्द्रलोक को कहते हैं। शीतल शांत किरणों से सबको शीतल करके ताप दूर कर देता है। वनस्पतियों, औष-में रस भरता है इसलिए चन्द्रमा को सोम नाम दिया जाता है।

भा ष्य भू मि का

मुक्ति का कौन अधिकारी है

श्री पं. देवप्रकाश जी आर्यसमाज, उज्जैन (मध्यप्रदेश)

वेद ने कहा—

नृचक्षसो अनिमिषन्तो अर्हणा
बृहद्देवासो अमृतत्वमानशुः
ज्योतिरथा अहिमाया अनागसो
दिवोवर्ष्माणं वस्ते स्वस्तये
ऋ. १-६३-४

जो (ज्योतीरथाः) ज्ञानरूपी ज्योतिर्मय रथ पर आरूढ़ हुए (अहिमाया) कर्म कुशल महाबुद्धिमान अतएव (अनागसः) निर्दोष पाप रहित मनुष्य (सु अस्तये) संसार के कल्याण के लिए (दिवः) प्रकाशमय प्रभु के (वर्ष्म) सुख कारक धाम में (वसते) रहते हैं वे (नृचक्षसः) मनुष्य मात्र को सुशिक्षा देने वाले (अनिमिषन्तः) प्रमाद आलस्य आदि से रहित (अर्हणा) योग्य (देवासः) सर्वस्य त्यागी विद्वान् (बृहत् अमृतत्व) महान मोक्ष को प्राप्त करते हैं। मुक्तिका अधिकारी कौन है: उसे इस मन्त्र में किस उत्तमता से प्रतिपादित किया है वह पाठकगण देख सकते हैं जो ज्ञानी हैं कर्म कुशल बुद्धिमान पाप रहित संसार का उपकार और कल्याण करने वाले परमात्मा के पथ के पथिक त्यागी विद्वान् हैं वही मुक्ति को प्राप्त करते हैं मगर अब जरा इंजीलों की मुक्ति प्राप्ति के साधन देखिए।

यीशु ने (चेलों के) पास आकर उनसे बातें कीं और कहा, कि आसमान और जमीन का कुल अधिकार मुझे दिया गया है (खूब कही उस्ताद) पास तुम जाकर सब जातियों को चेला बनाओ मत्ती-२८-१८-१९-२० मरकुस में और भी विचित्र लिखा है देखिए-और उसने (यीशुने) उन चेलों से कहा कि तुम तमाम दुनिया में जाकर सारी खलक (संसार) के सामने इंजलि की घोषणा करो (पादरी महोदय बतावें कि इन्जील उस समय कहां थी) जो ईमान लावे, और बपतिस्या ले वह मुक्ति पाएगा (बड़ी सस्ती मुक्ति करदी कि क्या तस्मा लेने से ही मिल गई) और जो ईमान न लाए, वह मुजरिम (दोषी) ठहराया जाएगा (जो ईसाई बने वह सब दोषी हैं) और ईमान लाने वालों के दरमियान यह चमतकार होंगे वह मेरे नाम पर बद रूहों को निकालेंगे, नई-नई भाषाएं बोलेंगे, सांपों को उठा लेंगे, और यदि कोई प्राण घातक वस्तु पीयेंगे, उन्हें कुछ हानि पहुंचाएगी और बीमारों पर हाथ रखेंगे, तो अच्छे हो जाएंगे' मरकस १६-१४ से १८

क्यों ईसाई महानुभाव गण यह गुण तो बपतिस्मा लेने मात्र अर्थात् ईसाइ होने से ही प्राप्त हो जाएंगे तो क्या कोई यीशु का चेला मैदान में निकलेगा जो उपरोक्त बातों को सत्य सिद्ध कर दिखावे यदि यह असम्भव हैं तो अपने धोका देने का इकरार करके ईसाई मत को त्यागने के लिए उद्यत हो जाएगा।) उपरोक्त चमत्कार तो ईसाई बनने मात्र से ही आ जाएंगे और यदि ईसाई बनने के बाद राई के दाने के बराबर भी ईमान किसी ईसाई में होगा, तो निम्न चमत्कार उसमें होंगे।

(चेलों से) यीशु ने कहा मैं तुम से सच कहता हूं, कि यदि ईमान रखो और शक न करो तो न केवल यह करोगे जो इंजीर के वृक्ष के साथ हुआ, किन्तु यदि इस पहाड़ से भी कहोगे, कि तू उखड़ जा और समुद्र में जा पड़ा तो यह हो जायेगा। और जो कुछ दुआ में ईमान के साथ मांगोगे वह सब तुम्हें मिलेगा।

मत्ती २१—२१—२२

ऐसा हाथों पर सरसों जमाने वाला नुस्खा यदि पादरियों के पास है तो फिर बड़ा ही उपकार और भला हो सकता है। दुनिया के मार्ग साफ हो सकते हैं, क्या कोई पादरी अपने गुरु की बात को सच करके दिखाने का साहस करेगा (आगे और देखिए)।

यीशु ने (चेलों से) कहा, मैं तुम से सच कहता हूं, कि यदि तुम में राई के दाने के बराबर ईमान होगा, तो इस पहाड़ से कह सकोगे कि यहां से सरक वहां चला जा, तो वह चला जायेगा और कोई बात तुम्हारे लिए अन होनी न होगी। मत्ती १७-२०-२१

हमारी सरकार को घाटे साफ करने में कितनी कठिनता और उस पर कितना व्यय हो रहा है क्या किसी ईसाई के अन्दर राई के दाने के बराबर भी ईमान नहीं जो गांव वालों के आने जाने के लिए पहाड़ों को सरका कर मार्ग बना दे और लोग सुखी हो जावें और शासन का रुपया भी बच जावे, और यदि कोई यहां ऐसा ईमान न मिले जो राई भर भी ईमान न रखता हो तो इटली से मंगवा कर भारत सरकार के काम में इतनी सहायता तो कर दें कि वह इस काम से बे फिकर हो जावें फिर—खुदावन्द ने कहा, कि यदि तुम में राई के दाने के बराबर भी ईमान होता, और तुम इस तूत के दरख्त से कहते कि जड़ से उखड़ कर समुद्र में लग जा तो तुम्हारी मानता लूका १७-६ भारत में वृक्ष बड़ी बेतरतीबी से लगे हैं यदि कोई राई बराबर भी ईमान रखने वाला ईसाई हो तो सब को उखेड़-उखेड़ कर एक लाइन में कर दे तो देश की सड़कें कैसी सुन्दर बन जायें और जहां वृक्ष नहीं वहां हिमालय से ला ला कर यहां लगादें तो सारा देश हरा-भरा हो जाये। हम बल पूर्वक ईसाईयों को चैलेंज करते हैं कि यदि उन के खुदा की यह बात सत्य है तो उस को कर के दिखावें। इस में दो बड़े लाभ होंगे एक तो देश हरा भरा जायेगा। दूसरे इतना धन जो लोगों को ईसाई बनाने पर व्यय किया जा रहा है वह भी बच जायेगा और लोग भी ईसाई आसानी से बन जायेंगे क्या कोई यीशु का ईमानदार भक्त है जो अपने गुरु की बात को प्रमाणित करे।

अब देखिये वेद का आदेश कि ज्ञान, सदाचार परउपकार आदि से मुक्ति हो सकती है मगर ईसाईयों को केवल ईमान लाने से ऊपर मरकुस १६-१७ के हवाले से हमने लिखा जो यीशु पर ईमान न लाए वह मुजरम है, किस कदर यह ईसाईयों की हठधर्मी है, फिर यूहन्ना ३/१८ में लिखा, जो यीशु पर ईमान नहीं लाता उस पर सजा का हुक्म हो चुका फिर, यूहन्ना की पहली पत्री २/२२ में लिखा कि कौन झूठा है, सिवाय उसके जो यीशु के मसीह होने का इनकार करता है। गोया ईसाईयों के अतिरिक्त सब लोग मुजरम, झूठे और दण्डित हैं, यह है मानव की कीमत ईसाई मत में

ऐ सांपो मत्ती २३/३३

ऊपर कुछ नमूने हमने यीशु की पुष्प वर्षा के लिखे हैं जिन से जाना जा सकता है कि उनकी बोली में कितनी मिठास थी जिस प्रकार आजकल भी कुछ लोग ऐसे हैं जिन के बोलने के स्वाभाव में गाली निकालना शामिल रहता है इसी प्रकार इस खुदा का बेटा कहलाने वाले का तकया कलाम ही ऐ रजा कारो ऐ बद कारो ए सांपो मालूम होता है कोई बात नहीं सम्भवतः खुदाई भाष हो।

सम्पादकीय—

आर्य जगत्

वर्ष २५] रविवार २०२२, २९ अगस्त १९६५ [अंक ३६

विषम संकट की अवस्था में

भारत के वातावरण में इस समय विषम संकट से भरी हुई अवस्था है। राष्ट्र की सीमाओं पर हमारी उन्नति व समृद्धि को देख २ कर मन में द्वेष की ज्वाला में जलने वाले हमारे विरोधी पूरी शत्रुता का परिचय दे रहे हैं। रण कच्छ के समझौते की स्याही भी अभी सूखने नहीं पाई कि काश्मीर में नाना प्रकार के छल कपट की आड़ लेकर पाकिस्तान ने जो नीचता एवं दानवता का नंगा परिचय दिया—उसने अब तो सब की आंखें खोल दी हैं। चीन के आक्रमण के समय में भी हमारे देश के एक नेता ने कहा था कि हम एक स्वप्नलोक में रह रहे हैं। इस आक्रमण ने हमारे नेत्र खोल दिये हैं। उसके बाद देश में तनिक वातावरण बदला। भावना जागी। जनता और कर्णधार भी नाच गाने तथा कल्चरल प्रोग्रामों से थोड़ी सी लज्जा अनुभव करने लगे। रणकच्छ में पाकिस्तान के मर्यादा हीन तथा कृतघ्न शासकों ने जो कुछ किया वह भी भारतीयों की आंखों के सामने आ गया। भारतीय सैनिक वीरों ने जब अपने वीरता भरे हाथ वहां पर और कारगिल की चौकियों पर दिखाने आरम्भ किये तो पाकिस्तान के होश तो ठिकाने आ गए—परन्तु स्वभावो दुरतिक्रमः—के अनुसार भैंस के आगे बीन बजाकर उसे अपने खेत से निकालना, सांप को दूध पिलाना और लातों के भूतों को बातों से मनाना प्रायःअसम्भव होता है। उससे कोई भी लाभ नहीं होता। जिस देश का जन्म ही भारत से विरोध एवं घृणा पर हुआ हो—उससे मानवता की आशा कैसे की जा सकती है। अभी-अभी काश्मीर में सीमा रेखाओं को तोड़कर शत्रु शस्त्रों को लेकर घुस आये तथा आक्रमण किया। उससे तो सरकार व जनता की आंखें पूरी तरह से खुल जानी चाहिएं। हमारी वीर सेना यदि सचेत, सतर्क व सावधान न होती तो कितनी हानि होती। एक बार पाकिस्तानी दानवों ने १९४७ सन् का दृश्य उपस्थित कर दिया है। उनको मार भी अच्छी पड़ी है। जीवन पर्यन्त याद तो रखेंगे। वातावरण में बड़ा संकटकाल है।

इस समय दो बातों की बड़ी आवश्यकता है। जिन लोगों के परिवारों ने काश्मीर में उन पाकिस्तानी आक्रमणकारियों को अपने घरों में छिपाये रखा, आश्रय देते हैं, सहयोग देते हैं, वे भी भारत के शत्रु हैं। बाहर के शत्रु की अपेक्षा अन्दर का शत्रु भीषण होता है—उनको कड़ा दण्ड दिया जाए। पाकिस्तान के साथ अब पूरी कड़ाई के साथ निपटा जाए। बीन बजा-बजाकर सबने देख ली कि भैंस को क्या समझ आई। अब तो सांप का सिर कुचलने के लिए पत्थर उठाकर उससे निपटना होगा। इस विषम संकट में सारे भेद भावों को भुलाकर सरकार को पूरा-पूरा सहयोग देना होगा। पंजाब में जो पंजाबी सूबा के लिए यह खेल खेला जाने लगा

अनुचित सर्वथा अनुचित

पंजाब भारत का सीमा प्रांत है। इसके निवासी वीर हैं। यह दुर्भाग्य है कि यहां पर समय-समय पर पञ्जाबी सूबा बनाने का खेल रचाया जाता है। पहले मास्टर तारासिंह जी ने खेल खेलकर वातावरण में काफी अशान्ति पैदा की। अब दुःख है कि ऐसे विषम समय में जबकि काश्मीर में प्रत्येक घटिया हथियार तक भी प्रयोग में ला रहे हैं। गोली, गोले, लूटमार तथा आग लगाने के दानवता से भरे काण्ड किये जा रहे हैं। ऐसे समय सन्त जी भूख हड़ताल और आत्म-हत्या के द्वारा पञ्जाबी सूबा लेने की घोषणा करते जा रहे हैं। उन के उत्तर में प्रसिद्ध सन्त श्री रामानन्द जी भारती ने भी सन्त जी के मुकाबिला पर पंजाब की एकता को इसी प्रकार कायम रखने के लिए जवाबी भूख-हड़ताल की घोषणा कर दी है। साथ ही स्वामी रामेश्वरानन्द जी मैम्बर पार्लियामेंट ने भी जवाबी भूख-हड़ताल की घोषणा कर दी है। स्वामी जी को सारा भारत व विदेश जानता है। पहले भी देहली में पंद्रह दिन भूख-हड़ताल रखी थी। सन्त जी का अनशन तो पञ्जाब को टुकड़े-टुकड़े करने के लिए होगा किन्तु इन महात्माओं का अनशन पंजाब के मिलाप को बनाये रखने के लिए है। आत्महत्या से यदि भारत में सूबे बनने लगें तो पता नहीं फिर कितने सूबे बनाने के लिए लोग ऐसा करने लगेंगे। इस संकटकाल में थोड़ी-सी बेचैनी पैदा करना देश के साथ खिलवाड़ करना होगा। आर्यसमाज एक देश भक्ति से भरा आंदोलन है। वह स्थान-स्थान पर विशाल सम्मेलन करके जनता में राष्ट्ररक्षा की भावना भरे। —त्रिलोकचन्द्र

होगा। एक तो कैंची बनना चाहते हैं तथा दूसरे दोनों सन्त सुई बन कर उसे मिले हुए रूप में रखना चाहते हैं। इस विषम अवस्था में इस प्रकार का आन्दोलन ठीक नहीं। आज देश में नास्तिकता, भोगवाद, अनाचार तथा शराबादि का प्रचार अधिक बढ़ रहा है। सन्त जी का तो कर्तव्य था कि राष्ट्र की इन घातक बुराईयों को दूर करने के लिए अपना समय देते। उधर ध्यान न देकर पंजाब के टुकड़े करने के लिए भूखहड़ताल करना चाहते हैं। हमारा सब का कर्तव्य है कि इस संकट कालीन अवस्था में वातावरण को पूर्णतया शान्त रखें ताकि भारतीय सरकार का तथा प्रान्तीय नेताओं का सारा ध्यान राष्ट्र रक्षा में लग सके।—सं०

रायबहादुर जी भी चले गए

यह समाचार सुन कर सारे देश को दुःख हुआ कि शिक्षा क्षेत्र के बहुत प्रसिद्ध नेता तथा डी.ए.वी. कालेज कमेटी के उपप्रधान रायबहादुर मनमोहन जी चल बसे। उनका स्वास्थ्य बहुत अच्छा था। किसी के स्वप्न में भी उनके आंखें बन्द कर लेने का विचार भी नहीं आता था। बहुत बड़ी क्षति हुई है उनका सारा जीवन शिक्षा क्षेत्र में बीता बहुमूल्य सेवाएं की। हम मान्यवर श्री प्रिंसिपल डुडेजा जी शोलापुर दयानन्द कालेज तथा सारे परिवार से हार्दिक दुःख प्रकट करते हुए उनको धैर्य व सहन शक्ति प्रदान करने की प्रभु से प्रार्थना करते हैं। उस दिवंगत आत्मा की सद्गति की भी प्रार्थना करते हैं यह भारी क्षति पूर्ण होनी कठिन है।—सं०

——

शरीर की रक्षा

स्वास्थ्य और योगासन

(ले०–कविराज रामसिंह जी आरोग्य मन्दिर यमुनानगर)

कविराज श्री रामसिंह जी आयुर्वेदाचार्य मालिक आरोग्य मन्दिर यमुनानगर ने अपने जीवन में आयुर्वेद में काफी खोज की है। शरीर के स्वास्थ्य के साधनों पर बड़ी गम्भीरता से परिशीलन किया है। योगासनों के द्वारा स्वयं भी बहुत कुछ प्राप्त किया तथा उन अनुभूत आसनों एवं साधनों को जनता तक पहुंचाने में भी प्रयत्नशील हैं। काफी व्यस्त रहते हैं फिर भी यदि स्कूलों में उनके विशेष भाषणों का प्रबन्ध किया जाये तो युवकों का बड़ा लाभ होगा। —सं०

कई सज्जनों की ओर से विशेष कर पूज्य गुरुवर महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज की ओर से यह प्रेरणा मिली कि योगासनों के विषय में एक पृथक पुस्तक लिखी जानी चाहिए जिस में यह बताया गया हो कि कौन से रोग वाला व्यक्ति कौन २ से आसन करे और कौन २ सा आसन किस २ रोग को दूर करता है। आसनों की बहुत किस्में हैं। संसार में जितने जीव हैं, लगभग उतने ही प्रकार के आसन हैं। ८४ प्रकार के आसन तो बहुत ही प्रसिद्ध हैं। आज के इस अत्यन्त व्यस्त युग में हर व्यक्ति के लिए उन सब का करना सम्भव नहीं है इन सब आसनों को करने का समय तो केवल वही सज्जन निकाल सकते हैं जिन्होंने इन्हीं का पालन और प्रचार करना हो, किन्तु सर्वसाधारण जनता के लिए यह सम्भव नहीं है। अतः वैद्य होने के नाते मानव शरीर की रचना तथा शरीर क्रिया विज्ञान के ज्ञान के आधार पर बहुत विचार के पश्चात लगभग १५ आसन ऐसे चुन लिये हैं जिन के नियम पूर्वक अभ्यास से लगभग सारे अंगों का व्यायाम हो जाता है। उनके करने में लगभग १५-२० मिनट ही लगते हैं।

आसनों का महत्व

मिलाप दैनिक में गत दिनों एक घटना प्रकाशित हुई थी जो इस प्रकार है।

मीरिया की महारानी जब इंगलैंड सैर करने आई तब वहां उसके पास आने वाली लड़कियों ने उसके बहुत अच्छे स्वास्थ्य से प्रभावित होकर प्रश्न किया कि आपकी आयु कितनी है? इस प्रश्न का उत्तर देने के स्थान पर रानी ने उलटा उन पर ही प्रश्न कर दिया कि आप बहनों को मेरी आयु कितनी प्रतीत हो रही है? लड़कियों ने उत्तर दिया कि हमें तो आप सोलह वर्ष की कुमारी कन्या जैसी प्रतीत होती हैं। इस पर रानी ने उत्तर दिया कि नहीं मैं १६ वर्ष की नहीं हूं अपितु मेरी आयु ३६ वर्ष की है और मैं चार बच्चों की माता हूं। इस पर लड़कियों ने बड़े आश्चर्य से पूछा कि आप ३६ वर्ष में और चार बच्चों की माता होते हुए भी इस प्रकार स्वस्थ सुन्दर हैं। सर्वथा १६ वर्ष की नवयुवती जैसी कैसे बनी रहीं। रानी ने उत्तर दिया कि मैंने भारतवर्ष के योगियों से योग के आसन सीखे हैं तथा मैं उनका नित्य प्रति अभ्यास करती हूं जिस के परिणाम स्वरूप ३६ वर्ष की अवस्था में चार बच्चों की माता होते हुए भी १६ वर्ष की प्रतीत हो रही हूं। इस घटना को पढ़ कर मेरे मन में बड़ी प्रसन्नता हुई कि मेरे देश की योगासनों की इस विद्या का विदेशों में कितना मान है और वे इस से कितना लाभ उठा रहे हैं।

'वे लोग, वे बातें....'

१. बुरा आदमी भी बिल्कुल बुरा नहीं होता, उसमें कहीं न कहीं देवता अवश्य छिपा होता है।

—मुन्शी प्रेमचन्द

२. अर्द्ध शिक्षित और अल्प वेतन पाने वाले अध्यापकों से आप यह आशा नहीं रख सकते कि वे कोई उच्च आदर्श अपने सामने रखें। —मुन्शी प्रेमचन्द

३. मैं नींव में पड़ने वाला पत्थर हूं, रचनात्मक कार्यों में लगा हूं, और इसी में लगा रहूंगा।

—म० हंसराज

४. मेरी अन्त्येष्टी वैदिक रीति से सम्पन्न की जाए।

—श्री फिरोज़ गांधी

५. स्वामी दयानन्द ने भारतीय संस्कृति की रक्षा के लिए सब से पहले आवाज़ उठाई।

—डा० केसकर

६. मैं नरक में भी उत्तम पुस्तकों के स्वाध्याय में व्यस्त रहना चाहता हूं।

—लोक मान्य तिलक

७. ब्राह्मण और साधु अपने उत्तम गुण, कर्म और स्वभाव से होते हैं, जोकि परोपकारी हैं।

—स्वामी दयानन्द

८. मनुष्य का नेत्र विद्या ही है। —स्वामी दयानन्द

९. चाल-चलन की खराबी हो तो विद्या (तालीम) बेकार है।

—लौह पुरुष सरदार पटेल

१०. लिखते वे हैं जिन के दिल में दर्द है, प्रेम है, लग्न है और ज्ञान है, जिन्होंने धन को अपनी जिन्दगी का लक्ष्य बना लिया है, वे क्या लिखेंगे। —मुन्शी प्रेमचन्द

—संकलन कर्त्ता :—'अंशु'

आर्यसमाज (युसफ़सराय) ग्रीन पार्क, नई देहली

श्रावणी उपाक्रम (वेद प्रचार सप्ताह) स्वतन्त्रता स्मृति दिवस और भगवान श्री कृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव १२ अगस्त से २० अगस्त १९६५ तक बड़ी सफलता और अपूर्व समारोह सहित समाप्त हुआ। २० अगस्त को पर्याप्त उपस्थिति थी। पूर्णाहुति के पश्चात् प्रिंसीपल पाली जी ने भगवान श्री कृष्णजी के गुणों पर व्याख्यान दिया।

वेदप्रचार के दिनों में भिन्न-भिन्न स्थानों पर और आर्य परिवारों के निवास स्थानों पर, यज्ञ, भजन और वेद प्रवचन वानप्रस्थी ज्ञानेश्वरा नन्द जी और महाशय रामचन्द्र द्वारा होते थे। वेदप्रचार के लिये आर्यसमाज को दान रूप में रु० १५०/- प्राप्त हुआ।

देवराज कोछड़
उपमंत्री समाज

आर्यसमाज विक्रमपुरा

जालन्धर का दान

आर्यसमाज विक्रमपुरा जालंधर प्रति वर्ष की भांति ४५ रुपया आर्यजगत् की सहायतार्थ दान के रूपमें प्रदान करता है इससे ग्राहक ३ रुपये वार्षिक चन्दा देकर बनाए जाते हैं जो ग्राहक इस दान से लाभ उठाना चाहें पहलो सितम्बर तक अपने नाम सभा के दफ्तर में भेज दें यह रियायत नये ग्राहकों के लिए ही है। —व्यवस्थापक

दुःखद समाचार

आर्य क्षेत्र में यह समाचार अत्यन्त खेद के साथ सुना जाएगा कि श्री सन्तराम जी स्याल प्रधान आर्य समाज मोडलटौन लुधियाना तथा अंतरंग सदस्य आर्य प्रादेशिक सभा की पूज्या माता जी का१५-४-६५ को अपने निवास स्थान मौडलटौन में स्वर्गवास हो गया इस निधन पर आर्य जगत उनके परिवार के साथ गहरी सहानुभूति प्रकट करता है।

नारी स्तंभ—बहिनों से एक प्रश्न

आपका धन कहां जाता है ?

(कु० सुशीला जी आर्या एम० ए० विद्यावाचस्पति
आर्ष कन्या गुरुकुल, नरेला)

मानव जीवन के चार पुरुषार्थ धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष हैं। आज का युग अर्थ प्रधान है। प्रायः प्रत्येक परिवार के सदस्यों के मुख से यह शिकायत सुनने को मिलती है कि हाथ तंग है निर्वाह नहीं होता अच्छे परिमाण में धन कमाते हुये दीखने वाले व्यक्ति भी आर्थिक तंगी से परेशान नजर आते हैं। अति अल्प संख्या में अन्धाधुन्ध धन कमाने वालों की बात दूसरी है किन्तु हमने तो राज्यों के मन्त्रियों के परिवार वालों तक से भी यही सुना है कि आवश्यकताएं पूर्ण नहीं होतीं और इसमें कोई झूठ भी नहीं क्योंकि अधिक आय वालों की आवश्यकताएं तथा व्यय भी अधिक हैं। अतः आर्थिक तङ्गी के मामले में प्रायः सभी एक बराबर मञ्च पर खड़े हैं। ऐसा भी प्रायः सभी स्वीकार करते हैं कि यह शिकायत इसी युग की देन है सदा से ऐसा चला आ रहा हो सो बात नहीं। इतिहास के पृष्ठ पलटने का कष्ट करने की आवश्यकता नहीं कुछ वर्ष पीछे ही मुड़कर ही सिंहावलोकन कर लीजिये सारे परिवार को एक व्यक्ति कमा कर खिलाया करता था। और परिवार भी कैसा आज के युग का सन्तति निरोध आन्दोलन का शिकार नहीं। न ही पतिपत्नी की पश्चिमी सभ्यता से आक्रान्त। अपितु उसमें कई भाईयों के परिवार भी विशेष स्थितियों में हो सकते थे। सन्तानें भी छः, आठ और दस हो सकती थीं।

प्रश्न उठता है कि आज ही क्या झाड़ू फेर दी गई कि रुपये पैसे का सफाया हो गया ? यहां आकर दो तर्क दिए जा सकते हैं। एक तो मंहगाई का कि जिसके कारण रुपये का मूल्य गिरकर खाई में जा पहुंचा है। पैसे हैं कि दीखते हैं वस्तु है कि दीखती ही नहीं। और सब के देखते-देखते वस्तु की अदृश्य अल्पता बढ़ती चली जा रही है। इस तर्क में सार है। सन्तति निरोध के बावजूद बढ़ती जन-संख्या तथा उत्पादन का अनुपाततः न्यून होना महंगाई को बढ़ा रहा है। इसमें आपका हमारा शासक वर्ग का कुछ वश नहीं। यद्यपि यत्न रूप में महंगाई रोको आन्दोलन करने में जनता तथा अपनी योजनाओं का ढोल पीटने में शासक पीछे नहीं रहते किंतु पञ्चों का कहना सिर माथे, नाला वहीं का वहीं गिर रहा है। इसलिए आप सुगमता से कह सकते हैं कि हमारा धन महंगाई के मुंह में जाता है।

दूसरा तर्क है आवश्यकताओं की वृद्धि का। इसमें किसी सीमा तक सारहीनता तथा अयथार्थता है। कहा जाता है कि बीते जमाने की बातें पीछे गईं। आजका युग विज्ञान का युग है। आज हम रोटी कपड़े मकान तक का सीमित जीवन नहीं बिता सकते। किंतु हमारी प्रार्थना है कि अपने व्यय पर तनिक गम्भीर विचार करके देखना आपके लिए अनिवार्य हो गया है।

आज हमारे मध्यमवर्गीय बहुसंख्यक परिवार अर्थाभाव से पीड़ित हैं। इसका कारण वास्तव में अर्थाभाव नहीं अपितु उत्पन्न किया हुआ है। हमारा व्यय सन्तुलित नहीं। हमारे परिवारों में व्यय के स्तम्भों में पारस्परिकता नहीं। एक वर्ष, एक मास, एक सप्ताह अथवा एक दिन के ही व्यय पर दृष्टिपात करके इस प्रश्न का उत्तर मांगिए कि आपका धन कहां जाता है ? यह धन आता कहां से है। इसका उद्गम स्रोत क्या है ? यह पृथक् विषय है। इस पर अन्य किसी दिन विचार करेंगे। जो भी हो यह स्रोत स्रवित हुआ। प्रवाह जारी हो गया, किंतु इसके जाने का मार्ग भी कभी आप ने देखा, विचारा ? आप के धन का कितना प्रतिशत भाग भोजन, स्वास्थ्य, शिक्षा तथा नैतिक उत्थान पर व्यय होता है कितना अनावश्यक तथा कथित मनोरंजन के नाम पर विनाश करने वाले साधन क्रम करने पर ? निरीक्षण का विषय यही है।

अर्थ-शास्त्रज्ञ मानव जीवन की आवश्यकताओं का वर्गीकरण मुख्यतः दो भागों में करते हैं अनिवार्य आवश्यकताएं विलास के साधन (**Luxuries**)। इनका विभाग सब के लिए समान नहीं अपितु आर्थिक स्थिति या फिर हमारे विचार में वय तथा आश्रम पर भी निर्भर है। एक गृहस्थी के लिए जो पदार्थ अनिवार्य आवश्यक हैं ब्रह्मचारी के लिए वही विलास का साधन हो सकता है। एक धनिक परिवार के लिए जो साज सामान अनिवार्य हैं वे निर्धन के लिए सर्वथा अनावश्यक कभी २ उपहासास्पद भी हो सकते हैं। एक युवक की आवश्यकताएं बच्चे या बूढ़े के लिए निरर्थक सिद्ध हो सकती हैं। हमें अपने गिरेबान में मुंह डाल कर झांकना है कि हमारे धन के जाने का रास्ता ठीक भी है या नहीं ?

सच्चाई से विचार करने पर हम में से नब्बे प्रतिशत परिवार अवश्य ऐसे मिल जाएंगे जिन्हें धन कमाना भले ही आता हो व्यय की कला से वे सर्वथा अछूते हैं। फिर इन में से जिन्हें कमाना भी न आता हो उनकी क्या कथा ? धनकी तङ्गी के नाम पर हम ने घातकसे घातक सामाजिक दोषों को आश्रय दिया है स्त्रियां घर छोड़ कर बाहर क्यों निकलीं ? रानी की पदवी प्राप्त गृहिणी दासी क्यों बनी ? इसी लिए कि निर्वाह नहीं होता। किन्तु इस कमाई का पैसा नित्य नए सूट-बूट, साड़ी, पार्टी या कुछ उदाहरणों में इस से बढ़ कर दुर्व्यसनों पर व्यय निर्वाह के बहाने की मिथ्यता का सुस्पष्ट प्रमाण है। समाज में भ्रष्टाचार एक सामान्य जीवन-क्रम क्यों बन गया? इसीलिए कि निश्चित आय से आवश्यकताए अधूरी रह जाती हैं। आय बढ़ाने के तो हमने अनुचित साधन खूब ढूंढे किन्तु कभी व्यय घटाने पर भी ध्यान दिया ? नहीं क्योंकि हमें इस बात का भान ही नहीं कि हमारा धन कहां जा रहा है ? जिन्हें हम आवश्यकताएं बतला कर पूर्ति के लिए हाथ पैर मार रहे हैं वे आवश्यकताएं हैं भी ? क्या हमारी पड़ौसिन के पास अमुक प्रकार की साड़ी है, हमारी सम्बन्धी भाभी या बहिन के पास अमुक डिजाइन का जेवर हैं, हमारे मिलने जुलने वालों के पास अमुक प्रकार का फर्नीचर है यही हमारी आवश्यकताओं का मापदण्ड है ? आज का मजदूर शरीर के लोहू का पसीना करके नस नाड़ियों को तानने वाले परिश्रम से की कमाई से रात्रि को विश्राम की घड़ियों में सिनेमा बीड़ी सिगरेट पर धन फूंकता है। क्या उसके अर्थ का बहाव उचित दिशा में है ? कदापि नहीं।

समस्या हम सब के लिए विचारणीय है। प्रथम तो अधिक मात्रा में धन होने पर भी उसके व्यय का औचित्य विचारना ही

(शेष पृष्ठ ६ पर)

आर्यसमाज लक्ष्मणसर अमृतसर

वेद, सप्ताह का कार्यक्रम भली प्रकार से सम्पन्न हुआ। १२ अगस्त से प्रातः ६ से ८॥ बजे तक बृहद यज्ञ और पं० ओमप्रकाश जी की कथा से कार्यवाही आरम्भ हुई।

सायकाल ८॥ बजे से १० बजे तक प्रतिदिन लोहारीगेट के बाहर वाल्मीक मन्दिर में सत्संग, मधुर भजन, और उपदेश होते रहे। यह कार्यक्रम २० अगस्त तक निरन्तर चलता रहा। यज्ञ की पूर्णाहुति बड़ी धूमधाम से पूर्ण हुई।

श्री पं० ओमप्रकाश जी ने महाराज श्री कृष्णचन्द्र जी के जीवन पर प्रकाश डाला।

वाल्मीकि मन्दिर का कार्य-क्रम भी प्रभावशाली रहा। यज्ञ की समाप्ति पर १०१/- सभा को वेद प्रचारार्थ प्राप्त हुआ।

—रुद्रदत्त शर्मा
प्रधान आर्यसमाज

आपका धन कहां जाता है?

(पृष्ठ ५ का शेष)

चाहिये फिर अभाव की दशा में तो यह हमारा अनिवार्य कर्त्तव्य हो जाता है कि हम अपनी अंगुलियों में छेद न होने दें। स्वास्थ्य, नैतिक शिक्षा पर खर्च किया धन हमारे चरित्र तथा शरीर बल की वृद्धि करेगा। इससे हम अधिकाधिक धनोपार्जन में सफल होंगे। और यह समस्या केवल देवियों की है अतः हमारा अपनी बहिनों के लिए यही सुझाव है कि सुगृहिणी रूप में पैसा-पैसा दांतों से पकड़ें। लुटाने के नाम की उदारता ने देश का चरित्र और स्वास्थ्य दोनों जीर्ण-शीर्ण कर दिए हैं। कलह-क्लेश हीन-भावना तथा मन-मुटाव को जन्म दिया है। सादा जीवन उच्च विचार धन के सद्व्यय की कुञ्जी है। धन का अपव्यय दुर्बल सन्तानों की वृद्धि कर देश को शत्रुओं से आक्रान्त कराने का कारण बना है, यह हमें कभी भी भूलना नहीं है।

गुरुकुल वैदिक आश्रम वेदव्यास (सुन्दरगढ़)

उड़ीसा राज्य के तबिरा ग्राम में ८-७-६५ को ३२ ईसाईयों की शुद्धि करके पुनः वैदिक धर्म में प्रविष्ट किया। इस अवसर पर केसिंगा के व्यापारी वर्ग ने पूर्ण सहयोग दिया। १०-७-६५ को एक ईसाई युवती को शुद्ध करके उसका विवाह एक आर्य युवक से सम्पन्न हुआ। इसी प्रकार २१-७-६५ को श्रीया नामी युवती को शुद्ध करके आदि कन्द यादव के साथ गुरुकुल आश्रम में विवाह संस्कार कर दिया। —ब्र० त्रिनाथ देव

आर्य युवक परिषद देहली

प्रसिद्ध आर्योपदेशक श्री देवव्रत जी धर्मेन्दु रिटायर होने के पश्चात अपना सम्पूर्ण समय देकर आर्य समाज के प्रचार कार्यों में ही सतत लगे हुए हैं।

आर्य स्त्री समाजों, युवक सभाओं के साप्ताहिक सत्संगों तथा पारिवारिक सत्संगों, वार्षिक उत्सवों, विशेष प्रचार कथाओं, शुभ संस्कारो तथा यज्ञों आदि पुण्य कार्यों में आप [illegible] जी की सेवाओं से लाभ उठावें।

श्री पण्डित जी को बुलाने का पता निम्न है।

श्री पं० देवव्रत जी धर्मेन्दु आर्योपदेशक, १६५४, कूचा दखिनीराय, दरियागंज देहली ६—

ओमप्रकाश
मन्त्री आर्य युवक परिषद देहली

५ सितम्बर को विरोधी धड़े द्वारा बुलाया गया आर्य प्रतिनिधि सभा

पंजाब का अधिवेशन नहीं होगा

सब जज अम्बाला ने निषेधादेश जारी करके रोक दिया

जालन्धर २४ अगस्त आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के विद्रोही धड़े ने ५ सितम्बर को सभा का इजलास (अधिवेशन) अम्बाला छावनी में बुला रखा था और इस के लिए एजण्डा भी प्रसारित करके पूरी तैयारी कर रखी थी। किन्तु आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के मन्त्री श्री रघुवीर सिंह शास्त्री ने श्री ए० एन० अग्रवाल सबजज प्रथम श्रेणी अम्बाला छावनी में इसके विरुद्ध अभियोग दायर कर दिया। इस पर सब-जज महोदय ने डा० हरिप्रकाश अलंकार मैडीकल हाल अम्बाला को ५ सितम्बर को सभा के अधिकारियों और अन्तरंग सदस्यों के निर्वाचन आदि के लिये बुलाया गया साधारण अधिवेशन निषेधादेश देकर रोक दिया है। इस अभियोग में सभा के मन्त्री श्री रघुवीर सिंह शास्त्री ने कहा कि डा० हरिप्रकाश इस सभा के मन्त्री नहीं हैं। इसलिए उन्हें इस प्रकार का अधिवेशन बुलाने का कोई अधिकार नहीं है।

देवदत्त कार्यालयाध्यक्ष

★ मधु कलश ★

सोच समझ कर चले चलो तो जीवन में पौंबारा
भावुकता में बहने वाला गया मुफ्त में मारा
अगर सांप को मरवाना है दुश्मन से मरवाओ
सांप मरेगा या दुश्मन से पा लोगे छुटकारा

★

विश्वासों के बल पर ही तो चलता है जग सारा
अविश्वास करने वालों को मिलता नहीं किनारा
पाकर के विश्वास किसी को चोट अगर पहुँचाई
सच्चे भरोसा नहीं करेगी दुनिया कभी तुम्हारी

★

गर्जन करते थोथे बादल फिरते हैं इतराये
लेकिन जलधर विनय भार से युक्त हैं शीश झुकाये
विद्या पढ़कर अगर साथियो किया नहीं अनुशीलन
खेत जोत कर बैठ गए तुम बीज नहीं बो पाए

—विजय निर्बाध

शोक प्रस्ताव

सी० ए० वी० हायर सैकेण्डरी स्कूल हिसार के अध्यापक, छात्र तथा कर्मचारियों की यह सभा (दिनांक १७-८-६५) को प्रसिद्ध शिक्षा-शास्त्री तथा डी० ए० वी० कालिज प्रबन्ध-कर्त सभा देहली के उच्चतम उपप्रधान श्री रायबहादुर मनमोहन के आकस्मिक निधन पर शोक प्रकट करती है तथा उनकी आत्मा की सद्गति व उनके परिवार के साथ गहरी सहानुभूति प्रकट करते हुए परमपिता प्रभु से शान्ति व धैर्य की प्रदान करने की प्रार्थना करती है।

गिरधारी लाल
प्रिंसीपल सी० ए० वी० हायर सैकण्डरी स्कूल हिसार

दयानन्द ब्राह्ममहाविद्यालय हिसार

प्राध्यापकों तथा छात्रों की यह सभा श्रीयुत रायबहादुर मनमोहन जी भूतपूर्व प्रधान डी. ए. वी. कालिज मैनेजिंग कमेटी देहली के आकस्मिक निधन पर हार्दिक शोक प्रकट करती है। परमेश्वर से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को शान्ति प्राप्त हो और उनके पारिवारिक जनों को दुःख सहन करने की शक्ति तथा धैर्य प्रदान करें।

विद्यालय आज उनके शोक तथा सम्मान में बन्द किया गया।

मुरारीलाल शास्त्री उपाचार्य

डा० भगवत शरण उपाध्याय का वेद विषयक भ्रम

(ले०—श्री प्रो० भवानीलाल जी भारतीय एम. ए.)

(गतांक से आगे)

अपितु प्राकृतिक शक्तियों के प्रतीक हैं। स्वामी दयानन्द ने इसी सूक्त के 'अन्यमिच्छस्व सुभगे पतिम्' इस मंत्रांश के आधार पर इस सूक्त को नियोग का विधायक माना है। अन्य विद्वानों की सम्मति में भी यम और यमी भाई व बहिन न होकर पति-पत्नी हैं। यदि वादि तोष न्याय से इन्हें भाई बहिन मान भी लिया जाए तो यम का यमी से संभोग न करना और यह कहना कि ऐसे युग आगे आएंगे जब कि लोग अगम्या गमन में प्रवृत्त होंगे यह सूचित करता है कि इस प्रकार के अवांछानीय सम्बन्धों का भविष्य में होना ही इस प्रकरण में सूचित किया गया है। वस्तुतः यह सूक्त अगम्यागमन का विधायक तो किसी भी प्रकार से नहीं माना जा सकता।

इसी प्रकार डा० उपाध्याय के पांचवें लेख में विधवा विवाह, सती और नियोग की जिन प्रथाओं का उल्लेख किया गया है उसमें से विधवा विवाह और नियोग के वेदोक्त होने में हमें कुछ भी आपत्ति नहीं है किन्तु सती के विषय में उन्होंने खुदने ही लिख दिया है कि ऋग्वेदोक्त मंत्र के 'योनिमग्रे' को 'योनिमग्ने' बना कर सती का वेदोक्त होना सिद्ध करना सत्य ही उपहासास्पद है। वेद में सती होने का कहीं भी उल्लेख नहीं मिलता। यह क्रूर और बर्बर प्रथा मनुष्य जाति में उस समय प्रचलित हुई जब कि स्त्रियों को पुरुषों की सम्पत्ति माना जाने लगा और वे पुरुष की मृत्यु के साथ ही जला कर उसकी सहगामिनी बनने के लिए विवश की गई।

अन्तिम लेख में ऋग्वैदिक युग में बहुपत्नी तथा बहुपति विवाह का उल्लेख किया गया है। बहुपति विवाहों के अस्तित्व के बारे में तो स्वयं डा. उपाध्याय ही अधिक आश्वस्त नहीं हैं। बहुपत्नी विवाह के लिए उन्होंने जो उदाहरण दिये हैं वे भी मनुष्य जीवन से सम्बध न रखकर प्राकृतिक जीवन के ही उदाहरण प्रस्तुत करते हैं (अतः उन से मनुष्य समाज के बारे में कोई धारणा बनाना न्याययुक्त नहीं होगा। अन्त में हमारा उपाध्याय महोदय से निवेदन है कि वेद का अध्ययन पूर्वाग्रह युक्त दृष्टि से न करें। उसमें विश्व के सम्पूर्ण मानव मात्र के लिये जो सार्वभौम और सार्वकालिक उपदेश दिए गये हैं उनका उद्घाटन करने में अपनी प्रतिभा को व्यय करें न कि इस प्रकार के मिथ्या प्रवादों को वेदों के मत्थे मंढ़ने की चेष्टा करें।

डी. ए. वी. H/S स्कूल चंडीगढ़ में कृष्ण जन्माष्टमी

१९-८-६५ को हवन यज्ञ के साथ डी. ए. वी. स्कूल के प्राङ्गण में सहस्रों नर-नारियों तथा विद्यार्थियों की उपस्थिति में पूज्यपाद महात्मा आनन्द स्वामी जी की अध्यक्षता में श्री कृष्ण जन्मोत्सव का प्रारम्भ करते हुए प्रि० गोपालदास खन्ना ने कहा कि जब अत्याचार और अन्याय बढ़ जाता है तो तलवार को बाहर निकालना चाहिये। यह महाराज कृष्ण की गीता की शिक्षा है। इसी लिये अहिंसात्मक आंदोलन के प्रणेता महात्मा गांधी ने भी पाकिस्तानी आक्रमणकारियों से कश्मीर को स्वतन्त्र कराने के लिये श्री नेहरू जी को काश्मीर पर चढ़ाई की अनुमति दे दी। फिर भी हमारे देश में कतिपय गांधी भक्त अहिंसा के रूप को गलत समझते हैं और जिन के कारण ही चीन ने यहां आक्रमण करके हिमालय की सुदृढ़ सीमाओं को तोड़ दिया जो सहस्रों वर्षों से हमारी रक्षक बनी हुई थीं। जहां बाह्य शांति शस्त्रास्त्र और कुशल राज्य नीति के आधार पर महाराज ने कहीं वहां आंतरिक शांति के लिये बताया कि 'बुद्धि की शरण में जाओ।' अर्थात् बुद्धि पूर्वक कर्म करो तथा समत्व को योग बतलाते हुए कहा कि ज्ञान के सदृश इस संसार में और कोई पवित्र करने वाली वस्तु नहीं है। जब कि ज्ञान, श्रद्धा और गुरुजनों की भक्ति से प्राप्त होता है। चौथा और पांचवां साधन शांति का गीता ने अनन्य भक्ति और कर्म को कहा है। प० सुदर्शन देव शास्त्री ने कहा कि कृष्ण महाराज ईश्वर नहीं थे अपितु मानवता के अवतार थे। महान राजनीतिज्ञ तथा योगेश्वर थे। उनके जीवन को भागवत से नहीं अपितु महाभारत से देखते हुए उनके महा ब्रह्मचर्य व्रत पालन वीरता, धीरता, संगठन और मैत्री का दूत होना. राजनीति का उत्कृष्ट विद्वान और तत्कालीन विश्व के सभी राजाओं में बुद्धि और ज्ञान बल में सर्व पूज्य होना इत्यादि इन आदर्शों को हमें अपनाना चाहिये। आज की सरकार के लिये आधुनिक परिवार नियोजन जैसी अनाचार पद्धति की अपेक्षा श्री कृष्ण का परिवार नियोजन कितना आदर्श तथा अनुकरणीय है कि रुक्मणी के साथ मिल कर १२ वर्ष का कठोर ब्रह्मचर्य धारण करके केवल एक सन्तान उत्पन्न की और ऐसी कि जब पिता और पुत्र इकट्ठे खड़े होते थे तो कोई जान ही नहीं पाता था कि कृष्ण कौन है और प्रद्युम्न कौन है?

महात्मा आनन्द स्वामी जी ने अपना प्रवचन आरम्भ करते हुए कहा कि आज जब कि चारों ओर भ्रष्टाचार और अनाचार छा रहा है। हजारों पाकिस्तानी चोर और डाकू काश्मीर की सीमाओं में घुस आये हैं और लाखों आसाम के अन्दर आ गये हैं ऐसे समय में भगवान कृष्ण की गीता का उपदेश ही हमें सुरक्षा और विजय दिला सकता है। गोवंश का नाश होता जा रहा है पर गौ की टेर सुनने वाला कोई नहीं है। कांग्रेस सरकार भी गोहत्या को बंद नहीं कर सकी। कोई समय था जब कि शराब की दुकानों पर पिकिटिङ्ग करते हुए कांग्रेस के स्वयं सेवक छाती पर गोली खाने को तैयार रहते थे किन्तु अफसोस कि वही कांग्रेस सरकार अब नित नये शराब खाने खुलवा रही है।

हे भगवान! आप कहां हो आओ और इस देश की दुर्दशा को देखो। इधर कम्यूनिस्ट इस देश का अन्न खाते हुए चौ-ऐन-लाई का सनाओं के गले में हार डालने के लिए तैयार बैठे हैं। फूट, द्वेष और पार्टी-बाजी देश को घेरे हुए है। जो लक्षण महर्षि दयानन्द ने विदेशी राज्य आने के लिखे हैं वही सब प्रकट हो रहे हैं। नये-नये दल बन रहे हैं, फिर उन में भी परस्पर वैमनस्य बढ़ रहा है। सन्त फतेहसिंह और मा० तारासिंह दोनों पंजाबी सूबा मांगते हैं। पर आपस में फट रहे हैं। क्यों न इन दोनों को पाकिस्तान भेज दिया जाए ताकि देश की एकता सुरक्षित हो जाए। 'यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः' का वह समय आ गया है। आज मेरे देश को कृष्ण जैसे, ब्रह्म ज्ञानी और क्षत्री वीरों की आवश्यकता है।

(शेष पृष्ठ ८ पर)

आर्यसमाज म...

के ...

शुभ-दान

स्वर्गीय प्रिंसिपल ज्ञानचन्द जी भाटिया के सुपुत्रों ने आर्य समाज माडल टाऊन को एक हजार रुपया हाल के निर्माण के लिये दान दिया है। श्री साहिब राम जी तनेजा के आकस्मिक निधन पर उनकी धर्मपत्नी श्रीमती तनेजा जी ने आर्य समाज को एक सौ रुपया दान दिया है। आर्य समाज की ओर से इन सब का धन्यवाद किया जाता है।

उद्यानारोपण

इस वर्षाऋतु में आर्य समाज माडल टाऊन ने अपने क्षेत्र में एक सुन्दर उद्यान लगाने का प्रयत्न किया है। एक माली रखा गया है और इस समय तक ५० सफेदे के वृक्ष और अनेक गुलाब के पौदे लगवाए गए हैं। इन सफेदे के वृक्षों के घेरे के बीच शहतूत के बहुत से पेड़ लगाए जाएंगे। आशा है एक दिन यह उद्यान बड़ा होकर माडल टाऊन की शोभा बनेगा ... साथ दो सुन्दर लान बनवाने का भी विचार है।

वेद प्रकाश मलहोत्रा मन्त्री

शोक प्रस्ताव

आर्य समाज माडल टाऊन जालन्धर ने अपने सत्संग तिथि १५-८-६५ में अपने माननीय सदस्य श्री एस. आर. जी. कालेजा की अकाल मृत्यु पर शोक प्रस्ताव पास किया तथा उनकी सद्‌गति के लिये ईश्वर से प्रार्थना की गई। श्री तनेजा जी आर्य समाज के बड़े प्रेमी थे और अपने जीवन में आर्यत्व को व्यवहारिक रूप में उतारने वाले थे। वे जालन्धर में लाईफ इंश्योरेंस कार्पोरेशन के डिप्टी जनरल मैनेजर थे। समाज उनके परिवार के साथ सहानुभूति प्रकट करती है।

...पुरा में वेद सप्ताह की धूम

३० अगस्त १९६५ से ५ सितम्बर १९६५ तक वेद सप्ताह बड़े समारोह से मनाया जा रहा है। वेदों को अपनाये बिना विश्व शांति असम्भव है। इस विषय पर श्रीमान प. त्रिलोकचन्द जी शास्त्री B.A. महोपदेशक आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब वेदों की कथा करेंगे।

कार्यक्रम

रात्रि ८ बजे से ८-४५ तक भजन—श्री मदन मोहन राजपाल जी चिमटा मण्डली के। ८-४५ से ९-४५ तक उपदेश—श्रीमान पं० त्रिलोकचन्द जी शास्त्री। ९-४५ से १० बजे तक—आरती तथा शांति पाठ।

आनन्द सागर आर्य सहायक मन्त्री

★ विनाश काले विपरीत बुद्धिः (मुसीबत आने पर बुद्धि खराब हो जाती है।)

...ज गोरेगांव (बंबई) का वार्षिक चुनाव

प्रधान—श्री दीवानचन्द जी साहनी
मन्त्री— „ रघुनाथ जी वर्मा
उपमंत्री—श्री वेदमित्र जी मलिक
उपप्रधान—„ रामप्यारे जी सिधवानी
हिसाब निरीक्षक (Auditor)—श्री नरसिंहदेव जी मखीजा
कोषाध्यक्ष—श्री प्रभुदयाल जी मलिक
सदस्य—श्री सुमेश देसाई
„ — „ देसराज जी साहनी
„—श्रीमती सुशीला देवीजी साहनी
„ — „ रूपरानी जी मलिक

वेदमित्र—मंत्री समाज

आर्य समाज मालवीय नगर देहली का चुनाव

प्रधान—श्री रामसरन जी, उपप्रधान—श्री चिमनलाल जी, श्री नंदलाल जी, मंत्री—श्री डी. आर. जुनेजा, उपमन्त्री—राम कंवर जी, कस्तूरिया जी, कोषाध्यक्ष—श्री सरदारीलाल जी, पुस्तकाध्यक्ष—श्री वासुदेव जी, आडिटर—श्री दरयादत्त जी।

—डी. आर. जुनेजा मन्त्री समाज

डी.ए.वी. हायर सैकेन्डरी स्कूल चरखीगढ़ में कृष्ण जन्माष्टमी

(पृष्ठ ७ का शेष)

काश कि हमने गीता के इस वाक्य धर्म की ओर ध्यान दिया होता तो यह अवस्था न होती जो आज हो रही है। काश्मीर से पाकिस्तानी आततायियों को भगाते हुए हमारी सेनाओं ने कहा था यदि हमें आदेश मिल जाए तो हम भारत के तिरंगे को रावलपिंडी जाकर लहराएंगे। किन्तु शेख-अब्दुल्ला के इशारा पर ... नेहरू ने भारतीय बहादुरों को रोक दिया। यह वह हिमालय जैसी महान गलती थी जिसका दुष परिणाम हम आज तक भोग रहे हैं। इसलिए कृष्ण जन्म मनाते हुए और गीता की शिक्षा से जीवन लेते हुए भारतवासियों! छोड़ दो अपने आराम और शृंगार को। यह समय है तप और क्लेश की भट्ठी में जलकर देश को बचाने का। याद रखो यदि काश्मीर चला गया तो पंजाब भी नहीं बचेगा। भगवान कृष्ण का जीवन चुनौती था, भ्रष्टाचार, अत्याचार और अन्याय के विरुद्ध। इसलिए सकल्प धारण करके उठो और बुद्धि बल, आचार बल तथा बाहु बल के आधार पर अपने राष्ट्र को विजय प्राप्ति की मंजिल पर डाल दो।

आर्यसमाज के प्रधान श्री ... जी परिवार ने वेद सप्ताह की अमृत वर्षा के लिए पूज्य महात्मा जी का धन्यवाद करते हुए सब के प्रति आभार प्रगट किया।

—... आर्य पुरोहित

मुद्रक व प्रकाशक श्री सन्तोषराज जी आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर द्वारा वीर मिलाप प्रेस, मिलाप रोड जालन्धर से मुद्रित तथा जगत कार्यालय महात्मा हंसराज भवन निकट कचहरी जालन्धर शहर से प्रकाशित मालिक—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर



टैलीफोन नं० ३०४७ [आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधिसभा पंजाब जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd. No. P. 121

एक प्रति का मूल्य १३ नये पैसे वार्षिक मूल्य ६ रुपये

वर्ष २५ अंक ४०) ११ आश्विन २०२२ रविवार—दयानन्दाब्द १४१—२६ सितम्बर १९६५ (तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

वेद सूक्तय:

अग्नि: प्रति रक्षांसि सेधति

यह हमारा अग्नि:—अग्नि के समान चमकने वाला वीर नायक सारे रक्षांसि—राक्षसों को, अत्याचारियों को प्रतिसेधति—दूर करता है। जो भी राक्षस बन कर सताते हैं, उन सब को हमारा अग्नि सेना को साथ लेकर नायक अपनी शक्ति से दूर कर देता है। घास के समान जला देता है।

महे वृत्राय हन्त वे

जो वृत्र हैं, राक्षस बन कर अन्धेरा फैलाता है, लूट मार करता है, चाहे वह कितना बड़ा भी क्यों न हो—उस पापी राक्षस को मारने के लिए हमारा नायक आग बन कर उन को भस्म कर डालने के की शक्ति रखता है। राक्षसों को मारना उस का काम है।

वृत्रहन्नुदगा

हे वृत्रों को राक्षसों, पापियों व राष्ट्रघाती शत्रुओं को मारने वाले वृत्रहन् इन्द्र! आप वज्र की शक्ति को रखने वाले हैं। सारे पापियों को दण्ड देने वाले हो। उन को भस्म कर डालने वाले हो। इस लिए आप सर्वदा तैयार रहते हो। सूय के समान उदित रहते हो ताकि चोर न आ सके। सा म वे द से

वे दा मृ त

शत्रु के दांत तोड़ दो

वि रक्षो वि मृधो जहि वि वृत्रस्य हनू रुज।
वि मन्युमिन्द्र वृत्रहन्नमित्रस्याभिदासतः॥

साम० अ० २१ सू० ७ मन्त्र १

अर्थ—हे इन्द्र! वीरनायक! (रक्ष:) राक्षस को तथा (मृध:) लूटने खसूटने वाले शत्रु को भी (विजहि) मार डाल तथा (वृत्रस्य) वृत्र के, जो हमें घेर कर मारना चाहता है उसे भी (हनू) उसके दाढ़ों को (रुज) तोड़ डाल। उसके दांतों को तोड़ कर बाहर निकाल दे। जो (मन्युम्) क्रोध रूप है, उसे तथा जो (अमित्रस्य) वैरी है, स्नेह से रहित है उसे भी और जो हमें (अभिदासत:) दास बनाना चाहता है उसको भी (विजहि) हे वीर नायक! मार दे, नष्ट कर दे।

भाव—वेद के इस सूक्त में शत्रु का मारने का, उसके अत्याचार को शक्ति से समाप्त कर देने का कितना सुन्दर उपदेश है। राष्ट्र के नायक को, सेना के स्वामी इन्द्र को वीर नेता को कहा गया है कि वीर नायक! ध्यान रखना। जो भी मनुष्य के रूप वेष में राक्षस बन कर राष्ट्र में उत्पात करना चाहता है। जो लोगों को लुट खसूट कर उनका धन छीनना चाहता है। शत्रु बन कर देशघाती बन कर हानि पहुँचाता है। जो हमारी स्वाधीनता छीन कर हमें दास बनाना चाहता है, या जो क्रोध रूप बन कर हमें सताता है। हे नायक! अपने दलबल के साथ इन सब राक्षसों, शत्रुओं, लुटेरों, और घातकों को मार डाल। उनके दांत तोड़ डाल। उनको बच कर जाने मत दे। आप इन्द्र हैं, आप के होते हुए न कोई राक्षस बचने पाये, न लुटेरा और न ही कोई शत्रु बच कर जाने पाये। उन सब को पकड़ कर मार-मार कर कचूमर, निकाल दे। उन विषैले दांतों व दाढ़ को तोड़ दे। —सं०

पाक और चीन 'हिटलर के पदचिन्हों पर चल रहे हैं

—मेनन

नई दिल्ली २० सितम्बर—भूतपूर्व प्रतिरक्षा मन्त्री श्री कृष्णा मेनन ने कल यहां सोशल कलचरल लीग के तत्वाधीन में भाषण करते हुए कहा कि चीन के सभी आरोप बेबुनियाद हैं। १९६२ से लेकर अब तक भारत ने चीन की सीमा में कोई सैनिक निर्माण नहीं किया है। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान और चीन दोनों हिटलर के पद-चिन्हों पर चल रहे हैं।

पाकिस्तान की अवसरवादिता की नीति की चर्चा करते हुए श्री मेनन ने कहा कि पाकिस्तान भारत से युद्ध करने के लिए चीन से अथवा किसी अन्य गुट से कभी भी समझौता कर सकता है। श्री मेनन ने पाकिस्तान आक्रमण का मुकाबिला करने के लिए देशवासियों में एकता तथा राष्ट्रीयता की भावना को आवश्यक बताया। भारत को ब्रिटेन को अल्टीमेटम देना चाहिए कि उसकी पक्षपात की नीति के कारण भारत का राष्ट्रमूल बने रहने का अब कोई विशेष अर्थ नहीं है।

अधिष्ठाता—श्री संतोषराज जी सम्पादक—त्रिलोक चन्द्र शास्त्री

राष्ट्र का [illegible] लग गया है—

सावधान भारतवासियो !

—लेखक—[illegible]नारायण सिंह एम० ए०

आज हमें एक [illegible] बड़ा संकल्प लेना है। आज से करीब [illegible] वर्ष पहले [illegible] रावी के तट पर हमारे गुलामी की जंजीरों में जकड़े देश ने यह अहद लिया था कि गुलामी की बेड़ियों को काट कर ही रहेंगे, उसे आजाद कर के ही दम लेंगे, अपने राष्ट्रीय जीवन को आप चलायेंगे, बनाएंगे, सुधारेंगे सवारेंगे। जिस पवित्र भूमि पर हमने पहले-पहल पूर्ण आजादी हासिल करने का व्रत लिया था, उसी भूमि को आज पाकिस्तानी दरिंदे रौंद देना चाहते हैं। हमारे महान रहनुमों की मेहनत और कुर्बानी से जो स्वराज्य मिला है, देश के नौनिहालों के खून के कतरों से आजादी का जो पौधा पनपा है नौजवानों के बलिदानों से जिन्दगी की जो नई रोशनी मिली है, तरुणा के प्राणों की आहुति से प्रजातन्त्र का जो दीप जला है धर्मनिरपेक्ष राज्य की जो मजबूत बुनियाद पड़ी है, उसे छीनने, उजाड़ने और बुझाने के लिए भयंकर तूफान आ गया है। हमारे देश का उत्तरी प्रहरी हिमालय को कपाने वाली बर्फों में भी जलाने वाली गर्मी आ गई है और वह अंगड़ाई लेकर हिन्द के जवानों को जग उठने के लिए हुंकार उठा है।

पाकिस्तान ने खूंखार चीन से सांठ गांठ कर हमारे साथ खूनी युद्ध शुरू कर दिया है। तानाशाह अयूब बेशुमार पैटन टैंक, अमरीकी एफ.८६ सेबर जेट—विमान और सुपरसोनिक एफ १०४ जेट विमान झोंक कर हमारी सेना पर हावी हो जाना चाहते हैं। जो पाकिस्तान इस्लामी देश [illegible] का [illegible] करता है उसके ही [illegible] नामों से पाक मस्जिदें ढह रही हैं। पाकिस्तानी दरिन्दों के खिलाफ काश्मीरी जनता जिन्दगी और मौत की लड़ाई लड़ रही है। पाकिस्तानी घुसपैठियों के हौसले पस्त होने जा रहे हैं। अगर वे काश्मीर में घुस कर कामयाब हो जाते तो भारत की निरपेक्षता की नीति पर बहुत बड़ा आघात पहुँचता कोई इस भुलावे में नहीं रहे कि अमरीकी फौजी मदद के नशे में चूर घमंडी पाकिस्तानी जगबाज इस हमले को सिर्फ फौजी हमला समझते हैं। वे कश्मीरी बहिश्त में जाने का ख्वाब देखते रहे हैं। अपने सपने को पूरा करने के लिए उन्होंने कौन से कुकर्म नहीं किए। काश्मीर को हड़पने के लिए ही तो वे पश्चिमी गुट में मिले, अमरीका से फौजी मदद ली इस्लामी देशों का गुट बनाने की कोशिश की और अन्त में चीन से सांठगांठ किया चीनियों ने पाकिस्तानियों को गुरिल्ला युद्ध की शिक्षा दी और तोड़-फोड़, अग्निकांड तथा लूटपाट के लिए गुरिल्ला हमलावर काश्मीर में भेजे गए।

चीन ने जिस प्रकार अफ्रीका के कुछ देशों में आन्तरिक तोड़-फोड़ के जरिए वहां के शासन में उलट फेर कराया, उसी प्रकार वह काश्मीर और भारत में भी तोड़ फोड़ कराकर यहां अपनी कठपुतली सरकार बनाना चाहता है। वह सम्पूर्ण एशिया-अफ्रीका का नेता बनने का मनसूबा देख रहा है। इस सपने को पूरा करने के लिए वह सबसे पहले हमारे देश को प्रगतिशील ताकत तथा राष्ट्रीय आदर्श को मिटा देना चाहता है। वह तटस्थता तथा जम्हूरियत के सब से बड़े गढ़ भारत को नेस्तनाबूद कर देना चाहता है। उसकी इस साजिश में उसे पाकिस्तान से बढ़कर दूसरा साथी कोई नहीं मिल सकता था।

चीन तथा पाकिस्तान दोनों की अपनी आर्थिक व्यवस्था छिन्न भिन्न हो चुकी है। उनकी विकास योजनाएं असफल हो चुकी हैं और औद्योगिक पैदावार कम हो गयी है। उन्होंने जिस जागीरशाही का सपना देखा था वह सपना टूट चुका है। माओत्से तुंग की इस उम्मीद पर कि उनकी बहुमें वाली तोपें उसकी बढ़ती आबादी को भोजन देने में समर्थ होंगी, कम्युनिज्म और कम्यून [illegible] सारी समस्याएं हल कर देंगी, पानी फिर गया है। पाकिस्तान में भूख से बिलखते बच्चों को चीख, भ्रष्टाचार, पक्षपात आदि से ऊबकर वहां की जनता तानाशाही हुकूमत के खिलाफ होती जा रही है। भीतर ही भीतर एक ज्वालामुखी सुलग रही है। वह ज्वालामुखी फूट कर सम्पूर्ण देश को भस्मीभूत न कर दे, इसके लिए पाकिस्तानी नेता चिन्तित हो उठे हैं। वे देश के उलझे सवालों की ओर से जनता का ध्यान मोड़ कर भारत-पाक लड़ाई-जीवन-मरण के एक विशेष महत्वपूर्ण सवाल की ओर ले आना चाहते हैं। साथ ही सत्ता हासिल करने के लिए पाकिस्तानी नेताओं में होड़ मची है। सत्ता रूढ़ सैनिक बल पर ही टिके हैं। विकास-कार्य ठप्प हो जाने से पाकिस्तानी तानाशाहों की नौका डगमगाने लगी है।

आभार—(वीर प्रताप)

एलान

[illegible] नाम में जो कत्ल [illegible] पड़े।
[illegible] फांसी [illegible] चढ़े॥
[illegible] छिपा।
[illegible] नापाक है, हर घड़ी हर मर्तबा॥
[illegible] कतु [illegible] चुका।
इनमें पाके-जिन्दगी [illegible]॥
[illegible] बम गिराये रात को।
सर कलम हो इस [illegible] का करम की इस रात को।
मुल्क की इज्जत की खातिर हिन्द में जोशो बहुत।
जंगे हक को जीतने का हौसला होशो, बहुत॥
याद देता है खुदा हौसला भारत का देव।
दिल में शैतां कांपता है कांपता भारत का देव।
हिन्द के बच्चे जवां सब मुल्क पे कुरबान हैं।
भीष्म से बूढ़े हमारे मुल्क की सब शान हैं॥
तोप गोलों से कभी भी हिन्द घबराता नहीं।
हर बम का हुंकारा करता हिन्द घबराता नहीं॥
हर अदा से चाहता है हिन्द खामोशी खुशी।
पाक, मत नापाक बन, तू छोड़ दे यह सरकशी॥
जो हजारों हिटलरों से खौफ तक खाता नहीं।
दावा ये सुन्दरलाल का, हिन्द झुक सकता नहीं॥

—सुन्दरलाल बोहरा

सम्पादकीय--

आर्य जगत

वर्ष २५|रविवार २०२२, २६ सितम्बर १९६५|अंक ४०

वीर जवानों को प्रणाम

संग्रामों से इतिहास बनता है। भारत पर होने वाले पाकिस्तानी आक्रमण को रोकने तथा अपनी मातृभूमि भारत की सुरक्षा करने के लिए भारत के सैनिक जवानों ने जिस वीरता, बलिदान तथा साहस का परिचय दिया है और देते जा रहे हैं, उसको सुन-सुन कर सारे देश का मस्तक गौरव से ऊंचा हो जाता है। माता के सारे वीर पुत्र एक हो कर अनेक मोर्चों पर खून की होली खेल रहे हैं। अब तक हम इतिहास में दूसरे देशों के युद्ध की बातें पढ़ते सुनते और याद करते रहे हैं किन्तु अब भारतीय जवानों ने जो-जो वीरता के शानदार एवं देवोचित कार्य किये व कर रहे हैं। शत्रु के फौलादी टैंकों को तोड़ने में, उन के हवाई जहाजों को भूमि पर मार गिराने में तथा वीरता से आगे ही आगे बढ़ते जाने में जो कमाल करते जा रहे हैं—उन सब की चर्चा बाद में इतिहास के पन्नों में सोने के अक्षरों में की जायगी। भारत माता के सम्मान के लिए वीर सैनिक मौत की घाटी में खड़े हो कर जो इतिहास बना रहे हैं—उस बलिदान वीरता तथा अटूट उत्साह के लिए सारा देश उन को बार-बार प्रणाम करता है। उनकी वीर गाथा अमर कहानी बन जाएगी। सारा देश इस समय एकता के सूत्र में पिरोया गया है। बाघा से कन्या कुमारी तक, द्वारका से नागा प्रदेश तक भारतीय जनता पाकिस्तानी भेड़ियों को मारने वाले वीर जवानों की पीठ पर है। इन वीर जवानों के माता पिता को भी सादर प्रणाम है। युद्ध क्षेत्र में वीरता के जौहर दिखाने वाले इन वीर सैनिकों की वीर कथाएं हमारे राष्ट्रीय जीवन का अंग बन कर सब को चेतना से भर दिया करेंगी। ये गाथाएं इतिहास के अमर पन्ने होंगे जिन को पढ़ २ कर भावी भारत की सन्तान अपने इन वीरों को सदा सिर झुकाती रहेगी। इन वीरों को वीरता के इन कामों पर वीर चक्र व महा वीर चक्र भी सरकार की ओर से प्रदान करके सम्मानित किया जा रहा है। इस समय सारा देश एक विशाल परिवार बन कर उस निरन्तर अठारह वर्षों तक किये जाने वाले अपमान का बदला ले रहा है, जोकि पाकिस्तान की ओर से भारत का किया जाता रहा है। भारत की शान्ति प्रियता को वह निर्बलता समझता रहा। आज उसे पता लग गया है कि भारत प्यार और तलवार दोनों का समय २ पर यथा योग्य व्यवहार करना जानता है। हर बात की सीमा होती है। शिशुपाल की सौ-गालियां पूरी हो जाने पर चक्रधारी कृष्ण का चक्र चल पड़ता है। भारत ने बड़ा धैर्य रखा पर जब किनारे टूट जायें तो उस प्रवाह का प्रबन्ध करना पड़ता है। वीर सैनिको! आप को बार-२ प्रणाम है। आप राष्ट्र की दिव्य विभूतियां हो। बढ़े चलो! बढ़े चलो।

सारा देश इस समय सरकार और सेना की पीठ पर है। इस समय विजय प्राप्त करके नित्यप्रति की शत्रु शरारत को समाप्त करना एक मात्र लक्ष्य है। सरकार को पूरा २ सहयोग देते रहो। तन मन धन सब कुछ भारत की रक्षा के अर्पण है—बढ़े चलो।

—त्रिलोक चन्द

आर्यसमाज की परम्परा

स्वदेशभक्ति का दूसरा नाम आर्यसमाज है। इस की स्थापना काल से प्रत्येक आर्य नर-नारी ने राष्ट्रप्रेम को अपने जीवन का अंग बनाया है। मातृभूमि इसे स्वर्ग से भी प्यारी है। आर्यसमाज के महान संस्थापक देव दयानन्द ने भारतीय जनता में स्वदेशभक्त तथा स्वराज्य प्रेम की भावना कूट २ कर भर दी थी। स्वतन्त्रता के सारे इतिहास में आर्यसमाज का बड़ा ऊंचा स्थान है। पीछे जब अन्यायी चैनी भेड़ियों ने अपने दांत निकाल कर जब भारत की भूमि को अपना ग्रास समझ कर आक्रमण किया था तब भी राष्ट्र के इस संकट काल में आर्यसमाज ने तन मन धन से अपने राष्ट्रिय कर्तव्य को पूरी तरह से निभाया था। आर्यसमाज की सभाओं, समाजों तथा सारी संस्थाओं ने राष्ट्र रक्षा पथ पर चलते हुए हर प्रकार से सरकार को योगदान दिया था।

आज फिर भारतीय भूमि पर पाकिस्तान के भेड़ियों ने अपने दांत निकाल कर आक्रमण किया है। काश्मीर में आग उगल कर सामान्य शहरियों तथा चलते फिरते लोगों पर अग्नि बरसा कर जलाने का काम शुरू किया है। धर्मस्थान भी उसकी दृष्टि में पवित्र नहीं रहे। मसजिदों में नमाज पढ़ने वाले अपने विचारों के धार्मिक स्थानों पर भी बमवर्षा करके उनको मारने में जिसे लज्जा नहीं आई। वह गुरुद्वारों व मन्दिरों का क्या ध्यान रखता। राक्षस को मर्यादा, मानवता तथा सीमा से क्या काम? उस राक्षस को भारतीय जवान छटी का दूध याद कराने में लगे हुए हैं। इस विषम समय में भी आर्यसमाज अपनी शानदार देशभक्ति की परम्परा का पालन करके अपना कर्तव्य निभाने में लगा हुआ है। अपने डी. ए. वी. स्कूल धन एकत्रित करके तथा जवानों के लिए खून देने में लगकर अपनी सरकार को पूर्ण सहयोग दे रहे हैं। अपने डी. ए. वी. कालेजों के सारे प्राध्यापकों तथा छात्रों ने अपनी सारी सेवाएं राष्ट्रीय सरकार को अर्पण करने की पेशकश कर दी है। उनके युवक अपने-अपने नगरों में नगर रक्षा के भिन्न-भिन्न कामों में जुट गए हैं जम्मू आदि स्थानों से आने वाले भाई बहिनों की सेवा करने न सेवा केन्द्र खोल दिये हैं। आर्य प्रादेशिक सभा जालन्धर के मान्य प्रधान श्री सुयश जी ने सभा की ओर से जालन्धर में इस प्रकार के दो कैम्प खोल दिए हैं। सभा तथा आर्य भाई बहिन इस सेवा कार्य में लगे हुए हैं। जनता में ऐसे समय वीर भावना तथा देश सेवा का भाव भरने के लिए अपने प्रचार के काम में पूरी तरह से आर्यसमाज लगा है। वीर सैनिक जवानों की सेवा के लिए नगर-नगर में आर्य नर-नारी भी कमाल कर रहे हैं। यह समय सेवा करने का है। आर्यसमाजें सेवा कार्य का हर प्रकार का विवरण भी सभा को भेजती रहें। आर्यो! राष्ट्ररक्षा के सेवा कार्य में जुटे रहो—सं०

प्रधानमंत्री को महासचिव ऊथांट का पत्र

भारत और पाकिस्तान के बीच लड़ाई बढ़ जाने से जो गम्भीर परिस्थिति पैदा हो गई है, उससे दोनों देशों के बीच शांति स्थापित करने के लिए और कोशिश करने के लिए मैं विवश हो गया हूं।

सुरक्षा परिषद ने ४ से ६ सितम्बर की तीन दिन की अवधि में दो बार युद्ध विराम का प्रस्ताव स्वीकृत किया है। मैंने भी इसके लिए दोनों देशों से अपील की है। इसके अलावा कई सरकारी और राज्य प्रधानों ने आपसे लड़ाई बन्द करने की अपील की है और इस काम में सहायता करने का प्रस्ताव किया है। दोनों देशों की सरकारों ने मेरे १२ सितम्बर के संदेश के जो उत्तर दिए हैं उनसे स्पष्ट है कि दोनों ही देशों ने इस प्रकार की शर्त रख छोड़ी हैं। जिससे यह काम बहुत मुश्किल हो गया है। मुझे दुख है कि इन्हीं शर्तों के कारण सुरक्षा परिषद के ४ और ६ सितम्बर के प्रस्तावों के अनुसार लड़ाई बन्द करना अब तक सम्भव नहीं हो पाया है।

इस पर फिर विचार करने की जरूरत है, इस लड़ाई को बंद करने के लिए दुनिया के देशों ने इस प्रकार के सामान्य प्रयत्न क्यों किए हैं। स्पष्टतया इसका कारण यह है कि यह बात सभी समझते हैं कि भारत और पाकिस्तान के बीच लड़ाई का सिर्फ एक ही नतीजा निकल सकता है, और वह है इन दोनों देशों की बरबादी और साथ साथ दुनिया की बरबादी।

अभी अभी मैंने आप से और प्रेसिडेंट अयूब खां से इस विषय पर बहुत स्पष्टतया पूर्वक और खुले दिल से बातचीत की है। मैंने आप से निवेदन किया है कि आप अपने देश की जनता के लिए और शांति स्थापन के व्यापक हित में लड़ाई बंद करने पर राजी होकर पहला कदम उठाएं, क्योंकि आज की परिस्थिति में लड़ाई से किसी समस्या का समाधान नहीं हो सकता और इससे दोनों पक्षों को नुकसान ही होगा।

जिन कारणों से यह संकट-कालीन स्थिति उत्पन्न हुई है उन्हें, और दोनों सरकारों की कठिनाइयों को, मैं खूब समझता हूं। दोनों पक्ष की भावनाओं और इस समस्या की गम्भीरता और पेचीदगी का महत्व भी मैं एक क्षण के लिए भी कम नहीं करता। मैं भली-भांति जानता हूं कि इन समस्याओं का निदान ढूंढने और उनका समाधान करने में वर्षों के धैर्यपूर्ण प्रयत्न की जरूरत होगी।

लेकिन मैंने देखा है कि दोनों पक्ष सच्चे हृदय से शांति चाहते हैं और अगर दोनों ही देश आज की स्थिति से छुटकारा पाकर आगे कोई कदम उठाना चाहते हैं तो उन्हें शांति के लिए अपनी हार्दिक इच्छा को ही आधार बनाना होगा। इसलिए पहला कदम यह होना चाहिए कि दोनों ही पक्ष लड़ाई बन्द कर दें और सभी प्रकार की शत्रुतापूर्ण कार्रवाइयां बन्द कर दें।

क्योंकि जब यह स्पष्ट हो गया है कि युद्ध विराम की मेरी अपील का दोनों पक्षों को मान्य हो। इस क्रम में मुझे १९६२ के उन दिनों की याद आई जब भारत में पैदा हुई परिस्थिति से सारी दुनिया में चिन्ता और भय व्याप गया था। उस अवसर पर २९ नवम्बर १९६२ को पाकिस्तान के प्रेसिडेंट और भारत के प्रधान मन्त्री ने अपनी सरकारों की ओर से निम्नलिखित संयुक्त वक्तव्य जारी किया था।

संयुक्त वक्तव्य

पाकिस्तान के प्रेसिडेंट और भारत के प्रधान मन्त्री इस बात पर राजी हो गए हैं कि दोनों देशों के बीच कश्मीर तथा अन्य सम्बद्ध मामलों पर जो मतभेद चले आ रहे हैं उनको दूर करने के लिए फिर से कोशिश की जाए जिस से भारत और पाकिस्तान में दोस्ती कायम हो और वे पड़ोसियों की तरह शांति-पूर्वक रह सकें।

इसके परिणाम स्वरूप दोनों देशों ने शीघ्र ही सम्मान पूर्ण तथा न्यायोचित समाधान ढूढ़ने के लिए विचार विमर्श करने का निर्णय किया है।

यह विचार विमर्श शुरू में मंत्रियों में होगा। उचित समय आने पर श्री नेहरू और प्रेसिडेंट अयूब में प्रत्यक्ष रूप से बातचीत होगी।'

यह राजनीतिज्ञता का एक ऐसा उदाहरण था जिस से दोनों देशों में शांति की स्थिति कायम हुई और दुनिया के लोगों की चिन्ता कम हुई। अगर बाद की बातचीत से बुनियादी समस्याओं का कोई समाधान नहीं निकला तो कम से कम इतना तो जरूर हुआ कि तत्काल का संकट टाला जा सका।

मैंने इस वक्तव्य का इसलिए उल्लेख किया है, क्योंकि मैं समझता हूं कि वर्तमान संकट को दूर करने का सब से अच्छा तरीका यही है कि दोनों देश सम्मानपूर्ण और न्यायोचित हल ढूढ़ने के लिए आपस में फिर कोशिश करें। अपनी उपस्थिति या गैर हाजरी में दोनों ही देशों के प्रधानों की मुलाकात का कोई प्रस्ताव मैंने अब तक नहीं रखा है क्योंकि मुझे अच्छी तरह मालूम है कि दोनों ही पक्षों ने ऐसी मुलाकात के बारे में अकसर शर्तें रखी हैं।

आज की स्थिति नवम्बर १९६२ की स्थिति की तरह ही गम्भीर या उस से भी ज्यादा गम्भीर है जो दोनों ही सरकारों के सामने उपस्थित हुई थी। इसलिए मैं यह सुझाव देना चाहता हूं कि आप ऐसी मुलाकात पर शीघ्र ही विचार करें। जहां तक मेरा सम्बन्ध है, लड़ाई बन्द करने के लिए तथा आपसी सद्भाव पैदा करने के लिए दोनों हो सरकारें जो भी कोशिश करेंगी, मैं किसी प्रकार की सहायता करने को हमेशा तैयार हूं। इस सम्बन्ध में मैं आपको दुनिया के उन नेताओं की याद दिलाना चाहूंगा जिन्होंने आपके चाहने पर लड़ाई खत्म करने में आपकी सहायता करने का प्रस्ताव किया है। सचमुच यदि आप शांति का रास्ता अपनाए तो दुनिया के अधिकांश लोग आपकी सहायता करनेको तत्पर हैं। अब मुझे सुरक्षा परिषद को अपनी रिपोर्ट पेश करने के लिए शीघ्र ही न्यूयार्क जाना पड़ रहा है। लेकिन मुझे आशा है कि इस सुझाव के सम्बन्ध में आप जल्दी ही जवाब देंगे। मैं यह स्पष्ट कर देना चाहता हूं कि शांति और सद्भाव के किसी भी प्रयत्न में सहायता पहुँचाने के लिए मैं हमेशा तैयार हूँ। मुझे पूरा विश्वास है कि सारी कठिनाइयों के बावजूद हम सभी यही चाहते हैं। मैंने इसी आशय का एक सन्देश प्रेसिडेंट अयूब-खां को भेजा है।

मैं स्पष्ट शब्दों में यह भी कह देना समझता हूं कि मैं यह अपील इसलिए भी कर रहा हूं कि मुझे पूरा भरोसा है कि लड़ाई को छोड़कर और कोई उचित और समझदारी का रास्ता निकल पाए तो दोनों देशों में से किसी भी देश के नेता इस लड़ाई के संहारकारी परिणामों की जिम्मेदारी अपने ऊपर लेना नहीं चाहेंगे। मैं आप को ऐसे ही एक रास्ते का सुझाव दे रहा हूं। दोनों ही देशों के नेताओं का अपने देश के लोगों और दुनिया के लोगों के प्रति यह कर्त्तव्य है।

अमर विभूति

महात्मा देवी चन्द्र जी एम. ए. होशियारपुर

(ले०—श्री रामकृष्ण जी गौतम, आर्य नगर त्यूड़ी, होशियारपुर)

(गतांक से आगे)

तथा अन्तिम समय तक इनका पालन करते रहे। इसी कारण ही आप इतने बुढ़ापे में होते हुए भी एक नवयुवक की अपेक्षा अधिक स्वस्थ्य तथा कार्य कुशल थे। बाढ़-पीड़ितों की सहायता—१९५५ ई० में इन्द्र देवता के कोप से जो देश में भयानक बाढ़ आई थी तथा उससे जनता को जिन आपत्तियों का सामना था इस समय भी आपने तथा आपके अनुयाईयों ने श्लाघनीय कार्य किया था। आप वृद्धावस्था के होते हुए भी स्थान-स्थान पर पीड़ितों की सहायता के लिए स्वयं गए तथा उनकी यथोचित सहायता की। उस समय के बचे धन से ही आपने यहां का श्रीमद्दयानन्द धर्मार्थ औषधालय आर्यसमाज मन्दिर में स्थापित किया तथा यह औषधालय आज वांछित सेवा कर रहा है।

हिंदी रक्षा सत्याग्रह में भाग—

आप १९५८ ई० के हिन्दी रक्षा सत्याग्रह में भी इतनी वृद्धावस्था के होते हुए भी किसी से पीछे नहीं रहे। आपने स्थान २ पर जाकर अपनी सिंह गर्जना द्वारा लोगों को उपस्थित संकट का सामना करने के लिए तैयार किया तथा धन और जन संग्रह करके अनुपम कार्य किया। आप जैसी महान् आत्मा का सत्याग्रही जत्था लेकर चण्डीगढ़ कूच कर देने वाली घोषणा ने ही सरकार के छक्के छुड़ा दिए तथा सरकार को हिन्दी रक्षा समिति की मांगों पर गम्भीरता पूर्वक विचार करने की घोषणा कर देने पर बाधित कर दिया।

जिला वेदप्रचारिणी की स्थापना

इस जिले के ग्रामों में वेद-प्रचार के कार्य को शिथल जानकर तथा वहां के प्रमुख व्यक्तियों के आग्रह पर आप ने १९५८ ई० में जिला वेद प्रचारिणी सभा को ...म दिया। थोड़े ही समय में इस के लिए पर्याप्त धन-संग्रह करके उच्चकोटि के उपदेशक तथा भजनोपदेशक रख कर ग्राम-ग्राम में वैदिक धर्म के प्रचार कार्य की व्यवस्था की। अब यह एक छोटा पौदा वृक्ष का रूप धारण करता हुआ वांछित सेवा कर रहा है।

वेदो का अंग्रेजी में अनुवाद

आपके मन में देर से यह ज्वाला प्रदीप्त थी कि जहां अन्य भाषाओं के वेत्ता वेदामृत पान कर रहे हैं वहां अंग्रेजी पढ़े लिखे लोग इस अमृत रूपी ज्ञान से केवल इस का अंग्रेजी में अनुवाद न होने के कारण वंचित है। इसी बात को मुख्य रखते हुए आपने अपने जीवन के अन्तिम वर्ष इस महान कार्य को पूर्ण करने में लगा दिया। आप दो वेदों का अनुवाद करके तीसरे का कर रहे थे कि अचानक बीमार हो गए तथा स्वास्थ्य सुधार के लिए देहली चले गए। वहां आप ४ जुलाई १९६५ के दिन रविवार को इस नश्वर देह को त्याग कर परमधाम को चले गए। जैसे वेद भगवान ज्ञान का मुख्य स्रोत है तथा अमर है वैसे ही आप भी वेदों का अंग्रेजी में अनुवाद करके अमर हो गए हैं आपका नाम भी तब तक इस भूमि पर रहेगा जब तक ये पवित्र ग्रन्थ रहेंगे।

आप प्रि० के पद से रिटायर होने के बाद चिरकाल तक आर्य समाज होशियारपुर, डी. ए. वी. कालिज कमेटी होशियारपुर तथा आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा जालन्धर के प्रधान पद पर विस्मरणीय कार्य करते हुए सुशोभित रहे। आप श्री मद्दयानन्द दलित उद्धार मंडल, अखिल भारतीय दयानन्द सालवेशन मिशन तथा जिला वेद प्रचारिणी सभा होशियारपुर के जन्मदाता थे। आप उच्चकोटि के व्यक्तित्व के स्वामी, वक्ता तथा लेखक थे आपका परोपकारी निस्वार्थमयी तथा धर्म प्रिय एवं समाज सुधारक जीवन संसार के लिए विशेषकर आर्य जगत के लिए प्रकाश स्तम्भ का कार्य करता रहेगा। यह देश, पंजाब तथा विशेषकर होशियारपुर का यह जिला आपके किये गए उपकारों से कदाचित भी उऋण नहीं हो सकता है, आप दृढ़ निश्चयी तथा अश्रांत कार्य करते थे (**He was the man of strange will power and determination**) के व्यक्तित्व से प्रभावित हो कर ही जनता आप की अनुयायी बन कर आपकी झोलिएं धन आदि से भर दिया करती थी। आप एक ऐसे संसारिक फकीर थे जिनकी तुलना विख्यात फकीर भी नहीं कर सकता है, जिसे भी अपने उदर पूर्ति के लिए दूसरों पर निर्भर रहना पड़ता है। परन्तु इस फकीर ने एक कौड़ी लिए बिना समाज सेवा कर के अन्त में भी जो कुछ सामग्री आदि शेष रह गई थी समाजकी भे को वसीयत लिखकर अपने आपको सदा के लिए हमसे जुदा कर लिया।

धन्य हैं वे मात-पिता धन्य है वह अंश जिसमें ऐसा चांद सा सपूत जन्म लेकर अपनी मधु यादें छोड़कर चल बसे अन्त में **He was a unique Personality of Mother India and the Arya Jagat is rightly**

विजयी वीर भारतीय सैनिकों की सेवा

देश के समस्त नागरिकों से प्रार्थना की जाती है कि अमृतसर में आने जाने वाले वीर सैनिकों की सेवार्थ एक कैम्प खोला गया है। जिसके द्वारा जलपान तथा अन्य आवश्य सुविधाएं प्रदान की जावेंगी।

यह कैम्प बाग के समीप चौक लारेंस रोड, क्वालिटी माल रोड पर खोला गया है। अत: अमृतसर निवासियों से अपील है कि अधिक आर्थिक सहायता नीचे लिखे पतों पर पहुँचाएं।

१. कैप्टिन केशवचन्द्र प्रधान केन्द्रीय आर्य सभा लारेंस रोड अमृतसर। फून नं. ४२६०५

२. गुरुचरण दत्त, मन्त्री केन्द्रीय आर्यसभा १६ ब्रह्मनगर, अमृतसर। फून न० ४६१०८

३. रूद्रदत्त शर्मा, आर्यसमाज लक्ष्मणसर अमृतसर।

४. अमृतलाल, प्रधान आर्यसमाज बाजार श्रद्धानंद, अमृतसर।

नोट :—इस फण्ड में दिया हुआ समस्त दान वीर सैनिकों की सेवा अथवा भारत सरकार के सुरक्षा फण्ड के लिए अर्पित होगा।

दानापुर आर्यसमाज के वार्षिकोत्सव की तिथियों में परिवर्तन

२५ दिसम्बर, १९६५(शनिवार) से २८ दिसम्बर, (१९६५) तक रखी गई हैं।

अब उत्सव पर अध्यात्म कथा दिनांक १८ दिसम्बर १९६५ (शनिवार) से २४ दिसंबर (शुक्रवार) तक होगा।

—मन्त्री रामवली प्रसाद

Proud of such a Vedic Missionaly.

मेरी भगवान से हार्दिक प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करें तथा हमें स्व० के. पद-चिन्हों पर चलते हुए उनकी जलाई हुई ज्योति को प्रज्वलित रखने की शक्ति प्रदान करें। मेरी ऐसी महान् आत्मा के चरणों में बार-बार प्रणाम स्वीकार हो। ★★

आर्य प्रादेशिक सभा जालंधर का कैंप सेवा कार्य

जम्मू रियासत के युद्ध पीड़ित लोगों की सेवा के लिए सभा प्रधान श्री यश जी के निर्देशानुसार सभा ने जालंधर शहर में दो कैंप खोले हुए हैं। जिन में युद्ध पीड़ितों की भोजन, चाय आदि की समुचित व्यवस्था की जा रही है। आने वाले परिवार केवल मात्र जान लेकर ही आए हैं।

बस द्वारा आने वालों के लिए अमृतसर बस अड्डा के सामने कैंप लगा हुआ है गाड़ी द्वारा आने वालों के लिए स्टेशन पर कैंप लगा हुआ है। इसके अध्यक्ष श्री इन्द्रसैन जी तेल व्यापारी मंडी फैंटनगंज इस कैंप की सुचारु रूप से व्यवस्था कर रहे हैं।

अमृतसर अड्डा बस कैंप में अब तक जम्मू, छम्ब सैक्टर, रणबीरसिंह पुरा अखनूर, राजौरी, सुन्दर बनो आदि से ६७० परिवार आ चुके हैं। प्रतिदिन युद्ध पीड़ित परिवारों के लगभग एक हजार व्यक्तियों का भोजन विश्राम आदि से सत्कार किया जाता है।

प्रतिदिन १०० व्यक्ति नवीन आ जाते हैं और शेष पहले के आए हुए हैं। शरणार्थियों की सहायता के लिए अब तक निम्न सहायता प्राप्त हुई है—

श्री जगदीशचन्द्र जी आलीमुहल्ला ५/
,, सन्तराम जी भार्गव कैंप १३/-
,, बलबीरसिंह जी १/-
,, बृज मोहन जी १/-
,, सन्तरामजी भार्गव कैंप १८/५०
बाजार पीर बोदलां ३/१२ पैसे
श्रीमती निर्मला राणी जी ५/२५
श्री कृष्णलाल जी सैंट्रल टौन जालन्धर २/-
श्रीमती दुग्गल जी मोडल टौन जालन्धर १०/-
सुनील जी दुग्गल ५/-
बसन्ती शेखां २/-
श्रीमती फूलराणी जी पी. एण्ड. टी. कालोनी ११/-
श्री दिलीप कुमार जी ।/-
,, वासुदेव जी सोबती फिल्लौर १०/
,, भक्तराम जी बर्मी गुलामहुसैन १/२५
,, अर्जुनसिंह जी रणजीत नगर जालन्धर १०/-
,, यशजी सभा प्रधान द्वारा १५/-
श्रीमती विद्याकौर जी जत्थे-दारिनी मोडलहौस ११/-
गुप्तदान ४/-
प्रीतमचन्द्र जी ज्योति सिनेमा १/-

श्री देसराज जी अड्डा बस लुधयाना २० किलो आटा, ग्राम हुसैनपुरा १० मन आटा, श्री प्रीतमसिंह जी द्वारा २० किलो आटा, २ किलो दाल, नमक मिच आदि। श्री सोहनलाल जी जालंधर ६ किलो आटा, श्री साहबसिंह जी ऽ।। सेर चने, मनसूर पुर ग्राम से १ मन पका भोजन, गुरदित्ता जी द्वारा पक्का भोजन, श्रीमती राजकुमारी जी १५ सेर आटा, शिवकुमार जी पक्का भोजन, श्रीमती करतार कौर जी १० किलो आटा, १ किलो दाल, आध किलो गुड़, श्रीमती विद्याकौर जी जत्थे-दारिनी जी २० किलो दाल, १ किलो नमक, ४ मन आटा, ११ किलो घी, श्रीमती राजकुमारी जी १४ किलो दाल, गवर्नमैंट मिडिल स्कूल के छात्रों द्वारा २ बोरी आटा २० सेर दाल, नमक आदि।

सब धर्म प्रेमी नर-नारियों से प्रार्थना है कि पीड़ितों की सहायतार्थ अन्न, दाल, सब्जी, दूध, शक्कर, ईंधन, घी, नमक, मसाला तथा वस्त्र आदि सभा के कैंप में देकर निराश्रितों की सेवा का सौभाग्य प्राप्त करें यश के भागी बनें। कैंप से सभा की रसीद प्राप्त करने का कष्ट करें।

सत्यदेव विद्यालंकार
सभा मंत्री

समय की पुकार—नं० २

(ले०—श्री सत्यदेव जी विद्यालंकार मन्त्री सभा)

हमारी सेनाओं ने साहस और वीरता की पुरानी भारतीय परम्पराओं को ही नहीं पुनरु जीवित करके दिखला दिया, अपितु इससे भी आगे बढ़ कर सन १९३९ से सन १९४४ तक होने वाले महायुद्ध में जनरल रोमिल और जनरल मौंटगुमरी ने जो युद्ध के नए शस्त्र टैंक तथा हवाई जहाजों के कुशल प्रयोग किए थे उन्हें भी लाहौर और सियालकोट के मोर्चे पर दुहराया है। सम्पूर्ण देश के हृदय में अपने सेनापतियों से लेकर सिपाही तक के लिए गौरव और मान का भाव भर रहा है। सेना ने भी अपनी सिर धड़ की बाजी लगा कर अपना सिर ऊंचा कर दिखाया। क्या देश के राजनीतिज्ञों ने, जनता ने सरकारी कर्मचारियों ने शिक्षा संस्थाओं ने, व्यापारियों ने तथा भारत की एक सीमा से दूसरी सीमा तक रहने वाले अलग-अलग। धर्म, रंग, रूप, धार्मिक विश्वास तथा विचार वाले लोगों ने भी अपना कर्तव्य पूरी तरह निभाया है या नहीं।

इस विजय में कुछ गहरा विचार करना होगा। युद्ध एक देश की मजबूती और एकता, आर्थिक विकास और राजनीतिक प्रौढ़ता की कसौटी होता है। साधारण तथा सब काम चलते रहते हैं। अमीर भी मोटरों की सैर करते हैं। विकास मय जीवन व्यतीत करते हैं और गरीब किसान मजदूर पैर घसीट कर सड़क नापते रहते हैं तथा जैसे तैसे कर के अपना और अपने बच्चों का पेट भरते रहते हैं। कारखाने भी चलते हैं, दुकान भी चलती हैं, शिक्षा संस्थाएं भी चलती हैं और सरकारी दफतर भी चलते हैं ठीक ढंग से चलें या विद्यार्थी पन से, ईमानदारी से या बेईमानी से, कारवां चलता रहता है। पर एक दिन आता है, लड़ाई का, जब सीमा पर तोपें गर्जती हैं और सिर पर हवाई जहाज बम बरसाते हैं। तब पता लगता है कि देश में परस्पर कितना सहयोग है, दृढ़ता है, ईमानदारी और कार्य शक्ति है।

भारत और पाकिस्तान का युद्ध अभी बहुत थोड़े दिन चला है। पंजाब काश्मीर, राजस्थान और गुजरात की सीमा पर आग की लपटें ऊंची उठ रही हैं। उधर चीन ने अपनी हुया परम्पराओं को फिर प्रकट करते हुए लद्दाख से लेकर नेफा-आसाम तक आग भड़काने की धमकी दी है। धमकी ही नहीं तैयारी कर ली है। यह समय देश की अग्नि परीक्षा का है। इस अग्नि परीक्षा में मैल जल जायगा और देश पहले से अधिक बलवान और शुद्ध होकर प्रकट होगा।

ऐसे ही समय पता लगेगा कि किस श्रेणी के लोग खतरे के स्थानों से भागने में पहल करते हैं और बाकी जनता का उत्साह भंग करते हैं। जहां से भागते हैं वहां के लोगों के दिल तोड़ते हैं और जहां जाते है वहां झूठी खबरें फैला कर डर का वातावरण उत्पन्न करते हैं। ऐसे लोगों के साथ जनता को और गवर्नमैंट को क्या व्यवहार करना चाहिए, युद्ध तो परख है कि कौन देश और जनता का साथी है और किसे अपने घरबार परिवार की ही चिन्ता है। ऐसे तत्वों का कठोरता से नियन्त्रण करना होगा। (क्रमशः)

एक विचार

(ले० श्री भीमसैन जी गुरु बाजार अमृतसर)

✶✳✳✳✳✳✳✳✳✳✳✳✶

धर्म के प्रेमी सज्जनो माताओ और बहनो मेरे और आपके महान सौभाग्य की बात है कि लगभग हम सब का जन्म हिन्दुस्तान की इस पवित्र भूमि पर हुआ। इस के लिये मैं अपनी और आप सब की ओर से उस परम पिता परमात्मा का और अपनी मातृ-भूमि का कम से कम इस जीवन तक का ऋणी हूं और आभारी हूं। कल्पना करिये जिस प्रकार एक माता एक बालक को जन्म देती है और उसके बारे में क्या २ सोचती है। बालक बड़ा होगा, पढ़ेगा लिखेगा, नौकरी या व्यापार करेगा और फिर वह उसकी शादी बड़ी धूमधाम से करेगी। इसी प्रकार हमें उस मातृ-भूमि के लिये सोचना चाहिये जो सब की मां है। जिस ने हम सब को जन्म दिया है। उस के प्रति हमारा क्या कर्तव्य है। इसे हमे नहीं भुलाना चाहिए। तो आओ सब एक होकर जीवन को जीवन समझ कर सभी भेद-भावों को मिटाकर जो मातृ-भूमि पर कष्ट आया है उसे तन, मन, धन देकर दूर करें और उसके लिये धन से पहले तन और मन की आवश्यकता है। इसके लिये हर मेरी माता और बहन को रानी झांसी बनना होगा और प्रत्येक मनुष्य को महाराणा प्रताप और शिवाजी बनना होगा और बच्चे-बच्चे को हकीकत बनना होगा। फिर हम देखते हैं। विश्व की कोई भी शक्ति हमला तो क्या हमारी तरफ आंख भी नहीं उठा सकती। इसमें कोई संदेह की बात नहीं। मनुष्य विचार से ही जीता और मरता है। तीर कमान में चढ़ चुका है। यदि हम चाहें तो निशाने पर लगेगा, अन्यथा नतीजा हमारे समीप ही है। समय लौट कर नहीं आयेगा। वास्तव में हम शेर नहीं बबर शेर हैं। केवल जागने की आवश्यकता है फिर हम अपने आप को मनुष्य और भारत माता के सच्चे सपूत कहलाने के योग्य होंगे, और हमें अपने ऋषियों और शूरवीरों को नहीं भूलना चाहिये जिन्होंने मातृ भूमि की आन के लिए सब कुछ बलिदान कर दिया। प्रत्येक माता जीजा बाई की तरह बने हमारी शक्ति महान है। हमारे विचार महान हैं दुर्भाग्यवश हमें लोभ, मोह, अहंकार ने इतना घेर लिया है कि हम राष्ट्र तो क्या अपने आप को भूल बैठे हैं। तो क्या इस प्रकार हमारा जीवन निर्वाह हो सकेगा? क्या हम इसी प्रकार अपने जीवन को समाप्त कर लेंगे? नहीं हमें तो अपने कर्तव्य का पालन करना है। हमे उस माता को नहीं भूलना है, जो राष्ट्र की माता है। हमे हर वक्त सोचते रहना चाहिये और नहीं भूलना चाहिये कि यह देश मेरा है। मैं देश का हूं। मैं देश के लिये पैदा हुआ हूं और देश का दुख मेरा दुख है। हम सब एक हैं। एक रहेंगे इस प्रकार के विचारों को लेकर आगे बढ़ना है। हमें अपने लाभ के लिये और देश के लाभ के लिए चाहिये कि न गलत अफवाहें सुनें और न ही गलत अफवाहें फैलायें। हमें खास ध्यान रखना चाहिए इस बात का और यह हमारा परम धर्म है। इसके बारे में पूरी कोशिश करनी चाहिए। जहां भी गलत अफवाहों का प्रचार हो रहा हो उसे पूर्ण रूप से बंद कर। हम हिन्दु हैं। उसके नाते तो मातृ-भूमि पर जो कष्ट आया है या कभी भी आये उसके लिये हम हर समय अपनी जान की बाजी लगाकर भी दूर करेंगे इस में कोई संदेह नहीं जीयेंगे तो देश और समाज के लिये और मरेंगे तो देश और समाज के लिये।

सोया सिंह जगा है

(श्री भारतेन्द्र नाथ जी नई देहली)

भारत का कण जागा है, जागा देश महान।
आततायी या अत्याचारी. अब न रहेगा पाकिस्तान॥
हिमगिरि जागा, दक्षिण जागा, जागा गंगा का मैदान।
पूर्व जागा, पश्चिम जागा, जाग उठा है राजस्थान।
वीर मराठे जाग उठे हैं, जाग उठी रजपूती आन
सोया सब इतिहास जगा है, जाग उठा है शौर्य महान।
जन-जन जागा, मन-मन जागा, जाग उठा संकल्प ललाम।
भारत का कण-कण जागा है, जागा सारा देश महान्।
अर्जुन का गांडीव भीम की, गदा जगी मैदानों में।
पाकिस्तान बदलना जाता, दीख रहा श्मशानों में।
भारत मां के वीर लाड़ले, चला रहे हैं वह गोली।
भाग रहा है दुश्मन जिन से, भाग रही उनकी टोली।
संकल्पों का प्रण जागा है, जाग उठा है जयी निशान।
भारत का कण-कण जागा है, जागा सारा देश महान्।
वीर देश की नारी जागी, जाग उठी झांसी रानी।
जौहर जागा, शैशव जागा, जाग उठा है हर प्राणी।
अपना चक्र सुदर्शन लेकर, जाग उठा है कृष्ण महान।
गौरी को फिर पाठ पढ़ाने, जागा वीर श्रेष्ठ चव्हान।
यम जागा है, प्रण जागा है, जागी भगतसिंह की आन।
भारत का कण कण जागा है, जागा सारा देश महान्।
प्रण है अपना, गौरव अपना, कभी नहीं झुक पाएगा।
ऊंचा-ऊंचा सदा तिरंगा ऊंचा हो लहराएगा।
विजय हमारे चरण चूमता, सत्य हमारे साथ है।
बढ़े चलो सेनानी वीरो, देश तुम्हारे साथ है।
सोया सिंह जगा है अब तो, गूंज रहा है गर्जन-गान।
भारत का कण-कण जागा है, जागा सारा देश महान्।
आततायी का दर्प दलन कर, विजय वरेंगे निश्चित जान।
अरे बचाओ, अरे बचाओ, चिल्लाता है पाकिस्तान॥

आर्य विद्या सभा

चित्रगुप्त मार्ग, नई दिल्ली

'महात्म हंसराज आर्य टूर्नामैंट'

आर्य विद्या सभा, चित्रगुप्त मार्ग, नई दिल्ली के तत्वावधान में इस वर्ष अमृतसर, जालन्धर, चण्डीगढ़ व देहली में क्षेत्रीय स्तर पर २७ से ३० सितम्बर तक और अन्तर्क्षेत्रीय स्तर पर २ से ७ अक्तूबर १९६५ ई० तक देहली में टूर्नामैंट हो रही है।

यथोचित समय पर प्रवेश-पत्र भेज, उक्त टूर्नामैंट में सक्रिय भाग लें और इसे सफल बनाने में अपना २ सहयोग देने की कृपा करें।

देवराज महाजन

एजुकेशनल एडवाईजर

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का वेद प्रचार

पहली सितंबर से १५ सितंबर तक सभा के उपदेशक श्री पं० [illegible] जी, प्रभुदयाल जी [illegible], तथा भूराराम जी आर्य ने रोहतक जिले में [illegible], मदीना दांगी टिटोली तथा [illegible] में वेद प्रचार किया। [illegible] से २२१/-, मदीना दांगी से २०/-, टिटोली से ५०/- और [illegible] से १८/—वेद प्रचारार्थ सभा को प्राप्त हुए। प्रचार के [illegible] उपदेश, भजनादि का जनता पर अच्छा प्रभाव रहा। उपस्थिति भी पर्याप्त रही।

वेद पथिक धर्मवीर जी झण्डाधारी

आपने अपने प्रकाशन 'विश्व शान्ति और वैदिक धर्म की सम्पूर्ण आय राष्ट्र रक्षा कोष में देने का प्रण किया है। अत. भारतीय जनता इसे खरीद कर १० जी का उत्साह वर्धन करें ताकि आप अधिक से अधिक सहायता कोष में धन दे सकें।

आर्य नेता को ओ३म् ध्वज उपहार

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली के प्रधान मंत्री श्री रामगोपाल जी शाल वाले ने सभा की ओर से वेद पथिक धर्मवीर जी झण्डाधारी को ओ३म का झण्डा भेंट करके उनका सम्मान किया है। इस के लिए प्रधान मंत्री जी को अनेश. धन्यवाद।

सुवर्णसिंह आर्य सिद्धांत मनीषि

म दयानन्द मठ जालन्धर में युद्ध पीड़ितों की सहायतार्थ एक केन्द्र का उद्घाटन किया है—श्री रघुवीर जी शास्त्री मन्त्री सभा राष्ट्र रक्षा कोष के लिए अधिक से अधिक धन भेजने की अपील करते हैं। यह धन कोषाध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब गुरुदत्त भवन के पते पर भेजें। श्री शान्तिप्रकाश जी अधिष्ठाता वेद प्रचार ने अपने उपदेशकों या प्रचारकों को राष्ट्र रक्षा-कोष के लिए धन एकत्रित करने की अपील की।

दयानन्द कालिज शोलापुर

शोलापुर की सब दयानन्द संस्थाएं (दयानन्द कालेज आफ आर्टस एण्ड साईंस, डी ए. वी. वेलणकर कालेज आफ कामर्स, दयानन्द कालेज आफ एजूकेशन, दयानन्द ईवनिंग ला कालेज, दयानन्द काशीनाथ असावा स्कूल, आर. जे. हायर स्कूल, करकम्ब) राष्ट्र पर पाकस्तानी आक्रमण की इस गम्भीर परिस्थिति में तन-मन-धन से भारत सरकार की नीति का समर्थन करती है।

दयानन्द संस्थाओं की ओर से मातृभूमि की रक्षा के लिए शत्रु दल का दलन हनन करते हुए आगे बढ़ रहे भारत के वीर सैनिकों का मैं अभिनन्दन करता हूं।

मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि हमारी दयानन्द संस्थाएं अपनी राष्ट्रीय परम्पराओं के अनुसार मातृभूमि के प्रति कर्तव्य पालन में आज भी सजग हैं और सरकार को पूरा सहयोग देंगी। अपनी स्वाधीनता की रक्षा के लिए हम सब प्रकार के बलिदान के लिए तैयार है।

—जगन्नाथ जुनेजा
प्रिंसिपल व लोकल सैक्रेटरी

भुट्टो भागा पूंछ दबा कर

देखा जब भारत का लश्कर।
मचा पाक में शोर भयंकर॥
पाकों के सब शेर बिचारे।
थर थर कांपें डर के मारे॥
भुट्टो भागा पूंछ दबा कर।
सीधा रुका कराची जा कर॥
सुर [illegible] मियां घबराते।
फिर भुन भुन कर शोर मचाते॥
आयो [illegible] मजाहिद आओ।
भागो जान बचा कर भागो।

—विजय [illegible]

आर्यसमाज शोलापुर के प्रधान जी का पत्र

माननीय सुरक्षा मन्त्री जी,
भारत सरकार,

सादर नमस्ते। पवित्र मातृभूमि पर पाकिस्तानी आक्रमण का प्रतिकार करने के लिए भारत सरकार की दृढ नीति का आर्यसमाज, शोलापुर समर्थन करता है।

आर्यसमाज की गौरवमयी राष्ट्रीय परम्पराओं के अनुसार आर्यसमाज, शोलापुर अपने देश की अखण्डता व स्वाधीनता के लिए तन-मन-धन से सरकार को सहयोग देगा।

आर्यसमाज, शोलापुर शत्रु को प्रत्येक मोर्चे पर पराजित करके आगे बढ़ रहे वीर भारतीय सैनिकों का आदर और अभिनन्दन करता है। सफलता पर बधाई स्वीकार करें अन्तिम विजय हमारी होगी इसमें कोई सन्देह नहीं।

—प्रधान, अशोककुमार

डी. ए. वी. कालिज चण्डीगढ़

देश की वर्तमान परिस्थिति को देख कर डी. ए. वी. कालिज चंडीगढ़ ने निम्न प्रबन्ध किए हैं।

(१) कालिज का स्टाफ प्रतिमास एक दिन का वेतन पाकिस्तान के युद्ध बंद होने तक देता रहेगा।

(२) कालिज के १४०० छात्रों ने प्रति मास २/- दान देने का प्रबंध किया है। इस प्रकार २८००/- प्रतिमास राष्ट्रीय सुरक्षा कोष में भेजा जाएगा।

(३) कालिज के १२०० N.C.C. कैडिट ने परेड के बाद मिलने वाले प्रतिदिन के जलपाहार को छोड़ कर उस बचत को राष्ट्रीय [illegible] में देने का निर्णय किया है।

(४) कालिज ने [illegible] लोगों के लिए फर्स्ट एड सेन्टर खोल दिया है जिस में इलाके के लोगों को ट्रेनिंग दी जायगी।

(५) कालिज के सैंकड़ों छात्र और स्टाफ ने भारतीय सेना के घायल जवानों के लिए रक्तदान देने का निश्चय किया है।

(६) कालिज के छात्रों ने रात को शहर में पहरा देने तथा खाइयां खोदने का काम आरम्भ कर दिया है।

दयानन्द साल्वेशन मिशन हुशियारपुर

ने अपने कार्यकर्ताओं को कहा है कि वे अपनी सेवाएं जिले के डिप्टी कमिश्नर को अर्पित करें ताकि वे उचित स्थानों पर देश के लिए कार्य कर सकें।

[illegible] प्रधान मिशन

मुद्रक व प्रकाशक श्री [illegible]राज जी आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर द्वारा वीर मिलाप प्रेस, मिलाप रोड जालन्धर से मुद्रित तथा आर्यजगत कार्यालय महात्मा हंसराज भवन निकट कचहरी जालन्धर शहर से प्रकाशित मालिक—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर



टेलीफोन नं० ३०५७ [आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधिसभा पंजाब जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd No P. 121

एक प्रति का मूल्य १३ नये पैसे — वार्षिक मूल्य ६ रुपये

वर्ष २५ अंक ३७) १ भाद्रपद २०२२ रविवार—दयानन्दाब्द १४१— ५ सितम्बर १९६५ (तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

वेद सूक्तय:

अहं सूर्य इवाजनि

अर्थ—अहम्-मैं सूर्य इव—सूर्य के समान अजनि—हो गया हूं। सारे अपने और पराये कान खोल कर सुन लेवें कि अब मैं सूर्य के समान होगया हूँ। जितने भी अन्धकार में पलने और पनपने वाले घातक छोटे-बड़े कीटाणु हैं-उन को सूय बनकर मैं नष्ट कर दूंगा।

मह्यं नमन्तां प्रादिश:

अर्थ—सारी प्रदिशा:-दिशाएं मह्य—मेरे लिए नमन्ताम्—झुक जाएं! मैं जिस ओर और जिस भी दिशा में जाऊं—उधर ही मुझे विजय मिलेगी। मेरे जीवन के पग को रोकने वाला कोई भी न हो। मैं अपने ज्ञान व शक्ति से सारी दिशाओं में विजय पाने वाला बन जाऊं।

षडुर्वी घृतमावहन्तु

और भी—ये छ: दिशाएं, चार दिशाएं व ऊपर नीचे मेरे लिए घृत प्रदान करें। उपहार भेंट करें। मेरी वीरता देख कर सब दिशाओं की जनता मेरा मान-सम्मान करने वाली बन जाये। मुझे प्रत्येक स्थान पर वीरता के के निमित्त उपहार पुरस्कार मिलता रहे। शत्रु भाग जायें तथा मैं सेवा कार्य में लगा रहूँ। उपहार ही उपहार मिलते रहें।

अ थ र्व वे द से

वे दा मृ त

यद्वा उ विश्वपतिः शितः सुप्रीतो मनुषा विशे। विश्वेदग्निः प्रति रक्षांसि सेधति॥

सामवेद आग्नेय कांड मन्त्र ११४

अर्थ—(यद्वाउ) जब भी (विश्वपति:) प्रजा की पालना करने वाला (शित:) तीव्र दण्ड देने वाला (सुप्रीत:) प्रसन्न होने वाला (मनुषो विशे) लोगों के लिए, जनता के लिए तब वह (विश्वा इत्) सब प्रकार के (अग्नि:) अग्नि बन कर नायक, नेता व राजा (रक्षांसि) राक्षसों को, देश के घातकों को (प्रति सेधति) परे भगा देता है। दूर करके हटा देता है। जनता के तन धन भवन की रक्षा के निमित्त राष्ट्र का नायक आग बन कर उन सारे राक्षसों को अपने पराक्रम विक्रम से परे हटा देता है। राष्ट्र को ऐसे दुष्टों से हर प्रकार से सुरक्षित करता है।

भावार्थ—राष्ट्र के नायक का यह कर्तव्य होता है कि वह प्रजाजनों को अपनी सन्तान के समान समझता हुआ उनकी पालना करे। उनकी प्रत्येक वस्तु की रक्षा करे। राजा को राजा इस लिए कहा जाता है क्योंकि प्रजारंजनात् वह नायक व पिता बन कर सारी प्रजा का रंजन करता है। जिस नायक व राजा के राज्य में प्रजा की कोई वस्तु भी सुरक्षित नहीं है उत्पाती उत्पात मचाते, घाती घात में लगे रहते दुष्ट दुष्टकार्य में प्रवृत्त होते हैं—वह राजा व नायक राजा बनने के कदापि योग्य नहीं है। इस लिए कहा गया है कि हे नायक! आप जब भी अपनी प्रजा पर प्रसन्न होकर अपना राजधर्म निभाते हो, राजदण्ड उठाते हो तो उनके सामने सारे राक्षस भयभीत होकर उत्पात त्याग देते हैं। हे नायक! अपने चक्र से राक्षसों को मार दे—सं.

ऋषि दर्शन

ईश्वरसत्तया च धारित:

ये सारे लोक-लोकान्तर भूमि सूर्य आदि आपस में घूमते हुए भी उस परमेश्वर के सत्ता नियम से धारण किए हुए हैं। इनको संचालन तथा नियम में रखने वाली वही चेतन शक्ति ही है।

सर्वाणि सुखानि दाशत्

यह भूमि अपने नियम में बन्धी हुई सबको अनेक प्रकार के सुखों को देती है। यह माता के समान सबको पालती; खिलाती पिलाती है। जीवन के लिए यह गोदा है। इसी से सब कुछ मिलता रहता है।

प्राणिन: प्रपूरयति

यह भूमि माता अपने उत्तम उत्तम भण्डारों से; अनेक विध पदार्थों से तथा उत्तम-उत्तम प्रसादों से अपने सारे पुत्र-पुत्रियों को, जीवमात्र को भर देती है, तृप्त करती रहती है, मालामाल करती है।

द्यावा पृथिवी एजेते

यह द्युलोक का सूर्य तथा यह पृथिवी लोक दोनों लोक ही गति करते हैं। एक आकाश में अपनी धुरी पर घूमता है और यह हमारा भूमिलोक अपनी गति करता हुआ भी सूर्य के चारों ओर गति करता है।

भा ष्य भू मि का से

सम्पादक—त्रिलोक चन्द्र शास्त्री

मुसलमान स्वयं गोहत्या बंद करें यह वक्त की आवाज है

भारत गोसेवक समाज के मंत्री पं. विश्वम्भरप्रसाद का प्रैस वक्तव्य

****

यद्यपि कुरान शरीफ में मुसलमानों के लिये गाय की कुर्बानी देना अनिवार्य धार्मिक कर्तव्य नहीं है और हजरत मुहम्मद साहेब ने स्वयं गोमांस भक्षण का निषेध कर गोहत्या की निंदा की है, लेकिन भारत के मुसलमान गोहत्या करने से बाज नहीं आते। बकरीद पर तो वे गाय की हत्या करते ही हैं परन्तु वैसे भी आम तौर पर मुसलमानों द्वारा देश में गोहत्या होती रहती है। उत्तर प्रदेश, उड़ीसा, बंगाल, बिहार, आंध्र प्रदेश, मद्रास महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश आदि प्रान्तों और राजस्थान व पंजाब के मेवाती इलाकों में आये दिन मुसलमानों द्वारा अवैध रूप से गोहत्या किये जाने के समाचार मिलते रहते हैं। पंजाब के गुड़गांव जिले का मेवाती क्षेत्र और उत्तर प्रदेश के मुरादाबाद, बरेली, शाहजहानपुर, सहारनपुर, मुजफ्फरनगर, मेरठ, बुलन्दशहर आगरा आदि जिले इस प्रकार की अवैध गोहत्या के लिये काफी बदनाम हैं।

बरेली की १६ जून की ताजी खबर है कि वहां से २२ मील दूर पढेरा ग्राम में १६ जून को एक बरात की दावत में एक गाय की हत्या किये जाने के कारण उपद्रव हो गया। जिस में एक व्यक्ति मारा गया तथा ११ गोलियों से घायल हुए। इस सिलसिले में ८ व्यक्ति गिरफ्तार हुए और पढेरा में १४४ धारा लगा दी गई है।

जिस गाय के साथ देश के करोड़ों लोगों की पूज्य भावना संलग्न है, उसकी हत्या करने का जो लोग प्रयत्न करते हैं, वे निश्चय ही देश द्रोही हैं। ऐसे कुकृत्यों को लेकर देश में असंख्य बार दंगे हो चुके हैं और हजारों लोगों की जानें गई हैं।

निश्चय ही बहुत से मुसलमान भाई गोहत्या को पसन्द नहीं करते। अनेक मुस्लिम नेताओं ने गोहत्या का निषेध किया है और मुसलमानों से अपील की है कि वे गोहत्या करके हिन्दू मुस्लिम दंगे न करावें और देश हित को ध्यान में रखकर गो रक्षा करने में सहायक बनें। लेकिन इस प्रकार के देशभक्त और दूरदर्शी मुसलमानों की आवाज उपद्रव पसन्द मुसलमानों की अपील नहीं कर सकी और मौके ब मौके मुसलमान गाय की हत्या करके राष्ट्र की हानि तथा हिन्दुओं के साथ स्नेह सम्बन्ध को बिगाड़ते रहते हैं।

दिल्ली में भी दिनांक १३ जून को दिन दहाड़े सदर बाजार थाना के इलाका तेलीवाड़ा चौक किशनगंज में भी इसी प्रकार एक जवान ग्याभिन गाय की दो गुण्डों ने हत्या करके साम्प्रदायिक अशांति फैलाने का दुष्प्रयत्न किया। यदि उस क्षेत्र के हिन्दू भाई शांत से काम न लेते तो वहां भी उपद्रव हो सकता था। निश्चय ही शरारती लोग इस प्रकार गोहत्या करके देश में सम्प्रदायक अशांति पैदा करते हैं। ऐसे लोगों को कठोर दण्ड दिया जाना चाहिए।

इस प्रकार की दुर्घटनाएं सदा साम्प्रदायिक दंगों का रूप धारण करती रही हैं और सदा करती रहेंगी। इलाहाबाद हाईकोर्ट के न्यायधीश माननीय श्री डी. एस. माथुर ने रामपुर जिले के ग्राम उदयपुर के गोहत्यारों की अपील खारिज करते हुए २५ जून१९५९ को जो ऐतिहासिक फैसला दिया था वह मुसलमानों और शासन को सदा अपने सामने रखना चाहिए इस फैसले में कहा गया है कि :—

"न्यायालय को इस बात का अवश्य ध्यान रखना चाहिए कि उस देश की दशा क्या है। जहां न्याय किया जा रहा है। माननीय न्यायाधीश ने कहा कि अदालतें देश के पुराने इतिहास की उपेक्षा नहीं कर सकतीं। यह सर्वविदित है कि गोहत्या के कारण देश में अनेक बार साम्प्रदायिक दंगे हुए हैं। आज भी गोहत्या होने से बड़ा दंगा होसकता है अभियुक्त का अवैध कार्य ऐसा हो जिस से देशकी शान्ति भंग होने और जान व मालको क्षति पहुँचने की सम्भावना हो, तो ऐसे मामलों में अदालत को कुछ कठोरता का रुख ग्रहण करना चाहिए ताकि कोई शांति भंग करने का दुस्साहस न कर सके।"

हम देश के समझदार और राष्ट्रभक्त मुसलमानों से अनुरोध करते हैं कि वे उक्त फैसले को दृष्टि में रखते हुए मुस्लिम जनता में यह भावना पैदा करें कि गोहत्या करना एक राष्ट्रीय अपराध है और मुसलमानों को अपने पड़ोसी हिन्दू भाई की पवित्र भावना का आदर करते हुए इस कुकृत्य से बाज आना चाहिए।

देश में इस प्रकार की घटनाओं से जो साम्प्रदायिक दंगे होते हैं वे बड़े अनिष्टकारी होते हैं। उनसे हिन्दू और मुसलमानों के बीच दुश्मनी और नफ़रत की भावना फैलती है तथा राष्ट्र की अपरिमित क्षति होती है। गौ, हिन्दू और मुसलमान दोनों के लिए लाभकारी और राष्ट्र की अमूल्य निधि है। इसकी रक्षा करने में ही उन का और राष्ट्र का कल्याण है।

★ मन के हारे हार है,
मन के जीते जीत।

★ धियो यो नः प्रचोदयात्।
ईश्वर बुद्धियों को प्रेरित करे।

आर्यसमाजी झगड़ालू नहीं

(श्री भक्तराम जी शर्मा)

स्वर्गीय स्वामी सत्यानन्द जी से लोग प्रश्न करते थे कि 'आप कहते हैं कि आर्यसमाज में सम्मिलित होने से मन में शांति आयेगी किन्तु आर्यसमाज में तो हर समय कोई न कोई झगड़ा ही रहता है। इस के समाचार पत्रों में प्रायः परस्पर नोकझोंक रहती है। आर्यसमाज और अन्य सभाओं में कोई अन्तर नहीं। इसलिए हम तो ऐसी फसादी सभा में सम्मिलित नहीं होंगे। स्वतन्त्रता में रहना ही हम मान का कारण समझते हैं।' उन्होंने ऐसे लोगों से पूछा था कि 'क्या तुम यह बात पसन्द करते हो कि प्लेग के फोड़ों को छिपा कर रक्खा जाये या जहां कहीं मवाद हो तुरन्त ही इस की चीर फाड़ न की जाये?' यदि आर्यसमाज के लोग स्वभाव से झगड़ालू और फसादी होते तो यह असम्भव था कि वे इतना बड़ा यज्ञ रच सकते। आर्यसमाज और अन्य सोसाइटियों की लड़ाई में यह भेद है कि जहां अन्य लोगों की लड़ाई शीशों की लड़ाई है जो चकनाचूर हो जाते हैं वहां आर्यसमाज की लड़ाई घण्टों की लड़ाई है। जब तक आपस में टकराते रहें, आवाज आती रही, जहां टकराना बन्द हुआ तुरन्त शांति हो गयी। और अपने २ काम में लग गये। आर्यसमाजी एक सूत्र में पिरोये गये हैं जिस को भगवान् दयानन्द ने पिरोया है।

आर्य समाज शोलापुर

दयानन्द कालेज कमेटी के उप-प्रधान व प्रिं० बुडेका जी के ससुर श्री. रायबहादुर मनमोहन जी की मृत्यु पर शोक प्रकट करती है। यह समाज उनके शोक संतप्त परिवार तथा सम्बंधियों से सहानुभूति प्रकट करती है। राजेन्द्र जिज्ञासु उपमन्त्री आर्य समाज शोलापुर

सम्पादकीय—

आर्य जगत

वर्ष २५] रविवार २०२२, ५ सितम्बर १९६५ [अंक ३७

जागते रहो

जीवन की दो प्रकार की अवस्थायें हैं—जागना और आंखें बन्द कर गहरी नींद में सो जाना। सो जाने की दशा में व्यक्ति, समाज तथा राष्ट्र को भारी हानि उठानी पड़ती है। थोड़ा-सा आलस्य प्रमाद समाज को उन्नति से अवनति तक पहुंचा देता है। भारत का रक्तपात से भरा विभाजन और अंत के प्रान्त त्याग कर तीन कपड़ों में अपने २ घरों को छोड़ करके चले आना उसी सो जाने का परिणाम ही तो है। यदि भारत की भोली जनता अपने उदार विचार के जीवनपथ पर चलती हुई जागती रहती, ऊंच-नीच की भावना, अलग करने की नीति, दूर २ करने का झूठा अभिमान न होता तथा अपने सामाजिक जीवन से आंखें बन्द करके लम्बी निद्रा में चले जाने का रोग भारतीय समाज में न आ जाता तो आज हम से भारत का इतना बड़ा भूभाग अलग न कर दिया जाता। ये लोग बाहर से नहीं आये थे। यहीं के थे पर हमारी नींद ने उनको हमारे देश का घोर शत्रु बना कर खड़ा कर दिया। यदि जनता ने ऋषि देवता दयानन्द की आवाज को सुना होता तो इस विपत्ति का मुख देखना न मिलता। हम ने अपनों को निकालना सीखा, भाग करने का ही गणित सीखा और पकड़ करके लाखों करोड़ों को निकाल दिया। वही हमारे शत्रु बनकर आज आग लगाने में लगे हुए हैं। जनता की अभी तक भी आंखें नहीं खुल सकीं। इतना लुटा गंवाकर भी हमारी नींद नहीं गई। यह भारी दुर्भाग्य है। आये दिन काश्मीर में, बंगाल में इन दृश्यों को देखना पड़ता है। अब भी जागते रहो ताकि राष्ट्र का भला हो जाए।

पंजाब इस समय एक अत्यन्त गम्भीर परिस्थिति से गुजर रहा है। इस समय काश्मीर में हमारी वीर सेना वहां पर सीमा रेखा पार करके सशस्त्र शत्रु आक्रमणकारियों से बड़ी वीरता तत्परता से निपट रही है। उनको छटी का दूध याद करा रही है। सारे देश का ध्यान उसी ओर लगा है। भारत तथा अपने प्रान्तीय नेता उधर ही ध्यान देकर अपने कर्तव्य का सुचारू रूप से पालन कर रहे हैं। पंजाब एक सीमा प्रान्त है। हर समय यहां की जनता को आंखें खोलकर जागते रहने, सावधान व सतर्क रहने की बड़ी आवश्यकता है किन्तु खेद है कि इस विषम स्थिति में मास्टर तारासिंह के वक्तव्यों को पढ़कर किस के दिल पर चोट नहीं लगती। सन्त फतेहसिंह की घोषणा पर किसे खेद नहीं होता। उनको न काश्मीर की चिन्ता है न वर्तमान वातावरण का ध्यान। इस संकट के समय सन्त साहिब की धमकी लोगों के दिल में क्या-क्या भाव पैदा करती है। क्या यही देशभक्ति है? क्या यही सन्तपन है? इस समय भारत सरकार के नेताओं के लिए भी परीक्षा की घड़ी है। यदि एक व्यक्ति की मरण धमकी से प्रान्त या सूबा बनाया जा सकता है तो सरकार चल चुकी और देश की व्यवस्था भी हो चुकी। यही समय है कि भारत सरकार एक व्यक्ति के सामने सारे राष्ट्र की आत्मा का सम्मान प्रमुख जाने। हम पंजाब की समस्त जनता तथा आर्यसमाज से विशेषकर कहना चाहते हैं कि इस स्थिति में शान्त वातावरण बनाये रखें, जागते रहें, जनता को जगाए रखें। सरकार को पूरा-पूरा साथ देवें ताकि प्रान्त पर यह छाई हुई काली घटा चली जाए। बड़ी शान्ति से वातावरण को शांत रखते हुए सरकार को अपनी कारवाई करने देवें। आर्य जनता के नेताओं को अपने-अपने वक्तव्य देकर जनता का साहस बढ़ाना चाहिए। —त्रिलोक चन्द्र

आर्य युवक समाजें

आर्य समाज में युवकों के न आने की सर्वत्र चर्चा चलती रहती है। हमारी इतनी विशाल संस्थाओं की शानदार छावनियों के होते हुए उन में हजारों युवक-युवतियों के पढ़ने तथा भारी संख्या में पढ़ाने वाले अध्यापक प्राध्यापकों के होते हुए भी जब यह दशा है और समाज में युवकों के अभाव की शिकायत हो तो कोई न कोई कारण तो होना ही चाहिए। जो भी बात है—सब जानते हैं। आर्य समाज का पुरातन प्रेम नहीं है। स्वर्गीय महात्मा हंसराज जी, प. मेहरचन्द जी, डा० दीवानचन्द जी, डा० गोवर्धनलाल जी दत्त, ला० मेहरचन्द जी, महात्मा देवीचन्द जी, प्रिंसिपल रलाराम जी, ला० ज्ञान चन्द जी, प्रिंसिपल भगवान्दास जी आदि पुराने सज्जन तो स्वय भी प्रतिसप्ताह समाज में जाते थे व हैं तथा कुछ चुने हुए युवकों को भी साथ ले जाते। उनके बनाये हुए युवक ही तो इस समय के समाजों व संस्थाओं के कार्यकर्ता हैं। पर अब वह स्थिति नहीं। जो स्वयं ही न जायें तो युवकों को कौन ले जावे। यह धन हमसे दूर जा रहा है। आगे काम करने वाले मिलें तो कैसे? युवक समाजें नहीं हैं, यदि हैं तो इनी-गिनी उनको भी प्रोत्साहन कौन देवे? इस समय आर्य समाज में योग्यतम शिक्षित युवकों की कमी नहीं है। जिनको समाज के सिवाय और कोई रुचि ही नहीं। पर वे पता नहीं कहां-कहां किस-किस अवस्था में काम कर रहे हैं। उनको देखभाल करने वाला कौन है। समाजों में युवक समाजें, स्कूलों कालेजों में भी युवक समाजें बहुत कम हैं! दयानन्द कालेज जालन्धर में युवक समाज प्रो. वेदीराम जी की देखरेख में काम कर रही है। प्रिंसिपल भगवान्दास जी समाज की एक विभूति हैं। शोलापुर में थे तो वहां कालेज को चार चांद लगाने के साथ महाराष्ट्र एवम् आंध्र प्रांत में आर्यसमाज का डंका बजाया। श्री राजेन्द्र जी जिज्ञासु जैसे युवक प्रोफैसर उनको मिल गए जिनको समाज के सिवाय कोई धुन ही नहीं। प्रिंसिपल भगवान्दास जी अब अम्बाला डी. ए. वी. कालेज में वापस आये। यह कालेज तपस्वी त्यागी सन्त महात्मा हंसराज जी वाला लाहौर का कालेज है। वहां पर आर्ययुवक समाज का निर्माण हुआ है। युवकों में उत्साह भर गया है। यदि प्रिंसिपल जी अपने सारे कालेजों व समाजों में युवक समाजों का निर्माण कराकर यहीं उसका केन्द्र बनाकर पथप्रदर्शन करके सम्भालें तो समाज का बड़ा भला हो सकता है। लाहौर के दयानन्द कालेज ने ही

(शेष पृष्ठ ६ पर)

नारी स्तम्भ—

सम्पादिका—सुशीला जी आर्या एम. ए. आर्ष कन्या गुरुकुल नरेला

संक्रांति-काल में स्त्रियों का दायित्व

(श्री सुन्दरलाल जी बोहरा गुलाब सागर जोधपुर)

श्री बोहरा की आधुनिक पीढ़ी के लेखक हैं। अन्तस्तल के कोने से निकले हुए विचारों को प्रकट करने में सिद्धहस्त हैं। 'सत्य ब्रूयात प्रियं ब्रूयात पर आचरण करते हैं। स्त्री जाति की वर्तमान दुर्दशा का चित्रण करते हुए बुराइयों से दूर रहने के संकेतों को लेख में पढ़िए।

—व्यवस्थापक

किसी देश का राजनैतिक आधार पर गठन होने पर उसकी परम्परागत समाज-व्यवस्था भी चरमराने लगती है। ऐसे काल में व्यक्ति की मानसिक स्थिति ठीक वैसी ही हो जाती है जैसी कलंगी निकलते वक्त मोर के बच्चे की होती है। व्यक्ति हर ओर से सन्देह व संघर्ष के जाल में उलझ जाता है। समाज की स्थिति 'पूछै एक एकन सों कहा जाई का करि' हो जाती है। यही एक ऐसा काल होता है जिस में अधिकांश व्यक्ति समाज व्यवस्था के प्रति विद्रोही तथा आध्यात्मिक रूप से विधर्मी बनते जाते हैं। इस काल में व्यक्ति को हर बीती बात ढकोसला तथा हर धार्मिक प्रवृत्ति पोंगापन्थ प्रतीत होती हैं। पारिवारिक कलह बढ़ जाते हैं। व्यक्ति भ्रमित व उद्विग्न हो जाते हैं। इस प्रकार संक्रांति-काल की उपलब्धि होती है: 'दुविधा में दोनों गए माया मिली न राम'।

भारत में भी आज ऐसी ही स्थिति है। ईमानदारी से कहा जाय तो आज व्यक्ति चौराहों पर खड़े हैं—उन्हें समयानुकूल व शांतिदायक राह चाहिये। लेकिन रास्ता बताए कौन? हमें आज पथ-प्रदर्शक ही ऐसे मिल रहे हैं जो गणिका और गीता का संयोग चाहते हैं—और ऐसा कभी सम्भव ही नहीं हुआ है, न होगा ही। जनक या मंदालसा की सी स्थिति प्राप्त करना सहज नहीं है।

हमारे राष्ट्रीय-जीवन में अशांति का मूल कारण हमारी पारिवारिक अशांति ही है। हमारी पारिवारिक अशांति का मूल कारण स्त्री-समुदाय की परिवार के प्रति उदासीनता है। स्त्री-समाज की इस राष्ट्रघाती उदासीनता का कारण हालीवुड टाइप की शिक्षा व सिनेमा ही हैं। पर सत्य को कहने, सुनने व व्यवहार में लागू करने वाले नरपुङ्गवों का आज राष्ट्र में अभाव सा हो गया है। गम्भीर-प्रकृति के व्यक्तियों का आज राष्ट्र से दिवाला-सा निकल गया है। यदि ईमानदारी व निष्पक्षता से कहूं तो राष्ट्र में छिछोरापन करने वाले कोरे बच्चे ही बच्चे इकट्ठे हो गए हैं। पति-पत्नी में आज प्रेम न रहकर प्रतिस्पर्द्धा हो रही है। और हम हैं कि रोग का इलाज पत्तों में ढूंढ़ रहे हैं।

स्त्रियें क्या करें ?

प्रकृति की सर्वश्रेष्ठ कृति स्त्री ही है। इस जगत का जन्म व पालन उस महाशक्ति के ही आधीन है। वह पुरुष की परिणीता व पथ-प्रदर्शिका है। पुरुष-जाति उसके लिये पुत्रवत् है। नारी-समुदाय की शान्ति, सहिष्णुता व सन्तोष के सहारे ही किसी राष्ट्र का चरित्र निखर सकता है। समाज-रूपी आम में यदि पुरुष गुठली है तो स्त्री उस फल में व्याप्त मधुर रस है। दोनों के आपसी सद्भाव व सहयोग पर ही कोई समाज व्यवस्था सुचारू रूप से चल सकती है। यह निश्चित मानिये। इन्द्रिय उपासना के निमित्त स्त्री का जन्म कदापि नहीं हुआ है। जिस समाज में स्त्री को केवल भोग्य वस्तु ही माना गया, वह समाज कभी भी व्यवस्थित रूप से नहीं टिक सका है। स्त्री पार्वती की तरह पवित्र है, उसके चारों ओर 'पेरिस' का वातावरण बना देना राष्ट्रीय-चरित्र के पतन की सीमा है।

लीलावती लैला न बने ?

शीलवान व्यक्ति की वाणी व चाल में एक दिव्य-शक्ति का समावेश रहता है। कुत्सित से कुत्सित प्रवृत्ति वाला व्यक्ति भी जब एक शीलवान व्यक्ति के सम्मुख आता है तो उसका अन्तः-करण निर्मलता की याचना करने लगता है। सच्चा शूर एक शीलवान व्यक्ति है। जिसने निरन्तर साधना द्वारा अपनी इन्द्रियों व व अन्तःकरण को जीत लिया है वही नरपुङ्गव इस धरा पर स्वाभिमान-पूर्वक रह सकता है।

पर आज बात इस से बिल्कुल उल्टी है। सद्कुलों में जन्मी हुई लीलावती लैला का-सा जीवन जीना पसन्द करती है। यह हमारे आध्यात्मिक पतन का द्योतक है। आप सम्पूर्ण उर्दू शाइरी कण्ठस्थ कर लीजिये, अंग्रेजी का सम्पूर्ण साहित्य पढ़ डालिये, फिर भी आपको ज्ञान नहीं हो सकता। क्योंकि इन्द्रिय उपासना जीवन नहीं है। राजा ययाति जैसा अन्य उदाहरण मिलना कठिन है। अवध के नवाब मानसिक रूप से हमेशा अतृप्त ही रहे। पेरिस की रमणियां सदा ही अतृप्त रहती हैं। सौन्दर्य - प्रतिस्पर्द्धा (Beauty contest) में प्रथम आने वाली सुन्दरी को चेचक न होने की क्या कोई डाक्टर गारण्टी दे सकता है?

आज नारी-वर्ग में चंचलता घर कर गई है। आठ वर्ष की बच्ची व साठ वर्ष की बुढ़िया, दोनों के लिये लिपस्टिक व क्रीम अत्यावश्यक हैं। परिवार के लोग एनीमिया से पीड़ित हैं, लेकिन फैशनपरस्ती पर तो एक निश्चित रकम व्यय होनी ही चाहिये। शील और ब्रह्मचर्य आज सिनेमा के स्टुडियो में गिरवी रखे हुए हैं। न जाने कितनी सुकुमार बालिकाएं व सद्कुलों की ललनाएं 'सोसाइटी गर्ल' बनने को लालायित रहती हैं। सही शब्दों में आज हमारे समाज में गृहस्थ वारांगनाओं की बाढ़ आ गई है। कोई ललना अपना दायित्व समझने को तैयार ही नहीं है। सभ्यता के नाम में भारतीय नारी दिनोदिन असंस्कृत होती जा रही है। अर्द्ध नग्न अवस्था में सड़कों पर घूमना सिवाय राह चलतों को अपनी ओर आकर्षित करने के कुछ नहीं है। पुरुषों से अधिक प्रदर्शन-प्रवृत्ति (Vanity) स्त्रियों में संक्रमक है। खाओ-पीओ मौज करो का जीवन श्वान का जीवन है। हमारे लिये तो संयम व सादगी का जीवन ही अपेक्षित होना चाहिये।

देश के स्त्री-समुदाय से यह हार्दिक अनुरोध है कि वह तड़क-भड़क से बचे, तथा जहां तक हो सके परिवार के लिए सात्विक व सादे भोजन की व्यवस्था करे। पुरुष-समाज को सुधारने का एक मात्र दायित्व स्त्री का ही है। रूस अथवा चीन की पद्धति की समाज-व्यवस्था भारत में रत्तीश में भी कामयाब नहीं हो सकती। हमारी संयुक्त परिवार व्यवस्था की विक्षुब्धता का कारण 'नए ढंग की समाज व्यवस्था' को जबरन् निमन्त्रित करना ही है।

मदालसा ही वन्दनीय है !

आज भारत संक्रान्ति-काल व संकट-काल दोनों में से गुजर रहा है। ऐसी स्थिति में राष्ट्र को सही रूप में ढालना स्त्रियों का ही एक

(शेष पृष्ठ ५ पर)

अमर विभूति

महात्मा देवीचन्द जी एम. ए. होशियारपुर

ले०—रामकृष्ण गौतम मन्त्री श्री मद्द्यानन्द आर्य संस्थाएं आर्य नगर त्यूड़ी—होशियारपुर।

यह दुखित तथा अचेत कर देने वाला समाचार सुनकर किस आर्य बन्धु की आंखों से आंसुओं की धारा न बही होगी कि गत दिनों देश के सुप्रसिद्ध समाज सुधारक तथा विख्यात शिक्षा शास्त्री एवं महा-विद्वान महात्मा देवीचन्द जी एम. ए. का देहावसान देहली में हो गया। पहले ही आर्य नेता एक-एक हो करके मृत्यु का ग्रास होते जा रहे हैं तथा उनकी क्षति की पूर्ति हो नहीं रही है कि अब आर्य जगत के मुख्य स्तम्भ तथा अनाथों और अबलाओं के नाथ ४ जुलाई १९६५ को आर्य जगत को अनाथ छोड़कर चल बसे। महामना के निधन से आर्यजगत को जो क्षति पहुंची है उसका मूल्यांकन तो आगामी समय ही कर पायेगा यह लेखनी तो असमर्थ है।

श्री मद्द्यानन्द जन्म शताब्दी पर १९२५ ई० में मेरे पूज्य पिता पं० उद्धवराम जी गौतम (जो कि स्व० के शिष्यों में से एक हैं) ने उस समय के आर्यसमाज के कार्यों पर प्रकाश डालते हुए एक ट्रेक्ट छपवा कर जनता में बांटा था उस में स्व० के जीवन तथा श्लाघनीय कार्यों पर विस्तृत रूप से प्रकाश डाला गया है। परन्तु खेद है कि वह ट्रेक्ट आज मुझे मिल नहीं रहा है, अन्यथा और भी विस्तार पूर्वक तथा तथ्य पर आधारित आंकड़े प्रस्तुत करने में सफल होता।

मैं स्व० के सम्पर्क में १९४९ ई० में अपने पूज्य पिता जी के होशियारपुर आजाने पर हो आया। पिता जी प्रति रविवार आर्यसमाज मन्दिर में आया करते थे तथा मुझे और मेरी प्यारी बहिन धर्मवती जी को भी साथ लाया करते थे। तब से लेकर ४ जुलाई १९६५ तक मेरा महामना जी से सम्बन्ध बना रहा। १९६० ई० को मुझे आर्य समाज होशियारपुर के कोषाध्यक्ष के रूप में समाज सेवा करने का सुअवसर मिलने पर इनके और भी निकट आजाने का अमूल्य अवसर प्राप्त हुआ। इस अल्पकालीन सम्पर्क में मैंने स्व० के जीवन की जो विशेषताएं देखी हैं वह संक्षिप्त रूप से पाठकों की जानकारी के लिए प्रस्तुत करने का बल प्रयास करता हूं।

जीवनी :— आपका जन्म गुरदासपुर जिला अन्तर्गत बहराम पुर कस्बे में १८८० ई० में एक सम्पन्न परिवार में हुआ। आपके पिताजी ने आपको उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए डी. ए. वी. कालिज लाहौर में प्रविष्ट कराया। म० हंसराज जी के चरणों में बैठकर शिक्षा प्राप्त करने से आप पूर्ण रूप से आर्य समाज एवम् वैदिक धर्म के रंग में रंगे गए। वह समय जब कि देश में एम. ए. पास स्नातक उंगलियों पर ही गिने जा सकते थे तथा जिनका भविष्य हर प्रकार के एश्वर्य तथा धन-धान्य आदि के लिए सब प्रकार से उज्ज्वल था। उस समय के ये एम. ए. पास स्नातक महर्षि दयानन्द जी के ज्ञान से वैदिक धर्म के रंग में रंगे हुए होने के कारण (तत कालीन विश्वविद्यालय की नियमावली अनुसार प्रत्येक स्नातक को सरकार के प्रति वफादार रहने की अनिवार्य रूप से शपथ लेने पर ही एम. ए. पास का प्रमाण पत्र मिलता था) आपकी महान् एवम् देशभक्त आत्मा इस अपमान-जनक शपथ को स्वीकार न कर सकी। अतः आप एम. ए. पास का प्रमाण-पत्र तक भी लेने नहीं गए। आपका तप, त्याग, तथा कर्मठ जीवन आर्य जगत विशेषकर नवयुवक वर्ग के लिए प्रकाश स्तम्भ का प्रतीक रहा है तथा भविष्य में भी रहेगा।

भूकम्प पीड़ितों की सेवा— आप अपने पूज्य गुरू म० हंसराज जी के आदेश पर एम. ए. पास करते ही समाज सेवा के कार्यक्षेत्र में कूद पड़े तथा आर्यसमाज की ओर से कांगड़ा भूकम्प पीड़ितों की सेवा के लिए जो शिविर खोला गया था उसका समस्त उत्तरदायित्व आपके कन्धों पर डाला गया। आपने उस महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व का जिस निष्ठा तथा लग्न से परिपूर्ण किया उसकी प्रशंसा तत्कालीन सरकारी अधिकारियों तथा जनता ने मुक्त कण्ठ से की थी।

शिक्षा में प्रवेश—महात्मा हंसराज जी ने आपके कांगड़े के शिविर में किए गए प्रशंसनीय कार्य से प्रभावित होकर १९०५ ई० में आपको डी. ए. वी. हाई स्कूल होशियारपुर के मुख्य अध्यापक के पद पर आसीन कर दिया। आपका हृदय यहां आकर इस त्रिलोकी निर्धन एवम् अशिक्षित जनता को देखकर विचलित हो उठा तथा आपने इस अज्ञानता के अंधकार को दूर करने की ठान ली तथा निरक्षता के निवारण का प्रण किया। आपने थोड़े ही समय में इस जिले तथा कांगड़े जिले के ग्राम-ग्राम में वेद प्रचारार्थ पद यात्रा करके लगभग ७५ प्राईमरी, मिडल तथा हाई स्कूल खोलकर साक्षरता का जाल-सा बिछा दिया। आपके परिश्रम स्वरूप ही यह होशियारपुर का जिला शिक्षा की दृष्टि से देश-भर में प्रथम स्थान पर है।

आपके सम्बन्ध में प्रायः यह उक्ति प्रचलित थी कि केवल एक सौ रुपये से प्राईमरी पांच सौ रुपए से मिडल तथा एक हजार रुपए से हाई स्कूल खोला जा सकता है, तथा आप ने सचमुच ऐसा करके ही दिखलाया। आप अनुशासन की दृष्टि से इतने विख्यात थे कि आज भी आपके उदाहरण दिये जाते हैं। विद्यार्थियों के प्रति उदारता तथा प्यार की भावना के कारण ही ला० रामदास जी पं० रलाराम जी तथा पं० वजीरचन्द जी आदि ने अपनी सेवाएं आर्य समाज सेवा हित आप के अर्पण कर दी थीं। (क्रमशः)

सक्रांति काल में स्त्रियों का दायित्व

(पृष्ठ ४ का शेष)

मात्र दायित्व रह गया है। स्त्रियां यदि सादगी को पसन्द करने वाली है तो समाज में बलात्कार, भ्रष्टाचार व अन्य चारित्रिक कुकर्म हो ही नहीं सकते। कहा भी है—कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति, और यों भी 'बालानां जननी गुरुः' प्रसिद्ध है ही। राष्ट्र में शूरता, शील व इन्द्रिय-निग्रह की प्रवृत्ति को पनपाना स्त्रियों का दायित्व है।

अन्ध-विश्वास व रुढ़ियों की समाप्ति होनी ही चाहिए, लेकिन साथ ही साथ नायलन के घूंघट का आविष्कार भी कम घातक नहीं है।

हमारा परिवार भारतीय ढंग का ही रहना चाहिए, लेकिन उसके सदस्यों को एक अमेरिकन परिवार की तरह स्वतन्त्रता होनी चाहिए। यही हमारे युग की मांग है। संयुक्त परिवार व्यवस्था में भी हर व्यक्ति की सलाह का सम्मान होना चाहिए। 'बुजुर्गों का अदब' के नाम में नए व्यक्तित्व की हत्या नहीं की जानी चाहिए। 'पतिरेको गुरू स्त्रीणां' की जगह पर 'पतिरेको मित्र स्त्रीणां' अधिक सामयिक है।

आर्य समाज का महत्व

(श्री उत्तमचन्द्र जी शरर एम. ए., आर्य कालेज, पानीपत)

आर्य समाज के जन्म के कुछ काल पश्चात् शास्त्रार्थों का युग पूरे वेग से चला। आर्य समाज का तो कोई उत्सव शास्त्रार्थ हुए बिना पूर्ण-तया सफल नहीं माना जाता था। विधर्मियों के उत्सवों पर भी आर्य समाज का चैलेंज उस के सिर दर्द का सामान बन जाता था। मैंने उस युग की एक झलक-सी देखी है। हमारे साथ के नगर अलीपुर में पं० रामचन्द्र जी देहलवी, श्री धीरेन्द्र सत्यवादी, पं० शांतिप्रकाश मौलाना सत्यदेव इत्यादि महानु-भावों का मुसलमानों से प्रतिवर्ष मुनाज़रा होता था। मुसलमानों को देखकर कभी-कभी पौराणिकों को भी पांचों सवारों में नाम लिखाने की सूझती थी, और तब उनकी सेवा के लिए पं० बुद्धदेव जी विद्यालंकार, पं० मनसाराम जी वैदिक तोप, पं० लोकनाथ जी तर्क-वाचस्पति सरीखे उद्धत विद्वान सदैव प्रस्तुत रहते थे। एक युग था, आर्य भाई इन सम्प्रदायवादियों को इस प्रकार नचाते थे जैसे कठ-पुतली को नचाया जाता है। सम्प्र-दायवादियों को हार का मुंह देखना पड़ता, तो वे बड़े व्याकुल होते! उनका पराजय का मुख्य कारण उन का बुद्धिवाद से दूर भागना होता था। आर्य समाज के उपदेशक तर्क के तीव्रवाणी से पाखंड के दुर्ग को धराशायी करने में देर नहीं करते थे। कुछ काल पश्चात मताव-लम्बियों ने शास्त्रार्थ को झगड़े-फिसाद की जड़ कहना प्रारम्भ किया। कुछ राजनैतिक संस्थाएं भी उन का साथ देने लगीं, और परिणामत: आज शास्त्रार्थ एक बीते युग की वस्तु बन कर रह गये हैं। आज सम्प्रदाय वादियों ने एक और मार्ग पकड़ा है और वह है सामान्य-वाद का। इसे दूसरे शब्दों में कहा जाये तो सब सच्चे हैं सब की बधाई ले लो, शेष छोड़ दो' इस प्रकार का नारा यह सर्व धर्म सम-न्वयवादी लगाते हैं। मेरे एक मित्र तो इन के इस वाद को काय-रता पर अवलम्बित मानते हुए कहते थे कि इन्हें किसी के असत्य को असत्य कहने का साहस नहीं, अत: इन के दृष्टिकोण में सब सच्चे हैं। अर्थात यदि कोई कहे कि बैल दूध देता है तो वह भी ठीक और कोई गाय को दूध देने वाली मानता है, तो वह भी सत्य कहता है। खैर इस प्रकार यह सम्प्रदाय-वादी अपने सम्प्रदाय को वैदिक धर्म की तुलना में बराबर का स्थान देने का दुस्साहस करते हैं। ऋषि दयानन्द ने धर्म तथा मत में विशेष अन्तर माना है। धर्म उन सिद्धान्तों का नाम है जिन से कोई सम्प्रदाय भी इनकार नहीं कर सकता, परन्तु सम्प्रदाय के सिद्धान्त सम्प्रदाय विशेष को ही मान्य होते हैं। इस असूल पर आज हम धर्म के कुछ सिद्धांतों के साथ सम्प्रदायवादियों के अपने सिद्धांतों का अन्तर दिखाकर यह सिद्ध करने का प्रयास करेंगे कि धर्म की संज्ञा केवल वैदिक धर्म के लिए ही उपयुक्त है किसी अन्य सम्प्रदाय के लिये नहीं।

सर्वप्रथम आस्तिक मतों में ईश्वर के सिद्धान्त को लीजिए। ईश्वर के सम्बन्ध में वैदिक धर्म का दृष्टिकोण स्पष्ट तथा व्यापक दृष्टिकोण है, वेद ने कहा है।

'सपर्यगाच्छुक्रम कायम
स्नाविरं शुद्धं अपापविद्धम्'

परमेश्वर व्यापक है, अकाय है, नस नाड़ी के बन्धन से रहित है ... इत्यादि हिन्दू मुसलमान तथा ईसाई ईश्वर के सम्बन्ध में उपदेश कार्य में यही दृष्टिकोण उपस्थित करते हैं। मुझे एक सज्जन की जो आर्यसमाजी नहीं, दार्शनिक पुस्तक पढ़ने का अवसर मिला, वे पौराणिक होते हुए भी लिखते हैं ईश्वर वैसे तो निराकार तथा सर्वव्यापक है, यह तो उपा-सना की सुविधा के लिए भिन्न २ प्रकार के अवतारों तथा प्रतिमाओं की योजना की गई है (विश्व धर्म, दर्शन, ले० श्री सांवलिया विहारीलाल वर्मा) इसी प्रकार एक मुसलमान कवि ने ईश्वर के व्यापकत्व को इन शब्दों में कहा है 'सोचता हूं तो हर जगह मौजूद, देखता हूं तो तू कहीं भी नहीं' इत्यादि परन्तु व्यवहार में ईश्वर को व्यापक केवल वैदिक धर्म ही मानता है, सम्प्रदायों के दांत खाने के और तथा दिखाने के और हैं। पौराणिक तो उसे मन्दिर में कैद कर ही देते हैं, बुत शिकन मुसलमान भी मज़ारों में, मसजिदों में, ताजियों में उसे देखने का विफल प्रयास करते हैं। ईसाइयों का ईश्वर अपनी अनुपस्थिति में आदमी को केले के वस्त्रों में वेष्टित देख क्रोधित हो शाप देने पर तुल जाता है। इसी प्रकार ईश्वर के शुद्ध स्वरूप को मौखिक रूप से कहने पर भी मतमतांतर अपने सम्प्रदाय का अलग पाखंड चलाते रहते हैं जिस से आस्तिकों में एकता नहीं आ पाई। इसके साथ ही यह भी सत्य है कि यह लोग ईश्वर के नाम पर राम, कृष्ण, मुहम्मद ईसा तथा नानक की पूजा ही पूजा है। वैदिक धर्मी कभी दयानन्द की पूजा पर बल नहीं देता, जिस से वैदिक धर्म, स्पष्टतया मतों से अलग धार्मिक रूप में हमारे सामने आता है।

(२) कर्मों के सम्बन्ध में सब मतों का मान्य सिद्धांत है 'जो करोगे सो भरोगे' परन्तु मौखिक रूप से सत्य को स्वीकार करते हुए भी शिकायत का दृष्टिकोण अथवा ईसा तथा मुहम्मद का पापियों को बचाने की प्रतिज्ञा धार्मिक जगत में पापकर्त्ताओं की प्रेरणा का कारण बन पाई है। एक ऐसे विचारों के कवि ने तो यहां तक लिख दिया। 'रहमत तेरी को देख कर आसी उठे पुकार, करते न हम कसूर तो सचमुच कसूर था" पापी भगवान की दया को देख कर कह रहा है कि यदि मैं पाप न करता तो सब से बड़ा पाप था क्योंकि इस से तेरी दया व्यर्थ जाती। क्या विचित्र तथा परस्पर विरोधी दृष्टि-कोण है? पौराणिक भी इस में पीछे नहीं रहे, वे यों कहते हैं। "आजु हम देखत हैं को हारत, हम अघ करत कि तुम मोहि तारत, को निज बान बिसारत।"

क्रमश:

शुभ विवाह

श्री रामलाल जी महेन्द्र स्टैनो डी. सी. आफिस के सुपुत्र श्री रमेश कुमार महेन्द्र जी टाइपिस्ट रेडियो स्टेशनका पाणिग्रहण संस्कार स्वर्गीय देसराज जी थापर कीकन्या श्रीमती चन्द्रप्रभा जालंधर निवासी के साथ ३१ अगस्त मंगलवार को सम्पन्न हुआ। विवाह श्री हरिश्चन्द्र जी शास्त्री निस्तन्द्र टीचर साईंदास H/S स्कूल ने पूर्ण वैदिक रीति से कराया। १०१/- वर पक्ष की ओर से भिन्न २ संस्थाओं को देने की घोषणा की गई। इस शुभ कार्य के लिए आर्य जगत की ओर से नव-दम्पती को बहुत २ बधाई

आर्य युवक समाजें

(पृष्ठ ३ का शेष)

तो सारे युवक समाज को दिये थे। अब भी वह लाहौर वाला दयानन्द कालेज ही पंजाब में युवक कार्य-कर्ताओं का योजनाबद्ध कार्य करने का काम संभालें। यह आवश्यक तथा पवित्र काम है। विश्वास है कि जल्दी ही सब जगह युवक समाजों को संगठित जाल बिछ जाएगा। प्रिंसिपल महोदय इधर भी जल्दी तथा अवश्य ध्यान देंगे। इस समय समाज को इसकी बड़ी ज़रूरत है।

—सं.

मानव दानव बन रहा है

(श्री. सत्यवीर जी शास्त्री, पुरोहित आर्यसमाज, शोलापुर)

परिवर्तन शील संसार में मनुष्यता की सत्ता से जीवन सुखमय एवं शालीनता से बीतता है। अनेक युगान्तरों के बाद यह मानव इस अप्रतिम साधन को प्राप्त करता है। विद्वानों के कथनानुसार इसे प्राप्त करने के लिए पुरुष को क्या करना पड़ता है यह विद्वता से ही विदित होता है। "विद्वद् जनः जानाति विद्वज्जन पराक्रमः।" परन्तु यन्त्र के युग में जिसने मनुष्य को भी यन्त्र बना दिया है क्या वह इस बात पर भी विचार कर सकता है?

परन्तु मानव आज क्या कर रहा है? यह अहर्निश इस विचार सागर में गोते लगाता है, मैं किस प्रकार आम के आम और गुठली के दाम करूं—कार्य करता है सरकार की ओर से तथा वेतन भी स्वीकार करता है, फिर भी मेरे उन दुःखी भाईयों से जिनके शरीर श्रम-पीड़ित हैं। अनेक विपत्तियों से जिनका मुखकमल मुरझा गया है उनसे कुछ मिलने की आशा करता है। क्या यही मानवता है? वेद में लिखा है "शत हस्ते समाहार" क्या इसी वचन का यह अनुकरण है? नहीं वेद में कहा है धन वह हो जिसकी लोग प्रशंसा करें, अनेक उत्तम साधनों से वित्त संग्रह करो और सहस्रों हाथों से वितरण करो विरुद्ध आचरण वाले पुरुष को दानव कहा गया है।

आज सदाचार के नाम पर चारों ओर चरित्र नाश हो रहा है। सदाचार पर भाषण देने वाले लोग स्वयं सदाचार को तिलाञ्जलि देने वाले हो रहे हैं। सदाचार क्या है? जीवन को अनेक विषयों से पवित्र रखना सदाचार है। सदाचारी वही है जिसने पंच विषयों को वश में कर लिया है। किन्तु मानव इन से आज कैसे बच सकता है जब की वह रात-दिन चलचित्र गृहों में नग्न नाच देखता है, जीवन को पतित करने वाले गीत चौबीस घण्टे कर्णगोचर करता है, सिर्फ मचली वालिओं के मुखड़ों के लिए जो बाग की सैर करता है क्या वह मानव है? नहीं। हाय-हाय जिस मनु के पुत्र रेडियो के साथ गा उठते हैं 'मैं क्या करूं राम मुझे बुड्ढा मिल गया' वे कैसे मानव बनेंगे।

इस स्वार्थी पुरुष ने अपने पेट को श्मशान बनाया है भगवान मरीचिमालिनी अपने अनन्त प्रकाश-रूपी हाथों से ऊर्ध्व रश्मियों को प्रसारित करते उसी समय इस परम-पावनी जगदुद्धारिणी भूमि पर अनेक प्राणियों को स्वर्ग में बिना टिकट पहुंचा दिया जाता है। परन्तु दूसरी ओर कहता है' जीओ, और जीने दो' 'उपदेश परार्थ।' इसलिए इस प्रकार कार्य करने वालों को दानव कहते हैं आज के इस मानव-रूपी दानव ने तो रावण को भी मात कर दिया है। रावण विद्वान् था गुणवान था परन्तु मांस सेवन तथा मद्यपान करने से राक्षस कहा जाता था। परन्तु आज के इस मानव ने उसे भी तिरस्कार किया है।

सौभाग्य से सरकार ने दारू बन्दी की थी परन्तु उसे भी उसे भी फिर स्वतन्त्र करना चाहते हैं, अहो, उस पिशाचिनी से तो भारत गारत होगा, क्या पता है मानव को दानव बनाने में उसका कितना सहयोग है? बहुत बड़ा। एक बार राजा भोज ने कालीदास से पूछा था, मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु कौन है। तब उसने उत्तर दिया जो निम्न प्रकार है।

'भिक्षो मांस निषेवणं
प्रकुरुषे किं तेन मद्यं विना,
मद्यञ्चापि तव प्रियं प्रियमहो वारांगनाभिस्सह'
तासामर्थ रुचिः कुतस्तव
धनं चौर्येण द्यूतेन वा
चौर्य द्यूत परिग्रहोऽपि भवता
नष्टस्य काऽन्या गतिः।'

इसमें राजा भोज और साधु वेषधारी कालीदास के प्रश्नोत्तर हैं इसका सरस भाव यह है 'जो मनुष्य मांस खाया करता है वह शराब पीता है, वह वेश्यागामी होता है जो वेश्यागामी होता है वह चोरी करता और जूआ खेलता है अर्थात इन सब बुराइयों की जड़ शराब है अतः मानव यह सब कुछ कर रहा है इसलिए वह दानव बन रहा है।

दानवता की दावाग्नि में जलता हुआ मानव शांति प्राप्त करना चाहता है, उसका योग्य मार्ग केवल 'आर्यसमाज' है जिसमें इस अग्नि को शान्त करने की क्षमता है ऐसे आर्य समाज को हमें समझना चाहिए।

आर्यसमाज माडल टाऊन जालंधर में

वेद-सप्ताह

सब आर्य नर-नारियों को सूचित किया जाता है कि आर्य समाज मन्दिर माडल टाऊन, जालन्धर में वेद सप्ताह बुधवार १ सितम्बर १९६५ से रविवार ५ सितम्बर १९६५ तक रात्रि के ८-३० बजे से १०-०० बजे तक मनाया जायेगा। पण्डित खुशी राम जी, महोपदेशक आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब वेदों की कथा करेंगे तथा श्री मेला राम जी के मधुर भजन हुआ करेंगे।

सब सज्जनों से प्रार्थना है कि समय पर सत्संग में पधार कर अनुगृहीत करें।

—वेद प्रकाश मलहोत्रा
प्रधान समाज

अलावलपुर जि० जालन्धर का आर्य समाज

अलावलपुर आर्यसमाज की ओर से १२-८-६५ को (ऋषि तर्पण) रखड़ी का त्योहार मनाया गया। आर्यसमाज मन्दिर में प्रातः हवन यज्ञ के पश्चात जो भी चंद वृद्ध आर्य सज्जन आये इन्होंने यज्ञोपवीत तबदील किये। हाजरी सिरफ सात की थी। अफसोस है कि आर्य हाई स्कूल में कोई भी आर्य टीचर ना होने से आर्यसमाज को स्कूल का कोई भी आश्रय नहीं है। कभी द्वारा आर्य युवक सम्मेलन वार्षिकोत्सव प्रीति-भोजन, त्यौहार आदि बड़े उत्साह से मनाये जाते थे। आज आर्य युवक समाज का नाम भी सुनाई नहीं देता। आर्य समाज में कोई आना पसन्द ही नहीं करता। बाकी हालात क्या लिखे जावें, क्योंकि संचालक नाराज हो जाएंगे। आगे-आगे देखना क्या बनता है।

गुरु प्रसाद मन्त्री
आर्यसमाज अलावलपुर

…अधिवेशन

…ं।

मन्त्री … क आर्य प्र… सभा देहली सूचित करते हैं कि … सितम्बर ६५ को अंबाला छावनी में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का वार्षिक अधिवेशन नियत कार्यक्रम के अनुसार सम्पन्न होगा। सभी सदस्य ठीक समय पर पहुँच कर चुनाव में भाग लें।

ज्ञात रहे कि इस पद पंजाब सभा के नियमित मन्त्री श्री डा० हरिप्रकाश जी पर लगाई गई तथा कथित निषेधाज्ञा (इन्जैक्शन) का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। अधिवेशन उसी तिथि, उसी स्थान (५ सितंबर ६५) को अम्बाला में अवश्य होगा।

रामगोपाल—सभा-मन्त्री

किला जफरगढ़ (खुडाली) संगरूर में वेद प्रचार

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा की श्री प्रभुदयाल जी आर्य प्रभाकर की मंडली ने वेद प्रचार किया तथा नवीन यज्ञोपवीत धारण कराए। जनता ने बड़े उत्साह से इस शुभ कार्य में भाग लिया। श्री चौ० सुरजीतसिंह जी प्रधान, चौ० देशराज जी, चौ० जयपाल जी, चौ० भोगीराम जी आदि सज्जनों के पुरुषार्थ और पूर्ण सहयोग से यह शुभ कार्य उत्तम रीति से समाप्त हुआ। इस अवसर पर समाज की ओर से सभा को वेद प्रचारार्थ ७६/- दान मिला।

…न्द वैदिक …द (उ० प्र०) से आश्विन में ही निकलना आरम्भ हो जाएगा शास्त्रार्थ केसरी श्री पं० अमरसिंह जी आर्य पथिक सम्पादक होंगे, वार्षिक मूल्य ६) होगा।

निवेदक—आर्यसमाज का सेवक

विज्ञानानन्द

अध्यक्ष विरजानन्द वैदिक संस्थान

गाजियाबाद उ० प्र०

आर्य समाज लंडवा पूर्व निमाड़

वेद प्रचार सप्ताह

दिनांक १२-८-६५ गुरुवार को श्रावणी उपाकर्म एवं रक्षा बन्धन पर्व समारोह पूर्वक मनाया गया। प्रातः ७ा। से बृहद् यज्ञ प्रार्थना, वेद मन्त्रों के साथ यज्ञोपवीत बदले गए। ध्वजा रोहण के बाद आर्य नगर हैदराबाद सत्यग्रह के अमर शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। स्वर्गीय श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी सरस्वती के पांच उद्देश्य पढ़कर सब आर्य सज्जनों ने मन वचन कर्म से वेदों का स्वाध्याय करने का व्रत लिया। मूल में प्रसाद वितरण एवं शांति पाठ के पश्चात् कार्य-क्रम समाप्त हुआ।

वेद प्रचार सप्ताह

१३-८-६५ तक खंडवा के भिन्न-भिन्न आर्य परिवारों में वेद सप्ताह यज्ञ हवन आदि से सम्पन्न हुआ और श्री सुखराम जी आर्य सिद्धांत शास्त्री द्वारा वेदोपदेश होता रहा।

—मन्त्री आर्यसमाज, खन्डवा

डी० ए० वी० कालिज अंबाला नगर के समाचार

डी. ए. वी. कालिज को दान

तुलसीराम मनसा देवी ट्रस्ट ने डी० ए० वी० कालिज अम्बाला नगर को २५००/- रुपये का दान दिया है, कि जो विद्यार्थी कालिजों में से इन्जीनियरिंग और मैडकल कालिजों में जाएं उनको ५००/- रुपये की सहायता दी जाये। कालिज के अधिकारी ट्रस्ट का धन्यवाद करते हैं।

डी० ए० वी० कालिज में वैद्य रामसिंह जी का आसन प्रदर्शन

श्री कविराज रामसिंह जी, दयानन्द विद्यार्थी भवन (डी.ए.वी. कालेज छात्रावास), में २६-८-६५ को ठीक ८ बजे सायंकाल को 'योगासन और स्वास्थ्य' पर एक बहुत सुन्दर भाषण दिया। सब सज्जनों ने समय पर पधार कर लाभ उठाया।

भजनोपदेशक चाहिए

आर्य समाज, दयानन्द भवन, नागपुर, की स्थानीय समाजों और नगर में वैदिक धर्म प्रचारार्थ एक अनुभवी, सुगायक भजनोपदेशक की आवश्यकता है जो संस्कार, आदि भी करा सके। वेतन १००) से १५०) प्रतिमास तक योग्यतानुसार दिया जाएगा। अपने प्रदेश की आर्य प्रतिनिधि सभा व स्थानीय समाज के प्रधान के द्वारा दिनांक २० सितम्बर १९६५, तक आए आवेदन पत्रों पर ही विचार कर नियुक्ति कर दी जावेगी।

श्रीकृष्ण गुप्त मन्त्री,

आर्य प्रतिनिधि सभा, म.प्र.व. विदर्भ

दयानन्द भवन, नागपुर

दयानन्द कालिज शोलापुर

शोलापुर की दयानन्द संस्थाओं का स्टाफ और विद्यार्थी वर्ग दयानन्द कालेज कमेटी के उपप्रधान श्रीयुत रायबहादुर मन मोहन जी की दुःखद मृत्यु पर हार्दिक संवेदना प्रकट करता है। दिवंगत ने दयानंद कालज कमेटी की जो गौरवपूर्ण सेवाएं की हैं उनका स्मरण करते हुए ये संस्थाएं स्वर्गीय आत्मा को भावपूर्ण श्रद्धांजलि भेंट करती हुई उनके शोकातुर परिवार, सम्बन्धियों व इष्ट मित्रों से उनके वियोग पर सहानुभूति प्रकट करती हैं।

मुद्रक व प्रकाशक श्री सन्तोषराज जी आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर द्वारा वीर मिलाप प्रेस, मिलाप रोड जालन्धर से मुद्रित तथा सभा कार्यालय महात्मा हंसराज भवन निकट कचहरी जालन्धर शहर से प्रकाशित मासिक—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर



टेलीफोन नं० ३०५७ [आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधिसभा पंजाब जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd. No. P. 121

एक प्रति का मूल्य १३ नये पैसे वार्षिक मूल्य ६ रुपये

वर्ष २५ अंक ३८) ८ भाद्रपद २०२२ रविवार—दयानन्दाब्द १४१– १२ सितम्बर १९६५ (तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

वेद सूक्तय:

क्रमोऽसि सपत्नहा

हे मेरे वीरता से भरे हुए कदम ! तू क्रम:—सदा आगे बढ़ने वाला है। तथा तू सदैव सपत्नहा—सपत्न को शत्रु को नाश कर देने वाला है। जब भी तू उठता है, आगे बढ़ता है तो शत्रु को कुचलता चला जाता है। घातक तेरे नीचे दब जाते हैं। कोई बच नहीं सकता।

पृथिवीं संशितोऽग्नितेजा:

हे वीरता भरे कदम ! तू इस सारी धरती पर, भूमंडल में संशित :—बड़ा तेज है, तीक्ष्ण है। इस संसार में तेरे समान तीक्ष्ण और कोई कदम नहीं है। तेरी तीक्ष्णता का और कोई भी सामना नहीं कर सकता। तू वीर है। शत्रु दल को मसल करके रख देता है। तेरे अन्दर अग्नि का सा तेज और दाह भरा है।

पृथिव्यास्तं निर्भजाम:

मेरे शत्रु कान खोल कर सुन लेवें कि मैं भूमि के जिस २ भाग में भी जाऊंगा, जहां २ पर भी अपना कदम रखूंगा—वहां पर जो भी शत्रु होगा तो उसे उस स्थान से बलपूर्वक निकाल दूंगा। मेरे जाने पर वह वहां टिक नहीं सकेगा। उससे वह प्रदेश खाली करा कर ही दम लूंगा। वहां शत्रु रह ही नहीं सकता।

अ थ र्व वे द से

वे दा मृ त

शत्रु का दमन करो

यदश्नामि बलं कुर्व इत्थं वज्रमा ददे।
स्कन्धानमुष्य शातयन् वृत्रस्येव शचीपती:॥

अथर्व वेद ६ काण्ड मन्त्र १

अर्थ—(यद्) जो भी मैं वस्तु (अश्नामि) खाता हूं उस से (बलं) शक्ति को (कुर्वे) संचित करता हूं। मैं (इत्थं) इस प्रकार से (वज्रम्) वज्र को (आददे) धारण करता हूं (स्कन्धान्) कन्धे या सेना दल को (अमुष्य) उस शत्रु को (शातयन्) विनष्ट करता हुआ। जैसे (वृत्रस्य) मेघ को (शचीपति:) सूर्य जैसे तोड़-फोड़ देता है। उसी प्रकार मैं भी वज्र से शत्रुओं को नाश करता हूं।

भाव—इस वेद मन्त्र में शत्रु दमन करने का बड़ा सुन्दर उपदेश मिलता है। आकाश में जिस प्रकार सूर्य अपनी प्रखर किरणों के बाणों से मेघ रूपी वृत्र को, शत्रु को नष्ट कर देता है। सूर्य अपने वज्र की मार से मेघ रूपी असुरों को मार २ कर समाप्त कर देता है। उसी प्रकार से मैं भी राष्ट्र के सम्मान का रक्षक बन कर अपने तेज वज्र तथा शस्त्रों से अपने धर्म व देश के घाती शत्रुओं को मार-मार समाप्त कर डालूंगा। मैं निर्बल नहीं हूं। शत्रु मेरी शक्ति को मामूली न समझे। मेरी वज्र शक्ति से कोई भी शत्रु बचकर जा नहीं सकता। मैं अत्याचारी शत्रुओं को भस्म करके रख दूंगा। मेरे हाथ में वज्र है। मैं वज्रधारी हूं। मेरे वज्र के सामने कौन ठहर सकता है। सारे शत्रुओं का अपने इस वज्र से सिर फोड़ दूंगा। आज मैंने शत्रु-दमन का संकल्प कर लिया है—सं.

ऋषि दर्शन

गुणान् मह्यं देहि

हे परमेश्वर ! आप कृपा करके मुझे शुभ गुणों को प्रदान कीजिए। जितने भी पवित्र तथा उन्नत करने वाले शुभ गुण हैं वे सारे मेरे लिए प्रदान करें जिन से मेरा जीवन उन्नति के पथ पर चलता रहे। प्रभो ! आप गुणों के भण्डार हैं। मुझे भी गुणों से मालामाल कर देवें।

दोषांश्च विनाशय

जितने भी दोष हैं, बुराईयां हैं, जीवन को गिराने वाली भावनाएं हैं, जो दोष बनकर पतित कर देते हैं—वे सारे दोषों को हे परमेश्वर ! दूर कर दीजिए। दोष मुझे जीवन में बहुत नीचा बना देते हैं ऐसी कृपा करें ताकि मेरा जीवन दोष मुक्त हो जाए।

तेजो विज्ञानं देहि

हे परमेश्वर ! आपकी दया से मेरे अन्दर तेज भर जाये, विज्ञान का प्रसाद देवें। मैं तेजस्वी बनकर तथा विशेष ज्ञान को लेकर विश्व में सत्य मार्ग पर चलता हुआ सारे अन्धकार को दूर करता जाऊं, धर्म और अधर्म में विवेचन कर सकूं।

भा ष्य भू मि का

अधिष्ठाता—श्री संतोषराज जी सम्पादक—त्रिलोक चन्द्र शास्त्री

परमात्मा का दिव्य दर्शन कर लेने पर मनुष्य मोक्ष सुखों का अधिकारी इसी जीवन में बन जाता है और जन्म-मरण के बन्धनों से अनन्त काल के लिये मुक्त हो जाता है।

परमात्मा का दिव्य दर्शन चर्म चक्षुओं से नहीं अपितु आत्म ज्ञान की विमल अलौकिक दिव्य ज्योति से ही किया जाता है।

परमात्मा की प्राप्ति के लिये काशी और काबा या चौरासी धाम में भटकने की कोई आवश्यकता नहीं है परमात्मा का साक्षात्कार मनुष्य के मन मन्दिर में ही होता है। ऐ दुनियां के लोगो! अपने जीवन को निष्कलंक, निष्पाप बना कर अक्षय सुखों को प्राप्त कर के अमर बनो। अपनी आत्मा के सिंह नाद को ध्यान पूर्वक सुनो। आत्मज्ञानी, धर्मवीर, कर्मवीर और धर्मात्मा बन कर जीवन के अंतिम लक्ष्य का ध्यान रख कर जीवन संग्राम में आगे बढ़ो।

यह संसार कायरों और आलसी निरुद्यमियों के लिये काल रूप है। कर्म योगियों, आत्म-ज्ञानियों पुरुषार्थियों और परमात्मा के उपासकों के लिये, लोक उपकारियों के लिये, नर-नाहरों के लिये, आप्त पुरुषों के लिये, आत्म-दर्शियों के लिये, वीरों के लिये यह जीवन गौरवशाली है।

जीवन का सच्चा आनन्द योग वैराग्य, तप संयम, सदाचार, सुविचार, देश सेवा, परोपकार, पर सेवा में ही प्राप्त होता है। परमात्मा पर अटूट विश्वास हो जाने पर दैवि प्रेरणायें मनुष्य को प्रतिक्षण प्राप्त होने लग जाती हैं।

परमात्मा पर अटल विश्वास हो जाने पर मनुष्य में अदम्य उत्साह, साहस और ओज तेज पराक्रम पुरुषार्थ अकल्पनीय आ जाता है।

अध्यात्म सुधा

परमात्मा का साक्षात्कार

श्री धर्मवीर जी आर्य झंडाधारी नई देहली

विश्व के इतिहास का ध्यान पूर्वक अवलोकन करने पर इस रहस्य के मर्म का पता चलता है कि भारतवर्ष देश में अनेकों त्रिकाल दर्शी आत्मज्ञानी महर्षिगण हो चुके हैं जो भूत, भविष्य और वर्तमान के ज्ञाता थे। अन्तर ध्वनि को योगी जन सुना करते हैं। विश्व के रंग मंच की, विश्व के क्रान्ति की प्रत्येक घटनाओं का दैवी संकेत महर्षियों और योगियों को होने लग जाता है।

आत्म दर्शन कर लेने पर परमात्मा की सत्ता में मनुष्य विचरण करने लग जाता है।

विश्व बन्धुत्व की भव्य भावनायें जब मनुष्यमें जागृत हो जाती हैं तो वह महा पुरुष तीन पापों से बचकर केवल विश्व कल्याण के लिए अपने जीवन धन सर्वस्व को समर्पित कर देता है।

लोभ ही औगुण है। दुष्टता ही पाप है। सत्य ही तप है! ऐसा मन जानिये, पाप जहां रहता संताप का निवास वहीं धर्मवीर कर्त्तव्य निर्धारिये।

मनुष्य चाहे चारों वेदों का परम ज्ञाता क्यों न हो यदि उसमें लोभ जैसा अवगुण है तो वह आत्म दर्शन का अधिकारी अथवा मोक्ष सुखों का अधिकारी कदापि नहीं बन सकेगा। मोक्ष की अवस्था को प्राप्त कर लेने पर मनुष्य मृत्यु के भय से एक हो जाता है।

जन्म-मरण के बन्धनों से मुक्त हो जाने पर प्रत्येक विश्व की वस्तुओं में परमात्मा की लीलाओं का अगम्य दर्शन मनुष्य करने का स्वभाव बना लेता है। प्रत्येक सुन्दर वस्तुओं को देखकर मनुष्य आसक्त नहीं होता है अपितु परमात्मा की कारीगरी को देखकर लीलाओं के चमत्कार का अनुपम दर्शन करने लग जाता है। आत्म-ज्ञानी महर्षियों के मन में विकार नहीं आने पाता है।

योगियों को रूप और यौवन के सौन्दर्य की छटा को देखकर मन में लेश मात्र भी विकार नहीं आने पाता है।

परमात्मा की कृपा से और घोर वैराग्य से महर्षियों को कामदेव को भस्म कर देने की अद्भुत क्षमता प्राप्त हो जाती है।

पराई स्त्रियों को देखकर या पर-पुरुषों को देखकर जिन स्त्रियों के मनों में अथवा पुरुषों के मनों में लेश मात्र भी विकार उत्पन्न नहीं होता है वे जन धन्य हैं। ऐसे महात्माओं के दर्शन मात्र से पापी भी पवित्र आत्मा बन जाया करते हैं।

महर्षि दयानन्द जी के जीवन की एक घटना है। विरोधियों ने जब महर्षि दयानन्द के तेज बल के प्रबल प्रताप, आत्मज्ञान को, ब्रह्म तेज को, परमात्मा के अटूट विश्वास को देखकर चकित रह गये तो महर्षि दयानन्द की समाधि को विचलित करने के लिए एक दिन एक अत्यन्त रूपवती चन्द्रमुखी वैश्या को महर्षि दयानन्द के पास दुष्टों ने भेजा। वैश्या महर्षि दयानंद के सामने कुविचारों को लेकर जाने में सकुचाने लगी। उस वैश्या को रुपयों का प्रलोभन दिया गया इसलिये जब वह वैश्या साहस करके महर्षि दयानन्द के पास पहुंची तो वह गहने आभूषण उतार कर महर्षि दयानन्द के सामने फूट-फूट कर रोने लगी। जब महर्षि दयानन्द की समाधि खुली तो योगीराज ने कहा बेटी यह गहने मेरे किस काम के हैं यह गहने तुम ले जाओ परमात्मा करे तुम्हारा जीवन पवित्र बने। यह कहना था योगीराज दया के निधान दयानन्द का और वह वैश्या पवित्र आत्मा बन जाती है। कुकर्मों को त्याग देती है।

इस गये बीते युग में भी भारत वसुन्धरा की गोद में आज भी एक नहीं अनेकों योगी इस धन्य धरा पर हैं। जिनका जीवन गंगा के समान पावन पवित्र है और उनके दर्शन कर लेने पर मनुष्य कृत-कृत्य हो जाता है।

मनुष्य का अन्तःकरण जब पवित्र हो जाता है तो वह देव बन जाता है। आओ! आज से हम पाप तापों से बचकर अंतःकरण की शुद्धि में लग जाएं।

ऐ विश्व के नर-तन धारियो! परमात्मा का साक्षातकार यदि करना चाहते हो, यदि अपने-आपको पहचानने की क्षमता प्राप्त करना चाहते हो, यदि परमात्मा से वार्तालाप करना चाहते हो, यदि तुम वेद विद्याओं के शुद्ध श्रोत को सुनना चाहते हो, यदि तुम अपने जीवन को धन्य बनाना चाहते हो, यदि तुम विषय वासनाओं से मुक्त होकर आत्म दर्शी बनना चाहते हो, यदि विश्व की काया पलट देने की अलौकिक क्षमता प्राप्त करना चाहते हो तो आज से वैदिक रवि के पुन्ज को धारण करके अपना जीवन वेदोक्त बनाकर निष्पाप बनो। महर्षियों के अनहद अनवरत शब्दों को जो आकाश में प्रति क्षण गूंज रहे हैं उन्हें सुनने की क्षमता प्राप्त करो। जीवन का कल्याण चाहते हो तो सजग हो जाओ। मृत्यु का महाकाल वह देखो आ रहा है। यदि उससे बचकर अमर बनना चाहते हो अमरत्व को प्राप्त करना चाहते हो तो आज से अपना जीवन यज्ञमय बनाकर अक्षय सुखों को प्राप्त करो।

आओ आज प्रेम सरिता में नहाकर हम विमल हों। भक्ति रस में पगें और बनें प्रेमी योगी॥

(क्रमशः)

सम्पादकीय--

आर्य जगत

वर्ष २५] रविवार २०२२, १२ सितम्बर १९६५ [अंक ३८

मातृ-भूमि की भेंट

जननी और जन्म भूमि स्वर्ग से भी प्यारी होती है। मातृ-भूमि की सेवा के लिए बड़े से बड़ा बलिदान भी किया जाता है। प्यारी से प्यारी वस्तु जीवन तक राष्ट्र के लिए भेंट करने में वीर युवक हंसते २ अर्पित कर देते हैं। माता का मान सब से ऊंचा है। भारतीय सभ्यता में तो मातृ-भूमि के लिए स्वर्वस्व भेंट कर देने वीर पुरुषों का उदात्त जीवन आज भी सब के रक्त में जीवन पैदा कर देता है। तन मन धन को अर्पण करके माता के सम्मान की रक्षा करने में भारत के शूरों ने विश्व में आदर्शमय उदाहरण पेश किया है। आज उनका पुरातन बलिदान का इतिहास संजीवनी के समान अचेत लक्ष्मण को चेतना से भर देता है। माता के अपमान को सहन भी कौन कर सकता है। भारत माता के सम्मान के लिए सैंकड़ों फांसी पर भूल गए। आजीवन कारावास की यातनाएं झेलीं तथा अपने आप को आहुति के रूप में अर्पित कर दिया। मातृभूमि का तनिक भी अपमान नहीं होने दिया। भारतीयों ने अपने राष्ट्र को माता के रूप में माना और पूजा। वन्दे मातरम् के पवित्र घोष के रूप में भारत की वन्दना की। जिस ने भी हमारे राष्ट्र को बुरी आंख से देखने का प्रयत्न किया उसकी आंखें निकाल दी जायेंगी। अपना व्यक्तिगत अपमान तो सहन कर लिया पर मातृभूमि का तनिक भी अपमान सहन नहीं किया। हम ने तो रावण एवं कौरवों को भी क्षमा नहीं किया। विदेश से आने वाले शत्रुओं का तो कहना ही क्या।

आज फिर हमारी मातृभूमि पर शत्रु ने अपने दलबल के अभिमान में चूर होकर काश्मीर की भूमि पर आक्रमण किया है। उसे शायद दूसरों के टैंकों तथा हवाई जहाजों पर अभिमान है। हमारे स्वाभिमान को ललकारा है। दुःशासन ने द्रौपदी को नग्न बनाने के लिए और उसे अपमानित करने की बुरी भावना से उस पर नीचता भरा अत्याचार किया था। भारत के वीर अपने बल का परिचय देने के लिए मैदान में उतरे। जब तक रावण तथा कौरवदल को समाप्त करके मातृभूमि के अपमान का बदला नहीं ले लिया तब तक भारत माता के दुलारों को चैन नहीं आया। आज फिर मातृभूमि के सम्मान पर शत्रु आघात कर रहा है। ऐसे समय देश का प्रत्येक नर नारी, बच्चा बूढ़ा अपने वीरोचित कर्तव्य का भलीभांति पालन करने में लग जाये। इस विषमकाल में सारी जनता अपनी सरकार को पूरा २ सहयोग देवे। ऐसा कोई भी काम न करे जिस से हमारे राष्ट्र के नेताओं का ध्यान थोड़ा भी शत्रुदमन के काम से हटने न पाये। आपसी भेदभाव तथा मनमुटाव दिल से सर्वथा भुला देवें। सारी शक्ति मातृभूमि के सम्मान की रक्षा के लिए लगा देवें। शत्रु को इस समय ऐसा पाठ पढ़ावें कि वह देर तक याद रखे। लातों के भूत बातों से माना नहीं करते। शत्रु को प्रेम से नहीं समझाया जा सकता। उसका तो उपाय हमारे देश की वीर सेना के बांकुरे जवानों के पास है। वह वीर सेना उन सांपों के मुखों को बड़ी उत्तम रीति से कुचल रही है। अपमान का पूरा २ मजा चखा रही है। इस बार की विजयादशमी फिर मातृभूमि का अपमान करने वाले आज के इस रावण को पाठ पढ़ा कर विजय के रूप में मनावें। पंजाब में कुछ लोगों ने इस विषम समय को देख कर अपनी असंगत बात मनवाने के लिए जो वातावरण को दूषित करने का यत्न कर रहे हैं, उसका भारी खेद है। उनको न तो देश का ध्यान है और न ही संकट का विचार है। मनुष्य अपने स्वार्थ में किस स्थिति में कहां तक जा सकता है। यह सब के सामने है। इतिहास ऐसे लोगों को कभी क्षमा नहीं करेगा। समय बीत जाता है पर बातें कभी नहीं भूलतीं। आज माता के सम्मान का प्रश्न है। अपने राष्ट्र की रक्षा के लिए तन मन धन भेंट करने का अवसर आ गया है। शत्रु का कचूमर निकालना है। जनता की भावना को वीरता से भर देना है। वीरता का परिचय देना है।

—त्रिलोक चन्द्र

पंजाब का वर्तमान प्रशासनिक ढांचा बनाए रखना ज़रूरी: श्री यश

पंजाब एकता समिति के संयोजक श्री यश ने आज यहां कहा कि पंजाब की सर्वतोमुखी प्रगति और एकता के लिए यह नितांत आवश्यक है कि राज्य के वर्तमान प्रशासनिक ढांचे को कायम रखा जाए।

उन्होंने पंजाब की एकता भंग करने वालों को चेतावनी दी कि राज्य के ढांचे को रोज-रोज नहीं बदला जा सकता। यदि राज्यों के ढांचे नित्य बनते बिगड़ते रहें तो कोई राष्ट्र सन्तोष से काम न कर सके और न ही आर्थिक प्रगति सम्भव हो।

पंजाबी सूबे की मांग सिखों की नहीं अकालियों की मांग है और पंजाबी सूबे के विरोधी हिन्दू ही नहीं सिख भी है। मैं पंजाबी सूबे के विरोधी हिंदू ही नहीं सिख भी हैं। मैं पंजाबी सूबे के समर्थकों और विरोधियों को साम्प्रदायिक नहीं कहता। दोनों के अपने-अपने दृष्टिकोण हैं लेकिन पंजाबी सूबे के समर्थकों को चाहिए तो यह था कि वे अपने विरोधियों की अपनी मांग व औचित्य के बारे में तसल्ली करते लेकिन उन्होंने मरणव्रत और आत्मघात का एक अनुचित एव लोक-तन्त्र विरोधी तरीका अपना लिया। पंजाबी सूबे की मांग शायद कुछ लोग ठीक भी समझते हो लेकिन आज इसे जिस ढंग से पेश किया गया है वह सर्वथा गलत है और साथ ही इसे एक ऐसे समय पेश किया है जब कि देश को एक गम्भीर संकट का सामना है और हमारे सैनिक शत्रु से लोहा ले रहे हैं। अकालियों ने अपनी मांग के लिये यह अवसर चुन कर देश की कोई सेवा नहीं की। श्री यश ने अकाली नेताओं की इस बात के लिए आलोचना की कि उन्होंने तो बार-बार दो फार्मूले यह कह कर स्वीकार किए कि ये पंजाब की समस्या का अन्तिम हल हैं और दोनों से अब वे मुकर गए हैं। जहां तक पंजाबी भाषी राज्य की मांग का सम्बन्ध है, देश में कोई भी राज्य भाषा के आधार पर नहीं बना। जिस तरह बहते पानी पर लकीर नहीं खैंची जा

(शेष पृष्ठ ४ पर)

महान् सागर और नैया

(ले०—श्री यश जी सभा प्रधान)

भारत एक सागर की तरह है। जब तक खामोश रहे, तब तक बड़े-बड़े जहाज ही नहीं, अपितु छोटी-छोटी किश्तियां भी लहरों से खेलती रहती हैं। परन्तु जब क्षुब्ध हो उठे तो बड़े-बड़े जहाज ही क्या सब से मजबूत चट्टानें भी चकनाचूर हो जाती हैं। सागर नौकाओं का अपनी छाती पर इस लिए सहन नहीं करता कि वह उन्हें उलट नहीं सकता, अपितु इस लिए अनुमति देता है चलो, कोई बात नहीं। यदि इस प्रकार लोग मछलियां पकड़ कर अपना पेट भर सकते हैं तो पालें, सागर का क्या जाता है। परन्तु यदि किश्ती यह समझने लगे कि उसने सागर को नीचा दिखा दिया तो यह उसकी हिमाकत के अतिरिक्त कुछ नहीं। पाकिस्तान नाम की किश्ती ने भारत नाम के सागर को अपने से कमज़ोर समझने का यत्न किया। भारत बहुत देर तक सहन करता रहा। किश्ती का बोझ ही सहन नहीं किया, अपितु उसकी हिमाकत को भी। इस लिए नहीं कि सागर में किश्ती को निगल जाने का सामर्थ्य नहीं था। इसलिए कि पड़ौसी है। नादान है, मूर्ख है, यदि इस प्रकार इसका मन राजी होता है तो कर ले। परन्तु हर बात की आखिर सीमा होती है। सब्र का पैमाना चाहे सागर के बराबर ही क्यों न हो उसका भी इसका किनारा होता है और जब भर जाता है तो छलकने लगता है। सब्र का पैमाना भरा ही नहीं, छलक भी पड़ा। सागर पहले खामोश था, अब अपने तूफान के साथ गर्जने लगा।

शांति का अग्रदूत भारत युद्ध नहीं चाहता। परन्तु शांति के अर्थ अपमान, रुसवाई और हर रोज की यह परेशानी नहीं होती। भारत ने बहुत चाहा कि किसी प्रकार युद्ध टल जाए। कुछ लेकर, कुछ देकर भी समझौता करने का यत्न किया। अपनी बढ़ती हुई सेनाओं को रोककर पाकिस्तान के हित के लिए काश्मीर के मोर्चे पर युद्धविराम भी कर लिया। लेकिन किश्ती यही समझती रही कि वह सागर को हड़प सकती है। गीदड़ की मौत आए तो वह शहर को भागता है पाकिस्तान ने छम्ब पर चढ़ाई शुरू कर दी। सांप की मौत आए तो वह बिल से निकल आता है। पाकिस्तान ने राजस्थान की सीमा पर सरकना शुरू कर दिया। चीटी की मौत आए तो उसके पंख निकल आते हैं। पाकिस्तान के विमान ने अमृतसर के पास हमारे हवाई अड्डे पर राकेट फैंकने शुरू कर दिए। यह पराकाष्ठा थी। सागर खामोश नहीं रह सकता था। उसके नीले पानियों ने तूफान को जगा दिया। भारतीय सेनाएं आगे बढ़ने लगीं। पाकिस्तान ने जब छम्ब सैक्टर में हमला किया था तो उसने केवल युद्धविराम रेखा को ही नहीं तोड़ा था बल्कि अन्तर्राष्ट्रीय सीमा को भी पैरों तले रौंद दिया था। शेर की मांद में घुसने की हिमाकत करने वाला फिर शेर के पंजों से कैसे बच सकता था? पाकिस्तान ने ईंट मारी थी, भारतने पत्थर से जबाव दिया। पाकिस्तान ने राकेट फेंके थे। भारत ने उसकी पंक्तियों को चीर के रख दिया। वाघा सीमा पार कर भारतीय सेना लाहौर के निकट पहुंच गई।

पाकिस्तान अब गिड़गिड़ा रहा है। कभी इस देश के और कभी उस देश के सामने नाक रगड़ रहा है। खुदा के वास्ते भारत को रोको मेरा समझौता कराओ। लेकिन भारत के लालबहादुर ने कह दिया है कि अब लड़ाई तभी बन्द होगी जब पाकिस्तान अपने किए पर पछताएगा। आगे से कभी हिमाकत न करने का विश्वास दिलाएगा। आखिर यह युद्धविराम ही क्या हुआ कि अभी समझौते के कागज पर हस्ताक्षरों की स्याही नहीं सूखती और उधर सीमाओं पर छेड़छाड़ शुरू हो जाती है। इस युद्धविराम से तो युद्ध हजार दर्जा बेहतर है। बहुत देर तक युद्धविराम का युद्ध देख लिया, अब युद्ध का युद्धविराम देख लें। युद्धविराम से शांति स्थापित नहीं हुई, अब युद्ध से शांति का मार्ग प्रशस्त कर लें। युद्ध कोई नहीं चाहता। यह बहुत महंगा पड़ता है। परन्तु हमारा सम्मान, हमारी स्वतन्त्रता, हमारी प्रतिष्ठा इस से भी महंगी है। बड़े से बड़ा मूल्य चुकाया जा सकता है। परन्त स्वतन्त्रता का सौदा नहीं किया जा सकता। सागर अब क्षुब्ध है, यह तभी शांत होगा जब किश्ती को अपनी औकात पता चल जाएगी। गांधी बाबा ने ठीक कहा था—'रैडक्लिफ रेखा पानी की रेखा है।' यह रेखा मिट रही है।

पंजाब का वर्तमान.......

(पृष्ठ ३ का शेष)

सकती वैसे ही भाषा के आधार पर राज्य नहीं बनाए जा सकते। राज्यों का गठन भौगोलिक आर्थिक एवं प्रशासनिक अनेक पहलुओं को ध्यान में रखकर किया जाता है। श्री यश ने कहा कि आज हमारा दुर्भाग्य है कि इस समय जबकि हमें अपने सभी साधन, भावना और शक्ति शत्रु से जूझने के लिए लगाने चाहिए, हम आंतरिक समस्याओं अंत में यह शेष नगर में बांटा गया से उलझे हुए हैं। निश्चय ही हम कठिन स्थितियों के बावजूद स्वार्थी तत्वों से निपटने का संकल्प करेंगे जो हालात से अनुचित लाभ उठाना चाहते हैं।

आर्य समाज डेरा बसी

(गायत्री महामंत्र का अखण्ड यज्ञ)

दिनांक २८ अगस्त को राष्ट्र में सुख और शान्ति के लिये आर्य समाज डेराबसी की ओर से आर्य समाज के विशाल मंदिर में चौबीस घण्टे का अखण्ड यज्ञ गायत्री मंत्र द्वारा किया। छः विद्वान् हर तीन घंटे के बाद, पत्नी सहित यजमानों से यज्ञ कराते रहे। नगर के हर नर-नारी ने इस में भाग लिया।

धर्मपाल गुप्ता
मंत्री समाज

आर्य समाज प्रेम नगर करनाल

में वेद सप्ताह २५ से २९ अगस्त तक बड़ी धूमधाम से सम्पन्न हुआ। संख्या पर्याप्त रही। २९.८.६५ को पंजाब एकता दिवस मनाया गया। जिसमें सन्त फतेह सिंह के उठाए गए कदमों को देश घातक मानते हुए उन्हें अपने आमरण व्रत को वापिस लेने का अनुरोध किया गया। समाप्ति पर प्रादेशिक सभा को ११/- वेद प्रचारार्थ ठा. दुर्गासिंह जी तूफान को दिए गए —ईश्वरचन्द्र

मंत्री समाज

भारत सरकार को बधाई

देश की रक्षा में तन मन धन बलि देने को आर्यसमाज तैयार

दिनांक २२-८-६५ को आर्य समाज सैक्टर ८ चंडीगढ़ की यह सार्वजनिक सभा पाकिस्तान द्वारा काश्मीर में उत्पन्न संकट के निवारणार्थ तथा शत्रु को देश की सीमा से बाहर भगाने के लिए उठाए गए प्रत्येक पग की पुष्टी करती है। यह सभा जम्मू काश्मीर की सीमा की सुरक्षा का कर्तव्य निभा रही भारतीयसेना के वीरता पूर्ण कार्यों की हृदय से सराहना करती है तथा भारतीय सेना एवं भारत सरकार को इस पर बधाई देती है। आर्य समाज भारत सरकार को पुनः आश्वासन दिलाता है कि मातृभूमि की रक्षा के पवित्र कार्य को निभाने के लिये हम सर्वदा भारत सरकार की नीति के अनुसार तन मन धन बलिदान करने को उद्यत रहेंगे। —कृष्ण कुमार भवन

मंत्री समाज

(गतांक से आगे)

पढ़ाई की दृष्टि से विद्यालय के शानदार परिणाम निकलवा कर इस स्कूल को पंजाब के प्रमुख स्कूलों में ला खड़ा किया तथा शिक्षा का उच्चस्तर बनाने के लिए आठवीं कक्षा की सामूहिक परीक्षा के लिए एक **Aryan Education Examination Board** स्थापित किया। जिस में अनेक स्कूलों के छात्र सम्मिलित हुआ करते थे। आप सर्वांगी शिक्षा के पक्ष में थे तथा जहां आपने मानसिक शिक्षा के लिए अनेक स्कूल कालिज तथा पुत्री पाठशालाएं स्थापित कीं वहां आपने छात्रों की व्यावहारिक कुशलता के लिए कुमार सभाओं की शिक्षा के साथ-साथ आयोजन किया। शारीरिक कुशलता को मुख्य स्थान देकर आपने इसके आयोजन का विशेष प्रबन्ध किया तथा व्यावहारिक एवम् शारीरिक कुशलता में बच्चों की विशेष रुचि बनाने के लिए आपके डी. ए. वी. कालिज कमेटी के अधीन प्रतिवर्ष नियमानुसार **Middle School Tournament** के आयोजन का प्रबन्ध किया, तथा धार्मिक रुचि बनाए रखने के लिए सत्यार्थ प्रकाश की भी वार्षिक परीक्षा का प्रबन्ध किया, तथा इस परीक्षा में सर्व प्रथम आने वाले विद्यार्थी को एक चांदी का मैडल आज तक आपकी ओर से दिया जाता रहा है। आप १९२५ ई० में स्कूल का दर्जा कालिज तक बढ़वा कर शिक्षा का कार्य भार ला० रामदास जी के कन्धे पर छोड़ स्वयं प्रिं० के पद से रिटायर हो गए।

दलित उद्धार मंडल की स्थापना—मानव की मानव के प्रति घृणित भावना रखने वाली कुप्रथा ने आपके मन में हलचल-सी पैदा कर रखी थी। केवल मात्र शूद्र जाति में जन्म ले लेने से ही एक

अमर विभूति

महात्मा देवीचन्द्र जी एम० ए० हुशियारपुर

ले० श्री रामकृष्ण जी गौतम, मन्त्री श्री मद्दयानन्द आर्य संस्थाएं आर्य नगर न्यूड़ी होशियारपुर

****

व्यक्ति के उन्नति के द्वार सब प्रकार से बन्द हो जाया करते थे, तथा स्वर्ण जातियों की दया एवम् रहम पर ही अपना जीवन व्यतीत करना पड़ता था ऐसी स्थिति को देखकर आपकी महान आत्मा ने इस कुप्रथा को समाज के लिए कलंक जानकर इसको दूर करने का प्रण लिया तथा १९२५ ई० में आपने दलित उद्धार मडल नाम की एक संस्था को जन्म दिया जिस में प्रारम्भ में इस नगर में तथा जिले के अन्तरगत ग्राम २ में तत् पश्चात् प्रांत के कोने २ में जाकर दलितों की दीन दशा को सुधारा। इस कार्य को परिपूर्ण करने के लिए आप ने स्थान २ पर शुद्धि सभाएं कायम कीं तथा जनता को मानव के प्रति अपने कर्तव्यों के पालन हित विचार दिये। इस कार्य को करते समय प्रारम्भ में तो आप को स्वर्ण जातियों के घोर विरोध तथा बहिष्कार का सामना करते हुए पत्थर, डण्डे आदि तक भी खाने पड़े। आप ने यह संस्था स्थापित करके देश की अखण्डता को स्थिर रखने के लिए एक ऐसी कड़ी का काम किया है जिसे स्वतन्त्र भारत का इतिहास कभी भी भुला नहीं सकता है। फिर आपने इसका कार्य भार भी ला० रामदास जी के कंधों पर दे दिया तथा स्वयं देश में ईसाइयों तथा यवनों के अनर्थों के मुकाबले के लिए जुट गए।

अखिल भारतीय दयानन्द सालवेशन मिशन की स्थापना

देश में ईसायत के प्रचार का तथा यवनों का हिन्दुओं पर विशेषतया स्त्रियों आदि पर दुराचार देखकर आप के मन में इन अनर्थों का मुकाबला करने की ज्वाला प्रदीप्त हो उठी तथा आपने १९३३ ई० में अखिल भारतीय दयानन्द सालवेशन मिशन नाम की एक संस्था को जन्म दिया। आपने देश के कोने-कोने में जाकर इस संस्था के लिए लाखों रुपए इकट्ठे करके महोपदेशक तथा वैदिक धर्मी प्रचारक रखकर समस्त देश 'आसाम उड़ीसा नागपुर, केरला जम्मू काश्मीर तथा पंजाब आदि में स्थान-स्थान पर वैदिक धर्म के प्रचार तथा पतितों उद्धार का बीड़ा उठाया। आपने निर्धनों की आर्थिक सहायता करके उन्हें विधर्मी होने से बचाया। विद्या प्रेमी छात्रों को छात्र वृतियां देकर विद्या प्राप्ति के अवसर उपलब्ध करवा कर तथा रोगियों के लिए धर्मार्थ आयुर्वैदिक औषधालय स्थापित करके उन्हें विधर्मी होने से बचाया। आज भी जहां कहीं भी किसी प्रकार का अनर्थ हो जाए अथवा आपत्ति आ जाए तो तत् काल ही स० के कर्मचारी वहां पहुँच कर यथोचित प्रबन्ध करते हैं। आपने यह सभा स्थापित करके अनेकों भाई बहिनों को विधर्मी होने से बचा कर समाज एवम् जाति की महान् सेवा की है। इस सभा को फिर यहां होशियारपुर नगर में स्थापित करके होशियारपुर नगर का नाम न केवल देश में ही बल्कि विदेशों में भी विख्यात किया है। इस सभा द्वारा ही आप को विधवा विवाह कराने की प्रथा प्रचलित करवा कर समाज का भारी सुधार किया है। आज भी यह सभा अपने लक्ष्य पूर्ति के लिए श्लाघनीय ढंग से कार्य कर रही है।

अनाथ सेवा—आपकी करुणामयी दृष्टि सदैव निर्धनों, पीड़ितों एवं अबलाओं पर रहा करती थी। आपके द्वार सदैव दीन-हीन बन्धुओं के दुख निवारणार्थ खुले रहा करते थे। आप प्रत्येक की दयामयी तथा दुःखित बात को बड़े ध्यान से सुना करते थे तथा तत्काल ही उसकी यथोचित धन आदि अथवा अन्य प्रकार से सहायता किया करते थे।

वैदिक धर्म का प्रचार—वह वैदिक धर्म की ज्योति जोकि म० हंसराज जी द्वारा आपके मन के अन्दर जगाई गई थी तथा जिससे ही प्रभावित होकर आपने अपना जीवन वैदिक धर्म के प्रचारार्थ आर्य समाज के अर्पण किया था उसके लिए आपने विस्मरणीय तथा अद्वितीय एवं अनुपम कार्य किया है। होशियारपुर के आर्य समाज को आपने नया जीवन दिया था। आपने निःस्वार्थ एवं लोक हित अनेक कार्य करके जनता का विशेष कर नवयुवक वर्ग का झुकाव आर्य समाज एवं वैदिक धर्म की ओर किया। आप आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा जालन्धर के प्रधान पद पर सुशोभित होकर प्रांत में वेद प्रचार की अवस्था को नया जीवन दिया तथा स्वयं स्थान २ पर जाकर जनता में वैदिक धर्म का प्रचार कर के पर्याप्त धन राशि एकत्रित करके सभा की आर्थिक दशा को भी सुधारा। आपको वेद तथा आर्यसमाज के नियमों पर अटूट विश्वास था तथा अपना जीवन बिल्कुल वेद आज्ञा अनुसार चलाया हुआ था। तथा अपने नित्यकर्म सन्ध्या हवन तथा भ्रमण आदि में बड़े कट्टर थे।

(क्रमशः)

हिन्दू दल दौलतपुर होशियारपुरकी ललकार

(ले०—श्री जयराम शर्मा मन्त्री आर्य समाज दौलतपुर)

समाचार पत्रों में सन्त फतासिंह जी का वृत्तांत तथा मास्टर तारासिंह जी का व्याख्यान पढ़ कर कुछ जागृति सी आ रही है।

धर्म के ठेकेदार ये दो महानुभाव पंजाबी सूबा होने पर ही सिख जाति का कल्याण सोचते हैं। हिन्दू जाति से घृणा यह एक अजीब तमाशा है। कितना व्यर्थ प्रलाप है। पुरातन इतिहास इस बात का साक्षी है, कि पंजाब की रक्षा, हिन्दुओं तथा सिखों ने मिलकर की। महाराजा रणजीतसिंह जी के बहादुर सैनिक हरिसिंह नलवा के साथ कितने हिन्दू बहादुर सैनिक सहायक थे।

काबुल, कन्धार, अफगानिस्तान तक गर्जने वाला वह सिंह हिन्दुओं का कितना आभारी था और सिखों का कितना। इन बातों को जो सज्जन नहीं जानते वह सिख होने के तथा कहलाने के योग्य नहीं हैं।

ये दोनों महाशय पदवियों के भूखे हैं। कोई एक प्रधान बनना चाहता होगा तो दूसरा प्रधान मंत्री यह उनको स्वप्न लेना छोड़ सर्वसाधारण जनता की ओर देखना चाहिए और अपने इन घृणात्मक विचारों को छोड़कर भाईचारे की भान्ति रहना चाहिये। अन्यथा इनके इन काले कृत्यों तथा घृणात्मक कृत्यों को देखकर हमारा हिन्दु दल कायम हो चुका है। जिस का प्रचार गांव-गांव में हो रहा है। जत्थे बन चुके है, जत्थेदार चुने गए हैं, स्किवर निश्चित कर दिए गए हैं। प्रधान जो की घोषणा भी हो चुकी है। समय पाते ही वह भी धर्मान्ध होकर हिन्दू धर्म की रक्षा हेतु मैदान में कूद पड़ेगा।

आज हिन्दु दल डंके की चोट से कहता है कि पंजाब, पंजाब ही रहेगा। इसमें सभी सम्प्रदाय रहेंगे। पंजाबी सूबे के नाम से इसे लाटू नहीं लगेगा। पंजाब का विभाजन नहीं होने दिया जावेगा।

पंजाब में रहने वाला बच्चा-बच्चा पंजाबी है। पंजाबी होने की मोहर केवल अकाली दल के सदस्यों तथा नेताओं पर ही नहीं है।

गुरुओं का आशीर्वाद तथा गुरु ग्रन्थ साहिब में लिखी हुई धर्म शिक्षा का प्रभाव, केवल इन कुच्छ इने गिने स्वार्थियों पर ही नहीं है।

अपितु पंजाब के रहने वालों के अतिरिक्त सम्पूर्ण भारतवासी पर है, इनके उपासक हैं।

इन महाशयों की धक्के शाही अब नहीं चलेगी। यह राज्य में अराजकता तथा अशांति पैदा करना चाहते हैं। हिन्दू दल राष्ट्र के विधान की रक्षा करता हुआ अकालियों की धक्के शाही नहीं चलने देगा! हिन्दू दल के सदस्य भी कटिवद्ध होकर गांव-गांव में जा रहे हैं और धर्म का प्रचार कर रहे हैं। साथ ही अकालियों का सामना करने के लिए मोर्चा बन्द हो रहे हैं।

हिन्दू दल पुनः घोषणा करता है कि कांग्रेस राज्य ने सिखों को पहले ही पंजाब में हिन्दुओं से अधिक रियायत दे रखी है। इन से अधिक आगे को कोई रियायत नहीं देने देंगे।

हिंदू दल अपने राष्ट्र के कर्णधारों को सूचित कर देना चाहता है कि ऐसे व्यक्ति जो राष्ट्र के हित को सामने नहीं रखते और अराजकता तथा शांतमय जीवन में अशांति फैलाना चाहते हैं। उनको कारावास में आजीवन रखना चाहिए। दूसरा वह अपराधी है, जो आत्म हत्यारा है। उसकी घोषणा ही अपनी आत्म-हत्या की साक्षी है। हिंदू दल राज्य के विधान की पूरी रक्षा करेगा और साथ ही पंजाबी सूबे की मांग का विरोध भी करेगा।

अब हिन्दु दल ही हिन्दु जनता का संरक्षक बनेगा।

आर्यसमाज लारेंस रोड अमृतसर

में वेद सप्ताह बड़े ही समारोह से मनाया गया। सभा की ओर से पं. त्रिलोकचन्द जी शास्त्री आये हुए थे। समाज में बड़ा उत्साह रहा। समाज के अधिकारी तथा सारे सज्जनों के उत्साह से बड़ी शोभा रही। सभा को इस समय २००) रु० वेद प्रचार में दिए गए।

आर्य समाज माडलटाऊन अम्बाला

अम्बाला माडल टाऊन आर्य समाज में ६५ वर्ष के वयोवृद्ध समाज के दीवाने श्री.ला. दौलत लाल जी, हरभगवान् दास जी, श्री प्रो. धर्मवीर सेठी, श्री कोहली जी मन्त्री श्री. मेहरचन्द जी प्रधान, श्री.बन्सी लाल जी, श्री हरगोविन्द सिंह जी, श्री मलिक जी आदि तथा स्त्री आर्य समाज की बहिनों के उत्साह से वेद सप्ताह बड़े समारोह से मनाया गया। सभा की ओरसे पं त्रिलोकचन्द्र जी शास्त्री तथा पं० सत्यपाल जी, सुभाष जी की भजन मण्डली आए। प्रातः और रात को दोनों समय प्रचार होता रहा जनता बड़े उत्साह एवं उल्लास के साथ शामिल होती रही। देवियों की श्रद्धा दर्शनीय थी। प्रचार में हर प्रकार की सफलता रही। प्रिंसिपल भगवान दास जी दयानन्द कालेज अम्बालाके शोलापुर से वापस अम्बाला पधारने पर समाज में भारी उत्साह भर गया। सभा को १०७) रु० वेद प्रचार, मार्ग व्यय व आर्य जगत के लिए दिए गए।

★अमूल्य वचन★

★ चन्द्रमा और सूर्य को राहु से ग्रसित तथा हाथी और सर्प को बन्धन में बन्धा देख कर और बुद्धिमानों को दरिद्र देख कर हम को विश्वास होता है कि विधाता ही (भाग्य ही) सर्वश्रेष्ठ है।

★ करीर के पेड़में पत्ते नहीं लगते तो इस में वसन्त का क्या दोष है? उल्लू दिन को नहीं देखता इस में सूर्य का क्या दोष है? जल की धारा चातक के मुंह में नहीं पड़ती तो मेघ का क्या दोष है? विधाता ने जो भाग्य में लिख दिया है भला उसे कौन मिटा सकता है?

★ कार्य योग्य हो या अयोग्य, करने वालों को परिणाम पर विचार कर लेना चाहिए। बिना विचारे शीघ्रता से किये गये काम का फल मरण पर्यन्त हृदय को जलाता और कांटे की तरह खटकता रहता है।

ता० ५ सित० को पंजाब के आर्यों, सनातनधर्मियों, कांग्रेसियों व जनसंघ आदि सब विचार के लोगों का विशाल सम्मेलन आर्य समाज बाजु(होश्यारपुर जालन्धर में श्री प्रो० रामसिंह जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की प्रधानता में समारोह से सम्पन्न हो गया। सन्त जी के पंजाबी सूबा के लिए मरणव्रत की धमकी पर विचार करने के लिए यह सम्मेलन था। इस में पंजाब के कोने २ से प्रतिनिधि पधारे थे। श्री पं० रघुवीर सिंह जी शास्त्री मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा वेदी का सारा सूचना का काम सम्भाले थे। लोगों में बड़ा जोश था। इस में ज्ञानी पिण्डीदास जी, पं० रुद्रदत्त जी शर्मा अमृतर, पं० रघुवीरसिंह जी शास्त्री; प्रो० रामसिंह जी प्रधान, श्री लालचन्द्र जी अग्रवाल, पं० रत्नपाल जी यमुना नगर, पं० कपिलदेव जी शास्त्री हरियाणा, पं० त्रिलोकचन्द्र जी शास्त्री श्रीयुत यश जी प्रधान आर्य प्रादेशिक सभा आदि ने अपने २ सुझाव दिए। पंजाबी सूबा के लिए अनशन व्रत की धमकी के सामने सरकार को न झुकने के लिए जोर दिया गया। श्री यश जी का भाषण बड़ा ही ओजस्वी था सर्वसम्मति से यह प्रस्ताव पारित हुआ।

अकाली नेता श्री सन्त फतेह सिंह जी की अनशन तथा आत्मदाह की घोषणा से पंजाब की परिस्थिति गम्भीर होने की आशंका पैदा हो गई है। उनकी पंजाबी सूबे की मांग साम्प्रदायिक उद्देश्य लिये हुए है। इससे पंजाब के हिन्दू सिक्खों में पारस्परिक कटुता बढ़ेगी राजनैतिक एवं आर्थिक दृष्टि से भी यह मांग देश के हितों के विरुद्ध है।

ऐसे समय जब कि पाकिस्तानी आक्रमण के संकट का मुकाबला करने के लिए ही देश की सारी शक्ति संगठित और केन्द्रित होनी

पंजाब का सम्मेलन

चाहिए, अकालियों का यह साम्प्रदायिक आन्दोलन बहुत अनुचित असामयिक है।

इस साम्प्रदायिक मांग की तुष्टि के लिए जो मार्ग अथवा उपाय खोजे जा रहे हैं, उनमें से एक यह भी बताया जाता है कि सारे पंजाब की पंजाबी ही एक मात्र भाषा मान ली जाये और हरियाणा हिन्दी भाषी जनता को भाषा के सम्बन्ध में अल्प संख्या मान कर कुछ संरक्षण दिये जायें। यह स्थिति भी तथ्य एवं न्याय के सर्वथा विपरीत है। पंजाबी भाषा को तो पहले ही उचित से भी बहुत अधिक बढ़ावा मिला हुआ है। पंजाबी क्षेत्र की तो वह राजभाषा है ही हिन्दी क्षेत्र में भी उसे जबरदस्ती लाद दिया गया है। वास्तविकता तो यह है कि गत जन-गणना से पंजाबमें हिन्दी भाषी जनता का प्रबल बहुमत है। अतः न्याय की दृष्टि से हिन्दी ही सारे पंजाब की मुख्य भाषा मानी जानी चाहिए और पंजाबी को अल्प सख्यकों की भाषा के रूप में संरक्षण दिया जा सकता है।

इन सारी स्थितियों को ध्यान में रखते हुए यह सम्मेलन कहना चाहता है कि सरकार को अकालियों का पञ्जाबी सूबा बनाने की साम्प्रदायिक मांग को कदापि स्वीकार नहीं करना चाहिए।

आर्य समाज पञ्जाबी सूबा अथवा पंजाबी भाषा इन दोनों को अनुचित रूप से जनता पर लादने का प्रबल विरोध करता है और वह इन्हें किसी भी स्थिति में सहन नहीं करेगा। भाषा के सम्बन्ध में आर्य समाज का स्पष्ट मन्तव्य यह है कि तथाकथित पञ्जाबी क्षेत्र द्विभाषी है। इसलिए इस क्षेत्र में हिन्दी और पंजाबी दोनों भाषाओं को एक जैसी मान्यता एवं स्थान मिलना चाहिये और हिन्दी भाषी क्षेत्र की एक मात्र भाषा हिन्दी ही है। अतः यहां पंजाबी की अनिवार्यता का अन्याय समाप्त होना चाहिये।

यह सम्मेलन सरकार से अनुरोध करता है कि वह सांप्रदायिक तत्वों का दृढ़ता से मुकाबला करे और पंजाब में हिन्दू-सिक्खों की एकता तथा शांति व्यवस्था बनाये रखने के लिये तत्परता के साथ यथेष्ट उपाय करे। सांप्रदायिक शक्तियों के तुष्टीकरण के यत्न से उन्हें अनुचित प्रोत्साहन मिलता है और उनकी लिप्सा अतृप्त ही रहती है पंजाब सांप्रदायिक प्रवृत्ति के अभीशाप का पहले ही बहुत कटु फल भोग चुका है, अब इस अवांछनीय प्रवृत्ति का बढ़ावा बिलकुल नहीं मिलना चाहिये।

यह सम्मेलन जनता से भी अनुरोध करता है कि वह हर स्थिति में शांति एवं संयम से काम ले साम्प्रदायिक आवेश से दूर रह कर संगठन एवं अनुशासन का आदर्श प्रस्तुत करें ताकि इस राष्ट्रीय संकट की घड़ी में सीमा का प्रहरी यह वीर प्रांत राष्ट्र हित के लिये अपने बलिदान एवं त्याग की गौरव मयी परम्पराओं को अक्षुण्ण रख सके।

आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब जालन्धर नगर

पंजाब के आर्य समाजों का सम्मेलन काश्मीर में पाकिस्तान द्वारा किये गये बरबर आक्रमण को परास्त करने के लिए युद्धक्षेत्र में लड़ने वाले अपने वीर सैनिकों को बधाई देती है। हमारे सैनिकों ने इस प्रसंग में जो अपूर्व पराक्रम एवं साहस का प्रदर्शन किया है, उसके लिए सारा राष्ट्र उनका कृतज्ञ है।

साथ ही यह सम्मेलन भारत सरकार की भी प्रशंसा करता है कि इस पाशविक आक्रमण के निराकरण के लिए बहुत समुचित पग उठाया है। और तत्परता से काम लिया है।

यह सम्मेलन भारत सरकार को विश्वास दिलाता है कि सारे पंजाब की जनता राष्ट्र की सीमा एवं सम्मान की रक्षा के लिए इस पवित्र यज्ञ में प्रत्येक की आहुति देने के लिए सन्नद्ध है। यह वीर प्रान्त राष्ट्र रक्षा के क्षेत्र में सदा अग्रणी रहा है और इसके वीर सैनिकों ने प्रत्येक युद्ध में भारी नाम कमाया है। पंजाब इस सकट में भी अपनी गौरवमयी परम्पराओं की रक्षा के लिए कर्त्तव्य पालन में सजग एवं सचेष्ट रहेगा।

आर्य समाज विक्रमपुरा, जालन्धर

आर्य प्रादेशिक सभा की जालन्धर में इस प्रभावशाली समाज का शानदार भवन तैयार हुआ है। अस्सी वर्ष की आयु में भी डा. हुकमचन्द जी भल्ला समाज के कार्यों में नवयुवकों को भी मात कर रहे हैं। श्रीयुत प्यारेलाल जी बेरी प्रिंसिपल साईंदास स्कूल इसके प्रधान तथा पं. रामलाल जी शर्मा व नवयुवक उत्साही समाज के रंग में रंगे हुए श्री आनन्द सागर जी मन्त्री हैं। वेद सप्ताह का सप्ताह बड़े ही समारोह से मनाया गया। सभा की ओर पं. त्रिलोकचन्द्र जी शास्त्री तथा पं. राजपाल मदनमोहन जी की प्रसिद्ध मंडली का एक सप्ताह तक कथा व संगीत होते रहे। सज्जनों का तथा माताओं की श्रद्धा व धर्म प्रेम प्रशंसनीय था। समाज के विचारों को सुनने की जनता में रुचि है। स्त्री समाज भी यहां का जागता समाज है।

पंजाबी सूबा न बनाया जाए

मरणव्रतकी धमकी अप्रजातांत्रिक पंजाबी सूबा श्री नेहरू के स्टैंड से गद्दारी

भारत पर आक्रमण करने वाले शत्रु पाकिस्तान से, लोहा लेती हुई हमारी वीर सेनाएं उनको हमले का मजा चखा रही हैं। सारे देश का ध्यान उधर लगा हुआ है। पञ्जाब को सीमा प्रांत होने से विशेष कर्तव्य निभाना है। परन्तु खेद है कि पञ्जाब के वातावरण को इस गम्भीर स्थिति में श्री अकाली दल के सन्त जी ने पंजाबी सूबा के लिए अपने अनशन करने की धमकी दे रखी है।। इस पर विचार तथा निर्णय करने के लिए मान्य श्री यश जी पूर्व शिक्षा मन्त्री पंजाब ने सारे पंजाब का टाऊन हाल जालन्धर में ता० ५ सितम्बर को पं० भगवत् दयाल जी प्रधान पंजाब प्रदेश कांग्रेस की प्रधानता में एकता सम्मेलन बुलाया। ५०० के लगभग प्रतिनिधि सारे पंजाब से हिन्दू-सिख आये। बड़ा उत्साह था। उस में अनेक नेताओं के विचार लोगों ने सुने। पंजाब का बटवारा पंजाबी सूबा नहीं बनने दिया जायेगा। संक्षिप्त विवरण नीचे दिया जा रहा है। श्रीयुत यश जी प्रिंसिपल रलाराम जी पं० भगवत दयाल जी, श्रीयुत वीरेन्द्र जी तथा सब के विचार ओजस्वी थे। श्री वीरेन्द्र जी ने प्रस्ताव पेश किया। उस पर ओजस्वी भाषण भी दिया। श्री यश जी का भाषण दूसरे स्थान पर दिया है।

डी.ए.वी. स्कूल, बटाला

अवकाश पर डी. ए. वी. स्कूल बटाला छात्रों की शोक

आर्यसमाज के प्रख्यात नेता महात्मा देवीचन्द जी तथा आर्यसमाज के स्तम्भ, डी. ए. वी. कालेज मैनेजिंग कमेटी के उप-प्रधान रायबहादुर मनमोहन जी तथा सच्चे-संन्यासी श्री ध्रुवानन्द जी तथा आर्य महिला श्रीमती मेलादेवी जी धर्मपत्नी श्री आनन्द स्वामी जी के दु:खद निधन पर हार्दिक शोक प्रकट किया गया तथा दिवंगत आत्माओं की शान्ति तथा सद्गति के लिये प्रार्थना की गई और इनकी पावन स्मृति में शेष दिन के लिये स्कूल बन्द कर दिया गया।

आर्यसमाज दयालपुरा करनाल का अधिवेशन

श्री प्रि० मेलाराम वर्क की प्रधानता में २२-८-६५ को निम्न प्रकार से सम्पन्न हुआ।

प्रधान—श्री डा० गणेशदास जी
उप-प्रधान—श्री म० रामधन जी
,, श्री प्रि० सन्तलाल जी
,, ,, पं० बारुदत्त जी
मन्त्री-,, चौ० हुकमचन्द जी
उप-मन्त्री—श्री पं०शमशेर कुमारजी
,, ,, ,, चौ० शेरसिंह जी
कोषाध्यक्ष—,, भागीरथ कुमार जी
आडिटर— ,, हैडमास्टर अमरनाथजी
पुस्तकाध्यक्ष-,, [illegible]

इस के अतिरिक्त १० अन्तरंग सभा के सदस्य चुने गये। लगभग ३२-३३ सभासदों ने भाग लिया।

—मन्त्री—दयालपुरा करनाल

पं. ओमप्रकाश जी महोपदेशक आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि का स्वास्थ्य

श्री ओम प्रकाश जी आर्यसमाज लदमयासर में प्रचारार्थ पधारे थे ... के दिनों में १७ अगस्त प्रातः भाषण देते समय सिर में ... र आने के कारण स्टेज पर बेहोश होकर गिर पड़े थे। ... ल ही समाज अधिकारियों ने उपचार आरम्भ किया और कुछ ठीक हो जाने पर उन्हें घर पहुंचाया गया। घर पर इलाज होता रहा जिसके फलस्वरूप अब पर्याप्त स्वस्थ हो रहे हैं। आशा है कि शीघ्र हो कार्य पर आ जाएंगे।

नोट—अगर उनके सम्बन्धी व इष्ट-मित्र उनसे पत्र व्यवहार के इच्छुक हों तो निम्न पते पर करें। मकान नं. N. C. २३९ [illegible] कोट किशनचन्द्र जालन्धर

—व्यवस्थापक

आर्यसमाज माडल टाऊन जालन्धर में वेद सप्ताह की धूम

इस वर्ष ... सितम्बर १९६५ से ५ सितम्बर १९६५ तक आर्यसमाज माडल टाऊन जालन्धर में वेद सप्ताह मनाया गया। आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा की ओर से पण्डित खुशीराम जी तथा श्री मेलाराम जी पधारे। पंडित खुशीराम जी ने वेदों के महत्व, आर्य जीवन, कर्म-रहस्य, प्राचीन आर्य सभ्यता की महानता, आत्मोन्नति के साधन, सामाजिक संगठन इत्यादि कई विषयों पर अपने विचार व्यक्त किये। श्री मेलाराम जी ने मधुर भजन प्रस्तुत किये।

सत्संग में हाजरी परिवाप्त होती रही।

इसी सत्संग में अपने शूरवीर सैनिकों को काश्मीर में युद्ध बन्दो लाईन पार करके आगे बढ़ने के लिए बधाई दी गयी।

आर्यसमाज ने वेद प्रचार के लिए १०० रुपया प्रादेशिक सभा को देने का निश्चय किया। समाज की ओर से समाका, पं. खुशीराम जी तथा श्री मेलाराम जी का और श्रोतागणों का हार्दिक धन्यवाद किया गया। —वेदप्रकाश मलहोत्रा समाज प्रधान

आर्य समाज कालिज विभाग गुरदासपुर

आर्यसमाज कालिज विभाग गुरदासपुर के एक विशेष अधिवेशन में संत फतहसिंह के आमरण व्रत पर भारी खेद प्रकट किया गया तथा सरकार से मांग की गई कि वह ऐसी साम्प्रदायिक मांगों को कदापि स्वीकार न करे तथा सख्ती से ऐसे देश द्रोही आन्दोलनों को कुचल दे।

आर्य समाज इस संकट के समय सरकार को पूर्ण सहयोग व समर्थन देगा।'

रामसरण दास
मन्त्री समाज

आर्य समाज माडल टाऊन जालन्धर की ओर से भारतीय शूरवीर सेना को बधाई

जालन्धर ३.९.६५ आर्य समाज माडल टाऊन, जालन्धर ने अपनी बैठक में एक विशेष प्रस्ताव पारित करके भारतीय सेनाओं को काश्मीर में वीरता पूर्वक शत्रुओं को दलन करते हुए युद्ध विराम रेखा पार करके शत्रु के हाथ आए इलाकों को मुक्त कराने पर बधाई दी, आर्य समाज देश के नर नारियों से आशा रखती है कि वे संगठित हो कर अपने परिश्रम और पुरुषार्थ से कार्य करते हुए आगे अपनी सेनाओं के हाथ मजबूत करेंगे और उन्हें हर प्रकार का सहयोग देंगे। देश वासियों से आशा है कि वे सब विघटनात्मक कार्यों को त्याग कर राष्ट्र-रक्षा के कार्य में पूरे साहस और उत्साह से जुट जायेंगे।

वेदप्रकाश मलहोत्रा
प्रधान

मुद्रक व प्रकाशक श्री सन्तोषराज जी आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर द्वारा वीर मिलाप प्रैस, मिलाप रोड जालन्धर से मुद्रित तथा जगत कार्यालय महात्मा हंसराज भवन निकट कचहरी जालन्धर शहर से प्रकाशित मालिक—आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर



टैलीफोन नं० ३०५७ [आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधिसभा पंजाब जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd. No. P. 1.1

एक प्रति का मूल्य १३ नये पैसे — वार्षिक मूल्य ६ रुपये

वर्ष २५ अंक ३९) ४ आश्विन २०२२ रविवार—दयानन्दाब्द १४१–१९ सितम्बर १९६५ (तार: आर्य जगत जालन्धर

वेद सूक्तय:

अक्ष्यौ निविध्यहृदयं निविध्य

हे वीरनर ! जो भी शत्रु बन कर आता है अपना हो या पराया। याद रख कि उस शत्रु की अक्ष्यां — दोनों आंखें ही निविध्य—फोड़ डाल और हृदय उस का दिल निविध्य —चीर डाल। शत्रु पर कैसी दया। उस के साथ तो यही व्यवहार करना चाहिए। उसे अंधा कर के मार देना चाहिए।

जिह्वां नितृन्धि प्रदतो- मृणीहि

ऐसे-ऐसे राष्ट्र के शत्रु की तो तू जबान भी खींच ले, काट दे। उसे बोलने लायक रहने भी न दे। उस पर तनिक भी दया न करना। उस के सारे दांत भी तोड़ डाल। मुख में एक भी दांत न रहने दे। उसे शत्रुता का मजा चखा दे। वीर ! तेरे होते शत्रु का क्या काम है।

पिशाचो अस्य यतमो जघास

वीरनर ! देख जिस किसी भी पिशाच ने, राक्षस ने या राष्ट्र के घाती शत्रु ने तेरे किसी भाई-बन्धु को राष्ट्र के किसी भी अंग को जघास-खा लिया है, अपना भोजन बना लिया है। किसी को मार भी दिया है। किसी के धन-जन-जीवन की हानि कर डाली है। उस पाप घाती शत्रु को कच्चा ही चबा डाल। उस की सत्ता ही मिटा दे—अ थ र्व वे द से

वे दा मृ त

शत्रु का दमन करो

यत् पिबामि सं पिबामि समुद्र इव संपिबः।
प्राणानमुष्य संपाय संपिबामो अमुं वयम्॥

अथर्ववेद कांड ६ मन्त्र २

अर्थ—मैं जिस को भी पीऊं (संपिबामि) उसे अच्छी प्रकार पीऊं तथा उसे इस प्रकार से (संपिबः) पीऊं जिस प्रकार (समुद्र इव) समुद्र धरती की सारी नदियों का पानी पी जाता है। उसी प्रकार (वयं) हम भी (अमुष्य) उस शत्रु के (प्राणान) प्राणों को (सपाय) खूब पीकर (अमुं सं पिबाम:) उसको पी जावें—शत्रु को पचा जावें शत्रु को मार देना उसे पी जाने के समान ही है।

भाव—कितनी सुन्दर वीरभावना है। मैं जिस प्रकार कई प्रकार की पीने वाली वस्तुओं को पी लेता हूं और उसे भली भांति पीकर पचा लेता हूँ। जैसे विशाल समुद्र धरती की सारी नदियों का पानी पी लेता है। उसी प्रकार ही मैं राष्ट्र के शत्रुओं को भी भली भांति पी लेता हूँ। उनकी सारी शक्ति को पी लेता हूं तथा उनकी सारी शक्ति को पी लेने का अर्थ यह है कि उन को पी जाना। हम अपने राष्ट्र के सारे विरोधियों शत्रुओं को जिन का काम देश की एकता, संगठन तथा उन्नति के साथ सम्बन्धित है, उन सब को हम देश-भक्त पी जायेंगे। हमारे सामने वे टिक नहीं सकते। जैसे पानी पीकर पचा लिया जाता है उसी प्रकार से उन देश घातकों की सारी शक्ति को भी जल की भांति पी कर पचा देने की क्षमता मुझ में आ चुकी है। उनका क्या मजाल कि मेरे सामने वह तनिक भी ठहर सकें। —सं०

ऋषि दर्शन

विजयोत्कर्ष सदा

हे परमेश्वर ! आपकी कृपा से हम सदा ही प्रत्येक काम में विजय और उन्नति को देखने वाले हों। हमारी कभी पराजय न होने पावे। जो-जो हमारे शत्रु हैं, उनसे हम सदा विजयी होकर उनको पराजित करने वाले हो जावें।

समाश्रयितुं योग्य:

वह परमात्मा सदा आश्रय करने योग्य है। जीवन में सबसे उत्तम एवं प्यारा सहारा वही है। उसका आश्रय जीवन तथा उसका परित्याग मृत्यु है। संसार के सारे सहारे सदा नहीं रहते। पर प्रभु का आश्रय सदा रहता है।

अधिराजो विश्वस्येश्वर:

वह परमात्मा सब राजाओं का महाराज, अधिराजा है। वही सारे विश्व का चर अचर जगत् का स्वामी है, मालिक है। सारा जड़ चेतन जगत उसी के नियम व मर्यादा में चल रहा है। वही सारे विश्व का चर-अचर जगत् का स्वामी है, मालिक है। सारा जड़-चेतन उसी के नियम व मर्यादा में चल रहा है। कोई भी उसके नियम को तोड़ या टाल नहीं सकता।

भा ष्य भू मि का

धिष्ठाता—श्री संतोषराज जी

अध्यात्म सुधा–

परमात्मा का साक्षात्कार

(श्री वेद पथिक धर्म वीर जी आर्य झंडा धारी, नई देहली)
(गतांक से आगे)

परमात्मा का साक्षात्कार उन्हीं जनों को होता है जिन के हृदय कमल में आत्म ज्ञान की दिव्य ज्योति का अनन्त सूर्य सम ज्ञान प्राप्त हो जाता है। जो जन पर सेवा परोपकार और विश्व कल्याण महा यज्ञ में लग जाते हैं और धर्म की रक्षा में अपने जीवन को लगा देते हैं वे ही जन धर्मवीर और कर्मवीर महात्मा देशभक्त युग पुरुष कहलाते हैं। ऐसे ही नर रत्नों को भारत माता की लाज बचाने के लिए प्रभु से प्रबल प्रेरणा प्राप्त होती है।

जीवन की उषाकाल में आओ हम बैठ कर परमात्मा का ध्यान कर के सर्व सिद्धियों को प्राप्त करके वैदिक धर्म के प्रचार का झंडा उठाकर महर्षि दयानन्द के सच्चे सैनिक कहलाने का गौरव प्राप्त करें। परमात्मा हमें बल दे।

परमात्मा आर्य जाति के बच्चे बच्चे को विश्व विजय का महा मंत्र बताये जिससे हम देश धर्म के शत्रुओं का मान मर्दन कर के जीवन समर में आगे बढ़ कर अपना चक्रवर्ती वैदिक साम्राज्य स्थापित करें।

परमात्मा का साक्षात्कार करने का एक ही साधन है कि हम अपने जीवन को सादा, पवित्र, वेदोक्त आर्य बनाएं।

आज के जीवन प्रभात की उषाकाल का विश्व के मानव समाज के नाम महर्षियों का दिव्य सन्देश यही है कि फिर 'तमसो मां ज्योतिर्गमय' हो विश्व गगन गूंज उठे। वेद मन्त्रों की पवित्र ध्वनि से विश्व का मानव समाज जाग उठे। भारतीय वैदिक संस्कृति के शंख नाद से।

विश्व के घर-घर में पुनः हो वेद चर्चा, विश्व के घर-घर में पुनः हो सन्ध्या वंदन, यज्ञ रचना का अलौकिक दृश्य चतुर्दिक हो, फिर सामगान से गगन व्यंजुन आदि हो, चारों वेद कान्दिका सुनाई पड़ें चारों ओर सारे भूमि मण्डल में मंडित महान मान हो, आर्य विभव अखंड बिना ओर छोर हो, सब जनों के मन भवन में वेद ज्ञान का दिव्य अनुराग हो, सभी के मन भवन में विश्व बन्धुत्व की भव्य भावनाएं। जब हो मानव समाज की जीवन धारा वेदोक्त ज्ञान गरिमा की तो फिर वैदिक युग का निर्माण क्यों न होगा।

परमात्मा का साक्षात्कार कर लेने पर संकल्प मात्र से मनुष्य अगम्य कार्यों को पल मारते में कर डालता है।

विश्व का मानव समाज आज अध्यात्म विश्व को योग विद्या को और मोक्ष विद्याओं के रहस्य को भूलकर नारकीय दुखों को भोग रहा है। जागो वैदिक रवि का उदय हो चुका है। वेद ज्ञान की किरणों को धारण करो। बनो आर्य जमाने में हलचल मचा दो। फिर महर्षियों का वैदिक युग लाने में जुट जाओ वैदिक स्वाराज्य स्थापित करके विश्व विजय करके भारत माता के सपूत कहलाओ। इसी में पार ब्रह्म परमात्मा का साक्षात्कार निहित है। ✶✶

शत्रु को मार भगाना है

श्री बलदेवराज जी गुप्ता एम० ए० मद्रास

(1)

भारत माता के आंगन में शत्रु आया,
हम सब ने मिलकर मार भगाना है।
एक कदम भी जो आगे बढ़ाया,
उस कदम का मजा खूब चखाना है॥

(2)

हम हों चाहे हिन्दु, मुसलिम, ईसाई,
शास्त्री जी ने पुनः याद है दिलाई।
'फिर भी हम भारत-वासी हैं भाई-भाई'
इस संकट में भेद-भाव मिटाना है। भारत माता...

(3)

यही समय है एकत्रित हो जाने का,
पग-पग से मिलाकर आगे बढ़ जाने का।
काश्मीर-समस्या को सुलझाने का,
अन्यथा शत्रु ने काश्मीर पर छा जाना है। भारत माता...

(4)

भारत-माता की हम सब लाज बचाएं,
एक 2 इंच भूमि के लिए मिट जाएं।
तभी जगत की आंखें खुल पाएं।
'वीर-भारतीयों को कभी नहीं सताना है।

(5)

अन्यथा उन्हें मजा खूब चखाना है,
भारत माता के आंगन में शत्रु आया।
हम सब ने मिलकर मार भगाना है,
एक कदम भी जो आगे बढ़ाया।
उसी समय हमने मजा खूब चखाना है॥

ताजा भारतीय समाचार चित्र

—6 सितम्बर से देश भर के सिनेमाघरों में एक विशेष समाचार चित्र दिखाया जा रहा है। इस में दिखाया गया है कि हमारी सुरक्षा सेनाएं पाकिस्तानी घुसपैठियों का किस प्रकार सफलता पूर्वक सफाया कर रही हैं। हमारे जवानों ने पाकिस्तानियों की घुसपैठ रोकने के लिए क्या कारवाई की है।

—पूर्वी और पश्चिमी पाकिस्तान के तार और टैलीफोन दोनों का संचार खतम हो गया है। डाक-तार विभाग ने लोगों को सलाह दी है कि वे उन क्षेत्रों के लिए तार और टैलीफोन काल बुक न कराएं।

प्रत्येक भारतीय देश पर न्योछावर होने के लिए कटिबद्ध है और अपने कर्तव्य का पालन कर रहा है।

सम्पादकीय—

आर्य जगत्

वर्ष २५ | रविवार २०२२, १९ सितम्बर १९६५ | अंक ३९

राष्ट्रभृत् यज्ञ में आहुति

आज कल भारत की सरकार के महान् नेताओं ने राष्ट्र के गौरव मान सम्मान की सुरक्षा के लिए राष्ट्रभृत् यज्ञ का प्रारम्भ किया हुआ है। जिस से देश की रक्षा की जाये तथा आक्रमण करने वाले अत्याचारी शत्रुओं के साथ पूरी शक्ति से टक्कर ली जाये। बल का उत्तर बल से देकर क्षात्रबल की अग्नि को प्रदीप्त किया जाये। जिस से सारे देश का भरण-पोषण किया जा सके—उसे राष्ट्रभृत् यज्ञ का नाम दिया जा सकता है। भारतीय इतिहास में समय-समय पर हमारे नेताओं ने इस प्रकार के महान् यज्ञ करके उन में विजय प्राप्त की। रावण के सेना-बल द्वारा भारत की भूमि पर आक्रमण होने पर श्रीराम को नायक बना कर देश की जनता ने रामायण काल में ऐसा यज्ञ किया था। समय-समय पर विदेशी सत्ता के हमले को रोक कर उनको, मजा चखाने के लिए भारतीय वीरों की आहुतियां इतिहास में अमर हैं। आज भारत की सरकार ने पाकिस्तानी भेड़ियों के निर्मम अत्याचार से भरे आक्रमण को रोकने के लिए और अपने मातृ-मन्दिर के सम्मान की रक्षा के नाते राष्ट्रभृत् यज्ञ आरम्भ किया हुआ है। कई वर्षों से बार २ शांति-पूर्वक समझाने पर भी जब शत्रु अपने अत्याचार से बाज न आया। काश्मीर रूपी सीता का हरण करने में लगा रहा। उसे शायद अपने टैंकों व अन्य दूसरों से दिये गये मारक-शस्त्रों पर अभिमान था। उसे शायद अपने कुम्भकर्ण, मेघनाद, मकराक्ष, बाली और विरूपाक्ष की शस्त्र शक्तियों पर मान था। उसे नहीं पता कि इधर भारतीय राम के पास सत्य बल, धर्म बल एवं जन बल है, जिस के सामने सारे बल बेकार हैं। आज इस राष्ट्रभृत के महान यज्ञ में हमारे देश के वीर बांकुरे सैनिक अपनी शक्ति, मातृभूमि प्रेम तथा वीरता का जिस कदर कमाल का परिचय दे रहे हैं। उस से सारे राष्ट्र का मस्तक ऊंचा हो रहा है। स्थान २ पर अत्याचारी शत्रु से टक्कर लेकर उसके सारे साधनों को पाश २ करके जिस शान से आगे बढ़ते जा रहे हैं, उसे देख कर सारी जनता प्रसन्नता से झूम उठी है। बलिदान की वीर गाथाएं एक नया इतिहास का अध्याय बनाती जा रही हैं। आज सारा भारत राष्ट्रभृत यज्ञ को प्रदीप्त अग्नि में आहुति देता चला जाता है। इस बार का आने वाला विजया दशमी का पवित्र पर्व विशेष रूप से विजय समारोह के रूप में मनाया जायगा। इस राष्ट्रभृत यज्ञ में भारत की शानदार विजय होगी।

भारतीय नेताओं के आरम्भ किये हुए इस राष्ट्रभृत नाम के महान यज्ञ में देश के नेता जहां रात दिन मातृभूमि के सम्मान के लिए जागते हैं, वीर सेना अपना परिचय दे रही है। वहां सारे देश की जनता का विशेष कर्तव्य है कि इस यज्ञ में और सब कुछ भूल कर सरकार को तन मन धन द्वारा पूर्ण रूप से सहयोग देवें—हर वस्तु भेंट कर देवें। इस यज्ञ में जिस भी आहुति की आवश्यकता हो, देते रहें। इस समय सारे भेदभाव भुला देवें। स्वार्थ की प्रवृत्तियां छोड़ देवें। अर्जुन के समान हमारे सामने एक ही लक्ष्य हो और वह शत्रु को पराजित करके उसे किये का मजा चखा कर विजय प्राप्त करें। हमारे प्रांत पंजाब पर विशेष दायित्व है। झूठी अफवाहें न फैलने पायें। सारा प्रान्त और देश विशाल परिवार के समान मिलकर सीता का अपमान करने वाले पर भूमिसात करें। काश्मीर की उसके हाथ में अधिकृत भूमि रूपी सीता को अब उसके-बन्धन से मुक्त करके विजय पर्व मनावें। विजय हमारी है। इस यज्ञ में आहुतियां डालो।

—त्रिलोकचन्द्र

आर्य समाजों के प्रति

आर्य समाज की स्थापना ही देश भक्ति व राष्ट्रीय सेवा की आधार शिला पर की गई है। इस के महान् प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने सारे जीवन में नाना दिशाओं में स्वराज्य के निमित्त भारी कार्य किया है। आर्य समाज उसी देश भक्ति के पुनीत पथ पर चलता जा रहा है। इस समय अत्याचारी पाकिस्तानी आक्रमण का उत्तर देने के लिए राष्ट्र की शक्ति लगी हुई है। भारतीय वीर उन को छठी का दूध याद करवाने में लगे हैं। इस विषम काल में आर्य समाजें बड़ा भारी काम कर रही हैं। जन जीवन की भावना को जगा कर उन को देश के प्रति अपने कर्तव्य को ध्यान दिलाने में आगे ही आगे हैं। आर्य समाज की सारी प्रैस तथा प्रचार की शक्ति इसी काम में लग गई है। आर्य समाज एक जीती जागती संस्था है। इस के प्रचार में बड़ा बल है। इस के पास शक्तिशाली प्रैस हैं। प्रचारकों का शानदार मंडल है। उत्तम संगठन है। संस्थाओं की विशाल श्रृंखला हैं तथा बड़े बड़े देश प्रसिद्ध नेता हैं। देश प्रेम का प्रेम आर्य समाज ने अपनी जन्मघुट्टी में लिया है।

अत्याचारी पाकिस्तान के आक्रमण पर हमारी सेना जहां पर कमाल कर रही है। वहां आर्यों के पास जनता का ऐसे आवश्यक समय में नेतृत्व करने का काम होता है। उसे स्थान-स्थान पर नगर-नगर, में आयसमाज की ओर से राष्ट्ररक्षा सम्मेलनों का जाल बिछाने में अभी से लग जाना चाहिए। जनता में वीर भावना भरने के लिए उसके पास सब कुछ है। भावना बड़ा काम करती है। बड़े-बड़े सम्मेलनों के द्वारा जीवन में जोश भर देने का यही अवसर है जितना संगठन समाज के पास है—उसकी सारे प्रशंसा करते हैं। इस समय हमारी सरकार ने रिपुदमन यज्ञ आरम्भ कर दिया है। शत्रु की सेना का कचूमर निकालकर भारत का आक्रमण करके अपमान करने का मजा चखाया जा रहा है। ऐसे समय जन-जीवन में वीरता और देश-भक्ति का भाव भरकर उनको हर प्रकार से तैयार करना सबसे बड़ा आवश्यक काम होता है। सेना को पता लग जाए कि देश का बच्चा-बच्चा हमारी पीठ पर है। कितना उत्साह बढ़ जाता है। अतः आर्य-समाज प्रत्येक स्थान पर, प्रत्येक संस्था में वीर भावना को जगाने

(शेष पृष्ठ ६ पर)

डाक-तार कर्मचारी संचार-व्यवस्था चालू रखें

(श्री सत्यनारायण सिंह जी की अपील)

आज रात आकाशवाणी के दिल्ली केन्द्र से भाषण करते हुए संचार तथा संसदकार्य मन्त्री श्री सत्यनारायण सिंह ने डाक-तार विभाग के कर्मचारियों की कर्तव्य-परायणता की प्रशंसा की और वर्तमान संकटकाल में संचार-व्यवस्था को बिना रुकावट चालू रखने के लिए उन्हें धन्यवाद दिया।

आप ने कहा—हमारे देश पर पाकिस्तान द्वारा भारी आक्रमण किया गया है। पाकिस्तान के राष्ट्रपति ने घोषणा की है कि पाकिस्तान ने भारत से युद्ध छेड़ दिया है। इस राष्ट्रीय सकट की घड़ी में हमारे देशवासियों में अपार उत्साह और देशभक्ति की उत्कट भावना है और वे प्रधान मन्त्री की पुकार पर एक साथ आगे बढ़ आए हैं। अपने सभी भेदभाव और झगड़ों को खत्म करके हमने पूरे संगठन और राष्ट्रीय एकता का परिचय दिया है और हम अपने देश की अखण्डता के विरुद्ध किसी भी चुनौती का सफलता पूर्वक सामना कर सकते हैं।

मूल रूप से हम शांति में विश्वास करते हैं और हमारे मन में किसी के भी प्रति विद्वेष की भावना नहीं है तथा हम चाहते हैं कि प्रत्येक देश सह अस्तित्व की भावना के साथ शान्ति से रहे। किन्तु यदि कोई हमारी स्वतन्त्रता का अतिक्रमण करता है तो हम मानते हैं कि किस प्रकार एक हो कर हर कष्ट और बलिदान के लिए सन्नद्ध उस चुनौती का मुकाबला किया जाए। गोस्वामी तुलसीदास के शब्दों में :

"जो रन हमहि प्रचारे कोई,
तबहिं सुखेन काल किन होई।"

हमारे देश में हर कहीं देश-भक्ति और राष्ट्रीय भावना की लहरें उमड़ती दिखाई पड़ रही हैं।

इस सकट के समय हाल में ही डाक-तार विभाग के कर्मचारियों ने राष्ट्र की पुकार का शानदार स्वागत किया है। मुझे मिली तमाम सूचनाओं से पता चला है कि वे नितान्त प्रतिकूल परिस्थितियों में भी सभी तरह के खतरों का मुकाबला करते हुए अपने कर्त्तव्य पर अडिग हैं। हालांकि घुसपैठियों और हमलावरों ने सचार लाइनों को भग करने की पूरी-पूरी कोशिश की, किन्तु हमारे विभाग के बहादुर और देशभक्त कर्मचारियों ने अपनी भरसक शक्ति और सामर्थ्य से सेवाओं को लगातार चालू रखा तथा भारी गड़बड़ी की कोई दुर्घटना नहीं हुई। मुझे यह बताने की आवश्यकता नहीं कि संचार-प्रणाली हमारे राष्ट्रीय जीवन का कितना महत्वपूर्ण क्रियाशील अंग है, खासकर उस समय जबकि हमारा देश इतने महान संकट और खतरे से गुजर रहा है।

कल जब डाक-तार कर्मचारियों के नेशनल फैडरेशन के जनरल सैक्रेटरी, अन्य सैक्रेटरियों के साथ मुझ से आ कर मिलें और कहा कि हम तो आपके पास अपनी मांगें पूरी कराने के लिए आया करते थे, किन्तु आज अपनी ओर से कोई भी मांग न ले कर हम आप से आदेश लेने आए हैं, जिससे कि इस संकट की घड़ी में कर्मचारी अपनी जिम्मेदारियों और कर्तव्य को निभा सकें और देश की शानदार विजय का नेतृत्व करें, तो वास्तव में मैं प्रसन्नता से अभिभूत हो उठा। उन्होंने मुझे प्रतीक रूप में राष्ट्रीय रक्षानिधि के लिए एक चैक भी भेंट किया और यह वायदा किया कि इस के लिए आगे भी और अंशदान भेजा जाता रहेगा। वास्तव में कर्मचारियों की इस भावना का स्वागत किया जाना चाहिए। मैं यह कहना चाहूँगा कि डाक-तार विभाग जैसे राष्ट्रीय संस्था में यह पहली मिसाल है।

असंख्य यातनाएं और अत्याचार सहने के बाद इस देश ने १९४७ में स्वतन्त्रता प्राप्त की। तभी से राष्ट्र-निर्माण और उसकी समृद्धि के लिए हम हर कठिन परिस्थितियों से जूझते आ रहे हैं। शान्ति से जीने की अपनी इच्छा के बावजूद हमारे ऊपर यह युद्ध थोपा गया है। मुझे जरा भी सन्देह नहीं कि हमारा देश जिसका गौरवमय अतीत ऐतिहासिक कृत्यों और उदात्त बलिदानों की घटनाओं से भरा पड़ा है, इस भीषण परीक्षा-काल में विजयी होकर रहेगा और निश्चय ही दृढ़ता एवं शानदार ढग से सुख समृद्धि की ओर अग्रसर होगा।

पिछले कुछ दिनों से हमारे कर्मचारियों और उसके प्रवक्ताओं द्वारा भेजे गए तारों की बाढ़-सी आई हुई है जिनमें उन्होंने सरकार और मोर्चे पर लड़ने वाले अपने

(शेष पृष्ठ ५ पर)

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा की एक विशेष बैठक ११.९.६५ शनिवार को ३ बजे हंसराज भवन के कार्यालय में हुई :—

साधारण कारवाई के पश्चात् निम्न प्रस्ताव सर्व सम्मति से पास किए गए

(१) आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा सम्पूर्ण पंजाब की आठ सौ से अधिक समाजों की ओर से तथा आर्य समाज की समस्त शिक्षा संस्थाओं की ओर से पाकिस्तान के इस अत्यंत अन्याय-युक्त तथा इस निन्दनीय आक्रमण के कारण से होने वाले संकट काल में पूर्ण सहयोग का विश्वास दिलाती है।

ऊपर उल्लेख की गई सम्पूर्ण समाजों तथा शिक्षा संस्थाओं की सेवाएं इस कठिन समय में गवर्नमैंट को सहयोग के रूप में समर्पित की जाती हैं।

प्रादेशिक सभा गवर्नमैंट को यह विश्वास दिलाना चाहती है कि देश की वर्तमान परिस्थिति के कारण जो भी उचित सेवा कार्य दिया जाएगा, प्रान्त भर की समस्त आर्य समाजें और उनसे संबद्ध शिक्षा संस्थाएं उसे सहर्ष स्वीकार करेंगी।

इस प्रस्ताव की प्रतियां श्री लाल बहादुर जी शास्त्री प्रधान मन्त्री, कांग्रेस प्रधान श्री कामराज जी, श्री गुलजारीलाल जी नन्दा, गृह मन्त्री, श्री यशवन्त राव बलवन्त राव जी चव्हान प्रतिरक्षा मन्त्री, श्री स्वर्णसिंह जी विदेश मन्त्री तथा पंजाब के मुख्य मन्त्री श्री रामकृष्ण जी कामरेडकी सेवा में भेजी जाएं। आर्यसमाज के समचार पत्रों तथा देश के अन्य महत्वपूर्ण समाचार पत्रों को भी इसकी प्रतिया भेजी जाएं। इन दो प्रस्तावों को पास करने के बाद विशेष बैठक विसर्जित हुई।

—सत्यदेव विद्यालंकार
सभा मन्त्री

सेना की रीढ़—सप्लाई कोर

इस समय देश का ध्यान अग्रिम पंक्तियों और मोर्चों पर लगा है, जहां हमारी सेना और वायुसेना दुश्मन से लोहा ले रही है। हमें अपने वीर सैनिकों पर गर्व है। इसके साथ ही हमें अपने उन आदमियों पर भी गर्व होना चाहिए, जो मोर्चे के पीछे काम कर रहे हैं और रसद पहुँचाने के काम में लगे हैं।

कश्मीर में युद्धविराम रेखा का बहुत बड़ा भाग बीहड़ पहाड़ों पर से होकर गुजरता है। अग्रिम चौकियों तक सड़कें नहीं जातीं। फिर भी वहां सैनिकों को हर जरूरत की चीज़ पहुँचायी जाती है। अधिक ऊंचे क्षेत्रों में वर्ष में केवल पांच महीने रास्ता खुला रहता है और इसी अवधि में साल भर का सामान पहुँचा देना पड़ता है।

रसद पहुंचाने के काम में हेलीकाप्टर, भारी गाड़ियां, खच्चर और टट्टू सब लगाए जाते हैं। भारी वर्षा, आंधी तूफान और दुश्मन की गोलाबारी में भी रसद सप्लाई लगातार चालू रहती है। ये काम करने वाले वीर देश के सभी भागों से आते हैं। इन में केसर सिंह भी हैं। अप्पाराव भी, विपिन चन्द्र भी और पिंटो, पटवर्धन और याकूब भी। सब में एक ही भावना काम करती है कि अपने सैनिकों को समय पर रसद पहुंचनी ही चाहिए, चाहे इसके लिए कितनी ही कठिनाइयां उठानी पड़ें।

जिन चौकियों तक सड़कें नहीं जाती हैं, उनको रसद पहुंचाने का काम हेलीकाप्टर और डकोटा विमान करते हैं। इनकी एक भी उड़ान खतरे से खाली नहीं होती। पहाड़ियों में से निकलते विमानों को नीचे से दुश्मन की गोलियों का खतरा हमेशा बना रहता है। अत्यन्त कुशल विमान-चालक ही इन स्थितियों में काम कर सकते हैं। ये लोग निर्धारित समय और स्थान पर रसद गिरा कर जवानों को लड़ने योग्य बनाए रखते हैं।

मोटरगाड़ियों के चालक को, पहाड़ी सड़कों की खड़ी चढ़ाई और खतरनाक मोड़ों पर गाड़ियां चलानी पड़ती हैं। इन सड़कों पर भी कहीं-कहीं दुश्मन बारूद की सुरंगे बिछा देता है और युद्ध-विराम रेखा के पार से गोलाबारी करता है। बरसात में पहाड़ों के गिरने से सड़कें प्रायः रुक जाती हैं। लगातार मोड़ काटते-काटते ड्राइवर को चक्कर आने लगते हैं, और जरा सी चूक से गाड़ी हजारों फुट नीचे खड्ड में गिर सकती है। हजारों मील का सफर ड्राइवर बहुत कम खाना खाकर तै करते हैं। गाड़ियां रास्ते में बिगड़ भी जाती हैं, उन्हें मरम्मत के लिए पास के वर्कशाप में खींच कर ले जाया जाता है। इन सब कठिनाइयों में रसद पहुंचाने में टट्टू भी बहुत काम देते हैं। जिन कठिन पहाड़ी रास्तों पर मोटरगाड़ी नहीं चल सकती, उन पर टट्टू ही जाते हैं। इन टट्टुओं को हांकने वाले जवान बड़े ही चीथड़े होते हैं। थकान का वे नाम नहीं जानते। भोजन मिले न मिले इसकी उन्हें चिन्ता नहीं। उनकी आंख केवल अपनी मंजिल पर रहती है। जवान भारतीय सेना की रीढ़ होते हैं। दुश्मन से लड़ने में इनका काम कम महत्व का नहीं।

आजादी की तड़प ही आत्मा का संगीत है।

—नेता जी सुभाष

वे लोग ? वे बातें...

(१) युवावस्था में हम जितना ज्ञान एक मास में प्राप्त कर सकते हैं, उतना बाल्यावस्था में तीन साल में भी नहीं कर सकते।

—मुन्शी प्रेमचन्द

(२) केवल डाकू कहलाने वाले ही डाकू नहीं होते, सफेद पोश में भी कई डाकू मिल सकते हैं।

—विनोबा भावे

(३) आर्यसमाज के कार्य का सर्वोत्तम परिणाम गुरुकुल की स्थापना है। —महात्मा गांधी

(४) मैं तुम लोगों को घोर नास्तिक देखना पसन्द करूंगा, लेकिन कुसंस्कारों से घोर और मूर्ख देखना नहीं चाहता।

—स्वामी विवेकानन्द

(५) छल-कपट से दूसरों को ठगकर अपना प्रयोजन साधने वाले को पापी कहते हैं।

—महर्षि दयानन्द

(६) अब तक जितना प्रचार संस्कृत का आर्यवर्त देश में है उतना किसी अन्य देश में नहीं।

—महर्षि दयानन्द

(७) प्राचीन आर्य एक ईश्वर के उपासक थे।—महात्म हंसराज

(८) मैं जो कुछ हुआ अपनी पत्नी के प्रसाद और आशीर्वाद से हुआ। वह मेरी पत्नी भाग्य की विधात्री थी।

—मुन्शी प्रेमचन्द

संकलन कर्त्ता—'अंशु'

सुन क्या होगा ?

ले० अरुण सरीन हुशियारपुर

पापी !
यूं ही उठा था पूर्व
एक पापी, विश्वास घाती,
अब चुप बैठा
तुझे उकसाता,
औ' तु आ गया लड़ने।
चबे अब तूने लोहे के चने ?
स्वयं पांव मारी कुल्हाड़ी,
मरने की थी तेरी बारी,
क्यों आयी अब नानी याद ?
क्यों अब हुई पीछे को भाग ?
चाहा था तूने कश्मीर,
पर हम वीर,
छिना देख लाहौर,
क्या शेष कुछ लालच और ?
हम करा देते याद छटी का दूध
तु कैसे गया हमें भूल ?
ओह, अंधकार का पर्दा था ;
या चाऊ का कुछ कर्जा था ?
फिर आओगे क्या
देने आहुतियां।
याद रख-हम शिवा राणा,
काल सम्मुख सीना ताना।
तू जघन्य पाक
जीतेगा हमें क्या खाक ?
भाग : अन्यथा होगा न हित,
छिनेंगे सब प्रदेश रक्षित !

डाक-तार कर्मचारी....

(पृष्ठ ४ का शेष)

बहादुर जवानों को हार्दिक सहयोग देने का वायदा किया है। आवश्यकता पड़ने पर भारतीय टेलीफोन उद्योगशाला और डाक-तार विभाग के कर्मचारियों ने लगातार कठिन परिश्रम करनेका और कुछ मामले में तो समयोपरि भत्ते लिए बिना ही अपना निश्चय और इच्छा व्यक्त की है ताकि इस संकट के समय आवश्यक सेवाओं और संचार-व्यवस्था को बिना किसी रुकावट के चालू रखा जा सके। मैं इस भावना की सराहना करता हूं और अपने सभी कर्मचारियों से, जहां भी वे हैं, अपील करता हूं कि वे इस दिशा में भरसक चेष्टा करते रहें ताकि हमेशा की भांति ही वह सेवा अपने निष्कलंक गौरव को अक्षुण्ण बनाए रखें।

इस के पहले कि मैं समाप्त करूं, मैं अपने विभाग के कर्मचारियों को यह याद दिला देना चाहता हूं और उन से यह अनुरोध करता हूं कि वे प्रख्यात महाभारत युद्ध के दौरान पर योद्धा अर्जुन के यशस्वी गुरु द्रोण द्वारा कहे गए इन शब्दों को याद रखें—

'यह खेल पासों का नहीं है' प्राण का पन आन है।

देश की वर्तमान परिस्थिति इस देश के सम्पूर्ण निवासियों के लिए एक आह्वान है, चैलेन्ज है। पाकिस्तान ने पिछले १८वर्ष से जिस आग को जान बूझ कर सुलगाए रखा था उस का एक न एक दिन भड़कना आवश्यक था। कायदे आजम जिन्हा का देश जिस की नींव घृणा, मार काट, लूट और स्त्री जाति पर अपार अत्याचारों पर रखी गई, प्रारम्भ से ही हिंसा और मार काट के रास्ते का पुजारी बन गया था। उसकी सदा से इच्छा रही कि भारत के साथ स्थायी शत्रुता के ही सम्बन्ध रखे जायें। महात्मा गांधी का देश जिसने अपार बलिदानों के द्वारा स्वतन्त्रता प्राप्त की थी, जिस का आधार सत्य और अहिंसा की दृढ़ नींव पर रखा गया था सदा सहन-शीलता का प्रमाण देकर आग को ठंडा करने का प्रयत्न करता रहा। पचास करोड़ रुपया भी दिया गया, नदियों के पानी का बटवारा भी पाकिस्तान के सुविधा के लिए दिया गया, काश्मीर के प्रश्न पर भी बार-बार समझौते के लिए कहा गया तथा पानी बिजली योजना जो कुछ पाकिस्तान ने मांगा, दिया गया पर लोभ और हिंसा का पेट न भरना था न भरा।

महात्मा गांधी ने केवल मुसलमानों को बचाने के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी थी। श्री जय प्रकाश नारायण, श्री राज गोपालाचारी, श्री सुन्दरलाल तथा श्री विनोबा भावे प्रेम के और पाकिस्तान के सहयोग के मीठे गीत गाते रहे पर सब बहरे कानों पर पड़े। लोभ, हिंसा और अत्याचार का राक्षस अपनी भूख पहले से भी तेज करता रहा।

पाकिस्तान की इस भूख को चमकाने वालों में पुराने हितैषी ? ग्रेट ब्रिटेन का कितना हाथ है, यह बात अब कुछ छिपी नहीं रह गई। रूस के विरुद्ध अड्डे प्राप्त करने के लोभ से अमरीका ने अगणित और आधुनिकतम शस्त्र पाकिस्तान को भेंट किए और अन्त में भारत की भलाइयों का चीनी उत्तर देते हुए चीन ने भी पाकिस्तान का साथ दिया।

समय की पुकार

(श्री सत्यदेव जी विद्यालंकार सभा मन्त्री)

पाकिस्तान के इरादे भयंकर हो गए और हौसले बढ़ गए। उसने पहले पांच हजार से भी अधिक सशस्त्र सैनिक सादे वेश में काश्मीर पर आक्रमण को भेजे और फिर खुला आक्रमण कर दिया।

भारत को अपनी इच्छा के विरुद्ध अपनी सम्पूर्ण आर्थिक प्रगति और विकास योजनाओं को खटाई में डाल कर युद्ध करना पड़ा। पर राणा सांगा, महाराणा प्रताप, शिवाजी, गुरुगोविंदसिंह, रणजीतसिंह तथा महान अकबर का देश ललकारा जाने पर युद्ध से कदम पीछे नहीं हटा सकता। इतिहास साक्षी है और वर्तमान युद्ध की स्थिति साक्षी है कि भारत की वीरता, सम्पूर्ण भारत की नरनारियों की अपूर्व वीरता आज उड़ी, टिथवाल, छम्ब, सियालकोट, लाहौर, डेरा-बाबा नानक तथा फिरोजपुर के क्षेत्र में सुनहरी अक्षरों से नया इतिहास लिखने जा रही है। अमरीका के अभिमान के प्रतिरूप सेबर जेट हवाई जहाजों तथा पैटन टैंकों के मुंह मोड़ दिए हैं, भारत में बने हवाई जहाजों और टैंकों ने सूबेदार राजू जैसे वीरों के हाथों पाकिस्तानी हवाबाजों के छक्के छुड़ा दिए हैं और कहीं भी पीठ न दिखाकर छाती पर गोली खाने वाले कैप्टन सन्यू जैसे वीरों ने भारत का नाम सदा के लिए रोशन कर दिया है।

भारत की सेना अजेय सिद्ध हो रही है, पुरानी वीर परम्पराओं को बढ़ा रही है, और हम सब देश-वासियों की रक्षा के लिए लगातार अपनी जाने वार रही है। इस स्थिति में हमारा क्या कर्त्तव्य है ? (क्रमशः)

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब

आवश्यक अपील

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग की, ११-९-६५ शनिवार की विशेष बैठक में निश्चय किया गया कि :-

अपनी पुरानी उदार परम्पराओं का अनुसरण करते हुए देश पर आए इस संकट काल में आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा की ओर से सेवा कार्य को प्रारम्भ किया जाए।

इस समय पाकिस्तान के निर्दय और अन्याय युक्त आक्रमण के कारण जम्मू तथा पठानकोट की ओर से तथा अन्य स्थानों से अपने घर बार को छोड़ कर जो लोग आ रहे हैं उनके वस्त्र धन भोजन आदि को सहायता करने के लिए सभा की ओर से कैम्प खोले जा रहे हैं। प्रारम्भ में तीन कैम्प खोले गए हैं। एक अमृतसर पंजाब रोडवेज के अड्डे के पास दूसरा जालन्धर स्टेशन के पास और तीसरा होशियारपुर में। इन तीनों के द्वारा आने वाले विस्थापित व्यक्तियों की सेवा की जाएगी।

कार्य बहुत बड़ा है। अभी प्रारम्भ ही है। अत: सब समाजों संस्थाओं तथा व्यक्तियों से अपील की जाती है कि यथाशक्ति इस पवित्र कार्य में सभा की सहायता करें।

इस सम्बन्ध में जो भी समाजें या व्यक्ति धन वस्त्र अन्न आदि से सहायता करना चाहें उनकी सहायता धन्यवाद पूर्वक स्वीकार की जाएगी।

सहायतार्थ जो कुछ भी दिया जाएगा उसको सभा की ओर से नियमित रसीद दी जाएगी।

भवदीय विनीत

यश

प्रधान सभा

जमीन की लड़ाई

लाहौर क्षेत्र में हमारी सेनाएं अपने लक्ष्य की ओर बढ़ रही हैं। पाकिस्तानियों ने बार-बार जवाबी हमले किए परन्तु हर बार भारी नुकसान उठा कर पीछे हटना पड़ा।

समुद्री लड़ाई

पाकिस्तान ने समुद्री लड़ाई भी शुरू कर दी है। पाकिस्तानी नौ सेना ने जामनगर के पश्चिम कच्छ की सीमा पर द्वारका बन्दर पर गोले बरसाए। कोई खास फौजी नुकसान नहीं हुआ।

आर्यसमाजों के प्रति

(पृष्ठ ३ का शेष)

का काम प्रारम्भ कर देवे। आर्य समाज के पास श्री. मुजरिम जी, श्री जीवनजी अमृतसरी,श्री शररजी, श्री आफताब जी आदि वीर कवि है—प्रसिद्ध वक्ता हैं। किसी की कमी नहीं। आर्यसमाजें वीर भावना को जगाने के काम में जुट जावें—सं.

संसद में रक्षा मंत्री का वक्तव्य

रक्षा मन्त्री श्री यशवन्तराय बलवन्तराय चव्हाण के संसद में दिए गए वक्तव्य का सार निम्न है :

पाकिस्तान की फौजों ने पहले छिपकर और फिर खुल्लमखुल्ला जो आक्रमण हमारे देश पर किया है, उसकी शुरूआत घुसपैठ से हुई जिसमें पाकिस्तानी सेना के नियमित और अनियमित सैनिकों ने हिस्सा लिया। १ सितम्बर, १९६५ को पाकिस्तान सरकार ने अपनी नकाब उतार फेंकी और जम्मू-कश्मीर राज्य के छम्ब क्षेत्र में उसकी नियमित सेनाओं ने विशाल आक्रमण किया। ४ सितम्बर को तीसरे पहर पाकिस्तानी वायुसेना के विमानों ने अमृतसर के पास वागा में अन्तर्राष्ट्रीय सीमा को पार किया और हमारी वायु सेना की एक टुकड़ी पर राकेटों से वार किया। हमारे विमानों ने शत्रु के विमानों को खदेड़ दिया।

जम्मू—कश्मीर के छम्ब क्षेत्र में अन्तर्राष्ट्रीय सीमा का अतिक्रमण कर पाकिस्तानी फौजें पेटन और शर्मन टैंकों के साथ हमारे प्रदेश में घुसीं और भारी और मंझली तोपें इनकी सहायता के लिए गोलाबारी कर रही थीं। हमने पाकिस्तान के इन हमलों को विफल कर दिया और हमारी फौजों ने जोड़ियों के पास अपने मोर्चे लगाए हैं, जहां वे दुश्मन को रोके हुए हैं। हमारा यह मोर्चा सुदृढ़ है और इसका सामरिक महत्व स्पष्ट है। मैं यह भी जानकारी देना चाहता हूं कि पिछले २४ घंटों में हम ने पाकिस्तान के ३ और शर्मन टैंक नष्ट किए।

आज सुबह हमारे विमानों ने पश्चिम पाकिस्तान के ऊपर अनेक उड़ान भरीं और पाकिस्तान के सैनिक अड्डों पर हमला किया।

हमारे विमानों ने सैनिक सामान ले जाने वाली एक मालगाड़ी पर भी वार किया और उसे पर्याप्त क्षति पहुंचाई। हमारे सब विमान सुरक्षित वापस लौट आए हैं।

प्रधानमन्त्री का राष्ट्र के नाम सन्देश

३ सितम्बर को आकाशवाणी से राष्ट्र के नाम सन्देश प्रसारित करते हुए प्रधानमन्त्री श्री लाल बहादुर शास्त्री ने कहा कि देश को आगे आने वाले कठिन समय के लिए तैयार होना है। आज सारे राष्ट्र के लिए, सारी कौम के लिए यह पुकार है कि वह पाकिस्तान की इस चुनौती का डटकर सामना करने के लिए तैयार हो जाए। हर आदमी को अपना फर्ज पूरी तरह दिल से अदा करना चाहिए।

उन्होंने विस्तार से अपने भाषण में इस बात को बताया कि किस प्रकार १९४८ की तरह पाकिस्तान ने ट्रेनिंग देकर पहले कई हजार हथियारबंद हमलावरों को तोड़फोड़ और गड़बड़ फैलाने के लिए कश्मीर में भेजा और किस प्रकार फिर एक ब्रिगेड सेना और भारी टैंकों और हवाई जहाजों ने छम्ब के क्षेत्र में भारी हमला बोल दिया। उन्होंने फौज के जवानों और कश्मीरी जनता को पाकिस्तानी हमले को नाकाम याब कर देने के लिए बधाई दी।

उन्होंने कहा—जम्मू-कश्मीर राज्य कानूनी और असलियत में भी भारत का एक हिस्सा है। कश्मीर के रहने वाले, भारत के नागरिक हैं और उनको वे सब अधिकार मिले हुए हैं, जिनकी हमारे कांस्टीट्यूशन में गारंटी है। उधर दूसरी तरफ आजाद कश्मीर में क्या हाल है। वहां के रहने वाले भाई इन हकों के लिए तरसते हैं। मैं यह कहना चाहता हूं कि पाकिस्तान के लोगों और वहां की जनता से हमारी कोई लड़ाई नहीं है लेकिन हमारा मुकाबला एक ऐसी हकूमत से है, जो हमारी तरह, आजादी, अमन, लोकतन्त्र में, जमहूरियत में विश्वास नहीं रखती। वह काश्मीर में रायशुमारी लेने की बात करती है, मगर खुद अपने मुल्क में वह आजादी से चुनाव कराने को तैयार नहीं। क्या पाकिस्तान पख्तून इलाके में इस बात पर रायशुमारी जनमत कराने के लिए तैयार होगा कि वे पाकिस्तान में रहना चाहते हैं या नहीं? क्या पाकिस्तान पूर्व-बंगाल में लोगों की इस बात पर राय लेना चाहेगा कि वे रावलपिंडी की हकूमत के मातहत रहना चाहते हैं कि नहीं? जो लोग अमन चाहते हैं, उनको हमेशा हमारा समर्थन और हमारी मदद मिलेगी। लेकिन जो असली हालत और स्थिति है, उससे राष्ट्र को-कौम को-हंसते-हंसते आर मुसीबत उठाने और कुर्बानी देने के लिए तैयार होना होगा। आजादी की रक्षा के लिए उसकी हिफाजत के लिए, यह कीमत हम सबको देनी ही होगी।

कश्मीर का घटनाचक्र

६ सितम्बर को हमारी सेनों ने सुबह तड़के पश्चिमी पञ्जाब के लाहौर क्षेत्र में प्रवेश किया। हमारी वायुसेना ने पञ्जाब सीमा के उस पार दुश्मन के ठिकानों पर कई हमले किए। हमारी वायुसेना के हमले से दुश्मन की एक तेल ले जाने वाली ट्रेन जल कर राख हो गई। दुश्मन की सैनिक गाड़ियों के एक काफिले, रसद ले जाने वाली ट्रेन, सैनिक शिविर और कुछ उन ठिकानों पर जहां दुश्मन की तोपें लगी हुई थीं, बम गिराए गए।

छम्ब जोड़ियां क्षेत्र में भी वायुसेना के जहाजों ने पांच और पाकिस्तानी टैंकों पर, १२ तोपों और एक दर्जन गाड़ियों को नष्ट कर दिया। उड़ी—पुंछ क्षेत्र में हमारी सेनाओं ने पुंछ से उत्तर की ओर बढ़कर दुश्मन की एक पहाड़ी चौकी पर कब्जा कर लिया। यह चौकी पुंछ शहर के ऊपर की ओर है और यहीं से पाकिस्तानी गोलाबारी किया करते थे।

प्रधान मंत्री का श्री यू थांट के सन्देश का उत्तर

प्रधान मन्त्री श्री लाल बहादुर शास्त्री ने संयुक्त राष्ट्र के महासचिव, श्री यू थांट के सन्देश के उत्तर में कहा है कि कश्मीर में शान्ति स्थापित करने के लिए यह जरूरी है कि पहले पाकिस्तान युद्ध-विराम रेखा के पार भारतीय क्षेत्र में घुसपैठ बन्द करे; अन्तर्राष्ट्रीय सीमा को घुसपैठियों तथा अपनी सशस्त्र सेनाओं से खाली करदे और विश्वास दिलाए कि इस प्रकार की स्थिति फिर नहीं पैदा होगी।

प्रधान मन्त्री ने कहा कि काश्मीर में आज जो खतरनाक स्थिति पैदा हो गई है, उसका मूल कारण यह है कि पाकिस्तानी सैनिकों ने भारी संख्या में घुसपैठ की है और इसलिए ये थांट ने पाकिस्तान से जो अपील की है उसका कोई लाभ नहीं होगा और स्थिति खराब होने का मूल कारण बना ही रहेगा।

★ देश-रक्षा के लिए छाती तानकर नव-युवक आगे बढ़ रहे है।

★ भारत का सितारा ऊंचा रहे।

रजिस्टर्ड नं० पी० ३३१

...आ कार्यालय देहली

विविध समाचार

पूरा गांव ईसाई हो गया

बल्लारपुर (चांदा) (M.P.) से चार मील दूर दुर्गापुर में जहां इस समय ८० प्रतिशत ईसाई बन चुके हैं। इस गांव में प्रचारार्थ श्री गंगा प्रसाद जी अवैतनिक उपदेशक पहुंचे हुए हैं। जो बड़ी लगन से वैदिक धर्म के द्वारा पुनः ईसाईयों को शुद्ध करने का काम कर रहे हैं। इस के लिए श्री घनश्याम सिंह जी गुप्त पूर्व प्रधान सार्वदेशिक सभा ने १००/- मासिक इस आवश्यक कार्य के लिए देना आरम्भ कर दिया है। देशवासियों से इस कार्य के लिए अपील की जा रही है कि अपनी पवित्र कमाई में से दान देकर हिन्दुओं को ईसाई बनने से उनकी रक्षा करें।

दान भेजने का पता—गंगाप्रसाद अवैतनिक उपदेशक बल्लारपुर जिला चांदा एम० आर०।

आर्यसमाज खंडवा पूर्व निमाड़ (म०प्र०)

आर्यसमाज खंडवा के पुरुषार्थी अधिकारियों द्वारा वेद प्रचार कार्य २ से ३-६-६५ तक सफलता पूर्वक होता रहा। खंडवा के भिन्न-भिन्न गांवों में पं० मेधार्थी जी के प्रभाव शाली भाषण होते रहे। इसके अतिरिक्त नगर की लोकल संस्थाओं तथा महिला समाज में भी प्रचार व धर्मोपदेश होता रहा।

समाज के अधिकारी इसके लिए धन्यवाद के पात्र हैं।

खरकड़ा जिला रोहतक में वेद सप्ताह

१ से चार सितम्बर तक आर्य समाज खरकड़ा की ओर से वैदिक रीति द्वारा बृहद् यज्ञ सम्पन्न हुआ। जिस में प्रादेशिक सभा के उपदेशक श्री पं० रोशनलाल जी, प्रभु दयाल जी आर्य की भजन मंडली, तथा स्थानीय जनता के सहयोग से यह कार्य निर्विघ्न समाप्त हुआ। यज्ञोपवीत धारण कराए गए। इस अवसर पर श्री अमरसिंह जी प्रधान समाज, चौ० मोलड़सिंहजी, चौ० सुखदेव जी आर्य सज्जनों के नाम उल्लेखनीय हैं। २३१/- वेद प्रचारार्थ सभा को इस समाज की ओर से दिए गए।

चुनाव

चौ० अमरसिंहजी प्रधान, चौ० सुखदेव जी उपप्रधान, पहलवान जयदेव जी कार्यकर्ता प्रधान, चौ० रणधीर सिंह जी मंत्री, चौ० महावीर सिंह जी उपमंत्री, चौ० सूबेसिंह जी उपमंत्री, चौ० मुंशीराम जी पुस्तकाध्यक्ष, चौ० मोलड़सिंह जी कोषाध्यक्ष, पहलवान कामर सिंह जी भंडारी।

प्रभुदयाल आर्य प्रभाकर

आर्य वीरों से अपील

देश रक्षा के लिए रक्तदान

आर्य वीरदल करनाल के संचालक श्री उत्तमचन्द जी शरर ने पंजाबी आर्यवीरों से देश रक्षा निमित्त रक्त दान देने की अपील की है। इस शुभ कार्य के लिए आर्य वीरदल करनाल के १००० नवयुवकों ने रक्तदान देने का संकल्प किया है।

कार्यालय आर्य वीरदल आर्य समाज, प्रेम नगर करनाल

की ओर से तुरंत करने योग्य कार्य

(१) अपने आर्य वीर दल की ओर से एक सूची तैयार करें। जिस में दो खाने हों, एक रक्तदान का दूसरा जो भी कर्तव्य जिला अधिकारी सौंपे—जैसे पहरा आदि। एक सूची अपने पास रखें, एक जिलाधीश या स्थानीय अधिकारी को, और एक इस कार्यालय को भेज दें। सूची बनने तक स्थानीय अधिकारियों को वैसे ही दल की ओर से सेवाएं समर्पित कर दें।

(२) पत्र मिलते ही अपनी सेवाएं समर्पण करने के लिए प्रधान मन्त्री, रक्षा मन्त्री, गृहमन्त्री भारत सरकार, मुख्य मन्त्री पंजाब तथा आल इण्डिया रेडियो, जालन्धर को तार द्वारा सूचित कर दें। यह कार्य आप तुरन्त कर डालें।

(३) स्थिति के अनुसार अपने नगर में जलसा, जलूस आदि निकालकर जनता का मनोबल रखें। इस समय आप सभी संस्थाओं के सांझे जलसे भी कर सकते हैं।

इस समय विजय-दशमी पर्व हमें राष्ट्र रक्षा दिवस (यदि युद्ध चालू रहा) या राष्ट्र विजय दिवस के रूप में मनाना है, अभी से तैयारियां आरम्भ कर दें। केन्द्र आप के लिए वक्ताओं का प्रबन्धक करेगा। इस अवसर पर भी वीरनिधि इकट्ठी करके दल को सफल बनाए।

(४) १००० आर्य वीरों ने रक्त दान की पेशकश कर दी है।

दिल्ली में रक्तदान केन्द्र

—केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्री डा० सुशीला नैयर की आकाशवाणी से प्रसारित अपील के अनुसार जो लोग चाहें सफदरजंग अस्पताल, इरविन अस्पताल और आल इंडिया इंस्टीट्यूट आफ मेडिकल साइंसेज में रक्तदान कर सकते हैं। इन रक्त बैंकों में सुबह साढ़े आठ बजे से शाम के ६ बजे के बीच रविवार के इलावा किसी भी दिन रक्तदान किया जा सकता है।

—आज लोक सभा में गृह-मन्त्रालय के मन्त्री श्री जयसुख लाल हाथी ने बताया कि नागा विद्रोही मनीपुर में सक्रिय हैं और हिंसा तथा जबरन वसूली के कार्य में लगे हैं। इस बात के सबूत भी मिले हैं कि उन्हें पूर्वी पाकिस्तान में हथियार बन्द तथा प्रशिक्षित किया गया। सरकार परिस्थितियों के अनुसार आवश्यक कार्रवाई कर रही है।

—अखिल भारतीय मोटर यूनियन कांग्रेस के प्रतिनिधियों ने मंत्री महोदय से कहा कि वर्तमान संकट में देश की सभी मोटर गाड़ियों, चालकों और अन्य सामान का जिस तरह चाहे सरकार उपयोग कर सकती है।

—भारतीय राष्ट्रीय स्टीमर मालिक संस्था ने परिवहन मंत्री को एक तार भेजा है कि वर्तमान संकट में हम पूरे सहयोग को तैयार हैं। भारतीय व्यापारी बेड़ा सरकार के निर्देशों के अनुसार चलने को तैयार है।

—अखिल भारतीय डाक-तार कर्मचारी संगठन की दिल्ली शाखा ने पाकिस्तानी हमले का सामना करने के लिए दिन-रात एक कर देने का निश्चय किया है। आम सभा में कर्मचारियों ने सर्व-सम्मति से निश्चय किया कि हम बिना ओवर टाइम लिए देर तक काम करेंगे।

—आज लोक सभा में श्री भक्तदर्शन ने बताया कि १९६५ के सफल ऐवरेस्ट अभियान पर सरकार के कुल लगभग सात लाख रुपए, जिस में एक लाख रुपए की विदेशी मुद्रा भी सम्मिलित है, खर्च हुए।

—भारत सरकार ने भारत में काम करने वाले दो पाकिस्तानी बैंकों को अपना काम तुरन्त बन्द करने का आदेश दिया है। दी नैशनल बैंक आफ पाकिस्तान और दी हबीब बैंक।

—रिजर्व बैंक आफ इंडिया ने पाकिस्तान को रुपया भेजने पर रोक लगा दी है। इसके इलावा भारत में रहने वाले पाकिस्तानी नागरिक और फर्मों द्वारा उनको दुनियां के किसी भी देश को पैसा भेजने की मनाही कर दी गई है।

मुद्रक व प्रकाशक श्री ...राज जी आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर द्वारा वीर मिलाप प्रेस, मिलाप रोड जालन्धर से मुद्रित तथा जगत कार्यालय महात्मा हंसराज भवन निकट कचहरी जालन्धर शहर से प्रकाशित मासिक—आर्यआ प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर



टैलीफोन नं० ३०५७ [आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधिसभा पंजाब जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd. No. P. 121

एक प्रति का मूल्य १३ नये पैसे वार्षिक मूल्य ६ रुपये

(वर्ष २५ अंक ४२) २५ आश्विन २०२२ रविवार—दयानन्दाब्द १४१— १० अक्तूबर १९६५ (तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

वेद सूक्तय:

आघायुरभिदामात्

सुन लो ! मेरा यह दावा है कि जो भी अघायु:—पापी शत्रु बन कर मुझे दास बनाने के लिए, पराजित करने के लिए या लूटने के लिए आयेगा, वह अपने कानों को खोल कर मेरी चेतावनी लेवे—फिर कोई बात करे—

एतन म ऋच्छतात्

वह यह देख लेवे कि वह ऐसा विचार कर मेरे पास आने पर उसी समय ही ऋच्छतात्—दूर जा पड़ेगा। उस को मैं ऐसी मार मारूंगा कि पता नहीं कि वह कहां पर जा कर गिरेगा। मेरी मार खा कर दूर देश में जा पड़ेगा।

पृथिव्यास्तं निर्भजाम:

ऐसी दुष्ट वृत्ति वाले पिशाच, राक्षस, चोर, डाकू, वैरी, शत्रु को यदि वह पृथ्वी पर होगा, तो उसे हम सारे मिल कर अपने बल से निर्भजाम:—उखाड़ कर फैंक देंगे। गाजर-मूली की भान्ति जमीन से उखाड़ देंगे—

इदमुग्रं सहो मम

यह मेरा सह—बल पराक्रम शक्ति बड़ा भारी है, उग्र है। मुझे कोई भी भूल कर निर्बल न समझे। मैं बलवान् हूं। मेरा बल बड़ा है। मेरा तेज ज्यादा है। मेरी शक्ति शानदार है। राक्षसों की क्या मजाल कि मेरे सामने टिक सके।

—अथर्ववेद से

वेदामृत

शत्रु को मार दो

अन्धा अमित्रा भवताशीर्षाणोऽहय: इव।
तेषां वो अग्निनुन्नानामिन्द्रोहन्तु वरं वरम्॥

सामा० अ० २१ सू० ८ मन्त्र २

अर्थ :—अरे रे (अमित्रा:) शत्रुओ ! सुन लो कि तुम सब (अन्धा:) अन्धे हो, तुम्हें कुछ भी नहीं दीखता (भवत) सचमुच अन्धे बन जाओ तथा तुम (अशीर्षाण:) बिना सिर के हो, बिना दिमाग बुद्धि के बने हो और तुम सारे (अहय: इव) सांपों के समान विषैले हो। (तेषां व:) उन सब तुम्हारे (अग्निनुन्नानाम) द्वेष, क्रोध तथा हिंसा की आग से अपने में जलते हुए तुम सब को (इन्द्र:) हमारा वीर नायक (वरवरं) तुम मे जो भी तुम्हें इस शत्रुता के मार्ग पर प्रेरणा देने वाला बड़ा आदमी है उसे हमारा नेता (हन्तु) मार देवे।

भाव :—शत्रु सदा अन्धा होता है। हिंसा मनुष्य को सदा अन्धा बना देती है। आंखें हों तो उसे मार काट का भयंकर परिणाम दिखाई न दे ? जो भी अमित्र हैं, राष्ट्र तथा मानवता के घाती हैं। दूसरों को मारकाट कर, लूट जला कर, उनकी हत्या करके पीड़ा देने वाले हैं—वे शत्रु हैं। वे अन्धे हैं, पत्थर की तरह कठोर दिल हैं। वे बिना दिमाग के हैं। आक्रमण का क्या नतीजा निकलता है, कितनी भारी हानि होती है—यह बात उनकी समझ में नहीं आ सकती। वे शत्रु सांप के समान डसना व विष फैलाना जानते हैं। वे अपनी हिंसा की आग में स्वयं को जला देते हैं। अपने जीवन को भस्म कर डालते हैं। हे राष्ट्र के वीर नायक ! वज्र शक्ति को धारण करने वाले इन्द्र ! ऐसे अत्याचारी राक्षस रूपी शत्रुओं को, उन के बड़े २ आदमियों को चुन २ कर मार दो। उन की सत्ता मिटा कर शान्ति की स्थापना करो। कोई भी शत्रु बचने न पाये।—सं०

श्री लाल बहादुर शास्त्री की सिंह गर्जना



प्रधानमन्त्री श्री शास्त्री जी ने पंजाब के लोगों को पाक आक्रमण की वीरता के साथ सामना करने के लिए बधाई दी है। सिखों की वीरता की परम्परा का उल्लेख करते हुए कहा कि वे त्याग और बलिदान की निशानी हैं।

आपने कहा कि यद्यपि मैं लड़ाई चाहने वाला नहीं हूं और सुलह पसन्द हूं और जब देश में साम्प्रदायिक अथवा राजनैतिक झगड़े उठ खड़े होते हैं तो मैं समझा-बुझाकर समाप्त करने की कोशिश करता हूँ। लेकिन जब ४५ करोड़ लोगों के देश पर हमला हो तो मैं पीछे नहीं हट सकता। आपके जयकारों के बीच आगे दृढ़ता-पूर्वक घोषणा करता हू कि ऐसी स्थिति मे मैं आगे बढ़ूंगा, दुश्मन से लड़ूंगा और उसे हराऊंगा, यही मेरा अंतिम फैसला है। पाकिस्तान के हमले के समय देशवासियों ने जिस एकता, शक्ति, सहयोग और विश्वास दिखाया है वह मुझे सदा सामर्थ्य प्रदान करता रहेगा।

सम्पादक—त्रिलोक चन्द्र शास्त्री

आइए! गोपुच्छ से वैतरणी तरें

(श्री आचार्य रघुवीर सिंह जी गुरुकुल कांगड़ी)

(गतांक से आगे)

'गौरिती यज्ञ नाम' यह यज्ञ ही गौ है। इसका सहारा लेकर ही हम वैतरणी को पार कर सकेंगे। यज्ञ के विषय में कहा है—यज्ञो वै श्रेष्ठतमकर्म। यज्ञो वैविष्णुः। मानव जीवन वै यज्ञः। इसी यज्ञ को हमें वैतरणी के लिए अपनाना होगा। जीवन में इस प्रकार के श्रेष्ठ कर्म करने पड़ेंगे जिन से जन्म-मरण से छुटकारा हो सके। यह यज्ञ सर्वत्र संसार में व्यापक है अर्थात् सभी ओर हो रहा है। इसीलिए इसे विष्णु कहा है। वेद में आता है—'यज्ञो वभूव स आ वभूव' यज्ञ सभी ओर हो रहा है।

गौ का एक अर्थ इन्द्रिय भी है। किन्तु इन इन्द्रिय रूपी गोवों से वैतरणी कैसे तरी जायगी? हां, इसका भी उपाय है। उपाय यही है कि जिस प्रकार गौ की पूंछ कस कर पकड़ ली जाती है उसी प्रकार इन इन्द्रियों को मजबूती के साथ पकड़ लो, इधर-उधर स्वेच्छा से न जाने दो, अपने अधीन रखो। अभिप्राय है कि इन्द्रिय दमन द्वारा वैतरणी तरी जा सकती है।

इस गर्भ रूपी वैतरणी में सब को ही आना पड़ता है। सबकी इच्छा इस से छूटने की होती है। इसे पार करने का साधन यज्ञ तथा इन्द्रिय दमन है। इस अलंकार-वाद को न समझ कर पोप जी ने धांधली मचा रखी है। कोई मरणासन्न हुवा कि झट पहुंच गये उसके घर तथा गौदान करा लिया। बेचारे भोले मानव भी पाप से छूटने का सस्ता सा नुस्खा देख कर गौदान करने लगे। किन्तु यदि सत्यार्थ-प्रकाश में लिखित महर्षि दयानन्द के अनुसार जाट जी जैसे व्यक्ति हों तो इन पोपों की कुछ न चले। परमेश्वर करे कि इन वैतरणी तरने-तराने वालों की आंखें खुलें। ★★

—: तीन मुक्तक :—

श्री ओमकुमार जी एम० ए०, दयानन्द कालेज, शोलापुर

पत झर के घर से मधु मास लिया जाता है
अमृत पाने से पूर्व गरल पिया जाता है
दीपक से लेकर सूरज तक ने यही कहा
कि खुद को जला कर प्रकाश किया जाता है।

स्वार्थ के लिये आपस में तलवारें तनीं हैं
दिलों के बीच मजहब ने जो दीवारें चुनी हैं
इतिहास के सीने का दर्द चीखता है कि
वे इन्सान के मासूम लोहू में सनी हैं।

आज इन्सान से इन्सान दूर हो गया है
और मानव मशीन का मजदूर हो गया है
जिस विज्ञान को समझा था बीमारी की दवा
वही इन्सानियत के जिस्म का नासूर हो गया है।

आर्य जगत रोहतक के समाचार

२६ सि० को आर्य केन्द्रीय सभा की अन्तरंग ने निम्नलिखित निर्णय किये।—

(क) राष्ट्रीय सुरक्षा कोष के लिए एकत्र किया जाने वाला लगभग ८०० रु० जिलाधीश रोहतक को सौंपने का निश्चय किया गया।

(ख) २४ अक्तूबर को मनाया जाने वाला ऋषि निर्वाण उत्सव प्रातः समय वैदिक भक्ति आश्रम में और उस से एक दिन पहले नगर रोहतक के भिवानी स्टैण्ड चौक पर मनाया जाये। इसके अतिरिक्त प्रत्येक आर्य समाज अपने अपने मोहल्ले में प्रभात फेरी करें। —विद्यार्थी प्रचार मंत्री

अभी हमने विजय दिवस मनाना है

(श्री बलदेव राज गुप्ता एम. ए, अन्नामलई नगर (मद्रास)

युद्ध - विराम हुआ, यहीं बस नहीं,
अभी हमने विजय - दिवस मनाना है।
जिस जगह से है शत्रु आता,
उसी जगह पहुंचकर मार भगाना है।
तभी हमने विजय - दिवस मनाना है॥
युद्ध विराम० ... ...

धमकी हो चाहे चीन, पाकिस्तान की।
कूट-नीति हो चाहे इंगलिस्तान की॥
'युद्ध - इच्छा' हो चाहे अयूबखान की।
अन्त में तो विजय है हिन्दुस्तान की॥
युद्ध विराम०.... ....

मिले हों नेता यदि शास्त्री चह्वान जैसे।
जनरल चौधरी के कारनामें हों ऐसे॥
सेना-हित जिस को जनता दे पैसे।
'पराजय मिल सकती है हमें कैसे?'
सेना ने यह यथार्थ कर दिखाना है।
युद्ध विराम० . ...

यद्यपि 'शान्ति' है हमारा पैगाम।
भविष्य में शत्रु ले न युद्ध का नाम॥
अन्यथा लेने को देने पड़ेंगे दाम।
काश्मीर से भागेंगे शत्रु तमाम॥
सिंह - सेना से सबने डर जाना है।
युद्ध विराम० ... ...

'छेड़ना न किसी को' पनपी नीति यही।
यदि छेड़ा हमें किसी ने, छोड़ेंगे नहीं॥
अभी तो सेना हमारी हिली ही नहीं।
हिलेगी तो पहुँचा देगी कहीं का कहीं॥
रुकेगी नहीं, आगे ही आगे बढ़ जाना है
जग में यह विजय - नाद पहुँचाना है॥
युद्ध विराम० ... ...

सम्पादकीय—

आर्य जगत्

वर्ष २५] रविवार २०२२, १० अक्तूबर १९६५ [अंक ४२

सदा जागते रहें

आर्य समाज को एक साथ अनेक मोर्चों पर संग्राम करना पड़ता है—सर्वदा विजयी होता है। कुछ दिनों से इस के विरोधी लोग फिर आर्यसमाज के मुंह आने लगे हैं। वे समझते हैं कि अब आर्यसमाज के पास केवल उन बाबुओं का टोला है जिन को हिंदी भी नहीं आती, जिन को सिद्धांतों का पता ही नहीं तथा जिन को सस्कृत ग्रन्थों का जानना तो कहां उनके नाम तक भी नहीं पता। यही कारण है कि मतमतान्तर के लोग कहीं २ पर निकालने लगे हैं। पं० माधवाचार्य जी का काम तो है ही आर्यसमाज को कोसना। वही पुराने तर्क पेश कर जनता में अपना बेसुरा राग अलापते रहना। ऐसी बेसिर पैर पुस्तकें लिख कर पैसे कमाना प्रयोजन है। आर्य समाज में अब अधिक संख्या ऐसे लोगों की होती जा रही है जो स्वाध्याय विशेषकर सिद्धान्तों का स्वाध्याय छोड़ते जा रहे हैं। किंतु समाज में विद्वानों की कमी नहीं। पं० माधवाचार्य जी की पुस्तक तथा असत्य प्रलापों का मुंह तोड़ उत्तर समाज के स्वाध्यायशील विद्वान श्री पं० शिवपूजनसिंह जी कुशवाहा कानपुर ने अपनी नीरक्षीर विवेक नाम की पुस्तक लिखकर माधवाचार्य जी को घर तक पहुँचा कर कमाल कर दिया है। हम देहली के श्री गोविन्दरामहासानन्द प्रकाशन में काम करने वाले ब्रह्मचारी जगदीशचन्द्र जी विद्यार्थी को बधाई देते हैं, जो समाज के विरोधियों को घर तक पहुँचा आते हैं।

अभी सप्ताह ही हुआ कि भिवानी में ईसाईयों के सम्मेलन में शंका समाधान का समय रख कर पादरी अब्दुलहक ने समाज को भी पुकारा। वह समझते हैं कि इतनी जल्दी समाज किसे ला सकता है। पौराणिकों में तो सामने आता ही कौन है? न वे मुसलमानों व ईसाईयों का सामना कर ही सकते हैं। आर्यसमाज तो जागता है। भिवानी के आर्यों ने आर्यसमाज के शास्त्रार्थ महारथी श्री पं० शांतिप्रकाश जी को तार देकर बुला लिया। पता लगने पर पण्डित जी के वहां पहुँचते ही वह पादरी साहिब भिवानी ही छोड़ कर चले गए। समाज के सामने ठहर तो कोई नहीं सकता। परन्तु आर्यो! आप से कहना है कि क्या इस ओर भी ध्यान है। विरोधियों से टक्कर लेने के लिए क्या आप ने कहीं ऐसा प्रबन्ध किया है। बी. ए. एम. ए. प्रोफेसर अध्यापक तो सैकड़ों तैयार हो रहे हैं पर समाज को ललकारने वालों से टक्कर लेने वाले कब तैयार करोगे—सोचो—सं०

देश की जनता

देश की वर्तमान परिस्थिति का देखते हुए पंजाबी सूबे की चर्चा करना अनुचित तथा अप्रासंगिक समझती है और भारत सरकार की नियुक्त दोनों उपसमितियां अनावश्यक, अस्वाभाविक समझती है ऐसा करने से देश की सुरक्षा को हानी उठानी पड़ेगी और विशेष कर सीमांत प्रदेश पंजाब की एकता को धक्का लगेगा।

प्राचीन व अर्वाचीन कालीन महिलाएँ— एक तुलनात्मक दृष्टिकोण

श्री शिवपूजनसिंह कुशवाहा एम० ए० साहित्यलंकार, सिद्धान्त वाचस्पति, कानपुर

वैदिक काल में महिलाओं का एक महत्वपूर्ण स्थान था। वे विदुषी, ब्रह्मचारिणी होती थीं। कई वैदिक ऋषिकाएं वेद मन्त्रों की प्रचारिकाएं भी हुई हैं जिनकी चर्चा 'बृहद्देवता' में आई है। अपाला, घोषा, लोपामुद्रा, रोमशा, प्रभृति इसी कोटि की ऋषिकाएं थीं। वेदों में महिलाओं को 'साम्राज्ञी' भी कहा गया है। वदिक-काल में महिलाओं का पुरुषों के समान समानाधिकार था। वे यज्ञोपवीत भी धारण करती थीं।

मनु जी ने यहां तक कहा है कि जहां नारियों का सत्कार होता है वहां सब देवताओं का निवास होता है।

पौराणिक काल में महिलाओं का अधिकार पुरुषों ने हड़प लिया। "स्त्री शूद्रौनाधीतयाम्" (स्त्री व शूद्रों को वेद न पढ़ावे) कल्पित सिद्धान्त को प्रचलित किया गया। आद्यस्वामी शङ्कराचार्य जी ने 'नारी को नरक द्वार' बतलाया।

महिलाओं के लिए शिशु-पालन धात्री-शिक्षा, शरीर विज्ञान तथा पाक शास्त्र में निष्णाता होना अनिवार्य था।

सम्प्रति पाश्चात्य फैशन के प्रभाव से महिलाएं इन कार्यों से सर्वथा अनभिज्ञा होती हैं। शिशु-पालन व धात्री का कार्य तो आज कल सेविकाएं करती हैं जिन को 'आया' भी कहते हैं। भोजन बनाने का काम भृत्य के अधीन होता है। भृत्यों के द्वारा बनाए भोजन में वह स्वाद नहीं आ सकता है जो माता, स्वसा व पत्नी द्वारा बनाए भोजन में स्वाद आता है। पठिता महिलाएं पाक कार्य से उदासीन हो जाती हैं।

नारियों के लिए संगीत का जानना भी आवश्यक था। अब तो 'आकाशवाणी' (रेडियो) से संगीत का काम निकाल लिया जाता है।

महाभारत काल में विराट् की पुत्री उत्तरा का गायन, वादन व नृत्य सीखने का वर्णन महाभारत विराट् पर्व ८-१०-१४ में आया है। इसका पालन अभी भी बंग प्रान्त में होता है। बंगाल प्रान्त में यह कहावत प्रचलित है "छाजा, बाजा, केश तीन बंगाला देश"......।

आज पश्चात्य देशों (फ्रांस आदि में) क्लबों में महिलाओं का नग्ननृत्य कराया जाता है। मानव का यह महान् पतन है।

महिलाएं शास्त्रार्थ कार्य में भी पीछे नहीं थीं। स्वामी शंकराचार्य व पं० मण्डन मिश्र के शास्त्रार्थ में 'भारती' का मध्यस्था होना स्पष्ट ही है।

"बृहदारण्य कोपनिषद् "अ० ३, ब्रा० १-६" से स्पष्ट ज्ञात होता है कि ऋषि याज्ञवल्क्य व ब्रह्मवादिनी गार्गी का शास्त्रार्थ राजा जनक के दरबार में ब्रह्म विद्या पर शास्त्रार्थ हुआ था। गार्गी की विद्वतापूर्ण प्रश्नावली, अलौकिक प्रतिभा व तर्क शक्ति से याज्ञवल्क्य ऋषि घबरा उठे और पराजय स्वीकार की थी।

मर्यादापुरुषोत्तम रामचन्द्र जी के यमज (Twin) पुत्र 'लव-कुश के साथ ही 'आत्रेयी' ने महर्षि वाल्मीकि से ब्रह्मविद्या का अध्ययन

(शेष पृष्ठ ५ पर)

पिछला मास आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के लिए चिन्ता का भी रहा और कार्य व्यग्रता का भी। चिन्ता का उल्लेख पहले कर दूं, कार्य व्यग्रता का ब्योरा पीछे दिया जाएगा।

चिन्ता का कारण यह रहा कि वह मास जो कि समाजों के उत्सवों की दृष्टि से विशेष महत्व का था, युद्ध-कालीन परिस्थितियों के कारण अत्यन्त अव्यवस्था का रहा। कोई भी उत्सव न हो सका, प्रचार न हो सका और सभा के कार्य को चलाने के लिए आवश्यक धन-संग्रह न हो सका। उपदेशक वर्ग और भजनीक-वर्ग अपनी व्यक्तिगत चिताओं में फसे रहे। जिनके घर सीमा के पास थे उनके लिए घर की सुरक्षा की समस्या बन गई तथा जो दूर के थे उनके लिए यातायात के साधन न होने से प्रचारार्थ जाना कठिन हो गया।

इस में सन्देह नहीं अपने-अपने स्थान पर बैठ कर भी सभा के कार्य-कर्ताओं ने सेवा-कार्य में प्रशंसनीय कार्य किया।

चिंता का एक बड़ा कारण यह है कि सभा की आर्थिक स्थिति को पुष्ट करने के लिए जिन उप-शताब्दी समारोहों का आयोजन किया गया था, प्रायः उन सबको छोड़ना पड़ा। अमृतसर का आयोजन महत्व की दृष्टि से सब से मुख्य था। अमृतसर के समाज के अधिकारी इस आयोजन को सब दृष्टियों से सफल बनाने के लिए पूरी तैयारी और योजना के साथ कार्य कर रहे थे पर घटना-चक्र पर सम्भवतः मनुष्य का वश नहीं होता।

पिछली बात को छोड़ कर आगे के लिए विचार अवश्य करना है। सभा का चार हजार मासिक के लगभग खर्च है जो आने वालों मासों में प्रयत्न करके जुटाना होगा।

सभा—सूचना

इस मास सभा की कार्य व्यग्रता का एक नया रूप सामने आया। सभा की परम्पराओं का ध्यान रखते हुए सभा-प्रधान श्री यश जी ने निश्चय किया कि तीन स्थानों पर युद्ध-पीड़ित-सेवा कैम्प खोले जाएं।

पहला कैम्प स्टेशन पर ला० इन्द्रसेन जी की निगरानी में खोला गया। उन्होंने जिस परिश्रम और कुशलता के साथ १० सितम्बर १९६५ से २८ सितम्बर १९६५ तक लगातार १९ दिन इस कैम्प का संचालन किया उसकी जितनी भी प्रशंसा की जाय थोड़ी है। इस के लिए धन संग्रह का कार्य भी उन्होंने स्वयं दौड़-धूप से किया तथा प्रबन्ध कार्य भी पूरी तरह चलाया। सभा के कोष पर इस का बोझ अधिक नहीं पड़ा।

इस कैम्प पर लगभग दस हजार रुपया खर्च आया। लगभग पांच सौ रुपया प्रतिदिन का व्यय था। जम्मू, वाघा, खेमकरण, फाजिल्का, अबोहर से उखड़-उखड़ कर आने वाले युद्ध-पीड़ित लोगों के दोनों समय भोजन चाय के साथ २ युद्ध-क्षेत्र में लड़ने के लिए जाने वाले फौज के सैनिक तथा अफसरों के लिए भी कैम्प में चाय आदि का प्रबन्ध किया गया। लगभग एक हजार व्यक्ति प्रतिदिन सेवा का लाभ उठाते रहे।

खाने-पीने के सामान के अतिरिक्त ५०० कपड़े भी युद्ध-पीड़ित लोगों में कैंप की ओर से बांटे गए।

श्री इन्द्रसेन जी का इस महान सेवा कार्य में रात-दिन जुट कर जिन लोगों ने हाथ बटाया उनमें श्री कुन्दनलाल जी भाटिया, ला० धर्मपाल जी महिन्द्र, ला० सन्तोष-कुमार जी, पं० दुर्गादास जी, पं० फकीरचन्द्र जी तथा ला० हंसराज जी खन्ना का नाम विशेष उल्लेखनीय हैं।

जिन संस्थाओं और ग्रामों के लोगों ने इस पुण्य कार्य में श्री इन्द्रसेन जी तथा आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा को सहायता दी, उनका भी धन्यवाद आवश्यक है। सरना, रंधावा मसन्द तथा शंकर इन गांवों से तथा जालन्धर के गोविन्दगढ़, शिवराज गढ़, अड्डा कपूरथला, श्रद्धानन्द स्ट्रीट, अड्डा होशियारपुर इन मुहल्लों से लगातार पका हुआ भोजन बांटने के लिए आता रहा।

आढ़त एसोसिएशन सब्जी मंडी ने २०) प्रतिदिन के हिसाब से रुई का दान किया तथा राज आइस फक्टरी के स्वामियों ने जितनी भी आवश्यकता थी बर्फ दान रूप में दी।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा विशेष कर ला० इन्द्रसेन जी तथा समान्यतया उनके सब सहयोगी व्यक्ति तथा संस्थाओं का आभार प्रदर्शन करती है जिन्होंने देश सेवा के पुण्य कार्य को ठीक-ठीक सम्पन्न किया।

आर्य प्रादेशिक सभा का दूसरा कैंप अमृतसर अड्डा बस स्टैंड के पास खोला गया था, इसके द्वारा सभी शरणार्थी विशेषकर जम्मू प्रांत के शरणार्थियों की सेवा होती रह लगातार नौ सितम्बर से प्रथम अक्टूबर तक भोजन, वस्त्र आदि से सेवा कार्य चलता रहा। इस पुण्य कार्य में श्री यश जी सभा प्रधान, और माननीया बहिन सुवर्ण यश जी ने अपने कर-कमलों से शरणार्थियों को वस्त्र बांटे।

इस सहयोग में गवर्नमैंट स्कूल माडल टाउन जालन्धर तथा गवर्नमैंट बेसिक स्कूल जालंधर का विशेष हाथ रहा। गांवों से भी पका भोजन तथा रसद आदि की सहायता मिलती रही। इतना होने पर भी प्रादेशिक सभा का सौ रुपया प्रतिदिन का ऊपर की व्यवस्था पर खर्च होता रहा।

सभा के कार्य-कर्ताओं ने इस सम्पूर्ण कार्य को बड़ी लगन व परिश्रम से निभाया। इस सहयोग के लिए सभा उन सबकी कृतज्ञ है।

—सत्यदेव मन्त्री सभा

गुरुकुल वैदिक आश्रम वेदव्यास पानपोष

इस आश्रम के तत्वावधान में कृष्ण जन्माष्टमी के उपलक्ष्य में स्वामी ब्रह्मानन्द जी ने मैजिक लालटेन द्वारा श्री कृष्ण जी के गुणों का वर्णन करते हुए आर्य-समाज के कार्यों पर प्रकाश डाला।

विश्वामित्रपुर के अन्तर्गत पिलास दफाई में स्वामी सदानन्द जी ने यज्ञ सम्पन्न कराया। जिन में ग्रामवासियों ने बढ़चढ़ कर भाग लिया।

आज कल प्रति बुधवार को उपरोक्त आश्रम में यज्ञ और उपदेश की व्यवस्था की गई है। शुद्धि का कार्य तीव्र गति से हो रहा है। लेकिन अनेक कठिनताएं होते हुए भी यह कार्य क्रम चलता जा रहा है। इस में आर्य बंधुओं का सहयोग वांछनीय है।

जिला सुन्दरगढ़ के अन्तर्गत राउर केला ग्राम में श्री अमीलाल जी के घर पर उनके सुपुत्र का नाम करण संस्कार स्वामी शिवानंद जी ने कराया। बालक का नाम अभय कुमार रखा गया। उपदेश आदि के पश्चात २२/- दक्षिणा में प्राप्त हुए। संस्कार का प्रभाव अच्छा रहा।

—स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती

पंजाब के मौजूदा ढांचे में परिवर्तन खतरनाक

और विभाजन से सीमांत राज्य की प्रतिरक्षा को आघात लगेगा

—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा की चेतावनी—

समितियों की नियुक्ति असामयिक, अनावश्यक

जालन्धर ३ अक्तूबर (स्टाफ रिपोर्टर से) आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा ने सरकार को चेतावनी दी है कि पंजाब के वर्तमान ढांचे में कोई परिवर्तन अत्यंत खतरनाक सिद्ध होगा और राज्य के और विभाजन से इस सीमांत प्रदेश की प्रतिरक्षा को गहरा आघात पहुँचेगा।

सभा ने, जिसकी अन्तरंग की बैठक आज दोपहर बाद यहां सम्पन्न हुई, पंजाबी सूबा के प्रश्न पर विचार करने के लिए भारत सरकार द्वारा मंत्रिमंडलीय उप-समिति और संसदीय सलाहकार समिति की नियुक्ति से उत्पन्न स्थिति पर विचार किया और कहा कि आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा की यह दृढ़ राय है कि इन समितियों की नियुक्ति पूर्णतया असामयिक एवं अनावश्यक है। एक प्रस्ताव में अन्तरंग सभा ने संसदीय सलाहकार समिति के अध्यक्षपद पर सरदार हुकमसिंह की नियुक्ति पर तीव्र आपत्ति की है और कहा है कि लोकसभा के अध्यक्ष को इस विवाद में घसीटना किसी भी रूप में उपयुक्त नहीं है। सलाहकार समिति ने ज्ञापन लेने की जो प्रक्रिया अपनाई है उस के दृष्टिगत यह सोचना पड़ेगा कि क्या आर्य प्रादेशिक सभा को कोई ज्ञापन देना भी चाहिए या नहीं।

अन्तरंग सभा ने इस सारे मामले पर अपना अन्तिम निर्णय १० अक्तूबर तक स्थगित रखा है। जबकि आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा और आर्य प्रतिनिधि सभा की दिल्ली में संयुक्त बैठक होगी।

विस्तृत प्रस्ताव इस प्रकार है—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा की कार्यकारिणी का मत है कि पंजाबी सूबा की मांग के सम्बन्ध में मंत्रिमंडलीय उप-समिति और संसद-सदस्यों की सलाहकार समिति अत्यन्त असामयिक और अनावश्यक है। पंजाबी सूबा पर उच्चतम स्तर पर विचार होने के बाद, अस्वीकार किये जा चुके है। यहां तक कि रिजनल फार्मूला बनाए जाने के बाद स्वयं शिरोमणि अकाली दल ने इस मांग को त्याग दिया था। आर्यसमाज इस समझौता पार्टी में नहीं था। लेकिन अकाली दल ने इसे स्वीकार किया और पंजाबी सूबा का अध्याय बन्द घोषित कर दिया गया। सरकार को पुरानी मांगों को नहीं उठाना चाहिए था, विशेषकर वर्तमान समय में जबकि देश को अभ्याक्रमण का सामना है। अभ्याक्रमणकारी को करारी मार देने के लिए सारा राष्ट्र एक व्यक्ति के रूप में कार्यरत था, जबकि अचानक इन समितियों के गठन की घोषणा कर दी गई। पंजाब को पुनः दो शिविरों में बांट दिया गया है—एक पंजाब के विभाजन का विरोध कर रहा है, दूसरा समर्थन। इस विभाजन और ध्यान बटाने का रक्षा प्रयासों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है।

पंजाब रिजनल फार्मूला को स्वीकार कर चुका है, जिसे मास्टर तारासिंह, सन्त फतेसिंह, स० हुकमसिंह और अन्य अकाली नेताओं की स्वीकृति से बनाया गया। अब वर्तमान ढांचे में फेर-बदल बहुत खतरनाक होगा। रिजनल फार्मूला में कोई भी परिवर्तन इस सीमावर्ती राज्य के विखण्डन और दुर्बलता का कारण बनेगा। भारत सरकार यह आश्वासन दे चुकी है कि वर्तमान फार्मूला में परिवर्तन सभी सम्बद्ध पक्षों की पारस्परिक स्वीकृति से ही होगा। आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा को इस बात पर खेद है कि श्री जवाहर लाल नेहरू और श्री गोविंद वल्लभ पंत के आश्वासनों को अछूते छोड़ा जा रहा है।

आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा की कार्यकारिणी को, स० हुकमसिंह को सलाहकार समिति के अध्यक्ष नियुक्त किए जाने पर गम्भीर आपत्ति है। भारत की सर्वाधिक सम्माननीय संस्था, लोकसभा के अध्यक्ष होने के नाते उन्हें इस विवाद में नहीं उलझना चाहिए। लोकसभा के अध्यक्ष को ऐसे विवादों से ऊपर रहना चाहिए। किसी लोकतन्त्र में लोकसभा सर्वाधिक पवित्र कार्यालय होती है। अगर भारत सरकार ने सद्भाव से उन्हें समिति की अध्यक्षता की पेशकश की भी थी तो उन्हें इन्कार कर देना चाहिए था क्योंकि इस प्रश्न में वह भी एक पक्ष रह चुके हैं। समिति के लिए सदस्यों के चयन ने भी, पंजाब के अधिक विभाजन का विरोध करने वालों के मन में संशय पैदा कर दिए हैं। ज्ञापन दाखिल करने के लिए जो समय दिया गया, वह अति अल्प है। अलावा, जनमत आमंत्रित करने की इस समिति ने जो कार्य विधि अपनाई है, वह भी कानून और न्याय की स्थापित क्रियाओं के विपरीत है। उपयुक्त प्रक्रिया यही थी कि पहले अकाली दल को ज्ञापन पेश करने को कहा जाता। इस ज्ञापन के प्रकाशन के अनन्तर दूसरे इच्छुक व्यक्तियों को अपना दृष्टिकोण प्रस्तुत करने के लिए पर्याप्त समय दिया जाता। इन परिस्थितियों में, यह सोचना पड़ेगा कि क्या ज्ञापन देना, उसपर हुए परिश्रम को सार्थक भी करेगा या नहीं।

प्राचीन व अर्वाचीनकालीन महिलाएं-एक तुलनात्मक...

(पृष्ठ ३ का शेष)

किया था। यह 'उत्तर रामचरित' में वर्णन है। भास्कराचार्य की पुत्री 'लीलावती' रेखागणित व बीज-गणित में विदुषी थी।

भारत के स्वतन्त्र होने पर भी जिस प्रकार पुरुष वर्ग पर पाश्चात्य फैशन का भूत सवार है उसी प्रकार आधुनिक महिलाओं पर भी है। पुरुष वर्ग पतलून, नेकटाई (नाक कटाई) हैट प्रभृति को धारण करने का गर्व करता है उसी प्रकार महिलाओं का भी परिधान अत्यन्त चुस्त व भद्दा हो गया है। भारतीय परिधान 'साड़ी' सर्वोत्तम है जिस की प्रशंसा पाश्चात्य महिलाओं ने भी की है। सिलवार, कमीज आदि तो यवनों की नकल है। बिहार, बंगाल, उड़ीसा, गुजरात, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, दक्षिणी भारत में महिलाओं का परिधान साड़ी ही है, परन्तु पंजाब की कुछ महिलाएं सिलवार आदि धारण करती हैं जो यवनों की देन हैं।

(शेष पृष्ठ ६ पर)

समय की पुकार—४

ले०—श्री सत्यदेव जी विद्यालंकार, सभा मन्त्री

पाकिस्तान के साथ होने वाले इस संघर्ष ने कुछ बातें स्पष्ट कर दी हैं। भारत को यह स्पष्ट पता लग गया है कि उसके कौन शत्रु हैं और कौन मित्र हैं तथा कौन से ऐसे देश हैं जो न शत्रु हैं और न मित्र हैं, पर जिन पर भरोसा नहीं किया जा सकता। इस के साथ ही यह भी पता लग गया कि आन्तरिक शत्रु कौन है, आन्तरिक दुबलताएं कौन-कौन-सी हैं यह ज्ञान अवश्य होना चाहिए था। इस के आधार पर ही देश आगे १०-१५ वर्ष के लिए अपनी नीति और कार्यक्रम निश्चित कर सकता है।

पाकिस्तान और चीन तो हमारे मुख्य शत्रु हैं। सम्भवतः इन से आने वाले १०-१५ वर्ष किसी सद्भाव की आशा नहीं रखी जा सकती। जब भी भारत किसी रूप में दुर्बल होगा ये आक्रमण करेंगे। दोनों की शत्रुता समझ भी आती है पाकिस्तान को काश्मीर की भूख है काश्मीर की ही नहीं, उसकी नजर उन सब इलाकों पर है जो उसकी सीमा के साथ लगते हैं। उसको प्यार से नहीं समझाया जा सकता। प्यार, सहानुभूति और मीठी बातें उसकी भूख को भड़काती हैं। उसका उपाय केवल भारत की सशक्त सेना है, भय है, बलवान और उन्नत भारत है। वह तब तक शांत रहेगा जब तक उसे यह पता रहेगा कि जब भी वह छेड़छाड़ करके भारत रक्षात्मक नहीं आक्रामक कार्यवाही करेगा।

चीन भी हमारा स्थायी शत्रु है। वह भारत की बढ़ती इसलिए नहीं सहन कर सकता क्योंकि वह एशिया का नेता होना चाहता है, एशिया के किसी और देश को बलवान और अपने बराबर नहीं देखना चाहता। सम्पूर्ण एशिया में भारत ही है जो उसके सामने सिर उठाकर खड़ा हो सकता है। चीन पाकिस्तान से भी भयंकर शत्रु है, उसकी शक्ति बहुत अधिक है, मरवाने के लिए फालतू जनता बहुत है, उस पर किसी अन्तर्राष्ट्रीय संगठन का प्रभाव नहीं और आत्मा तथा नैतिकता नामक वस्तुएं वह बहुत पहले खा पी चुका है। उसकी भूख का भी कोई अन्त नहीं। उसके प्रतिदिन बदलने वाले नक्शों में सम्भवतः, आधा भारत उसकी सीमा में है।

चीन भी केवल एक भाषा समझता है और वह भाषा शक्ति की है, पर उसे भारत की शक्ति से भय नहीं उसे भय है तो अमरीका की शक्ति से।

भारत का एक और भी बहुत बड़ा शत्रु है और वह है इंग्लैंड। पाकिस्तान बनने के बाद पिछले १८ वर्षों में इसने भारत को हानि पहुंचाने का कोई अवसर हाथ से नहीं जाने दिया और इस युद्ध में तो वह बहुत कुछ नंगा होकर सामने आया। पर यह शत्रु दूर का है, सीधी मार नहीं करता, केवल हमारे शत्रुओं को उकसाता है और उनका साथ देता है।

इस युद्ध की कसौटी पर कसे जाने के समय देश की तीन भयंकर आन्तरिक शत्रुओं का रूप भी सामने आ गया है।

सब से भयङ्कर शत्रु देश में एकता की भावना की कमी है। पाकिस्तान की एकता का आधार धर्म है, क्योंकि उसके जीवन में एक करोड़ बंगाली हिंदुओं की कोई स्थिति और महत्व नहीं। पाकिस्तान का रेडियो इस्लाम के नाम से खुली अपीलें करता है, हिंदुओं को गालियां निकालता है। भारत ऐसा नहीं कर सकता। वह धर्म-निरपेक्ष प्रजातन्त्र है। इस में ही भारत का बल है यदि अनुकूल वातावरण उत्पन्न किया जा सके। भारत में हिंदुओं का बहुमत होते हुए भी सिक्ख, मुसलमान तथा ईसाई इन का स्थान एक जैसे महत्व का है।

इस में रत्ती-भर भी संदेह नहीं कि युद्ध के संकटकाल में सब मतों और विचारधाराओं के लोगों ने एक आवाज रखी, एक विचार रखा और एक साथ मिलकर शत्रु का मुकाबला किया। युद्ध में बहती रक्तधारा में सब धर्मों और जातियों के लोगों ने बढ़ चढ़ कर स्नान का पुण्य प्राप्त किया। पर यह ऐक्य भावना स्थायी कैसे की जाय। इस पर कुछ गहरा विचार करना होगा यदि भारत प्रजातन्त्र के रूप में रहते हुए देश के भिन्न २ धर्मों और जातियों में ऐक्य स्थापित करने में समर्थ हो गया तो इस की शक्ति अपरिमित हो जायेगी। यही बात पाकिस्तान नहीं चाहता, चीन नहीं चाहता और इंग्लैंड नहीं चाहता।

(क्रमशः)

दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार

आर्यसमाज हिसार की विविध संस्थाओं की ओर से निम्नलिखित धनराशि भारत सुरक्षाकोष में प्रदान की गई।

तीन हजार रुपया दयानन्द कालिज हिसार।

पांच सौ एक रुपया सी. ए. वी. आर्य हा० स० स्कूल हिसार।

पांच सौ रुपया आर्यसमाज हिसार।

चार सौ रुपया आर्य कन्या महाविद्यालय हिसार।

तीन सौ रुपया दयानन्द ब्राह्म-महाविद्यालय हिसार।

नोट—और धन एकत्रित किया जा रहा है जो शीघ्र भेज दिया जाएगा। —मुरारी लाल शास्त्री

प्राचीन व अर्वाचीन....

(पृष्ठ ५ का शेष)

आजकल की तरह पूर्वकाल में भी स्त्री व पुरुष दोनों के लिए 'गोष्ठी' (क्लब) होते थे। कुमारी कन्याओं में इतनी योग्यता उत्पन्न की जाती थी जिससे वे इनमें सम्मिलित हो सकें। इन गोष्ठियों में साहित्य व काव्य की चर्चा हुआ करती थी। गायन, वादन, नृत्य, कविता-निर्माण तथा चित्र लेखन प्रभृति कलाएं उनका आभूषण था।

प्राचीनकाल के सदृश आज-कल 'गोष्ठी' (क्लब) नहीं हैं। अंग्रेजों के आगमन पर क्लबों का भरमार हो गया। उनमें कोई भी पुरुष किसी भी पराई नारी के साथ नृत्य करता, आलिंगन, चुम्बन करता, मद्यपान करता था। इनमें कुछ अंग्रेजों के चरण-चिन्हों पर चलने वाले भारतीय भी अपनी पत्नी व लड़कियों के साथ जाकर भ्रष्टाचार फैलाते थे। ऐसे क्लबों में जहां कामुकता का नग्न प्रदर्शन किया जाता है। वाममार्ग का विकृत रूप है, वहां बहनों का जाना महान पाप है। पर-पुरुष के साथ नृत्य करना, मद्यपान करना, आलिंगन, चुम्बन करना भारतीय संस्कृति व सभ्यता के सर्वथा ही विपरीत है।

आज कुछ बहिनें बी० ए०, एम० ए० परीक्षाओं में उत्तीर्ण होने पर अपने को अग्रगामिनी मानकर इन क्लबों में जाती व पाश्चात्य परिधानों को अपनाती हैं। यह वैदिक सभ्यता के नाम पर महान् कलंक है।

नारी वास्तव में मातृ-शक्ति है, पूजनीया है, देवी है, उसे तितिली बनना अनुचित है।

(जन-साधारण की जानकारी के लिए आवश्यक लेख)

प्रति सप्ताह क्रमशः भेंट किया जाएगा

कश्मीर को हड़पने का पाकिस्तान का ताज़ा प्रयत्न नं० २

(गतांक से आगे)

५ अगस्त, १९६५ से शुरू कर के जम्मू और कश्मीर का ४७० मील लम्बी युद्ध-विराम-रेखा के विभिन्न क्षेत्रों में हजारों की तादाद में हथियारों से पूरी तरह लैस नियमित और अनियमित पाकिस्तानी सैनिक नागरिक भेष में घुस आए। हमारी सुरक्षा-सेनाओं की निगरानी से बचने के लिए वे रात के अंधेरे में दो-दो या तीन तीन के गुट बना कर आए। उन्होंने अपनी गुप्त हरकतों के लिए पहाड़ी इलाकों और घने जंगलों का पूरा फायदा उठाया। वे घने जंगलों, कन्दराओं और गुफाओं में छिप गए। इन घुसपैठियों ने होशियारी से चुने गए कुछ क्षेत्रों में युद्ध-विराम-रेखा पार की। कुछ टुकड़ियां श्रीनगर की बाहरी बस्तियों में पहुंचने में कामयाब हो गईं और कुछ दलों ने करगिल के नज़दीक अत्यन्त जरूरी श्रीनगर-लेह सड़क को काटने की भी कोशिश की।

कच्छ की आड़ में

केवल ४ सप्ताह पूर्व ही कच्छ में युद्ध-विराम हुआ था और पाकिस्तान की सेनाएं गुजरात-राज्य के कच्छ-क्षेत्र में आक्रमण से प्राप्त इलाके को खाली करने के लिए सहमत हो गई थीं और पाकिस्तान ने ३० जून, १९६५ को इस समस्या के सन्तोषपूर्ण हल के लिए एक समझौते पर बड़ी गम्भीरता के साथ हस्ताक्षर किए थे। विभिन्न सूत्रों से प्राप्त विश्वस्त सबूतों, जिन में बन्दी घुसपैठियों से की गई पूछताछ भी शामिल है, से इस बात की पुष्टि हुई है कि कश्मीर पर हमले की योजना मई, १९६५ के तीसरे सप्ताह में पूरी कर ली गई थी।

इस से यह निष्कर्ष निकलता है कि पाकिस्तान की कच्छ वाली सैनिक हलचल का उद्देश्य एक ऐसी कपटतापूर्ण आड़ तैयार करना था जिस से कश्मीर में सुनियोजित ढंग पर घुसपैठ की जा सके। यह स्पष्ट है कि पाकिस्तान के शासक न किसी कानून का सम्मान करते हैं और न अपने वायदों पर कायम रहते हैं।

सैनिक तैयारियां

वास्तव में इस साल के शुरू से ही पाकिस्तानी सैनिकों को छापामार लड़ाई के लिए भरपूर ट्रेनिंग देने की जोरदार सैनिक तैयारी शुरू हो गई थी और मई, १९६५ में कश्मीर पर चोरी-छिपे हमला करने के लिए सारी व्यवस्था पूरी कर ली गई थी।

पाकिस्तान के कमाण्डर-इन-चीफ, जनरल मोहम्मद मूसा ने मई, १९६५ में युद्ध-विराम-रेखा के समीप के अग्रिम इलाकों में दो बार दौरा किया। ३० मई को अपने दूसरे दौरे के दौरान उनके साथ उनका योजना-स्टाफ भी था। उन्होंने बहुत से सीनियर फील्ड कमाण्डरों और उनके स्टाफ-अफसरों से मुलाकात की और इस बात पर विचार-विमर्श किया कि फील्ड में पाकिस्तानी सैनिकों की तैयारी का क्या हाल है (डान, ३१ मई) पाकिस्तानी कमाण्डर-इन-चीफ पूरी तरह आश्वस्त था कि किसी भी कठिन परिस्थिति का सामना करने के लिए हर तरह के प्रबन्ध पूरे कर लिए गए हैं।

पाकिस्तान-अधिकृत कश्मीर की तथाकथित सरकार ने (खैबर मेल, २९ मई) जम्मू और कश्मीर को आजाद करने के लिए १६ से २५ साल की आयु के विद्यार्थियों और नवयुवकों को अनिवार्य सैनिक शिक्षा देने का आदेश दिया।

२९ मई को ऐबटाबाद में एक सभा हुई जिस में युद्ध-विराम-रेखा के पार तोड़-फोड़ की कारवाइयां करने के लिए १० आदमियों की एक कार्यकारी समिति की स्थापना की गई। जून में पाकिस्तान सरकार ने एक आर्डिनेन्स जारी किया जिसके अधीन सभी दुकानों और फैक्टरियों के मालिकों के लिए यह अनिवार्य कर दिया गया कि वे आवश्यकता पड़ने पर सैनिक रजिस्टों को तत्काल छुट्टी दे देंगे और उनकी वापसी पर उन्हें फिर से नौकरी पर लेंगे या उन्हें तरक्की देंगे। इसके साथ एक और आर्डिनेन्स जारी किया गया जिसके अन्तर्गत वायु-सेना के रिजर्विस्टों को वापस बुलाने की व्यवस्था की गई।

८ जून, १९६५ को एक आर्डिनेन्स के मातहत पाकिस्तानी सेना के एक आवश्यक अंग के रूप में एक मुजाहिद सेना कायम की गई। २१ जून को नेशनल असेम्बली ने इस आर्डिनेन्स को मंजूरी दे दी और इसकी संख्या १॥ लाख निश्चित की गई। पाकिस्तानी रक्षा-मन्त्रालय के पार्लियामेण्टरी सेक्रेटरी श्री कासिम मलिक ने यह आर्डिनेन्स पेश करते हुए इस नई सेना के सैनिक चरित्र पर जोर दिया।

पाकिस्तानी अपराध के प्रमाण

पाकिस्तान ने इस बात से इन्कार करने का प्रयत्न किया है कि हमलावरों की लूट-खसोट के पीछे उसका हाथ है। पाकिस्तान के विदेश मन्त्री, श्री जेड० ए० भुट्टो ने १० अगस्त को रावलपिंडी में कहा कि कश्मीर में जो कुछ हो रहा है उसकी जिम्मेदारी किसी भी तरह से पाकिस्तान पर नहीं थोपी जा सकती।

पर तथ्य श्री भुट्टो के बयानों के विरुद्ध पड़ते हैं। इसके बहुत अधिक प्रमाण हैं कि अप्रत्यक्ष तौर पर किया गया भारत पर सैनिक हमला सीधे पाकिस्तान द्वारा ही संगठित किया गया था और इसको पाकिस्तान के सर्वोच्च लोगों का समर्थन और आशीर्वाद प्राप्त था। अन्य बातों के अलावा पाकिस्तानी हमलावरों से जिस शक्ल और टाइप के हथियार बरामद हुए हैं और उन पर जो निशान हैं, उन से तथा पकड़े गए पाकिस्तानी अफसरों और अन्य लोगों के बयानों से इस का प्रमाण मिलता है। जैसे-जैसे ज्यादा से ज्यादा हथियार बरामद होते जा रहे हैं और घुसपैठी पकड़े जा रहे हैं, वैसे-वैसे प्रमाणों की संख्या बढ़ती जा रही है। इस समूचे प्रमाण से यह तथ्य विवादहीन रूप से स्पष्ट हो जाता है कि घुसपैठियों की सरगर्मियों के पीछे पाकिस्तानियों का पूरा हाथ था। उन्होंने ही अपनी हथियारबन्द फौजों को घुसपैठियों के रूप में टुकड़ियों में बांटा था। पाकिस्तान ने ही मरी में उन्हें छापामार हमले की ट्रेनिंग दी, उन्हें टुकड़ियों में सुसंगठित किया और उन्हें कपड़े और सैनिक साज-सामान देकर जानमाल की बरबादी करने के इरादे से कश्मीर में भेजा। (क्रमशः)

जनता तन, मन तथा धन से देश रक्षा में पूर्ण सहयोग दे

डी.ए.वी. कालिज प्रबन्धक सभा देहली अन्तर्गत

आर्य विद्यासभा की आवश्यक सूचना

आर्य विद्या सभा के एजुकेशनल एडवाईजर श्री ला० देवराज जी महाजन सूचित करते हैं कि आर्यन टूर्नामैंट और ६-१० अक्टूबर को होनेवाली कांफ्रैंस (जो कि चंडीगढ़ मे होनी निश्चित हुई थी) देश की वर्तमान परिस्थिति के कारण स्थगित कर दी गई हैं। अतः कोई प्रधानाध्यापक व प्रबन्धक टूर्नामैंटस व कांफ्रैंस में पधारने का कष्ट न उठाएं।

—व्यवस्थापक

दयानन्द कालिज शोलापुर

शोलापुर की सब दयानन्द संस्थाओं के स्टाफ ने राष्ट्र रक्षा कोष में अपना एक दिन का वेतन दिया है और विद्यार्थियों ने भी तन मन धन से राष्ट्र रक्षा के लिये अपने कर्तव्य का पालन किया।

जगन्नाथ डुडेजा
प्रिंसिपल व लोकल सैक्रेटरी

साईंदास गर्लज़ हाईस्कूल विक्रमपुरा जालन्धर

साईंदास स्कूल की छात्राएं एवं अध्यापिकाएं श्री भीमसेन जी मेहरा की धर्मपत्नी श्रीमती ... ममता की ... पुत्री महात्मा हंसराज जी की दोहत्री होने के नाते आरम्भ से ही धार्मिक एवं देशभक्ति के विचारों से ओत-प्रोत थीं। जिस प्रकार उन्होंने हसते-हसते मृत्यु का आलिंगन किया उस से स्पष्ट है कि वे अदम्य साहस से ओतप्रोत थीं।

हम भगवान से प्रार्थना करती हैं कि देवंगत आत्मा को शांति प्रदान करें एवं उनके परिवार को इस वेदना को सहन करने का सामर्थ्य प्रदान करे।

एस. कौशल
प्रिंसिपल स्कूल

धर्मवीर ग्रन्थमाला राष्ट्ररक्षा निधि कोष

मे निम्न प्रकाशनों की आय देने का दृढ निश्चय

श्री धर्मवीर जी विनम्र साग्रह सानुरोध निवेदन करते हैं कि धर्मवीर ग्रन्थ माला के साहित्य सुमनों को भारी सख्या में मगा कर घर-घर में प्रचार करके राष्ट्र-रक्षा कोष में सहायक बनें।

पुस्तकें, जिनकी आय राष्ट्र-रक्षा में भेजी जाएगी—

विश्व शांति और वैदिक धर्म	१।)
वेद और जीवन	।।)
वेद सदेश	।।)
यज्ञ और जीवन	।)

प्राप्ति स्थान—
धर्मवीरजी आर्यभण्डाधारी धर्मवीर ग्रन्थमाला प्रकाशन विभाग सराय रुहेला नई देहली—५

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

५ अगस्त १९६५ नही,
१५ अगस्त १९४७

महोदय,

आपके सम्मानित पत्र द्वारा मैं देश के नेताओं से कहना चाहता हूं कि वे सुरक्षा परिषद् को बता दें कि भारत ५ अगस्त १९६५ की नहीं, १५ अगस्त १९४७ की सीमा रेखा तक ही लौटेगा।

पाकिस्तानी अधिकृत भाग हमारी सेनाएं तभी खाली करें जब पाक पूरा काश्मीर लद्दाख सहित खाली करें। आज देश के प्रत्येक नागरिक की यही आवाज है और इस आवाज का सम्मान हमारी सरकार को राष्ट्र गौरव रक्षा के लिए करना ही चाहिए।

भारतेन्द्रनाथ साहित्यालंकार

२५) रुपए में

१० रशिया की टिकटें भेंट
लगातार ३ वर्ष सोवियत संघ
हिन्दी या इंगलिश मा. सोवियत-
नारी हिन्दी या इंगलिश मा.
मास्को न्यूज़ इंगलिश साप्ताहिक

जयदेव ब्रदर्स, बड़ोदा १
से मिलेंगे

आर्य समाज यूसफ सराय (ग्रीन पार्क), नई दिल्ली

का वार्षिक निर्वाचन

प्रधान—श्री देवराज जी कोछड़, उपप्रधान—चौधरी रघुबीरसिंह आर्य, डाक्टर पी. एल. वर्मन, मंत्री—श्री शालिग्राम गौतम, सहायक मंत्री—श्री हरिश्चन्द्र थापर, कोषाध्यक्ष—श्री सदानन्द चानना, सहायक कोषाध्यक्ष—श्री प्यारेलाल जी, पुस्तकाध्यक्ष—श्री बलदेव कृष्ण जी, महिला प्रतिनिधि—श्रीमति सत्यवती

अतरंग सदस्य—श्री शकरलाल जी पाली—प्रिंसिपल, श्री विष्णु सहाय जी पूर्व प्रिंसिपल, श्री रामरत्न जी महता, श्री छोटेलाल जी।

प्रतिष्ठित-सदस्य—श्री सोमनाथ जी रावल प्रिंसीपल।

लेखा निरीक्षक—श्री शंकरलाल जी पाली—प्रिंसीपल।

शालिग्राम गौतम
मन्त्री—समाज

निःसन्तान परिवार ध्यान से पढ़ें

यदि आप विवाह के बाद अब तक निःसन्तान हैं तो इस रोग के सफल चिकित्सक श्री पं० श्यामसुन्दर जी स्नातक (महोपदेशक पंजाब प्रतिनिधि सभा) से मिलें या पत्र व्यवहार करें। श्री स्नातक जी भारत के अनेक परिवारों की सफलतापूर्वक चिकित्सा कर चुके हैं।

पूर्ण कोर्स ३ मास व्यय २००/-

पता—श्यामसुन्दर स्नातक महोपदेशक पजाब सभा
३०३ रानीबाग शकूरबस्ती देहली

म० हंसराज साहित्य विभाग

आपकी प्रतीक्षा मे है

शीघ्रता कीजिए

आर्यसमाज की सदस्यता के प्रवेश पत्र—२%
आर्यसमाज का आय-व्यय रजिस्टर कीमत—१.५०
आर्यसमाज का मासिक चन्दा का रजिस्टर—१.००
आर्यसमाज के नियम उपनियम—·२१ पैसे
जीवन व्यापार प्रिन्सीपल दीवान० जी कृत—·७५ पैसे
म० हंसराज जी की जीवनी (प्रिंसीपल दीवान चन्द्र जी कृत) १.०
सीता, ·३७, पार्वती, ·२५, पद्मिनी ·३१, यह सैट महात्मा आनन्द स्वामी जी ने स्त्री जाति की प्राचीन सभ्यता को दर्शाने के हेतु कथा रूप में लिखा है। दहेज में देने योग्य है।
नवीन प्राचीन समाजवाद (नारायणस्वामीजी लिखित) १.२५ (सजिल्द)
सत्यार्थ प्रकाश (हिन्दी) २.२५, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका २.५०
संस्कार विधि १.२५

प्राप्ति स्थान—
म० हंसराज साहित्य विभाग A. P. P. सभा
निकट कचहरी, जालन्धर

मुद्रक व प्रकाशक श्री सन्तोषराज जी आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर द्वारा वीर मिलाप प्रैस, मिलाप रोड जालन्धर से मुद्रित तथा कार्यालय आर्यजगत महात्मा हंसराज भवन निकट कचहरी जालन्धर शहर से प्रकाशित मालिक—आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर।



टेलीफोन नं० ३०५७ [आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधिसभा पंजाब जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd. No. P. 121

एक प्रति का मूल्य १३ नये पैसे गुरुकुल कांगड़ी वार्षिक मूल्य ६ रुपये

वर्ष २५ अंक ४५) १५ कार्तिक २०२२ रविवार—दयानन्दाब्द १४१— ३१ अक्तूबर १९६५ (तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

वेद सूक्तय:

अग्नि वृत्राणि जंघनत्

अग्नि :—अग्निरूप नायक और राष्ट्र का सेनापति वृत्राणि—राक्षसों को, लुटेरों तथा अत्याचारियों को जंघनत्—मार देता है। उनका नाश कर देवे। यह अग्नि अपनी ज्वाला व ताप से जैसे अंधेरे को तथा रोग के कीटों को मार देता है वैसे अग्निरूपी नेता भी अपनी शक्ति से आग बन कर राक्षसों का भस्म करे।

अमैरमित्र मर्दय

हे राष्ट्र के वीर नायक अग्निरूप! आप अमै :—अपनी सेना तथा शस्त्रादि बलों से, शक्तियों से अमित्रम्—शत्रु को, राक्षस तथा राष्ट्रघातियों को मर्दय—पीड़ित कर दो। उनको समाप्त कर डालो। ऐसा घोर दण्ड दो कि वे समाप्त हो जायं। तपा डालो।

तपिष्ठैरजरो दह

हे अग्नि के समान राष्ट्र के वीर नेता! आप का बल पराक्रम अजर:—कभी कम होने वाला नहीं है। यह शक्ति कभी बूढ़ी नहीं होती। इसलिए अपने तपिष्ठै :—शत्रुओं, राक्षसों तथा अत्याचारियों को तपाने वाले तेज शस्त्रों से उन सब शत्रुओं को दह—जला डाल, भस्म कर दे। तिनकों के समान उन को आग बन कर राख बना कर रख दे।

सा म वे द से

वे दा मृ त

शत्रु को कुचल दो

यो नः स्वोऽरणोयश्चनिष्ट्यो जिघांसति। देवास्तं सर्वे धूर्वन्तु ब्रह्मवर्म ममान्तरं शर्म वर्म ममान्तरम् ॥ साम० अ० २१ सू० ८ मंत्र ३

अर्थ—सारे सुन लेवें कि (य:) जो भी (नः) हमें (स्व:) अपना होकर भी (अरण:) विरोधी या वैरी है तथा जो भी (निष्ट्य:) दूर रह कर (जिघांसति) मारता है, आक्रमणकारी बन कर मारना चाहता है। (देवा:) हमारे सारे (देवा:) दिव्य गुण वाले वीर पुरुष (तम्) उस राक्षस के समान अपने व पराये को (सर्वे) सारे ही (धूर्वन्तु) समाप्त कर देवें, उसका नाश कर डालें। (ब्रह्म) परमेश्वर व ज्ञान (वर्म) कवच है (मम) मेरा तथा (शर्म) भलाई का भाव मेरा कवच है।

भाव:—शत्रु बन कर जो भी आता है। राष्ट्र की हानि करता है—चाहे वह अपना हो, अपने ही देश का वासी हो तब भी वह देशद्रोही है, राष्ट्रघाती है, शत्रु है। या और कोई हो, पराया हो, दूर से आक्रमण करने आया हो—जो भी हमें किसी प्रकार की भी हानि पहुँचाता है। वेद का ऐसे शत्रुओं से कड़ा व्यवहार करने का आदेश है कि देश के सारे देवता मिल कर, राष्ट्र के सारे रक्षक मिल कर उसकी सत्ता समाप्त कर डालें। उसे मार देवें हमारे पास प्रभु को प्रदान की शक्ति का कवच है, सब का भला करने कवच है। जो कोई भी शान्ति को भंग करके किसी प्रकार की गड़बड़ मचाना चाहता है उसे सारा राष्ट्र मिल कर कुचल डाले। बीमारी के समान शत्रु भी राष्ट्र के जीवन को बीमार कर देता है। रोग के कीटाणुओं के समान राष्ट्र के इन शत्रुओं का भी नाश कर दो।—सं०

ऋषि दर्शन

वयं परमेश्वरस्यैव प्रजा:

हम सारे ही उस परमेश्वर की प्रजा हैं। जिस प्रकार सन्तान माता और पिता के प्यारे होते हैं, उसी प्रकार सारे छोटे बड़े आपस में एक ही विशाल परिवार के अंग हैं तथा परमेश्वर हमारा पिता और माता है। उसी की ही प्रजा हैं।

ईश्वरोपासका मेधाविन:

जो परमेश्वर के उपासक हैं, प्रभु के भक्त हैं, जीवन में परमात्मा पर आस्था रख कर प्रात: सायं उसके समीप बैठते हैं, वे प्रभु प्रेमी मेधावी हैं, ज्ञानी हैं। ऐसे प्रभु के प्यारों को शुद्ध ज्ञान की ज्योति प्राप्त होती है। प्रभु भक्ति से मेधा व ज्ञान मिलता है।

स एकोऽद्वितीय:

वह परमेश्वर एक है तथा अद्वितीय है विश्व का निर्माता, धारक वही परमात्मा है। ईश्वर एक है। जो नाना प्रकार के ईश्वर मानते, देवी देवताओं को परमेश्वर मान कर उन को पूजते हैं वह भूल में है। प्रभु एक और अनुपम है।

भाष्य भू मि का से

अधिष्ठाता—श्री संतोषराज जी सम्पादक—त्रिलोक चन्द शा

उद्बोधन

तुम हो भारत के—भाग्य सितारे

लेखक—वेदपथिक श्री पं० धर्मवीर जी आर्य भंडारी

प्रिय देश भारत के आशाओं के लाड़िये, सपूतों, बालको और बालिकाओ! यह ध्यान रखो—तुम भारत के गौरव-गरिमा के उज्ज्वल रत्न हो। तुम भारत माता की आशाओं को पूर्ण करने वाले जगमगाते हीरा, मोती, जवाहर रत्न-मणियों के रत्न हो। तुम भारत के भाग्य-विधाता बन कर विश्व - विधाता विश्व - गगन में राष्ट्र पताका फहराओ?

तुम विश्व-विजय पथ पर राष्ट्र-माता को धारण करके युद्ध समर में आगे बढ़ो। तुम्हें भारत के भाग्य का निर्माण करना है। तुम्हें विश्व के घर-घर में भारतीय वैदिक सभ्यता का प्रबल प्रचार करना है। तुम्हें देश का सैनिक और सेनापति बनना है। तुम्हें राष्ट्रपति और राष्ट्र पुरुष लोह पुरुष बनना है। तुम्हें वीर अभिमन्यु, ध्रुव और प्रह्लाद सम बनना है। तुम्हें भीम अर्जुन के समान बनना है। तुम्हें विश्व में राम राज्य स्थापित करना है। तुम्हें देश भक्त और धर्मवीर व कर्मवीर राष्ट्रनायक बनकर विश्व के मानव समाज को पथ-प्रदर्शक बनना होगा। भारत भाग्य का निर्माण करने के लिए आज हमें बलिदानों की बलिवेदी पर अपने तन, मन, धन सर्वस्व का भेंट चढ़ाना होगा। ए भारत के नौ निहाल सपूतो उठो, उठो, उठो तुम्हें आज चीन और पाकिस्तान ने ललकारा है। यह प्रतिज्ञा करो कि हम शत्रु दलों का सहार करके भारत माता का मुख उज्वल करेंगे।

प्रिय बालको! तुम्हें मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम और कृष्ण बन कर नवयुग का निर्माण करना होगा। प्रिय बालको तुम गौतम कपिल, कणाद वशिष्ठ जैसे महर्षियों की सन्तान हो। तुम अग्नि, वायु, आदित्य, अंगिरा जैसे आदि काल के महर्षियों की आशाओं के ध्रुव तारा हो। ऐ महर्षि सन्तानो! तुम्हें युग पुरुष बनने का आज अनुपम आह्वान है। यह उषाकाल की मधुर मुस्कान दिव्य संदेश है। कि तुम अरि दलों पर बादल बन कर बिजली सम टूट पड़ो। तुम महाराणा प्रताप और शिवाजी के समान बन कर शत्रु दलों को मार भगाओ और अपना वैदिक राज्य स्थापित करो। जीवन लक्ष्य हिमालय से भी ऊंचा बना लो। अब नत तल पर भूतल के और द्यौ में, दशों दिशाओं में युद्ध का अमर संगीत का शंखनाद गुंजा दो। रिपुदल का दमन करके तब तुम सुख शान्ति का श्वास ले सकते हो। ए भारत माता की आशाओं को पूर्ण करने वालो देश के विद्यार्थियो! तुम अपनी सेना बन कर युद्ध-विद्या की अद्वितीय कला के कौशल को आज इस रणचण्डी के रण में दिखला दो। ऐ भारत के नौनिहालो! तुम अपने नसों में नया खून पैदा करके महाराणा सांगा के समान अंतिम दम तक लड़ो। ऐ देशकी वीर ललनाओं! तुम बनो रणचण्डी दुश्मनों के रक्त से अपनी प्यास बुझाओ (जैसा झांसी वाली वाली ने किया)।

भारत माता की पुकार

आज हिमालय की चोटी से भारत माता की पुकार आ रही है। भारत माता आशाभरी अपनी दिव्य दृष्टि से हमारी ओर निहार रही है। भारत माता यह कह रही है कि भारतीय गौरव की रक्षा के लिये भारत की आन, बान, स्वाभिमान के लिए असंख्यों कोटि - कोटि वीरों? और वीरांगनाओं! की सेनाएं बढ़ो, युद्ध स्थल में दुष्टों का दमन कर के विश्व विजय कर दिखलाओ। भारत-माता जिन क्षणों में देश के शहीदों को पुष्पमालाओं तथा विश्व की रत्न मणियों से स्वागत कर रही थी और उनकी ख्याति आत्माओं को मौन आशीर्वाद दे रही थी उन्हीं क्षणो में परमात्मा का आशीर्वाद भी अमृत की बूंदों में बरस रहा था! महर्षियों, योगियों और युग पुरुषों की स्वर्गीय आत्माएं आशीर्वाद के अनुपम अलौकिक सुमनों को बरसा रही थीं। भारत माता पुकार-पुकार कर मौन सन्देश यह दे रही थीं कि अब भारत की भूमि से ही, नहीं अपितु विश्व की धरती पाप अनाचार को मिटाकर शत्रु दलों में धूम मचाकर शत्रुओं का सर्वनाश करके विश्व में राम राज्य स्थापित करो। भारत माता के इन उपदेशों को सुनने के लिए तथा दिव्य दृश्य देखने के लिए आज के स्वर्ण प्रभात में समाधि अवस्था में समाहित होकर, लेखक भी हिमालय की चोटी पर पहुंच कर शिखरणीय भव्य भावनाओं को लेकर, इन शब्दों को अंकित करने में तल्लीन था।

भारत माता सभी देश के नर-नारियों को सम्बोधित करके यह कह रही थी कि युद्ध में विजय प्राप्त करना जीवन का महा-मंत्र अविचल ध्रुव लक्ष्य बनाओ। भारत माता के उपदेशों के तदन्तर वेद ध्वनि होने लगी और आकाश गूंजने लगा कि—

'तमसो मा ज्योतिर्गमय' के अनादि नाद से यह दृश्य-अभूत पूर्व अनुपम अकथनीय था। असंख्यों नर-नारी युद्ध में विजय हर्ष से अपार हर्षित होकर बोल रहे थे! कि भारत माता की जय! विश्व गगन के नभ के तारे, सारे झूम-झूमकर विश्व विजय के अनुपम परम मनोहर गीत गा रहे थे। भारत भारत माता का अंतिम सन्देश यह था, कि युद्ध

(शेष पृष्ठ ८ पर)

सम्पादकीय—

आर्य जगत

वर्ष २५] रविवार २०२२, ३१ अक्तूबर १९६५ [अंक ४५

विभाजन के बुरे परिणाम

भारत के विभाजन के भयंकर परिणाम आज प्रत्येक के सामने हैं। जब से राष्ट्र का बटवारा किया गया तब से आज तक जो कुछ भी हुआ तथा हो रहा है. उसे कौन भुला सकता है ? राष्ट्र के नेताओं ने जो कुछ सोचा था वह सर्वथा भ्रम निकला। विदेशी सत्ता अंगरेज शासक भारत से जाते-जाते वह काम कर गये जो दिन-रात हमारे लिए सिरदर्द सिद्ध हो रहा है। इस पाकिस्तान के आक्रमण ने तो उनकी नंगी चालों को प्रकट कर दिया है। यदि हमारे अधिकारी इस विषम अवस्था में सूझबूझ न दिखाते तथा भारतीय वीर सेना कमाल न करती सारा देश एकता के सूत्र में न पिरोया जाता, ता पता नहीं परिणाम क्या होता। प्रभु की कृपा से परिचय मिल गया है। किन्तु अभी तक आकाश पर काली घटाएं हैं। कौन कह सकता है कि किस समय बरस पड़ें। बड़ी सावधानता की आवश्यकता है। यह सारा कुछ राष्ट्र के विभाजन का ही जहर है जो हमें पीना पड़ रहा है। पंजाब ने तो इसके महान् कष्ट सहे व सहन कर रहा है। भारी बलिदान दिया और अभी तक विपत्तियों की चक्की में पिसता जा रहा है। पंजाब बट गया उससे पैदा होने वाले दुःख भी उठाने पड़ रहे हैं।

किन्तु वह तो अतीत का पन्ना हो गया। इस समय इस बटे हुए अभागे पंजाब ने शत्रु के बमवर्षकों की मार सही। अपने वीर नौजवानों की आहुति दी। सीमा के नगरों, ग्रामों ने कष्ट उठाए। पर खेद है कि इस भीषण अवस्था में पंजाब को पंजाबी सूबा के रूप में बांटने के लिए धमकियां दी जा रही हैं। संत जी जल मरने की बातें कर रहे हैं। सिख सूबा बना देने के लिए बहुत कुछ किया जा रहा है। क्या यह देश प्रेम है ? मातृभूमि से विद्रोह नहीं है ? विभाजन का परिणाम हम देख चुके हैं। इस छोटे से प्रान्त को बांटन को कहा जा रहा है। वैसे तो एक बात का सन्तोष है कि अकालियों के इस आन्दोलन का सामना करने के लिए सारा पंजाब डटकर खड़ा हो गया है, प्रान्त की दोनों सभाओं आर्य प्रादेशिक सभा व आर्य प्रतिनिधि सभा मिलकर जनता का नेतृत्व कर रही है। प्रादेशिक सभाके प्रधान श्री यश जी पूर्व शिक्षामन्त्री पञ्जाब व आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान प्रो० रामसिंह जी दोनों ही बटवारे का विरोध कर रहे हैं। इसी प्रकार प्रांतीय सरकार, जनसंघ, हिन्दू सभा, सनातनधर्म सभा आदि सारी सभाएं मिल कर डटकर मैदान में आ गई हैं। भारत सरकार ने यदि यहां किसी प्रकार की कमज़ोरी दिखाई तो पता नहीं भारत में कितनी संस्थाएं और प्रान्त बनाने की मांग करने लगेंगी। हरियाणा के भाईयों पर पंजाबी गुरुमुखी लादी गई। उनका गिला उचित है। यदि आरम्भ में उन के उचित गिलों शिकायतों को सुना जाता तो वे भी इस प्रकार से दुःखी न होते। प्रसन्नता है कि इस बात में सारी सभाएं, श्री ला० जगत नारायण जी, श्री यश जी, श्री वीरेन्द्र जी, श्री यज्ञदत्त जी शर्मा, श्री. ला० इन्द्रसेन जी, श्री स्वामी गणेशानन्द जी, श्री प्रो० रामसिंह जी, श्री पं० भगवद्दयाल जी, श्री दरबारासिंह जी, मुख्यमन्त्री श्री रामकृष्ण जी, ज्ञानी पिंडीदास जी, कैप्टन केशव चन्द जी आदि नेता एक ही पवित्र वेदी पर इकट्ठे हो गये हैं। हाईकमान को पता लग जाना चाहिए कि मुट्ठी-भर अकालियों के कहने पर पंजाब का विचार करना भी उचित नहीं। इस के परिणाम हम देख रहे हैं। कड़े हाथों से इस विभाजन की मांग को कुचल देना चाहिए। इसी में देशका हित है। यही उचित है।

—त्रिलोक चन्द्र

आर्यसमाज मण्डी हिमाचल

****

हिमाचल प्रदेश में हमारी आर्य प्रादेशिक सभा पंजाब से सम्बन्धित कई प्रगतिशील आर्य समाजें अपने २ स्थानों पर बड़ा सुन्दर काम कर रही हैं। उनमें आर्य समाज मण्डी का स्थान व काम भी बड़े महत्व का है। यहां पर मण्डी के परिवारों के भाईयों व बहिनों में धर्म के प्रति बड़ी श्रद्धा काम करती है। मण्डी स्वयं एक धार्मिक नगरी है। आर्यसमाज के लिए रुचि है। आर्यजगत के सन्त पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज का मण्डी की जनता के लिए बड़ा स्नेह है तथा सारी मण्डी का महात्मा जी के लिए बड़ा ही पूज्य भाव है। आपके उपदेशामृत पान के लिए जनता सदा लालायित रहती है। सभा के प्रधान श्री यश जी भी इधर कुल्लू आदि की ओर जाते आते हुए मण्डी के आर्य भाई बहिनों से अवश्य मिल कर जाते हैं। यहां पर प्रतिवर्ष शानदार उत्सव होता है। प्रचार भी चलता रहता है। यहां समाज की अपनी पुरानी प्राइमरी पाठशाला भी है। कुछ समय से यहां के सज्जनों के दिल मे एक विचार काम करता था कि आर्यसमाज मन्दिर पुराना हो गया है, पुराने ढंग का है तथा छोटा है। अब इस की आवश्यकता के अनुसार बड़ा तथा सुन्दर बनाया जाये। इसीलिए अब पुराने समाज मन्दिर के स्थान पर नया सुन्दर और बड़ा समाज मन्दिर बनाया जा रहा है। आज के युग में निर्माण कार्य कितना कठिन है। भवन बनाने का सामान भी मिलना आसान नहीं। फिर भी समाज के भाई-बहिनें इसे अपना धर्मस्थान समझ कर बनाने में जुटे हुए हैं। मुझे इन श्रद्धालु भाइयों का उत्साह, साहस, धर्म प्रेम देख देख कर प्रसन्नता होती है। मण्डी केन्द्रीय स्थान है। समाज मन्दिर भी इस नगरी के अनुरूप ही बनना चाहिए। समाज के प्रेमियों में के० इन्द्रसेन जी प्रधान, मन्त्री श्री चेतराम जी बहल, उपप्रधान श्री इन्द्रसिंह जी, श्री पं० महेन्द्र लाल जी एडवोकेट, स्वामी कृष्णानन्द जी, ला० मायाधर जी ठेकेदार, ला० दीनानाथ जी एडवोकेट, श्री रामप्रकाश जी, श्री [illegible] केवलराम जी, श्री ताराचन्द जी श्री हेमप्रभु जी, श्री भक्त ईश्वरदास जी, श्री हरीश जी और भी कई सज्जन तथा बहिनें श्रद्धा से कार्य में लगे हैं। मैं चाहता हूँ कि मण्डी के इस समाज मन्दिर के लिए अन्य स्थानों की समाजें तथा सज्जन व परिवार भी सहायता दे कर हिमाचल प्रदेश के इस केन्द्रीय मण्डी नगर के आर्य समाज को भी भव्य मन्दिर बनाने में हर प्रकार का पूरा २ सहयोग देंगे। इस महान् यज्ञ में इस स्थान पर जो उनको भी आहुति जरूर ही डालें।

(शेष पृष्ठ ४ पर)

पंजाबी सूबा की अनुचित मांग ने तूफान पैदा कर दिया

घृणा और द्वेष की यह आग विजय के हर्ष को जला डालेगी, शास्त्री और नन्दा सरकार ध्यान दें

पंजाब का भारी बहुत विभाजन के सर्वथा विरुद्ध है

(श्री आशुराम जी आर्य प्रचारक, चण्डीगढ)

बहुत दुःख की बात है कि शत्रु की तोपों की दनदनाहट के मध्य जबकि सारा देश एक स्वर, एक हृदय और एक भावना से ओत-प्रोत कन्धे से कन्धा और कदम से कदम मिला कर वैरी की ओर सरपट बढ़ा चला जा रहा था, पंजाबी सूबे की अनुचित मांग पर विचार करने को भारत सरकार की अतीव शीघ्रता की गलती ने इस सब एकता, प्रेम और संगठन के अनुपम मीठे और जोशीले वातावरण पर पानी फेर कर रख दिया।

पंजाब के मुख्यमन्त्री कामरेड रामकृष्ण ने जिस एकता के पवित्र भाव से इसे स्थगित कर देने की जो उचित सम्मति केन्द्र को दी है। देश के टुकड़े चाहने वालों को यह अच्छा नहीं लगा। उल्टे उन पर नासमझी, संकीर्णता और सांप्रदायिकता का दोषारोपण करते हुए सन्त फतेहसिंह और इनके साथी देश विरोधी मन्तव्यों को कार्यान्वित करने के लिए नंगे हो गये हैं। कोई इन से पूछे कि देश को टुकड़े २ कर देने का आंदोलन नासमझी संकीर्णता और सांप्रदायिकता का विष है या प्रांत को संगठित, महान और एक बनाए रखने की श्रेष्ठ सम्मति।

जब एक ही प्रांत में सैंकड़ों वर्षों से हिन्दु और सिख एक ही माता-पिता के पुत्रों की भांति खान-पान दुःख, सुख, नाते-सम्बन्धों में निरन्तर इकट्ठे रहते हुए उन्नति करते और सुखी पारिवारिक जीवन व्यतीत करते हुए आ रहे हैं तो फिर आज इसे काट कर लंगड़ा करने की आवश्यकता क्यों हो गई? खेद है कि जिस देश के टुकड़े करने का दुष्परिणाम अभी टैंकों से युद्ध का नरसंहार का लहू बहता देख चुके हैं फिर वही फूट और द्वेष की स्थिति पंजाब में पैदा करके इस सीमा प्रांत को दुर्बल करने का षड्यन्त्र दुर्भाग्यवश देश के सामने भयावह वातावरण के साथ सन्मुख आ गया।

हमें कभी भी विस्मरण नहीं होना चाहिए कि १९४७ का बटवारा राष्ट्रपिता महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू आदि महामान्य नेताओं ने जहां दुःखी और विवश होकर देश पर ठोसा था वहां जनता ने इनकी निरन्तर साठ वर्षों के स्वतन्त्रता के युद्ध के अनेक प्रयास और महा बलिदानों के ऋण से कृतज्ञ हुए पर्वत के समान बटवारे की महान भूल को सहन कर लिया था, किन्तु आज तो १९६५ है। देश के किसी भी भाग को टुकड़े करने का षड्यन्त्र कदापि सहन नहीं किया जाएगा और न करना चाहिये। विशेषकर ऐसी स्थिति में जबकि प्रान्त का भारी बहुमत इस के सर्वथा विरुद्ध है चाहे प्रलय जैसा विनाश भी क्यों न सामने आए पंजाबी सूबा न बना है न बनेगा।

★ आचारः परमो धर्मः (सदाचार परम धर्म है)।

★ दया मनुष्य का दैवी भूषण है।

पंजाब की एकता के लिए आर्य समाज प्रत्येक प्रकार के बलिदान को तैयार

चण्डीगढ़ में आर्यों का प्रस्ताव

श्री कृष्णलाल जी मंत्री, आर्य समाज सैक्टर ८ चण्डीगढ़

दिनांक ३-१०-६५ को प्रिंसीपल त्रिलोकीनाथजी की अध्यक्षतामें हुई आर्य समाज सैक्टर ८ चण्डीगढ़ की यह सार्वजनिक सभा अकालियों की साम्प्रदायिक पंजाबी सूबे की मांग पर भारत सरकार की ओर से इतनी शीघ्र विचार किये जाने के प्रस्ताव पर गहरी चिंता अनुभव करती हुई पंजाब के विभाजन की इस अनुचित मांग का प्रबल विरोध करती है।

यह सभा सरकार पर यह प्रगट कर देना चाहती है कि पंजाब के ७० प्रतिशत हिन्दुओं की इच्छा के विरुद्ध उन्हें विश्वास में लिए बिना यदि कोई एक पक्षीय निर्णय किया गया तो उसके परिणाम बड़े भयानक होंगे और आर्य समाज पंजाब की एकता को बनाये रखने के लिए बड़े से बड़ा बलिदान भी करने को तैयार रहेगा।

यह सभा इस मांग पर विचार करने के लिए सरकार की ओर से बनाई गई समिति के लिए लोक सभासे श्री प्रकाशवीरजी शास्त्री तथा स्वामी रामेश्वरानन्द और पंजाबी रीजन के प्रतिनिधि ला. जगत नारायण को इस में सम्मिलित करने का प्रस्ताव सरकार के सामने रखती है जिससे कि पंजाब का ठीक नेतृत्व हो सके और यदि सरकार लोक सभा के सदस्यों के अतिरिक्त अन्य योग्य पुरुषों को प्रतिनिधित्व देने पर विचार करे जो कि विषय की गम्भीरता की दृष्टि से अत्यन्त आवश्यक है तो पंजाब की दोनों आर्य प्रादेशिक और प्रतिनिधि सभाओं से डा० मेहरचन्द महाजन और राय बहादुर दीवान बद्रीदास जी को इसमें लेना चाहिए। जिससे कि इस अत्यन्त गम्भीर विषय पर पूरी तरह सोच-समझ कर विचार हो सके।

★

आर्यसमाज मण्डी हिमाचल

(पृष्ठ ३ का शेष)

चाहिए। यहां के सज्जन पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज से भी कथा का अमृत पिलाने की प्रार्थना कर रहे हैं तथा सभा प्रधान श्रीयुत यश जी से भी कृपा पूर्वक ध्यान देने का निवेदन कर रहे हैं।

—सं०

मण्डीसमाज को दान

श्री पं० महेन्द्रलाल जी एडवोकेट उपप्रधान आयसमाज मण्डी ने अपने स्वर्गीय पूज्य पिता जी के निधन पर अपने परिवार में प्रति दिन प्रातः काल यज्ञ तथा सायकाल धर्म कथा का आयोजन किया। यज्ञ में श्री इन्द्रसिंह जी उपप्रधान पधारते रहे तथा सायं भी कथा करते रहे। बाद में आर्य-प्रादेशिक सभा जालन्धर के पं० त्रिलोकचन्द्र शास्त्री तथा पं० हजारीलाल जी आकर कथा करते रहे। ता० २ अक्तूबर को बड़ा यज्ञ किया गया। नगर की प्रतिष्ठित जनता उपस्थित थी। सब ने श्री एडवोकेट पं० महेन्द्रलाल जी को परिवार का दायित्व सम्भालने का आशीर्वाद दिया। इस अवसर पर जनता के आदर सत्कार के साथ २ आर्यसमाज मण्डी को एक सौ एक रुपये दान रूप में भेंट किया गया

गृहस्थाश्रम सुखद कब ?

लेखक—श्री पं० रविदत्त जी शर्मा आर्य 'विद्यावाचस्पति प्रभाकर' (पुरोहित-आर्य समाज, हांसी)

जब हम प्राचीन ऋषि महर्षियों के दूरदर्शिता से परिव्याप्त जीवन का अवलोकन करते हैं तो हमें उनका जीवन सर्वथा निष्कलंक एवं सुखान्त दृष्टिगत होता है। सृष्टि के आदिम मनुष्य श्रेष्ठ महाराज मनु ने ब्रह्मचर्याश्रम से से लेकर गृहस्थाश्रम पर्यन्त विधान रूप कर्त्तव्याकर्त्तव्य का परिगणन अपनी पवित्र-कृति-मनुस्मृति में मानव के लिए किया है। यदि मनु महाराज के बताए हुए कर्त्तव्य कर्मों पर मनुष्य पूर्णरूपेण चले और उन्हे जीवन में धारण कर ले तो वह एक सद्गृहस्थी बन सकता है। क्योंकि निरुक्तकर्ता महर्षि यास्काचार्य ने गृहस्थी की परिभाषा निम्न शब्दों में की है कि—

गृहे तिष्ठति विचरणं करोति वा स्थीयते गृहमिति वा तस्मात् गृहस्थीरिति उच्यते।'

वैसे भी मनुष्य के प्रारम्भ से अन्त तक तीन कर्त्तव्य होते हैं एक तो अपनों से बड़ों के प्रति और एक अपने बराबर वालों के प्रति तथा एक अपने से छोटों के प्रति समान एवं यथातथ्य व्यवहार करना। महर्षि स्वामी दयानन्द जी सरस्वती ने भी आर्यसमाज के सप्तम नियम में सब मनुष्यों के प्रति यथायोग्य का व्यवहार करना वैधानिक रूप से लिखा है। गृहस्थी को इन बातों का ध्यान हर समय अवश्य ही रखना चाहिए कि—

अर्थनाशं मनस्तापं
गृहे दुश्चरितानि च।
वंचनं चापमानञ्च
मतिमानं न प्रकाशयेत्॥

अर्थात् धन का नाश, मानसिक दुःख रूप अन्तर्द्वन्द्वता, घर में हुए अधम-कृत्य, धोखा, तथा अपमान सद्बुद्धि गृहस्थ किसी के सम्मुख न कहे, क्योंकि सर्व-संसार स्वार्थाश्रित है। कोई भी मनुष्य किसी के प्रति किसी भी प्रकार सहानुभूति, सहृदयता, शिष्टाचार, सौजन्यता, व्यवहार कौशल्य तथा आत्मीयता प्रकट करना नहीं चाहता। कवि गिरधर के शब्दों में संसार की स्थिति यह है कि :—

साईं सब संसार मे,
मतलब का व्यवहार।
जब लग पैसा गांठ में,
तब लग ताको यार॥
तब लग ताको यार,
यार संग ही संग डोले।
पैसा रहा न पास,
यार मुख से नहीं बोले॥
कह गिरधर कविराय,
जगत का याहि लेखा।
करत बेगरजी प्रीति,
यार हम बिरला देखा॥

आज प्रत्येक गृहस्थी के घर का वातावरण असन्तोष-जनक दिखाई दे रहा है प्रायः कुछेक धार्मिक परिवार हैं जिनमें प्राचीन प्रणाली एवं पद्धति के प्रति अटूट श्रद्धा और असीम आस्था एवं प्रखर विश्वास है। परन्तु विद्वानों ने चुनौती पूर्वक कहा है कि :—

सर्वे यत्र विनेतारः,
सर्वे यत्राऽभिमानिनः।
सर्वे महत्त्वमिच्छान्ति,
कुलं तदवसीदति।

क्योंकि गृहस्थ-परिवारों की परिस्थितियां इस श्लोक के सर्वथा अनुकूल हैं। इसीलिए आज हमारी सन्तान हमारे नियन्त्रण में नहीं है वे आज 'माभ्राता भ्रातर द्विक्षन् मा स्वसारमुतस्वसा' का पवित्र वैदिक घोष भूल गए क्योंकि हम आज हमारे जीवन के प्रत्येक अंश मे तथा पक्ष में इंगलैण्ड तथा अमेरिका का अनुकरण करके ही अपने जीवन को सार्थक समझते और मानते हैं जिसके परिणाम स्वरूप हमारी वर्तमान सन्तान आज अपने जन्मदाता माता-पिता को (**Old Tipe**) प्राचीन संस्कृति के उपाक कहने लगी है। आज हमें उनका ध्यान उस ब्राह्मण ग्रन्थ के वचन की ओर लगाना है जो कि सर्वथा सन्तान को सन्मार्ग की प्रेरणा देता है अर्थात् 'मातृमान पितृमानाचार्य वान् पुरुषो वेद' हमारा पञ्च महायज्ञों का पवित्रादर्श प्रत्येक गृहस्थी के सम्मुख रहना चाहिए। 'यज्ञो व श्रेष्ठतमम् कर्मः' कहकर ब्राह्मण ग्रन्थों ने यज्ञ को श्रेष्ठ एवं सर्वोत्तम कर्म बतलाया है। अतः गृहस्थी का जीवन भी आद्योपान्त यज्ञमय ही होना चाहिए सर्व-प्रथम-यही एक श्रेष्ठ कर्म है।

एक सद्गृहस्थी को चाहिए कि वह निम्न श्लोकों के आधार पर अपनी सन्तान के साथ व्यवहार करे जो कि नीतिकारों ने कहे हैं कि :—

(i) लाडयेत् पञ्चवर्षाणि,
दशवर्षाणि ताड़येत्।
प्राप्ते तु षोडशेवर्षे,
पुत्रं मित्र वदाचरेत्॥

(ii) लाडने बहवो दोषा,
ताडने बहवो गुणाः।
तस्मात् पुत्रं च शिष्यं च,
ताड़येत् न तु लाडयेत्॥

सन्तान ही गृहस्थाश्रम की आधार शिला है जिस पर की सम्पूर्ण गृहस्थाश्रम एवं गृहस्थ-जीवन आधारित है। कलह और अशान्त का मूल कारण गृहस्थ जीवन का श्रेष्ठ न होना है। महर्षि कण्व के शब्दों में गृहस्थाश्रम में प्रविष्ट होती हुई सुपुत्री को इन शब्दों में शिक्षा देनी चाहिए यह एक पिता का परम कर्त्तव्य है कि :—

शुश्रूषस्व गुरुन्कुरू प्रियसखी
वृत्तिम्सपत्नीजने
भर्तुर्विप्रकृतापि रोषणतया
मा स्म प्रतीपं गमः।
भूयिष्ठ भव दक्षिणा परिजने
भाग्येष्वनुत्सेकिनी
यान्त्येवं गृहिणीपद युवतयो
वामाः कुलस्याधयः॥

अरस्तु के शब्दों में मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है उसे सामाजिक नियमों में परतन्त्र रह कर चलना चाहिए और यही उसका वास्तव में धर्म है। सन्तान धार्मिक एवं सत्यनिष्ठ बनाना तथा गृह-कार्यों को प्रेम पूर्वक नियमबद्धता से चलाना ही गृहस्थी का सर्व-प्रथम कार्य है। एक गृहस्थ की सच्ची रूपरेखा यदि हो सकती है तो यही है कि वह प्रत्येक प्राणी के साथ समवाय सम्बन्ध जोड़ कर चले। जिस से उस की इहलौकिक उन्नति के साथ-साथ पारलौकिक उन्नति भी उत्तरोत्तर हो।

"मत्वा कर्माणि सिव्यन्ति तस्माद्
मनुष्याः इति उच्यते"

अतएव मनन पूर्वक कर्म करने वाला व मनुष्य ही सद्-गृहस्थी कहलालाने का अधिकारी हो सकता है। उपरोक्त संगृहीत कथन के आधार पर गृहस्थ जीवन सुखद होना सम्भव है।

आर्य युवक समाज लेखराम नगर कादियां का प्रस्ताव

आज ४-१०-६५ को लेखराम नगर कादियां आर्य युवक समाज व आर्यसमाज की ओर से राष्ट्रीय रक्षा दिवस बड़े उत्साह एवं धूम-धाम से मनाया गया। जिसकी प्रधानता श्री दशराज जी ठेकेदार ने की। इस समारोह पर श्री रामप्रकाश जी प्रभाकर, श्री रोशन लाल जी, श्री सुभाष भाटिया, श्री सत्यपाल, श्री रमेश जी जीवन **M. Sc** व और नगर के प्रतिष्ठत सज्जनों ने मातृभूमि की रक्षा हेतु शहीद होने वाले जवानों को श्रद्धांजलियां अर्पित की तथा जनता ने लम्बे संघर्ष के लिए तैयार रहने की शपथें खाईं। अरुण आय मन्त्री

भारत में जागृति का अग्रदूत स्वामी दयानन्द

(श्री ज्ञानसिंह जी, नई दिल्ली)

फ्रांस के एक विख्यात विद्वान् ने लिखा है कि आधुनिक काल में जितनी महान् हस्तियां हुई हैं उन में से सब से बड़ी हस्ती महर्षि दयानन्द की थी। जितनी जागृति आज भारत में नजर आती है उसके जन्मदाता, वस्तुतः, महर्षि दयानन्द ही हैं।

पांडीचरी के योगी श्री अरविन्द ने लिखा है कि "स्वामी दयानन्द भारतीय जागृति के एक महान् नेता व प्रेरक थे। वह एक अद्वितीय पुनरुत्थान करने वाले थे।"

महर्षि का जन्म नाम मूलशंकर था, अभी वह १४ वर्ष के ही थे कि शिवरात्रि के दिन शिव मन्दिर में एक साधारण सी घटना देखकर उनके हृदय में एक ज्योति का प्रकाश हुआ और उन्होंने अनुभव किया कि आत्मा प्रकृति से उच्चतर है। इसलिए यह उचित नहीं कि आत्मा प्रकृति की उपासना करे।

इस सामान्य घटना से प्रेरणा प्राप्त करके ही उनके हृदय में सच्चे ईश्वर की खोज की इच्छा पैदा हुई। अपनी बहिन और चाचा की मृत्यु के दृश्यों को देखकर दयानन्द के हृदय की ज्योति का प्रकाश और भी तीव्र हो गया। सत्य को जानने और मृत्यु के रहस्य का पता लगाने की इच्छा ने व्रत का रूप धारण कर लिया और वह इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये प्रत्येक कठिनाई का सामना करने के लिए तैयार हो गए। उन्होंने घर द्वार और सुख आराम को तिलांजलि देकर लगभग १६ वर्ष तक घोर तपस्या की।

'जिन खोजा तिन पाईया' के अनुसार उन्हें कोई न कोई मार्ग दर्शन करने वाला मिलता रहा। एक ब्रह्मचारी ने उन्हें ब्रह्मचारियों की श्रेणी में प्रवेश कराया और उन्हें शुद्ध चेतन का नाम दिया। कुछ समय बाद एक संन्यासी पूर्णानन्द ने उन्हें संन्यास की दीक्षा दी और उनका नाम दयानन्द सरस्वती रखा। अपनी यात्रा में स्वामी दयानन्द कई साधु, सन्त, महात्मा तथा योगियों के सम्पर्क में आए और उनसे विद्या प्राप्त करने के अतिरिक्त योग विद्या के रहस्य भी सीखे।

अन्त में वह दंडी विरजानन्द के शिष्य बने। दण्डी जी महाराज बाहरी प्रकाश से वंचित थे, परन्तु उनका अन्तरात्मा बड़ा ज्योतिर्मय था। दण्डी जी महाराज ने यही आत्मिक प्रकाश ऋषि दयानन्द को दिया। इससे उनके मन का सारा अंधकार दूर हो गया। स्वामी विरजानन्द ने उन्हें वैदिक संस्कृति का पूर्ण भक्त बना दिया। उनके दिल में वेदों के प्रति अगाध श्रद्धा उत्पन्न कर दी।

जब गुरु विरजानन्द से विदा होने का समय आया तो उन्होंने एक थाल में कुछ लौंग दक्षिणा के रूप में आचार्य को भेंट करने चाहे। दण्डी जी ने कहा, "बेटा दयानन्द, मुझे यह दक्षिणा नहीं चाहिए।" दयानन्द ने विनय भाव से कहा, "गुरुदेव, मैं एक निर्धन ब्रह्मचारी हूं, मेरे पास और क्या रखा है। हां यह शरीर आप को भेंट कर सकता हूं।" गुरु जी ने कहा, "हां, मुझे यही शरीर चाहिए मैं चाहता हूं कि भारतवर्ष तथा संसार में जो धार्मिक सामाजिक तथा राजनीतिक अन्धकार फैला हुआ है वेद के प्रकाश से तुम इस अन्धकार को दूर करने का वचन दो।"

शिष्य ने विनयाविनीत होकर कहा, "गुरुवर! आप का यह आदेश पूरा करने की दिशा में मैं अपना सर्वस्व लगा दूंगा।"

इसी प्रतिज्ञा के अनुसार स्वामी जी ने अपना सारा जीवन वेद तथा वैदिक संस्कृति के पुनरुत्थान और प्रचार के लिए अर्पण कर दिया।

स्वामी जी ने पाखंड खंडिनी पताका हाथ में लेकर प्रचार कार्य आरम्भ किया।

कुछ समय के बाद उन्होंने यह अनुभव किया कि अभी वह जनता पर पर्याप्त प्रभाव नहीं डाल सकते, इस लिए उन्होंने यह उचित समझा कि वह कुछ और समय तक तप की अग्नि में अपने आप को डालें। इस लिये जितने कपड़, पुस्तकें इत्यादि उनके पास थीं वह सब उन्होंने जनता में बांट दीं और केवल-मात्र लंगोटा धारण कर तपस्या के लिये निकल पड़े। दो तीन वर्ष तक अपने आप को उन्होंने घोर तपस्या की भट्टी में तपाया। इस के बाद जब उन्होंने प्रचार का कार्य करने के लिए अपने आप को पूर्ण रूप से योग्य समझा तभी वह कार्य क्षेत्र में आये।

ऋषिवर जिस दिशा में गये और जो काम भी उन्होंने हाथ में लिये सफलता ने उनके पांव चूमे। उनका विरोध भी खूब हुआ परन्तु वह इस से तनिक भी विचलित न हुए। ऋषि ने देखा कि भारतीय जनता उल्टे रास्ते पर जा रही है, उसकी विचारधारा वेद विरुद्ध हो गयी है, उसके अन्दर झूठे वैराग्य की भावना पैदा हो गयी है। यह जाति कर्म हीनता की शिकार और उत्साह हीन हो गयी है। स्वामी जी ने इस रोग को दूर करने का बीड़ा उठाया और मानव जीवन धर्मानुकूल बनाने और वेद आज्ञा पालन करने का उपदेश दिया उन्होंने कहा कि संसार से भाग जाना उचित नहीं बल्कि मानव को दृढ़ कर्त्तव्यशील होना चाहिए।

ब्रह्मचर्य का महत्त्व बताते हुए स्वामीजी ने कहा कि इसका पालन व्यक्ति और जातिको मृत्युंजयी तथा बलवान बना सकता है। उन्होंने ऊंच-नीच की भिन्नता को तोड़ गुण कर्म और स्वभाव पर आधारित समाज का निर्माण का लक्ष्य बताया और कहा कि उन्नति के द्वार प्रत्येक के लिए उन्मुक्त हैं।

स्वामी जी ने विधवाओं, अनाथ और दलितों की दीन अवस्था की ओर जाति का ध्यान आकर्षित करके सामाजिक एकता व सुधार का बीज बो दिया। आप ने इन उपायों से भारत की प्रसुप्त आत्मा को जागृत और उद्बुध कर दिया।

हम अपने प्राचीन ज्ञान. वेदों को भूल चुके थे। हमारे पास ज्ञान का खजाना मौजूद था परन्तु हम उससे अनभिज्ञ हो गए थे। महर्षि ने इस प्राचीन शास्त्रों की ओर हमारा ध्यान दिलाया उन्होंने वेद के आधार पर जहां एकेश्वर में सिद्धि का बलपूर्वक प्रचार किया वहां साथ ही निराकार ईश्वर की उपासना का प्रतिपादन किया। उन्होंने प्राचीन भारत का उज्जवल रूप हमारे सामने रखा हमें वैदिक सभ्यता व संस्कृति का दिग्दर्शन कराया और देश में लगातार बह रही पश्चिमी सभ्यता की बाढ़ को रोका।

१६ वीं शताब्दी में राजनीतिक जागृति का जन्मदाता भी ऋषि दयानन्द ही था। उन्होंने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है कि 'कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशी राज्य होता है वह सर्वप्रिय उत्तम होता है। माता पिता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं है। अभी कांग्रेस का जन्म भी नहीं हुआ था कि ऋषि दयानन्द ने उसी पुस्तक में स्वराज्य शब्द का प्रयोग किया। इस के साथ ही स्वामी जी ने सारे देश में प्रयत्न करके भारतीयों के हृदय में राष्ट्रीय चेतना को जागृत किया। (क्रमशः)

भारत सरकार इतिहास से शिक्षा ले

पाकिस्तानके कटु अनुभवके पश्चात् नयी भूलें न दोहरायें

श्री रुद्रदत्त जी शर्मा, कन्वीनर संयुक्त पंजाब समिति अमृतसर

पाकिस्तानी आक्रमण के उत्तर में हमारी सरकार ने जिस वीरता धीरता और दूरदर्शिता का परिचय दिया है उसकी जितनी प्रशंसा की जाये वह कम है परन्तु इस तथाकथित युद्ध-विराम के मध्य में ही जब कि शत्रु सभी ओर से शरारतें और आक्रमण कर रहा है ऐसी गम्भीर स्थिति में सन्त फतेह सिंह और उसके साथियों को प्रसन्न करने के लिए अथवा पंजाब के ७१ प्रतिशत हिन्दुओं का गला घोंटने के लिए कमेटियां बनाने में जो उतावलापन दिखा रही है इसमें क्या भेद है यह समझ में नहीं आ रहा विशेषत: जबकि स्वयं सन्त फतेह सिंह पंजाबी सूबा के प्रश्न को युद्ध की समाप्ति तक स्थगित करने की घोषणा कर चुके हैं।

फर इस अस्थाई एवं नाममात्र के "युद्ध-विराम" में ही अपने आप इस फूट का बीज बोने वाले प्रश्न को छेड़ना किसी अवस्था में लाभप्रद न होगा। निस्संदेह यह हमारे शासक वर्गके अन्दर घुसे हुए कतिपय चालाक खिलाड़ियों की चाल प्रतीत होती है। युद्ध-विराम के बावजूद पंजाब की सीमाओं के कोने-कोने में भड़क रही ज्वालाओं के मध्य में पंजाब की किस्मत को शासन की लालसा में अन्धे हुए-हुए अकालियों के हाथों में सौंपने के लिए कितनी तीव्रता दिखाई जा रही है? क्या सन्त फतेहसिंह और मास्टर तारासिंह आदि अकाली नेताओं की ओर से आपत्तिकाल में देश की पीठ में छुरा घोंपने का पुरस्कार और हिन्दुओं को उनकी देश भक्ति को दण्ड मिल रहा है?

कौन नहीं जानता कि गुरमुखी केवल सिखों की साम्प्रदायिक भाषा है, धोखा और चालाकी से इसे पंजाबी का नाम देकर पंजाब सरकार विशेषत: पंजाबी रीजन के सभी विभागों में बलात प्रयुक्त किया गया है और नगर पालीकाओं को भी अपना काम गुरमुखी में करने के आदेश दिए जा रहे हैं। लगभग सब डी. सी. तथा एस. पी. और दूसरे उत्तर-दायित्व पूर्ण स्थानों पर सिख लगे हुए हैं। अब तो यहां का गवरनर भी सिख ही लगा दिया गया है। फिर पंजाबी सूबा के नाम पर अकाली नेता और क्या प्राप्त करना चाहते हैं यह अब भेद की बात नहीं रही विशेषत: जबकि मास्टर तारासिंह स्पष्ट शब्दों में सिख स्टेट की मांग कर चुके हैं, जिसमें पूर्वीय पाकिस्तान की न्याईं हिन्दुओं को सब कुछ यहीं छोड़ कर भागना पड़ेगा या सिख धर्म का अवलम्बन करना पड़ेगा। शोक है कि भारत सरकार इस वास्तविकता की ओर से जानबूझ कर आंखें बन्द किये बैठी है। हालांकि सीमाओं से मिलता जुलता यह पंजाबी सूबा अथवा सिख स्टेट भारत के लिये भारी आपत्ति का कारण सिद्ध होगी। शासक वर्ग को देश की रक्षा के दृष्टिकोण से इस प्रश्न को पूरे उत्तरदायित्व और गम्भीरता के साथ विचार करना चाहिये। दूसरी ओर पंजाब भर के हिन्दुओं को संगठित एवं सम्मिलित रूप में एक होकर इस आपत्ति का सामना करना चाहिये। हमें पंजाबी रीजन तथा हिन्दी रीजन की तमीज को भुला कर सम्पूर्ण पंजाब और देश के हित दृष्टि में रखते हुये पंजाब को अथवा इसके किसी भी भागको अकालियों की हकूमत की लालसा तथा बलात गुरमुखी लागु की साजिश(षड्यन्त्र) का लक्ष्य कदापि नहीं बनने देना चाहिये।

अन्त में, भारत सरकार के उच्चाधिकारियों का ध्यान पंजाबी सूबा के प्रश्न पर वर्षों पूर्व सरदार पटेल तथा पं० जवाहर लाल नेहरू के जीवन काल में अकाली नेताओं के साथ हुके निर्णयों की ओर दिलाता हूं जिनके अनुसार इस के सम्बन्ध में कभी पुनर्विचार न करने का अन्तिम निश्चय हो चुका हुआ है। याद रहे कि **State Reorganization** कमिशन ने भी पंजाब की बांट के सर्वथा विरुद्ध और महा पञ्जाब के पक्ष में निर्णय दिया था।

आर्य वीरो

रचियता—श्री वेदप्रकाश जी एम. ए. आर्य स्कूल लुधियाना

आर्य वीरवर हमे बताओ, क्या कुछ तुम कर पाए हो।
किस-किस ऋण से मुक्त हुए हो, जग को क्या दे पाए हो॥
क्रूर कालिमा आज अमावस की हम को बतलाती है।
हाइ दुष्टता फूल फल रही जगती को अकुलाती है॥
दीप जला कर लाखों घर में तम को नहीं मिटा सकते।
उर को ज्योतित किए बिना तुम काम न जग के आ सकते॥
बन कर बोझ धरा पर रहना, मानव का है काम नहीं।
उपकारी बन जग चमकाओ, चाहो तुम विश्राम नहीं॥
आतिशबाजी फूंक देश की दौलत व्यर्थ गंवाते क्यों?
सैनिक घायल, पीड़ित रोगी उनको नहीं बचाते क्यों?
बम्ब पटाखे आदि चला कर देश त्राण कब होता है?
सैनिक बन हर सुख को तज कर मनुज पाप को धोता है।
मित्र बन्धुओं सहित उड़ा कर खूब मिठाई क्या होगा?
जगती भर हित नस-नस में यदि मधुर प्रेम रस आ होगा?
हा! हा!! इस दिन जुआ शराबें कलुष मनुजता की भारी।
गर्क धरा यह हो जाएगी मिटी अगर ना बदकारी॥

चरित्र

(लेखिका—वर्मा, जालन्धर)

चरित्र जीवन के मूलतत्वों की झांकी है और साथ ही साथ आदर्श एवं संदेश भी। जीवन एक टिमटिमाता दीपक है, जो स्वभावत: आशा के सहारे प्रज्वलित होता रहता है। जीवन जब निराशा के बवंडरों के झोकों में बुझने लगता है, तब चरित्र ही उसका संदेशवाहक बनकर एक नई प्रेरणा प्रदान करता है। यही आशा को धैर्य देकर ज्योति को अन्धकार से लड़ने का साहस प्रदान कर अंधकार विजय प्राप्त कर ज्योति को ज्योतिमय बना देता है। ज्योतिमय हो जाने पर तम स्वभावत: दूर हट जाता है। जहां प्रकाश है वहां अन्धकार कहां, जहां अन्धकार नहीं, वहां असत्य कहां, जहां असत्य नहीं, वहां अशान्ति कहां, जहां अशान्ति नहीं, वहां विडम्बना कहां, जहां विडम्बना नहीं वहां माया मोह कहां, जहां माया मोह नहीं तो काम क्रोध कहां, जब काम

(शेष पृष्ठ ८ पर)

चरित्र

(पृष्ठ ७ का शेष)

क्रोध नहीं तो पागलपन कहां, अब पागलपन नहीं तो पथभ्रष्टता कहां, अब पथभ्रष्टता नहीं तो मंजिल उसके चरणों पर है।

इस प्रकार चरित्र, लक्ष्य की प्राप्ति के लिए मानव का सर्वश्रेष्ठ अस्त्र है। भारतीयों का लक्ष्य लौकिक जीवन ही नहीं पारलौकिक की प्राप्ति है।

चरित्र महान होते हुए भी मर्यादा की शृंखलाओं से बंधा हुआ है—ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार सागर महान होते हुए भी मर्यादित है। यदि सागर अपनी मर्यादा का उल्लंघन कर जाए, तो सृष्टि में महा प्रलय आ जाये। इसी प्रकार चरित्र महान होते हुए भी मर्यादित है। चरित्रवान व्यक्ति का हृदय सागर की भांति महान होता है। उसके अन्तस्तल में सत्य, प्रेम और शांति के मोती हैं समय पर वह सत्य एवं शान्ति के लिए विश्व के रंग मंच पर बड़ी क्रान्तियां भी करता है। चरित्रवान व्यक्ति ही युग-निर्माता बनकर भावी पीढ़ी के लिए महापुरुष बनता है।

महान् पुरुषों के सन्देशों का उल्लंघन करना ही सत्य से विचलित होकर असत्य एवं अशांति के निकट पहुंचना है। काम, क्रोध, मद, लोभ और मोह के वशीभूत होकर अपना सर्वनाश तथा शाश्वत मूल्यों की अवहेलना करना है।

संसार के प्रत्येक धर्म की सभी विभूतियों ने काम, क्रोध मद, लोभ, मोह की भर्त्सना की है तथा इनपर विजय पाकर चरित्र निर्माण करने का उपदेश दिया है।

उद्बोधन

(पृष्ठ २ का शेष)

को यज्ञ समझ कर करो? यज्ञ की रक्षा के लिए, देश-धर्म और मातृभू ... के ... के लि ... , अनाथों की रक्षा के लिए युद्ध करना 'यज्ञ' है। यज्ञ समझ कर विश्व कल्याण के लिए पापियों का वध करना पुण्य था यश का कर्म है।

पुस्तक परिचय

योगीराज श्री कृष्ण

ले० —कुमारी सुशीला जी एम.ए. आर्य कन्या गुरुकुल नरेला देहली।

प्रकाशक—चमूपति साहित्य विभाग आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब जालंधर पृष्ठ संख्या १७मूल्य१२पै.।

लेखिका महोदय ने श्री कृष्ण जी के जीवन को आर्यसमाज के दृष्टिकोण से महान उच्चतम प्रकट किया है। हिन्दु जनता श्री कृष्ण के चरित्र को शैशव से शृंगार प्रिय, विलासी, गोपिकाओं से आवृत आदि लांछनों से कलंकित किया है लेखिका ने इन लांछनों पर से परदा उठाकर निष्कलंक श्री कृष्ण को हमारे सन्मुख प्रकट किया है।

ट्रैक छोटा होते हुए भी समयानुकूल जबकि चारों तरफ से ईसाइयों की बाढ़ तेजी से बढ़ रही है, अति उपयोगी है। विशेषकर ईसाई मिशनरियों को मुंह तोड़ जवाब दिया जा सकता है। प्रचार की दृष्टि से अति उपयोगी है। ऊपर के पते पर मंगाइये।

आत्म कुञ्ज

ले० मुनि देवराजजी विद्यावाचस्पति।

प्रकाशक—हरियाणा साहित्य संस्थान गुरुकुल झज्जर (रोहतक) मूल्य ७५ पै० पृष्ठ संख्या ८८।

मुनि देवराज जी ने गल्पों के रूप में आत्मा का स्वरूप प्रकट किया है। गल्पें, मनोरंजक, भाषा चलती हुई आत्मा पर प्रभाव छोड़ देती है। मनुष्य अपने आप: उनका मैं विचारक के रूप में विचरता है कि मुझे क्या करना है और क्या ... के अन्त में ... मार्गी कविताएं देकर सोने में सुहागा का काम कर दिया है। पुस्तकोपरान्त चार कविताएं जोड़कर पुस्तक को उपयोगी बनाया गया है। भक्तों के लिए और गृहस्थियों के लिए, तथा आत्मोन्नति के लिए पुस्तक अति उपादेय है। उपरोक्त पते से प्राप्त करें।

श्री मेलाराम जी भजनोपदेशक

A. P. P. सभा का कार्यक्रम १.६.६५ से १७.१०.६५ तक सभा के कैंप में युद्ध पीड़ित जनता की सेवा में तत्पर रहे। ७.१०.६५ को आर्य जगत के ऋषि नंबरों का आर्डर लेने गए। ६.१०.६५ को स्त्री आर्य समाज विक्रमपुरा में प्रचार किया।

१० से १७ अक्तूबर तक आर्य समाज माडल टाउन यमुनानगर में श्री आनन्द स्वामी जी महाराज की अमृत वर्षा से पूर्व और पश्चात भजनों द्वारा प्रचार किया।

कथा की समाप्ति पर ५०१/— सभा को वेद प्रचारार्थ स्वामी जी महाराज द्वारा प्राप्त हुए।

आर्यसमाज हिसार की

ओर से भिन्न २ संस्थाओं में भारत रक्षाकोष में निम्न दान भेजा गया

दयानन्द कालेज हिसार	३०००/-
डी.ए.वी हाईस्कूल हिसार	५००/-
कन्या महाविद्यालय हिसार	३००/-
आर्यसमाज हिसार	४००/-
डी.ए.वी. प्राईमरी स्कूल हिसार	१८/-

नोट— अध्यक्ष आर्य समाज हिसार पं० मुरारी लाल जी शास्त्री से प्रार्थी है कि जब तक वे पूर्ण स्वस्थ नहीं हो जाते तब तक वे देश के किसी कार्य में भाग न लें।

सज्जन कुमार संधीर

आर्यसमाज खन्ना

आर्यसमाज खन्ना के प्रधान श्री मुन्शीराम जी ने आर्यसमाज की तरफ से १०१/- भारतीय रक्षा-फंड में म्यूनिसीपल कमेटी खन्ना के प्रधान श्री बख्शी नरेन्द्रसिंह साहब को भेंट किया।

मुन्शीराम
प्रधान समाज खन्ना

श्री सर्वदानन्द साधु आश्रम पुल कालीनदी पो० साधु आश्रम (अलीगढ़)

प्रबन्धक सूचित करते हैं कि श्री सर्वदानन्द साधु आश्रम का वार्षिकोत्सव ता० ५-६-७ नवम्बर सन १९६५ ई० दिन शुक्रवार शनिवार, रविवार को मनाया जावेगा। अतः सपरिवार इष्ट मित्रों सहित पधार कर शुभावसर से लाभ उठावें।

आदर्श विवाह

लुधियाना निवासी श्री सरदारीलाल जी भसीन की सुपुत्री रवि का शुभ विवाह ३ अक्तूबर को श्री बृजलाल जी देहली निवासी के साथ बड़ी धूमधाम से सम्पन्न हुआ।

श्री भसीन जी के पुत्र अविनाश जी का शुभ पाणिग्रहण आयुष्मती मंजुरानी के साथ ४ अक्तूबर को आर्यसमाज दाल बाजार में सम्पन्न हुआ। इन दोनों विवाहों के उपलक्ष्य में २७ सितम्बर से ३ अक्तूबर तक पं० रणवीर जी शास्त्री ने यजुर्वेद पारायण यज्ञ कराया। वर पक्ष ने किसी प्रकार का दहेज नहीं लिया ... २०० दैनिक ... प्रकाश वितरण किए गए। भिन्न २ संस्थाओं को दान दिया गया। रणवीर शास्त्री

लुधियाना

शोक समाचार

२० अक्तूबर १९६५ को शाम के सात बजे श्रीमती सावित्री देवी धर्मपत्नी प्रिंसीपल रामदास होशियारपुर का देहांत हो गया। क्रिया संस्कार २१ अक्तूबर दोपहर के बाद होगा।

शुभ चिन्तक
रामदास

मुद्रक व प्रकाशक श्री जगदीशराज जी आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर द्वारा वीर मिलाप प्रेस, मिलाप रोड जालन्धर से मुद्रित तथा कार्यालय आर्यजगत महात्मा हंसराज भवन निकट कचहरी जालन्धर शहर से प्रकाशित मालिक—आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर



टेलीफोन नं० ३०५७ [आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधिसभा पंजाब जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd. No. P. 121

एक प्रति का मूल्य १३ नये पैसे वार्षिक मूल्य ६ रुपये

वर्ष २५ अंक ४७) २९ कार्तिक २०२२ रविवार—दयानन्दाब्द १४१– १४ नवम्बर १९६५ (तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

घुसपैठियों के विरुद्ध कार्रवाई जारी रहेगी

उनके काश्मीर में रहते सेना की वापसी असम्भव

स० स्वर्णसिंह की घोषणा

भारत के विदेश मन्त्री सरदार स्वर्णसिंह ने कल सुरक्षा परिषद् को स्पष्ट शब्दों में बता दिया कि जहां तक भारत का सम्बन्ध है, उनके लिए काश्मीर का केवल मात्र राजनीतिक प्रश्न यही है कि पाकिस्तान अवैध रूप से अधिकृत काश्मीर ...त का दो बटा पांच भाग ...ली करे। भारत के लिए ...ल इसी राजनीतिक प्रश्न पर बातचीत सम्भव है।

स० स्वर्णसिंह सुरक्षा-परिषद की बैठक के बाद और स्वदेश रवाना होने से पूर्व पत्रकारों से बातचीत कर रहे थे। इससे पूर्व स० स्वर्णसिंह ने एक लिखित वक्तव्य जारी किया जिसमें ...हा गया कि अगर युद्धविराम स्थिर हो जाता है, और सभी शस्त्र व्यक्तियों को वापिस बुला लिया जाता है तथा दोनों ...ों में वार्ता के लिए उपयुक्त वातावरण पैदा हो जाता है तो ...त पाकिस्तान से काश्मीर के भाग की मुक्ति पर बात... करना चाहेगा जिसपर ...ने कब्जा कर रखा है।

...ता—श्री संतोषराज जी

वेदामृत

राक्षस का सिर काट दो

अपां फेनेन नमुचेः शिर इन्द्रोदवर्तयः।
विश्वा यदजयः स्पृधः॥

साम० अ० २ खंड १० मन्त्र ८

अर्थ :—हे इन्द्र ! सेनापते तथा वज्र जैसी शक्तियों को रखने वाले वीर नायक ! आप (अपां फेनेन) ज्ञान और कर्म के बल से, अपनी शक्ति व नीति से (नमुचेः) शत्रु का, राक्षस के (शिरः) सिर को (अवर्तयः) काट डालो। तथा अपनी वीरता से (विश्वा) सारे ही (स्पृधः) शत्रुओं को, विघ्न पैदा करने वालों को (अजयः) जीत लेवें। उनको कुचल कर विजय प्राप्त कर लेवें।

भाव :—सेना नायक हे इन्द्र ! आप सारी शस्त्र अस्त्र शक्तियों को धारण करने वाले हो। आप वज्री हो। आप के पास सेना जैसा वज्र मौजूद है। इसी वज्र से राष्ट्र के शत्रुओं का कचूमर निकाल देते हो। उनका सिर फोड़ देते हो। हे वीर नर ! जो भी राष्ट्र की भूमि पर, भवनों पर या भण्डारों पर आक्रमण करने के लिए शत्रु बन कर आता है। राक्षस बन कर हमें मारना चाहता है। लूटना या भयभीत करने में लगा है। उस नमुचि को, राक्षस को, दुष्ट शत्रु को अपनी नीति तथा अटूट शक्ति से मसल दो। उस दुष्ट हत्यारे का अपने वज्र से सिर ही फोड़ दो। मौत की घाटी में पहुंचा दो। आप के पास राजनीति का भी शानदार बल है तथा शक्ति का तो भण्डार भरा पड़ा है। जितने भी अत्याचारी तथा आक्रमणकारी हैं। हानि पहुंचाने वाले भेड़िये के समान पिशाच राक्षस हैं। उन सब को आप ने जीत लिया है। उन के अभिमान को चूर २ कर दो। उन का उत्पात सदा के लिए समाप्त कर दो। उन सब का सिर ही काट डालो ताकि वे गड़बड़ न कर सकें—सं०

महा. आनंद स्वामी जी का राष्ट्र सेवा का संकल्प लेने का आह्वान

महात्मा आनन्द स्वामी जी अथर्ववेद के १२ वें तथा १६ वें कांड की कथा के आधार पर मनुष्य को अपने जीवन को उन्नत करके राष्ट्र की सेवा का संकल्प दृढ़ता पूर्वक लेने की प्रेरणा दी। यह संसार युद्ध-भूमि है और हम योद्धा, अतः अपने भीतर की लड़ाई लड़नी है और बाहर की भी। भ्रष्टाचार दूर करने का इलाज यही है कि मनुष्य के मन और आत्मा को पवित्र बनाया जाए। हम एक हजार वर्ष सोए रहे महर्षि दयानन्द की कृपा से हम जागे। भारत की सोई आत्मा जागी और आज हमारे वीरों ने वह काम कर दिखाया है जिस से संसार चकित रह गया है। देश के संकट काल में आने वाली कठिनाइयों को हंसते हुए सहना आर्यों का धर्म है।

प्रधान मन्त्री श्री लाल बहादुर जी शास्त्री एक सप्ताह में एक समय उपवास करने की पुष्टि करते हुए स्वामी जी ने देशवासियों को इस से बढ़ कर एक दिन का उपवास करने का आह्वान किया। उन्होंने बताया कि इस प्रकार हम ६१ लाख टन अन्न बचाकर अमरीका के मुंह पर चपत लगा सकेंगे।

—त्रिलोक चन्द्र शास्त्री

परमात्मा का चिन्तन और आत्म-बल

(श्री वेद पथिक पं० धर्मवीर जी आर्य झंडाधारी,

सराय रुहेला, नई देहली

परमात्मा के दिव्य गुणों का चिन्तन करने से, प्रार्थना और उपासना आराधना करने से, मनुष्य में अकल्पनीय आत्मबल ओज और तेज प्रबल पुरुषार्थ की अगम्य कार्य क्षमता आ जाती है। परमात्मा का चिन्तन करने से मनुष्य इसी जीवन में धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष-सुखों को प्राप्त कर लेता है। परमात्मा का चिन्तन करने से पूर्व जन्मों की संचित विद्याओं का रत्न कोष मनुष्यों को प्राप्त हो जाता है? परमात्मा के चिन्तन से मेधाबुद्धि प्राप्त हो जाती है। परमात्मा के चिन्तन से मनुष्य विश्व प्रेम की दिव्य-ज्योति को प्राप्त करके वसुधा समस्त को निज-कुटुम्ब मान कर मानव मात्र के कल्याण में लग जाता है? परमात्मा के चिन्तन से मनुष्य का जीवन 'यज्ञ, मय तेजस्वी और वर्चस्वी बन जाता है। परमात्मा के चिन्तन से मनुष्य अपार आनन्द का प्रतिक्षण अनुभव करने लग जाता है। परमात्मा के चिन्तन से चिन्ताओं से मनुष्य सदा के लिए मुक्त हो जाता है।

परमात्मा चिन्तन करने से, योगिजन महर्षि महात्मा गण भूत भविष्य और वर्तमान के ज्ञाता बन जाते है। परमात्मा के चिन्तन से ही मनुष्य की वाणी में पवित्रता आ जाती है। परमात्मा के चिन्तन से मनुष्य मन पर विजय प्राप्त करके मनस्वी बन जाता है। परमात्मा का चिन्तन करने से मनुष्य अपनी इन्द्रियों पर विजय प्राप्त कर लेता है। परमात्मा का चिन्तन करने से मनुष्य का अन्तः करण पवित्र हो जाता है? परमात्मा के चरण कमलों में ध्यान लग जाने पर मनुष्य रूप अनुपम सौन्दर्य की छटा को देख कर उस में आसक्त नहीं होने पाता है, अपितु परमात्मा की दिव्य लीलाओं और उसकी अद्भुत कारी-गरी का दिव्य दर्शन करने की क्षमता प्राप्त कर लेता है। परमात्मा का चिन्तन करने से विश्व की काया पलट देने की अकल्पनीय क्षमता महर्षियों और योगियों को, युग पुरुषों को प्राप्त हो जाता है। परमात्मा का चिन्तन करने से निर्लिप्त हो जाता है। परमात्मा के चिन्तन करने से और प्रबल पुरुषार्थ से मनुष्य की शुभमनोकामनाएं पूर्ण हो जाती हैं? परमात्मा की उपासना, प्रार्थना तथा पुरुषार्थ करने से कंगाल मनुष्य करोड़ोपति बन जाता है। परमात्मा का चिन्तन करने से मनुष्य को आत्म-विश्वास प्राप्त होता है। परमात्मा के चिन्तन मात्र से असाध्य रोगों की निवृत्ति हो जाती है। मानसिक रोगों की राम बाण औषधि परमात्मा की प्रार्थना है? परमात्मा की प्रार्थना में लगना तलवार की धार के समान कठिन है, परन्तु साधना करने पर और पूर्व जन्मों के शुभ संस्कारों का योग प्राप्त हो जाने, पर मनुष्य समाधी में समाहित हो जाता है।

परमात्मा के चिन्तन में जो अपार अवर्णनीय आनन्द एक योगी को और कर्म योगी को प्राप्त हो जाता है, उस आनन्द की अनुभूति एक चक्रवर्ती सम्राट् को भी नहीं प्राप्त होती है, प्राचीन काल में महर्षियों के आश्रमों में चक्रवर्ती सम्राट् आकर महर्षियों से सेवायें पूछते थे, महात्माओं के सामने—नतमस्तक होते थे, इस लिये चक्रवर्ती सम्राट् से भी ऊंचा स्थान परमात्मा के भक्तों का, महर्षि और महात्माओं का है। वैदिक युग के निर्माण की दिव्य छटा को क्या इस जीवन में हम इन नयनों से देख सकेंगे। वैदिक युग की गाथाओं को हम पढ़ते हैं, सुनते हैं तो उन युगों की स्मृतियां हृदय पटल पर मूर्तिमान होकर जाग्रत हो जाती हैं। हृदय पटल पर जन्म जन्मान्तरों के संस्कारों का प्रतिबिम्ब प्रत्येक मनुष्य में मौजूद है। अर्बों वर्षों के अनवरत अनहद परमात्मा की दिव्य-वेद वाणी के ज्ञान रवि का दर्शन या अरबों वर्षों के महर्षियों के मुख से बोले गये—उपदेशों और शब्दों को सुनने की अगम्य क्षमता मनुष्य में मौजूद हैं। मनुष्य शक्तियों का पुंज है। अतः करण पवित्र हो जाने पर दिव्य ज्ञान की असंख्यों सूर्य सम ज्योति के प्राप्त हो जाने पर मनुष्य समाधि अवस्थाओं में पहुंच कर महर्षियों की स्वर्गगत आत्माओं से जो मोक्ष अवस्था में विचरण कर रही हैं, उन से वार्तालाप कर सकती हैं। मनुष्य परमात्मा की गोद में बैठ कर परमात्मा से वार्तालाप कर सकता है। परमात्मा का संकेत और प्रबल प्रेरणा मनुष्य को प्रति क्षण प्राप्त होने लग जाती है। परमात्मा के चिन्तन करने से मनुष्य देवता बन जाता है। दिव्य दैवी गुणों को धारण करके मनुष्य देवता बना करता है। देवता उसे कहते हैं जो दूसरों को कुछ देता है? परम देव परमात्मा भी देवता है, इसलिये कि वह अखिल विश्व को सब कुछ देता है। इसी प्रकार हम भी देव और देवता बनने का प्रबल प्रयत्न आरम्भ कर दें? इस नश्वर शरीर के जीर्ण-शीर्ण संबंध को आज नहीं तो कल त्यागना ही पड़ेगा। अतः इस शरीर से जितना यज्ञ परोपकार परमात्मा का चिन्तन, उपासना विद्या विषयक वैराग्य, तप, जप, अनुष्ठान ध्यान हो सके कर लेने बुद्धिमता है? इस अनमोल सुरदुर्लभ मानव जीवन को विषय वासनाओं के जाल में पड़कर बर्बाद मत करो। घर गृहस्थी में बाल-बच्चों में रहते हुए संयम का जीवन बिताओ? स्त्री में 'पुत्र में' भाई और बहन में, माता पितादि आदि में रहते हुए सब की सहायता करते हुए निर्लिप्त रहो! अन्तिम लक्ष्य क्या है, हमें कहां जाना है, हम कहां से आए हैं, हम कौन हैं, हमारा पिता कौन है, उस के प्रति हमारा कर्त्तव्य धर्म क्या है, इस जीवन का मूल्य क्या है। इन समस्याओं और प्रश्नों पर ध्यान देने पर मनुष्य की दुनिया दूसरी बन जाती है। मनुष्य में वैराग्य और विवेक आ जाता है, मनुष्य साधन कर के साधू बन जाता है। आत्म उन्नति ही मानव जीवन का सार है, और अन्तिम लक्ष्य है? आत्म उन्नति और परमात्मा के चिन्तन के बिना मनुष्य पशु के समान है। आहार, निद्रा, भय और मैथुन में की क्रियाओं में मनुष्य और पशुओं में कोई अन्तर नहीं है? मनुष्य में विशेषता यह है, कि वह परमात्मा परमात्मा को प्राप्त करने की क्षमता रखता है, और उसके लिये प्रयत्न करता है। इस लिये समस्त योनियों में मनुष्य योनी उत्तम सर्व श्रेष्ठ मानी गई है। वेदशास्त्रों उपनिषदों और समस्त धर्म ग्रन्थों में मानव जीवन का सुन्दर आनन्द प्रिय लक्ष्य का वर्णन किया गया है। हे विश्व के नरतन धारियो! आओ वेद ईश्वर से प्यार करना सीखो। इस मानव जीवन को संस्कारों से परि पूरित बना कर, मनोनिग्रह कर के परमात्मा का अमृत पुत्र और पुत्रियां कहलाने का अधिकारी अपने आप को बना लो?

(शेष पृष्ठ ८ पर)

[illegible] महर्षि दयानन्द सरस्वती

(श्री ज्ञानी पिंडी दास जी, प्रधान आ० स० लोहगढ़, अमृतसर)

(गतांक से आगे)

इस लिए सृष्टि की आदि में आर्य लोग इसी देश में आ कर बसे.........जितने भूगोल में देश हैं वे सब इसी देश की प्रशंसा करते हैं और आशा रखते हैं कि पारसमणि पत्थर सुना जाता है वह बात तो झूठी बात है परन्तु आर्यावर्त ही सच्चा पारसमणि है जिसको लोहे रूप दरिद्र विदेशी छूते के साथ स्वर्ण अर्थात् धनाढ्य हो जाते हैं।"

आर्यों के लिये जो प्रार्थना पुस्तक महर्षि ने लिखी उसमें स्थान स्थान पर "राज्य, स्वराज्य, साम्राज्य और चक्रवर्ती राज्य आदि शब्दों का प्रयोग करके परमात्मा से इन वरदानों की याचना की गई है आर्यावर्त्त देश के गुणगाथा करते इसके प्रभुत्व का वर्णन करते, इस की सम्पन्नता-समृद्धि की गाथाएं सुनाते महर्षि थकते ही नहीं हैं। यही कारण था कि मैक्समूलर जैसे विदेशी विद्वान जो भारतवर्ष को कुछ ही वर्षों में ईसाई बना डालने के स्वप्न देखा करते थे, महर्षि के जीवन काल में ही भारत वर्ष का यशोगान करने लग गये। महर्षि ने सन १८७५ में आर्याभिविनय और सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थों का निर्माण किया और उनमें १८६ 'स्वराज्य' का बार-बार उल्लेख किया। परिणाम यह हुआ कि देश में जागृति उत्पन्न हो गई और अनेक भारतीय नेता अपने-अपने ढंग से स्वराज्य प्राप्ति का यत्न करने लगे। सुविधा के लिए हम उन्हें निम्नांकित चार श्रेणियों में विभक्त कर सकते हैं। उनमें से जिसने जितना परिश्रम किया, उन सबका आभार मानते हुए यदि हम ध्यानपूर्वक अवलोकन करेंगे तो निस्सन्देह इस निष्कर्ष पर पहुँचेंगे कि उन सब के गुरु, सब के आचार्य स्वराज्य प्राप्ति के लिए मूल प्रेरणा स्रोत महर्षि दयानन्द ही थे।

देश भक्तों की चार श्रेणियां :

१. सरकार पूजक—जो प्रार्थना पत्रों, प्रस्तावों तथा आवेदनों द्वारा जो भी उपलब्ध हो सके उसे प्राप्त करना, किसी परिस्थिति में शासकों को आपत्ति उठाने का अवसर न देना, माध्यमिक गति, सर्व-तोष नीति पर चलने वाले सज्जन—

—मॉडरेट

२. सरकारी रोष की अवहेलना करके अंग्रेज़ तथा उसकी रीति-नीति एवं परम्पराओं की कटु आलोचना करते हुए कष्ट-क्लेशों को आमन्त्रित करते हुए अधिकाधिक अधिकार प्राप्ति का प्रयत्न करते हुए कुछ उपलब्ध करने के पश्चात् भी संतुष्ट न बैठने वाले और नियमित ढंग से आन्दोलन करते रहने वाले आवश्यक होने पर सहयोग और अनिवार्य होने पर असहयोग के सिद्धान्त पर विश्वास रखने वाले महानुभाव ...एक्स्ट्रीमिस्ट।

३. सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह एवं असहयोग पर विश्वास रखने व ले विपत्तियों से विचलित न होने वाले, जनसाधारण तक अपने आन्दोलन को पहुंचा कर अधिकाधिक जनता जनार्दन का सहयोग प्राप्त करने का यत्न करने वाले महात्मा...कांग्रेसी।

४. स्वदेश की स्वतन्त्रता के लिए तन-मन-धन की बाज़ी लगा देने वाले, भीषण से भीषण विपत्ति में अचल रहने वाले, घर-परिवार धन-दौलत के मोह को सर्वथा त्याग देने वाले, मृत्यु को लीलामात्र समझने वाले, स्वराज्य प्राप्ति के लिए सशस्त्र क्रांति से भी न हिचकने वाले परम त्यागी-तपस्वी-गुणातीत परम सन्त......क्रांतिकारी "प्रथम श्रेणी" के सर्वोत्तम नेता थे, श्री दादा भाई नौरोजी महानुभाव, जिनके सम्बन्ध में वर्णन आता है कि एक बार भगवान् बालगंगाधर तिलक उनसे भेंट करने के लिए उनके स्थान पर पधारे। वहां मेज पर महर्षि दयानन्द कृत 'सत्यार्थ प्रकाश' की पुस्तक पड़ी देख कुछ चकित से हुए, उनको इस हैरानी को दूर करने के लिए श्री दादाभाई जी ने कहा—"यह पुस्तक वह है जिससे मैंने शब्द 'स्वराज्य' प्राप्त करके कांग्रेस के सभापति भाषण में सर्वप्रथम प्रयुक्त किया है।"

दूसरी श्रेणी—के नेता भगवान् बालगंगाधर तिलक थे, जिन्होंने अपने समाचार पत्रों—केसरी और महराष्ट्र-द्वारा अंग्रेज शासकों तथा शासन पद्धति के विरुद्ध इतनी कड़ी आलोचना की कि सरकार ने उन्हें छः वर्ष की कैद सख्त की सज़ा देकर मांडले (ब्रह्मदेश) में निर्वासित कर दिया। आप स्वनाम धन्य परम विद्वान जज महादेव गोविन्द रानाडे की संगति से प्रभावित हुए और रानाडे महोदय पर महर्षि दयानन्द के सद्विचारों का स्पष्ट प्रतिबिम्ब था।

तीसरी श्रेणी के—अग्रगण्य महात्मा मोहन दास कर्मचन्द गांधी थे। जिन लोगों ने उनका साहित्य पढ़ा है अथवा वक्तृताएं सुनी हैं और या जिन्हें उनकी संगति में बैठने का अवसर प्राप्त हुआ है वे साक्षी हैं कि आप श्री गोपाल कृष्ण गोखले से प्रभावित थे श्री गोपाल कृष्ण गोखले श्री महादेव गोविन्द राना डे के शिष्य थे और राना डे महोदय जैसा कि ऊपर वर्णन किया जा चुका है महर्षि दयानन्द की दिव्य ज्योति से आलोकित हो रहे थे। इसी सन्दर्भ में यह वर्णन भी अत्यन्त रुचिकर होगा कि सन् १८८० में कलकत्ता कांग्रेस और १९०६ में लाहौर कांग्रेस के मनोनीत प्रधान (किसी कारण वश आप लाहौर अधिवेशन में नहीं जा सके थे) सुविख्यात पार्सी नेता श्री सर फीरोजशा मेहता भी महाराज राना डे महोदय का शिष्य कहलाने में ग[illegible] समझते थे और राना डे महोद[illegible] महर्षि दयानन्द का शिष्य होने [illegible] दम भरते थे।

सन् १६१६ में अमृतसर कांग्रे[illegible] अधिवेशन की स्वागत समिति [illegible] अध्यक्ष हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्[illegible] जी ने अपनी जीवन ज्योति मह[illegible] दयानन्द के प्रकाश से ही जल[illegible] थी और उन ही द्वारा प्रदर्शित मा[illegible] पर चलते हुए वीरगति पाई थी सन १६२० में कलकत्ता की स्पेश[illegible] कांग्रेस के अध्यक्ष पंजाब केस[illegible] श्री ला० लाजपतराय जी मह[illegible] दयानन्द को अपना गुरू, प[illegible] प्रदर्शक तथा नेता मानते थे। [illegible] तथ्य नितान्त निर्विरपुर्म

श्री डा० सत्यपालजी अमृतस[illegible] श्री ला० दुनीचन्द जी अम्बाल[illegible] तथा अन्य सहस्रों कांग्रेसी ने[illegible] तथा कार्यकर्ताओं ने सीधे तौर [illegible] महर्षि दयानन्द अथवा आ[illegible] समाज से ही देशभक्ति का प[illegible] पढ़ा था।

चौथी श्रेणी के आदि गुरू पण्डित श्याम जी कृष्ण वर्मा [illegible] जिन्हें स्वयं महर्षि दयानन्द दीक्षित करके योरुप में भेजा [illegible] आपने अंग्रेज की नाक के नी[illegible] लंदन नगर में शिक्षा ग्रहण [illegible] जाने वाले विद्यार्थियों को दे[illegible] भक्ति क्रांति की शिक्षा देने [illegible] लिये 'इण्डिया हाउस' नाम [illegible] संस्था परिस्थापित कर रखी थी आपके पट्ट-शिष्य स्वातन्त्र्य [illegible] श्री विनायक दामोदर सावर[illegible] महोदय हैं जो प्रभु [illegible] महती कृपा और राष्ट्र सौभाग्य से इस वृद्धावस्[illegible] और जीर्ण-शीर्ण शरीर से [illegible] निरन्तर जाति सेवा के यज्ञ [illegible] अपने प्राणों की आहुति देते [illegible] पथ-प्रदर्शन कर रहे हैं। (क्रमश

परमात्मा का चिन्तन....

(पृष्ठ २ का शेष)

परमात्मा की सत्ता की महत्ता की आने पर मनुष्य निष्पाप बनकर अक्षुसुखों को प्राप्त कर लेता है ? ए विश्व के नरतन धारियो ! इस भौतिक संसार में सार क्या है । इस बात को जानने का प्रबल प्रयत्न करो ? इस संसार में उन्हीं का जीवन धन्य है, वे जन दर्शनीय पूजनीय वंदनीय और अभिनवनीय हैं ? जिनका जीवन विश्व-कल्याण में लगता है या परमात्मा के चिन्तन और उपासना, प्रार्थना में लगता है । आओ । आज से हम आंजस्वी के समान करण, औ रघु, दधीची और भामाशाह-सा बेमिसाल दानी बनें ? आओ परमात्मा की उपासन और प्रार्थना के द्वारा हम पुनः वैदिक अपना चक्रवर्ती साम्राज्य स्थापित कर ? आओ आज की उषाकालीन हम परमात्मा की दिव्य, लीलाओं का दर्शन करें । आओ हम मन, वचन, और धर्म से सच्चे आर्य बनें । इसी क्षण में हम यह महाव्रत धारण करें कि हम परमात्मा की उपासना और प्रार्थना तथा यज्ञ, बिना अन्न, जल ग्रहण नहीं करेंगे । आओ पच महायज्ञों को करके हम जीवन को धन्य बनालें ? आओ हम चौरासी लाख योनियों के कारण दुःखों से बचने के लिए कुछ उपाय सोचें ? यह याद रखो कि मानव जीवन को व्यर्थ के विषय वासनाओं में बिता दिया और परमात्मा का चिन्तन करके अपने जीवन के अंतिम लक्ष्य को प्राप्त नहीं किया तो चौरासी लाख योनियों के चक्कर में घूमना पड़ेगा । अतः इस जीवन को सफल बनाने में लग जाओ । यह जीवन का सुवर्ण प्रभात है, यह सुखों का संदेश लाया है । एक रवि का प्रकाश उषा की किरणों में चमक रहा है । उषा थिरक रही है, कम कुम अमृत की वर्षा हो रही है । अमृत पान कर के अमर बनो । विश्व के मानव समाज के नाम अग्नी, वायु, आदित्य, अंगिरा का दिव्य संदेश दे रही है कि परमात्मा का चिन्तन करो और पढ़ो वेद, वैदिक युग का निर्माण करके धर्म, अर्थ, काम मोक्ष सुखों को प्राप्त कर के विश्व में अमर शांति या वैदिक साम्राज्य स्थापित करो । जीवन समर में में आगे बढ़ो, आत्म उन्नति कर ईश्वर चिन्तन को प्राप्त करो । यही जीवन का आज अमृतमय दिव्य संदेश है ।

मा... य,

सादर नमस्ते !

पंजाबी सूबा चाहे भाषा के आधार पर मांगा जा रहा है, परन्तु इस के तल में एक खालिस्थान की मांग है । जो हिन्दुओं सिक्खों की धार्मिक, पारिवारिक और सामाजिक एकता पर बज्र प्रहार है ।

पंजाब के अन्दर गुरुमुखी सरकार की ओर से ठोपी हुई अवश्य है, परन्तु आज तक भी सभ्य समाज में तो क्या, व्योपारिक, धार्मिक तथा व्यवहारिक क्षेत्र में भी स्थान प्राप्त नहीं कर सकी ।

आज भी पंजाब विश्वविद्यालय में (न्यूनिवर्स्टी) परीक्षा देने वाले विद्यार्थियों का माध्यम (Medium) पंजाबी वालों की अपेक्षा, हिन्दी वालों का कई गुणा अधिक है ।

भारत में १९६१ की जनगणना में पंजाब के लोगों की मातृभाषा जानने के लिये प्रत्येक व्यक्ति की मातृभाषा लिखी गई थी । जिसमें गुरुमुखी वालों से दुगणी संख्या हिन्दी वालों की थी ।

...बा सूबा द्वारा, सरदार हुकमसिंहजी स्पीकर लोक सभा, देहली

जैसे पाकिस्तानी मुसलमानों की बोली पंजाबी है, परन्तु उनकी मातृभाषा उर्दू है, वैसे ही पंजाब के हिन्दुओं की बोली चाहे पंजाबी है, परन्तु मातृ भाषा हिन्दी है ।

पंजाब में १९ जिलों में से ६ जिलों में पंजाबी-हिन्दी मिश्रित बोली जाती है । वह हैं:— लुधियाना फिरोजपुर, अमृतसर, पटियाला भटिण्डा और जालन्धर, परन्तु शेष १३ जिलों में हिन्दी का ही आधिपत्य है ।

भाषा के आधार पर पंजाब के विभाजन के विरुद्ध हिन्दु ही हों ऐसी बात नहीं है । देश भक्त सिक्ख भी भाषा के आधार पर पंजाब विभाजन के विरुद्ध हैं ।

पंजाब में एक उपहास चलता है, कि सिक्खों को उचित स्थान नहीं मिलता, परन्तु पंजाब में हिन्दुओं की संख्या अधिक होते हुये भी अधिक—अधिकारी सिक्ख हैं । हमें इसका दुःख नहीं, क्योंकि वह हमारे भाई हैं । हम एक ही माता के दो पुत्र हैं । हमें दुःख है तो विभाजन से ।

बहुत अज्ञानि सिख यह भी कह देते हैं, कि धोती टोपी यमुना पार जिस से उनके मन के भावों पर सन्देह होना स्वभाविक है ।

पंजाब विभाजन से जहां पंजाब का आर्थिक विकास रुक जायेगा, वहां सीमावर्ती प्रान्त होने से राष्ट्रीय एकता को भी धक्का लगेगा ।

पंजाब में ६५ प्रतिशत हिन्दु और ३५ प्रतिशत अन्य वर्ग के लोग रहते हैं । यदि ३५ प्रतिशत की बात ६५ प्रतिशत पर ... दी गई तो इसका भाव है, प्रजातन्त्र का गला घोटना ।

अतः हम सभी भारत के प्रान्तों को एक मालावत रहते हुए देखना चाहते हैं । यदि पंजाब का विभाजन भाषा के या जाति के आधार पर हुआ, तो उस का प्रभाव काश्मीर एवं अन्य प्रान्तों पर भी पड़ेगा ।

यदि पंजाबके और टुकड़े भाषा या जाति के आधार पर बनाने की कोशिश की गई तो हमें बड़े से बड़ा बलिदान करके एकता स्थापित रखेंगे ।

बाबू मूलराज	डा० संतराम
प्रधान आर्य समाज धुरी	प्रधान अनथंक धुरी
चौधरी दौलतराम	श्री दुर्गादास जी
प्रधान सनातन धर्म सभा धुरी	प्रधान जैन सभा धुरी

प्रेषक—पुरुषोत्तम लाल बी० ए०
मन्त्री आर्य समाज धुरी

आर्य समाज तलवाड़ा टाऊनशिप में ऋषिनिर्वाण उत्सव

तारीख २४-१०-६५ को समाज मन्दिर में बड़े उत्साह के साथ मनाया गया श्री पं० रक्षा राम जी M. A. M, L. A. का स्वामी जी के जीवन पर सार गर्भित व्याख्यान हुआ ।

आर्य प्रादेशिक सभा के भजनीक श्री मेला राम जी के मधुर भजन होते रहे । जिस का जनता पर अच्छा प्रभाव पड़ा । सभा को २०/- दीप माला फंड दिया गया । पं० मुन्शीराम जी की समाज सेवा सराहनीय थी ।

मुद्रक व प्रकाशक श्री सन्तोषराज जी आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर द्वारा वीर मिलाप प्रेस, मिलाप रोड जालन्धर से मुद्रित तथा कार्यालय आर्यजगत महात्मा हंसराज भवन निकट कचहरी जालन्धर शहर से प्रकाशित मालिक—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर



टैलीफोन नं० ३०५७ [आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधिसभा पंजाब जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd. No. P. 121

एक प्रति का मूल्य १३ नये पैसे वार्षिक मूल्य ६ रुपये

वर्ष २५ अंक ४७) ७ मार्गशीर्ष २०२२ रविवार—दयानन्दाब्द १४१— २१ नवम्बर १९६५ (तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

पाकिस्तान ने अब हमला किया तो ऐसा मारेंगे कि उसकी आने वाली पीढ़ियां लड़ाई का नाम न लें

चार करोड़ आदमी कुर्बान क्यो न करने पड़ें पाकिस्तान से कभी हार नही मानेंगे

श्री नन्दा की लुधियाना में सिंह गर्जना

केन्द्रीय गृह मन्त्री श्री गुलजारीलाल नंदा ने तालियों की गड़गड़ाहट के मध्य गर्जना की कि अगर पाकिस्तान ने पुन: भारत पर हमला किया तो उसे ऐसी मार पड़ेगी कि मौजूदा नसल तो एक ओर उसकी भावी सन्तान भी लड़ाई का नाम नहीं लेगी। कश्मीर की लड़ाई है, और भारत काश्मीर का एक इंच भी इलाका नहीं छोड़ सकता। आपने कहा कि पाकिस्तान द्वारा युद्ध-विराम का निरन्तर उल्लंघन जारी है। पता नहीं कब पुन: लड़ाइ छिड़ जाए। लेकिन भारत किसी भी स्थिति का सामना करने को तैयार है। देशवासियों से अपनी पुरातन एकता के उदाहरण को कायम रखने की आपने अपील की है।

पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज



जिनकी अमृतमयी कथा १९ नवम्बर से आर्यसमाज विक्रमपुरा समाज में सम्पन्न हो रही है।

वेद सूक्तय:

अपत्यं वृजिनं रिपुम्

हे वीर ! आप अप-दूर कर दो त्य उस वृजिनम्-पाप से भरा हुआ रिपुं-शत्रु को-जितने भी शत्रु हैं राक्षस तथा पाप फैलाने वाले अत्याचारी हैं जिनसे हानि होती है—हे वीर नायक ! आप अपनी शक्ति से, शस्त्र बल से उन सब पापी शत्रुओं को मिटा दो, भगा दो।

स्तेनमग्ने दुराध्यम्

हे वीर नर ! आग के समान शत्रुओं को भस्म कर डालने वाले अग्निमय नायक ! स्तेनम-चोर को, जो चोर बनकर चोर के समान हमारा घात करने आता है, भूमि, भवन भावना का हरण करता है जो दुराध्यम् दुष्ट है—उसे हे अग्नि मय वीर ! जला डाल, भस्म कर दे।

तपसा रक्षसो दह

वीर नेत: आप बलवान् और शक्ति से भरपूर हो। आप आग के समान शत्रु को तपाने वाले हो अपने तप से, सेना बल से तपा देने वाले अग्नि बाणों से राक्षसों को, मार काट करने वाले पिशाचों को तथा हत्यारों हिंसकों को अपने तप से दह-जला डालो, उनका दहन कर दो। अग्नि बनकर राख का ढेर कर दो।

सा म वे द से

अधिष्ठाता—श्री संतोषराज जी

सम्पादक—त्रिलोक

धार्मिक चर्चा :—

हमारा अभिष्ट : चित्त की एकाग्रता

(ले०—श्री सुन्दर लाल जी बोहरा जोधपुर)

हर व्यक्ति जीवन में शान्ति और स्वच्छन्दता की कामना करता है। जीवन में उत्तरोत्तर निखार कैसे आए, जीवन को परजनहिताय कार्यों में कैसे प्रवृत्त किया जाय, आत्मतत्व की अनुभूति करने के लिए जीवन को किस प्रकार के ढांचे में ढाला जाय—इन सब बातों का विचार और विवेचन व्यक्ति शान्तिमय और उन्मुक्त वातावरण में रहकर ही कर सकता है। चित्त की एकाग्रता पर वातावरण का विचारणीय प्रभाव पड़ता है।

चित्त की दूषित वृत्तियों का शमन चित्त की एकाग्रता द्वारा ही किया जा सकता है। जीवन और जगत का सही रूप से पहिचानने के लिए अन्तःकरण की निर्मलता अति आवश्यक है। चित्त की एकाग्रता के अभाव में अन्तःकरण हमेशा विक्षुब्ध रहता है।

जब व्यक्ति के अन्तःकरण में सम्भाव का स्रोत बहने लगता है तो उसके अंग-प्रत्यंगों में एक दिव्य स्फुर्णा होती है। व्यक्ति द्वैत भाव से ऊपर उठ जाता है। सुख-दुःख व मानापमान में उसके चेहरे की भाव-भंगिमा समान रहती है। ऐसे व्यक्ति के लिए समाधि की स्थिति प्राप्त करना सहज होता है। पूर्णता के निकट पहुँचने के लिए अन्तःकरण का निर्मल होना अत्यावश्यक है। जैसे काले कपड़े पर किसी तरह का अन्य रंग नहीं चढ़ सकता, ठीक उसी प्रकार कलुषित अन्तःकरण वाला व्यक्ति किसी भी प्रकार की साधना से फलान्वित नहीं हो सकता।

अन्तःकरण की शुद्धि तथा इन्द्रियों के निग्रह के लिये भारतीय दर्शन में अष्ट साधनों का विधान है। इन साधनों के सहारे ही मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार को नियन्त्रित किया जा सकता है। अन्तःकरण के इन चारों विभागों का जब पुरुष शमन कर लेता है तो उसकी समस्त ज्ञानेन्द्रियां व कर्मेन्द्रियां परम तत्व को समझने व उसे जीवन में उतारने के लिये अनुरक्त हो जाती हैं।

फिर तो जीवन के किसी भी प्रकार के ऊहापोह व्यक्ति को उस के पथसे विचलित नहीं कर सकता। व्यक्ति के जन्मजात दोष काम, क्रोध, लोभ, मोह व ईर्ष्या उसके पास ही नहीं फटक सकते। ऐसे व्यक्ति को कंचन व कामिनी शतांश में भी प्रभावित नहीं कर सकते। ऐसे व्यक्ति के सामने से स्वादिष्ट व्यजनों से भरा हुआ थाल भी यदि हटा लिया जाय तो व्यक्ति, क्षुधातुर होते हुए भी, थाल हटाने वाले व्यक्ति के प्रति किसी भी प्रकार का रोष प्रदर्शित नहीं करेगा।

योग के अष्ट साधनों में आहार अपना विशिष्ट स्थान रखता है। प्रसिद्ध है : जैसा खाए अन्न वैसा होए मन। तामसी तथा राजसी भोजन करने वाले व्यक्ति के लिये शांत रहना सहज नहीं है। दूषित तथा बासी भोजन करने वाले व्यक्ति का रक्त हमेशा उष्ण तथा खुश्क बना रहता है। और जब मस्तिष्क में विकारमय रक्त पहुंचता है तो व्यक्ति की बुद्धि भी विकारमय होने से नहीं बच सकती। 'बुद्धिः नाशात प्रणश्यति।'

अतः साधक को चाहिए कि वह सादा व मिर्च मसालों से रहित भोजन करे। इससे अन्तःकरण का सन्तुलन बना रहता है, और चित्त की एकाग्रताके लिए अन्तःकरण का सन्तुलित रहना नितान्त आवश्यक है।

जीवन के लिए भोजन ही एक ऐसी वस्तु है जिससे व्यक्ति की इन्द्रियां अप्रभावित नहीं रह सकतीं। सही रूप से देखा जाय तो योग के अन्य सात साधनों की सफलता व्यक्ति के आहार की प्रकृति पर ही निर्भर है। व्यक्ति का जैसा अन्न होगा उसका विहार भी तदनुरूप ही होगा—इसमें दो राय नहीं हो सकती।

जब अन्तःकरण निर्विकार एवम् सन्तुलित हो जायगा तो साधक के लिए समाधि की स्थिति प्राप्त करना कोई कठिक काम नहीं रह सकता। वह बिना किसी प्रकार की तितिक्षा के समाधि की स्थिति तक पहुंच सकता है। ऐसा व्यक्ति जिधर भी चाहे उस दिशा में अपना ध्यान कर सकता है।

इतिहास में महान व मानवता के निखरे हुए व्यक्तित्व का पोषण चित्त की एकाग्रता द्वारा ही हुआ है। ठीक ही कहा गया है :—

'एक: साधे सब सधे,
सब साधे सब जाय।'

एकाग्र चित्त वाले व्यक्ति का अन्तःकरण एक निर्मल दर्पण के तुल्य हो जाता है।

जिस प्रकार एक गुलाब के पुष्प की पंखुड़ी पर किसी उर्वशी की नाजुक अंगुली छू जाय तो उसका प्रभाव पंखुड़ी पर स्पष्ट प्रतीत हो जाता है, ठीक उसी प्रकार एक निर्मल अन्तःकरण में विकार का यदि तनिक भी अंश प्रवेश करने की चेष्टा करे तो ऐसा व्यक्ति सचेत हो जाता है—किंबहुना वह हमेशा सजग ही रहता है। उसके चित्त की चंचलता प्रशान्त हो जाती है।

ऐसा पुरुष जगत् के कार्यों में लोगों को आसक्त प्रतीत होता है, लेकिन वस्तुतः वह हर क्रिया के प्रति अनासक्त व उदासीन ही रहता है। ऐसा व्यक्ति शरीर धारण करते हुए भी जीवन्मुक्त रहता है। जीवन भी ऐसे व्यक्ति का धन्य व अनुकरणीय होता है। हर साधक का अभीष्ट ऐसे व्यक्तित्व की प्राप्ति करना ही होना चाहिए।

सम्पादकीय—

आर्य जगत्

वर्ष २५] रविवार २०२२, २१ नवम्बर १९६५ [अंक ४८

हम भी शिक्षा लेवें

समाचार प्रकाशित हुआ है कि नई देहली के पोलैण्ड राजदूतालय में एक लड़की ने किसी बात को लेकर अंगरेजी में पत्र लिखा किन्तु दूतावास के प्रबन्धकों ने वह पत्र उस बहिन को वापस लौटाते हुए लिखा कि आप अपनी राष्ट्रिय भाषा हिन्दी में पत्र लिखें। अंगरेजी आपके देश की भाषा नहीं है। यह समाचार कितने महत्व का है और इस से हमें कितनी शिक्षा मिलती है। एक ओर तो हमारी राष्ट्रभाषा के प्रति क्या भाव है ? हम अपने देश में रहते हुए भी अपनी भाषा के साथ कितना प्रेम करते हैं। राष्ट्र की भक्ति के साथ २ भाषा की भी कितनी भक्ति है—इस का भली-भान्ति परिचय मिल जाता है। प्रत्येक देश की अपनी भाषा होती है। राष्ट्र की प्रत्येक वस्तु के सम्मान के समान ही उसकी भाषा भी देश वासियों को बड़ी प्यारी होती है। भाषा में ही तो उस २ राष्ट्र की संस्कृति निहित होती है। विदेशी शासन जिस किसी देश की भूमि पर आता है, वहां पर अपनी भाषा के प्रचार प्रसार का पूरा प्रबन्ध करता है ताकि उसके द्वारा शासित जनता शासकों की संस्कृति के रंग में रंग जाये। भारत के साथ भी ऐसा ही हुआ। अंगरेजी सत्ता जब यहां पर छाई। अपनी भाषा भी साथ लाई। लगभग दो सौ वर्षों तक उसने अपनी भाषा के प्रचार में सारी शक्ति लगा दी। इस का परिणाम यह निकला कि भारतीय लोग विदेशी भाषा अंगरेजी पढ़ना लिखना तथा बोलना गौरव की बात मानने लगे। उनके परिवार व व्यवहार में अंगरेजी समा गई। विदेशी शासन की समाप्ति पर भारतीय संविधान में हिन्दी को राष्ट्र भाषा माना गया। अंगरेज तो चले गये। किन्तु उनके मानस पुत्र तो भारत में बैठे ही हैं। शारीरिक दासता तो समाप्त हो गई पर मानसिक दासता तो बनी रही। लोगों का अंगरेजी मोह बना ही रहा।

भारत के इस प्रकार के लोगों पर कितनी बार व्यंग्य भरी चोट की गई कि अपनी भाषा पर गौरव करना सीखो। किन्तु खेद है कि ये इंगलिश के मानसपुत्र अभी तक समझते नहीं। उनकी आंखे नहीं खुलतीं। छोटा से छोटा देश भी अपनी भाषा पर गौरव अनुभव करता है पर खेद है कि भारत में अंगरेजी भक्त अभी तक भी अपनी भाषा पर गौरव अनुभव नहीं करते। कितना अपमान है राष्ट्र की भाषा का ? आज नगरों में देखें तो कितनी दुकानों के नाम यह अपनी राष्ट्रिय भाषा में मिलते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि हम इंगलैंड में घूम रहे हैं। अंग्रेजी अभी तक हमारी नस २ में विराजमान है। परिवारों में, बोलचाल में, कार्यव्यवहार में इसी का बोल बाला है। हमें दूसरे लोग लज्जित करते हैं पर लज्जा नहीं आती। पोलैण्ड छोटा सा देश है किंतु उस के दूतावास से अंग्रेजी पत्र को लौटा या जाना क्या हमारे मस्तक को झुका नहीं देता अठारह वर्ष बीत गये परन्तु हम ने अभी तक अपने देश की भाषा को नहीं अपनाया। आज भी बड़ी २ संस्थाओं के समारोहों का कार्यक्रम अंगरेजी में चलता है। निमन्त्रण पत्र भी विदेशी भाषा में। आर्यसमाज भी इस दिशा में उसी मार्ग पर चलता है। इस उदाहरण से हमारी आंखें खुलें तथा हम भी राष्ट्रभाषा के प्रेम की शिक्षा लेवें।

—त्रिलोक चन्द्र

आर्यसमाज विक्रमपुरा का महापर्व

जालन्धर नगर आर्य प्रादेशिक सभा का केन्द्र है। सभा का कार्यालय राष्ट्रविभाजन के बाद यहां पर आया है। इस पंजाब के विशाल, प्रसिद्ध नगर में आर्यसमाज की बड़ी २ संस्थाओं की विशाल शिक्षण छावनियां काम करती हैं। पंजाब के आर्यसमाजी नेताओं के दैनिक पत्रों का भी केन्द्र स्थान है। समाज के प्रचार का महान क्षेत्र बना है इसी नाते यहां पर आर्यसमाज का वार्षिक उत्सव भी एक महान् पर्व का रूप धारण कर गया है। सभा से सम्बन्धित आर्यसमाज विक्रमपुरा का महोत्सव एक केन्द्र के पर्व में मनाया जाता है। तीर्थ बन गया है। चारों कोनों से यात्री चलकर महोत्सव में बड़ी श्रद्धा से पधार कर अपना कर्तव्य निभाते रहते हैं। अनेकों समाजें, स्कूलों के छात्र तथा जनता इस महामेले में भाग लेती है। इसका जलूस तो समाज की शक्ति का परिचायक हो जाता है कि आर्यसमाज का कितना भारी संगठन व बल है। अनेकता में एकता, शतपथ में एक पथ के दर्शन हो जाते हैं समाज के अधिकारी भी इस महामेले को सफल बनाने में दिन रात एक कर देते हैं। समाज के इस समय के वयोवृद्ध नेता डा० हुकमचंद जी को इस बड़ी अस्वस्थ अवस्था में भी समाज के कार्यों में दौड़ता हुआ देखते हैं तो श्रद्धा से मस्तक झुक जाता है। महोत्सव में पधारने वाले समाज के महान नेताओं के अनुभव भरे प्रेरणादायक प्रवचनों को संकलित करके 'आर्यजगत्' के द्वारा जनता तक पहुंचाने का काम भी प्रतिवर्ष जारी है, ताकि बाहर की जनता को भी यह मीठा प्रसाद मिल सके। इस बार पंजाब के युद्ध के कारण तथा बाद में पंजाबी सूबा के आन्दोलन के कारण वातावरण बड़ा धूमिल है। आर्यसमाज सदा से जनता का नेतृत्व करता आया है। यह महामेला भी इस बार विशेष चेतना व सन्देश देने वाला होगा। बड़ी प्रसन्नता का समाचार है कि इस बार आर्य समाज विक्रमपुरा जालन्धर के महोत्सव पर आर्यजगत् के परमसन्त महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज ता० १६ नवम्बर शुक्रवार को अपनी अमृतमयी कथा आरम्भ कर रहे हैं। महात्मा आनन्द भिक्षु जी महाराज यज्ञ प्रारम्भ करेंगे। दोनों विभूतियों के अतिरिक्त उत्सव में महान फिलास्फर डा० दीवान चन्द जी एम. ए. कानपुर, पं० प्रकाशवीर जी शास्त्री एम. पी., श्री यश जी प्रधान आर्य प्रादेशिक सभा, वीर यज्ञ दत्त जी शर्मा, प्रि० सूर्यभानु जी वायस चांसलर पञ्जाब यूनिवर्सिटी चण्डीगढ़, डा० गोवर्धन लाल जी दत्त प्रधान दयानन्द कालेज कमेटी दिल्ली, प्रिंसिपल रलाराम जी एम. ए. तथा अन्य मान्य विद्वान् महारथी सज्जनाचार्य पधार रहे हैं। बड़ा भारी मेला है। समारोह देखने वाला है। इस धूमिल वातावरण में विशेष कार्यक्रम होगा। इस लिए इस समय इस तीर्थ यात्रा के लिए अभी तक तैयारी कर लेवें। सारे वर्ष का सन्देश मिलेगा। अपने को वंचित न रखें —त्रिलोकचन्द्र

छम्ब और तिथवाल क्षेत्रों में पाकिस्तान अपनी सेना के तोपखाने की नियमित रेजीमेंट ले आया और अपनी हवाई निरीक्षण-चौकियों की मदद से हमारी चौकियों पर जबरदस्त गोलाबारी शुरू कर दी। पिछले कुछ सप्ताहों में पाकिस्तान ने, युद्ध-विराम-रेखा के लगभग सभी क्षेत्रों में गोलाबारी में वृद्धि कर दी।

पाकिस्तान प्रवक्ता के रूप में

पाकिस्तान बार-बार इस बात से इन्कार और इस बात का जबरदस्त विरोध करता रहा है कि कश्मीर के हमले में उसका हाथ है। परन्तु दिन-प्रतिदिन इसका अधिकाधिक पर्दा फाश होता जा रहा है और वह अपने असली नग्न रूप में दिखाई देने लगा है। कानून, सूचना और कश्मीरी मामलों के पाकिस्तानी मन्त्रियों ने जो बयान दिए हैं, उनका विश्लेषण करने पर मालूम होगा कि जैसे-जैसे उनका असली रूप सामने आता चला गया। ५ अगस्त, १९६५ से, अर्थात् जब से कश्मीर पर हमला शुरू हुआ है, पाकिस्तान ने घुसपैठियों के लिए अधिकृत प्रवक्ता का काम किया। पाकिस्तान रेडियो और अखबार घुसपैठियों के कारनामों के बारे में बराबर चर्चा करते रहे हैं। इसके अलावा, अपने को 'सदा-ए-कश्मीर' कहने वाला एक रेडियो-स्टेशन पाकिस्तान-अधिकृत कश्मीर में मुज़फ्फराबाद से ६ मील दूर 'खारी' नामक स्थान से ऊलजलूल खबरें प्रसारित करता रहता है। यह रेडियो-स्टेशन पाकिस्तानी अधिकारियों के कमान और नियन्त्रण में काम करता है।

'सदा-ए-कश्मीर' जम्मू और कश्मीर में जनता के विद्रोह की

(जन-साधारण की जानकारी के लिए आवश्यक लेख)

प्रति सप्ताह क्रमश: भेंट किया जाएगा

कश्मीर को हड़पने का पाकिस्तान का ताज़ा प्रयत्न

जो कथित खबरें देता रहा है और जिनकी भनक बराबर पाकिस्तान के अखबारों और रेडियो से भी मिलती रही है, उसको जम्मू और कश्मीर की जनता ने झूठा साबित कर दिया है। जनता ने अधिकारियों को महत्वपूर्ण सूचना और जानकारी दी है, जिससे घुसपैठियों को तलाश करने और पकड़ने में बड़ी आसानी रही है। कई बार गांव वालों ने खुद घुसपैठियों को पकड़ लिया और उन्हें पुलिस के हवाले कर दिया।

बन्दी बनाए गए अफसर

पाकिस्तान के जो अफसर और फौजी गिरफ्तार किए गए हैं, उनसे पूछताछ के दौरान बहुत-सी ऐसी बातें मालूम हुई हैं, जिन से स्पष्ट होता है कि उनके हमलों के पीछे पाकिस्तान का हाथ है। इनमें से कुछ के बयान टेप रिकार्ड भी कर लिए गए हैं। इसी पूछताछ के आधार पर भारतीय सुरक्षा-सेना को हमलावरों का सफाया करने में मदद भी मिली है। घुसपैठियों का नेतृत्व करने वाले जिन अफसरों ने युद्ध-विराम-रेखा पार की है उनमें से एक अफसर ३८ वर्षीय कैप्टेन मोहम्मद सज्जाद (पी० एस० एस० ४४७८) है। इसका सम्बन्ध पहले पाकिस्तानी सेना की ८वीं बिलौच रेजीमेण्ट से था, और बाद में इसे पाकिस्तानी सेना की १८वीं 'आजाद कश्मीर बटालियन' में नियुक्त कर दिया गया। यह पश्चिम पाकिस्तान के जिला मुलतान का रहने वाला है और १९५१ में अफसरों के ट्रेनिंग लेने के बाद इसे सेना में कमीशन दिया गया। कैप्टेन सज्जाद ने युद्ध-विराम-रेखा पार करने वाले घुसपैठियों की कम्पनी का नेतृत्व किया टेप-रिकार्ड किए गए अपने बयान में उसने कहा कि उस अनियमित सैनिकों की एक कम्पनी को १५ दिन के अन्दर ट्रेनिंग देने का काम सौंपा गया था। ये अनियमित सैनिक उसके अनुसार नागरिक थे और पुलिस ने उन्हें जबर्दस्ती भर्ती होने पर मजबूर किया था। ट्रेनिंग के दौरान अधिक-से-अधिक समय हमला करने, घात लगाने और गुरिल्ला लड़ाई के तरीके सिखाने पर लगाया गया था। कैप्टन सज्जाद ने बताया कि इन सब कम्पनियों की कमान १२वीं पैदल सेना के जनरल अफसर लेफ्टीनेन्ट जनरल अख्तर हुसैन मलिक के हाथ में थी जिसने पहली अगस्त को (हमला शुरू होने से पहले) कोटली में सारे कम्पनी-कमाण्डरों को बुलाया और उन से बातचीत की।

एक दूसरे बन्दी अफसर पाकिस्तानी सेना की 'आजाद' कश्मीर की ८वीं पैदल बटालियन के कैप्टेन गुलाम हुसैन ने इस बात को स्वीकार किया है कि घुसपैठियों को इस बात पर बहुत निराशा हुई है कि जम्मू और कश्मीर के लोगों ने उनके काम में इस प्रकार सहयोग नहीं दिया है, जिस तरह कि पाकिस्तानी अधिकारियों ने उन्हें बताया था कि वे करेंगे। उसने कहा कि इससे घुसपैठियों को बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ा। २८ वर्षीय कैप्टेन गुलाम हुसैन की शिक्षा-दीक्षा लाहौर के फोरमैन क्रिश्चियन कालेज में हुई। यह उस सेना' की कम्पनी का कमान कर रहा था जिसे पुल को तोड़ने और एक ब्रिगेड के मुख्यालय पर हमला करने का काम सौंपा गया था। ये लोग अपना काम पूरा नहीं कर सके क्योंकि युद्ध-विराम-रेखा पार करते ही भारतीय सुरक्षा सेनाओं ने इन्हें गिरफ्तार कर लिया। कैप्टेन गुलाम हुसैन ने टेप रिकार्ड की गई बातचीत के दौरान बताया कि उसके साथ जो नागरिक थे, वे अपनी स्वेच्छा से नहीं आए, बल्कि उनसे कहा गया कि यह वक्त की पुकार है और तुम्हें इस का मुआवजा दिया जाएगा। इन लोगों को १२० रु० प्रति व्यक्ति और मुफ्त राशन दिया गया। हर व्यक्ति के पास ५ दिनों के लिए सूखा राशन था। कैप्टेन हुसैन के पास स्थानीय खरीद - फरोख्त के लिए ६,००० रु० थे।

सिपाही मोहम्मद अफजल से की गई बातचीत भी टेप-रिकार्ड कर ली गई थी। इस पाकिस्तानी घुसपैठी ने बताया कि उसने बादशाह अयूब के हुक्म से युद्ध-विराम-रेखा पार की है।

विश्व-मत पाकिस्तान के विरुद्ध

बहुत-से विदेशी सम्वाददाताओं ने खुद मौके पर जाकर खबरें भेजने के लिए श्रीनगर और अग्रिम मोर्चों का दौरा किया। उन्होंने अपने अखबारों को जो खबरें भेजी हैं, उनमें जाहिर है कि जम्मू और कश्मीर में हमलावर पाकिस्तान की पूरी मदद और समर्थन से घुसे हैं। उन्होंने यह भी समाचार भेजा है कि जम्मू और कश्मीर की जनताने घुसपैठियों का साथ नहीं दिया है। इससे पाकिस्तान की आशाओं पर पानी फिर गया है। (क्रमशः)

कर्मशील बनो—

सफलता सोपान नं० ३

ले. श्री ओमप्रकाश जी महोपदेशक आर्य प्रादेशिक सभा जालधर

ओ३म् इन्द्रं वर्धन्तो अप्तुरः कृण्वन्तो विश्वमार्यम्। अपघ्नन्तो अराव्णः ॥

'अप्तुरः' शब्द के आधार पर कुछ विचार हम गत सप्ताह पाठकों की सेवा में उपस्थित कर चुके हैं शेष भाव तथा मन्त्र गत अन्य विचार आज उपस्थित कर रहे हैं। पाठक ध्यान पूर्वक पढ़ें और विचारें।

पहले स्पष्ट किया जा चुका है कि वेद में कर्म शब्द का प्रयोग सदैव सतकर्म के लिए ही होता है विकर्म या अकर्म के लिए नहीं। विचाराधीन मन्त्र में 'अप्तुर' कर्मशील बनो कह कर आगे के तीन पदों द्वारा कर्म का क्षेत्र भी निश्चित कर दिया गया है। वे तीन पद निम्न हैं—

(क) इन्द्रं वर्धन्तः—प्रभु महिमा का विस्तार करते हुए।

(ख) अपघ्नन्तः अराव्णः—अदान भाव वाले कृपणों-परिग्रह द्वारा समाज का शोषण करने वालों तथा हिंसा के द्वारा सदा दूसरों को पीड़ित करने वालों का विनाश करते हुए।

(ग) कृण्वन्तो विश्वमार्यम्—सारे संसार को आर्य श्रेष्ठाचारी उदार प्रभु भक्त बनाओ।

यह है हमारे कर्म का कार्यक्षेत्र।

सब से पहले हमें अपने कर्मों का विस्तार भगवन्नाम के प्रचार प्रभु भावके विचार और तदनुसार आचार सुधार की ओर करना अपेक्षित है। हमारे प्रत्येक कर्म के द्वारा परमात्म भाव में वृद्धि होनी चाहिए। हमारी संध्या-हमारा हवन-यज्ञ हमारा संकीर्तन हमारी उपासना, हमारा वेद पाठ या अन्य भी जो कुछ हम उपासक बनकर करें ऐसा होना चाहिए जो अन्य लोगों को प्रभावित करने वाला हो। वे अनुभव करें कि संध्या करने वालों में यज्ञ रचाने वालों में, भजन कीर्तन जप-उपासना करने वालों में परमात्मा के पवित्र गुण स्पष्ट रूपेण उतरे हुए हैं। उपासक बनकर कोई असत्य, अन्याय, अत्याचार लोभ, द्रोह-द्वेष-क्रोध, आसक्ति भाव तथा ईर्ष्या आदि अविद्या द्वारा उत्पन्न होने वाले दुर्गुणों का कैसे शिकार हो सकता है। यदि हमने अपने इन सत्कर्मों को सचमुच ही सत्कर्म बनाना है तो हमें परमात्म-भाव को अपने अन्दर धारण करना होगा। इसके विपरीत यदि हम संध्या-हवन-भजन कीर्तन, वेद-पाठ सभी कुछ करते हुए असत्य-अनाचार तथा काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, अहंकार के ही दास बने रहे तो हम परमात्माके भाव का विस्तार न कर सकेंगे। लोग हमें देखकर न केवल हमसे दूर भागेंगे। अपितु परमात्मा के भी निकट न आ सकेंगे।

सच तो यह है कि परमात्मा की सत्ता पर विश्वास न रखने वालों ने इतना लोगों को प्रभु से दूर नहीं किया जितना कि परमात्मा का ढोल पीटने वालों ने ?

इस लिए सब से बड़ी आवश्यकता चरित्र सुधार की है। हमारा जीवन संध्या हवन आदि अनुरूप होना चाहिए। हमारा अपने ऊपर पूर्ण विश्वास होना चाहिए। जो व्यक्ति अपनी दृष्टि में ही नहीं जंचता, अपने जीवन का खरापन जिस में मस्ती उत्पन्न नहीं करता, जो गर्व और उचित आत्म-अभिमान से समाज में सिर ऊंचा नहीं उठा सकता—जानो वह केवल सांस ले रहा है वास्तव में मर चुका है। ऐसे आचरण वाले व्यक्ति का जीवन मुर्दे के समान है जो केवल दुर्गंध फैला रहा है।

दूसरे पद का आदेश है—अदान भाव की कृपणता का, हिंसा का, अत्याचार और अन्याय का विनाश करना।

हम अच्छी तरह न जानते हैं कि संसार में रहते हुए हम बराबर अन्यों की सहायता प्राप्त करते हैं। कुछ सहायता हमें—हमारे जैसे चेतनों से प्राप्त होती है और कुछ जड़ पदार्थों द्वारा। सूर्य, चन्द्र, जल, वायु, पृथ्वी आदि सभी हमें जीवनी शक्ति का दान देते हैं। इनकी सहायता के बिना हम एक क्षण भी जीवन धारण नहीं कर सकते। इन दिव्य शक्तियों के प्रति हमारा कर्त्तव्य क्या है इस पर विचार करने का हम में से बहुत कम लोग यत्न करते हैं। सब से पहली शिक्षा इन जड़ परन्तु कल्याणकारी देवों से हमें यह मिलती है कि हम एक दूसरे का सहयोग करना सीखें और यह सहयोग या सहायता का भाव ऊंच-नीच-छोटाई-बड़ाई के भाव को नष्ट कर देता है। ये शक्तियां उत्पत्ति करती हैं, रसों का संचार करती हैं उत्पन्न हुई वस्तुओं की सुरक्षा भी करती हैं और उन्हें हमारे-हम चेतनों के उपभोग के योग्य बनाती हैं। इस सारे क्रिया कलाप में इनका अपना कोई स्वार्थ नहीं होता फिर भी अहर्निश इसी पवित्र कार्य में लगी रहती हैं। यह निष्कामता और निरीहता का सुन्दर पाठ है जो इन दिव्य शक्तियों से हम पढ़ सकते हैं! हम चीजों को गन्दा कर देते हैं उनको शुद्ध करना भी ये अपना कर्त्तव्य समझती है। तनिक विचारिए तो-हमारे द्वारा की हुई गन्दी वस्तुएं-जल-वायु-या अन्य भौतिक पदार्थ यदि उसी रूप में उतनी ही विष को लिए हुए हमें मिलने शुरू हो जायें तो हमारी स्थिति क्या होगी। क्या हम प्राणों को धारण कर सकेंगे ?

यह तो जड़ देवताओं के दान की थोड़ी-सी बात आपके विचारार्थ आपके समक्ष उपस्थित की है अब आइये-चेतनों द्वारा जो कुछ हमें प्राप्त होता है उस पर भी कुछ विचार करते चलें—

प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन निर्वाह की सारी सामग्री अकेला अपनी शक्ति के आधार पर कभी भी नहीं बना सकता यह असम्भव है कैसे ? सुनिये ! आप कपड़े पहनते हैं, भोजन करते हैं, मकान में रहते हैं, विद्याध्ययन करते हैं, औषधोपचार भी कभी-कभी आवश्यक हो जाता है—कुछ मनोरंजनार्थ भी अपेक्षित हुआ करता है। क्या इन सारी वस्तुओं को आप अपने लिए अकेले बना सकते हैं। इन वस्तुओं में से किसी एक की कहानी भी यदि आप विस्तार से जानना चाहेंगे तो आप का मस्तक सुनते-सुनते या विचारते-विचारते थक जायेगा—मत समझिये कि जो वस्तु हम बाजार से खरीद कर लाये हैं उसका उतना ही मूल्य है। उस वस्तु के इस रूप तक पहुँचाने में कितने ही श्रमिकों का, धनिकों का, विचारशील वज्ञानिकों का तथा अन्य सहयोगियों का शरीर बल, धन बल, बुद्धि बल आदि लगे हैं तब कहीं जाकर आप बाजार से उसे खरीद सके हैं। इसलिए जब अन्य सभी हमारी आवश्यकताओं को ध्यान में रख कर हमारे लिए कुछ न कुछ उत्तम सामग्री बनाने में लगे हुये हैं तब हमारा कर्तव्य क्या केवल उदरपूर्ति ही है या हमें भी अन्यों की भान्ति अभाव को दूर करने के लिए कुछ काम करना चाहिए।

यह प्रश्न है जिस पर जब आप इस व्यापक दृष्टिकोण को

(शेष पृष्ठ ६ पर)

हिसार समाज का महा मेला

हिसार का सारा इलाका आर्य समाज का केन्द्र है। ग्राम-ग्राम में आर्यसमाज है । स्वर्गीय पूज्य महात्मा हंसराज जी का हिसार के साथ तो विशेष स्नेह था । स्वयं लाहौर से चलकर वहां के उत्सवों में शामिल होते थे । हिसार में आर्यप्रादेशिक सभा के काम का बड़ा विस्तार है । तपस्वी सन्त महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज भी हिसार के ग्रामों के जल्सों पर पैदल घूमते रहे । आज भी हिसार में विशाल दयानन्द कालेज एक छावनी है जिसमें प्रिंसिपल देवराज जी गुप्ता बैठे शिक्षा का काम कर रहे हैं । सी. ए. वी. स्कूल प्रि० गिरधारी लाल जी की देख-रेख में काम करता है । आर्य-कन्या हाई स्कूल तपस्वी पं० जगन्नाथ जी के आचार्यत्व मे प्रगतिशील है तथा दयानन्द ब्राह्म-महाविद्यालय आचार्य तपो-मूर्त्ति प्रिंसिपल ज्ञानचन्द जी की अध्यक्षता में शानदार कार्य कर रहा है। यहां का आर्यसमाज स्वयं एक विशाल आन्दोलन है। आर्यसमाज की प्रसिद्ध विभूतियां मे बख्शी राम कृष्ण जी, बा. प्रकाश चन्द जी, सेठ छबीलदास जी, पं० मुरारी-लाल जी शास्त्री आदि तथा अथक कार्यकर्त्ता सेठ फतह चन्द जी पंडित देवराज जी एडवोकेट, श्री. नन्दलाल जी, मन्त्री, चौधरी नत्थनराम जी, श्री दीन दयाल जी, चौ केसरदास जी आदि समाज सेवा में लगे हैं ।

आर्य समाज का उत्सव का समारोह भी धूमधाम से होता है। इस बार महोत्सव में आर्य समाज के तपस्वी देवता प्रिंसिपल रलाराम जी एम० ए०, प्रसिद्ध महारथी कवर सुखलाल जी आर्य मुसाफिर श्री पं० वाचस्पति जी शास्त्री गुरुकुल ज्वालापुर, पं० त्रिलोक चन्द्र शास्त्री पं० राजपाल मदनमोहन मंडली, पं० मेलाराम जी रेडियो सिंगर, पं० प्रभुदयाल जी की मंडली, पं० आशानन्द जी आदि पधारे। नगर कीर्तन तथा उत्सव समारोह बड़े ही धूमधाम से सम्पन्न हो गया। सारे नगर में आर्य समाज का धूम मच गई। जनता उमड़-उमड़ कर आती थी। भिवानी अनाथालय के बच्चों तथा आर्य कन्या पाठ-शाला के बच्चों का प्रोग्राम भी कमाल का था। ब्राह्म महाविद्यालय के छात्रों का उत्साह भी खूब था। सभा को वेद प्रचार आदि में आर्य समाज तथा दयानन्द कालेज से ५००/- रु० मिला। हिसार पर सभा को मान है।

आर्यसमाज विक्रमपुरा जालन्धर

वार्षिकोत्सव १९ नवम्बर से २८ नवम्बर ६५ तक विक्रमपुरा समाज के नवीन भव्य मन्दिर में मनाया जा रहा है। १९ नवम्बर से २५ नवम्बर तक रात के ८ से १० बजे तक पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज की अमृतवर्षा हुआ करेगी। नगर कीर्तन २७ नवम्बर शुक्रवार को **H/S** स्कूल के विशाल मैदान से प्रस्थान करेगा। यज्ञ, पूज्य महात्मा आनन्दभिक्षु जी महाराज द्वारा २२ नवम्बर से २६ नवम्बर तक विक्रमपुरा माई हीरांगेट के मन्दिर में होगा। २७ और २८ नवम्बर को साईंदास स्कूल के अन्दर वाले मैदान में होगा। राष्ट्ररक्षा सम्मेलन २८ नवम्बर बाद दोपहर श्री यश जी सभा प्रधान की अध्यक्षता में सम्पन्न होगा। महिला समाज का उत्सव २६ नवम्बर नया समाज मन्दिर में होगा।

आर्य समाज बाजार सीताराम देहली

वार्षिक उत्सव २०, २१ नवम्बर १९६५ को रामलीला मैदान में सम्पन्न हुआ। १२ नवम्बर से १९ नवम्बर तक श्री ठा० अमरसिंह जी आर्यपथिक की समाज मंदिर में कथा होती रही। २२ नवम्बर को दोपहर १२ बजे से ५ बजे शाय तक आर्य स्त्री समाज का उत्सव मनाया गया।

२० और २१ नवम्बर को रामलीला मैदान में उत्सव का प्रोग्राम मनाया गया जिस में म० आनन्दभिक्षु जी, पं० रामचन्द्र जी देहली हरिशरण जी सिद्धांता-लंकार, स्वामी रामेश्वरा नन्द जी, पं० भगवद्दत जी वैदिक अनुसन्धान-कर्ता, आदि महानुभावों के सार गर्भित व्याख्यान होते रहे रात्रि को ७ से १० बजे तक राष्ट्र रक्षा सम्मेलन श्री सत्य नारायण सिन्हा संसद सदस्य एवं संचार मन्त्री की अध्यक्षता में सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। —गौरीशंकर भारद्वाज

मन्त्री समाज

आल इंडिया दयानन्द साल्वेशन मिशन होशयारपुर

पं० सुखदेव जी भजनोपदेशक पलवल निवासी को आल इंडिया दयानन्द साल्वेशन मिशन होशयार-पुर ने जिला गुड़गावां में प्रचारार्थ नियुक्त किया है। जिला की तमाम आर्यसमाजों से प्रार्थना है कि वह पंडित जी को अपना सहयोग देकर पुन्य के भागी बनें।' —शुभ चिन्तक

रामदास प्रधान मिशन

देश हमारा जिंदावाद

भारत भर में चारों ओर, जिधर देखिए है यह शोर
बच्चे, बूढ़े और जवान, सब कहते हैं एक जवान
देखे दुनिया देखे आज, हिला दिया दुश्मन का राज
घर घर गूंज रहा जयनाद।
देश हमारा जिन्दावाद ॥

बढ़े जहां भी वीर हमारे, दिखा दिए दिन में ही तारे
टूटे सभी हौंसले टूटे, नापाकों के छक्के छूटे
छिपने को भी मिली न ठौर, छोड़ भगे कायर लाहौर
घर घर गूंज रहा जयनाद।
देश हमारा जिन्दावाद ॥

तुम भारत माता के लाल, तुम से स्वयं कांपता काल
तुम हो इन प्राणों के प्राण, तुम मेरी धरती की शान
देश दिवानों तुम्हें बधाई, वीर जवानों तुम्हें बधाई
घर घर गूंज रहा जय नाद।
देश हमारा जिंदावाद ॥

—विजय निर्बाध

सफलता सोपान

(पृष्ठ ५ का शेष)

सामने रखते हुए विचार करेंगे तो अदान भाव-हिंसा-छल कपट अनु-दारता और परिग्रह आदि राक्षसी भाव आपके समीप तक न आ सकेंगे। इन राक्षसी भावों का विनाश हमारा परम कर्त्तव्य है इस कर्म को किए बिना हम—

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का सुख स्वप्न कभी भी साकार न कर सकेंगे।

जो व्यक्ति कर्मशील है सच्चा आस्तिक है, दाता-उदार एवम् सत्याचारी है वह ही आर्य है और अन्यों को आर्यत्व का पाठ पढ़ा सकता है।

स ... १८५ सरस्वती

(ले० ... आ०स० लोहगढ़ अमृतसर)

(गतांक से आगे)

आपको देशभक्ति के अपराध में कालिज से निकाला गया, जहां आपने गांधी जी द्वारा विदेशी वस्त्रों को जलाने के आन्दोलन से चौथाई शताब्दि पूर्व पूना नगर में विलायती कपड़ों की एक भारी होली जलाकर अपने गुरु भगवान बाल गंगाधर तिलक को चकित कर दिया था। देश में सशस्त्र क्रान्ति का प्रचार करने के अपराध में आपको ५० वर्ष अर्थात दो जन्मों की सजा देकर अण्डेमान में भेज दिया गया था, जहां आप वर्षों चक्की पीसते, कोल्हू में जोते जाते और मूंज कूटा करते थे। जिन की प्रसिद्ध पुस्तक 'हिन्दुस्थान का प्रथम स्वातन्त्र्य संग्राम' प्रकाशित होने से पूर्व ही जब्त कर ली गई थी, जिनके बड़े भाई बाबा राव गणेश दामोदर सावरकर जी भी कालेपानी की जेल काटते रहे और छोटे भाई श्री डा० नारायण दामोदर सावरकर भी कई बार देश भक्ति के अपराध में कृष्ण मन्दिर की यात्रा करते रहे परन्तु खेद कि अहिंसा का उद्घोष करने वाले कांग्रेसी लोगों की भीड़ के हाथों १९४८ में शहीद कर दिये गये।

इस क्रान्तिकारी श्रेणी में नेता जी सुभाष चन्द्र बोस का स्थान भी बहुत ऊंचा है। यद्यपि आप कांग्रेस के प्रधान थे, तथापि स्वतन्त्रता वीर सावरकर महोदय की प्रेरणा से आप विदेश चले गये और उन ही के साथी क्रान्तिकारी सम्राट् श्री बाबू रासबिहारी बोस (जो कि लार्ड हार्डिंग पर बम फैंकने की घटना के बाद गुप्त रूप के जापान में जा बसे थे, और वहां पर भारत में सशस्त्र क्रान्ति कराने के उद्देश्य से इण्डियन नेशनल आर्मी (आजाद हिन्द फौज) की स्थापना कर रखी थी) को मिल कर उक्त आई. एन. ए. की कमान सम्भाल कर ब्रह्मदेश के मार्ग से इम्फल के स्थान पर अंग्रेज की फौजों के साथ टक्कर ले कर उन्हें विश्वास दिला दिया था कि अब हिन्दुस्थान पर शासन नहीं किया जा सकता।

पंजाब के सरदार अर्जुनसिंह उनके दोनों सुपुत्र सरदार किशन सिंह तथा १९०७ के सुविख्यात हीरो सरदार अजीत सिंह और सरदार किशन सिंह के सुपूत हुतात्मा सरदार भक्तसिंह जी, श्री पं. चन्द्र शेखर आजाद, श्री पं. रामप्रसाद 'बिस्मल', चौधरी रोशनसिंह, वीर सावरकर के साथी श्री मदन लाल ढिंगरा, देवता स्वरूप श्री भाई परमानन्द जी, श्री भाई बालमुकुन्द जी तथा उनकी धर्मपत्नी श्रीमति राम रखी जी, श्री ला. बलराज भल्ला तथा श्री रणवीर जी आदि अनेकों क्रांतिकारी सज्जनों को महर्षि दयानन्द की शिक्षा ने ही देश की स्वतन्त्रता के लिये अपना सर्वस्व न्योछावर करने के लिये उद्यत किया था।

इस प्रकार विचार करने से हम इस परिणाम पर पहुँचते हैं कि हिन्दुस्थान की स्वतन्त्रता के लिये जिस किसी ने भी थोड़ा अथवा बहुत जिस रूप में, जिस परिस्थिति में, जिस ढंग से, और जिस भी सभा, सोसाइटी, दल अथवा संगठन द्वारा कार्य किया, उन सब के गुरु, आचार्य, प्रवर्त्तक प्रेरणा स्रोत, स्मृति प्रदाता और मार्ग प्रदर्शक किसी न किसी रूप में स्पष्ट अथवा अस्पष्ट महर्षि दयानन्द सरस्वती ही थे। देखिये नीचे अंकित "स्वराज्य परम्परा तालिका" और बोलिये स्वराज्य प्रदायक, स्वातन्त्र्य प्रवर्त्तक अखंड ब्रह्मचारी भगवान दयानन्द की जय।।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा की ओर से प्रचारकार्य

सूर्यग्रहण मेला कुरुक्षेत्र जो कि १६ नवम्बर से २३ नवम्बर तक कुरुक्षेत्र में बनाया जा रहा है, सभा की नियुक्त पं० अमरसिंह जी की दो भजनमंडलियां प्रचारार्थ पहुंच गई हैं। प्रचार, लंग, निवास आदि का प्रबन्ध पं० अमरसिंह जी बड़ी लगन से कर रहे हैं।

मेला कपाल मोचन पर भी ये दोनों मंडलियां तथा सभा उपदेशक प्रचार करेंगे। दानी श्रद्धालु भक्तों से प्रार्थना है कि इन दोनों अवसरों पर यथा शक्ति दान आदि से सभा की सहायता करें। व्यवस्थापक

शुभ सगाई

श्री बृज लाल जी गुप्त टोहाना निवासी मालिक चन्द्रगुप्त औषधालय के सुपुत्र श्री श्री राजेन्द्र प्रसाद गुप्त B.A. की सगाई आगरा निवासी श्री ला० चन्द्रभानु जी की सुपुत्री शशीबाला के साथ सम्पन्न हो गई। सगाई के समय केवल एक रुपया और नारियल ही लिया गया। इसी का नाम है वास्तविक सुधार।

आर्य समाज ऊना (हुशियारपुर)

आर्य समाज ऊना ने अपने ३१-१०-६५ के अधिवेशन में निम्नलिखित प्रस्ताव सर्व सम्मति पास किया गया। आर्यसमाज ऊना पंजाबी सूबा जैसे विवादस्पद प्रश्न को इस संकट कालीन परिस्थिति में फिर से उठाना बड़ा असामयिक तथा देश हित के प्रतिकूल समझता है इसलिये भारत सरकार तथा अपने अकाली भाईयों से अनुरोध करता है कि इस प्रश्न को शान्त वातावरण में विचार करने के लिए स्थगित कर दें।

मन्त्री समाज शान्तिसरूप शर्मा

★ जब तक शरीर पुष्ट है, नीरोग है, वृद्धापन दूर है, इन्द्रियों की शक्ति कम नहीं हुई है, आयुष्य भी क्षीण नहीं हुई, तब तक बुद्धिमानों को चाहिए कि कल्याण का उपाय कर लें, घर जलने पर कुआं खोदने से क्या होगा?

शोक प्रस्ताव

आप को यह जान कर अत्यन्त दुःख होगा कि आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उप सभा के पुराने विद्वान उपदेशक श्री महता जगन्नाथ जी का देहान्त कल १-११-१९६५ को बाजार सीताराम आर्यसमाज में हुआ। श्री महता जी चिरकाल से अस्वस्थ थे और बाजार सीताराम आर्य समाज में ही रहा करते थे। दिवंगत आत्मा की सद्गति के लिए प्रभु से प्रार्थना की गई।

राज कुमार सभा मंत्री

सन्त फतहसिंह जी :—

पंजाबी सूबा क्यों ?

श्री करनैल सिंह जी विद्यार्थी, आर्य समाज नवांकोट अमृतसर

इस वक्त शीर्षकसे एक पुस्तिका पंजाब के कई स्थानों में बांटी गई है। इस पुस्तक में पंजाबियों को अपने देश भारत के विरुद्ध व हिंदुओं के विरुद्ध भड़काया गया है। साथ ही झूठ-सत्य से भी काम लिया है। सन्त जी लिखते हैं कि:

"भारत दीयां चौदां परवानत बोलियों हन, जिहना विच्चों पंजाबी भी इक हैं। पर इह कितने अफसोस वाली गल है जद कि सारे भारत विच जबान दे आधार ते सूबे होंद विच आ गये हन पर निरोल बोली दे आधार ते पंजाबी सूबा न लेना के बहादुर पंजाबियां नाल सिधा वितकरा कीता जा रिहा है।"

(पंजाबी सूबा क्यों पृष्ठ २)

श्री सन्त जी, पंजाबी भारत की चौदह बोलियों में एक है यह आप मानते हैं न। हां यदि मानते हैं तो जिस प्रकार और भाषाओं का भारत में मान है उसी प्रकार इस का भी है आप यदि इसकी हिंदी से तुलना करें तो हिंदी के मुकाबले में यह कुछ नहीं है हिन्दी का अपना इतिहास है जो भारतीय संस्कृति से गहरा सम्बन्ध रखता है। पर पंजाबी का तो उसके मुकाबले में कोई खास इतिहास भी नहीं और न ही यह काफी समय से भारत में है। दूसरी बात है सूबे की। आदरणीय सन्त जी, आप कृपा करके बतावें कि किस प्रदेश मे उस बोली के लिहाज से सूबा बनाया गया है क्या कहीं अंग्रेजिस्तान है। अथवा अंग्रेजी सूबा है? या बंगाली सूबा है? या मराठी सूबा है...? यदि नहीं तो आप क्यों पंजाबी सूबे की मांग करके भगदड़ मचा रहे हैं। पंजाबी पंजाब में बोली जाती है, बाहिर भी कहीं थोड़ी बहुत बोली जा रही होगी ठीक है पर पंजाबी सूबा कह कर आप बहादुर पंजाबी जवानों को क्यों भड़का रहे हैं। और पंजाबियों को भारत से क्यों अलग समझ रहे हैं पंजाब भारत का अंग है। पंजाबी भारत के वीर हैं पर पंजाबी सूबे के द्वारा आप सिखों को सरकार के विरुद्ध क्यों भड़का रहे हैं। उनसे क्या (तिकतरा) राय की जाती है? क्या उन्हें पंजाबी बोलने से रोका गया है? अथवा लिखने से? यदि नहीं तो सन्त जी क्यों इतने उथले पुथले हैं।

'पिछले १८ सालों तों पंजाबी इह मंग कर रहे हन कि साडे नाल भी भारत दीयां दूजियां कौमां वांग सलूक कीता जाये, पर साडी कांग्रेस सरकार कुन्ज फिरकू हिन्दुओं दे अड्डे चड़ी होई है अते इस कारण कुछ फिरकू लोकां दे आखे लग के देस विच वस रहीयां घट गिनतियां दी आवाज नूं भी सुनन लई तियार नहीं।'

(पंजाबी सूबा क्यों पृष्ठ २)

श्री सन्त जी! कांग्रेस सरकार आप पर क्या ज्यादती कर रही है। जरा बतलाइए तो सही जो पिछले १८ सालों से, सिखों से, पंजाबियों से सरकार अन्याय कर रही है? बताइए कि और दूसरी (कौमां) लोगों को सरकार कौन से मक्खन के पेड़े दे रही है जो आप की हां-हां पंजाबियों को नहीं मिले। श्री सन्त जी! आप हिंदू-सिखों में भेद क्यों समझ रहे हैं क्यों हिंदुओं को फिरकू कहकर और सिखों को उनके विरुद्ध भड़का कर एक दूसरे मे फट डाल रहे हैं। क्या सिक्ख, पंजाबी हिंदुओं से अलग हैं। तो कहां से आए हैं, ये अस्तु ऐसी ओछी बातें आप को नहीं जंचती। अतः आप पंजाबियों को, सिखो को, अलग समझ कर कम गिनती वाले न कहें।

देश वासियो! हे मेरी परम प्यारी सरकार! ये हैं कुछ शब्द श्री सन्त जी के जिनके द्वारा पाकिस्तान का रेडियो ये चिल्ला-चिल्ला कर कह रहा है कि भारत में सिखों के साथ अन्याय हो रहा है उनका हक छीना जा रहा है आदि आद बकवास।

श्री सन्त जी! यह समय सिखों, पंजाबियों कोभड़काने का नहीं। यह समय तो उनके हौसलों को बढ़ाने, उत्साह बढ़ाने का है अतः मैं आशा करता हूं कि आप-अपनी जबान, कलम को युद्ध के समय तक बन्द ही रखेंगे। (क्रमशः)

कन्याओं के [illegible]

विधि के निःशुल्क

शिक्षण-केन्द्र

आर्ष कन्या गुरुकुल नरेला का

१०वां वार्षिकोत्सव

११, १२ दिसम्बर को होने

जा रहा है।

इस अवसर पर आर्य-जगत के उच्चकोटि के भजनोपदेशक संन्यासी, महात्मा, विद्वान् तथा नेता एवं नर-नारी पधारेंगे आध्यात्मिक सामाजिक तथा राष्ट्रीय विषयों पर इन महानुभावों की वक्तृताओं के अतिरिक्त गुरुकुल की ब्रह्मचारिणियों का प्रभावप्रद कार्यक्रम व्याख्यान श्लोक, कविता [illegible] सम्पूर्ण महाभाष्यादि [illegible], दश उपनिषद् छः दर्शन श्री दयानन्द कृत समस्त ग्रन्थ सम्पूर्ण यजुर्वेद आदि धार्मिक ग्रन्थों के अतिरिक्त संस्कृत साहित्य, आर्य भाषा, साहित्य, गणित, गृह-विज्ञान, इतिहास, अर्थशास्त्र, नागरिक शास्त्र, स्वास्थ्य शिक्षा आदि आधुनिक विषयों का अध्ययन करने के पश्चात् स्नातिका बनने वाली पांच कन्याओं को 'वेद-विभूषिता' की पदवी से अलंकृत किया जाएगा। दीक्षान्त समारोह रविवार १२ दिसम्बर को होगा। एक सप्ताह पूर्व से होने वाले यजुर्वेद-पारायण-महायज्ञ की पूर्णाहुति भी इसी दिन प्रातः १० बजे होगी। नवीन कन्याओं के प्रवेश के इच्छुक सज्जन ४ दिसम्बर तक प्रार्थना पत्र भेज कर अपने स्थान सुरक्षित करवा लें। सब आर्य भाई बहिनों से प्रार्थना है कि इष्ट मित्रों सहित पधार कर उत्सव की शोभा बढ़ावें।

—निवेदिका

चन्द्रकलार्या स्नातिका।

सुशीला आर्या एम. ए.

आचार्या एवं मुख्याधिष्ठात्री

आर्यसमाज पुल बंगश

देहली का समाचार

वार्षिकोत्सव २६, २७, २८ नवम्बर को होगा। ४ दिन पूर्व वेद कथा होगी।

८०१) राष्ट्र रक्षा निधि में भेजा गया।

अक्तूबर में श्री पं० गणेशदत्त जी पुरोहित समाज ने २३ संस्कार कराये ९६) दान मिला।

—सुरेशकुमार मन्त्री

मुद्रक व प्रकाशक श्री यशोपराज जी आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर द्वारा वीर मिलाप प्रेस, मिलाप रोड जालन्धर से मुद्रित तथा जगत् कार्यालय महात्मा हंसराज भवन निकट कचहरी जालन्धर शहर से प्रकाशित मालिक—आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर



टैलीफोन नं० ३०५७ [आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधिसभा पंजाब जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd. No. P. 121

एक प्रति का मूल्य १३ नये पैसे वार्षिक मूल्य ६ रुपये

वर्ष २५ अंक ४७) ७ मार्गशीर्ष २०२२ रविवार—दयानन्दाब्द १४१– २१ नवम्बर १९६५ (तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

पाकिस्तान ने अब हमला किया तो ऐसा मारेंगे कि उसकी आने वाली पीढ़ियां लड़ाई का नाम न लें

चार करोड़ आदमी कुर्बान क्यों न करने पड़ें पाकिस्तान से कभी हार नही मानेंगे श्री नन्दा की लुधियाना में सिंह गर्जना

केन्द्रीय गृह मन्त्री श्री गुलजारीलाल नंदा ने तालियों की गड़गड़ाहट के मध्य गर्जना की कि अगर पाकिस्तान ने पुनः भारत पर हमला किया तो उसे ऐसी मार पड़ेगी कि मौजूदा नसल तो एक ओर उसकी भावी सन्तान भी लड़ाई का नाम नहीं लेगी। कश्मीर की लड़ाई है, और भारत काश्मीर का एक इंच भी इलाका नहीं छोड़ सकता। आपने कहा कि पाकिस्तान द्वारा युद्ध-विराम का निरन्तर उल्लंघन जारी है। पता नहीं कब पुनः लड़ाई छिड़ जाए। लेकिन भारत किसी भी स्थिति का सामना करने को तैयार है। देशवासियों से अपनी पुरातन एकता के उदाहरण को कायम रखने की आपने अपील की है।

पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज



जिनकी अमृतमयी कथा १६ नवम्बर से आर्यसमाज विक्रमपुरा समाज में सम्पन्न हो रही है।

वेद सूक्तय:

अपत्यं वृजिनं रिपुम्

हे वीर! आप अप-दूर कर दो त्य उस वृजिनम्-पाप से भरा हुआ रिपुं-शत्रु को-जितने भी शत्रु हैं राक्षस तथा पाप फैलाने वाले अत्याचारी हैं जिनसे हानि होती है—हे वीर नायक! आप अपनी शक्ति से, शस्त्र बल से उन सब पापी शत्रुओं को मिटा दो, भगा दो।

स्तेनमग्ने दुराध्यम्

हे वीर नर! आग के समान शत्रुओं को भस्म कर डालने वाले अग्निमय नायक! स्तेनम-चोर को, जो चोर बनकर चोर के समान हमारा घात करने आता है, भूमि, भवन भावना का हरण करता है जो दुराध्यम् दुष्ट है—उसे हे अग्नि मय वीर! जला डाल, भस्म कर दे।

तपसा रक्षसो दह

वीर नेत: आप बलवान् और शक्ति से भरपूर हो। आप आग के समान शत्रु को तपाने वाले हो अपने तप से, सेना बल से तपा देने वाले अग्नि बाणों से राक्षसों को, मार काट करने वाले पिशाचों को तथा हत्यारों हिंसकों को अपने तप से दह-जला डालो, उनका दहन कर दो। अग्नि बनकर राख का ढेर कर दो।

सा म वे द से

अधिष्ठाता—श्री संतोषराज जी

सम्पादक—त्रिलोक चन्द्र शास्त्री

धार्मिक चर्चा :—

हमारा अभिष्ट : चित्त की एकाग्रता

(ले०—श्री सुन्दर लाल जी बोहरा जोधपुर)

हर व्यक्ति जीवन में शान्ति और स्वच्छन्दता की कामना करता है। जीवन में उत्तरोत्तर निखार कैसे आए, जीवन को परजनहिताय कार्यों में कैसे प्रवृत्त किया जाय, आत्मतत्व की अनुभूति करने के लिए जीवन को किस प्रकार के ढांचे में डाला जाय—इन सब बातों का विचार और विवेचन व्यक्ति शान्तिमय और उन्मुक्त वातावरण में रहकर ही कर सकता है। चित्त की एकाग्रता पर वातावरण का विचारणीय प्रभाव पड़ता है।

चित्त की दूषित वृत्तियों का शमन चित्त की एकाग्रता द्वारा ही किया जा सकता है। जीवन और जगत् का सही रूप से पहिचानने के लिए अन्तःकरण की निर्मलता अति आवश्यक है। चित्त की एकाग्रता के अभाव में अन्तःकरण हमेशा विक्षुब्ध रहता है।

जब व्यक्ति के अन्तःकरण में सम्भाव का स्रोत बहने लगता है तो उसके अंग-प्रत्यंगों में एक दिव्य स्फुरण होती है। व्यक्ति द्वैत भाव से ऊपर उठ जाता है। सुख-दुःख व मानापमान में उसके चेहरे की भाव-भंगिमा समान रहती है। ऐसे व्यक्ति के लिए समाधि की स्थिति प्राप्त करना सहज होता है। पूर्णता के निकट पहुँचने के लिए अन्तःकरण का निर्मल होना अत्यावश्यक है। जैसे काले कपड़े पर किसी तरह का अन्य रंग नहीं चढ़ सकता, ठीक उसी प्रकार कलुषित अन्तःकरण वाला व्यक्ति किसी भी प्रकार की साधना से फलान्वित नहीं हो सकता।

अन्तःकरण की शुद्धि तथा इन्द्रियों के निग्रह के लिये भारतीय दर्शन में अष्ट साधनों का विधान है। इन साधनों के सहारे ही मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार को नियन्त्रित किया जा सकता है। अन्तःकरण के इन चारों विभागों का जब पुरुष शमन कर लेता है तो उसकी समस्त ज्ञानेन्द्रियां व कर्मेन्द्रियां परम तत्व को समझने व उसे जीवन में उतारने के लिये अनुरक्त हो जाती हैं।

फिर तो जीवन के किसी भी प्रकार के ऊहापोह व्यक्ति को उस के पथसे विचलित नहीं कर सकता। व्यक्ति के जन्मजात दोष काम, क्रोध, लोभ, मोह व ईर्ष्या उसके पास ही नहीं फटक सकते। ऐसे व्यक्ति को कंचन व कामिनी शतांश में भी प्रभावित नहीं कर सकते। ऐसे व्यक्ति के सामने से स्वादिष्ट व्यजनों से भरा हुआ थाल भी यदि हटा लिया जाय तो व्यक्ति, क्षुधातुर होते हुए भी, थाल हटाने वाले व्यक्ति के प्रति किसी भी प्रकार का रोष प्रदर्शित नहीं करेगा।

योग के अष्ट साधनों में आहार अपना विशिष्ट स्थान रखता है। प्रसिद्ध है :, जैसा खाए अन्न वैसा होए मन। तामसी तथा राजसी भोजन करने वाले व्यक्ति के लिये शांत रहना सहज नहीं है। दूषित तथा बासी भोजन करने वाले व्यक्ति का रक्त हमेशा उष्ण तथा खुश्क बना रहता है। और जब मस्तिष्क में विकारमय रक्त पहुंचता है तो व्यक्ति की बुद्धि भी विकारमय होने से नहीं बच सकती। 'बुद्धिः नाशात प्रणश्यति।'

अतः साधक को चाहिए कि वह सादा व मिर्च मसालों से रहित भोजन करे। इससे अन्तःकरण का सन्तुलन बना रहता है, और चित्त की एकाग्रता के लिए अन्तःकरण का सन्तुलित रहना नितान्त आवश्यक है।

जीवन के लिए भोजन ही एक ऐसो वस्तु है जिससे व्यक्ति की इन्द्रियां अप्रभावित नहीं रह सकतीं। सही रूप से देखा जाय तो योग के अन्य सात साधनों की सफलता व्यक्ति के आहार की प्रकृति पर ही निर्भर है। व्यक्ति का जैसा अन्न होगा उसका विहार भी तद्नुरूप ही होगा—इसमें दो राय नहीं हो सकतीं।

जब अन्तःकरण निर्विकार एवम् सन्तुलित हो जाएगा तो साधक के लिए समाधि की स्थिति प्राप्त करना कोई कठिन काम नहीं रह सकता। वह बिना किसी प्रकार की तितिक्षा के समाधि की स्थिति तक पहुंच सकता है। ऐसा व्यक्ति जिधर भी चाहे उस दिशा में अपना ध्यान कर सकता है।

इतिहास में महान व मानवता के निखरे हुए व्यक्तित्व का पोषण चित्त की एकाग्रता द्वारा ही हुआ है। ठीक ही कहा गया है :—

'एकः साधै सब सधे,
सब साधै सब जाय।'

एकाग्र चित्त वाले व्यक्ति का अन्तःकरण एक निर्मल दर्पण के तुल्य हो जाता है।

जिस प्रकार एक गुलाब के पुष्प की पंखुड़ी पर किसी उर्वशी की नाजुक अंगुली छू जाय तो उसका प्रभाव पंखुड़ी पर स्पष्ट प्रतीत हो जाता है, ठीक उसी प्रकार एक निर्मल अन्तःकरण में विकार का यदि तनिक भी अंश प्रवेश करने की चेष्टा करे तो ऐसा व्यक्ति सचेत हो जाता है—किंबहुना वह हमेशा सजग ही रहता है। उसके चित्त की चंचलता प्रशान्त हो जाती है।

ऐसा पुरुष जगत् के कार्यों में लोगों को असक्त प्रतीत होता है, लेकिन वस्तुतः वह हर क्रिया के प्रति अनासक्त व उदासीन ही रहता है। ऐसा व्यक्ति शरीर धारण करते हुए भी जीवन्मुक्त रहता है। जीवन भी ऐसे व्यक्ति का धन्य व अनुकरणीय होता है। हर साधक का समीष्ट ऐसे व्यक्तित्व की प्राप्ति करना ही होना चाहिए।

सम्पादकीय--

आर्य जगत्

वर्ष २५] रविवार २०२२, २१ नवम्बर १९६५ [अंक ४८

हम भी शिक्षा लेवें

समाचार प्रकाशित हुआ है कि नई देहली के पोलैण्ड राजदूतालय में एक लड़के ने किसी बात को लेकर अंगरेजी में पत्र लिखा किन्तु दूतावास के प्रबन्धकों ने वह पत्र उस बहिन को वापस लौटाते हुए लिखा कि आप अपनी राष्ट्रिय भाषा हिन्दी में पत्र लिखें। अंगरेजी आपके देश की भाषा नहीं है। यह समाचार कितने महत्व का है और इस से हमें कितनी शिक्षा मिलती है। एक ओर तो हमारा राष्ट्रभाषा के प्रति क्या भाव है? हम अपने देश में रहते हुए भी अपनी भाषा के साथ कितना प्रेम करते हैं। राष्ट्र की भक्ति के साथ २ भाषा की भी कितनी भक्ति है—इस का भली-भांति परिचय मिल जाता है। प्रत्येक देश की अपनी भाषा होती है। राष्ट्र की प्रत्येक वस्तु के सम्मान के समान ही उसकी भाषा भी देश वासियों को बड़ी प्यारी होती है। भाषा में ही तो उस २ राष्ट्र की संस्कृति निहित होती है। विदेशी शासन जिस किसी देश की भूमि पर आता है, वहां पर अपनी भाषा के प्रचार प्रसार का पूरा प्रबन्ध करता है ताकि उसके द्वारा शासित जनता शासकों की संस्कृति के रंग में रंग जाये। भारत के साथ भी ऐसा ही हुआ। अंगरेजी सत्ता जब यहां पर छाई। अपनी भाषा भी साथ लाई। लगभग दो सौ वर्षों तक उसने अपनी भाषा के प्रचार में सारी शक्ति लगा दी। इस का परिणाम यह निकला कि भारतीय लोग विदेशी भाषा अंगरेजी पढ़ना लिखना तथा बोलना गौरव की बात मानने लगे। उनके परिवार व व्यवहार में अंगरेजी समा गई। विदेशी शासन की समाप्ति पर भारतीय संविधान में हिन्दी को राष्ट्र भाषा माना गया। अंगरेज तो चले गये। किन्तु उनके मानस पुत्र तो भारत में बैठे ही हैं। शारीरिक दासता तो समाप्त हो गई पर मानसिक दासता तो बनी रही। लोगों का अंगरेजी मोह बना ही रहा।

भारत के इस प्रकार के लोगों पर कितनी बार व्यंग्य भरी चोट की गईं कि अपनी भाषा पर गौरव करना सीखो। किन्तु खेद है कि ये इंगलिश के मानसपुत्र अभी तक समझते नहीं। उनकी आंखे नहीं खुलतीं। छोटा से छोटा देश भी अपनी भाषा पर गौरव अनुभव करता है पर खेद है कि भारत में अंगरेजी भक्त अभी तक भी अपनी भाषा पर गौरव अनुभव नहीं करते। कितना अपमान है राष्ट्र की भाषा का? आज नगरों में देखें तो कितनी दुकानों के नाम यह अपनी राष्ट्रिय भाषा में मिलते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि हम इंगलैंड में घूम रहे हैं। अंग्रेजी अभी तक हमारी नस २ में विराजमान है। परिवारों में, बोलचाल में, कार्यव्यवहार में इसी का बोल बाला है। हमें दूसरे लोग लज्जित करते हैं पर लज्जा नहीं आती। पोलैण्ड छोटा सा देश है किंतु उस के दूतावास से अंग्रेजी पत्र को लौटा आ जाना क्या हमारे मस्तक को झुका नहीं देता अठारह वर्ष बीत गये परन्तु हम ने अभी तक अपने देश की भाषा को नहीं अपनाया। आज भी बड़ी २ संस्थाओं के समारोहों का कार्यक्रम अंगरेजी में चलता है। निमन्त्रण पत्र भी विदेशी भाषा में। आर्यसमाज भी इस दिशा में उसी मार्ग पर चलता है। इस उदाहरण से हमारी आंखें खुलें तथा हम भी राष्ट्रभाषा के प्रेम की शिक्षा लेवें। —त्रिलोक चन्द्र

आर्यसमाज विक्रमपुरा का महापर्व

जालन्धर नगर आर्य प्रादेशिक सभा का केन्द्र है। सभा का कार्यालय राष्ट्रविभाजन के बाद यहां पर आया है। इस पंजाब के विशाल, प्रसिद्ध नगर में आर्यसमाज की बड़ी २ संस्थाओं की विशाल शिक्षण छावनियां काम करती हैं। पंजाब के आर्यसमाजी नेताओं के दैनिक पत्रों का भी केन्द्र स्थान है। समाज के प्रचार का महान क्षेत्र बना है इसी नाते यहां पर आर्यसमाज का वार्षिक उत्सव भी एक महान् पर्व का रूप धारण कर गया है। सभा से सम्बन्धित आर्यसमाज विक्रमपुरा का महोत्सव एक केन्द्र के पर्व में मनाया जाता है। तीर्थ बन गया है। चारों कोनों से यात्री चलकर महोत्सव में बड़ी श्रद्धा से पधार कर अपना कर्तव्य निभाते रहते हैं। अनेकों समाजें, स्कूलों के छात्र तथा जनता इस महामेले में भाग लेती है। इसका जलूस तो समाज की शक्ति का परिचायक हो जाता है कि आर्यसमाज का कितना भारी संगठन व बल है। अनेकता में एकता, शतपथ में एक पथ के दर्शन हो जाते हैं समाज के अधिकारी भी इस महामेले को सफल बनाने में दिन रात एक कर देते हैं। समाज के इस समय के वयोवृद्ध नेता डा० हुकमचंद जी को इस बड़ी अस्वस्थ अवस्था में भी समाज के कार्यों में दौड़ता हुआ देखते हैं तो श्रद्धा से मस्तक झुक जाता है। महोत्सव में पधारने वाले समाज के महान् नेताओं के अनुभव भरे प्रेरणादायक प्रवचनों को संकलित करके 'आर्यजगत्' के द्वारा जनता तक पहुंचाने का काम भी प्रतिवर्ष जारी है, ताकि बाहर की जनता को भी यह मीठा प्रसाद मिल सके। इस बार पंजाब के युद्ध के कारण तथा बाद में पंजाबी सूबा के आन्दोलन के कारण वातावरण बड़ा धूमिल है। आर्यसमाज सदा से जनता का नेतृत्व करता आया है। यह महामेला भी इस बार विशेष चेतना व सन्देश देने वाला होगा। बड़ी प्रसन्नता का समाचार है कि इस बार आर्य समाज विक्रमपुरा जालन्धर के महोत्सव पर आर्यजगत् के परमसन्त महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज ता० २६ नवम्बर शुक्रवार को अपनी अमृतमयी कथा आरम्भ कर रहे हैं। महात्मा आनन्द भिक्षु जी महाराज यज्ञ प्रारम्भ करेंगे। दोनों विभूतियों के अतिरिक्त उत्सव में महान् फिलास्फर डा० दीवान चन्द जी एम. ए. कानपुर, पं० प्रकाशवीर जी शास्त्री एम. पी., श्री यश जी प्रधान आर्य प्रादेशिक सभा, वीर यज्ञ दत्त जी शर्मा, प्रि० सूरजभानु जी वायस चांसलर पञ्जाब यूनिवर्सिटी चंडीगढ़, डा० गोवर्धन लाल जी दत्त प्रधान दयानन्द कालेज कमेटी दिल्ली, प्रिंसिपल रलाराम जी एम. ए. तथा अन्य मान्य विद्वान् महारथी संन्यासी-आचार्य पधार रहे हैं। बड़ा भारी मेला है। समारोह देखने वाला है। इस धूमिल वातावरण मे विशेष कार्यक्रम होगा। इस लिए इस समय इस तीर्थ यात्रा के लिए अभी तक तैयारी कर लेवें। सारे वर्ष का सन्देश मिलेगा। अपने को वंचित न रखें —त्रिलोकचन्द्र

छम्ब और तिथवाल क्षेत्रों में पाकिस्तान अपनी सेना के तोपखाने की नियमित रेजीमेंट ले आया और अपनी हवाई निरीक्षण-चौकियों की मदद से हमारी चौकियों पर जबदस्त गोलाबारी शुरू कर दी। पिछले कुछ सप्ताहों में पाकिस्तान ने, युद्ध-विराम-रेखा के लगभग सभी क्षेत्रों में गोलाबारी में वृद्धि कर दी।

पाकिस्तान प्रवक्ता के रूप में

पाकिस्तान बार-बार इस बात से इन्कार और इस बात का जबरदस्त विरोध करता रहा है कि कश्मीर के हमले में उसका हाथ है। परन्तु दिन-ब-दिन उसका अधिकाधिक पर्दा फाश होता जा रहा है और वह अपने असली नग्न रूप में दिखाई देने लगा है। कानून, सूचना और कश्मीरी मामलों के पाकिस्तानी मन्त्रियों ने जो बयान दिए हैं, उनका विश्लेषण करने पर मालूम होगा कि जैसे-जैसे उनका असली रूप सामने आता चला गया। ५ अगस्त, १९६५ से, अर्थात् जब से कश्मीर पर हमला शुरू हुआ है, पाकिस्तान ने घुसपैठियों के लिए अधिकृत प्रवक्ता का काम किया। पाकिस्तान रेडियो और अखबार घुसपैठियों के कारनामों के बारे में बराबर चर्चा करते रहे हैं। इसके अलावा, अपने को 'सदा-ए-कश्मीर' कहने वाला एक रेडियो-स्टेशन पाकिस्तान-अधिकृत कश्मीर में मुजफ्फराबाद से ६ मील दूर 'खारी' नामक स्थान से ऊलजलूल खबरें प्रसारित करता रहता है। यह रेडियो-स्टेशन पाकिस्तानी अधिकारियों के कमान और नियन्त्रण में काम करता है।

'सदा-ए-कश्मीर' जम्मू और कश्मीर में जनता के विद्रोह की

(जन-साधारण की जानकारी के लिए आवश्यक लेख)

प्रति सप्ताह क्रमश: भेंट किया जाएगा

कश्मीर को हड़पने का पाकिस्तान का ताज़ा प्रयत्न

जो कथित खबरें देता रहा है और जिनकी भनक बराबर पाकिस्तान के अखबारों और रेडियो से भी मिलती रही है, उसको जम्मू और कश्मीर की जनता ने झूठा साबित कर दिया है। जनता ने अधिकारियों को महत्वपूर्ण सूचना और जानकारी दी है, जिससे घुसपैठियों को तलाश करने और पकड़ने में बड़ी आसानी रही है। कई बार गांव वालों ने खुद घुसपैठियों को पकड़ लिया और उन्हें पुलिस के हवाले कर दिया।

बन्दी बनाए गए अफसर

पाकिस्तान के जो अफसर और फौजी गिरफ्तार किए गए हैं, उनसे पूछताछ के दौरान बहुत-सी ऐसी बातें मालूम हुई हैं, जिन से स्पष्ट होता है कि उनके हमलों के पीछे पाकिस्तान का हाथ है। इनमें से कुछ के बयान टेप रिकार्ड भी कर लिए गए हैं। इसी पूछताछ के आधार पर भारतीय सुरक्षा-सेना को हमलावरों का सफाया करने में मदद भी मिली है। घुसपैठियों का नेतृत्व करने वाले जिन अफसरों ने युद्ध-विराम-रेखा पार की है उनमें से एक अफसर २८ वर्षीय कैप्टेन मोहम्मद सज्जाद (पी० एस० एस० ४४७८) है। इसका सम्बन्ध पहले पाकिस्तानी सेना की ८वीं बिलौच रेजीमेंट से था, और बाद में इसे पाकिस्तानी सेना की १८वीं 'आज़ाद कश्मीर बटालियन' में नियुक्त कर दिया गया। यह पश्चिम पाकिस्तान के जिला मुलतान का रहने वाला है और १९५१ में अफसरों के ट्रेनिंग लेने के बाद इसे सेना में कमीशन दिया गया। कैप्टेन सज्जाद ने युद्ध-विराम-रेखा पार करने वाले घुसपैठियों की कम्पनी का नेतृत्व किया। टेप-रिकार्ड किए गए अपने बयान में उसने कहा कि उस अनियमित सैनिकों की एक कम्पनी को १५ दिन के अन्दर ट्रेनिंग देने का काम सौंपा गया था। ये अनियमित सैनिक उसके अनुसार नागरिक थे और पुलिस ने उन्हें जबदस्ती भर्ती होने पर मजबूर किया था। ट्रेनिंग के दौरान अधिक-से-अधिक समय हमला करने, घात लगाने और गुरिल्ला लड़ाई के तरीके सिखाने पर लगाया गया था। कैप्टन सज्जाद ने बताया कि इन सब कम्पनियों की कमान १२वीं पैदल सेना के जनरल अफसर लेफ्टीनेन्ट जनरल अख्तर हुसैन मलिक के हाथ में थी जिसने पहली अगस्त को (हमला शुरू होने से पहले) कोटली में सारे कम्पनी-कमाण्डरों को बुलाया और उन से बातचीत की।

एक दूसरे बन्दी अफसर पाकिस्तानी सेना की 'आज़ाद' कश्मीर की ८वीं पैदल बटालियन के कैप्टेन गुलाम हुसैन ने इस बात को स्वीकार किया है कि घुसपैठियों को इस बात पर बहुत निराशा हुई है कि जम्मू और कश्मीर के लोगों ने उनके काम में इस प्रकार सहयोग नहीं दिया है, जिस तरह कि पाकिस्तानी अधिकारियों ने उन्हें बताया था कि वे करेंगे। उसने कहा कि इससे घुसपैठियों को बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ा। २८ वर्षीय कैप्टेन गुलाम हुसैन की शिक्षा-दीक्षा लाहौर के फोरमैन क्रिश्चियन कालेज में हुई। यह उस सेना' की कम्पनी का कमान कर रहा था जिसे पुल को तोड़ने और एक ब्रिगेड के मुख्यालय पर हमला करने का काम सौंपा गया था। ये लोग अपना काम पूरा नहीं कर सके क्योंकि युद्ध-विराम-रेखा पार करते ही भारतीय सुरक्षा सेनाओं ने इन्हें गिरफ्तार कर लिया। कैप्टेन गुलाम हुसैन ने टेप रिकार्ड की गई बातचीत के दौरान बताया कि उसके साथ जो नागरिक थे, वे अपनी स्वेच्छा से नहीं आए, बल्कि उनसे कहा गया कि यह वक्त की पुकार है और तुम्हें इस का मुआवज़ा दिया जाएगा। इन लोगों को १२० रु० प्रति व्यक्ति और मुफ्त राशन दिया गया। हर व्यक्ति के पास ५ दिनों के लिए सूखा राशन था। कैप्टेन हुसैन के पास स्थानीय खरीद-फरोख्त के लिए ६,००० रु० थे।

सिपाही मोहम्मद अफज़ल से की गई बातचीत भी टेप-रिकार्ड कर ली गई थी। इस पाकिस्तानी घुसपैठी ने बताया कि उसने बादशाह अयूब के हुकम से युद्ध-विराम-रेखा पार की है।

विश्व-मत पाकिस्तान के विरुद्ध

बहुत-से विदेशी सम्वाददाताओं ने खुद मौके पर जाकर खबरें भेजने के लिए श्रीनगर और अग्रिम मोर्चों का दौरा किया। उन्होंने अपने अखबारों को जो खबरें भेजी हैं, उनमें जाहिर है कि जम्मू और कश्मीर में हमलावर पाकिस्तान की पूरी मदद और समर्थन से घुसे हैं। उन्होंने यह भी समाचार भेजा है कि जम्मू और कश्मीर की जनताने घुसपैठियों का साथ नहीं दिया है। इससे पाकिस्तान की आशाओं पर पानी फिर गया है। (क्रमश:)

कर्मशील बनो—

सफलता सोपान नं० ३

ले. श्री ओमप्रकाश जी महोपदेशक आर्य प्रादेशिक सभा जालधर

****

ओ३म् इन्द्रं वर्धन्तो अप्तुरः कृण्वन्तो विश्वमार्यम्। अपघ्नन्तो अराव्णः ॥

'अप्तुरः' शब्द के आधार पर कुछ विचार हम गत सप्ताह पाठकों की सेवा में उपस्थित कर चुके हैं शेष भाव तथा मन्त्र गत अन्य विचार आज उपस्थित कर रहे हैं। पाठक ध्यान पूर्वक पढ़ें और विचारें।

पहले स्पष्ट किया जा चुका है कि वेद में कर्म शब्द का प्रयोग सदैव सतकर्म के लिए ही होता है विकर्म या अकर्म के लिए नहीं। विचाराधीन मन्त्र में 'अप्तुर' कर्मशील बनो कह कर आगे के तीन पदों द्वारा कर्म का क्षेत्र भी निश्चित कर दिया गया है। वे तीन पद निम्न हैं—

(क) इन्द्रं वर्धन्तः—प्रभु महिमा का विस्तार करते हुए।

(ख) अपघ्नन्तः अराव्णः—अदान भाव वाले कृपणों-परिग्रह द्वारा समाज का शोषण करने वालों तथा हिंसा के द्वारा सदा दूसरों को पीड़ित करने वालों का विनाश करते हुए।

(ग) कृण्वन्तो विश्वमार्यम्—सारे संसार को आर्य श्रेष्ठाचारी उदार प्रभु भक्त बनाओ।

यह है हमारे कर्म का कार्यक्षेत्र।

सब से पहले हमें अपने कर्मों का विस्तार भगवन्नाम के प्रचार प्रभु भावके विचार और तदनुसार आचार सुधार की ओर करना अपेक्षित है। हमारे प्रत्येक कर्म के द्वारा परमात्मा भाव में वृद्धि होनी चाहिए। हमारी संध्या-हमारा हवन-यज्ञ हमारा संकीर्तन हमारी उपासना, हमारा वेद पाठ या अन्य भी जो कुछ हम उपासक बनकर करें ऐसा होना चाहिए जो अन्य लोगों को प्रभावित करने वाला हो। वे अनुभव करें कि संध्या करने वालों में यज्ञ रचाने वालों में, भजन कीर्तन जप-उपासना करने वालों में परमात्मा के पवित्र गुण स्पष्ट रूपेण उतरे हुए हैं। उपासक बनकर कोई असत्य, अन्याय, अत्याचार लोभ, द्रोह-द्वेष-क्रोध, आसक्ति भाव तथा ईर्ष्या आदि अविद्या द्वारा उत्पन्न होने वाले दुर्गुणों का कैसे शिकार हो सकता है। यदि हमने अपने इन सत्कर्मों को सचमुच ही सत्कर्म बनाना है तो हमें परमात्म-भाव को अपने अन्दर धारण करना होगा। इसके विपरीत यदि हम संध्या-हवन-भजन कीर्तन, वेद-पाठ सभी कुछ करते हुए असत्य-अनाचार तथा काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, अहंकार के ही दास बने रहे तो हम परमात्माके भाव का विस्तार न कर सकेंगे। लोग हमें देखकर न केवल हमसे दूर भागेंगे। अपितु परमात्मा के भी निकट न आ सकेंगे।

सच तो यह है कि परमात्मा की सत्ता पर विश्वास न रखने वालों ने इतना लोगों को प्रभु से दूर नहीं किया जितना कि परमात्मा का ढोल पीटने वालों ने ?

इस लिए सब से बड़ी आवश्यकता चरित्र सुधार की है। हमारा जीवन संध्या हवन आदि अनुरूप होना चाहिए। हमारा अपने ऊपर पूर्ण विश्वास होना चाहिए। जो व्यक्ति अपनी दृष्टि में ही नहीं जंचता, अपने जीवन का खरापन जिस में मस्ती उत्पन्न नहीं करता, जो गर्व और उचित आत्म-अभिमान से समाज में सिर ऊंचा नहीं उठा सकता—जानो वह केवल सांस ले रहा है वास्तव में मर चुका है। ऐसे आचरण वाले व्यक्ति का जीवन मुर्दे के समान है जो केवल दुर्गंध फैला रहा है।

दूसरे पद का आदेश है—अदान भाव की कृपणता का, हिंसा का, अत्याचार और अन्याय का विनाश करना।

हम अच्छी तरह न जानते हैं कि संसार में रहते हुए हम बराबर अन्यों की सहायता प्राप्त करते हैं। कुछ सहायता हमें—हमारे जैसे चेतनों से प्राप्त होती है और कुछ जड़ पदार्थों द्वारा। सूर्य, चन्द्र, जल, वायु, पृथ्वी आदि सभी हमें जीवनी शक्ति का दान देते हैं। इनकी सहायता के बिना हम एक क्षण भी जीवन धारण नहीं कर सकते। इन दिव्य शक्तियों के प्रति हमारा कर्त्तव्य क्या है इस पर विचार करने का हम में से बहुत कम लोग यत्न करते हैं। सब से पहली शिक्षा इन जड़ परन्तु कल्याणकारी देवों से हमें यह मिलती है कि हम एक दूसरे का सहयोग करना सीखें और यह सहयोग या सहायता का भाव ऊंच-नीच-छोटाई-बड़ाई के भाव को नष्ट कर देता है। ये शक्तियां उत्पत्ति करती हैं, रसों का संचार करती हैं उत्पन्न हुई वस्तुओं की सुरक्षा भी करती हैं और उन्हें हमारे-हम चेतनों के उपभोग के योग्य बनाती हैं। इस सारे क्रिया कलाप में इनका अपना कोई स्वार्थ नहीं होता फिर भी अहर्निश इसी पवित्र कार्य में लगी रहती हैं। यह निष्कामता और निरीहता का सुन्दर पाठ है जो इन दिव्य शक्तियों से हम पढ़ सकते हैं। हम चीजों को गन्दा कर देते हैं उनको शुद्ध करना भी ये अपना कर्त्तव्य समझती है। तनिक विचारिए तो-हमारे द्वारा की हुई गन्दी वस्तुएं-जल-वायु-या अन्य भौतिक पदार्थ यदि उसी रूप में हमें ही विष को लिए हुए हमें मिलने शुरू हो जायें तो हमारी स्थिति क्या होगी। क्या हम प्राणों को धारण कर सकेंगे ?

यह तो जड़ देवताओं के दान की थोड़ी-सी बात आपके विचारार्थ आपके समक्ष उपस्थित की है अब आइये-चेतनों द्वारा जो कुछ हमें प्राप्त होता है उस पर भी कुछ विचार करते चलें—

प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन निर्वाह की सारी सामग्री अकेला अपनी शक्ति के आधार पर कभी भी नहीं बना सकता यह असम्भव है कैसे ? सुनिये ! आप कपड़े पहनते हैं, भोजन करते हैं, मकान में रहते हैं, विद्याध्ययन करते हैं, औषधोपचार भी कभी-कभी आवश्यक हो जाता है—कुछ मनोरञ्जनार्थ भी अपेक्षित हुआ करता है। क्या इन सारी वस्तुओं को आप अपने लिए अकेले बना सकते हैं। इन वस्तुओं में से किसी एक की कहानी भी यदि आप विस्तार से जानना चाहेंगे तो आप का मस्तक सुनते-सुनते या विचारते-विचारते थक जायेगा—मत समझिये कि जो वस्तु हम बाजार से खरीद कर लाये हैं उसका उतना ही मूल्य है। उस वस्तु के इस रूप तक पहुँचाने में कितने ही श्रमिकों का, धनिकों का, विचारशील वैज्ञानिकों का तथा अन्य सहयोगियों का शरीर बल, धन बल, बुद्धि बल आदि लगे हैं तब कहीं जाकर आप बाजार से उसे खरीद सके हैं। इसलिए जब अन्य सभी हमारी आवश्यकताओं को ध्यान में रख कर हमारे लिए कुछ न कुछ उत्तम सामग्री बनाने में लगे हुये हैं तब हमारा कर्तव्य क्या केवल उदरपूर्ति ही है या हमें भी अन्यों की भान्ति अभाव को दूर करने के लिए कुछ काम करना चाहिए।

यह प्रश्न है जिस पर अब आप इस व्यापक दृष्टिकोण को

(शेष पृष्ठ ६ पर)

हिसार समाज का महा मेला

हिसार का सारा इलाका आर्य समाज का केन्द्र है। ग्राम-ग्राम में आर्यसमाज है। स्वर्गीय पूज्य महात्मा हंसराज जी का हिसार के साथ तो विशेष स्नेह था। स्वयं लाहौर से चलकर वहां के उत्सवों में शामिल होते थे। हिसार में आर्यप्रादेशिक सभा के काम का बड़ा विस्तार है। तपस्वी सन्त महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज भी हिसार के ग्रामों के जल्सों पर पैदल घूमते रहे। आज भी हिसार में विशाल दयानन्द कालेज एक छावनी है जिसमें प्रिंसिपल देवराज जी गुप्ता बैठे शिक्षा का काम कर रहे हैं। सी. ए. वी. स्कूल प्रि० गिरधारी लाल जी की देख-रेख में काम करता है। आर्य-कन्या हाई स्कूल तपस्वी पं० जगन्नाथ जी के आचार्यत्व में प्रगतिशील है तथा दयानन्द ब्राह्म-महाविद्यालय आचार्य तपो-मूर्ति प्रिंसिपल ज्ञानचन्द जी की अध्यक्षता में शानदार कार्य कर रहा है। यहां का आर्यसमाज स्वयं एक विशाल आन्दोलन है। आर्यसमाज की प्रसिद्ध विभूतियों में बख्शी राम कृष्ण जी, वा. प्रकाश चन्द जी, सेठ छबीलदास जी, पं० मुरारी-लाल जी शास्त्री आदि तथा अथक कार्यकर्ता सेठ फतह चन्द जी पंडित देवराज जी एडवोकेट, श्री. नन्दलाल जी, मन्त्री, चौधरी नत्थनराम जी, श्री दीन दयाल जी, चौ. केसरदास जी आदि समाज सेवा में लगे हैं।

आर्य समाज का उत्सव का समारोह भी धूमधाम से होता है। इस बार महोत्सव में आर्य समाज के तपस्वी देवता प्रिंसिपल रलाराम जी एम० ए०, प्रसिद्ध महारथी कंवर सुखलाल जी आर्य मुसाफिर श्री पं० वाचस्पति जी शास्त्री गुरुकुल ज्वालापुर, पं० त्रिलोक चन्द्र शास्त्री पं० राजपाल मदनमोहन मंडली, पं० मेलाराम जी रेडियो सिंगर, पं० प्रभुदयाल जी की मंडली, पं० आशानन्द जी आदि पधारे। नगर कीर्तन तथा उत्सव समारोह बड़े ही धूमधाम से सम्पन्न हो गया। सारे नगर में आर्य समाज की धूम मच गई। जनता उमड़-उमड़ कर आती थी। भिवानी अनाथालय के बच्चों तथा आर्य कन्या पाठशाला के बच्चों का प्रोग्राम भी कमाल का था। ब्राह्म महाविद्यालय के छात्रों का उत्साह भी खूब था। सभा को वेद प्रचार आदि में आर्य समाज तथा दयानन्द कालेज से ५००/- रु० मिला। हिसार पर सभा को मान है।

आर्यसमाज विक्रमपुरा जालन्धर

वार्षिकोत्सव १९ नवम्बर से २८ नवम्बर ६५ तक विक्रमपुरा समाज के नवीन भव्य मन्दिर में बनाया जा रहा है। १९ नवम्बर से २५ नम्बर तक रात के ८ से १० बजे तक पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज की अमृतवर्षा हुआ करेगी। नगर कीर्तन २७ नवम्बर शुक्रवार को H/S स्कूल के विशाल मैदान से प्रस्थान करेगा। यज्ञ, पूज्य महात्मा आनन्दभिक्षु जी महाराज द्वारा २२ नवम्बर से २६ नवम्बर तक विक्रमपुरा माई हीरांगेट के मन्दिर में होगा। २७ और २८ नवम्बर को साईंदास स्कूल के अन्दर वाले मैदान में होगा। राष्ट्ररक्षा सम्मेलन २८ नवम्बर बाद दोपहर श्री यश जी सभा प्रधान की अध्यक्षता में सम्पन्न होगा। महिला समाज का उत्सव २६ नवम्बर नया समाज मन्दिर में होगा।

आर्य समाज बाजार सीताराम देहली

वार्षिक उत्सव २०, २१ नवम्बर १९६५ को रामलीला मैदान में सम्पन्न हुआ। १२ नवम्बर से १६ नवम्बर तक श्री ठा० अमरसिंह जी आर्यपथिक की समाज मंदिर में कथा होती रही। २२ नवम्बर को दोपहर १२ बजे से ५ बजे सायं तक आर्य स्त्री समाज का उत्सव मनाया गया।

देश हमारा जिन्दावाद

भारत भर में चारों ओर, जिधर देखिए है यह शोर\
बच्चे, बूढ़े और जवान, सब कहते हैं एक जबान\
देखे दुनिया देखे आज, हिला दिया दुश्मन का राज\
घर घर गूंज रहा जयनाद।\
देश हमारा जिन्दावाद ॥

बढ़े जहां भी वीर हमारे, दिखा दिए दिन में ही तारे\
टूटे सभी हौसले टूटे, नाशकों के छक्के छूटे\
छिपने को भी मिली न ठौर, छोड़ भगे कायर लाहौर\
घर घर गूंज रहा जयनाद।\
देश हमारा जिन्दावाद ॥

तुम भारत माता के लाल, तुम से स्वयं कांपता काल\
तुम हो इन प्राणों के प्राण, तुम मेरी धरती की शान\
देश दिवानों तुम्हें बधाई, वीर जवानों तुम्हें बधाई\
घर घर गूंज रहा जय नाद।\
देश हमारा जिंदावाद ॥

—विजय निर्बाध

२० और २१ नवम्बर को रामलीला मैदान में उत्सव का प्रोग्राम मनाया गया जिस में म० आनन्दभिक्षु जी, पं० रामचन्द्र जी देहली हरिशरण जी सिद्धांता-लंकार, स्वामी रामेश्वरा नन्द जी, पं० भगवद्दत्त जी वैदिक अनुसन्धान कर्ता, आदि महानुभावों के सार गर्भित व्याख्यान होते रहे रात्रि को ७॥ से १० बजे तक राष्ट्र रक्षा सम्मेलन श्री सत्य नारायण सिन्हा संसद सदस्य एवं संचार मन्त्री की अध्यक्षता में सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। —गौरीशंकर भारद्वाज मन्त्री समाज

आल इंडिया दयानन्द साल्वेशन मिशन होशियारपुर

पं० सुखदेव जी भजनोपदेशक पलवल निवासी को आल इंडिया दयानन्द साल्वेशन मिशन होश्यार-पुर ने जिला गुड़गावां में प्रचारार्थ नियुक्त किया है। जिला की तमाम आर्यसमाजों से प्रार्थना है कि वह पंडित जी को अपना सहयोग देकर पुन्य के भागी बनें।" —शुभ चिन्तक रामदास प्रधान मिशन

सफलता सोपान

(पृष्ठ ५ का शेष)

सामने रखते हुए विचार करेंगे तो अदान भाव-हिंसा-छल कपट अनुदारता और परिग्रह आदि राक्षसी भाव आपके समीप तक न आ सकेंगे। इन राक्षसी भावों का विनाश हमारा परम कर्त्तव्य है इस कर्म को किए बिना हम—

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का सुख स्वप्न कभी भी साकार न कर सकेंगे।

जो व्यक्ति कर्मशील है सच्चा आस्तिक है, दाता-उदार एवम् सत्याचारी है वह ही आर्य है और अन्यों को आर्यत्व का पाठ पढ़ सकता है।

स्वराज्य प्र[illegible]स्वती

(ले०श्री ज्ञानी पिंडीदास जी प्रधान [illegible]लोहगढ़ अमृतसर)

★❋❋❋❋❋❋★

(गतांक से आगे)

आपको देशभक्ति के अपराध में कालिज से निकाला गया, जहां आपने गांधी जी द्वारा विदेशी वस्त्रों को जलाने के आन्दोलन से चौथाई शताब्दि पूर्व पूना नगर में विलायती कपड़ों की एक भारी होली जलाकर अपने गुरु भगवान बाल गंगाधर तिलक को चकित कर दिया था। देश में सशस्त्र क्रान्ति का प्रचार करने के अपराध में आपको ५० वर्ष अर्थात दो जन्मों की सजा देकर अण्डेमान में भेज दिया गया था, जहां आप वर्षों चक्की पीसते, कोहलू में जोते जाते और मूंज कूटा करते थे। जिन की प्रसिद्ध पुस्तक 'हिन्दुस्थान का प्रथम स्वातन्त्र्य संग्राम' प्रकाशित होने से पूर्व ही जब्त कर ली गई थी, जिनके बड़े भाई बाबा राव गणेश दामोदर सावरकर जी भी कालेपानी की जेल काटते रहे और छोटे भाई श्री डा० नारायण दामोदर सावरकर भी कई बार देश भक्ति के अपराध में कृष्ण मन्दिर की यात्रा करते रहे परन्तु खेद कि अहिंसा का उद्घोष करने वाले कांग्रेसी लोगों की भीड़ के हाथों १९४८ में शहीद कर दिये गये।

इस क्रान्तिकारी श्रेणी में नेता जी सुभाष चन्द्र बोस का स्थान भी बहुत ऊंचा है। यद्यपि आप कांग्रेस के प्रधान थे, तथापि स्वतन्त्रता वीर सावरकर महोदय की प्रेरणा से आप विदेश चले गये और उन ही के साथी क्रान्तिकारी सम्राट् श्री बाबू रासबिहारी बोस (जो कि लार्ड हार्डिंग पर बम फैंकने की घटना के बाद गुप्त रूप के जापान में जा बसे थे, और वहां पर भारत में सशस्त्र क्रान्ति कराने के उद्देश्य से इण्डियन नैशनल आर्मी (आजाद हिन्द फौज) की स्थापना कर रखी थी) को मिल कर उक्त आई. एन. ए. की कमान सम्भाल कर ब्रह्मदेश के मार्ग से इम्फल के स्थान पर अंग्रेज की फौजों के साथ टक्कर ले कर उन्हें विश्वास दिला दिया था कि अब हिन्दुस्थान पर शासन नहीं किया जा सकता।

पंजाब के सरदार अर्जुनसिंह उनके दोनों सुपुत्र सरदार किशन सिंह तथा १९०७ के सुविख्यात हीरो सरदार अजीत सिंह और सरदार किशन सिंह के सुपूत हुतात्मा सरदार भक्तसिंह जी, श्री पं. चन्द्र शेखर आजाद, श्री पं. रामप्रसाद 'बिस्मल', चौधरी रोशनसिंह, वीर सावरकर के साथी श्री मदन लाल ढिंगरा, देवता स्वरूप श्री भाई परमानन्द जी, श्री भाई बालमुकुन्द जी तथा उनकी धर्मपत्नी श्रीमति राम रखी जी, श्री ला. बलराज भल्ला तथा श्री रणवीर जी आदि अनेकों क्रांतिकारी सज्जनों को महर्षि दयानन्द की शिक्षा ने ही देश की स्वतन्त्रता केलिये अपना सर्वस्व न्योछावर करने के लिये उद्यत किया था।

इस प्रकार विचार करने से हम इस परिणाम पर पहुँचते हैं कि हिन्दुस्थान की स्वतन्त्रता के लिये जिस किसी ने भी थोड़ा अथवा बहुत जिस रूप में, जिस परिस्थिति में, जिस ढंग से, और जिस भी सभा, सोसाइटी, दल अथवा संगठन द्वारा कार्य किया, उन सब के गुरु, आचार्य, प्रवर्तक प्रेरणा स्रोत, स्फूर्ति प्रदाता और मार्ग प्रदर्शक किसी न किसी रूप में स्पष्ट अथवा अस्पष्ट महर्षि दयानन्द सरस्वती ही थे। देखिये नीचे अंकित "स्वराज्य परम्परा तालिका" और बोलिये स्वराज्य प्रदायक, स्वातन्त्र्य प्रवर्त्तक अखंड ब्रह्मचारी भगवान दयानन्द की जय।।

——

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा की ओर से प्रचारकार्य

सूर्यग्रहण मेला कुरुक्षेत्र जो कि १६ नवम्बर से २३ नवम्बर तक कुरुक्षेत्र में बनाया जा रहा है, सभा की नियुक्त पं० अमरसिंह जी की दो भजनमंडलियां प्रचारार्थ पहुंच गई हैं। प्रचार, लंग, निवास आदि का प्रबन्ध पं० अमरसिंह जी बड़ी लगन से कर रहे हैं।

मेला कपाल मोचन पर भी ये दोनों मडलियां तथा सभा उपदेशक प्रचार करेंगे। दानी श्रद्धालु भक्तों से प्रार्थना है कि इन दोनों अवसरों पर यथा शक्ति दान आदि से सभा की सहायता करें। व्यवस्थापक

शुभ सगाई

श्री बृज लाल जी गुप्त टोहाना निवासी मालिक चन्द्र गुप्त औषधालय के सुपुत्र श्री श्री राजेन्द्र श्री गुप्त B.A. की सगाई आगरा निवासी श्री ल० चन्द्रभानु जी की सुपुत्री शशीबाला के साथ सम्पन्न हो गई। सगाई के समय केवल एक रुपया और नारियल ही लिया गया। इसी का नाम है वास्तविक सुधार।

आर्य समाज ऊना (हुशियारपुर)

आर्य समाज ऊना ने अपने ३१ १०-६५ के अधिवेशन में निम्नलिखित प्रस्ताव सर्व सम्मति पास किया गया। आर्यसमाज ऊना पंजाबी सूबा जैसे विवादास्पद प्रश्न को इस संकट कालीन परिस्थिति में फिर से उठाना बड़ा असामयिक तथा देश हित के प्रतिकूल समझता है इसलिये भारत सरकार तथा अपने अकाली भाईयों से अनुरोध करता है कि इस प्रश्न को शान्त वातावरण में विचार करने के लिए स्थगित कर दें।

मन्त्री समाज शान्तिस्वरूप शर्मा

★ जब तक शरीर पुष्ट है, नीरोग है, वृद्धापन दूर है, इन्द्रियों की शक्ति कम नहीं हुई है, आयुष्य भी क्षीण नहीं हुई, तब तक बुद्धिमानों को चाहिए कि कल्याण का उपाय कर लें, घर जलने पर कुआं खोदने से क्या होगा?

शोक प्रस्ताव

आप को यह जान कर अत्यन्त दुःख होगा कि आय प्रादेशिक प्रतिनिधि उप सभा के पुराने विद्वान उपदेशक श्री महता जगन्नाथ जी का देहान्त कल १-११-१९६५ को बाजार सीताराम आर्यसमाज में हुआ। श्री महता जी चिरकाल से अस्वस्थ थे और बाजार सीताराम आर्य समाज में ही रहा करते थे। दिवंगत आत्मा की सद्गति के लिए प्रभु से प्रार्थना की गई।

राज कुमार सभा मंत्री

सन्त फतहसिंह जी :—

पंजाबी सूबा क्यों ?

श्री करनैल सिंह जी विद्यार्थी, आर्य समाज नवांकोट अमृतसर

इस उक्त शीर्षकसे एक पुस्तिका पंजाब के कई स्थानों में बांटी गई है। इस पुस्तक में पंजाबियों को अपने देश भारत के विरुद्ध व हिंदुओं के विरुद्ध भड़काया गया है। साथ ही झूठ-सत्य से भी काम लिया है। सन्त जी लिखते हैं कि:

"भारत दीयां चौदां परवानत बोलियां हन, जिहना विच्चों पंजाबी भी इक है। पर इह कितने अफसोस वाली गल है जद कि सारे भारत विच जबान दे आधार ते सूबे होंद विच आ गये हन पर निरोल बोली दे आधार ते पंजाबी सूबा न लेना के बहादुर पंजाबियां नाल खिधा वितकरा कीता जा रिहा है।"

(पंजाबी सूबा क्यों पृष्ठ २)

श्री सन्त जी, पंजाबी भारत की चौदह बोलियों में एक है यह आप मानते हैं न। हां यदि मानते हैं तो जिस प्रकार और भाषाओं का भारत में मान है उसी प्रकार इस का भी है आप यदि इसकी हिंदी से तुलना करें तो हिंदी के मुकाबले में यह कुछ नहीं है हिन्दी का अपना इतिहास है जो भारतीय संस्कृति से गहरा सम्बन्ध रखता है। पर पंजाबी का तो उसके मुकाबले में कोई खास इतिहास भी नहीं और न ही यह काफी समय से भारत में है। दूसरी बात है सूबे की। आदरणीय सन्त जी, आप कृपा करके बतावें कि किस प्रदेश में उस बोली के लिहाज से सूबा बनाया गया है क्या कहीं अंग्रेजिस्तान है। अथवा अंग्रेजी सूबा है? या बंगाली सूबा है? या मराठी सूबा है...? यदि नहीं तो आप क्यों पंजाबी सूबे की मांग करके भगदड़ मचा रहे हैं। पंजाबी पंजाब में बोली जाती है, बाहिर भी कहीं थोड़ी बहुत बोली जा रही होगी ठीक है पर पंजाबी सूबा कह कर आप बहादुर पंजाबी जवानों को क्यों भड़का रहे हैं। और पंजाबियों को भारत से क्यों अलग समझ रहे हैं पंजाब भारत का अंग है। पंजाबी भारत के वीर है पर पंजाबी सूबे के द्वारा आप सिखों को सरकार के विरुद्ध क्यों भड़का रहे हैं। उनसे क्या (तिकवरा) राय की जाती है? क्या उन्हें पंजाबी बोलने से रोका गया है? अथवा लिखने से? यदि नहीं तो सन्त जी क्यों इतने उथले पुथले हैं।

'पिछले १८ सालों तों पंजाबी इह मंग कर रहे हन कि साडे नाल भी भारत दीयां दूजियां कौमां वांग सलूक कीता जाये, पर साडी कांग्रेस सरकार कुन्ज फिरकू हिन्दुओं दे अड्डे चढ़ी होई है अते इस कारण कुछ फिरकू लोकां दे आखे लग के देस विच वस रहीयां घट गिनतियां दी आवाज नूं भी सुनन लई तियार नहीं।'

(पंजाबी सूबा क्यों पृष्ठ २)

श्री सन्त जी! कांग्रेस सरकार आप पर क्या ज्यादती कर रही है। जरा बतलाइए तो सही जो पिछले १८ सालों से, सिखों से, पंजाबियों से सरकार अन्याय कर रही है? बताइए कि और दूसरी (कौमां) लोगों को सरकार कौन से मक्खन के पेड़े दे रही है जो आप की हां-हां पंजाबियों को नहीं मिले। श्री सन्त जी! आप हिंदु सिखों में भेद क्यों समझ रहे हैं क्यों हिंदुओं को फिरकू कहकर और सिखों को उनके विरुद्ध भड़का कर एक दूसरे में फट डाल रहे हैं। क्या सिक्ख, पंजाबी हिंदुओं से अलग हैं। तो कहां से आए हैं, ये अस्तु ऐसी ओछी बातें आप को नहीं जंचती। अतः आप पंजाबियों को, सिखों को, अलग समझ कर कम गिनती वाले न कहें।

देश वासियो! हे मेरी परम प्यारी सरकार! ये हैं कुछ शब्द श्री सन्त जी के जिनके द्वारा पाकिस्तान का रेडियो ये चिल्ला-चिल्ला कर कह रहा है कि भारत में सिखों के साथ अन्याय हो रहा है उनका हक छीना जा रहा है आदि आदि बकवास।

श्री सन्त जी! यह समय सिखों, पंजाबियों को भड़काने का नहीं। यह समय तो उनके हौसलों को बढ़ाने, उत्साह बढ़ाने का है अत: मैं आशा करता हूं कि आप-अपनी जबान, कलम को युद्ध के समय तक बन्द ही रखेंगे। (क्रमशः)

कन्याओं के लिए आर्ष पाठ-विधि के निःशुल्क शिक्षण-केन्द्र

आर्ष कन्या गुरुकुल नरेला का १०वां वार्षिकोत्सव

११, १२ दिसम्बर को होने जा रहा है।

इस अवसर पर आर्य-जगत के उच्चकोटि के भजनोपदेशक संन्यासी, महात्मा, विद्वान् तथा नेता एवं नर-नारी पधारेंगे आध्यात्मिक सामाजिक तथा राष्ट्रीय विषयों पर इन महानुभावों की वक्तृताओं के अतिरिक्त गुरुकुल की ब्रह्मचारिणियों का प्रभावप्रद कार्यक्रम व्याख्यान श्लोक, कविता भजन, वार्तालाप आदि के रूप में देववाणी तथा आर्यभाषा में प्रस्तुत किया जाएगा। सम्पूर्ण महाभाष्यादि व्याकरण, दश उपनिषद् छः दर्शन ऋषि दयानन्द कृत समस्त ग्रन्थ सम्पूर्ण यजुर्वेद आदि धार्मिक ग्रन्थों के अतिरिक्त संस्कृत साहित्य, आर्य भाषा, साहित्य, गणित, गृह-विज्ञान, इतिहास, अर्थशास्त्र, नागरिक शास्त्र, स्वास्थ्य शिक्षा आदि आधुनिक विषयों का अध्ययन करने के पश्चात् स्नातिका बनने वाली पांच कन्याओं को 'वेद-विभूषिता' की पदवी से अलंकृत किया जाएगा। दीक्षान्त समारोह रविवार १२ दिसम्बर को होगा। एक सप्ताह पूर्व से होने वाले यजुर्वेद-पारायण-महायज्ञ की पूर्णाहुति भी इसी दिन प्रातः १० बजे होगी। नवीन कन्याओं के प्रवेश के इच्छुक सज्जन ४ दिसम्बर तक प्रार्थना पत्र भेज कर आपने आवास सुरक्षित करवा लें। सब आर्य भाई बहिनों से प्रार्थना है कि इष्ट मित्रों सहित पधार कर उत्सव की शोभा बढ़ावें।

—निवेदिका

चन्द्रकलार्या स्नातिका।

सुशीला आर्या एम. ए.

आचार्या एवं मुख्याधिष्ठात्री

आर्यसमाज पुल बंगश देहली का समाचार

वार्षिकोत्सव २६, २७, २८ नवम्बर को होगा। ४ दिन पूर्व वेद कथा होगी।

८०१) राष्ट्र रक्षा निधि में भेजा गया।

अक्तूबर में श्री पं० गणेशदत्त जी पुरोहित समाज ने २३ संस्कार कराये ६६) दान मिला।

—सुरेशकुमार मन्त्री

मुद्रक व प्रकाशक श्री जयोधराज जी आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर द्वारा वीर मिलाप प्रेस, मिलाप रोड जालन्धर से मुद्रित तथा जगत् कार्यालय महात्मा हंसराज भवन निकट कचहरी जालन्धर शहर से प्रकाशित मालिक—आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर



टैलीफोन नं० ३०५७ [आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधिसभा पंजाब जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd. No. P.

एक प्रति का मूल्य १३ नये पैसे वार्षिक मूल्य ६ रुपये

वर्ष २५ अंक ४९) १४ मार्गशीर्ष २०२२ रविवार—दयानन्दाब्द १४१— २८ नवम्बर १९६५ (तार 'प्रादेशिक' जाल

वेद सूक्तयः

आसुवोर्जमिषं च नः

परमदेव ! हमें आप ऊर्ज बल शक्ति तथा इषम्-अन्न आदि धनपदार्थ आसुव-प्रदान कीजिए। हम आपके भक्त सदा बलवान बनें तथा धन वाले बन कर जीवन यात्रा में सदा सफलता प्राप्त कर सकें।

आरे बाधस्व दुच्छुनाम्

जो लोग बुरे हैं, कुत्ते के समान लंबी जीभ वाले हैं, हर काम में लोभ की मात्रा जिनकी बढ़ हुई है ऐसे लोगों को हम से परे कर दो। भगवन ! ऐसे लोग हमें सता न सकें। पास न आवें।

अदृशन्नस्य केतवः

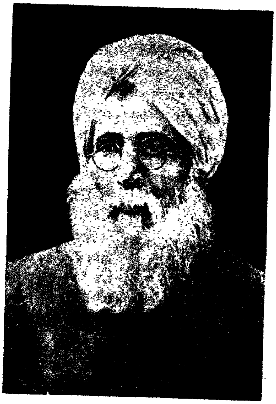
जो लोग ज्ञानी हैं, दूरदर्शी हैं। वे उस परमेश्वर की महिमा की झाँकियां सदा देखते हैं। उन को सर्वत्र परमेश्वर के दर्शन होते हैं। सच्चे आस्तिक एवं प्रभु भक्त हैं। उसे कभी नहीं भूलते।

सोमो देवो न सूर्यः

वह देव भगवान् सोम है—शान्ति का देने वाला है। जितने भी संसार के देवता हैं, चाहे जड़ हैं या चेतन देव हैं। इन सबके ऊपर का देव महादेव भगवान है। वह सूर्य है। प्रकाशमय है।

सा म वे द से

तप और त्याग के देवता
स्वर्गीय महात्मा हंसराज जी



जिन की जयन्ती आर्यसमाज सैक्टर ८ चंडीगढ़ तथा आर्यसमाज हिसार के महोत्सवों पर समारोह से मनाई गई

संगठन शक्ति का परिचय

आर्य समाज विक्रमपु (किला) का वार्षिक महोत्स अपना केन्द्रीय समारोह होत है। जालन्धर में इस महामेल में आर्यजगत् के मान्य नेता सन्त महात्मा, महारथी विद्वा तथा संगीताचार्य पधारते हैं स्कूल कालेज तथा समाजें एकत्रि होती हैं। आर्यों का यह पंजाब प्रान्त का एक महान् धार्मिक तीर्थ है। सारे समाज की शक्ति तथा संगठन का अद्भुत परिचय मिल जाता है। यह अब ता. २६, २७, २८ नवम्बर शुक्रवार से रविवार तक हो रहा है। सारे भाई बहिन पधार कर अपना जीवन परिचय देवें अमृतमय प्रवचन, राष्ट्र रक्षा भाषण तथा वेद प्रचार का सन्देश सुनने को मिलता है!

वर्ष के बाद यह धर्म पर्व आता है। इस विषम वातावरण में तो इस समारोह में पधारना और भी आवश्यक है। सादर निमन्त्रण है।

अधिष्ठाता—श्री संतोषराज जी

सम्पादक—त्रिलोक चन्द्र श

राष्ट्र-भक्ति और प्रभु-भक्ति

(पूज्यपाद श्री महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज की अमृतभरी कथा)

पूज्यपाद श्री महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज आर्य जगत के परम तपस्वी सन्त हैं। आपके जीवन में आकर्षण, वाणी में रस, स्वभाव में सरलता तथा स्वाध्याय साधना में उच्चता है। आर्यसमाज विक्रमपुरा जालन्धर के वार्षिक महोत्सव के उपलक्ष्य में आप ने कृपा करते हुए ता० १९ नवम्बर से आर्य समाज मन्दिर में रात को अमृतमयी वेद कथा प्रारम्भ की। चारों ओर अमृत ही बरसता था। आर्यजगत के प्रेमी पाठकों को महात्मा जी का यह मधुर प्रसाद भेंट किया जा रहा है—सं०

माताओ और भाइयो !

आर्यसमाज (किला) जालन्धर के नए भवन को देखकर हार्दिक प्रसन्नता हुई। कई वर्षों के बाद इस आर्यसमाज मन्दिर में कथा करने के लिए आया हूं। नया आर्यसमाज मन्दिर अब काफी सुन्दर बन गया है लेकिन आर्य भाइयों की रुचि कम हो गई है। यह युग ही भौतिकवाद का है। लोग तरह-तरह के भौतिकवादी सुखों में डूबे हैं। प्रभु भक्ति को कोई क्या करे। भौतिक वाद में नाना प्रकार के सुख हैं। यह युग अपना चौधरपन बनाने का है। रूस, अमरीका और चीन इसी दौड़ में लगे हुए हैं। आपका पंजाब भी इसी रोग का शिकार है। एक अंग्रेज मैकालिफ हुआ है। उसने हिन्दुओं सिखों में फूट के बीज बोए। उसने आनन्दकारज मैरिज बिल पास कराया। हिन्दुओं और सिखों की विवाह रीतियों को अलग-अलग किया। यह सब अपनी-अपनी चौधर के कारण हैं। आम सिख बहुत अच्छे हैं लेकिन कुछेक अपनी चौधर चाहते हैं। हिन्दू भी चौधरपना चाहते हैं। इसका परिणाम वैमनस्य के सिवा और कुछ नहीं होगा। शहर में, गांव में यहां तक कि समाजमें भी चौधरपने के लिए झगड़ा है।

मैं आज अथर्ववेदके सोलहवें कांड को लेकर कथा करूंगा। इसमें पृथ्वी सूक्त का उल्लेख है। बताया गया है कि मातृभूमि की रक्षा के लिए भौतिकवाद और अध्यात्मवाद को साथ-साथ चलना है। अध्यात्मवाद के बिना भौतिकवाद का कोई महत्त्व नहीं। गीता में उल्लेख आता है कि युद्ध क्षेत्र में अपने सम्बन्धियों और प्रियजनों को देख कर अर्जुन ने श्रीकृष्ण से कहा—ये सब तो मेरे सगे-संबंधी हैं। मैं इनसे नहीं लड़ूंगा। श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा—हे अर्जुन ! यह क्या कायरता की बातें कर रहा है। अर्जुन पुनः कहा कि मैं अपने सम्बंधियों को मार कर राज नहीं चाहता। मैं इन्हें नहीं मारूंगा। तब श्रीकृष्ण ने गीता का उपदेश दिया। उस संदेश से रजोगुण, तमोगुण, इन्द्रियविजय आदि सब लिखा है। श्रीकृष्ण ने यह भी बताया कि आत्मा परमात्मा क्या हैं। आत्मा अमर है।

वास्तव में युद्ध अध्यात्मवाद से शुरू होता है। मानव जीवन ही एक संग्राम है। कभी बाहिर लड़ाई होती है और कभी अन्दर। सत्युग मे देवासुर युद्ध हुआ। त्रेता में राम-रावण युद्ध हुआ। द्वापर में कौरवों और पांडवों की लड़ाई हुई। कलियुग तो है ही कलह का युग।

दो युद्ध हो चुके हैं तीसरेकी तैयारियां हो रही है। एक ओर भुट्टो अयूब लगे हुए हैं। भगवान ने क्या अजीब नाम रखा है चू एन लाई। इसने भारत को भाई कहकर पीठ में छुरा घोंप दिया। इस कलह युग में घर-घर में लड़ाई है। पुत्र-पिता में पति-पत्नी में लड़ाई है, सुरक्षा-परिषद में, संसद में और असैम्बली में लड़ाई है। समाजों में लड़ाई है। यहां तक कि कोई जगह खाली नहीं है। मैं दिल्ली में था। करोल बाग के एक सज्जन मेरे पास आए कहने लगे हमारे घर में बहुत ज्यादा झगड़ा हो गया है, आप पधार कर मामले को निपटा दें। उसके बहुत कहने सुनने पर मैं यह सोचकर चल पड़ा कि यदि मेरे जाने से उसके घर का क्लेश खत्म हो जाए तो जाना ही चाहिए। वहां जाकर देखा कि उक्त सज्जन एक कोठी बनवा रहे हैं। बाप-बेटे में इस बात पर झगड़ा हो रहा था टाइलें कौन से रंग की लगवाई जाएं मामूली-सी बात थी लेकिन वहां दोनों अपना-अपना चौधरपन चलाना चाहते थे और इसी बात पर झगड़ा था। लड़ाई-झगड़ा अहंकार का प्रतीक है। युद्ध का अर्थ है—'मम् सत्यम्' यानि मैं जो कुछ कहता हूं वही सच्च है,

आध्यात्मवाद के बिना भौतिक उन्नति संभव नहीं। आध्यात्मवाद राष्ट्र भक्ति और मातृभूमि की रक्षा की बुनियाद है। भगवान दयानन्द ने श्री सत्यार्थप्रकाश के छटे समुल्लास में लिखा है कि राष्ट्रपति या राज्य-सभा का सदस्य वही बन सकने के योग्य है जिसने इन्द्रियों पर विजय प्राप्त की हो और जिसका तीनों कालों पर वश हो। आध्यात्मवाद, मानवजीवन, जीवन संग्राम, राष्ट्रभक्ति और मातृभूमि की रक्षा का आधार है।

अथर्व वेद के सोलहवें कांड के १२वें सूक्त में मंत्र है सत्यं बृहद ऋत, उग्र, दीक्षा तपो ब्रह्म यज्ञः पृथिवी, धारयन्ति।

इस श्लोक में बताया गया है कि मातृभूमि की रक्षा कैसे हो सकती है। आज पाकिस्तान और चीन हमारे शत्रु हैं। लेकिन सब से बड़ा शत्रु अंग्रेज है जिस ने अपनी चौधर बनाए रखने के लिए भारत के टुकड़े कर दिए। अब उसने पाकिस्तान को हमारे विरुद्ध खड़ा किया हुआ है। वास्तव में अमरीका, पाकिस्तान, चीन, इण्डोनेशिया और ब्रिटेन—ये पांचों हमारे शत्रु हैं। अमरीका और इंगलैंड से बढ़ कर बड़ा बेइमान इस संसार में और कोई नहीं। सोवियत संघ नास्तिक जरूर है लेकिन वह वही कुछ करता है जो कहता है। इंगलैंड वाले तो बानरों की सन्तान हैं। कहते हैं पांच में परमेश्वर होता है लेकिन मुझे इन पांचों में तो शैतान दिखाई देता है। जिस राष्ट्र पर एक साथ पांच शत्रु नजर लगाए बैठे हों, जिसकी सीमाओं पर अशांति हो, वह भगवद् भजन में कैसे लग सकता है। उसे चैन कहां हो सकती है। लेकिन हमारे वेदों में इसके लिए भी उपाय है। वेद शांतिप्रिय ग्रंथ हैं किन्तु यदि आततायी अत्याचार करें तो इस ग्रंथ में स्थान-स्थान पर युद्ध करने का सन्देश दिया गया है। कहा गया है कि आक्रमणकारी पर इस तरह टूट पड़ो कि फिर कभी मुंह न करे। कोई भी राष्ट्र कभी आततायी को सहन नहीं कर सकता। लेकिन भारतवासी एक हजार वर्ष तक गुलाम रहने के कारण अपना स्वभाव नहीं बदल सके। लाठी पड़ती है, उठते हैं, फिर सो जाते हैं। किन्तु अब हमें जागना है और जागते रहना है।

सुख-दुःख कुछ भी नहीं है। यह मन की बात है। उपनिषदों में आता है पत्नी-पति से, मां पुत्र से, बहिन भाई से आत्मा के कारण प्यार करती हैं। सर्दियों में लोग हीटर लगाते हैं, गर्मकोट पहनते हैं क्योंकि यह आत्मा को प्यारा लगता है। (क्रमशः)

(गतांक से आगे)

'शिकागो डेली न्यूज़' के सम्वाद दाता श्री पाल हर म्यूसिस ने अपने अखबार को भेजी गई खबर में कहा :—

'पाकिस्तानी १६ वर्ष पुरानी ४७५ मील लम्बी युद्ध-विराम-रेखा को अनेक स्थानों पर पार करके भारतीय क्षेत्र में घुस आए हैं। इस युद्ध-विराम-रेखा का निरीक्षण संयुक्त राष्ट्र-सैनिक प्रेक्षक कर रहे हैं। इस सप्ताह के हमले 'आज़ाद कश्मीर' या युद्ध-विराम-रेखा के उस पार के पाकिस्तानी क्षेत्र से शुरू हुए हैं।

फ्रांस के अखबार 'ल मोंद' के सम्वाद दाता श्री जां वेनुस ने अपने पत्र को यह समाचार भेजा :—

'काश्मीर में अब तक जो गुरिल्ला भेजे जा चुके हैं, उनकी तादाद चाहे जो भी हो, पाकिस्तान के सरकारी हलकों से जो संकेत मिले हैं, उनसे यह स्पष्ट होता है कि सीमा के उस पार कम-कम-से १०,००० आदमी इस काम के लिए नियुक्त किए थे।'

बी० बी० सी० के नई दिल्ली स्थित सम्वाद दाता श्री आइवर जोन ने २१ अगस्त को श्रीनगर से खबर भेजते हुए कहा :—

'अगर गुरिल्ला यह आशा लेकर आए थे कि स्थानीय लोग उनका स्वागत करेंगे या उनका साथ देंगे, तो उनकी आशा पूरी नहीं हुई।'

१४ अगस्त, १९६५ के 'न्यूयार्क टाइम्स' ने श्रीनगर से अपने सम्वाद दाता श्री जैक्स नेवडे की भेजी हुई यह खबर छापी :—

'पाकिस्तान से आने वाली खबरों में जो यह कहा जाता है कि भारत-अधिकृत जम्मू-कश्मीर में गड़बड़ हुई हैं और भारतीय शासन के विरुद्ध एक आम विद्रोह हुआ है, वह निराधार है।'

(जन-साधारण की जानकारी के लिए आवश्यक लेख)

प्रति सप्ताह क्रमशः भेंट किया जाएगा

कश्मीर को हड़पने का पाकिस्तान का ताज़ा प्रयत्न

'बाल्टीमोर सन' के सम्वाद-दाता श्री जेम्स कीट ने १३ अगस्त को श्रीनगर से भेजी गई अपनी खबर में कहा है :—

'भारतीय कश्मीर विरोधी राजनीतिक सूत्र भी इस बात पर सहमत हैं कि स्थानीय लोगों ने कोई विद्रोह नहीं किया।'

सम्वाददाता ने आगे चलकर कहा है :—

पाकिस्तान सरकार ने जो यह दावा किया है कि कश्मीर में क्रांतिकारी विद्रोह हो रहा है, उसके कोई चिन्ह नहीं हैं।'

पाकिस्तान-विरोधी भावना

'क्रिश्चियन साइन्स मोनिटर' के सम्वाददाता ने अपने पत्र को भेजी गई खबर में इस तथ्य को और अधिक अच्छे ढंग से पेश किया है। उसने कहा है, 'कश्मीर का कोई भी आदमी पाकिस्तान में शामिल नहीं होना चाहता। स्थानीय लोगों-द्वारा कश्मीर सरकार और भारतीय अधिकारियों को सूचना दिए जाने के कारण जिस ढंग से और जिस तादाद में घुसपैठियों का अब सफाया किया जा रहा है, उससे इस बात की और भी पुष्टि हो जाती है।

इसका कारण मालूम करना कुछ मुश्किल नहीं है। भारत के रक्षा-मन्त्री श्री यशवन्तराव बलवंतराय चह्वाण के शब्दों में :—

'मालूम होता है कि घुसपैठी १९४७ के पाठ को याद रखे हुए थे (जब कि हमलावरों के ज़ुल्म, अपहरण और लूट-खसोट के कारण, उन सब लोगों को उनसे घृणा हो गई थी, जो उनके सम्पर्क में आए)। फिर भी वे लोगों को परेशान करने की कार्रवाईयों से बाज़ नहीं आए। उन्होंने स्कूलों, पंचायतघरों और गांवों में आग लगाई तथा उन लोगों पर गोलियां चलाईं जिन्होंने आग बुझाने की कोशिश की। घुसपैठियों ने पूजा-स्थानों को भी जलाया। निहत्थे देहातियों को भी उन्होंने मार डाला ऐसी घटनाएं भी हुई हैं, जब कि उन्होंने अपना राशन समाप्त होने या गुम होने पर, गांववालों से ज़बर्दस्ती राशन वसूल किया।'

जहां कश्मीर की जनता घुसपैठियों का पता लगाने और उनकी सूचना देने में लगी हुई है, वहां भारतीय सेना के दस्ते उन महत्त्वपूर्ण ठिकानों की सुरक्षा कर रहे हैं, जहां से पाकिस्तानी कश्मीर में घुस आए हैं। जहां-कहीं ज़रूरी हुआ है, उन्होंने उन ठिकानों पर कब्ज़ा कर लिया है, जिनसे घुसपैठियों की संचार-व्यवस्था कायम है और जहां से उन्हें कुमुक मिलती है।

पाकिस्तान दोषी है

जो कुछ हुआ है, वह संक्षेप में इस प्रकार है :—हज़ारों हथियारबन्द पाकिस्तानी हमलावरों ने, जिनमें पाकिस्तान के नियमित और अनियमित सैनिक शामिल हैं, नागरिकों के भेष में युद्ध-विराम-रेखा पार की है और वे गैर-कानूनी ... जम्मू-कश्मीर राज्य में घुस आए हैं।

पाकिस्तान हमलावरों का प्रवक्ता और संगठनकर्ता है और वह उनकी पूरी मदद और समर्थन करता है। उसी ने ही यह योजना बनाई है और हमलावरों को विभिन्न काम सौंपे हैं। जहां-कहीं भी घुसपैठी घुसे हैं, उन्हें सीमा के उस पार की नियमित पाकिस्तानी सेनाओं से पूरी-पूरी मदद मिली है। पाकिस्तान ने घुसपैठियों को इकट्ठा किया है और उन्हें फौजी ट्रेनिंग दी है। कपड़े और रुपये तथा सैनिक सामान भी उन्हें पाकिस्तान ने दिया है। उनकी कमान पाकिस्तानी सेना के अफसर कर रहे हैं। हथियारों की किस्म और टाइप तथा उन पर बने पाकिस्तान आर्डनेन्स फैक्टरी के निशान स्वयं ही अपनी कहानी सुनाते हैं!

पाकिस्तान-द्वारा डराकर लूटने का हथकण्डा

चीनी साम्यवाद का सामना करने के बहाने पाकिस्तान पिछले दस वर्षों से अपने 'सीटो' और 'सेन्टो' के साथियों से बड़ी मात्रा में आधुनिक हथियार और साज-सामान प्राप्त कर रहा है और इस तरह उसने इनका बड़ा भण्डार कायम कर लिया है। परन्तु उसने १९६५ में कच्छ में, पैटन टैंक और अमरीका-द्वारा दिये गए अन्य साज सामान का भारत के विरुद्ध प्रयोग किया, जिसका उद्देश्य यह पता लगाना था कि भारत किस हद तक तैयार है और उसके साथ-साथ कश्मीर में वर्तमान सैनिक हमले के लिए एक आड़ भी ढूंढ़ी थी, जहां उसने अब बड़ी तादाद में उन टैंकों का प्रयोग किया है।

पाकिस्तान का हथकण्डा यह है कि वह कश्मीर के सवाल पर

(शेष पृष्ठ ८ पर)

आर्यसमा... ...सार

वार्षिकोत्सव ... नवम्बर को बड़ी ... सम्पन्न हुआ। जिस ... लाल जी, पं. त्रिलोकचन्द्र जी शास्त्री, प. वाचस्पति जी एम. ए., प्रि० रलाराम जी एम. ए., के सारगभित व्याख्यान हुए। इसके अतिरिक्त प. राजपाल मदनमोहन जी चिमटा मंडली के भजनों ने तांता बांध दिया। पं. प्रभुदयाल जी की मंडली ने भी भजनों द्वारा जनता पर अच्छा प्रभाव डाला।

—रामविचार
प्रचार मन्त्री समाज

...सी ... चा० नरसाराम जी प्रधान ने अपने वृद्ध चाचा जी के स्वर्गवास पर प्रादेशिक सभा की श्री पं. प्रभुदयाल जी आर्य की भजन मंडली द्वारा हवन यज्ञ और संकीर्तन कराया। और उपस्थित जनता को आर्य सिद्धांतों से अवगत कराया। इस अवसर पर ६०/- सभा को वेद प्रचारार्थ प्राप्त हुआ।

आर्यसमाज योगेन्द्रनगर का चुनाव

प्रधान—श्री गुरुदयाल जी, आपको ही शेष पदाधिकारी तथा अंतरंग सदस्य मनोनीत करने का अधिकार दिया गया।

कार्य कर्त्ता प्रधान—श्री केवल दास जी बतरा, उपप्रधान—माता बृजरानी जी धवन, मन्त्री—श्री मुरारीलाल जी,—श्री केदारनाथजी, प्रचार मन्त्री—श्री कस्तारचन्द्रजी, कोषाध्यक्ष—श्री बसलाल जी। अंतरंग सदस्य—श्री गिरधारीलाल जी, बाबू परमानन्दजी, श्री कस्तूरीलाल जी, श्रीमती रलीआदेवी जी।

✱ ओजोऽसि ओजोमयि धेहि (शक्तिमान ईश्वर मुझे भी शक्ति देवे)।

✱ सहोऽसि सहोमयि धेहि (सहनशील प्रभु मुझे भी सहनशीलता देवे)।

कश्मीर को हड़पने.....

(पृष्ठ ७ का शेष)

भारत को मजबूर करे। उसने जानबूझकर यह तनाव पैदा किया है और भारत-पाकिस्तान की सीमा के बहुत-से स्थानों पर इस तनाव को जारी रखा है। ... का कोई भी दिन ऐसा नहीं गया जबकि पाकिस्तानियों ने किसी न किसी क्षेत्र में सीमा का उल्लंघन न किया हो। जब कच्छ में उनकी तोपों को चुप करा दिया गया, तो पूर्व पाकिस्तान राईफल्स ने आसाम और त्रिपुरा के इलाकों में गोलाबारी शुरू कर दी।

भारत एक बड़े अरसे से धैर्य और संयम से काम ले रहा है। उसका सबसे पहला उद्देश्य सदैव शांति रहा है। परन्तु भारतीय जनता को अब यह विश्वास हो गया है कि पाकिस्तान अमन नहीं चाहता। भारत इस धमकी का मुकाबला करने के लिए कृतसंकल्प है।

संभव है कि हमारी सीमाओं पर और अधिक गड़बड़ी पैदा करने की कोशिश की जा रही हो। हमारा वास्ता बेईमान दुश्मनों से है। राष्ट्र को अपनी अखण्डता के लिए लड़ने को तैयार रहना होगा। इस महान उद्देश्य के लिए हमें अपने सारे साधन जुटाने होंगे और अपने अन्दरूनी मतभेद भुलाने होंगे।

यह जल मरने की धमकियां सरकार सन्त के मुंह लगाम दे

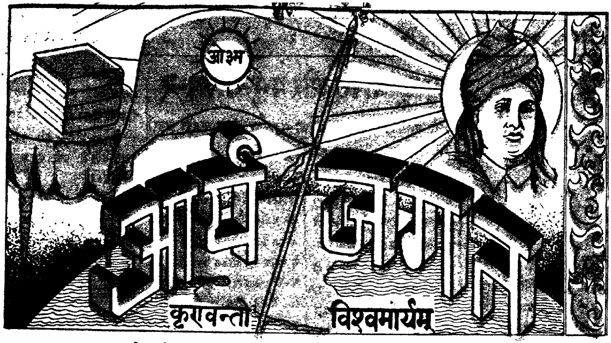
अराजकता फैलने की संभावना

सन्त फतेहसिंह की नित नये रूप में जल मरने की धमकियों से पंजाब का वातावरण विषाक्त हो रहा है और फिर यह सब कुछ गुरुद्वारे के अन्दर से हो रहा है। क्योंकि सब जानता है कि इस प्रकार की अराजकता को बढ़ाने वाली बातें खुले बन्दों नहीं की जा सकतीं। हां छुपकर चाहे जितने तीर चला लो। किंतु यह देखना तो सरकार का काम है कि इससे अमन और शान्ति किस प्रकार धराशायी होती है तथा अराजकता का प्रोत्साहन। कल यदि वातावरण बिगड़ जाये तो अन्ततः इस का उत्तरदायी कौन होगा? कौनसी वह अशुभ घड़ी थी जब कि सरकार ने सीमा कमीशन के सुन्दर निर्णयों पर पानी फेर कर नित की देश को टुकड़े करने के मनोविकारों की मुसीबत को जानबूझ कर सेहड़ लिया जिस पर कि प्रेम और शांति अश्रु पात कर रहे हैं।

सन्त के जल-मरने की अकेली धमकी ने देश में हजारों जल-मरने वाले देश-भक्तों को पैदा कर दिया है जिससे कि एक के साथ सहस्रों चिताओं के शोले जब उठेंगे तो भारत राज्य युगों तक कलंकित हो जायेगा। अतः समय है जबकि सरकार गति में आये तथा शान्ति और न्याय की रक्षा में शक्तिशाली पग उठावे।

आशुराम आर्य
प्रचारक पंजाब

मुद्रक व प्रकाशक श्री ज्ञानप्रकाश जी आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर द्वारा वीर मिलाप प्रैस, मिलाप रोड जालन्धर से मुद्रित तथा जगत् कार्यालय महात्मा हंसराज भवन निकट कचहरी जालन्धर शहर से प्रकाशित मालिक—आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर



टैलीफोन नं० ३०५७ [आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधिसभा पंजाब जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd. No. P. 121

एक प्रति का मूल्य १३ नये पैसे वार्षिक मूल्य ६ रुपये

वर्ष २५ अंक ४९) २१ मार्गशीर्ष २०२२ रविवार—दयानन्दाब्द १४१—५ दिसम्बर १९६५ (तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

वेद सूक्तय:

स्तोतार: इंद्र गिर्वण:

हे ऐश्वर्य के भण्डार इन्द्र ! आप ही हमारी वाणियों के स्तुति के योग्य हो। हम आप का ही नित्य स्तवन करते हैं। आपके ही स्तोता बन कर भजन भक्ति के गीत गाते हैं। आपके सिवा हम किसी के भी गायक उपासक न बनें।

नृमणं तनूषु धेहि

हे भगवन ! आप कृपा करके हमारे शरीरों में स्वास्थ्य तथा बल प्रदान करें। हमें ज्ञान रूपी नृमण-धन भी दीजिए। हम स्वस्थ्य और शक्तिशाली बनें, ज्ञान की दौलत से भी हम मालामाल हो जावें। हमें ज्ञान और बल दोनों का प्रसाद प्रयत्न करें।

सत्राजिद् उग्र पौंस्यम्

हे सत्राजित्—सब पर विजय पाने वाले प्रभो। हमें पौंस्यम्—बलपराक्रम प्रदान कीजिए। हम कभी निर्बल न बन कर बलवान् बनें। पिता जी ! आप बल के दाता बलदा हैं, हमें शक्ति से भरपूर कर दें। हम बलवान् बनें।

सामवेद से

यजुर्वेद यज्ञ और कथा

आर्यजगत् के प्रसिद्ध सन्त महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज जी का जालन्धर में शुभागमन।

आर्य प्रादेशिक सभा के मान्य प्रधान श्रीयुत यश जी के परिवार मिलाप भवन के भव्य प्रांगण में २ दिसम्बर तक अध्यात्म गंगा का प्रवाह बहेगा वीरवार २ दिसम्बर से ५ दिसम्बर तक मिलाप भवन में प्रतिदिन प्रात: और सायं यजुर्वेद का यज्ञ और रात को महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज की कथा हुआ करेगी। यज्ञ की पूर्णाहुति रविवार ५ दिसम्बर को प्रात: १० बजे होगी। सब बहिनों और भाईयों से प्रार्थना है कि दर्शन देवें—यज्ञ और कथा का प्रोग्राम यह है :—

यज्ञ—प्रात: ७ से ९ बजे तक। सायं ५ से ६ बजे तक।

कथा—रात को ८ बजे से ९॥ बजे तक।

आर्य प्रादेशिक सभा के प्रधान श्रीयुत यश जी



आर्य समाज विक्रमपुरा जालन्धर के वार्षिक महोत्सव पर हुए राष्ट्र-रक्षा सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए आपने अपने जोरदार भाषण में हजारों नर-नारियों को सम्बोधन करते हुए कहा—

आर्य समाज एक जीवित संस्था है, एक शक्तिशाली संगठन है। आर्यजन उन अकालियों के आक्रमणों कभी सहन करने को तैयार नहीं होंगे जिन के सन्मुख राष्ट्रीय हितों की अपेक्षा निहितस्वार्थ अधिक महत्व रखते हैं। जिस तरह मैं सिख भाईयों के विरुद्ध कोई बुरी बात सुनने को तैयार नहीं उसी तरह म आर्य समाज के विरुद्ध कोई आक्षेप सहन नहीं कर सकता।

अधिष्ठाता—श्री संतोषराज जी

सम्पादक—त्रिलोक चन्द्र शास्त्री

राष्ट्र-भक्ति और प्रभु-भक्ति-२

(श्री महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज की अमृतभरी कथा)

(गतांक से आगे)

गर्मियों में लोग इनका इस्तेमाल नहीं करते क्योंकि तब आत्मा इन्हें पसन्द नहीं करती। पुत्र भी तब तक प्यारा है जब तक आत्मा को प्यारा है। मैंने लोगों को पुत्रों को गालियां निकालते भी देखा है। कुछ समय पूर्व दिल्ली में एक सज्जन मेरे पास आए। करोलबाग में वह रहते थे। कहने लगे—"मैं तीन सौ रुपया महीना पैन्शन पाता हूं। मेरे पुत्र मुझे यह सारा रुपया देने को कहते हैं मैं नहीं मानता तो वे मुझे पीटते हैं।' यह कहते हुए उक्त सज्जन ने मुझे अपनी पीठ दिखाई जिस पर मार के कारण नील उभर आए थे। उक्त सज्जन की प्रार्थना पर मैं उस के लड़कों को समझाने गया लेकिन वहां जा कर देखा तो वे बहुत बिगड़े हुए थे। मैंने उक्त पैन्शन याफता सज्जन को समझाया कि वह इस घर का झंझट छोड़ें और तपोवन में आ जाए। पैन्शन तो उसे मिलती ही है। वहां भगवान का भजन किया करे और अपने जीवन को सुधारे। लेकिन वह सज्जन नहीं माने। कहने लगे—"यह बच्चों का मोह नहीं छोड़ता।" इसे भावना का प्रतिकूल होना कहते हैं। इसी तरह एक स्त्री के लड़के की शादी नहीं होती थी। किसी ने उसे बताया कि पीपल के पेड़ को जल अर्पण किया करो और उस की परिक्रमा कर के पुत्र-विवाह की प्रार्थना किया करो। उक्त स्त्री ने ऐसा ही किया और उक्त स्त्री के पुत्र का विवाह हो गया। बहुरानी घर आई। विवाह के थोड़ी ही देर बाद सास और बहू में खटपट शुरू हो गई। सास ने अपने सुख के लिए बहु मांगी थी, बहुरानी ने सास का जीना दूभर कर दिया। इस पर सासरानी पुनः पीपल के चक्कर काटने लगी लेकिन इस बार उलटे चक्कर काट कर यह प्रार्थना करने लगी कि हे पीपल देवता! जिस तरह बहूरानी दो है, वैसे ही मुझे उससे छुड़ा दे।' यह भी प्रतिकूल भावना है। एक सज्जन के दो लड़कियां थीं। एक की शादी किसान के घर हुई और दूसरी की कुम्हार के घर। शादी के कुछ देर बाद उक्त सज्जन दोनों लड़कियों का हाल-चाल पूछने गए। किसान के घर ब्याही गई लड़की के पास वह सब से पहले गए। लड़की ने कहा कि पिता जी यहां मैं बड़े मजे में हूं। फसल बो दी गई है। बारिश हो जाए तो सब ठीक हो जाए। उक्त सज्जन ने लड़की को आशीर्वाद दिया और कहा कि बारिश जरूर होगी और तुम्हारी फसल भी खूब फलेगी। इस के बाद वह कुम्हार के यहां ब्याही गई लड़की का हालचाल पूछने गए। उस लड़की ने भी कहा कि वह अपने घर में बहुत प्रसन्न है। बच्चे बर्तन आदि बना कर आवा पकाने के लिए तैयार हैं। ईश्वर करे बरसात न हो, और आवा समय पर पक जाए।' पिता ने उसे भी आशीर्वाद दिया। घर आकर जब लड़कियों की मां ने पूछा कि क्या उसकी बेटियां बिल्कुल ठीक-ठाक है। तो सज्जन ने कहा कि हां—बिल्कुल ठीक-ठाक हैं, किन्तु दोनों में से एक जरूर उजड़ेगी। एक बरसात होने की कामना कर रही है, और दूसरी न होने की प्रार्थना कर रही है।

स्पष्ट है, कि दुनिया में न कोई सुख है, न कोई दुख है, सब मन की बात है।

मातृभूमि किस तरह सुरक्षित रहती है, इसके लिए सत्य आहार, सत्य आचार, सत्य उच्चार, सत्य व्यवहार, और सत्य आधार नितांत आवश्यक हैं। गुरुनानकदेव के पास एक अमीर और एक गरीब आदमी भोजन लेकर आए। गुरु नानकदेव ने गरीब का भोजन खा लिया। अमीर आदमी ने शिकायत की कि मैं तो बहुत सुन्दर भोजन लाया था आप ने उस ओर तो देखा नहीं, गरीब की सूखी रोटी खा ली। गुरु नानक देव ने अमीर के भोजन से एक पूड़ी उठा कर उसे निचोड़ा तो उसमें रक्त की धारा बहने लगी। वह कहने लगे कि गरीब ने ईमानदारी की कमाई से भोजन तैयार किया था, लेकिन तुम्हारा भोजन पाप की कमाई से बना है, इसका प्रमाण यह रक्त है। इसलिए सत्य आहार की बहुत महिमा है। सत्य आहार से बुद्धि विकसित होती है, विकसित बुद्धि से स्मृति का विकास होता है, और विकसित स्मृति होने से हृदय की ग्रंथियां खुल जाती हैं। इतना ही नहीं, यदि पत्नी, मां, बहन के हाथ का बनाया हुआ भोजन, तो उसका भी असर होता है। अच्छे विचार अन्न में जाते हैं। ईमानदारी की कमाई, अच्छे विचार, अच्छे आचार ये सब मिला कर अन्न पवित्र बनता है।

हमारे देश में रोज यह बात होती है कि खाने को नहीं मिलता, मैं सारा हिंदुस्तान घूमा हूं लेकिन यह नहीं सुना कि कोई भूख से मर गया। पंजाब और उत्तरप्रदेश के एक भाग को छोड़ सारा भारत तेल खाता है। यदि वे लोग बिना घी के जी सकते हैं तो हम और आप क्यों नहीं जी सकते। वास्तव में हम ने एक आदत बना ली है जिसे छोड़ने को तैयार नहीं। एक कठिनाई यह भी है कि हर चीज़ को संशय की दृष्टि से देखने लगे हैं। हर चीज़ में हमें मिलावट दिखाई देती है, चाहे वह शुद्ध ही क्यों न हो।

आयुर्वेद में लिखा है कि खाओ हितकर। जिह्वा के स्वाद में चटोरे मत बनो। मैंने गत दिवस रेलवे स्टेशन के बुकस्टाल पर एक पत्रिका "**Murderers of Husbands**" देखी अर्थात पतियों की हत्यारने। मैं चौंका कि ऐसी कौन-सी स्त्री हो सकती है जो अपने पति की हत्या करे। पत्रिका में मैंने पढ़ा कि जो पत्नी अपने पतियों को जबरदस्ती खिलाती हैं वे उनकी हत्या करती हैं। ज्यादा खाने से पाचनशक्ति बिगड़ती है, पेट खराब होता है, बीमारी आती है और वह बीमारी कई बार जानलेवा भी सिद्ध होती है। याद रखो ज्यादा खाने से सेहत नहीं बनती। हमारे प्रधानमन्त्री शास्त्री जी ने सारे राष्ट्र से कहा है कि सप्ताह में एक दिन एक वक्त अन्न न खाया जाए मैं तो पिछले पैंतीस वर्षों से एक टाइम भोजन करता हूँ। अब लगभग दो सप्ताहों से अन्न का त्याग किया हुआ है। मैंने हाल ही में खाद्यान्न सम्बन्धी कुछ आंकड़े इकट्ठे किए। इन आंकड़ों के अनुसार हम प्रतिवर्ष साठ लाख टन अनाज आयात करते हैं। हमारे यहां ८० करोड़ ६३ लाख एकड़ धरती है। इस में से ३७ करोड़ ६२ लाख एकड़ पर हम खेती बाड़ी करते हैं। बाकी आधी से कुछ कम बीरान पड़ी है। हमारी अनाज की पैदावार ७ करोड़ ९७ लाख ५७ हजार टन है। यदि हम सप्ताह में एक दि चावल और गेहूं न खाएं और सब्जियों आदि का इस्तेमाल करें तो साल भर में ६९ लाख टन की बचत होगी। (क्रमशः)

आर्यसमाज के विरुद्ध कोई आक्षेप सहन नहीं होगा।

देश में ये सारी भाषायी दीवारें तोड़ना आवश्यक है

राष्ट्र रक्षा सम्मेलन में सभा प्रधान श्री यश जी का ओजस्वी भाषण।

आर्यसमाज विक्रमपुरा जालंधर के महोत्सव के अवसर में ता० २८ नवम्बर रविवार को बड़ा भारी राष्ट्र रक्षा सम्मेलन आर्य प्रादेशिक सभा पञ्जाब जालंधर के प्रधान माननीय श्री यशजी पूर्व शिक्षा मन्त्री पञ्जाब की अध्यक्षता में हुआ। अपना जो प्रभावशाली ओजस्वी भाषण श्री प्रधान जी ने दिया। उस की वीर ध्वनि अब भी सब के कानों में गूंजती है। कितना वीरता-पूर्ण चेतनादायक तथा निमयता भरा था वह भाषण चेतना भर गया। वह अध्यक्षीय भाषण नीचे दिया जा रहा है —सम्पादक

आर्य समाज एक जीवित संस्था है, एक शक्तिशाली सङ्गठन है। आर्यजन उन अकालियों के आक्रमणों को कभी सहन करने को तैयार नहीं होंगे जिन के सन्मुख राष्ट्रीय हितों की अपेक्षा निहित स्वार्थ अधिक महत्व रखते हैं। और यश जी ने करतल ध्वनि के मध्य कहा कि जिस तरह मैं सिख भाइयोंके विरुद्ध कोई बुरी बात कहने को तैयार नहीं उसी तरह मैं आर्य समाज के विरुद्ध कोई आक्षेप सहन नहीं कर सकता। आर्य समाज कोई राजनैतिक संस्था नहीं है। इस में कांग्रेसी, जनसंघी, समाज-वादी और सभी राजनैतिक विचार धाराओं के लोग शामिल हैं। किसी आर्य नेता के विरुद्ध व्यक्तिगत रूप से कोई कुछ कहे तो हम बुरा नहीं मानते किंतु आर्य समाज पर पार्टी के तौर पर अकालियों ने जो अभियान चला रखा है, उसे सहन नहीं किया जा सकता। पंजाबी सूबा बने या न बने यह एक अलग प्रश्न है किंतु किसी को खिंचाव और तनाव पैदा करने की अनुमति नहीं दी जा सकती। यह अकाली दल की तरह एक साम्प्रदायिक और राजनैतिक संगठन नहीं। आर्य समाज अकाली दल की तरह चुनाव लड़ता और न ही यह अकालियों की तरह समझौते करके मुकरता है। हम एक सीमा-प्रांत के निवासियों की तरह रहना सीखें। हमारे ऊपर विशेष दायित्व और कर्तव्य हैं। हमें कोई ऐसी बात नहीं करनी चाहिए जिस से वैमनस्य या कटुता पैदा हो। पंजाब सूबा बने या न बने यह अलग बात है लेकिन किसी को वातावरण बिगाड़ने की अनुमति नहीं होनी चाहिए।

क्षेत्रीयता की प्रवृत्ति से निपटने का सर्वोत्तम ढंग यही है कि सभी छोटे-छोटे राज्यों को खत्म करके एक भारत बना दिया जाए। इस से क्षेत्रीयता के मोर्चे पर हमारी पराजय विजय में बदल जाएगी और पंजाबी सूबे के समर्थक अपनी सांप्रदायिक मांग को आगे लाने के लिए जो आड़ ले रहे हैं वह स्वयमेव समाप्त हो जाएगी। वक्त आ गया है कि क्षेत्रीयता के मोर्चे को जीतने के लिए भाषायी दीवारों को तोड़ दिया जाए। हमने हिन्दी को राष्ट्र भाषा तो स्वीकार कर लिया लेकिन सब से बड़ी भूल यह की कि कोई राष्ट्र लिपि स्वीकार नहीं की। एक भाषा और एक लिपि होने से भाषा की दीवारें खत्म हो जाएंगी। चाहे कोई पंजाबी या बंगला, मराठी या कन्नड़ सभी की एक राष्ट्र लिपि निश्चत होनी चाहिए। आज अपने को कोई मद्रासी कहता है, कोई पंजाबी, कोई मराठा कहता है और कोई तामिल। आवश्यकता इस बात की है कि हर कोई अपने आपको सर्वप्रथम भारतीय समझे।

पाकिस्तान घृणा और गुण्डा-गर्दी की पैदावार है। हम साम्प्रदायिकता के विरुद्ध लड़ाई में हार गए, गुण्डागर्दी के विरुद्ध हम ने हथियार डाल दिए और तब हमारी इच्छाओं के विरुद्ध भारत मां के टुकड़े हुए। महात्मा गांधी ने, जिन्होंने अपने सिद्धांतों पर कभी समझौता नहीं किया, परि-स्थितियों से विवश होकर भारत का विभाजन स्वीकार किया। लेकिन तब भी गांधी जी ने कहा कि यह विभाजन पानी पर लकीर है। यदि गांधी जी जीवित रहते तो यह पानी पर लकीर शायद मिट जाती। एक ऐसे देश से, जो घृणा की उपज हो और जिसकी पालना भी घृणा के आधार पर हुई हो, हमारे कभी भी अच्छे पड़ोसियों जैसे सम्बन्ध नहीं हो सकते। जो लोग अच्छे सम्बन्धों की बात सोचते हैं वे धोखे में हैं। कोई यह मत समझे कि हमारी सीमाओं पर बहुत जल्द शांति होने वाली है। एक ओर पाकिस्तान है और दूसरी ओर चीन जिस के साथ हमारे बुनियादी मतभेद हैं। हमारे इन दोनों शत्रुओं में गहरी सांठ-गांठ है। शांति कोई सुगम बात नहीं। इस का मार्ग भी कई बार लाशों के ऊपर से गुजर कर आता है। इस लिए वक्त आ गया है कि हम एकता के सूत्र में बंध कर पूर्णरूप से सैनिक और आर्थिक तैयारी कर के शत्रुओं का मुंहतोड़ मुकाबिला करने को हर समय तैयार रहें।

यह कोई संकट नहीं, हमारी परीक्षा है। अब तक की छोटी परीक्षा में जो आने वाली बड़ी परीक्षा की एक झलक मात्र है, हम सफल हुए हैं। यही पहले से तैयारी का ही परिणाम है। अब हमें अगली बड़ी परीक्षा की तैयारी करनी है। इसके साथ ही हमें अपनी स्वतन्त्रता का जो हमें बिना कोई मूल्य चुकाए ही प्राप्त हो गई, मूल्य भी चुकाना है और इस का मौका भी आ गया है। आज देश में जो एकता है वह एक संकट की पैदावार है। इसे दिलों का मिलाप नहीं, कहा जा सकता। आवश्यकता एक मूलभूत आधार पर भावात्मक एकता का है।

श्री यश ने इस आलोचना का कि डी. ए. वी. शिक्षण संस्थाओं में धर्मशिक्षा नहीं पढ़ाई जाती, उत्तर देते हुए कहा कि यह पढ़ाई नियमित रूप से दे रही है। राष्ट्र रक्षा सम्मेलन में लाला जगत्-नारायण, प्रोफैसर पृथ्वी तारा, श्री मती बिमला कोहली, प्रिंसिपल भीमसेन बहल, प्रिंसिपल विद्यावती आनन्द और पण्डित त्रिलोकचन्द शास्त्री ने भी भाषण दिया, लाला जगन्नारायण ने कहा कि भारत-पाक लड़ाई में पंजाब परीक्षा में पूरा उतरा है। अब सरकार को युद्धपीड़ितों के प्रति अपना कर्त्तव्य निभाना चाहिए और पांच सीमांत जिलों की अर्थव्यवस्था की बहाली के लिए पग उठाने चाहिएं।

श्री सत्यदेव जी विद्यालंकार एम.ए. का भाषण अगले अंक में पढ़ें।

ज्ञान और कर्म दोनों का समन्वय जीवन

(पृष्ठ ३ का शेष)

शास्त्र में आता है — ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः ज्ञान के बिना मुक्ति नहीं मिल सकती। मानव जीवन बन्धन मे ही पड़ा रहेगा। ज्ञान-आत्मज्ञान-तत्वज्ञान व ब्रह्मज्ञान ही मानव को कल्याण मार्गी बना देता है। इस लिए यह विद्या या ज्ञान जीवन के लिए परमावश्यक हैं। इसी ज्ञान से ही तो वेद के शब्दों में अमृत की प्राप्ति होती है। ज्ञान की प्रत्येक क्षेत्र में बड़ी महिमा है गीतामें आया है नहि ज्ञानेन सदृशं पवित्रम्—ज्ञान जैसी पवित्र वस्तु नहीं है, ज्ञान भी नेत्र माना गया है।

अविद्या भी जीवन के लिए चाहिए। इस से मृत्यु को तैर जाता है। बन्धनों से मुक्त हो जाता है। यह अविद्या वेद की क्या है? शास्त्र मे कर्म को अविधा के नाम से कहा। अ—विद्या जो ज्ञान से भिन्न हैं वह अ—ज्ञान है कर्म है। ज्ञान क साथ कर्म का होना भी बड़ा आवश्यक है। केवल ज्ञान काफी नहीं। ज्ञान के साथ जिस समय कर्म चलता है तभी मानव अपनी मंजिल पर पहुँच जाता है। कर्म के बिना कोरे ज्ञान से कैसे चल सकता है। आप ऐसे समझे कि एक लंगड़ा है—दूसरा अन्धा है। लंगड़ा तो चल नहीं सकता पर देख सकता है और अन्धा चल तो सकता है पर देख नहीं सकता। दोनों के पास अपनी-अपनी बात है। अलग-अलग वे कुछ नहीं कर सकते। किन्तु जब दोनों मिल जाय। लंगड़ा अन्धे के कन्धे पर बैठ जाये और लंगड़ा अन्धे को मार्ग दिखाता जायगा। दोनों मिल कर अपना काम करते जायेंगे तभी अपने स्थान पर पहुंच जायेंगे। एक के बिना दूसरा किसी काम का नहीं है। यही अवस्था ज्ञान और कर्म की मानी जाती है ज्ञान का भी अपना स्थान है और कर्म का भी अपना। किन्तु दोनों के मिल जाने से पूर्ण सफलता हो जायगी। विद्या और अविद्या का यही अर्थ है। जब किसी व्यक्ति, समाज या देश ने अपने जीवन में इन दोनों में केवल एक का ही सहारा लिया तभी उसे नाकामयाबी का मुख देखना पड़ा। ज्ञान बिना कर्म के किसी काम का नहीं तथा कर्म ज्ञान के बिना भी अधूरा ही है। दोनों का समन्वय ही जीवन है। तत्वों को साथ मिलाकर जीवन में धारण किया जाये तभी व्यक्ति, समाज तथा राष्ट्र का कल्याण होगा।

शरीर-समाज और राष्ट्र तीनों शक्तियां जीवनहैं

(पृष्ठ ४ का शेष)

हिटलर ने कहा था कि—

Germany will not be defeated on the idealogical from. सिद्धान्त पर जर्मनी नहीं हारा। वहां बगावत नहीं हुई क्रान्तदर्शी दयानन्द ने हम तीनों शक्तियों को प्राप्त करने का सन्देश दिया। भारत में तीनों बल भर दें।

आर्य समाज सलोहगढ़ा (H. P.)

आर्य समाज सलोहगढ़ा में प्रधान व मंत्री जी की अध्यक्षता में श्री विशनदास जी प्रधान सलोगड़ा की ७५ वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। आप का इलाज सिविल हस्पताल में १५ दिन तक लगातार होता रहा। पर ईश्वर गति प्रबल होने के कारण वे इस संसार से कूच कर गए। इस पर समाज अधिकारियों ने शोक प्रस्ताव पास करके उनकी आत्मा की सद्‌गति के लिए प्रभु से प्रार्थना की।

आर्यसमाज और साहित्य

प्रा० भद्रसेन दर्शनाचार्य वि. वै. शोध संस्थान होशियारपुर

विचार ही आचार और व्यवहार के आधार होते हैं। विचारों के प्रकाशन के दो मुख्य साधन हैं, वाणी और लेखनी। वाणी का प्रभाव सीमित और अस्थायी होता है, जब तक वक्ता के वचन कर्णगोचर होते रहते हैं, तब तक उसका प्रभाव रहता है तदनन्तर उसकी कहानी ही शेष रह जाती है, वाणी द्वारा व्यक्त विचारों को भाषण, प्रवचन, व्याख्यान, कथा आदि नामों से पुकारते हैं। लेखनी का प्रभाव वाणी की अपेक्षा अधिक चिर-स्थायी और विस्तृत होता है, लेखनी द्वारा प्रकाशित विचारों को साहित्य, शास्त्र, ग्रन्थ और पुस्तक आदि नामों से पुकारते हैं। साहित्य की महिमा को ध्यान में रखते हुए ही विद्वानों ने साहित्य की प्रकाश और नेत्र से उपमा दी जाती है, प्रकाश और नेत्र की उपयोगिता किसी से भी छिपी हुई नहीं है।

आर्य समाज इतिहास पर दृष्टिपात करने से स्पष्ट प्रतीत होता है कि आर्य समाज ने वैदिक सिद्धांतों के प्रसार और अन्धविश्वासों के साथ सामाजिक सुधार के लिए इन दोनों साधनों का भर पूर प्रयोग किया। महर्षि दयानन्द सरस्वती स्वयमेव इन दोनों साधनों द्वारा इस पथ का श्री गणेश किया तथा महर्षि के पश्चात आने वाले महानुभावों ने पूर्ण रूपेण इस पथ का अनुगमन किया।

आर्य समाज के सारे साहित्य पर विचार करने से एक बात स्पष्ट होती है कि समष्टि की अपेक्षा व्यष्टि वर्ग ने अधिक योगदान दिया है अर्थात् आर्य समाज की प्रतिनिधि एवं सार्वदेशिक सभाओं ने साहित्य निर्माणमें अधिक योगदान नहीं दिया। सभाओ का साहित्य सृजन कार्य स्वतन्त्र व्यक्तियों की साहित्य साधना के समक्ष नगण्य ही है। प्रबन्ध के कार्यों मे ही सभाओं का सारा समय प्रायः चला जाता है, आजकल तो पहिले से भी अधिक। स्वतन्त्र व्यक्तियों ने साहित्य साधना में जिस श्रम उत्साह श्रद्धा, आत्मविश्वास, तप और त्याग का परिचय दिया है, उसके सम्बन्ध में जितनी भी श्रद्धा एवं कृतज्ञता प्रकट की जाये उतनी ही थोड़ी है।

स्वाध्यायशील आर्य सज्जन अच्छी प्रकार से जानते हैं कि आज के विज्ञान के युग में विज्ञान प्रदत्त सुविधाओं के कारण सब क्षेत्रों में साहित्यकी रचना बहुत जोरोंसे हो रही है, इसी लिए हो आज के युग को विज्ञापन के युग के नाम स्मरण से किया जाता है। यदि तुलनात्मक दृष्टि से देखा जाये तो अन्यों की अपेक्षा और प्राचीन समय की अपेक्षा आर्य समाज के साहित्य निर्माण का कार्य मन्द गति से चल रहा है। इस क्षेत्र में सभाओं का पहले की तरह आज भी कोई विशेष योगदान नहीं हो रहा है। आज की आर्थिक परिस्थितियों और पहले जैसी लगन, उत्साह और तड़फ के अभाव में स्वतन्त्र व्यक्ति भी इस क्षेत्र में कुछ गिने चुने ही रह गये हैं तथा उनका योगदान दिन प्रतिदिन कम होता जा रहा है। क्रमशः

शोक समाचार

श्री ला. इन्द्रसेन जी उपप्रधान सभा के चाचा श्री बाबराम जी का ८० वर्ष की आयु में अपने गांव में स्वर्गवास हो गया है इस पर आर्य जगत हार्दिक सहानुभूति प्रकट करता है। दिवंगत आत्माकी शांति तथा परिवार को सहनशक्ति प्रदान करने की प्रभु से प्रार्थना करता है।

सम्पादकीय—

आर्य जगत

वर्ष २५] रविवार २०२२, ५ दिसम्बर १९६५ [अंक ४९

हमारा विक्रमपुरा समाज

आर्य समाज विक्रमपुरा किला समाज जालन्धर, पंजाब का हमारी आर्य प्रादेशिक सभा का केन्द्रीय समाज है। यहां नगर के अपने सारे विशाल शिक्षा के जितने भी दयानन्द कालेज और स्कूल हैं उनके सारे मान्य प्रिंसिपल, प्राध्यापक, अध्यापक महोदय इसी समाज के सदस्य हैं। नगर के गण्यमान्य सज्जन भी इसी के सभासद हैं। गत दिनों इस का बड़ा सुन्दर मन्दिर उस स्थान पर बनाया गया है जहां पर आर्यसमाज के महान प्रवर्तक ऋषि दयानन्द सरस्वती ने सरदार विक्रम सिंह की बग्घी को ब्रह्मचर्य बल का परिचय देते हुए रोका था। उसी ऐतिहासिक स्थान पर मन्दिर निर्मित हुआ है। इस के वार्षिक महोत्सव का बड़ा सुन्दर प्रबन्ध किया जाता है। इस वार तपस्वी महात्मा आनन्द स्वामी जी तथा महात्मा आनन्द भिक्षु जी पधार कर यज्ञ का कार्य करते रहे एवं कथा का अमृत प्रवाह बहाते रहे। महात्मा आनन्द स्वामी जी के जीवन में कितना आकर्षण है, वाणी पर मधुरता का सागर तथा स्वभाव में कितना ही मिठास है। सारा मन्दिर श्रोताओं से भरपूर था। कितना रस पिलाया—उस रस के सामने सर्वे रसा नीरसा:—सब रस नीरस हो गये थे। भक्ति तथा राष्ट्रभक्ति का समन्वय किया जा रहा था। नगर में माधुर्य व राष्ट्रीय भावना का स्रोत बहने लगा यज्ञ की सुगन्धि तथा महात्मा आनन्द भिक्षु जी के सौम्यता भरे प्रवचन भी चलते थे। सभा के मधुर गायक श्री मेला राम जी रेडियो सिंगर तथा प्रसिद्धतम विमटामंडली पं० राजपाल मदन मोहन जी ने भी संगीत रस में कमाल कर दिया।

महोत्सव की सफलता के तीन बड़े सूत्र होते हैं—जलूस, जलसा तथा जनसहयोग! इस समाज के इस वार्षिक महामेला में तीनों बातें ऊंचा कोटि की थीं। जलूस भी शानदार था। अपने शिक्षा-संस्थानों, समाजों, सभा के सारे मान्य सज्जनों बहनों ने भाग लिया। जलसे मे जितने भी वक्ता पधारे। राष्ट्ररक्षा सम्मेलन सभा प्रधान श्री यश जी की प्रधानता मे हुआ तथा हंसराज महिला कालेज की छात्राओं व साईदास स्कूल के छात्र छात्राओं का जो सङ्गीत व मन्त्रों का कार्यक्रम था। वह सारा ऊंचे ढङ्ग का ही था। आर्यसमाज के ऊंचे स्कालर फिलास्फर डा० दीवानचन्द जी एम. ए. कानपुर, प्रिंसिपल ज्ञानचन्द जी एम. ए. हिसार, सभा प्रधान श्री यश जी, वीर यज्ञदत्त जी, श्री ला० जगत् नारायण जी, सभा मन्त्री पं० सत्यदेव जी विद्यालंकार, महात्मा आनन्द भिक्षु जी, पं० ओ३म् प्रकाश जी महोपदेशक सभा, प्रो० पृथ्वीपाल जी तारा, प्रिंसिपल रलाराम जी एम. ए. आदि सज्जन पधारे। अम्बाला करनाल व रोहतक की भजन मंडलियां सभा की पधारीं। पं० जगत् राम जी, ठा० दुर्गासिंह जी, पं० सत्यपाल जी, पं० प्रभुदयाल जी आये। राष्ट्र रक्षा सम्मेलन तो कमाल का था। इस में प्रिंसिपल भीमसेन जी बहल एम. ए., प्रिंसिपल कुमारी विद्यावती आनन्द जी, ला० जगत् नारायण जी एम. पी, बहिन विमला कोहली जी आदि ने प्रभावपूर्ण विचार रखे। श्री यश जी सभापति का भाषण तो कमाल का था। जनसहयोग भी पूर्णरूप से मिला। दान में कमी न थी। दानमूर्ति ला० परमेश्वरीदास बहल जी ने समाज को पांच सौ रुपये भेट किए। नगर की जनता ने भी दिल खोल कर दान दिया। साईदास स्कूल के मान्य अध्यापकों व विद्यार्थियों की भोजन वासादि के प्रबन्ध में दिन रात एक कर दिया। इस बार समाज के वयोवृद्ध डा० हुकम चन्द जी भल्ला अस्वस्थ होने से अनुपस्थित रहे। प्रभु उनको शीघ्र—स्वस्थ करें। महोत्सव बड़ा सफल रहा। मान्य प्रिंसिपल बेरी जी, प्रधान पं० रामलाल जी शर्मा मन्त्री तथा अनथक कार्यकर्ता युवक श्री आनन्द सागर जी की समाज सेवा देख कर मन गद्गद् प्रसन्न होता था। उत्सव का प्रभाव स्थायी रहेगा। इस सफलता पर सब को विशेष बधाई।

—त्रिलोकचन्द्र

ज्ञान और कर्म दोनों का समन्वय जीवन

वैदिक धर्म दोनों का सन्देश देता है

प्रिंसिपल ज्ञानचन्द जी एम. ए. हिसार का प्रवचन

आर्यसमाज में आचार्य ज्ञानचन्द जी एम० ए० दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय का ऊंचा स्थान है। बड़ा काम किया और कर रहे हैं। बड़ा गम्भीर प्रवचन देते हैं। विक्रमपुरा समाज के महोत्सव पर आपका गम्भीर भाषण यहां पर दिया जाता है—सं०

वेद में मन्त्र आता है—

'विद्या चाविद्यां च यस्तद् वेदोभयं सह, । अर्थात् जो आदमी अपने जीवन में विद्या को भी जानता है और अविद्या को भी वह अविद्या से मृत्यु को तैर कर विद्या से अमृत का आस्वादन करता है। इस मन्त्र में विद्या और अविद्या दोनों की महिमा गाई गई है। दोनों से जीवन में लाभ उठाने की चर्चा है। दोनों को धारण करने की बात मिलती है। अविद्या में अ का अक्षर लगा कर विद्या से उसकी भिन्नता कह दी गई है। यहां अविद्या का अर्थ मूर्खता या अज्ञान नहीं है अपितु वेद में इस का अर्थ बड़ा ही महत्वपूर्ण है। कई लोगों को अविद्या के समझने में भ्रम हो जाता है। किंतु वेद के गम्भीर उपदेश को समझाने के लिए स्वाध्याय की बड़ी आवश्यकता होती है। यही वेद की विशेषता है।

जीवन में दोनों बातों की बड़ी जरूरत है। सब से पूर्व किसी वस्तु का ज्ञान होना चाहिए। जब तक उस तत्व का हम को पता ही न हो ज्ञान न हो तब तक हम उस को प्राप्त नहीं कर सकते। पदार्थ ज्ञान का स्थान प्रथम दर्जे पर आता है। जीवन में ज्ञान को बड़ी विशेषता है। इस संसार के तत्वों का जब तक ज्ञान नहीं होता तब तक हम इन से लाभ उठा कैसे सकते हैं? जिस वस्तु के बारे मे हम कुछ जान जाते हैं उस को उपयोगी बना लेते हैं। जिसे हम जानते हो नहीं उस के लाभ से भी सर्वथा वञ्चित रह रह जाते हैं। प्रभु ने हम पांच ज्ञानेन्द्रियां दी हैं ताकि भिन्न-भिन्न वस्तुओं का इन के द्वारा पूरा-पूरा ज्ञान मिलता रहे। जितना-जितना तत्वज्ञान मिलेगा उतना सदुपयोग बढ़ेगा। जितना मिथ्या ज्ञान होगा उतना दुरुपयोग होगा।

(शेष पृष्ठ ६ पर)

शरीर-समाज और राष्ट्र तीनों शक्तियां जीवन हैं

शत्रु का प्रतिकार समाज बल से करना जरूरी है

श्री. प्रिंसिपल रला राम जी एम. ए. एम. एल. ए. का प्रवचन

विक्रमपुरा समाज जालन्धर के महोत्सव पर आर्य जगत् के प्रसिद्ध स्कालर नेता प्रिंसिपल रला राम जी एम. ए. एम. एल. ए. होश्यारपुर ने तीन प्रकार की शक्तियों का विवेदन करते हुए अपने ओजस्वी भाषण में कहा—

अथर्व वेद में मन्त्र आता है —भद्रमिच्छन्त ऋषयः स्वर्विदः— कल्याण चाहने वाले ऋषियों ने तप और दीक्षा को प्राप्त करके राष्ट्र को पैदा किया। धर्म-अर्थ-काम और मोक्ष में मोक्ष सब से ऊंचा है। भगवत् प्राप्ति के साधन आपने उपनिषदों में पढ़े होंगे। बात यह है कि हिन्दु अपने धर्म ग्रन्थों को को कम पढ़ता है। हम अपनी धर्म पुस्तकों का स्वाध्याय करते रहें। पश्चिम के लोग तो प्रेरणा लेकर हमारे धर्म ग्रन्थों का पढ़ते हैं। हमारे देश के पढ़े लिखे सज्जन अब भी पश्चिम के लोगोंसे प्रेरणा लेते हैं। प्रेरणा उत्तम है जोर देने से वह बात नहीं बनती। जहां **Compulsion** आयेगा वहां पर **avernsion** भी आयगी। अपनी संस्थाओं में धर्म विचार देने में प्रेरणा का भाग अधिक होना चाहिए तभी उस का लाभ होगा। घर में माता का स्थान स्थान पहला है, पिता का दूसरा। अध्यापक का स्थान तो तीसरे दर्जे पर है। प्रेरणा माता से मिलनी चाहिए।

मुंडकोपनिषत में आया है। नायमात्माबल हीनेन लभ्यः-जीवन का लक्ष्य भगवत्प्राप्ति है। बल-हीन उसे पा नहीं सकता है। उसे पाने के लिये बल की आवश्यकता है। पुरुषार्थ व **Planning** के बिना ब्रह्म प्राप्ति नहीं हो सकती। तप और योग्यता से शरीर पुष्ट होता है। बलहीन को प्रभु नहीं मिलता। बल तीन प्रकार का है शारीरिकबल, आत्मिकबल और सामाजिकबल। ये तीन बल हैं।

भद्रं कर्णेभि...शरीर को बलवान् बनाने की प्रार्थना की गई है। स्थिर अंगों से तेरा गायन करता हूं। शरीर ठीक न हो तो भगवान का ध्यान कैसे हो। जिस ने जीवन को संयम में न रखा वह ब्रह्म को कैसे पा सकता है? महा कवि कालिदास ने लिखा है— शरीरमाद्यं खलुधर्मसाधनम् शरीर धर्म का प्रथम व प्रमुख साधन है। ब्रह्मचर्य चारों आश्रमों में आता है। योग के **eight steps** हैं। उन में पहला यम है। उस में ब्रह्मचय का नाम आता है। गृहस्थ रुकावट या गिरावट की चीज नहीं है, न यह निन्दनीय है। संयम में रहने वाला तो ब्रह्मचारी माना जाता है। आज की आबादी यदि इसी तेजी से बढ़ती गई तो इस शती के अन्त तक पांच अर्ब तक हो जायगी। यह प्रश्न आज का **Burning Problem** है, प्रमुख प्रश्न है। लोग इसे हल करने के कई साधन बताते हैं। किन्तु वेद ब्रह्मचर्य को इस का प्रमुख साधन कहता है। यदि इस ओर ध्यान नहीं देते तो जीवन सुखी कैसे होगा? जब शरीर की शक्तियों को सुरक्षित करेंगे तभी यह हो सकताहै।

बच्चों के शरीर निर्माण की ओर विशेष ध्यान देना होगा। यदि मैं स्वयं रोगी रहता हूं तो मैं दूसरे की सेवा कैसे कर सकता हूं। सेवा तो सशक्त स्वस्थ शरीर से होती है। कहा है—**Through service Thou shall realise Him** ईसा ने कहा था कि जो हम में से बड़ा बनना चाहता है वह दूसरों की सेवा करे। गीता में आता है कि ज्ञान के समान कोई पवित्र वस्तु नहीं है किन्तु वह मिलता कैसे है—तत् स्वयं योग संसिद्धिः— सेवा करने से प्राप्त होगा। सेवा मार्ग पर चलने वाला ज्ञानी हो जाता है। जिस का शरीर काम नहीं करता वह क्या करेगा? सौ साल की आयु काफी नहीं पर अदीनाः स्याम भी हो। किसी के आश्रित होकर न रहें। उस बूढ़े का क्या गौरव जो खाट पर पड़ा रहे। उसके तो घर वाले उसके चले जाने की ही प्रार्थना करते रहते हैं। शारीरिक बल सारे बलों की बुनियाद है। हम दानवों का मुकाबला नहीं कर सकते। संसार में सारे, देव नहीं हैं। दानव भी रहते हैं। अहिंसा यह नहीं कहती कि बल का प्रयोग नहीं करना चाहिए। हमें महात्मा गांधी की अहिंसा के समझने में भूल रही है। हम ने उनको गलत समझा था। वह तो कहा करते थे कि अहिंसा से बढ़ कर आत्म सम्मान है। अहिंसा अच्छी है पर **self respect** का स्थान उस से भी ऊंचा है। एक बार महिलाओं के शिष्टमण्डल को उत्तर देते हुए कहा था कि विषम समय में **you should bite him with your teeth and nails**—शत्रु या अत्याचारी को अपने दांतों व नखों से काट खाओ। आत्म सम्मान को कभी मत गंवाओ। शरीर के बल बिना तो प्रभु-भक्ति नहीं हो सकती। गीता में आता है—युक्ताहार विहारस्य—ठीक आहार विहार से योगमार्ग पर चला आ सकता है।

गत दिनों में सुरक्षा परिषद् में भारतीयों के बारे में '**The Indian dogs**' कहा। उसे नेशनल सभा में जब किसी के **Indian** होने का ताना दिया तो उसने इस भारतीय शब्द को अपने साथ लगाये जाना अपमान समझा। पर गम्भीरता से सोचें कि ८०० वर्षों तक भारतीयों पर मुस्लिम सत्ता द्वारा शासन करने की बात गलत नहीं कही। एक लेखक ने लिखा है कि उस समय गजनी का कोई ऐसा घर नहीं था जहां पर एक दो भारतीय सुन्दरी युवतियां दासी के रूप में न हों। ऐसा क्यों हुआ? इसलिए कि शारीरिक बल की कमी थी। यदि हमने सामाजिक बल पैदा न किया तो यह युग फिर भी आ सकता है। यह युग इतिहास में आया। स्वामी दयानन्द की बड़ी देन यह है कि उसने इधर ध्यान दिलाया। सामाजिक बल के बिना भारत की कितनी दुर्दशा हुई। भारत में धन-धान्य की कमी न थी पर समाजबल के बिना दुर्गति देखनी पड़ी। अभी तक भी समाज बटा हुआ है सब राष्ट्र न बना सके। जब केन्द्र मजबत हो तो मान सुरक्षित होगा। ऊंच-नीच के भेद-भावों ने गिरा दिया। समाज को बड़ाई कर्तव्य से मिलती है। व्यक्ति से नफरत न करो। न्याय व समता होनी चाहिए।

आज संकट के बादल हैं। जंग बन्दी है, समाप्त नहीं हुई। दो शत्रु हैं। इन को **underestimate** न करें। अपने नवयुवकों के शरीर दृढ़ करो। केवल चाय पर न पालते रहो जब शारीरिक व सामाजिक बल इकट्ठे होंगे तभी मुकाबला कर सकेंगे। तैयारी करनी होगी। तीसरे बल विचार की भी बड़ी आवश्यकता है। **Strong idealogy** चाहिए।

(शेष पृष्ठ ६ पर)

[illegible]-जीवन की आवश्यकता

लें०—पूज्य महात्मा आनन्द भिक्षु जी का सुन्दर प्रवचन

आर्यसमाज विक्रमपुरा जालंधर के वार्षिकोत्सव पर अपना मनोहर प्रवचन आरम्भ करते हुए आर्य-समाज के तपस्वी महात्मा आनन्द-भिक्षु जी ने कहा—

आज समुद्र में जाना, आकाश में उड़ना आदि बहुत कुछ सिखलाया जाता है पर सच्ची बात तो यह है कि हमने अभी तक बैठना भी नहीं सीखा। जीवन की प्रारम्भिक बातें सीखीं। मूल को ठीक करना है। आज समाज की शती होने को आई है पर हमारे जीवन में क्या परिवर्तन आया है। जिसका कोई लक्ष्य न हो वह कहां जाएगा। लक्ष्य विहीन क्या करेगा ? अर्जुन के सामने निश्चित लक्ष्य विन्दु था तभी उसे सफलता मिली। हम जलसे करते हैं, यज्ञ आदि करते हैं। देखें कि हमारा प्रयोजन ठीक हो गया है ? हनुमान को सीता ने प्रसन्न होकर मोतियों की माला दी। मनकों को तोड़कर देखना चाहा कि एक-एक पर राम की छाप है या नहीं। प्रेम भक्ति की पराकाष्ठा थी। हम भी जीवन के एक-एक कार्य के मनके को तोड़कर देखें कि इस पर वेद की समाज की तथा ऋषि दयानन्द की छाप है या नहीं। जिसमें जीवन होगा वही खाये हुए भोजन को पचा सकेगा। मृतक पर क्या प्रभाव पड़ेगा यदि उस पर गीध हमला करें। आज हम पर भी गीधें आक्रमण करते हैं किन्तु हम टस से मस नहीं नहीं होते। पत्थर के बने शेर पर यदि बच्चे पत्थर मारें तो वह निर्जीव क्या करेगा ?

भीष्म जी ने धर्मराज को शरीर के बारे में गुह्य बात कही—न हि मानुषात् श्रेष्ठतरं रत्नमस्ति मनुष्य जीवन सब से कीमती रत्न है। वेद खाने पीने से मना नहीं करता हां अभक्ष्य पदार्थों का त्याग करो। शास्त्र कहता है—भोगापवर्गार्थं दृश्यम्—भोग भोगो, भोजन खाओ सुन्दर वस्त्र पहिरो, भव्य भवन बनाओ मना नहीं है। जो अपने बच्चों को रोता छोड़ गया वह दूसरों को क्या उपदेश देगा ? वेद ऐसी आज्ञा नहीं देता। घर का दिया जला कर मन्दिर का फिर जलाना फ्रांस में भोजन के साथ साबुन भी हाथ धोने के लिए रखा जाता है। परन्तु एक आदमी ने उसे भी खाने वाली वस्तु समझ कर खा लिया। प्रकृति का सदुपयोग करो दुरुपयोग न करो अन्यथा हानि उठाओगे। आज धर्म शिक्षा हमारी संस्थाओं से पीछे चली गई दस वर्ष में हम पीछे गये या आगे सोचो। अपनो इन छाव-नियों में जीवन भर दो। मुझे हंसराज महिला कालेज में जाकर बड़ी प्रसन्नता हुई। प्रिंसिपल कुमारी विद्यावती जी आनन्द को बधाई देता हूं कि उन के जीवन के प्रभाव से वहां की छात्राओं में लज्जा का पूरा परिचय मिला। आज हम बातें बहुत करते हैं काम कम करते हैं। जीवन पर तो बहुत कम ध्यान है। हम बीमार हैं पर औषध सेवन नहीं करते। मानवता को समझना बन्द कर दिया है। आज के आर्य अपने कामों में ऋषि दयानन्द का नाम नहीं लेते, शर्म अनुभव करते हैं हमारा प्रयत्न लक्ष्य की ओर नहीं है बहुत पिछड़ गये हैं। आप ने विश्व का नेतृत्व करना है। आपका जीवन ही बोलने वाला हो। सिद्धान्त का दर्जा दूसरा है आचार पहले दर्जे का होता है। हम अधिकार तो चाहते हैं पर कर्त्तव्य पर ध्यान नहीं देते। कुर्वन्नेवेह कर्माणि वेद कर्त्तव्य का उपदेश देते हैं। बड़ा बनने की बात कहते हैं। सिद्धान्ती व आचार चौराहे पर खड़े हो गए। सिद्धान्ती तो सिद्धान्त ही बखानता रहा पर आचार ने सड़क पर गिरने वाले बालक को उठा कर मरहम पट्टी कराकर ठीक कर दिया। उसके पिता ने भी आकर उसके चरणों पर नमस्कार किया। जो आचरण करेगा पूजा तो उसकी होगी—सिद्धांत कोरा क्या कर सक्ता है ? अश्वपति ने कहा था—नमेस्तेनो जनपदे। मेरे राज्य में कोई चोर, अनाचारी नहीं है, शराबी नहीं है। जो काम बड़ा करता है वैसा छोटा करेगा। किसी आर्य समाज का अधिकारी क्या आज अश्वपति के समान बात कह सकता है ? रिपोर्ट तो वर्ष की समाजों में सुनाते हैं पर ऐसी बातों का दावा कर सकते हैं ? नाम तो राम का है पर मार्ग रावण का पकड़ा है तब क्या बनेगा ? शव-पूजा से क्या होगा ? शव को भी सजाया जाता है जलूस भी निकाला जाता है पर उसका स्थान तो अग्नि की चिता में ही है। बरात का कोई दूल्हा तो होना चाहिए आज समाज का एक नेता है क्या ? हम तो अपने साधु मंडल को भी रोते हैं। अपनी पगड़ी को सम्भालने की आवश्यकता है। मडन मिश्र की पत्नी ने निर्णायिका बन कर शंकर की विजय का निर्णय दिया था। वैदिक धर्म कपड़ों में बंधा हुआ नहीं। वह तो आचार का धर्म है। वह युग लाओ जब आर्यों की गवाही से जज निर्णय कर दिया करता था। विश्व में जीवन की सुगंध फैलानी है। इसके लिए आत्मा को भोजन देना होगा। आज आत्मा को तो भूखा मारा जा रहा है पर शरीर को खूब पाला जाता है। तभी कुछ नहीं बनता। शोक तरति आत्मवित् आत्मा को जानो आचारवान बनो।

क्या आप जानते हैं ?

★ लण्डन में एक मन्दिर की की चाबी का भार ७ सेर है।

★ गीता के कुल श्लोक ७०० हैं।

★ राम चरित मानस के ७ काण्ड हैं।

★ संसार का सब से बड़ा डेल्टा सुन्दर बन है।

★ संसार में सबसे अधिक मूर्तियां बुद्ध की बनीं।

★ सब से अधिक मूल्यवान वस्तु रेडियम है।

★ भारत में २२७ बोलियां बोली जाती है।

★ वेल मछली के मुख में २४०० दांत होते हैं।

★ सूर्य पृथ्वी से ९।।वा नौ करोड़ मील दूर है।

★ अंगुली का नाखून एक वर्ष में २।। इंच बढ़ता है।

भारत असंतुष्ट

युद्धविराम की शिकायतों की पड़ताल करने के ढंग पर

नई दिल्ली २९ नवम्बर—आज लोकसभा में सरकार की ओर से बताया गया कि भारत राष्ट्रसंघीय प्रेक्षक दल के युद्धविराम के उल्लंघन की शिकायतों की पड़ताल करने के ढंग से पूर्णतया सन्तुष्ट नहीं है। राष्ट्रसंघ को भारत की भावनाओं से अवगत करा दिया है।

भारत ने चीन से हर्जाना मांगा

नई दिल्ली, २६ नवम्बर—भारत ने चीनी सेनाओं द्वारा गत १० सितम्बर को त्साकुर के निकट भारतीय जन और धन हानि क्यों पहुँचायी गई क्षति का चीन से पूरा मुआवजा मांगा है। यह मांग २६ नवम्बर को यहां चीनी दूतावास को दिए गए एक पत्र में की गई जिसे आज प्रकाशित किया गया।

आर्यसमाज की संगठन शक्ति का विशाल जलूस

विक्रमपुरा (किला) समाज का शानदार महोत्सव

सारा नगर जयघोषों से गूंज उठा

आर्यसमाज विक्रमपुरा (किला) जालन्धर का प्रतिवर्ष की भांति इस बार भी बड़ा ही शानदार वार्षिक महोत्सव या महामेला का कार्यक्रम आरम्भ हुआ। महोत्सव से पूर्व आर्यजगत् के ही नहीं भारत के प्रसिद्ध सन्त तपस्वी महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज तथा यज्ञमूर्ति सौम्यभाव महात्मा आनन्दभिक्षु जी के द्वारा समाज मन्दिर में प्रातः यज्ञ तथा रात को वेदकथा प्रारम्भ हुई। सभा के प्रसिद्ध रेडियो सिंगर पं० मेलाराम जी और बाद में बड़ी प्रसिद्ध मंडली पं० राजपाल मदनमोहन जी चिमटा मंडली के तथा सुरीली तान वाले श्री महेशजी के भजन गीत चलते रहे। उस कथा वातावरण के दृश्य व आनन्द का क्या कहना? महात्मा जी का यज्ञ व महात्मा आनन्द स्वामी जी की जादूभरी सुधासनी वाणी के माधुर्य ने सब को भाव-विभोर कर रखा था। कथा क्या थी मानो परमरस का प्रवाह बह रहा था।

शुक्रवार ता० २६ को साईंदास ए. एस. स्कूल के बाहर वाले खुले मैदान में विशाल जलूस से पहले ओ३म की पताका लहराने का काम समाज के प्रधान प्रिंसिपल श्री प्यारे लाल जी बेरी ने अपने हाथों से आरम्भ किया। उनको फूलमालाओं से लाद दिया गया। इस अवसर पर जालन्धर तथा बस्तियों के अपने सारे स्कूलों के छात्रों की विशाल सेना का दृश्य ही देखने वाला था। दयानन्द कालेज, साईंदास स्कूल के हजारों युवक छावनी की सेना का रूप दीखती थीं बाहर से भी काफी सज्जन पधारे हुए थे। वहां अपने कालेजों के मान्य प्रिंसिपल प्राध्यापक, अध्यापक महोदय, समाजों के सज्जन नागरिक एवं आर्य प्रादेशिक सभा के सज्जन उपस्थित थे। आर्य वीरदल जी वीर भी श्री मुल्कराज जी की देख-रेख में वीरता परिचय दे रहा था। श्री प्रिंसिपल भीमसेन जी बहल, प्रिंसिपल कुमारी विद्यावती जी आनन्द, प्रिंसिपल चंचलदास जी, प्रि. बोहरा जी, आर्यसमाज विक्रमपुरा के सज्जन सबका ठाठें मारता हुआ सागर थे। छात्राओं का सुरीला गीत मिठास से भरा था। मान्य प्रधान प्रि. बेरी जी का आरम्भिक प्रवचन गम्भीरता भरा था। जलूस क्या था? ऐसा लगता था कि समाज की विशाल छावनी चल रही है। महात्मा आनन्दभिक्षु जी महाराज, सौम्यभाव ला० परमेश्वरीदास जी आदि साथ थे। सभा की अन्य संस्था करनाल रोहतक महर्षि साथ थीं। दयानन्द कालेज का युवक समाज का वीर मंडल भी साथ था। समाज की शक्ति का परिचय मिलता था। अपनी संस्थाओं की विशालता देखकर प्रसन्नता होती थी। नगर में जलूस पर स्थान-स्थान पर पुष्प वर्षा की गई। सारा शहर आर्यसमाज, वैदिक धर्म, ऋषि दयानन्द के जय घोषों से गूंज उठा। पं. [illegible] जी सभा मन्त्री समाज, युवक श्री आनन्द सागर जी का उत्साह देखकर चित्त प्रसन्न होता था। आर्य-समाज तथा उसकी विशाल संस्थाओं का संगठन, अनुशासन तथा प्रबन्ध कितना शानदार है। यह जलूस से परिचय मिलता था। उस उस दिन तो सारे नगर में समाज की धूम ही मची रही। समाज का स्थूल रूप सारी जनता ने देख लिया।

★

[illegible] की कथा

श्री ला० इन्द्रसेन जी के परिवार में

आर्यसमाज के स्वर्गीय नेता मान्य मास्टर नन्द लाल जी की पुण्य स्मृति में श्री ला० इन्द्रसेन जी उप-प्रधान आर्य प्रादेशिक सभा के परिवार में उनके घर पर ता० ६ दिसम्बर से १२ दिसम्बर रविवार तक पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज की अध्यक्षता में बड़ा यज्ञ होगा। रात को महात्मा जी की सुधारस से भरी कथा हुआ करेगी। इस पुण्य अवसर पर सब भाई बहिनें पधार कर कृतार्थ करें तथा जीवन लाभ उठावें।

अगले अंक में पढ़िए

आर्यसमाज विक्रमपुरा जालन्धर के वार्षिक महोत्सव पर जिन नेताओं, महारथियों के प्रभावशाली विचार सुनने का जनता को सौभाग्य मिला। बाहर के प्रेमी पाठकों तक उनके इस सन्देश को आर्यजगत में परिश्रम से प्रकाशित किया जा रहा है। कुछ तो इस अंक में हैं। मान्यवर डा० दीवानचन्द जी एम० ए० कानपुर, श्री प्रिंसिपल भीमसेन जी बहल, प्रिंसिपल कुमारी विद्यावती जी आनन्द जालन्धर, ला० जगतनारायण जी एम० पी०, श्री वीर यज्ञदत्त जी, पण्डित ओमप्रकाशजी महोपदेशक प्रो० पी० पी० तारा जी आदि के प्रभावशाली विचार अगले अंक में पढ़िए।—सं०

आर्यसमाज लारेंस रोड अमृतसर की ओर से

सभा को १००१) रुपये

वेद प्रचार में

आर्य समाज लारेंसरोड अमृतसर की ओर से सभा को समय २ पर हर प्रकार का पूरा सहयोग मिलता रहता है। यदि ऐसी कुछ समाजें मिल जायें तो बड़ा काम हो सकता है। इस समाज के सारे सज्जन सभा का विशेष ध्यान रखते हैं। रविवार को समाज के मान्य मन्त्री वैद्य पं० विद्यासागर जी व डा० देवव्रत जी महाजन अमृतसर से पधारे। सभा के प्रधान श्री वर्मा जी की सेवा में १००१) रु० सभा के लिए भेंट कर चले गए।

धन्यवाद

मुद्रक व प्रकाशक श्री सन्तोषराज जी आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर द्वारा वीर मिलाप प्रेस, मिलाप रोड जालन्धर से मुद्रित तथा जगत् कार्यालय महात्मा हंसराज भवन निकट कचहरी जालन्धर शहर से प्रकाशित मासिक—आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर



टैलीफोन नं० ३०५७ [आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधिसभा पंजाब जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd. No. P. 121

एक प्रति का मूल्य १३ नये पैसे — वार्षिक मूल्य ६ रुपये

वर्ष २५ अंक ५०) २८ मार्गशीर्ष २०२२ रविवार—दयानन्दाब्द १४१– १२ दिसम्बर १९६५ (र 'प्रादेशिक' जालन्धर

वेद सूक्तय:

इन्द्र न उपायाहि

हे इन्द्र! अनन्त ऐश्वर्य के भण्डार परमेश्वर! हम आपके अमृत पुत्र कितने समय से और किन-किन स्थानों पर आपको खोजने के लिए। प्रभो! अब तो हमें प्राप्त होवें। कृपा करके अनुभूति का प्रसाद-दान करें। हम पर कृपा करें।

वाजानां च वाजपतिः

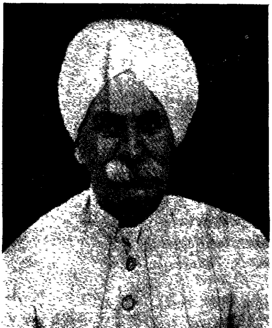
वह महान भगवान सारे ज्ञानियों का ज्ञानी है, सारे बलों तथा बलवानों का अधिपति है। वही सारे अन्नादि योग्य पदार्थों का देने वाला है। सारी शक्तियों का वही महान केन्द्र है वही ज्ञान का प्रकाश सबको देता है वही वाजपति है। उसे हमारा नमस्कार है।

तवेदं सख्यमस्तृतम्

हे जगदीश! तेरी वह मित्रता सदा बनी रहती है, कभी नहीं टूटती। पिता पुत्रों का, उपास्य उपासक का सम्बन्ध टूट भी कैसे सकता है संसार के मित्र तो किसी न किसी निमित्त से बनते और कुछ समय बाद विलग हो जाते हैं, पर प्रभु की मित्रता अटूट है।

अथर्ववेद से

जालन्धर के प्रभुभक्त व कर्मयोगी



स्वर्गीय मास्टर नन्दलाल जी

जिनकी पुण्य-स्मृति में ला० इन्द्रसेन जी के परिवार में ९ दि० से १२ दि० तक यज्ञ व पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज की मधुर कथा हो रही है

यज्ञमय जीवन बनाओ

आर्य प्रादेशिक सभा के माननीय प्रधान श्रीयुत यश जी के परिवार में मिलाप भवन में ५ दिसम्बर रविवार को यजुर्वेद यज्ञ की पूर्णाहुति के समय ब्रह्मा के पवित्र आसन पर विराजमान पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज ने अमृत भरे वचनों में कहा—

जीवन को यज्ञमय बनाओ। प्रभु भक्ति तथा प्रकृति के देवों का सदुपयोग करो। मेल-मिलाप और प्यार से भरपूर होना ही संगतिकरण है। अपनी आय में से धर्म-समाज तथा राष्ट्र के लिए भी दान देना है। यज्ञमय जीवन ही देवमय जीवन है। परोपकार यज्ञ है। यज्ञ अमृत है। जो यज्ञ करता है। वह अमृतपान करता है। जो स्वार्थ के लिए काम करता है वह विष पीता है। जीवन यज्ञ के अर्पण कर दो। इस से कल्याणमय आनन्द मिलेगा।

अधिष्ठाता—श्री संतोषराज जी

सम्पादक—त्रिलोक चन्द्र शास्त्री

राष्ट्र-भक्ति और प्रभु-भक्ति-3

(श्री महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज की अमृतभरी कथा)

(गतांक से आगे)

इस पर हमें अमरीका के सामने अनाज के लिए गिड़गिड़ाने की ज़रूरत नहीं रहेगी। हम उन्हें कहेंगे कि नौ लाख टन अनाज तुम हम से लो। हमें यह भूलना नहीं चाहिए कि पिछले महायुद्ध में मुसोलिनी के आदेश पर इटली में वर्षों केले का आयात न किया गया। इटली वालों ने अपने देश के सम्मान के लिए केला खाना छोड़ दिया। हमें भी अपनी मातृ-भूमि की प्रतिष्ठा एवं सम्मान की ओर ध्यान देना है। अमरीका वाले हमें जो साठ लाख टन गेहूं देते हैं उसके बदले में हमें गौओं का चमड़ा आंतें और लहू देना पड़ता है। ऐसा अन्न खाकर हमारी बुद्धि बिगड़ेगी नहीं तो क्या होगा। जैसा खान वैसा विचार।

वर्षों पहले की बात है। एक वानप्रस्थी थे। वह हर रोज सुबह सवेरे समाधिस्थ हुआ करते थे। एक दिन उन्होंने महात्मा हंसराज जी से कहा कि मैंने समाधिस्थ होते हुए ध्यान लगाया तो क्या देखता हूं कि एक युवा लड़की मेरी आंखों के सामने खड़ी है। मैंने बार बार एकाग्रचित्त होने की कोशिश की लेकिन असफल रहा। इस पर मैंने उठकर दोबारा हाथ मुंह धोया और समाधि पर बैठा। जैसा ही आंखें बन्द की वह लड़की फिर दिखाई देने लगी। महात्मा जी ने उक्त वानप्रस्थी की ओर देखते हुए कहा—'यह तो बड़ी विचित्र बात है। क्या आपने कोई तामसिक भोजन किया था। क्या आप किसी लड़की से मिलते थे?' वानप्रस्थी ने स्मरण शक्ति पर जोर देते हुए नकारात्मक उत्तर दिया लेकिन कुछ क्षण रुक कर बोला—'एक व्यक्ति मुझे एक जगह भोजन पर ले गए थे। वहां मैंने बहुत ही स्वादिष्ट भोजन अवश्य किया था।' महात्मा हंसराज जी कहने लगे—

'तो अवश्य कहीं कोई बात है। आप यह पता करें कि इस भोजन का प्रबन्ध किस ने किया था?' वानप्रस्थी महाशय ने कई दिन की खोज जांच के बाद पता लगाया कि उक्त भोजन का प्रबन्ध रावलपिंडी के एक सज्जन ने किया था और उन्होंने अपनी युवा लड़की को 15000 रुपये लेकर एक बूढ़े के पास बेच दिया था।

और वही लड़की वानप्रस्थी की आंखों के आगे आ खड़ी होती थी। महात्मा हंसराज जी ने वानप्रस्थी से कहा—'महाशय देखा। बुरा अन्न खाने का कितना प्रभाव होता है।'

महाभारत में आता है कि भीष्मपितामह बाण शया पर पड़े थे। युधिष्ठिर, अर्जुन और पाण्डव परिवार के अन्य-सदस्य वहां उपस्थित थे। भीष्म पितामह उपदेश दे रहे थे। तभी द्रौपदी ने आकर कहा—'पितामह! मैं आप से एक प्रश्न पूछना चाहती हूं। यदि आप मुझे पहले इस प्रश्न के लिए क्षमा कर दें तो मैं पूछूं।' पितामह के यह कहने पर क्षमादान की क्या बात है, तुम अपने मन की बात कहो तो द्रौपदी ने पूछा—पितामह! इस समय तो आप धर्म और ज्ञान की बहुत ऊंची-ऊंची बातें बता रहे हैं लेकिन जब भरे दरबार में मेरा चीर हरण किया जा रहा था, दुर्योधन और उसके साथी मुझे नग्न करने की कोशिश कर रहे थे मैं सहायता के लिए चिल्ला रही थी, तब आपके होंठ नहीं हिले थे, आप कुछ भी नहीं बोले थे।

पितामह ने उत्तर दिया—बेटी! तब मुझ पर दुर्योधन का अन्न खाने के कारण पाप का प्रभाव था। मैं उस प्रभाव के कारण बोल नहीं सकता था। अब अर्जुन के बाणों ने मेरे शरीर से पाप के अन्न से बने गन्दे खून को निकाल दिया है। मेरी बुद्धि निर्मल हो गई है और मैं ज्ञान की बातें करने लगा हूं।

इसीलिए शास्त्रों में सत्य आहार, अनुकूल आहार और मित् आहार पर बल दिया गया है। दुःखों को दूर करने वाला योग्य क्या है? युक्त आहार। अर्थात् चार रोटी की भूख हो तो खाएं। एक रोटी की जगह वायु के लिए और एक की जल के लिए छोड़ दें। जो ज्यादा खाएगा वह मरेगा। जो 'युक्त आहार' का पालन नहीं करेगा, चटोरा बनेगा, वह दुःखों को दावत देगा। सभी रोगों का कारण बुद्धि का बिगड़ना है। प्रायः होता यह है कि बुद्धि कहती है कि अमुक चीज न खा लेकिन जिह्वा कहती है कि खाले बहुत स्वादी है। परिणाम यह होता है कि अधिक खाने से पाचन शक्ति बिगड़ जाती है। वास्तव में अधिक खाना समय और धन दोनों को नष्ट करना है हर रोज घर में एक सब्जी और एक दाल पकनी चाहिए। जिस प्रकार नदी में नौका को विपरीत हवा के झौंके उलटा देते हैं वैसे ही बुद्धि रूपी नौका को इन्द्रियां हर कर ले जाती हैं। इसलिए युक्त आहार लें और मर्यादा में रह कर खाएं।

दूसरी बात है सत्य विचार। दुनिया सेनाओं, बमों और पैसे से ही काबू में नहीं रखी जा सकती। दूसरों को काबू रखने के लिए सत्य विचार जरूरी है। अंग्रेज भारत में आया था सौदागरी करने लेकिन शासक बन कर बैठ गया। उसने लोगों में यह विचार फैलाया कि भारत के लोग काम नहीं कर सकते। हम काम करते हैं। अंग्रेज राम और कृष्ण को गडरिया कहने लगे। एक गोरे वाल्टियर ने लिखा 'हिन्दोस्तानी चलते तो हैं लेकिन उन्हें धीमा चलना पसन्द है। वे धीमे चलने की अपेक्षा खड़े होना, खड़े होने की अपेक्षा लेटना, लेटने की अपेक्षा सोना और सोने की अपेक्षा मरना बेहतर समझते हैं।' इस तरह अंग्रेजों ने ऐसे विचार फैला कर भारतीयों में हीन भावना पैदा की। भारतीय संस्कृति के प्रति भारतीयों में ही घृणा फैलाई। अंग्रेजों के फैलाए विचारों के कारण ही लोग यह समझने लगे कि जो पश्चिम से आए वही ठीक हैं। दातुन की ही बात ले लीजिए। अंग्रेजों ने जब भारतीयों को प्रातः दांत साफ करने के लिए दातुन इस्तेमाल करते देखा तो मजाक उड़ाकर कहने लगे—अरे! हिन्दोस्तानी तो सुबह उठकर मुंह में बांस चबाने लगता है!' और अब हालत यह है कीकर, फलाही और नीम की दातुनें अंग्रेज लोग भी करते हैं। दांत साफ करने के लिए ब्रुश भी निकाल लिए हैं। मूंगी की दाल के सम्बन्ध में ऐसा प्रचार चला कि यह तो रोगियों के वास्ते है। किन्तु अब कहने लगे हैं कि इससे अच्छी कोई दाल ही नहीं। बाबा! मूंगी की दाल खाओ जरूर, लेकिन इस तरह मत खाना कि बाजार में महंगी हो जाए।

अंग्रेज के फैलाए विचार ने हम में हीन भावना पैदा कर दी है, हमारे मस्तिष्क और बुद्धि को बिगाड़ दिया है। भारतीयों को भारत में रहना पसन्द नहीं। अमरीका से इंजिनियरिंग पढ़कर आते और वापस अमरीका ही चले जाते हैं। कहते हैं भारत भी कोई रहने की जगह है। हमारे दिमाग में यह घुसेड़ दिया गया है कि 'भारत भी कोई देश है।' अजीब बात है कि लोग घर में मां बहिन, पत्नी के पास बैठना पसन्द नहीं करते। (क्रमशः)

सम्पादकीय—

आर्य जगत

वर्ष २५] रविवार २०२२, १२ दिसम्बर १९६५[अंक ५०

हमारी आंखें कब खुलेंगी

जिस देश की जनता ने दो बड़े अत्याचारी व मर्यादा हीन चीन व पाकिस्तान जैसे शत्रुओं के शस्त्रों के साथ भयकर आक्रमण का विष समय देखा हो। हवाई-जहाजों, तोपों व भीमकाय टैंकों से आग का ज्वालामुखी देखा हो। भारतीय सेना के जवानों के वीर बलिदान हुए हों। अभी तक सीमा उल्लघन किया जा रहा हो। अपने मान्य नेताओं द्वारा बार २ अब भी जनता को प्रतिक्षण सावधान रहने का बात कही जा रही है। जीवन की वस्तुओं की मंहगाई आकाश को छूने लगी हो। लाखों की संख्या में उजड़े हुए अपने युद्ध पीड़ित भाई बहिन दमनीय दशा में हों। उधर वर्षा के अभाव में अन्न का इतना बड़ा संकट सामने हो तथा बिजली की कमी कर दी गई है। देश के नेता राष्ट्र रक्षा के निमित्त धन व सोना मांगते हों। सप्ताह में एक बार सोमवार रात को उपवास रखने की मान्य प्रधान मन्त्री द्वारा अपील की जाती है उस देश की जनता तथा विशेषकर इस परीक्षा में लगे हुए पंजाब प्रान्त में क्या हो रहा है। सारे आपस में लड़ने में लगे हुए हैं। अलग अलग होने का आन्दोलन जोर से जारी है। विधान सभा में सदस्य लड़ते है। अकाली दल प्रांत बांटने के लिए सबको धमकियां दे रहा है। हरियाना वाले अपनी अलग चर्चा करते हैं। क्या यही देश भक्ति है।

इसके साथ जो बात विशेष कर कहनी है वह यह है कि लोगों ने अपने परिवारों के समारोहों के दिखावे में तथा बेकार के व्यय में तनिक भी कमी नहीं की। अमृतसर ने तो बड़ा भयानक समय व छहरटा की बमवर्षा का डरावना दृश्य देखा है। सूबेदार राजू यदि न होता तो पता नहीं शत्रु के सेबरजेट जहाज वहां क्या २ उत्पात मचाते। किन्तु पत्रों में पढ़ा है कि अमृतसर में शादियों के समारोहों में बिजली की जो दिखावट की जाती है तथा आतिशबाजी व बरातों में जो अपव्यय होता है। उसे देखते हुए तो कहा जाता है कि इतना कुछ होने पर लोगों की आंखें नहीं खुली। उन के सामने राष्ट्र की वर्तमान गम्भीर स्थिति का चित्र नहीं है। कितनी बिजली एक रात में केवल दिखावे के लिए जलाई जाती है। सैंकड़ों हजारों रुपये आतिशबाजी में व्यय कर दिये जाते हैं। उनके पास धन है इसलिए वे अपने Show में किसी की परवाह नहीं करते। किसी का अंकुश उन पर है नहीं। राष्ट्रीय दशा की उनको विशेष चिन्ता क्या है? यदि यही धन राष्ट्ररक्षा के कामों में दे दिया जाये तो देश का कितना काम बन जाये। बरातों की कितनी बड़ी फौज चलती है। उनको कोई रोकने वाला नहीं। दिन प्रतिदिन विवाहों के समारोहों पर दिखावा बढ़ता ही जा रहा है। उनको रोकने में किसी को सफलता नहीं हो सकी। आर्यसमाज समाज की इन रूढ़-गत तारों को काटने चला था पर स्वयं बुरी तरह से फंस गया है। हम चाहते हैं कि इन व्यर्थ के आडम्बरों, दिखावों तथा बेकार के व्ययों को सरकार कड़ा कानून बना कर रोक दे इस से लाखों की बचत होगी तथा ये आडम्बर तभी समाप्त होंगे। हमारी तो आंखें पता नहीं कब खुलेंगी। इन बातों को देखकर मन दुःखी होता है। ऐसे लोगों की यह देशभक्ति नहीं है। राष्ट्र को तो एक २ पैसे की आवश्यकता हो और ये लोग एक दिन के दिखावे में हजारों व्यय कर लें। राष्ट्र की वाह २ की उनको चिन्ता नहीं वरन अपनी वाह २ का विचार है। कब आंखें खुलेंगी।

—त्रिलोकचन्द्र

मिलाप भवन में महायज्ञ

मिलाप परिवार का आर्य समाज, आर्य प्रादेशिक सभा एवं दयानन्द कालेज कमेटी के साथ आरम्भ से ही बड़ा भारी सहयोग रहा है। यह परिवार केवल परिवार के रूप में ही नहीं रहा वरन् स्वयं एक संस्था बन गई है। इस का अपना ही एक बड़ा विशाल इतिहास है जिस के प्रत्येक पन्ने और उसकी एक २ पंक्ति में देश-भक्त तथा समाज सेवा का उदात्त भण्डार निहित है। इस परिवार ने लाहौर में भी और देश विभाजन के बाद जालन्धर और देहली में स्थापित हो कर राष्ट्र की एवम् आर्यसमाज की जितनी सुन्दर सेवा की है और इस समय भी कर रहा है। वह इतिहास का अपने आप में एक विख्यात सुनहली अध्याय बन गया है। समाज को धन-मन-तन के सहयोग देने के साथ २ मिलाप परिवार ने राष्ट्र व समाज के पूज्य तपस्वी सन्त महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज जैसी दिव्य अनुपम विभूति तथा सम्पत्ति दी है वह सदा स्मरण रहेगी। इस दिव्य विभूति के लिए यह परिवार सदा के लिए अमर हो गया है।

जालन्धर में प्रतिवर्ष ही मिलाप परिवार की ओर से मिलाप भवन में वेद पारायण का महान यज्ञ होता है। इस बार भी उसी पुनीत परम्परा के अनुसार मिलाप परिवार के प्रमुख नेता आर्य प्रादेशिक सभा जालन्धर के मान्य प्रधान श्रीयुत यश जी पूर्व पंजाब शिक्षा मन्त्री की ओर से ता, २ दिसम्बर से ५ दिस० रविवार तक यजुर्वेद पारायण का प्रातः साय महायज्ञ हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज थे। यजमान के आसनों पर मान्य श्री यश जी तथा उन की सौभाग्यवती देवी स्वर्णा जी बैठी थीं। उन का प्रियसुपुत्र विश्वकीर्ति भी पीली धोती बान्धे बैठा था। दूसरी ओर श्री कवल पुरी जी तथा श्री हंसराज जी चड्ढा भी अपनी देवियों समेत बैठे था। वेद मन्त्रों के पाठ के लिए श्री डा. दुर्गादत्त जी मेनन एम. ए. पी. एच. डी., पं. सत्य देव जी विद्यालंकार एम. ए., पं टेक चन्द जी, पं. हरबंस लाल जी, पं. त्रिलोक चन्द शास्त्री, पं. रामकृष्ण जी, प. रोशनलाल जी बैठे थे सारा परिवार कितनी श्रद्धा से यज्ञ में शामिल था। माननीय श्री यश जी स्वयं वेद मन्त्रों का उच्चारण कितनी मीठी ऊंची तथा शुद्ध स्वर में कर रहे थे। यह देख कर सब का चित्त बड़ा ही प्रसन्न हो रहा था रात को पूज्य महात्मा जी की कथा में कितना जादू आकर्षण था, कितना अमृत बरसता था। मिलाप भवन का सा।

(शेष पृष्ठ ४ पर)

हमारी संस्थाओं ने वीर युवक राष्ट्र को दिए

मनुष्यों का निर्माण आज की बड़ी आवश्यकता

प्रिंसिपल श्री भीमसेन जी बहल का प्रभावपूर्ण भाषण

विक्रमपुरा समाज के महोत्सव पर विशाल राष्ट्ररक्षा सम्मेलन में डी. ए. वी. कालेज के मान्य प्रिंसिपल श्री भीमसेन जी बहल ने जनता के सामने बड़े सुन्दर विचार रखते हुए कहा—

भारतीयों ने बड़े परिश्रम, बलिदान और लगातार संघर्ष करके आजादी ली। इस में सारी जनता ने अपने २ स्थान पर योग देकर भाग लिया। स्वाधीनता का भी यह संग्राम ही था। इस में अनुशासन तथा संगठन में रह कर विजय प्राप्त की। विदेशी सत्ता चली गई। हमारे देश का शासन हमारे अपने नेताओं के हाथ मे आगया। वैसे यह बात सर्वसम्मत है कि स्वतन्त्रता लेना कठिन होता है किसी विदेशी सत्ता के बन्धन से आजाद होना कोई सरल काम नहीं होता। इस के लिए बहुत बड़ा बलिदान देना पड़ता है। बड़ी यातनाएं सहनी पड़ती हैं। किन्तु आजादी प्राप्त कर लेने पर उस की रक्षा करनी तो और भी मुश्किल होती है। उस के लिए हर समय सावधान और सतर्क रहना पड़ता है। आजादी को स्थिर रखना बड़ी कठिन बात है। इसके लिए राष्ट्र के प्रत्येक व्यक्ति को काम करना पड़ता है।

राष्ट्र की शक्ति का अनुमान उस के खेतों, नगरों या अनेक कलाकेन्द्रों से नहीं लगाया जाता उसका अनुमान तो इस बात से किया जा सकता है कि उस में मनुष्य किस प्रकार के हैं। हम ने देश को आगे ले जाने का काम शुरू किया। अभी हम में जान आई थी कि चीन ने और अब पाकिस्तान ने भारत पर आक्रमण कर दिया। हमारी इन संस्थाओं से पैदा होने वाले युवकों ने संग्राम के मोर्चों पर कितनी वीरता दिखलाई। शस्त्र व टैंक पाकिस्तान के के पास अधिक थे। विजय शस्त्रों से नहीं मिलती वरन् वीर युवकों से मिला करती है।

देश पर जब कभी संकट आ जाये तो सावधानी करनी पड़ती है। यदि हम हर बात में दूसरों पर निर्भर रहें तो ठीक न होगा हमें आत्म निर्भर रहना होगा देश में हर आवश्यक वस्तु बननी चाहिए। हम ने मनुष्य बनाने हैं यही सब से बड़ा काम है. उनके पास पैटन टैंक तो थे पर यदि चलाने वाले टागे वाले हों टैंक चलेंगे कैसे? अन्य देशों में बड़ी तेजी से चीजे तैयार होती हैं। हम भी उसी वेग से बनायें। मनुष्य कैसे बने? इस के लिए शिक्षा प्रणाली मे परिवतन करना होगा। हम तो **subjects** से आगे नहीं जाते। विदेशों में शिक्षा का ढङ्ग ऐसा नहीं है। अमरीका जा कर मैंने देखा कि वहां युवकों के विचारों में चरित्र बनाने में बड़ा जोर दिया जाता है। भारत में पुराने गुरू अपने शिष्यों को लेकर उनका पूरा विकास करते थे। अब पढ़ने वाले अधिक हो गये हैं। उनके साथ सम्पर्क अधिक नहीं रखा जाता। हमारे कालेजों के लड़कों ने काम किया है। रात दिन एक करके देश रक्षा का कार्य किया। हमें अब इस ओर विशेष ध्यान देना होगा उनका शरीर स्वस्थ हो। यदि लड़ाई सदान नहीं तैयार होंगे तो टैंक व जहाज कौन बनायेगा? आर्यसमाज की संस्थाएं बड़ा हित कर काम कर रही हैं। हमारा मुकाबिला उन देशों से है जो आगे बढ़े हैं। हमें भी **atomic energy** तैयार करनी है, हम भी **alert-mind** हों। हम युवकों को पढ़ायें भी और उनकी सुनें भी। कलाकौशल के साथ २ हम ने मानव भी बनाने हैं। यदि मनुष्य न बन सके तो राजनीतिज्ञ, वैज्ञानिक आदि भी अच्छे नहीं बनेंगे। सरकार को शिक्षा व्यय में कटौती नहीं करनी चाहिए। शिक्षा ऊपर से नहीं वरन् आरम्भ से होती है। अमेरीका में शिक्षा का काम बच्चों से आरम्भ होता है। यहां पर भी राष्ट्र निर्माण का काम करना है। हम ने **clerk** नहीं बनाने मनुष्य बनाने हैं आर्यसमाज इस दिशा में बड़ा ही सुन्दर काम कर रहा है। उसकी शिक्षण संस्थाओं ने राष्ट्र को हर क्षेत्र में काम करने वाले नेता दिये तथा देता चला जाता है।

पटना जिला आर्य सभा का चुनाव

प्रधान-श्री राम लखन आर्य उपप्रधान—श्री लाजपत राय, श्री श्याम लाल शोभा, श्री वसंत कुमार, मंत्री—श्री भुवनेश्वरी प्रसाद, उपमंत्री--बनारसी सिंह विजय, राम बाबू त्यागी राम कली प्रसाद आर्य खजांची—गंगा प्रसाद जी, लेखा निरीक्षक—श्री राम कुमार आर्य। अंतरंगसदस्य १५ निर्वाचित हुए।

राम लखन आर्य
मंत्री समाज

★ जय जवान
जय किसान ★

मिलाप भवन में महायज्ञ

(पृष्ठ ३ का शेष)

प्रांगण खचाखच भरा रहता था। समय २ पर श्री महेश जी के तथा अन्यकलाकारों के मधुरसंगीत भी चलते थे। पं. मेला राम जी के मधुर गीत भी होते थे। प्रिय विश्वकीर्ति का यज्ञोपवीत संस्कार हुआ। पूज्य महात्मा जी ने प्रियवर विश्व को बड़ा प्यारा आशीर्वाद दिया। श्री यश जी सौभाग्यवती स्वर्णा जी का यह प्रिय छोटा सुपुत्र छः २ साल २ घण्टे वेदी पर निरन्तर बैठ कर आहुतियां देता रहा प्रिय विश्व का यह तप देख कर सारे हैरान थे। रविवार पूर्णाहुति पर शानदार समारोह दृश्य देखा। नगर के गण्यमान्य नेता तथा हर क्षेत्र के बड़े २ सज्जन देवियां पधारीं। लुध्याना, रोहतक अमृतसर आदि बाहर से कितने परिवार पधारे थे। पूर्णाहुति के बाद पुष्प वर्षा से शुभ शीर्वाद दिया गया। वह धार्मिकता से भरा दृश्य स्मरण रहेगा। मिलाप परिवार की राष्ट्रियभक्ति के साथ इस वेद तथा धर्मभक्ति को देख कर मन उछलता था। पूज्य महात्मा जी का उपदेश सचमुच अमृत था जिस का पान कर के सारे तृप्त हो गए। भगवान् मिलाप परिवार को समृद्ध तथा स्वस्थ बनाये रखें। वेद के प्रति श्रद्धा बढ़ती जाए – सम्पादक

शोक समाचार

श्री **T. W.** आर्य टीचर सोलन भूवरी की माता जी का स्वर्गवास १२-११-६५ को अपने सुपुत्र **K. L. Arya** एडवोकेट **56/19** राजेन्द्र नगर नई देहली में अपने निवास स्थान पर हो गया। माता जी के सर्व संस्कार वैदिक रीति से आर्य समाज करोल बाग देहली ने करवाए। **T. W.** आर्य व **K. L.** आर्य टीचर सोलन, भूवरी एडवोकेट राजेन्द्र नगर नई देहली।

जीवन में कौन-सी भेंट लेकर प्रभु के पास जायें

अकाम-निष्काम-लोककाम और आत्मकाम जीवन दर्शन के चार रूप

प्रसिद्ध फिलास्फर डा० दीवानचन्द जी एम० ए० कानपुर का गम्भीर प्रवचन

****

मान्यवर डा० दीवानचन्द जी एम० ए० पूर्व उपकुल पति आगरा विश्वविद्यालय प्रसिद्ध फिलास्फर हैं। आर्यसमाज के आज के युग में मान्य नेता हैं। आपका प्रवचन फिलास्फी से भरा होता है। आर्य समाज विक्रमपुरा जालन्धर के वार्षिकोत्सव पर प्रति वर्ष पधार कर गम्भीर प्रवचन से जनता को कृतार्थ करते हैं। आप के दार्शनिक भाषण के साथ ही महोत्सव यज्ञ की समाप्ति होती है। बड़ा ही गम्भीर भाषण है—सं०

वेद मन्त्र में कहा है कि मैं कब और कौन-सी भेंट लेकर प्रभु के पास जाऊंगा। मैं अपने से पूछूं कि मुझे और कितना जीना है। क्या जीवन ऐसा बीत रहा है कि सौ वर्ष तक जीता रहूंगा। क्या करूंगा और कौन-सी भेंट लेकर जाऊंगा। शरीर पर धारण किये कपड़े किसी को दे दिये जायेंगे। शरीर यहीं रह जाएगा। वहां जाते समय कौन-सी भेंट ले जानी होगी। मनुष्य रोते हुए पैदा हुआ। यदि रोते हुए ही मरे तो फिर यह जीवन कैसा है? यदि व्यक्ति सत्तर-अस्सी वर्ष जीने के बाद भी रोता हुआ जाये तो बड़ा ही दुर्भाग्य है।

वह भेंट कौन-सी है जो प्रभु के पास ले जानी होगी। किसी कुत्ते से पूछो कि तुमने जीवन में क्या बनाया? वह कहेगा कि मैंने तीन कुत्ते और तीन कुतियां बना दीं। मनुष्य भी यदि ऐसा ही करता रहा। केवल बच्चे ही पैदा करता गया तो यह कोई विशेषता नहीं। मैंने एक मित्र से पूछा कि जीवन में क्या-क्या बनाया वह बोला—दो मकान बनाए। मैंने कहा कि वह तो किराए पर किरायेदारों के पास हैं। वे तो दूसरों के लिए हैं अपने लिए क्या बनाया? उसने फिर कहा कि दो लड़के और एक लड़की है जिनकी शादी कर दी है। मैं बोला-भाई लड़की को तो दामाद ले गया और पुत्र वधुओं को लड़के ले गये। आपने जीवन में क्या किया? प्रश्न यह है कि मैंने आत्मिक उन्नति क्या की?

हम मानते राम को हैं पर चलते रावण गौतम बुद्ध के पीछे हैं। धर्म की स्थापना करनी चाहिए, किन्तु धर्म ईंटों के मन्दिर में नहीं होता, मन में होता है। अहिंसा चिल्लाते हैं। थोड़ा सा धक्का चीन ने दिया, अब पाकिस्तान ने दिया। हम अपने लिए तो अब ही लड़े हैं। एक बात कहता हूँ कि दस वर्ष के लिए अहिंसा का नाम न लो। गांधी जी को याद करने के लिए और भी कई बातें हैं यदि अहिंसा के लिए ही गांधी जी का नाम लेना है तो दस साल के लिए उनको भी भुला दो। फिर याद कर लेंगे।

आत्मिक उन्नति में कामना का स्थान प्रथम है। हरेक की अलग २ कामना होती है। बृहदारण्यक में चार कामनाएं आती हैं। अकेला चाहता है कि साथी मिले, सन्तान मिले, धन मिले। एक के बाद दूसरी कामना तीसरी इसी प्रकार चक्र चलता रहता है। भर्तृहरि ने राज्य छोड़ा, सब कुछ छोड़ दिया। पर मार्ग में चमकती वस्तु पर हाथ डाला तो पान की पीक थी। कामना न छूटी।

पहला जीवन दर्शन बुद्ध का है—अकाम बनो। बुद्ध स्त्री, पुत्र, राज्य सब कुछ छोड़ आया था। उस का विचार यह है कि निर्वाण पाना जीवन का लक्ष्य है। अपनी सत्ता समाप्त करनी है। सौ वर्ष की आयु तो बड़ा दुर्भाग्य है, पचास पचीस दस की उम्र से कम। जो माता के पेट से आते ही मर जाएं उसे निर्वाण मिलता है। जितनी जल्दी मर जाये बुद्धमत में अच्छा माना जाता है। कोई मार दे तो निर्वाण मिलेगा। सारी कामनाएं दुःखों का हेतु हैं। अकाम हो जाना पहला जीवन दर्शन है।

दूसरा गीता का जीवन दर्शन है—निष्काम होना। कर्म दूसरों के भले के लिए होने चाहिएं। बच्चों को स्कूल में इस लिए भेजो कि ये देश की सम्पत्ति बनेंगे जाति में एक-एक पढ़ा लिखा हो। अपने को पीछे रखो। समाज को आगे।

गीता शुरू कैसे हुई। अर्जुन बोला—हम जीते तो क्या वे जीते तो क्या? कृष्ण जी ने कहा—पार्थ! मरना तो सबको है ही, पर अपने धर्म व कर्त्तव्य को पूरा करना चाहिए। निष्काम काम करो। यह जीवन दर्शन है। स्वामी दयानन्द ने समाज के उपनियमों में नियम लिखा कि प्रत्येक आर्य-नर-नारी अपनी आमदनी का शतांश समाज को देवे। सौ में एक रुपया समाज के लिए दे तथा ९९ अपने लिए रखे। सबसे प्रथम मनुष्य का अपनापन है, परिवार है, फिर समाज का स्थान है। वेद में आता है कि प्रभो! मुझे इतनी शक्ति दे कि सारे मेरे मित्र बन जाएं। जिस के पास शक्ति है उसे किसी को मित्र बनाने के लिए अर्जियां देने की आवश्यकता नहीं होती। जब जापान रूस पर विजयी हुआ था तब जापान की जय २ होने लगी थी। लोग जापानी भाषा पढ़ने लगे। शक्ति वाले के सब मित्र बन जाते हैं।

अगले अंक में पढ़िए

विक्रमपुरा समाज के जल्से में पधारकर प्रभावशाली नेताओं के भाषण बड़ा परिश्रम करके जगत के प्रेमी पाठकों की सेवा में पहुंचाये जा रहे हैं। अगले अंक में श्री वीर यज्ञदत्त जी, प्रिंसिपल कुमारी विद्यावती जी आनन्द हंसराज महिला कालेज जालन्धर, प्रोफैसर तारा जी तथा श्री ला० संतोषराज जी के दिए जायेंगे।

आर्य समाज मोरखरा जिला (रोहतक)

वार्षिकोत्सव २४,२५,२६ दिसंबर सन् ६५ को धूमधाम से मनाया जा रहा है। जिस में उच्च-कोटि के विद्वान, भजनीक, संन्यासी महात्मा पधार रहे हैं सब धर्म प्रेमी इस शुभ अवसर से लाभ उठावें।

—जमादार भरत सिंह
मन्त्री आर्यसमाज

दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय के छात्र मास में चार दिन अनशन पर

विद्यालय के छात्रों की एक सभा में जोकि सत्यप्रिय जी शास्त्री की अध्यक्षता में हुई निश्चय हुआ कि भारत के प्रधान मंत्री जी के आदेशानुसार मास में चार दिन अनशन किया करेंगे।

महाविद्यालय का मासिक खर्च ३½ हजार रुपया है जोकि आचार्य श्री ज्ञान चन्द्र जी M. A. ने संभाला हुआ है। विद्यालय के छात्रों का सब प्रकार का व्यय निशुल्क होता है। इस में सभी प्रांतों के छात्र वैदिक धर्म की दीक्षा ले कर अपने २ प्रांतों में वेद प्रचार करने का संकल्प लिए हुए हैं।

मुरारी लाल शास्त्री
आर्य पथिक

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब

अत्यन्त आवश्यक सूचना

आर्य समाज अपने हिसाब किताब के लिए सदा से प्रसिद्ध रहा है। यह एक ऐसा गुण है जो आर्यसमाज की प्रत्येक संस्था में रहना चाहिए। जिस दिन आर्य संस्थाओं में हिसाब किताब गंदला हो जाएगा उस दिन आर्यसमाज के नाश का बीज बोया जाएगा। आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के कार्यालय में यह प्रयत्न किया जाता है कि जहां तक हो सके आर्य समाजों को इस सम्बन्ध में कोई शिकायत न हो। इस के लिए सभा का और समाजों का परस्पर सहयोग आवश्यक है। कोई भी समाज किसी भी रूप में चाहे वह धन सीधा सभा को भेजती है या किसी सभा के अधिकारी या कर्मचारी द्वारा धन सभा को भेजती है, उसका यह आवश्यक कर्तव्य हो जाता है कि वह सभा के कार्यालय द्वारा ठीक रसीद समय पर पाने का ध्यान रखे। एक सप्ताह यह इस से कुछ अधिक दिन यदि किसी समाज को उनके दिए धन की रसीद न पहुंचे तो उन्हें सभा के कार्यालय को अवश्य पत्र लिखना चाहिए।

समाजें जो धन जनता से प्राप्त करती हैं वह एक अमानत के रूप में है। उसका थोड़ा-सा भी अंश सभा या समाज के अधिकारी या कर्मचारी यदि ठीक ढंग से व्यय नहीं करते या उसका हिसाब-किताब नहीं रखते तो बड़े भारी सामाजिक पाप के भागी होते हैं। आर्य-समाज के प्रवर्तक ऋषि दयानन्द तथा महात्मा गांधी बड़े सच्चे और सुच्चे थे। उनके अनुयाइयों को न केवल आप सामाजिक धन के विषय में सच्चे और सुच्चे होना चाहिए अपितु सभा में जो उनका धन आता है उसके विषय में भी पूरी तरह जागरूक होना चाहिए। इस तरह वे आर्यसमाज को शुद्ध पवित्र रखने और ठीक मार्ग पर ले जाने के पुण्य के भागी होंगे।

सभा सब आर्य समाजों की सम्मिलित शक्ति है। जिस दिन समाजें शिथिल हो जाएंगी सभा भी शिथिल हो जाएगी।

एक निवेदन और है वार्षिक चुनाव के दिन और प्रतिनिधि बनाने के दिन समीप आ रहे हैं। समाजों के प्रतिनिधि यदि सत्य के आधार पर चुने जा कर समाजों से आएंगे तो उनकी वाणी में बल होगा और उनके द्वारा समाज पुष्ट होगा। यदि वे किसी स्वार्थ के कारण ठीक ढंग से चुने न जा कर आएंगे तो वे आप भी डूबेंगे और सभा को भी डुबाएंगे और ऋषि दयानन्द के कार्य को नष्ट करेंगे और उनके नाम को कलंकित करने के भागी होंगे।

सत्य ही समाज का बल है। चाहे वह हिसाब किताब में हो और चाहे हमारे व्यवहार में। इस बात का सदा ध्यान रखना चाहिए।

सत्यदेव विद्यालंकार
मन्त्री सभा

राष्ट्र रूपी यज्ञ के लिए बलिदान देना है

आचार के बिना संसार का सुधार नहीं होगा

पण्डित सत्य देव जी विद्यालंकार एम.ए. मन्त्री सभा का भाषण

आर्य प्रादेशिक सभा पंजाब के महामन्त्री पण्डित सत्य देव जी एम. ए. विद्यालंकार ने आर्य समाज विक्रमपुरा के जल्से पर राष्ट्रभृत यज्ञ के विषय को लेकर अपने प्रभावशाली भाषण में कहा—

मैं संध्या कर रहा था। ऊपर से हवाई जहाज गुजरा। मन में विचार आया कि क्या संध्या से प्रतिकार हो सकता है? एक कहने लगे कि व्यास पर बम नहीं गिर सकता क्यों कि वहां एक महात्मा साधना कर रहे हैं। यह अन्ध-विश्वास देश को खाए जारहा है। एक ओर तो बम गिरते हैं और दूसरी ओर हमारे नेता असैम्बलियों में बैठ कर लड़ते हैं। तीसरी ओर पंजाबी सूबा का झगड़ा खड़ा कर दिया है। १९४७ में तो यह नहीं सूझा था। तब तो भाई भाई बने हुए थे। किन्तु अब ऐसी नई नई बातें सूझती हैं। एक ओर तो वीर जवान अपने जीवन का बलिदान दे रहे हैं और दूसरी ओर यह अवस्था बन रही है। इन दूसरों को गालियां देते हैं पर स्वयं बलवान क्यों नहीं बनते। चीन में सड़क बनाने में कोई भी गड़बड़ नहीं कर सकता परन्तु यहां एक-दो वर्षा आने पर बनाई सड़क बह जाती है उसमें रेत मिला देते हैं। एक अमीर मोटर वाला मोटर दौड़ाये जाता है, गरीब पर धूलि पड़ जाती है। वह अमीर सोचता ही नहीं कि उस गरीब की क्या अवस्था है। राष्ट्र को यज्ञ की भावना से देखें तो देश ऊंचा हो सकता है। यज्ञ में यजमान बनता है। इस राष्ट्रिय यज्ञ में यजमान जनता होती है। ब्रह्मा प्रान्तों व केन्द्र का मन्त्रिमण्डल है जो यह आदेश देता है कि ऐसा करो। वैसा करो। यजमान तो थोड़ा बहुत आचार छोड़ सकता है किन्तु ब्रह्मा पर आचार दोष कभी नहीं लगना चाहिए। विद्वान व ब्राह्मण को तो दस गुना दण्ड होना चाहिए। उद्गाता का काम आह्वान करना बुलाना होता है। राष्ट्र में भी एक न्याय करने वाले तथा दूसरे चलाने वाले होते हैं। जुडिशरी व ऐग्जेक्टिव। ये ईमानदार होने चाहिएं। होता यज्ञ में आहुति देता रहता है। राष्ट्र में भी जज लोग दण्ड देकर उन लोगों की आहुति देते रहते हैं। हमारे यहां सर्प जाति के एक व्यक्ति ने राजा परीक्षित को मारा था तब जन्मेजय ने उस जाती के लोगों का चुन-चुन मारा था। अध्वर्यु का काम यज्ञ की प्रक्रिया को बतलाना होता है। राष्ट्ररूपी यज्ञ मे भी ऐग्जेक्टिव यही काम किया करती है। ये **Legislature** उद्गाता का काम करते है। यदि इन कौंसिलों में बैठ कर कानून बनाने वाले ये लोग ठीक हैं तो काम उत्तम रीति से चलता है।

यज्ञ के तीन अंग हैं। देवपूजा, संगति करण और दान। देवपूजा का अर्थ—देवों, ब्राह्मणों और विद्वानों का मान करना। ऋषि दयानन्द ने आर्यसमाज के हाथ में सिद्धांत की यह बात दी। ऋषि ने मूर्ति पूजा का इस लिये विशेष कर खण्डन किया कि मूर्ति के साथ मन्दिर बनेंगे। वहां पर पुजारियों निखट्टियों की फौज तैयार होगी। चीन ने तिब्बत को क्यों दो दिन में ले लिया इसका कारण यह था कि तिब्बत में लामा बहुत थे पर हाथ से काम करने वाले कम थे। सारा देश ही प्रायः भिक्षुओं का बन गया था। भिखारियों का अन्त ही नहीं। मूर्ति पूजा का आडम्बर देश की अर्थ-व्यवस्था को ले बैठा। सारे स्तर में गड़बड़ पैदा हो गई। भारत में झंड वाले पीर तो अभी समाप्त हुए नहीं उल्टा दो झण्डे वाले पीर और बन गये। इनके भी मन्दिर बन गए। जिनमें गांधी बाबा तथा नेहरू बाबा की मूर्तियां बनाकर खड़ी कर दी गईं। क्या कहा जाए हमारा भारत कब्रों, समाधों का देश बन गया है। ऐसे २ धर्म मन्दिर बन गये जिन में बैठ कर कुछ कर लो वहां पुलिस नहीं आ सकती। दुर्ग में दुर्ग बन रहे हैं सरकार देखती रह जाती है।

(क्रमशः)

धर्म-समाज-राष्ट्र और लोक सेवी स्वर्गीय मा० नन्दलाल जी जालंधर

का प्रेरणा व स्फूर्तिदायक संक्षिप्त जीवन

(पं० प्रकाश नाथ तिवाड़ी प्रधान आर्य समाज
सिविल लाईन्ज, जालन्धर शहर)

जन्म—स्वर्गीय मास्टर नन्द लाल जी जालन्धर निवासी का जन्म १५ दिसम्बर १८८० में जिला जालन्धर के ग्राम ललियां कलां में हुआ। आपके पिता जी का नाम ला० दौलतराम तथा दादा का नाम ला० दुनीचन्द था जो कि पंजाब के उच्च क्षत्रिय घराने से सम्बन्धित थे। जालन्धर के लब्ध प्रतिष्ठ प्रसिद्ध वकील बा० राधाराम जी मास्टर नन्दलाल जी के चाचा थे। आप अभी केवल साढ़े चार वर्ष के ही थे कि आप के पूज्य पिता ला० दौलतराम जी पटवारी का देहान्त हो गया।

शिक्षा—आप के पिता जी के स्वर्गवास हो जाने के बाद गाव में ही आपका पालन-पोषण और शिक्षा का काम आरम्भ हुआ। बालपन की शिक्षा आप ने अपने ग्राम तथा कस्बा चट्टी (जालन्धर) में प्राप्त की। प्राथमिक शिक्षा के बाद मैट्रिक तक शिक्षा आपने जालन्धर में मिशन स्कूल, गवर्नमैंट तथा साईंदास ऐंग्लो संस्कृत स्कूलों में प्राप्त की। सन १९०० में दसवीं कर ली।

अध्यापन काय — आप को मैट्रिक तक शिक्षा दिलाने में बा० राधाराम जी का विशेष हाथ था। श्री बा० राधाराम जी जालन्धर आने से पूर्व नकोदर में वकालत करते थे। इस लिए उन्होंने मास्टर नन्दलाल जी को पहले नकोदर में ही मैट्रिक पास करने के बाद सर्विस में लगवा दिया। चूंकि बा० राधाराम जी एक प्रसिद्ध आर्य समाजी म० हंसराज जी के बायें हाथ थे। और वह साईंदास ए० एस० हाई स्कूल के कर्ता धर्ताओं में से थे। इस लिए उन्होंने मास्टर नन्दलाल जी को सम्मति दी कि वह अपने ही इस स्कूल के लिए अपनी सेवाएं भेंट कर दें, जहां से मैट्रिक परीक्षा पास की थी। वह स्कूल १८८६ में खुलने के बाद अभी तक गम्भीर परिस्थिति से गुजर रहा था। उन की सम्मति को मानकर आप १९०० के अन्त में साईंदास स्कूल की सेवा करने को शामिल हो गये। वहां एक अध्यापक के रूप में ही केवल १९२२ तक अनथक रूप से कार्य नहीं किया वरन अपने इस स्कूल को तन मन धन से उन्नत करने में आपका बड़ा हाथ है। चूंकि स्वर्गीय तपोमूर्ति पण्डित मेहरचन्द जी भी स्कूल में मा० नन्दलाल जी के शामिल होने के तीन वर्ष बाद १९०३ में फिरोजपुर से आकर स्कूल के हैडमास्टर बने। पण्डित जी का स्वास्थ्य क्योंकि अधिक काम करने की आज्ञा नहीं देता था। इसलिए उन्होंने स्कूल का सारा बोझ मास्टर नन्दलाल जी के कन्धों पर ही डाला हुआ था। जब पण्डित मेहरचन्द जी १९११ में तपेदिक के रोग से रोगी हो गए तो डाक्टरों ने आप को विश्राम करने का परामर्श दिया कि आप सोलन में स्वास्थ्य लाभ के लिए चले जाय। पण्डित जी ने वहां जाते समय मास्टर नन्दलाल जी का स्टेशन के प्रतीक्षा भवन में हाथ पकड़ कर स्कूल की देखभाल व उन्नति का वचन लिया। यह ऐसा ही हुआ। स्वास्थ्य सुधरने पर जब श्री पण्डित मेहरचन्द जी वापस आये तो स्कूल की हर बात में दुगनी प्रगति देखकर अचम्भे में रह गये। स्कूल में मास्टर जी का विशेष प्रभाव था। हिसाब किताब तथा प्रबन्ध कार्य आपके ही सुपुर्द होता था। वहां कार्य करते हुए ही आपने ट्रेनिंग कालेज लाहौर से जे.ए.वी. परीक्षा पास की। शिक्षा विभाग में आपका बड़ा मान था। शिक्षाधिकारी डिविजनल इंस्पैक्टर या ज़िला इन्सपैक्टरों ने जब कोई शिक्षा की नवीन विधि जारी करनी होती थी तो आप से इस विषय मे अवश्य सम्मति लेते थे। आपके शिष्य सरकारी ऊंचे स्थानों पर काम करते थे। सारे आपका बड़ा मान करते। जब १९१८ में यहां जालन्धर में डी. ए. वी. कालेज खुला और श्री पं० मेहरचन्द जी उसके प्रिंसिपल नियत हो गए—तब तो साईंदास स्कूल का प्रायः सारा उत्तरदायित्व आपके ही कन्धों पर आ गया। अपनी आयु का सर्वोत्तम भाग अर्थात् २२ वर्ष तक जवानी की आयु में स्कूल की सेवा करने के बाद आपने १९२२ में स्कूल से विदाई लेकर बढ़ते हुए परिवार के व्यय को देखकर कार्य व्यापार में प्रविष्ट हो गए। तब अटक आयल कम्पनी फिर बर्मा आयल के और फिर बर्मा-शैल-आयल कम्पनी में कार्य में आ गए। निरन्तर ४१ वर्ष तक इस कार्य में बड़ा नाम प्राप्त किया।

आर्यसमाज—साईंदास स्कूल में पढ़ने और पढ़ाने के कारण आपके जीवन में आर्यसमाज के लिए विशेष स्थान था। ऋषि दयानन्द एवं वेदों की शिक्षा के लिए आपके मन में अटूट श्रद्धा थी। स्कूल काल में ही आप अपने साथ कई अध्यापकों को लेकर पास के ग्रामों में प्रति शनिवार को आर्यसमाज के प्रचार के लिए चले जाते। अनेक ग्रामों में समाज का प्रचार करके सोमवार को स्कूल में समय पर पहुंचते। आपने जीवन के प्रभाव से अपने हजारों लोगों को जो कि पौराणिक थे, आर्यसमाजी बना दिया। व्यापार के कार्य में रहते हुए भी आपने शिक्षा तथा धार्मिक कामों में बढ़-चढ़ भाग लिया। आप आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, डी. ए. वी. कालेज मैनेजिंग कमेटी के लगातार चालीस वर्ष तक अधिकारी तथा सदस्य रहे। शिक्षा व धार्मिक कामों में महात्मा हंसराज जी, ला० साईंदासजी, प्रिंसिपल दीवानचन्द जी, बख्शी टेकचन्द जी, बख्शी रामरतन जी, पं० मेहरचन्द जी, ला० देवीचन्द जी, महात्मा आनन्द स्वामी जी, बाबा गुरमुखसिंह जी आदि महानुभावों के साथ रहे।

शिक्षा का कार्य—पंजाब के विभाजन के बाद १९४७ में लाहौर के पाकिस्तान में चले जाने पर आर्यसमाज के शैक्षणिक तथा धार्मिक कामों को बड़ा धक्का लगा। क्योंकि दयानन्द कालेज कमेटी का दफ्तर जालन्धर में खोलने का निर्णय हुआ तो स्वर्गीय ला. मेहरचन्द जी प्रिंसिपल प्रधान तथा मास्टर नन्दलाल जी उप-प्रधान, श्री भीमसेन जी एडवोकेट महामन्त्री चुने गए। इस प्रकार दयानन्द कालेज कमेटी के अन्दर तमाम संस्थाओं का काम उसी प्रकार उत्तम रीति से चलता रहा। आप १९४७ से लेकर १९५६ तक दयानन्द कालेज कमेटी के निरन्तर उप-प्रधान और फिर प्रधान रहे। जब तक कालेज कमेटी का कार्यालय देहली न चला गया। श्री डा० मेहरचन्द जी महाजन चीफ जस्टिस भारत सर्वोच्च न्यायालय के प्रधान के रूप में आप से चार्ज लिया।

(अपूर्ण)

क

(

मार्ग नई देहल।

आर्य समाज (अनारकली

मन्दिर मार्ग नई देहली की निर्वाचन समिति की बैठक रविवार दिनांक १२-१२-१९६५, को प्रात ११ बजे साप्ताहिक सत्संग के पश्चात आर्यसमाज भवन में डी० ए० वी० कालिज प्रबन्धकर्त्री समिति पर वर्ष १९६६, १९६७ तथा १९६८ के लिए २६ सदस्य निर्वाचित करने के लिए होगी। आप से सविनय प्रार्थना है कि आप इस समिति के सदस्य होने के नाते सम्मिलित होने की कृपा करें।

धन्यवाद !

यदि इस से पूर्व ३ रु० सोसायटी का वार्षिक चन्दा नहीं भेजा तो कृपया यह धन राशि बैठक से पूर्व मन्त्री डी० ए० वी० कालिज प्रबन्धकर्त्री, समिति नई देहली को भेज दें ताकि आप निर्वाचन में मतदान के अधिकारी बन सकें।

प्रधान जी की आज्ञानुसार

सोमनाथ गुप्त

आर्यसमाज मन्दिर मार्ग नई देहली

आर्यसमाज होशियारपुर का समारोह

आर्य समाज होशियारपुर का वार्षिक महोत्सव ता. १९-२०-२१ नवम्बर को बहुत समारोह से हो गया। वहां के वीरपुरुष निमय श्री. चौधरी बलवीर सिंह जी, श्री. प्रधान प्रिंसिपल बैजनाथ जी, प० लभूराम जी, प्रि. सत्यप्रकाश जी सालिक, मन्त्री राजेन्द्र जी आदि सारे ही सज्जनों तथा माताओं के श्रद्धा भरे उत्साह से जल्से में बड़ी ही रौनक थी। नगर कीर्तन में तो धारीवाल, पट्टी, दौलतपुर, होशियारपुर, अच्छपुर आदि कितने ही डी.ए.वी. स्कूलों के छात्र व बैंड शामिल थे।

यें प्रादेशिक ... चन्द्रजी शास्त्री ... जी की कथा व ... त्सव में आचाय ... ल कांगड़ी, श्री प. सत्यद० ... विद्यालंकार मन्त्री आर्य प्रादेशिक सभा, प० ओ३म् प्रकाश जी महोपदेशक, प. जगदीश चन्द जी शास्त्री महोपदेशक, प. राजपाल मदनमोहन मंडली, पं. हजारीलालजी, श्री दयानन्द एम.ए. आदि पधारे। कविदरबार भी खूब था। श्री. पं. हरकृष्ण लाल जी, मुकेरियां दसूहा भी आये।

जलसा बहुत ही धूमधाम से हुआ। स्कूल व पाठशाला के बच्चों ने भी कमाल कर दिया। बड़ी रौनक थी। श्री चौधरी ... सारे सज्जनों को ... हैं।

आर्यसमाज ... का ५०वां वार्षिकोत्सव

३-४-५ दिसम्बर को बड़ी धूमधाम से सम्पन्न हुआ २९ नवम्बर से २ दिसम्बर तक प्रतिदिन प्रातः ७॥ से ८॥ बजे तक श्री प० खुशीराम जी वेद प्रचार अधिष्ठाता सभा की वेद कथा होती रही कथा से पूर्व आध घंटा भजनोपदेश श्री बस्तीराम सत्यपाल जी के होते रहे। ३ दिसम्बर शुक्रवार को २॥ बजे दोपहर नगर कीर्तन स्कूल से आरम्भ हुआ जो कि लगभग १ मील लम्बा था। उत्सव पर श्री ज्ञानचन्द्र जी आचार्य हिसार, प्रो० वेदराम जी शर्मा एम० ए० डी० ए० वी० कालिज, पं० त्रिलोकचन्द्र जी शास्त्री बी० ए०, पं० ओमप्रकाश जी महोपदेशक सभा, श्री प० खुशीराम जी वेद प्रचार अधिष्ठाता—तथा सभा की भजन मण्डलियां पधार कर उत्सव को सब प्रकार से सफल बनाया।

महात्मा आनन्द स्वामी जी की कथा

श्री ला० इन्द्रसेन जी के परिवार में

आर्यसमाज के स्वर्गीय नेता मान्य मास्टर नन्दलाल जी का पुण्य स्मृति में श्री ला० इन्द्रसेन जी उप-प्रधान आर्य प्रादेशिक सभा के परिवार में उनके घर पर ता० ६ दिसम्बर से १२ दिसम्बर रविवार तक पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज की अध्यक्षता में बड़ा यज्ञ हो रहा है। रात को ८॥ बजे से ६॥ बजे तक महात्मा जी की सुधारस से भरी कथा सम्पन्न हो रही है। इस पुण्य अवसर पर सब भाई बहिनें पधार कर कृतार्थ करें तथा जीवन लाभ उठावें।

प्रिंसीपल सूद जी, श्री जगदीश सहाय जी तथा स्कूल के अन्य अध्यापक वर्ग का पूर्ण रूप सहयोग प्राप्त होता रहा। सारा समाज का भार स्कूल के प्रिंसीपल महोदय तथा अध्यापक वर्ग ने ही वहन किया। १०१/ वेद प्रचार तथा १०/- दशांश समाज की ओर सभा ... प्राप्त हुआ। मार्ग व्यय तथा ... आर्यजगत को इस से पृथक ... हुआ।

पुस्तक समीक्षा

वेद वाणी (मासिक पत्रिका)

अध्यक्ष—श्री रामलाल कपूर ट्रस्ट (अमृतसर)

सम्पादक—श्री पं० युधिष्ठिर मीमांसक।

पृष्ठ संख्या ६००, वार्षिक मूल्य ५/- इस अंक का १/-

वेद वाणी मासिक का १४ वें वर्ष का प्रथम अंक जो कि 'अग्निहोत्रांक' नाम से प्रकाशित हुआ है। हमारे सामने है।

इस अंक की विषय सूची से ही इसकी उपयोगिता प्रकट हो रही है।

सभी विषय अग्निहोत्र से सम्बन्धित होते हुए उनके लेखकों का अपार परिश्रम प्रकट कर रहे हैं। अंक क्या है? अग्निहोत्र की पूर्ण सामग्री गागर में सागर भर-कर रख दी है। लेखक भी आर्य जगत के लब्ध प्रतिष्ठित विद्वान ही चुने हैं। अग्निहोत्र पर श्री सम्पादक युधिष्ठिर मीमांसक जी का लेख तो सोने में सुहागे का काम कर रहा है।

ऐसी पत्रिका का सम्पादन करके आर्यजगत की बहुत कुछ आवश्यकताओं को पूरा किया गया है। हम सभी आर्य संस्थाओं समाजों वा लायब्रेरियों को इसका ग्राहक बनने की प्रेरणा करते हैं।

प्राप्ति स्थान :—वेद वाणी (मासिक) अजमतगढ़ पैलेस वाराणसी—६(यू०पी०)

आर्ष कन्या गुरुकुल नरेला (देहली)

वार्षिकोत्सव ११,१२ दिसम्बर ६५ को समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर उच्च कोटि के आर्य संन्यासी महात्मा तथा देवियां पधार रही हैं।

यजुर्वेद पारायण-महायज्ञ होगा जिसकी पूर्णाहुति १२ दिसम्बर को [illegible] की अवस्था अनुसार घृत सामग्री आदि प्रदान कर पुण्य के भागी बनें। इस अवसर पर स्नातिकाओं का दीक्षान्त तथा नवीन कन्याओं का प्रवेश भी होगा।

आप अपना विचार आप आने का स्वयं कष्ट करें।

—चन्द्रकला आर्या स्नातिका

सुशीला आर्या एम. ए.

आचार्या

मुद्रक व प्रकाशक श्री रत्तोराम जी आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर द्वारा वीर मिलाप प्रेस, मिलाप रोड जालन्धर से मुद्रित तथा आर्य जगत् कार्यालय महात्मा हंसराज भवन निकट कचहरी जालन्धर शहर से प्रकाशित मासिक—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर



टैलीफोन नं० ३०५७ [आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधिसभा पंजाब जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd. No. P. 12

एक प्रति का मूल्य १३ नये पैसे — वार्षिक मूल्य ६ रुपये

वर्ष २५ अंक ५२) १२ पौष २०२२ रविवार—दयानन्दाब्द १४१— २६ दिसम्बर १९६५ (..र 'प्रादेशिक' जालन्धर

वेद सूक्तय:

न क्येवं यथात्वम्

हे परमेश ! जैसे आप हैं, ऐसा कोई नहीं। आप अनुपम अद्वितीय हैं। आप के समान सर्वशक्तिमान, अनन्त, अनुपम, सर्वज्ञ, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वान्तर्यामी, महान और कौन हो सकता है। आप के समान दूसरा कोई नहीं है। आप महान हो, श्रेष्ठ हो।

समानमुप्रशंसिषम्

प्रभो ! आप सब के प्रति समानता रखते हैं पक्षपात से शून्य हैं। जैसा कोई कर्म करता है, उसी के अनुसार उसे फल प्रदान करते हो। आपकी मैं सदा स्तुति प्रशंसा करता हूँ। आप पिता हैं, आपके लिए सारी प्रजा समान है। कर्म के अनुसार आपका प्रसाद होता है।

असृग्रमिन्द्र ते गिर:

हे इन्द्र ! मेरे सारे ये शब्द वचन, वाणियां, उद्गार, भजन स्तोत्र, भक्तिभाव आपके लिए ही हैं। मैं आपके सिवाय स्तवन के गीत गाऊं भी किस के ? मैं तो यही चाहता हूं कि मेरा शब्द शब्द आपके स्तुतिरस से भरा रहे। मैं आपका स्तोता गायक बना रहूं। सामवेद से

हथियार का जवाब हथियार से, सेना का जवाब सेना से

हम शान्ति चाहते हैं पर सहन शक्ति की भी एक सीमा होनी है

भारत के पास आधुनिक अस्त्र चाहे नहीं हमारे जवानों में अदम्य साहस है.

हम पाक इरादे करने में विफल हैं : शास्त्री

प्रधान मन्त्री श्री लालबहादुर शास्त्री ने आज प्रात: यहां घोषणा की कि भारत यद्यपि युद्ध में विश्वास नहीं रखता फिर भी वह चीन और पाकिस्तान की ओर से किए गए आक्रमण के मुकाबले में ताकत का जवाब ताकत से देगा।

उन्होंने कहा कि हमारा लक्ष्य अपनी अर्थ व्यवस्था का विकास करना है किन्तु दुर्भाग्यवश हमारे दो पड़ौसी हमारी उन्नति पर ईर्षा करते हैं। वे हमारा ध्यान इस विकास की ओर से हटाना चाहते हैं। वे चाहते हैं कि हम विकास की जगह प्रतिरक्षा पर अधिक ध्यान करें ताकि हमारी अर्थव्यवस्था का विकास रुक जाए। पाकिस्तान और चीन के दो गुण खतरे के दृष्टिगत हमारा सर्वप्रथम कर्तव्य अपनी प्रादेशिक अखंडता को सुरक्षित करना है। उन्होंने कहा जहां चीन विस्तारवादी है और एशिया तथा अफ्रीका पर अपना प्रभुत्व जमाना चाहता है, वहां पाकिस्तान जम्मू काश्मीर प्रदेश को बल पूर्वक अपने साथ मिलाना चाहता है। चीन और पाकिस्तानी की आक्रामक कार्यवाइयों के दृष्टिगत हमारी नीति स्पष्ट है। हम ताकत का जवाब ताकत से देंगे। भारत न तो युद्ध में विश्वास करता है और न ही उसे बढ़ाना चाहता है किंतु आक्रमण किए जाने पर हमारे पास जवाबी कार्यवाई करने के सिवा और कोई चारा नहीं होगा।

एक महान देश हमारा एक महान राष्ट्र

हिन्दुस्तान को अपने विद्यार्थियों पर गर्व है। देश जिस संकट से गुजर रहा है, वे उसे समझते हैं और अपना फर्ज अदा करने में वे किसी से पीछे नहीं हैं। नेशनल कैडेट कोर में भर्ती होकर, अपना खून देकर, नागरिक सुरक्षा में हाथ बटा कर और चन्दा इकट्ठा करने में उन्होंने बड़ा काम किया है। लेकिन इन सब के बावजूद उन्होंने अपनी पढ़ाई में ढील नहीं दी क्योंकि वे जानते हैं कि अपनी पढ़ाई पूरी करके वे देश के और अधिक काम आ सकेंगे। हमारे विद्यार्थी देश की सेवा में जुटे हुए है। सोचिये ! आप देश के लिए क्या कर रहे हैं ?

अधिष्ठाता—श्री संतोषराज जी

राष्ट्र-भक्ति और प्रभु-भक्ति-५

(श्री महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज की अमृतभरी कथा)

(गतांक से आगे)

यदि अंगीठी में पड़े दहकते कोयलों में से एक के मन में आ जाए कि मैं यहां क्यों रहूँ और वह उछल कर अंगीठी से परे आ गिरे तो आप जानते ही हैं। कि कुछ क्षण के लिए तो वह कोयला पहले की तरह जलता हुआ लाल सुर्ख रहेगा लेकिन धीरे-धीरे काला पड़ जाएगा। सत्संग की भट्ठी में पड़ कर ही लाली प्रतीत होती है। सत्संग से निकलने पर ठीक उसी कोयले की तरह रंग काला पड़ने लगता है जो जलती हुई अंगीठी से बाहिर आ गिरता है और एसा काला पड़ता है कि जन्म जन्मान्तर तक नर्क में रहना पड़ता है। आप कहेंगे कि आर्यसमाज की वेदी पर बैठकर आनन्द स्वामी नर्क स्वर्ग की बातें कर रहा है। अरे भाई नर्क यहीं है। अस्पतालों में जाकर देखा, किसी का पेट चीरा जा रहा है, किसी के मुंह से पीप निकल रही है। यह सब नर्क नहीं तो और क्या है।

विचार बड़ी शक्ति है। विचार बनाने के लिए साधना की जरूरत है। विचार अच्छा तो शरीर अच्छा, शरीर अच्छा तो मन अच्छा, मन अच्छा तो बुद्धि अच्छी, बुद्धि अच्छी तो मुहल्ला, गांव, नगर, प्रांत, देश सभी अच्छा। एक घटना सुनाता हूं। पाकिस्तान तब नहीं बना था। सरगोधा के पास एक सज्जन रहते थे। उन्होंने अपनी लड़की की सगाई कर दी। लड़की की सहेलियां सगाई के मामले को लेकर नित्य उससे मजाक करने लगीं। एक दिन इसी तरह मजाक चल रहा था तो सड़क पर से रूई की गांठों से लदे कुछ ऊंट गुजरे। उक्त लड़की ने अपनी एक सहेली से कहा कि इतनी रूई न जाने किधर जा रही है और सहेली ने मजाक में ही कहा—सुमित्रा? वह रूई की गांठें तुम्हारे श्वसुर ने मंगवाई हैं। जब तुम ब्याह के बाद सुसराल जाओगी तो यह सारी रूई तुम्हें ही कातनी होगी। बस फिर क्या था, सुमित्रा को बुखार चढ़ गया। बड़ा इलाज किया गया लेकिन बुखार ऐसा था कि उतरता ही नहीं था। ब्याह की की तारीख नजदीक आ रही थी, लड़की की हालत दिन प्रतिदिन खराब हो रही थी। पिता बहुत परेशान थे। डाक्टर, वैद्य हकीम सभी हार मान चुके थे। आखिर किसी के बताने पर एक हकीम को बुलाया गया। उसने आते ही यह पूछा कि लड़की को बुखार कब और किन हालात में चढ़ा। सौभाग्य से तब वही सहेली वहां मौजूद थी। उसने बताया कि रूई की गांठें जा रही थीं और मैंने सुमित्रा से कहा कि यह सारी की सारी रूई तुम्हें सुसराल जाकर कातनी होगी और इस के बाद इसे बुखार चढ़ने लगा। हकीम जी की बात समझ में आ गई और उन्होंने सुमित्रा की सहेली के सहयोग से एक स्कीम बनाई और उस स्कीम के अनुसार ही एक दिन सायंकाल हकीम जी ने बहुत से रद्दी कपड़ों का एक ढेर सुमित्रा के घर से दूर खेतों में जमा किया और उन में आग लगा दी। सुमित्रा की सहेली तब सुमित्रा को साथ लिए मकान की छत पर थी। सुमित्रा ने आग की लपटों को देखते हुए पूछा—री सखी! यह आग कैसी है? सहेली ने जवाब दिया—सुमित्रा! तुम्हारे श्वसुर ने ऊंटों पर जो रूई की गांठें मंगवाई थीं उन्हें उसने जला दिया है। अब वह रूई तुम्हें कातनी नहीं पड़ेगी। इस घटना से सुमित्रा के मन में जो इतनी ज्यादा रूई कातने का भयपूर्ण विचार बठा था वह निकल गया और वह धीरे धीरे स्वस्थ हो गई।

इसी तरह एक पादरीकी कहानी है। बूढ़े पादरी ने नकली दांत लगवा रखे थे। वह हर रोज रात को सोने से पूर्व अपने दांतों को निकाल कर गिलास या कटोरी में रख छोड़ता था। एक दिन वह प्रातः उठा तो उसके पेट में हल्की पीड़ा थी। उसने गिलास और कटोरी को देखा, वहां दांत नहीं थे। बहुत घबराया। पेट की पीड़ा की ओर ध्यान गया। पत्नी से पूछा नौकर से पूछा, किसी से दांतों का पता न चला। अचानक उसके मन में विचार आया कि रात को सोने से पूर्व मैं दांत उतारने भूल गयी और सोते समय दांत किसी तरह मेरे पेट में चले गए और अन्दर अब मेरा आंतों को काट रहे हैं। कुछ क्षणों में ही यह विचार प्रबल हो गया और पेट की पीड़ा भी बढ़ गई। गांव के डाक्टर को बुलाया गया। उसने कहा कि यदि दांत पेट के अन्दर चले गए हैं तो शहर के बड़े अस्पताल में आप्रेशन करवाना पड़ेगा। गांव में तो आप्रेशन का कोई प्रबन्ध नहीं। पादरी की पत्नि पादरी से ज्यादा परेशान थी। पेट की पीड़ा तेजी से बढ़ रही थी। आखिर शहर से एम्बुलैंस मंगवाकर पादरी साहब को बड़े अस्पताल में पहुंचाया गया। वहां डाक्टरों ने देखा, निरीक्षण किया। बड़े डाक्टर ने कहा—"पादरी साहब! ये बत्तीस के बत्तीस दांत कैसे अन्दर जा सकते हैं।" पादरन ने कहा—आप बातें बना रहे हैं। मेरी जान निकल रही है।" पादरी के जिद् करने पर और पेट दर्द की कोई दवा कारगर सिद्ध न होने पर आप्रेशन का फैसला किया गया। पादरी को स्ट्रेचर पर लिटा कर आप्रेशन थियेटर में पहुंचा दिया गया। चीर फाड़ की तैयारी पूर्ण हो गई। जब पेट काटा ही जाने लगा था तो पादरी की पत्नी की तार आ गई—'दांतों को बिल्ली उठा कर ले गई थी। वे पिछले कमरे पड़े हुए मिले हैं।' पादरी ने तार पढ़ी और कहने लगा—'मेरे पेट में पीड़ा कम हो गई है।

इसलिए विचार को बदलने की आवश्यकता है। पूना में महर्षि दयानन्द ने व्याख्यान देते हुए कहा था कि मैं वेद की सहायता से विमान बना सकता हूं लेकिन मेरी दृष्टि में विमान एक तुच्छ वस्तु है। मैं तो वेद की सहायता से दुनिया की विचार धारा को बदलना चाहता हूं।

सुख और दुःख एक ही चीज के दो नाम हैं! पुत्र, पत्नी, भाई—ये सुख और दुःख दोनों देते हैं। इन्द्रियों को नियन्त्रण में रखने का नाम सुख है और बुरे विचार रखने से दुःख आते हैं। लेकिन हमारे दार्शनिक लोग तो कहते हैं कि सब दुःख ही दुःख है। वास्तव में हर चीज सुख भी देती है और दुःख भी। गर्म कोट सर्दियों में सुख देता है। गर्मियों में ठंड अच्छी लगती है लेकिन सर्दियों में सर्दी दुःखी करती है।

संस्कृत में जगत् शब्द के अर्थ हैं—जो निरन्तर बदलता है, परिवर्तनशील है। हमारा जीवन भी परिवर्तनशील है। कभी हम नन्हें-मुन्ने थे। मां का दूध हमारे लिए अमृत था। कुछ बड़े हुए। स्कूल में गए तो पुस्तकें ही सब कुछ हो गईं। और बड़े हुए—शादी हो गई, बच्चे हो गए और हम अपने मां, भाई, बहिन सब को भूल गए। लड़कियों को दामाद ले गए, लड़कों को बहुएं। और बूढ़ा, बुढ़िया ठन-ठन गोपाल रह जाते हैं। अंत में बुढ़ापे में हिला नहीं जाता लाठी से भी चल नहीं पाते और एक दिन काम खत्म हो जाता है। यह संसार परिवर्तनशील है। (क्रमशः)

सम्पादकीय—

आर्य जगत्

वर्ष २५] रविवार २०२२, २६ दिसम्बर १९६५ [अंक ५२

अश्व-मेध यज्ञ

वेद में नाना प्रकार के यज्ञों का विधान आता है। उनमें अश्व-मेध यज्ञ भी आता है। वैदिक साहित्य में अश्व राष्ट्र के अर्थ में भी आया है। अश्वो वै राष्ट्रम् या राष्ट्रं व अश्वः—ऐसा भी कहा जाता है। जिस समय देश की सारी जनता राष्ट्र के हितों को ले कर उसे समुन्नत करने के लिए अपने तन-मन-धन का राष्ट्र के लिए दान कर देती है। राष्ट्र के जीवनाकाश पर समय-समय पर छा जाने वाले संकट के काले वातावरण को दूर करने के निमित्त अपनी प्यारी से प्यारी वस्तु का समर्पण कर देती है उसे राष्ट्रमेध यज्ञ का नाम दिया जाता है। सारा जन-जीवन अपने को विशाल राष्ट्र रूपी विराट् शरीर का एक अंग मानता है। देश के जीवन में अपना जीवन जानता है उस समय सारे राष्ट्र में नवीन चेतना की लहर दौड़ने लगती है। भारतीय परम्परा में राष्ट्रीय जीवन के लिए अपना सर्वस्व प्रदान करने वाले देशभक्तों की कमी नहीं। भारत भूमि को सारे समाज ने माता के समान मान कर वन्दना की है। मातृपूजा का आर्य सभ्यता में बड़ा महत्व है।

आज फिर वह समय आया है जब कि भारत का प्रत्येक नर-नारी अश्वमेध-यज्ञ के महत्व को समझे! इस समय हमारे देश को दो अन्यायी शत्रुओं का सामना करना है। जनताने अपनी आंखोंसे भारी विषम संकटको देख लिया है। भारतीयों ने अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए एकता के सूत्र में पिरोये जा कर जो शानदार काम किया है, उसका इतिहास अमर हो गया है। इस समय राष्ट्र के नेता हम से दो बातें चाहते हैं—एक अन्न का उत्पादन तथा खपत में बचत तथा दूसरी बात यह कि परिवारों में पड़े बेकार स्वर्ण को स्वर्ण बांड में लगा देना। आज हमारे राष्ट्रीय नेताओं को स्वर्ण की बड़ी आवश्यकता है। पता नहीं भारत के लोगों को सोने के साथ इतना प्यार और मोह क्यों है? जब राष्ट्र को इसकी आवश्यकता हो तब स्वर्ण में भूमि में गाड़ देना या अन्य प्रकार से इसे छिपा लेना कितना बड़ा राष्ट्रीय पाप है। ऐसे लोग राष्ट्र-भक्त नहीं हैं—कोरे स्वार्थी हैं जो इस विषम समय में भी स्वर्ण के ढेरों को छिपा कर रखना चाहते हैं। विश्व के किसी भी देश में सोने के साथ इतना व्यामोह नहीं जितना भारत में है। इसी स्वर्ण-मोह ने हमारी यह अवस्था कराई है। आज देश में अर्ब रुपयों का स्वर्ण है—पर राष्ट्र के लिए कितना देने वाले हैं। मन्दिर स्वर्ण से भरे पड़े हैं, परिवारों में सोने के आभूषणों की कमी नहीं। भूमि में गड़ा हुआ है—यह सारा सोना किस काम का? हम तो चाहते हैं कि स्वर्ण राष्ट्र की सम्पत्ति मानी जाये। शांति के वातावरण में भारत सरकार ऐसा कोई सम्मत नियम बनाये जिस से भारत में जनता का सोने से मोह हट जाये तथा स्वर्ण देश की सम्पत्ति बन जावे। इस प्रकार सारे देश की जनता का कर्तव्य है कि वह स्वर्ण को नेताओं के अर्पण करके देश-भक्ति का परिचय देवे। आज का यह अश्वमेध-यज्ञ है। राष्ट्र के लिए सर्वस्व भेंट कर देवें।

—त्रिलोक चन्द्र

धन का यह उपयोग

हिन्दुसमाज में कुछ ऐसी परम्पराएं हैं या नई बनती जा रही हैं—जिनको देखकर बड़ा ही दुःख होता है। ऐसा प्रतीत है कि उन लोगों को न देश जाति की अवस्था का ध्यान है और न ही वर्तमान संकट का ही। ववाहों के समारोहों पर उसी प्रकार से एक रात के दिखावे के लिए अथवा अपनी सम्पन्नता की वाह-वाह प्राप्त करने के लिए क्या कुछ किया जाता है। बिजली का कितना बड़ा संकट सामने है। परन्तु विवाहों पर घरों की बिजली द्वारा सजावट में किसी प्रकार की भी न्यूनता नहीं आई। धन का नशा मानव की आंखें सब ओर से बन्द कर देता है। इसी प्रकार आज इस अन्न के महान् संकट में हमारा भारत गुजर रहा है। अमेरिका व अन्य देशों से अर्बों रुपए व्यय करके अनाज मांगा जा रहा है। देश के मान्य नेता खपत में बचत की अपीलें कर रहे हैं। सोमवार का एक समय का उपवास रखने का सन्देश दिया जा रहा है। किन्तु विवाहों के समारोहों या बारातों की दिखावट पर किसी को भी ध्यान नहीं आता। सब के कान बहरे हो रहे हैं। आज भी सौ-सौ की संख्या में बराती चलते हैं। अन्न का कितना अपव्यय होता है यह आंखों से देख कर परिचय मिलता है कि यदि भगवान् ने धन दिया है तो उस का ऐसा प्रयोग क्यों करते हो। उसी प्रकार से आतिशबाजी पर बेकार पैसा फूंका जा रहा है। उनके सामने राष्ट्र की वर्तमान अवस्था का या विषम-संकट का कोई विचार नहीं है। ऐसे लोग तो अपने धन के भूले में भूल रहे हैं। उन पर किसी का भी अंकुश नहीं है। किस को क्या कहा जाये।

यदि देश की जनता अब न सम्भली तो फिर कब सम्भलेगी। हिन्दू समाज जितना दिखावा विवाहों के समारोहों पर करता है, जितना बेकार धन इन अवसरों पर करता है, यदि धर्म व देश के कामों में उतना लगा दिया जाए तो राष्ट्र का कितना कल्याण हो जाए। आतिशबाजी, बिजली के दिखावे या लम्बी-चौड़ी बारात की चहल-पहल पर तो इतने लम्बे व्यय के लिए खुला दिल है किन्तु धर्म व राष्ट्रसेवा के लिए पैसा भी नहीं निकलता। इस हमाम में सारे एक समान हैं। कुछ भी सुधार नहीं हुआ। क्या कभी ऐसा भी युग आएगा या ऐसे भी निकलेंगे जिन की बरात में पांच से अधिक बराती नहीं होंगे। बाहर का सारा प्रपंच बन्द हो जायेगा।

—संपादक

❀ अमूल्य वचन ❀

★ लाभ क्या है? गुणियों की संगति। दुःख क्या है? मूर्खों का साथ। हानि क्या है? समय पर चूकना। निपुणता क्या है? धर्म में प्रेम होना। शूर कौन है? जिसने इन्द्रियों को वश में किया है। स्त्री कौन उत्तम है? जो अनुकूल हो। धन क्या है? विद्या! सुख क्या है? परवश न होना। और राज क्या है। अपनी इच्छानुसार रहना।

प्रथम किस्त

आध्यात्मिक चर्चा

ले० श्री परमानन्द जी विद्यार्थी रोहतक

आओ ! हम वैदिक सन्ध्या सागर में डुबकी लगाएं, ताकि अमूल्य रत्न प्राप्त करें।

भगवान दयानन्द जी महाराज ने हजारों वर्षों से पिसती हुई मानव जाति के कल्याणार्थ परम पिता परमात्मा के पवित्र अमृतमयी 'वेद वाणी' के आधार पर 'सन्ध्या' की पुस्तक बनाई। जिसे आर्य हिन्दू, सिख, मुस्लिम, ईसाई, यहूदी, पारसी तथा बौद्ध जैनमत आदि अवलम्बी मनुष्यों के लिये आवश्यक करनी ठहराई। यद्यपि अनार्य मतमतान्तरों ने अपने-अपने ढंग की पूजा-पाठ पद्धतियां प्रचलित कर रखी हैं। परन्तु उन में जड़ पूजा, पत्थर पूजा, पुस्तक पूजा, मनुष्य (गुरु) पूजा, कबर पूजा तथा भ्रम पूजा के अतिरिक्त और कुछ नहीं। यदि किसी मत में ईश्वर का नाम लिया भी जाता है, तो उस में उन के गुरु, पीर-पैगम्बर का नाम 'परमात्मा' से ऊंचा है, बड़ा है तथा पहले है। इस प्रकार इन लोगों की पूजा की परिपाटी सर्वथा अन्धकार में ले जाने वाली, जीवन को, कोल्हू के बैल के समान फिराने वाली तथा ईश्वर से विमुख करने वाली है। लेखक ने एक विद्यार्थी के नाते बड़े प्रेम श्रद्धा और भक्ति से देखभाल लिया है। अतः इन छोटे-छोटे तालाबों (जिस के अन्दर असंख्यात रोग कीटाणु हैं) को छोड़ कर हम सब को 'वैदिक सन्ध्यारूपी सागर में' गहरी डुबकी लगानी चाहिये। ताकि धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष प्राप्त करके मानव जीवन को सफलीभूत बनाए। महर्षिवर ने सन्ध्या की जो पद्धति रखी है, वह देखते ही बनती है। तनिक नीचे की तालिका पर ध्यान को केन्द्रित करें—

वैदिक सन्ध्या के मन्त्र

२० (बीस) हैं, इन में चार महर्षि वाक्य, शेष १६ वेद मन्त्र हैं।

मन्त्रों के नाम

आचमन (एक) इन्द्रिय स्पर्श (एक) मार्जन (एक) प्राणायाम (एक) सृष्टि रचना मन्त्र (तीन) मनसा परिक्रमा मन्त्र (छः) उपस्थान मन्त्र (चार) गायत्री मन्त्र (एक) समर्पण (एक) नमस्कार मन्त्र (एक)।

मन्त्रों की विशेषताएं गुण, कर्म तथा स्वभाव से

(क) आचमन से प्राणायाम मन्त्र तक 'शारीरिक उन्नति' अर्थ जानकारी।

(ख) अघमर्षण या सृष्टि रचना मन्त्र से (ब्रह्मांड की उत्पत्ति' की जानकारी।

(ग) मनसा परिक्रमा से 'सामाजिक उन्नति' का ज्ञान प्राप्त होता है।

(घ) उपस्थान से नमस्कार मन्त्र तक 'परम पिता परमात्मा का मिलन होता है।

ज्ञान, कर्म तथा उपासना के आधार पर

(क) आचमन से प्राणायाम तक परमात्मा तथा शरीर का बोध प्राप्त करना चाहिए।

(ख) सृष्टि रचना (अघमर्षण) तक भी संसार की उत्पत्ति का ज्ञान प्राप्त करना चाहिये, ताकि आत्मा कर्म करने में रुचि पकड़े।

(ग) मनसा परिक्रमा मन्त्रों पर आत्मा निष्काम कर्म करने पर उद्यत हो जाता है।

(घ) उपस्थान मन्त्रों से लेकर नमस्कार मन्त्र तक आत्मा को परमात्मा की समीपता प्राप्त होने पर उसी की उपासना में जुट जाता है और कुछ नहीं चाहता।

मां का पावन प्यार चाहिये

(ले०—राम मूर्ति जी कालिया, एम. ए., ९०/७८, मालवीय नगर, नई दिल्ली—१७

नहीं 'बिहारी' के भूषण, पर 'भूषण' की ललकार चाहिये,
कुंवरी का शृंगार नहीं पर मां का पावन प्यार चाहिये।

क्यों कर अपना ओज सरसता
खो करके निर्लज्ज बने,
क्यों रसिकों की कुंठा यारो,
वसनहीन हो नग्न फिरे।

एक ओर तो यौवन ने है
नीरसता का वरण किया,
ले अंगड़ाई अरिदल से वह
रण क्षेत्र में जूझ पड़ा।

घर बैठी उन की बहनों को, रण ही की हुंकार चाहिए,
मादकता के गीत नहीं, रण चण्डी का सत्कार चाहिए।
नहीं 'बिहारी' के भूषण, पर 'भूषण' की ललकार चाहिये,
कुंवरी का शृंगार नहीं, पर मां का पावन प्यार चाहिये॥

क्यों कर भावुकता बेचारी,
बने विलासी ही की चेरी,
क्यों 'दुर्गा', 'पद्मा' और 'रानी'
लेवें मधु शाला की फेरी।

द्वार खड़ा शत्रु ललकारे,
क्यों रूप नशे में चूर रहो?
कल-कंठी, पिक-बैनी तुम अब
दूर रहो बस दूर रहो।

अब अश्लील विचार नहीं, पर जन-जन का तो मान चाहिए,
देश, काल औ परिस्थितियों का पूरा-पूरा ध्यान चाहिए॥
नहीं 'बिहारी' के भूषण, पर 'भूषण' की ललकार चाहिये,
कुंवरी का शृंगार नहीं, पर मां का पावन प्यार चाहिये।

धर्म, अर्थ, काम-मोक्ष के आधार पर

(क) आचमन से प्राणायाम तक 'वेद के धर्म' सम्बन्धी आस्तिकता बढ़ती है।

(ख) अघमर्षण मन्त्रों द्वारा 'धर्म के आधार पर ही' अर्थ संग्रह की प्रबल इच्छा पैदा होती है।

(ग) मनसा परिक्रमा मन्त्रों पर आकर भक्त धर्म के अनुकूल अपनी शारीरिक और मानसिक क्रियाएं करता है अर्थात् काम की वासना पूरी करता है।

(घ) उपस्थान मन्त्रों में अन्त तक के मन्त्रों के 'मोक्ष' की प्राप्ति अर्थात् 'प्रभु दर्शन' हो जाते हैं।

मनु स्मृति के धर्म के लक्षणों के अनुसार

आचमन मन्त्र (क्षमा को), इन्द्रिय स्पर्श (सत्यम् को), मार्जन (अस्तेयम् को), प्राणायाम (दमः को), अघमर्षण (अक्रोधः), मनसा परिक्रमा (शौचम् को), उपस्थान मन्त्र (इन्द्रिय निग्रहः को), गायत्री (धीः को), समर्पण (विद्या को), नमस्कार (धृतिः को)। (क्रमशः)

क्रांतिकारी स्वामी श्रद्धानन्द जी

जिनकी मृत्यु दिवस २३ दिसंबर को मनाया जा रहा है।

(श्री ज्ञान सिंह जी नई दिल्ली)

किसी लेखक ने लिखा है वीरों के बनाने के कारखाने स्थापित नहीं किये जा सकते। वह तो देवदार के वृक्षों की भांति जीवन के जंगल में स्वयं पैदा होते हैं और बिना किसी से पानी और दूध लिये तथा बिना किसी के स्पर्श से स्वतः तैयार होते हैं। दुनियां के मैदान में वह अचानक ही सामने आ कर खड़े हो जाते हैं। अब उनका सारा जीवन भीतर ही भीतर होता है। बाहर तो हीरों की खानों की ऊपर की धरती की तरह कुछ भी दृष्टिगोचर नहीं होता। यह उपर्युक्त विचार स्वामी श्रद्धानन्द जी पर लागू होते हैं।

स्वामी श्रद्धानन्द जी का भारत के नेताओं में एक मुख्य स्थान है। वह केवल आर्य समाज की ही नहीं बल्कि देश की महान विभूति थे। वह एक आदर्श समाज सुधारक, निर्भयता की मूर्ति, त्याग व तपस्या के अवतार थे। उन्होंने अपना सारा जीवन वैदिक धर्म के प्रचार, आर्य समाज, आर्य जाति व देश की सेवा के लिए अर्पित कर दिया था।

स्वामी जी का जन्म सन १८५६ में जिला जालन्धर के तलवन गांव में हुआ था। गांव के पंडित ने पौराणिक रीति के अनुसार जन्मपत्री के आधार पर उनका नाम बृहस्पति रखा। परन्तु यह नाम व्यवहार में नहीं आया। बृहस्पति शब्द का अर्थ होता है बड़ों का स्वामी। इस दृष्टि से उनका जन्म नाम सर्वथा उपयुक्त था। माता पिता ने इस बालक का नाम मुंशीराम रखा और सन्यास लेने तक इनका यही नाम रहा।

इनके पिता ला० नानकचन्द पुलिस विभाग में १८५७ के स्वतन्त्रता युद्ध के बाद उत्तर प्रदेश चले गए थे और बनारस, बरेली, मिर्जापुर, बलिया इत्यादि शहरों में कोतवाल रहे थे। मुन्शीराम की शिक्षा और युवावस्था इन्हीं नगरों में बीती। इलाहाबाद के सैंट्रेल म्योर कालेज में शिक्षा प्राप्त कर नास्तिक हो गए। इससे पहले उनका झुकाव ईसायत की ओर हो गया था।

स्वामी दयानन्द के दर्शन

मुन्शीराम और उनके पिता जब बरेली में थे तब स्वामी दयानन्द वहां पधारे। शहर के कोतवाल होने से लाला नानक चन्द का स्वामी जी के व्याख्यानों में पूर्ण व्यवस्था के लिए मौजूद रहना पड़ता था। मुन्शीराम भी वहां जाते रहे। युवक इस महापुरुष के दर्शन, सत्संग और उपदेशों से बहुत प्रभावित हुआ। कई शंकाएं पैदा हो गयीं। पाश्चात्य दार्शनिकों की विचार धाराओं से प्रभावित होने से मस्तिष्क पर नास्तिकता का जोर था। युवक ने स्वामी जी से शंका निवारण किया पर अन्त में निरुत्तर हो महर्षि से कहा कि आपने तर्क से तो मुझे सन्तुष्ट कर दिया है पर अभी मेरा हृदय ईश्वर की सत्ता को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं है। स्वामी जी ने कहा :—जब प्रभु कृपा होगी तो यह भी हो जायगा।

आर्यसमाज में प्रवेश

जब आप लाहौर में वकालत पढ़ रहे थे, आप वहां आर्यसमाज के सम्पर्क में आए। वैदिक ग्रन्थों और सत्यार्थ प्रकाश आदि पुस्तकों का अध्ययन किया। फलतः आपके विचारों में क्रांति आ गई और महर्षि के दृढ भक्त और अनुयायी बन गए।

जालन्धर में वकालत

आपने जालन्धर में वकालत आरम्भ की, वह खूब चमकी। झूठे मुकद्दमें आप नहीं लेते थे। धर्मप्रचार की बड़ी धुन थी। आर्यसमाज में ही अपना अधिकांश समय देते थे। कई शास्त्रार्थ भी किए।

धर्म पत्नी का देहांत

मुंशीराम की पत्नी शिवदेवी बहुत पढ़ी लिखी तो न थी पर बड़ी सती, साध्वी, पति परायणा और धर्म निष्ठ थी। यह उसी की निष्काम सेवा का फल था कि मुंशीराम शराब आदि व्यसनों से छुटकारा पा सके। मुंशीराम जी की आयु अभी ३५ वर्ष की थी कि उनकी पत्नी का देहांत हो गया। इस घटना के दूसरे दिन जब आप घर का सामान ठीक कर रहे थे तो उनकी पुत्री वेदकुमारी ने अपनी माता का एक पत्र उनके हाथ में लाकर दिया। जो इस प्रकार था—"बाबू जी, अब मैं चली। मेरे अपराध क्षमा करना। आप को तो मुझ से अधिक रूपवती और बुद्धिमती सेविका मिल जायेगी, किन्तु इन बच्चों को मत भूलना। मेरा अन्तिम प्रणाम स्वीकार करें।" पत्नी के शब्दों ने मुन्शीराम के हृदय में एक अद्भुत ज्योति का संचार कर दिया। मानसिक निर्बलता दूर हो गयी। बच्चों के लिये माता का स्थान भी स्वयं पूरा करने का दृढ़ संकल्प किया। धीरे-धीरे वकालत से मन हटने लगा। संवत् १९५२ में जब वह पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान बने तो इस जिम्मेवारी को पूरा करने के लिए अब अधिकांश समय आर्यसमाज की सेवा में लगाने लगे। अन्त में उन्होंने वकालत सर्वथा छोड़ दी।

समाजिक सुधार

मुन्शीराम एक मेधावी व क्रांतिकारी नेता थे। वास्तव में वह अपने समय से बहुत आगे थे। आम लोग जब किसी महान् परिवर्तन की कल्पना भी न कर पाते थे, मुंशीराम साहस के साथ आगे आकर लोगों को चकित कर देते थे। अछूतपन दूर करने के लिये आपने सब से पहले कदम उठाया और एक अछूत नौकर को रसोइया रखा। जब उन्होंने गुरुकुल कांगड़ी स्थापित किया वहां भी अछूत जाति के बच्चों को दूसरों के साथ ही बिना किसी भेदभाव के रखा और उन्हें सब प्रकार की सुविधाओं के साथ पूर्ण शिक्षा दी। इन में से कई उच्च पद पाकर समाज की सेवा कर सके। कांग्रेस के प्रोग्राम में अछूतोद्धार सम्मिलित कराने में स्वामी श्रद्धानन्द जी का बड़ा हाथ था।

(क्रमशः)

शोक सभा

डी० ए० वी० हाई स्कूल उरमुर (होशियारपुर)

डी०ए०वी० हाई स्कूल उड़मुड़ के अध्यापकों और विद्यार्थियों की एक शोक सभा १३-१२-१९६५ को हुई। इस सभा के अध्यक्ष वर्तमान मुख्याध्यापक श्री ला० भगवानदास जी बी. एस. सी. बी. टी. थे। इसमें मुख्याध्यापक श्री ला० विद्यारत्नजी बी. ए. (एच. एम.) बी. टी की अचानक मृत्यु पर गहरा शोक प्रकट किया गया और हार्दिक सहानुभूति प्रकट की गई। ईश्वर से उनकी आत्मा को शान्ति व सद्गति के लिए तथा उनके परिवार को इस दारुण कष्ट सहन करने की प्रार्थना की गई।

आर्य समाज व मारवाड़ी समाज—१

(श्री बंशीलाल जी गोदानी—कोषाध्यक्ष, आर्यसमाज, शोलापुर)

आर्यसमाज ने वैदिक संस्कृति की रक्षा के लिये जो कुछ किया है वह कर रहा है वह किसी से छिपा हुआ नहीं। आज रामकृष्ण का कोई नाम लेवा व पानी देवा न होता यदि महर्षि दयानन्द ने इस गौरवशाली संगठन का निर्माण न किया होता। आर्यसमाज के सब प्रयत्नों के होते हुये भी कई बार ऐसा अनुभव होता है कि हमारी जाति का भविष्य अभी उज्ज्वल नहीं कहा जा सकता। मारे विनाश की शक्तियां दिन रात हमारे संहार के लिये जुटी रहती है। ऐसी सब शक्तियां साधन सम्पन्न हैं। हमारी जाति के पतन का कारण हम स्वय भी हैं। हमारी रूढ़ियां, कुरीतियां, पाखण्ड व अंध विश्वास हमारे विकास में ही बाधक नहीं अपितु हमारे घातक सिद्ध हो रहे हैं। आर्य समाज अकेला अन्दर की बुराई व बाहर के आक्रमणों से जूझ रहा है। प्राचीन संस्कृति का नाम लेने वाले इस देश में अनेक संगठन हैं परन्तु उस जाति के बचाने के लिये शेष संगठन क्या कर रहे हैं। आर्य समाज इस जाति के लिये—रामकृष्ण की सन्तान की रक्षा के लिये जो कार्य कर रहा है उसका ज्वलन्त प्रमाण यह है कि देश में जहां-जहां आर्य-समाज का प्रचार कम है वहां-वहां ही हमारे भाई अधिक संख्या में विधर्मी बनाये जा रहे हैं। वहीं वहीं हमारी संख्या कम हो रही है। केरल को ले लें चाहें नागालैण्ड को ले लें, उड़ीसा को ले लें चाहे मद्रास को लें, ऐसे सब स्थानों पर विदेशी पादरी एवं मुसलमान बनाने में लगे हुए हैं।

जहां-जहां आर्यसमाज है या जहां कहीं भी कोई आर्यसमाजी पहुंच जाता है वहां इन लोगों की दाल क्यों नहीं गलती? एक साधारण आर्यसमाजी भी अकेला होने पर भी पादरियों व मौलवियों के गढ़ तोड़ने का साहस कैसे कर लेता है? केरल को ही लीजिए वहां ईसाईयों की ३५० पत्रकाएं निकलती हैं! न जाने पादरियों की वहां कितनी बड़ी सेना है फिर भी गत दो वर्षों से शंकर आचार्य की इस भूमि में देव दयानन्द के एक ही सैनिक (वह भी अनुभवहीन युवक) श्री पं. नरेन्द्र भूषण बी. ए. ने दो सहस्त्र भाईयों को पुनः वैदिक धर्म की दीक्षा देकर, उनको शिखा सूत्रधारी बनाकर प्यारे राम व योगेश्वर कृष्ण की सेना में लाकर खड़ा कर दिया है।

क्या केरल में मद्रास में, आसाम या उड़ीसा में हिन्दुविद्वान नहीं? बहुत हैं फिर वे क्यों ईसाईयत की बाढ़ को नहीं रोक पा रहे? महाराष्ट्र आंध्र व उत्तर प्रदेश में अब भी मुसलमान अपनी संख्या बढ़ाने के लिए हिन्दुओं को सब उपायों से मुसलमान बनाने के लिए यत्नशील हैं परन्तु हिन्दु पंडितों से कुछ नहीं बन पा रहा है। इसका कारण यह है कि ये लोग वेद का नाम ही लेते हैं। वैदिक पवित्र धर्म का इनको ज्ञान ही नहीं। यदि ज्ञान है तो स्वार्थवश ये लोग वेद का प्रचार प्रसार नहीं करते। ये लोग रूढ़ियों को ही धर्म समझे हुए हैं। ये लोग आर्यसमाज की महत्ता को समझते हुए भी लोगों को आर्यसमाज के निकट नहीं आने देना चाहते। इनकी यह नीति राष्ट्र के लिये अहितकर है, जाति घाती है और यह नीति रामकृष्ण के साथ द्रोह है।

क्या यह दुःख की बात नहीं कि शिवाजी महाराज के प्रदेश से राम व कृष्ण के प्रदेश उत्तर प्रदेश से हिन्दु देवियों का आज भी अपहरण हो। जब देवियों का अपहरण होता है तब ये सब लोग आर्यसमाज के पास आते हैं क्यों कि जिनका अपना हृदय अनुभव करता है कि बहिनों को बचाने वाला रामदल दयानन्द का आर्य समाज ही है।

जाति के शुभ चिन्तकों को सोचना चाहिये कि ऋषियों की अनादि प्रभुप्रदत्त संस्कृति, प्रभु का दियह पावन वेद ज्ञान कैसे सुरक्षित रखे जा सकते हैं। इस से संसार का उपकार तो तभी होगा जब हम जीवित रहेंगे यदि हम ही मिट गये तो विश्व को वेद ज्योति कौन देगा?

रह-रह के एक ही आशा किरण दीखती है और वह है मारवाड़ी समाज। मेरा जन्म भी मारवाड़ी समाज में हुआ है मैं मारवाड़ी समाज के सब गुण दोष समझता हूं। मारवाड़ी भाइयों की धमनियों में रजिस्थान का रक्त है पर जाने आर्य गौरव महाराणा प्रताप सीखे छोटे बड़े असंख्य वीरों का उबलता रक्त आज मारवाड़ियों की रगों में कैसे जम गया है? देश जाति की वर्तमान अवस्था देखकर क्यों राजस्थान की ओर भूमि के इन साधन सम्पन्न लोगों का रक्त नहीं खौलता।

मैं जब सोचता हूं तो एक ही बात राष्ट्र कल्याण के लिए सूझती है। मारवाड़ी समाज के लोग यदि आर्यसमाज को समझने का यत्न करें तो देश जाति के दिन फिरते देर नहीं लगेगी। आर्य-समाजी के सीने में देश जाति के प्रेम की एक धधकती ज्वाला है। आर्यों के हृदय में राम कृष्ण की सन्तान के लिए जो पीड़ है वह और किस के अन्दर है।

'सरिता' जैसी कितनी पत्रिकाएं हैं जो हमारे धर्म व संस्कृति पर निर्मम प्रहार कर रही है। कौन इनका उत्तर देता है। केवल आर्य-समाज! आर्यसमाज के सिवाय और किसी में टक्कर लेने की क्षमता भी कहां है। जब सरिता ने महाराज राम पर वार किया, माता सीता पर कीचड़ उछाला तो आर्यसमाज का बूढ़ा केसरी पं० बुद्धदेव आगे निकला। अभि-योग चला, सब कुछ हुआ परन्तु घबराना आर्यों ने नहीं सीखा। अब आर्य समाज के एक साधु वेद मुनि जी परिव्राजक ने मर्यादा पुरुषोत्तम राम व श्री कृष्ण जी की संस्कृति पर किये गये प्रत्येक प्रहार का प्रतिकार करने के लिये पुण्य लोक मासिक का प्रकाशन आरम्भ किया है। आर्यसमाज को जाति की रक्षा के लिये अनेक मोर्चों युद्ध करना पड़ता है पर आर्यसमाज के साधन सीमित हैं। (क्रमशः)

वृष्टियज्ञ का आयोजन

वर्तमान वर्षा के अभाव में राष्ट्र में अन्न संकट को देखकर आर्यसमाज लारेंसरोड अमृतसर के सारे सज्जनों बहिनों ने अथर्व वेद के चौथे कांड के १५ सूक्त के मन्त्रों से समाज मन्दिर के विशाल प्रांगण में ता० १४ दिस० मंगल वार से प्रातः ७ से ८॥ बजे तक दैनिक रूप से वृष्टियज्ञ का सुन्दर आयोजन किया है काफी संख्या में नर-नारी पधार कर आहुतियां डाल रहे हैं। भगवान से वर्षा के लिए प्रार्थना की जा रही है। यज्ञ का वातावरण बड़ा ही सुन्दर बना हुआ है। मुझे भी इस में शामिल होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। सारे समाज की श्रद्धाभावना प्रशंसा के योग्य है। समाज के मान्य प्रधान श्री ला० मोहनलाल जी, मन्त्री श्री वैद्य विद्यासागर जी तथा सारे भाई-बहिनों की यह पवित्र भावना है कि इस विषम समय में सारे समाजों मन्दिरों व परिवारों में वृष्टियज्ञ किया जाये। अथर्ववेद के चौथे कांड के १५वें सूक्त के मन्त्रों से आहुतियां दी जाएं।

मन्त्र यह है—

समुत्पतन्तु प्रदिशो नभस्वतीः,
समभ्राणि वातजूतानि यन्तु।
महऋषभस्य नदतो नभस्वतो,
वाश्रा आपः पृथिवीं तर्पयन्तु॥ सं०

आर्य समाज के प्राचीन पत्र—

पं. तुलसीराम स्वामी का वेदप्रकाश

(श्री प्रो० भवानी लाल जी भारतीय एम० ए० (R E.S.)
राजकीय कालेज, पाली (राजस्थान)

आर्य समाज के विद्वद्मूर्धन्य पं० तुलसीराम स्वामी ने मेरठ के स्वामी प्रैस से वेदप्रकाश मासिक पत्र प्रकाशित करना आरम्भ किया। तुलसीराम जी के स्वर्गवासी होने के अनन्तर उनके छोटे भाई पं० छुट्टनलाल जी स्वामी इसके वर्षों तक सम्पादक रहे। इसके मुख पृष्ठ पर यह श्लोक पत्र के उद्देश्य की घोषणा करते हुए छपा रहता था—

वेदस्य गौरवं वेदप्रकाश:
सुप्रकाशयेत्।
तद्वारकतमोराशिं समन्ताच्च
विनाशयेत्॥

इस श्लोक के साथ ही 'यो जागार तमृच: कामयन्ते' यह सामवेद का मंत्र भी छपा रहता था। इस पत्र में विविध लेखकों द्वारा लिखित विविध लेख, कवितायें, समाचार आदि रहते थे। समालोचना का स्तम्भ भी पृथक् रहता था। निम्न उदाहरणों से पाठकों के समक्ष उस पत्र का स्वरूप भली भांति प्रकट हो जायेगा।

स्वामी दयानन्द ने ऋग्वेद का भाष्य सातवें मण्डल के कुछ भाग पर ही किया था। वेद प्रकाश के सम्पादक प्रत्येक अंक में शेष ऋग्वेद के भाष्य से क्रमशः छापते थे। इस भाष्य को स्वामी बंधु ही लिखते थे। जनवरी १९१६ के अंक में सम्पादक का 'राजभक्ति' शीर्षक एक लेख प्रकाशित हुआ है जो लेखक की अंग्रेजी राज्य के प्रति चापलूसी युक्त उक्तियों से परिपूर्ण है। सम्भवतः उस समय के आर्यसमाजी वर्ग में राज्यभक्ति (ब्रिटिश राज्य के समर्थक) तथा राष्ट्रीय मनोवृत्ति की दो विभिन्न धाराएं पृथक्तया प्रवाहित हो रहीं थीं। छुट्टन लाल स्वामी का यह लेख प्रथम मनोवृत्ति का द्योतक है जो अंग्रेजी राज्य को भारत के लिये ईश्वरीय वरदान के तुल्य समझता है। इस लेख के निम्न वाक्यों में खुशामद का रंग ही दृष्टिगोचर होता है—'बृटिश यश का सूर्य प्रकाशमान रहे।' पृ० ६

'जो राज भक्त नहीं है उसकी श्रद्धा वेदभगवान के वचनों पर भी नहीं है।' इस अंक में अन्य महत्व पूर्ण लेख निम्न हैं—

कविरत्न अखिलानन्द रचित शोक संमूर्छितकाव्य—यह स्वा० तुलसी राम जी स्वामी के प्रति रचित संस्कृत शोक गीति (elegy) है तुलसीराम का जीवन चरित भी वेद प्रकाश के कई अंकों में प्रकाशित होता रहा है। स्वामी दयानन्द का देशाटन शीर्षक एक लेख कई अंकों में धारावाही रूप से प्रकाशित हुआ। इस में स्वामी जी के जीवन चरित विषयक प्रचुर सामग्री संग्रहीत है। 'बुद्ध और ईसा की एकता' शीर्षक लेख नवीन कल्पनाओं से भरपूर है। पुस्तक समालोचना तथा समाजों के उत्सवों के वृत्तान्त भी छापे हैं।

फरवरी १९१६ के अंक में पं. अखिलानन्द शर्मा का वेदों में विधि-वाक्य शीर्षक एक लेख छपा है। पाठकों को यह स्मरण दिला दूं कि ये वही अखिलानन्द हैं जो कालान्तर में वर्ण व्यवस्था विषयक सैद्धान्तिक मत-भेदों के कारण आर्यसमाज से पृथक् हो गए थे और सनातन धर्म के उग्र प्रचारक बनकर दयानन्द और आर्यसमाज को गाली देने में ही अपनी शक्ति नष्ट किया करते थे। अन्य धारावाही लेखों के अतिरिक्त इसमें शंकराचार्य रचित 'प्रश्नोत्तरी' नामक ग्रन्थ को भी धारावाही रूप से छापना प्रारम्भ किया है।

मार्च १९१६ के अंक में एक मजेदार खबर छापी है, वह यह है कि बी. ए. (भारत धर्म महामण्डल वाले) जो अपने आपको ग्रेजुएट तथा डिविनिटि कालेज के प्रोफैसर लिखते हैं, परन्तु वे तो एंट्रेन्स पास भी नहीं हैं। साथ ही उन दयानन्द बी. ए. को कहा गया है कि यदि बी. ए. पास हैं तो अपना प्रमाण पत्र छपाकर सन्देह दूर करें। इसमें सनातनी प. कालूराम द्वारा प्रकाशित सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम संस्करण को छापने के समाचार पर टिप्पणी लिखी गई है। आर्यसमाज के इतिहासज्ञ पाठकों को ज्ञात होगा कि स्वामी जी ने राजा जयकृष्णदास की प्रेरणा से सत्यार्थप्रकाश का जो प्रथम संस्करण छपा था उसमें अनेक त्रुटियां रह गई थीं तथा लेखकों के प्रमाद तथा धूर्तता-वश अनेक सिद्धांत विरुद्ध बातें भी उस में छाप गई थीं। यथा मृतक श्राद्ध विधान यज्ञ में पशु बलि आदि। बाद में स्वामी जी ने सत्यार्थप्रकाश का सम्पूर्णरीत्या, संशोधन किया और वह उन के जीवन काल में ही छापना आरम्भ हो गया था। कालूराम ने उस प्रथम आवृत्ति वाले सत्यार्थप्रकाश को छाप कर तीन-तीन रुपये में बेचा। उसका प्रयोजन यह था कि इस सत्यार्थप्रकाश में छापी बातों को दयानन्द का मूलमंतव्य घोषित करे। बाद में स्वामी श्रद्धानन्द ने 'आदिम सत्यार्थप्रकाश और आर्य समाज का सिद्धान्त' यह ग्रन्थ लिख कर कालूराम के कृत्य का भण्डाफोड़ किया और सत्यार्थ प्रकाश विषयक आर्य समाज के मन्तव्य को स्पष्ट किया। इसी अंक में आर्य समाज की स्थापना सम्बन्धी इतिवृत्त तथा उसके पुराने २८ नियमों को भी छापा है। इस लेख के अनुसार आर्य समाज की स्थापना चैत्र शुक्ला पंचमी १९३२ (१० अप्रैल १८७५) को हुई थी। आज हम आर्य समाज का स्थापना दिवस चैत्र शु. प्रतिपदा को मनाते हैं। यह विवाद विद्वानों के समक्ष आ चुका है।

अप्रैल १९१६ के अङ्क में मुसिफसिंह यादव की दो कवितायें प्रकाशित हुई हैं—'भारतीय वीरों को उत्तेजना और 'हमारा कर्त्तव्य'। उस समय यूरोप प्रथम महायुद्ध की अग्नि से जल रहा था। इन कविताओं में अंग्रेजों की विजय कामना की है। अंग्रेज सम्राट पंचम जार्ज को धर्मराज युधिष्ठिर तथा जर्मनी के राजा कैसर को कौरव बताया गया है। अंग्रेज भक्ति का यह स्वर इस कविता की अंतिम पंक्ति में अपनी चरम सीमा पर पहुँच गया है जहां कवि कहता है—है कर्त्तव्य तुम्हारा वीरो अन्तिम सुन लो चित लगाया।

गिरे पसीना जहां ब्रिटिश का तहांपर खून बहा दिया जाए।"

द्वितीय कविता की यह पंक्ति भी इसी राज्य-भक्ति के भाव को सूचित करती है—"विजय जार्ज की करके लौटो भारत स्वागत करे तुम्हारा।" इस अंक में संकट बलप्रसादसिंह सारन निवासी की एक घोषणा छापी है कि 'जो विद्वान पुराणों; तन्त्रों तथा स्मृतियों को देश के लाभदायक तथा वेदानुकूल सिद्ध कर देगा उसे आठ हजार रुपया पुरस्कार दिया जायगा।' शायद ही किसी सनातनी विद्वान् को यह पुरस्कार मिल पाया हो। (क्रमशः)

आर्य समाज गायन और ग्रामोफोन रिकार्ड

इस अभाव को एक व्यक्ति ने दूर करने का प्रयास किया है और न न गायनों के ६ रिकार्ड भरे हैं—

१. वैदिक धर्म की जय लहराये झंडा ओ३म् का।

२. पूजनीय प्रभु हमारे भाव ओ३म् रस बरसे।

३. ईश्वर प्रार्थना के ८ मंत्र अनुवाद सहित गायन।

४. वैदिक नाद सुनाओ आर्य समाज महत्व गायन।

५. मधुर वेद वीणा आई दयानन्द की टोली।

६. यों तो कितने ही महापुरुष निहीं गुरुदेव दयानन्द सा।

प्रचार में रुचि रखने वाले सज्जन नम्न पते पर सम्पर्क स्थापित करें—

पोस्ट १४६ अजमेर (राजस्थान)

अत्यन्त शोक जनक

आर्यसमाज के पुराने महारथी तथा शिक्षा क्षेत्र में अपना सारा जीवन बिताने वाले प्रिंसिपल रामदास जी पूर्व संसत्सदस्य होशियारपुर की धर्म-पत्नी का देहावसान हो गया है। अत्यन्त शोकजनक यह दुःखद समाचार सुनकर सारे आर्यजगत को हार्दिक दुःख हुआ है। वह हमारी माता के समान ही थी। उनका स्वभाव तथा समाज सेवा कौन भुला सकता है। आर्यसमाज के काम में सदा जुटी रहती थीं। माननीय प्रिंसिपल जी के लिए उनकी आंखें बन्द होना वज्रपात के समान है। प्रिंसिपल जी को इस भारी दुःख सहन करने की प्रभु शक्ति देवें तथा दिवंगत आत्मा को शान्ति प्राप्त हो। माननीय प्रिंसिपल रामदास जी आजकल दयानन्द साल्वेशन मिशन के प्रधान हैं। समाज के नेता हैं। आर्यजगत परिवार उनके इस भारी दुःख में दुःखी है—सं.

...क सम्पन्न हुआ। राष्ट्र रक्षा सम्मेलन और आर्य कुमार सम्मेलन भी हुए २०००/- से अधिक चन्दा प्राप्त हुआ साल भर में पं० गणेशदत्त जी पुरोहित समाज ने २२५ संस्कार कराए।

संस्कारों से ८५० रु० दान समाज को मिला वानप्रस्थी जी का बहुत २ धन्यवाद है।

—सुरेशकुमार मंत्री

आर्यसमाज बाढ़ शोक समाचार

आर्यसमाज बाढ़ के ... पूर्व प्रधान श्री ... का स्वर्गवास ... १३—११—... हो गया। पूर्ण वैदिक विधि से अंत्येष्टी क्रिया सम्पन्न हुई। आप अपने पीछे काफी परिवार, निस्सहाय अवस्था में छोड़ गए हैं। प्रभु दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करें तथा उनके संतप्त परिवार को इस दारुण कष्ट सहने की शान्ति प्रदान करें।

चन्द्र दीप प्रपाठक

उपमन्त्री समाज

...आर्यसमाज ... में तारीख १९—१२—६५ रविवार से २६—१२—६५ रविवार तक प्रतिदिन प्रातः ६॥ बजे से ८॥ बजे तक सांय ४॥ बजे से ६ बजे तक वृष्टि यज्ञ होगा।

श्री पं० बलदेव कृष्ण जी पुरोहित की अध्यक्षता में वृष्टि यज्ञ का आयोजन किया गया है। नगर की जनता से प्रार्थना है यज्ञ में सम्मिलित होकर लाभ प्राप्त करें तथा यज्ञ में घी, सामग्री, मेवे, तिल आदि की आहुति डालकर पुण्य के भागी बनें।

नोट—रविवार को यज्ञ प्रातः ८ बजे होगा। —मदनमोहन सेठ

मन्त्री समाज

आर्यसमाज जुलाना शादीपुर उत्सव

११-१२-१३-१४ दिसम्बर १९६५ को धूमधाम से हुआ। इस अवसर पर सभा की मंडली, भूराराम जी की अध्यक्षता में प्रचारार्थ पहुँची जिसका प्रभाव अच्छा रहा वेद में कुल १२३-५० प्राप्त हुए। जिस में दीवाली फंड, दशांश, आर्य जगत का चन्दा आदि सम्मिलित हैं। १)दयानन्द अंश १९६६, आर्य जगत चन्दा १९६६, ४)शिवरात्री १९६६, ५)दिवाली १९६५ २)ला० सुरेशसिंह इनाम, २) ... इनाम, २) रघुवीरसिंह जी इनाम, मुरारीराम जी को किराया २ रुपये ७३ पैसे। इस उत्सव में मास्टर रामचन्द्र ... आर्य पाठशाला शादीपुर विद्यार्थियों सहित सेवा करते रहे उनका धन्यवाद है।

दिलीपसिंह—मंत्रीसमाज

आर्य युवक समाज की स्थापना

श्री पं० विशम्भर दत्त जी आर्य तथा ब्र० विद्यासागर जी की उपस्थिति में आर्यसमाज दयानन्दपुरा में हुई। चुनाव निम्न प्रकार से हुआ :—

१. प्रधान श्री शेर सिंह जी आर्य बी. एस. सी., बी.एड. अध्यापक डी. ए. वी. स्कूल।

२. उप-प्रधान—श्री रमेश आर्य अध्यापक।

१. मन्त्री—श्री राजकुमार जी आर्य।

२. उपमन्त्री—श्री जगदीशचन्द्र जी आर्य।

१. कोषाध्यक्ष—श्री फतेहसिंह जी आर्य।

२. उप-कोषाध्यक्ष—श्री धर्मपाल जी आर्य।

१. पुस्तकालयाध्यक्ष—श्री द्वारका धीश जी आर्य।

२. उप-पुस्तकालयाध्यक्ष—श्री अवध कुमार जी आर्य।

१. ... —श्री ... जी ...

मुख्य सलाहकार—(१) ब्र० ... जी आर्य, (२) पं० विशम्भर दत्त जी, (३) ब्र० विद्या ... जी, (४) श्री ... जी।

आर्य युवक समाज का साप्ताहिक सत्संग ३ बजे से ४॥ बजे तक हर रविवार होता है, इस समाज के सदस्यों की संख्या अबतक ६२ हो चुकी है।

मन्त्री

आर्य युवक समाज

मुद्रक व प्रकाशक श्री सन्तोषराज जी आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर द्वारा वीर मिलाप प्रेस, मिलाप रोड जालन्धर से मुद्रित तथा आर्य जगत् कार्यालय महात्मा हंसराज भवन निकट कचहरी जालन्धर शहर से प्रकाशित मासिक—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर



टैलीफोन नं० ३०५७ [आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधिसभा पंजाब जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd. No. P. 121

एक प्रति का मूल्य १३ नये पैसे वार्षिक मूल्य ६ रुपये

वर्ष २५ अंक ५१) ५ पौष २०२२ रविवार—दयानन्दाब्द १४१– १९ दिसम्बर १९६५ (।।र 'प्रादेशिक' जालन्धर

वेद सूक्तय:

अरं शक्र परेमणि

हे सर्वशक्तिमन् परमेश्वर! ऐसी कृपा करें कि हम तेरे ही परेमणि—परम रूप में, रस-पान करने में, तेरी स्तुति में आपकी ही आराधना, साधना, में ही लगे रहें, मग्न मस्त रहें। आपकी भक्ति की मस्ती का परमरस सदा पान करते रहें।

विश्वा यदजय: स्पृध:

हे मानव! तेरे अन्दर जितनी भी तामसी प्रवृत्तियां हैं, जिनके कारण यह जीवन तमोमय बनता जाता है, उन सब को जीत ले। उन तमोभावों को दूर भगाने के लिए उन पर पूरे रूप से विजय प्राप्त कर ले। ये तमो गुण मुझे अपना दास न बनाने पावें।

मत्स्व प्रभू वसो

इस शरीर में निवास करने वाले आत्मन! बड़ी सामर्थ्य रखने वाले आत्मन्! तू सदा ही प्रसन्न रह। कभी भी विषाद को प्राप्त न हो। जीवन की निष्ठा सदा प्रसन्नता में है, घबरा कर सदा रोते रहना या निराश होना जीवन की साधना नहीं है। सदा प्रसन्न रहो।

सा म वे द से

बलिदानी वीर का दिव्य सन्देश

आर्य समाज के विशाल भवन की भित्तियां बलिदान की अमर आधारशिला पर स्थापित हैं। उन में अमरहुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का बलिदान भी अत्यन्त प्रमुख स्थान रखता है। २३ दिसम्बर को उन का बलिदान पर्व है। उत्साह से मनाना है। अमर शहीद ने अपने सन्देश में कहा था—

साहूकार हर रोज बही खाते की जांच पड़ताल करके नफा और नुकसान, आमदनी और खर्च मालूम करता है। इस नियम का वह कैसा पक्का है। बही खातों की पड़ताल उस के लिए सब बातों से जरूरी है। इस लिए हर शाम को वह गिना करता है।

तुम भी प्यारे भाईयो! अपने जीवन के रोज नामचे की पड़ताल करो। देखो कि नफे नुकसान का क्या मीज़ान है। पुण्य ज्यादा है या पाप? यह पड़ताल बड़ी जरूरी है।

इस के बिना जीवन नौका डगमगाती रहेगी और अन्तिम परिणाम अन्धकारमय ही रहेगा इस लिए देश वासियो! जीवन खाता की बही को प्रति वर्ष देखो कि कहां पर कमी रही है उस कमी को पूरा करो। तभी जीवन सफल रहेगा। आओ! हम जीवन को सफल करने के लिए स्वर्गीय स्वामी श्रद्धानन्द के आदेश का पालन करें।

स विष्णुरीश्वर:

वह विष्णु ईश्वर ही है। वही परमेश्वर विष्णु कहलाता है। सर्वव्यापक होने से भगवान विष्णु कहलाता है। उस सर्व-व्यापक प्रभु से ही जीवन की सारी कामनाएं पूरी होती हैं उसी को मानो और उसी से मांगना सीखो।

चक्रवर्ति राज्यम्

आपका राज्य चक्रवर्ति है। सारे विश्व की जनता आप के स्वराज्य तथा सुराज्य की प्रशंसा करती रहे। कोई हमें पराधीन न बना सके। मानसिक दास भी न बनें हम चक्रवर्ति राज्य का प्रसाद प्राप्त करें।

अनन्त पराक्रमवान्

वह परमेश्वर अनन्त बल पराक्रमों का भण्डार है, सारी शक्तियों का वही केन्द्र है, उस की शक्ति के सामने कौन बल-वान ठहर सकता है। अभिमानी बली उस महाबली के सामने हार गये, कुछ न चली वह बली है। भा ष्य भू मि का से

अधिष्ठाता—श्री संतोषराज जी सम्पादक—त्रिलोक चन्द्र शास्त्री

(गतांक से आगे)

वैजयन्तीमाला को देखने जाते हैं। वेद, गीता, सत्संग पसन्द नहीं पिक्चर पसन्द हैं। हम लोगों की बुद्धि भ्रष्ट कर दी गई है। सच-मुच 'विनाशकाले विपरीत बुद्धि'—जब विनाश आता है तो बुद्धि बिगड़ती है। ऐसे समय में सत्य विचार अत्यन्त आवश्यक है। जिस के मन में देश के लिए प्यार ही नहीं, जो इस देश को अच्छा ही नहीं समझते वे इसकी रक्षा क्या करेंगे। हमारे देश में पांच लाख के करीब छोटे बड़े सिनेमाघर हैं। इन में हर रोज एक से लेकर छह तक शो होते हैं। एक अनुमान के अनुसार प्रति वर्ष ६६ करोड़ भारत-वासी सिनेमा देखते हैं। मैं पूछता हूं आर्यसमाज कितने हैं? विचार कैसे बनेगा? विचार को बिगाड़ने वाले इतने ज्यादा हैं और बनाने वाले इतने कम। बूढ़े लोग सत्संग में आते हैं। अध्यात्मवाद के बारे में लोगों को गलत बताया गया है। अकर्मण्यता का नाम अध्यात्मवाद नहीं है। राष्ट्रभक्ति नास्तिकता नहीं है। राष्ट्रभक्ति और प्रभु भक्ति एक दूसरे से अलग नहीं हैं। मानव जीवन का संग्राम राष्ट्रभक्ति और प्रभुभक्ति के बिना जीतना सम्भव नहीं है।

माताओ और सज्जनो! मन्त्री जी ने हिन्दू शब्द का उल्लेख किया है। मैं यह स्पष्ट कर देना चाहता हूं कि सन्यासी की नजर में हिन्दू, मुस्लिम, सिख और ईसाई सब एक हैं। पिछले दिनों में बम्बई गया तो मैंने एक मस्जिद में व्याख्यान दिया। भून्डी में मे प्रायः एक ठाकुर-द्वारे में व्याख्यान दिया करता हूँ। अभी पिछले दिनों सात दिन तक ही वहां ठाकुर-द्वारे में ही दिया। संन्यासी सब के लिए हैं, सब के सांझे हैं। जिस प्रकार सूर्य सब के लिये है। आधी सृष्टि सूर्य के भाग में आई और आधी वेदों के, आप कह

राष्ट्र-भक्ति और प्रभु-भक्ति-४

(श्री महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज की अमृतभरी कथा)

सकते हैं कि आज ऐटम का युग है दुनिया बहुत-बहुत आगे निकल गई है। वे इतना पुराना वेद किस काम का है। अरे भाई! सूर्य भी तो दो अरब वर्ष पुराना है काम दे रहा है न। वेद भी इसी तरह ही दूसरों के लिए उपयोगी हैं वेदों में किसी देश, प्रदेश, गीत, धर्म का उल्लेख नहीं। यदि वेदों में सांप्रदायिकता, भाषावाद, प्रांतीयता या जातपात का उल्लेख होता तो महर्षि दयानन्द उसे हाथ न लगाते। वेदों में सार्वभौम संदेश है। वेद एक **Secularism** का ग्रन्थ है। इस में रूसी, अमरीकी, योरुपीयन किसी की चर्चा नहीं सिर्फ एक बात लिखी है कि हे इन्सान, इन्सान बन, मैं जब सरकार के नेताओं से यह बात कहता हूं तो वे कहते हैं कि आनन्द स्वामी तुम ठीक कहते हो लेकिन जब मैं यह कहता हूँ कि दयानन्द के वेद भाष्य स्कूलों कालिजों में पढ़ाओ तो वे मानते नहीं। याद रखो राष्ट्र भक्ति और प्रभु भक्ति अलग-अलग चीजें नहीं हैं यदि राष्ट्र ठीक नहीं है बाहिर से शत्रु का सामना है अन्दर से आचार व्यव-हार दूषित है बुद्धि खराब है कौन भगवान का भजन करेगा। अगर चैन ही नहीं वहां भगवान का भजन कहां! राष्ट्र कभी अध्यात्म-वाद के बिना जीवित नहीं रह सकते। जवाहर लाल नेहरू ने एक बार काठमंडू में भाषण देते हुए कहा था कि मशीनी युग तेजी से आगे बढ़ रहा है लेकिन लोग अध्यात्मवाद को भूल रहे हैं!

धार्मिक पुस्तकों का अन्तिम परिणाम युद्ध है। योग वशिष्ठ में राम और रावण में युद्ध का उल्लेख है गीता में महाभारत के युद्ध का उल्लेख है। संसार-भर में नीति के पण्डित चाणक्य ऋषि ने जिस युग में भारत की सीमा ईरान से अराकान तक थी लिखा है:—

सुखस्य मूलम् धर्मः
धर्मस्य मूलम् अर्थः
अर्थस्य मूलम् राज्यम्
राज्यम् मूलम् इन्द्रजयः

अन्त में इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करने का नाम अध्यात्मवाद है मैंने कल सत्यार्थ प्रकाश के छटे समुल्लास का उल्लेख किया था जिसमें कहा गया है कि राष्ट्रपति या राज्यसभा का सदस्य वही व्यक्ति बन सकता है जिस ने इन्द्रियों पर विजय प्राप्त की हो, यहां भी अध्यात्मवाद का उल्लेख है। अध्यात्मवाद, राष्ट्रभक्ति के अनुकूल ही है।

मैंने कल सात सत्यों का उल्लेख किया था सत्य आहार, सत्य विचार, सत्य आचार, सत्य उच्चार सत्य आचार और सत्य व्यवहार। जैसा आचार वैसा व्यवहार। जैसा अन्न वैसा मन। विचार की शक्ति ऐटम बम से भी अधिक है अंग्रेज ने विचार फैला-फैला कर ही हमें हीन भावना का शिकार बना दिया। हमें अपना देश संस्कृति वेष, भेष, भाषा कुछ नहीं अच्छा लगता। अंग्रेज के बाप को नहीं पता कि नेकटाई क्यों लगाते हैं लेकिन हम हैं कि उन की नकल किये जाते हैं। दुख की बात तो यह है कि हमने नकल की है तो उस की सिर्फ बुराईयों की अच्छाईयों को ग्रहण करने का कभी ध्यान ही नहीं दिया। अंग्रेज में सब से बड़ा गुण जातिके लिए अपने व्यक्तित्वको समाप्त कर देना है। लेकिन हमारे यहां चौधरपन के झगड़े हैं। मास्टर तारासिंह सोचते हैं कि पंजाबी सूबा की मांग जारी रखूंगा तो मेरी चौधरी कायम रहेगी। अरे भाई! दो चार जिले लेकर तुम्हारी लीडरी बनती है तो बना लो पंजाबी सूबा, लेकिन ऐसी मांगें करते समय देश के हित की बात भी कभी सोच लिया करो। संत फतेहसिंह भी चौधर के लिए लड़ रहे हैं। उन्हें डर है कि कहीं मास्टर तारासिंह लीडर न बन जाए। रूस, अमरीका, चीन ये सभी अपनी-अपनी चौधर के लिए नित्य नए बखेड़े टंटे शुरू कर रहे हैं। पंजाब भी चौधरों की लड़ाई का शिकार है, मैंने कल भी कहा कि "ममसत्यम्" अर्थात् जो मैं कहता हूं वही सत्य है यह लड़ाई झगड़े का आधार बन जाता है। प्रभुत्व और चौधर के झगड़ों के कारण ही आज दुनिया दुःखी है।

भट्ठे की अग्नि से ईंट तपाते हो और उन ईंट से चाहे आप मस्जिद बना लें चाहे मन्दिर गुरुद्वारा या गिरजाघर या आर्य समाज यदि यह पक्की ईंटें बिखरी रहेंगी और उसे ढंग से इस्तेमाल नहीं करोगे तो आप को मुफ्त का सभीको इनसे ठोकरें लगेंगी, घायल होंगे, डाक्टरों के पास जाएंगे। इसलिए याद रखो कि तपस्या करो और अपनी शक्ति को अच्छाई के लिए कुर्बान कर दो। कई लोग तो समझते हैं कि स्वामी तो मिडिल पास है, यह क्या कथा करेगा। हम बी० ए० एम० ए० पढ़े हुए ठहरे। यह हमें क्या सिखा सकता है। ऐसे सोचने वाले लोग पक्की ईंटें हैं जो किसी इमारत में फिट नहीं होंगी। मैं कहा करता हूं कि जो दूसरों से मिल कर नहीं बैठता, सत्संग में नहीं आता उसका क्या हश्र होगा, भगवान ही जानें। एक अंगीठी जल रही हो तो आप देखते हैं कि उस में पड़े कोयले दहकते हुए लाल सुर्ख दीखते हैं।

(अपूर्ण)

सम्पादकीय—

आर्य जगत

वर्ष २५] रविवार २०२२, १९ दिसम्बर १९६५ [अंक ५१

यज्ञमय जीवन

आर्य जाति का इतिहास बलिदानों का इतिहास है। धर्म-समाज विश्व के प्राणीमात्र की सेवा के निमित्त अपने जीवन को आहुति दे देने की सुन्दर गाथाएं भारतीय इतिहास में भरी पड़ी हैं। यही कारण है कि भारत का महान् इतने तूफानों, महावातों व नाना प्रकार के भीषण उथल-पुथल मचाने वाले भूकम्पों के बाद भी आज अपनी पुरातन महत्ता व सत्ता को बनाये हुए हैं। यह देश आज भी विश्व का गुरु तथा जीवनदर्शन का आचार्य बना हुआ है। इसे दबाने, मिटाने वाले स्वयं ही दब गये और मिट गये। किन्तु भारत सूर्य के समान अपनी विश्वजनीन संस्कृति की किरणों को सारी धरती पर प्रसारित कर रहा है। इसका कारण इसके अमर बलिदानी देवताओं का सर्वमेध कर देना है।

आर्यसमाज का प्रारम्भ भी तो बलिदान की अमर गाथा के साथ हुआ है। महान गुरु विरजानन्द जी ने अपने जीवन को संस्कृति के प्रचार की पवित्र भावना से भर कर अर्पण करके देव दयानन्द सरीखा महान् शिष्य बना कर सारे विश्व को अद्भुत नेता व देवता प्रदान किया। महर्षि दयानन्द के जीवन बलिदान के साथ २ यह अमर ज्योति प्रदीप्त की और ज्योतियां तो घी, तेल अथवा अन्य पदार्थों से जलाई जाती हैं। उन में ऐसी वस्तु डाल कर उनको कायम रखा जाता है। उनके जुलूस भी निकाले जाते हैं पर आर्यसमाज ने जो बलिदान की ज्योति प्रकाशित की। उस में घी—तेल न डाल कर अपने तन, मन, धन, यौवन की आहुति देकर निरन्तर प्रज्वलित किये हुए हैं। समाज की यह विशेषता है।

उन्हीं बलिदानी देवमाला में अमरशहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान भी राष्ट्र व समाज के लिए बड़ी अनुपम वस्तु है। अब्दुररशीद की तीन गोलियां खाकर उस महान बलिदानी ने यज्ञ की ज्वाला में अपना जीवन समिधा बना कर डाल दिया ताकि यज्ञमय अग्नि चमकती रहे। उनका बलिदान सारे समाज के लिए बहुत बड़ी विभूति है सब के लिए दिव्य सन्देश है। गङ्गा के उस पार गुरुकुल खोल तो दिया गया। भूमि व कमरे भी जैसे तैसे जङ्गल में बन गये पैसे भी इकट्ठे हो गये। किन्तु बलिदान के बिना संस्था कभी नहीं चल सकती। महात्मा हंसराज के बलिदान के बिना क्या डी. ए. वी. की वर्तमान गङ्गा प्रवाहित हो सकती थी? मान्य प्रिंसिपल तो बहुत होंगे पर महात्मा हंसराज कोई नहीं है। शेर चीतों व भेड़ियों से भरे घने वन में अपने कलेजे के टुकड़ों को कौन भेजे? इस के लिए स्वामी श्रद्धानन्द जी ने सब से पहले अपने दोनों प्रिय सुपुत्रों को ही वहां प्रविष्ट करा दिया। यह कम बलिदान न था? आज गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय बन चुका है। इस २३ दिसम्बर को उनका बलिदान पर्व है। सारी समाजें बड़े ही समारोह से मनाएं उनके जीवन से बलिदान का दिव्य सन्देश लेवें।

—त्रिलोक चन्द्र

स्व० मा. नंदलाल जी का स्मृति-पर्व-समारोह

डी० ए० वी० कालेज आंदोलन आर्यसमाज आर्य प्रादेशिक सभा पंजाब तथा जालन्धर की अपनी शिक्षण संस्थाओं के इतिहास में कर्मठ स्वर्गीय मास्टर नन्दलाल जी का नाम व काम सदा चमकता रहेगा। अपनी ८२ वर्ष की आयु तक समाज के तथा जन-जीवन के सेवा क्षेत्र में सच्चे कर्म योगी बन कर सेवा कार्य में लगे रहे। प्रभु भक्ति एवं काम करते रहना—ये दोनों विशेषताएं उन के जीवन की आधार थीं वह परिवार के केवल न थे वरन समाज के बन गये थे। उन का सारा परिवार भी सेवा के रंग में रंगा हुआ था। इस बार भी परिवार के रूप में उनके सुपुत्र श्री. ला० धर्मपाल जी, ला० इन्द्रसेन जी, ला० सत्यपाल जी, ला० मदन लाल जी सब की ओर से विशाल रूप पर मास्टर जी का स्मृति-पर्व समारोह मनाया गया। प्रातःकाल ता. ६ से १२ दिसम्बर तक गायत्री सहित चारों वेदों के शतकों के मन्त्रों से यज्ञ होता था। यज्ञ के ब्रह्मा आर्य समाज के सन्त महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज थे। रात को ८ बजे से सभा के गायक प० मेलाराम जी रेडियो सिंगर व मधुर भाषी श्री. महेशजी के भजनों के बाद पूज्य महात्मा जी की मधुर कथा चलती थी।

ये चार दिन प्रातः व रात कितने अमृत भरे थे। जनता ने कितना लाभ उठाया—ये तो शामिल होने वाले जानते हैं। ला. इन्द्रसेन जी हमारी आर्य प्रादेशिक सभा के उपप्रधान भी हैं। वैसे भी प्रसिद्ध कार्यकर्ता हैं सारा सहन भर जाता था। नगर के गण्यमान्य सज्जन, बहिनें पधारती थीं। पूर्णाहुति रविवार को तो कमाल का दृश्य था ही। स्वर्गीय मास्टर नन्दलाल जी के प्रति सरदार हरिसिंह, प्रिंसपल प्यारे लाल जी वेरी, प्रिंसिपल चंचलदास जी, प. रामचन्द्र जी एम. ए. श्री भाटिया तथा दैनिक प्रताप के मालिक श्री. वीरेन्द्र जी ने बड़ी भावना भरी श्रद्धान्जलियां पेश कीं। पूज्य महात्मा जी का उपदेश रसभरा था। इस अवसर पर प्रिंसिपल बहल जी डी. ए. वी. कालेज, प्रिंसिपल आनन्दजी हंसराज महिला कालेज, प्रिंसिपल आयुर्वैदिक कालेज, आ. पं. सत्यदेवजी विद्यालंकार सभा-मन्त्री ला. सन्तोषराजी, श्री. भीमसेन जी एडवोकेट, पं. प्रकाशनाथ तिवाड़ी, प. दुर्गादास जी तथा नगर के हर क्षेत्र के मान्य सज्जन शामिल थे। सारे परिवार पर पुष्पवर्षा कर के आशीर्वाद दिया गया। यह समारोह याद रहेगा। पिता के नाते तो परिवार के सज्जन स्मृति दिवस मनाते हैं पर स्वर्गीय मास्टर जी निर्माता भी थे। इस लिए समाजिक रूप में भी उन का दिवस मनाना चाहिए। अन्त में ला. इन्द्रसेन जी ने भाव भरे शब्दों में सबका धन्यवाद किया। सारे परिवार में समाज प्रेम, एकता, धर्म रुचि तथा सेवाभाव देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई। मास्टर जी के जीवन का आर्य समाज सिविल लाईन की ओर से प्रकाशित ट्रैक्ट भी बांटा गया।

सम्पादक

★ चन्द्रमा और सूर्य का राहु से ग्रसित तथा हाथी और सर्प का बंधन में बंधा देख कर और बुद्धिमानों को दरिद्र देखकर हमको विश्वास होता है कि विधाता ही (भाग्य ही) सर्व श्रेष्ठ है।

राष्ट्रीय एकता देश का सब से बड़ा शस्त्र है

आज बातों का नहीं काम करने का समय है

प्रिंसिपल कुमारी विद्यावती जी आनन्द का भाषण

महात्मा हंसराज महिला कालेज की माननीया प्रिंसिपल कुमारी विद्यावती जी आनन्द ने विक्रमपुरा समाज के महोत्सव पर राष्ट्ररक्षा सम्मेलन में बड़ा प्रभावशाली भाषण देते हुए कहा—हमारे देश भारत की एक बड़ी विशेषता है कि संकट के समय इसकी सारी जनता एकत्रित हो जाती है। समय २ पर जब भी राष्ट्र पर किसी प्रकार की भी विपत्ति की काली घटाएं आईं, उस समय भिन्नता में एकता का सुन्दर दृश्य देखने को मिला। चीन ने जब भारत की भूमि पर सशस्त्र आक्रमण किया तो उसने यह सोचा था कि इस समय इस देश में नाना प्रकार की अलग २ प्रवृत्तियां काम कर रही हैं। लोग भिन्न २ विचारों के पथ पर चल रहे हैं। मेरे आक्रमण के समय भारत की जनता सम्भल नहीं पायेगी। इस समय राष्ट्र बंटा हुआ प्रतीत होता है। आक्रमण का यही सुनहला समय है। किन्तु चीन का विचार कोरा स्वप्न ही सिद्ध हुआ। आक्रमण तो वह कर बैठा परन्तु बाद में उसे पता लगा कि देश की जनता एकता के सूत्र में पिरोई हुई है। संकट काल में सारा देश एक विशाल परिवार के समान एक हो कर आक्रमणकारी का सामना करने के लिए तैयार हो जाता है। चीन के आक्रमण के समय भारतीय जनता ने जो एकता का परिचय दिया—इतिहास में उसे सदा स्मरण किया जाएगा।

यदि एकता न हो तो चाहे किसी देश के पास कितना भी शस्त्रबल हो, कितना वैभव हो और कितनी बड़ी संख्या हो तो वह देश कभी शत्रु के आक्रमण के सामने टिक नहीं सकता। भारी हथियार युद्ध में विजय प्राप्त नहीं करते वरन जनता का ऐक्य जीवन विजय प्राप्त किया करता है इसके लिए आवश्यक है कि मनोबल पैदा किया जाये। यदि मन बलशाली है। जनता के मन में साहस व उत्साह की कमी नहीं है तो देश की जनता संग्राम में बड़े से बड़े शत्रु को भी खदेड़ सकती है। यह मनोबल सब से बड़ी शक्ति है। हमारे वीर जवानों का मनोबल भारी था। इस मन की शक्ति से उन्होंने शत्रु के भारी-भारी पैटन टैंकों को तोड़ कर रख दिया। पाकिस्तान के पास बड़े-बड़े नवीन प्रकार के अमेरिकन शस्त्र थे। उन पर वहां के शासकों तथा सेनानायकों गर्व था। किन्तु भारतीय वीरों ने अपने मन के बल भरे उत्साह से उन को तोड़ करके रख दिया। यह मनः शक्ति बड़े २ हथियारों को चूर २ कर देती है।

भारत का भविष्य आने वाले बच्चों के हाथों में है। उनके दिल में देशभक्ति की भावना जगाओ। राष्ट्र के समाचारपत्रों में वीरों के चित्र एवं उनकी वीरता भरी जीवन गाथाएं निकलती रहें। ऐसे चित्रों व जीवनों का बड़ा प्रभाव पड़ता है। ऐसे चित्र तथा कहानियां नहीं निकलनी चाहिएं जिनका राष्ट्रीय जनता पर विशेष कर बच्चों के मन पर बुरा प्रभाव पड़े। विचारों से देश का उत्थान भी होता है और विचारों से ही पतन भी हो सकता है। पतन की ओर ले जाने वाले विचार नहीं देने चाहिए। यह समय बातें करने का नहीं है, काम करने का समय है। प्रत्येक भाई और बहिन अपने-अपने क्षेत्र में रह कर काम करता हुआ राष्ट्र को सुरक्षित करने में लगा रहे।

राष्ट्र रूपी यज्ञ के लिए बलिदान देना है

आचार के बिना संसार का सुधार नहीं होगा

पण्डित सत्य देव जी विद्यालंकार एम.ए. मन्त्री सभा का भाषण

(गतांक से आगे)

क्या होगा? फलित ज्योतिष का ऋषि ने खंडन किया है। पर अब तो बड़े २ मिनिस्टर भी अपने पास ज्योतिषी रखने लगे हैं। इस अन्धविश्वास से राष्ट्र की हानि होती है।

यज्ञ का दूसरा अर्थ है संगतिकरण—किन्तु आज कितना असंगतिकरण हो रहा है। लड़कियों के पढ़ाने में कितना तूफान था। ला० देवराज जी को कितना काम करना पड़ा। छोटी जाति वालों का क्या हाल था। आर्यसमाज तो जाति बन्धन नष्ट करना चाहता था किन्तु हमारी सरकार ने ये जाति बन्धन गहरे कर दिये हैं। हरिजन एक नई जाति बन गई है। समाज के सारे किये पर पानी ही फेर दिया है। जहां भी धन का संचय होगा वहीं सडांद पैदा हो जायगी। राष्ट्र के भिन्न २ अंगों को ऊंचा उठाना होगा।

यज्ञ का तीसरा अर्थ है दान। दान-संस्थाएं अमीरों से जो लेती हैं। उन में क्या २ भावना भरी होती है। ऐसी अवस्था में तो देने और लेने वाले दोनों पर ही लानत है। दान का रूप ही बिगड़ गया है। पूंछ हिलाये बिना पैसा नहीं मिलता। जो जितनी अधिक जोर से पूंछ हिलाता है वह उतने लाभ में ईमान बेचकर पैसा लिया जाता है। जब मुख खाता है तो आंखें शर्मा ही जाती है। शास्त्र में दान के बारे में लिखा है—श्रद्धया देयम अश्रद्धया देयं भिया देयं ह्रिया देयं संविदा देयम्—शास्त्र का विधान है चाहे जिस तरह ले पैसा धनिकों से पैसा लेना ही है। ला. लाजपत राय जब कालेज के लिए दान मांगते थे तब सब से प्रथम स्वयं ही अपना दान मेज पर रख देते थे। दान का रूप बदलना चाहिए। हमारे वीर जवानों ने मोर्चों पर जिसके जीवन बलिदान कर दिया। क्या इस बात के लिए था? बेईमानी देर तक नहीं चलती। क्रांति आ जाती है। चीन में सड़क बनाने में बहुत रेत नहीं मिलाई जाती। भारत में सड़कों में गड़बड़ चलती है। हमारे वीर युवक कुर्बानी करने जाएं और हम ठीक न हों तो यह बात उचित नहीं है। हमारे पत्रों में, पुस्तकों में कैसे चित्र निकलते हैं। दूसरे रूसी आदि पत्रों में ऐसे नहीं होते। इधर ध्यान नहीं दिया जाता। राष्ट्रयज्ञ को ठीक बनाओ ब्रह्म राक्षस भी यहीं से बनते हैं। यदि हम सम्भलेंगे नहीं बेड़ा डूबेगा। राष्ट्रभुन यज्ञ को पूर्ण करने में जुट जाओ।

अमर शहीद स्वा. श्रद्धानन्द

(पृष्ठ ६ का शेष)

यह सब स्वामी श्रद्धानन्द की देन थी। स्वामी जी ने अपने जीवन काल में लाखों गैर हिन्दुओं को शुद्ध करके हिन्दू बनाया। यही शुद्धि उनकी जनपेशा बन गई। २३ दिसम्बर १९२६ को एक धर्मान्ध मुसलमान अब्दुलरशीद ने कायरता के साथ गोली का निशाना बना कर स्वामी जी को शहीद कर दिया। उस समय स्वामी जी रोग शय्या पर पड़े थे। देहांत से कुछ ही क्षण पूर्व स्वामी जी ने आत्मारामसिंह को एक पत्र का उत्तर भेजते लिखा था कि 'अब तो यही इच्छा है कि दूसरा शरीर धारण कर शुद्धि के अधूरे काम को पूरा करूं।' इस से भली-भांति पता लगता है कि कितने शुद्धि प्रेमी थे। (क्रमशः)

सारे राष्ट्र को विगठनवाद के विरुद्ध लोहा लेना होगा

अपनी राष्ट्रभाषा अपनाने से ही कल्याण होगा

श्री. वीर यज्ञदत्त जी का ओजस्वी भाषण

श्री वीर दत्त जी पंजाब के माने हुए प्रभाव शाली वक्ता हैं। राज नीतिक क्षेत्र में काम करते हुए भी आर्य समाज के महोत्सवों पर जाने की कृपा करते रहते हैं। आर्य समाजी महोपदेशक पिता के सुयोग्य सुपुत्र हैं। विक्रमपुरा समाज के जल्से पर आप का ओजस्वी भाषण जोरदार था—उस में कहा—हमारा देश एक मोड़ पर आ कर खड़ा हो गया है। जो प्रगति हम गत दिनों कर पाए हैं वह यदि कायम रहे तो उत्तम बात है। मोड़ पर खड़े हो कर प्रगति की गुंजायश भी है। यदि कमियां ज्यों की त्यों बनी रहीं तो अवसर खो देंगे। इस स्वतन्त्रता की रक्षा करना हमारा धर्म है। इस मोड़ का सब से बड़ा महत्व यह है कि सारा समाज व राष्ट्र एकता से भरा रहे। इस के सारे अंग आवश्यक हैं। दो तीन बातों की ओर ध्यान दिलाना है।

पहली बात जिस की ओर सब का ध्यान जाना चाहिए वह है राष्ट्र की चेतना। दिशा यदि ठीक पकड़ ली जाये तब ठीक है। निष्ठा का केन्द्र राष्ट्र को समझना होगा। जिस में राष्ट्र का भला हो उस में मेरा भला होगा—तभी ठीक बात होगी। सारे समाज की भक्ति को राष्ट्र पर केन्द्रित करना है। युद्ध के बारे में हमारे लोगों के पहले क्या विचार थे कि यह युद्ध पशुता की ओर ले जाने वाला है। बातचीत से विवाद हल किया जावे। सरकार भी उसी ओर चलती थी। लड़ाई भयंकर होती है। जैसा विचार था उसी प्रकार की नीति भी चलती थी। किन्तु अब विचारों ने नया मोड़ लिया है। अब पता लगा है कि ताकत से ही न्याय प्राप्त कर सकते हैं। सोचने की दिशा में बदल आया है। राष्ट्र-बुद्धि में परिवर्तन आया है। राष्ट्र में चेतना उत्पन्न कैसे हो?

यह बात युग पुरुषों ने युगों से हमारे अन्त: करण में अंकित की है। जैसा कि अब आक्रमण हुआ है। शरीर के समान विचार करना होगा। शरीर में टूट-फूट भी होती रहती है और भी कई बातें हो रही हैं। नवयुवकों को कई बातों से निराशा होती थी पर युद्ध में अन्तश्चेतना की प्रवृत्ति जगती है तब दिशा मुड़ जाती है, नदी तो खुली हुई है, प्रवाह ही कहीं रुक गया है। उसे प्रवाहित करना है। इकाई से आरम्भ करें तो समाज बन सकता है। यदि जुकाम होने पर नाक ही काट दी जायें तो क्या होगा। ऐसा कोई भी नहीं कर पाता। उस की दवाई की जाती है। उसी प्रकार समाज रोग पैदा हों तो उन का भी उपचार करना होगा यदि उस के बीमार भाग को काट प्रथक कर दिया जाए तो यह उस का इलाज नहीं है। अमरीका ने बाहर की लड़ाई के बाद अपने अन्दर के विगठनवाद के विरुद्ध भी सात वर्ष तक लड़ाई लड़ी किन्तु अलगाव की आज्ञा नहीं दी। सरकार भी यदि छोटे २ सस्ते रास्ते निकालने लगेगी तो उस से विगठन वाद समाप्त नहीं होगा।

सत्यार्थ प्रकाश के समुल्लासों के क्रम को देख कर उस युग महा-पुरुष के प्रति हमारी श्रद्धा बढ़ जाती है। जितनी तेजी से हम ने विदेशी सत्ता के विरुद्ध लड़ाई लड़ी उतनी ही तेजी से इस विगठन वाद के विरुद्ध भी लड़ाई लड़नी होगी। हमारे पूर्वपुरुषों ने तो अपने समय की बुराईयों के विरुद्ध संघर्ष किया था। अब हम अपने समने समय के रोगों के खिलाफ संघर्ष करें। राष्ट्र चेतना मन में रख कर हम बढ़ते जायें। निराश न होवें। राष्ट्रिय संगठन का संकल्प लेने से अपना कर्तव्य पूर्ण करते जाएं। एक बार राजर्षि टन्डन जी ने कहा था कि हम ने तो अपने समय में संघर्ष किया। अब आप भी करें ताकि हमारे स्वप्न पूरे हो जायें। भावना तो सब में है पर उसे केन्द्रित करना आवश्यक है। भाषा का ही प्रश्न लें। विदेशी भाषा को तो हटना ही चाहिए। इस के बिना काम नहीं चलता ऐसा सोचना व कहना हीनभावना का परिचय देना है। सारे महा पुरुषों की एक ही राय है कि हमारे देश की भाषा ही होनी चाहिए। पोंगेपन्थ की दलील देना बेकार है। चीन, रूस, जापान आदि देशों ने अंगरेजी को न अपना कर अपने देश की भाषा में ही उन्नति की है। क्या वे राष्ट्र प्रगतिशील नहीं है? तो फिर हम यहां अपने देश में क्यों नहीं कर सकते। भाषा के साथ भावना का इतिहास जुड़ा हुआ है। भगीरथ प्रयत्न के शब्दों में हमारा अतीत का इतिहास छिपा हुआ है। पश्चिम में क्योंकि शीत अधिक है इस लिए वहां के लिए **Warm reception** गर्म स्वागत के शब्द सजते होंगे पर भारत में तो छाती मेरी ठंडी हो गई ऐसे शब्द ही शोभा देते हैं। शिकार करने वाले देशों में एक पत्थर से दो पक्षी मारना उचित होगा किन्तु हमारे हां तो एक पन्थ दो काज ही अच्छे लगते हैं। भाषा में संस्कृति जुड़ी रहती है। भाषा जीवन दर्शन होता है। सरकार भाषा का सुधार करे। जो लोग या दल अलगाव के बीज बोते हैं उन का तो इलाज होना ही चाहिए। व्यक्तियों की स्थिति अंकों के समान होती है। एक जैसे होने पर भी आसन व स्थान के भेद से प्रभाव में भी अलग-अलग होते हैं। बड़े लोगों की बात में प्रभाव भी अधिक होता है तथा हानि भी बड़ी होती है। यदि किसी को उन्माद रोग हो जाये तो उसका उपचार तो होना चाहिए आज कर्मवीर बनने की आवश्यकता है। महर्षि जी ने बहुत कुछ किया हम यदि केवल उन का गुण गान ही करें कर्म न करें तो क्या लाभ? यदि काम भी अलग-अलग होगा उसका केन्द्रीकरण नहीं होगा तो वह काम लाभदायक नहीं होगा। सब को एक साथ लेकर चलना होगा। अनुशासन बद्ध काम होना चाहिए। प्रकाश बिन्दु को लेकर चलने रहना। हमें पूर्ण विश्वास है कि भारत विश्व में ऊंचा होगा इसकी दैवी विचारधारा सारे संसार में फैलकर रहेगी।

★ सूर्य के उदय और अस्त होने के साथ २ आयु भी दिन-दिन घटती जाती है तथा व्यापार आदि से चित नहीं भरता और जन्म, बृद्धापन तथा मृत्यु होते हुए देख कर मनुष्यों को चैन नहीं होता। इस से मालूम होता है कि संसार प्रमाद रूपी मदिरा पी मत्त हो रहा है।

जिन का आज शहीदी दिवस है

मिस्टर गांधी को महात्मा गांधी बनाने वाले अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी

लेखक---श्री देवीदास जी आर्य गोविन्द नगर कानपुर, सभासद महापालिका कानपुर

अंग्रेज सरकार से टक्कर लेने वाले संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द न केवल आर्य समाज के गर्व का कारण परन्त भारतवर्ष को भी ऐसे महान शहीद पर गर्व है। पंजाब के एक छोटे से गांव 'तलवन' जिला जालन्धर में उत्पन्न होने वाला मुन्शीराम जो बाद में महात्मा मुन्शीराम व स्वामी श्रद्धानन्द के नाम से विख्यात हुए आर्य समाज व भारत के जनप्रिय नेता बने। उन्होंने केवल समाज सुधार, स्त्री शिक्षा, हिन्दी व प्राचीन गुरुकुल प्रणाली का पुनरुद्धार किया परन्तु देश की आजादी प्राप्त करने के लिए सरधड़ की बाजी भी लगाई। चान्दनीचौक दिल्ली में सन् १९१९ की ३० मार्च को ऐतिहासिक जलूस का नेतृत्व करने वाले स्वामी श्रद्धानन्द ही थे जिन्होंने जलूस को रोकने वाली फौज के बन्दूकों व संगीनों को पीछे धकेलते हुए अपने कुर्ते के बटन खोलते हुए कहा था कि यदि साहस है तो पहिले श्रद्धानन्द की छाती में गोली मारो।

महर्षि दयानन्द का प्रभाव

स्वामी श्रद्धानन्द जब युवक थे तब मथुरा और काशी के कुछ मन्दिरों में पाखण्डों को देख कर अंग्रेजी शिक्षा ग्रहण करके नास्तिक बन चुके थे उनके पिता श्री नानक चन्द जी बरेली में कोतवाल थे इस लिए उन को महर्षि दयानन्द सरस्वती जी उन दिनों बरेली में पधारे थे, के भाषणों का प्रबन्ध करना पड़ता था। श्री नानकचन्द अपने पुत्र मुन्शीराम (स्वामी श्रद्धानन्द) के नास्तिकता से बहुत परेशान थे। इस लिए प्राय: अपने पुत्र को महर्षि दयानन्द के पास ले जाते। महर्षि के भाषणों ने मुन्शीराम की काया पलट दी वे सच्चे आस्तिक बन गये। शराब, मांस आदि व्यसन छोड़ दिए। जीवन भर महर्षि के सिद्धांतों पर पहिले स्वयं चलकर फिर अन्यों को उस का उपदेश दिया।

संकल्प के पक्के

२६ नवम्बर १८९८ ई० में स्वामी श्रद्धानन्द के विशेष प्रस्ताव पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब जिस के स्वामी जी प्रधान थे, ने गुरुकुल कांगड़ी खोलने का निश्चय किया तो स्वामी श्रद्धानन्द ने महान संकल्प लेतेहुए घोषणा की कि जब तक गुरुकुल के लिए ३० हजार रुपया इकट्ठा न कर लूंगा घर वापस नहीं लौटूंगा। ८ अप्रैल १९०० तक भारत के अनेक नगरों का दौरा करके तीस के स्थान चालीस हजार रुपया इकट्ठा कर लिया।

लोगों ने हंस कर कहा अंग्रेजी के युग में कौन गुरुकुल मे अपने बच्चों को संस्कृत पढ़ायेगा। आप उल्टी गंगा बहाना चाहते हैं। स्वामी जी ने उल्टी गंगा बहाकर दिखाई। सब से पहिले अपने दोनों पुत्रों हरिश्चन्द्र व इन्द्र विद्यावाचस्पति को गुरुकुल में दाखिल किया। गुरुकुल को अपना विशाल बंगला व अन्य तमाम सम्पत्ति दान कर महान त्याग की मिसाल को स्थापित किया। आज यह गुरुकुल कांगड़ी, गुरुकुल विश्वविद्यालय के नाम से विख्यात है और स्वामी श्रद्धानन्द का महान स्मारक है।

पहिला हिन्दू

स्वामी श्रद्धानन्द पहिले हिन्दू थे जिन्होंने जामा मस्जिद दिल्ली के मम्बर पर चढ़कर 'त्वं हि नः पिता वसो त्वं माता' वाला वेद मन्त्र बोल उपदेश दिया और ओं शान्ति, शान्ति, शान्ति के साथ अपना ओजस्वी भाषण समाप्त किया। इस प्रकार स्वामी श्रद्धानन्द पहिले हिन्दू थे जिन्होंने गुरु के बाग के मोर्चे के सम्बन्ध में सन १९२२ में स्वर्ण मन्दिर में अकाल तख्त से हो कर अंग्रेजी सरकार के विरुद्ध आग भड़काने वाला भाषण दिया तब उन को गिरफतार किया गया और चार माह की सज़ा दी गई। स्वामी जी कांग्रेस के पहले स्वागताध्यक्ष थे जिन्होंने कांग्रेस की परम्परा को तोड़ते, अंग्रेजी को जानते हिन्दी में अपना अध्यक्षीय भाषण पढ़ा। स्वामी श्रद्धानन्द पहिले हिन्दू नेता थे जिन्होंने भारत में पहिला कन्या विद्यालय जालन्धर में स्थापित किया था। इस प्रकार उन्होंने भारतीय नारी को ईसायत के रंग में रंगने से बचा लिया कहते हैं स्वामी जी को कन्या विद्यालय खोलने की प्रेरणा अपनी ही पुत्री वेद कुमारी से मिली थी चूंकि वह मिशन स्कूल में लड़कों के साथ पढ़ती थी उसने स्कूल में याद कराया यह भजन स्वामी जी को सुनाया था—'ईसा ईसा बोल तेरा क्या लगेगा मोल, ईसा मेरा कृष्ण कन्हैया, ईसा मेरा राम रमैया '

धर्म प्रचार और शुद्धि

स्वामी श्रद्धा नन्द अभी ३२ साल के युवक थे तो उनकी धर्म पत्नी का देहांत हो गया था। अच्छे वकील व प्रतिष्ठित व्यक्ति होते हुए भी उन्होंने दूसरा विवाह नहीं किया और शेष जीवन धर्म प्रचार, आर्यसमाज का सेवा कार्य और शुद्धि करने का संकल्प लिया। अमर शहीद सरदार भगत सिंह जिन्होंने फांसी की रस्सी को चूम कर भारत माता की जय और वैदिक धर्म की जय बोली थी, उन के दादा श्री अर्जुन सिंह स्वामी श्रद्धा नन्द जब वकील थे तब उन के मुन्शी थे। स्वामी जी के सत्सग में अर्जुनसिंह व उन के दोनों पुत्र क्रान्तिकारी अजीतसिंह, हरकिशनसिंह वैदिक धर्मी व देश भक्त बने थे। भगत सिंह अपने पिता व चाचा से भी आगे बढ़ गया।

(शेष पृष्ठ ४ पर)

समाज मन्दिर विक्रमपुरा

आर्यसमाज विक्रमपुरा जालंधर का जलसा समारोह से सम्पन्न हो गया। समाज के नेताओं के ओजस्वी भाषण जनता तक पहुँचा दिये गये। कितना सुन्दर मन्दिर यह बना है। स्वर्गीय ला० शंकरदास जी ने दिन रात एक कर दिया था। उनके साथ २ मान्य ला० सन्तोषराज जी प्रिंसिपल देसराज जी महाजन आदि ने भी इस के निर्माण के लिए अथक काम किया। अब भी श्री महाजन जी को साथ लेकर ला० सन्तोषराज की अनेक सज्जनों के पास जाकर बाकी की कमी को पूर्ण करने के लिए झोली फैलाते हैं। जलसे पर भी ला० सन्तोषराज जी ने इस के निर्माण का सारा इतिहास जनता के सामने रखते हुए इसकी रही सही कमी पूरी करने के लिए जालन्धर की जनता से कितनी दर्दभरी अपील की थी। सात्विक दानी श्री ला० परमेश्वरीदास जी बहल ने समाज के निमित्त पांच सौ रुपये प्रदान किए। और भी सज्जनों ने कृतार्थ किया। आज तो धर्म के कार्यों के लिए समय देने वालों की भी कमी होती जा रही है। हम ला० सन्तोषराज जी व श्री देसराज जी महाजन को बधाई देते हैं कि उनके इस अथक परिश्रम से मन्दिर पूर्ण हो रहा है।

—सं०

धर्म—समाज—राष्ट्र और लोक सेवी स्वर्गीय मा० नन्दलाल जी जालंधर

का प्रेरणा व स्फूर्तिदायक संक्षिप्त जीवन

(पं० प्रकाश नाथ तिवाड़ी प्रधान आर्य समाज सिविल लाईन्ज़, जालन्धर शहर)

(अंक से आगे)

इसी प्रकार आर्यप्रादेशिक सभा के कार्यालय भी जालन्धर में खुलवाने में आपका पूरा-पूरा हाथ था। सभा के व्यापक प्रचार काम को चलाने का भारी दायित्व आपने अपने कन्धों पर ले लिया। इस का पहला साधारण वार्षिक अधिवेशन भी आपके निमन्त्रण पर जालन्धर में ही हुआ। प्रतिनिधियों के भोजन व निवास आदि का सारा प्रबन्ध आपके भवन में ही था। यही नहीं अपितु उस समय महात्मा आनन्द स्वामी जी के बड़ा ज़ोर देने पर आपने अपने योग्य सुपुत्र ला० इन्द्रसेन जी की भी सेवाएं सभा कार्य के लिए अर्पित कर दीं। वह १९४८ से लेकर १९५६ तक फिर १९५८ से ५९ तक सभा के महामन्त्री तथा कार्यकर्ता प्रधान रहे। बड़ी लगन से कार्य किया।

समाज सेवा—पंजाब के हिन्दुओं का कोई भी ऐसा आंदोलन न था जिस में आप प्रमुख न रहे हों। जब प्रांत या जालन्धर के हिन्दु समाज पर कोई विपत्ति आई आप उसके निवारण में सदा आगे ही रहे। सिद्धांत के मामले पर कभी नहीं झुकते थे। आपका स्वभाव सौम्य, सादा तथा संयमी था। सादा खाना पीना पसन्द करते थे। पहिरावा भी सादा था। स्वच्छता के बड़े पक्के थे। स्नान से पूर्व अपने कमरे की स्वयं सफाई करते थे। ईश्वर सत्ता पर आप को पूरी निष्ठा थी। महात्मा आनन्द स्वामी जी ने अपनी पुस्तक प्रभुभक्ति में अपने जिन प्रभुभक्त मित्रों का वर्णन किया है उन में आप का नाम विशेष कर है। बातों-बातों में प्रभुनाम लिया करते थे।

लोक सेवा—के कामों में बड़ा आनन्द अनुभव करते थे। कोई भी किसी काम के लिये उनके पास आता उसकी यथा शक्ति सहायता करते। किसी को दुःखी देख कर उनका दिल मोम की तरह पिघल जाता। जालन्धर के साईंदास स्कूल व कालेज के लिए आप ने लाखों रुपये इकट्ठे किये। ग्रीष्म के अवकाश में आप कोहमरी, रावलपिण्डी तथा दूसरे नगरों में जाकर धन इकट्ठा करते थे। प्रिंसिपल पं० मेहरचन्द जी के साथ धन मांगने के लिये अन्य प्रांतों में भी जाते थे। जिला जालन्धर की संस्थाओं की देखभाल आप ही के सपुर्द थी। यहां के अलावलपुर, रुड़काकलां, बिलगा, जंडियाला, नकोदर सराये आदि के स्कूल आप की ही देख-रेख में चलते थे।

रियासत हैदराबाद दक्षिण में आर्यसमाज के प्रचार पर लगाई गई पाबन्दियों को दूर करने के लिए भारत भर से वहां सत्याग्रह करने के लिए जत्थे भेजने का आंदोलन आरम्भ हुआ। पंजाब से जो जत्थे हैदराबाद जाते थे, वह प्रचार करते हुए जालन्धर ठहर कर जाते थे। जालन्धर में इस सत्याग्रह आंदोलन का सारा प्रबन्ध, स्वागत सम्मान, प्रचारादि का कार्य भार आप ने ही सम्भाला हुआ था। जत्थों का जलूस निकलवाना, प्रचार के लिए जलसे करवाना, जत्थों का सम्मान करना व उनको थैलियां भेंट करना कराना, उनके ठहरने भोजनादि का तमाम प्रबन्ध करना तथा उनके साथ जाने वाले यहां के वीर सत्याग्रहियों को तैयार करना और फिर स्वागत के साथ उनको रेलवे स्टेशन पर साथ जाकर समारोह से गाड़ी पर चढ़ाना आप के दैनिक कार्यक्रम का अंग था।

विश्व के दूसरे महायुद्ध में जिला जालन्धर के अधिकारियों ने आपको प्रमुख आदरणीय नागरिक समझ कर सुरक्षा कार्य का वार्डन नियत किया। आपने यह कार्य बड़ी उत्तमता से किया।

महात्मा हंसराज स्मारक—के लिए स्वर्गीय प्रिंसिपल साईंदास जी जालन्धर में धनसंग्रह के लिए पधारे। आप ने उन को यहां से १० हज़ार की धन राशि एकत्रित करके दी।

फंगाला की ब्राह्मण कन्या—पं० रामदास जी सभासद आर्यसमाज किला ने आज से तीस वर्ष पूर्व रविवार सत्संग के बाद बताया कि फंगाला की एक विवाहिता ब्राह्मण कन्या का वहां के भूमिपति मुबारिक ग० की शह पर मुसलमानों ने अपहरण कर लिया है। आप इसे सहन न कर सके। तत्काल ही उस लड़की के पिता व पति को जालन्धर बुलवा कर यहां के श्री कन्हैयालाल सिटी मैजिस्ट्रेट की अदालत में उसकी स्वयं ज़मानत देकर पोलिस की सहायता से उसको फंगाला पहुँचाया। बाद में उस कन्या का अपहरण करने वाले अपराधियों के विरुद्ध अपनी ओर से हज़ारों रुपये व्यय करके मुकद्दमा लड़ कर उनको दण्ड दिलवाया और वह कन्या वापस उसके पति को दिलाई।

आर्यसमाज का कार्य—दयानन्द दलितोद्धार मंडल होशयारपुर के अधिकारियों ने निर्णय किया कि १९३६ में दलितोद्धार सम्मेलन जालन्धर में किया जाए। आर्य समाज किला और नगर के आर्य सज्जनों ने आप को स्वागत समिति का प्रधान चुना। इस विशाल सम्मेलन के प्रधान प्रिंसिपल साईंदास जी डी० ए० वी० कालेज लाहौर थे। उनका जलूस इतना शानदार निकाला कि जालन्धर के इतिहास में आज तक इतना संगठित व शानदार जलूस कभी नहीं निकला। आप ने इस सम्मेलन के लिए हज़ारों रुपये एकत्रित व व्यय किए। ला० साईंदास जी के समय से पूर्व चले जाने पर आप ने प्रधानता का सारा काम सम्भाला।

इसी प्रचार प्रभाव के परिणाम स्वरूप ही आज के प्रसिद्ध पण्डित श्री प० रविदत्त जो पूर्व आर्य-प्रादेशिक सभा महोपदेशक तथा प्रसिद्ध भजनीक श्री हरिचन्द जी और किला समाज के प्रसिद्ध भजनीक पं० किशनचन्द जी आर्य-समाजी बने। जिन्होंने समाज का भारी सेवा कार्य किया।

सामाजिक सेवा—जब महात्मा गान्धी जी ने अछूतोद्धार का काम आरम्भ किया तो आप प्रत्येक को इस राष्ट्रीय सेवा में धन देने की अपील किया करते थे। महात्मा जी जब लाहौर जाते हुए जालन्धर से गुज़रे तो आपने महात्मा जी की सेवा में इस कार्य के लिए अच्छी राशि की थैली भेंट की।

आप न केवल शिक्षा में ही रुचि लेते थे वरन् स्कूल में पढ़ाते हुए छात्रों के स्वास्थ्य और खेल-कूद में भी बड़ी रुचि लेते थे। स्कूल में हाकी आदि खेलों के भी आप ही इन्चार्ज थे।

आपके परलोक गमन को जनता ने इतना महसूस किया कि जालन्धर की सारी जनता ने बिना किसी भेद-भाव के एक भारी मातमी जलसा करके आपके प्रति अपने २ भावों से भर कर अन्तरात्मा से भावपूर्ण शब्दों में श्रद्धांजलियां भेंट की।

रजिस्टर्ड नं० पी० १२१

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि

सभा के सहयोगी चौ० सहदेव जी एडवोकेट रोहतक द्वारा निश्चित उत्सवों की सूची

११, १२, १३ दि. ६५ को शादीपुर
२४, २५, २६ ,, ,, मोखरा
२८, २६, ३० ,, ,, भंभेवा
३१, १, २ फर. ६६ ईसापुर खेड़ी
३, ४, ५ ,, ,, चिड़ी(रोहतक)
६, ७, ८ ,, ,, मिर्जापुरखेड़ी
६, १०, ११ ,, ,, नांदल(रोहतक)
२६, २७, २८ ,, ,, टिटोली
१, २, ३ ,, ,, पाबली (नया ग्राहक बनाना है।
५, ६, ७ ,, ,, खरखड़ा

ये उपरोक्त जलसे श्री भूराराम जी द्वारा सम्पन्न हो रहे हैं।

म० हंसराज साहित्य विभाग के शतक

सभा ने चारों वेदों के शतक प्रकाशित किए हैं। इनके संग्रहकर्ता स्वामी अच्युतानंद जी महाराज हैं ये शतक श्री इन्द्रसेन जी कार्य-कर्ता प्रधान सभा की अध्यक्षता में प्रकाशित हुए थे। इन में से सामवेद शतक समाप्त है। शेष तीन प्राप्य हैं। सभा ने इन पर ३०% कमीशन देना स्वीकार किया हुआ है। सभी स्कूल, समाजें व आर्य संस्थाएं मंगा कर सभा की सहायता करें।

शोक समाचार

आल इंडिया दयानन्द साल्वेशन मिशन तथा जिला वेद प्रचारिणी सभा हुशियारपुर चौधरी हरिराम जी एडवोकेट के निधन पर गहरा शोक प्रकट करते हुए उनकी आत्मा की सद्‌गति के लिए तथा उनके परिवार को धैर्य प्रदान करने की प्रभु से प्रार्थना करती हैं।

(हरिश्चन्द्र 'निस्तन्द्र' साईंदास H/S स्कूल जालन्धर)

दयानन्द गर तेरे उपकार यह भारत भुला देगा।
तो फिर मंझधार से निकली हुई किश्ती डुबा देगा।

(१) अविद्या और अज्ञानत ने यहां डेरा जमाया था।
घटा जिस वक्त बनकर हिन्द पर पाखण्ड छाया था।
समझता था नहीं कोई कि यह बेड़ा डुबा देगा।

(२) जगाई तेरे हृदय में प्रभु ने ज्ञान की ज्योति।
जगाये भाग्य भारत के जगाई आत्मा सोती।
किसे था इल्म स्वामी तहलका जग में मचा देगा।

(३) प्रभु की प्रेरणा से घर से निकला छोड़ जग बन्धन।
मिला सच्चा गुरु सब भरम भागे खुल गये लोचन।
यकीं था शिष्य सच्चा वेद का डंका बजा देगा।

(४) मिटाया वेद सूरज से अन्धेरा अतमसान्धर का।
भला था देश का इस में भला था प्राणी मात्र का।
सहारे कष्ट जो 'निस्तन्द्र' वह कोई सहारेगा।

अदालती नोटिस

बा अदालत जनाब श्री देवराज जी खन्ना P.C.S. सीनियर सब जज गुड़गावां

अपील दीवानी नं० 8 आफ 1965।

मुद्दैयान—मुनीलाल पुत्र मायाराम सकना मोजा तहसील गुड़गावां बनाम अजीतसिंह वगैरह।

बनाम (१) श्रीमती लीला पत्नी सूबी मौजूवा पत्नी सालूराम सकना चरखी दादरी।

(२) नारायणसिंह पुत्र मोहलड़सिंह सकना बबीना।

(३) लायकराम पुत्र मोहलड़सिंह सकना T/51 A.C. Branch Hulu Air Port Bombay—54

(४) बस्तीराम पुत्र मोहलड़ सकना रंगपुरा तहसील महरोली

मुद्दालेहान—अपील वाला से श्रीमती लीला, नारायणसिंह, लायकराम, बस्ती राम मजकूर तामील समन से दीदा दानिस्ता गरेज करते हैं और रुपोश हैं। इसलिए इश्तहार हजा बनाम श्रीमती लीला नारायणसिंह, लायकराम, बस्तीराम मजकूरान जारी किया जाता है कि अगर वह तारीख 31-12-65 को बामुकाम गुड़गावां हाजिर अदालत नहीं होंगे तो कारवाई यक तरफा अमल में लाई जाएगी।

आज बतारीख 2-12-65 को मेरे दस्तखत व मुहर अदालत से जारी हुआ।

देवराज
सीनियर सबजज गुड़गावां

आर्यजगत के चन्दे भेजने की कृपा करें

आर्यसमाज रैनावाड़ी श्रीनगर (काश्मीर) का

चुनाव जो कि ५-१२-६५ को सम्पन्न हुआ

प्रधान—श्री जगन्नाथ जी पंडित उप-प्रधान— श्री काशीनाथ जी कौल, मंत्री—श्री श्याम सुन्दर जी वैद्य, उपमंत्री—श्री श्यामलाल जी सराय, खजांची—श्री मदनमोहन जी, पुस्तकाध्यक्ष—बंसीलाल जी।

वैदिक यज्ञोपवीत संस्कार

श्री काशीनाथ जी कौल के सुपुत्रों का यज्ञोपवीत संस्कार श्री नेत्रपाल जी ने पूर्ण वैदिक रीति से कराया। इस का सारा प्रबन्ध श्री श्याम सुन्दर जी वैद्य मंत्री समाज ने किया। —श्यामसुन्दर वैद्य

सूचनार्थ

'आर्य युवक समाज' डी. ए. वी. कालेज अम्बाला नगर के तत्वावधान में जनवरी मास में आर्य युवक सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। तिथि अभी निश्चित नहीं हुई है। इसके अन्तर्गत निम्न विषयों पर आधारित भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया जायगा।

(१) शिक्षा-क्षेत्र में आर्यसमाज का योगदान।

(२) सामाजिक क्रांति के अग्रदूत महर्षि स्वामी दयानन्द।

(३) राष्ट्र-सुरक्षा में नवयुवकों का योगदान। प्रथम तीन उत्तम वक्ता पुरस्कृत किये जायंगे। कोई भी नवयुवक इस में भाग ले सकता है। वक्ता अपने नाम निम्न पते पर सूचित करें।

वेदप्रकाश वेदालंकार एम. ए. डी. ए. वी. कालेज अम्बाला शहर

आल इंडिया दयानन्द साल्वेशन मिशन होशियारपुर

"बम्बई की ओर से किसी दानी महानुभाव ने आल इंडिया दयानन्द साल्वेशन मिशन होशियारपुर को धर्म प्रचारार्थ के लिए एक सौ (Rs. १००/-) गुप्त दान भेजा है जिसके लिए मिशन उन का अत्याधिक धन्यवादी है।"

मुद्रक व प्रकाशक श्री खुशोपराज जी आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर द्वारा वीर मिलाप प्रेस, मिलाप रोड जालन्धर से मुद्रित तथा जगत् कार्यालय महात्मा हंसराज भवन निकट कचहरी जालन्धर शहर से प्रकाशित मासिक—आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर